

स्थास्यंतीतिभावः ॥ २३ ॥ २४ ॥

अन्वयः तदेवाव्ययमाह बालिश इति ॥ २५ ॥

यूयवैयदज्ञात्वाभुवस्तलं ॥ समुद्यताः प्रजाः कर्तुं क
वमुक्तास्ते हर्यश्वादेव योगतः ॥ अन्योन्यमूचुः सहसा स
वास्तुसुखं स्रक्ष्यामहे प्रजाः ॥ इति संचित्य ते सर्वे प्रयाताः प्रेक्षितुं भुवः ॥ २५ ॥
प्राच्यां केचिद्वताः कामं दक्षिणस्यां तथा परे ॥ २६ ॥ प्रतीच्यामुत्तरस्यां तु
गतान् दृष्ट्वा पीडितस्तु शुचाभृशं ॥ २७ ॥ अन्यानुत्पादयामास प्रजार्थं कर्तुं निश्चयः ॥
मुद्यमं सुताः ॥ २८ ॥ नारदः प्राहतान् दृष्ट्वा पूर्वयद्वचनं मुनिः ॥ बालिश बत यूयवैयदज्ञात्
प्रमाणं तु प्रजाः कर्तुं प्रवृत्ताः केन हेतुना ॥ श्रुत्वा वाक्यं मुनेस्तेऽपि मत्वा सत्यां विमोहिताः ॥ ३० ॥
पूर्वधातरश्चलितास्तथा ॥ तान्सुतान् प्रस्थितान् दृष्ट्वा दक्षः कोपसमन्वितः ॥ ३१ ॥ शशाप नार
कं समुद्रवात ॥ दक्ष उवाच ॥ नाशिता मे सुता यस्मात्तस्मान्नाशमवाप्नुहि ॥ ३२ ॥ पापेनानेन दुर्बुद्ध
जेति च ॥ पुत्रो मे भव कामं त्वं यतो मे भ्रंशिताः सुताः ॥ ३३ ॥ इति शप्तस्ततो जातो वीरिण्यां नारदो मुनिः
भूयो सृजन्त्य वीरिण्यामिति नः श्रुतं ॥ ३४ ॥ शोकं विहाय पुत्राणां दक्षः परमधर्मवित् ॥ तासां त्रयोदश प्रसद
श्य पायमहात्मने ॥ ३५ ॥ दशधर्माय सोमाय सप्तविंशतिभूषते ॥ द्वे चैव भृगवे प्रादाच्च तस्त्रोरिष्टनेमिने ॥ ३६ ॥
द्वे चैवांगिरसे कन्येतथैवांगिरसे पुनः ॥ तासां पुत्राश्च पौत्राश्च देवाश्च दानवास्तथा ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥

देवकन्ये अंगिरसे कृशाभयदहा कित्तर्यः तथैवांगिरसे पुनरिति पुनर्देव अवाशिष्टे कन्ये अंगिरसे तन्नाम्ने मुनये ददौ तदुक्तं कूर्मपुराणे सप्तविंशतिसौ
मायवतसो अरिष्टनेमिने द्वे चैव भृगुपुत्रा यदे कृशाभयधीमते द्वे चैवांगिरसे तदुत्तेषां कन्ये विस्तारमिति ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥

॥ ३८ ॥ इति श्रीदेवीभागवतचरितकेससप्तमस्कंधे प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ पंचषष्टिः श्लोकैः सूर्यसोमान्वयस्व ॥ विस्तारोऽप्यर्प्यते सम्यक् दवोर्मास्ति
युतस्य ॥ १ ॥ सूर्यसोमश्च विस्तारं राजापृच्छति ममाख्याहीति ॥ १ ॥ २ ॥ ममाश्रमे आगमिति व्यासोक्तिः ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ सप्तमोऽस्मिन्

जाता वल्लसमायुक्ताः परस्परविरोधकाः ॥ रागद्वेषान्विताः सर्वे परस्परविरोधिनः ॥ ३८ ॥ सर्वे मोहवृताः शूरा ह्य
भवन्मतिमायिनः ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे सप्तमस्कंधे प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ जन्मेजय उवाच ॥ ममाख्या
हि महाभाग राज्ञां वंशं सुविस्तरं ॥ सूर्यान्वयप्रसूतानां धर्मज्ञानां विशेषतः ॥ १ ॥ व्यास उवाच ॥ शृणु
वक्ष्यामिरविवंशस्य विस्तरं ॥ यथा श्रुतं मया पूर्वं नारदादृषिसत्तमात् ॥ २ ॥ एकदा नारदः श्रीमान्
स्तटे शुभे ॥ आजगामाश्रमे पुण्ये विचरन् स्वेच्छयामुनिः ॥ ३ ॥ प्रणम्य शिरसा पादौ तस्याग्रेसं
ततस्तस्यासनं दत्वा कृत्वा ह्यर्णमथादरात् ॥ ४ ॥ विधिवत् पूजयित्वा तमुक्तवान्वचनं त्विदं ॥
षु पूज्यस्यागमने न वै ॥ ५ ॥ कथां कथय सर्वज्ञ राज्ञां चरितसंयुतां ॥ राजानो ये समाख्याता
कुले ॥ ६ ॥ तेषामुत्पत्तिरतुला चरितं परमाद्भुतं ॥ श्रोतुकामोऽस्म्यहं ब्रह्मन् सूर्यवंशस्य विस्त
निश्चेष्ट समासव्यासपूर्वकं ॥ इति पृष्ठे मया राजन्नारदः परमार्थवित् ॥ ८ ॥ उवा
यं ॥ नारद उवाच ॥ शृणु सत्यवती सूनो राज्ञां वंशमनुत्तमं ॥ ९ ॥ पावनं कर्णसंस्क
नानाभिपंकजसंभवः ॥ १० ॥ विष्णोरिति पुराणेषु प्रसिद्धः परिकीर्तित
११ तपस्तप्त्वा स विश्वत्मा वर्षाणामयुतं पुरा ॥ सृष्टिकामः शि

रोरित्यर्थः ॥ ६ ॥ ७ ॥ समासव्यासौ संक्षेपविस्तारौ कु

॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥

[illegible]

॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥

॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥

॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥

॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥

॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥

॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥

॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

॥ १०१ ॥ ॥ १०२ ॥ ॥ १०३ ॥ ॥ १०४ ॥ ॥ १०५ ॥ ॥ १०६ ॥ ॥ १०७ ॥ ॥ १०८ ॥ ॥ १०९ ॥ ॥ ११० ॥

॥ १११ ॥ ॥ ११२ ॥ ॥ ११३ ॥ ॥ ११४ ॥ ॥ ११५ ॥ ॥ ११६ ॥ ॥ ११७ ॥ ॥ ११८ ॥ ॥ ११९ ॥ ॥ १२० ॥

॥ १२१ ॥ ॥ १२२ ॥ ॥ १२३ ॥ ॥ १२४ ॥ ॥ १२५ ॥ ॥ १२६ ॥ ॥ १२७ ॥ ॥ १२८ ॥ ॥ १२९ ॥ ॥ १३० ॥

॥ १३१ ॥ ॥ १३२ ॥ ॥ १३३ ॥ ॥ १३४ ॥ ॥ १३५ ॥ ॥ १३६ ॥ ॥ १३७ ॥ ॥ १३८ ॥ ॥ १३९ ॥ ॥ १४० ॥

॥ १४१ ॥ ॥ १४२ ॥ ॥ १४३ ॥ ॥ १४४ ॥ ॥ १४५ ॥ ॥ १४६ ॥ ॥ १४७ ॥ ॥ १४८ ॥ ॥ १४९ ॥ ॥ १५० ॥

॥ १५१ ॥ ॥ १५२ ॥ ॥ १५३ ॥ ॥ १५४ ॥ ॥ १५५ ॥ ॥ १५६ ॥ ॥ १५७ ॥ ॥ १५८ ॥ ॥ १५९ ॥ ॥ १६० ॥

॥ १६१ ॥ ॥ १६२ ॥ ॥ १६३ ॥ ॥ १६४ ॥ ॥ १६५ ॥ ॥ १६६ ॥ ॥ १६७ ॥ ॥ १६८ ॥ ॥ १६९ ॥ ॥ १७० ॥

॥ १७१ ॥ ॥ १७२ ॥ ॥ १७३ ॥ ॥ १७४ ॥ ॥ १७५ ॥ ॥ १७६ ॥ ॥ १७७ ॥ ॥ १७८ ॥ ॥ १७९ ॥ ॥ १८० ॥

...तस्यैकं यत्तु ... ॥ ४३ ॥
 ... ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥
 ... ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

... ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके सप्तमस्कंधे द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

राज्यं नानि शिवाभूत्सैनिकानां तु तत्क्षणात् ॥ विशेषेण तु भूपस्य सामात्यस्य समततः ॥ ५७ ॥ गजोष्टुरगा
 नास्ते सर्वे प्राणिनां तदा ॥ ततो रुद्धे शकृन्मूत्रे शर्यातिर्दुःखितो भवत् ॥ ५८ ॥ सैनिकैः काचित्तस्मै शकृन्मूत्र
 मितं वनम् ॥ चित्तं धामासंभूयालः कारणंदुःखसंभवे ॥ ५९ ॥ विचित्र्या हततोरजसैनिकान् स्वजनांस्तथा ॥
 गृहीत्वा गत्या चित्तार्तः केनेदं दुष्कृतं कृतं ॥ ६० ॥ सरसः पश्चिमे भागे वनमध्ये महातपाः ॥ च्यवनस्तपसस्तत्र त
 पश्चरति दुश्चर ॥ ६१ ॥ केनाप्यपकृतं तत्र तापसेऽग्निसमप्रभे ॥ तस्मात्पीडा समुत्पन्ना सर्वेषामिति निश्चयः
 ॥ ६२ ॥ तपो वृद्धस्य वृद्धस्य वरिष्ठस्य विशेषतः ॥ केनाप्यपकृतं मन्ये भार्गवस्य महात्मनः ॥ ६३ ॥ ज्ञातवाचं दि
 वा ज्ञात तस्येदं फलमुत्तमं ॥ कैश्च दुष्टैः कृतं तस्य हेलनं तापसस्य ह ॥ ६४ ॥ इति पृथ्वास्तमूचुस्ते सैनिका विदना
 दिताः ॥ मनोवाकाय जनितं न विद्मोपकृतं वयं ॥ ६५ ॥ इति श्रीदेवीभा० म० सप्तमस्कंधे द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥
 च्यवनोऽवाच ॥ इति पप्रच्छ तान् सर्वात्राजा चित्ताकुलस्तथा ॥ पर्यपृच्छत्सु हृद्गर्गसाम्ना वोयं तथापि च ॥ १ ॥ पीठ्य
 मानं जननीं वीक्ष्य पितरंदुःखितं तथा ॥ विचित्र्य शूलभेदं सा सुकन्या चेदमब्रवीत् ॥ २ ॥ वने मया पितस्तत्र वल्मी
 की वीरुयावृतः ॥ क्रीडंत्या सुदृढो दृष्टश्छिद्रद्वयसमन्वितः ॥ ३ ॥ तत्र खद्योतवद्दीप्तज्योतिषीर्वीक्षिते मया ॥ सूच्या
 पद्माराजपुनः खद्योतशंकया ॥ ४ ॥ जलच्छिन्ना तदा सूची मया दृष्टापितः किल ॥ हा हेतुवश्रुतः शब्दो मंदाव
 श्रुतः ॥ ५ ॥ तदा हं विस्मितस्तज्जन्किमेतदिति शंकया ॥ न जाने किं मया विद्धं तस्मिन् वल्मीकमण्डले ॥ ६ ॥

॥ १ ॥ ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

संस्थ

अन्वय ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ ननुत्वयाशापोनदत्तस्तर्हि किमित्येतादृशीभिष्कारणादशाजोतति चेत्तत्राह

पुनश्चोपियदित्राताभवतितथापिदेवीभक्तस्यापराधं कृत्वाकोजनः सुखंलभेतनकोपित्वर्थः देवीभक्तापराधस्यदुःखदानुचितं

शिर्यातिः सुकन्यावचनं नृदु ॥ मुनेस्तद्वेलनं ज्ञात्वावल्मीकं क्षिप्रमभ्यगात् ॥ ७ ॥ तत्रापश्यत्तपो

वनं दुःखितं भृशं ॥ स्फोटयामासवल्मीकं मुनिदेहावृतं भृशं ॥ ८ ॥ प्रणम्यदंडवद्भूमौ राजा तं भार्गवं प्र

॥ तुष्टावविनयोपेतस्त्वमुवाच कृतांजलिः ॥ ९ ॥ पुत्र्यामममहाभागक्रीडंत्यादुष्कृतं कृतं ॥ अज्ञानादाल

यात्रह्यनूकृतं तत्क्षंतुमर्हसि ॥ १० ॥ अक्रोधनाहिमुनयो भवन्तीति मया श्रुतं ॥ तस्मात्त्वमपि बालायाः क्षंतुम

र्हसि सांप्रतं ॥ ११ ॥ व्यास उवाच ॥ इति श्रुत्वावचस्तस्य च्यवनो वाक्यमब्रवीत् ॥ विनयोपनतं दृष्ट्वा राजानं

दुःखितं भृशं ॥ १२ ॥ च्यवन उवाच ॥ राजन्नाहं कदाचिद्वैकरोमिक्रोधमण्वपि ॥ नमयाद्यैव शप्तस्त्वं दुहित्रापीड

नेकृते ॥ १३ ॥ नेत्रे पीडा समुत्पन्ना मम चाद्य निरागसः ॥ तेन पापेन जानामि दुःखितस्त्वं महीपते ॥ १४ ॥

अपराधं परं कृत्वा देवीभक्तस्य को जनः ॥ सुखं लभेत यदपि भवेत्त्राता शिवः स्वयं ॥ १५ ॥ किं करोमि महीपाल

नेत्रहीनो जरावृतः ॥ अंधस्य परिचर्या च कः करिष्यति पार्थिव ॥ १६ ॥ राजोवाच ॥ सेवका बहवः सेवां करिष्यं

तितवानि शं ॥ क्षमस्व मुनि शार्दूल स्वल्पक्रोधा हि तापसाः ॥ १७ ॥ च्यवन उवाच ॥ अंधो हं निर्जनो राजनूतपस्त

प्तुं कथं क्षमः ॥ त्वदीयाः सेवकाः किं ते करिष्यन्ति मम प्रियं ॥ १८ ॥ क्षमापयसि वेन्मां त्वंकुरु मेव च न नृपा ॥ देहि मे प

रिचार्यार्थं कन्यां कमललोचनां ॥ १९ ॥ तुष्येऽनयामहाराज पुत्र्या त्वमहामतो ॥ करिष्यामि तपश्चाहं सामे सेवां क

रिष्यति ॥ २० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥

स्वभाव एव न तु कारणांतरं विदुत इति भावः तदुक्तं मुंडमालार्याशाक्तान् हि संति गर्जति निदंति बहु जल्पकाः छिनत्ति तेषां देवेशी शिरां सिंहखलभेति

॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥

टी.अ.

२

॥ ५ ॥

॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ यौवने इति आत्मतुल्यमात्मानुरूपमाप्तिप्राप्यकामोदुर्जयोस्त्वितदाविलोच
 एवंकृतेसुखंमेस्यात्तवैवभविष्यति ॥ संतुष्टमयिराजेंद्रसैनिकानांनसंशयः ॥ २१ ॥ विचिंत्यमनसाभूपक
 न्यादानं समाचर ॥ नचात्रदूषणं किंचित्तापसोहंयतव्रतः ॥ २२ ॥ व्यासउवाच ॥ शर्यातिर्वचनं श्रुत्वामुने
 श्रितातुरोभवत् ॥ नदास्येप्यथवादास्ये किंचिन्नोवाचभारत ॥ २३ ॥ कथमंधायवृद्धायकुरुपायसुतामिमां ॥
 देवकन्योपमांदत्वा सुखीस्यामात्मसंभवां ॥ २४ ॥ कोवात्मनः सुखार्थाय पुत्र्याः संसारजं सुखं ॥ हरतेऽल्पमतिः
 पापोजानन्नपिशुभाशुभं ॥ २५ ॥ प्राप्यसाच्यवनं सुभूः पंचबाणशरादिता ॥ अंधंवृद्धं पतिं प्राप्य कथं कालं न
 यिष्यति ॥ २६ ॥ यौवने दुर्जयः कामो विशेषेण सुरूपया ॥ आत्मतुल्यं पतिं प्राप्य किंतु वृद्धं विलोचनं ॥ २७ ॥
 गौतमं तापसं प्राप्य रूपयौवनसंयुता ॥ अहल्यावासवेनाशुवंचितावरवर्णिनी ॥ २८ ॥ शप्ताचपतिना पश्चा
 द्ज्ञात्वा धर्मविपर्ययं ॥ तस्माद्भवतु मे दुःखं न ददामि सुकन्यकां ॥ २९ ॥ इति संविंत्य शर्यातिर्विमनाः स्वगृहं
 ययौ ॥ सचिवांश्च समादाय मंत्रं चक्रेति दुःखितः ॥ ३० ॥ भो मंत्रिणो ब्रुवंत्वद्य किं कर्तव्यं मया धुना ॥ पुत्रीदि
 याथ विप्राय भोक्तव्यं दुःखमेव वा ॥ ३१ ॥ विचारय ध्वं मिलिताहितं स्यान्मम वेकथं ॥ मंत्रिण ऊचुः ॥ किं ब्रूमोस्मि
 न्न हाराज संकटेति दुरासदे ॥ ३२ ॥ दुर्भगाय सुकन्यैषा कथं देयाति सुंदरी ॥ व्यास उवाच ॥ तदा चिंता कुलं वी
 क्ष्य पितरं मंत्रिणस्तदा ॥ ३३ ॥ सुकन्या त्वि गितं ज्ञात्वा प्रहस्येदमुवाच ह ॥ पितः कस्माद्भवानद्य चिंता व्याकु
 लितेन्द्रियः ॥ ३४ ॥ मत्कृते दुःखं संविमो विषण्णवदनोसिवै ॥ अहं गत्वामुनिं तत्र समाश्वास्य मया दितं ॥ ३५ ॥

नमंधंवृद्धं पतिं प्राप्य कामोदुर्जयोस्तीति किमु वक्तव्यं सर्वथैव दुर्जय इति भावः ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥
 ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.स.

॥ ६ ॥

॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

करिष्यामिप्रसन्नं तमात्मदानेन वैपितः ॥ इति राजा वचः श्रुत्वा भाषितं यत्सुकन्यया ॥ ३६ ॥ तामुवाच प्रस-
न्नात्मा सचिवानां च शृण्वतां ॥ कथं पुत्रित्वं नंदस्य परिचर्या वनेऽवला ॥ ३७ ॥ करिष्यसि जरार्तस्य क्रोधनस्य वि-
शेषतः ॥ कथं मंधाय चानेन रूपेण रतिसन्निभां ॥ ३८ ॥ ददामि जरयाग्रस्तदेहाय सुखवांछया ॥ पित्रा पुत्री प्र-
दातव्या वयोज्ञातिबलाय च ॥ ३९ ॥ धनधान्यसमृद्धाय नाधनाय कदाचन ॥ क्ते रूपं विशालाक्षिकासौवृद्धौ
वने चरः ॥ ४० ॥ कथं देयामया पुत्री तस्मै चातिवराय च ॥ उटजे नियतं वा सोयस्य नित्यं मनो हरे ॥ ४१ ॥ कथं
बुजपत्राक्षिकल्पनीयो मया तव ॥ मरणं मे वरं प्राप्तं सैनिकानां तथैव च ॥ ४२ ॥ न ते प्रदानं मंधायरोचतेऽपि कभा-
षिणि ॥ भवितव्यं भवत्येव धैर्येनैव त्यजाम्यहं ॥ ४३ ॥ सुस्थिरा भव सुश्रोणि न दास्येऽधाय कर्हिचित् ॥ राज्यं ति-
ष्ठतु वा या तु देहो यंच तथैव मे ॥ ४४ ॥ न त्वां दास्याम्यहं तस्मै नेत्रहीनाय बालके ॥ सुकन्या तं तदा प्राह श्रुत्वा तद्व-
चनं पितुः ॥ ४५ ॥ प्रसन्नवदना तीवने हयुक्तमिदं वचः ॥ सुकन्यो वाच ॥ न मे विंतापितः कार्या देहि मां मुनये धुना
॥ ४६ ॥ सुखं भवतु सर्वेषां लोकानां मत्कृते न हि ॥ सेवयिष्यामि संतुष्टापतिं परमपावनं ॥ ४७ ॥ भक्त्या पर-
मया चापि वृद्धं च विजने वने ॥ सती धर्मपरा चाहं चरिष्यामि सुसंमतं ॥ ४८ ॥ न भोगेच्छास्ति मे तात स्वस्थं चि-
त्तं मानव ॥ व्यास उवाच ॥ तच्छ्रुत्वा भाषितं तस्या मंत्रिणो विस्मयंगताः ॥ ४९ ॥ राजा च परमप्रीतो जगाम मु-
निसन्निधौ ॥ गत्वा प्रणम्य शिरसा तमुवाच तपोधनं ॥ ५० ॥ स्वामिन् गृहाण पुत्री मे सेवार्थं विधिवद्विभो ॥
इत्युक्त्वा स्मै ददौ पुत्रीं विवाहविधिनानृपः ॥ ५१ ॥ प्रतिगृह्य मुनिः कन्यां प्रसन्नो भार्गवो भवत् ॥ पारिवर्ह-
नजग्राह दीयमानं नृपेण ह ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥

॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥

टी.अ.

३

॥ ६ ॥

॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ चरिष्यामि देवां कति ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥

कन्यामेवाग्रहीत्कामपरिचर्यार्थमात्मनः ॥ प्रसन्नेस्मिन्मुनौजातं सैनिकानां सुखं तदा ॥ ५३ ॥ राज्ञश्च परमा
ल्लादः संजातस्तत्क्षणादिपि ॥ दत्त्वा पुत्रीं यदाराजागमनाय गृहं प्रति ॥ ५४ ॥ मतिं च कारतन्वं गीतदोवाच नृपं
सुता ॥ सुकन्योवाच ॥ गृहणममवासां सिभूषणानि च मे पितः ॥ ५५ ॥ वल्कलं परिधानाय प्रयच्छाजिनमु
त्तमं ॥ वेषंतु मुनिपत्नीनां कृत्वा तपसि सेवनं ॥ ५६ ॥ करिष्यामि तथा तात यथा ते कीर्तिरच्युता ॥ भविष्यति भुवः
पृष्ठे तथा स्वर्गे रसातले ॥ ५७ ॥ परलोकसुखायाहं चरिष्यामि दिवानिशं ॥ दत्त्वां यच्च वृद्धाय सुंदरीं युवतीं तु मां
॥ ५८ ॥ विंता त्वयानकर्तव्याशीलनाशसमुद्भवा ॥ अरुंधती वासिष्ठस्य धर्मपत्नी यथा भुवि ॥ ५९ ॥ तथैवाहं भ
विष्यामि नात्र कार्यं विचारणा ॥ अनसूया यथा सा ध्वी भार्याऽत्रेः प्रथिता भुवि ॥ ६० ॥ तथैवाहं भविष्यामि पु
त्री कीर्तिकरी तव ॥ सुकन्यावचनं श्रुत्वा राजा परमधर्मवित् ॥ ६१ ॥ दत्त्वा जिनं रुरोदाशुर्वीक्ष्य तां चारुहासिनीं
॥ त्यक्त्वा भूषणवासां सिमुनिवेषधरां सुतां ॥ ६२ ॥ विवर्णवदनो भूत्वा स्थितस्तत्रैव पार्थिव ॥ राज्यः सर्वाः सुतां
दृष्ट्वा वल्कलाजिनधारिणीं ॥ ६३ ॥ रुरुदुर्भृशशोकात् तं विपमाना इवाभवन् ॥ तामापृच्छय महीपालो मंत्रिभिः प
रिवारितः ॥ ६४ ॥ ययौ स्वनगरं राजा मुक्तापुत्रीं शुचार्पितां ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे सप्तमस्कं
धेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ व्यास उवाच ॥ गते राजनि सा बालापतिसेवापरायणा ॥ बभूव च तथा ग्रीनां सेवने ध
र्मतत्परा ॥ १ ॥ फलान्यादाय स्वादूनि मूलानि विविधानि च ॥ ददौ सामुनये बालापतिसेवापरायणा ॥ २ ॥

॥ ६३ ॥ ६४ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके सप्तमस्कंधेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ अर्धाधिकैः पंचपंचाशाद्विः पदैरतः परं ॥ सुकन्यादेवाभि
षजोः संवादश्चात्र कथ्यते ॥ १ ॥ च्यवनाय दत्तायाः सुकन्यायाः समाचारमाह गते राजनीति ॥ १ ॥ २ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.स.

॥ ७ ॥

॥ ३ ॥ वृक्ष्यामासने अग्रे प्रथमं ॥ ४ ॥ ५ ॥ भोजयामासेति भुजधातोः प्रत्यवसानार्थत्वात् द्विकर्मकत्वं ॥ ६ ॥ पूगं क्रमुकं पत्राणि नागवर्णादलानि ॥ ७ ॥

पतितं तद्देवेनाशुस्नापयित्वा मृगत्वचा ॥ परिवेष्ट्य शुभायां तु वृक्ष्यां स्थापितवत्यपि ॥ ३ ॥ तिलान्यवकु
शानग्रे परिकल्प्य कमंडलुं ॥ तपुवाच नित्यकर्म कुरुष्व मुनि सत्तम ॥ ४ ॥ तमुत्थाप्य करे कृत्वा समाप्ते नित्यकर्म
णि ॥ वृक्ष्यां वासंस्तरे बालाभर्तारं सन्यवेशयत् ॥ ५ ॥ पश्चादानीय पक्वानि फलानि च नृपात्मजा ॥ भोजयामा
स च्यवनं नीवारान्नं सुसंस्कृतं ॥ ६ ॥ भुक्तवन्तं पतितं तदवाच मनमादरात् ॥ पश्चाच्च पूगपत्राणि ददौ चादरसं
युता ॥ ७ ॥ गृहीतमुखवासं तं संवेश्य च शुभासने ॥ गृहीत्वा ज्ञां शरीरस्य च कारसाधनं ततः ॥ ८ ॥ फलाहारं
स्वयंकृत्वा पुनर्गत्वा च सन्निधौ ॥ प्रोवाच प्रणयोपेता किमाज्ञापयसे प्रभो ॥ ९ ॥ पादसंवाहनं ते च करोमि यदि
मन्यसे ॥ एवं सेवापरानित्यं बभूव पतितत्परा ॥ १० ॥ सायं होमावसाने सा फलान्याहृत्य सुंदरी ॥ अर्पयामा
स मुनये स्वादूनि च मृदूनि च ॥ ११ ॥ ततः शेषाणि बुभुजे प्रेमयुक्ता तदा ज्ञया ॥ सुस्पर्शास्तरणं कृत्वा शाययामास
तं मुनिः ॥ १२ ॥ सुप्ते सुखं प्रिये कांता पादसंवाहनं तदा ॥ चकार पृच्छती धर्मकुलस्त्रीणां कुशोदरी ॥ १३ ॥ पा
दसंवाहनं कृत्वा निशि भक्तिपरायणा ॥ निद्रितं च मुनिं ज्ञात्वा सुप्त्वा पचरणांतिके ॥ १४ ॥ शुचौ प्रतिष्ठितं वीक्ष्य
तालवृतेन भामिनी ॥ कुर्वाणा शीतलं वायुं सिषेवे स्वपतितदा ॥ १५ ॥ हेमं ते काष्ठसंभारं कृत्वाग्निज्वलनं पुरः ॥
स्थापयित्वा तथा पृच्छत् सुखं ते स्तीति चासकृत् ॥ १६ ॥ ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय जलपात्रं च मृत्तिकां ॥ समर्पयित्वा
शौचार्थं समुत्थाप्य पतिं प्रिया ॥ १७ ॥ स्थानादूरे च संस्थाप्य दूरं गत्वा स्थिराभवत् ॥ कृतशौचं पतिं ज्ञात्वा ग
त्वा जग्राहतं पुनः ॥ १८ ॥ आनीय श्रममव्यग्राचोपवेश्यासने शुभो ॥ मज्जलाभ्यां च प्रक्षाल्य पाद्मावस्य यथाविधि
॥ १९ ॥ दत्वा नृपात्रं तदंतधावनमाहरत् ॥ समर्प्य दंतकाष्ठं च यथा क्तं नृपनंदिनी ॥ २० ॥ ॥ ६५ ॥

शरीरस्य स्वशरीरस्य ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥

टी.अ.

४

॥ ७ ॥

॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ रविर्ब्रह्मसूर्यजौ ॥ २६ ॥ २७ ॥ नासत्यावश्विनौ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥

चकारोष्णं जलं शुद्धं समानीतं सुपावनं ॥ स्नानार्थं जलमाहृत्य प्रच्छप्रणयान्विता ॥ २१ ॥ किमाज्ञापयसे
ब्रह्मन्कृतं वैदं तधावनं ॥ उष्णोदकं सुसंपन्नं कुरु स्नानं समं त्रकं ॥ २२ ॥ वर्तते होमकालो यसं संध्या पूर्वा प्रवर्तते
॥ विधिवद्बनं कृत्वा देवतुर्धूजनं कुरु ॥ २३ ॥ एवं कन्यापतिलब्ध्वा तपस्विनमनिदिता ॥ नित्यं पर्यचरत्प्रित्या
तपसानियमेन च ॥ २४ ॥ अग्नीनामतिथीनां च शुश्रूषां कुर्वती सदा ॥ आराधयामास मुदा च्यवनं सा शुभानना
॥ २५ ॥ कस्मिंश्चिदथ काले तुरविजावश्विनावुभौ ॥ च्यवनस्याश्रमाभ्याशे क्रीडमानौ समागतौ ॥ २६ ॥ ज
ले स्नात्वा तु तां कन्यां निवृत्तां स्वाश्रमं प्रति ॥ गच्छंतीं चारुसर्वांगिरं विपुत्रावपश्यतां ॥ २७ ॥ तां दृष्ट्वा देवकन्या
भागत्वा चांतिकमादरात् ॥ ऊचतुः समभिद्रुत्य नासत्यावतिमोहितौ ॥ २८ ॥ क्षणं तिष्ठ वरारोहे प्रष्टुं त्वांगजगा
मिनि ॥ आवां देवसु तौ प्राप्ते ब्रूहि सत्यं शुविस्मिते ॥ २९ ॥ पुत्री कस्य पतिः कस्ते कथमुद्यानमागता ॥ एका किनीत
डागे स्मिन् स्नानार्थं चारुलोचने ॥ ३० ॥ द्वितीया श्रीरिवाभासिकां त्याकमललोचने ॥ इच्छामस्तु वयं ज्ञातुं त
त्वमास्याहि शोभने ॥ ३१ ॥ कोमलौ चरणौ कांते स्थितौ भूमावनावृतौ ॥ हृदये कुस्तः पीडां चलंतौ चललोच
ने ॥ ३२ ॥ विमानार्हासितन्वं गिकथं पद्भ्यां ब्रजस्यदः ॥ अनावृता त्रविपिने किमर्थं गमनं तव ॥ ३३ ॥ दासी शत
समायुक्ता कथं न त्वं विनिर्गता ॥ राजपुत्र्यप्सरवांसि वदसत्यं वरानने ॥ ३४ ॥ धन्या माता यतो जाता धन्यो सौ ज
नकस्तव ॥ वक्तुं त्वानैव शक्तौ च भर्तुर्भाग्यं तवानघे ॥ ३५ ॥ देवलोकं धिकाभूमिरियं वैवसुलोचने ॥ प्रचलंश्च
रणस्तेद्यसं पावयति भूतलं ॥ ३६ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥

अनावृता वनुपानत्कौ चललोचने इति कन्यासंबोधनं ॥ ३२ ॥ अनावृतोत्तरीयमहापट्टवस्त्ररहिता ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ नैव शक्ता वा वामित्यर्थः
॥ ३५ ॥ यतस्ते चरणौ भूतलं संपावयति पवित्रीकरोति ॥ ३६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.स.

॥ ८ ॥

सौभाग्याः अर्शं ब्रह्मजंतं सौभाग्यवंत इत्यर्थः ये चान्ये पक्षिणस्तेऽपि सौभाग्यवंत इत्यर्थः ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

टी.अ.

४

सौभाग्याश्च मृगाः कामं ये त्वां पश्यन्ति वै वने ॥ ये चान्ये पक्षिणः सर्वे भूरियं चातिपावना ॥ ३७ ॥ स्तुत्यालंतवचा
त्यर्थं सत्यं ब्रह्मिमुलोचने ॥ पिताकस्ते पतिः कसौ द्रष्टुमिच्छास्ति सादरं ॥ ३८ ॥ व्यास उवाच ॥ तयोरिति वचः
श्रुत्वा राजकन्याति सुंदरी ॥ तावुवाच त्रपाक्रांता देवपुत्रौ नृपात्मजा ॥ ३९ ॥ शर्याति तनयां मां वां वित्तभार्यां मु
नेरिह ॥ च्यवनस्य सती कांतां पित्रादत्तां यदृच्छया ॥ ४० ॥ पतिरंधोस्ति मे देवौ वृद्धश्चातीव तापसः ॥ तस्य
सैवामहोरात्रं करोमि प्रीतिमानसा ॥ ४१ ॥ कौयुवां किमिहायातौ पतिस्तिष्ठति चाश्रमे ॥ तत्रागत्य प्रकुरुत माश्र
मं वाद्यपावनं ॥ ४२ ॥ तदा कर्ण्यवचोदस्त्रावूचतुस्तां नराधिप ॥ कथं त्वमपि कल्याणि पित्रादत्ता तपस्विने ॥ ४३ ॥
भ्राजसे स्मिन् वने हि शेषो विद्युत्सौ दामिनी यथा ॥ न देवेष्वपि तुल्या हितवदृष्टास्ति भामिनी ॥ ४४ ॥ त्वं दिव्यां बरयो
ग्यासि शोभसे नाजिनैर्वृता ॥ सर्वाभरणसंयुक्ता नीलालकवरूथिनी ॥ ४५ ॥ अहो विधेर्दुष्कलितां विचेष्टितं य
दत्र रंभोरुवने विषीदसि ॥ विशालनेत्रे धमिमं पतिं प्रिये मुनिं समासाद्य जरातुरं भृशं ॥ ४६ ॥ वृथा वृतस्तेन भृ
शं न शोभसे न वयः प्राप्य सुनृत्य पंडिते ॥ मनोभवेनाशुशराः सुसंधिताः पतंतिकस्मिन् पतिरीदृशस्तवा ॥ ४७ ॥
त्वमंधभार्या न वयौ वनान्विता कृता सिधा त्राननुमंदबुद्धिना ॥ न चैनमर्हस्यसिताय ते क्षणे पतिं त्वमन्यं कुरु चारु
लोचने ॥ ४८ ॥ वृथैव ते जीवितमंबुजे क्षणे पतिं वसंप्राप्य मुनिं गतेक्षणं ॥ वने विवासं च तथा जिनां वरप्रधारणं
योग्यतरं न मन्यहे ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥

॥ ४३ ॥ सौदामिनीति विद्युतो विशेषणं तद्देशस्था विद्युदतिचंचला भवतीति तव तुल्या देवेष्वपि न दृष्टेऽर्थः ॥ ४४ ॥ वरूथः समूहः ॥ ४५ ॥
॥ ४६ ॥ वृथा वृतस्त्वयाप्यमं धृष्टस्य न वयः तेनांधेन त्वं न शोभसे ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥

॥ ८ ॥

उभयोरावयोरित्यर्थः ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ यत्रवनेनवंयस्तोस्तिसेवाचांधस्यवर्ततेतत्रकिंसुखमित्यन्वयः
किंतेमतमितिहेभूपतिपुत्रितोकेदुःखंमतमभिमतमस्तीत्यर्थः ॥ ५५ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेसप्तमस्कंधेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ अर्द्धाधि

अतो नवद्यांग्युभयोस्त्वमेककंवरंकुरुष्ववाहितासुलोचने ॥ किंयैत्वनंमानिनिसंकरोषिवृथामुनिंसुंदरिसेवमा
ना ॥ ५० ॥ किंसेवसेभाग्यविवर्जितंतंसमुद्भिन्नतंपोषणरक्षणाभ्यां ॥ त्यक्त्वामुनिसर्वसुखापवर्जितंभजानवद्यां
ग्युभयोस्त्वमेकं ॥ ५१ ॥ त्वनंदनेचैत्ररथेवनेचकुरुष्वकांतेप्रथितंविहारं ॥ अंधेनवृद्धेनकथंहिकालंविनेप्यसे
मानिनिमानहीनं ॥ ५२ ॥ भूपात्मजात्वंशुभक्षणाचजानासिसंसारविहारभावं ॥ भाग्येनहीनाविजनेवनेत्र
कालंकथंवाहयसेवृथाच ॥ ५३ ॥ तस्माद्भजस्वपिकभाषिणिचास्वक्रेकंद्वयोस्तवसुखायविशालनेत्रे ॥ देवा
लयेषुचकृशोदरिभुंक्ष्वभोगांस्त्यक्त्वामुनिंजरठमाशुनृपेन्द्रपुत्रि ॥ ५४ ॥ किंतेसुखंचात्रवनेमुकेशिवृद्धेनसार्द्धं
विजनेमृगाक्षि ॥ सेवातथांधस्यनवंयश्चकिंतेमतंभूपतिपुत्रिदुःखं ॥ ५५ ॥ शशिमुखित्वमतीवसुकोमला
फलजलाहरणंतवनोचितं ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेसप्तमस्कंधेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ व्यासउवाच
॥ तयोस्तद्भाषितंश्रुत्वावेपमानानृपात्मजा ॥ धैर्यमालंब्यतौतत्रवभाषेमितिभाषिणी ॥ १ ॥ देवौ
वांरविपुत्रौचसर्वज्ञौसुरसंमतौ ॥ सतीमांधर्मशीलांचनैवंवदितुमर्हथ ॥ २ ॥ पित्रादत्तासुरश्रेष्ठौमुनयेयोगधर्मि
णे ॥ कथंगच्छामितंमार्गं पुंश्चलीगणसेवितं ॥ ३ ॥ द्रष्टव्यंसर्वलोकस्यकर्मसाक्षीदिवाकरः ॥ कश्यपश्चैवसंभू
तौनैवंभाषितुमर्हथ ॥ ४ ॥ कुलकन्यापतित्यक्त्वाकथमन्यभजेन्नरं ॥ असोरेस्मिन्हिसंसारेजानंतौधर्मनिर्णयं
॥ ५ ॥ यथेच्छंगच्छतांदेवौशापंदास्यामिवानघौ ॥ सुकन्याहंचशर्यातेःपतिभक्तिपरायणा ॥ ६ ॥

कैरष्टपंचाशद्भिः श्लोकैरथोच्यते ॥ च्यवनस्ययुवावस्थारविपुत्रप्रसादना ॥ १ ॥ अश्विनीकुमारभाषणानंतरंजातंवृत्तमाह तयोस्तद्भाषितमिति ॥ २ ॥
॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ जानंतावितिरविपुत्रयोः संबोधनं ॥ ५ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.स

॥ ९ ॥

॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ चातुर्यपंडितेति संबोधनं ॥ १० ॥ ११ ॥ १० ॥ १३ ॥ एतेन समयेनेति पूर्ववाच्ये कोसौ समयस्तत्राह तं शृणुत्वमिति मयोदितं वक्ष्यमाणं तं समयं शृणुइत्यर्थः ॥ १४ ॥ समावयवरूपं चास्मत्सदृशावयवरूपवंतमित्यर्थः तत्र त्रयाणामिति तदास्म

॥ व्यास उवाच ॥ इत्याकर्ण्य वचस्तस्यानासत्यौ विस्मितौ भृशं ॥ तावन्नूतां पुनस्त्वेनां शंकमानौ भयं मुनेः ॥ ७ ॥ राजपुत्रिप्रसन्नौ ते धर्मेण वर्यर्णिनि ॥ वरं वरय सुश्रोणिदा स्यावः श्रेयसे तव ॥ ८ ॥ जानीहि प्रमदे नूनमावां दे वभिषग्वरौ ॥ युवानं रूपसपन्नं प्रकुर्यातां पतितव ॥ ९ ॥ ततस्त्रयाणामस्माकं पतिमेकतमं वृणु ॥ समानरूप देहानां मध्ये चातुर्यपंडिते ॥ १० ॥ सातयोर्वचनं श्रुत्वा विस्मितास्वपतितदा ॥ गत्वोवाच तयोर्वाक्यं ताभ्यामु क्तं यदद्भुतं ॥ ११ ॥ सुकन्योवाच ॥ स्वामिन्सूर्यसुतौ देवौ संप्राप्तौ च्यवनाश्रमे ॥ दृष्ट्वैमयादिव्यदेहौ नासत्यौ भृ गूनंदन ॥ १२ ॥ वीक्ष्य मां चारुसर्वांगी जातौ कामातुरावुभौ ॥ कथितं वचनं स्वामिन्पतितेन वयौवनं ॥ १३ ॥ दिव्यदेहं करिष्यावश्चक्षुष्मंतं मुनिं किल ॥ एतेन समयेनाद्यतं शृणु त्वं मयोदितं ॥ १४ ॥ समावयवरूपं च करि ष्यावः पतितव ॥ तत्र त्रयाणामस्माकं पतिमेकतमं वृणु ॥ १५ ॥ तच्छ्रुत्वा हि मिहायाता प्रष्टुं त्वां कार्यमद्भुतं ॥ किं कर्तव्यमतः साधो ब्रूह्यस्मिन् कार्यसंकटे ॥ १६ ॥ देवमायापि दुर्ज्ञेयानजानेकपटंतयोः ॥ यदाज्ञापय सर्वज्ञ तत्क रोमितवेप्सितं ॥ १७ ॥ च्यवन उवाच ॥ गच्छ कांते द्यनासत्यौ वचनान्मम सुव्रते ॥ आनयस्व समीपं मेशीघ्रं दे वभिषग्वरौ ॥ १८ ॥ क्रियतामाशु तद्वाक्यं नात्र कार्या विचारणा ॥ व्यास उवाच ॥ एवं सा समनुज्ञाता तत्र गत्वा वचो ब्रवीत् ॥ १९ ॥ क्रियतामाशु नासत्यौ समयेन सरोत्तमौ ॥ तच्छ्रुत्वा चाश्विनौ वाक्यं तस्यास्तौ तत्र चागतौ ॥ २० ॥

द्वाग्येयदित्वं लिखितास्यस्तदास्माकमेव भविष्यसीतितयोरविपुत्रयोरभिप्रायः ॥ १५ ॥ १६ ॥ कपटंतयोरिति केनाभिप्रायेणेदं तैरुक्तमितितयोः कपटं न जाने हमित्यर्थः ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ क्रियतामिति समयेन पूर्वोक्तपणबंधेन यद्वद्व्यां कर्तव्यत्वेनाभिलषितं तत्क्रियतामित्यर्थः ॥ २० ॥

टी.अ.

५

॥ ९ ॥

॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥

ऊचतूराजपुत्रीतिपतिस्तवविश्वपः ॥ रूपार्थव्यवनस्तूर्णततोऽप्रविवेशह ॥ २१ ॥ अश्विनावपिप
श्चात्तप्रविष्टौसरउत्तमं ॥ ततस्तेनिसृतास्तस्मात्सरसस्तक्षणात्रयः ॥ २२ ॥ तुल्यरूपादिव्यदेहायुवानः
सदृशाःकिल ॥ दिव्यकुंडलभूषाढ्याःसमानावयवास्तथा ॥ २३ ॥ तेष्वेवन्सहिताःसर्वेवृणीष्ववरवर्णिनि ॥
अस्माकमीप्सितंभद्रेपतित्वममलानने ॥ २४ ॥ यस्मिन्वाप्यधिकाप्रीतिस्तंवृणुष्ववरानने ॥ व्यासउवाच ॥
सादृष्टातुल्यरूपांस्तान्समानवयवस्तथा ॥ २५ ॥ एकस्वरांस्तुल्यवेषांस्त्रीन्वैदेवसुतोपमान् ॥ सातुसंशय
मापन्नावीक्ष्यतान्सदृशाकृतीन् ॥ २६ ॥ अजानतीपतिसम्यक्क्याकुलासमर्चितयत् ॥ किंकरोमित्रयस्तुल्याः
कंवृणोमिनवेदयहं ॥ २७ ॥ पतिदेवसुताह्येतेसंशयेपतितास्म्यहं ॥ इन्द्रजालमिदंसम्यक्देवाभ्यामिहकल्पि
तं ॥ २८ ॥ कर्तव्यंकिंमयाचात्रमरणंसमुपागतं ॥ नमयापतिमुत्सृज्यवरणीयःकथंचन ॥ २९ ॥ देवस्त्वाधु
निकःकश्चिदित्येषाममधारणा ॥ इतिसंचिंत्यमनसापरांविश्वेश्वरींशिवां ॥ ३० ॥ दध्यौभगवतींदेवीतुष्टावचकृ
शोदरी ॥ सुकन्योवाच ॥ शरणंत्वांजगन्मातःप्राप्तास्मिभृशदुःखिता ॥ ३१ ॥ रक्षमेद्यसतीधर्मनमामिचरणौ
तव ॥ नमःपद्मोद्भवेदेविनमःशंकरवल्लभे ॥ ३२ ॥ विष्णुप्रियेनमोलक्ष्मिदेवमातःसरस्वति ॥ इदंजगत्त्वयासृ
ष्टंसर्वस्थावरजंगमं ॥ ३३ ॥ पासित्वमिदमव्यग्रातथाऽत्सिलोकशांतये ॥ ब्रह्मविष्णुमहेशानांजननीत्वंसुसं
मता ॥ ३४ ॥ बुद्धिदासित्वमज्ञानांज्ञानिनांभोक्षदासदा ॥ आद्यात्वंप्रकृतिःपूर्णापुरुषःप्रियदर्शना ॥ ३५ ॥
भुक्तिमुक्तिप्रदासित्वंप्राणिनांविशदात्मनां ॥ अज्ञानांदुःखदाकामंसत्वानांसुखसाधना ॥ ३६ ॥ सिद्धिदायो
गिनामंबजयदाकीर्तिदापुनः ॥ शरणंत्वांप्रपन्नास्मि विस्मयंपरमंगता ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥

॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥

दे.भा.स.

॥१०॥

देवाभ्यामश्विनीकुमाराभ्यांकूटंकपटंचरितमाचरितमित्यर्थः ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥
पतिं दर्शय मे मातर्मग्नास्मि नूशोकसागरे ॥ देवाभ्यांचरितंकूटंकवृणोमिविमोहिता ॥ ३८ ॥ पतिं दर्शय सर्वज्ञे
विदित्वामे सतीव्रतं ॥ व्यास उवाच ॥ एवंस्तु तात दादेवी तथा त्रिपुरसुंदरी ॥ ३९ ॥ हृदये स्यास्तदा ज्ञानंददा वा
शुसुखोदयं ॥ निश्चित्य मनसा तु ल्यवयोरूपधरान् सती ॥ ४० ॥ प्रसमीक्ष्य तु तान् सर्वान्वब्रूवात्स्वकं पतिं ॥
वृतेथ च्यवने देवौ संतुष्टौ तौ बभूवतुः ॥ ४१ ॥ सती धर्मसमालोक्य संप्रीतो ददतुर्वरं ॥ भगवत्याः प्रसादेन प्रसन्नौ
तौ सुरोत्तमौ ॥ ४२ ॥ मुनिमामंत्र्य तरसा गमना योद्यता वुभौ ॥ लब्ध्वा तु च्यवनो रूपं नेत्रेभार्याचर्यौ वनां ॥ ४३ ॥
हृष्टो ब्रवीन्महातेजास्तौ नासत्याविदं वचः ॥ उपकारः कृतो यं मे युवाभ्यां सुरसत्तमौ ॥ ४४ ॥ किं ब्रवीमि सुखं प्रा
प्तं संसारे स्मिन्ननुत्तमे ॥ प्राप्य भार्यासु केशीं तांदुःखं मे भवदन्वहं ॥ ४५ ॥ अंधस्य चातिवृद्धस्य भोगहीनस्य
कानने ॥ युवाभ्यां नयने दत्ते यौवनं रूपमद्भुतं ॥ ४६ ॥ संपादितं ततः किंचिदुपकर्तुमहं ब्रुवे ॥ उपकारिणि मित्रेयो
नोपकुर्यात्कथंचन ॥ ४७ ॥ तं धिगस्तु नरं देवौ भवेच्च ऋणवान् भुवि ॥ तस्माद्वो वांछितं किंचिद्वा तु मिच्छामि
सांप्रतं ॥ ४८ ॥ आत्मनो ऋणमोक्षाय देवेशौ नूतनस्य च ॥ प्रार्थितं वां प्रदास्यामि यदलभ्यं सुरासुरैः ॥ ४९ ॥
ब्रुवाथां वामनो हि पृथ्वीतोस्मि सुकृतेन वां ॥ श्रुत्वा तौ तु मुनेर्वाक्यमभिमंत्र्य परस्परं ॥ ५० ॥ तमूचतुर्मुनिश्रेष्ठं
सुकन्यासहितं स्थितं ॥ मुनेऽपि तुः प्रसादेन सर्वे नौ मनसेप्सितं ॥ ५१ ॥ उत्कंठासौ मपानस्य वर्तते नौ सुरैः सह
॥ भिषजाविति देवेन निषिद्धौ च समग्रहे ॥ ५२ ॥ शक्रेण वितते यज्ञे ब्रह्मणः कनकाचलो ॥ तस्मात्त्वमपि धर्मज्ञयदि श
क्तोऽसि तापसा ॥ ५३ ॥ कार्यमेतद्विकर्तव्यं वांछितं नौ ससंमतं ॥ एतद्विज्ञाय ब्राह्मणं कुरुवांसौ मया यिनौ ॥ ५४ ॥

॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ चमसग्रहेग्रहः सोमाधारः पात्रविशेषस्तस्मिन्निषिद्धौ ग्रहेण सिद्धौ ॥ न मनयोर्नास्तीति निषिद्धावित्यर्थः
॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥

टी.अ.

५

॥१०॥

॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके सप्तमस्कंधे पंचमोऽध्यायः ॥ ५॥ एकषष्टिलोकवैश्वदेवमहात्मना ॥

पिपासास्ति सुदुष्प्रापा त्वत्तः समुपयास्य ॥ च्यवनस्तु तयोः प्राह त्वद्युत्वावचनं मृदु ॥ ५५ ॥ यद्वहं रूपं
संपन्नो वयसा च समन्वितः ॥ कृतो भवद्भ्यां वृद्धः स नूभार्यां च प्राप्तवानिति ॥ ५६ ॥ तस्माद्युवां कंरिष्यामि प्रीत्या
हं सोमपायिनौ ॥ मिषतो देवराजस्य सत्यमेतद्वीम्यहं ॥ ५७ ॥ राज्ञस्तु वितते यज्ञेशर्यस्तिरमितद्युतेः ॥ इत्या
कर्ण्यवचो हृष्टौ तौ दिवं प्रति जग्मतुः ॥ ५८ ॥ च्यवनस्तां गृहीत्वा तु जगामाश्रममंडलं ॥ इति श्रीदेवीभागवते
महापुराणे सप्तमस्कंधे पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ जनमेजय उवाच ॥ च्यवनेन कथं वै द्यौतौ कृतौ सोमपायिनौ ॥ वच
नं च कथं सत्यं जातं तस्य महात्मनः ॥ १ ॥ मानुषस्य बलं कीदृग्देवराज बलं प्रति ॥ निषिद्धौ भिषजौ तेन कृतौ तौ सो
मपायिनौ ॥ २ ॥ धर्मनिष्ठौ तदा श्रयं विस्तरेण वद प्रभो ॥ चरितं च्यवनस्याद्यश्रोतुकामोऽस्मि सर्वथा ॥ ३ ॥
व्यास उवाच ॥ निशामय महाराज चरितं परमाद्भुतं ॥ च्यवनस्य मखेतस्मिन् शर्यातेर्भुवि भारत ॥ ४ ॥ सुकन्यां
सुंदरीं प्राप्य च्यवनः सुरसंनिभः ॥ विजहार प्रसन्नात्मा देवकन्यामिवापरः ॥ ५ ॥ कदाचिदथ शर्यातिभार्या चिंता तु
राभृशं ॥ पतिं प्राह वेपमानावचनं रुदती प्रिया ॥ ६ ॥ राजन् पुत्री त्वया दत्ता मुनयेऽध्यायकानने ॥ मृता जीवति वा
सा तु द्रष्टव्या सर्वथा त्वया ॥ ७ ॥ गच्छ नाथ मुनेस्तावदाश्रमं द्रुमादरात् ॥ किं करोति सुकन्या सा प्राप्य नाथं त
थाविधं ॥ ८ ॥ पुत्री दुःखेन राजर्षे दग्धास्मि सर्वथा हृदि ॥ तामानय विशालाक्षी तपःक्षामां भदंतिके ॥ ९ ॥ पश्या
मि सर्वथा पुत्रीं कृशांगीं वल्कलावृतां ॥ अंधं पतिं समासाद्य दुःखभाजं कृशोदरीं ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥

शर्यातिः प्रेरितो यज्ञं च कोरति निगद्यते ॥ १ ॥ अश्विनी कुमारगमनानंतरं जातं वृत्तराजा पृच्छति च्यवनेनेति ॥ १ ॥ २ ॥ धर्मनिष्ठेति व्याससं
बोधनं ॥ ३ ॥ शर्यातेर्मखे च्यवनस्य चरितमित्यन्वयः ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥

दे.भा.स.

॥११॥

मुनिमपिदृष्टुमित्यन्वयः ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ मानवेमनोःकुलेइत्यन्वयः ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥

शर्यातिरुवाच ॥ गच्छामोद्यविशालाक्षिसुकन्यांद्रष्टुमादरात् ॥ प्रियपुत्रीवरारोहेमुनिंतंशंसितव्रतं ॥ ११ ॥
॥ व्यासउवाच ॥ एवमुक्त्वातुशर्यातिःकामिर्निशोकसंकुलां ॥ जगामरथमारुह्यत्वरितश्चाश्रमंमुनेः ॥ १२ ॥
गत्वाश्रमसमीपेतुतमपश्यन्महीपतिः ॥ नवयौवनसंपन्नंदेवपुत्रोपमंमुनिं ॥ १३ ॥ तंविलोकयामराकारंवि
स्मयनंपतिर्गतः ॥ किंकृतंकुत्सितंकर्मपुत्र्यालोकविगर्हितं ॥ १४ ॥ निहतोसौमुनिर्वृद्धस्त्वनयान्यःपतिःकृ
तः ॥ कामपीडितयाकामंप्रशांतोप्यतिनिर्धनः ॥ १५ ॥ दुःसहोयंपुष्पधन्वाविशेषेणचयौवने ॥ कुलेकलंकः
सुमहाननयामानवेकृतः ॥ १६ ॥ धिक्त्तस्यजीवितंलोकेयस्यपुत्रीहिकुत्सिता ॥ सर्वपापैस्तुदुःखायपुत्री
भवतिदेहिनां ॥ १७ ॥ मयात्वनुचितंकर्मकृतंस्वार्थस्यसिद्धये ॥ वृद्धायांधाययादत्तापुत्रीसर्वात्मनाकिला ॥ १८ ॥
कन्यायोग्यायदातव्यापित्रासर्वात्मनाकिल ॥ तादृशंहिफलंप्राप्त्यादृशंवैकृतंमया ॥ १९ ॥ हन्मिचेदद्यतनयां
दुःशीलांपापकारिणीं ॥ स्त्रीहत्यादुस्तरास्यान्मेतथापुत्र्याविशेषतः ॥ २० ॥ मनुवंशस्तुविख्यातःसकलंकः
कृतोमया ॥ लोकापवादोबलवान्दुस्त्याज्यास्नेहशृंगला ॥ २१ ॥ किंकरोमीतिचिंताब्ध्यैयदामग्नःसपार्थिवः ॥ सु
कन्ययातदादैवात्दृष्टश्चिताकुलःपिता ॥ २२ ॥ सादृष्ट्यातंजगामाशुसुकन्यापितुरंतिके ॥ गत्वापप्रच्छभूपालंप्रे
मपूरितमानसा ॥ २३ ॥ किंविचारयसेराजन्चिंताव्याकुलिताननुः ॥ उपविष्टंमुनिंवीक्ष्ययुवानमंबुजेक्षणं
॥ २४ ॥ एह्येहिपुरुषव्याघ्रप्रणमस्वपतिंमम ॥ माविषादनृपश्रेष्ठसांप्रतंकुरुमानव ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥

पुत्र्याविशेषतः कन्याहत्यास्त्रीहत्याचेत्युभयमत्रस्यादित्यर्थः ॥ २० ॥ किंचहंतुमर्पितंशक्तिमयितोदुस्त्यादुस्नेहशृंगलाभवतीत्याह दुस्त्या
न्येति ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥

टी.अ.

६

॥११॥

पुरःस्थांअग्रस्थां ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ दुराचारेइतिकन्यासंबोधनं ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

॥ व्यासउवाच ॥ इतिपुत्र्यावचःश्रुत्वाशर्यातिःक्रोधपीडितः ॥ प्रोवाचिवचनंराजापुरःस्थांतनयांततः ॥ २६ ॥
॥ राजोवाच ॥ कमुनिश्च्यवनःपुत्रिवृद्धोऽधस्तापसोत्तमः ॥ कोयंयुवामदोन्मतःसंदेहोत्रमहान्मम ॥ २७ ॥
मुनिःकिंनिहतःपापेत्वयादुष्कृतकारिणि ॥ नूतनोसौपतिःकामात्कृतःकुलविनाशिनि ॥ २८ ॥ सोहंचितातुर
स्तंनपश्याम्याश्रमसंस्थितांकिंकृतदुष्कृतंकर्मकुलटाचरितंकिल ॥ २९ ॥ निमग्नोहंदुराचारेशोकाब्धौत्वत्कृतेधु
ना ॥ दृष्ट्वेनंपुरुषंदिव्यमदृष्ट्वाच्यवनंमुनिं ॥ ३० ॥ विहस्यतमुवाचाशुसाश्रुत्वावचनंपितुः ॥ गृहीत्वानीयपितरंभर्तु
रंतिकमादरात् ॥ ३१ ॥ च्यवनोसौमुनिस्तातजामातातेनसंशयः ॥ अश्विभ्यामीदृशःकांतःकृतःकमललोचनः
॥ ३२ ॥ यदृच्छयात्रसंप्राप्तौनासत्यावाश्रमेमम ॥ ताभ्यांकरुणयानूनंच्यवनस्तादृशःकृतः ॥ ३३ ॥ नाहं
तवसुतातातथास्यांपापकारिणी ॥ यथात्वंमन्यसेराजनविमूढोरूपसंशये ॥ ३४ ॥ प्रणमत्वंमुनिराजन
भार्गवंच्यवनंपितः ॥ आपृच्छकारणंसर्वकथयिष्यतिविस्तरं ॥ ३५ ॥ इतिश्रुत्वावचःपुत्र्याःशर्यातिस्त्वरित
स्तदा ॥ प्रणनाममुनितत्रगत्वापप्रच्छसादरं ॥ ३६ ॥ राजोवाच ॥ कथयस्वस्ववृत्तांतंभार्गवाशुयथोचितं ॥
नयनेचकथंप्राप्तेकगतातेजरापुनः ॥ ३७ ॥ संशयोयंमहान्मेस्तिरूपं दृष्ट्वातिसुंदरं ॥ वदविस्तरतोब्रह्मन्श्रु
त्वाहंसुखमाप्नुयां ॥ ३८ ॥ च्यवनउवाच ॥ नासत्यावत्रसंप्राप्तौदेवानांभिषजावुभौ ॥ उपकारःकृतस्ताभ्यां
कृपयानृपसत्तम ॥ ३९ ॥ मयाताभ्यांवरोदत्तउपकारस्यहेतवे ॥ करिष्यामिमखेरान्नोभवंतौसोमपायिनौ
॥ ४० ॥ एवंमयावयःप्राप्तंलोचनेविमलेतथा ॥ स्वस्थोभवमहाराजसंविशस्वासनेशुभे ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥

॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ उपकारोमंत्रकृतउपायः ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥

दे.भा.स.

॥१२॥

मे ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ सोममखेअग्रिष्टोमयज्ञे ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ऐतयोरश्वि

इत्युक्तःसतुविप्रेणसभार्यःपृथिवीपतिः ॥ उपोपविष्टःकल्याणीःकथाश्चक्रेमहात्मना ॥ ४२ ॥ अथैनंभार्गवः
प्राहराजानंपरिसांत्वयन् ॥ याजयिष्यामिराजंस्त्वांसंभारानुपकल्पय ॥ ४३ ॥ मयाप्रतिश्रुतंताभ्यांकर्तव्यौ
सोमपौयुवां ॥ तत्कर्तव्यंनृपश्रेष्ठतवयज्ञेतिविस्तरे ॥ ४४ ॥ इंद्रंनिवारयिष्यामिकुर्वतेजोबलेनवै ॥ पाययि
ष्यामिराजेन्द्रसोमंसोममखेतव ॥ ४५ ॥ ततःपरमसंतुष्टःशर्यातिःपृथिवीपतिः ॥ च्यवनस्यमहाराजतद्वा
क्यंप्रत्यधूजयत् ॥ ४६ ॥ संमान्यच्यवनंराजाजगामनगरंप्रति ॥ सभार्यश्चातिसंतुष्टःकुर्वन्वार्तामुनेःकिल ॥ ४७ ॥
प्रशस्तेहनियज्ञीयेसर्वकामसमृद्धिमान् ॥ कारयामासशर्यातिर्यज्ञायतनमुत्तमं ॥ ४८ ॥ समानीयमुनीन्पू
ज्यान्वासिष्ठप्रमुखानसौ ॥ भार्गवोयाजयामासच्यवनःपृथिवीपतिं ॥ ४९ ॥ विततेतुतथायज्ञेदेवाःसर्वेसवा
सवाः ॥ आजग्मुश्चाश्विनौतत्रसोमार्थमुपजग्मतुः ॥ ५० ॥ इंद्रस्तुशंकितस्तत्रवीक्ष्यतावश्विनावुभौ ॥ पप्र
च्छचसुरान्सर्वान्किमेतौसमुपागतौ ॥ ५१ ॥ चिकित्सकौनसोमाहौकेनानीताविहेतिच ॥ नाब्रुवन्नमरास्त
त्रराज्ञस्तुविततेमखे ॥ ५२ ॥ अगृण्हाद्व्यवनःसोममश्विनोर्देवयोस्तदा ॥ शक्रस्तंवारयामासमागृहाणैतयो
र्गृहं ॥ ५३ ॥ तमाहच्यवनस्तत्रकथमेतौरवेःसुतौ ॥ नग्रहाहौचनासत्यौब्रूहिसत्यंशचीपते ॥ ५४ ॥ नसंक
रौसमुत्तन्नौधर्मपत्नीसुतौरवेः ॥ केनदोषेणदेवेन्द्रनाहौसोमंभिषग्वरौ ॥ ५५ ॥ निर्णयोत्रमखेशक्रकर्तव्यःसर्वदैव
तैः ॥ ग्राहयिष्याम्यहंसोमंकृतौतौसोमपौमया ॥ ५६ ॥ प्रेरितोसौमयाराजामखायमववान्किल ॥ एतदर्थंकरि
ष्यामिसत्यंमेवचनंविभो ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥

नोर्ग्रहंसोमपूरितंपात्रंमागृहाण यज्ञेतयोर्निषिद्धत्वादित्यर्थः ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥

टी.अ.

६

॥१२॥

॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके सप्तमस्कंधे षष्ठोऽध्यायः ॥ ६॥ द्विपंचाशच्छ्लोकवर्षैः श्रूयते स्तु महामखे ॥ अश्विनौ
सोमपानेन संतुष्टाविति कीर्त्यते ॥ २ ॥ अश्विन्यां ग्रहपात्रदानानंतरं जातं वृत्तमाह दत्ते ग्रहेति ॥ १ ॥ विश्वरूपमिति विश्वरूपस्त्वाष्ट्रस्तस्य कथा

आभ्यामुपकृतं शक्रतथा दत्तं नवं वयः ॥ तस्मात्प्रत्युपकारस्तु कर्तव्यः सर्वथामया ॥ ५८ ॥ इंद्र उवाच ॥ चि
किं त्सकौ कृतावेतो नासत्यौ निदितासुरैः ॥ उभावेतो न सोमाहौ मागृहाणेतयोर्ग्रहं ॥ ५९ ॥ च्यवन उवाच ॥ अहल्या
जारसं यच्छकोपं चाद्यनिरर्थकं ॥ वृत्रघ्न किं हि तौ सत्यौ न सोमाहौ सुरात्मजौ ॥ ६० ॥ एवं विवादे समुपस्थिते च न
कोपि वाचं तमुवाच भूप ॥ ग्रहं तयोर्भार्गवस्तिग्मतेजाः संग्राहयामास तपो बलेन ॥ ६१ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महा
पुराणे सप्तमस्कंधे षष्ठोऽध्यायः ॥ ६॥ व्यास उवाच ॥ दत्ते ग्रहे तुराजेन्द्र वासवः कुपितो भृशं ॥ प्रोवाच च्यवनं तत्र दर्शय
न्बलमात्मनः ॥ १ ॥ मा ब्रह्मबंधो मर्यादामिमां त्वं कर्तुमर्हसि ॥ वधिष्यामि द्विपंतं त्वां विश्वरूपमिवापरं ॥ २ ॥
च्यवन उवाच ॥ मा वमं स्थामहात्मानो रूपद्रविणवर्चसा ॥ यौ च क्रतुर्मां मघवन् वृन्दारकमिवापरं ॥ ३ ॥ ऋते
त्वां विबुधाश्चान्ये कथं वा ददते ग्रहं ॥ अश्विनावपि देवैर्द्रदेवौ विद्विपरंतपौ ॥ ४ ॥ इंद्र उवाच ॥ भिषजौ नार्हतः कामं
ग्रहं यज्ञे कथंचन ॥ यदिदित्ससि मंदात्मन् शिरश्छेत्स्यामि सांप्रतं ॥ ५ ॥ व्यास उवाच ॥ अनादृत्य तु तद्वाक्यं
वासवस्य च भार्गवः ॥ ग्रहं तु ग्राहयामास भर्त्सयन्निव तं भृशं ॥ ६ ॥ सोमपात्रं यदा ताभ्यां गृहीतं तु पिपीषया ॥ समी
क्ष्य बलभिदेव इदं वचनमब्रवीत् ॥ ७ ॥ आभ्यामर्थाय सोमं त्वं ग्राहयिष्यसि चेत्स्वयं ॥ वज्रं तु प्रहरिष्यामि विश्व
रूपमिवापरं ॥ ८ ॥ वासवे नैव मुकस्तु भार्गवश्चातिगर्वितः ॥ जग्राह विधिवत् सोममश्विन्यामतिमन्युमान् ॥ ९ ॥

षष्ठस्कंध उक्तः ॥ २ ॥ ३ ॥ ऋतेत्वामिति त्वां विना त्वत्तोभिन्ना यथान्ये देवा ग्रहमाददते गृह्णन्ति तथा श्विनावपि देवौ विद्वि ततस्तयोः कुतो नाधिकार
इत्यर्थः ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ आभ्यामिति तृतीयांतं अर्थाय स्वस्य प्रयोजनाय ॥ ८ ॥ जग्राह अंतर्गावित्पण्यर्थो जग्राहिः ग्राहयामासेत्यर्थः ॥ ९ ॥

दे.भा.स.

॥१३॥

॥ १० ॥ स्तंभयामासेति स्वशरीरेनप्रातंयावत्तावदित्यर्थः ॥ ११ ॥ शृतं पक्वं ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥

इंद्रोपिप्राक्षिपत्कोपाद्वज्रमस्मैस्वमायुधं ॥ पश्यतां सर्वदेवानां मूर्यकोटिसमप्रभं ॥ १० ॥ प्रेरितं चाशानिं प्रेक्ष्य च नस्तपसा ततः ॥ स्तंभयामास वज्रं सशक्रस्यामिततेजसः ॥ ११ ॥ कृत्यया समहाबाहुरिंद्रं हंतुमिहोद्यतः ॥ जुहावाग्नौ शृतं हव्यं मंत्रेण मुनिसत्तमः ॥ १२ ॥ तत्र कृत्या समुत्पन्ना च्यवनस्य तपो वलात् ॥ प्रबलः पुरुषः क्रूरो बृहत्कायो महासुरः ॥ १३ ॥ मदो नाम महाघोरो भयदः प्राणिनामिह ॥ शरीरे पर्वताकारस्तीक्ष्णदंष्ट्रो भयानकः ॥ १४ ॥ चतस्रश्चायता दंष्ट्रा योजनानां शतं शतं ॥ इतरे त्वस्य दशना बभूवुर्दशयोजनाः ॥ १५ ॥ बाहुपर्वतसंकाशा वायतौ क्रूरदर्शनौ ॥ जिह्वा तु भीषणा क्रूरालेलिहाना नभस्तलं ॥ १६ ॥ ग्रीवा तु गिरिशृंगाभाकठिना भीषणा भृशं ॥ नखा व्याघ्रनखप्रख्याः केशाश्चातीव भीषणाः ॥ १७ ॥ शरीरं कज्जलाभं च तस्य चास्यं भयानकं ॥ नेत्रे दावानलप्रख्ये भीषणेति भयानके ॥ १८ ॥ हनुरेकास्थिता तस्य भूमाविका दिवंगता ॥ एवंविधः समुत्पन्नो मद्गेनाम बृहत्तनुः ॥ १९ ॥ तं विलोक्य सुराः सर्वे भयमाजग्मु रंहसा ॥ इंद्रोपि भयसंत्रस्तो युद्धाय न मनो दधे ॥ २० ॥ दैत्योपि वदने कामं वज्रमादाय संस्थितः ॥ व्याघ्रं नभोघोरदृष्टिर्ग्रसन्निवजगन्त्रयं ॥ २१ ॥ स भक्षयिष्यत्संक्रुद्धः शतक्रतुमुपाद्रवत् ॥ चुक्रुशुश्च सुराः सर्वे हाहताः स्मेतिसंस्थिताः ॥ २२ ॥ इद्रस्तंभितबाहुस्तुमुमुक्षुर्वज्रमंतिकात् ॥ नशशाकपर्वितस्मिन् प्रहर्तुं पाकशासनः ॥ २३ ॥ वज्रहस्तः सुरेशानस्तं वीक्ष्य कालसन्निभं ॥ सस्मार मनसा तत्र गुरुं समयकोविदं ॥ २४ ॥ स्मरणादांजगामा शुबृहस्पतिरुदारधीः ॥ गुरुस्तस्य भयं दृष्ट्वा विपत्तिसदृशं महत् ॥ २५ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥

॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ ॥ ६५ ॥

टी.अ.

७

॥१३॥

॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ ननिवारयितुमिति शक्तिभक्तस्य पराशक्तिभक्तस्य दुष्कोपं ब्रह्मापि निवारयितुं शक्तः कः पुनरन्यः स्यात् च्य

विचार्य मनसा कृत्यं तमुवाच शचीपतिं ॥ दुःसाध्यो यमं हामं त्रैस्त्वयं वज्रेण वासव ॥ २६ ॥ असुरो मदसंज्ञस्तु
यज्ञकुंडात्समुत्थितः ॥ तपो बलमृषेः सम्यक् च यवनस्य महाबलः ॥ २७ ॥ अनिवार्यो ह्ययं शत्रुस्त्वया देवैस्त
थामया ॥ शरणं याहि देवेश च्यवनस्य महात्मनः ॥ २८ ॥ सनिवारयितानूनं कृत्यामात्मकृतां किल ॥ ननिवार
यितुं शक्ताः शक्तिभक्तरुषं क्वचित् ॥ २९ ॥ व्यास उवाच ॥ इत्युक्तो गुरुणा शक्रस्तदा गच्छन्मुनिं प्रति ॥ प्रणम्य शि
रसानघस्तमुवाच भयान्वितः ॥ ३० ॥ क्षमस्व मुनिशार्दूल शमया सुरमुद्यतं ॥ प्रसन्नो भव सर्वज्ञ वचनं ते करोम्यहं
॥ ३१ ॥ सोमार्हा विश्विनावेता वद्यप्रभृति भार्गव ॥ भविष्यतः सत्यमेतद्वचो विप्रप्रसीद मे ॥ ३२ ॥ मिथ्या ते
नोद्यमो ह्येष भवत्वेव तपो धन ॥ जानेत्वमपि धर्मज्ञ मिथ्या नैव करिष्यसि ॥ ३३ ॥ सोमपा विश्विनावेतौ त्वत्क
तौ च सदैव हि ॥ भविष्यतश्च शर्यातेः कीर्तिस्तु विपुला भवेत् ॥ ३४ ॥ मया यद्विकृतं कर्म सर्वथा मुनिसत्तम ॥ परी
क्षार्थं तु विज्ञेयं तव वीर्यप्रकाशनं ॥ ३५ ॥ प्रसादं कुरु मे ब्रह्मन्मदं संहर चोत्थितं ॥ कल्याणं सर्वदेवानां तथा भू
यो विधीयतां ॥ ३६ ॥ एवमुक्तस्तु शक्रेण च्यवनः परमार्थवित् ॥ संजहार ततः कोपं समुत्पन्नं विरोधजं ॥ ३७ ॥
देवमाश्वास्य संविभ्रं भार्गवस्तुमदं ततः ॥ व्यभजत्स्त्रीषु पानेषु द्यूतेषु मृगयासु च ॥ ३८ ॥ मदं विभज्य देवेन्द्रमाश्वा
स्य च कितं भिया ॥ संस्थाप्य च सुरान्सर्वान्मन्त्रं तस्य न्यवर्तयत् ॥ ३९ ॥ ततस्तु संस्कृतं सोमं वासवाय महात्म
ने ॥ अश्विभ्यां सर्वधर्मात्मा पाययामास भार्गवः ॥ ४० ॥ एवंप्रोच्य वने नार्या विश्विनौरविपुत्रकौ ॥ विहितौ सो
मपौराजन् सर्वथा तपसो बलात् ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥

वनस्तु महाशक्तिभक्तस्ततो दुःसाध्य इति भावः ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥

दे.भा.स.

॥१४॥

॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ शाक्तानांसर्वोत्तरोमाहिमास्तीत्यवतर
तात्पर्यं तदुक्तं मुडमालायां स्वर्गमर्त्ये च पातालैनास्ति शाक्तात्पराक्रमी सौराणां गाणपत्यानां वैष्णवानां तथैव च तदन्ते चैव शाक्ताः स्युः क्रमशः

टी.अ.

७

सरस्वतीपिविख्यातं जातं यूपविमंडितं ॥ आश्रमस्तुमुनेः सम्यक् पृथिव्यां विश्रुतो भवत् ॥ ४२ ॥ शर्यातिरपि
संतुष्टो ह्यभवत्तेन कर्मणा ॥ यज्ञं समाप्य नगरे जगाम स चि वैवृतः ॥ ४३ ॥ राज्यं चकार धर्मज्ञो मनुपुत्रः प्रताप
वान् ॥ आनर्तस्तस्य पुत्रो भूदानर्ता द्रिवतोऽभवत् ॥ ४४ ॥ सोऽतः समुद्रे नगरीं विनिर्माय कुशस्थलीं ॥ आस्थि
तो भुक्तविषयानानर्तादीनरिंदमः ॥ ४५ ॥ तस्य पुत्रशतं जज्ञे ककुब्धिज्येष्ठमुत्तमं ॥ पुत्री च रेवती नाम्ना सुंदरी
शुभलक्षणा ॥ ४६ ॥ वरयोग्या यदा जाता तदा राजा च रेवतः ॥ चिंतयामास राजेन्द्रो राजपुत्रान्कुलोद्भवान् ॥ ४७ ॥
रेवतं नाम गिरिशमाश्रितः पृथिवीपतिः ॥ चकार राज्यं वलवानानर्तेषु नराधिपः ॥ ४८ ॥ विचिंत्य मनसाराजाक
स्मै देयामया सुता ॥ गत्वा पृच्छामि ब्रह्माणं सर्वज्ञं सुरपूजितं ॥ ४९ ॥ इति संचिंत्य भूपालः सुतामादाय रेवतीं ॥
ब्रह्मलोकं जगामाशु प्रष्टुं कामः पितामहं ॥ ५० ॥ तदा देवाश्च यज्ञाश्च छंदांसि पर्वतास्तथा ॥ अध्वयः सरितश्चा
पि दिव्यरूपधराः स्थिताः ॥ ५१ ॥ ऋषयः सिद्धगंधर्वाः पन्नगाश्चारणास्तथा ॥ तस्थुः प्रांजलयः सर्वेस्तुवंत
श्च पुरातनाः ॥ ५२ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे सप्तमस्कंधे सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ जनमेजय उवाच ॥
संशयोऽयं महान् ब्रह्मन्वर्तते मम मानसे ॥ ब्रह्मलोकं गतो राजा रेवती संयुतः स्वयं ॥ १ ॥ ॥ ६५ ॥

क्रमशः प्रिये शृणु देविवरारोहेनास्ति शाक्तात्परो जनः शाक्तो हि शंकरः साक्षात्परब्रह्मस्वरूपभागिति ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके सप्तमस्कं
धे सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ षट्पंचाशन्महापदैरेव तस्य कथानकं ॥ समाप्य वंशविस्तरः पुनराज्ञांसमुच्यते ॥ १ ॥ ब्रह्मलोकं रेवती गतइति
राजा भुत्वा संशयितः पृच्छति संशयोऽयमिति ब्रह्मलोकं गतस्तद्विषयसंशयइत्यर्थः ॥ १ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७५ ॥

॥१४॥

॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ पश्चात्पूर्वस्वलोकगतयः आसन्नित्यर्थः ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥

मयापूर्वश्रुतं कृत्स्नं ब्राह्मणेभ्यः कथांतरे ॥ ब्राह्मणो ब्रह्मविच्छांतो ब्रह्मलोकमवाप्नुयात् ॥ २ ॥ राजा कथंगतस्तत्र
रेवतीसंयुतः स्वयं ॥ सत्यलोकेति दुष्प्राप्येभूलोकादिति संशयः ॥ ३ ॥ मृतः स्वर्गमवाप्नोति सर्वशास्त्रेषु निर्ण
यः ॥ स्वर्गात्पुनः कथं लोके मानुषे जायते गतिः ॥ ४ ॥ एतन्मे संशयं विद्वन्धे तु मर्हसि सांप्रतं ॥ यथा राजा गत
स्तत्र प्रप्लुतामः प्रजापतिं ॥ ५ ॥ व्यास उवाच ॥ मेरोस्तु शिखरे राजन् सर्वलोकाः प्रतिष्ठिताः ॥ इंद्रलोको वह्नि
लोको याचसंयमिनीपुरी ॥ ६ ॥ तथैव वारुणलोकः कैलासश्च तथा पुनः ॥ वैकुण्ठश्च पुनस्तत्र वैष्णवं पदमुच्यते
॥ ७ ॥ यथार्जुनः शक्रलोके गतः पार्थो धनुर्धरः ॥ पंचवर्षाणि कौंतेयः स्थितस्तत्र सुरालये ॥ ८ ॥ मानुषेणैव दे
हेन वासवस्य च सन्निधौ ॥ तथैवान्येऽपि भूपालाः काकुत्स्थप्रमुखाः किल ॥ ९ ॥ स्वर्लोकगतयः पश्चादैत्याश्चापि
महाबलाः ॥ जित्वेन्द्रसदनं प्राप्य संस्थितास्तत्र कामतः ॥ १० ॥ महाभिषः पुराराजा ब्रह्मलोकं गतः स्वराट् ॥ आग
च्छंतीं नृपे गंगामपश्यन्नातिसुंदरीं ॥ ११ ॥ वायुनांबरमस्यास्तु दैवादपहृतं नृप ॥ किंचिन्नग्नानृपेणाथ दृष्टा
सा सुंदरी तदा ॥ १२ ॥ स्मितं चकार कामार्तः सा च किंचिज्जहास वै ॥ ब्रह्मणा तौ तदा दृष्टौ शसौ यातौ वसुंधरां
॥ १३ ॥ वैकुण्ठेऽपि सुराः सर्वे पीडिता दैत्यदानवैः ॥ गत्वा हरिं जगन्नाथमस्तु वन्कमलापतिं ॥ १४ ॥ संदेहो ना
त्र कर्तव्यः सर्वथानृपसत्तम ॥ गम्याः सर्वेऽपि लोकाः स्युर्मानवानां नराधिप ॥ १५ ॥ अवश्यं कृतपुण्यानां ताप
सानां नराधिप ॥ पुण्यसद्भाव एवात्र गमने कारणं नृप ॥ १६ ॥ तथैव यजमानानां यज्ञेन भावितात्मनां ॥
॥ जनमेजय उवाच ॥ रेवतो रेवतीं कन्यां गृहीत्वा वास्त्वानां ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥

यातौ वसुंधरामिति ह्यं कथा पूर्वमुक्ता ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥

दे.भा.स.

॥१५॥

॥ १८ ॥ १२ ॥ गांधर्वेगानेप्रचलितेसतिलब्धक्षणेल्ब्धकाशःक्षणक्षणेपरिमितलब्धकाशइत्यर्थः ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ सं

ब्रह्मलोकंगतःपश्चात्किंकृतंतेनभूभुजा ॥ ब्रह्मणाकैसमादिष्टं कस्मैदत्तामुतापुनः ॥ १८ ॥ तत्सर्वविस्तराद्ब्र
ह्मनूकथयत्वंममाधुना ॥ व्यासउवाच ॥ निशमयमहीपालराजारेवतकःकिल ॥ १९ ॥ पुत्र्यावरंपरिप्रष्टुं
ह्यलोकंगतोयदा ॥ आवर्तमानेगांधर्वेस्थितोल्ब्धक्षणःक्षणं ॥ २० ॥ शृण्वन्नतृप्यदृष्टात्मासभायांतुसकन्य
कः ॥ समाप्तेतत्रगांधर्वेप्रणम्यपरमेश्वरं ॥ २१ ॥ दर्शयित्वासुतांतस्मैस्वाभिप्रायंन्यवेदयत् ॥ राजोवाच ॥
वरंकथयदेवेशकन्येयंममपुत्रिका ॥ २२ ॥ देयाकस्मैमयाब्रह्मनूप्रष्टुंत्वांसमुपागतः ॥ बहवोराजपुत्रामेवीक्षि
ताःकुलसंभवाः ॥ २३ ॥ कस्मिन्श्चिन्मेमनःकामंनोपतिष्ठतिचंचलं ॥ तस्मात्त्वां देवदेवेशप्रष्टुमत्रागतोस्म्यहं
॥ २४ ॥ तदाज्ञापयसर्वज्ञयोऽयंराजसुतंवरं ॥ कुलीनंवलवंतंचसर्वलक्षणसंयुतं ॥ २५ ॥ दातारंधर्मशीलंच
राजपुत्रंसमादिश ॥ व्यासउवाच ॥ तदाकर्ण्यजगत्कर्तावचनंनृपतेस्तदा ॥ २६ ॥ तमुवाचहसन्वाक्यंदृष्ट्वा
कालस्यपर्ययं ॥ राजपुत्रास्त्वयाराजन्वरायेद्ददयेकृताः ॥ २७ ॥ ग्रस्ताःकालेनतेसर्वेसपितृपौत्रबांधवाः ॥
सप्तविंशतिमोद्यैवद्वापरस्तुप्रवर्तते ॥ २८ ॥ वंशजास्तेमृताःसर्वेपुरीदैत्यैर्विलुंठिता ॥ सोमवंशोद्भवस्तत्रराजा
राज्यंप्रशास्तिहि ॥ २९ ॥ उग्रसेनइतिख्यातोमथुराधिपतिःकिल ॥ ययातिवंशसंभूतोराजामाथुरमंडले
॥ ३० ॥ उग्रसेनात्मजःकंसःसुरद्वेषीमहाबलः ॥ दैत्यांशःपितरंसोपिकारागारंन्यवेशयत् ॥ ३१ ॥ स्वयंरा
ज्यंचकाराशुनृपाणामदगर्वितः ॥ मेदिनीचातिभारार्ताब्रह्माणंशरणंगता ॥ ३२ ॥ दुष्टराजन्यसैन्यानांभा
रेणातिसमाकुला ॥ अंशावतरणंतत्रगदितंसुरसत्तमैः ॥ ३३ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥

भवाउत्पन्नाः ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ७ ॥

टी.अ.

८

॥१५॥

॥३४॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२॥ अस्याः कथायास्तात्पर्यतुक्षणभंगुरः संसारोस्तिनतत्रासक्तिः

वासुदेवः समुत्पन्नः कृष्णः कमललोचनः ॥ देवक्यां देवरूपिण्यां यो सौ नारायणो मुनिः ॥ ३४ ॥ तपश्चचार
दुःसाध्यं धर्मपुत्रः सनातनः ॥ गंगातीरे नरसखः पुण्ये बदारिकाश्रमे ॥ ३५ ॥ सोवतीर्णो यदुकुले वासुदेवोतिवि
श्रुतः ॥ तेनासौ निहतः पापः कंसः कृष्णेन सत्तम ॥ ३६ ॥ उग्रसेनाय राज्यं वै दत्तं हत्वा खलं सुतं ॥ कंसस्य श्व
शुरः पापो जरासंधो महाबलः ॥ ३७ ॥ आगत्य मथुरां क्रोधाच्च कारसंगरं मुदा ॥ कृष्णेनासौ जितः संख्ये जरासंधो
महाबलः ॥ ३८ ॥ प्रेषयामास युद्धाय सबलं यवनं ततः ॥ श्रुत्वा यातं महाशूरं ससैन्यं यवनाधिपं ॥ ३९ ॥ यादवान्
स्थापयामास द्वारवत्यां यदूत्तमः ॥ वासुदेवस्तु तत्राद्यवर्तते बांधवैः सह ॥ ४० ॥ तस्याग्रजः सविख्यातो बल
देवो हलायुधः ॥ शेषांशो मुसलीवीरो वरोस्तु तव संमतः ॥ ४१ ॥ संकर्षणाय देह्याशुकन्यां कमललोचनां ॥ रेवतीं
बलभद्राय विवाहविधिना ततः ॥ ४२ ॥ दत्त्वा पुत्रीं नृपश्रेष्ठं च त्वं बदारिकाश्रमं ॥ तपस्तप्तुं सुरारामं पावनं का
मदं नृणां ॥ ४३ ॥ व्यास उवाच ॥ इति राजा समादिष्टो ब्रह्मणा पद्मयोनिना ॥ जगाम तरसाराज नृद्वारकां कन्य
यान्वितः ॥ ४४ ॥ ददौ तां बलदेवाय कन्यां वै शुभलक्षणां ॥ ततस्तत्त्वा तपस्तीव्रं नृपतिः कालपर्यये ॥ ४५ ॥
जगाम त्रिदशावासं त्यक्त्वा दिहं सरित्ते ॥ राजोवाच ॥ भगवन्महदाश्चर्यं भवता समुदाहृतं ॥ ४६ ॥ रेवतस्क
स्थितस्तत्र ब्रह्मलोके सुतार्थतः ॥ युगानां तु गतं तत्र शतमष्टोत्तरं किल ॥ ४७ ॥ कन्यावृद्धानसंजाताराजा वा
तितरां नुकिं ॥ एतावन्तं तथा कालमायुः पूर्णं तयोः कथं ॥ ४८ ॥ व्यास उवाच ॥ न जराक्षुत्पिपासावानमृत्युर्न भ
यं पुनः ॥ न तु ग्लानिः प्रभवति ब्रह्मलोके सदाऽनघ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥

कर्तव्याः किंतु परमेश्वर्या आराधनमेव कर्तव्यमिति ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥

दे.भा.स.

॥१६॥

मेरुंगतस्यस्वर्गगतस्यशर्यातेःमरणोत्तरमित्यर्थः ॥ ५० ॥ इत्थंशर्यातिकथांसमाप्येक्ष्वाकोर्वंशमाह मनोरिति क्षुवतइतिक्षुतंक्षुवतो
वैवस्वतमनोर्घाणतउत्पन्नइत्यर्थः ॥ ५१ ॥ देवीध्यात्वेति नारदोपदेशतोदीक्षांप्राप्यतन्मंत्रजपपुरःसरंदेवीध्यात्वातपःअतिष्ठदित्यन्वयः
॥ ५२ ॥ ततोदेवीप्रसादेनसूर्यवंशश्चलितइत्याह तस्यपुत्रशतमिति ॥ ५३ ॥ अनेनचसर्वेपिसूर्यवंशीयाराजानोदेवीपदानुजरताइतिबोधि
तं मूलपुरुषस्यदेवीभक्तत्वात् पुत्रशतविभागमाह अयोध्यायामिति ॥ ५४ ॥ उत्तरापथदेशस्येतिपूर्वदेशस्याप्युपलक्षणं दाक्षिणस्यामिति

टी.अ.

८

मेरुंगतस्यशर्यातेःसंततीराक्षसैर्हता ॥ गताकुशस्थलित्यत्काभयभीताइतस्ततः ॥ ५० ॥ मनोश्चक्षुवतःपुत्र
उत्पन्नोवीर्यवत्तरः ॥ इक्ष्वाकुरितिबिख्यातःसूर्यवंशकरस्तुसः ॥ ५१ ॥ वंशार्थतपआतिष्ठदेवीध्यात्वानिरं
तरं ॥ नारदस्योपदेशेनप्राप्यदीक्षामनुत्तमां ॥ ५२ ॥ तस्यपुत्रशतराजन्निक्ष्वाकोरितिबिश्रुतं ॥ विकुक्षिःप्रथम
स्तेषांवलवीर्यसमन्वितः ॥ ५३ ॥ अयोध्यायांस्थितोराजाइक्ष्वाकुरितिबिश्रुतः ॥ शकुनिप्रमुखाःपुत्राःपंचाश
इलवत्तराः ॥ ५४ ॥ उत्तरापथदेशस्यरक्षितारःकृताःकिल ॥ दक्षिणस्यांतथाराजन्नादिष्टास्तेनेतसुताः ॥ ५५ ॥
चत्वारिंशत्तथाष्टौचरक्षणार्थमहात्मना ॥ अन्यौद्वौसंस्थितौपार्श्वेसेवार्थतस्यभूपतेः ॥ ५६ ॥ इतिश्रीदेवीभाग
वतेमहापुराणेसप्तमस्कंधेअष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ व्यासउवाच ॥ कदाचिदष्टकाश्राद्धेविकुक्षिंपृथिवीपतिः ॥
आज्ञापयदसंमूढोमांसमानयसत्वरं ॥ १ ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥

पश्चिमायाउपलक्षणं तदुक्तंभागवतेनवमस्कंधे क्षुवतस्तुमनोर्ब्रह्मइक्ष्वाकुर्घाणतःसुतः तस्यपुत्रशतव्येष्टाविकुक्षिनिमिदंडकाः तेषांपुर
स्तादभवन्नार्यावितेनृपानृप पंचविंशतिपश्चाच्चत्रयोमध्यपरेन्यूनइति ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकैसप्तमस्कंधेअष्टमोऽध्यायः
॥ ८ ॥ अर्धाधिकत्रिषष्ट्यानुपद्यानामृद्वस्तथा ॥ ककुत्स्थप्रथमतस्ततोमांधातुरुच्यते ॥ १ ॥ इक्ष्वाकोश्चरितमाह कदाचिदिति अष्टकाश्रा
द्धेपित्रादिमातृमध्यंचतथामातामहांतिमामित्युक्तलक्षणे पृथिवीपतिरिक्ष्वाकुः ॥ १ ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥

॥१६॥

॥ २ ॥ ३ ॥ आदत्तु अभक्षयत् ॥ ४ ॥ गुरुर्वसिष्ठः ॥ ५ ॥ भुक्तशेषमिति श्रद्धोद्देशेन यदन्नं निष्काशितं तन्मेध्यात्किंचिदन्नं भक्षितं चेददवाशं
मेध्यं श्रद्धार्थमधुनावने गत्वा सुतादरात् ॥ इत्युक्तो सौतथेत्याशुजस्ममवनमस्त्रभूत् ॥ २ ॥ गत्वा जघान बाणैः
सवराहान्सूकरान्मृगान् ॥ शशाश्चापि परिश्रान्तो बभूवाथ बुभुक्षितः ॥ ३ ॥ विस्मृता चाष्टकात्तस्य शशं चाद
दसौवने ॥ शेषं निवेदयामास पित्रे मांसमनुत्तमं ॥ ४ ॥ प्रोक्षणाय समानीतं मांसं दृष्ट्वा गुरुस्तदा ॥ अनर्हमिति
तज्ज्ञात्वा चुकोपमुनिसत्तमः ॥ ५ ॥ भुक्तशेषं तु न श्राद्धे प्रोक्षणीयमिति स्थितिः ॥ राज्ञे निवेदयामास वसिष्ठः पाक
दूषणं ॥ ६ ॥ पुत्रस्य कर्म तज्ज्ञात्वा भूपतिर्गुरुणोदितं ॥ चुकोपविधिलोपात्तं देशान्निःसारयत्ततः ॥ ७ ॥ शशा
दइति विख्यातो नास्नाजातो नृपात्मजः ॥ गतो वने शशादस्तु पितृकोपादसंभ्रमः ॥ ८ ॥ वन्येन वर्तयन्कालं नी
तवान्धर्मतत्परः ॥ पितर्युपरते राज्यं प्राप्तं तेन महात्मना ॥ ९ ॥ शशादस्त्वकरोद्राज्यमयोध्यायाः पतिः स्वयं ॥
यज्ञानेकशः पूर्णान्चकार शरयूतटे ॥ १० ॥ शशादस्याभवत्पुत्रः ककुत्स्थ इति विश्रुतः ॥ तस्यैव नामभेदाद्वै
इंद्रवाहः पुरंजयः ॥ ११ ॥ जनमेजय उवाच ॥ नामभेदः कथं जातो राजपुत्रस्य चानघ ॥ कारणं ब्रूहि मे सर्वकर्म
णायै न चाभवत् ॥ १२ ॥ व्यास उवाच ॥ शशादेस्वर्गते राजा ककुत्स्थ इति चाभवत् ॥ एतस्मिन्नंतरे देवादित्यैः
सर्वे पराजिताः ॥ १३ ॥ जग्मुस्त्रिलोकाधिपतिं विष्णुं शरणमव्ययं ॥ तान्प्रोवाच महाविष्णुस्तदा देवान्सनात
नः ॥ १४ ॥ भुवि गत्वामहीपालं प्रार्थयंतु शशादजं ॥ सह निप्यतिवैदैत्यान् संग्रामे सुरसत्तमाः ॥ १५ ॥ आग
मिष्यति धर्मात्मा साहाय्यार्थं धनुर्धरः ॥ पराशक्तेः प्रसादेन सामर्थ्यं तस्य चातुलं ॥ १६ ॥ हरेः सुवचनाद्देवाय
युः सर्वे सवासवाः ॥ अयोध्यायां महाराज शशादतनयं प्रति ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥

ष्टमं भुक्तशेषं जातमित्यर्थः ॥ ६ ॥ ७ ॥ शशभक्षणात् शशादो जातः ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ तस्य कस्मात्कारणा
देतादृशं सामर्थ्यमिति चेत्तत्राह पराशक्तेः प्रसादेनेति परशक्त्युपासकस्य राज्ञस्तस्या एव प्रसादात्सामर्थ्यलाभ इति भावः ॥ १६ ॥ १७ ॥

दे.भा.स.

॥१७॥

॥१८॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ श्रीभगवतीप्रसादेन तवनकिंचिदुर्लभमित्याह पराशक्तीति ॥ २२ ॥ पार्ष्णिग्राहः संरक्षिता ॥ २३ ॥ देवकृते देवार्थ ॥ २४ ॥ पत्रवाहनं ॥ २५ ॥ रुद्रस्य यथा वृषभस्तथेत्यर्थः ॥ २६ ॥ येनास्येति येन कारणेनास्येन्द्रस्य वृषभरूपस्य ककुदि

टी.अ.

९

तानागतान्सुरात्राजापूजयामास धर्मतः ॥ पप्रच्छागमने राजा प्रयोजनमतां द्रितः ॥ १८ ॥ राजोवाच ॥ धन्यो हं पावितश्चास्मि जीवितं सफलं मम ॥ यदागत्य गृहे देवादुश्च दर्शनं महत् ॥ १९ ॥ ब्रुवंतु कृत्यं देवेशा दुःसाध्यमपि मानवैः ॥ करिष्यामि महत्कार्यं सर्वथा भवतामहं ॥ २० ॥ देवा ऊचुः ॥ साहाय्यं कुरु राजेन्द्र सखा भव शचीपते ॥ संग्रामे जयदैत्येन्द्रान् दुर्जयान् त्रिदेशैरपि ॥ २१ ॥ पराशक्तिप्रसादेन दुर्लभं नास्ति ते क्वचित् ॥ विष्णुना प्रेरिताश्चैव मागतास्तव सन्निधौ ॥ २२ ॥ राजोवाच ॥ पार्ष्णिग्राहो भवाम्यद्य देवानां सुरसत्तमाः ॥ इन्द्रो मे वाहनं तत्र भवेद्यदिसुसधिपः ॥ २३ ॥ संग्रामं तु करिष्यामि दैत्यैर्देवकृते धुना ॥ आरुह्येन्द्रं गमिष्यामि सत्यमेतद्वीम्यहं ॥ २४ ॥ तदोचुर्वासवं देवाः कर्तव्यं कार्यमद्भुतं ॥ पत्रं भवनरेन्द्रस्य त्यक्त्वा लज्जां शचीपते ॥ २५ ॥ लज्जमानस्तदा शक्रः प्रेरितो हरिणा भृशं ॥ बभूव वृषभस्तूर्णं रुद्रस्येवापरोमहान् ॥ २६ ॥ तमारुरोहराजा सौ संग्रामगमनाय वै ॥ स्थितः ककुदियेनास्य ककुत्स्थस्तेन चाभवत् ॥ २७ ॥ इन्द्रो वाहः कृतो येन तेन नाम्नेन्द्रवाहकः ॥ पुरंजितं तु दैत्यानां तेनाभूच्च पुरंजयः ॥ २८ ॥ जित्वा दैत्यान् महाबाहुर्धनं तेषां प्रदत्तवान् ॥ पप्रच्छ चैवं राजर्षेरिति सख्यं बभूव ह ॥ २९ ॥ ककुत्स्थश्चातिविख्यातो नृपतिस्तस्य वंशजाः ॥ काकुत्स्थाभुविराजानो बभूवुर्बहुविश्रुताः ॥ ३० ॥ ककुत्स्थस्याभवत्पुत्रो धर्मपत्न्यां महाबलः ॥ अनेनाविश्रुतस्तस्य पृथुः पुत्रश्च वीर्यवान् ॥ ३१ ॥

स्थितस्तेन कारणेनेत्यर्थः ॥ २७ ॥ २८ ॥ तेषां दैत्यानां धनं देवभ्यो दत्तवानित्यर्थः पप्रच्छेति स्वगणं गंतुं देवानिति शेषः अनेन प्रकाशेण राजर्षेरिति द्रस्य च सख्यं बभूवेत्याह राजर्षेरिति ॥ २९ ॥ ३० ॥ अनेनाविश्रुतः काकुत्स्थो नाम्ना विख्यात इत्यर्थः ॥ तस्य काकुत्स्थस्य पृथुः पुत्रः ॥ ३१ ॥

॥१७॥

सचपृथुर्विष्णोरंशःपराशक्तेश्वरभक्तइत्याह विष्णोरिति ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ शावंतीति तदुक्तं कूर्मपुराणि शावंतीनिर्मितातेनगौडदेशमहा
पुरीति ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ मांघातुःपराक्रमंरूपयति अष्टोत्तरसहस्रंत्विति येनमहातीर्थेषुकाश्यादिषु
श्रीभगवतीतुष्ट्यर्थमष्टोत्तरसहस्रसंख्याकाभंगस्याः प्राप्तादनिर्मिता एतादृशोयंपरभगवतीभक्तइत्यर्थः ॥ ४० ॥ भगवत्यास्तुतुष्ट्यर्थमि

विष्णोरंशःस्मृतःसाक्षात्पराशक्तिपदार्चकः ॥ विश्वरंधिस्तुविज्ञेयःपृथोऽपुत्रोनेराधिपः ॥ ३२ ॥
चंद्रस्तस्यसुतःश्रीमान्राजवंशकरःस्मृतः ॥ तत्सुतोयुवनाश्वस्तुतेजस्वीदलवत्तरः ॥ ३३ ॥ शावंतोयुवनाश्व
स्यजज्ञेपरमधार्मिकः ॥ शावंतीनिर्मितातेनपुरीशक्रपुरीसमा ॥ ३४ ॥ बृहदश्वस्तुपुत्रोभूच्छावंतस्यमहात्मनः
कुवलयश्वःसुतस्तस्यवभूवपृथिवीपतिः ॥ ३५ ॥ धुंधुर्नामाहतोदैत्यस्तेनासौपृथिवीतिले ॥ धुंधुमारेतिविरूपातं
नामप्रापातिविश्रुतं ॥ ३६ ॥ पुत्रस्तस्यदृढाश्वस्तुपालयामासमेदिनीं ॥ दृढाश्वस्यसुतःश्रीमान्हर्यश्वइतिकी
र्तितः ॥ ३७ ॥ निकुंभस्तत्सुतःप्रोक्तोवभूवपृथिवीपतिः ॥ बर्हणाश्वोनिकुंभस्यकृशाश्वस्तस्यवैसुतः ॥ ३८ ॥ प्र
सेनजित्कृशाश्वस्यबलवान्सत्यविक्रमः ॥ तस्यपुत्रोमहाभागोयौवनाश्वेतिविश्रुतः ॥ ३९ ॥ यौवनाश्वसुतः
श्रीमान्मांघातेतिमहीपतिः ॥ अष्टोत्तरसहस्रंतुप्राप्तादायेनानिर्मिताः ॥ ४० ॥ भगवत्यास्तुतुष्ट्यर्थमहाती
र्थेषुमानद ॥ मातृगर्भेनजातोसावुत्पुत्रोजनकोदरे ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥

ति तदुक्तमुमासंहितायां त्रिलोकीस्थापनात्पुण्यंयद्वेन्मुनिपंगव तत्कोटिगुणितंपुण्यंश्रीदेवीस्थापनाद्वेत् मध्यदेवीस्थापयित्वापंचायतनदेवताः
चतुर्दिक्षुस्थापयेद्यस्तस्यपुण्यंनगण्यते विष्णोर्नाम्नांकोटिजपाद्ग्रहणेसूर्यचंद्रयोः यत्फलंलभ्यतेतस्माच्छतकोटिगुणोत्तरं शिवनाम्नोजपादेवत
स्मात्कोटिगुणोत्तरं श्रीदेवीनामजापात्ततःकोटिगुणोत्तरं देव्याःप्रसादकरणात्पुण्यंतुसमवाप्यते स्थापितायेनसादेवीजगन्मातात्रयमिमां
न्तस्यदुर्लभंकिचिच्छ्रीमातुःकरुणावशादिति ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥

दे.भा.स.

॥१८॥

॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥

निःसारितस्ततःपुत्रःकुक्षिभित्वापितुःपुनः ॥ राजोवाच ॥ नश्रुतंनचट्टंवाभवतातदुदाहृतं ॥ ४२ ॥
असंभाव्यंमहाभागतस्यजन्मयथोदितं॥विस्तरेणवदस्वाद्यमांधातुर्जन्मकारणं॥४३॥राजोदरेयथोत्पन्नःपु
त्रःसर्वोऽसुंदरः ॥ व्यासउवाच ॥ यौवनाश्वोनपत्योभूद्राजापरमधार्मिकः॥४४॥ भार्याणांचशतंतस्यबभूव
नृपतेर्नृप ॥ राजाक्षितापरःप्रायश्चित्तयामासनिव्यशः ॥ ४५ ॥ अपत्यार्थेयौवनाश्वोदुःखितस्तुवनंगतः ॥
ऋषीणामाश्रमेपुण्येनिर्विण्णःसचपार्थिवः ॥ ४६ ॥ मुमोचदुःखितःश्वासान्तापसानांचपश्यतः ॥ दृष्ट्वातु
दुःखितंविप्रावभूवुश्चकृपालवः ॥ ४७ ॥ तमूचुर्ब्राह्मणाराजन्कस्माच्छोचमिपार्थिव ॥ किंतेदुःखंमहाराजब्रू
हिंसत्यंमनोगतं ॥४८॥ प्रतीकारंकरिष्यामोदुःखस्यतवसर्वथा॥यौवनाश्वउवाच॥ राज्यंधनंसदश्वाश्ववर्तते
मुनयोमम ॥ ४९ ॥ भार्याणांचशतंशुद्धंवर्ततेविशदप्रभं॥ नारातिस्त्रिपुल्लोकेपुकोप्यस्तिबलवान्मम ॥५०॥
आज्ञाकरास्तुसामंतावर्ततेमंत्रिणस्तथा॥ एकंसंतानजंदुःखंनान्यत्पश्यामितापसाः ॥ ५१ ॥ अपुत्रस्यग
तिर्नास्तिस्वर्गोनैवचनैवच ॥ तस्माच्छोचामिविप्रेन्द्राःसंतानार्थंभृशंततः ॥५२॥ वेदशास्त्रार्थतर्कज्ञास्तापसा
श्चकृतभ्रमाः ॥ इष्टिसंतानकामस्ययुक्तांज्ञात्वादिशंतुमे ॥ ५३ ॥ कुर्वतुमकार्यंवैकृपाचेदस्तितापसाः ॥
॥ व्यासउवाच ॥ तच्छ्रुत्वावचनंराज्ञःकृपयापूर्णमानसाः ॥५४॥ कारयामासुरव्यग्रास्तस्येष्टिमिंद्रदेवतां ॥
कलशःस्थापितस्तत्रजलपूर्णस्तुवाडवैः ॥ ५५॥ मंत्रितोवेदमंत्रैश्चपुत्रार्थंतस्यभूपते ॥ राजातद्यज्ञसदनंप्र
विष्टस्तृषितोनिशि ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥

॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥

टी.अ.

९

॥१८॥

॥५७॥५८॥५९॥६०॥६१॥ कंधास्यतिकंपास्यतीत्यर्थः मातुरभावात्स्तनपानंकस्यशिशुः करिष्यतीत्यर्थः ॥६२॥ मांधातेति तदातास्मि
नूकालेइंद्रोदेशिनीतर्जनीशिशवेप्रादाहंतवानुस्तनस्थानेयसुद्रोवदत्कमिति मांधातेति मांधास्यतीत्यर्थः ॥६३॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके सप्त

विप्रान्दृष्टाशयानान्सपपौमंत्रजलंस्वयं ॥ भार्यार्थसंस्कृतंविप्रैर्मंत्रितंविधिनोद्धृतं ॥ ५७ ॥ पीतंराज्ञातृषा
तेनतदज्ञानान्नृपोत्तम ॥ व्युदकंकलशंदृष्टातदाविप्रविशंकिताः ॥ ५८ ॥ पप्रच्छुस्तेनृपेकेनपीतंजलमिति
द्विजाः ॥ राज्ञापीतंविदित्वातेज्ञात्वादैवबलमहत् ॥ ५९ ॥ इष्टिसमापयामासुर्गतास्तेमुनयोगृहान् ॥ गर्भंद
धारनृपतिस्ततोमंत्रबलादथ ॥ ६० ॥ ततःकालेसउत्पन्नःकुक्षिभित्वास्यदक्षिणं ॥ पुत्रंनिष्कासयामासुर्मंत्रिण
स्तस्यभूपतेः ॥ ६१ ॥ देवानांकृपयातत्रनममारमहीपतिः ॥ कंधास्यतिकुमारोयंमंत्रिणश्चक्रुर्भृशं ॥ ६२ ॥
तदेंद्रोदेशिनींप्रादान्मांधातेत्यवद्वचः ॥ सोभवद्वलवान्राजामांधातापृथिवीपतिः ॥ ६३ ॥ तदुत्पत्तिस्तुभूपा
लकथितातवविस्तरात् ॥ इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेसप्तमस्कंधेनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ व्यासउवाच ॥ बभूव
चक्रवर्तीसनुपतिःसत्यसंगरः ॥ मांधातापृथिवींसर्वामजयन्नृपतीश्वरः ॥ १ ॥ दस्यवोऽस्यभयत्रस्ताययुर्गिरि
गुहासुच ॥ इंद्रेणास्यकृतंनामत्रसदस्युरितिस्फुटं ॥ २ ॥ तस्यबिंदुमतीभार्याशशबिंदोःसुताभवत् ॥ पतित्र
तासुररूपाचसर्वलक्षणसंयुता ॥ ३ ॥ तस्यामुत्पादयामासमांधाताद्वौसुतौनृप ॥ पुरुकुत्संसुविख्यातमुचुकुदं
तथापरं ॥ ४ ॥ पुरुकुत्सात्ततोरण्यःपुत्रःपरमधार्मिकः ॥ पितृभक्तिरतश्चाभूद्बृहदश्वस्तदात्मजः ॥ ५ ॥

मस्कंधेनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ अष्टाधिकैश्चपंचाशत्पद्यैरथतुसादरं ॥ मांधातुश्चकथांप्रोच्यसत्यव्रतकथोच्यते ॥ १ ॥ मांधातुस्त्वत्त्यनंतरंतस्यवृत्तमाह
बभूवेति ॥ १ ॥ त्रस्तादस्यत्रयस्मादितित्रसदस्युः पृषोदरादित्वात्साधुत्वं ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ततोरण्यइतिनमैकदेशेननामग्रहणादनरण्यइत्यर्थः बृह
दश्वइत्यनरण्यस्यविशेषणं तदात्मजःपुरुकुत्सात्मजइत्यर्थः तदुक्तंपुराणांतरे त्रसदस्योःपौरकुत्सोयोऽनरण्यस्यदेहकृत् हर्यश्वस्तत्सुत
स्तस्मादरूणेतिनंत्रधनइति ॥ ५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.स.

॥१९॥

॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ प्रणितासाविनि वसिष्ठेना
हर्यश्वस्तस्यपुत्रोभूत्वार्मिकः परमार्थवित् ॥ तस्यात्मजस्त्रिधन्वाभूदरुणस्तस्यचात्मः ॥ ६ ॥ अरुणस्तस्य
तः श्रीमान्सत्यव्रतइति स्मृतः ॥ सोभूदिच्छाचरः कामीमंदात्मा ह्यतिलोलुपः ॥ ७ ॥ सवापात्माविप्रभार्याह
तवान्काममोहितः ॥ विवाहेतस्यविघ्नंसचकारनृपतेः सुतः ॥ ८ ॥ मिलिताब्राह्मणास्तत्रराजानमरुणंनृप ॥
ऊचुर्भुशंसुदुःखार्ताहाहताः स्मेतिचासकृत् ॥ ९ ॥ पप्रच्छराजातान्विप्रान्दुःखितान्पुरवासिनः ॥ किंकृतंम
नपुत्रेणभवतामशुभंद्विजाः ॥ १० ॥ तन्निशम्यद्विजावाक्यंराज्ञोविनयपूर्वकं ॥ तदोचुस्त्वरुणंविप्राः कृताशी
र्वचनाभृताः ॥ ११ ॥ ब्राह्मणा ऊचुः ॥ राजंस्तवसुतेनाद्यविवाहेप्रहताकिल ॥ विवाहिताविप्रकन्याबलेनबलिनां
वर ॥ १२ ॥ व्यासउवाच ॥ श्रुत्वातेषांवचस्तथ्यंराजापामधार्मिकः ॥ पुत्रमाहवृथानामकृतंतेदुष्टकर्मणा
॥ १३ ॥ गच्छदूरं सुमंदात्मनदुराचारगृहान्मम ॥ नस्थातव्यंत्वयापापविषयेममसर्वथा ॥ १४ ॥ कुपितंपि
तरंप्राहकन्यधाम्नीतिवैमुहुः ॥ अरुणस्तमथोवाचश्वपाकैः सहवर्तते ॥ १५ ॥ श्वपचस्यकृतंकर्मद्विजदाराप
हारणं ॥ तस्मात्तैः सहसंसर्गकृत्वातिष्ठयथासुखं ॥ १६ ॥ नाहं दुष्टेणपुत्रार्थं विद्याचकुलपांसन ॥ यथेष्टं व्रज
दुष्टात्मन्कीर्तिनाशः कृतस्त्वया ॥ १७ ॥ सनिशम्यपितुर्वाक्यं कुपितस्तस्मिन्सहवर्ततः ॥ निश्चक्रामपुरातत्स्मात्त
रसाश्वपचान्ययौ ॥ १८ ॥ सत्यव्रतस्तदातत्रश्वपाकैः सहवर्तते ॥ धनुर्वीणधरः श्रीमान्कवचीकरुणालयः
॥ १९ ॥ यदानिष्कासितः पित्राकुपितेनमहात्मना ॥ गुरुणाथवसिष्ठेन प्रेरितोऽसौ महीपतिः ॥ २० ॥ तस्मा
त्सत्यव्रतस्तस्मिन्बभूवक्रोधसंयुतः ॥ वसिष्ठेधर्मशास्त्रज्ञोनिवारणपराङ्मुखे ॥ २१ ॥ केनचित्कारणेनाथ
पितातस्यमहीपतिः ॥ पुत्रार्थेऽसौ तपस्तप्तुं पुरत्यक्त्वावनंगतः ॥ २२ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४४ ॥

रुणोमहीपतिरयंपुत्रोनिष्कासनीयइतिप्रेरितइत्यर्थः ॥ २० ॥ तस्मिन्वसिष्ठेनिवारणेपुत्रनिष्कासननिवारणेपाराङ्मुखेवाहिर्मुखे ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥

टी.अ.
१०

॥१९॥

॥ २३॥२४ ॥ कातराभयभीता ॥ २५ ॥ नीवारान् अरण्यभवश्यामाकान् ॥ २६॥२७ ॥ २८ ॥ २९॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२॥

नववर्षतदातस्मिन्विषयेपाकशासनः॥ समाश्वाद्दशराजेंद्रतेनाधर्मणसर्वथा ॥ २३ ॥ विश्वामित्रस्तदादारां
स्तस्मिन्नुविषयेनृप ॥ संन्यस्यकौशिकीतीरेचचारविपुलंतपः॥ २४ ॥ कातरातत्रसंजाताभार्यविकौशिक
स्यह ॥ कुटुंबभरणार्थायदुःखितावरवर्णिनी ॥ २५ ॥ बालकान्क्षुधयाक्रांतान् रुदतः पश्यतीभृशं ॥ याचमनां
श्रुतीवारान्कठमापपतिव्रता ॥ २६ ॥ चिंतयामासदुःखार्तातोकांवीक्ष्यक्षुधतुरान् ॥ नृपोनास्तिपुरेहृदय
कंयाधेवाकरोमिकिं ॥ २७ ॥ नमेव्रातास्तिपुत्राणांपतिर्मेनास्तिसान्निवौ ॥ २८ ॥ धनहीनांचमांत्यस्त्वातपस्तप्तुंगतःपतिः ॥ नजानातिसमर्थोपिदुःखितांधनवर्जितां ॥ २९ ॥
बालानांभरणंकेनकरोमिपतिनादिना ॥ मरिष्यंतिसुताःसर्वेक्षुधयापीडिताभृशं ॥ ३० ॥ एकंमुनंतुविक्रीय
द्रव्येजकियतापुनः ॥ पालयानिसुतानन्यानेपमेविहितोविधिः ॥ ३१ ॥ सर्वेषांनारणंनद्रुक्तंममविपर्य
ये ॥ कालस्यकलनायाहंविक्रीणामितथत्वजं ॥ ३२ ॥ हृदयंकठिनंकृत्वासंघित्यजनसासनी ॥ सादर्भरज्वाव
ध्वायगलेपुत्रंनिर्गता ॥ ३३ ॥ नुमियन्नोगडेवध्वामध्वमंपुत्रमौरसं ॥ शेषस्यभरणार्थायगृहीत्वाचलिता
गृहात् ॥ ३४ ॥ दृष्टासत्यव्रतेनार्तातापत्तोशोकसंयुता ॥ पप्रच्छनृपतिस्तांतुकिंचिकीर्षसिशोभने ॥ ३५ ॥
रुदतंबालकंकंठेवध्वानयसिकाधुना ॥ किमर्थंवारुसर्वांगिसत्यंब्रूहिममाग्रतः ॥ ३६ ॥ ऋषिपत्न्युवाच ॥
विश्वामित्रस्यभार्याहंपुत्रेयमेनृपात्मज ॥ विक्रेतुमौरसंकामंगमिष्येविपमेसुतं ॥ ३७ ॥ अन्नंनास्तिपति
र्मुक्तागतस्तप्तुंनृपकथित् ॥ विक्रीणामिनुयार्तेनशेषस्यभरणायवै ॥ ३८ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥

॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ कावुनेनिअनुनाकात्वंनयसीत्यन्वयः ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

टी.अ.
१०

राजोवाच ॥ पतिव्रतेरक्षपुत्रंदास्यामिभरणंतव ॥ तावदेवपतिस्तेत्रवनाच्चैवागमिष्यति ॥ ३९ ॥ वृक्षेतका
श्रमाभ्याशेभक्ष्यंकिंविन्निरंतरं ॥ बंधयित्वागमिष्यामिसत्यमेतद्वीम्यहं ॥ ४० ॥ इत्युक्तासातदातेनराज्ञाकौ
शिकका मिनी ॥ विबंधंतनयंकृत्वाजगामाश्रममंडलं ॥ ४१ ॥ सोभवद्गालवोनामगलबंधान्महातपाः ॥ सातुस्व
स्याश्रमेगत्वामुमोदबालकैर्वृता ॥ ४२ ॥ सत्यव्रतस्तुभक्त्याचकृपयाचपरिभुतः ॥ विश्वामित्रस्यचमुनेःकल
त्रंतद्वभारह ॥ ४३ ॥ वनेस्थितान्मृगान्हत्वाबराहान्महिषांस्तथा ॥ विश्वामित्रवनाभ्याशेमांसंवृक्षेवबं
धह ॥ ४४ ॥ ऋषिपत्नीगृहीत्वातन्मांसंपुत्रानदात्ततः ॥ निवृत्तिपरमांप्रापप्राप्यभक्ष्यमनुत्तमं ॥ ४५ ॥
अयोध्यांचैवराज्यंचतथैवांतःपुरमुनिः ॥ गतेतत्सुनृपेतस्मिन्वसिष्ठःपर्यरक्षत ॥ ४६ ॥ सत्यव्रतोपिधर्मात्मा
ह्यतिष्ठन्नगरादहिः ॥ पितुराज्ञांसमास्थायपशुघ्नव्रतवान्वने ॥ ४७ ॥ सत्यव्रतोह्यकस्माच्चकस्यचित्कारणा
न्नृपः ॥ वसिष्ठेवाधिकंमन्युंधारयामासनित्यदा ॥ ४८ ॥ त्यज्यमानंवनेपित्राधर्मिष्ठंचप्रियंसुतं ॥ निवारयामा
समुनिर्वसिष्ठःकारणेनह ॥ ४९ ॥ पाणिग्रहणमंत्राणांनिष्ठास्यात्सप्तमेपदे ॥ जानन्नपिसधर्मात्माविप्रदारा
परिग्रहे ॥ ५० ॥ कस्मिंश्चिद्विवसेरण्येमुगाभावेमहीपतिः ॥ वसिष्ठस्यचगांदोग्ध्रीमपश्यद्वनमध्यगां ॥ ५१ ॥

तद्व्युत्पत्तिरिति चेत्तदाह पाणिग्रहणेति सप्तमेपदेसप्तमीकर्मयदास्यात्तदापाणिग्रहणमंत्राणांनिष्ठासमाप्तिर्भवतिततः पूर्वकन्यापहारेतुनान्यस्य
पत्नीअहंकारेनानुन्येयमहतेतिघोषाद्येदोषायेतिभवाः इदंविप्रदाराणामपदेग्रहेअपहाराभावेकारणधर्मात्माजानान्नपिवासिष्ठोनिवा
रयामासमुनिर्वसिष्ठःकारणेनह ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

॥ २० ॥

सुखेनान्तरिः ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ मस्तके शंकवः ॥ पापचिन्तानि कुष्ठरूपसंख्यित्यर्थः ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥

तस्मिन्निशुकर्तस्तु क्रोधान्मोहाद्वदस्युक्त् ॥ वृक्षेव बंधतन्मांसेनीत्वा स्वधमभाक्षयत् ॥ ५२ ॥ ऋषिपत्नी
तुला स्वर्णभाजयामास तत्तदा ॥ शंकमानामगस्थेति नगोरिति यमुत्रत ॥ ५३ ॥ वसिष्ठस्तु हतादोग्रीज्ञा
त्वाकुहस्तमब्रवीत् ॥ दुरात्मन् किंकृतपापधेनुधातात्पिशाचवत् ॥ ५४ ॥ एवमेशंकवः क्रूराः पतंतु त्वरितास्त्रयः
सोवधादारद्वरणात्पितुः क्रोधात्तथाभृशं ॥ ५५ ॥ इति शंकुरिति नाम्नविभुविस्थातो भविष्यसि ॥ पिशाचरूपमा
त्मानं दर्शयन् सर्वदेहिनां ॥ ५६ ॥ व्यास उवाच ॥ एवं शप्तो वसिष्ठेन तदा सत्यव्रतोनृपः ॥ चचार चतपस्तीव्रत
स्मिन्नेवाश्रमे स्थितः ॥ ५७ ॥ कस्माच्चिन्मुनिपुत्रात्तु प्राप्यमंत्रमनुत्तमं ॥ ध्यायन् भगवतीं दिवीं प्रकृतिं परमां शि
वां ॥ ५८ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे सप्तमस्कंधे दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ जनमेजय उवाच ॥ वसिष्ठेन च
शप्तो सौत्रिशं कुर्नृपतेः सुतः ॥ कथं शापाद्विनिर्मुक्तस्तन्मे ब्रूहि महीमते ॥ १ ॥ व्यास उवाच ॥ सत्यव्रतस्तथा श
प्तः पिशाचत्वमवाप्तवान् ॥ तस्मिन्नेवाश्रमे तस्थौ देवीभक्तिपराधणः ॥ २ ॥ कदाचिन्नृपतिस्तत्र जह्वामंत्रं
वाक्षरं ॥ होमार्थं ब्राह्मणांगत्वा प्रणम्योवाच भक्तिः ॥ ३ ॥ भूमिदेवाः शृणुध्वं वैवचनं प्रणतस्य मे ॥ ऋत्वि
जो मम सर्वे त्रभवंतः प्रभवंतु ह ॥ ४ ॥ जपस्य च दशमं स्तोत्रं ॥ त्रयोविधानतः ॥ भवद्भिः कार्यसिद्ध्यर्थं वेदविद्भिः
कृपापदैः ॥ ५ ॥ सत्यव्रतो हं नृपतेः पुत्रोऽस्य ॥ त्वय्यं सर्वथा सुखहेतवे ॥ ६ ॥ तच्छ्रुत्वा
ब्राह्मणास्तत्र तमूचुर्नृपतेः सुतं ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥

॥ ५८ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके
आप्तुर्नृपते ॥ ११ ॥ वसिष्ठेन शप्तो

यानकं ॥ प्रोच्यते यत्र माहिमा भगव
॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥

नृपराजसिंहसत्त्वात्वेदे

शम्यवचस्तेषोरजादः स्वमने

धनुश्चगुरुणाभूत् ॥ राज्यादृष्टः पि

जः ॥ स्मृत्तारचडिकादेवीप्रवेशमनुचितयन् ॥

त्वाप्रवेशार्थस्थितः प्रांजलिग्रतः ॥ १२ ॥ ज्ञात्वाभगवतीतं तमर्तुकामं महीपतिं ॥ आजगाम तदा काशं प्रत्य

क्षतस्य चाग्रतः ॥ १३ ॥ दत्वाथ दर्शनं देवी तमुवाच नृपात्मजं ॥ सिंहारूढामहाराजमेधगं भीरयागिरा ॥ १४ ॥

किं ते व्यवसितं साधो ह्युताशे मातनुं त्यज ॥ स्थिरो भव महाभागा धृता तेजरसान्वितः ॥ १५ ॥ राज्यं दत्वा वने तु

भ्यर्गतास्तितपसे किल ॥ विषादं त्यज हेवीरपरश्वोहनिभूपते ॥ १६ ॥ नेतुं त्वामागमिष्यंति सचिवाश्च पितुस्तव

॥ मत्प्रसादात्पिता वत्सामभिषिच्य नृपासने ॥ १७ ॥ जित्वा कामं ब्रह्मलोकं गमिष्यत्येष निश्चयः ॥ इत्युक्त्वा तं

तदा देवा तत्र वातरधीयत ॥ १८ ॥ राजपुत्रो विरमितो मरणात् पावकात्ततः ॥ अयोध्यायां तदा गत्य नारदेन म

हात्मना ॥ १९ ॥ वृत्तांतः कथितः सर्वो राज्ञे सत्वरमादितः ॥ श्रुत्वा राजाथ पुत्रस्य तंतथा मरणोद्यमं ॥ २० ॥ खेद

मायां तमनसा शोचन् बहुधा नृपः ॥ सचिवानाह धर्मात्मा पुत्रशोकं परिभूतः ॥ २१ ॥ ज्ञातं भवद्विरत्युग्रं पुत्रस्य

यमवापि ॥ त्यक्तो मया वने धर्मात्मा पुत्रः सत्यं व्रतो ममा ॥ २२ ॥ आज्ञायां सोमंतः सद्यो राज्याहः परमार्थधिता स्थित

स्ति विषादोऽपि धर्मज्ञः ॥ २३ ॥ यत्किंचिदपि कारिष्येति विचार्य सदा ॥ २४ ॥ सोऽपि दुःखेन संतप्तः प्रवेष्टुं न ह्यु

क्तं ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

॥ २८ ॥ ३१ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ मुखोद्वाः ब्राह्मणः ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीदिति ॥ ३३ ॥

तस्माद्गच्छन्तु सर्वे ध्यानिविधिस्तस्थितः पुनः ॥ तस्माद्गच्छन्तु सर्वे ध्यानिविधिस्तस्थितः पुनः ॥ २५ ॥ आभ्यासवचने

इत्युक्तत्वात्प्रिणः सर्वान्प्रिषयामासपार्थिवः ॥ २७ ॥ तस्यैवानयनार्थं हि प्रीतिप्रवणमानसः ॥ ते गत्वा तं समा

विमोचनं ॥ २९ ॥ जटाजूट्यंत्रं क्रूरं चिंतातुरमचिंतयत् ॥ किंकृतं निष्ठुरं कर्ममया पुत्रो विवासितः ॥ ३० ॥ राज्या

माश्वत्थोपवेशयत् ॥ उपाविष्टसुतं राजा प्रेमपूर्वमुवाच ह ॥ ३२ ॥ प्रेमगद्गदया वाचनीति शास्त्रविशारदः ॥ रा

सत्यं कृत्वा पितृव्यं नामार्गे गमनं क्वचित् ॥ ३४ ॥ कर्तव्या पूजनीयानां पूजा चैव तपस्विनः ॥ ईतव्या दस्यवः क्र

सह ॥३६॥ नोपेक्ष्योल्पोपिकृतिनारिपुः सर्वात्मना मृतः ॥ न विश्नोत्परासक्तं सचिवं च तथा नतां ॥३७॥ चाराः सर्व

व्रजयेत् ॥ यष्टव्याविविधायज्ञाः ॥

प्रजासत्तापक्ष

[Illegible handwritten notes]

दि. मा. स.

॥ ४२ ॥ सुदीक्षितः सुहृत्प्रेयोमं
श्रूयते कश्चिदपिः प्रवासी कश्चित्सरो
रते शुकादयः कल्पपर्यंतस्वर्गभागं भुक्ताः

॥ इति अत्र ह्येवं पुराणांतरे कथा
॥ त्यतर्त्तीर्य तृषिताः पणुः देहपातोत्त
॥ शिविंदु हरिश्चंद्रां वरीषादयो मित्राथ

टी. अ.
११

ब्राह्मे सुहृते कर्तव्यमुत्थानं सर्वथा सदा ॥

कृत्यां कुर्यात्सुदीक्षितः ॥ पूजैतज्जन्मसाफल्यं पराशं

न् ॥ मजा तु जननी गभे गच्छेदिति विनिश्चयः ॥ ४४ ॥ सर्वदृ

रितस्तिष्ठेन्निर्भयचेतसा ॥ ४५ ॥ कृत्वानित्यविधिसम्यग्गतं

स्वविनिर्णयः ॥ ४६ ॥ संपूज्य ब्राह्मणान् पूज्यान् वेदवेदांतपार

॥ ४७ ॥ अविद्वान् ब्राह्मणः कोपिनैव पूज्यः कदाचन ॥ आहाराद

ल्लेभात्पुत्रपुत्रकर्तव्यं धर्मलंघनं ॥ अतः परं न कर्तव्यं कचिद्विप्रा

नीयाः प्रयत्नतः ॥ कारणं क्षत्रियाणां च द्विजा एव न संशयः ॥ ५० ॥

तेषां सर्वेषां तेजः स्वासुयोनिषु शाम्यति ॥ ५१ ॥

॥ ४२ ॥ पराशक्तेः परांपूजां भ

४३ ॥ सकृत्कृत्वामाहा पूजां देवीपादजलं पिब

॥ इति तद्वावभ

॥ समाह्वय च प्रष्टव्यो धर्मशा

॥ गोभूहिरण्यादिकं च देयं पात्रेषु सर्वदा

॥ ४८ ॥ नवा

॥ ४९ ॥ ब्राह्मणाभूमिदेवाश्च मान

॥ अग्नौग्निर्ब्रह्मणः क्षत्रमश्विनो लोहमुत्थिता ॥

॥ ५२ ॥

णीयश्रुतिमसिद्धाः परमज्ञानिनो राजानो भूवन् कोचित्खणाः कष्वजात्कष्यकात्याबनः सुरिपंचशिखवेशपायनापस्तंबहारीतादयो मुनयो ज्ञानि व
रा अत्रैव तिष्ठन्ति ॥ ४३ ॥ ॥ इष्टां चानि साक्षाद् भरो दृश्यं सर्वज्ञादिदं त्रयं सैव मगवतीत्यर्थः तदुक्तं मुंडकोपनिषत् ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥
राः यिष्यन्ति ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥
॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

॥ २२ ॥

चतुःषष्टीकवर्गैर्विश्रामिप्रतापतः ॥ १११ ॥ चतुःषष्टीकवर्गैर्विश्रामिप्रतापतः ॥ त्रिंशकोः स
 दानेन विनयेनैव सर्वथा भूतिमिच्छता ॥ ५२ ॥ दंडनीतिः सदा कार्या
 कोशस्थसंग्रहः कार्योन्मत्तप्रायमतेस्यह ॥ ५३ ॥ इति श्रीदिवाभागवते महापुराणे स
 व्यास उवाच ॥ ११ ॥ व्यास उवाच ॥ एवं प्रबोधितः पित्रा त्रिशंकुः प्रणतः नृपः ॥ तथेति पितरं
 प्राह भगवद्व्यासि ॥ १२ ॥ विप्रान्माहूय मंत्रज्ञान्वेदशास्त्रविशारदाम् ॥ अभिषेकस्य संभारान्कारयामास स
 वरं ॥ २ ॥ सलिलं सर्वतीर्थानां समानाद्यविशंपतिः ॥ प्रकृतींश्च समाहूय सामंतान्भूपतींस्तथा ॥ ३ ॥ पु
 ष्येति विधिवत्स्मै ददा वासनमुत्तमं ॥ अभिषिच्य सुतं राज्ञ्यो त्रिशंकुं विधिवत्पिता ॥ ४ ॥ तृतीयमाश्रमं पुण्यं जग्रा
 ह भार्यया युतः ॥ वने त्रिपथगा कूले च चारदुश्चरंतपः ॥ ५ ॥ काले प्राप्ते यौ स्वर्गं पूजितस्त्रिदशैरपि ॥ इन्द्रास
 नसमीपस्थो राजरविवत्सदा ॥ ६ ॥ राजोवाच ॥ पूर्वभगवता श्रोतं कथायोगेन सांप्रतं ॥ सत्यव्रतो वसिष्ठेन
 श्रोतव्यं धीवधा किल ॥ ७ ॥ कुपितेन पिशाचत्वं प्रापितो गुरुणा ततः ॥ कथं मुक्तः पिशाचत्वादित्येतत्संशयः
 प्रभो ॥ ८ ॥ नसिंहासनयोग्यो हि भवेच्छापसमन्वितः ॥ मुनिना मोचितः शापात्केनान्येन च कर्मणा ॥ ९ ॥
 एतन्मे ब्रूहि विप्रर्षे शापमोक्षणकारणं ॥ आनीतस्तु कथं पित्रा स्वगृहे तादृशकृतिः ॥ १० ॥ व्यास उवाच ॥ व
 सिष्ठेन च शप्तो सौ सद्यः पेशाचतांगतः ॥ दुर्दैवोऽयं भयंकरः ॥ ११ ॥ सदैवोपासिता देवी
 पिशाचत्वं गतं तस्य पापं चैव क्षयं ग

॥ ११ ॥ व्यास उवाच ॥ तत्रैव जस्वी संभ

॥ १२ ॥ व्यास उवाच ॥ तत्रैव जस्वी संभ

॥ १३ ॥ व्यास उवाच ॥ तत्रैव जस्वी संभ

॥ १४ ॥ व्यास उवाच ॥ तत्रैव जस्वी संभ

॥ १५ ॥ व्यास उवाच ॥ तत्रैव जस्वी संभ

॥ १६ ॥ व्यास उवाच ॥ तत्रैव जस्वी संभ

॥१७॥ इति चेत्तद्विनिर्दिष्टं न विधिः ।

वसिष्ठोऽपि प्रसन्नात्मा जातः ।

मात्मा मृते पितरि पार्थिव ॥ इति ।

लक्षणेः शस्त्रानिर्दिष्टैः संयुतश्चाति सुद ।

भोक्तुं मनोदधे ॥ १७॥ वसिष्ठस्याश्रमं गत्वा गङ्गा ।

राजोवाच ॥ ब्रह्मपुत्रमहाभाग सर्वमंत्रं विशारद ॥ विज्ञप्तिमे सुसनसाश्रोतुमर्हसितापसी ॥ १९॥ इच्छामेघस ।

मुत्पन्नास्वर्गलोकसुखाय च ॥ अनेनैव शरीरेण भोगान् भोक्तुममानुषान् ॥ २०॥ अप्सरोभिश्च संवासः क्रीडितुं ।

नन्दनेन ॥ देवगंर्वगानं च श्रोतव्यं मधुरं किल ॥ २१॥ याजयत्वं मखेनाशुतादृशेन महामुने ॥ यथानेन शरीरे ।

ण वसेल्लोकं त्रिविष्टपं ॥ २२॥ समर्थोऽसि मुनि श्रेष्ठ कुरु कार्यं ममाधुना ॥ प्रापयाशुमखं कृत्वा देवलोकं दुरासदं ।

॥ २३॥ वसिष्ठ उवाच ॥ राजन् मानुषदेहेन स्वर्गो वासः सुदुर्लभः ॥ मृतस्य हि ध्रुवं स्वर्गः कथितः पुण्यकर्मणा ।

॥ २४॥ तस्माद्विभेमि सर्वज्ञ दुर्लभाच्च मनोरथात् ॥ अप्सरोभिश्च संवासो जीवमानस्य दुर्लभः ॥ २५॥ कुरु यज्ञा ।

न्महाभाग मृतः स्वर्गं न वाप्स्यसि ॥ व्यास उवाच ॥ इत्याकर्ण्य वचस्तस्य राजा परमदुर्मनाः ॥ २६॥ उवाच च ।

चर्मभूयो वसिष्ठं भूवरोषितं ॥ न त्वं याजयसे ब्रह्मन् गर्वावेशाच्च मां यादि ॥ २७॥ अन्यं पुरोहितं कृत्वा यक्ष्ये हं किल सां ।

प्रत ॥ तच्छ्रुत्वा च चरन्तस्य वसिष्ठः कोपसंयुतः ॥ २८॥ शशाप भूपतिं चेति चांडालो भवदुर्मते ॥ अनेन त्वं शरीरे ।

ण नैव यो जीवसत्त्वरं ॥ २९॥ स्वर्गं हन्त न पापिष्ठसुरं भीवधूषित ॥ ब्रह्मपत्नीं हसोच्छिन्नधर्ममार्गां विदूषक ॥ ३०॥

॥ १७॥ ॥ १८॥ ॥ १९॥ ॥ २०॥ ॥ २१॥ ॥ २२॥ ॥ २३॥ ॥ २४॥ ॥ २५॥ ॥ २६॥ ॥ २७॥ ॥ २८॥ ॥ २९॥ ॥ उच्छिन्नधर्ममार्गे ।

विदूषक ॥ उच्छिन्नधर्ममार्गे ॥ ३०॥ ॥ ३१॥ ॥ ३२॥ ॥ ३३॥ ॥ ३४॥ ॥ ३५॥ ॥ ३६॥ ॥ ३७॥ ॥ ३८॥ ॥ ३९॥ ॥ ४०॥ ॥

इति नैत्यर्थः ॥ १५॥ ॥ १६॥ ॥

॥ १४॥ राज्यं शशासध ।

वायहरिश्चंद्रः सुशोभनः ॥

॥ १५॥ ॥ १६॥ ॥ १७॥ ॥ १८॥ ॥ १९॥ ॥ २०॥ ॥ २१॥ ॥ २२॥ ॥ २३॥ ॥ २४॥ ॥ २५॥ ॥ २६॥ ॥ २७॥ ॥ २८॥ ॥ २९॥ ॥ ३०॥ ॥

टी.अ.

१२

॥ २३॥

॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

मत्स्वर्गगतिः पापमृतस्यापिकथंचन ॥ व्यास उवाच ॥ इत्युक्तो गुरुणाराजन् त्रिशंकुस्तत्क्षणादपि ॥ ३१ ॥ तत्र
तैमशरीरेण बभूव श्वपचाकृतिः ॥ कुंडलेश्ममयेवापि जाते तस्य च तत्क्षणात् ॥ ३२ ॥ देहे चंदनगंधश्च विद्धुं धो
ह्यभवत्तदा ॥ नीलवर्णेयसंजाते दिव्ये पीतांबरतनौ ॥ ३३ ॥ गजवर्णो भवद्देहः शापात्तस्य महात्मनः ॥ शक्त्यु
पासं करोषेण फलमेतद् भूवृषा ॥ ३४ ॥ तस्माच्छ्रीशक्तिभक्तो हि नावमान्यः कदाचन ॥ गायत्रीजपनिष्ठो हि वसि
ष्ठो मुनिसत्तमः ॥ ३५ ॥ दृष्ट्वा निंदानि जंदेहं राजा दुःखमवाप्तवान् ॥ न जगाम गृहे दीनो वनमेवाभितो ययौ ॥ ३६ ॥
चित्तयामास दुःखार्तस्त्रिशंकुः शोकविह्वलः ॥ किं करोमि क्व गच्छामि देहमेतीव निंदितः ॥ ३७ ॥ कर्तव्यं नैव पश्यामि
येन मे दुःखसंक्षयः ॥ गृहे गच्छामि चेत्पुत्रः पीडितोऽद्य भविष्यति ॥ ३८ ॥ भार्यापि श्वपचं दृष्ट्वा नांगीकारं करिष्यति
॥ सचिवानादरिष्यंति वीक्ष्य मामीदृशं पुनः ॥ ३९ ॥ ज्ञातयो बहुवर्गश्च संगतो न भजिष्यति ॥ सर्वे स्त्यक्तस्य
मे नूनं जीवितान्मरणं वरं ॥ ४० ॥ विषं वा भक्षयित्वा द्यपतित्वा वा जलाशये ॥ कृत्वा वा कंठपाशं च देहत्यागं करोम्यहं
॥ ४१ ॥ अग्नौ वा ज्वलिते देहं जुहोमि विधिवद्बलात् ॥ कृत्वा वा नशनं प्राणांस्त्यजामि दूषितान्भृशं ॥ ४२ ॥ आत्मह
त्या भवेन्नूनं पुनर्जन्म निजन्मनि ॥ श्वपचत्वं च श
चित्तयत् ॥ आत्महत्या न कर्तव्यं ॥ ४३ ॥ पुनर्विचारं भूपालश्चेतसा सम
॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

नेतत्राह बन्मनिबन्मनीति प्रातेब
॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

दे.भा.स.

॥४८॥ ॥४९॥ ४९ ॥ साधुस.

भोक्तृत्वं कृतं कर्म देहेना

॥२४॥

गादन्यथानक्षयो भवेत् ॥ तस्म

वनंतथा ॥ स्मरणं चांबिकायास्तु सोधूना

ल्लदाचित्तु भवेत्साधुसमागमः ॥४८॥ इति संचि

त्रैव संस्थितः ॥ ४९ ॥ हरिश्चंद्रस्तदा ज्ञात्वा पितुः शापस्य कारणं ॥ दुःखितः सचिवांस्तत्र प्रेषयामास पार्थिवः

॥ ५० ॥ सचिवास्तत्र गत्वा शुतमूचुः प्रश्रयान्विताः ॥ प्रणम्य श्वपचाकारं निःश्वसंतं मुहुर्मुहुः ॥ ५१ ॥ राजन्पु

त्रेण ते नूनं प्रेषितान्समुपागतान् ॥ अवेहिसचिवांस्त्वं नो हरिश्चंद्रा ज्ञया स्थितान् ॥ ५२ ॥ युवराजसुतः प्राह यत्त

च्छृणु नराधिप ॥ आनयध्वं नृपं यूयं संमान्य पितरं मम ॥ ५३ ॥ तस्माद्राजन्समागच्छ राज्यं प्रति गतव्यथः ॥ से

वां सर्वे करिष्यंति सचिवाश्च प्रजास्तथा ॥ ५४ ॥ गुरुं प्रसादयिष्यामः स यथा तु दयेत वै ॥ प्रसन्नो सौमहातेजा

दुःखशान्तिकं रिष्यति ॥ ५५ ॥ इति पुत्रेण ते राजन्कथितं बहुधा किल ॥ तस्माद्रामनमेवाशुरोचतां निजसद्धानि

॥ ५६ ॥ व्यास उवाच ॥ इति तेषां नृपः श्रुत्वा भाषितं श्वपचाकृतिः ॥ स्वगृहं गमनायासौ नमति कृत्वानदः ॥

॥ ५७ ॥ तानुवाच तदा वाक्यं ब्रजंतु सचिवाः पुरं ॥ गत्वा पुत्रं महाभागान्ब्रुवंतु वचनाच्च मे ॥ ५८ ॥ नागमिष्या

म्यहं पुत्रकुरुराज्यमतंद्रितः ॥ मानयन्ब्राह्मणान्देवान्धजन्यज्ञैरनेकशः ॥ ५९ ॥ नाहं श्वपचवेषेण गर्हितेन म

हात्वाभिः ॥ आगमिष्याम्यथो ध्यायां सर्वे गच्छंतु माधिरं ॥ ६० ॥ पुत्रं सिंहसने स्थाप्य हरिश्चंद्रं महाबलं ॥

सर्वे तु सभ्यकर्माणि यूयं तत्र ममाज्ञया ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥

॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥

४९ ॥ सचिवानिति स्वापे

५१ ॥ प्रारब्धकर्मणां भो

पुण्याश्रमाभ्यां शोतीर्थानां से

नूनं करिष्यामिव नेव सन् ॥ भाग्ययोगा

सात्यत्कास्वनगरं नृपः ॥ गंगातीरे गतः कामं शोचंस्त

टी.अ.

१२

॥२४॥

॥६२॥६३॥६४॥ इति श्रीदेवीभागवततिलकसप्तमस्कंधेद्वादशोऽध्यायः ॥६२॥ विषाष्टिभक्तवत्सलं हरिं शब्देनूपेसति ॥ त्रिशंकोः कौशिक
 कस्यामि सप्तममंडलीं देवे ॥६॥ हरिश्चंद्रस्य राग्याभिषेके कृतं सत्यनंतरं वृत्तमाह हरिश्चंद्रः ॥६॥ ॥६४॥ अस्मिन् समये तपश्चर्यार्थं बहु
 इत्यादि श्रुतस्तस्ते तु स्मृदुश्चातुराभृशं ॥ सचिवानिर्ययुस्तूष्णीं न त्वात्तच्यवनाश्रमात् ॥६॥ अथोऽध्यायामुपा
 गत्य पुण्ये न्हिविधिपूर्वकं ॥ अभिषेकं तदा च कुर्हर्षिश्चंद्रस्य मूर्ध्नि ते ॥६॥ ३॥ अभिषिक्तस्तु ते जस्वी सचिवैश्च नृपा
 ज्ञया ॥ राज्यं चकार धर्मिष्ठः पितरं चितयन् भृशं ॥६॥ ४॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे सप्तमस्कंधेद्वादशोऽध्या
 यः ॥ १२ ॥ राजोवाच ॥ हरिश्चंद्रः कृतो राजा सचिवैर्नृपशासनात् ॥ त्रिशंकुस्तुकथं मुक्तस्तस्माच्चान्दालदेहतः
 ॥ १ ॥ मृतो वा वनमध्ये तु गंगातीरे परिरुतः ॥ गुरुणा वा कृपां कृत्वा शापात्तस्माद्विमोचितः ॥ २ ॥ एतद्वृत्तांतम
 स्त्विं कथयस्व ममाग्रतः ॥ चरितं तस्य नृपतेः श्रोतुकामोऽस्मि सर्वथा ॥ ३ ॥ व्यास उवाच ॥ अभिषिक्तं सुतं कृ
 त्वा राजा संतुष्टमानसः ॥ कालातिक्रमणं तत्र चकार चितयन् नृशिवां ॥ ४ ॥ एवंगच्छतिकाले तु तपस्तप्त्वासमा
 हितः ॥ द्रष्टुं दारान्सुतादींश्च तदा गत्वा कौशिको मुनिः ॥ ५ ॥ आगत्य स्वजनं दृष्ट्वा सुस्थितं मुदमाप्तवान् ॥ भा
 र्यपप्रच्छ मेधावी स्थितामग्रे सपर्यया ॥ ६ ॥ दुर्भिक्षे तु कथं कालस्त्वयानीतः सुलोचने ॥ अन्नं विना त्विमेवात्र पा
 लितः केन तद्वद ॥ ७ ॥ अहं तपसि संबन्धो नागतः शृणु सुंदरि ॥ किं कृतं तु त्वया कांते विना द्रव्येण शोभने ॥ ८ ॥ मया
 चिंता कृता तत्र श्रुत्वा दुर्भिक्षमद्भुतं ॥ नागतो हं विचार्यैवं किं करिष्यामि निर्धनः ॥ ९ ॥ अहमप्यतिवामोरुपीडितः क्षुध
 यावने ॥ प्रविष्टश्चौरभावेन कुत्र विच्छुपचालये ॥ १० ॥ श्वपचं निद्रितं दृष्ट्वा क्षुधया पीडितो भृशं ॥ महानसं परिज्ञाय
 भक्ष्यार्थं समुपस्थितः ॥ ११ ॥ यदा भांडं समुद्धाट्य पक्वं श्वतनुजामिषं ॥ गृण्णामि भक्षणार्थाय तदा दृष्टुं तेन वै ॥ १२ ॥
 कालं गतो विप्रः स्वगृहमागत इत्याह एवंगच्छतीति ॥ ५ ॥ ६ ॥ विश्वामित्रो दुर्भिक्षकालं वृत्तांतं भार्या पृच्छति दुर्भिक्षेति ॥ ७ ॥
 ॥ ८ ॥ ९ ॥ इत्यभार्या वृत्तांतं पृष्ठ्वा स्ववृत्तांतमाह अहमप्यतीति ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे भा.स.

॥२५॥

॥१३॥१४॥१५॥१६॥१७॥ द्विजत्वे ब्राह्मणत्वं चेति द्विजत्वे सत्यपि ब्राह्मणत्वं दुर्लभमित्यर्थः ॥१८॥१९॥२०॥ माया तु मागच्छतु माश

पृष्ठः कस्त्वं कथं प्राप्तो गृहे मे निशिसादरं ॥ ब्रूहि कार्यं किमर्थं त्वमुद्घाटयसि भांडकं ॥ १३ ॥ इत्युक्तः श्वपचेना
हं क्षुधया पीडितो भृशं ॥ तमवोचं सुखं शांते कामं गद्गदया गिरा ॥ १४ ॥ ब्राह्मणो हं महाभाग तापसः क्षुधया दि
तः ॥ चौरभावमनुप्राप्तो भक्षयं पश्यामि भांडके ॥ १५ ॥ चौरभावेन संप्राप्तोऽस्म्यतिथिस्ते महामते ॥ क्षुधितो
स्मिददस्वाज्ञां मां संभक्षामि संस्कृतं ॥ १६ ॥ विश्वामित्र उवाच ॥ श्वपचस्तु वचः श्रुत्वानामुवाच सुनिश्चितं ॥
भक्षं मा कुरु वर्णाग्र्यजानी हि श्वपचालयं ॥ १७ ॥ दुर्लभं खलु मानुष्यं तत्रापि च द्विजन्मता ॥ द्विजत्वे ब्राह्मणत्वं
च दुर्लभं वेत्सि किं न हि ॥ १८ ॥ दुष्टाहारो न कर्तव्यः सर्वथा लोकमिच्छता ॥ अग्राह्यामनुना प्रोक्ताः कर्मणा सप्त
चांत्यजाः ॥ १९ ॥ त्याज्यो हं कर्मणा विप्रश्च पचो नात्र संशयः ॥ निवारयामि भक्ष्यात्वां न लोभेनां जसा द्विज
॥ २० ॥ वर्णसंकरदोषो यं माया तु त्वां द्विजोत्तम ॥ विश्वामित्र उवाच ॥ सत्यं वदसि धर्मज्ञ मतिस्ते विशदांत्यज
॥ २१ ॥ तथाप्यापदि धर्मस्य सूक्ष्ममार्गं ब्रवीम्यहं ॥ देहस्य रक्षणं कार्यं सर्वथा यदि मानद ॥ २२ ॥ पापस्यां
ते पुनः कार्यं प्रायश्चित्तं विशुद्धये ॥ दुर्गतिस्तु भवेत्पापादनापदि न चापदि ॥ २३ ॥ मरणात् क्षुधितस्याथ नरको
नात्र संशयः ॥ तस्मात् क्षुधापहरणं कर्तव्यं शुभमिच्छता ॥ २४ ॥ तेनाहं धीर्यधर्मेण देहं रक्षेयथांत्यज ॥ अव
र्षणे च चौर्येण यत्पापं कथितं बुधैः ॥ २५ ॥ यो न वर्षति पर्जन्यं तत्तु तस्मै भविष्यति ॥ विश्वामित्र उवाच ॥ इत्युक्ते
वचने कांते पर्जन्यः सह सापतत् ॥ २६ ॥ गगनाद्वास्ति हस्ताभिर्धाराभिरभिकांक्षितः ॥ मुदितो हं वनं वीक्ष्य वर्षतं
विद्युता सह ॥ २७ ॥ तदा हंत द्रुहंत्यत्कानि सृतः परं धाम मुदा ॥ कथय त्वं वरारोहे कालो नीतस्त्वयं कथं ॥ २८ ॥

नो निषेधार्थकः ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ असदुपाये मन्यपि यः क्षुधितः प्रोक्तं याचकरोति नरकं प्राप्नोतीत्याहं मरणादिति ॥ २४ ॥

॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥

॥ २९ ॥ ३० ॥ नीवारार्थं अरण्ये भवाः श्यामा काने ॥ इति नीवारा मे निद्रा गम्यमाध ॥ ३१ ॥ फले नीवारे रूपं किंचिदुदरपूर्यपरि

कातरः परमः क्रूरः क्षयकृत् प्राणिनामिह ॥ आसत्वाच ॥ इति ते रूपं श्रुत्वा पतिमाहाप्रयः ॥ ३२ ॥ यथाशृणु
मयानीतः कालः परमदारुणः ॥ गते त्वयि मुनि श्रेष्ठ दुर्भिक्षं समुपागते ॥ ३३ ॥ अन्नार्थं पुत्रकाः सर्ववभूवुश्चातिदुः
खिताः ॥ क्षुधितान् बालकान् वीक्ष्य नीवारार्थं वने वने ॥ ३४ ॥ आताहं चिंतय विटार्किं चित्वा तं फलं तद्वत् ॥ एवं
च कतिचिन्मासानि वारेणातिवाहिताः ॥ ३५ ॥ तदभावे मया कांतं चिंतितं मनसा पुत्रः ॥ न भिक्षा किल दुर्भिक्षे नी
वारानापि कानने ॥ ३६ ॥ न वृक्षेषु फलान्यासुर्न मूलानि धरातले ॥ क्षुधया पीडिता बाला रुदन्ति भृशमातुराः ॥ ३७ ॥
किं करोमि क्व गच्छामि किं ब्रवीमि क्षुधार्दितान् ॥ एवंचिंत्य मनसा निश्चयस्तु मया कृतः ॥ ३८ ॥ पुत्रमेकं ददाम्य
द्य कस्मैचिद्वनिने किल ॥ गृहीत्वा तस्य मौल्यं तु तेन द्रव्येण बालकान् ॥ ३९ ॥ पालयेहं क्षुधार्तांस्तु नान्योपायो
स्ति पालने ॥ इति संचिंत्य मनसा पुत्रोऽयं प्रहितो मया ॥ ४० ॥ विक्रयार्थं महाभागं क्रंदमानो भूतातुरः ॥ क्रंदमा
नं गृहीत्वैनं निर्गताहं गतत्र पा ॥ ४१ ॥ तदा सत्यव्रतो मार्गे मामुद्वीक्ष्य भृशमातुरां ॥ पप्रच्छ स च राजर्षिः कस्मा
द्वादिति बालकः ॥ ४२ ॥ तदाहंतमुवाचेदं वचनं मुनिसत्तम ॥ विक्रयार्थं नीयते सौ बालको द्यमयानृप ॥ ४३ ॥
श्रुत्वा मे वचनं राजा दयार्द्रहृदयस्ततः ॥ मामुवाच गृहं याहि गृहीत्वैनं कुमारकं ॥ ४४ ॥ भोजनार्थं कुमारानामामिपं
विहितं तव ॥ प्रापयिष्याम्यहं नित्यं यावन्मुनिसमागमः ॥ ४५ ॥ अहन्यहनि भूपालो वृक्षे स्निग्धं मृगसूकरान् ॥
विन्यस्य याति हत्वा सौप्रत्यहं दययान्वितः ॥ ४६ ॥ तेनैव बालकाः कांतपालिता वृजिनार्णवात् ॥ वसिष्ठेनाथ
शप्तो सौ भूपतिर्मम कारणात् ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥

मितं ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥

दे.भा.स

॥२६॥

॥ ४९ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ तस्माद्रक्षेति तस्मात्श्वपचत्वादक्षणामित्यर्थः ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ कांतारात्संकटात् ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥

कस्मिंश्चिद्विवसेमांसंन प्राप्तं तेन कानने ॥ हतादोग्ध्रीवसिष्ठस्य तेनासौ कुपितो मुनिः ॥ ४५ ॥ त्रिशंकुरिति भू-
पस्य कृतं नाम महात्मना ॥ कुपितेन वधाद्धेतोश्चांडालश्च कृतो नृपः ॥ ४६ ॥ तेनाहंदुःखिता जाता तस्य दुःखे-
न कौशिक ॥ श्वपचत्वमसौ प्राप्तो मत्कृते नृप नंदनः ॥ ४७ ॥ येन केनाप्युपायेन भवतानृपतेः किल ॥ तस्माद्रक्षा-
प्रकर्तव्या तपसा प्रबले मह ॥ ४८ ॥ व्यास उवाच ॥ इति भार्यावचः श्रुत्वा कौशिको मुनिस्तमः ॥ तामाह कामिनीं
दीनां सांत्व पूर्वमरिंदम ॥ ४९ ॥ विश्वामित्र उवाच ॥ मोचयिष्यामि तं शापान्नृपंकमललोचने ॥ उपकारः कृतो
येन कांताराद्रक्षितासि वै ॥ ५० ॥ विद्यातपोवलेनाहं करिष्ये दुःखसंक्षयं ॥ इत्याश्वास्य प्रियां तत्र कौशिकः पर-
मार्थवित् ॥ ५१ ॥ चिंतयामास नृपतेः कथं स्याद्दुःखनाशनं ॥ संविमृश्य मुनिस्तत्र जगाम यत्र पार्थिवः ॥ ५२ ॥
त्रिशंकुः पक्षणे दीनः संस्थितः श्वपचाकृतिः ॥ आगच्छंतं मुनिं दृष्ट्वा विस्मितो सौ नराधिपः ॥ ५३ ॥ दंडवन्निपपा-
तोर्व्यापादयोस्तरसामुनेः ॥ गृहीत्वा तं करेभूषं पतितं कौशिकस्तदा ॥ ५४ ॥ उत्थाप्योवाच वचनं सांत्व पूर्वद्विजो-
त्तमः ॥ मत्कृते त्वं महीपाल शप्तोसि मुनिनायतः ॥ ५५ ॥ वाञ्छितं ते करिष्यामि ब्रूहि किं करवाण्यहं ॥ राजोवाच ॥
मया संप्रार्थितः पूर्ववसिष्ठो मखहेतवे ॥ ५६ ॥ मां याजय मुनि श्रेष्ठ करोमि मखमुत्तमं ॥ यथेष्टं कुरु विप्रेन्द्र यथा स्व-
र्गं व्रजाम्यहं ॥ ५७ ॥ अनेनैव शरीरेण शक्रलोकं सुखालयं ॥ कोपं कृत्वा वसिष्ठो सो मामाहेति सुदुर्मतो ॥ ५८ ॥ मानु-
षेण हि देहेन स्वर्गवासः कुतस्तव ॥ पुनर्मयोक्तो भगवान् स्वर्गलुब्धेन चानघ ॥ ५९ ॥ अन्यं पुरोहितं कृत्वा यक्ष्ये
हं यज्ञमुत्तमं ॥ तदा तेनैव शप्तोहं चांडालो भवपामर ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥

पक्षणे श्वपचयामेग्रामाद्वाहिर्भूति ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥

टी.अ.

१३

॥२६॥

॥ ६१ ॥ ६२ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके सप्तमस्कंधे त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ पञ्चाधिकैः श्वपचाकृत्यैः स्वर्गगते सति ॥ त्रिशंकौ तु ह
 इत्येतत्कथितं सर्वकारणं शापसंभवं ॥ मम दुःखं विनाशाय समर्थोऽसि मुनीश्वर ॥ ६१ ॥ इत्युक्त्वा विररामासौरा
 जादुःखरुजादितः ॥ कौशिकोऽपि निराकर्तुं शापं तस्य व्यचिंतयत् ॥ ६२ ॥ इति श्रीदेवीभा० म० सप्तमस्कंधे त्र
 योदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ व्यास उवाच ॥ विचिंत्य मनसा कृत्यांगधिसूनुर्महातपाः ॥ प्रकल्पय ज्ञसंभारान्मुनीनां
 मंत्रयत्तदा ॥ १ ॥ मुनयस्तं मखं ज्ञात्वा विश्वामित्रनिमंत्रिताः ॥ नागताः सर्वे एवैते वसिष्ठेन निवारिताः ॥ २ ॥ गाधिसू
 नुस्तदा ज्ञाय विमना श्चातिदुःखितः ॥ आजगामाश्रमं तत्र यत्रासौ नृपतिः स्थितः ॥ ३ ॥ तमाह कौशिकः क्रुद्धो
 वसिष्ठेन निवारिताः ॥ नागता ब्राह्मणाः सर्वे यज्ञार्थं नृपसत्तम ॥ ४ ॥ पश्य मे तपसः सिद्धिं यथा त्वांसुरसद्गानि ॥
 प्रापयामि महाराज वाञ्छितं ते क रोम्यहं ॥ ५ ॥ इत्युक्त्वा जलमादाय हस्तेन मुनिसत्तमः ॥ ददौ पुण्यं तदा तस्मै
 गायत्रीजपसंभवं ॥ ६ ॥ दत्त्वाथ सुकृतराज्ञे तमुवाच महीपतिः ॥ यथेष्टं गच्छ राजर्षे त्रिविष्टपम तं द्रितः ॥ ७ ॥ पु
 ष्येन मम राजेन्द्र बहुकालार्जितेन च ॥ याहि शक्रपुरीं प्रीतः स्वस्तितेस्तु सुरालये ॥ ८ ॥ व्यास उवाच ॥ इत्युक्त
 वति विष्ट्रे त्रिशंकुस्तरसा ततः ॥ उत्पपात यथा पक्षी वेगवांस्तपसो बलात् ॥ ९ ॥ उत्पत्य गगने राजा गतः शक्र
 पुरीं यदा ॥ दृष्टो देवगणैस्तत्र क्रूरश्चांडालवेषभाक् ॥ १० ॥ कथितोऽसौ सुरेन्द्राय कोयमायाति सत्वरः ॥ गगने दे
 ववद्वायो दुर्दर्शः श्वपचाकृतिः ॥ ११ ॥ सहसोत्थाय शक्रस्तमपश्यत्पुरुषाधमं ॥ ज्ञात्वा त्रिशंकुमपि सनिर्भ
 त्सर्यतरसा ब्रवीत् ॥ १२ ॥ श्वपचः कसमायाति देवलोके जुगुप्सितः ॥ याहि शीघ्रं ततो भूमौ नात्र स्थातुं त्वयोचितं
 ॥ १३ ॥ इत्युक्तः स्खलितः स्वर्गाच्छक्रैणामित्रकर्शन ॥ निपपात तदाराजा क्षीणपुण्यो यथामरः ॥ १४ ॥

रिश्चंद्रकथाप्रारभ्यते धुना ॥ १ ॥ त्रिशंकुवाक्यं श्रुत्वा विश्वामित्रः किंकृतवांस्तदाह विचिंत्यते ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ वाञ्छितं ते भिलापि
 तं करोमीत्यर्थः ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ शीघ्रं भूमौ याहि ॥ १३ ॥ १४ ॥

दे.भा.स.

॥२७॥

॥ १५ ॥ १६ ॥ चलितोपि मुनेस्तपःप्रभावेण तत्रैव स्थित इत्यर्थः ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ स्वं निवासं स्वकीयं स्थानं नयस्वेत्यर्थः ॥ २१ ॥ ओवाचेत्यत्राङ्पूर्वकः प्रयोगः त्रिशंकोः स्वर्गवासश्च स्कांदेनागरखंडेऽप्युक्तः तत्र ब्रह्माणं प्रति देववाक्यं सृष्टिसृष्टासुरश्रेष्ठविश्वा

टी.अ.
१४

पुनः श्रुक्रोशभूपालो विश्वामित्रेति चासकृत् ॥ पतामिरक्षदुःखार्तिस्वर्गाच्चलितमाशुगं ॥ १५ ॥ तस्य तत्क्रंदि
तराजन्पततः कौशिको मुनिः ॥ श्रुत्वा तिष्ठेति होवाच पतंतं वीक्ष्य भूपतिं ॥ १६ ॥ वचनात्तस्य तत्रैव स्थितो सौ
गगने नृपः ॥ मुनेस्तपःप्रभावेण चलितोपि सुरालयात् ॥ १७ ॥ विश्वामित्रोऽप्यपःस्पृष्ट्वा चकारेष्टिं सुविस्तरां ॥
विधातुं नूतनां सृष्टिं स्वर्गलोकं द्वितीयकं ॥ १८ ॥ तस्योद्यमं तथा ज्ञात्वा त्वरितस्तु शचीपतिः ॥ तत्राजगाम सहसा
मुनिं प्रति तुगाधिजं ॥ १९ ॥ किं ब्रह्म नृक्रियते साधोकस्मात्कोपसमाकुलः ॥ अलं सृष्ट्या मुनिश्रेष्ठ ब्रूहि किं क
रवाणिते ॥ २० ॥ विश्वामित्र उवाच ॥ स्वं निवासं महीपालं च्युतं त्वद्भुवनाद्विभो ॥ नयस्व प्रीतियोगेन त्रि
शंकुं चातिदुःखितं ॥ २१ ॥ व्यास उवाच ॥ तस्य तं निश्चयं ज्ञात्वा तुराषाडतिशंकितः ॥ तपो बलं विदित्वो ग्रमो
मित्योवाच वासवः ॥ २२ ॥ दिव्यदेहं नृपं कृत्वा विमानवरसंस्थितं ॥ आपृच्छ यः कौशिकं शक्रोऽगमन्निजपुरीत
दा ॥ २३ ॥ गतेश्च क्रेतुवैस्वर्गं त्रिशंकुसहितेततः ॥ विश्वामित्रः सुखं प्राप्य स्वाश्रमे सुस्थिरो भवत् ॥ २४ ॥ ह
रिश्चंद्रोऽथ तच्छ्रुत्वा विश्वामित्रो पकारकं ॥ पितुः स्वर्गममं कामं मुदितो राज्यमन्वशात् ॥ २५ ॥ अयोध्याधिप
तिः क्रीडां चकार सहभार्यया ॥ रूपयौवनचातुर्ययुक्तया प्रीतिसंयुतः ॥ २६ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥

मित्रेण सांप्रतं तस्माद्धारयतं गत्वा स्वयमेव पितामहः तेषां तद्वचनं श्रुत्वा तैरेव सहितो प्रीतिः गत्वा वाचजगन्मित्रं विश्वामित्रमुनीश्वरं निवृत्तिकु
सविप्रर्षेसांप्रतं वचनान्मम विश्वामित्र उवाच अनेनैव शरीरेण त्रिशंकुर्द्विजसत्तमः यदि गच्छति तैल्लोके तत्सृष्टिं करोम्यहं ब्रह्मोवाच एष ग
च्छति भूपालो मया सह त्रिविष्टपं अनेनैव शरीरेण मत्प्रसादान्मुनीश्वरोति ॥ २३ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ ॥ ७१ ॥

॥२७॥

॥२७॥२८॥२९॥३०॥३१॥ निवेदामिभित्तवेदामिभित्तं ॥ ३२ ॥ अनपत्यत्वजं वदुःखं तद्भादुःखं संसारेन विद्यत इत्यन्वयः ॥ ३३ ॥

अतीतकाले युवती न सा गर्भवती ह्यभूत् ॥ तदा चिंतातुरो राजा बभूवाती वदुःखितः ॥२७॥ वसिष्ठस्याश्रमं गत्वा
प्रणम्य शिरसामुनिं ॥ अनपत्यत्वजं चिंतां गुरवे समवेदयत् ॥२८॥ दैवज्ञोऽसि भवान्कामं मंत्रविद्याविशारदः ॥ उ
पायं कुरु धर्मज्ञ संततेर्मम मानद ॥ २९ ॥ अपुत्रस्य गतिर्नास्ति जानासि द्विजसत्तम ॥ कस्मादुपेक्षसे जाननदुः
खं मम च शक्तिमान् ॥३०॥ कलर्विकास्त्वमेधन्यायेशि शुंलालयंति हि ॥ मंदभाग्योऽहमनिशं चिंतयामि दिवानि
शं ॥ ३१ ॥ व्यास उवाच ॥ इत्याकर्ण्य मुनिस्तस्य निवेदामिभित्तं वचः ॥ संचिंत्य मनसा सम्यक्तमुवाच विधेः
सुतः ॥ ३२ ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ सत्यं ब्रूषेम हाराज संसारेऽस्मिन्नविद्यते ॥ अनपत्यत्वजं दुःखं यत्तथा दुःखमद्भु
तं ॥ ३३ ॥ तस्मात्त्वमपि राजेन्द्र वरुणं याद सांपतिं ॥ समाराधय त्नेन स ते कार्यं करिष्याति ॥ ३४ ॥ वरुणाद
धिको नास्ति देवः संतानदायकः ॥ तमाराधय धर्मिष्ठकार्यं सिद्धिर्भाविष्यति ॥ ३५ ॥ दैवं पुरुषकारश्च माननीया
विमौ नृभिः ॥ उद्यमेन विना कार्यं सिद्धिः संजायते कथं ॥ ३६ ॥ न्यायतस्तु नरैः कार्यं उद्यमस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ कृ
ते तस्मिन् भवेत्सिद्धिर्नान्यथानृपसत्तम ॥३७॥ इति तस्य वचः श्रुत्वा गुरोरमित तेजसः ॥ प्रणम्य निर्ययौ राजा
तपसे कृतानि श्रयः ॥ ३८ ॥ गंगातीरे शुभे स्थाने कृतपद्मासनो नृपः ॥ ध्यायन्पाशधरं चित्ते च चारदुश्चरंतपः
॥ ३९ ॥ एवंपश्यतस्तस्य प्रचेता दृष्टिगोचरः ॥ कृपया भून्महाराज प्रसन्नमुखं पंकजः ॥ ४० ॥ हरिश्चंद्रमु
वाचेदं वचनं याद सांपतिः ॥ वरं वरय धर्मज्ञ तुष्टोऽस्मि तपसा तव ॥ ४१ ॥ राजोवाच ॥ अनपत्योऽस्मि देवेश पुत्रं
देहि सुखप्रदं ॥ ऋणत्रयापहारार्थमुद्यमोऽयं मया कृतः ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥

॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

दे.भा.स.

॥२७॥

॥ ४३ ॥ ४४ ॥ पशुबंधेनपशुपणेन ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ममाग्रेयद्वर्षीषिपुत्रंदास्यामीतितद्वचनंसत्यंकार्यमित्यर्थः ॥ ४८॥

॥ ४९ ॥ शैब्याशिवेरपत्यंकन्या ॥ ५० ॥ दोहदोगर्भिणीमनोरथः ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ आदौजातकर्मचकारततोदानानिददा

नृपस्यवचनंश्रुत्वाप्रगल्भंदुःखितस्यच ॥ स्मितपूर्वततःपार्श्वीतमाहपुरतःस्थितं ॥ ४३ ॥ वरुणउवाच ॥

पुत्रोयादिभवेद्राजन्गुणीमनसिवांच्छितः ॥ सिद्धकार्येततःपश्चात्किंकरिष्यसिमेप्रियं ॥ ४४ ॥ यदित्वंतेन

पुत्रेणमांयजेथाविशंकितः॥पशुबंधेनतेनैवददामिनृपतेवरं ॥४५ ॥ राजोवाच ॥ देवमेमास्तुबंध्यत्वंयजिष्ये

हंजलाधिप ॥ पशुकृत्वास्तुतंपुत्रंसत्यमेतद्वर्षीमिते ॥ ४६ ॥ बंध्यत्वेपरमंदुःखमसह्यंभुविमानद ॥ शोकान्नि

शमनंनृणांतस्माद्देहिसुतंशुभं ॥ ४७ ॥ वरुणउवाच ॥ भविष्यतिसुतःकामंराजन्गच्छगृहायवै ॥ सत्यं

तद्वचनंकार्ययद्वर्षीषिममाग्रतः ॥४८॥ व्यासउवाच ॥ इत्युक्तोवरुणेनासौहरिश्चंद्रो गृहंययौ ॥ भार्यायैक

थयामासवृत्तांतंवरदानजं॥४९॥ तस्यभार्याशतंपूर्णंबभूवातिमनोहरं॥पट्टराज्ञीशुभाशैब्याधर्मपत्नीपतिव्रता

॥५०॥ कालेगतेथसागर्भंदधारवरवर्णिनी ॥ बभूवमुदितोराजाश्रुत्वादोहदचेष्टितं ॥५१॥ कारयासविधिवत्

संस्कारान्नृपतिस्तदा ॥ मासेथदशमेपूर्णेसुषुवेसाशुभेर्दिने ॥ ५२ ॥ ताराग्रहबलोपेतेपुत्रंदेवसुतोपमं ॥

पुत्रेजातेनृपःस्नात्वाब्राह्मणैःपरिवेष्टितः ॥ ५३ ॥ चकारजातकर्मादौददौदानानिभूरिशः ॥ राज्ञश्चातिप्रमोदो

भूत्पुत्रजन्मसमुद्भवः ॥५४ ॥ बभूवपरमोदारोधनधान्यसमम्बितः ॥ विशेषदानसंयुक्तोगीतवादित्रसंकुलः

॥५५ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेसप्तमस्कंधेचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ व्यासउवाच ॥ प्रवृत्तेसदनेतस्य

राज्ञःपुत्रमहोत्सवे ॥ आजगामतदावशीविप्रवेषधरःशुभः ॥ १ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥

वित्यर्थः ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेसप्तमस्कंधेचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ षट्षष्टिश्लोकवैस्तुराज्ञःपुत्रोत्सवेसति ॥

वरुणस्यततोवृत्तंयथावदाभिधीयते ॥ १ ॥ राज्ञश्पुत्रोत्सवानंतरंजातंवृत्तमाह ॥ प्रवृत्तेसदनेइति पं.शीवरुणः ॥ १ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

टी.अः

१४

॥२४॥

दे.भा.स.

॥२९॥

॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥
राजापुत्रमुखं दृष्ट्वा सुखमापमहत्तरं ॥ नामास्यरोहितश्चेति चकार विधिपूर्वकं ॥ १५ ॥ पूर्णमासे ततः पाशीविप्र
वेपेण भूपते ॥ आजगाम गृहे सद्योजस्वेति ब्रुवन्मुहुः ॥ १६ ॥ वीक्ष्य तं नृपतिर्देवं निमग्नः शोकसागरे ॥ प्रणि
पत्यकृतातिथ्यं तमुवाच कृतांजलिः ॥ १७ ॥ दिष्ट्या देवत्वमायातो गृहं नेपावितं प्रभो ॥ मखं करोमिवारीश विधिव
द्वांछितं तव ॥ १८ ॥ अदंतो न पशुः श्लाघ्य इत्याहुर्वेदवादिनः ॥ तस्मादंतोद्भवे ते हंकरिष्यामि महामखं ॥ १९ ॥
इत्युक्तस्तेन वरुणस्तथेत्युक्त्वा ययावथ ॥ हरिश्चंद्रो मुदं प्राप्य विजहार गृहाश्रमे ॥ २० ॥ पुनर्देतोद्भवं ज्ञात्वा प्र
चेता द्विज रूपवान् ॥ आजगाम गृहे तस्य कुरुकार्यमिति ब्रुवन् ॥ २१ ॥ भूपालोऽपि जलाधीशं वीक्ष्य प्रातः द्विजाकृ
तिं ॥ प्रणम्यासनसन्मानैः पूजयामास सादरं ॥ २२ ॥ स्तुत्वा प्रोवाच वचनं विनयानतकंधरः ॥ करोमि विधिव
त्कामं मखं प्रबलदक्षिणं ॥ २३ ॥ बालोऽप्यकृतचौलो यंगर्भकेशो न संमतः ॥ यज्ञार्थे पशुकरणे मया वृद्धमुखाच्छु
तं ॥ २४ ॥ तावत्क्षमस्व वारीश विधिं जानासि शाश्वतं ॥ कर्तव्यः सर्वथा यज्ञो मुंडनांति शिशोः किल ॥ २५ ॥ त
स्येति वचनं श्रुत्वा प्रचेताः प्राहतं पुनः ॥ प्रतारयसि मां राजन् पुनः पुनरिदं ब्रुवन् ॥ २६ ॥ अपिते सर्वसामग्रीवर्त
ते नृपतेऽधुना ॥ पुत्रस्नेहनिबद्धस्त्वं वंचयस्येव सांप्रतं ॥ २७ ॥ क्षौरकर्मविधिं कृत्वानकर्तासि मखं यदि ॥ तदा
हं दारुणं शपं दास्ये कोपसमन्वितः ॥ २८ ॥ अद्य गच्छामि राजेंद्रं वै च नात्तव मानद ॥ नमृषा वचनं कार्यं त्वये क्ष्वा
कु कुलोद्भव ॥ २९ ॥ इत्याभाष्य ययावाः प्रचेतानृपतेर्गृहात् ॥ राजा परमसंतुष्टो नन्दं भवने तदा ॥ ३० ॥ चूडा
करणकाले तु प्रवृत्ते परमोत्सवे ॥ उपविष्टिरसापाशी भवनं नृपतेः पुनः ॥ ३१ ॥ यदांके सुतमादाय राज्ञी नृपतिं
निधौ ॥ उपविष्टा क्रियाकाले तदैव वंज्याभ्यगात् ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥

॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥

टी.अ.

१५

॥२९॥

॥ ३३॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ यद्वचः सत्यमिति यत्किञ्चिदप्यप्यदि सत्यमन्यसे इत्यर्थः ॥ ४० ॥ ४१ ॥

कुरु कर्मेति विरुपष्टं वचनं कथयन् नृपः ॥ निप्ररूपधरः श्रीमान् प्रत्यक्ष इव पथिकः ॥ ३३ ॥ नृपतिस्तं समालोक्य ब
भूवातीव विवहलः ॥ नमस्कृत्य कृतं जलिपुटः पुरः ॥ ३४ ॥ विधिवत् पूजयित्वा तं राजो वाचविनीतवा
नृपः ॥ स्वामिन्कार्यं करोम्यद्यमस्वस्य विधिपूर्वकं ॥ ३५ ॥ वक्तव्यमस्ति तत्रापि शृणुष्वैकमनाविभो ॥ युक्तं चेन्म
न्यसे स्वामिन्तद्वर्णीमिन्तवाग्रतः ॥ ३६ ॥ ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यश्च शूद्राश्चैव वर्णाद्विजातयः ॥ संस्कृताश्चान्यथा शू
द्रा एव वेदविदो विदुः ॥ ३७ ॥ तस्मादयं सुतो मेघशूद्रवद्वर्तते शिशुः ॥ उपनीतः क्रियार्हः स्यादिति वेदे सुनिर्णयः
॥ ३८ ॥ राजानेकादशे वर्षे स दोपनयनं स्मृतं ॥ अष्टमे ब्राह्मणानां च वैश्यानां द्वादशे किल ॥ ३९ ॥ दयसे यदि दे
वेशदीनं मां सेवकं तव ॥ तदोपनीय कर्तास्मि पशुनायज्ञमुत्तमं ॥ ४० ॥ लोकपालोऽसि धर्मज्ञः सर्वशास्त्रविशारद
॥ मन्यसे यद्वचः सत्यं तद्वच्छ भवनं विभो ॥ ४१ ॥ व्यास उवाच ॥ इति तस्य वचः श्रुत्वा दयावान् द्यादसां पतिः ॥
ओमित्युक्त्वा ययावा शुप्रसन्नवदनो नृपः ॥ ४२ ॥ गतेऽथ वरुणे राजा बभूवातिमुदन्वितः ॥ सुखं प्राप्य सुतस्यैव
राजामुदमवाप ह ॥ ४३ ॥ चकार राजकार्याणि हरिश्चन्द्रस्तदानृपः ॥ कालेन व्रजतापुत्रो बभूव दशवार्षिकः ॥ ४४ ॥
तस्योपवीतसामग्रीं विभूतिं स दृशीं नृपः ॥ चकार ब्राह्मणैः शिष्टैरन्वितः सचिवैस्तथा ॥ ४५ ॥ एकादशेऽमुत स्याद्वे
व्रतबंधविधौ नृपः ॥ विदधे विधिवत् कार्यं चित्ते नितातुरः पुनः ॥ ४६ ॥ वर्तमाने तथा कार्ये उपनीते कुमारके ॥
अजिगामाथ वरुणो विप्रवेपधरस्तदा ॥ ४७ ॥ तं वीक्ष्य नृपतिस्तूर्णं प्रणम्य पुरतः स्थितः ॥ कृतं जलिपुटः प्रीतः
प्रत्युवाच सुरोत्तमं ॥ ४८ ॥ देवदत्तोपवीतोऽयं पशुयोग्योऽस्तु मे सुतः ॥ प्रसादात्तव मेशोऽगतोऽवंध्यापवादजः ॥ ४९ ॥
॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ देवदत्तोति देवतिवरुणसंबोधनं ॥ ४९ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

दे.भा.स.

॥३०॥

॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ आयुष्मन्निति जन्मे जयसंबोधनं ॥ ५६ ॥ नगरात् निर्गत्य वनमेव प्रययावित्यन्वयः

कर्तुमिच्छाम्यहं यज्ञं प्रभूतवरदक्षिणं ॥ समये शृणु धर्मज्ञसत्यमद्य ब्रवीम्यहं ॥ ५० ॥ समावर्तनकर्मतिकरिष्या
मितवेप्सितं ॥ ममोपरि दयां कृत्वा तावत्त्वं क्षंतुमर्हसि ॥ ५१ ॥ वरुण उवाच ॥ प्रतारयसि मां राजन् पुत्रप्रेमाकुलो
भृशं ॥ मुहुर्मुहुर्मतिकृत्वा युक्तियुक्तां महामते ॥ ५२ ॥ गच्छाम्यद्य महाराज वचसा तवनोदितः ॥ आगमिष्यामि
समये समावर्तनकर्मणि ॥ ५३ ॥ इत्युक्त्वा प्रययौ पाशीतमा पृच्छय विशांपते ॥ राजा प्रमुदितः कार्यं च कारचय
थोत्तरं ॥ ५४ ॥ आगतं वरुणं दृष्ट्वा कुमारोति विचक्षणः ॥ यज्ञस्य समयं ज्ञात्वा तदार्चितातुरो भवत् ॥ ५५ ॥ शोक
स्य कारणं राज्ञः पर्यपृच्छदितस्ततः ॥ ज्ञात्वा त्मवधमायुष्मन् गमनाय मतिं दधौ ॥ ५६ ॥ निश्चयं परमं कृत्वा
संमंत्र्य सचिवात्मजैः ॥ प्रययौ नगरात्स्मान्निर्गत्य वनमप्यसौ ॥ ५७ ॥ गते पुत्रे नृपः कामंदुःखितो भूद्भृशं त
दा ॥ प्रेरयामास दूतान् स्वान्तस्यान्वेषणकाम्यया ॥ ५८ ॥ एवं गते थकाले सौ वरुणस्तद्गृहं गतः ॥ राजानं शो
कसंततं कुरु यज्ञमिति ब्रुवन् ॥ ५९ ॥ राजा प्रणम्य तं प्राह देवदेव करोमि किं ॥ न जाने कापि पुत्रो मे गतस्त्वद्यभया
कुलः ॥ ६० ॥ सर्वत्र गिरिदूर्गेषु मुनीनामाश्रमेषु च ॥ अन्वेषितो मे दूतैस्तु न प्राप्तो यादसांपते ॥ ६१ ॥ आज्ञापय
महाराज किं करोमि गते सुते ॥ न मे दोषोऽत्र सर्वज्ञभाग्यदोषस्तु सखे ॥ ६२ ॥ व्यास उवाच ॥ इति भूपवचः श्रु
त्वा प्रचेताः कुपितो भृशं ॥ शशाप च नृपं क्रोधाद्वंचितस्तु पुनः पुनः ॥ ६३ ॥ नृपतेऽहं त्वया यस्माद्वचसा च प्रवंचि
तः ॥ तस्माज्जलोदरो व्याधिस्त्वं सुदोषोऽसि दारुणः ॥ ६४ ॥ व्यास उवाच ॥ इति शप्तो महीपालः कुपितेन प्रचे
तसा ॥ पीडितो भूतदाराज व्याधिना पुनः पुनः खदेन तु ॥ ६५ ॥

॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

टी.अ.
१५

॥३०॥

॥६६॥ इति श्रीदेवीभागवतसिद्धिस्तमस्कंधे पंचदशोऽध्यायः ॥१५॥ ऐक्यं विष्णोर्लोकस्तुष्टुनः शेषवधाभया ॥ कथाप्रारभ्यते यत्र विश्वा
 मित्रेण वैरिता ॥ हरिश्चंद्रेण संजाता परंप्रारब्धवेगतः ॥ १ ॥ वरुणशापदानानंतरं जातं वृत्तमाह गतेष्वेति ॥ १ ॥ २ ॥ तत्राजगामहेति
 एवं शस्वानृपं पाशीजगाम निजमास्पृष्टं ॥ राजा प्राप्य महाव्याधिं बभूवातीविदुःखितः ॥ ६६ ॥ इति श्रीदेवीभाग
 वते महापुराणे सप्तमस्कंधे पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ व्यास उवाच ॥ गतेथ वरुणे राजरोगेणातीव पीडितः ॥ दुः
 खाः दुःखं परंप्राप्य व्यथितो भूद्भूशंतदा ॥ १ ॥ कुमारो सौवने श्रुत्वा पितरं रोगपीडितं ॥ गमनाय मतिं राजंश्चकार
 स्नेहयंत्रितः ॥ २ ॥ संवत्सरे व्यतीते तु पितरं द्रष्टुमादरात् ॥ गंतुकामं तु तं ज्ञात्वा शक्रस्तत्राजगामह ॥ ३ ॥ वास
 वस्तुतदारूपं कृत्वा विप्रस्य सत्वरः ॥ वारयामास युक्त्या वै कुमारं गंतुमुद्यतां ॥ ४ ॥ इंद्र उवाच ॥ राजपुत्र न जाना
 सिराजनीतिं सुदुर्लभां ॥ अतः करोषि मूढस्त्वं गमनाय मतिं वृथा ॥ ५ ॥ पिता तव महाभाग ब्राह्मणैर्वेदपारगैः ॥
 कारयिष्यति होमं ते ज्वलिते विभावसौ ॥ ६ ॥ आत्मा हि बल्लभस्तात सर्वेषां प्राणिनां खलु ॥ तदर्थे बल्लभाः संति
 पुत्रदारधनादयः ॥ ७ ॥ आत्मने देह रक्षार्थं हत्वा त्वां बल्लभं सुतं ॥ हवनं कारयित्वा सौ रोगमुक्तो भविष्यति ॥ ८ ॥
 तस्मात्त्वयान गंतव्यं राजपुत्रपितुर्गृहे ॥ मृते पितरि गंतव्यं राज्यार्थं सर्वथा पुनः ॥ ९ ॥ एवं निषेधितस्तत्र वासवे
 न नृपात्मजः ॥ वनमध्ये स्थितः कामं पुनः संवत्सरं नृप ॥ १० ॥ अत्यंतं दुःखितं श्रुत्वा हरिश्चंद्रं तदात्मजः ॥ गमना
 यमतिं च क्रमेण कृतनिश्चयः ॥ ११ ॥ तुराषाड् द्विजरूपेण तत्रागत्य च रोहितं ॥ निवारयामास सुतं युक्तिवाक्यैः
 पुनः पुनः ॥ १२ ॥ हरिश्चंद्रोति दुःखार्तो वसिष्ठः च पुरोहितं ॥ पप्रच्छ रोगनाशाय तत्रोपायं सुनिश्चितं ॥ १३ ॥
 यत्र पुत्रः स्थितस्तत्रैव त्वयः ॥ ३ ॥ वारयामासेति केवलं दयावशादित्यर्थः ॥ ४ ॥ ५ ॥ तेन वपशुभूतस्य होमं कारयिष्यतीत्यन्वयः ॥ ६ ॥
 आत्मा हि बल्लभ इति नवाभरेपत्युः कामायपतिः प्रियो भवत्यात्मनस्तु कामायपतिः प्रियो भवतीत्यादिना नवाभरे सर्वस्य कामाय सर्वे प्रियं भवतीति
 बृहदारण्यकश्रुतेरनुभवाच्च तदर्थे आत्मा इत्यर्थः ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥

दे.भा.स.

॥३१॥

॥१४॥१५॥१६॥१७॥१८॥१९॥२०॥२१॥ कार्याधिकारिणं मृतक्रियाधिकारिणं ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ शामित्राय शमितुः कर्मवधरूपं
तमाह ब्रह्मणः पुत्रो यज्ञं कुरु नृपोत्तम ॥ क्रयक्रीतेन पुत्रेण शापमोक्षो भविष्यति ॥ १४ ॥ पुत्रादशविधाः प्रोक्ता
ब्राह्मणैर्वेदपारंगैः ॥ द्रव्येणानीयतस्मात्त्वं पुत्रं कुरु नृपोत्तम ॥ १५ ॥ वरुणोऽपि प्रसन्नः सन् सुखकारी भविष्यति ॥
लोभात्कोऽपि द्विजः पुत्रं प्रदास्यति स्वराष्ट्रजः ॥ १६ ॥ एवं प्रमोदितो राजा वसिष्ठेन महात्मना ॥ प्रधानं प्रेरयामा
स तदन्वेषणकाम्यया ॥ १७ ॥ अजीगर्तो द्विजः कश्चिद्विपयेतस्य भूपते ॥ तस्यासंश्रयः पुत्रानिर्धनस्य विशेष
तः ॥ १८ ॥ प्रधानेनाप्यसौ पृष्ठः पुत्रार्थं दुर्बलो द्विजः ॥ गवांशतं ददामीति देहि पुत्रं मखाय वै ॥ १९ ॥ शुनः पुच्छः
शुनः शेषः शुनोलांगूल इत्यमी ॥ तेषामेकतमं देहि ददामितु गवांशतं ॥ २० ॥ अजीगर्तस्तु तच्छ्रुत्वा क्षुधया पीडि
तो भृशं ॥ पुत्रं चैकतमं तेभ्यो विक्रेतुं वै मनोदधे ॥ २१ ॥ कार्याधिकारिणं ज्येष्ठं मत्वानासावदादमुं ॥ कनिष्ठं नाप्य
दान्माताममेष शतिवादिनी ॥ २२ ॥ मध्यमं च शुनः शेषं ददौ गवांशतेन च ॥ आनिनाय पशुं चक्रे नरमेधेन राधिपः
॥ २३ ॥ रुदंतं दुःखितं दीनं वेपमानं भृशातुरं ॥ यूपे बर्धनं निरीक्ष्या मुंचु क्रुशुर्मुनयस्तदा ॥ २४ ॥ शामित्राय प
शुं चक्रे नरमेधेन राधिपः ॥ शमितानाददेशस्त्रंतमालं भयितुं शिशुं ॥ २५ ॥ नाहं द्विजसुतं दीनं रुदंतं करुणं भृशं ॥
हनिष्यामि स्वलोभार्थं मित्युवाचाप्यसौ तदा ॥ २६ ॥ इत्युक्त्वा विररामासौ कर्मणो दुष्करादथ ॥ राजा सभासदः
प्राह किं कर्तव्यमिति द्विजाः ॥ २७ ॥ जातः किल किलाशब्दो जनानां क्रोशतां तदा ॥ क्रंदमाने शुनः शेषे सभायां
भृशमद्भुतं ॥ २८ ॥ अजीगर्तस्तदोत्थाय तमुवाच नृपोत्तमं ॥ राजनू कार्यं करिष्यामि तवाहं सुस्थिरो भवा ॥ २९ ॥
वेतसं द्विजमुपदेहि हनिष्यामि पशुं किल ॥ कर्तव्यं मस्वकार्यं वै मया ते दधनार्थिना ॥ ३० ॥ दुःखितस्य धनार्थस्य
सदा सूया प्रसूयते ॥ व्यास उवाच ॥ तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य हरिश्चंद्रो मुदा न्वितः ॥ ३१ ॥ ॥६५॥ ॥६५॥

शामित्रं तस्मै वधाय कर्मणः पशुं चक्रे दत्तवानित्यर्थः ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ अजीगर्तो लोभवशात्पुत्रवधं कर्तुं प्रवृत्त इत्याह अजीगर्त इति
॥ २९ ॥ ३० ॥ सदा सूयति पुत्रं पित्रे पशुं देहिनित्यर्थः प्रसूयते उत्पद्यते ॥ ३१ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

टी.अ.

१६

॥३१॥

दे.भा.स.

॥३२॥

॥४८॥४९॥५०॥मेममवचनस्यकरणात्स्वीकरणादित्यर्थः ॥५१॥५२॥५३॥५४॥५५॥५६॥५७॥नियहआग्रहः॥५८॥५९॥

यजेतचाश्वमेधेननीलंवावृषमुत्सृजेत् ॥ देशमध्येचयःकश्चित्पापकर्मसमाचरेत् ॥ ४८ ॥ षष्ठांशस्तस्यपा
पस्यराजाभुंक्तेनसंशयः ॥ निषेधनीयोराज्ञासौपापंकर्तुंसमुद्यतः ॥ ४९ ॥ ननिषिद्धस्त्वयाकस्मात्पुत्रंविक्रेतु
मुद्यतः ॥ सूर्यवंशेसमुत्पन्नस्त्रिशंकुतनयःशुभः ॥ ५० ॥ आर्यस्त्वनार्यवत्कर्मकर्तुमिच्छसिपार्थिव ॥ मोचना
न्मुनिपुत्रस्यकरणाद्वचमस्यमे ॥ ५१ ॥ तवदेहेसुखंराजन्भविष्यत्यविचारणात् ॥ पितातेशापयोगेनचां
डालत्वमुपागतः ॥ ५२ ॥ मयासौतेनदेहेनस्वर्लोकंप्रापितःकिल ॥ तेनैवप्रीतियोगेनकुरुमेवचनंनृप ॥ ५३ ॥
मुंवेनंबालकंदीनंरुदंतंभृशमातुरं ॥ याचितोसिमयानूनंयज्ञेस्मिन्नाजसूयके ॥ ५४ ॥ प्रार्थनाभंगजंदोषंकथं
त्वंनावबुध्यसे ॥ प्रार्थितंसर्वदादेयंमत्वेस्मिन्नपसत्तमा ॥ ५५ ॥ अन्यथापापमेवस्यात्तवराजन्नसंशयः ॥ व्या
सउवाच ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वाकौशिकस्यनृपोत्तमः ॥ ५६ ॥ प्रत्युवाचमहाराजःकौशिकंमुनिसत्तमं ॥ जलो
दरेणगाधेयदुःखितोहंभृशंमुने ॥ ५७ ॥ तस्मान्नमोचयाम्येनमन्यत्प्रार्थयकौशिक ॥ नत्वयानिग्रहःकार्यःका
र्येस्मिन्ममसर्वथा ॥ ५८ ॥ तच्छ्रुत्वावचनंराज्ञोविश्वामित्रोतिकोपतः ॥ बभूवदुःखसंतप्तोवीक्ष्यदीनंद्विजात्म
जं ॥ ५९ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेसप्तमस्कंधेषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ व्यासउवाच ॥ रुदंतंबालकंवीक्ष्य
विश्वामित्रोदयातुरः ॥ शुनःशेषमुवाचेदंगत्वापार्श्वेतिदुःखितं ॥ १ ॥ मंत्रंप्रचेतसःपुत्रमयोक्तंमनसास्मर ॥ ज
पतस्तवकल्याणंभविष्यतिममाज्ञया ॥ २ ॥ विश्वामित्रवचःश्रुत्वाशुनःशेषःशुचाकुलः ॥ मंत्रंजजापमनसा
कौशिकोक्तंस्फुटाक्षरं ॥ ३ ॥ जपतस्तत्रतस्याशुप्रचेतास्तुरुपाकरः ॥ प्रादुर्बभूवसहस्राप्रसन्नो नृपबालके ॥ ४ ॥

इतिश्रीदेवीभागवततिलकेसप्तमस्कंधेषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ ऐकौनषष्टिभ्योऽकैस्तुविश्वामित्रेणमोचिते ॥ शुनःशेषेहरिश्चंद्रोरोगान्मुक्त
इतीमंवे ॥ १ ॥ राजराज्यंश्रुत्वाविश्वामित्रोयदकरोत्तदाह रुदंतमिति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥

टी.अ.
१६

॥३२॥

॥५॥६॥७॥८॥भीतेननरकादिति अपुत्रस्यगतिर्नास्तीतिशासनात्पुत्रेभूतेनस्वंप्राप्स्यामीतिनरकान्भीतेनेत्यर्थः॥९॥ तदेवाह अपुत्रस्येति
 दृष्टान्तमागतंसर्वेविस्मयंपरमंगताः॥तुष्टुवुर्वरुणदेवमुदीतादर्शनेनते॥ ५ ॥ राजातिविस्मितःप्रादौप्रणनाम
 रुजातुरः॥ बद्धांजलिपुटोदेवंतुष्टुवपुरतःस्थितं॥ ६ ॥ हरिश्चंद्रउवाच॥ देवदेवकृपासिंधोपापात्माहंसुमंद
 धीः॥ कृतापराधःकृपणःपावितःपरमेष्ठिना॥ ७ ॥ मयातेपुत्रकामेनदुःखसंस्थेनहेलनं॥ कृतंक्षमाप्यप्रभु
 णाकोपराधःसुदुर्मतेः॥ ८ ॥अर्थीदोषंनजानातितस्मात्पुत्रार्थिनामया॥ वंचितस्त्वंदेवदेवभीतेननरकाद्विभो
 ॥ ९॥ अपुत्रस्यगतिर्नास्तिस्वर्गेनैवचनैवच॥ भीतोहंतेनवाक्येनतस्मात्तेहेलनंकृतं॥ १० ॥ नाज्ञस्यदूषणं
 चित्यंनूनंज्ञानवताविभो॥ दुःखितोहंरुजाक्रांतोवंचितःस्वसुतेनह॥ ११ ॥नजानेहंमहाराजपुत्रोमेकगतःप्र
 भो॥ वंचयित्वावनेभीतोमरणान्मांकृपानिधे॥ १२ ॥ प्रययौद्रविणंदत्वागृहीतोद्विजबालकः॥ यज्ञोयंक्रीत
 पुत्रेणप्रारब्धस्तवतुष्टये॥ १३ ॥ दर्शनंतवसंप्राप्यगतंदुःखंममाद्भुतं॥ जलोदरकृतंसर्वंप्रसन्नेत्वयिसंप्रतं
 ॥ १४ ॥ व्यासउ०॥ इतितस्यवचःश्रुत्वारज्ञोरोगातुरस्यच॥ दयावान्देवदेवेशःप्रत्युवाचनृपोत्तमं॥ १५ ॥
 वरुणउ०॥ मुंवराजशुनःशेषस्तुवंतंमांभृशातुरं॥ यज्ञोयंपरिपूर्णस्तेरोगमुक्तोभवात्मना॥ १६ ॥ इत्युक्त्वा
 वरुणस्तूर्णंराजानंविजृजंतदा॥ चकारपश्यतांतत्रसदस्यानांसुसंस्थितं॥ १७ ॥ विमुक्तोसौद्विजःपाशाद्वरु
 णेनमहात्मना॥ जयशब्दस्ततस्तत्रसंजातोमखमंडपे॥ १८ ॥ राजाप्रमुदितःसद्योरोगान्मुक्तःसुदारुणात्
 ॥ यूपान्मुक्तःशुनःशेषोबभूवातीवसंस्थितः॥ १९ ॥ राजात्विमंमखंपूर्णचकारविनयान्वितः॥ शुनःशेषस्त
 दासभ्यानित्युवाचकृतांजलिः॥ २० ॥ भोभोसभ्याःसुधर्मज्ञान्ब्रुवंतुधर्मनिर्णयं॥ वेदशास्त्रानुसारेणयथार्थवादि
 नःकिल॥ २१ ॥ पुत्रोहंकस्यसर्वज्ञाःपितामेकोग्रतःपरं॥ भवतांवचनात्तस्यशरणंप्रव्रजाम्यहं॥ २२ ॥
 ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ विरुजंरोगरहितं॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥

दे.भा.स.

॥३३॥

॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ विद्याप्रदश्चेतिचकारेण जन्मदातापीत्येवं मिलिताः पंचेत्यर्थः ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥
इत्युक्तेवचनेतत्र सभ्याः प्रोचुः परस्परं ॥ सभ्या ऊचुः ॥ अजीगर्तस्य पुत्रोऽयं कस्यान्यस्य भवेदसौ ॥ २३ ॥
अंगादंगात्समुद्भूतः पालितस्तेन भक्तिः ॥ अन्यस्य कस्य पुत्रोऽसौ प्रभवेदिति निश्चयः ॥ २४ ॥ तच्छ्रुत्वा वा
मदेवस्तु तानुवाच सभासदः ॥ विक्रीतस्तेन तातेन द्रव्यलोभात्सुतः किल ॥ २५ ॥ पुत्रोऽयं धनदातुश्च राज्ञस्तत्र
न संशयः ॥ अथ वा वरुणस्यैष पाशान्मुक्तोस्त्यनेन वै ॥ २६ ॥ अन्नदाता भयत्राता तथा विद्याप्रदश्च यः ॥ तथा वित्तप्र
दश्चैव पंचैते पितरः स्मृताः ॥ २७ ॥ तदो केचित्पितुः प्राहुः केचिद्राज्ञस्तथापरे ॥ वरुणस्येति संवादे निर्णयं नययु
श्चते ॥ २८ ॥ इत्थं संदेहमापन्नेव सिष्टो वाक्यमब्रवीत् ॥ सभ्यान् विवदतस्तत्र सर्वज्ञः सर्वपूजितः ॥ २९ ॥ शृ
णुं ध्वं भो महाभागानिर्णयं श्रुतिसंमतं ॥ निःस्नेहेन यदा पित्रा विक्रीतोऽयं सुतः शिशुः ॥ ३० ॥ संबंधस्तु गतस्त
स्य तदैव धनसंग्रहात् ॥ हरिश्चंद्रस्य संजातः पुत्रोऽसौ क्रीत एव च ॥ ३१ ॥ यूपे वद्वेयदाराज्ञातदातस्य न वै सुतः ॥
वरुणस्तु तुतोऽनेन तेन तुष्टेन मोचितः ॥ ३२ ॥ तस्मान्नायं महाभाग ह्यसौ पुत्रः प्रचेतसः ॥ योऽयं स्तौति महामंत्रैः
सोऽपि तुष्टो ददाति च ॥ ३३ ॥ धनं प्राणान्पशुराज्यं तथा मोक्षं किलोप्सितं ॥ कौशिकस्य सुतश्चायमरिष्टेन रक्षितः
॥ ३४ ॥ मंत्रं दत्त्वा महावीर्यं वरुणस्यातिसंकटे ॥ व्यास उ ० ॥ श्रुत्वा वाक्यं वसिष्ठस्य बाढमूचुः सभासदः ॥
॥ ३५ ॥ विश्वामित्रस्तु जग्राहतं करे दक्षिणे तदा ॥ एहि पुत्र गृहं मे त्वमित्युक्त्वा प्रेमपूरितः ॥ ३६ ॥ शुनः शोपो जगा
माशुते नैव सहसत्वरः ॥ वरुणस्तु प्रसन्नात्मा जगाम च स्वमालयं ॥ ३७ ॥ ऋत्विजश्च तथा सभ्याः स्वगृहान्निर्य
युस्तदा ॥ राजापि रोगनिर्मुक्ते बभूवातिमुदन्वितः ॥ ३८ ॥ प्रजास्तु पालयामास सुप्रसन्नेन चेतसा ॥ रोहिता
स्यस्तु तच्छ्रुत्वा वृत्तांतं वरुणस्य ह ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥

टी.अ.

१७

॥३३॥

॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥

आजगामं प्रीतोदगं माडनपर्वततः ॥ दत्ताराजन्समभ्येत्यप्रोचुः पुत्रं समागतं ॥ ४० ॥ मुदितो सौजगामाशुसं
मु वः कोसलाधिपः ॥ दृष्ट्वापेतरमायांत प्रमोदितः सुसंभ्रमः ॥ ४१ ॥ दंडवत्पतितो भूमावश्रुपूर्णमुखः शुचा ॥
राजापितं सपुत्राप्यपरिरभ्यमुदान्वितः ॥ ४२ ॥ समाघ्राय सुतं मुग्धिं प्रच्छकुशलं पुनः ॥ उत्संगेतं समारोप्य
मुदितो मेदिनीपतिः ॥ ४३ ॥ उष्णैर्नेत्रजलैः शीर्षण्यभिषेकमथाकरोत् ॥ राज्यं शशासतेनासौ पुत्रेणातिप्रियेण च
॥ ४४ ॥ वृत्तांतं नरमेधस्य कथयामास विस्तरात् ॥ राजसूयं क्रतुवरं चकार नृपसत्तमः ॥ ४५ ॥ वसिष्ठं पूज
यित्वाथ होतारमकरोद्विभुः ॥ समाप्ते त्वथ यज्ञे वसिष्ठो तीव्रपूजितः ॥ ४६ ॥ शक्रस्य सदनं रम्यं जगाम मुनिरा
दरान् ॥ विश्वामित्रोऽपि तत्रैव वसिष्ठेन च संगतः ॥ ४७ ॥ मिलित्वा तौ स्थितौ देवसदने मुनिसत्तमौ ॥ विश्वामित्रोऽपि
प्रच्छ वसिष्ठं प्रतिपूजितं ॥ ४८ ॥ वीक्ष्य विस्मयचित्तस्तं सभायां तु शचीपतेः ॥ विश्वामित्र उवाच ॥ केयं पूजा
त्वया प्राप्ता महर्ता मुनिसत्तम ॥ ४९ ॥ कृताकेन महाभाग सत्यं ब्रूहि ममांतिके ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ यजमनोस्ति मे
राजा हरिश्चंद्रः प्रतापवान् ॥ ५० ॥ राजसूयः कृतस्तेन राज्ञा प्रवरदक्षिणः ॥ नेह शोपि नृपश्चान्यः सत्यवादी
धृतव्रतः ॥ ५१ ॥ दाता च धर्मशीलश्च प्रजारं जनतत्परः ॥ तस्य यज्ञे मया पूजा प्राप्ता कौशिक नंदन ॥ ५२ ॥
हरिश्चंद्रसमो राजान भूतो न भविष्यति ॥ सत्यवादी तथा दाता शूरः परमधार्मिकः ॥ ५३ ॥ व्यास उवाच ॥ इति तस्य
वचः श्रुत्वा विश्वामित्रोऽतिकोपनः ॥ बभूव क्रोधं संरक्तलोचनोऽप्यब्रवीच्चतं ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥

॥ ५३ ॥ विश्वामित्रोऽतिकोपन इति त्रिशंकोः स्वपितुरुद्धारकस्य मम शुनः शोपमोचनविषयकं वाक्यं नांगीचकारैतादृशस्यातिदुष्टहरि
श्चंद्रस्य प्रशंसां मदग्रे करोतीत्यसूयाकोपकारणं ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥

दे.भा.स.

॥३४॥

॥ ५५ ॥ ग्लहंणं ॥ ५६ ॥ अहंचेदिति त्वयातिसंस्तुतराजानंहरिश्चंद्रंतं प्रसिद्धमहमसत्यवादिनं करोमिनकारिष्यामि चेन्मम पुण्यं विनश्यतु
अन्यथानुतंतं यद्यहमसत्यवादिनं करिष्यामि तदा तव पुण्यमित्यर्थः ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके सप्तमस्कंधे सप्तदशोऽध्यायः

विश्वामित्र उवाच ॥ एवंस्तौ षि नृपं मिथ्यावादिनं कपटप्रियं ॥ वंचितो वरुणो येन प्रतिश्रुत्य वरं पुनः ॥ ५५ ॥
मम जन्मार्जितं पुण्यं तपसः पठितस्य च ॥ त्वदीयं वा तितपसो ग्लहं कुरु महामते ॥ ५६ ॥ अहंचेत्तं नृपं सद्यो न क
रोम्यतिसंस्तुतं ॥ असत्यवादिनं काममदातारं महाखलं ॥ ५७ ॥ आजन्म संचितं सर्वं पुण्यं मम विनश्यतु ॥
अन्यथा त्वत्कृतं सर्वं पुण्यं त्विति पणावहे ॥ ५८ ॥ ग्लहं कृत्वा ततस्तौ तु विवदंतौ मुनी तदा ॥ स्वाश्रमं स्वर्गलो
काच्च गतौ परमकोपनौ ॥ ५९ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे सप्तमस्कंधे सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ व्यास
उवाच ॥ कदाचित्तु हरिश्चंद्रो मृगयार्थं वनं ययौ ॥ अपश्यद्बुद्धतीं बालां सुंदरीं चारुलोचनां ॥ १ ॥ तामपृच्छन् महा
राजः कामिनीं करुणापरः ॥ पद्मपत्रविशालाक्षि किं रोदिषि वरानने ॥ २ ॥ केनासि पीडिता त्यर्थं किं ते दुःखं वद
शुभे ॥ काचत्वं विजने घोरे कस्ते भर्ता पिताथवा ॥ ३ ॥ न बाधते वराज्ये मेराक्षसोऽपि परांगनां ॥ तं हन्मि तरसा कान्ति
यस्त्वां सुंदरि बाधते ॥ ४ ॥ ब्रूहि दुःखं वरारोहे स्वस्था भव कृशोदरि ॥ विषये मम पापात्मानातिष्ठति सुमध्यमे ॥ ५ ॥
इति तस्य वचः श्रुत्वा नारी तमब्रवीन्नृपं ॥ प्रमृज्या श्रूणि वदनाद्वरिश्चंद्रं नृपोत्तमं ॥ ६ ॥ नार्युवाच ॥ राजन्मां
बाधतेऽत्यर्थं विश्वामित्रो महामुनिः तपः करोति यद्घोरं मदर्थं कौशिको वने ॥ ७ ॥ तेनाहं दुःखिताराज न्विष
येत वसुव्रत ॥ विद्धि मां क्रमनां कांतां पीडितां मुनिनाभृशं ॥ ८ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥

॥ १७ ॥ अष्टाधिकैश्च पंचाशत्यैरथ नृपेण ह ॥ विश्वामित्रमुनेर्वैरमभूदिति तु कीर्त्यते ॥ १ ॥ वसिष्ठा विश्वामित्रयोः पणानंतरं जातवृत्तमाह कदाचिदिति
अपश्यद्बुद्धतीमिति इयं विश्वामित्रनिर्मितामाया ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ मदर्थं सिद्धिरूपिणीयाहमस्मि तस्मै मत्प्रयोजनार्थमित्यर्थः
अनेन च कालं कस्ते भर्ता पिताथवेत्यस्योत्तरमर्थं हत्तं भवति सिद्धेः सास्त्रे प्रसिद्धत्वात् ॥ ७ ॥ ८ ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७१ ॥

टी.अ.
१७

॥३४॥

तापपरायणं तपश्चर्यापरायणं ॥ १ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ इत्थं निषिध्यति . अनेन च सिद्ध्यर्थं तपः कर्तानिरंतरमेव विघ्नैरभिभूयत इत्युक्तं भ
 वति तस्मान्निष्कामनया श्रीभगवत्या आराधनं कर्तव्यमित्यवांतरतात्पर्यं ॥ १४ ॥ वसिष्ठस्मचसंवादमिति वसिष्ठेनाग्रं राजा परमधार्मिक इत्य
 राजोवाच ॥ स्वस्थाभवविशालाक्षिनतेदुःखं भविष्यति ॥ तमहं वारयिष्यामि मुनिं तापपरायणं ॥ १ ॥ इत्या
 श्वास्यस्त्रिपं राजातरसामुनिसन्निधौ ॥ नत्वा प्रणम्य शिरसा तमुवाच महीपतिः ॥ १० ॥ स्वामिन् किं क्रियते त्यर्थ
 तपसा देहपीडनं ॥ किमर्थं ते समारंभो ब्रूहि सत्यं महामते ॥ ११ ॥ वाञ्छितं तव गाधेय करोमि सफलं किल ॥ उत्ति
 ष्ठोत्तिष्ठतरसा तपसालमतः परं ॥ १२ ॥ विषये मम सर्वज्ञानकर्तव्यं सुदारुणं ॥ लोकपीडाकरं घोरं तपः केनापि कर्हि
 चित् ॥ १३ ॥ इत्थं निषिध्य तं राजा विश्वामित्रं गृह्ययौ ॥ मनसा क्रोधमाधाय गतो सौकौशिको मुनिः ॥ १४ ॥
 सगत्वा चिंतयामास नृपकृत्यमसां प्रातः ॥ वसिष्ठस्य च संवादं तपसः प्रतिषेधनं ॥ १५ ॥ कोपाविष्टेन मनसा
 प्रतश्कारमथाकरोत् ॥ विचिंत्य बहुधा चित्ते दानवं घोरविग्रहं ॥ १६ ॥ प्रेषयामास तद्देशं विधाय सूकराकृतिं ॥
 सातिकायो महाकोलः कुर्वन्नादं सुदारुणं ॥ १७ ॥ राज्ञश्चोपवने प्राप्तस्त्रासयन्नक्षकांस्तदा ॥ मालतीनां च खंडानि
 कदंबानां तथैव च ॥ १८ ॥ यूथिकानां च वृंदानि कंपयंश्च मुहुर्मुहुः ॥ दंतेन विलिखन् भूमिं समुन्मूलयते द्रुमान्
 ॥ १९ ॥ चंपकान्केतकीखंडान्मल्लिकानां च पादपान् ॥ करवीरानुशीरांश्च निचखानशुभान्मूढान् ॥ २० ॥ मु
 चकुंदानशोकांश्च बकुलांस्तिलकांस्तथा ॥ उन्मूल्य कदंभं तत्र च कारसूकरोवने ॥ २१ ॥ वाटिकारक्षकाः सर्वे दु
 द्रुवुःशस्त्रपाणयः ॥ हाहेति चुक्रुशुस्तत्र मालाकाराभृशातुराः ॥ २२ ॥ बाणैः संताड्यमानोऽपि यदा त्रस्तो न वै मृ
 गः ॥ रक्षकान्पीडयामास कोलः कालसमद्युतिः ॥ २३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥

कं यद्ययं परमधार्मिकस्तर्हि ममतपसः कथमनेन प्रतिषेधनं कृतं कथंच वसिष्ठेन पणः कृत इति प्रष्टव्यो वसिष्ठोऽस्मिन्समये इति भावः ॥ १५ ॥ १६ ॥
 ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ वने सूकरो वृक्षाणां कदंभं च कारेत्यर्थः ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.स.

॥३५॥

॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥
तेतदातिभयाक्रांताराजानंशरणंयुयुः ॥ तमूचुस्त्राहित्राहीतिवेपमानाभयाकुलाः ॥ २४ ॥ तानागतान्समालो
क्यभयार्तान्भूपतिस्तदा ॥ पप्रच्छकिंभयंकस्मान्मांनुवन्तुसमागताः ॥ २५ ॥ नाहंविभेमिदेवेभ्योराक्षसेभ्य
श्वरक्षकाः ॥ कस्माद्भयंसमुत्पन्नंतद्भुवन्तुममाग्रतः ॥ २६ ॥ हन्मिचैकेनबाणेनतंशत्रुंदुर्भगंकिल ॥ योमेरातिः
समुत्पन्नोलोकेपापमतिःखलः ॥ २७ ॥ देवोवादानवोवापितंनिहन्मिशरैःशितैः ॥ कतिष्ठतिकियद्रूपःकियद्
लसमन्वितः ॥ २८ ॥ मालाकाराऊचुः ॥ नदेवोनचदैत्योस्तिनयक्षोनचकिन्नरः ॥ कश्चित्कोलोमहाकायोराजं
स्तिष्ठतिकानने ॥ २९ ॥ पुष्पवृक्षानतिमृदून्दंतेनोन्मूलयत्यसौ ॥ विदीर्णतद्वनंसर्वसूकरेणातिरंहसा ॥ ३० ॥
विशिखैस्ताडितोस्माभिःपृषद्भिर्लकुटैस्तथा ॥ नविभेतिमहाराजहंतुमस्मानुपाद्रवत् ॥ ३१ ॥ व्यासउवाचा ॥
ऋष्याकर्ण्यवचस्तेषांराजाकोपसमाकुलः ॥ अश्वमारुह्यतरसाजगामोपवनंप्रति ॥ ३२ ॥ सैन्येनमहतायुक्तोग
जाश्वरथसंयुतः ॥ पदातिवृंदसहितःप्रययौवनमुत्तमं ॥ ३३ ॥ तत्रापश्यन्महाकोलंघुर्घुरंतंभयानकं ॥ वनंभ
ग्नचर्मविक्षिराजाक्रोधयुतोभवत् ॥ ३४ ॥ चापेबाणंसमारोप्यंविकृष्यचशरासनं ॥ तंहंतुंसूकरंपापंतरसास
मुपाक्रमत् ॥ ३५ ॥ समालोक्यचराजानंचापहस्तरुषाकुलं ॥ संमुखोभ्यद्रवत्तूर्णकुर्वन्शब्दसुदारुणं ॥ ३६ ॥
तमायोतंसमालोक्यवराहंविकृताननं ॥ मुमोचविशिखंतस्मिन्हंतुकामोमहीपतिः ॥ ३७ ॥ वंचयित्वाथतद्वा
णंसूकरस्तरसाबलात् ॥ निर्जगाममहावेगात्तमुल्लंघ्यनृपंतदा ॥ ३८ ॥ गच्छंतंतंसमालोक्यराजाकोपसम
न्वितः ॥ मुमोचविशिखांस्तीक्ष्णांश्चापमाकृष्ययत्नतः ॥ ३९ ॥ क्षणदृष्टिपथंराज्ञःक्षणंचादर्शनंगतः ॥ कुर्वन्ब
हुविधारावंसूकरःसमुपाद्रवत् ॥ ४० ॥

॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥

टी.अ.

१८

॥३५॥

॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥

हरिश्चंद्रोतिकुषितोमृगस्यानुजगामहं ॥ अश्वेनवायुवेगेन विकृष्य च शरासनं ॥ ४१ ॥ इतस्ततस्ततः सैन्यमग
मच्चवनांतरं ॥ एकाकीनृपतिः कोलं ब्रजंतं समुपाद्रवत् ॥ ४२ ॥ मध्याह्नसमये राजा संप्राप्तो विजनेवने ॥ तृ
षितः क्षुधितो त्यर्थं बभूव भ्रांतवाहनः ॥ ४३ ॥ सूकरोऽदर्शनं प्राप्नो राजा चिंतातुरो भवत् ॥ मार्गं धृष्टोति विपिने दा
रुणे दीनवत् स्थितः ॥ ४४ ॥ किंकर्षोमिह गच्छामि न सहायोस्ति मेवने ॥ अज्ञातस्वपथः कुत्र ब्रजामीति व्यचिं
तयत् ॥ ४५ ॥ एवं चिंतयतस्तत्र विपिने जनवर्जिते ॥ राजा चिंतातुरो पश्यन्नर्दो सुविमलोदकां ॥ ४६ ॥ वीक्ष्य
तां मुदितो राजा पाययित्वा तुरंगमं ॥ अश्वादुत्तीर्य विमलं पौपानीयमुत्तमं ॥ ४७ ॥ जलं पीत्वा नृपस्तत्र सुखमापम
ही पतिः ॥ इयेष नगरं गुंदिग्भ्रमेणातिमोहितः ॥ ४८ ॥ विश्वामित्रस्तु संप्राप्तो वृद्धब्राह्मणरूपधृक् ॥ ननाम वीक्ष्य
राजा तं प्रीतिपूर्वद्विजोत्तमं ॥ ४९ ॥ तमुवाच गाधिराजः प्रणमंतं नृपोत्तमं ॥ स्वस्तितेस्तु महाराज किमर्थमिह
चागतः ॥ ५० ॥ एकाकी विजने राजन् किंचि कीर्षितमत्र ते ॥ ब्रूहि सर्वं स्थिरो भूत्वा कारणं नृपसत्तम ॥ ५१ ॥
राजोवाच ॥ सूकारोति महाकायो बलवान् पुष्पकाननं ॥ समुपेत्येममर्दाशुकोमलान् पुष्पपादपान् ॥ ५२ ॥
तं निवारयितुं दुष्टं करे कृत्वा च कार्मुकं ॥ ससैन्यो हं स्वनगराग्निर्गतो मुनिसत्तम ॥ ५३ ॥ गतो सौदृक् पथात् पा
पोमायावीकापिवेगवान् ॥ पृष्ठतो हं मपि प्रातः सैन्यं कापि गतं मम ॥ ५४ ॥ क्षुधितस्तृषितश्चाहं सैन्यभ्रष्ट
स्त्विहागतः ॥ नजाने पुरमार्गं च तथा सैन्यगतिं मुने ॥ ५५ ॥ पंथानं दर्शय विभो ब्रजामि नगरं प्रति ॥ ममात्र
भाग्ययोगेन प्राप्तस्त्वं विजनेवने ॥ ५६ ॥

॥ ४१ ॥

॥ ४२ ॥

॥ ४३ ॥

॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥

॥ ५७ ॥

॥ ५८ ॥

॥ ५९ ॥

॥ ६० ॥

दे.भा.स.

॥३६॥

॥ ५७ ॥ ५८ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके सप्तमस्कंधेऽष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ त्रिषष्टिंश्लोकवर्गस्तु कौशिकेन महात्मना ॥ हृतं रात्र्यं हरि
भद्रं नृपतेरिदमुच्यते ॥ १ ॥ राजवाक्यं श्रुत्वा कौशिको यदकरोत् सदाह इति तस्येति प्रहस्येति धार्मिकस्त्वमस्मिंस्तीर्थेन स्नात्वा कथं गंतुमिच्छ
अयोध्याधिपतिश्चाहं हरिश्चंद्रोति विश्रुतः ॥ राजसूयस्य कर्ता च वांछितार्थप्रदः सदा ॥ ५७ ॥ धनेच्छायदिते
ब्रह्मन्यज्ञार्थं द्विजसत्तम ॥ आगंतव्यमयोध्यायां दास्यामि विपुलं धनं ॥ ५८ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे
सप्तमस्कंधेऽष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ व्यास उवाच ॥ इति तस्य वचः श्रुत्वा भूपतेः कौशिको मुनिः ॥ प्रहस्य प्र
त्युवाचे दं हरिश्चंद्रं तदानुप ॥ १ ॥ राजंस्तीर्थमिदं पुण्यं पावनं पापनाशनं ॥ स्नानं कुरु महाभाग पितृणां तर्पणं
तथा ॥ २ ॥ कालः शुभतमोस्तीर्थाहर्तीर्थे स्नात्वा विशांपते ॥ दानं ददस्व शक्त्या त्रपुण्यतीर्थेति पावने ॥ ३ ॥ प्राप्य
तीर्थं महापुण्यमस्नात्वा यस्तु गच्छति ॥ स भवेदात्महाभूय इति स्वायं भुवो ब्रवीत् ॥ ४ ॥ तस्मात्तीर्थवरे राजन्कु
रुपुण्यं स्वशक्तितः ॥ दर्शयिष्यामि मार्गं ते गतां सिनगरं ततः ॥ ५ ॥ आगमिष्याम्यहं मार्गदर्शनार्थं तवानघ ॥
त्वया सहाद्यकाकुत्स्थतव दानेन तोषितः ॥ ६ ॥ तच्छ्रुत्वा वचनं राजामुनेः कपटमंडितं ॥ वासां स्युत्तार्य विधिवत्
स्नातुमभ्याययौ नदीं ॥ ७ ॥ बंधयित्वा हयं वृक्षे मुनिवाक्येन मोहितः ॥ अवश्यं भावियोगेन तद्वशस्तु तदा भवत्
॥ ८ ॥ राजा स्नानविधिं कृत्वा संतर्प्य पितृदेवताः ॥ विश्वामित्रमुवाचे दं स्वामिन्दानं ददामि ते ॥ ९ ॥ यदिच्छसि
महाभाग तत्ते दास्यामि सांप्रतं ॥ गावो भूमिं हिरण्यं च गजाश्च रथवाहनं ॥ १० ॥ नादेयं मे किप्यस्ति कृतमेतद्
तं पुरा ॥ राजसूये मखश्रेष्ठे मुनीनां सन्निधावपि ॥ ११ ॥ तस्मात्त्वमिह संप्राप्तस्तीर्थेस्मिन् प्रवरे मुने ॥ यत्तेस्ति
वांछितं ब्रूहि ददामि तव वांछितं ॥ १२ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥

सीत्यभिप्रायेण हास्यं चकार ॥ १ ॥ तदेवाह राजा चिति ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ मुनीनां सन्निधौ राजसूय
वज्रो मयैतद्व्रतं कृतमित्यन्वयः ॥ ११ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १३ ॥

टी.अः
१८

॥३६॥

॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ मेपुत्रस्यविवाहोस्तीत्यन्वयः ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ वेदिमध्यइति
अग्निहोत्रशालायां राजा तस्मिन् समये स्थितः तत्तत्तस्मिन् वेदिमध्ये अग्निहोत्रवेदिमध्ये दानं देहीत्यन्वयः अयं भवः विवाहकार्यार्थयद्गुनं

विश्वामित्र उवाच ॥ मया पूर्वं श्रुतं राजन्कीर्तिस्ते विपुला भुवि ॥ वसिष्ठेन च संप्रोक्ता दातानास्ति महीतले ॥ १३
हरिश्चंद्रो नृपश्रेष्ठः सूर्यवंशे महीपतिः ॥ तां दृशो नृपतिर्दातान भूतो न भविष्यति ॥ १४ ॥ पृथिव्यां परमोदारस्त्रिशं
कुतनयो यथा ॥ अतस्त्वां प्रार्थयाम्यद्य विवाहो मे स्ति पार्थिव ॥ १५ ॥ पुत्रस्य च महाभाग तदर्थं देहि मे धनं ॥
॥ राजोवाच ॥ विवाहं कुरु विप्रेंद्र ददामि प्रार्थितं तव ॥ १६ ॥ यदिच्छसि धनं कामं दाता तस्यास्मि निश्चितं ॥ व्या
स उवाच ॥ इत्युक्तः कौशिकस्तेन वचनात्परो मुनिः ॥ १७ ॥ उद्गाव्यमायां गांधर्वी पार्थिवायाप्यदर्शयत् ॥
कुमारः सुकुमारश्च कन्या च दशवर्षिकी ॥ १८ ॥ एतयोः कार्यमप्यद्य कर्तव्यं नृपसत्तम ॥ राजसूयादिकं पुण्यं गृ
हस्थस्य विवाहतः ॥ १९ ॥ भविष्यति तवाद्यैव विप्रपुत्रविवाहतः ॥ तच्छ्रुत्वा वचनं राजामायया तस्य मोहितः
॥ २० ॥ तथेति च प्रतिज्ञाय नोवाचाल्पं वचस्तथा ॥ तेन दर्शितमार्गो सौ नगरं प्रति जग्मिवान् ॥ २१ ॥ विश्वामि
त्रोपिराजानं वंचयित्वा श्रमं ययौ ॥ कृतो द्वाहविधिस्तावद्विश्वामित्रो ब्रवीन्नृप ॥ २२ ॥ वेदिमध्ये नृपाद्यत्वं देहि दानं
ययेप्सितं ॥ राजोवाच ॥ किं ते भीष्मं द्विज ब्रूहि ददामि वाञ्छितं किल ॥ २३ ॥ अदेयमपि संसारे यशः कामोऽस्मि सां
प्रतं ॥ व्यर्थं हि जीवितं तस्य विभवं प्राप्य येन वै ॥ २४ ॥ नोपार्जितं यशः शुद्धं परलोकसुखप्रदं ॥ विश्वामित्र उ०
॥ राज्यं देहि महाराज वराय सपरिच्छदं ॥ २५ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥

त्वया प्रतिश्रुतं तदथ च वरवधोः पोषणार्थं यद्यदुल्लंघनं तद्दानं देहि अन्यथा त्वत्कृते विवाहे वरवधोर्भिक्षाटनप्रसंगे तवापकीर्तिः स्यादिति राजानु
पोषणार्थं धनं ब्राह्मणाय यत्किंचित्प्रार्थयेष्यति तदेतस्मै देयमित्याभिप्रायेणाह किं ते भीष्ममिति ब्राह्मणस्सु सर्वस्वहरणेच्छया वदति राजन् देहीति
॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७० ॥

॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ हेमभारद्वयसार्धमिति आचितस्यदशमोभागोभारस्त्वथाचार्धभारेणसहितभारद्वयपरिमाणंसुवर्णदक्षिणां देहीत्यर्थः राजादास्यामीत्युक्तास्वनिकटेधनाभावात्किमयेदंकृतमित्यतिविस्मितइत्यर्थः ॥ ३२ ॥ तदैवसैनिकाइ

॥३७॥

गजाश्वरथरत्नाढ्यं वेदीमध्येति पावने ॥ व्यास उ० ॥ मोहितो मायया तस्य श्रुत्वा वाक्यं मुनेर्नृपः ॥ २६ ॥ दत्तमित्युक्तवान् राज्ञ्यमविचार्य यदृच्छया ॥ गृहीतमिति तं प्राह विश्वामित्रोति निष्ठुरः ॥ २७ ॥ दक्षिणां देहिराजेंद्रदानयोग्यां महामते ॥ दक्षिणारहितं शनं निष्फलं मनुरब्रवीत् ॥ २८ ॥ तस्माद्दानफलाय त्वं यथोक्तां देहि दक्षिणां ॥ इत्युक्तस्तु तदारजा तमुवाचातिविस्मितः ॥ २९ ॥ ब्रूहि किं यद्वनंतुभ्यं देयं स्वामिन्मया धुना ॥ दक्षिणानिष्क्रयं साधो वदयावत्प्रमाणकं ॥ ३० ॥ दानपूर्त्यै प्रदास्यामि स्वस्थो भवतपोधन ॥ विश्वामित्रस्तु तच्छ्रुत्वा तमाह मेदिनीपतिं ॥ ३१ ॥ हेमभारद्वयसार्धं दक्षिणां देहि सांप्रतं ॥ दास्यामीति प्रतिश्रुत्य तस्मै राजातिविस्मितः ॥ ३२ ॥ तदैव सैनिकास्तस्य वीक्षमाणाः समागताः ॥ दृष्ट्वा महीपतिं व्यग्रं तुष्टुवुस्ते मुदान्विताः ॥ ३३ ॥ व्यास उवाच ॥ श्रुत्वा तेषां वचो राजानोत्काकिंचिच्छुभाशुभं ॥ चिंतयन् स्वकृतं कर्म यथा वंतः पुरेततः ॥ ३४ ॥ किं मया स्वीकृतं दानं सर्वस्वं यत्समर्पितं ॥ वंचितो हं द्विजेनात्र वने पाटञ्चरैरिव ॥ ३५ ॥ राज्यं सोपस्कृतं तस्मै मया सर्वं प्रतिश्रुतं ॥ भारद्वयं सुवर्णस्य सार्धं वदक्षिणा पुनः ॥ ३६ ॥ किं करोमि मतिर्भ्रष्टान् ज्ञातं कपटं मुनेः ॥ प्रतारितो हं सहस्राब्राह्मणेन तपस्विना ॥ ३७ ॥ न जाने दैवकार्यं वैहो दैव किं भविष्यति ॥ इति चिंतापरो राजा गृहं प्राप्नोति विव्हलः ॥ ३८ ॥ पतिचिंतापरं दृष्ट्वा राज्ञोपप्रच्छ कारणं ॥ किं प्रभो विमना भासिका चिंता ब्रूहि सांप्रतं ॥ ३९ ॥

ति ये राज्ञा साकं वने गतास्तेऽप्यर्धमिशादितस्ततो गता इत्युक्तं ते सैनिकाराजानं वीक्षमाणा आगता इत्यर्थः ॥ ३३ ॥ अंतःपुरेऽप्यगारे गतः चिंताग्रस्तः सन् ॥ ३४ ॥ स्वकृतमन्यस्मिन् किं मयेति पाटञ्चरैस्तस्करैः ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ गृहं प्राप्नोति ॥ ३८ ॥ ३९ ॥

॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ शुभाशुभयथाकथंचिदित्यर्थः ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ विश्वामित्रो ब्राह्मणे वषेण समागत इत्यर्थः ॥ ४५ ॥ सुवर्णे

वनात्पुत्रः समायातो राजसूयः कृतः पुरा ॥ कस्माच्छोचसिरा जेन्द्रशोकस्य कारणं वद ॥ ४० ॥ नारातिर्विद्यते
क्वापि बलवान् दुर्बलोऽपि वा ॥ वरुणोऽपि सुसंतुष्टः कृतकृत्योऽसि भूतले ॥ ४१ ॥ चिंतयाक्षीयते देहो नास्ति
चिंता समामृतिः ॥ त्यज्यतां नृपशार्दूलस्वस्थो भव विचक्षण ॥ ४२ ॥ तन्निशम्य प्रिया वाक्यं प्रीतिपूर्वं नरा
धिपः ॥ प्रोवाच किंचिच्चिंतायाः कारणं च शुभाशुभं ॥ ४३ ॥ भोजनं न च कारासौ चिंता विष्टस्तथानृपः ॥
सुप्त्वा पि शयने शुभ्रे लेभे निद्रां न भूमिपः ॥ ४४ ॥ प्रातरुत्थाय चिंता तौ यावत्संध्यादिकाः क्रियाः ॥ करोति
नृपतिस्तथा वद्विश्वामित्रः समागतः ॥ ४५ ॥ क्षत्रानिवेदितो राज्ञे मुनिः सर्वस्वहारकः ॥ आगत्योवाच राजानं
प्रणमंतं पुनः पुनः ॥ ४६ ॥ विश्वामित्र उवाच ॥ राजंस्त्यजस्वराज्यं मे देहि वाचा प्रतिश्रुतं ॥ सुवर्णं स्पृश राजेन्द्र
सत्यवाग्भवसांप्रतं ॥ ४७ ॥ हरिश्चंद्र उवाच ॥ स्वामिन् राज्यं तवेदं मे मया दत्तं किलाधुना ॥ त्यक्तान्यत्र गमि
ष्यामि मां चिंतां कुरु कौशिक ॥ ४८ ॥ सर्वस्वं मम ते ब्रह्म नृगृहीतं विधिवद्विभो ॥ सुवर्णं दक्षिणां दातुमशक्तो ह्य
धुना द्विज ॥ ४९ ॥ दानं ददामि ते तावद्यावन्मे स्याद्वनागमः ॥ पुनश्चेत्कालयोगेन तदा दास्यामि दक्षिणां ॥ ५० ॥
इत्युत्कानृपतिः प्राह पुत्रं भार्योचमाधवीं ॥ राज्यमस्मै प्रदत्तं वै मया वेद्यां सुविस्तरं ॥ ५१ ॥ हस्त्यश्वरथसंयुक्तं
रत्नहेमसमन्वितं ॥ त्यक्त्वा त्रीणि शरीराणि सर्वं चास्मै समर्पितं ॥ ५२ ॥ त्यक्त्वा योऽध्यांगमिष्यामि कुत्रचिद्वन
गव्हरे ॥ गृण्हात्वितिदं मुनिः सम्यक् राज्यं सर्वं स नृद्विमत् ॥ ५३ ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥

स्पृश दक्षिणात्वेन प्रतिज्ञातं देहीत्यर्थः ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ दानं ददामि राज्यदानमधुना ददामि दक्षिणां तु धनप्राप्त्युत्तरं कालं
तरे दास्यामीत्यर्थः ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४३ ॥

दे.भा.स.

॥३८॥

॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके सप्तमस्कंधे एकोन
विंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥ अर्धाधिकैः पंचचत्वारिंशच्छ्लोकैरतः परं ॥ दक्षिणादानयत्नश्च राज्ञा कृत इतीर्यते ॥ १ ॥ राजा विश्वामित्र ब्राह्मणं प्रतिकि
इत्याभाप्य सुतं भार्या हरिश्चंद्रः स्वमंदिरात् ॥ विनिर्गतः सुधर्मात्मा मानयंस्तं द्विजोत्तमं ॥ ५४ ॥ ब्रजंतं भूपतिं
वीक्ष्य भार्या पुत्रावुभवापि ॥ चिंतातुरौ सुदीनास्यौ जग्मतुः पृष्ठतस्तदा ॥ ५५ ॥ हाहाकारो महानासीन्नगरे वी
क्ष्यतांस्तथा ॥ चुक्रुशुः प्राणिनः सर्वे साकेतपुरवासिनः ॥ ५६ ॥ हाराजन्किंकृतं कर्म कुतः क्लेशः समागतः ॥
वंचितो सिमहाराजविधिना पंडितेन ह ॥ ५७ ॥ सर्वे वर्णास्तदा दुःखमाप्नुयुस्तं महीपतिं ॥ विलोक्य भार्या सा
र्धं पुत्रेण च महात्मना ॥ ५८ ॥ निनिंदुर्ब्राह्मणं तंतुदुराचारं पुरौकसः ॥ धूर्तो यमिति भाषंतो दुःखार्ता ब्राह्मणादयः
॥ ५९ ॥ निर्गत्य नगरात्तस्माद्विश्वामित्रः क्षितीश्वरं ॥ गच्छंतं तु मुवाचे दंसमेत्यनिष्टुरं वचः ॥ ६० ॥ दक्षिणा
याः सुवर्णमेदत्वा गच्छ नराधिप ॥ नाहं दास्यामि वा ब्रूहि मया त्यक्तं सुवर्णकं ॥ ६१ ॥ राज्यं गृहाण वा सर्वलोभश्चे
द्धृदिवर्तते ॥ दत्तं चेन्मन्यसे राजन् देहियत्तत्प्रतिश्रुतं ॥ ६२ ॥ एवं ब्रुवंतं गाधेयं हरिश्चंद्रो महीपतिः ॥ प्रणिप
त्य सुदीनात्मा कृतांजलिपुटो ब्रवीत् ॥ ६३ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे सप्तमस्कंधे एकोनविंशोऽध्यायः
॥ १९ ॥ हरिश्चंद्र उवाच ॥ अदत्त्वा ते हिरण्यं वै न करिष्यामि भोजनं ॥ प्रतिज्ञामे मुनि श्रेष्ठ विपादं त्यज सुव्रत
॥ १ ॥ सूर्यवंशसमुद्भूतः क्षत्रियोऽहं महीपतिः ॥ राजसूयस्य यज्ञस्य कर्ता वांछितदेनूपु ॥ २ ॥ कथं करोमि ना
कारं स्वामिन् दत्त्वा यदृच्छया ॥ अवश्यमेव दातव्यमृणं मे द्विजसत्तम ॥ ३ ॥ स्वस्थो भव प्रदास्यामि सुवर्णमन
सेप्सितं ॥ कंचित्कालं प्रतीक्षस्व यावत्प्राप्स्याम्यहंधनं ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥

मुक्तवान्तदाह अदत्त्वेति न करिष्यामि भोजनमिति अन्नं त्यक्त्वा फलाहारादिना कालं नेष्यामीत्यर्थः ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ किंचित्कालमिति
मासपरिमितं कालमित्यर्थः अग्रे माससमाप्तो वेव ब्राह्मणस्यागमनात् ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥

टी.अ.

१९

॥३८॥

॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ वदाधुनेति ॥ एवंराज्ञोक्तेमिथ्यावादीराजाजातइतिवासिष्ठं ज्ञेयमीतिब्रह्मणाभिप्रायः ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ग्राह
कमिति अस्यामयोध्यार्यायदिकश्चिद्ग्राहकः स्यात्तर्हितपश्यनोचेदहंवाराणस्यांगत्वासर्वान्मौल्येनदत्त्वादासभावंगमिष्यामितदात्वंकांचनंगृ
हाणाथचसंतुष्टोभवेतिषिडितोर्थः ॥ ११ ॥ भूधरेतिब्रह्मणसंबोधनं ॥ १२ ॥ उमयांपराशक्त्यासहितोयत्रकाश्यांशंकरस्तिष्ठतितस्यांका
विश्वामित्रउवाच ॥ कुतस्तेभविताराजनूधनप्राप्तिरतःपरं ॥ गतंराज्यंतथाकोशोबलंचैवार्थसाधनं ॥ ५ ॥ वृ
थाशातेमहीपालधनार्थेकिंकरोम्यहं ॥ निर्धनंत्वांचलोभेनपीडयामिकथंनृप ॥ ६ ॥ तस्मात्कथयभूपालन
दास्यामीतिसांप्रतं ॥ त्यक्त्वाशांमहतीकामंगच्छाम्यहमतःपरं ॥ ७ ॥ यथेष्टं व्रजराजेंद्रभार्यापुत्रसमन्वितः ॥
सुवर्णंनस्ति किंतुभ्यंददामीतिवदाधुना ॥ ८ ॥ व्यासउवाच ॥ गच्छन्वाक्यमिदंश्रुत्वाब्राह्मणस्यचभूपतिः ॥
प्रत्युवाचमुनिं ब्रह्मन्धैर्यैकुरुददाम्यहं ॥ ९ ॥ ममदेहोस्तिभार्यायाःपुत्रस्यचह्यनामयः ॥ क्रीत्वादेहंतुतंनूनमृणंदा
स्यामितेद्विज ॥ १० ॥ ग्राहकंपश्यविप्रेन्द्रवाराणस्यांपुरिप्रभो ॥ दासभावंगमिष्यामिसदारोहंसपुत्रकः ॥ ११ ॥
गृहाणकांचनंपूर्णसार्धभारद्वयमुने ॥ मौल्येनदत्त्वासर्वान्नःसंतुष्टोभवभूधर ॥ १२ ॥ इतिब्रुवन्जगामाथस
हपत्न्यासुतान्वितः ॥ उमयाकांतयासार्धयत्रास्तेशंकरःस्वयं ॥ १३ ॥ तां दृष्ट्वाचपुरिरिम्यांमनसोल्हादकारि
णी ॥ उवाचसकृतार्थोस्मिपुरिंपश्यन्सुवर्चसं ॥ १४ ॥ ततोभागीरथींप्राप्यस्नात्वादेवादितर्पणं ॥ देवार्चनं
चनिर्वृत्यकृतवान्दिग्विलोकनं ॥ १५ ॥ प्रविश्यवसुधापालोदिव्यांवाराणसींपुरिं ॥ नैषामनुप्यभुक्तेतिशू
लपाणेःपरिग्रहः ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥

श्यांजगामेत्यर्थः ॥ १३ ॥ १४ ॥ दिग्विलोकनंकेनमार्गेणगंतव्यमितिसमंतादवलोकितवानित्यर्थः ॥ १५ ॥ नैषामनुप्यभुक्तेति य
दीयंपुरिमनुष्येणभुक्तापालितास्यात्तदामामकिंचित्करंमौल्यंदत्त्वाकोपिनग्रहीष्यतिपरंतुतथानकिंतुशूलपाणेः सर्वेश्वरस्यशिवस्यपरिग्रहोस्ति
तेनपालितास्तिततःसर्वेश्वरःशिवोमामकिंचित्करमपिमौल्यंदत्त्वाग्रहीष्यतीत्यभिप्रायेणकाश्यांजगामेतिभावः ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥

दे.भा.स.

॥३९॥

॥३९॥ ॥१८॥ ॥१९॥ ॥२०॥ ॥ पूर्णः समास इति यस्त्वया दक्षिणादाने प्रतिज्ञातो मासो मासाते दक्षिणांदास्यामीति समासः पूर्ण इत्यर्थः तस्याने
मित्तं मासांते दक्षिणांदास्यामीति प्रतिज्ञारूपं ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ कुतः पुष्टानि मित्राणीति ॥ येभ्यो धनं गृहीत्वा स्मै ब्राह्मणाय द
क्षिणांदास्यामि तादृशानि पुष्टानि संपन्नानि मम मित्राणि अत्र काश्यां कुतः संति नैव संतीत्यर्थः ॥ २५ ॥ प्रतिग्रहः कुतो दुष्टस्तदाह ॥ राज्ञां वृत्ति

टी.अ.

२०

जगाम पद्मादुःखार्तः सहपत्न्या समाकुलः ॥ पुरीं प्रविश्य स नृपो विश्वासमकरोत्तदा ॥ १७ ॥ ददृशेथ मुनिश्रेष्ठं
ब्राह्मणं दक्षिणार्थिनं ॥ तं दृष्ट्वा समनुप्राप्तं विनयावनतो भवत् ॥ १८ ॥ प्राह चैवांजलिं कृत्वा हरिश्चंद्रो महामुनिः ॥
इमे प्राणाः सुतश्चायं प्रियापत्नीमुने मम ॥ १९ ॥ येन ते कृत्यमस्त्याशु गृहाणाद्यद्विजोत्तम ॥ यच्चान्यत्कार्यम
स्माभिस्तन्ममाख्यातुमर्हसि ॥ २० ॥ विश्वामित्र उवाच ॥ पूर्णः समासो भद्रं ते दीयतां मम दक्षिणा ॥ पूर्वत
स्य निमिर्त्तीहि स्मर्यते स्ववचो यदि ॥ २१ ॥ राजोवाच ॥ ब्रह्मन्नाद्यापि संपूर्णो मासो ज्ञानतपो बल ॥ तिष्ठत्येक
दिनार्थं यत्तत्प्रतीक्षस्व नापरं ॥ २२ ॥ विश्वामित्र उवाच ॥ एवमस्तु महाराज आगमिष्याम्यहं पुनः ॥ शापं त
व प्रदास्यामि न चेदद्य प्रयच्छसि ॥ २३ ॥ इत्युक्त्वाथ ययौ विप्रो राजा चार्चितयत्तदा ॥ कथमस्मै प्रयच्छामि दक्षि
णाया प्रतिश्रुता ॥ २४ ॥ कुतः पुष्टानि मित्राणि कुत्रार्थः सांप्रतं मम ॥ प्रतिग्रहः प्रदुष्ये मे तत्र याच्ञा कथं भवेत्
॥ २५ ॥ राज्ञां वृत्तित्रयं प्रोक्तं धर्मशास्त्रेषु निश्चितं ॥ यदि प्राणान्विमुंचामि ह्यप्रदाय च दक्षिणां ॥ २६ ॥ ब्रह्मस्व
हाकृमिः पापो भविष्याम्यधमाधमः ॥ अथवा प्रेततां यास्ये वर एवात्मविक्रयः ॥ २७ ॥ ॥ ६५ ॥

अथमिति ॥ दानाध्ययनयजनरूपं न तु तत्र प्रतिगृहोऽस्ति तस्मादित्यर्थः ॥ ननु द्रव्याभावे तथैव स्वीयतां यन्मुनिः करिष्यति तत्करोत्विति चेत्तथैवाव
स्थाने यदि प्राणान्विमुंचामि मम मरणं स्यात्तदा ब्रह्मस्वहरणात् पात्कृमिर्भाविष्याम्यथवा प्रेततां पिशाचत्वं यास्यामितदपेक्षयात्मविक्रयः कर्तव्य इद
मेव वक्ष्यामि ॥ यदि प्राणानिति ॥ २६ ॥ २७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥३९॥

॥ २८ ॥ २९ ॥ नातः परतरमिति अश्वमेधसहस्राच्चसत्यमेकं विशिष्यते इति स्मृतेः ॥ ३० ॥ ३१ ॥ सत्यं पालनायानृतं पातनाय नर
कपालनायेत्यर्थः ॥ ३२ ॥ शताश्वमेधानिति पार्थिवो यथातिर्नृपः सकृदसत्यवचनादसत्यभाषणात्स्वर्गाद्भ्युतः पतितं इत्यन्वयः इयं कथा पु
नरुप्रसिद्धा ॥ ३३ ॥ वंशवृद्धिकरश्चायमिति यत्त्वं मां बोधयसि दक्षिणादेयेति तत्र मदीयत्वेन प्राणिद्वयमेवावशिष्टं पुत्रोभार्या चेतितत्र ॥

सूत उवाच ॥ राजानं व्याकुलं दीनं चिंतयानमधोमुखं ॥ प्रत्युवाच तदा पत्नी बाष्पमद्गदया गिरा ॥ २८ ॥ त्यज
षितां महाराजस्वधर्ममनुपालया ॥ प्रेतवर्जं नीयो हिनरः सत्यबहिष्कृतः ॥ २९ ॥ नातः परतरं धर्मवदंति पुरुषस्य
ध ॥ यादृशं पुरुषव्याघ्रस्वसत्यस्यानुपालनं ॥ ३० ॥ अग्निहोत्रमधीतं वदानाद्याः सकलाः क्रियाः ॥ भवंति
तत्पुण्यैर्फलं वाक्यं यस्यानृतं भवेत् ॥ ३१ ॥ सत्यमत्यंतमुदितं धर्मशास्त्रेषु धीमतां ॥ तारणायानृतं तद्वत्पतना
याकृतात्मनां ॥ ३२ ॥ शताश्वमेधानाहत्य राजसूयं च पार्थिवः ॥ कृत्वा राजा सकृत्स्वर्गादसत्यवचनाद्भ्युतः
॥ ३३ ॥ राजोवाच ॥ वंशवृद्धिकरश्चायं पुत्रस्तिष्ठति बालकः ॥ उच्यतां वक्तुकामांसि यद्वाक्यं गजगामिनि
॥ ३४ ॥ पत्न्युवाच ॥ राजन् मा भूदसत्यं ते पुंसां पुत्रफलाः स्त्रियः ॥ तन्मां प्रदाय वित्तेन देहि विप्राय दक्षिणां ॥ ३५ ॥
सूत उवाच ॥ एतद्वाक्यमुपश्रुत्य ययौ मोहं महीपतिः ॥ प्रतिलभ्य च संज्ञां वै विललापाति दुःखितः ॥ ३६ ॥ मह
दुःखमिदं भद्रे यत्स्वमेवं ब्रवीषि मे ॥ किं तव स्मितसंज्ञापाममपापस्य विस्मृताः ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥

त्रो वंशवृद्धिकरत्वात् न देय इति शास्त्राज्ञास्तितथैव भार्यापि निर्विकृतव्येति ततश्च किं कर्तव्यं मया कथं वा दक्षिणादेयेत्युच्यतां त्वया तद्वाक्यं यतस्त्वं
वक्तुकामांसि बोधकवाक्यं वक्तुकामासित इत्यर्थः इत्थं संकटे किं कर्तव्यं मयेति त्वमेव वदेत्यभिप्रायः ॥ ३४ ॥ पुत्रफला इति पुत्रे जा
ते स्त्रीणां फलं वा स्त्रीत्यर्थः ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ तव स्मितसंज्ञायाः प्रेम्णा हास्यभाषणानि किं मम विस्मृतानि भवंति यत्त्वदुक्तमेतदहं करिष्या
मीति मन्यसे इत्यर्थः ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥

दे.भा.स.

॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ शरणोचितोमहास्तरणयुक्तगृहोचितः ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ हेदैवेतिविधेःसंबोधनं ॥ ४३ ॥
॥ ४४ ॥ ४५ ॥ अयेप्रांतभागेमेजिन्हाशुष्यतीत्यन्वयः ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेगौडपाठानुसारिव्याख्यानेसप्तमस्कंधेविंशो

॥४०॥

हाहात्वयाकथंयोग्यंवक्तुमेतच्छुचिस्मिते ॥ दुर्वाच्यमेतद्वचनंकथंवदसिभामिनि ॥ ३८ ॥ इत्युत्कानृपतिश्चे
ष्टोनधीरोदारविक्रये ॥ निपपातमहीपृष्ठेमूर्छयातिपरिभुतः ॥ ३९ ॥ शयानंभुवितंतद्वामूर्छयापिमहीपतिं ॥
उवाचेदंसुकरुणंराजपुत्रीसुदुःखिता ॥ ४० ॥ हामहाराजकस्येदमपध्यानादुपागतं ॥ यस्त्वंनिपतितोभूमौ
रंकवच्छरणोचितः ॥ ४१ ॥ येनैवकोटिशोवित्तंविप्राणामपवर्जितं ॥ सएवपृथिवीनाथोभुविस्वपितिमेपतिः
॥ ४२ ॥ हाकष्टंकिंतवानेनकृतंदैवमहीक्षिता ॥ यदिद्रोपेद्रतुल्योयंनीतःपापामिमांदशां ॥ ४३ ॥ इत्युत्कासा
पिसुश्रोणीमूर्छितानिपपातह ॥ भर्तुर्दुःखमहाभारेणासह्येनातिपीडिता ॥ ४४ ॥ शिशुर्दृष्ट्वाक्षुधाविष्टःप्राह
वाक्यंसुदुःखितः ॥ ताततातप्रदेह्यन्नमातर्मेदेहिभोजनं ॥ ४५ ॥ क्षुन्मेवलवतीजाताजिह्वग्रेमेतिशुष्यति ॥
इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेसप्तमस्कंधेहरिश्रंद्रोपाख्यानेविंशोऽध्यायः ॥ २० ॥ एतस्मिन्नंतरेप्राप्तोविश्वा
मित्रोमहातपाः ॥ अंतकेनसमःक्रुधोधनंस्वयाचितुंहृदा ॥ १ ॥ तमालोक्यहरिश्रंद्रःपपातभुविमूर्छितः ॥
समारिणातमभ्युक्ष्यराजानंमिदमब्रवीत् ॥ २ ॥ उत्तिष्ठोत्तिष्ठराजेंद्रस्वाददस्वेष्टदक्षिणां ॥ ऋणंधारयतां
दुःखमहन्यहन्निवर्धते ॥ ३ ॥ आप्यायमानःसतदाहिमशीतेनवारिणा ॥ अवाप्यचेतनंराजाविश्वामित्र
मवेक्ष्यच ॥ ४ ॥ पुनर्मोहंसमापेदेह्यथक्रोधंययौमुनिः ॥ समाश्वास्यचराजानंवाक्यमाहद्विजोत्तमः ॥ ५ ॥

ध्यायः ॥ २० ॥ सप्तमस्कंधेतिपद्यैस्तुहरिश्रंद्रेणभूता ॥ महच्छोकःकृतइतिप्रधानकथोच्यते ॥ १ ॥ इत्थंशिशुभार्याभाषणानंतरंजातंवृत्तमा
ह एतस्मिन्नंतरेइति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

टी.अ.
२०

॥४०॥

॥ ६॥ ७ ८ ९ ॥ अग्नेदक्षिणादानेन सत्यमुक्षणेदुःखीभूतइत्यन्वयः ॥ १७ ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥

॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ यदित्वयां राज्ञामित्यर्थमइत्युच्यते तर्हि ब्राह्मणानामपि परपीडा कर्तव्या एव धर्म इत्यर्थादुक्तमेव भवति तथा च का

विश्वामित्र उवाच ॥ दीयतां दक्षिणासामेयदि धैर्यमवेक्ष्यसे ॥ सत्येनार्कः प्रतपति सत्येतिष्ठति मेदिनी ॥ ६ ॥ स

त्येचोक्तः परो धर्मः स्वर्गः सत्ये प्रतिष्ठितः ॥ अश्वमेधसहस्रं तु सत्यं चतुलयाधृतं ॥ ७ ॥ अश्वमेधसहस्राधिसत्य

मेकं विशिष्यते ॥ अथवा किं मरैतेन प्रोक्तेनास्ति प्रयोजनं ॥ ८ ॥ मदीयां दक्षिणां राजन्नदास्यति भवान्यदि ॥

अस्माच्चलगते ह्यर्के शप्स्यामित्वामतो ध्रुवं ॥ ९ ॥ इत्युक्त्वा स ययौ विप्रो राजा चासीद्गयातुरः ॥ दुःखीभूतो वनेनिः

स्वो नृशंसधनिनादितः ॥ १० ॥ सूत उ ॥ एतस्मिन्नंतरे तत्र ब्राह्मणो वेदपारगः ॥ ब्राह्मणैर्बहुभिः सार्धे निर्य

यौ स्वगृहाद्वहिः ॥ ११ ॥ ततो राज्ञीतुं दृष्ट्वा आयातं तापसं स्थितं ॥ उवाच वाक्यं राजानं धर्मार्थं सहितं तदा ॥ १२ ॥

त्रयाणामपि वर्णानां पिता ब्राह्मण उच्यते ॥ पितृद्रव्यं हि पुत्रेण ग्रहीतव्यं न संशयः ॥ १३ ॥ तस्मादयं प्रार्थनी

यो धनार्थमिति मेमतिः ॥ राजोवाच ॥ नाहं प्रतिग्रहं कांक्षे क्षत्रियो हं सुमध्यमे ॥ १४ ॥ याचनं खलु विप्राणां क्षत्रिया

णां न विद्यते ॥ गुरोर्हविप्रो वर्णानां पूजनीयोऽस्ति सर्वदा ॥ १५ ॥ तस्माद्गुरुर्न याच्यः स्यात्क्षत्रियाणां विशेषतः ॥

यजनाध्ययनं दानं क्षत्रियस्य विधीयते ॥ १६ ॥ शरणागतानामभयं प्रजानां प्रतिपालनं ॥ न चाप्येवं तु वक्तव्यं

देहीति कृपणं वचः ॥ १७ ॥ ददामीत्येव मे देवि हृदये निहितं वचः ॥ अर्जितं कुत्रचिद्रव्यं ब्राह्मणाय ददाम्यहं

॥ १८ ॥ पल्युवाच ॥ कालः समविषमकरः परिभवसन्मानमानदः कालः ॥ कालः करोति पुरुषं दातारं याचिता

रं च ॥ १९ ॥ विप्रेण विदुषा राजा क्रुद्धेनातिबलीयसा ॥ राज्यान्निरस्तः सौख्याच्च पश्य कालस्य चेष्टितं ॥ २० ॥

लवशाद्ब्राह्मणैस्त्वदुपद्रवकर्तृभिर्यथा स्वधर्मस्त्यक्तस्तथा त्वया किमिति न सन्न्यत इत्यभिप्रायेणाह कालः समविषमकर इति न्यूनाधिकक
र इत्यर्थः ॥ १९ ॥ तदेवोपपादयति विप्रेणेति ॥ २० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.स.

॥४०॥

नतुमानमिति मानंक्षत्रियोस्मीत्यभिमानं यद्वामानंशास्त्ररूपं प्रमाणं भाषितं करिष्यामीति शेषः ॥ २१ ॥ ददामिवाहं ददाम्येवाहं नतुगृ
ह्णामीत्यर्थः ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ नीचत्वमुपयास्यसीत्यतः पूर्वो चेदिति शेषः ॥ २६ ॥ ब्राह्मणार्थमेतादृशायो
राजोवाच ॥ असिनातीक्ष्णधारेणवरं जिह्वा द्विधा कृता ॥ नतुमानं परित्यज्य देहि देहीति भाषितं ॥ २७ ॥ क्षत्रि
योहं महाभागेन याचे किंचिदप्यहं ॥ ददामिवाहं नित्यं हि भुजवीर्या र्जितं धनं ॥ २८ ॥ पत्न्युवाच ॥ यदि ते हिम
हाराज याचितुं न क्षमं मनः ॥ अहं तु न्यायतो दत्ता देवैरपि सवासवैः ॥ २९ ॥ अहं शांस्या च पत्या च रक्ष्या चैव महा
द्युते ॥ मन्मौल्यं संगृहीत्वाथ गुर्वर्थः संप्रदीयतां ॥ ३० ॥ एतद्वाक्यमुपश्रुत्य हरिश्चंद्रो महीपतिः ॥ कष्टं कष्टमि
ति प्रोच्य विललापाति दुःखितः ॥ ३१ ॥ भार्या च भूयः प्राहेदं क्रियतां वचनं मम ॥ विप्रशापाग्निदग्धत्वाग्नीचत्व
मुपयास्यसि ॥ ३२ ॥ न द्यूतहेतोर्न च मद्यहेतोर्न राज्यहेतोर्न च भोगहेतोः ॥ ददस्व गुर्वर्थं मतो मया त्वं सत्यव्रत
त्वं सफलं कुरुष्व ॥ ३३ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे सप्तमस्कंधे हरिश्चंद्रोपाख्याने एकविंशोऽध्यायः
॥ २१ ॥ सूत उवाच ॥ सतयानोद्यमानस्तुराजा पत्न्या पुनः पुनः ॥ प्राह भद्रे करोम्येषां विक्रयं ते सुनिर्घृणः
॥ १ ॥ नृशंसैरपि यत्कर्तुं न शक्यं तत्करोम्यहं ॥ यदि ते भ्राजते वाणी वक्तुमीदृक् सुनिष्ठुरं ॥ २ ॥ एवमुक्त्वा ततो रा
जा गत्वा नगरमातुरः ॥ अवतार्य तदारंगेतां भार्या नृपसत्तमः ॥ ३ ॥ बाष्पगद्गदकंठस्तु ततो वचनमब्रवीत् ॥
भो भो नागरिकाः सर्वे शृणुध्वं वचनं मम ॥ ४ ॥ कस्यचिद्यदिकार्यं स्याद्वा स्यात्प्राणेष्टयामम ॥ स ब्रवीतु त्वरायु
क्तो यावत्स्वं धारयाम्यहं ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥

ग्यकरणेनैदापि न भविष्यतीत्याह न द्यूतहेतोरेति ॥ २७ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिल्लके सप्तमस्कंधे एकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥ चतुर्भिराधि
कैः पंचाशद्विः पद्यैस्तु भूभृता ॥ विक्रीता निजपत्नी त्रिकथानकमिहोच्यते ॥ १ ॥ इत्थं स्वविक्रये भार्याया प्रेर्यमाणो नृपः किमकरोत्तदाह सतयेति
॥ १ ॥ २ ॥ रंगे राजमार्गे ॥ ३ ॥ ४ ॥ यावदहं स्वं धनं धारयामि वदामि तदा तुं यस्य शक्तिः स ब्रवीत्वित्यर्थः ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥

टी.अ.

२१

॥४१॥

भोक्स्त्वामितिकिमापृच्छथाहंनृशंसः क्रूरोस्मीत्यन्वयः ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ अस्मात्कारणादित्यर्थः ॥ ९ ॥ १० ॥
राजादुःखातुरो न वदतीत्यालोच्य स्वयमेव त्राह्यण आहं कर्मणश्चेति तव योषितः कर्मणो वयोरूपशीलानां चानुरूपमित्यन्वयः ॥ ११ ॥

ते ब्रुवन्मंडिताः कस्त्वं पत्नीं विक्रेतुमागतः ॥ राजोवाच ॥ किं मां पृच्छथ कस्त्वं भो नृशंसो ह ममाभुषः ॥ ६ ॥ राक्ष
सो वास्मि कठिनस्ततः पापं करोम्यहं ॥ सूत उवाच ॥ तं शब्दं सहसा श्रुत्वा कौशिको विप्ररूपधृक् ॥ ७ ॥ वृद्धरूपं
समास्थाय हरिश्चंद्रमभाष ॥ समर्पयस्व मे दासीमहं क्रेता धनप्रदः ॥ ८ ॥ अस्ति मे वित्तमतुलं सुकुमारी च मे प्रि
या ॥ गृहकर्म न शक्नोति कर्तुमस्मात्प्रयच्छ मे ॥ ९ ॥ अहं गृण्हामि दासीं तु कतिदा स्यामि ते धनं ॥ एवमुक्ते तु विप्रे
ण हरिश्चंद्रस्य भूपतेः ॥ १० ॥ विदीर्णं तु मनो दुःखान्न चैनं किंचिदब्रवीत् ॥ विप्र उवाच ॥ कर्मणश्च वयोरूपशीला
नां तव योषितः ॥ ११ ॥ अनुरूपमिदं वित्तं गृहाणार्पय मे बलाम् ॥ धर्मशास्त्रेषु यद्वृष्टं स्त्रियो मौल्यं न रस्य च ॥ १२ ॥
द्वात्रिंशल्लक्षणोपेता दक्षाशीलगुणान्विता ॥ कोटिमौल्यं सुवर्णस्य स्त्रियः पुंसस्तथा बुद्धं ॥ १३ ॥ इत्याकर्ण्य वच
स्तस्य हरिश्चंद्रो महीपतिः ॥ दुःखेन महता विष्टो न चैनं किंचिदब्रवीत् ॥ १४ ॥ ततः स विप्रो नृपतेः पुरतो वल्कलो
परि ॥ धनं निधाय केरोषु धृत्वा राज्ञीमकर्षयत् ॥ १५ ॥ राज्ञ्युवाच ॥ मुंच मुंचार्य मांसद्योयावत्पश्याम्यहं सुतं ॥
दुर्लभं दर्शनं विप्रपुनरस्य भविष्यति ॥ १६ ॥ पश्येह पुत्रमामेवं मातरं दास्यतां गता ॥ मां मास्प्राक्षी राजपुत्र न
स्पृश्याहं त्वया धुना ॥ १७ ॥ ततः स बालः सहसा दृष्ट्वा कष्टांतु मातरं ॥ समभ्यधावदं बेति वदन्साश्रुविलोचनः ॥ १८ ॥

॥ १२ ॥ स्त्रियो मौल्यं सुवर्णस्य कोटिः पुंसस्तु सुवर्णस्या बुद्धं दशकोटयो मौल्यमित्यर्थः ॥ १३ ॥ स्त्रियो द्वात्रिंशल्लक्षणानितु विराट्पर्वणि द्वौ
पदीवर्णने स्पष्टानि पुषस्य द्वात्रिंशल्लक्षणानितु काशीखंडे एकादशाध्याये स्पष्टानि ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ राज्ञी पुत्रं वदति पश्येहेति
मां मास्प्राक्षीः स्पर्शमाकार्षीरित्यर्थः अहमधुना दास्यतां गता त्वया राजपुत्रेण न स्पृश्या भवामीत्यर्थः ॥ १७ ॥ १८ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.स.

॥४२॥

काकपक्षधरः कर्णद्वयोपरिचूडाकाकपक्षः ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ शतंसहस्रमितिगुणतारतम्येनमौल्यतारतम्यं ॥ २३ ॥
॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ वियुक्तेति वृक्षस्यच्छायाजडापिवृक्षंनजहातितथासतिनद्वदियंनित्यसंयुक्ताममकथमद्यमया

हस्तेवस्त्रंसमाकर्षन्काकपक्षधरःस्खलन् ॥ तमागतं द्विजः क्रोधाद्वालमभ्याहनत्तदा ॥ १९ ॥ वदंस्तथापिसौवे
तिनैवमुंचतिमातरं ॥ राड्युवाच ॥ प्रसादंकुरुमेनाथक्रीणीष्वेमंहिबालकं ॥ २० ॥ क्रीतापिनाहंभविताविनैनं
कार्यसाधिका ॥ इत्थंममाल्पभाग्यायाः प्रसादंकुरुमेप्रभो ॥ २१ ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ गृह्यतांवित्तमेतत्तेदीयतां
ममबालकः ॥ स्त्रीपुंसोर्धर्मशास्त्रज्ञैः कृतमेवहिवेतनं ॥ २२ ॥ शतंसहस्रंलक्षंचकोटिमौल्यंतथापरैः ॥ द्वात्रिंश
लक्षणोपेतादक्षाशीलगुणान्विता ॥ २३ ॥ कोटिमौल्यंस्त्रियः प्रोक्तंपुरुषस्यतथार्बुदं ॥ सूतउवाच ॥ तथैवतस्य
तद्वित्तंपुरःक्षिप्तंपटेपुनः २४ ॥ प्रगृह्यबालकंमात्रासहैकस्थमबंधयत् ॥ प्रतस्थेसगृहंक्षिप्रंतयासहमुदान्वितः
॥ २५ ॥ प्रदक्षिणांतुसाकृत्वाजानुभ्यांप्रणतास्थिता ॥ वाष्पपर्याकुलादीनात्विदंवचनमब्रवीत् ॥ २६ ॥ यदि
दत्तंयदिहुतंब्राह्मणास्तर्पितायदि ॥ तेनपुण्येममेभर्ताहरिश्चंद्रोस्तुवैपुनः ॥ २७ ॥ पादयोःपतितांदृष्ट्वाप्राणे
भ्योपिगरीयसीं ॥ हाहेतिचवदत्राजाविललापाकुलेंद्रियः ॥ २८ ॥ वियुक्तेयंकथंजातासत्यशीलगुणान्विता ॥ वृक्ष
च्छायापिवृक्षंतंनजहातिकदाचन ॥ २९ ॥ एवंभार्याविदित्वाथसुसंबन्धंपरस्परं ॥ पुत्रंचतमुवाचेदंमांत्वांहित्वा
कयास्यसि ॥ ३० ॥ कांदिशंप्रतियास्यामिकोमेदुःखंनिवारयेत् ॥ रज्यत्यागेनमेदुःखंवनवासेनमेद्विज
॥ ३१ ॥ यत्पुत्रेणवियोगेमेवमाहसभूपतिः ॥ सद्गर्तृभोग्याहिसदालोकेभार्याभवंतिहि ॥ ३२ ॥ ॥ ४२ ॥

वियुक्ताजित्यर्थः ॥ २९ ॥ परस्परंमात्रासंबन्धंपुत्रमप्याह एवंभार्याविदित्वेति ॥ ३० ॥ पुत्रमुक्त्वाब्राह्मणंवदातिकांदिशामिति
॥ ३१ ॥ पुनर्भार्यावदति सद्गर्तृभोग्याइति ॥ ३२ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

टी.अ.
२२

॥४२॥

॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ अत्रांतरे विश्वामित्रेणागत्य दृष्टुं पुत्रभार्याविक्रयेण राज्य
दानदाक्षिणात्वेन राज्ञा संपादिता ततः परं केनोपायेनेमं राजानं धर्मात्प्रच्युतं करिष्यामीति विमृश्य यदष्टमाध्यायात्ते प्रथमं राज्ञोक्तं धनेच्छायादिते
ह्यन्यज्ञार्थं द्विजसत्तम आगतं व्यमयोध्यायां दास्यामि विपुलं धनमिति तदा वयं स्मृत्वा तां यज्ञस्य दाक्षिणां राज्ञा प्रतिज्ञातां विश्वामित्रो याचते यात्वयो

मया त्यक्तासि कल्याणि दुःखेन विनियोजिता ॥ इक्ष्वाकुवंशसंभूतं सर्वराज्यसुखोचितं ॥ ३३ ॥ मामदृशं पतिं
प्राप्य दासीभावं गता ह्यसि ॥ ईदृशे मज्जमानं मांसमहच्छोकसागरे ॥ ३४ ॥ कोमामुद्वरते देवी पौराणारूयान
विस्तरैः ॥ सूत उवाच ॥ पश्य तस्तस्य राजर्षेः कशाघातैः सुदारुणैः ॥ ३५ ॥ घातयित्वा तु विप्रेशोने तुं समुपच
क्रमे ॥ नीयमानौ तु तौ दृष्ट्वा भार्यापुत्रौ सपार्थिवः ॥ ३६ ॥ विललापाति दुःखार्तो निश्चस्योष्णं पुनः पुनः ॥ यां न
वायुर्न वादित्यो न चंद्रो न पृथक् जनाः ॥ ३७ ॥ दृष्टवंतः पुरा पत्नीं सैर्यं दासीत्वमागता ॥ सूर्यवंशप्रसूतो यं सुकुमार
करांगुलिः ॥ ३८ ॥ संप्राप्तो विक्रयं बालो धिक् नामस्तु सुदुर्मतिं ॥ हाप्रिये हा शिशो वत्सममानार्थस्य दुर्नयः
॥ ३९ ॥ देवाधीनदशां प्राप्तो न मृतोऽस्मि तथापि धिक् ॥ सूत उवाच ॥ एवं विलपतो राज्ञोऽप्रे विप्रो तरधीयत ॥ ४० ॥
वृक्षगेहादिभिस्तुंगैस्तावादाय त्वरान्वितः ॥ अत्रांतरे मुनिश्रेष्ठस्त्वाजगाम महातपाः ॥ ४१ ॥ स शिष्यः कौशिकेन्द्रो
सौ निष्ठुरः क्रूरदर्शनः ॥ विश्वामित्र उवाच ॥ यात्वयोक्ता पुराराज न राजसूयस्य दाक्षिणा ॥ ४२ ॥ तां ददस्व
महाबाहो यदिसत्यं पुरस्कृतं ॥ हरिश्चंद्र उवाच ॥ नमस्करोमि राजर्षे गृहाणे मां स्वदाक्षिणां ॥ ४३ ॥

क्तेति तत्र यद्यपि राजा राजसूयेति नाम न गृहीतं किंतु सामान्य यज्ञस्य तथापि राजसूय यज्ञस्यैव दाक्षिणां ग्रहीष्यामि स एव ममाभिमतो नो चेत्सत्यं च ज्ञे
ति ब्राह्मणाभिमानः ॥ ४२ ॥ पुत्रभार्याविक्रयेण सार्द्धं हेमभारद्वयाविकं धनं यत्प्रच्युतं नूपुरस्कृत्य राजोवाच गृहाणे मां दाक्षिणां मिनि अस्मिन्
द्वेराज्यदानदाक्षिणां सार्धं भारद्वयारिमितां गृहाणा वशिष्टं द्रव्यं यज्ञस्य दाक्षिणां गृहाणेत्यर्थः ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥

दे.भा.स.

॥४३॥

॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ममयथाज्ञानंतपोबलं वर्तते तथा त्वं प्रथमं पश्य पश्चात्तु त्तमपात्रयोग्यां यज्ञदक्षि
णां देहिनेष्टशीमल्यां दारिद्र्यकर्तृकयज्ञयोग्यां दक्षिणां ग्रहीष्यामीत्याभिप्रायेण ब्राह्मण आह क्षत्रवंधो इति ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥

राजसूयस्य यागस्य यामयोक्ता पुरानघ ॥ विश्वामित्र उवाच ॥ कुतो लब्धमिदं द्रव्यं दक्षिणार्थे प्रदीयते ॥ ४४ ॥
एतदा च क्ष्वराजेंद्रयथा द्रव्यं त्वयार्जितं ॥ राजोवाच ॥ किमनेन महाभाग कथितेन तवानघ ॥ ४५ ॥ शोकस्तु वर्ध
ते विप्रश्रुतेनानेन सुव्रत ॥ ऋषि उवाच ॥ अशस्तं नैव गृण्हामि शस्तमेव प्रयच्छ मे ॥ ४६ ॥ द्रव्यस्यागमनं राज
न्कथयस्व यथा तथं ॥ राजोवाच ॥ मया देवी सुता भार्या विक्रीता कोटि सन्मितैः ॥ ४७ ॥ निष्कैः पुत्रो रोहितास्यो
विक्रीतो बुदसंख्यया ॥ विप्रैकादशकोट्यस्त्वं सुवर्णस्य गृहाण मे ॥ ४८ ॥ सूत उवाच ॥ तद्वित्तं स्वल्पमालक्ष्य
दारविक्रयसंभवं ॥ शोकाभिभूतं राजानं कुपितः कौशिको ब्रवीत् ॥ ४९ ॥ ऋषि उवाच ॥ राजसूयस्य यज्ञस्य नै
षा भवति दक्षिणा ॥ अन्यदुत्पादय क्षिप्रं संपूर्णयेन सा भवेत् ॥ ५० ॥ क्षत्रवंधो ममेमांस्त्वं सदृशीं यदि दक्षिणां ॥
मन्यसे तर्हितं तत्क्षिप्रं पश्य त्वं मे परं बलं ॥ ५१ ॥ तपसोऽस्य सुतस्तस्य ब्राह्मण्यस्यामलस्य च ॥ मत्प्रभावस्य चो
ग्रस्य शुद्धस्याध्ययनस्य च ॥ ५२ ॥ राजोवाच ॥ अन्यद्वास्यामि भगवन्कालः कश्चित्प्रतीक्ष्यतां ॥ अधुनैवा
स्ति विक्रीता पत्नी पुत्रश्च बालकः ॥ ५३ ॥ विश्वामित्र उवाच ॥ चतुर्भागाः स्थितो यो यं दिवसस्य नराधिप ॥ ए
ष एव प्रतीक्ष्यो मे वक्तव्यं नोत्तरं त्वया ॥ ५४ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे सप्तमस्कंधे द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥
व्यास उवाच ॥ तमेव मुक्त्वा राजानं निर्वृणं निष्ठुरं वचः ॥ तदा दायधनं पूर्णं कुपितः कौशिको ययौ ॥ १ ॥ ॥ ५५ ॥

नोत्तरमित उत्तरं मया दानकर्तव्येत्यर्थः ॥ ५४ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके सप्तमस्कंधे द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥ अष्टत्रिंशन्महा
श्लोकैर्हरिश्चंद्रो हि भूपतिः ॥ चांडालेन क्रयक्रीत इति सम्यक् कथ्यते ॥ १ ॥ तदा दायेति राज्यदानदक्षिणाभूतं सार्धं हेमभारद्वयप
रिमितं धनं गृहीत्वा ययावित्यन्वयः ॥ १ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५५ ॥

टी.अ.
२२

॥४३॥

॥२॥ मयाप्रेतेनशवभूतेनातिपापिनावित्तक्रीतेनयस्यार्तिःपीडागच्छतिमयाक्रीतेनयस्योपकारोभवतिसपुसुषस्वरायुक्तोममौल्यंब्रवीतु चतुर्थं
यामेदापिभास्करस्तिष्ठतिततोभास्करास्तानंतरंममद्रव्यस्योपयोगाभावइतिभावः ॥३॥ धर्मइति हरिश्चंद्रपरीक्षार्थंचांडालरूपेणधर्मोप्यागत
इत्यर्थः ॥ ४ ॥ ५ ॥ भृत्यार्थोभृत्यप्रयोजनंममसिद्धंभवतीत्यर्थः ॥६॥ ७॥ प्रवीरेतिनाम्नाविख्यातः ॥८॥ ९ ॥ उत्तमस्येति तवाधमस्य

विश्वामित्रेगतेराजाततःशोकमुपागतः ॥ श्वासोच्छ्वासंमुहुःकृत्वाप्रोवाचोच्चैरधोमुखः ॥ २ ॥ वित्तक्रीतेनय
स्यार्तिर्मयाप्रेतेनगच्छति ॥ सब्रवीतुत्वरायुक्तोयामेतिष्ठतिभास्करः ॥ ३ ॥ अथाजगामत्वरितोधर्मश्चांडाल
रूपधृक् ॥ दुर्गंधोविकृतोरस्कःइमश्रुलोदंतुरोधृणी ॥४॥ कृष्णोलंबोदरःस्त्रिगंधःकरालःपुरुषाधमः ॥ हस्तजर्जर
यष्टिश्चशवमाल्यैरलंकृतः ॥५॥ चांडालउवाच ॥ अहंगृण्हामिदासत्वेभृत्यार्थःसुमहान्मम ॥ क्षिप्रमाचक्ष्वमौ
ल्यंकिमेतत्तेसंप्रदीयते ॥ ६ ॥ व्यासउवाच ॥ तंतादृशमथालक्ष्यक्रूरदृष्टिसुनिर्घृणं ॥ वदंतमतिदुःशीलंकस्त्व
मित्याहपार्थिवः ॥ ७ ॥ चांडालउवाच ॥ चांडालोहमिहस्यातःप्रवीरेतिनृपोत्तम ॥ शासनेसर्वदातिष्ठमृतचै
लापहारकः ॥ ८ ॥ एवमुक्तस्तदाराजावचनंचेदमब्रवीत् ॥ ब्राह्मणःक्षत्रियोवापिगृण्हत्वितिमतिर्मम ॥ ९ ॥
उत्तमस्योत्तमोधर्मोमध्यमस्यचमध्यमः ॥ अधमस्याधमश्चैवइतिप्राहुर्मनीषिणः ॥१०॥ चांडालउवाच ॥ एव
मेवत्वयाधर्मःकथितोनृपसत्तम ॥ अविचार्यत्वयाराजन्नधुनोक्तंममाग्रतः ॥११॥ विचारयित्वायोब्रूतेसोभीष्टं
लभतेनरः ॥ सामान्यमेवतत्प्रोक्तमविचार्यत्वयानघ ॥ १२ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥

गृहेममोत्तमस्यधर्मोचलिष्यतीत्यर्थः ॥ १० ॥ एवमेवेति यद्येवंतवमनासिर्वर्ततेतर्हिबोकोवामांगृण्हत्वितिसामान्यतःकिमित्यसत्यमुक्तं
ब्राह्मणएवमांगृण्हत्वितिकिमितिनत्वयोक्तंतस्मादेवमेवासत्यभाषणरूपएवाधर्मस्त्वयाकायितःकिमित्यर्थः ममाग्रतोविचार्यविचारमकृत्वैव
किमधुनोक्तंत्वयेत्यर्थः ॥ ११ ॥ १२ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.स.

॥४४॥

यदिसत्यमिति यदिसत्यं प्रमाणं भवति तर्हि मया पूर्ववाक्येनैव त्वंगृहीतोऽसिनो चेत्सत्यं जहीत्यर्थः ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥
यदिसत्यं प्रमाणं ते गृहीतोऽसिनसंशयः ॥ हरिश्चंद्र उवाच ॥ असत्यान्नरके गच्छेत्सद्यः क्रूरेन राधमः ॥ १३ ॥
ततश्चां डालतासाध्वीनवरामेह्यसत्यता ॥ व्यास उवाच ॥ तस्यैवं वदतः प्राप्तो विश्वामित्रस्तपोनिधिः ॥ १४ ॥
क्रोधाम र्विवृत्ताक्षः प्राह चेदं नराधिप ॥ चां डालो यं मनस्थं ते दातुं वित्तमुपस्थितः ॥ १५ ॥ कस्मान्न दीयते मय्यम
शेषाय ज्ञदक्षिणा ॥ राजोवाच ॥ भगवन्सूर्यवंशोत्थमात्मानं वेदिकौशिक ॥ १६ ॥ कथं चां डालदासत्वं गमिष्ये
वित्तकामतः ॥ विश्वामित्र उवाच ॥ यदि चां डालवित्तं त्वमात्मविक्रयजं मम ॥ १७ ॥ न प्रदास्यसि चेत्तर्हि शप्स्या
मित्त्वामसंशयं ॥ चां डालादथवा विप्रादेहि मे दक्षिणाधनं ॥ १८ ॥ विना चां डालमधुना नान्यः कश्चिद्वनप्रदः ॥
धनेनाहं विनाराजन्नयास्यामिनसंशयः ॥ १९ ॥ इदानीमेव मे वित्तं न प्रदास्यसि चेन्नृप ॥ दिनेर्धवटिकाशेषे तत्त्वां
शापाग्निना दहे ॥ २० ॥ व्यास उवाच ॥ हरिश्चंद्रस्ततो राजामृतवच्छ्रितजीवितः ॥ प्रसीदेति वदन्पादौ ऋषेर्ज
ग्राहविबुधलः ॥ २१ ॥ हरिश्चंद्र उवाच ॥ दासोऽस्म्यतोऽस्मि दीनोऽस्मि त्वद्भक्तश्च विशेषतः ॥ प्रसादं कुरु विप्रर्षे
कष्टश्चां डालसंकरः ॥ २२ ॥ भवेयं वित्तशेषेण तव कर्म करो वशः ॥ तवैव मुनिशार्दूलप्रेष्यश्चित्तानुवर्तकः ॥ २३ ॥
विश्वामित्र उवाच ॥ एवमस्तु महाराज ममैव भव किं करः ॥ किंतु मद्रचनं कार्यं सर्वदेवनराधिप ॥ २४ ॥ व्यास उवा
च ॥ एवमुक्तेऽथ वचने राजा हर्षसमन्वितः ॥ अमन्यत पुनर्जातमात्मनं प्राह कौशिक ॥ २५ ॥ तवादेशं करिष्यामि स
दैवाहं न संशयः ॥ आदेशयद्विजश्रेष्ठ किं करोमि तवानघ ॥ २६ ॥ विश्वामित्र उवाच ॥ चां डाला गच्छ मदासमौ
ल्यं किं मे प्रयच्छसि ॥ गृहाण दासं मौल्येन मया दत्तं तवाधुना ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥

॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ मृतवच्छ्रितजीवितः अर्धमृतवदाश्रितजीवनः ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ इत्थं विश्वामित्रेण राजा वि
क्रीतस्ततो विश्वामित्र एव स्वदासं हरिश्चंद्रं व्यवगृहीत्वा चां डालायां पतितदातवराज्ञो न कश्चिदुपाय आसीदित्याह चां डाला गच्छेति ॥ २७ ॥

टी.अ.
२३

॥४४॥

॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ निर्विकारमुखइति ब्राह्मणोममस्वामीभवतिसयथाप्रेरयतितथाकरोमिनपुनर्धर्मपालनेममस्वातंत्र्यम
स्तीत्यभिप्रायेणेत्यर्थः ॥ ३२ ॥ हेमहाभागहरिश्चंद्रत्वमनृणोजातोसीत्यन्वयः ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ तदादायेति चांडालेनदत्तं

नास्तिदासेनमेकार्यवित्ताशावर्ततेमम ॥ व्यासउवाच ॥ एवमुक्तेतदातेनश्वपचोहृष्टमानसः ॥ २८ ॥ आग
त्यसन्निधौतूष्णींविश्वामित्रमभाषत ॥ चांडालउवाच ॥ दशयोजनविस्तीर्णेप्रयागस्यचमंडले ॥ २९ ॥ भूमिर
त्नमयींकृत्वादास्येतेहंद्विजोत्तम ॥ अस्यविक्रयणेनेयमार्तिश्चप्रहतात्वया ॥ ३० ॥ व्यासउवाच ॥ ततोर्त्न
सहस्राणिसुवर्णमणिमौक्तिकैः ॥ चांडालेनप्रदत्तानिजग्राहद्विजसंतमः ॥ ३१ ॥ हरिश्चंद्रस्तथाराजानिर्विका
रमुखोभवंत् ॥ अमन्यततथाधैर्याद्विश्वामित्रोहिमेपतिः ॥ ३२ ॥ तत्तदेवमयाकार्ययदयंकारयिष्यति ॥ अथांत
रिक्षेसहसावागुवाचाशरीरिणी ॥ ३३ ॥ अनृणोसिमहाभागदत्तासादक्षिणात्वया ॥ ततोदिवःपुष्पवृष्टिःपपा
तनृपमूर्धनि ॥ ३४ ॥ साधुसाध्वितिसंदेवाःप्रोचुःसंद्रामहौजसः ॥ हर्षेणमहताविष्टोराजाकौशिकमब्रवीत्
॥ ३५ ॥ राजोवाच ॥ त्वंहिमातापिताचैवत्वंहिबंधुर्महामते ॥ यदर्थमोचितोहंतेक्षणाच्चैवानृणांकृतः ॥ ३६ ॥
किंकरोमिमहाबाहोभ्रेयोमेवचनंतव ॥ एवमुक्तेतुवचनेनृपमुनिरभाषत ॥ ३७ ॥ विश्वामित्रउवाच ॥ चांडा
लवचनंकार्यमद्यप्रभृतितेनृप ॥ स्वस्तितेस्त्वितितंप्रोच्यतदादायधनंययौ ॥ ३८ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहा
पुराणेसप्तमस्कंधेहरिश्चंद्रोपाख्यानेत्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥ शौनकउवाच ॥ ततःकिमकरोद्राजाचांडाल
स्यगृहेगतः ॥ तद्वह्निमूतवर्यत्वंपृच्छतःसत्वरंहिमे ॥ १ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥

धनंगृह्णित्वाहरिश्चंद्रंतस्यहस्तेदत्वाययावित्यर्थः ॥ ३८ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेसप्तमस्कंधेत्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥ त्रयस्त्रिंशन्महाप
दैश्चांडलयहवर्तनं ॥ तदनुज्ञानकारित्वंहरिश्चंद्रस्यवर्ण्यते ॥ १ ॥ चांडालाधीनतांप्राप्तस्यहरिश्चंद्रस्यवृत्तमाह ततःकिमकरोदिति ॥ १ ॥

दे.भा.स.

॥४५॥

॥ २ ॥ ३ ॥ पक्वनेस्थाने ॥ ४ ॥ ५ ॥ शोकमेवाह तन्वीति बालं दृष्ट्वेत्यन्वयः ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥

॥ सूतउवाच ॥ विश्वामित्रे गते विप्रे श्वपचो हृष्टमानसः ॥ विश्वामित्राय तद् दूयं दत्त्वा ब्रध्वानरेश्वरं ॥ २ ॥ असत्यो
यास्य सीत्युक्त्वा दंडेना ताडयत्तदा ॥ दंडप्रहारसंभ्रांतमतीव व्याकुलं द्रियं ॥ ३ ॥ इष्टबंधुवियोगार्तमानीय नि
जपक्वने ॥ निगडे स्थापयित्वा तं स्वयं सुष्वापविज्वरः ॥ ४ ॥ निगडस्थस्ततो राजा वसंश्चांडालपक्वने ॥
अन्नपाने परित्यज्य सदा वै तदशोचयत् ॥ ५ ॥ तन्वीदीनमुखी दृष्ट्वा बालं दीनमुखं पुरः ॥ मां स्मरत्य सुखाविष्टा
मोक्षयिष्यति नैनृपः ॥ ६ ॥ उपात्तवित्तो विप्राय दत्त्वा वित्तं प्रतिश्रुतं ॥ रोदमानं सुतं वीक्ष्य मां च संबोधयिष्यति
॥ ७ ॥ तात पार्श्वं व्रजामीति रुदंतं बालकं पुनः ॥ तात तातेति भाषंतं तथा संबोधयिष्यति ॥ ८ ॥ न सामां मृगशा
वार्क्षीवित्तिचांडालतांगतं ॥ राज्यनाशः सुहृत्या गोभार्या तनयविक्रयः ॥ ९ ॥ ततश्चांडालताचेयमहोदुःखप
रंपरा ॥ एवं स निवसन्नित्यं स्मरंश्च दयितां सुतं ॥ १० ॥ निनाय दिवसा न्नाजाचतुरो विधिपीडितः ॥ अथान्धि
पंचमेतेन निगडान्मोचितो नृपः ॥ ११ ॥ चांडालेनानुशिष्टश्च मृतचैलापहारणे ॥ क्रुद्धेन परुषैर्वाक्यैर्निर्भर्त्स्य
च पुनः पुनः ॥ १२ ॥ काश्याश्च दक्षिणे भागेश्मशानं विद्यते महत् ॥ तद्रक्ष स्वयथान्यायं न त्याज्यं तत्त्वया क्वचित्
॥ १३ ॥ इमं च जर्जरं दंडं गृहीत्वा याहि माचिरं ॥ वीरबाहोरयं दंड इति घोषस्व सर्वतः ॥ १४ ॥ सूतउवाच ॥
कस्मिंश्चिदथ काले तु मृतचैलापहारकः ॥ हरिश्चंद्रो भवद्राजा श्मशाने तद्वशानुगः ॥ १५ ॥ चांडालेनानुशिष्टस्तु
मृतचैलापहारिणा ॥ राजा तेन समादिष्टो जगाम शवमंदिरं ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥

॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ वीरबाहोस्तन्नामकस्य चांडालस्यायं दंडस्तस्याहं दूत इत्यर्थः ॥ १४ ॥ १५ ॥
शवमंदिरं दमशानं ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥

टी.अ.
२३

॥४५॥

॥ १७ ॥ १८ ॥ उपेक्षां करोति अर्धदग्धेति विकसदंतपंक्तिभिरर्धदग्धशवास्यानिहसंतिकिमिति । अग्निमध्यस्थकायस्यशरीरस्यैव

पुर्यास्तुदक्षिणेदेशेविद्यमानंभयानकं ॥ शवमाल्यसमाकीर्णंदुर्गंधबहुधूमकं ॥ १७ ॥ श्मशानंधोरसन्नादं
शिवाशतसमाकुलं ॥ गृध्रगोमायुसंकीर्णंश्ववृंदपरिवारितं ॥ १८ ॥ अस्थिसंघातसंकीर्णमहादुर्गंधसंकुलं ॥
अर्धदग्धशवास्यानिविकसदंतपंक्तिभिः ॥ १९ ॥ हसंतीवाग्निमध्यस्थकायस्यैवव्यवस्थितिः ॥ नानामृतसु
हन्नादंमहाकोलाहलाकुलं ॥ २० ॥ हापुत्रमित्रहाबंधोभ्रातर्वत्सप्रियाद्यमे ॥ हाप्यतेभागिनेयार्हहामातुलपिता
मह ॥ २१ ॥ मातामहपितःपौत्रकगतोस्येहिवांधव ॥ इतिशब्दैःसमाकीर्णंभैरवैःसर्वदेहिनां ॥ २२ ॥ ज्वलन्
मांसवसामेदच्छमितिध्वनिसंकुलं ॥ अग्रेश्चटचटाशब्दोभैरवोयत्रजायते ॥ २३ ॥ कल्पांतसदृशाकारंश्मशानं
तत्सुदारुणं ॥ सराजातत्रसंप्राप्तोदुःखादेवमशोचत ॥ २४ ॥ हाभृत्यामंत्रिणोयूयंकतद्राज्यंकुलोचितं ॥ हा
प्रियेपुत्रमेवालमांत्यत्कामंदभाग्यकं ॥ २५ ॥ ब्राह्मणस्यचकोपेनगतायूयंकदूरतः ॥ विनाधर्ममनुष्याणांजा
यतेनशुभंकचित् ॥ २६ ॥ यत्नतोधारयेत्तस्मात्पुरुषोधर्ममेवहि ॥ इत्येवंचितयस्तत्रचांडालोक्तंपुनःपुनः ॥ २७ ॥
मलेनदिग्धसर्वांगःशवानांदर्शनेत्रजन् ॥ लकुटाकारकल्पश्चधावंश्चापिततस्ततः ॥ २८ ॥ अस्मिच्छवइदंमौ
ल्यंशतंप्राप्स्यामिचाग्रतः ॥ इदंममइदंराज्ञइदंचांडालकस्यच ॥ २९ ॥ इत्येवंचितयत्राजाव्यवस्थांदुस्त
रांगतः ॥ जिणैकपटसुग्रंथिकृतकंथापरिग्रहः ॥ ३० ॥ विताभस्मरजोलितमुखबाहूदरांग्रिकः ॥ नानामेदव
सामज्जालितपाण्यंगुलिःश्वसन् ॥ ३१ ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥

व्यवस्थितिर्दुर्दशाभवतीति ॥ १९ ॥ नानामृतानामनेकमृतानांसुहृदांरोदननादोयस्मिन्दमशानेतन् ॥ २० ॥ हेमेप्रियाद्याहंवयाकथं
हाप्यतेत्याड्यतइत्यर्थः ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ शवानांदर्शनेशवान्वेषणे ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥

दे.भा.स.

॥४६॥

नानाशवानांपिंडार्ययेचौदनाः कृतास्तैर्भक्षितैर्याधुनिवृत्तिस्तत्परायणः ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके महापुराणे गौडपाठानुसारिव्याख्याने सप्तमस्कंधे चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥ अर्धेनैकोनवतिश्लोकैर्यथभूतः ॥ पुत्रभार्याकथांसम्यक्प्रयामासभूते ॥ १ ॥ चांडालेन हरिश्च

टी.अ.
२४

नानाशवोदनकृतक्षुन्निवृत्तिपरायणः ॥ तदीयमाल्यसंश्लेषकृतमस्तकमंडलः ॥ ३२ ॥ नरात्रौ न दिवा शेते हा
हेति प्रवदन्मुहुः ॥ एवं द्वादशमासास्तु नीता वर्षशतोपमाः ॥ ३३ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे सप्तमस्कंधे
चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥ सूत उवाच ॥ एकदा तु गतोरंतुं बालकैः सहितो बहिः ॥ वाराणस्यानातिदूरे रोहिताख्यः कुमा
रकः ॥ १ ॥ क्रीडां कृत्वा ततो दर्भान् ग्रहीतुमुपचक्रमे ॥ कोमलानल्पमूलांश्च सांग्राह्यं च तानुसारतः ॥ २ ॥
आर्यप्रीत्यर्थमित्युक्त्वा हस्तयुग्मेन यत्नतः ॥ सलक्षणाश्च समिधो बहिर्हि र्धमं सलक्षणं ॥ ३ ॥ पलाशकाष्ठान्या
दाय त्वग्निहोमार्थमादरात् ॥ मस्तके भारकं कृत्वा खिद्यमानः पदे पदे ॥ ४ ॥ उदकस्थानमासाद्य तदा बालस्तृ
षान्वितः ॥ भुवि भारं विनिक्षिप्य जलस्थाने तदा शिशुः ॥ ५ ॥ कामतः सलिलं पीत्वा विश्रम्य च मुहूर्तकं ॥
वल्मीकोपरिविन्यस्त भारो हर्तुं प्रचक्रमे ॥ ६ ॥ विश्वामित्राज्ञया तावत्कृष्णसर्पो भयावहः ॥ महाविषो महा
घोरो वल्मीकान्निर्गतस्तदा ॥ ७ ॥ तेनासौ बालको दष्टस्तदैव च पपात ह ॥ रोहिताख्यं मृतं दृष्ट्वा ययुर्बालाद्विजा
लयं ॥ ८ ॥ त्वरिताभयसंविग्नाः प्रोचुस्तन्मातुरग्रतः ॥ हे विप्रदासिते पुत्रः क्रीडां कर्तुं बहिर्गतः ॥ ९ ॥ अस्माभिः
सहितस्तत्र सर्पदष्टो मृतस्ततः ॥ इति सातद्वचः श्रुत्वा वज्रपातोपमं तदा ॥ १० ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४५ ॥

द्वेदमशानकार्यार्थनियुक्ते सत्यनंतरं जातवृत्तमाह एकदा त्विति रंतुं क्रीडितुं नातिदूरे निकटे एव ॥ १ ॥ शक्त्यनुसारतां भारवहने यावर्त्ता शक्तिः
स्वस्य तदनुरोधत इत्यर्थः ॥ २ ॥ आर्यप्रीत्यर्थमिति वयस्यैः किमर्थमिदं दर्भाहरणं क्रियते इति पृष्टे सति आर्यो मम स्वामी त्राहणः तत्प्रीत्यर्थमिदं दर्भाहरणं मया क्रियत इति तान्वयस्यानुक्तोऽर्थः ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ बालारोहिताख्यस्य वयस्याः ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥

॥४६॥

॥ ११ ॥ निशामुखेसायंकालेरोदनमलक्ष्मीकारकमतिनिषिद्धमित्यर्थः ॥ १२ ॥ १३ ॥ धूसराधूलिभिर्मलितेत्यर्थः ॥ १४ ॥ १५ ॥
क्रयमौल्यं गृह्यगृहीत्वेत्यर्थः छांदसोत्प ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ धर्मसंकीर्तनेनकुतःकार्यनास्तीतिचेत्त

पपातमूर्छिताभूमौछिन्नेवकदलीयथा ॥ अथतांब्राह्मणोरुष्टःपानीयेनाभ्यर्षित ॥ ११ ॥ मुहूर्ताच्चेतनांप्रा
प्ताब्राह्मणस्तामथाब्रवीत् ॥ ब्राह्मण उवाच ॥ अलक्ष्मीकारकंनिवृजानतीत्वंनिशामुखे ॥ १२ ॥ रोदनंकुरु
षेदुष्टेलज्जातेहृदयेनकिं ॥ ब्राह्मणेनैवमुक्तासानकिंचिद्वाक्यमब्रवीत् ॥ १३ ॥ रुरोदकरुणंदीनापुत्रशो
केनपीडिता ॥ अश्रुपूर्णमुखीदीनाधूसरामुक्तमूर्धजा ॥ १४ ॥ अथतांकुपितोविप्रोराजपत्नीमभाषत ॥
धिकत्वांदुष्टेक्रयंगृह्यममकार्यविलुंपसि ॥ १५ ॥ अशक्तांचेत्कथंतर्हिगृहीतंममतदनं ॥ एवंनिर्भर्त्सि
तातेनक्रूरवाक्यैःपुनःपुनः ॥ १६ ॥ रुडिताकरुणंत्राहविप्रंगद्गदयागिरा ॥ स्वामिन्ममसुतोबालःसर्पद
ष्टेमृतोवहिः ॥ १७ ॥ अनुज्ञामिप्रयच्छस्वद्रुंयास्यामिबालकं ॥ दुर्लभंदर्शनंतेनसंजातंममसुव्रत ॥ १८ ॥
इत्युत्काकरुणंबालापुनरेवरुरोदह ॥ पुनस्तांकुपितोविप्रोराजपत्नीमभाषत ॥ १९ ॥ ब्राह्मण उवाच ॥ शठेदु
ष्टसमाचारेकिंनजानासिपातकं ॥ यःस्वामिवेतनंगृह्यतस्यकार्यविलुंपति ॥ २० ॥ नरकेपच्यतेसोथमहारौर
वपूर्वके ॥ उषित्वानरकेकल्पंततोसौकुक्कुटोभवेत् ॥ २१ ॥ किमनेनाथवाकार्यधर्मसंकीर्तनेनमे ॥ यस्तुपाप
रतोमूर्खःक्रूरोनीचोऽनृतःशठः ॥ २२ ॥ तद्वाक्यंनिष्फलंतस्मिन्भवेद्बीजमिवोपरि ॥ एहितेविद्यतेकिंचित्पर
लोकभयंयदि ॥ २३ ॥ एवमुक्ताथसावित्रंवेपमानाब्रवीद्वचः ॥ कारुण्यंकुरुमेनाथप्रसीदसुमुखोभव ॥
॥ २४ ॥ प्रस्थापयमुहूर्तमायावद्रक्ष्यामिबालकं ॥ एवमुक्ताथसामूर्धनानिपत्यद्विजपादयोः ॥ २५ ॥ ॥ ६५ ॥

त्राह यस्त्विति ऊषरेदेशेबीजमिवतद्वाक्यंधर्मशास्त्रोपदेशवाक्यंतस्मिन्मूर्खत्वादिधर्मवतिनिष्फलंयतस्तदित्यर्थः ॥ २२ ॥ एहितेइति
एहिगृहकार्यमित्यर्थः ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ २६ ॥ २७ ॥ पादाभ्यंगादिकर्मणापादसंवाहनादिनेत्यर्थः ॥ २८ ॥ अथेति पादसंवाहनानंतरमित्यर्थः ॥ २९ ॥ ३० ॥

टी.अ.
२५

रुरोदकरुणंबालापुत्रशोकेनपीडिता ॥ अथाहकुपितोविप्रःक्रोधसंरक्तलोचनः ॥ २६ ॥ विप्रउवाच ॥ किंते
पुत्रेणमेकार्यगृहकर्मकुरुष्वमे ॥ किंनजानासिमेक्रोधंकशाघातफलप्रदं ॥ २७ ॥ एवमुक्तास्थिताधैर्याद्रुह
कर्मचकारह ॥ अर्धरात्रोगतस्तस्याःपादाभ्यंगादिकर्मणा ॥ २८ ॥ ब्राह्मणेनाथसाप्रोक्तापुत्रपार्श्वव्रजाधु
ना ॥ तस्यदाहादिकंकृत्वापुनरागच्छसत्वरं ॥ २९ ॥ नलुप्येतयथाप्रातर्गृहकर्मममेतिच ॥ ततस्त्वेकाकि
नीरात्रौविलपंतीजगामह ॥ ३० ॥ दृष्ट्वा मृतंनिजंपुत्रंभृशंशोकेनपीडिता ॥ यूथभ्रष्टाकुरंगीवविवत्सासौरभी
यथा ॥ ३१ ॥ वाराणस्याबहिर्गत्वाक्षणादृष्ट्वा निजंसुतं ॥ शयानंरंकवद्रूमौकाष्ठदर्भतृणोपरि ॥ ३२ ॥ विल
लापातिदुःखार्ताशब्दंकृत्वासुनिष्ठुरं ॥ एहिमेसंमुखंकस्माद्रोषितोसिवदाधुना ॥ ३३ ॥ आयास्यभियुखोनि
त्यमंबेत्युक्त्वापुनःपुनः ॥ गत्वास्खलत्पदातस्यपपातोपरिमूर्च्छिता ॥ ३४ ॥ पुनःसाचेतनांप्राप्यदोष्यामालिं
ग्यबालकं ॥ तन्मुखेवदनंन्यस्यरुरोदार्तस्वनैस्तदा ॥ ३५ ॥ कराभ्यांताडनंचक्रेमस्तकस्योदरस्यच ॥ हा
बालहारिशोवत्सहाकुमारकसुंदर ॥ ३६ ॥ हाराजन्कगतोसित्वंपश्येमंबालकंनिजं ॥ प्राणेभ्योपिगरीयां
संभूतलेपितंमृतं ॥ ३७ ॥ तथापश्यन्मुखंतस्यभूयोजीवितशंकया ॥ निर्जीववदनंज्ञात्वामूर्छितानिपपा
तह ॥ ३८ ॥ हस्तेनवदनंगृह्यपुनरेवमभाषत ॥ शयनंत्यजहेबालशीघ्रंजागृहिभीषणं ॥ ३९ ॥ निशार्धवर्ध
तेवेदंशिवाशतनिनादितं ॥ भूतप्रेतपिशाचादिडाकिनीयूथनादितं ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥

॥४७॥

॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ शिवानांशतस्यनिनादःसंजातोयस्मिस्तादृशमित्यर्थः ॥ ४० ॥

अस्तादस्मभ्यतेतवमित्राणि वयस्याः गृहान्गतानितेषां मध्येत्वमेवैकः कुतोऽत्र स्थित इति विष्णोपवाक्यमेतत् ॥ ४१ ॥ प्रतिशब्दं प्रत्युत्तरं ॥ ४२ ॥

मित्राणितेगतान्यस्तात्त्वमेकस्तुकुतः स्थितः ॥ सूत उवाच ॥ एवमुक्त्वा पुनस्तन्वीकरुणं प्ररुदह ॥ ४१ ॥
हाशिशो बालहावत्सरोहितास्य कुमारक ॥ रेपुत्रप्रतिशब्दं मेकस्मात्त्वं न प्रयच्छसि ॥ ४२ ॥ तवाहं जननीव
त्सकिं न जानासि पश्य मां ॥ देशत्यागाद्राज्यनाशात्पुत्रभर्त्रास्वविक्रयात् ॥ ४३ ॥ यद्वासीत्वाञ्च जीवामित्वांष्ट
ष्ठापुत्रकेवलं ॥ तेजन्मसमये विप्रैरादिष्टं यत्त्वं नागतं ॥ ४४ ॥ दीर्घायुः पृथिवीराजः पुत्रपौत्रसमन्वितः ॥ शौर्यदा
नरतिः सत्त्वो गुरुदेवद्विजार्चकः ॥ ४५ ॥ मातापित्रोस्तु प्रियकृत्सत्यवादी जितेन्द्रियः ॥ इत्यादिसकलं जातमसत्यम
धुना सुत ॥ ४६ ॥ चक्रमत्स्यावातपत्रश्रीवत्सस्वस्तिकध्वजाः ॥ तव पाणितले पुत्रकलशश्चामरं तथा ॥ ४७ ॥
लक्षणानितथान्यानि ब्रह्मस्तेयानि सन्ति च ॥ तानि सर्वाणि मोघानि संजातान्यधुना सुत ॥ ४८ ॥ हाराजन् पृ
थिवीनाथ कतेराज्यं क्रमं त्रिणः ॥ कते सिंहासनं छत्रं कते खड्गः कतद्वनं ॥ ४९ ॥ कसायो ध्याक्कहर्म्याणि क्व गजा
श्वरथप्रजाः ॥ सर्वमेतत्तथा पुत्रमांत्यक्त्वा क्व गतोसि रे ॥ ५० ॥ हाकांतहानृपागच्छ पश्येमं स्वसुतं प्रियं ॥ येन
तेरिं गतावक्षः कुंकुमेनावलेपितं ॥ ५१ ॥ स्वशरीररजः पंकैर्विशालं मलिनीकृतं ॥ येन ते बालभावेन मृगनाभि वि
लेपितः ॥ ५२ ॥ भ्रंशितो भालतिलकस्तवां कस्थेन भूपते ॥ यस्य वक्त्रं मृदालिप्तं स्नेहाद्वैचुंबितं मया ॥ ५३ ॥
तन्मुखं मक्षिकालिङ्ग्यं पश्येकीटैर्विदूषितं ॥ हाराजन् पश्यतं पुत्रं भुवि स्थिरं कवन्मृतं ॥ ५४ ॥ हा देव किं मया कृत्यं
कृतं पूर्वभवांतरे ॥ तस्य कर्मफलस्येह न पारमुपलक्षये ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥

पुत्रेति संबोधनं ॥ ४३ ॥ यद्वा जीवामितत्त्वांकेवलं द्वैव जीवामित्यर्थः ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ मोघानि व्यर्थानि ॥ ४८ ॥
॥ ४९ ॥ ५० ॥ रिं गता अतिबालावस्था चलनवता ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ भूपते इत्यंतं पूर्वान्वयि ॥ ५४ ॥ ५५ ॥

दे.भा.स.

॥४८॥

॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ बालघातिनीकाचिद्बालघातिनीराक्षसीयंभवतीत्यर्थः ॥ ६१ ॥ शुभाचेद्यादि
हापुत्रहाशिशोवत्सहाकुमारकसुंदर॥एवंतस्याविलापंतेश्रुत्वानगरपालकाः॥५६॥जागृतास्त्वरितास्तस्याः
पार्श्वमीयुःसुविस्मिताः ॥ जनाऊचुः ॥ कात्वंबालश्चकस्यायंपतिस्तेकुत्रतिष्ठति ॥५७॥ एकैवनिर्भयारात्रौ
कस्मात्वमिहरोदिषि ॥ एवमुक्ताथसातन्वीनकिंचिद्वाक्यमब्रवीत् ॥५८॥ भूयोपिपृष्टासातूष्णींस्तन्धीभूता
बभूवह ॥ विललापातिदुःखार्ताशोकःश्रुतलोचना ॥५९॥ अथतेशंकितास्तस्यांरोमांचिततनूरुहाः ॥ संत्र
स्ताःप्राहुरन्योन्यमुत्पृतायुधपाणयः ॥६०॥ नूनंस्त्रीनभवत्येषायतःकिंचिन्नभापते ॥ तस्माद्वध्याभवेदेपाय
त्नतोबालघातिनी ॥६१॥शुभाचेत्तर्हि किं ह्यत्रनिशार्धेतिष्ठतेवहिः ॥ भक्षार्थमनयानूनमानीतःकस्यचिच्छिशुः
॥६२॥ इत्युक्त्वातैर्गृहीतासागाढंकेशेषुसत्वरं ॥ भुजयोरपरैश्चैवकैश्चापिगलकेतथा ॥६३॥ खेचरीयास्य
तीत्युक्तंबहुभिःशस्त्रपाणिभिः ॥ आकृष्यपक्वणेनीताचांडालायसमर्पिता ॥६४॥ हेचांडालवहिर्दृष्टाह्यस्माभि
र्बालघातिनी ॥ वध्यतांवध्यतमेषाशीघ्रंनीत्वावहिस्थले ॥६५॥ चांडालःप्राहतांदृष्ट्वाज्ञातेयंलोकविश्रुता ॥
नदृष्टपूर्वाकेनापिलोकडिंभान्यनेकधा ॥६६॥ भक्षितान्यनयाभूरिभवाङ्गिःपुण्यमार्जितं ॥ स्यातिर्वःशाश्वती
लोकेगच्छध्वंचयथासुखं ॥६७॥ द्विजस्त्रीबालयोर्घातीस्वर्णस्तेयीचयोनरः ॥ अग्निदोवर्त्मघातीचमद्यपोगुस्त
ल्पगः ॥६८॥ महाजनविरोधीचितस्यपुण्यप्रदोवधः ॥ द्विजस्यापिस्त्रियोवापिनदोषोविद्यतेवधे ॥६९॥
अस्यावधश्चमेयोग्यइत्युक्त्वागाढबंधनैः ॥ बध्वाकेशेष्वथाकृष्यरज्जुभिस्तामताडयत् ॥७०॥ ॥७१॥

राक्षसीनास्तीत्यर्थः यतएवंतस्मादाह भक्षार्थमिति ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ लोकडिंभानिलोकांनांबालकानि ॥ ६६ ॥
पुण्यमार्जितमेतस्यावधेनेत्यर्थः ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥

टी.अ.
२५

॥४८॥

॥ ७१ ॥ ७२ ॥ अपरंप्रेष्यंसेवकंदेहिसवधंकरिष्यतीत्यर्थः असाध्यमपीति एतद्विनामित्यर्थः ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥

हरिश्चंद्रमथोवाचवाचापरुषयातदा ॥ रेदासवध्यतामेषादुष्टात्मामाविचारय ॥ ७१ ॥ तद्वाक्यंभूपतिःश्रुत्वाव
जपातोपमंतदा ॥ वेपमानोथचांडालंप्राहस्त्रीवधशंकितः ॥ ७२ ॥ नशक्तोहमिदंकर्तुंप्रेष्यंदेहिममापरं ॥ असा
ध्यमपियत्कर्मतत्करिष्येत्वयोदितं ॥ ७३ ॥ श्रुत्वांतदुक्तंवचनंश्वपचोवाक्यमब्रवीत् ॥ माभैषीस्त्वंगृहाणासिं
वधोस्याःपुण्यदोमतः ॥ ७४ ॥ बालानामिवभयदानेयंरक्ष्याकदाचन ॥ तच्छ्रुत्वावचनंतस्यराजावचनमब्रवीत्
॥ ७५ ॥ स्त्रियोरक्ष्याःप्रयत्नेननहंतव्याःकदाचन ॥ स्त्रीवधेकीर्तितंपापंमुनिभिर्धर्मतत्परैः ॥ ७६ ॥ पुरुषोयः
स्त्रियंहन्याज्ज्ञानतोऽज्ञानतोपिवा ॥ नरकेपच्यतेसोथमहारौरवपूर्वके ॥ ७७ ॥ चांडालउवाच ॥ मावदासिं
गृहाणैनंतीक्ष्णविद्युत्समप्रभं ॥ यत्रैकस्मिन्वधंनीतेबहूनांतुसुखंभवेत् ॥ ७८ ॥ तस्यहिंसाकृतानूनंबहुपुण्य
प्रदाभवेत् ॥ भक्षिताभ्यनयाभूरिलोकेडिंभानिदुष्टया ॥ ७९ ॥ तत्क्षिप्रंवध्यतामेषालोकःस्वस्थोभविष्यति
॥ राजोवाच ॥ चांडालाधिपतेतीव्रं व्रतंस्त्रीवधवर्जनं ॥ ८० ॥ आजन्मतस्ततोयत्नेनकुर्यास्त्रीवधेतव ॥ चां
डालउ० ॥ स्वामिकार्यंविनादुष्टकिंकार्यंविद्यतेपरं ॥ ८१ ॥ गृहीत्वावेतनंमेद्यकस्मात्कार्यंविलुंपसि ॥ यःस्वा
मिवेतनंगृह्यस्वामिकार्यंविलुंपति ॥ ८२ ॥ नरकान्निष्कृतिस्तस्यनास्तिकल्पायुतैरपि ॥ राजोवाच ॥ चांडा
लनाथमेदेहिप्राप्यमन्यत्सुदारुणं ॥ ८३ ॥ स्वशत्रुंब्रूहितंक्षिप्रंघातयिष्याम्यसंशयं ॥ घातयित्वातुतंशत्रुंतवदा
स्यामिमेदिनीं ॥ ८४ ॥ देवदेवोरगैःसिद्धैर्गंधर्वैरपिसंयुतं ॥ देवेन्द्रमपिजेप्यामिनिहत्यनिशितैःशरैः ॥ ८५ ॥
एतच्छ्रुत्वाततोवाक्यंहरिश्चंद्रस्यभूपतेः ॥ चांडालःकुपितःप्राहवेपमानंमहीपतिं ॥ ८६ ॥ ॥ ७७ ॥

॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७७ ॥

दे.भा.स.

॥४९॥

॥८७॥८८॥८९॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके गौडपाठानुसारिव्याख्याने सप्तमस्कंधे पंचविंशोऽध्यायः ॥२५॥ सार्धत्रिसाहितैः सप्ततिश्लोके
रथभूता ॥ ज्ञातास्वकीयपत्नीतिशुशोचततः परं ॥१॥ चांडालेन राज्ञेस्त्रीवधाय खड्गे समर्पितेततः परं जातंवृत्तमाह ततोऽथेति ॥१॥२॥

॥ चांडाल उवाच ॥ चांडालदासतां कृत्वा शूराणां भाषसे वचः ॥ दासकिं बहु नानूनं शृणु मे गदतो वचः ॥८७॥ नि
र्लज्जतवचे दस्ति किंचित्पापभयं हृदि ॥ किमर्थं दासतां यातश्चांडालस्य तु वेश्मनि ॥ ८८ ॥ गृहाणैनंततः ख
ड्गमस्याश्लिष्ठधिशिरोऽवुजं ॥ एवमुक्त्वा च चांडालो राज्ञे खड्गं न्यवेदयत् ॥८९॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे सप्तम
स्कंधे हरिश्चंद्रोपाख्याने पंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥ सूत उवाच ॥ ततोऽथ भूपतिः प्राहराज्ञीं स्थित्वा ह्यधो मुखः ॥
अत्रोपविश्य तां बाले पापस्य पुरतो मम ॥ १ ॥ शिरस्ते छेदयिष्यामि हंतुं शक्नोति चेत्करः ॥ एवमुक्त्वा समुद्यम्य
खड्गं हंतुं गतो नृपः ॥ २ ॥ न जानाति नृपः पत्नीं सानजानाति भूपतिं ॥ अब्रवीद्भृशदुःखार्तास्वमृत्युमभिकांक्ष
ती ॥३॥ रुयु उवाच ॥ चांडालशृणु मे वाक्यं किंचित्त्वं यदि मन्यसे ॥ मृतस्तिष्ठति मे पुत्रो नास्ति दूरे बहिः पुरात् ॥४॥ तं
दहामि हतं यावदानयित्वा तवांतिकं ॥ तावत्प्रतीक्ष्यतां पश्चादसि नायातयस्व मां ॥५॥ तेनाथ बाढमित्युक्त्वा प्रे
षिता बालकं प्रति ॥ साजगामातिदुःखार्ता विलपन्ती सुदारुणं ॥६॥ भार्या तस्य नरेन्द्रस्य सर्पदंष्ट्रं हि बालकं ॥
हा पुत्रहावत्स शिशो इत्येवं वदती मुहुः ॥७॥ कशाविवर्णामलिना पांसुध्वस्तशिरोरुहा ॥ श्मशानभूमिमागत्य
बालं स्थाप्या विशद्भुवि ॥८॥ तस्या विलापशब्दं तमाकर्ण्य स नराधिपः ॥ शवसन्निधिमागत्य वस्त्रमस्याक्षिप
त्तदा ॥९॥ तां तथा रुदतीं भार्या नाभ्यजानाति भूमिपः ॥ चिरप्रवास संतप्तां पुनर्जातामिवाबलां ॥१०॥ ध्या

॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ वस्त्रमस्याक्षिपत्तदेति अस्य पुत्रशवस्य मुखोपरि यद्वृक्षं स्थितं तदा क्षिपत् आकर्षितवानित्यर्थः की
दृशः पुत्रोस्तीति परिज्ञानार्थमिति भावः ॥ ९ ॥ भार्येति नाभ्यजानाति ॥ १० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

टी.अ.
२६

॥४९॥

॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ तरंगिणःकुटिलानित्यर्थः ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ स्मृतिमभ्यागतइतिममे

सापितं चारुकेशांतं पुरोदृष्ट्वा जटालकं ॥ नाभ्यजाना नृपवरं शुष्कवृक्षत्वचोपमं ॥ ११ ॥ भूमौ निपतितं बालं दृष्ट्वा
शीविषपीडितं ॥ नरेन्द्रलक्षणोपेतमर्चितयदसौ नृपः ॥ १२ ॥ अस्य पूर्णे दुवद्वक्त्रं शुभमुन्नमसमव्रणं ॥ दर्पणप्रति
मोत्तुंगकपोलयुगशोभितं ॥ १३ ॥ नीलनूकेशान्कुचिताग्रान्समान्दीर्घास्तरंगिणः ॥ राजीवसदृशेनेत्रे
ओष्ठौ विंबफलोपमौ ॥ १४ ॥ विशालवक्षादीर्घाक्षो दीर्घबाहून्नतांसकः ॥ विशालपादोगंभीरः सूक्ष्मांगुल्यव
नीधरः ॥ १५ ॥ मृणालपादोगंभीरनाभिरुद्धतकंधरः ॥ अहो कष्टं नरेन्द्रस्य कस्याप्येषकुलेशिशुः ॥ १६ ॥ जातो
नीतः कृतांतेन कालपाशादुरात्मना ॥ सूत उवाच ॥ एवं दृष्ट्वा थतं बालं मातुरं के प्रसारितं ॥ १७ ॥ स्मृतिम
भ्यागतो राजा हाहेत्यश्रूण्य पातयत् ॥ सोऽप्युवाच च वत्सो मेदशमेतामुपागतः ॥ १८ ॥ नीतो यदि च घोरेण कृ
तांतेनात्मनो वशं ॥ विचारयित्वा राजा सौ हरिश्चंद्रस्तथास्थितः ॥ १९ ॥ ततो राज्ञीमहादुःखावेशादिदमभाप
त ॥ राज्ञ्युवाच ॥ हा वत्सकस्य पापस्य त्वपध्यानादिदं महत् ॥ २० ॥ दुःखमापतितं घोरं तद्रूपं नोपलभ्यते ॥
हानाथराजन्भवतामामपास्य सुदुःखितां ॥ २१ ॥ कस्मिन् संस्थीयते स्थाने विश्रब्धं केन हेतुना ॥ राज्यनाशः
सुहृत्पागोभार्यातनयविक्रयः ॥ २२ ॥ हरिश्चंद्रस्य राजर्षेः किं विधातः कृतं त्वया ॥ इति तस्यावचः श्रुत्वा राजा
स्थानच्युतस्तदा ॥ २३ ॥ प्रत्यभिज्ञाय देवीतां पुत्रं च निधनंगतं ॥ कष्टं मे सैव पत्नीयं बालकश्चापि मे सुतः
॥ २४ ॥ ज्ञात्वा पपात संतप्तो मूर्छामतिजगाम ह ॥ सा च तं प्रत्यभिज्ञायतामवस्थामुपागतं ॥ २५ ॥ ॥ ६५ ॥
वायं पुत्र इति स्वपुत्रस्मृतिर्जातेत्यर्थः ॥ १८ ॥ तथास्थितः स्त्रियं प्रति न किंचिदुवाचेत्यर्थः ॥ १९ ॥ २० ॥ यस्य पत्न्यानादापतिनं
तद्रूपमित्यर्थः ॥ २१ ॥ २२ ॥ स्थानच्युतो राज्ञ्यभ्रष्टः ॥ २३ ॥ २४ ॥ प्रत्यभिज्ञायेति पूर्वांनुभूतचिह्नज्ञानेनेत्यर्थः ॥ २५ ॥

दे.भा.स.

॥५०॥

॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ वक्ष्येकिमिति शेषः ॥ २९ ॥ पुत्रसुखमद्यापिममनालंसंभूतमित्यर्थः ॥ ३० ॥ ३१ ॥
मूर्छितानिपपातार्तानि श्रेष्ठाधरणीतले ॥ चेतनां प्राप्यराजेंद्रो राजपत्नी च तौ समं ॥ २६ ॥ विलेपतुः सुसंतप्तौ
शोकभारेण पीडितौ ॥ राजोवाच ॥ हावत्स सुकुमारं ते वदनं कुंचितालकं ॥ २७ ॥ पश्यतो मे मुखं दीनं हृदयं किं
न्नदीर्यते ॥ तात तातेति मधुरं ब्रुवाणं स्वयमागतं ॥ २८ ॥ उपगुह्यैकदा वक्ष्ये वत्स वत्सेति सौ हृदात् ॥ कस्य जा
नु प्रणीतेन पिगेन क्षितिरेणुना ॥ २९ ॥ ममोत्तरीयमुत्संगं तथा गंगं लमेप्यति ॥ न वालं मम संभूतं मनो हृदयनंदन
॥ ३० ॥ गतं राज्यमरोषं मे स बांधवधनं महत् ॥ अहं महाहिदंष्ट्रस्य पुत्रस्याननपंकजं ॥ ३१ ॥ निरीक्षन्नद्यघो
रेण विषेणाधिकृतो धुना ॥ एवमुक्त्वा तमादाय वालकं वाष्पगद्गदः ॥ ३२ ॥ परिप्लव्य च निःश्रेष्ठामूर्छयानिपपा
तह ॥ ततस्तं पतितं दृष्ट्वा शैब्या चैव मर्चितयत् ॥ ३३ ॥ अयं स पुरुष व्याघ्रः स्वरेणैवोपलक्ष्यते ॥ विद्वज्जनमन
श्चंद्रो हरिश्चंद्रो न संशयः ॥ ३४ ॥ तथा स्य नासिका तुंगा तिलपुष्पोपमा शुभा ॥ दंताश्च मुकुलप्रख्याख्यातकीर्तिर्म
हात्मनः ॥ ३५ ॥ श्मशानमागतः कस्माद्यद्येवं स नरेश्वरः ॥ विहाय पुत्रशोकं सापश्यंती पतितं पतिं ॥ ३६ ॥ प्रहृष्टा
विस्मिता दीना भर्तृपुत्रार्तिपीडिता ॥ वीक्षंती सा तदा पत्न्यमूर्छया धरणीतले ॥ ३७ ॥ प्राप्य चेतश्च शनकैः सा गद्ग
दमभाषत ॥ धिक्त्वां देवह्यकरुणनिर्मर्याद जुगुप्सित ॥ ३८ ॥ येनायममरप्रख्यो नी तो राजा श्वपाकतां ॥
राज्यं त्राशंसुहृत्पागं भार्या तनयविक्रयं ॥ ३९ ॥ प्रापयित्वा पि येनाद्यचांडालो यंकृतो नृपः ॥ नाद्यपश्यामि ते
च्छत्रं सिंहासनं तथापि वा ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥

घोरेण विषेण संतापरूपेण ॥ ३२ ॥ शैब्या तस्य पत्नी ॥ ३३ ॥ अयं स इति पूर्वसंदिग्धज्ञानं जातमधुना तु निश्चितं जातमित्यर्थः ॥ ३४ ॥
॥ ३५ ॥ ३६ ॥ अपमदितिलुडोरूपं पतितवतीत्यर्थः ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥

टी.अ.
२६

॥५०॥

यस्यास्येति पूर्वभृत्यतांगताराजानःस्वोत्तरीयैर्लंबायमानैर्भूमिस्पृशैर्वस्त्रैः पादचारिणोऽप्रेभावमानाविरजस्कंमहीतलंकुर्वति एतादृशंयस्यैश्व
र्यमित्यर्थः कपालसंलग्नेनरकपालयुक्ते षटीपटनिरंतरे शवसंस्कारार्थमानीता अल्पषट्पदयः शवपटाश्चैर्निरंतरेनिरवकाशोऽस्यर्थः
॥ ४१ ॥ ४२ ॥ मृतानांनिर्माल्यसूत्रंतत्क्रंठगतपुष्पमालासंबंधितदंतस्तन्मध्ये लग्नाये शवकेशास्तैः सुदारुणेभयंकरे वसानिष्पंदेनयुक्तं सं
शुष्कं सूर्यकीर्णैरेतादृशं खरं यन्महापटलं भूमेस्तेन मंडिते ॥ ४३ ॥ भस्मचांगाराश्चार्धदग्धशवाश्चास्थीनि च मज्जा च तेषां संघट्टः संमर्दस्तेन भी
चामस्य जनेवापिकोयं विधिविपर्ययः ॥ यस्यास्य ब्रजतः पूर्वराजानो भृत्यतांगताः ॥ ४१ ॥ स्वोत्तरीयैः प्रकुर्वति
विरजस्कंमहीतलं ॥ सोयंकपालसंलग्ने षटीपटनिरंतरे ॥ ४२ ॥ मृतनिर्माल्यसूत्रांतर्लग्ने केशमुदारुणे ॥ व
सानिष्पंदसंशुष्कमहापटलमंडिते ॥ ४३ ॥ भस्मांगारार्धदग्धास्थिमज्जासंघट्टभीषणे ॥ गृध्रगोमायुनादार्ते
पुष्टक्षुद्रविहंगमे ॥ ४४ ॥ चिताधूमायतपटनीलीकृतदिगंतरे ॥ कुणपास्वादनमुदासंप्रकृष्टनिशाचरे ॥ ४५ ॥
चरत्यमेध्ये राजैर्द्रुमशाने दुःखपीडितः ॥ एवमुक्त्वाथ संश्लिष्य कंठे राज्ञो नृपात्मजा ॥ ४६ ॥ कष्टं शोकसमावि
ष्टाविललापार्तयागिरां ॥ राजन्स्वप्नोत्थतथ्यं वायदेतन्मन्यते भवान् ॥ ४७ ॥ तत्कथ्यतां महाभाग मनोवैमुह्य
ते मम ॥ यद्येतदेवं धर्मज्ञास्ति धर्मसहायता ॥ ४८ ॥ तथैव विप्रदेवादिपूजने सत्यपालने ॥ नास्ति धर्मः कुतः
सत्यं नार्जवं नानृतं शता ॥ ४९ ॥ यत्र त्वंधर्मपरमः स्वराज्यादवरोपितः ॥ सूत उवाच ॥ इति तस्यावचः श्रुत्वा
निश्चस्योष्णं सद्गदः ॥ ५० ॥

पणे गृध्रगोमायूनां नादैराते युक्ते पुष्टाः क्षुद्रविहंगमा मांसभक्षिणः काकादयो यस्मिन् ॥ ४४ ॥ चिताधूम एवायतः पटस्तेन नीलीकृतदिगंत
रं यस्य कुणपानां शवानां यदा स्वादनं भक्षणं तन्मुदा संप्रकृष्टाः संसक्तानि शाचराक्षसा यस्मिन् ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ यदेतन्मन्यते इति चां
डालदासो ह मस्मीति यद्वा न्मन्यते तत्त्वमोनामिथ्या वा उत तथ्यं वेत्यर्थः ॥ ४७ ॥ यद्येतदेवं यदि वा स्ति विकीचां डालदास इत्यर्थः ॥ ४८ ॥
यदि धर्म एव नास्ति तदा सत्यं कुतस्तदपि नास्ति तथा नर्जवं तथा नृतं शतापि नास्तीत्यर्थः धर्मा धर्मयोः फलभेदे हि तद्विभागस्तदभावे तद्विभागस्याप्यभाव
इति भावः ॥ ४९ ॥ ५० ॥

दे.भा.स.

॥५१॥

॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ पूजितागौरीत्यनेनपराशक्तेरुपासकेयमस्तीतिबोधितं ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ मया
शितुंभोक्तुमित्यर्थः नात्मायत्तःस्वाधीनांतःकरणोयतोहंनस्मित्यर्थः अननुज्ञातोनाज्ञप्तः ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ बलीयसादैवानुयोगे

कथयामासतन्वंग्यैयथाप्राप्तःश्वपाकतां ॥ रुदित्वासातुसुचिरंनिश्वस्योष्णंसुदुःखिता ॥ ५१ ॥ स्वपुत्रमर
णंभीरुर्यथावत्तन्न्यवेदयत् ॥ श्रुत्वाराराजातथावाक्यंनिपपातमहीतले ॥ ५२ ॥ मृतपुत्रंसमानीयजिह्वाविलि
हन्मुहुः ॥ हरिश्रंद्रमथोप्राहशैव्यागद्वयागिरा ॥ ५३ ॥ कुरुष्वस्वामिनःप्रैष्यंछेदयित्वाशिरोमम ॥ स्वामि
द्रेहीनतेस्त्वद्यमाऽसत्योभवभूपते ॥ ५४ ॥ माऽसत्यंतवरजेंद्रपरद्रोहस्तुपातकं ॥ एतदाकर्ण्यराजातुपपात
भुविमूर्छितः ॥ ५५ ॥ क्षणेनचेतनांप्राप्यविललापातिदुःखितः ॥ राजोवाच ॥ कथंप्रियेत्वयाप्रोक्तंवचनं
त्वतिनिष्ठुरं ॥ ५६ ॥ यदशक्यंभवेद्वक्तुंतत्कर्मक्रियतेकथं ॥ पत्न्युवाच ॥ मयावपूजितागौरीदेवाविप्रास्तथै
वच ॥ ५७ ॥ भविष्यसिपतिस्त्वंमेहन्यस्मिन्जन्मनिप्रभो ॥ श्रुत्वाराराजातदावाक्यंनिपपातमहीतले ॥ ५८ ॥
मृतस्यपुत्रस्यतदाचुचुंबदुःखितोमुखं ॥ राजोवाच ॥ प्रियेनरोवतेदीर्घकालंक्लेशंमयाशितुं ॥ ५९ ॥ नात्मा
यत्तोहंतन्वंगिपश्यमेमंदभाग्यता ॥ चांडालेनाननुज्ञातःप्रवेक्ष्येज्वलनंयदि ॥ ६० ॥ चांडालदासतांयास्येपु
नरप्यन्यजन्मनि ॥ नरकंचवरंप्राप्यस्वेदंप्राप्स्यामिदारुणं ॥ ६१ ॥ तापंप्राप्स्यामिसंप्राप्यमहारौरवरौर
वे ॥ मग्नस्यदुःखजलधौवरंप्राणैर्वियोजनं ॥ ६२ ॥ एकोपिबालकोयोयमासीद्वंशकरःसुतः ॥ मनदैवानुयोगे
नमृतःसोपिबलीयसा ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥

नममैकोपिपुत्रोमृतोऽनःप्राणैर्वियोजनंममवरंपरंतुपरायचोस्मिचांडालायत्तोस्मितस्तस्यानुज्ञामंतरेणदेहत्यागेतस्यश्लेष्मणस्यावशेषान्नरकदुःखं
स्यादितिभावः ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥

टी.अ.
२६

॥५१॥

इत्थं पूर्वमिदं नरकदुःखादपि पुत्रशोकोदुःसाहस्यमिदं त्वापुनराह तथापीति ॥ ६४ ॥ तदेवोपपादयति त्रैलोक्ये इति ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ इति श्रीदेवीभागवतमहापुराणे सप्तमस्कंधे हरिश्चंद्रोपाख्याने षड्विंशोऽध्यायः

कथं प्राणान्विमुंचामि परायतोऽस्मि दुर्गतः ॥ तथापि दुःखबाहुल्यात्पक्ष्यामितुनिजांतनुं ॥ ६४ ॥ त्रैलोक्येना
स्तितदुःखं नासि पत्रवने तथा ॥ वैतरिण्यांकुतस्तद्व्यादृशं पुत्रविष्टवे ॥ ६५ ॥ सोऽहं सुतशरीरेण दीप्यमाने हुता
शने ॥ निपतिष्यामि तन्वंगिक्षंतव्यं तन्ममाधुना ॥ ६६ ॥ न वक्तव्यं त्वया किंचिदतः कमललोचने ॥ मम वा
क्यं च तन्वंगिनि बोध्याहतमानसा ॥ ६७ ॥ अनुज्ञाताथ गच्छ त्वं विप्रवेश्मं शुचिस्मिते ॥ यदि दत्तं यदि हुतं गुर
वो यदि तोषिताः ॥ ६८ ॥ संगमः परलोके मे निजपुत्रेण च त्वं या ॥ इह लोके कुतस्त्वेतद्गविष्यति समीप्सितं
॥ ६९ ॥ यन्मया हसता किंचिद्रहसित्वां शुचिस्मिते ॥ अशेषमुक्तं तत्सर्वं क्षंतव्यं मम यास्यतः ॥ ७० ॥ राजपत्नी
तिगर्वेण नावज्ञेयः समे द्विजः ॥ सर्वयत्नेन तोष्यः स्यात्स्वामी देवतवल्लभे ॥ ७१ ॥ राज्ञ्युवाच ॥ अहमप्यत्र रा
जर्षे निपतिष्ये हुताशने ॥ दुःखभारासहा देवसहया स्यामि वै त्वया ॥ ७२ ॥ त्वया सह मम श्रेययोगममं नान्यथा भवे
त् ॥ सहस्वर्गं च नरकं त्वया भोक्ष्यामि मानद ॥ ७३ ॥ श्रुत्वा राजा ततो वाच एवमस्तु पतिव्रते ॥ इति श्रीदेवीभा
गवतमहापुराणे सप्तमस्कंधे हरिश्चंद्रोपाख्याने षड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥ सूत उवाच ॥ ततः कृत्वा चितां राजा
आरोप्य तनयं स्वकं ॥ भार्यया सहितो राजा बद्धांजलिपुटस्तदा ॥ १ ॥ चिंतयन् परमेशानीं शताक्षीं जगदीश्व
रीं ॥ पंचकोशांतरगतां पुच्छ ब्रह्मस्वरूपिणीं ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥

॥ २६ ॥ अथैकैश्चैव चत्वारिंशद्विः पदैरतः परं ॥ हरिश्चंद्रस्वर्गवासो विस्तरेणोपवर्ण्यते ॥ १ ॥ राजा स्वदेहदहननिश्चये कृतेनंतरं जातं वृत्तमाह ततः
कृत्वेति ॥ २ ॥ तस्मिन् समये स्वेष्टदेवतां शताक्षीं चिंतयामासेत्याह चिंतयन्निति पुच्छ ब्रह्मस्वरूपिणीं ब्रह्मपुच्छं प्रतिष्ठोते तौत्तरीयश्रुतिप्रतिपादित
पुच्छब्रह्मस्वरूपिणीमित्यर्थः ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.स.

॥५२॥

नानायुधेति तानिचायुधानिवक्ष्यमाणाध्यायेस्पष्टानि ॥ ३ ॥ धर्मधर्माभिमानिर्निर्देवतां तन्निर्चितयमानस्येत्यनेनत्वरान्विताइत्यनेनचेदंबोधितं
परमेश्वरीभक्तस्यछलेकृतेशतधामूर्धच्छेदः स्यादितिशीघ्रतस्यप्रसादः संपादयितव्यइति ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ विश्वामित्रशब्द

टी.अ.
२७

रक्तांबरपरीधानांकरुणारससागरां ॥ नानायुधधरामंबांजगत्पालनतत्परां ॥ ३ ॥ तस्यर्चितयमानस्यसर्वेदे
वाःसवासवाः ॥ धर्मप्रमुखतःकृत्वासमाजग्मुस्त्वरान्विताः ॥ ४ ॥ आगत्यसर्वेप्रोचुस्तेराजञ्छृणुमहाप्रभो
॥ अहंपितामहःसाक्षात्धर्मश्चभगवान्स्वयं ॥ ५ ॥ साध्याःसविश्वेमरुतोलोकेपालाःसचारणाः ॥ नागाःसिद्धाः
सगंधर्वारुद्राश्चैवतथाश्विनौ ॥ ६ ॥ एतेचान्येथवहवोविश्वामित्रस्तथैवच ॥ विश्वत्रयेणयोमैत्रीकर्तुमिच्छति
धर्मतः ॥ ७ ॥ विश्वामित्रःसतेभीष्टमाहर्तुंसम्यगिच्छति ॥ धर्मउवाच ॥ माराजन्साहसंकार्पाधर्मोहंत्वामुपा
गतः ॥ ८ ॥ तितिक्षादमसत्वाद्यैस्त्वद्गुणैःपरितोषितः ॥ इंद्रउवाच ॥ हरिश्चंद्रमहाभागप्राप्तःशक्रोस्मितेति
॥ ९ ॥ त्वयाद्यभार्यापुत्रेणजितालोकास्सनातनाः ॥ आरोहन्निदिवंराजन्भार्यापुत्रसमन्वितः ॥ १० ॥ सुदु
ष्प्रापंनरैरन्यैर्जितमात्मीयकर्मभिः ॥ सूतउवाच ॥ ततोमृतमयंवर्षमपमृत्युविनाशनं ॥ ११ ॥ इंद्रःप्रासृजदा
काशाच्चिंतामध्यगतेशिशौ ॥ पुष्पवृष्टिश्चमहतीदुंदुभिस्वनएवच ॥ १२ ॥ समुत्तस्थौमृतःपुत्रोराज्ञस्तस्यम
हात्मनः ॥ सुकुमारतनुःस्वस्थःप्रसन्नःप्रीतमानसः ॥ १३ ॥ ततोराजाहरिश्चंद्रःपरिष्वज्यमुतंतदा ॥ सभा
र्यःस्वश्रियायुक्तोदिव्यमाल्यांबरावृतः ॥ १४ ॥ स्वस्थःसंपूर्णहृदयोमुदापरमयावृतः ॥ बभूवतक्षणादिद्रोभू
पंचैवमभाषत ॥ १५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥

र्थमाह विश्वत्रयेणेतिविश्वमित्रंयस्यसविश्वामित्रइत्यर्थः धार्मिकजनानांनित्यमित्रत्वमयामिच्छतीत्यर्थः ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥
॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥५२॥

॥ १६ ॥ १७ ॥ तवैवभाविनमिति तत्रधर्मपरीक्षार्थमयाधर्मेणात्ममाययास्वमाययास्वात्मैवश्वपाकतांतीतइत्यर्थः अहमेवचांडालोहमेवच
सत्राद्वयः कृष्णसर्पश्चनमत्तोतिरिक्ताश्चांडालब्राह्मणसर्पाः संतीतिभावः ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ भुंक्ते
सभार्यस्त्वंसपुत्रश्चस्वर्लोकेसद्गतिंपरां ॥ समारोहमहाभागनिजानांकर्मणांफलं ॥ १६ ॥ हरिश्चंद्रउवाच ॥
देवराजाननुज्ञातःस्वामिनाश्वपचेनहि ॥ अकृत्वानिष्कृतितस्यनारोक्ष्येवैसुरालयं ॥ १७ ॥ धर्मउवाच ॥ तवै
वंभाविनंक्लेशमवगम्यात्ममायया ॥ आत्माश्वपाकतांतीतोदर्शितंतच्चपक्कणं ॥ १८ ॥ इंद्रउवाच ॥ प्रार्थ्यतेय
त्परंस्थानंसंभृतैर्मनुजैर्भुवि ॥ तदारोहहरिश्चंद्रस्थानंपुण्यकृतानृणां ॥ १९ ॥ हरिश्चंद्रउवाच ॥ देवराजन
मस्तुभ्यंवाक्यंचेदंनिबोधमे ॥ मच्छोकमग्नमनसःकोसलेनगरेनराः ॥ २० ॥ तिष्ठतितानपास्यैवंकथंयास्या
म्यहंदिवं ॥ ब्रह्महत्यासुरापानंगोवधःस्त्रीवधस्तथा ॥ २१ ॥ तुल्यमेभिर्महत्पापंभक्त्यागादुदाहृतं ॥ भजं
तंभक्तमत्याज्यंत्यजतःस्यात्कथंसुखं ॥ २२ ॥ तैर्विनानप्रयास्यामितस्माच्छक्रादिवंब्रज ॥ यदितेसहिताः
स्वर्गमयायांतिसुरेश्वर ॥ २३ ॥ ततोहमपियास्यामिनरकंवापितैःसह ॥ इंद्रउवाच ॥ बहूनिपुण्यपापानिते
षांभिन्नानिवैनृप ॥ २४ ॥ कथंसंघातभोज्यंत्वंभूपस्वर्गमभीप्ससि ॥ हरिश्चंद्रउवाच ॥ भुंक्तेशक्रनृपोराज्यं
प्रभावात्प्रकृतेर्ध्रुवं ॥ २५ ॥ यजतेचमहायज्ञैःकर्मपूर्तंकरोतिच ॥ तच्चतेषांप्रभावेनमयासर्वमनुष्ठितं ॥ २६ ॥
उपदादान्नसंत्यक्ष्येतानहंस्वर्गलिप्सया ॥ तस्माद्यन्ममदेवेशकिंचिदस्ति सुचेष्टितं ॥ २७ ॥ दत्तमिष्टमथोज
तंसामान्यतैस्तदस्तुनः ॥ बहुकालोपभोज्यंचफलंयन्ममकर्मगं ॥ २८ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥

शक्रेति तेषांप्रभावेनैवायंममधर्मश्चलितोस्ति ॥ २५ ॥ २६ ॥ तथाचतानुपदादान्नद्रव्यदातृन्नसंत्यक्ष्येतैःसहैवस्वर्गगमिष्यामीत्यर्थः किंचते
षांलोकानांपुण्यंस्वर्गप्रापकंनस्तीतिवदसिचेन्मयायत्पुण्यंकृतंतदेतेषामास्त्वित्याह तस्माद्यन्ममेति ॥ २७ ॥ ननुत्वयैकेनतत्पुण्यंभोक्ष्यतेचेद्बहुका
लंभोगायभवतितैःसहभुज्यतेचेत्पुण्यस्यविभागादेकदिनंभोगायैवतद्विष्यतीतिचेदिष्टापत्तिरित्याह बहुकालोपेति ॥ २८ ॥ ॥ ६५ ॥

दे.भा.स.

॥५३॥

॥ २९ ॥ गत्वेति ते सर्वे धर्मादयोऽयोध्यायांतस्मिन्नेवक्षणे काशीतो गत्वा नगरस्थानलोकान् स्वर्गगमनायाह्वयामासुरिति शेषः दूतप्रेषणे

तदस्तु दिनमप्येकं तैः समं त्वत्प्रसादतः ॥ सूत उवाच ॥ एवं भविष्यतीत्युक्ता शक्रस्त्रिभुवनेश्वरः ॥ २९ ॥ प्रसन्नचेता धर्मश्च विश्वामित्रश्च गाधिजः ॥ गत्वा तु नगरं सर्वे चातुर्वर्ण्यसमाकुलाः ॥ ३० ॥ हरिश्चंद्रस्य निकटे प्रोवाच विबुधाधिपः ॥ आगच्छंति जनाः शीघ्रं स्वर्गलोकं सुदुर्लभं ॥ ३१ ॥ धर्मप्रसादात्संप्राप्तं सर्वैर्युष्माभिरेव तु ॥ हरिश्चंद्रोऽपि तान्सर्वान् जनान् नगरवासिनः ॥ ३२ ॥ प्राहराजा धर्मपरो दिवमारुह्यतामिति ॥ सूत उवाच ॥ तदिंद्रस्य वचः श्रुत्वा प्रीतास्तस्य च भूपतेः ॥ ३३ ॥ ये संसारेषु निर्विण्णास्ते धुरं स्वसुतेषु वै ॥ कृत्वा प्रहृष्टमनसो दिवमारुरुहुर्जनाः ॥ ३४ ॥ विमानवरमारूढाः सर्वे भास्वरविग्रहाः ॥ तदा संभूतहर्षास्ते हरिश्चंद्रश्च पार्थिवः ॥ ३५ ॥ राज्येभिषिच्य तनयं रोहिताख्यं महामनाः ॥ अयोध्याख्ये पुरे रम्ये हृष्टपुष्टजान् न्विते ॥ ३६ ॥ तनयं सुहृदश्चापि प्रतिपूज्याभिनंद्य च ॥ पुण्येन लब्ध्यां विपुलां देवादीनां सुदुर्लभां ॥ ३७ ॥ संप्राप्य कीर्तिमतुलां विमाने समहीपतिः ॥ आसां चक्रे कामगमे क्षुद्रघंटाविराजिते ॥ ३८ ॥ ततस्तर्हि समालोक्य लोकमंत्रं तदा जगौ ॥ दैत्याचार्यो महाभागः सर्वशास्त्रार्थतत्त्ववित् ॥ ३९ ॥ शुक्र उवाच ॥ अहो तितिक्षामाहात्म्यमहोदानफलं महत् ॥ यदागतो हरिश्चंद्रो महेंद्रस्य सलोकतां ॥ ४० ॥ सूत उवाच ॥ एतत्ते सर्वमाख्यातं हरिश्चंद्रस्य चेष्टितं ॥ यः शृणोति च दुःखार्तः स सुखं लभते न्वहं ॥ ४१ ॥ स्वर्गार्थी प्राप्नुयात् स्वर्गं सुतार्थी सुतमाप्नुयात् ॥ भार्यार्थी प्राप्नुयाद् भार्यां राज्यार्थी राज्यमाप्नुयात् ॥ ४२ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे सप्तमस्कंधे सप्तविंशोऽध्यायः ॥ २७ ॥ ॥ ४२ ॥

विलंबः स्यादिति त एव योगिनो गता इति भावः ॥ ३० ॥ योगशस्त्रे भवतैर्नगरवासिनोऽप्यानीता इत्याह आगच्छंतीति ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके सप्तमस्कंधे सप्तविंशतिमोऽध्यायः ॥ २७ ॥

टी.अ.
२७

॥५३॥

व्यशीतिश्लोकवैस्तुशताक्षीमहिमातुलः॥कथ्यतेसप्ततयत्रात्सत्यस्यमहोशेतुः॥१॥पूर्वोक्ताख्यानेसंस्तुत्यप्रष्टव्यंपृच्छतिविचित्रमिदमिति
॥ १ ॥ साशताक्षीकस्मात्कारणाज्जातेत्याह शताक्षीसेति ॥ २ ॥ शुद्धधीरिति यद्यप्यशुद्धबुद्धिर्देवीगुणश्रवणेन तृप्त्यास्यतितथापिशुद्धी
स्तृप्तिकोयास्यतिनकोपीत्यर्थः तदुक्तमुमासंहितायां कोविरज्येतमतिमान्गुणश्रवणकर्मणि श्रीमातुर्ज्ञानिनो नित्यं यंत्यजंतिकदापिनेति यस्याभ
गवत्यागुणश्रवणेमहाफलंभवतितस्यागुणश्रवणंकोनकुर्यादित्याह पदेपदेइति ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ देवानांत्विति वेदेहिसतितदुक्तशब्दा

जन्मेजयउ०विचित्रमिदमाख्यानंहरिश्चंद्रस्यकीर्तितं ॥ शताक्षीपादभक्तस्यराजर्षेधार्मिकस्यच ॥ १ ॥
शताक्षीसाकुतोजातादेवीभगवतीशिवा ॥ तत्कारणंवदमुनेसार्थकंजन्ममेकुरु ॥ २ ॥ कोहिदेव्यागुणाञ्छृण्वं
स्तृप्तियास्यतिशुद्धधीः ॥ पदेपदेश्वमेधस्यफलमक्षय्यमश्रुते ॥ ३ ॥ व्यासउवाच ॥ शृणुराजन्प्रवक्ष्यामि
शताक्षीसंभवंशुभं ॥ तवावाच्यंनमेकिंचिद्देवीभक्तस्यविद्यते ॥ ४ ॥ दुर्गमाख्योमहादैत्यःपूर्वपरमदारुणः ॥
हिरण्याक्षान्वयेजातोरुपुत्रोमहाखलः ॥ ५ ॥ देवानांतुबलंवेदोनाशेतस्यसुराअपि ॥ नक्ष्यंत्येवनसंदेहोविधेयं
तावदेवतत् ॥ ६ ॥ विमृश्यैतत्तपश्चर्यागतःकर्तुंहिमालये ॥ ब्रह्माणंमनसाध्यात्वावायुभक्षोव्यतिष्ठत ॥ ७ ॥
सहस्रवर्षपर्यंतंचकारपरमंतपः ॥ तेजसातस्यलोकास्तुसंतप्ताःससुरासुराः ॥ ८ ॥ ततःप्रसन्नोभगवान्हंसा
रूढश्चतुर्मुखः ॥ ययौतस्मैवरंदातुंप्रसन्नमुखपंकजः ॥ ९ ॥ समाधिस्थंमीलिताक्षंस्फुटमाहचतुर्मुखः ॥ वरंव
रयभद्रंतेयस्तेमनसिवर्तते ॥ १० ॥ तवाद्यत्तपसातुष्टेवरदेशोहमागतः ॥ श्रुत्वाब्रह्ममुखाद्वाणीव्युत्थितःसस
माधितः ॥ ११ ॥ पूजयित्वावरंवब्रेवेदान्देहिसुरेश्वर ॥ त्रिपुलोकेषुयेमंत्राब्राह्मणेषुसुरेष्वपि ॥ १२ ॥

लैरस्मान्हिसंति अपि किंच तदुक्तमंत्रैर्मुनिभिर्होमादिके क्रियन्नेतदुर्विभक्षण्येन्यदेवानांपुष्टिर्भवतीतिदेवानांबलंवेदइतियुक्तमेवेति विधेयंतावदे
वतदिति यतएवंतत्सस्मात्कारणादेवनाशार्थतावदेवेदनाशार्थतेमेवविधेयंनान्योपायांतरोपयोगोत्रास्तीत्यर्थः ॥ ६ ॥ इतिमनसिविमृश्यवेददा
नुराराधनादेतत्कार्यंभविष्यतीतितस्याराधनंकर्तव्यमितिमत्वातदाराधनंकर्तुंगतइत्याह विमृश्येतादिति ॥ ७ ॥ ८ ॥ हंसारूढोययावित्यन्वयः
॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.स.

॥५४॥

सान्निध्येममसंत्विमिमेवनिर्कोटसंवेदाः संतु एकोपिवेदमंत्रोदेवब्राह्मणादीनांसमीपेमास्त्वित्यर्थः किंचबलमप्यतुलं देहीत्याह बलंचेति ॥१३॥ १४ ॥१५॥ किमिदमिति इदं किंजातामिदं किंजातमित्यर्थः ॥१६॥ १७ ॥ निर्जरेषु देवेषु सजरेषु निर्वलेषु जातेषु सदैव्यो नगरी ममरावतीरुरोधेत्याह निर्जरा इति ॥१८॥ तेन दैत्येन ते देवा यो दुमशक्ता इत्यर्थः ब्रह्मसदृशो भेद्यो यस्य देहस्तेनासुरेणेत्यर्थः ॥ १९ ॥

विद्यंते ते तु सान्निध्येममसंतु महेश्वर ॥ बलंच देहियेन स्याद्देवानां च पराजयः ॥ १३ ॥ इति तस्य वचः श्रुत्वा तथा स्त्वितिवचो वदन् ॥ जगाम सत्यलोकं तु चतुर्वेदेष्वरः परः ॥ १४ ॥ ततः प्रभृतिविप्रैस्तु विस्मृता वेदराशयः ॥ स्नानसंध्यानित्यहोमश्राद्धयज्ञजपादयः ॥ १५ ॥ विलुप्ता धरणी पृष्ठे हाहाकारो महानभूत् ॥ किमिदं किमिदंचेति विप्रा ऊचुः परस्परं ॥ १६ ॥ वेदाभावात्तदस्माभिः कर्तव्यं किमतः परं ॥ इति भूमौ महानर्थं जाते परमदारुणे ॥ १७ ॥ निर्जराः सजरा जाता हविर्भागाद्यभावतः ॥ रुरोधसतदा दैव्यो नगरी ममरावती ॥ १८ ॥ अशक्तास्तेन ते योत्सुं ब्रह्म देहासुरेण च ॥ पलायनं तदा कृत्वा निर्गतानिर्जराः क्वचित् ॥ १९ ॥ निलयंगिरिदुर्गेषु रत्नसानुगुहासुच संस्थिताः परमां शक्तिं ध्यायन्तस्ते परांबिकां ॥ २० ॥ अग्नौ होमाद्यभावात्तु वृष्ट्यभावोप्यभून्नृप ॥ वृष्टेरभावे संशुष्कं निर्जलं चापि भूतलं ॥ २१ ॥ कूपवापीतडागाश्च सरितः शुष्कतांगताः ॥ अनावृष्टिरियं राजन्नभूच्च शतवा पि की ॥ २२ ॥ मृताः प्रजाश्च बहुधा गोमहिष्यादयस्तथा ॥ गृहे गृहे मनुष्याणामभवच्छवसंग्रहः ॥ २३ ॥ अनर्थं त्वेव मुद्रूते ब्राह्मणाः शांतचेतसः ॥ गत्वा हि मवतः पार्श्वैरिराधयिष्वः शिवां ॥ २४ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥

रत्नसानुः सुमेरुः निलयं स्थानं संस्थिता इत्यन्वयः ॥ २० ॥ वृष्ट्यभाव इति अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यगादित्यमुपतिष्ठते आदित्याब्जाय तवृष्टिर्वृष्टेरन्ततः प्राजा इति स्मृतेर्वृष्टिकारणहोमाभावो वृष्टेरप्यभाव इत्यर्थः ॥ २१ ॥ २२ ॥ गृहे गृहे इति ये मनुष्या मृतास्तान् दमशानं नेतुं मनुष्या न मिलं तिततः शवानि गृहे एव स्थिता नीत्यर्थः ॥ २३ ॥ २४ ॥ ॥ ७॥ ॥ ७॥ ॥ ७॥ ॥ ७॥ ॥ ७॥ ॥ ७॥

टी.अ.
२८

॥५४॥

॥ २५ ॥ देवीप्रार्थयन्ति दयांकुर्वन्ति नैतच्छ्राध्यमिति पामरेष्वेनादृशः कोपोनयुक्त इत्यर्थः ॥ २६ ॥ ननुयुष्माभिः पातकं कृतमतः क्रो-
धोममोत्पन्न इति चेत्पातककर्त्री कारयित्री च त्वमेव नास्माकमपराधोस्ति यतस्त्वमन्तर्यामिरूपिणीत्याह त्वयेति ॥ २७ ॥ त्वांसर्वेश्वरीं विहायान्या
गतिर्नास्तीत्याह नान्येति अन्ये देवादयो होमजपाद्यनुष्ठानैरेव फलं प्रयच्छन्ति तदत्र मन्त्राभावप्रयुक्त होमजपाद्यभावात्तत्कृतानुग्रहस्याप्यसंभवस्त्वंतु

समाधिध्यानपूजाभिर्देवीं तु पृथुरन्वहं ॥ निराहारास्तदासक्तास्तामेव शरणं ययुः ॥ २५ ॥ दयांकुरु महेशानि पा-
मरेषु जनेषु हि ॥ सर्वापराधयुक्तेषु नैतच्छ्राध्यं तवांबिके ॥ २६ ॥ कोपं संहर देवेशि सर्वांतर्यामिरूपिणि ॥ त्वया
यथा प्रेर्यते यं करोति स तथा जनः ॥ २७ ॥ नान्या गतिर्जनस्यास्य किं पश्यसि पुनः पुनः ॥ यथेच्छसि तथा कर्तुं स
मर्थासि महेश्वरि ॥ २८ ॥ समुद्रमहेशानि संकटात्परमोत्थितात् ॥ जीवनेन विनास्माकं कथं स्यात्स्थिति रंबि-
के ॥ २९ ॥ प्रसीद त्वं महेशानि प्रसीद जगदंबिके ॥ अनन्तकोटि ब्रह्मांडनायिके तेन मोनमः ॥ ३० ॥ नमः कूट-
स्थरूपायै चिद्रूपायै नमो नमः ॥ नमो वेदांतवेद्यायै भुवनेश्वर्यै नमो नमः ॥ ३१ ॥ नेति नेतीति वाक्यैर्या बोध्यते स-
कलागमैः ॥ तां सर्वकारणां देवीं सर्वभावेन सन्नताः ॥ ३२ ॥ इति संप्रार्थिता देवी भुवनेशी महेश्वरी ॥ अनन्ताक्षि-
मयं रूपं दर्शयामास पार्वती ॥ ३३ ॥ नीलां जनसमप्रसूयं नीलपद्मायतेक्षणं ॥ सुकर्कशसमोत्तुंगवृत्तपीनघन-
स्तनं ॥ ३४ ॥ बाणमुष्टिचकमलं पुष्पपल्लवमूलकान् ॥ शाकादीन् फलसंयुक्तान् नंतरसंयुतान् ॥ ३५ ॥

स्मरणमात्रेणैव बालकैः जननीवत्सर्वमातृत्वाद्दयां करोषिततस्त्वदन्या गतिर्नास्तीति भावः ॥ २८ ॥ जीवनेन विना जलेन विनेत्यर्थः ॥ २९ ॥
॥ ३० ॥ ३१ ॥ सकलागमैः सकलवेदैर्नेति नेतीति सर्वानिषेधावाधित्वेन या बोध्यत इत्यर्थः ॥ ३२ ॥ इत्थं संप्रार्थिता भुवनेश्वरी ब्रह्मन्यक्षी
णिशरीरे कृत्वा स्वरूपं दर्शयामासेत्यन्वयः ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ एकस्यां मुष्टौ बाणान् एकस्मिन् हस्ते कलं एकस्मिन् हस्ते पुष्पादिकमेक-
स्मिन् धनुष्यं त्रिभर्तृत्यर्थः दक्षाधो हस्तादिवा माधो हस्तपर्यन्तमायुधध्यानं ॥ ३५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.स.

॥५५॥

॥ ३६ ॥ सादेवीअनंतनयनोद्भवाबहुतनयनोद्भवावारिधारामोचयामासेत्यन्वयः ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ननुनेत्रेभ्यःकुतोऽजलमागतामितिचेलो
कान्तुःखितान्दृष्ट्वाजगन्मातुःकारुण्यवशाद्गोदनमागतंतद्वशादित्याह दुःखितानिति नवरात्रपर्यंतंभगवत्यानेत्रेभ्यःअश्रूणिच्युतानितेभ्यःसर्वज
गत्तृंसजलंजातमित्यहोकियन्पर्यंतंजनवात्सल्यंवर्णनीयंभगवत्याहतिभावः ॥ ३९ ॥ ४० ॥ सुरसाहिताविप्रामिलित्वेत्यर्थः ॥ ४१ ॥

क्षुतृजरापहान्हस्तैर्विभ्रतीचमहाधनुः ॥ सर्वसौंदर्यसारंतद्रूपंलावण्यशोभितं ॥ ३६ ॥ कोटिसूर्यप्रतीका
शंकरुणारससागरं ॥ दर्शयित्वाजगत्धात्रीसानंतनयनोद्भवाः ॥ ३७ ॥ मोचयामासलोकेषुवारिधाराःसहस्र
शः ॥ नवरात्रमहावृष्टिरभून्नेत्रोद्भवैर्जलैः ॥ ३८ ॥ दुःखितान्वीक्ष्यसकलान्नेत्राश्रूणिविमुंचती ॥ तर्पितास्ते
नतेलोकाओपव्यःसकलाअपि ॥ ३९ ॥ नदीनदप्रवाहास्तैर्जलैःसमभवन्नृप ॥ निलीयसंस्थिताःपूर्वसुरास्ते
निर्गताबहिः ॥ ४० ॥ मिलित्वाससुराविप्रादेवींसमभितुष्टुवुः ॥ नमोवेदांतवेद्येतेनमोब्रह्मस्वरूपिणि ॥ ४१ ॥
समाययासर्वजगद्विधात्र्यैतेनमोनमः ॥ भक्तकल्पद्रुमेदेविभक्तार्थदेहधारिणि ॥ ४२ ॥ नित्यतृप्तेनिरुपमेभुव
नेश्वरितेनमः ॥ अस्मच्छांत्यर्थमतुलंलोचनानांसहस्रकं ॥ ४३ ॥ त्वयायताधृतदेविशताक्षीत्वंततोभव ॥
क्षुधयापीडितामातःस्तोतुंशक्तिर्नचास्तिनः ॥ ४४ ॥ कृपांकुरुमहेशानिवेदानप्याहरांबिके ॥ व्यासउवाच ॥
इतितेषांवचःश्रुत्वाशाकान्स्वकरसंस्थितान् ॥ ४५ ॥ स्वादूनिफलमूलानिभक्षणार्थंददौशिवा ॥ नानाविधा
निचान्नानिपशुभोज्यानियानिच ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥

॥ ४२ ॥ शताक्षीत्वमिति अद्यारभ्यशताक्षीतितवनामभवत्वित्यर्थः ॥ ४३ ॥ इत्थंभगवतीकृपयासजल्लोकेजातेपिबीजौषधीनांदग्ध
त्वात्भक्षणीषपदार्थाभावात्क्षुधाविष्टाःपुनःप्रार्थयन्ते क्षुधयापीडिताइति ॥ ४४ ॥ किंचवेदानपिदेहीत्याह वेदानप्याहरेति ॥ ४५ ॥
मनुष्यभोज्यानिमनुष्येभ्यःपश्यादिभोज्यानिपश्यादिभ्योददावित्यर्थः ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥

टी.अ.
२८

॥५५॥

कियत्कालपर्यंतपूर्तिकरमन्त्रं श्रीभगवत्यापूरितमिति चेत्तत्राह आनवीनोद्भवमिति सृष्ट्युत्तरं यावन्नविमन्त्रं भवति तावत्कालपर्यंतमित्यर्थः शाकै
भक्षणात्पोषणाच्छाकं भरीतिनाम ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ देव्यग्रस्थं देवसैन्यं विप्रगणं च स्वसैन्येन रोधयामासेत्यर्थः ॥ ४९ ॥ ५० ॥
देवानां ब्राह्मणानां च परितः समंतात्तेजोमयचक्रमग्निप्राकारं रक्षणाय चक्रे इत्यर्थः स्वयंतु तस्मादग्निप्राकाराद्वहिर्युद्धार्थं संस्थितास्तीत् ॥ ५१ ॥

काम्यान्तरसैर्युक्तान्यानवीनोद्भवंददौ ॥ शाकं भरीतिनामापितद्दिनात्समभून्नृप ॥ ४७ ॥ ततः कोलाहले जा
ते दूतवाक्येन बोधितः ॥ ससैन्यः सायुधो योद्धुं दुर्गमाख्यो सुरो ययौ ॥ ४८ ॥ सहस्राक्षौ हिणीयुक्तः शरान्मुचं
स्त्वरान्वितः ॥ रुरोध देवसैन्यं तद्यदेव्यग्रे स्थितं पुरा ॥ ४९ ॥ तथा विप्रगणं चैव रोधयामास सर्वतः ॥ ततः किल
किलाशब्दः समभूद्देवमंडले ॥ ५० ॥ त्राहि त्राहीति वाक्यानि प्रोचुः सर्वे द्विजामराः ॥ ततस्तेजोमयं चक्रं देवानां
परितं शिवा ॥ ५१ ॥ चकार रक्षणार्थाय स्वयंतस्माद्वहिः स्थिता ॥ ततः समभवद्युद्धं देव्यादैत्यस्य चोभयोः
॥ ५२ ॥ शरवर्षसमाच्छन्नसूर्यमंडलमद्भुतं ॥ परस्परशरोद्धर्षसमुद्भूताग्निमुप्रभं ॥ ५३ ॥ कठोरज्याटण
त्कारबधिरीकृतदिक्कटं ॥ ततो देवी शरीरात्तु निर्गतास्तीव्रशक्तयः ॥ ५४ ॥ कालिका तारिणी बाला त्रिपुरा भैरवी र
मा ॥ बगला चैव मातंगी तथा त्रिपुरसुंदरी ॥ ५५ ॥ कामाक्षी तु लज्जा देवी जंभिनी मोहिनी तथा ॥ छिन्नमस्ता गु
ह्यकाली दशसाहस्रबाहुका ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥

॥ ५२ ॥ शरवर्षेण समाच्छन्नं सूर्यमंडलं यस्मिन् परस्परं शराणां यउद्धर्षेण वर्षणं तेन समुद्भूतो योऽग्निस्तेन सुप्रभं शरवर्षेण सूर्ये आच्छादिते तदाग्नि
प्रकाशेनैव युद्धमभवदित्यर्थः ॥ ५३ ॥ कठोरः कर्कशो ज्याटणत्कारस्तेन बधिरीकृतं दिक्कटं यस्मिन् ॥ ५४ ॥ ५५ ॥
दशसाहस्रबाहुकेति मुखाकाख्या विशेषणं पंचसहस्रहस्तेषु बाणाः पंचसहस्रहस्तेषु धनुर्षीत्यादिकंतस्याध्यानं महाकालसंहितायां स्पष्टं ॥ ५६ ॥

दे.भा.स.

॥५६॥

द्वात्रिंशच्छक्तयश्चतुःषष्टिशक्तयश्चपंचसारेभुवनेऽपिपटलेशारदायांचभूतलिपिपटलेस्पष्टाः ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

द्वात्रिंशच्छक्तयश्चान्याश्चतुःषष्टिमिताःपराः ॥ असंख्यातास्ततोदेव्यःसमुद्भूतास्तुसायुधाः ॥५७॥ मृदंगशं
खवीणादिनादितंसंगरस्थलं ॥ शक्तिभिर्दैत्यसैन्येतुनाशितेक्षौहिणीशते ॥ ५८ ॥ अग्रेसरःसमभवदुर्गमो
वाहिनीपतिः ॥ शक्तिभिःसहयुद्धंचकारप्रथमंरिपुः ॥५९॥ महद्युद्धंसमभवद्यत्राभूद्रक्तवाहिनी ॥ अक्षौहि
ण्यस्तुताःसर्वाविनष्टादशभिर्दिनैः ॥ ६० ॥ ततएकादशेप्राप्तेदिनेपरमदारुणे ॥ रक्तमाल्यांबरधरोरक्तगंधा
नुलेपनः ॥ ६१ ॥ कृत्वोत्सवंमहांतंतुयुद्धायरथसंस्थितः ॥ संरंभेणैवमहताशक्तीःसर्वाविजित्यच ॥ ६२ ॥
महादेवीरथाग्रेतुस्वरथंसंन्यवेशयत् ॥ ततोभवन्महद्युद्धंदेव्यादैत्यस्यचोभयोः ॥ ६३ ॥ प्रहरद्वयपर्यंतंहृदय
त्रासकारकं ॥ ततःपंचदशात्युग्रबाणान्देवीमुमोचह ॥ ६४ ॥ चतुर्भिश्चतुरोवाहान्बाणेनैकेनसारथिं ॥ द्वाभ्यां
नेत्रेभुजौद्वाभ्यांध्वजमेकेनपत्रिणा ॥६५॥ पंचभिर्हृदयंतस्यविव्याधजगदंबिका ॥ ततोवमन्सरुधिरंममारपु
रईशितुः ॥६६॥ तस्यतेजस्तुनिर्गत्यदेवीरूपेविवेशह ॥ हतेतस्मिन्महावीर्येशांतमासीज्जगन्नयं ॥६७॥ ततोब्र
ह्मादयःसर्वेत्पुवुर्जगदंबिकां ॥ पुरस्कृत्यहरीशानौभक्त्यागद्गदयागिरा ॥६८॥ दैवाऊचुः ॥ जगद्भूमविवर्तेक
कारणेपरमेश्वरि ॥ नमःशाकंभरिशिवेनमस्तेशतलोचने ॥६९॥ सर्वोपनिषदुद्धृष्टेदुर्गमासुरनाशिनी ॥ नमो
मायेश्वरिशिवेपंचकोशांतरस्थिते ॥७०॥ चेतसानिर्विकल्पेनयांध्यायतिमुनीश्वराः ॥ प्रणवार्थस्वरूपांतांभजा
मोभुवनेश्वरीं ॥७१॥ अनंतकोटिब्रह्मांडजननींदिव्यविग्रहां ॥ ब्रह्मविष्ण्वादिजननींसर्वभावैर्नतावयं ॥७२॥

रक्तवाहिनीनदी ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ तेषांबाणानांविभागमाह चमुर्भिरिति ॥ ६४ ॥ ईशितुः श्रीपरमेश्वर्यापुरोग्रेममारे
त्यर्थः ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ जगद्भूमरूपोयोविवर्त्तोन्यथाभावस्तस्यमुख्यकारणरूपेइत्यर्थः ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥

टी.अ.
२८

॥५६॥

अस्मान्पामरान्दुःखितान्दृष्ट्वायत्परमेश्वर्याभवत्यारोदनं कृतं तत्त्वांशताक्षीमातरं विना कः कुर्यान्न कोपित्यर्थः ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ययाममवे
दरूपतन्वाविनामहाननर्थोयं जातो धुनैव भवद्विदंष्ट्र इत्यर्थः ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ अत्र शताक्षीशाकं भरीदुर्गादे
वतानां जलदानाच्च दानदैत्यवधकर्मभेदेन नामभेदमात्र एव केवलं न त्ववतारभेद इति बोध्यं तदुक्तं वैकृतिकरहस्ये शाकं भरी शताक्षीसासैव दुर्गाप्रकी

कः कुर्यात्पामरान्दृष्ट्वा अरोदनं सकलेश्वरः ॥ सद्यं परमेशानिं शताक्षीमातरं विना ॥ ७३ ॥ व्यास उवाच ॥ इ
ति स्तुता सुरैर्देवी ब्रह्मविष्णवादिभिर्वरैः ॥ पूजिता विविधैर्द्रव्यैः संतुष्टा भूच्चतुक्षणे ॥ ७४ ॥ प्रसन्ना सा तदा देवी वे
दाना हृत्य सा ददौ ॥ ब्राह्मणेभ्यो विशेषेण प्रोवाच पिकभाषिणी ॥ ७५ ॥ ममेयं तनु रूक्मपा लनीया विशेषतः ॥
यया विना नर्थ एष जातो दृष्टो धुनैव हि ॥ ७६ ॥ पूज्या हं सर्वदा सेव्या युष्माभिः सर्वदेव हि ॥ नातः परतरं किंचित्क
ल्याणायोपदिश्यते ॥ ७७ ॥ पठनीयं ममैतद्दिमाहात्म्यं सर्वदोत्तमं ॥ तेन तु दृष्टा भविष्याभिहारिष्यामि तथा पदः
॥ ७८ ॥ दुर्गमासुरहं त्रीत्वा दुर्गेति मम नामयः ॥ गृण्हाति च शताक्षीति मायां भित्वा ब्रजत्यसौ ॥ ७९ ॥ किमुक्ते
ना ब्रवहुना सारं वक्ष्यामि तत्त्वतः ॥ संसेव्या हं सदा देवाः सर्वैरपि सुरासुरैः ॥ ८० ॥ व्यास उवाच ॥ इत्युक्तां
तर्हि ता देवी देवानां चैव पश्यतां ॥ संतोषं जनयंत्येवं सच्चिदानंदरूपिणी ॥ ८१ ॥ एतत्ते सर्वमाख्यातं रहस्यं पर
मं महत् ॥ गोपनीयं प्रयत्नेन सर्वकल्याणकारकं ॥ ८२ ॥ यद्भ्रमं शृणुयान्नित्यमध्यायं भक्तितत्परः ॥ सर्वान्का
मान्वाप्नोति देवी लोके महीयते ॥ ८३ ॥ इति श्रीदेवीभागवत महापुराणे सप्तमस्कंधे अष्टाविंशोऽध्यायः ॥ २८ ॥
व्यास उवाच ॥ इत्येवं सूर्यवंश्यानां राज्ञां चरितमुत्तमं ॥ सोमवंशोद्भवानां च वर्णनीयं मया किथत् ॥ १ ॥

तितेति ॥ इति श्रीदेवीभागवत तिलके सप्तमस्कंधे अष्टाविंशोऽध्यायः ॥ २८ ॥ चतुर्भिर्भक्तैश्चत्वारिंशच्छ्लोकैर्विहाय च ॥ व्यासवाक्याद्वाजवार्तापग्र
च्छेति कथानकं ॥ १ ॥ अथ वेदव्यासो राज्ञां कथायां जनमेजयचित्तमासक्तं ज्ञात्वा ततोपसृत्य देवीकथाभिमुखं कर्तुमाह इत्येवमिति नानावि
धराज्ञां धर्मात्मनानां विधंचारितं मया किं यदूर्णनीयं कालस्यालत्वाद्देवीकथामेव पृच्छेति गूढोभि संधिः ॥ १ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.स.

॥५७॥

ननु किमिति राज्ञामेतादृशो महापराक्रमो जात इति चेत्सर्वेर्षामे राजानः श्रीदेवीभक्तास्तथादेवीप्रसादादेतादृशमहत्वं तेषामागतमित्याह पराशक्तिरिति पराशक्तिप्रभावत एव महत्त्वमिति निश्चितं वेद्वीत्यर्थः ॥ २ ॥ ३ ॥ कुठाराद्वेदका अभवन् ॥ ४ ॥ पलालमिव तुषामिव पराशक्तिसेवनादन्यत्यजेदित्यर्थः तथा च श्रुतिः पलालमिव धान्यार्थीत्यजेद्ग्रंथमशेषत इति ॥ ५ ॥ वेदरूपदुग्धाब्धि मथनेनेदं रत्नं पराशक्तिपदांभोजरूपं मया लब्धं ततस्तत्ताभादहंकृतकृत्योऽस्मि सार्थकजन्मास्मीत्यर्थः तथा श्रुतिरतिरहस्यत्वं वर्णयति बृहदारण्यके गार्गी ब्राह्मणे गार्गी माति प्राक्षीमि ते मूर्ध्ना

टी.अ.

२९

पराशक्तिप्रसादेन महत्वं प्रतिपेदिरे ॥ राजन्सुनिश्चितं विद्वि पराशक्तिप्रसादतः ॥ २ ॥ यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा ॥ तत्तदेवावगच्छत्वं पराशक्त्यंशसंभवं ॥ ३ ॥ एते चान्ये वराजानः पराशक्तेरुपासकाः ॥ संसारतरुमूलस्य कुठारा अभवन्नृप ॥ ४ ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन संसेव्या भुवनेश्वरी ॥ पलालमिव धान्यार्थीत्यजेदन्यमशेषतः ॥ ५ ॥ आमथ्य वेददुग्धाब्धिं प्राप्तं रत्नं मयानृप ॥ पराशक्तिपदांभोजं कृतकृत्योऽस्म्यहंततः ॥ ६ ॥ पंचब्रह्मासना रूढानास्त्यन्याकापि देवता ॥ तत एव महादेव्या पंचब्रह्मासनं कृतं ॥ ७ ॥ ॥ ६४ ॥

व्यपतमत् अनतिप्रभान् वैदेवतामतिपृच्छसीति ॥ ६ ॥ श्रीभगवत्याध्यानेनापि सर्वोत्तमत्वं वर्णयति पंचब्रह्मेति ब्रह्माविष्णुरुद्रेश्वरामंचककोणखुरभूनाः सदाशिवस्तु चतुर्णामस्तकोपरि फलकस्थानीयस्तथा च ब्रह्माविष्णुरुद्रेश्वरसदाशिवात्मकं पंचब्रह्मात्मकं यदासनं तस्मिन्ना रूढा भगवत्यातिरिक्ता कान्यादं वतास्ति न कापि ततः स्वस्योत्कर्षैर्भूतानपि बोधयितुं महादेव्या पंचब्रह्मासनं स्वस्य स्वीकृतमितीयमेव सर्वोत्कृष्टं ति भावः तथा च भुवनेश्वरी तं ब्रह्मांडपुराणेललितोपाख्याने च ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः एते पंच महाप्रेताः पादमूले व्यवस्थिता इति ॥ ७ ॥ ॥ ६५ ॥

॥५७॥

ननुपंचब्रह्मातिरिक्तंभ्योधिकंवस्तुनास्त्येवेतिचेत्तत्राह पंचभ्यइति ब्रह्मादयःपंचभूम्यादिपंचभूताधिपतयस्तेषांपंचमहाभूतानामुत्पत्तिर्ब्रह्माद्व
वतितद्वस्तुवेदेव्यक्तमव्याकृतमित्यादिशब्देरुच्यते यस्मिन्निदं सर्वजगत्सूत्रे मणिगणाइवोतंप्रोतंचभवतीतिगार्गीब्राह्मणेतेउक्तंतावताप्रकृतोकि
मायातमितिचेत्तदाह सैवश्रीभुवनेश्वरीति . यदेदेपंचब्रह्मभ्योधिकमव्याकृतमित्युक्तंसाम्यावस्थमायोपाधिकंब्रह्मसैवास्माकंभुवनेश्वरीभगव
तीतिपंचब्रह्मादिकास्त्येववेदेभगवतीतिभावः ॥ ८ ॥ यदाचर्मेति आकाशंयदाचर्मवत्कृष्णाजिनवन्मानवावेष्टयिष्यंतितदाशिवांभुवनेश्वरीम

पंचभ्यस्त्वधिकंवस्तुवेदेव्यक्तमितीर्यते ॥ यस्मिन्नोतंचप्रोतंचसैवश्रीभुवनेश्वरी ॥८॥ तामविज्ञायराजेंद्रनैव
मुक्तोभवेन्नरः ॥ यदाचर्मवदाकाशंवेष्टयिष्यंतिमानवाः ॥ ९ ॥ तदाशिवामविज्ञायदुःखस्यांतोभविष्यति ॥
अतएवश्रुतौप्राहुःश्वेताश्वेतरशाखिनः ॥ १० ॥ तेध्यानयोगानुगताअपश्यन्देवात्मशक्तिंस्वगुणैर्निगूढां ॥
तस्मात्सर्वप्रयत्नेनजन्मसाफल्यहेतवे ॥ ११ ॥ लज्जयावाभयेनापिभक्त्यावाप्रेमयुक्तया ॥ सर्वसंगंपरित्य
ज्यमनोहृदिनिरुध्यच ॥ १२ ॥ तन्निष्ठस्तत्परोभूयादितिवेदांतडिंडिमः ॥ येनकेनमिषेणापिस्वपंस्तिष्ठन्त्र
जन्नपि ॥ १३ ॥ कीर्तयेत्सततंदेवींसवैमुच्येतबंधनात् ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनभजराजन्महेश्वरीं ॥ १४ ॥
विराड्रूपांसूत्ररूपांतथांतर्यामिरूपिणीं ॥ सोपानक्रमतःपूर्वततःशुद्धेतयेतासि ॥ १५ ॥ ॥६॥

विज्ञायनज्ञात्वाभुवनेश्वरीस्वरूपज्ञानंविनापिदुःखस्यसंसारजन्यस्यनाशोभविष्यति नकदापिचर्मवदाकाशवेष्टनंभविष्यति नचकदापिभुवने
श्वरीरूपज्ञानंविनामोक्षोभविष्यतिततोवदयमेवभुवनेश्वरीस्वरूपज्ञानेयत्नआस्थेयइतिभावः ॥ ९ ॥ अतएवश्वेताश्वेतरभगवतीध्यानमेवमोक्ष
साधनत्वेनोक्तमित्याह अतएवेति ॥ १० ॥ तामेवश्रुतिं पठति तेध्यानेति ॥ ११ ॥ तन्निष्ठोभगवतीनिष्ठः ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥
तत्रसच्चिदानंदरूपायाभगवत्याध्यानाधिकारप्राप्त्यर्थमादावुपासनांतरमाह विराड्रूपांमिति सूत्ररूपांसमष्टिव्याष्टिलिंगरूपदेहां अंतर्यामिरूपि
णीमायाशबलब्रह्मरूपिणीं ॥ १५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥

दे.भा.स

॥५८॥

इत्थं शुद्धे चेतसि जातेनंतरं निर्गुणब्रह्मस्वरूपिणीं ध्यायेदित्याह सच्चिदानंदेति ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ इत्थं राजकथाश्रवणप्रभं विहाय
भगवती कथाश्रवणप्रभः कर्तव्य इति व्यासाभिप्रायज्ञात्वा जनमेजय आह गौरीति हे भगवन् त्वया तृतीयस्कंधे षष्ठाध्याये विष्णवेयमहालक्ष्मीमहा
कालीशिवाय च महासरस्वतीमह्यं स्थानात्तस्माद्विसर्जिता इति वचनेन पूर्वमुक्तं किमिति गौरीलक्ष्मीसरस्वत्यो देवताः परां वयामणिद्वीपाधिवासिन्या

टी.३१

२९

सच्चिदानंदलक्ष्यार्थरूपां तां ब्रह्मरूपिणीं ॥ आराधय परां शक्तिं प्रपंचो ह्लासवर्जितां ॥ १६ ॥ तस्यांचित्तलयोयः
सतस्या आराधनं स्मृतं ॥ राजत्राज्ञां पराशक्तिभक्तानां चरितं मया ॥ १७ ॥ धार्मिकाणां सूर्यसोमवंशजानां मन
स्विनां ॥ पावनं कीर्तिदं धर्मबुद्धिदं सद्गतिप्रदं ॥ १८ ॥ कथितं पुण्यदं पश्चात्किमन्यच्छ्रेतुमिच्छसि ॥ जनमेज
य उवाच ॥ गौरीलक्ष्मीसरस्वत्यो दत्ताः पूर्वं परां वया ॥ १९ ॥ हराय हरये तद्वन्नाभिपद्मोद्भवाय च ॥ तुषाराद्रेश्च
दक्षस्य गौरीकन्येति विश्रुतं ॥ २० ॥ क्षीरोदधेश्च कन्येति महालक्ष्मीरिति श्रुतं ॥ मूलदेव्युद्भवानां च कथं कन्या
त्वमन्ययोः ॥ २१ ॥ असंभाव्यमिदं भाति संशयोऽत्र महामुने ॥ छिंधि ज्ञानां सिनातं त्वं संशयच्छेदतत्परः ॥ २२ ॥
॥ व्यास उवाच ॥ शृणु राजन् प्रवक्ष्यामि रहस्यं परमाद्भुतं ॥ देवीभक्तस्य ते किंचिदवाच्यं हि विद्यते ॥ २३ ॥
देवीत्रयं यदा देवत्रयायादात्परां विका ॥ तदा प्रभृति ते देवाः सृष्टिकार्याणि च क्रिरे ॥ २४ ॥ ॥ ६९ ॥

देव्या हराय हरये पद्मजाय च दत्ता इति ॥ १९ ॥ लोके त्वित्थं श्रुतमित्याह तुषाराद्रेरिति हिमालयस्य दक्षस्य च कन्या गौरी क्षीरोदधेः
कन्या लक्ष्मीरिति श्रुतं ॥ २० ॥ नन्वस्त्वेतत्किं तावतेति चेत्तत्राह मूलदेव्युद्भवानां चेति मूलदेवता उत्पन्नयो गौरीलक्ष्म्योरन्यकन्यात्वंकथ
मपि न घटते विरोधादिति भावः ॥ २१ ॥ तमेव संशयां छिंधित्याह ॥ २२ ॥ २३ ॥ देवीत्रयं गौरीलक्ष्मीसरस्वतीत्रयं देवत्रयाय च
द्विविष्णुब्रह्मभ्यो दत्ता दत्तवती परां विका मणिद्वीपाधिवासिनी ॥ २४ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥

॥५८॥

हालाहलविषबहुः सहत्वाहालाहलाभिधत्वं दैत्यानां ॥ २५ ॥ ताचलं कैलासं ॥ २६ ॥ यदृशादिति ययोः शक्त्योर्निमित्तेन तं दैत्याहतास्तयोर्गौरीलक्ष्मीशक्त्योर्निकटे एवास्मादित्याहतावयमेतादृशाः पराक्रमिण इत्यभिमानं हरविष्णुचक्रतुरित्यर्थः ॥ २९ ॥ छलहास्यमिति अस्मत्प्रसादेनैवैताभ्यां दैत्याजितास्तत्कथमस्मान्निकटे एव विक्षिप्तवदभिमानं कुर्वतीत्यभि

कस्मिंश्चित्समये राजन्दैत्याहालाहलाभिधाः ॥ महापराक्रमाजातः स्रैलोक्यं तैर्जितक्षणात् ॥ २५ ॥ ब्रह्मणो वरदानेन दर्पितारजताचलं ॥ रुरुधुर्निजसेनाभिस्तथा वैकुण्ठमेव च ॥ २६ ॥ कात्रारिः कैठारिश्च युद्धोद्योगं च चक्रतुः ॥ षट् वर्षसहस्राणामभूद्युद्धं महोत्कटं ॥ २७ ॥ हाहाकारो महानासीद्वेदानवसेनयोः ॥ महताथ प्रयत्ने न ताभ्यां ते दानवा हताः ॥ २८ ॥ स्वस्वस्थानेषु गत्वा तावभिमानं च चक्रतुः ॥ स्वशक्त्योर्निकटे राजन्यद्वशा देवते हताः ॥ २९ ॥ अभिमानं तयोर्ज्ञात्वा छलहास्यं च चक्रतुः ॥ महालक्ष्मीश्च गौरीवहास्यं दृष्ट्वा तयोस्तुतौ ॥ ३० ॥ देवावतीव संक्रुद्धौ नो हितावादिमायया ॥ दुरुत्तरं वददतुरवमानपुरःसरं ॥ ३१ ॥ ततस्ते देवते तस्मिन्क्षणे त्यक्त्वा तुतौ पुनः ॥ अंतर्हिते वा भवतां हाहाकारस्तदा ह्यभूत् ॥ ३२ ॥ निस्तेजस्कौ वनिः शक्तिविक्षिप्तौ च विचेतनौ ॥ अवमानात्तयोः शक्त्योर्जातौ हरिहरौ तदा ॥ ३३ ॥ ब्रह्मा धितानुरोजातः किमेतत्समुपस्थितं ॥ प्रधानौ देवतामध्यै कथं कार्याक्षमावमू ॥ ३४ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥

प्रायेण कपटहास्यं ते शक्तिचक्रतुरित्यर्थः तौ हरविष्णुतयोः शक्त्योः कपटहास्यं दृष्ट्वा ॥ ३० ॥ अभिमानखंडनानि मित्तमतीदं संक्रुद्धौ न केव संक्रुद्धौ किं त्वनादिमायया मोहितौ तत्प्रसादादेव जयेलब्धोपतदगणय्या किं मूर्खवच्छलहास्यं क्रियत इति ॥ ३१ ॥ तौ हरविष्णुयुक्तेत्यर्थः अतएव भगवत्या पूर्वमुक्तमेताः शक्तयोऽभिमाननीयानवमान्याः कदाचनेति ॥ ३२ ॥ विचेतनौ विगतविषणौ यतौ विक्षिप्तौ ॥ ३३ ॥ अमूहरिहरौ कार्याक्षमौ न गत्कार्या समर्थौ कथं जातावित्यर्थः ॥ ३४ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥

दे.भा.स.

॥५९॥

अकाण्डेअकालेनिरागसोनिरपराधिनः सर्वकर्मक्षयाभावेणीतिशेषः ॥ ३५ ॥ प्रतिक्रियाप्रतीकारः कथंकथंकर्तव्योनिमित्तज्ञानाभावेनाहि
रोगानेदानज्ञानाभावेचिकित्सकाउपायंकुर्वतीति दध्यौनिमित्तज्ञानार्थध्यानंकृतवानित्यर्थः ॥ ३६ ॥ ज्ञानत्रिति पराशक्तिप्रकोपरूपंनिदा
नज्ञानात्रित्यर्थः सावधानोधुनोपायंकरिष्यामीतिविश्वसेनेत्यर्थः ॥ ३७ ॥ ततआरभ्ययावद्विहरौखस्यैभविष्यतस्तावत्पर्यंतंतयोः कार्यपालन

टी.अ.
२९

अकाण्डेकिंनिमित्तेनसंकटंसमुपस्थितं ॥ प्रलयोभविताकिंवाजगतोस्यानिरागसः ॥ ३५ ॥ निमित्तंनैवजानेहं
कथंकार्याप्रतिक्रिया ॥ इतिचिंतातुरोत्यर्थदध्यौमीलितलोचनः ॥ ३६ ॥ पराशक्तिप्रकोपात्तुजातमेतदितिस्म
ह ॥ जानंस्तदासावधानःपद्मजोभूतृपोत्तम ॥ ३७ ॥ ततस्तयोश्चयत्कार्यस्वयमेवाकरोत्तदा ॥ स्वशक्तेश्च
प्रभावेनकियत्कालंतपोनिधिः ॥ ३८ ॥ ततःस्तयोस्तुस्वस्त्यर्थमन्वादिन्स्वसुतानथ ॥ आब्रूयामासधर्मा
त्मासनकादींश्चसत्वरः ॥ ३९ ॥ उवाचवचनंतेभ्यःसन्नतेभ्यस्तपोनिधिः ॥ कार्यासक्तोहमधुनातपःकर्तुंनच
क्षमः ॥ ४० ॥ परशक्तेस्तुतौषार्थंजगद्भारयुतोस्म्यहं ॥ शिवविष्णूचविक्षिप्तौपराशक्तिप्रकोपतः ॥ ४१ ॥ त
स्मात्तांपरमांशक्तिंयूयंसंतोषयंत्वथ ॥ अत्यद्भुतंतपःकृत्वाभक्त्यापरमयायुताः ॥ ४२ ॥ यथातौपूर्ववृत्तौव
स्यातांशक्तियुतावपि ॥ तथाकुरुतमत्पुत्रायशोवृद्धिर्भवेद्विवां ॥ ४३ ॥ कुलेयस्यभवेज्जन्मतयोःशक्तयोस्तुत
कुलं ॥ पावयेज्जगतींसर्वाकृतकृत्यंस्वयंभवेत् ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥

संहाररूपंस्वयमेवब्रह्मास्वशक्तिप्रसादादकरोदित्याह ततस्तयोरिति ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ किंतत्कार्यंतदाह परशक्तेश्चरिति जगद्भारो
जगतःसृष्टिस्थितिसंहाररूपःसचपरशक्तैरेवकार्यंभवतीनिसमयात्तौषार्थमवश्यंकर्तव्यमित्यर्थः ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ पूर्ववृत्तौपूर्वस्वभावौ
॥ ४३ ॥ किंचयस्यकुलेतयोःशक्त्योर्जन्मभविष्यतितत्कुलंजगतीतलंपावयेत्स्वयंचकृतकृत्यंभवेदित्याह कुलेयस्येति ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥

॥५९॥

॥ ४५ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे सप्तमस्कंधे एकोनविंशोऽध्यायः ॥ २९ ॥ एकाधिकश्लोकश्चैतैर्गौरीजन्मसंख्यते ॥ नानापीठोद्भवस्तद्विभक्तिविभक्तिवर्णनं ॥ १ ॥ चतुर्मुखाज्ञायामुनयः ससुराः सर्वे हिमालये तपश्चर्यार्थगता इत्युक्तं तदुत्तरं जातं वृत्तमाह ततस्ते त्विति मायाबीजं श्रीभुवने श्रीमंत्रः ॥ २ ॥ २ ॥ पाशोति पाशांकुशाभयवरमुद्राहस्तेत्यर्थः ॥ ३ ॥ विश्वोव्यष्टिस्थूलदेहाभिमानी वैश्वानरः समष्टिस्थूलदेहाभिमानी ॥ ४ ॥

॥ व्यास उवाच ॥ पितामहवचः श्रुत्वा गतः सर्वे वनांतरे ॥ रिराधयिषं वः सर्वे दक्षाद्या विमलांतराः ॥ ४५ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे अष्टादशसाहस्र्यां संहितायां सप्तमस्कंधे एकोनविंशोऽध्यायः ॥ २९ ॥ व्यास उवाच ॥ ततस्ते तु वनोद्देशे हिमाचलतटाश्रयाः ॥ मायाबीजजपासक्तास्तपश्चरुः समाहिताः ॥ १ ॥ ध्यायतां परमां शक्तिं लक्षवर्षाण्यभून्नृप ॥ ततः प्रसन्ना देवी सा प्रत्यक्षं दर्शनं ददौ ॥ २ ॥ पाशांकुशवराभीतिचतुर्बाहुस्त्रिलोचना ॥ करुणारससंपूर्णा सच्चिदानंदरूपिणी ॥ ३ ॥ दृष्ट्वा तां सर्वजननीं तुष्टुर्मुनयो मलाः ॥ नमस्ते विश्वरूपायै वैश्वानरसुमूर्तये ॥ ४ ॥ नमस्तैजसरूपायै सूत्रात्मवपुषे नमः ॥ यस्मिन् सर्वे लिंगदेहा ओतप्रोता व्यवस्थिताः ॥ ५ ॥ नमः प्राज्ञस्वरूपायै नमो व्याकृतमूर्तये ॥ नमः प्रत्यक्स्वरूपायै नमस्ते ब्रह्ममूर्तये ॥ ६ ॥ नमस्ते सर्वरूपायै सर्वलक्ष्यात्ममूर्तये ॥ इति स्तुत्वा जगद्वात्रीं भक्तिगद्गदया गिरा ॥ ७ ॥ प्रणेमुश्चरणां भोजं दक्षाद्या मुनयो मलाः ॥ ततः प्रसन्ना सा देवी प्रोवाचापिकभाषिणी ॥ ८ ॥ वरं ब्रूत महाभागावरदा हंसदामता ॥ तस्यास्तु वचनं श्रुत्वा हरविष्णोस्तनोः शमं ॥ ९ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४५ ॥

तैजसोव्यष्टिलिंगदेहाभिमानी सूत्रात्मा समष्टिलिंगदेहाभिमानी तदेवाह यस्मिन्निति ओतप्रोता यथिता इत्यर्थः ॥ ५ ॥ प्राज्ञोव्यष्टिकारणदेहाभिमानी अव्याकृतः समष्टिकारणदेहाभिमानी प्रत्यक्जीवाधिष्ठानं कूटस्थं ब्रह्म ब्रह्ममूर्तये इत्यत्र तुष्टुर्बाधिष्ठानं ब्रह्मेति विभागः ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ तनोः शमं शान्तिं ॥ ९ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे भा.स.

॥६०॥

तयोर्हरिहरयोस्तच्छक्तिलाभं गौरीलक्ष्मीशक्तिलाभं ॥ १० ॥ ११ ॥ जातावस्थातयोरेतादृश्यवस्थाजातेत्यर्थः ॥ १२ ॥
॥ १३ ॥ एकाशक्तिस्त्वद्देहदक्षस्य गृहे पराशक्तिः क्षीरसागरे जनिष्यतः तभ्यामिति तादर्थ्ये चतुर्थी ॥ १४ ॥ जपध्यानादिकं य-
त्पुष्टं तत्रोत्तरमाह मायाबीजं हीति सच भुवनेश्वरीमंत्रः त्वत्पुरत इति यदेतन्मया दाक्षितपाशाकुशाभयवरकरध्यानमित्यर्थः विराट्स्वरूपध्यानं

तयोस्तच्छक्तिलाभं वदन्निरेनृपसूतम् ॥ दक्षोऽथ पुनरप्याह जन्मदेविकुले मम ॥ १० ॥ भवेत्तवां वयेनाहं क-
तकृत्यो भवेदिति ॥ जपध्यानं तथा पूजां स्थानानि विविधानि च ॥ ११ ॥ वदमे परमेष्ठा निस्वमुदेनैव केवलं ॥ दे-
व्युवाच ॥ मच्छक्तयो रवमानाश्च जातावस्थातयोर्द्वयोः ॥ १२ ॥ नैतादृशः प्रकर्तव्यो मे पराधः कदाचन ॥ अधु-
ना मत्कृपालेशाच्छरीरे स्वस्थतातयोः ॥ १३ ॥ भविष्यति च तेश्च कीर्त्तव्यं देहक्षीरसागरे ॥ जनिष्यतस्ततस्ता-
भ्यां प्राप्स्यतः प्रेरिते मया ॥ १४ ॥ मायाबीजं हि मंत्रो मे मुख्यः प्रियकरः सदा ॥ ध्यानं विराट्स्वरूपं मे यदा त्व-
त्पुरतः स्थितं ॥ १५ ॥ सच्चिदानंदरूपं वा स्थानं सर्वजगन्मम ॥ युष्माभिः सर्वदा वाहं पूज्याध्येया च सर्वदा ॥ १६ ॥
॥ व्यास उवाच ॥ इत्युक्त्वा तर्द्धे देवीमणिद्वीपाधिवासिनी ॥ दक्षाद्यामुनयः सर्वे ब्रह्माणं पुनराययुः ॥ १७ ॥
ब्रह्मणे सर्ववृत्तांतं कथयामासुरादरात् ॥ हरो हरिश्च स्वस्थौ तौ स्वस्वकार्यक्षमौ नृप ॥ १८ ॥ जातौ परां व कृपया ग-
र्वेण रहितौ तदा ॥ कदाचिदथ काले नु महःशक्तमवातरन् ॥ १९ ॥ दक्षगेहे महाराज त्रैलोक्येषु त्सवो भवत् ॥
देवाः प्रमुदिताः सर्वे पुण्ड्रवृष्टिं वचक्रिरे ॥ २० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥

त्वमेव क्षयाति ॥ १५ ॥ सच्चिदानंदरूपं वा मम ध्यानमित्यर्थः तदुक्तं भुवनेश्वरी हृदये स्त्रीरूपं वाथ पुंरूपं निष्कलं वा महेश्वरि निष्कामना परतया
जन्ममंत्रं समाहित इति सर्वजगन्मम स्थानं भवति मम सर्वात्मकत्वादिति स्थानमभ्युत्तरं ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ शाक्तं महः परशक्ते
स्तेज इत्यर्थः ॥ १९ ॥ २० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

टी.अ.
३०

॥६०॥

करकोणाहताइति दुंदुभिताडनार्थयष्टिग्रहणेनकाशोनास्तीत्यातित्वरयाकरकोणेनैवाहताइत्यर्थः ॥ २१ ॥ मंगलायामंगभक्तानांजनन
मरणासर्पणलातिगृह्णातिनाशयतिसामंगला ॥ २२ ॥ परसंविदोब्रह्मरूपिण्याःसत्यत्वात्तदवतारत्वादस्याःसतीतिनामचक्रेइत्यर्थः तस्यश्च
क्तिरिति यापूर्वमियंशिवस्यशक्तिरासीत्सेयांशिवायैवदत्तेतिभावः ॥ २३ ॥ मनोर्दक्षस्यप्रजापतेः ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ जंबूरसेनोद्वृता

नेदुर्दुभयःस्वर्गेकरकोणाहतानृपा॥मनांस्यासन्प्रसन्नानिसाधूनाममलात्मनां ॥ २१ ॥ सरितोमार्गवाहिन्यः
सुप्रभोभूद्दिवाकरः ॥ मंगलायांतुजातायांजातंसर्वत्रमंगलं ॥ २२ ॥ तस्यान्नामसतीचक्रेसत्यत्वात्परसंविदः
॥ ददौपुनःशिवायाथतस्यशक्तिस्तुयाभवत् ॥ २३ ॥ सापुनर्ज्वलनेदग्धंदैवयोगान्मनोर्नृप ॥ जनमेजय
उवाच ॥ अनर्थकरमेतत्तेश्रावितंवचनंमुने ॥ २४ ॥ एतादृशंमहद्वस्तुकथंदग्धंहुताशने ॥ यन्नामस्मरणान्न
णांसंसाराग्निभयंनहि ॥ २५ ॥ केनकर्मविपाकेनमनोर्दग्धंतदेवहि ॥ व्यासउवाच ॥ शृणुराजन्पुरावृत्तंसती
दाहस्यकारणं ॥ २६ ॥ कदाचिदथदुर्वासागतोजांबूनदेश्वरीं ॥ ददर्शदेवींतत्रासौमायावीजंजजापसः ॥ २७ ॥
ततःप्रसन्नादेवेशीनिजकंठगतांस्त्रजं ॥ भ्रमद्भ्रमरसंसक्तांमकरंदमदाकुलां ॥ २८ ॥ ददौप्रसादभूतांतांजग्रा
हशिरसामुनिः ॥ ततोनिर्गत्यतरसाव्योममार्गेणतापसः ॥ २९ ॥ आजगामसयत्रास्तेदक्षःसाक्षात्सतीपिता ॥
संदर्शनार्थमंबाया ननामचसतीपदे ॥ ३० ॥ पृष्ठेदक्षेणसमुनिर्मालाकस्यास्त्यलौकिकी ॥ कथंलब्धात्वयानाथ
दुर्लभाभुविमानवैः ॥ ३१ ॥ तच्छ्रुत्वावचनंतस्यप्रोवाचाश्रुयुतेक्षणः ॥ देव्याःप्रसादमतुलंप्रेमसद्गदितांतरः
॥ ३२ ॥ प्रार्थयामासतांमालांतंमुनिंससतीपिता ॥ अदेयंशक्तिभक्तायनास्तित्रैलोक्यमंडले ॥ ३३ ॥

यानदीयत्रजांबूनदंसुवर्णभवतितस्येश्वरीतत्स्थानस्थितांदेवीमित्यर्थः ॥ २७ ॥ २८ ॥ मुनिर्दुर्वासाः ॥ २९ ॥ अंबायादक्षगृहेवतीर्णायाजग
न्मातुर्दर्शनार्थमित्यर्थः ॥ ३० ॥ ३१ ॥ देव्याःप्रसादमिति अभ्रुपूर्णक्षणेमुनिर्देवीप्रसादलब्धेयंमालेतिप्रोवाचेत्यर्थः ॥ ३२ ॥ शक्तिभक्ताय
॥ ३३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.स.

॥६१॥

मनवेदक्षाय सदुवासाः ॥ ३४॥ तेनमालागंधेनमोदितोहर्षितःसन्त्रात्रौपशुकर्मरतोमैथुनासक्तोभवदित्यर्थः ॥ ३५ ॥ तेनपापेनभगवती
मालायाअपमानरूपापराधजन्यपापेनशिवेदेव्यांचदेषबुद्धिरभवदित्यर्थः अनेमचदेवीसंबंधिपदार्थावहेलनेनएतादृशोमहाननर्थोजातस्तस्मात्तदे
लनमज्ञानेनापिनकर्त्तव्यमितिबोधितं ॥३६॥ तेनापराधेनशिवेदेषरूपापराधेनतज्जन्यःशिवापराधिदक्षजन्यःसतीधर्मःपतिव्रताधर्मःपतिनि

टी.अ.

३०

इतिबुद्ध्यातुतांमालांमनवेससमर्पयत् ॥ गृहीताशिरसामालामनुनानिजमंदिरे ॥ ३४ ॥ स्थापिताशयनंयत्र
दंपत्योरतिसुंदरं ॥ पशुकर्मरतोरात्रौमालागंधेनमोदितः ॥ ३५ ॥ अभवत्समहीपालस्तेनपापेनशंकरे ॥
शिवेद्वेषमतिर्जातोदेव्यांसत्यांतथानृप ॥ ३६ ॥ राजंस्तेनापराधेनतज्जन्योदेहएवच ॥ सत्यायोगाग्निनादग्धो
सतीधर्मदिदृक्षया ॥ ३७ ॥ पुनश्चाहिमवत्पृष्ठेप्रादुरासीत्तुतन्महः ॥ जन्मेजयउवाच ॥ दह्यमानेसतीदेहेजाते
किमकरोच्छिवः ॥ ३८ ॥ प्राणाधिकासतीतस्यतद्वियोगेनकातरः ॥ व्यासउवाच ॥ ततःपरंतुयज्जातंमयाव
क्तुंनशक्यते ॥ ३९ ॥ त्रैलोक्यप्रलयोजातःशिवकोपाग्निनानृप ॥ वीरभद्रःसमुत्पन्नोभद्रकालीगणान्वितः
॥ ४० ॥ त्रैलोक्यनाशनोद्युक्तोवीरभद्रोयदाभवत् ॥ ब्रह्मादयस्तदादेवाःशंकरंशरणंययुः ॥ ४१ ॥ जातेसर्व
स्वनाशोपिकरुणानिधिरीश्वरः ॥ अभयंदत्तवांस्तेभ्योबस्तवक्त्रेणतंमनुं ॥ ४२ ॥ अजीवयन्महात्मासौततः
खिन्नोमहेश्वरः ॥ यज्ञवाटमुपागम्यसुरोदभृशदुःखितः ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥

दायामेतादृशं व्रतं पतिव्रताभिराचरणीयमिति दिदृक्षया ॥ ३७ ॥ तंसतीदेहं त्यक्त्वा पुनस्तदेव देव्यामहोहिमवत्पृष्ठे प्रादुर्बभूवेत्यर्थः ॥ ३८ ॥
॥ ३९ ॥ भद्रकाल्याचाशिवगणैश्चान्वितः ॥ ४० ॥ ४१ ॥ एतादृशे सर्वस्वजातेनाशोकोपेदयानं करिष्यति तथापि
शिवः करुणानिधित्वाच्चकारेत्याह जाते सर्वस्वेति बस्तवक्त्रेण लागवक्त्रेण तं मनुं दक्षमजीवयन्जीवयामासेत्यर्थः एतेन वीरभद्रेण यज्ञध्वंसः कृतो
दक्षस्य च शिरश्छेदितमित्यनुक्तमप्यर्थाद्बोध्यं ॥ ४२ ॥ यज्ञवाटं यज्ञस्थानं ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥

॥६१॥

॥ ४४ ॥ भ्रांतचित्तोविक्षितः सन्नित्यर्थः ॥ ४५ ॥ सत्यायत्रावयवाः पतिष्यंतितत्रमोहेनाशिवस्थाः स्यतिनोचेत्तांगृहीत्वा ब्रह्मांडादहिरपिग
मिष्यतीत्यभिप्रायेण सत्यादेव्या अवयवांश्चिच्छेदेत्याह चिच्छेदेति तत्तत्स्थानेषु नानाविधेषु स्थानेषु तेवयवाश्छेदिता अपतन् ॥ ४६ ॥
यदर्थमवयवाश्छेदितास्तत्कार्यतदाजातमित्याह नानामूर्तिधरोहरइति उवाचेति अत्रहरः कर्त्ता ॥ ४७ ॥ निजांगेषु निजावयवेषु स्थाने

अपश्यतां सतीवन्हौ दह्यमानां तु चित्कलां ॥ स्कंधेऽप्यारोपयामास हासतीति वदन्मुहुः ॥ ४४ ॥ बभ्रामभ्रांत
चित्तः सन्नानादेशेषु शंकरः ॥ तदा ब्रह्मादयो देवाश्चिन्तामापुरनुत्तमां ॥ ४५ ॥ विष्णुस्तु त्वरया तत्र धनुस्त्वम्य
मार्गणैः ॥ चिच्छेदावयवान्सत्यास्तत्तत्स्थानेषु तेपतन् ॥ ४६ ॥ तत्तत्स्थानेषु तत्रासीन्नानामूर्तिधरोहरः ॥
उवाच च ततो देवान्स्थानेष्वेतेषु येशिवां ॥ ४७ ॥ भजंति परया भक्त्या तेषां किंचिन्नदुर्लभं ॥ नित्यं संनिहिता यत्र
निजांगेषु परांबिका ॥ ४८ ॥ स्थानेष्वेतेषु ये मर्त्याः पुरश्चरणकर्मिणः ॥ तेषां मंत्राः प्रसिध्यन्ति मायाबीजं विशेष
तः ॥ ४९ ॥ इत्युक्त्वा शंकरस्तेषु स्थानेषु विरहातुरः ॥ कालं निन्येनृपश्रेष्ठ जपध्यानसमाधिभिः ॥ ५० ॥ जन
मेजय उवाच ॥ कानि स्थानानि तानि स्युः सिद्धपीठानि चानघ ॥ कति संख्यानि नामानि कानि तेषां वमेव ॥ ५१ ॥
तत्र स्थितानां देवीनां नामानि च कृपाकर ॥ कृतार्थो हं भवेयेन तद्ब्रह्मा शुभहामुने ॥ ५२ ॥ व्यास उवाच ॥ शृणुराज
न्प्रवक्ष्यामि देवीपीठानि सांप्रतं ॥ येषां श्रवणमात्रेण पापहीनो भवेन्नरः ॥ ५३ ॥ येषु येषु च पीठेषु पास्ते यंसि
द्धिकांक्षिभिः ॥ भूतिकामैरभिध्येया तानि वक्ष्यामि तत्त्वतः ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥

पुपरांबिका देवीनानारूपैः संस्थिता स्तीत्यर्थः ॥ ४८ ॥ मायाबीजं विशेषत इति देव्यामुख्यो मंत्रो हि मायाबीजं तस्मिन् देव्याः प्रत्यासत्त्याति
शयान् तदुक्तं ब्रह्मांडपुराणे ह्रींकारादृशं त्रिविकेति तथा च तस्य जपेन शीघ्रं संतुष्टा भगवती शीघ्रं सिद्धिं ददातीत्यर्थः ॥ ४९ ॥ ५० ॥
॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥

दे.भा.स.

गौरीमुखनिवासिनीति वाराणस्यांगौरीमुखंसतीमुखंपतितं तस्मिन्पीठे मुखरूपेयद्गवत्या रूपंतस्य विशालाक्षातिनामेत्यर्थः ॥ ५५ ॥

॥६२॥

वाराणस्यां विशालाक्षी गौरीमुखनिवासिनी ॥ क्षेत्रे वै नैमिषारण्ये प्रोक्ता सालिंगधारिणी ॥ ५५ ॥ प्रयागे ललि
ता प्रोक्ता कामुकी गंधमादने ॥ मानसे कुमुदा प्रोक्ता दक्षिणे चोत्तरे तथा ॥ ५६ ॥ विश्वकामा भगवती विश्वकामप्र
पूरिणी ॥ गोमंते गोमती देवी मंदरे कामचारिणी ॥ ५७ ॥ मदोत्कटा चैत्ररथे जयंती हस्तिनापुरे ॥ गौरी प्रोक्ता का
न्यकुब्जरे भातु मलयाचले ॥ ५८ ॥ एका घर्पीठे संप्रोक्ता देवी सा कीर्तिमत्यपि ॥ विश्वे विश्वेश्वरीं प्राहुः पुरुहूतां च पु
ष्करे ॥ ५९ ॥ केदारपीठे संप्रोक्ता देवी सन्मार्गदायिनी ॥ मंदाहिमवतः पृष्ठे गोकर्णे भद्रकर्णिका ॥ ६० ॥ स्था
नेश्वरी भवानी तु बिल्वके बिल्वपत्रिका ॥ श्रीशैले माधवी प्रोक्ता भद्रा भद्रेश्वरी तथा ॥ ६१ ॥ वराहशैले तु जयाक
मला कमलालये ॥ रुद्राणी रुद्रकोट्यां तु काली कालंजरे तथा ॥ ६२ ॥ शालग्रामे महादेवी शिवलिंगे जलप्रिया ॥
महालिंगे तु कपिलामाकोटे मुकुटेश्वरी ॥ ६३ ॥ मायापुर्यां कुमारी स्यात्संताने ललितांबिका ॥ गयायां मंगला
प्रोक्ता विमला पुरुषोत्तमे ॥ ६४ ॥ उत्पलाक्षी सहस्राक्षे हिरण्याक्षे महोत्पला ॥ विपाशायाममोघाक्षी पाडला
पुंड्रवर्धने ॥ ६५ ॥ नारायणी सुपार्श्वे तु त्रिकूटे रुद्रसुंदरी ॥ विपुले विपुला देवी कल्याणी मलयाचले ॥ ६६ ॥ सह्या
द्रावेकवीरा तु हरिश्चंद्रे तु चंद्रिका ॥ रमणारामतीर्थे तु यमुनायां मृगावती ॥ ६७ ॥ कोटवी कोटितीर्थे तु सुगंधा
माधवे वने ॥ गोदावर्यां त्रिसंध्या तु गंगाद्वारे रतिप्रिया ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥

दक्षिणे मानसे कुमुदा उत्तरे मानसे विश्वकामप्रपूरिणी विश्वकामाख्या भगवती तिष्ठतीत्यन्वयः ॥ ५६ ॥ गोमंते पर्वते ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥

टी.अ.
३०

॥६२॥

पातालपरमेश्वरीनाम्नी ॥ ६९ ॥ ७० ॥ उष्णतीर्थेष्वभयेतिदेवीविध्यपर्वतेनितंबादेवीपूर्वोक्ताविध्यवासिनीच ॥ ७१ ॥ ७२ ॥

शिवकुण्डेशुभानंदानंदिनीदेविकातटे ॥ रुक्मिणीद्वारवत्यांतुराधावृंदावनेवने ॥ ६९ ॥ देवकीमथुरायांतुपाता
लेपरमेश्वरी ॥ चित्रकूटेतथासीताविध्येविंध्याधिवासिनी ॥ ७० ॥ कर्ग्वरेमहालक्ष्मीरुमादेवीविनायके ॥ आ
रोग्यावैद्यनाथेतुमहाकालेमहेश्वरी ॥ ७१ ॥ अभयेत्युष्णतीर्थेपुनितंबाविध्यपर्वते ॥ मांडव्येमांडवीनामस्वा
हामाहेश्वरीपुरे ॥ ७२ ॥ छगलंडेप्रचंडातुचंडिकाऽमरकंटके ॥ सोमेश्वरेवरारोहाप्रभासेपुष्करावती ॥ ७३ ॥
देवमातासरस्वत्यांपारावारातटेस्मृता ॥ महालयेमहाभागापयोण्यांपिंगलेश्वरी ॥ ७४ ॥ सिंहिकाकृतशौचेतु
कार्तिकेत्वतिशांकरी ॥ उत्पलावर्तकेलोलासुभद्राशोणसंगमे ॥ ७५ ॥ मातासिद्धवनेलक्ष्मीरनंगाभरताश्रमे
॥ जालंधरेविश्वमुखीताराकिष्किधपर्वते ॥ ७६ ॥ देवीदारुवनेपुष्टिर्मेधाकाश्मीरमंडले ॥ भीमादेवीहिमाद्रौ
तुतुष्टिर्विश्वेश्वरीतथा ॥ ७७ ॥ कपालमोचनेशुद्धिर्माताकायावरोहणे ॥ शंखोद्वारेधरानामधृनिःपिंडारकेतथा
॥ ७८ ॥ कलातुचंद्रभागायामच्छोदेशिवधारिणी ॥ वेणायाममृतानामवदर्यामुर्वशीतथा ॥ ७९ ॥ औषधि
श्रोत्तरकुरौकुशद्वीपेकुशोदका ॥ मन्मथाहेमकूटेतुकुमुदेसत्यवादिनी ॥ ८० ॥ अश्वत्थेवंदनीयातुनिधिर्वैश्रव
णालये ॥ गायत्रीवेदवदनेपार्वतीशिवसंनिधौ ॥ ८१ ॥ देवलोकेतथेंद्राणीब्रह्मास्येषुसरस्वती ॥ सूर्यविंबेप्र
भानाममातृणांवैष्णवीमता ॥ ८२ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ६९ ॥

॥ ७३ ॥ तटेसमुद्रतटेपारावारादेवी ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ विश्वेश्वरेक्षेत्रेतुष्टिर्देवी ॥ ७७ ॥ ७८ ॥
॥ ७९ ॥ ८० ॥ वैश्रवणालयेकुबेरालयेनिधिनाम्नीदेवता ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ७९ ॥

दे.भा.स.

॥६३॥

तिलोत्तमेत्यंतमेवाष्टोत्तरशतनामसमाप्तिः चित्तेब्रह्मकलानामेत्यनेनतुसर्वासामुक्तानां देवतानां मुख्यरूपमुच्यते याचित्तेब्रह्मकलायाचसर्वशरीरिणांशक्तिः सैवैतदेवतात्मिकेतिशेषः ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ इमानिसर्वाणिस्थानानिनसतीदेव्यंगभूतानि किंतुकानिचिदेव्यंगानियत्रपतितानितथा

टी.अ.

३०

अरुंधतीसतीनांतुरामासुचतिलोत्तमा ॥ चित्तेब्रह्मकलानामशक्तिः सर्वशरीरिणां ॥ ८३ ॥ इमान्यष्टशतानिस्युः पीठानिजनमेजय ॥ तत्संख्याकास्तदीशान्योदेव्यश्चपरिकीर्तिताः ॥ ८४ ॥ सतीदेव्यंगभूतानिपीठानिकथितानिच ॥ अन्यान्यपिप्रसंगेनयानिमुख्यानिभूतले ॥ ८५ ॥ यःस्मरेच्छृणुयाद्वापिनामाष्टशतमुत्तमं ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तोदेवीलोकंपरं व्रजेत् ॥ ८६ ॥ एतेषुसर्वपीठेषुगच्छेद्यात्राविधानतः ॥ संतर्पयेच्चापित्रादीन्श्राद्धादीनिविधायच ॥ ८७ ॥ कुर्याच्चमहतीं पूजां भगवत्याविधानतः ॥ क्षमापयेज्जगद्वात्रीं जगदंबां मुहुर्मुहुः ॥ ८८ ॥ कृतकृत्यं स्वमात्मानं जानीयाज्जनमेजय ॥ भक्षभोज्यादिभिः सर्वान्ब्राह्मणान्भोजयेत्ततः ॥ ८९ ॥ सुवासिनीः कुमारीश्चबटुकादींस्तथानृप ॥ तस्मिन्क्षेत्रेस्थितायेतुचांडालाद्या अपिप्रभो ॥ ९० ॥ देवीरूपाः स्मृताः सर्वे पूजनीयास्ततोहिते ॥ प्रतिग्रहादिकं सर्वेतेषुक्षेत्रेषुवर्जयेत् ॥ ९१ ॥ यथाशक्तिपुरश्चर्या कुर्यान्मंत्रस्यसत्तमः ॥ मायाबीजेनदेवेशीं तत्तत्पीठाधिवासिनीं ॥ ९२ ॥ पूजयेन्ननिशंराजन्पुरश्चरणकृद्भवेत् ॥ वित्तशाठ्यंनकुर्वीतदेवीभक्तिपरोनरः ॥ ९३ ॥ यएवंकुरुतेयात्रांश्रीदेव्याः प्रीतमानसः ॥ सहस्रकल्पपर्यंतं ब्रह्मलोकेमहत्तरे ॥ ९४ ॥ वसंतिपितरस्तस्यसोपिदेवीपुरेतथा ॥ अंतैलब्ध्वापरंज्ञानंभवेन्मुक्तोभवांबुधेः ॥ ९५ ॥ ॥ ६४ ॥

विधानि काकिचित्तुरामासुचतिलोत्तमेत्यादीनिप्रसंगेनोक्तानीत्याहसतीदेव्यंगेति ॥ ८५ ॥ देवीलोकंमणिद्वीपं ॥ ८६ ॥ यात्राविधानतःपुराणादिषुप्रोक्तेनयात्राविधानेनेत्यर्थः ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ स्वयंदेवीपुरेमणिद्वीपेस्थित्वातत्रदेवीप्रसादात्ज्ञानंलब्ध्वाभवांबुधेर्मुक्तोभक्तीत्यर्थः ॥ ९५ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥

॥६३॥

॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥ इमान्यष्टशतनामानि मत्स्यपुराणे पिस्पृष्टानि ॥ १ ॥ २ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके
सप्तमस्कंधे त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३ ॥ श्रीलक्ष्मीमातरं रंगनाथार्यं पितरं गुरुं ॥ नीलकंठः प्रकुस्तेन त्वागीता विमर्शिनो ॥ १ ॥ चतुःसप्ततिपदैस्तु पावै-

नामाष्टशतजापेन बहवः सिद्धतां गताः ॥ यत्रैतल्लिखितं साक्षात्पुस्तके वापि तिष्ठति ॥ ९६ ॥ ग्रहमारीभयाग्नीनित-
त्र नैव भवंति हि ॥ सौभाग्यं वर्धते नित्यं यथा पर्वणि वारिधिः ॥ ९७ ॥ न तस्य दुर्लभं किंचिन्नामाष्टशतजापिनः ॥ कृत-
कृत्यो भवेन्नूनं देवीभक्तिपरायणः ॥ ९८ ॥ नमंति देवतास्तं वै देवीरूपो हि स स्मृतः ॥ सर्वथा पूज्यते देवैः किं पुनर्म-
नुजोत्तमैः ॥ ९९ ॥ श्राद्धकाले पठेत्तन्नामाष्टशतमुत्तमं ॥ तृप्तास्तत्पितरः सर्वे प्रयांति परमां गतिं ॥ १०० ॥
इमानि मुक्तिक्षेत्राणि साक्षात्संविन्मयानि च ॥ सिद्धपीठानि राजेंद्रसंश्रये न्मतिमान्नरः ॥ १ ॥ पृष्ठं यत्तत्त्वयाराज-
न्नुक्तं सर्वमहेशितुः ॥ रहस्यातिरहस्यं च किं भूयः श्रोतुमिच्छसि ॥ २ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे अष्टाद-
शसाहस्र्यां संहितायां सप्तमस्कंधे त्रिंशोऽध्यायः ॥ २० ॥ जनमेजय उवाच ॥ धराधराधीशमौला वाविरासीत्प-
रं महः ॥ यदुक्तं भवता पूर्वं विस्तरात्तद्वदस्व मे ॥ १ ॥ को विरज्येत मतिमान्पि वञ्छितकथामृतं ॥ सुधांतुपि-
बतां मृत्युः स नैतच्छृण्वतो भवेत् ॥ २ ॥ व्यास उवाच ॥ धन्योऽसि कृतकृत्योऽसि रक्षितोऽसि महात्मभिः ॥ भा-
ग्यवानसि यद्देव्यानिर्व्याजाभक्तिरस्तिते ॥ ३ ॥ शृणुराजन्पुरावृत्तं सती देहेऽग्निर्भर्जिते ॥ भ्रांतः शिवस्तु बभ्रा-
म कचिद्देरोऽस्थिरो भवत् ॥ ४ ॥ प्रपंचभानरहितः समाधिगतमानसः ॥ ध्यायन् देवीस्वरूपं तु कालं निन्ये स-
आत्मवान् ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥

त्यार्यं परं महः ॥ हिमालये प्रादुरभूदिति सम्यगिहोच्यते ॥ २ ॥ पूर्वाध्याये पुनश्चाहिमवत्पृष्ठे प्रादुरासीत्तु तन्मह इत्युक्तं तत्कथां पृच्छति धराध-
राधीशेति धराधराः ध्वंतास्तेषामधीशो हिमालयस्तस्य मौलावित्यर्थः ॥ १ ॥ वक्तुस्तसाहर्षिकथाश्रवणे स्वात्साहं दर्शयति को विरज्येतानि-
सुखमपि पिबताममराणां यो मृत्युः स देवीकथामृतश्रवणवतो नैव भवेदित्यर्थः ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥

दे.भा.स.

॥६४॥

सौभाग्यरहितमैश्वर्यरहितं तदापराशक्तेः पुण्यश्लोकाया देव्याः पालयित्र्याजगन्मातुरभवाब्जातमित्यर्थः ॥ ६ ॥ ७ ॥ ग्रहा अपि विपरीत
गतयः शास्तुः सत्या देव्या अभावब्जाता इत्यर्थः ॥ ८ ॥ ९ ॥ ब्रह्मणा दत्तो वरो यस्मै तादृशस्तस्मिन्नेव सिंघौ तारकासुरो भवदित्यर्थः कोसौ

सौभाग्यरहितं जातं त्रैलोक्यं सचराचरं ॥ शक्तिहीनं जगत्सर्वं साधिद्वीपं सपर्वतं ॥ ६ ॥ आनंदः शुष्कतां यातः
सर्वेषां हृदयांतरे ॥ उदासीनाः सर्वलोकाश्चिंताजर्जरचेतसः ॥ ७ ॥ सदादुःखोदयौ मग्नारोगग्रस्तास्तदाभवन्
॥ ग्रहाणां देवतानां च वैपरीत्येन वर्तनं ॥ ८ ॥ अधिभूताधिदैवानां सत्यभावानृपाभवत् ॥ अथास्मिन्नेव काले
तु तारकासुर्यो महासुरः ॥ ९ ॥ ब्रह्मदत्तवरो दैत्यो भवत्त्रैलोक्यनायकः ॥ शिवौरसस्तु यः पुत्रः स ते हंता भविष्य
ति ॥ १० ॥ इति कल्पितमृत्युः स देवदेवैर्महासुरः ॥ शिवौरससुताभावाज्जगर्जवननंदच ॥ ११ ॥ तेन चोप
द्रुताः सर्वे स्वस्थानात्प्रच्युताः सुराः ॥ शिवौरससुताभावाच्चिंतामापुर्दुरत्ययां ॥ १२ ॥ नांगनाशंकरस्यास्ति
कथं तत्सुतसंभवः ॥ अस्माकं भाग्यहीनानां कथं कार्यं भविष्यति ॥ १३ ॥ इति चिंता तुराः सर्वे जग्मुर्वेकुंठमंड
ले ॥ शशंसुर्हरिमेकांते स चोपायं जगादह ॥ १४ ॥ कुतः चिंता तुराः सर्वे कामकल्पद्रुमा शिवा ॥ जागर्तिभुवने
शानीमणिद्वीपाधिवासिनी ॥ १५ ॥ अस्माकमनया देवतदुपेक्षास्ति नान्यथा ॥ शिक्षैवेयं जगन्मात्राकृतास्म
च्छिक्षणाय च ॥ १६ ॥ लालने ताडने मातुर्न कारुण्यं यथार्भके ॥ तद्वदेव जगन्मातुर्नियंत्र्या गुणदोषयोः ॥ १७ ॥
अपराधो भवत्येव तनयस्य पदे पदे ॥ कोपरः सहेते लोके केवलं मातरं विना ॥ १८ ॥ ॥ ६४ ॥

ब्रह्मणा वरो दत्तस्तमाह शिवौरसस्त्विति ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ अस्माकमनया दपराधा देवभगवत्या उपे
क्षास्ति सा चोपेक्षानास्मन्नाशाय किं त्वेतादृशो ममापराधो न कर्तव्य इति शिक्षणायेत्यर्थः ॥ १६ ॥ तत्र दृष्टान्तमाह लालनेति अर्भके बाले
॥ १७ ॥ यद्यप्यपराधिनो वयं तथापि तां मातरं जगज्जननीं विना कोपरः सहेतास्मदपराधं पदे पदे जायमानमित्यर्थः ॥ १८ ॥ ॥ ७ ॥

टी.अ.
३१

॥६४॥

॥ १९ ॥ स्वजायया लक्ष्म्या सह देव्या आराधनार्थं विष्णुरपि देवैः सह निर्जंगामेत्यर्थः ॥ २० ॥ २१ ॥ अंबायज्ञार्थं यज्ञानां विधास्तृतीयादिव्रतानि हिमालयं प्रति भगवत्यावक्ष्यमाणानि ॥ २२ ॥ नामपरायणाः देवीनाम जापिन इत्यर्थः सूक्तपरा अहंरुद्रेभिरित्यादि देवीसूक्तजापिन इत्यर्थः नामपरायणं तंत्रराजादितंत्रे पूक्तं कालनित्यापरायणं तस्मिन्नुत्सुकानिष्णाताः केचिदित्यर्थः ॥ २३ ॥ मंत्रपरायणं मायाकुण्डलिनीक्रियामधुमतीशुद्धाचकालीकलामांतर्गाविजयाजयाभगवतीदेवी

तस्माद्यूपरांवांतांशरणं यातमाचिरं ॥ निर्व्याजयाचित्तवृत्त्यासावः कार्यं विधास्यति ॥ १९ ॥ इत्यादिश्यसुरान्सर्वान्महाविष्णुः स्वजायया ॥ संयुतो निर्जंगामाशुदेवैः सह सुराधिपः ॥ २० ॥ आजगाम महाशैलं हिमवंतं नगाधिपं ॥ अभवंश्च सुराः सर्वे पुरश्चरणकर्मिणः ॥ २१ ॥ अंबायज्ञं विधानज्ञा अंबायज्ञं च चक्रिरे ॥ तृतीयादिव्रतान्याशुचक्रुः सर्वे सुरानृपा ॥ २२ ॥ केचित्समाधिनिष्णाताः केचिन्नामपरायणाः ॥ केचित्सूक्तपराः केचिन्नामपरायणोत्सुकाः ॥ २३ ॥ मंत्रपरायणपराः केचित्कृच्छ्रादिकारिणः ॥ अंतर्यागपराः केचित्केचिन्न्यासपरायणाः ॥ २४ ॥ हल्लेखया पराशक्तेः पूजां च क्रुरतं द्रिताः ॥ इत्येवं बहुवर्षाणि कालो गाज्जनमेजय ॥ २५ ॥ अकस्माच्चैत्रमासीय नवम्यां च भृगोर्दिने ॥ प्रादुर्बभूव पुरतस्तन्महः श्रुतिबोधितं ॥ २६ ॥ चतुर्दिक्षु चतुर्वेदैर्मूर्तिमद्भिरभिष्टुतं ॥ कोटिसूर्यप्रतीकाशं चंद्रकोटिसुशीतलं ॥ २७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

शिवाशां भवीति श्लोकोक्तरीत्या भुवनेश्वरी पारिजाते स्पष्टीकृतं तत्परास्तन्निष्णाताः केचिदित्यर्थः कृच्छ्रादिव्रतं कृच्छ्रां द्वायणादिकं अंतर्यागः प्रपंचयागः प्राणाग्निहोत्रं च प्रपंचसारे उक्तं तत्पराः केचिदित्यर्थः ॥ २४ ॥ हल्लेखया मायाबीजमंत्रेण भुवनेश्वरी मंत्रेणेत्यर्थः ॥ २५ ॥ भृगोर्दिने भृगुवासरे स तस्मिन्नेवाकाशे स्त्रियमाजगाम बहुशोभमाना मिमां हैमवतीमित्यादि श्रुतिबोधितं तन्महः शाक्तं महः प्रादुर्बभूवेत्यर्थः ॥ २६ ॥ वेदचतुष्टयेन चतुर्दिक्षु स्थितेन सेवितमित्यर्थः ॥ २७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.स.

॥६३॥

अस्नमारक्तमनुग्रहार्थस्वीकृतरजोगुणवत्वात् एतद्रूपप्रातिपादितांश्रुतिपंठातिनैवचोर्ध्वमिति परिजग्रभत्स्थानत्रयेपिनपरिच्छिन्नमित्यर्थः
॥ २८ ॥ अथोभयंनपुंसकमपिनेत्यर्थः ॥ २९ ॥ प्रथमतस्तस्यदीप्त्यानेत्रापिधानंजातंपश्चात्तदेवमहःस्त्रीरूपेणाभात्प्रकाशंप्रापेत्यर्थः ॥ ३० ॥
॥ ३१ ॥ उद्यदाविर्भवद्यत्पीनंकुचद्वंद्वेतेननिर्दितेकमलकुड्मलेयस्याः रणच्छब्दायमानंयत्किंकिणिकाजालंतेनसिजच्छब्दायमानेमंजीर

टी.अ.

३१

विद्युत्कोटिसमानाभमरुणंतत्परंमहः ॥ नैवचोर्ध्वंनतिर्यक्कनमध्येपरिजग्रभत् ॥ २८ ॥ आद्यंतरहितंतत्तुनह
स्ताद्यंगसंयुतं ॥ नचस्त्रीरूपमथवानपुंरूपमथोभयां ॥ २९ ॥ दीप्त्यापिधानंनेत्राणांतेषामासीन्महीपते ॥ पुनश्च
धैर्यमालंययावत्तेदृशुःसुराः ॥ ३० ॥ तावत्तदेवस्त्रीरूपेणाभाद्विव्यंमनोहरं ॥ अतीवरमणीयांगीकुमारींन
वयौवनां ॥ ३१ ॥ उद्यत्पीनकुचद्वंद्वनिदितांभोजकुड्मलां ॥ रणत्किंकिणिकाजालसिजन्मंजिरमेखलां ॥ ३२ ॥
कनकांगदकेयूरग्रैवेयकविभूषितां ॥ अनर्घ्यभणिसंभिन्नगलबंधविराजितां ॥ ३३ ॥ तनुकेतकसंराजनीलभ्र
मरकुंतलां ॥ नितंबविंबसुभंगारोमराजीविराजितां ॥ ३४ ॥ कर्पूरशकलेन्मिश्रतांबूलपूरिताननां ॥ कन
त्कनकताटंकविटंकवदनांबुजां ॥ ३५ ॥ अष्टमीचंद्रविंबाभललाटामायतभ्रुवं ॥ रक्तारविदनयनामुन्नसांमधु
राधरां ॥ ३६ ॥ कुंदकुड्मलदंताग्रांमुक्ताहारविराजितां ॥ रत्नसंभिन्नमुकुटांचंद्ररेखावतंसिनीं ॥ ३७ ॥ म
ल्लिकामालतीमालाकेशपाशाविराजितां ॥ काश्मीरविंदुनिटिलांनेत्रत्रयविलासिनीं ॥ ३८ ॥ पाशांकुशवराभी
तिचतुर्बाहुंत्रिलोचनां ॥ रक्तवस्त्रपरीधानांदाडिर्माकुसुमप्रभां ॥ ३९ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥

मेखलेनूपुरकांचीभूषणेयस्याः ॥ ३२ ॥ गलबंधःकंठभूषणं ॥ ३३ ॥ तनुकेतकेबालकेतकपत्रेतिश्वेतसंराजन्योनीलभ्रमरस्तद्वदतिनीले
कुंतलेकर्णकपोलमध्यस्थौकेशौयस्याः ॥ ३४ ॥ कनंतौदीप्यमानौकनकताटंकौताभ्यांविटंकंसुंदरंवदनांबुजंयस्याः ॥ ३५ ॥ अष्टमीचंद्रो
र्ध्वचंद्रः उन्नसांउन्नतनासिकां ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ निटिलंललाटं ॥ ३८ ॥ त्रिलोचनामितिपुनस्तिलोचनानामतिसौंदर्यबोधनार्था ॥ ३९ ॥

॥६३॥

॥ ४० ॥ ४१ ॥ यतोबाणसंरुद्धनिस्वनास्ततोवक्तुं नाशक्नुवन्नित्यर्थः इतिकर्तव्यतायामूढाः सर्वेविलोकनंकृतदृष्टएवस्थिताइत्यर्थः ॥ ४२ ॥
 ॥ ४३ ॥ नमोदेव्यैइतिवैदिकोमंत्रः प्रकृत्यैप्रकृतिश्चप्रतिज्ञादृष्टांतानुपरोधादितिसूत्रप्रतिपाद्यसाम्यावस्थमायोपाधिकब्रह्मरूपिण्यैभद्रायैसकल
 कल्याणगुणरत्नाकरायै नियताः संयताः ॥ ४४ ॥ तामग्निवर्णामिति अयमापिऋड्मंत्रः अग्निसमारुणवर्णा तपसाज्ञानेनज्वलंतीदीप्यमानांसर्व
 ज्ञामित्यर्थः तथाचश्रुतिः तपसाचियतेब्रह्मेतिमुंडकेवैरोचनीविशेषेणदीतांकर्मफलेषुनिमित्तेषुब्राह्मणादिभिर्जुष्टांसेवितांदुर्गामष्टांगयोगात्मकदुः
 खरूपायासेनप्राप्याज्ञानेनसुतरसितरणयोग्येसंसारेतरसेतरणायतस्यैदुर्गायैनमोस्त्वित्यर्थः तस्यैइतिशेषः यद्वाअग्निशब्देनाग्निबीजेरफोगृह्यते

सर्वशृंगारवेषाढ्यांसर्वदेवनमस्कृतां ॥ सर्वाशापूरकांसर्वमातरंसर्वमोहिनीं ॥ ४० ॥ प्रसादसुमुखीमंबांमंद
 स्मितमुखाम्बुजां ॥ अव्याजकरुणामूर्तिंददद्भुःपुरतःसुराः ॥ ४१ ॥ दृष्ट्वातांकरुणामूर्तिंप्रणमःसकलाःसुराः
 वक्तुं नाशक्नुवन्किंचिद्वाप्संरुद्धनिःस्वनाः ॥ प्रेमाश्रुलोचनाःसर्वेविलोकनपराःस्थिताः ॥ ४२ ॥ कथंचित्स्यैर्यमालं
 व्यभक्त्याचानतकंधराः ॥ प्रेमाश्रुपूर्णनयनास्तुष्टुवुर्जगदंबिकां ॥ ४३ ॥ देवाऊचुः ॥ नमोदेव्यैमहादेव्यैशि
 वायैसततंनमः ॥ नमःप्रकृत्यैभद्रायैनियताःप्रणताःस्मृतां ४४ ॥ तामग्निवर्णांतपसाज्वलंतींवैरोचनींकर्मफ
 लेषुजुष्टां ॥ दुर्गादेवींशरणमहंप्रपद्येसुतरसितरसेनमः ॥ ४५ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४५ ॥

सरकारोवर्णोयस्यामंत्रेस्तितां तपःशब्दोमायावाचकस्तेनतुरीयस्वरईकारोगृह्यते तेनज्वलंतींतियुक्तामित्यर्थः विरोचनःसूर्यस्तेनतद्वीजंह
 कारोगृह्यते सूर्यस्यबिंदात्मकपरमेश्वरत्वेनबिंदोश्चहकारात्मत्वेनप्रपंचसारेतृतीयचतुर्थपटलयोरुक्तत्वात् तेनहकारयुक्तामित्यर्थः तथाचमा
 याबीजरूपिणींदुर्गाशरणमहमित्यादिपूर्वेणसमानार्थं नारायणोपनिषद्वाप्येतुतांदुर्गादेवींशरणमहंप्रपद्ये कीदृशीमग्निसमानवर्णांतपसास्वकीय
 संतोषेनज्वलंतीमस्मच्छनुदहंतींविशेषेणरोचतेस्वयमेवप्रकाशतेइतिविरोचनःपरमात्मातेनदृष्टत्वाद्वैरोचनींकर्मफलेषुस्वर्गपशुपुत्रादिषुनिमित्त
 भूतेषुब्रह्मपुष्पसकैःसेवितां हेसुतरसिसुष्टुसंसारतरणहेतोहेदेवितरसेतारयिन्यैतुभ्यंनमोस्त्वित्यर्थइत्युक्तमाधवाचार्यैः ॥ ४५ ॥

दे.भा.स.

॥६४॥

देवींवाचेति देवाः प्राणाः यां देवीं द्योतमानां वाचैवैखरीरूपमजनयंतोत्पादितवन्तस्तां विश्वरूपा बहुरूपाः पशवोऽस्मदादयो वदन्ति सर्वव्यवहार
सित्त्वर्थं सेयं सर्वव्यवहारोपयोगिनी धेनुः कामदुष्कामं द्रामादयित्री प्रतिष्ठामानदानादिना इष्टमूर्जं दुहानां बलदात्री वाग्रूपा भवति नोऽस्मान् सुपुतास
ती उपैतु प्राप्नोत्वित्यर्थः अयमपि ऋड्मंत्र एव ॥ ४६ ॥ कालरात्रिमिति अयमपि देव्यथर्वशिरस्थोमंत्रः सर्वमारकस्यापि कालस्य रात्रिर्ना
शिकेत्यर्थः प्रलये कालस्यापि नाशात् ब्रह्मस्तुतां मधुकैटभयस्य समये ब्रह्मणास्तुतां ब्रह्मणा वेदेन वास्तुतां वैष्णवीं विष्णुशक्तिलक्ष्मीं स्कंदमात

देवीं वाचमजनयंत देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति ॥ सानोमं द्रेषमूर्जं दुहानां धेनुर्वागस्मामुपसुपुतैतु ॥ ४६ ॥
कालरात्रिं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कंदमातरं ॥ सरस्वतीमदिति दक्षदुहितरं नमामः पावनां शिवां ॥ ४७ ॥ महाल
क्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि ॥ तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥ ४८ ॥ नमो विराट्स्वरूपिण्यै नमः सूत्रात्ममूर्तये ॥
नमो व्याकृतरूपिण्यै नमः श्रीब्रह्ममूर्तये ॥ ४९ ॥ यदज्ञानाज्जगद्भाति रज्जुसर्पस्त्रगादिवत् ॥ यज्ञानाल्लयमाप्नो
ति नुमस्तां भूवनेश्वरीं ॥ ५० ॥ नमस्तत्पदलक्ष्यार्थां चिदेकरसरूपिणीं ॥ अखंडानंदरूपां तां वेदतात्पर्यभू
मिकां ॥ ५१ ॥ पंचकोशातिरिक्तां तामवस्थात्रयसाक्षिणीं ॥ नुमस्त्वं पदलक्ष्यार्थां प्रत्यगात्मस्वरूपिणीं
॥ ५२ ॥ नमः प्रणवरूपायै नमो ह्रींकारमूर्तये ॥ नानामंत्रात्मिकायै तेकरुणायै नमो नमः ॥ ५३ ॥ इति स्तुतात
दा देवैर्मणिद्वीपाधिवासिनी ॥ प्राहवाचामधुरयामत्तको किल निःस्वना ॥ ५४ ॥ ॥ ६४ ॥

रंपावतीं शिवशक्तिं सरस्वतीं ब्रह्मशक्तिं अदितिं देवमातरं दक्षदुहितरं सतीनां धीं एतादृशीं नानारूपधरां शिवां भूवनेश्वरीं पावनां नमाम इत्यर्थः
॥ ४७ ॥ महालक्ष्म्यै चेति इयमपि देव्यथर्वशिरस्था गायत्री तत्र चतुर्थी द्वितीयार्थे महालक्ष्मीं विद्महे जानीम इत्यर्थः तथा सर्वशक्तिं धीमहि ध्या
याम इत्यर्थः तदिति लुप्तसम्यंतं तत्तत्र ज्ञाने ध्याने च नोऽस्मान् सा देवी प्रचोदयात्प्रेरयत्वित्यर्थः ॥ ४८ ॥ चतुष्पात् ब्रह्मात्मिकां नमस्करोति
नमो विराडिति ॥ ४९ ॥ यदज्ञानाद्यत्स्वरूपस्यापरिज्ञानादित्यर्थः ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ॥ ७ ॥

टी.अ.
३१

॥६४॥

॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ शिवांगजाच्छिवोरसपुत्रान् ॥ ६० ॥ सर्वज्ञपुरतइति सर्वज्ञायास्तवपुरतोऽस्माभिः पामरैर्जनैः किंवक्तव्यं किं निवेदनीयं त्वं किं न जानासीत्यर्थः एतदुद्देशतइति इदं यदुक्तं तदुद्देशतो मुख्यत्वेन यत्स्थितं तदुक्तं अपरमन्यतदुःखमस्माकं च

श्रीदेव्युवाच ॥ वदंतु विबुधाः कार्यं यदर्थमिह संगताः ॥ वरदाहं सदा भक्तकामकल्पद्रुमास्मि च ॥ ५५ ॥ तिष्ठं
त्यां मयिका धिं ता युष्माकं भक्तिशालिनां ॥ समुद्ररामिमद्रक्तया दुःखं संसारसागरात् ॥ ५६ ॥ इति प्रतिज्ञां मे
सत्यां जानीथ विबुधोत्तमाः ॥ इति त्रेमाकुलां वार्णां श्रुत्वा संतुष्टमानसाः ॥ ५७ ॥ निर्भयानिर्जराराजन्नूचुर्दुःखं
स्वकीयकं ॥ देवा ऊचुः ॥ नाज्ञातं किंचिदप्यत्र भवत्यास्ति जगन्नय ॥ ५८ ॥ सर्वज्ञया सर्वसाक्षिण्यपि न्यपरमे
श्वरि ॥ तारकेणासुरेन्द्रेण पीडिताः स्मोदिवानिशं ॥ ५९ ॥ शिवांगजाद्वधस्तस्य निर्मितो ब्रह्मणा शिवे ॥ शिवांग
नातु नैवास्ति जानासित्वं न हेश्वरि ॥ ६० ॥ सर्वज्ञपुरतः किं वा वक्तव्यं पामरैर्जनैः ॥ एतदुद्देशतः प्रोक्तमपरंतर्क
यां विके ॥ ६१ ॥ सर्वदा चरणां भोजे भक्तिः स्यात्तव निश्चला ॥ प्रार्थनीयमिदं मुख्यमपरंदेहहेतवे ॥ ६२ ॥
इति तेषां वचः श्रुत्वा प्रोवाच परमेश्वरी ॥ मम शक्तिस्तु या गौरी भविष्यति हिमालये ॥ ६३ ॥ शिवाय सा प्रदेया स्या
त्सावः कार्यं विधास्यति ॥ भक्तिर्मच्चरणां भोजे भूयाद्युष्माकमादरात् ॥ ६४ ॥ हिमालयो हि मनसामा मुपास्ते
ऽतिभक्तितः ॥ ततस्तस्य गृहे जन्मममप्रियकरं मतं ॥ ६५ ॥ व्यास उवाच ॥ हिमालयोऽपि तच्छ्रुत्वा त्यनुग्रहक
रं वचः ॥ बाष्पैः संलब्धकं ठाक्षो महाराज्ञी वचो ब्रवीत् ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥

दस्तितत्किं यत्पर्यंतं वक्तव्यं तत्त्वमेव सर्वज्ञातं किं न जानीहीत्यर्थः ॥ ६१ ॥ मुख्यमभिलपितं प्रार्थयंति सर्वदेति देहहेतवे देहाभिमाननिमित्तमपरंप्रार्थ
नीयमित्यर्थः ॥ ६२ ॥ या हिमालये प्रधुना भविष्यति सा शिवाय देया सा शक्तिर्नः कार्यं स्वजन्यपुत्रद्वारा तारकासुरवधरूपं करिष्यतीत्यर्थः
॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ननु हिमालये किमिति भवत्यावतारो गृह्यते तत्राह हिमालयो हीति ॥ ६५ ॥ महाराज्ञी सर्वेश्वरी भुवनेश्वरी ॥ ६६ ॥

॥६५॥

महत्तरंतंकुरूपेयस्यानुग्रहमिच्छसि ॥ नोवेत्काहंजडःस्थाणुःक्त्वंसञ्चित्स्वरूपिणी ॥ ६७ ॥ असंभाव्यंज
न्मरातैस्त्वत्पितृत्वंममानघे ॥ अश्वमेधादिपुण्यैर्वापुण्यैर्वातत्समाधिजैः ॥ ६८ ॥ अद्यप्रपंचेकीर्तिःस्याज्जग
न्मातासुनाभवत् ॥ अहोहिमालयस्यास्यधन्योसौभाग्यवानिति ॥ ६९ ॥ यस्यास्तुजठरेसंतिब्रह्मांडानांचको
ट्यः॥सैवमस्यसुताजाताकोवास्यात्तत्समोभुवि॥७०॥नजानेस्मत्पितृणांकिंस्थानंस्यान्निर्मितंपरं ॥ एतादृशा
नांवासाययेषांवशोस्तिमादृशः ॥ ७१ ॥ इदंयथाचदत्तमेकपयाप्रेमपूर्णया ॥ सर्ववेदांतसिद्धंचत्वद्रूपंब्रूहिमेत
था ॥ ७२ ॥ योगंचभक्तिसहितंज्ञानंचश्रुतिसंमतं ॥ वदस्वपरमेशानित्वमेवाहंयतोभवे ॥ ७३ ॥ व्यासउ०
इतितस्यवचःश्रुत्वाप्रसन्नमुखपंकजा ॥ वक्तुमारभतांवासारहस्यंश्रुतिगूहितं ॥ ७४ ॥ इतिश्रीदेवीभागवते
महापुराणेअष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांसप्तमस्कंधेदेवीगीतायामेकत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥ ॥ ६५ ॥

अहो अस्याहिमालयस्य जगन्माता सुता कन्या भवत् धन्यः सौभाग्यवानिति प्रपञ्चे अद्याद्यप्रभृति कीर्तिः स्यादित्यन्वयः ॥ ६९ ॥ पराशक्त्यनुग्रहे
ण प्रेमपूर्णातः करुणः स्वमुखेनैव स्वभागे पुनर्वर्णयति यस्यास्त्विति को वा स्यान्नकोपीत्यर्थः ॥ ७० ॥ येषां वंशे मादृशा भाग्यवानस्तितेषां किं
स्थानं ब्रह्मलोकाद्यपेक्षया अधिकं किं निर्मितं स्यात्तत्र जाने इति भावः ॥ ७१ ॥ पुनः प्रार्थयते इदं यथेदमति दुर्लभं त्वत्पितृत्वं यथा त्वया करुणया दत्तं तथे
त्यन्वयः ॥ ७२ ॥ त्वमेवाहमिति त्वममचाभेदो येन स्यात्तदित्यर्थः ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके सप्तमस्कंधे एकविं
शोऽध्यायः ॥ ३१ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

39

11E 4H

पंचाशद्विरथश्रोकैरात्मतत्त्वनिर्हणं ॥ करोतिजगदेवासास्वमुद्भेनेतिचोच्यते ॥ १ ॥ हिमालयंपुरस्कृत्यसर्वान्देवान्देवीवरवस्तूपदेशंकरोति
 शृण्वंत्विति व्याहरंत्याः कथयंत्याः ॥ १ ॥ अहमेवेति पूर्वतुष्टुस्तुपूर्वमहमात्मरूपिण्येवासबभूवमत्तो न्यत्किंचिदपिनासंसजातीयविजातीयस्व
 गतभेदशून्यमात्मतत्त्वमेवासेत्यर्थः तथाचभ्रुतिः अत्मावाइदमेकएवाग्रआसीन्नान्यत्किंचिदिति तदात्मरूपमिति तदेवात्मरूपंचित्संवित्परब्र
 ह्मैकनामकंभवति सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्मेत्यादिकाजगत्कारणप्रतिपादकभ्रुतिषुप्रतिपादकाःशब्दास्तस्यवात्मस्वरूपस्यवांचकाःसंतीत्यर्थः ॥ २ ॥
 तथाचसर्ववेदप्रतिपाद्यमात्मरूपमेवासेतिसमन्वयाध्यायोक्तःसर्वपदानांब्रह्मण्यात्मरूपेसमन्वयउक्तोवेदितव्यइति कीदृक्कृतदात्मरूपमस्तीतिचेत्त

श्रीदेव्युवाच ॥ शृण्वंतुनिर्जराःसर्वेव्याहरंत्यावचोमम ॥ यस्यश्रवणमात्रेणमद्रूपत्वंप्रपद्यते ॥ १ ॥ अहमे
 वासपूर्वतुनान्यत्किंचिन्नगाधिप ॥ तदात्मरूपंचित्संवित्परब्रह्मैकनामकं ॥ २ ॥ अप्रतर्क्यमनिर्देश्यमनौ
 पम्यमनामयं ॥ तस्यकाचित्स्वतःसिद्धाशक्तिर्मायेतिविश्रुता ॥ ३ ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७१ ॥

त्राह अप्रतर्क्यमिति अनुमानाविषयः श्रुत्यैकसमधिगम्यमित्यर्थः अनिर्देश्यंश्रुत्यापिजातिगुणक्रियासंज्ञाभिर्निर्देष्टुमशक्यमित्यर्थः अनौ
 पम्यमिति यदितत्सदृशोद्वितीयःपदार्थोजगत्यांस्यात्तदातदुपगमेनसत्त्वोपनेयःस्यान्नतुतदास्तितस्मादनौपम्यं अनामयमिति जायतेवर्धतइ
 त्यादिषड्भावविकारशून्यमित्यर्थः तेषांविकाराणांदेहोपाधिनिष्ठत्वादस्यचात्मनोदेहाभावात्तद्विकाररहितमनामयमेवैतदित्यर्थः एतादृशंनिर्गु
 णंकथंजगत्कारणमितिचेत्तत्राह तस्येति काचिदनिर्वचनीयात्तस्यममात्मरूपस्यस्वतःसिद्धानादिभूताशक्तिरस्ति यामायेत्यादिपदैःसर्वभ्रुतौ
 विश्रुताप्रसिद्धास्ति मायांतुप्रकृतिर्विद्यान्मायावाण्यानारसिंह्यादिषु ॥ ३ ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७१ ॥

दे.भा.स.

॥६६॥

सकीदृशवर्ततेतदाह नसतीति अत्रविरोधतइत्यावृत्त्यास्थानत्रयेपियोऽयं ब्रह्मवत्कालत्रयाबाध्यासर्तान ब्रह्मज्ञानेनबाध्यत्वरूपविरोधात् नापि
बंध्यापुत्रवदसतीन्यावहारिकसत्तावत्वविरोधात् नाप्युभयात्मासत्वासत्वाविशिष्टा विरुद्धधर्मयोःसत्वासत्त्वयोरेकत्रसहावस्थानविरोधादतएतन्न
यविलक्षणाकाचिदनिर्वचनीयावस्तुभूतास्तिसर्वदाअनादिःयावन्मोक्षस्थायिन्यस्तीत्यर्थः तथाचतापनीयश्रुतिः मायाचतमोरूपानुभूतेस्तदेतज्ज
डंमोहात्मकमनंतंतुच्छमिदंरूपमस्यास्यव्यजिकानित्यनिवृत्ताविमूढैरात्मैवदृष्टास्यसत्त्वमसत्त्वंचदर्शयतीति ॥ ४ ॥ तत्रदृष्टांतमाह पावकस्ये
ति सहजानादिर्ध्रुवायावन्मोक्षस्थायिनीमायाशक्तिर्ममास्तीत्यर्थः एतेनमायाशक्त्यासद्वितीयत्वंब्रह्मणोस्तीतिकथंजगत्सृष्टेःपूर्वब्रह्मसजाती

टी.अ.

३२

नसतीसानासतीसानोभयात्माविरोधतः ॥ एतद्विलक्षणाकाचिद्वस्तुभूतास्तिसर्वदा ॥ ४ ॥ पावकस्योष्णते
वेयमुष्णांशोरिवदीधितिः॥ चंद्रस्यचंद्रिकेवेयंममेयंसहजाध्रुवा ॥ ५ ॥ तस्यांकर्माणिजीवानांजिवाःकालाश्चसं
चरे॥अभेदेनविलीनाःस्युःसुषुप्तौव्यवहारवत् ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥

यविजातीयस्वगतभेदशून्यमितिशंकापरास्ता शक्तेःशक्त्यनतिरेकात् नहिवन्दिशक्तिर्वन्हेःपृथक्त्वेनक्वचित्कदाचित्गृह्यते किंचद्वितीयः
सत्यपदार्थोनास्तीत्येवैकमेवाद्वितीयंब्रह्मोतिश्रुतेरर्थः तथाचासस्यामाययासद्वितीयत्वेपिदोषाभावान् ॥ ५ ॥ नन्वेतादृश्याभुवनेश्वर्यास्तवोच्चनी
चजीवसज्जनेवैषम्यनैर्घृण्यदोषआपतेदितिचेत्तत्राह तस्यांकर्माणीति जीवाःकर्माणिकालाश्चसर्वेअनादयस्तेचसुषुप्तौयथाप्रतिदिवसव्यवहारोली
नोभवतितथासंचरेप्रलयकालेतस्यांमायायामभेदेनलीनाःस्युः तथाचयथायथायस्यजीवस्यकर्माणिभवन्तितथाप्रायाफलंदीयतइतिनममवैषम्य
नैर्घृण्यदोषगर्भोपीतिभावः ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥

॥६६॥

तादृशीममशक्तिर्जीवकर्मकालविशिष्टातया युक्ताहंनेर्गुणापिबीजात्मतांजगत्कारणतांगतास्मीत्याह स्वशक्तेऽश्वेति ननुतवशक्तिर्यथात्वांनव्या
मोहयतितथाजीवशक्तिरपिजीवनव्यामोहयेत्तथाचमुक्ताएवजीवाइतिसृष्टिर्निर्धारिकेतिचेत्तत्राह स्वाधारावरणादिति स्वमायातस्याधारआत्मा
तस्यावरणादाच्छादनादस्यामायायादोषत्वमप्यस्तीत्यर्थः अयंभावः मायायारूपद्वयंमायाविद्यात्मकमस्ति मायाचाविद्याचस्वयमेवभवतीतिश्रुतेः
तत्रप्रथमायाममशक्तिर्मायातस्याः स्वाश्रयव्यामोहकारित्वाभावेपिजीवाश्रितीविद्यास्वरूपस्यद्वितीयमायास्वरूपस्यस्वाश्रयव्यामोहकारित्वमस्त्येवेति
तज्जीवमोक्षार्थसृष्टिः सार्थकैवेति ॥ ७ ॥ ननुतथापिलौकिककार्यमात्रंप्रत्युपादानकारणनिमित्तकारणयोरपेक्षास्तिषटादिपुदर्शनाब्जगतउत्पा

स्वशक्तेश्चसमायोगादहंबीजात्मतांगता ॥ स्वाधारावरणात्तस्यादोषत्वंचसमागतं ॥ ७ ॥ चैतन्यस्यसमायो
गान्निमित्तत्वंचकथ्यते ॥ प्रपंचपरिणामाच्चसमवायित्वमुच्यते ॥ ८ ॥ केचित्तांतपइत्याहुस्तमःकेचिज्जडंपरे
॥ ज्ञानंमायांप्रधानंचप्रकृतिंशक्तिमप्यजां ॥ ९ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दनकर्त्रीत्वंत्वेकैवेति कथमत्रकारणद्वयसद्भावइतिचेत्तत्राह चैतन्यस्येति समायोगान्मायासमागमाच्चैतन्यस्यमायायांप्रतिबिंबितस्याचिदाभा
सस्यनिमित्तत्वंनिमित्तकारणत्वंकथ्यतइत्यर्थः प्रपंचेति प्रपंचरूपेणपरिणामात्समवायित्वमुपादानकारणत्वमुच्यतेमायायाऽतिशेषः चिदाभा
सोनिमित्तकारणमायोपादानकारणमिति विभागः अधिष्ठानभूतंशुद्धबिंबभूतंचैतन्यंतुविवर्तोपादानमित्यर्थात्सिद्धं ॥ ८ ॥ तस्यामायायाःसद्भा
वप्रतिपादकानिवचनानिश्रुतिप्रोक्तानिकथयति केचित्तामिति केचिच्छाखिनस्तांमायांनपइतिवदंतीत्यर्थः तथाचश्रुतिः तपसाचीयतेब्रह्मेतिमुं
डके तमःकेचिदितितथाचश्रुतिः नासदासीन्नोसदासीदित्यादि तमआसीत्तमसागूळहमग्रेइति तदेतज्जडमितितापनयिजडत्वमुक्तं सण्क्ष
तलोकांनुसृजाइतिश्रुतौज्ञानत्वमुक्तं अजामायाप्रधानप्रकृतिशक्तिपरादयःशब्दाःश्वेताश्वेतरशाखायांप्रसिद्धाः तथाचसर्ववेदसंमतेयमायेति
भावः ॥ ९ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.स.

॥६७॥

॥ १० ॥ तदेवाह एवमिति ननुमायायाजडत्वंमिथ्यात्वंचकुतश्चेत्तत्राह तस्याइति तस्यादृश्यत्वात्स्वाधिष्ठानज्ञाननाशयत्वाच्चजड
त्वंमिथ्यात्वंचेत्यर्थः यद्यत्तदृश्यं तत्तज्जडं यथाघटादीत्यादिव्याप्तेः स्वाधिष्ठानज्ञाननाशयत्वंमिथ्यात्वमिति मिथ्यात्वलक्षणात् ॥ ११ ॥ एवंमायाया
जडत्वंमिथ्यात्वंचोपपाद्य आत्मनस्तदुभयत्वंनास्तित्युपपादयति चैतन्यस्येति यदिचैतन्यस्यदृश्यत्वंस्यात्तर्हि तज्जडमेवभविष्यति यद्यदृश्यं त
त्तज्जडमिति व्याप्तेस्तथाच सर्वस्य जडत्वात्प्रकाशकाभावाज्जगदाध्यप्रसंगस्तस्मान्न तद्दृश्यमित्यर्थः ननु तस्य दृश्यत्वाभावे तदस्ति त्वेप्रमाणाभा
वात्तदभाव एव प्रसज्येत चेत्तत्राह स्वप्रकाशं चेति यदीदं चैतन्यं परप्रकाशं स्यात्तर्हि सपरः केनान्येन प्रकाशितः सोऽप्यन्यः केन प्रकाशित इत्यन
विमरी इति तां प्राहुः शैवशास्त्रविशारदाः ॥ अविद्यामितरे प्राहुर्वेदतत्त्वार्थचिंतकाः ॥ १० ॥ एवं नानाविधानि
स्युर्नामानि निगमादिषु ॥ तस्याजडत्वंदृश्यत्वाज्ज्ञाननाशात्ततो सती ॥ ११ ॥ चैतन्यस्य न दृश्यत्वं दृश्यत्वेन
डमेव तत् ॥ स्वप्रकाशं च चैतन्यं न परेण प्रकाशितं ॥ १२ ॥ अनवस्थादोषसत्त्वान्नस्वेनापि प्रकाशितं ॥
कर्मकर्तृविरोधः स्यात्तस्मात्तद्दीपवत्स्वयं ॥ १३ ॥ प्रकाशमानमन्येषां भासकं विद्धि पर्वत ॥ अतएव च नित्यत्वं
सिद्धं संवित्तनोर्मम ॥ १४ ॥ जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यादौ दृश्यं स्य व्यभिचारतः ॥ संविदोऽव्यभिचारश्च नानुभूतोऽस्ति
कर्हिचित् ॥ १५ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥

वस्था स्यात् न च स्वेनापि स्वप्रकाशितमेकस्यैव कर्तृत्वकर्मत्वविरुद्धधर्मद्वयवत्त्वाभावात्तस्मादनिच्छतापि यथा दीपः स्वयंप्रकाशः परप्रकाशकश्च तद्
न्मदीयं चैतन्यमपि हे पर्वत स्वयं भासमानमन्येषां सूर्यादीनां भासकं विद्धि त्यर्थः तथा च श्रुतिः न तत्र सूर्यो न चंद्रतारं केन भाविद्युतो भांतिकुतो यमग्निः
तमेव भांतमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभातीति येन सूर्यस्तपति तेजसे दृष्टि च ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ यस्माद्वेतोर्नित्यत्वं संविद्रूपस्यो
क्तं तमेव हेतुमुपपादयति जाग्रदिति अवस्थात्रयेपि दृश्यस्य पदार्थजातस्य व्यभिचारोऽयं तत्संविदोऽव्यभिचाराभावश्च यतस्तस्मात्संविदोऽनित्यत्व
मित्यर्थः ननु संविदोऽप्यव्यभिचारोऽस्तु तत्राह संविदइति यो हं जागरितं पश्यामि स एवाहं स्वप्नं पश्यामि स एवाहं सुषुप्तं पश्यामीत्यनुभवे यथा वस्था
त्रयस्याभावेऽनुभूयते न तथा कर्हिचित् कदापि संविदोऽभावोऽनुभूयते तस्मादनिच्छतापि संविदोऽनित्यत्वमाश्रयणीयमित्यर्थः ॥ १५ ॥

टी.अ.
३२

॥६७॥

ननुबौद्धैः संविदोप्यभावोनुभूयते अतएव तत्रैवायत्सत्क्षणात्मिकमिति व्याख्याज्ञानस्याप्यनित्यत्वमिच्छंतीति चेत्तत्राह यादितस्यापीति यदि तस्य
 संविद्वृत्ताभावस्तानुभवस्तर्हि येन साक्षिणा तस्य संविद्वृत्तस्यायमभावोनुभूतः स एवात्र साक्षी संविद्वृत्तज्ञानशरीरो बशिष्ठ इति साक्षिज्ञानं नित्यमेव सर्वै
 रंगीकर्तव्यमित्यर्थः ॥ १६ ॥ तत्र शास्त्राविदनुभवप्रमाणयति अतएवेति अधुनात्मनः सुखरूपत्वमुपपादयति आनंदरूपतेति अस्याः संवि
 दौ यतः परप्रेमास्पदत्वमनुभूयते तस्मादस्याः संविद आनंदरूपतासुखरूपतास्तीत्यर्थः ॥ १७ ॥ तत्रानुभवदंशयति मानभूवंहीति हितोऽहं भावमिति न किंतु भूयासमेवेति प्रेमसर्वलोकस्यात्म
 स्य नहि प्रेमास्पदत्वं परे दृश्यते ॥ १७ ॥ तत्रानुभवदंशयति मानभूवंहीति हितोऽहं भावमिति न किंतु भूयासमेवेति प्रेमसर्वलोकस्यात्म

यदितस्यैव नुभवस्तर्ह्ययं येन साक्षिणा ॥ अनुभूतः स एवात्र शिष्टः संविद्वृत्तः पुरा ॥ १६ ॥ अतएव च नित्यत्वं प्रा
 क्तं सच्छास्त्रकोविदैः ॥ आनंदरूपता चास्याः परप्रेमास्पदत्वतः ॥ १७ ॥ मानभूवंहि भूयासमिति प्रेमात्मनि स्थि
 तं ॥ सर्वस्यान्यस्य मिथ्यात्वादसंगत्वं स्फुटं मम ॥ १८ ॥ अपरिच्छिन्नताप्येवमत एवमतामम ॥ तच्च ज्ञानं नात्म
 धर्मो धर्मत्वे जडतात्मनः ॥ १९ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ १९ ॥

निश्चितमस्ति न ह्येतदात्मनः सुखरूपत्वाभावे संभवति तस्मात्प्राणिमात्रस्यानुभवादानंदात्मता संविदोस्त्येवेत्यर्थः आत्मनो संगत्वमुपपादयति स
 र्वस्येति सर्वप्रपञ्चस्य मायानिर्मितत्वेन मिथ्यात्वान्मिथ्यापदार्थस्य सर्पादेरज्वादिष्वसंबंधइवात्मनोपिमिथ्याप्रपञ्चेनासंबंधादसंगत्वं स्पष्टमेवेत्यर्थः
 ॥ १८ ॥ सर्वस्य परिच्छेदकस्य मिथ्यात्वादेवात्मनः परिच्छेदोपि नास्तीत्याह अपरिच्छिन्नेति अतएव सर्वस्य मिथ्यात्वादेव ममात्मरूपि
 ण्या अपरिच्छिन्नतापि मतेत्यर्थः अत्र केचित् ज्ञानस्वरूपो नात्मा किं त्वात्मनो धर्मो ज्ञानमिति वदंति तन्मतं खंडयति तच्च ज्ञानमिति यदि ज्ञानमात्मध
 मः स्यात्तदात्मनो जडत्वापत्तिः ज्ञानातिरिक्तस्य जडत्वात्तस्माज्ज्ञानं नात्मनो धर्म इत्यर्थः ॥ १९ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ १९ ॥

दे.भा.स.

॥७॥

किंच ज्ञानस्य जडशेषत्वं घटादिष्वदर्शनान्न कुत्रापि दृष्टं न च संभवति तमः प्रकाशयोस्तयोर्धर्मधर्मित्वमित्यर्थः नन्वात्मानजडः किंतु चिद्रूप एवेति तत्तद्धर्मत्वं ज्ञानस्य संभवतीति चेत्तत्राह चिद्धर्मत्वमिति उभयोश्चितोरेकत्वादात्मनो ज्ञानस्य च चिद्रूपस्य न धर्मधर्मभावः संभवतीत्यर्थः भेदे हि सति धर्मधर्मभावः यदि पुनर्ज्ञानमात्मनश्चिद्रूपादिन्न स्वीक्रियते तर्हि तत्ज्ञानं चितोभिन्नमचिदेव स्यादिति तदुक्तं सूतसंहितायां यज्ञवैभवखड्गं चितोन्यशेषताभावाच्चितोचिच्छेषतानाह शरावादिपदार्थानां चेतनत्वप्रसक्तितः चिच्छेषत्वं च नास्त्येव चितश्चिन्नहिभिद्यते भिद्यते चेदचिच्छित्तस्याच्चितोचित्वांवेरुह्यते तथा चिच्छेतनस्यापि न शेषत्वमवाप्नुयात् शेषत्वे सति तत्सिद्धिस्तत्सिद्धौ शेषता चितः अतो न्यशेषता लोके चितोभ्रांत्या प्रतीयत इति ॥ २० ॥ उपसंहरति तस्मादिति तस्मादात्मा ज्ञानरूप एवेत्यर्थः ॥ २१ ॥ इत्थं सृष्टः पूर्वस्वशक्तिकस्या

ज्ञानस्य जडशेषत्वं न दृष्टं न च संभवि ॥ चित्धर्मत्वं तथानास्ति चितश्चिन्नहिभिद्यते ॥ २० ॥ तस्मादात्मा ज्ञानरूपः सुखरूपश्च सर्वदा ॥ सत्यः पूर्णोऽप्यसंगश्च द्वैतजालविवर्जितः ॥ २१ ॥ स पुनः कामकर्मदियुक्तया स्वीयमायया ॥ पूर्वानुभूतसंस्कारात्कालकर्मविपाकतः ॥ २२ ॥ अविवेकाच्च तत्त्वस्य सिसृक्षावान्प्रजायते ॥ अबुद्धपूर्वः सर्गोऽयं कथितस्तेन गाधिप ॥ २३ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥

त्वरूपस्य स्थितिमुक्तानंतरं तस्मादात्मनः सृष्टिमाह सपुनरिति स अत्मा पुनः कामइच्छाकर्मादृष्टमनेकविधं आदिना जीवास्तद्युक्तायामायाशक्तिस्तया पूर्वयोजगतोऽनुभवस्तज्जन्योऽयः संस्कारस्तस्मादेतौ कालेन कृतोऽयः कर्मणां विपाको नाम परिपाकः फलदानायोन्मुखरूपस्तस्माच्च हेतोरित्यर्थः ॥ २२ ॥ तत्त्वस्य चतुर्वैशतितत्त्वात्मकस्याविवेकाच्च तस्य तत्त्वस्य पृथक्करणार्थमिति तात्पर्यं सिसृक्षावान्सर्जनेच्छावान्जायत इत्यर्थः यथा बीजमुच्छ्रूयं भवति तथैव परमात्मापि कालकर्मसंस्कारवशात् प्राणिनस्तत्कर्मफलभोगसमये प्राप्ते जगत्सर्जनेच्छावान्भवति यथा च सुप्तः पुरुषः पूर्वसंस्कारवशेन जागर्तते तद्वत्परमात्मापि प्रलयरूपस्वापावस्थतोऽर्जुनिति प्रलयो हि परमेश्वरस्य स्वापः अष्टादिपूर्वइति साचेयं स्वापाब्जागरणरूपावस्थान्बुद्धिकृता तदानीं बुद्धेरभावात् किंतु प्राणिनः कर्मसंस्कारकृतेति अययः सर्गो जागरणरूपस्योत्पत्तिः सोऽबुद्धिकृतो ज्ञेयः संस्कारकृतो ज्ञेय इत्यर्थः ॥ २३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

टी.अ.
३२

॥६८॥

एतन्स्वरूपस्य सर्वोत्तमत्वमाह एतद्वियदिति । एतन्मुख्यमलौकिकं लोकातीतरूपमित्यर्थः तस्य नामान्तराणि वेदोक्तान्याह अव्याकृतमिति ॥ २४ ॥ २५ ॥ सर्वप्राणिनां कर्माणि वृत्तीभूतानि येषां सर्वकर्मसाक्षीत्यर्थः इच्छाज्ञानक्रियाश्रयमिति तथा च श्रुतिः श्वेताश्वतरे न तस्य कार्यकरणं च विद्यते न तत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते परास्य शक्तिर्विविधैव भूयते स्वाभाविकी ज्ञानबलक्रिया चेति पुराणां तरेपि इच्छाज्ञानक्रिया चैव रौद्राब्राह्मणवैष्णवी त्रिधा शक्तिस्थिता यत्र तत्परंब्योतिरोद्भिती हींकारमंत्रस्येदं पूर्ववाच्यामित्याह हींकारेति ॥ २६ ॥ एवमादितत्त्व

एतद्वियन्मया प्रोक्तं मम रूपमलौकिकं ॥ अव्याकृतं तदव्यक्तं मायशबलमित्यपि ॥ २४ ॥ प्रोच्यते सर्वशास्त्रेषु सर्वकारणकारणं ॥ तत्त्वानामादिभूतं च सच्चिदानंदविग्रहं ॥ २५ ॥ सर्वकर्मवृत्तीभूतमिच्छाज्ञानक्रियाश्रयं ॥ हींकारमंत्रवर्च्यं तदादितत्त्वं तदुच्यते ॥ २६ ॥ तस्मादाकाश उत्पन्नः शब्दतन्मात्ररूपकः ॥ भवेत्स्पर्शात्मको वायुस्तेजोरूपात्मकं पुनः ॥ २७ ॥ जलं रसात्मकं पश्चात्ततो गंधात्मिका धरा ॥ शब्दैकगुण आकाशो वायुः स्पर्शरवान्वितः ॥ २८ ॥ शब्दस्पर्शरूपगुणं तेज इत्युच्यते बुधैः ॥ शब्दस्पर्शरूपरसैरापेवेदगुणाः स्मृताः ॥ २९ ॥ शब्दस्पर्शरूपरसगंधैः पंचगुणा धरा ॥ तेभ्यो भवन्महत्सूत्रं यल्लिंगं परिचक्षते ॥ ३० ॥ सर्वात्मकं तत्संश्लेषं सूक्ष्मदेहो यमात्मनः ॥ अव्यक्तं कारणो देहः स चोक्तः पूर्वमेव हि ॥ ३१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥

स्य स्वस्य महिमानमुपवर्ण्य तस्मादादितत्त्वात् हींकारवाच्यादात्मन आकाशः संभूत इत्यादिक्रमेण अपंचीकृतं भूतमृष्टिमाह तस्मादाकाश इति अपंचीकृत आकाश उत्पन्न इत्यर्थः ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ अधुना लिंगदेहोत्पत्तिमाह तेभ्य इति तेभ्यः सूक्ष्मभूतेभ्यो महद्वाक् सूत्रमभवत् यत्सूत्रं लिंगमिति परिचक्षते लिंगशब्देनोच्यते इत्यर्थः तेभ्यो भूतेभ्यो वक्ष्यमाणक्रमेण लिंगदेह उत्पन्न इत्यर्थः ॥ ३० ॥ तत्र सूत्रशब्देन वायुर्गृह्यते वायुर्वैसूत्रं वायुन वैसूत्रेण सर्वाणि भूतानि संबन्धानीति श्रुतेः तत्सूत्रं सर्वात्मकं सर्वप्राणात्मकं भवति तत्सूत्रं परमात्मनः सूक्ष्मदेह इत्यर्थः यत्पूर्वमव्यक्तमित्युक्तं तत्परमात्मनः कारणदेह इत्याह अव्यक्तं कारणो देह इति ॥ ३१ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥

दे.भा.स.

॥६९॥

यस्मिन्जगद्बीजरूपं स्थितं यस्माच्च लिङ्गदेहोद्भवस्तदव्यक्तमिति पूर्वेणान्वयः इत्थं परमात्मनः सकाशादपञ्चीकृतभूतोत्पत्तिमुक्त्वामध्येकारण
देहलिङ्गदेहस्वरूपं सूक्ष्मं सूक्ष्मभूतोत्पत्तिप्रसंगेनोक्त्वा अपञ्चीकृतभूतोत्पत्तिमाह ततः स्थूलानीति ततोपञ्चीकृतभूतोत्पत्त्यनंतरमित्यर्थः ॥ ३२ ॥
पञ्चीकरणप्रकारमेवाह पूर्वोक्तानीति यान्यपञ्चीकृतभूतानि पूर्वमुक्तानि तन्मध्ये एकैकं भूतं द्विधा विभजेत् तत्राप्येकैकभूतस्य योर्धोभागस्तंचतुर्धा
विभजेत् विभज्यस्वस्मात्स्वस्मादितरद्वयं ततस्तस्य योर्द्वितीयोऽर्धभाग आत्मकस्तस्मिन् योजनात्ते सर्वे पञ्चपदार्थाः पञ्चावयवा भवन्तीत्यर्थः ॥ ३३ ॥

टी.अ.

३२

यस्मिन्जगद्बीजरूपं स्थितं लिङ्गोद्भवो यतः ॥ ततः स्थूलानि भूतानि पञ्चीकरणमार्गतः ॥ ३२ ॥ पञ्चसंख्या
निजायंते तत्प्रकारस्त्वथोच्यते ॥ पूर्वोक्तानि च भूतानि प्रत्येकं विभजे द्विधा ॥ ३३ ॥ एकैकं भागमेकस्य चतु
र्धा विभजेद्विरे ॥ स्वस्वेतरद्वितीयांशे योजनात्पञ्चपञ्चते ॥ ३४ ॥ तत्कार्यं च विराड्देहः स्थूलदेहो यमात्मनः ॥
पञ्चभूतस्थसत्त्वांशैः श्रोत्रादीनां समुद्भवः ॥ ३५ ॥ ज्ञानेन्द्रियाणां राजेन्द्रप्रत्येकं मिलितैस्तुतैः ॥ अंतःकरणमेकं
स्याद्भृत्तिभेदाच्चतुर्विधं ॥ ३६ ॥ यदा तु संकल्पविकल्पकृत्यंतदा भवेत्तन्मन इत्यभिख्यं ॥ स्याद्बुद्धिसंज्ञं च यदा
प्रवेत्ति सुनिश्चितं संशयहीनरूपं ॥ ३७ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥

॥ ३४ ॥ एवं पञ्चीकृतभूतानां यत्कार्यं तत्कार्यं विराड्देहो भवतीत्यर्थः स विराड्देहः परमेष्ठिनस्य स्थूलदेहो भवतीत्याह स्थूलदेहो यमात्मन इति
आत्मनो ममेत्यर्थः अथेन्द्रियांतःकरणप्राणानां पूर्वोक्तलिङ्गदेहांतर्गतानां मुत्पत्तिमाह पञ्चभूतानां ये सत्त्वांशास्तैः प्रत्येकं ज्ञानेन्द्रिया
णि पञ्च भवन्ति ॥ ३५ ॥ मिलितैस्तुतैः सत्त्वांशैरंतःकरणं भवतीत्याह मिलितैस्तुतैरिति ॥ ३६ ॥ भृत्तिभेदस्वरूपमाह यदा त्विति संकल्पविकल्प
कृत्यं यदांतःकरणं करोति तदा तदंतःकरणं मन इत्यभिख्यं मनः संज्ञकं भवतीत्यर्थः यदा संशयहीनं यथा स्यात्तथा सुनिश्चितं वस्तु तदंतःकरणं प्रवे
त्ति तदा तद्बुद्धिसंज्ञकं भवतीत्यर्थः ॥ ३७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥६९॥

यदानुसंधानवृत्तिर्भवति तदा तः करणस्य चित्तमिति खल्वेत्यर्थः अहंकृत्यात्मवृत्त्येति आत्मशब्दस्वरूपपरः अहंकृतिस्वरूपवृत्त्या तु तदंतःकरणमहं
कारतांगतमहंकारसंज्ञांलभत इत्यर्थः ॥ ३८ ॥ अथ कर्मेन्द्रियाणामुत्पत्तिमाह तेषामिति तेषां पंचभूतानां प्रत्येकं रजोशैः कर्मेन्द्रियाणि पंचोत्प
द्यंतैर्मिलितैस्तुरजोशैः प्राणापानादिपंचवृत्त्यात्मकः प्राणो भवतीत्यर्थः ॥ ३९ ॥ तेषां वायूनां वृत्तिभेदात् तेषां स्थानानि नामानि चाह हृदि प्राण इति
॥ ४० ॥ अधुना पूर्वोक्तलिङ्गदेहस्य यावत्स्वरूपमुच्यते ज्ञानेन्द्रियाणीति धिया च सहितमन इति मनोबुद्धिश्चेत्यर्थः ॥ ४१ ॥ एतत्सप्तदशावय

अनुसंधानरूपं तच्चित्तं च परिकीर्तितं ॥ अहंकृत्यात्मवृत्त्या तु तदहंकारतांगतं ॥ ३८ ॥ तेषां रजोशैर्जातानि क्रमा
त्कर्मेन्द्रियाणि च ॥ प्रत्येकं मिलितैस्तैस्तु प्राणो भवति पंचधा ॥ ३९ ॥ हृदि प्राणो गुदे पानो नाभिस्थस्तु समानकः
॥ कंठदेशेऽप्युदानः स्याद्द्वयानः सर्वशरीरगः ॥ ४० ॥ ज्ञानेन्द्रियाणि पंचैव पंचकर्मेन्द्रियाणि च ॥ प्राणादिपंचकंचै
व धिया च सहितमनः ॥ ४१ ॥ एतत्सूक्ष्मशरीरं स्यान्ममलिङ्गं यदुच्यते ॥ तत्र या प्रकृतिः प्रोक्ता साराजन् द्विवि
धा स्मृता ॥ ४२ ॥ सत्त्वात्मिका तु माया स्यादविद्या गुणमिश्रिता ॥ स्वाश्रयं या तु संरक्षेत्सामायेति निगद्यते
॥ ४३ ॥ तस्यां यत्प्रतिबिंबं स्याद्विबभूतस्य चेशितुः ॥ स ईश्वरः समाख्यातः स्वाश्रयज्ञानवान्परः ॥ ४४ ॥

वकं सूक्ष्मशरीरं मम भवति यल्लिङ्गसंज्ञकं भवति तदित्याह एतत्सूक्ष्ममिति इत्येदेहत्रयस्वरूपमुक्त्वा रजोवैश्वराविभागकारणमाह तत्र या प्रकृतिरि
ति तत्रैका शुद्धसत्त्वाभिधाना सामायाद्वितीयामलिनसत्त्वप्रधाना सा विद्येति माया विद्ययोर्भेदः ॥ ४२ ॥ तत्र या स्वाश्रयं रक्षेन्न वृणुयात्सामायेति नि
गद्यते ॥ ४३ ॥ तस्यामिति तस्यां स्वाश्रया व्यामोहकारिण्यां शुद्धसत्त्वप्रधाना या माया यामीशितुः परमात्मनो यत्प्रतिबिंबं तत्तत्प्रतिबिंबमी
श्वरः समाख्यातः सचेश्वरः स्वाश्रयं व्यापकं ब्रह्मतत्त्वज्ञानवान् भवति मायया तदाधारब्रह्मणो नावरणात् ॥ ४४ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.स.

॥७०॥

किंचित्तस्यव्यापकत्वात्कुत्रापितत्ज्ञानस्यावरणाभावात्सर्वज्ञोभवति अचिन्त्यमायाशक्तिमत्त्वात्सर्वकर्ताचसर्वानुग्रहकर्ताचभवतीत्यर्थः अविद्या
यामिति मलिनसत्त्वप्रधानायामविद्यायांयत्प्रतिविंबंतज्जीवसंज्ञंभवतीत्युत्तरेणान्वयः ॥ ४५ ॥ तज्जीवसंज्ञंमलिनसत्त्वप्रधानाविद्यायातदाश्र
यस्यस्वरूपभूतानंदस्यावरणात्सर्वदुःखाश्रयमसर्वज्ञमव्यापकंचभवतीत्यर्थः द्वयोरपीति द्वयोरपीद्वरजीवयोर्देहत्रयंपूर्वोक्तंभवति ईश्वरस्यावर
णाभावेपिपक्षेपस्यसत्त्वात् अत्राविद्येयेत्यनेनमायाविद्ययोर्भूयोरपिग्रहणं ॥ ४६ ॥ देहत्रयाभिमानेति उभयोरपिदेहत्रयाभिमानान्नामत्रयंभव
तीत्यर्थः तत्रजीवस्यनामत्रयंवदति प्राज्ञस्त्विति कारणदेहाभिमानायःसप्राज्ञः सूक्ष्मदेहाभिमानीतुतैजसः ॥ ४७ ॥ स्थूलदेहीति स्थूल

सर्वज्ञःसर्वकर्ताचसर्वानुग्रहकारकः ॥ अविद्यायांतुयत्किंचित्प्रतिविंबंनगाधिप ॥ ४५ ॥ तदेवजीवसंज्ञंस्या
त्सर्वदुःखाश्रयंपुनः ॥ द्वयोरपीहसंप्रोक्तदेहत्रयमविद्याया ॥ ४६ ॥ देहत्रयाभिमानाच्चाप्यभून्नामत्रयंपुनः ॥
प्राज्ञस्तुकारणात्मास्यात्सूक्ष्मदेहीतुतैजसः ॥ ४७ ॥ स्थूलदेहीतुविश्वास्यस्त्रिविधःपरिकीर्तितः ॥ एवमीशो
पिसंप्रोक्तैशसूत्रविराट्पदैः ॥ ४८ ॥ प्रथमोव्यष्टिरूपस्तुसमष्ट्यात्मापरःस्मृतः ॥ सहिसर्वेश्वरःसाक्षाज्जी
वानुग्रहकाम्यया ॥ ४९ ॥ करोतिविविधंविश्वंनानाभोगाश्रयंपुनः ॥ मच्छक्तिप्रेरितो नित्यंमयिराज
न्प्रकल्पितः ॥ ५० ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥

देहाभिमानीतुविश्वसंज्ञकइत्यर्थः एवमीश्वरोपिदेहत्रयाभिमानादीशसूत्रविराट्पदैःसंप्रोक्तःकथितइत्यर्थः ॥ ४८ ॥ प्रथमइति प्रथमोजी
वोव्यष्टिरूपोव्यष्टिदेहत्रयाभिमानीत्यर्थः परईश्वरस्तुसमष्टिःसमष्टिदेहाभिमानीत्यर्थः ईश्वरस्यमहिमानंवर्णयति सहिसर्वेश्वरइति तस्यस्वानुभवा
नंदेननिरंतरंनित्यतृप्तत्वेपिकेवलंजीवानुग्रहकाम्ययाजीवानांमोक्षोभवत्वितिच्छयानानोविधंविश्वंनानाभोगाश्रयंचयतीतिकरुणासमुद्रईश्वरइ
त्यर्थः ॥ ४९ ॥ सोपीति हेराजन्सोपीश्वरोममब्रह्मरूपिण्यायामायाशक्तिस्तयाप्रेरितएवसर्वकरोतियतःसईश्वरोमयिब्रह्मरूपिण्यांरज्जुसर्प
वदेवकल्पितस्ततोमच्छत्तयधीनएवेत्यर्थः ॥ ५० ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५० ॥

टी.अ.
३२

॥७०॥

इति श्रीदेवीभागवततिलके सप्तमस्कंधे देवीगीतायां द्वात्रिंशोऽध्यायः ॥ ३२ ॥ षट्पंचाशन्महापद्मैरपवादपुरःसरं महाघोरं विश्वरूपं दर्शितं
 चैतिकथ्यते ॥ २ ॥ इत्यमध्यारोपमुक्तापवादमाह मन्मायेति हे पर्वतययामान्मया शक्त्या चराचरं सर्वजगत्कृतं सापिमायामत्तामस्वरूपात्पृथ-
 ङ्नास्ति तस्यामयिकल्पितत्वेन मिथ्यात्वान्मिथ्यापदार्थस्य चाधिष्ठानसत्तातिरिक्तसत्ताभावात् तस्मादहमेवास्मि परमार्थतो नान्यत्किंचिद्वस्वत-
 रमस्तीत्यर्थः ॥ १ ॥ ननु सर्वथा द्वैताभावे जगत्कथं भासते इति चेत्तत्राह व्यवहारेति अनाद्यविद्याभ्रान्तानां यो व्यवहारस्तत्तद्वशात्तद्विद्यमा-
 याविद्येति वेश्रुता भवति तत्त्वदृष्ट्या तु ब्रह्मदृष्ट्या तु सानैवास्तिकिं तु तत्त्वमेव केवलमस्तीत्यर्थः नहि भ्रान्तदृष्ट्या रज्जुसर्पवत्कारणाज्ञानसत्त्वेऽपि र-

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे सप्तमस्कंधे देवीगीतायां द्वात्रिंशोऽध्यायः ॥ ३२ ॥ देव्युवाच ॥ मन्माया श-
 क्तिसंस्कृतं जगत्सर्वं चराचरं ॥ सापिमतः पृथङ्मायानास्त्येव परमार्थतः ॥ १ ॥ व्यवहारदृशा सेयं विद्यामा-
 येति विश्रुता ॥ तत्त्वदृष्ट्या तु नास्त्येव तत्त्वमेवास्तिकेवलं ॥ २ ॥ साहं सर्वजगत्सृष्ट्वा तदंतः प्रविशाम्यहं ॥ मायां
 कर्मादिसहिता गिरेः प्राणपुरःसरा ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥

रज्जुदृष्ट्या किंचिदपि तद्वर्तत इति भावः तथा च श्रुतिः निर्बोधो न चोत्पत्तिर्न ब्रह्मो न च साधकः न मुमुक्षुर्न वै मुक्त इत्येषा परमार्थतोति तापनीये च अ-
 सत्त्वमरजस्कमतमस्कममायमिति ब्रह्मवर्णितं ॥ २ ॥ नन्यादिप्रपंचो मिथ्या तर्हि तदंतःपातिर्जीवोऽपि मिथ्येति वक्तव्यं तथा जीवस्य मिथ्यात्वे मो-
 क्षदशायां तस्यावस्थानाभावे न स्वनाशार्थं कदापि जीवो न यत्नं कुर्यादिति मोक्षशास्त्रं न्यर्थमेवेति चेत्तत्राह साहमिति हे गिरेः माया चाविद्या कर्माणि
 च तत्तत्प्राणिनां नाना संस्काराश्चैतैः सहिता ह मेव कूटस्थ ब्रह्मरूपा सर्वजगत्प्रथमतः सृष्ट्वा तदंतस्तन्मध्ये घटे आकाशवदादर्शं प्रतिबिम्बवदाचिदा-
 भासरूपेण प्राविशामि तत्रापि प्राणपुरःसरा प्राणमग्रतः कृत्वा प्राविशामि ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥

दे.भा.स.

॥७१॥

किमर्थमिति चेत्तत्राह लोकांतरगतिरिति यद्यहंप्राणपुरःसरं कृत्वा प्राणाभिमानं कृत्वा न प्रवेक्ष्यामि ताहिंममव्यापकत्वात् लोकांतरगमनादिकं जननमरणादिव्यवहारं च कथं स्यान्न हि व्यापकस्य गमनागमनं देहसंबंधो देहत्यागश्च संभवति इति हेतुना तत्सिद्ध्यर्थं प्राणपुरःसरं प्रविशामि तस्मिंश्च प्राणे स्वीकृते सति तस्य देहांतरप्रवेशे जन्मतत्त्यागे मरणंतथैव लोकांतरगतिश्चेति सर्वसिद्ध्यतीति अयं भावः न केवलं जीवत्वं चिदाभासस्यैव येन पूर्वोक्तं दूषणं भवेत् किंतु हि अहं कूटस्थरूपिणी तथांतःकरणंतदाश्रयभूता विद्या चिदाभासश्चेति चतुष्टयं मिलित्वा जीवत्वं तथा च ज्ञानेन विद्यांतःकरणं चिदाभासानां शेषिकूटस्थब्रह्मांशस्य मुक्ताववशेषान्न जीवस्य मोक्षार्थमप्रवृत्तिर्न मोक्षशास्त्रानर्थक्यमिति ननु तर्हि तवैकत्वाद् जीवस्याप्येकत्वं

टी.अ.

३३

लोकांतरगतिर्नो चेत्कथं स्यादिति हेतुना ॥ यथा यथा भवंत्येवमायाभेदास्तथा तथा ॥ ४ ॥ उपाधिभेदाद्भिन्नहंघटाकाशादयो यथा ॥ उच्चनीचादिवस्तूनि भासयन्भास्करः सदा ॥ ५ ॥ न दुष्यति तथैवाहं दोषैर्लिप्ता कदापि न ॥ मयि बुद्ध्यादिकर्तृत्वमध्यस्यैवापरे जनाः ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

स्यादिति चेत्तत्राह यथा यथेति यथा व्यापक एक एवाकाशो घटाद्युपाधिभेदेन यथा भिद्यते तथा विधानेकत्वस्वीकारेणा विद्यानामंतःकरणानां च भेदात् कूटस्थोपि भिद्यत इति जीवबहुत्वमप्युपपन्नमेवेत्यर्थः तथा च श्रुतिः इद्रोमायाभिः पुरुरूप ईयते युक्ता ह्यस्य हरयः शतादशे स्य वै हरय इति ॥ ४ ॥ ननु तर्हि तव ब्रह्मदंतःपातित्वेन तद्दोषेण दुष्टत्वमपि स्यात्तत्राह उच्चनीचादिवस्तूनीति यथा सूर्यः सर्वाण्युच्चनीचादिवस्तूनि भासयन्नापि न दुष्यति तथैवाहं कदापि दोषैर्दुष्टानां स्मृत्यर्थः ॥ ५ ॥ ननु सूर्यः साक्षिभूतो न दुष्यतीति युक्तं त्वंतु सकलकार्यकर्त्रीति कर्तुर्दोषलेपो भविष्यत्येवेति चेत्तत्राह मयि बुद्ध्यादीति विमूढा बुद्ध्यादिनिष्ठं कर्तृत्वमविवेकेन मय्यात्मन्यध्यस्यैवात्मा कर्तैति तदंतःस्वसुषुप्तयोर्विवेकिनः तथा च सूर्यवदहमपि साक्षिण्येव न कर्त्रीति भावः ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥७१॥

अज्ञानभेद इति जीवबहुत्ववदीश्वरमूर्तेर्बहुत्वमपिमायायाभेदान्मायाकल्पितब्रह्मविष्ण्वाद्याकरभेदाद्वतीति जीवेश्वरसिद्धिमुपसंहरति जीवेश्वर
विभागश्चेति अज्ञानभेदाब्जीवसिद्धिर्मायाभेदादीश्वरसिद्धिरित्यर्थः ॥ ७ ॥ तत्र दृष्टान्तमाह घटाकाशेति ॥ ८ ॥ ईश्वरबहुत्वं ब्रह्मविष्ण्वा
दिरूपेश्वरबहुत्वमित्यर्थः ॥ ९ ॥ जीवभेदहेतुं विशदयति देहेन्द्रियादीति ॥ १० ॥ हेधराधरपर्वत गुणानां ये वासनाभेदाः सात्त्विकाराजसा

वदन्ति चात्मा कर्मेति विमूढानसुबुद्धयः ॥ अज्ञानभेदतस्तद्वन्मायायाभेदतस्तथा ॥ ७ ॥ जीवेश्वरविभागश्च
कल्पितो माययैव तु ॥ घटाकाशमहाकाशविभागः कल्पितो यथा ॥ ८ ॥ तथैव कल्पितो भेदो जीवात्मपरमात्म
नोः ॥ यथा जीवबहुत्वं च माययानस्वभावतः ॥ ९ ॥ तथेश्वरबहुत्वं च माययानस्वभावतः ॥ देहेन्द्रियादिसंघा
तवासनाभेदभेदिता ॥ १० ॥ अविद्या जीवभेदस्य हेतुर्नान्यः प्रकीर्तितः ॥ गुणानां वासनाभेदभेदिता या धराधर
॥ ११ ॥ मायासापरभेदस्य हेतुर्नान्यः कदाचन ॥ मयि सर्वमिदं प्रोतमो तं च धरणीधर ॥ १२ ॥ ईश्वरो हं च सू
त्रात्मा विराडात्मा ह मास्मि च ॥ ब्रह्मा हं विष्णु रुद्रौ च गौरी ब्राह्मी च वैष्णवी ॥ १३ ॥ सूर्यो हं तारकाश्चाहं तारकेश
स्तथा स्म्यहं ॥ पशुपक्षिस्वरूपाहं चांडालो हं च तस्करः ॥ १४ ॥ व्याधो हं क्रूरकर्माहं सत्कर्माहं महाजनः ॥
स्त्रीपुंनपुंसकाकारोऽप्यहमेव न संशयः ॥ १५ ॥ यच्च किंचित्क्वचिद्वस्तु दृश्यते श्रूयतेऽपि वा ॥ अंतर्बहिश्च तत्सर्वं व्या
प्याहं सर्वदा स्थिता ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥

स्तामसाश्चैतैर्भेदिता या माया सापरभेदस्य ब्रह्मविष्ण्वादीश्वरभेदस्य हेतुर्नान्य इत्यर्थः इदं सूतसंहितांतर्गतसूतगीतायां स्पष्टं व्याख्यातं च तत्र मा
धवाचार्यैः ॥ ११ ॥ यत एकमेव चैतन्यं सर्वात्मकं ततो हं सर्वात्मकास्मीत्याह मयीति ओतं प्रोतं ग्रथितमित्यर्थः ॥ १२ ॥ ईश्वरः
कारणदेहाभिमानीलिंगदेहाभिमानिसूत्रात्मा हिरण्यगर्भः विराट्स्थूलदेहाभिमानि ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥

दे.भा.स.

॥७२॥

शून्यंस्यादिति मयासद्रूपयात्मकंशून्यमसदेवस्यादित्यर्थः ॥ १७ ॥ १८ ॥ अधिष्ठानातिरेकेणेति अधिष्ठानसत्तातिरेकेणेत्यर्थः यतएतत्कल्पितंजगत्तस्मान्मत्सत्तयैवसतावद्देवान्यथेत्यर्थः ॥ १९ ॥ समष्टयात्मेति सर्वाभिमानिविराट्स्वरूपंयथावदसीत्यर्थः ॥ २० ॥ पूजयंतश्चेति सर्वेषांभगवतीविराट्स्वरूपदर्शनोत्सुकत्वात्स्वाभिष्टसंपादनेप्रवृत्तस्यहिमालयस्यतद्वचःसाधुसाध्वितिपूजयंतइत्यर्थः

टी.अ.
३३

नतदस्तिमयात्यक्तंवस्तुकिंचिच्चराचरं ॥ यद्यस्तिचेत्तच्छून्यंस्याद्वंध्यापुत्रोपमंहितत् ॥ १७ ॥ रज्जुर्यथास
र्पमालाभेदैरेकाविभातिहि ॥ तथैवेशादिरूपेणभाम्यहंनात्रसंशयः ॥ १८ ॥ अधिष्ठानातिरेकेणकल्पितंतन्न
भासते ॥ तस्मान्मत्सत्तयैवैतत्सत्तावन्नान्यथाभवेत् ॥ १९ ॥ हिमालयउवाच ॥ यथावदसिदेवेशिसमष्ट्या
त्मवपुस्त्विदं ॥ तथैवद्रष्टुमिच्छामि यदिदेविकृपामयि ॥ २० ॥ व्यासउवाच ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वासर्वेदेवाः
सविष्णवः ॥ ननंदुर्मुदितात्मानःपूजयंतश्चतद्वचः ॥ २१ ॥ अथदेवमतंज्ञात्वाभक्तकामदुष्पाशिवा ॥ अदर्शय
न्निजंरूपंभक्तकामप्रपूरिणी ॥ २२ ॥ अपश्यंस्तेमहादेव्याविराड् रूपंपरात्परं ॥ द्यौर्मस्तकंभवेद्यस्यचंद्रसू-
र्यौवचक्षुषी ॥ २३ ॥ दिशःश्रोत्रेवचोवेदाःप्राणोवायुःप्रकीर्तितः ॥ विश्वंहृदयमित्याहुःपृथिवीजघनंस्मृतं ॥
२४ ॥ नभस्तलंनाभिसरोज्योतिश्चक्रमुरस्थलं ॥ महर्लोकस्तुग्रीवास्याज्जनोलोकोमुखंस्मृतं ॥ २५ ॥ त
पोलोकोरराटिस्तुसत्यलोकादधस्थितः ॥ इंद्रादयोबाहवःस्युःशब्दःश्रोत्रंमहेशितुः ॥ २६ ॥ ॥ ६५ ॥

॥ २१ ॥ २२ ॥ द्यौर्मस्तकमिति अत्रद्यौःशब्देनसर्वोर्ध्वःसत्यलोकोगृह्यते ॥ २३ ॥ वायुरेवैतस्यप्राणाः विश्वंसर्वात्मकम
व्यक्तमित्यर्थः तदस्यरूपस्यहृदयं ॥ २४ ॥ नभस्तलंभुवर्लोकः ॥ २५ ॥ सत्यलोकादधस्थितस्तपोलोकोरराटिर्ललाटमि-
त्यर्थः शब्दःश्रोत्रमिति योस्माकंश्रोत्रविषयःशब्दःसतस्यरूपस्यश्रोत्रंश्रोत्रेद्रियंभवतीत्यर्थः पूर्वत्रदिशःश्रोत्रेइत्यत्रतुश्रोत्रशब्देनश्रोत्रे-
द्रियाधारोगृह्यतइतिनपुनरुक्तिः ॥ २६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥७२॥

नासत्यदस्त्रौअश्विनीकुमारौतावस्यरूपस्यनासेनासापुटेस्तः गंधस्तुघ्राणंघ्राणंन्द्रियमित्यर्थः ॥ २७ ॥ ब्रह्मस्थानं प्रजापतिचतुर्मुखस्थानंतदस्य
भूविजृम्भोभूविकासः आपोजलानितुतालुः रसनंद्रियाधारोभवति तद्रतोरसस्तुजिह्वाभवति रसनंद्रियंभवतीत्यर्थः ॥ २८ ॥ स्नेहकलाः स्त्री
पुत्रादिस्नेहलेशाः स्वर्गसृष्टिरेवापांगमोक्षः कटाक्षइत्यर्थः ॥ २९ ॥ अधर्ममार्गस्तुपृष्ठभागइत्यर्थः ॥ ३० ॥ महेशितुर्महेश्वर्यादेव्या
गिरयः पर्वताअस्थानीत्यर्थः ॥ ३१ ॥ कौमारेति त्रिविधं वयों गतिरित्यर्थः ॥ ३२ ॥ चंद्रमास्त्विति तुशब्दो मनइत्यत्रयोज्यः हेराजनून

नासत्यदस्त्रौनासेस्तोगंधोघ्राणंस्मृतोबुधैः ॥ मुखंमग्निःसमाख्यातोदिवारात्रीचपक्षमणी ॥ २७ ॥ ब्रह्मस्था
नंभूविजृम्भोप्यापस्तालुः प्रकीर्तिताः ॥ रसोजिह्वासमाख्यातायमोदंष्ट्राः प्रकीर्तिताः ॥ २८ ॥ दंताः स्नेहकला
यस्यहासोमायाप्रकीर्तिता ॥ स्वर्गस्त्वपांगमोक्षः स्याद्वीडोर्ध्वोष्टोमहेशितुः ॥ २९ ॥ लोभः स्यादधरोष्टोस्यधर्म
मार्गस्तुपृष्ठभूः ॥ प्रजापतिश्चमेढ्रंस्याद्यः स्रष्टाजगतीतले ॥ ३० ॥ कुक्षिः समुद्रागिरयोस्थीनिदेव्यामहेशि
तुः ॥ नद्योनाड्यः समाख्यातावृक्षाः केशाः प्रकीर्तिताः ॥ ३१ ॥ कौमारयोवनजरावयोस्यगतिरुत्तमा ॥ बला
हकास्तुकेशाः स्युः संध्येतेवाससीविभो ॥ ३२ ॥ राजन्श्रीजगदंबायाश्चंद्रमास्तुमनःस्मृतः ॥ विज्ञानशक्तिस्तु
हरीरुद्रौतः करणंस्मृतं ॥ ३३ ॥ अश्वादिजातयः सर्वाः श्रोणिदेशेस्थिताविभो ॥ अतलादिमहालोकाः कट्यधोभा
गतांगताः ॥ ३४ ॥ एतादृशं महारूपं ददृशुः सुरपुंगवाः ॥ ज्वालामालासहस्राढ्यं लिलिहानंच जिह्वया ॥ ३५ ॥

मेजयश्रीजगदंबायाश्चंद्रो मनोपिस्मृतइत्यर्थः तेनपूर्वोक्तेनेत्रमध्येगणितस्यचंद्रमसोमनस्त्वमपिबोधितमितिबोध्यं विज्ञानशक्तिर्बुद्धिः साहरिः
॥ ३३ ॥ अतलादीति अतलादिपातालांतालोकायथायोग्यकट्यधोभागतोगताः कटिमारभ्यपादमूलपर्यंतं व्यवस्थिताइत्यर्थः तथाचश्रुतिः अ
ग्निर्मूर्धाचक्षुषीचंद्रसूर्यौदिशः श्रोत्रेवाग्विवृताश्चवेदाः वायुः प्राणोहृदयंविश्वमस्यपद्भ्यांपृथिवीह्येषसर्वभूतांतरात्मेति ॥ ३४ ॥ जिह्वयासर्व
जगल्लिलिहानंस्वादयंतं ॥ ३५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.स.

॥७३॥

दंष्ट्रासुकटकटारावःकटकटेतिशब्दोयस्य ब्रह्मक्षत्रेओदनोयस्य यस्यब्रह्मक्षत्रंचोभेभवतिओदनोमृत्युर्यस्योपसेचनमितिश्रुतेः ॥ ३६ ॥
॥ ३७ ॥ हाहाकारंभयेनभीतत्वाच्चक्रिरेइत्यर्थः ॥ ३८ ॥ स्मरणंचगतमिति इयंजगदंबास्माकंपालयित्रीतिस्मरणमापितेषांगतंनष्टमि
त्यर्थः ॥ ३९ ॥ अथतइति विभोर्देव्याश्चतुर्दिक्षुमूर्तिर्मतोवेदाःस्थितास्तेमूर्च्छितादेवान्मूर्च्छातोबोधयामासुर्युत्थापयामासुरित्यर्थः ॥ ४० ॥

दंष्ट्राकटकटारावंवमंतंवन्हिमक्षिभिः ॥ नानायुधधरंवीरंब्रह्मक्षत्रौदनंचयत् ॥ ३६ ॥ सहस्रशीर्षिनयनंसह
स्रचरणंतथा ॥ कोटिसूर्यप्रतीकाशंविद्युत्कोटिसमप्रभं ॥ ३७ ॥ भयंकरंमहाघोरंहृदक्ष्णोस्त्रासकारकं ॥ दद
शुस्तेसुराःसर्वेहाहाकारंचचक्रिरे ॥ ३८ ॥ विकंपमानहृदयामूर्च्छामापुर्दुरत्ययां ॥ स्मरणंचगतंतेषांजगदंबे
यमित्यपि ॥ ३९ ॥ अथतेयेस्थितावेदाश्चतुर्दिक्षुमहाविभो ॥ बोधयामासुरत्युग्रंमूर्च्छातोमूर्च्छितान्सुरान् ॥
४० ॥ अथतेधैर्यमालंब्यलब्ध्वाचश्रुतिमुत्तमां ॥ प्रेमाश्रुपूर्णनयनारुद्धकंठास्तुनिर्जराः ॥ ४१ ॥ बाष्पगद्गद
यावाचास्तोतुंसमुपचक्रिरे ॥ देवाऊचुः ॥ अपराधंक्षमस्वांवपाहिदीनांस्त्वदुद्भवान् ॥ ४२ ॥ कोपंसंहरदेवे
शिसभयारूपदर्शनात् ॥ कातेस्तुतिःप्रकर्तव्यापामरैर्निर्जरैरिह ॥ ४३ ॥ स्वस्याप्यज्ञेयएवासौयावान्यश्च
स्वविक्रमः ॥ तदर्वाग्जायमानानांकथंसविषयोभवेत् ॥ ४४ ॥ नमस्तेभुवनेशानिनमस्तेप्रणवात्मके ॥
सर्ववेदांतसंसिद्धेनमोर्हीकारमूर्तये ॥ ४५ ॥ यस्मादग्निःसमुत्पन्नोयस्मात्सूर्यश्चंद्रमाः ॥ यस्मादोषध
यःसर्वास्तस्मैसर्वात्मनेनमः ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥

॥ ४१ ॥ ४२ ॥ सभयाजातास्मइत्यर्थः ॥ ४३ ॥ स्वस्याप्यज्ञेयइति यावान्यत्परिमाणवान्यश्चयादृशस्तवस्वपराक्रमःसतवस्वस्वाप्य
ज्ञेयएवैतादृशोसौतवपराक्रमोस्माकंतदर्वाक्जायमानानांकथंसविषयोभवेत्कथमपीत्यर्थः तथाचश्रुतिः अर्वाग्देवाअस्यविसर्जनेनाथाकोवे
दयतआबभूवेति यास्याध्यक्षःपरमेव्योमन्सोअंगवेदयदिवानवेदेति ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥

टी.अ.
३३

॥७३॥

॥ ४७ ॥ यस्मात्संभूतोविधिरितिकर्तव्यतारूपस्तस्मै नम इत्यन्वयः ॥ ४७ ॥ सप्तप्राणार्चिष इति प्राणाश्चार्चिषश्चेति द्वंद्वः सप्तशीर्षण्याः प्राणास्तस्मादेव भवन्तीत्यर्थः तेषांच सप्तार्चिषोऽदीतयः स्वस्वविषयावद्योतनानि ॥ यथा सप्तसमिधः सप्तविषयाविषयैर्हि प्राणाः समिध्यन्ते सप्तहोमास्तद्विषयविज्ञानानि यदस्य विज्ञानं तज्जुहोतीति श्रुत्यंतरा तूतथा सप्तलोका इन्द्रियस्थानानि एते यस्माज्जातास्तस्मै सर्वात्मने नमः ॥ ४९ ॥ ५० ॥

यस्माच्च देवाः संभूताः साध्याः पक्षिण एव च ॥ पशवश्च मनुष्याश्च तस्मै सर्वात्मने नमः ॥ ४७ ॥ प्राणापानोर्ब्रह्म ह्रियवौ तपःश्रद्धा ऋतं तथा ॥ ब्रह्मचर्यविधिश्चैव यस्मात्तस्मै नमो नमः ॥ ४८ ॥ सप्तप्राणार्चिषो यस्मात्समिधः सप्त एव च ॥ होमाः सप्त तथा लोकास्तस्मै सर्वात्मने नमः ॥ ४९ ॥ यस्मात्समुद्रागिरयः सिंधवः प्रचरन्ति च ॥ यस्मादोषधयः सर्वारसास्तस्मै नमो नमः ॥ ५० ॥ यस्माद्यज्ञः समद्रूतो दीक्षायूपश्च दक्षिणाः ॥ ऋचो यजूं पिसामानि तस्मै सर्वात्मने नमः ॥ ५१ ॥ नमः पुरस्तात्पृष्ठे च नमस्ते पार्श्वयोर्द्वयोः ॥ अधोऽर्ध्वं चतुर्दिक्षु मातभूयो नमो नमः ॥ ५२ ॥ ॥ उपसंहर देवेशि रूपमेतदलौकिकं ॥ तदेव दर्शयास्माकं रूपं सुंदरं सुंदरं ॥ ५३ ॥ व्यास उवाच ॥ इति भीतान्सुरान् दृष्ट्वा जगदंबा कृपार्णवा ॥ संहृत्य रूपं घोरं तद्वर्शयामास सुंदरं ॥ ५४ ॥ पाशांकुशवराभीतिधरं सर्वांगकोमलं ॥ करुणापूर्णनयनं मंदस्मितमुखांबुजं ॥ ५५ ॥ दृष्ट्वा तत्सुंदरं रूपं तदा भीतिविवर्जिताः ॥ शांतचित्ताः प्रणेमुस्ते हर्षगद्गदनिस्वनाः ॥ ५६ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे अष्टादशसाहस्र्यां संहितायां सप्तमस्कंधे देवीगीतायां त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३३ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६२ ॥

॥ ५१ ॥ तथा च श्रुतिर्मुडके यस्मादग्निः समिधो यस्य सूर्यः सोमात्पूज्य औषधयः प्रजानामित्यादितस्मादृचः साम यजूंषि दीक्षायज्ञाश्च सर्वे क्रतवो दक्षिणाश्च संवत्सरो यजमानश्च लोकाः सोमो यत्र पवते यत्र सूर्य इति ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे सप्तमस्कंधे देवीगीतायां त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३३ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७२ ॥

दे.भा.स.

॥७४॥

पंचाशत्पद्यवय्वैस्तुवैराग्यकथनोत्तरं ॥ ज्ञानमेवतुसंपाद्यमोक्षार्थमिति कथ्यते ॥१॥ दर्शितं विश्वरूपं नानायासेन लब्धमस्माभिरेतिसहजमस्तीति नमंतव्यमिति देवान् प्रतिभगवती प्राह कथूयामिति ॥ १ ॥ २ ॥ प्रकृतमिति ब्रह्मविद्योपदेशप्रकरणं हि प्रचलितं पूर्वमध्ये देवैर्विश्वरूपदर्शनार्थं प्रार्थितासती विश्वरूपं दर्शयामास उपसंहृते तु विश्वरूपे पुनः प्रकृतं यदुपदेशप्रकरणं तच्छृण्वति हिमालयं प्रति भगवती वदतीति बोध्यं परमात्मा त्रजीवतामिति अमूढो मूढ इव व्यवहरन्नास्ते माययैवेति श्रुतेरित्यर्थः ॥३॥ वैराग्यार्थमाह क्रियाः करोतीति ॥४॥ तत्संस्कृतिः सुखदुःखसंस्कारः

टी.अ.
३४

श्रीदेव्युवाच ॥ कथूयं मंदभाग्या वै केदं रूपं महाद्भुतं ॥ तथापि भक्तवात्सल्यादीदृशं दर्शितं नया ॥ १ ॥ न वेदाध्ययनैर्योगैर्न दानैस्तपसे ज्यया ॥ रूपं द्रष्टुमिदं शक्यं केवलं मत्कृपां विना ॥ २ ॥ प्रकृतं शृणुराजेंद्र परमात्मा त्रजीवतां ॥ उपाधियोगात्संप्राप्तः कतृत्वादिकमप्युत ॥ ३ ॥ क्रियाः करोति विविधा धर्मा धर्मैर्कहेतवः ॥ नानायोनीस्ततः प्राप्य सुखदुःखैश्च युज्यते ॥ ४ ॥ पुनस्तत्संस्कृतिवशान्नानाकर्मरतः सदा ॥ नानादेहान्समाप्नोति सुखदुःखैश्च युज्यते ॥ ५ ॥ घटीयं त्रवदेतस्य न विरामः कदापि हि ॥ अज्ञानमेव मूलं स्यात्ततः कामः क्रियास्ततः ॥ ६ ॥ तस्मादज्ञाननाशाय ते तनियतं नरः ॥ एतद्विजन्मसाफल्यं यदज्ञानस्य नाशनं ॥ ७ ॥ पुरुषार्थसमाप्तिश्च जीवन्मुक्तदशापि च ॥ अज्ञाननाशने शक्ता विद्यैव तु पटीयसी ॥ ८ ॥ ॥ ७४ ॥

॥५॥ एतस्येति एतस्य जन्ममरणप्रबंधरूपस्य संसारस्य विरामः समाप्तिः कदापि नास्ति अद्यपर्यंतमनंतसृष्टिप्रलयेषु जातेष्वपि जीवसंसारस्य विद्यमानत्वात् ॥ इत्थं संसारस्यानादिकालप्रवृत्तत्वमुपपन्नं नाशोपायप्रदर्शनार्थं तान्निदं ब्रह्ममाह अज्ञानमेवेति ततः कामोऽविद्यात इच्छेत्यर्थः इच्छातः क्रियाभर्ता इत्यर्थः ॥६॥ यस्मादज्ञानमेव मूलं तस्मादित्याह एतद्विजन्मेति तं विजन्मश्रुतिः यो ह्यविदित्वात्मानमस्माच्छांकात्प्रैतिसकृपणइति ॥७॥ अज्ञाननाशनसाधनमाह विद्यैवेति ॥ ८ ॥ ॥ ७४ ॥

॥७४॥

तज्ज्ञानज्ञानजं कर्मनपटीय इत्यर्थः तत्र हेतुमाह विरोधाभावत इति । ननु विरोधाभावात् कारणाशयतितद्वदज्ञानजन्यकर्मणोप्यज्ञानरूपत्वान्न तेनाज्ञाने
न कर्मणा विरोध इत्यर्थः कर्मणा ज्ञाननाशे आशानैव भाव्यतां नैव कर्तव्येति । १० ॥ अत्र समुच्चयवा
दिमतमुत्थापयति कुर्वन्नेवेहेति कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतंसमा इति श्रुत्या वावज्जीवं कर्मविहितं ज्ञानादेव हि कैवल्यमिति श्रुत्या ज्ञानमपि सं
पाद्यत्वेनेति तत्र यावज्जीवभुतेः संकोचे प्रमाणाभावात् ज्ञानं कर्मच समुच्चयेन यावज्जीवं पुरुषेणाश्रयणीयमित्यर्थः ॥ ११ ॥ नन्वज्ञाननाशे ज्ञान
स्यैवोपयोगात् कारिकां करिष्यतीति चेत्तत्राह ननु यतीति ज्ञानस्वसहायं भविष्यति कर्म इत्यर्थः ॥ १२ ॥ तस्मादावज्जीवं कर्मज्ञानं चाश्रयणी

न कर्मतल्लोपास्ति विरोधाभावतोगिरे ॥ प्रत्युताशा ज्ञाननाशे कर्मणानैव भाव्यतां ॥ ९ ॥ अनर्थदानिकर्मा
णि पुनः पुनरुशंति हि ॥ ततो रागस्ततो दोषस्ततो नर्थो महान् भवेत् ॥ १० ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन ज्ञानं संपादये
न्नरः ॥ कुर्वन्नेवेह कर्माणि त्यतः कर्माप्यवश्यं ॥ ११ ॥ ज्ञानादेव हि कैवल्यमतः स्यात्तत्समुच्चयः ॥ सहायतां
व्रजेत्कर्मज्ञानस्य हितकारि च ॥ १२ ॥ इतिकेचिद्वदं त्यत्र तद्विरोधान्न संभवेत् । ज्ञानाद्दृग्ग्रंथिभेदः स्याद्दृग्ग्रंथौ क
र्मसंभवः ॥ १३ ॥ यौगपद्यं न संभाव्यं विरोधात्तु ततस्तयोः ॥ तमः प्रकाशयोर्यद्वयौ गपद्यं न संजायते ॥ १४ ॥

यमिति मतं केचिदाहुरित्याह इतिकेचिदिति तत्खंडयति तद्विरोधादिति यदि ज्ञानोत्तरं कर्म संभवेत्तदा ज्ञानकर्मणोः समुच्चयो वक्तव्यः स तु नैव
संभवति तस्मादावज्जीवभुतेः संकोचे ज्ञानेन सहावस्थानविरोधाद्दलेपतित इत्यर्थः ननु किमिति कर्मणो ज्ञानेन सहावस्थानं न संभवति तत्राह ज्ञानान्दृ
ग्ग्रंथीति हृदयस्य ग्रंथिरंतःकरणात्मदेहतादात्म्यरूपस्तस्य ज्ञानेनात्मसाक्षात्कारेण भेदो नाशः स्यात्तस्मिन् दृग्ग्रंथौ मनुष्यो हं ब्राह्मणो हं परलो
केच्छावानहमित्यादिरूपसत्येव कर्मसंभवस्तादृशमधिकारिणमुद्दिश्यैव कर्मविधानात् तस्मात्तयोर्नैकत्रावस्थानं संभवतीत्यर्थः ॥ १३ ॥
तदेव दृष्टान्तपुरःसरं स्पष्टयति यौगपद्यमिति ततस्तस्माद्विद्वतोस्तयोर्ज्ञानकर्मणोस्तमः प्रकाशयोरिव विरोधाद्यौ गपद्यं न संभवतीति यावज्जीवभुतिरज्ञा
निर्विषयकैवेति भावः ॥ १४ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.स.

॥७५॥

तर्हि कियत्पर्यंतं वैदिक कर्ममर्याद इति चेत्तत्राह तस्मात्सर्वाणीति यथा ज्ञानेन सह विरोधाद्यावज्जीव श्रुतेः संकोचस्तथा ज्ञानांगेन सहापि विरोधात्
तस्याः श्रुतेर्यावद्वैराग्यादिप्राप्तिपर्यंतमिति संकोचः कर्तव्यः तथा च चित्तशुद्ध्यंतमेव कर्माणि हेमहामते सिद्धान्तानि प्रयत्नतोति यत्नेन श्रद्धादिपुरः
सरं चित्तशुद्धिपर्यंतं कुर्यादित्यर्थः ॥ १५ ॥ तस्यैव मर्यादामाह शम इति शमो तर्हिन्द्रियनिग्रहो दमो बाह्येन्द्रियनिग्रहस्तितिक्षा शीतोष्णादि
सहिष्णुत्वं वैराग्यमिहामुत्र फलभोगिरेरागः सत्त्वसंभवोतः करणगतसत्त्वस्य शुद्धिः एतत्सिद्धिपर्यंतमेव कर्माणि न सतः परमित्यर्थः ॥ १६ ॥

टी.अ.
३४

तस्मात्सर्वाणिकर्माणि वैदिकानि महामते ॥ चित्तशुद्ध्यंतमेव स्युस्तानि कुर्यात्प्रयत्नतः ॥ १५ ॥ शमो दम
स्तितिक्षा च वैराग्यं सत्त्वसंभवः ॥ तावत्पर्यंतमेव स्युः कर्माणि न ततः परं ॥ १६ ॥ तदंतैश्चैव संन्यस्य संश्रयेद्गु
रुमात्मवान् ॥ श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठं च भक्त्या निर्व्याजयापुनः ॥ १७ ॥ वेदांतश्रवणं कुर्यान्नित्यमेव मतं द्रितः ॥ त
त्त्वमस्यादिवाक्यस्य नित्यमर्थविचारयेत् ॥ १८ ॥ तत्त्वमस्यादिवाक्यं तु जीवब्रह्मैक्यबोधकं ॥ ऐक्ये ज्ञाते निर्भ
यस्तु मद्गुपोहि प्रजायते ॥ १९ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥

तदंत्येकमत्यागस्तु संन्यासेनैव कर्तव्यो नान्यथेत्याह तदंतैश्चैवेति संन्यस्य संन्यासाभ्रमंगृहीत्वेत्यर्थः विधिना संपादितकर्मणो विधिनैव त्यागस्य यु
क्तत्वादिति भावः संन्यस्य श्रवणं कुर्यादिति वाक्यात्संन्यासेत्तरं श्रवणार्थं गुरुमाभ्येत् आत्मवान् स्वाधीनांतःकरण इत्यर्थः श्रोत्रियमधीतवेदवे
दार्थं ब्रह्मनिष्ठं ब्रह्मानुभविनं निर्व्याजयानिष्कपटयाभक्त्या तथा च श्रुतिः यस्य देहपराभक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशं ते महा
त्मन इति ॥ १७ ॥ गुरुमाश्रित्य वेदांतश्रवणं नित्यमतं द्रितो नामा लस्यादिदोषाः संन्यः कुर्यादित्याह वेदांतश्रवणमिति ॥ १८ ॥ किंतद्वाक्यवि
चारेण फलं भवति तत्राह तत्त्वमस्यादीति मद्गुपोहीति ब्रह्मवित् ब्रह्मैव भवतीति श्रुतेरित्यर्थः ॥ १९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥

॥७५॥

कथं वाक्यविचारणमिति चेत्तत्राह पदार्थावगतिः ॥ २० ॥ तत्पदस्य च वाक्यार्थोऽङ्गपरिकीर्तितः ॥ २० ॥ त्वंपदस्य च वाक्यार्थो जीव एव न संशयः ॥ उभयोरैक्यमसिनापदेन प्रोच्यते बुधैः ॥ २१ ॥ वाक्यार्थयोर्विरुद्धत्वादैक्यं नैव घटेत ह ॥ लक्षणातः प्रकर्तव्या तत्त्वमोः श्रुतिसंस्थयोः ॥ २२ ॥ चिन्मात्रं तु तयोर्लक्ष्यं तयोर्ैक्यस्य संभवः ॥ तयोर्ैक्यं तथा ज्ञात्वा स्वाभेदेनाद्वयो भवेत् ॥ २३ ॥ देवदत्तः स एवायमिति वल्लक्षणा स्मृता ॥ स्थूलादिदेहरहितो ब्रह्म संपद्यते नरः ॥ २४ ॥ पञ्चीकृतमहाभूतसंभूतः स्थूलदेहकः ॥ भोगालयोजराव्याधिसंयुतः सर्वकर्मणां ॥ २५ ॥

स्थयोस्तत्त्वमोस्तत्त्वंपदयोर्लक्षणाकर्तव्येत्यर्थः ॥ २२ ॥ ननु कस्मिन्नर्थे लक्षणाकर्तव्या तत्राह चिन्मात्रं त्विति सर्वज्ञत्वादिविशिष्टं ब्रह्म चैतन्य मीश्वरो सर्वज्ञत्वादिविशिष्टं ब्रह्म चैतन्यं जीवस्तत्र धर्मद्वयं विहाय चिन्मात्रमेव भागत्यागलक्षणया ग्राह्यं तस्मिन् गृहीत तयोर्लक्षणार्थयोर्ैक्यस्य संभवो स्तीत्यर्थः ननु तादृशाभेदज्ञानेन किं भविष्यति तत्राह तयोरिति स्वाभेदेन तयोर्ैक्यं ज्ञात्वा द्वयोर्भवेदिदं महाफलमस्तीति भावः ॥ २३ ॥ ननु लोके भागत्यागलक्षणाकदृष्टेति चेत्तत्राह देवदत्तः स एवेति सोऽयं देवदत्त इत्यत्र तत्कालविशिष्टदेवदत्तस्यैतत्कालविशिष्टदेवदत्तस्य भेदेऽपि तत्कालवैशिष्ट्यैतत्कालवैशिष्ट्यरूपधर्मद्वयत्यागेनाविरुद्धां व्यक्तिकां भागत्यागलक्षणया गृहीत्वा भेदप्रत्याभिज्ञाक्रियते इति तत्र लक्षणा स्मृता दृष्टेत्यर्थः अनेनानुभवेन स्थूलादिदेहरहितो भवतीत्याह स्थूलादिति ॥ २४ ॥ देहत्रयं स्पष्टयति पञ्चीकृतेति ॥ २५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.स.

॥७६॥

मिथ्यात्वेहेतुर्मायामयत्वतइति ॥ २६ ॥ २७ ॥ अंतःकरणसुखदुःखादेरवबोधकइत्युक्तं ॥ २८ ॥ २९ ॥ देहत्रयेइति स्थूलसूक्ष्मकारणदेहत्रयमध्येएवपंचकोशाअन्नमयप्राणमयमनोमयविज्ञानमयानंदमयाख्याअंतर्भूताभवन्तीत्यर्थः ॥ ३० ॥ ततश्चदेहत्रयत्यागेनपंचकोशत्यागेसातिब्रह्मपुच्छं प्रतिष्ठेतिश्रुत्युक्तं वस्तुलभ्यतइत्यर्थः तदेवब्रह्मनेतिनेतीत्यादिवाक्यैः सर्वनिषेधावधित्वेनोच्यतइत्यर्थः ॥ ३१ ॥ इदं

मिथ्याभूतोयमाभातिस्फुटंमायामयत्वतः ॥ सोयंस्थूलउपाधिःस्यादात्मनोमेनगेश्वर ॥ २६ ॥ ज्ञानकर्मेन्द्रिययुतंप्राणपंचकसंयुतं ॥ मनोबुद्धियुतंचैतत्सूक्ष्मतत्त्ववयोविदुः ॥ २७ ॥ अपंचीकृतभूतोत्थंसूक्ष्मदेहोयमात्मनः ॥ द्वितीयोयमुपाधिःस्यात्सुखादेरवबोधकः ॥ २८ ॥ अनाद्यनिर्वाच्यमिदमज्ञानंतुतृतीयकः ॥ देहोयमात्मनोभातिकारणात्मानगेश्वर ॥ २९ ॥ उपाधिविलयेजातेकेवलात्मावशिष्यते ॥ देहत्रयेपंचकोशाअंतस्थाःसंतिसर्वदा ॥ ३० ॥ पंचकोशपरित्यागेब्रह्मपुच्छंहिलभ्यते ॥ नेतिनेतीत्यादिवाक्यैर्ममरूपंयदुच्यते ॥ ३१ ॥ नजायतेप्रियतेतत्कदाचिन्नायंभूत्वानवभूवकश्चित् ॥ अजो नित्यःशाश्वतोयंपुराणोनहन्यतेहन्यमानेशरीरे ॥ ३२ ॥ हंताचेन्मन्यतेहंतुहंतश्चेन्मन्यतेहंत ॥ उभौतौनविजानीतोनायंहंतिनहन्यते ॥ ३३ ॥ अणोरणीयान्महतोमहीयानात्मास्यजंतोर्निहितो गुहायां ॥ तमक्रतुं पश्यतिवीतशोकोधातुप्रसादान्महिमानमस्य ॥ ३४ ॥ आत्मानंरथिनंविद्विदशरीरंरथमेवतु ॥ बुद्धितुसारथिंविधिमनःप्रग्रहएवच ॥ ३५ ॥ ॥ ७६ ॥

यद्ब्रह्मरूपंतन्नजायतेनोत्पद्यतेनवाप्नियतेतथायमात्माभूत्वानवभूवकितुअनुत्पन्नो निरंतरं बभूवैवेत्यर्थः तत्रहेतुरजो नित्यइत्यादिः विकारत्रयनिषेधेनषड्भावविकाराअपिप्रत्याख्यातावेदितव्यः ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ अणोरिति अणुतोप्यणुतरः महतोव्योमादेरपिमहत्तरः गुहायांबुद्धौनिहितः स्थापितस्तत्रानुभवात् तस्यात्मनोमहिमानंतं धातुप्रसादाच्चित्तप्रसादादक्रतुः संक्रतुर्विकल्परहितः पश्यतिततोवीतशोकोभवतीत्यर्थः ॥ ३४ ॥ अयंकटवत्युक्तरथरूपकल्पनामाह अत्मानमिति रथिनंरथस्वामिनमात्मानंविद्विदशरीरमेवरथंविद्धि मनःप्रग्रहमश्वाकर्षणरज्जुभूतंविद्धि ॥ ३५ ॥

टी.अ.
३४

॥७६॥

इंद्रियाण्येव हयास्तस्मिन् रथे विद्वांस आहुः गोचरान् गंतव्यमार्गान् विषयांस्तु येष्वेव निरंतरमस्य गमनात् रथिनः पूर्वोक्तस्य विशिष्टरूपमाह
 आत्मैन्द्रियेति आत्माचिदाभासः इंद्रियाणि मनश्चेत्येतन्नित्यविशिष्टकूटस्थं तद्विशेषो र्थात्तदा दृशंकूटस्थं भोक्तेत्त्वं तु भोक्ता रथिनमाहुरित्य
 र्थः इति शब्देन कर्मत्वस्याभिधानाद्वितीयाभावः ॥ ३६ ॥ एवं सति यस्तु पुरुषो विद्वानविवेकी भवति अमनःस्कोऽस्वाधीनमनाश्च भवति सदा शुचिश्च
 सत्कर्मरहित इत्यर्थः स पुरुषो न तत्पदं परमात्मपदं प्राप्नोति किं तर्हि तं संसारं चाधिगच्छति संसारं प्रत्येव गच्छतीत्यर्थः ॥ ३७ ॥ यस्तु न द्विपरीतो भ
 वति तत्राह यस्त्विति यस्मात् भूयोन जायते तत्पदमित्यर्थः ॥ ३८ ॥ किं तत्पदं तदाह विज्ञानसारथिरिति मदीयं यत्परमं पदं पद्यते ज्ञानिभिः प्राप्यते य

इंद्रियाणि हयानाहुर्विषयांस्तेषु गोचरान् ॥ आत्मैन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः ॥ ३६ ॥ यस्त्वविद्वान्
 भवति चामनःस्कः सदा शुचिः ॥ न तत्पदमवाप्नोति संसारं चाधिगच्छति ॥ ३७ ॥ यस्तु विज्ञानवान् भवति स
 मनस्कः सदा शुचिः ॥ स तु तत्पदमाप्नोति यस्माद्भूयोन जायते ॥ ३८ ॥ विज्ञानसारथिर्यस्तु मनःप्रग्रहवान्नरः
 ॥ सो ध्वनः पारमाप्नोति मदीयं यत्परमं पदं ॥ ३९ ॥ इत्थं श्रुत्या च मत्या च निश्चित्यात्मानमात्मना ॥ ज्ञादयेन्मा
 मात्मरूपां निदिध्यासनतोऽपि च ॥ ४० ॥ योगवृत्तेः पुरा स्वस्मिन्भावयेदक्षरत्रयं ॥ देवीं प्रणवसंज्ञस्य
 ध्यानार्थं मंत्रवाच्ययोः ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४२ ॥

न्मदीयं परमरूपं सच्चिदानंदघनं तत्परमं पदमित्यर्थः ॥ ३९ ॥ उपसंहरति इत्यमिति श्रुत्या वेदांतश्रवणेन मत्याश्रुतस्य मननेन निश्चित्य संशयविष
 यां सरहितं परोक्षतो ज्ञात्वा साक्षात्कारार्थमात्मनांतःकरणेनात्मरूपां मां निदिध्यासनत एकाग्रचित्तवृत्त्या भावयेदित्यन्वयः ॥ ४० ॥ इत्थं निदिध्या
 सनाभ्यासेन यदा समाधियोग्यता चित्तस्य भवति तदा समाधेः पूर्वमित्थं ध्यानं कृत्वा समाधिकुर्यादित्याह योगवृत्तेरिति समाधिवृत्तेः पुरा पूर्वस्वस्मि
 न्स्वशरीरे देवीं प्रणवसंज्ञस्य मायाबीजमंत्रस्याक्षरत्रयं वक्ष्यमाणं भावयेत् मंत्रवाच्ययोर्मया बीजमंत्रार्थयोः समाष्टिव्यहोर्ध्यानार्थमित्यर्थः ॥ ४१ ॥

दे.भा.स.

॥७७॥

तदेवाक्षरत्रयंतदेवताभावनास्थानानिचाह हकारइति कारणात्माकारणदेहरूपईकारइत्यर्थः ह्रींकारोहंतुरीयकं अहंयत्तुरीयकंतर्त्रीकार वाच्यमित्यर्थइतिदेवीवाक्यमेतत् तुरीयस्यवाचकौह्रींकारइतिपावत् ॥ ४२ ॥ यथाव्यष्टिदेहेऽक्षरत्रयभावनाकृतातथैवसमाष्टिदेहेपिकर्तव्ये त्याह एवंसमष्टीति अक्षरत्रयभावनांकृत्वासमाष्टिव्यष्टयोःपिंडब्रह्मांडयोरेकत्वन्यायेनैकत्वंभावयेदित्याह समाष्टिव्यष्ट्योरिति ॥ ४३ ॥ इत्थं प्रथमतोभावनांकृत्वाततोदेवींध्यायेदित्याह समाधीति ॥ ४४ ॥ समाधिसामग्रीमाह प्राणापानाविति समौकृत्वाप्राणायामाभ्यासेनेत्यर्थः ॥ ४५ ॥

हकारःस्थूलदेहःस्याद्रकारःसूक्ष्मदेहकः ॥ ईकारःकारणात्मासौह्रींकारोहंतुरीयकं ॥ ४२ ॥ एवंसमाष्टिदेहे पिज्ञात्वाबीजत्रयंक्रमात् ॥ समाष्टिव्यष्ट्योरेकत्वंभावयेन्मतिमान्नरः ॥ ४३ ॥ समाधिकालात्पूर्वतुभावयि त्वैवमादृतः ॥ ततोध्यायेन्निलीनाक्षोदेवींमांजगदीश्वरीं ॥ ४४ ॥ प्राणापानौसमौकृत्वानासाभ्यंतरचारिणौ ॥ निवृत्तविषयाकांक्षोवीतदोषोविमत्सरः ॥ ४५ ॥ भक्त्यानिर्व्याजयामुक्तोगुहायांनिःस्वनेस्थले ॥ हकारंवि श्वमात्मानंरकारेप्रविलापयेत् ॥ ४६ ॥ रकारंतैजसंदेवमीकारेप्रविलापयेत् ॥ ईकारंप्राज्ञमात्मानंह्रींकारे प्रविलापयेत् ॥ ४७ ॥ वाच्यवाचकताहीनद्वैतभावविवर्जितं ॥ अखंडसच्चिदानंदंभावयेत्तच्छिखांतरे ॥ ४८ ॥ इतिध्यानेनमांराजन्साक्षात्कृत्यनरोत्तमः ॥ मद्रूपएवभवतिद्वयोरप्येकतायतः ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥

विलापनप्रकारमाह हकारंविश्वमिति विश्ववैश्वानरात्मकमित्यर्थः विश्वशब्दस्यवैश्वानरोपलक्षणत्वात्एवमुत्तरत्रापि रकारेइति रकारवाच्ये सूक्ष्मदेहेहकारवाच्यंस्थूलदेहंविलापयेदित्यर्थः ॥ ४६ ॥ ईकारेतद्वाच्येकारणदेहेसूक्ष्मदेहंविलापयेदित्यर्थः ह्रींकारेह्रींकारवाच्येब्रह्म निर्विकारवाच्यंकारणदेहंविलापयेदित्यर्थः ॥ ४७ ॥ तच्छिखांतरेचैतन्याग्निदीपशिखांतरेइत्यर्थः तथाचश्रुतिः तस्याःशिखायामध्येप रमात्मानव्यवस्थितइति ॥ ४८ ॥ एवंध्यानेनसाक्षात्कारोभवतितेनचमद्रूपएवभवतीत्याह इतिध्यानेनेति ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥

टी.अ.

३४

॥७७॥

दृष्टवानाशकोभवेदित्यन्वयः विस्तरस्तुमत्कृतदेवीगीताबृहद्गीकायांदृष्टव्यः ॥५०॥ इति श्रीदे० स० चतुस्त्रिं० ॥ ३४ ॥ अर्धाधिकद्विषष्ट्यातु
श्लोकानामत्रसादरं ॥ रोगस्यमंत्रसिद्धेश्चसाधनसम्यगुच्यते ॥ १ ॥ पूर्वाध्यायंति योगयुक्तयानयादृष्टाममात्मानं परात्परमिति वाक्येनात्मदर्शनेयो
गस्यसाधनत्वमुक्तं तत्रकीदृशोयोगइति पृच्छति योगं वेदेति संविप्रदायकं ब्रह्माकारसंविताधनमित्यर्थः ॥ १ ॥ ऐक्यमिति जीवात्मनोरैक्यम
भेदविषयकवृत्तिर्यासायोगशब्देनोच्यतइत्यर्थः ॥ २ ॥ तत्प्रत्यूहास्तस्यावृत्तेः शत्रवः केतेषट् तदाह कामक्रोधाविति एते पदार्थाप्रसिद्धा एव ॥ ३ ॥

योगयुक्तयानयादृष्टामामात्मानं परात्परं ॥ अज्ञानस्यसकार्यस्यतत्क्षणेनाशकोभवेत् ॥ ५० ॥ इति श्रीदेवी
भागवतेमहापुराणेसप्तमस्कंधेचतुस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३४ ॥ हिमालयउ० ॥ योगंवदमहेशानिसांगं संविप्रदा
यकं ॥ कृतेनयेनयोग्योहंभवेयंतत्त्वदर्शने ॥ १ ॥ नयोगोनभसःपृष्ठेनभूमौनरसातले ॥ ऐक्यंजीवात्मनोरा
हुर्योगयोगविशारदाः ॥ २ ॥ तत्प्रत्यूहाःपडाख्यातायोगविघ्नकरानघ ॥ कामक्रोधौलोभमोहौमदमात्सर्यसंज्ञ
कौ ॥ ३ ॥ योगांगैरेवभित्वातान्योगिनोयोगमाप्नुयुः ॥ यमनियममासनप्राणायामौततःपरं ॥ ४ ॥ प्रत्याहा
रंधारणाख्यंध्यानंसार्धसमाधिना ॥ अष्टांगान्याहुरेतानियोगिनांयोगसाधने ॥ ५ ॥ अहिंसासत्यमस्तेयं
ह्यचर्येदयार्जवं ॥ क्षमाधृतिर्मिताहारःशौचंचेतियमादश ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

योगांगैरिति योगांगैर्यमनियमादिभिर्वक्षमाणैः प्रथमतस्तच्छत्रून्भित्वा नाशयित्वानंतरं योगिनोयोगांतां वृत्तिं प्राप्नुयुरित्यर्थः योगांगान्याह यममि
ति ॥ ४ ॥ ५ ॥ अष्टस्वंगेषु प्रथमांगस्य यमस्य स्वरूपमाह अहिंसेति अहिंसा परपीडनाभावः सत्यं सत्यभाषणमस्तेयं चौर्यमात्रस्याभावः ब्रह्मच
र्यदर्शनं स्पर्शनं केलिः कीर्तनं गुह्यभाषणं संकल्पोऽध्यवसायश्चक्रियानिर्वृतिरेव चेत्त्यष्टविधमैधुनत्यागः दयाभूतेषु कृष्णा आर्जवं ऋजुता सर्वापेक्ष
यास्वस्याल्पत्वज्ञानं क्षमापमानादिसहनशीलत्वं पृथिवीवत् धृतिः सर्वनाशोपि धीरता मिताहारो द्वौ भागौ पूरयेदन्नैस्तोयेनैकं प्रपूरयेत् मारुतस्य प्र
चारार्थं चतुर्थमवशेषयेदिति रीत्याल्पाहारः शौचं बाह्याभ्यंतराशुद्धिः इति दशसंख्यायमा इत्यर्थः ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.स.

॥१८॥

नियमस्वरूपमाह तप इति तपोविध्युक्तानुष्ठानं न कृच्छ्रादितस्य शरीरकेशकारित्वेन योगोपकारकत्वाभावात् संतोषो नाम प्रारब्धेन यदुपस्थापितं ते
नैव चेत्तस्य तृप्तिः आस्तिक्यं वेददेवद्विजगुरुविश्वासः दानं यथाशक्ति सत्पात्रे द्रव्यत्यागः देवस्य परमेश्वरस्य पूजनं सिद्धांतश्रवणं वेदांतश्रवणं ही
रकार्यकरणे लब्ध्वा मतिः सत्कर्मसच्छास्त्रविषये ज्ञानं जपोगायत्रीप्रणवभुवनेश्वरीमंत्रप्रभृतिमंत्राणां हुतं नित्यहोमादि ॥ ७ ॥ आसनान्याह पद्मा
सनमिति ॥ ८ ॥ ९ ॥ व्युत्क्रमादिति पृष्ठदेशाद्व्युत्क्रमात्परिवर्त्यानीय दक्षिणहस्तेन दक्षपादांगुष्ठं वामहस्तेन वामपादांगुष्ठं बध्नीयादित्यर्थः

तपःसंतोष आस्तिक्यं दानं देवस्य पूजनं ॥ सिद्धांतश्रवणं चैव हीर्मतिश्च जपो हुतं ॥ ७ ॥ दर्शनेन नियमाः प्रोक्ता
मया पर्वतनायक ॥ पद्मासनं स्वस्तिकं च भद्रं वज्रासनं तथा ॥ ८ ॥ वीरासनमिति प्रोक्तं क्रमादासनपंचकं ॥
ऊर्वोरुपरिविन्यस्य सम्यक्पादतलेशुभे ॥ ९ ॥ अंगुष्ठौ च निबध्नीयात्पश्चात्पार्श्वयोर्व्युत्क्रमात्ततः ॥ पद्मासनमिति
प्रोक्तं योगिनां हृदयंगमं ॥ १० ॥ जानूर्वोरंतरे सम्यक्कृत्वा पादतलेशुभे ॥ ऋजुकायो विशेषयोगी स्वस्तिकं त
त्प्रचक्षते ॥ ११ ॥ सीवन्याः पार्श्वयोर्न्यस्य गुल्फयुग्मं सुनिश्चितं ॥ वृषणाधः पादपार्णिः पाणिभ्यां परिवंधये
त् ॥ १२ ॥ भद्रासनमिति प्रोक्तं योगिभिः परिपूजितं ॥ ऊर्वोः पादौ क्रमाद्व्यस्य जान्वोः प्रत्यङ्मुखं गुली ॥ १३ ॥
करौ विदध्या दाख्यातं वज्रासनमनुत्तमं ॥ एकं पादमधः कृत्वा विन्यस्योस्तथोत्तरे ॥ १४ ॥ ऋजुकायो विशेषयोगी
वीरासनमितीरितं ॥ ईडया कर्षयेद्वायुं बाह्यं षोडशमात्रया ॥ १५ ॥ धारयेत्पूरितं योगी चतुःषष्ट्या तु मात्रया ॥
सुषुम्णामध्यगं सम्यक् द्वात्रिंशन्मात्रयाशनैः ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥

॥ १० ॥ ११ ॥ सीवन्या इति सीवनी अंडाधः स्थाशिरा गुल्फौ वृषणाधः स्थितौ यौ पादयोः पार्णिभागतौ हस्ताभ्यां बंधयेत् ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥
॥ १५ ॥ ईडया वामनासापुटेन षोडशमात्रया षोडशप्रणवोच्चारणेन बाह्यं वायुमाकर्षयेत् यद्यपि मात्रात्रययोगशास्त्रोक्ता पारिभाषिकी उक्ता त
थापितस्यापि वायुपरिच्छेदे एव तात्पर्याद्येन वायुपरिच्छेदो भवति तद्ग्राह्यमित्यत्र तात्पर्यात्धारयेत् चतुःषष्टिसंख्यप्रणवोच्चारणपर्यंतं कुंभं कुर्या
दित्यर्थः पुनर्द्वात्रिंशत्प्रणवोच्चारणेन दक्षनासापुटेन विरेचयेदित्यर्थः ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥

टी.अ.

२५

॥१८॥

॥१७॥ भूयोभूयः पुनः पुनः तस्य हृदापिंगलादेः पिंगलेडादेः पुनरिडापिंगलादेः पुनः पिंगलेडादेः क्रमान्वाह्यं वायुमेवं समाचरेत् गृणीयात्त्य
जेत्यर्थः मात्राणां प्रणवसंख्यानामप्युत्तरोत्तरं वृद्धिः कर्तव्या तथा प्राणायामानामपि प्रथमतो द्वादश तदुत्तरं कतिचित्कालानंतरं षोडशेत्येवं क्रमे
ण वृद्धिः कर्तव्येत्यर्थः ॥१८॥ सगर्भविगर्भभेदेन प्राणायामस्य द्वैविध्यमाह जपध्यानादिभिरिति स्वेष्वमंत्रजपध्यानसाहितः प्राणायामः सगर्भस्तद
पेत्तस्तद्गहितो विगर्भ इत्यर्थः ॥१९॥ कनिष्ठमध्यमोत्तमभेदेन प्राणायामलक्षणमाह क्रमादभ्यस्यत्व इति प्राणायामे प्रथमतः स्वेदोद्गमो भवतिसो

नाड्यापिंगलयाचैवरेचयेद्योगवित्तमः ॥ प्राणायाममिमं प्राहुर्योगशास्त्रविशारदाः ॥ १७ ॥ भूयोभूयो क्रमा
त्तस्य बाह्यमेवं समाचरेत् ॥ मात्रावृद्धिः क्रमेणैव सम्यग्द्वादश षोडशं ॥ १८ ॥ जपध्यानादिभिः सार्धं सगर्भं तं
विदुर्बुधाः ॥ तदपेतं विगर्भं च प्राणायामं परे विदुः ॥ १९ ॥ क्रमादभ्यस्यतः पुंसो देहे स्वेदोद्गमो धमः ॥ मध्यमः
कंपसंयुक्तो भूमित्यागः परोमतः ॥ २० ॥ उत्तमस्य गुणावाप्तिर्यावच्छीलनमिष्यते ॥ इन्द्रियाणां विचरतां विष
येषु निरगलं ॥ २१ ॥ बलादाहरणं तेभ्यः प्रत्याहारो भिधीयते ॥ अंगुष्ठगुल्फजानूरुमूलाधारलिंगनाभिषु ॥
२२ ॥ हृद्ग्रीवाकंठदेशस्तुलंबिकायां तदोनासि ॥ भूमध्ये मस्तके मूर्ध्नि द्वादशांते यथाविधि ॥ २३ ॥

धमः प्राणायामः कंपसंयुक्तो मध्यमः भूमित्यागो भवति यस्मिन् प्राणायामे स उत्तमः भूमित्यस्कासनमुपर्येव तिष्ठति यदा तदा स भूमित्यागसंप्रदायः
तदुक्तं भूमित्यागतोऽस्तनोति पर इति ॥ २० ॥ उत्तमप्राणायामसिद्धिपर्यंतं प्राणायामे कृते सति फलमाह उत्तमस्येति गुणावाप्तिः वपुः प्रकाशो
ज्वलनस्य दीप्तिरल्पाशताचैव तनोर्लघुः भूमित्यादिगुणानामवाप्तिर्भवति यावत्पर्यंतं शीलनमभ्यास इष्यते तावत्पर्यंतमुत्तरोत्तरगुणावृद्धिरेव भवतीत्य
र्थः प्रत्याहारमाह इन्द्रियाणामिति विषयेषु विचरतामिन्द्रियाणां तेभ्यो निरगलं निर्विघ्नं यदाहरणं स प्रत्याहारः ॥ २१ ॥ धारणामाह अंगुष्ठेति
॥ २२ ॥ २३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.स.

॥७९॥

धारणमिति अंगुष्ठाद्यवयवेषु यत्प्राणवायोर्धारणनिरोधः साधारणेत्यर्थः एतादृशो वायुः स्वाधीनोऽपेक्षित इति भावः ध्यानमाह समाहीति अं
तः करणचैतन्यांतरवर्ति ध्यानैककृत्वा तस्मिन्नात्मनि भर्माष्टदेवानां ध्यानं तत्तन् ध्यानशब्देनोच्यत इत्यर्थः ॥ २४ ॥ समत्वभावनाद्वयोरैक्य
भावनासंप्रज्ञातसमाधि नैव भवतीति समत्वभावनाशब्देन संप्रज्ञातसमाधिरुच्यते अतएव योगसूत्रे तद्वाप्येव संप्रज्ञातसमाधेरैवाष्टसु योगांगेषु ग्र
हणं निर्विकल्पकसमाधिस्त्वं गमिष्यतीत्युक्तं ॥ २५ ॥ इत्थमष्टांगयोगमभिधायाधुना शरीरेनादिस्थानानि आधारचक्रस्वरूपाणि तत्त्वानप

टी.अ.

३५

धारणं प्राणमस्तो धारणेति निगद्यते ॥ समाहितेन मनसा चैतन्यांतरवर्तिना ॥ २४ ॥ आत्मन्यभीष्टदेवानां
ध्यानं ध्यानमिहोच्यते ॥ समत्वभावनानित्यं जीवात्मपरमात्मनोः ॥ २५ ॥ समाधिमाहुर्मुनयः प्रोक्तमष्टांग
लक्षणं ॥ इदानीं कथयेते हं मंत्रयोगमनुत्तमं ॥ २६ ॥ विश्वं शरीरमित्युक्तं पंचभूतात्मकं नग ॥ चंद्रसूर्याग्नि
जोभिर्जीवब्रह्मैक्यरूपकं ॥ २७ ॥ तिस्रः कोटयस्तदर्थेन शरीरेनादयो मताः ॥ तासु मुख्या दश प्रोक्तास्ताभ्य
स्ति स्रोव्यवस्थिताः ॥ २८ ॥ प्रधानामेरुदंडे चंद्रसूर्याग्निरूपिणी ॥ इडावामेस्थितानाडी शुभ्रा तु चंद्ररू
पिणी ॥ २९ ॥ शक्तिरूपा तु सांनाडी साक्षादमृतविग्रहा ॥ दक्षिणे यापिंगला स्यात्पुंरूपा सूर्यविग्रहा ॥ ३० ॥

लानि चोपदिशति इदानीं कथयेते ह मिति मंत्रयोगं मंत्राणां शारदातिलकोक्तच्छिन्नादिदोषदुष्टानां मंत्राणां सिद्धिप्रदं योगमित्यर्थः ॥ २६ ॥
विश्वं शरीरमिति पिंडब्रह्मादयो रेकत्वाच्छरीरमिदं विश्वमेव भवति ब्रह्मादमेव भवति तदपि पंचभूतात्मकं चंद्रसूर्याग्निभिर्युक्तं जीवब्रह्मैक्यरूप
कं यथा भवति तथेदमप्यस्तीत्याह पंचभूतेति ॥ २७ ॥ तदर्थेन कोट्यर्थेन सार्धत्रिकोट्यित्यर्थः ॥ २८ ॥ प्रधानासुषुमानाडीमेरुदंडे
पृष्ठस्थवंशे स्थिता मूलाधारमारभ्य पृष्ठवंशमार्गेण ब्रह्मरंध्रपर्यंतं गतेत्यर्थः तस्यावामे इडा दक्षिणे पिंगला अस्तीत्याह इडावामे इति ॥ २९ ॥
शक्तिरूपामकृतिरूपा ॥ ३० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥७९॥

तस्यामध्येसुषुम्नायामध्येविचित्राख्येचित्राख्यनाड्यामित्यर्थः सुषुम्नामूलदेशोर्ध्वचित्राख्यस्ताति तस्यामध्येनुचित्राख्यानाडीसूक्ष्मातुवर्ततइ
तिवचनेनतंत्रांतरेउक्तं ॥३१॥ मध्येइति चित्रानाडीमध्येइत्यर्थः हरात्माविंदुनाड्यं आत्मामायाहकाररेफकारविंदुमादात्मकमित्यर्थः
॥३२॥ शिखाकारादीपशिखाकारा॥३३॥ हेमरूपाभंपीतवर्ण वादिसांतचतुर्दलं चतुर्दलेषुवशषसइतिचत्वारोवर्णाभवंतीत्यर्थः॥३४॥

सर्वतेजोमयीसातुसुषुम्नावहिरूपिणी ॥ तस्यामध्येविचित्राख्येइच्छाज्ञानक्रियात्मकं ॥ ३१॥ मध्येस्वयं
भूर्लिंगंतुकोटिसूर्यसमप्रभं ॥ तदूर्ध्वमायाबीजंतुहरात्माविंदुनादक ॥ ३२॥ तदूर्ध्वतुशिखाकाराकुंडलीरक्त
विग्रहा ॥ देव्यात्मिकातुसाप्रोक्तमदभिन्नानगाधिप ॥ ३३ ॥ तद्बाह्येहेमरूपाभंवादिसांतचतुर्दलं ॥ द्रुतहे
मसमप्रख्यंपद्मंतत्रविचितयेत् ॥ ३४ ॥ तदूर्ध्वत्वनलप्रख्यंषट्दलंहीरकप्रभं ॥ बादिलांतषडर्णेनस्वाधि
ष्ठानमनुत्तमं ॥ ३५ ॥ मूलमाधारषट्काणामूलाधारंततोविदुः ॥ स्वशब्देनपरंलिंगंस्वाधिष्ठानंततोविदुः ॥
३६ ॥ तदूर्ध्वेनाभिदेशेतुमणिपूरंमहाप्रभं ॥ मेघाभंविद्युदाभंचबहुतेजोमयंततः ॥ ३७ ॥ मणिवद्भिन्नंतत्प
द्ममणिपद्मंतथोच्यते ॥ दशभिःश्रद्धैर्युक्तंडादिफांताक्षरान्वितं ॥ ३८ ॥ विष्णुनाधिष्ठितंपद्मविष्ण्वालेक
नकारणं ॥ तदूर्ध्वेनाहतंपद्ममुद्यदादित्यसन्निभं ॥ ३९ ॥ कादिठांतदलैरर्कपत्रैश्चसमधिष्ठितं ॥ तन्म
ध्येबाणलिंगंतुसूर्यायुतसमप्रभं ॥ ४० ॥ शब्दब्रह्ममयंशब्दानाहतंतत्रदृश्यते ॥ अनाहताख्यंतत्पद्ममुनि
भिःपरिकीर्तितं ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥

बादिळांतेति बकारादिलकारांतषडूर्ध्वैर्युक्तमित्यर्थः ॥ ३५ ॥ स्वशब्देनपरंलिंगंतस्याधिष्ठानंतस्तस्मात्स्वाधिष्ठानमित्युच्यतइत्यर्थः
॥३६॥३७॥ डादिफांताक्षरैर्युक्तमित्यर्थः ॥३८॥३९॥ अर्कपत्रैर्द्वादशपत्रैर्युक्तं ककारादिठकारांतानिद्वादशाक्षराणिदलेषुज्ञेयानि
॥४०॥ शब्दानाहतं अनाहतोनामताडनंविनापिजपमानःशब्दः सोनाहतःशब्दोऽयस्मिस्तच्छब्दानाहतंवाङ्मयादित्वात्साधुः॥४१॥

दे.भा.स.

॥८०॥

पुरुषाधिष्ठितेन्द्राधिष्ठितमित्यर्थः ॥ ४२ ॥ स्वरैः षोडशभिरिति षोडशपत्रेषु षोडशस्वरादित्यर्थः जीवस्य हंसस्य परमात्मनो बलोक
नाम्नीयं स्मादि शुद्धं तनुते तस्यो विशुद्धमित्यन्वयः तत्रानाहतं चक्रं हृदये विशुद्धिचक्रं कंठे आज्ञाचक्रं भूमध्ये इति ग्रंथांत सदवसेयं अनाहतः
ज्ञाहीमध्यमानीत्युच्यते ॥ ४३ ॥ तदूर्ध्वं तु भूमध्ये इत्यर्थः ॥ ४४ ॥ आज्ञासंक्रमणमिति तस्मिंस्थले निहितचित्तस्य पुरुषस्य
सर्वपदार्थसाक्षात्कारेणैव भूतमेव वर्तते एवं भविष्यतीति ज्ञानेनाज्ञाया इतः परं त्वयैव कर्तव्यमिति परमेश्वराज्ञायाः संक्रमणं भवति तेन हेतुना तदाज्ञाचक्र

टी.अ.

३५

आमंदसदनंतनुपुरुषाधिष्ठितं परं ॥ तदूर्ध्वं तु विशुद्धाख्यं दलषोडशपंकजं ॥ ४२ ॥ स्वरैः षोडशभिर्युक्तं धूधव
र्णमहाप्रभं ॥ विशुद्धं तनुते यस्माज्जीवस्य हंसलोकनात् ॥ ४३ ॥ विशुद्धं पद्ममाख्यातमाकाशाख्यं महाशुभं
॥ आज्ञाचक्रं तदूर्ध्वं तु आत्मनाधिष्ठितं परं ॥ ४४ ॥ आज्ञासंक्रमणं तत्र तेनाज्ञेति प्रकीर्तितं ॥ द्विदलं हृक्षसंयुक्तं
पद्मं तत्सुमनोहरं ॥ ४५ ॥ कैलासाख्यं तदूर्ध्वं तुरोधिनीतु तदूर्ध्वतः ॥ एवं त्वाधारचक्राणि प्रोक्तानि तव सुव्रत
॥ ४६ ॥ सहस्रारयुतं बिंदुस्थानं तदूर्ध्वमीरितं ॥ इत्येतत्कथितं सर्वयोगमार्गमनुत्तमं ॥ ४७ ॥ आदौ पूरक
योगेनाप्याधारे योजयेन्मनः ॥ गुदमेढ्रांतरे शक्तिस्तामाकुच्य प्रबोधयेत् ॥ ४८ ॥ ॥ ६२ ॥

मितिकीर्तितमित्यर्थः हृक्षवर्णद्वयसंयुतपद्मद्वययुक्तमित्यर्थः ॥ ४५ ॥ तदूर्ध्वं कैलासाख्यं तदूर्ध्वं तुरोधिनीचक्रमित्यर्थः अनयोः स्वरूपं मत्कृतं दे
वीगीतावृहद्गीकायां द्रष्टव्यं ॥ ४६ ॥ सर्वोपरिविद्यमानं सहस्रारं चक्रमाह सहस्रारोति बिंदुस्थानं परमात्मास्थानमित्यर्थः इत्येतदि
ति पूर्वोक्तप्रकारेणैतत्तद्विज्ञात्वेति शेषः ॥ ४७ ॥ ज्ञात्वा कर्तव्यं तदूर्ध्वं आदाविति प्रथमतः पूरकयोगेन बाह्यवायुमाकुच्य कुंभकं
कृत्वा स्वमनो वायुसहितं मूलाधारे योजयेन्नयेदित्यर्थः अनंतरं गुदमेढ्रांतरे स्थितं मध्यमूलाधारचक्रेत्यर्थः विद्यमाना स्थिताया शक्ति
कुंभलिनीतमाकुच्य मूलाधारमतवायुनापीडयित्वा प्रबोधयेत् इत्यादि इत्यर्थः ॥ ४८ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥८०॥

लिंगभेदेति तामुत्पाप्यलिंगभेदक्रमेण पूर्वोक्तचक्रगततत्तेजोमयस्वयंभादिलिंगानां भेदोभेदनंतन्मार्गेण नयनंतक्रमेणैव तां कुंडलिनीं शक्तिं
विंदुचक्रे सहस्रारं तत्रापयेत् शंभुनेति सहस्रारपद्मस्थितेन शंभुना तां कुंडलिनीं मेकीभूतां संगतां विभुवयेदित्यर्थः ॥ ४९ ॥ तत्रोत्थितेति तत्राशे
वशत्तोः संगमे यदुत्थितममृतं द्रुतलाक्षासमानवर्णतदमृतं तां कुंडलिनीं पाययित्वा तामनेन आनंदरसरूपेण तां तृप्तां कृत्वेत्यर्थः ॥ ५० ॥ षट्चक्रे
ति पूर्वोक्तानि षट्चक्राणि तच्चक्रस्थिता देवता लिंगरूपा अमृतधारया शिवशक्तिसमांगमोत्थानंदरसरूपामृतवृष्ट्या संतर्प्य पुनस्तेनैव मार्गेण म

लिंगभेदक्रमेणैव विंदुचक्रं च आपयेत् ॥ शंभुना तां परां शक्तिमेकीभूतां विचिंतयेत् ॥ ४९ ॥ तत्रोत्थितामृ
तं यत्तु द्रुतलाक्षारसोपमं ॥ पाययित्वा तां शक्तिं मायाख्यां योगिनिदिदां ॥ ५० ॥ षट्चक्रदेवतास्तत्र संतर्प्या
मृतधारया ॥ आनयेत्तेन मार्गेण मूलाधारं ततः सुधीः ॥ ५१ ॥ एवमभ्यस्य मानस्याप्यहन्यहनि निश्चितं ॥ ज
रामरणदुःखाद्यैर्मुच्यते भवबंधनात् ॥ ५२ ॥ पूर्वोक्तदूषितामंत्राः सर्वे सिध्यन्ति नान्यथा ॥ ये गुणाः संति दे
व्या मे जगन्मातुर्यथा तथा ॥ ५३ ॥ ते गुणाः साधकवरे भवंत्येव न चान्यथा ॥ इत्येवं कथितं तात वायुधारणमु
त्तमं ॥ ५४ ॥ इदानीं धारणाख्यं तु शृणु प्लावहितो मम ॥ दिक्कालाद्यनवच्छिन्नदेव्यां चेतो विधाय च ॥ ५५ ॥
तन्मयो भवति क्षिप्रं जीव ब्रह्मैक्ययोजनात् ॥ अथ वा समलं चेतो यदि क्षिप्रं न सिध्यति ॥ ५६ ॥ तदा वयवयोगे
न योगीये गान्ध्याः समभ्यसेत् ॥ मदीयहस्तपादादां भेतुमधुरेन ग ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥

स्तं कं नीता कुंडलिनी तेनैव मार्गेण मूलाधारं तां कुंडलिनीं निनयेदित्यर्थः ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ पूर्वोक्तेति छिन्नादिदोषदूषितामंत्रा अनेन योगे
न सिध्यन्तीत्यर्थः तदुक्तं गारुडातिलके इत्यादिदोषदुष्टांस्तान्मंत्रानात्मनियोजयेत् शोधयेद्द्रुतपवनोच्चद्वयायोगे निमुद्रयेत् ॥ ५३ ॥ ५४ ॥
प्रसंगेन धारणस्वरूपं पूर्वमुक्तमेव विषयभेदेन विशदयति इदानीमिति पूर्वमष्टांगयोगनिरूपणे वायुधारणोक्ता त्रतुचित्तस्य धारणोच्यते इत्यर्थः
अर्थः स्पष्ट एव ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥

दे.भा.स.

॥८१॥

॥ ५८ ॥ इत्थं ध्यानयोगकरणेयस्य यावद्योग्यतानास्तितावत्पर्यंतं तेन पुरुषेणार्किकर्तव्यमिति चेत्तत्राह यावन्मन इति ॥ ५९ ॥ ६० ॥
॥ ६१ ॥ ६२ ॥ विस्तरस्तु मत्कृतदेवीगीताबृहद्गीकायां द्रष्टव्यः ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके सप्तमस्कंधे पंचत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३५ ॥
त्रिंशच्छ्लोकैर्मुख्यतत्त्वं ब्रह्मरूपं तु वर्ण्यते ॥ ब्रह्मविद्यादुर्लभेति यथा वदभिधीयते ॥ १ ॥ अत्रार्धश्लोकोऽप्यधिकः एतादृशयोगं साधयित्वा यस्तुध्येयं
तद्वर्णयति श्रीदेव्युवाचेति अत्राविःसन्निहितमित्यादि ब्रह्मैवेदं विश्वं वारिष्ठमित्यंताः श्रुतयो मुंडकोपनिषदि अन्यूनानतिरिक्ताः संतिताश्च श्रुतयो

चित्तं संस्थापयेन्मंत्रोऽस्थानस्थानजयात्पुनः ॥ विशुद्धचित्तसर्वस्मिन् रूपेण संस्थापयेन्मनः ॥ ५८ ॥ यावन्म
नो लयं याति देव्यां संविदि पर्वत ॥ तावदिष्टमनुमंत्रो जपहोमैः संनयसेत् ॥ ५९ ॥ मंत्राभ्यासेन योगेन ज्ञेय
ज्ञानाय कल्पते ॥ न योगेन विनामंत्रेण विना हि सः ॥ ६० ॥ द्वयोरभ्यासयोगो हि ब्रह्मसंसिद्धिकारणं ॥ तमः
परिवृते गेहे यदोदीपेन दृश्यते ॥ ६१ ॥ एवं मायावृतो ह्यात्मा मनुना गोचरीकृतः ॥ इति योगविधिः कृत्स्नः सांगः प्रो
क्तो न यधुना ॥ ६२ ॥ गुरुपदेशतो ज्ञेयो नान्यथा शास्त्रकोटिभिः ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे सप्तमस्कंधे पं
चत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३५ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ इत्यादियोगयुक्तात्मा ध्यायेन्मां ब्रह्मरूपिणीं ॥ भक्त्या निर्व्याजयाराजनास
ने संमुपस्थितः ॥ १ ॥ आविःसंनिहितं गुहाचरं नाम महत्पदं ॥ अत्रैव त्सर्वमर्पितमेजत्प्राणान्निमिषच्चयत् ॥ २ ॥

भगवत्पादैः श्रीमच्छंकराचार्यैर्व्याख्याता एव मुंडकोपनिषदाख्ये ततस्तासां ब्रह्मसंक्षेपेणैव क्रियते आविरिति आविःशब्दो निपातः
प्रकाशवाचि ब्रह्मविश्वोपलब्ध्यात्मना प्रकाशमानमेव सदेति भावयेदित्यर्थः सन्निहितमति समीपवर्ति गुहायां बुद्धौ चरतितत्रोपलभ्यते सर्वव्या
पकमर्पति गुहाचरं नाम ॥ १ ॥ पश्यते सर्वं मुनिभिर्योगादिसाधनैः प्राप्यते इति पदं महत्तत्पदं चेति महत्पदं यत्रास्मिन् ब्रह्मणि सर्वमाकाशादि
समर्पितं स्थापितं कल्पितमित्यर्थः ततस्तस्य मिथ्यात्वादिदमेव सर्वैः प्राप्यमित्यर्थः किं मंत्रसमर्पितं तदाह एजदिति एजश्च लक्ष्यादि प्राणत्
प्राणितीति प्राणत्प्राणन्मनुष्यादि निमिषच्चयत्निमेषादिक्रियावद्वाचि निमिषं च शब्दात्तत्सर्वं ब्रह्मण्येव समर्पितमित्यर्थः ॥ २ ॥ ॥ ७ ॥

टी.अ.

३५

॥८१॥

एतज्ज्ञानयेति भगवतीवदति हेदेवाएतन्मदूषं ब्रह्मज्ञानयावगच्छथ सदसद्वरेण्यं सत्कारणं मायासत्कार्यजगत्तदुभयापेक्षयावरेण्यं श्रेष्ठं प्रजानां लोकानां विज्ञानात्परंतज्ज्ञानाविषयइत्यर्थः यतोवरिष्ठं श्रेष्ठं ततो सर्वबुद्धिगम्यमित्यर्थः यदर्चिमत्सूर्यादितेजसामपि प्रकाशकं यतस्ततोतिशयदीप्तिमदित्यर्थः यस्मिन्भूरादयो लोकास्तन्निवासि जना लोकिनश्च निहिताः स्थापिताः कल्पिता इत्यर्थः ॥ ३ ॥ तदेतदिति तदेतत्सर्वाश्रयमक्षरं ब्रह्म स प्राणस्तदुत देवाङ्मनोऽपि तदेतत्सत्यमवितथमतो मृतं तद्व्यं मनसा शरेण तोडयितव्यं मनः समाधानं तत्र कर्तव्यमित्यर्थः ॥ ४ ॥ कथं वेत्थ व्यंतदुच्यते धनुरिति औपनिषदमुपनिषद्विबोधितं महास्रं चेति महं स्रं तदस्रं चेति महौ स्रं धनुर्गृहीत्वा दाय तथोपासांभिर्निशितं संतताभिध्यानेन तनू

एतज्ज्ञानथ सदसद्वरेण्यं परं विज्ञानाद्यद्वरिष्ठं प्रजानां ॥ यदर्चिमद्यदणुभ्योऽणुचयस्मिं लोका निहिता लोकिनश्च ॥ ३ ॥ तदेतदक्षरं ब्रह्म स प्राणस्तदुवाङ्मनः ॥ तदेतत्सत्यममृतं तद्व्यं मनसोऽपि विद्धि ॥ ४ ॥ धनुर्गृहीत्वौपनिषदं महास्रं शरं ह्युपासानिशितं संधयीत ॥ आयम्य तद्वागतेन चेतसा लक्ष्यं तदेवाक्षरं सौम्यविद्धि ॥ ५ ॥ प्रणवो धनुः शरो ह्यत्मा ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते ॥ अप्रमत्तेन वेदव्यं शरवत्तन्मयो भवेत् ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥

कृतं शरं तस्मिन् धनुषि संधयीत योजयेत् शरं संधाय संस्थाप्यान्तरमायम्या कृष्य सौम्यमंतःकरणं स्वविषयाद्भिनिवर्त्य लक्ष्ये एव स्थापयित्वेत्यर्थः तद्वागतेन तस्मिन् ब्रह्मण्यक्षरे लक्ष्ये भावनाभावस्तद्वतेन चेतसा लक्ष्यं तदेव यथोक्तलक्षणं सौम्यहे पवंत राजविद्धि ताडयेत्यर्थः ॥ ५ ॥ यदुक्तं धनुरादितदुच्यते प्रणवइति प्रणवोऽकारो देवी प्रणवो वा धनु र्यथेष्वासनं लक्ष्ये शरस्य प्रवेशकारणं तथा चित्तशरस्याक्षरे लक्ष्ये प्रवेशकारणं प्रणवः प्रणवेन ह्यभ्यस्यमानेन संस्क्रियमाणतदालंबनो प्रातिबंधेनाक्षरे वतिष्ठते यथा धनुषा प्राक्षित इष्टुर्लक्ष्येऽतः प्रणवो धनुरिव धनुः शरो ह्यत्मा त्वः करणं हि शरः शरसदृशलक्ष्यवेधनाच्छर इव शरः अत्र लक्ष्यं तु तत्र ब्रह्मैवोच्यत इत्याह ह ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यत इति अप्रमत्तेनैकाग्रचेतसा तल्लक्ष्यं ब्रह्म वेत्थ व्यं यथा शरो लक्ष्यैकात्मतां प्राप्नोति तथा देहात्मा प्रत्ययति रस्कारेणाक्षरैक्यात्संफलमापादयेदित्यर्थः ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.स.

॥८२॥

अक्षरस्यदुर्लक्ष्यत्वात्पुनःपुनर्वचनंसुलणार्थं यस्मिन्निति यस्मिन्नक्षरेद्यौःपृथिवीचांतरिक्षंचप्राणैःसहमनश्चसमर्पितं तमेवैकमात्मानंजा
नयजानीथ हेदेवायंज्ञात्वाचान्यवाचोपरविद्यारूपाविमुंचथाविमुंचतपरित्यजत यतोऽमृतस्यमोक्षस्यप्राप्तयेयंसेतुरिवसेतुः संसारमहोद
धेस्तरणहेतुरित्यर्थः तथाचश्रुतिः तमेवविदित्वातिमृत्युमेतिनान्यःपंथाविद्यतेयनायेति ॥ ७ ॥ किंचअराइवयथारथनाभौसमर्पिता
अराएवंसंहताःसंप्रविष्टाएवयत्रयस्मिन्हृदयेनाह्यस्तस्मिन्हृदयेबुद्धिप्रत्ययसाक्षिभूतःसएषप्रकृतआत्मांतर्मध्येचरतेचरतिवर्ततेबुद्ध्यादिप्रत्य
यैर्जायमानइवजायमानोतःकरणोपाध्यनुविधायित्वादंतिलौकिकाः हृष्टोजातःक्रुध्योजातइति ॥ ८ ॥ तमात्मानमोमित्येवोकार

यस्मिन्द्यौश्चपृथिवीचांतरिक्षमोतंमनःसहप्राणैश्चसर्वैः॥तमेवैकंजानथात्मानमन्यावाचोविमुंचथाअमृतस्यैप
सेतुः ॥ ७ ॥ आराइवरथनाभौसंहतायत्रनाड्यः ॥ सएषांतश्चरतेबहुधाजायमानः ॥ ८ ॥ ओमित्येवंबुद्ध्या
यथात्मानंस्वस्तिवःपारायतमसःपरस्तात् ॥ दिव्येब्रह्मपुरेव्योम्निआत्मासंप्रतिष्ठितः ॥९॥ मनोमयःप्राण
शरीरनेताप्रतिष्ठितोन्नेहृदयंसन्निधाय ॥ तद्विज्ञानेनपरिपश्यंतिथीराआनंदरूपममृतंयद्विभाति ॥ १० ॥

लंबनाःसंतोयथोक्तकलनयाध्यायथचितयत तेषांकल्याणार्थमाशीर्वचनंभगवतीकरुणानिधिर्वदति स्वस्तिनिर्विघ्नमस्तुवोयुष्माकंपाराय
परकुलप्रातये तमसोविद्यातःपरस्तादविद्यारहितब्रह्मात्मस्वरूपगमनायेत्यर्थः सआत्माक्वतंनेतत्राह यःसर्वज्ञोयश्चसर्वविद्यस्यैषमहिमा
विभूतिर्जगत्सर्जनादिरूपोभुविप्रसिद्धः सदिव्येद्योतनवतिब्रह्मपुरेहृदयपुंडरीकेतृत्वेनस्यप्रकाशमानत्वात्तस्मिन्हृत्कमलेयद्व्योमाकाशस्तस्मि
नप्रतिष्ठितइवोपलभ्यते ॥ ९ ॥ सहात्मानमनोवृत्तिभिरेवविभाव्यतइतिमनोमयः प्राणश्चशरीरंचतयोरयंनेता शरीराच्छरीरांतरंप्रतिप्रतिष्ठि
तोवास्थितोनेनपरिणामेपिडेहृदयेबुद्धिसंनिधायसमवस्थाप्यतद्विज्ञानेनतत्साक्षात्कारेणैरिपश्यंति सर्वतःपूर्णपश्यंतिथीरानिवेकिनः आनंदरूपं
दुःखासंसृष्टममृतंयाद्विभातिसर्वदाइत्यर्थः ॥ १० ॥

टी.अ.
३६

॥८२॥

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

अस्यात्मज्ञानस्यफलमभिधीयते भिद्यते इति हृदयग्रंथिः चिदहंकारतादात्म्यरूपो भिद्यते नश्यति छिद्यते सर्वज्ञेयविषयाः संशयाः सर्वेषां मि
थ्यात्वनिश्चयात् क्षीयंते नश्यंति च कर्माणि प्रारब्धानि सर्वाणि तस्मिन् पुरमात्मनि दृष्टे साक्षात्कृते इत्यर्थः ॥ ११ ॥ उक्तस्यैवायं
स्य संक्षेपाभिधायका उत्तरे त्रयोपि मंत्राः हिरण्मये ज्योतिर्मये परे कोशे नानंदमयं कोशे विरजं उपलब्धं तत्तद्गुणत्रयरहितं ब्रह्म पुच्छं प्राप्तेऽप्येति श्रुत्यु
क्तं ब्रह्म निष्कलं मायारहितं सत्त्वमरजस्कमतमस्वभावायमिति श्रुत्यंतरा अतएव शुभ्रं स्वच्छं ज्योतिषां सर्वप्रकाशकसूर्यादीनामपि ज्योतिः
प्रकाशकमित्यर्थः यदात्मविदो ज्ञानिनो महतायासेन विदुस्तद्विरण्मये परे कोशे तिष्ठतीत्यन्वयः ॥ १२ ॥ कथं तज्ज्योतिषां ज्योतिस्तदु

भिद्यते हृदयग्रंथिश्छिद्यंते सर्वसंशयाः ॥ क्षीयंते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे ॥ ११ ॥ हिरण्मये परे कोशे वि
रजं ब्रह्म निष्कलं ॥ तच्छुभ्रं ज्योतिषां ज्योतिस्तद्यदात्मविदो विदुः ॥ १२ ॥ न तत्र सूर्यो भाति न चंद्रतारकं नेमा
विद्युतो भांति कुतो यमग्निः ॥ तमेव भांतमनुभाति सर्वतस्य भासा सर्वमिदं विभाति ॥ १३ ॥ ब्रह्मैवेदममृतं पुर
स्ताद्ब्रह्म पश्चाद्ब्रह्म दक्षिणतश्चोत्तरेण अधश्चोर्ध्वं च प्रसृतं ब्रह्मैवेदं विश्वं वरिष्ठं ॥ १४ ॥ एतादृगनुभवो यस्य स
कृतार्थो नरोत्तमः ॥ ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मानं शोचति न कांक्षति ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥

च्यते न तत्रेति तत्र तस्मिन्नात्मभूते ब्रह्मणि न सूर्यो भाति सूर्योऽपि तद्ब्रह्म न प्रकाशयतीत्यर्थः तथा चंद्रतारकं इमां विद्युतोऽपि न भांति न प्रकाशयंति कु
तो यमग्निः पूर्वापेक्षया स्वल्पज्योतिः प्रकाशयति नैव प्रकाशयतीत्यर्थः किं बहुना यदिदं जगत्भाति तत्तमेवात्मानं स्वप्रकाशत्वादां तं प्रकाशमनुभास्य
नुदीप्यते तस्यैव भासा सर्वमिदं सूर्यादिजगद्भातितीत्यर्थः ॥ १३ ॥ यन्मयोक्तं ब्रह्म न देवसत्यं रज्जुस्थानीयं नान्यज्जगत्सर्पस्थानीयं मृपात्वा
त्तस्मादिदमेवाश्रयणीयमित्यभिप्रायेणानेगमनस्थानीयेन मंत्रेणोपसंहरति ब्रह्मैवेदमिति ब्रह्मैवोक्तलक्षणमितीदं यत्पुरस्तादग्रे ब्रह्मैवाविद्यादृष्टीना
प्रत्यवभासमानं तथापश्चाद्ब्रह्मतथादक्षिणतश्चोत्तरेण तथैवाधस्तादूर्ध्वं च किं बहुना ब्रह्मैवेदं विश्वं समस्तं वरिष्ठमिदं जगत् अब्रह्म प्रत्ययः सर्वोऽवि
द्यामात्रैरज्वामिव सर्पप्रत्ययो ब्रह्मैवेदं परमार्थसत्यमिति वेदानुशासनमित्यर्थः ॥ १४ ॥ एतादृशानुभवतः कृतार्थत्वमाह एतादृगिति ॥ १५ ॥

दे.भा.स.

॥८३॥

द्वितीयादिति तदभावाद्द्वितीयस्य भयकारणस्याभावात्ब्रह्मविज्ञाविभेतीत्यर्थः तेनममकदापिवियोगोनास्तीत्याह नतद्वियोग इति ॥ १६ ॥
अहमेवेति अहंयास्मिन्सासन्नान्यस्तीत्यर्थः सन्नानीयोस्तिसोहमेवास्मीत्यर्थः व्यतिहारेण दृढाभेदोदाशितः ॥ १७ ॥ १८ ॥ अहंज्ञानि
हृदये एव तिष्ठामीत्याह नाहंतीर्भेद इति ॥ कृतकृत्यका स्वार्थेकनूप्रत्ययः ॥ १९ ॥ यस्यपुरुषस्यचेतसश्चित्तिपरमात्म
निलयो जातस्तेनपुरुषेणाविश्वंभरापृथिवीपुण्यवतीत्यर्थः ॥ २० ॥ नातोवक्तव्यमस्तीति इतः परमाधिकोवक्तव्यांशोनास्तीत्यर्थः विद्योपदेशपात्र

द्वितीयाद्वैभयंराजंस्तदभावाद्द्विभेतिन ॥ नतद्वियोगोमेव्यस्तिमद्वियोगोपितस्यन ॥ १६ ॥ अहमेवससोहं
वैनिश्चितंविद्विपर्वत ॥ महर्शनंतुतत्रस्याद्यत्रज्ञानीस्थितोमम ॥ १७ ॥ नाहंतीर्थेनकैलासेवैकुण्ठवानकर्हिचि
त् ॥ वसामिर्कितुमइज्ञानिहृदयांभोजमध्यमे ॥ १८ ॥ मत्पूजाकोटिफलदंसकृन्मज्ज्ञानिनोर्चनं ॥ कुलंपवि
त्रंतस्यास्तिजननीकृतकृत्यका ॥ १९ ॥ विश्वंभरापुण्यवतीचिह्नयोयस्यचेतसः ॥ ब्रह्मज्ञानंतुयत्पृष्टंत्वया
पर्वतसत्तम ॥ २० ॥ कथितंतन्मयासर्वेनातोवक्तव्यमस्तिहि ॥ इदंज्येष्ठायपुत्रायभक्तियुक्तायशीलिने
॥ २१ ॥ शिष्यायचयथोक्तायवक्तव्यंनान्यथाक्वचित् ॥ यस्यदेवेपराभक्तिर्यथादेवेतथागुरौ ॥ २२ ॥ तस्यैतेक
थिताह्यर्थाःप्रकाशंतेमहात्मनः ॥ येनोपदिष्टाविद्येयंसएवपरमेश्वरः ॥ २३ ॥ यस्यायंसुकृतंकर्तुमसमर्थस्त
तोऋणी ॥ पित्रोरप्यधिकःप्रोक्तोब्रह्मजन्मप्रदायकः ॥ २४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥

मुपदिशति इदंज्येष्ठायेति ॥ २१ ॥ यथोक्तायशास्त्रोक्तलक्षणयुक्ताय गुरुप्रसादंविनापरमेश्वरप्रसादंविनाकदापिब्रह्मविद्यानभव
तीत्याह यस्यदेवेइति श्रुतिरियं ॥ २२ ॥ विद्येयमिति ब्रह्मविद्येत्यर्थः सुकृतमुपकारंतस्यगुरोःकर्तुमयंशिष्योयतोसमर्थस्ततोयांशि
ष्यस्तस्यगुरोर्यावज्जीवपर्यंतंऋणीत्यर्थः ॥ २३ ॥ ब्रह्मजन्मब्रह्मरूपेणजन्मपितृजातजन्ममरणेसतिनष्टंमवेत्नेत्यं ब्रह्मरूपेणजातंकदाचिद
पिनष्टंभवेत्तदइत्यर्थः ॥ २४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७५ ॥

टी.अ.
३६

॥८३॥

अतएवतस्मैन्द्रुह्येत्कृतमस्यजानन्नितिश्रुतिरपीममेवार्थवक्ताह तस्मैन्द्रुह्येदिति ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ कृतघ्नेनास्तिनिष्कृतिरिति कृतघ्नेप्रायश्चित्तनास्तीत्यर्थः इंद्रेणार्थवर्णायोक्तेति अत्रेदंबोध्यं दध्यङ्नामाथर्वणोमुनिःसइंद्रं प्रतिब्रह्मविद्यां प्रार्थितवांस्तस्माद्वोब्रह्मविद्यां प्रोवाचानंतरमुक्तवानिंद्रोयदीमां ब्रह्मविद्यामन्यस्मैवदसितदैवतोशिरश्छेत्स्यामीति ततः कियताकालेन दध्यङ्मुनिं प्रत्यागत्याश्विनीकुमारौ ब्रह्मविद्यां प्रार्थितवंतौ ताभ्यामुनिस्वाचयद्यहं ब्रह्मविद्यां वक्ष्यामि तर्ह्येदोमे शिरश्छेत्स्यतीति तच्छ्रुत्वा तौ वैद्यावूचतुस्तवेदं शिरश्छेत्वास्मा

पितृजातं जन्म नष्टं नेत्थं जातं कदाचन ॥ तस्मैन्द्रुह्येदित्यादिनिगमोप्यवदन्नग ॥ २५ ॥ तस्माच्छास्त्रस्यसिद्धांतो ब्रह्मदातागुरुः परः ॥ शिवेरुष्टेगुरुस्त्रातागुरोरुष्टेन शंकरः ॥ २६ ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन श्रीगुरुं तोषयेन्नग ॥ कायेन मनसा वाचा सर्वदा तत्परो भवेत् ॥ २७ ॥ अन्यथा तु कृतघ्नः स्यात्कृतघ्नेनास्तिनिष्कृतिः ॥ इंद्रेणार्थवर्णायोक्ता शिरश्छेदप्रतिज्ञया ॥ २८ ॥ अश्विभ्यां कथने तस्य शिरश्छिन्नं च वज्रिणा ॥ अश्वीयं तच्छिरो नष्टं दृष्ट्वा वैद्यौ सुरोत्तमौ ॥ २९ ॥ पुनः संयोजितं स्वीयं ताभ्यामुनिशिरस्तदा ॥ इति संकटसंपाद्या ब्रह्मविद्यानगाधिप ॥ ३० ॥ लब्धायै न सधयः स्यात्कृतकृत्यश्च भूधर ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे सप्तमस्कंधे देवीगीतायां षट्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३६ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥

भिरन्यत्र स्थाप्यते अश्वीयं मस्तकं तव देहे संयोज्यते तेन ब्रह्मविद्यामस्मभ्यमुपदिशयर्देद्र आगत्य तच्छिरश्छेत्स्यतीति दावयं पूर्वस्थापितं मुख्यं शिरस्तव देहे संयोजयावस्तदनंतरं मुख्ये नैव मुख्यशिरसा ब्रह्मविद्यां वदेति तदनंतरं समुनिरपितयैव चकारेति कथा सर्ववेदेषु प्रसिद्धा तां कथां ब्रह्मविद्यां स्तोतुं स्मारयति इंद्रेणार्थवर्णायोक्तेति ॥ २८ ॥ २९ ॥ इति संकटेति एतादृश्यति दुर्लभा ब्रह्मविद्यायेन लब्धा सधन्य इत्यन्वयः ॥ ३० ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके सप्तमस्कंधे देवीगीतायां षट्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३६ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७० ॥

दि.भा.स.

॥८४॥

पंचाधिकैश्चत्वारिंशत्पदैरथसादरं ॥ भक्तिस्वरूपमहिमायथावदनुवर्ण्यते ॥ १ ॥ पूर्वयस्यदेवेपराभक्तिरित्युक्तं तत्र भक्तिस्वरूपं पृच्छति स्वी
यां भक्तिमिति मध्यमस्य मध्यमाधिकारिणो विरागिणो भक्तिरहितस्यापि दुर्लभं ज्ञानं येन भक्तिहेतुना जायेत तां भक्तिं वदेत्यर्थः ॥ १ ॥ मोक्षप्राप्तौ
त्रयो मार्गाः कर्मोपासनाज्ञानभेदेन त्रिविधाः तत्र ज्ञानमार्गः साक्षान्मोक्षसाधनमितरौ चित्तशुद्धिद्वारेति विवेकः तानेव मार्गान् दर्शयति कर्मयो
गइति भक्तियोगउपासनायोगइत्यर्थः ॥ २ ॥ त्रयाणामपि मार्गाणां मध्ये तन्मार्गं गमिनां त्रयाणामपि पुरुषाणामयं भक्तियोगः

टी.अ.
३७

हिमालय उवाच ॥ स्वीयां भक्तिं वदस्वां वयेन ज्ञानं सुखेन हि ॥ जायेत मनुजस्यास्य मध्यमस्याविरागिणः ॥ १ ॥
देव्युवाच ॥ मार्गाल्त्रयो मे विख्याता मोक्षप्राप्तौ नगाधिप ॥ कर्मयोगो ज्ञानयोगो भक्तियोगश्च सत्तम ॥ २ ॥
त्रयाणामप्ययं योग्यः कर्तुं शक्योऽस्ति सर्वदा ॥ सुलभत्वा न्मानसत्वात् कायचित्ताद्यपीडनात् ॥ ३ ॥ गुणभेदा
न्मनुष्याणां सा भक्तिस्त्रिविधामता ॥ परपीडां समुद्दिश्य दंभं कृत्वा पुरःसरं ॥ ४ ॥ मात्सर्यक्रोधयुक्तो य
स्तस्य भक्तिस्तुता मसी ॥ परपीडादिरहितः स्वकल्याणार्थमेव च ॥ ५ ॥ नित्यं सकामो हृदये यशोर्थी भोगलो
लुपः ॥ तत्तत्फलसमावाह्यै मामुपास्तेऽतिभक्तितः ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

कर्तुं योग्यः शक्यश्च भवति कुत इति चेदस्य भक्तियोगस्यान्यापेक्षया सुलभत्वा न्मानसत्वात् द्रव्यव्ययशरीराया समंतरेण केवलं मनोवृत्त्यैव संपाद्य
त्वात् यस्मिन् भक्तियोगे कायचित्त्तद्रव्यव्ययादिपीडनाभावो भवति तस्मादित्यर्थः ॥ तस्मात्सर्वैरप्ययं भक्तियोगो नियमेनाश्रयितव्य इत्यर्थः
॥ ३ ॥ तत्र भक्तेः त्रैविध्यमुपदिशति गुणभेदादिति मनुष्याणां मनुष्यसंबन्धिनां गुणानां सत्त्वरजस्तमोरूपाणां भेदात् भक्तिरपि त्रिविधा सा वि
कराजसतामसभेदेन त्रिविधा भवतीत्यर्थः त्रिविधभक्तिस्वरूपमाह परपीडामिति अन्यनाशार्थमित्यर्थः ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥

॥८४॥

भेदबुद्ध्याजीवेश्वरयोर्भेदबुद्ध्यामांसर्वेश्वरीस्वस्मादन्याभिन्नाजानातियतःपामरः ॥ ७ ॥ ८ ॥ भेदबुद्धिमुपाश्रितइति अयमपिसात्विकः पुरुषोभेदबुद्धिजीवेश्वरयोः पृथग्बुद्धिमाश्रित्यैवभक्तिकरोतीत्यर्थः ॥ ९ ॥ त्रिविधभक्तिस्वरूपमुपदिशयितिसृणुभक्तीनामध्येदयोर्ह्येयत्वमेकस्याः ग्राह्यत्वमाह परभक्तेरिति सापरानुरक्तिरीश्वरेइतिलक्षणलक्षितायाः परभक्तेः परप्रेमरूपाया इयं सात्विकीभक्तिः प्रापिका भवति ततइयमाश्रयणीयेतिभावः नन्वियं परभक्तिः कुतेनेति चेत्तत्राह भेदबुद्ध्यवलंबनादिति अस्यांभेदबुद्धिर्वर्ततइत्यात्मसदृशप्रेम्णोत्रासंभवान्नेयं

भेदबुद्ध्यातुमांस्वस्मादन्यांजानातिपामरः ॥ तस्यभक्तिःसमाख्यातानगाधिपतुराजसी ॥ ७॥ परमेशार्पणं कर्मपापसंक्षालनाय च ॥ वेदोक्तत्वादवश्यंतत्कर्तव्यंतुमयानिशं ॥ ८ ॥ इतिनिश्चितबुद्धिस्तुभेदबुद्धिमुपाश्रितः ॥ करोतिप्रीतयेकर्मभक्तिःसानगसात्विकी ॥ ९ ॥ परभक्तेःप्रापिकेयंभेदबुद्ध्यवलंबनात् ॥ पूर्वप्रोक्तेह्युभेभक्तीनपरप्रापिकेमते ॥ १० ॥ अधुनापरभक्तिंतुप्रोच्यमानानिबोधमे ॥ मद्गुणश्रवणंनित्यंममनामानुकीर्तनं ॥ ११ ॥ कल्याणगुणरत्नानामाकरायांमयिस्थिरं ॥ चेतसोवर्तनंचैवतैलधारासमंसदा ॥ १२ ॥ हेतुस्तुतत्रकोवापिनकदाचिद्भवेदपि ॥ सामीप्यसार्थिसायुज्यसालोक्यानांनचेपणा ॥ १३ ॥ ॥६४॥

राभक्तिरित्यर्थः परप्रेमात्मात्मन्येवसंभवतितदेतत्प्रेयः पुत्रात्प्रेयोविच्चातूप्रेयः सर्वस्माद्यदंतरतरमित्यादिश्रुतिभ्यः पूर्वप्रोक्तेइति पूर्वप्रोक्तेद्भक्तीतुनपरभक्तिप्रापिकेततस्तेउभेअपित्याज्येइत्यर्थः ॥ १० ॥ परभक्तिस्वरूपमाह अधुनेति ॥ ११ ॥ तैलधारायथाव्युच्छिन्नानभवतितद्वदिदमपिचेतोध्यानमध्येविषयेषुनगच्छतीत्यर्थः ॥ १२ ॥ हेतुरिति एतादृशध्यानेहेतुः फलंकोवापिकोपिकदाचिदपिनैवभवेत्किंतुकेवलंमत्प्रीत्यर्थमपि परमानुरागेणैवचेतसोनुवर्तनंकरोतीत्यर्थः सामीप्यादिलोकेच्छयापिनमदाराधनंकरोति किंतुप्रेम्णैवेत्याह सामीप्येति ॥ १३ ॥

दे.भा.स

॥८५॥

सेव्यसेवकतेति ल्यब्लोपेपंचमी सेवकभावंविहायेत्यर्थः मदाराधनेमेवेच्छतिनमोक्षमित्यर्थः ॥ १४ ॥ स्वाभेदेनैवेति अहमेवसच्चिदानंदरूपिणीभगवत्यस्मीतिभावनयेत्यर्थः ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ ईश्वरहेपर्वतराज भेदवर्जनात्सर्वत्रचैतन्यरूपैकैवभगवत्यास्तिनद्वितीयेतिभेदनिरासादित्यर्थः ॥ १८ ॥ मत्स्थानेति तामिचवक्ष्यमाणानिपूर्वोक्तानिचस्थानानि मच्छास्त्रंशक्तिदर्शनंतथादे

टी.अ.

३७

मत्सेवातोधिकंकिंचिन्नैवजानातिकर्हिचित् ॥ सेव्यसेवकताभावात्तत्रमोक्षंनवांछति ॥ १४ ॥ परानुरक्त्यामात्रमेवचितयेद्योह्यतंद्रितः ॥ स्वाभेदेनैवमानित्यंजनातिनविभेदतः ॥ १५ ॥ मद्रूपत्वेनजीवानांचितनंकुरुतेतुयः ॥ यथास्वस्यात्मनिप्रीतिस्तथैवचपरात्मनि ॥ १६ ॥ चैतन्यस्यसम्मानत्वान्नभेदंकुरुतेतुयः ॥ सर्वत्रवर्तमानांमांसर्वरूपांचसर्वदा ॥ १७ ॥ नमतेयजतेचैवाप्याचांडालांतमीश्वर ॥ नकुत्रापिद्रोहबुद्धिकुरुतेभेदवर्जनात् ॥ १८ ॥ मत्स्थानदर्शनेश्रद्धामद्भुतदर्शनेतथा ॥ मच्छास्त्रश्रवणेश्रद्धामंत्रतंत्रादिषुप्रभो ॥ १९ ॥ मयिप्रेमाकुलमतीरोमांचिततनुःसदा ॥ प्रेमाश्रुजलपूर्णाक्षोकंठगद्गदनिःस्वनः ॥ २० ॥ अनन्येनैवभावेनपूजयेद्योनगाधिप ॥ मामीश्वरींजगद्योनिंसर्वकारणकारणं ॥ २१ ॥ व्रतानिममदिव्यानिनित्यनैमित्तिकान्यपि ॥ नित्यंयःकुरुतेभक्त्यावित्तशाठ्यविवर्जितः ॥ २२ ॥ मदुत्सवदिदृक्षाचमदुत्सवकृतिस्तथा ॥ जायतेयस्यनियतंस्वभावादेवभूधर ॥ २३ ॥ उच्चैर्गायंश्चनामानिममैवखलुनृत्यति ॥ अहंकारादिरहितोदेहतादात्म्यवर्जितः ॥ २४ ॥ प्रारब्धेनयथायच्चक्रियतेयत्तथाभवेत् ॥ नमेचिंतास्तित्रापिदेहसंरक्षणादिषु ॥ २५ ॥

वीभागवतंवेदांतंच ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ व्रतानीति तानिवक्ष्यमाणानि ॥ २२ ॥ मदुत्सवेति तेचोत्सवावक्ष्यमाणाः अन्यकृतोत्सवदर्शनेच्छाचेत्यर्थः स्वतोपिमदुत्सवकृतिर्मदुत्सवकरणमित्यर्थः ॥ २३ ॥ २४ ॥ प्रारब्धेतिप्रारब्धाधीनंसर्वज्ञात्वाकामपिमत्स्वरूपचिंतातिरिक्तांचिंतांनकरोतीत्यर्थः ॥ २५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥८५॥

॥ २६ ॥ इत्थंपरभक्त्यास्वस्वरूपेचित्तलययोग्यताभवतीत्याह तदैवेति ॥ २७ ॥ भक्तेस्त्विति यतोज्ञानेसतिभक्तिवैराग्येसां
 गेसंपूर्णेसिध्यतस्तस्माद्भक्तेवैराग्यस्यचयापराकाष्ठासाज्ञानमित्यर्थः तदुक्तंविष्णुभागवते भक्तिःपरेशानुभवोविराक्तिरन्यत्रचैषत्रिकएक
 कालइति ॥ २८ ॥ मणिद्वीपंपूर्वोक्तंद्वादशस्कंधेवक्ष्यमाणंच ॥ २९ ॥ चर्छतिप्राप्नोतीत्यर्थः ॥ ३० ॥ ३१ ॥ संवित्पर
 तनोरितिप्रत्यगात्मविशेषणं तस्यप्राणाइति मतस्यप्राणउत्क्रामंतीतिश्रुतेः ॥ ३२ ॥ कंठचामीकरेति यथाकंठगतंविद्यमानमेवचा

इतिभक्तिस्तुयाप्रोक्तापरभक्तिस्तुसास्मृता ॥ यस्यांदेव्यतिरिक्तंतुनकिंचिदपिभाव्यते ॥ २६ ॥ इत्थंजाता
 पराभक्तिर्यस्यभूधरतत्त्वतः ॥ तदैवतस्यचिन्मात्रेमद्रूपेविलयोभवेत् ॥ २७ ॥ भक्तेस्तुयापराकाष्ठामैवज्ञा
 नंप्रकीर्तितं ॥ वैराग्यस्यचसीमासाज्ञानेतदुभयंततः ॥ २८ ॥ भक्तौकृतायांस्यस्यापिप्रारब्धवशतो नग ॥ न
 जायतेममज्ञानंमणिद्वीपंसगच्छति ॥ २९ ॥ तत्रमत्वाखिलान्भोगाननिच्छन्नपिचर्छति ॥ तदंतेममचिद्रूपज्ञा
 नंसम्यक्भवेन्नग ॥ ३० ॥ तेनमुक्तःसदैवस्याज्ञानान्मुक्तिर्नचान्यथा ॥ इहैवयस्यज्ञानंस्यात्हृदतप्रत्यगा
 त्मनः ॥ ३१ ॥ ममसंवित्परतनोस्तस्य प्राणाव्रजंतिन ॥ ब्रह्मैवसंस्तदाप्नोतिब्रह्मैवब्रह्मवेदयः ॥ ३२ ॥ कं
 ठचामीकरसममज्ञानात्तुतिरोहितं ॥ ज्ञानादज्ञाननाशेनलब्धमेवाहिलभ्यते ॥ ३३ ॥ विदिताविदितादन्य
 न्नगोत्तमवपुर्मम ॥ यथादर्शेतथाऽत्मनियथाजलेतथापितृलोके ॥ ३४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥

मीकरंसुवर्णमज्ञानेनसुवर्णतिरोभूतंज्ञानेनाज्ञाननाशेसतितदेवप्राप्यतेनान्यत्तदेवविद्यमानमेवात्मरूपमज्ञानेनतिरोभूतंपश्चात्ज्ञानेनाज्ञाननाशेसति
 तदेवप्राप्यतेनान्यदित्यर्थः ॥ ३३ ॥ विदिताविदितादिति विदितंकार्यंघटादि अविदितंकारणंमायारूपंतस्मादन्यदित्यर्थः तथाचश्रुतिः
 अन्यदेवतादिदितादथोअविदितादधीति एतदर्थस्तुमत्कृतेकेनोपनिषद्वाप्यव्याख्यानेद्रष्टव्यः यथादर्शेप्रतिबिंबंपततितददात्मन्यस्मिन्देहेनु
 भवोभवतीत्यर्थः यथाजलेप्रतिबिंबंपूर्वापेक्षयाविविक्तंतथापितृलोकेनुभवोभवतीत्यर्थः ॥ ३४ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.स

॥८६॥

ममलोकेमणिदीपे छायातपयोरिवात्यंतविविक्तानुभनइत्यर्थः ॥३५॥ ३६ ॥३७ ॥ ३८ ॥ नोचेन्महान्विनाशइति तथाचश्रुतिः इह
चेदवेदीदथसत्यमस्तिनचेदिहावेदीन्महतिविनष्टिरिति प्रथमेवर्णेब्राह्मणवर्णेतत्रापिजन्मदुर्लभंतत्रापिवेदप्राप्तिर्दुर्लभा ॥३९॥४०॥ संस्कृतत्वं
वेदोक्तसंस्कारसंस्कृतत्वं ॥४१॥४२॥ श्रवणादिषुप्रवृत्तस्यक्षणेक्षणेभ्यमेधफलंभवतीत्याह पदेपदेइति क्षणेक्षणेइत्यर्थः ॥ ४३ ॥ उपदेश

छायातपौयथास्त्रच्छौविविक्तौतद्वदेवहि ॥ ममलोकेभवेज्ज्ञानंद्वैतभानविवर्जितं ॥ ३५ ॥ यस्तुवैराग्यवाने
वज्ञानहीनोऽप्येतचेत् ॥ ब्रह्मलोकेवसेन्नित्यंयावत्कल्पंततःपरं ॥ ३६ ॥ शुचीनांश्रीमतांगेहेभवेत्तस्यजनिः
मुनः ॥ करोतिसाधनंपश्चात्ततोज्ञानंहिजायते ॥ ३७ ॥ अनेकजन्मभरिराजन्ज्ञानंस्यान्नैकजन्मना ॥ ततःस
र्वप्रयत्नेनज्ञानार्थयत्नमाश्रयेत् ॥ ३८ ॥ नोचेन्महान्विनाशःस्याज्जन्मैतदुर्लभंपुनः ॥ तत्रापिप्रथमेवर्णेवे
दप्राप्तिश्चदुर्लभा ॥ ३९ ॥ शमादिषट्कसंपत्तिर्योगसिद्धिस्तथैवच ॥ तथोत्तमगुरुप्राप्तिःसर्वमेवात्रदुर्लभं ॥
४० ॥ तथेन्द्रियाणांपटुतासंस्कृतत्वंतनोस्तथा ॥ अनेकजन्मपुण्यैस्तुमोक्षेच्छाजायतेततः ॥ ४१ ॥ साधने
सकलेष्वेवंजायमानेपियोनरः ॥ ज्ञानार्थेनैवयततेतस्यजन्मनिरर्थकं ॥ ४२ ॥ तस्माद्राजन्यथाशक्त्याज्ञाना
र्थयत्नमाश्रयेत् ॥ पदेपदेश्वमेधस्यफलमाप्नोतिनिश्चितं ॥ ४३ ॥ घृतमिवपयसिनिगूढंभूतेभूतेचवसतिवि
ज्ञानं ॥ सततंमंथयितव्यंमनसामंथानभूतेन ॥ ४४ ॥ ज्ञानंलब्ध्वाकृतार्थःस्यादितिवेदांतडिंडिमः ॥
सर्वमुक्तंसमासेनकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ ४५ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेसप्तमस्कंधेदेवीगीता
यांसप्तत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३७ ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥

सारंभगवतीवदति घृतमिवेति पयसिदुग्धेघृतमिवभूतेभूतेसर्वदेहेष्वित्यर्थः विज्ञानंब्रह्मवसतितिरोहितंतन्मनसामंथानभूतेनमंथयितव्यंमंथनेन
पयःसकाशात्घृतमिवपृथगुर्यादित्यर्थः इयमपिश्रुतिरेवकंठरेवणोपात्ता ॥ ४४ ॥ उपसंहरति सर्वमुक्तमिति ॥ ४५ ॥
इतिश्रीदेवीभागवततिलकेसप्तमस्कंधेसप्तत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३७ ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥

टी.अ.

३७

॥८६॥

पचाशाद्विरथार्थेनैः पद्यैरत्रमहोत्सवाः ॥ व्रतानिदेव्याः स्थानानि कीर्त्यते संग्रहेण तु ॥ १ ॥ पूर्वमत्स्थानदर्शनश्रद्धेत्युक्तं तथा व्रतानि मम दिव्यानि
त्युक्तं तथा मदुत्सवकृतिस्तथेत्युक्तं तत्र तानि कानि स्थानानि व्रतानि च कानि केते उत्सवा इत्येतत्सर्वपृच्छति कति स्थानानीति ॥ १ ॥ २ ॥ यस्माद

हिमालय उवाच ॥ कति स्थानानि देवेशि द्रष्टव्यानि महीतले ॥ मुख्यानि च पवित्राणि देवी प्रियतमानि च ॥ १ ॥
व्रतान्यपि तथा यानि तुष्टिदान्युत्सवा अपि ॥ तत्सर्वं ददमे मातः कृतकृत्यो यतो नरः ॥ २ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ स
र्वदृश्यं मम स्थानं सर्वकालाव्रतात्मकाः ॥ उत्सृष्टैः सर्वकालेषु यतो हं सर्वरूपिणी ॥ ३ ॥ तथापि भक्तवात्सल्या
त्किंचि किंचिदथोच्यते ॥ शृणुष्व अवहितो भूत्वा नगराजवचो मम ॥ ४ ॥ कोलापुरं महास्थानं यत्र लक्ष्मीः सदा
स्थिता ॥ मातुः पुरं द्वितीयं चरेणु काधिष्ठितं परं ॥ ५ ॥ तुलजापुरं तृतीयं स्यात्सप्तशृंगं तथैव च ॥ हिंगुलायामहा
स्थानं ज्वालामुख्यास्तथैव च ॥ ६ ॥ शाकंभर्याः परं स्थानं भ्रामर्याः स्थानमुत्तमं ॥ श्रीरक्तदंतिकास्थानं दुर्गा
स्थानं तथैव च ॥ ७ ॥ विंध्याचलनिवासिन्याः स्थानं सर्वोत्तमोत्तमं ॥ अन्नपूर्णमहास्थानं कांचीपुरमनुत्तमं
॥ ८ ॥ भीमादेव्याः परं स्थानं विमलास्थानमेव च ॥ श्रीचंद्रलामहास्थानं कौशिकीस्थानमेव च ॥ ९ ॥ नीलांबा
याः परं स्थानं नीलपर्वतमस्तके ॥ जांबूनदेश्वरीस्थानं तथा श्रीनगरं शुभं ॥ १० ॥ गुह्यकाल्यामहास्थानं ने
पालेयप्रतिष्ठितं ॥ मीनाक्ष्याः परं स्थानं यच्च प्रोक्तं चिदंबरसत्वरं ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥

हं सर्वरूपिणी तस्मात्सर्वदृश्यमात्रं मम संविद्रूपिण्याः सर्वाधिष्ठानभूतायाः स्थानं सर्वस्य मयि कल्पितत्वात् तथा सर्वेपि कालाव्रतात्मकाः यस्मिन्का
ले यद्यत्क्रियते मत्प्रीत्यर्थं तत्सर्वं मम व्रतमेव मम सर्वकालात्मकत्वात् तथा उत्सवा अपीत्यर्थः ॥ ३ ॥ ४ ॥ कोलापुरं दक्षिणदेशे मातुः पुरं सह्या
द्विपर्वते ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ चंद्रलानामदेवी कर्नाटे वर्तते ॥ ९ ॥ १० ॥ चिदंबरहालास्यस्थाने ॥ ११ ॥

दे.भा.स.

॥८७॥

एकांबरंस्थानंभुवनेश्वरइतिनाम्नापुरुषोत्तमक्षेत्रसन्निधौवर्त्तते परशस्यभुवनेश्वर्याप्रतिष्ठितं तत्स्थानं तस्मिन्स्थानेपिभुवनेश्वर्यहंतिष्ठाभीत्यर्थः
॥ १२॥ महालसास्थानंदक्षिणदेशेमल्लारिस्थानमितिप्रसिद्धंतदास्ति योगेश्वरीस्थानं वराट्देशेस्तिचीनेषुचीनदेशेषु ॥ १३॥ मणिद्वीपंतृती

टी.अ.

३८

वेदारण्यंमहास्थानंसुंदर्यासमधिष्ठितं ॥ एकांबरंमहास्थानंपरशक्त्याप्रतिष्ठितं ॥ १२ ॥ महालसापरंस्था
नंयोगेश्वर्यास्तथैवच ॥ तथानीलसरस्वत्याःस्थानंचीनेषु ॥ १३ ॥ वैद्यनाथेतुवगलास्थानंसर्वोत्तमं
मतं ॥ श्रीमच्छ्रीभुवनेश्वर्यामणिद्वीपंममस्मृतं ॥ १४ ॥ श्रीमन्निपुरभैरव्याःकामाख्यायोनिमंडलं ॥ भूमंड
लेक्षेत्ररत्नंमहामायाधिवासितं ॥ १५ ॥ नातःपरतरंस्थानंक्वचिदस्तिधरातले ॥ प्रतिमासंभवेद्देवीयत्रसा
क्षाद्रजस्वला ॥ १६ ॥ तत्रत्यादेवताःसर्वाःपर्वतात्मकतांगताः ॥ पर्वतेषुवसंत्येवमहत्येदेवताअपि ॥ १७ ॥
तत्रत्यापृथिवीसर्वादेवीरूपास्मृताबुधैः ॥ नातःपरतरंस्थानंकामाख्यायोनिमंडलात् ॥ १८ ॥ गायत्र्या
श्वपरंस्थानंश्रीमत्पुष्करमरितं ॥ अमरेशेचंडिकास्यात्प्रभासेपुष्करेक्षिणी ॥ १९ ॥ नैमिषेतुमहास्था
नेदेवीसालिंगधारिणी ॥ पुरुहूतापुष्कराक्ष्येआषाढौचरतिस्तथा ॥ २० ॥ चंडमुडीमहास्थानेदंडिनी
परमेश्वरी ॥ भारभूतौभवेद्भूतिर्नाकुलेनकुलेश्वरी ॥ २१ ॥ चंद्रिकातुहरिश्रंद्रेश्रीगिरौशांकरीस्मृता ॥
जप्येश्वरेत्रिशूलास्यात्सूक्ष्माचाम्रातकेश्वरे ॥ २२ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥

यस्कंधेवर्णितंतन्ममभुवनेश्वर्याःस्मृतमित्यर्थः ॥ १४ ॥ कामाख्यायामहादेव्याःसतीदेहेनावतीर्णायायोनिमंडलयत्रपातितंकामरुदेशेकालिका
पुराणेयस्यमहद्वर्णनंतत्कामाख्यायोनिमंडलंनिपुरभैरव्याःस्थानमित्यर्थः तस्यमहिमानंवर्णयति भूमंडलेइति ॥ १५ ॥ रजस्वलारजोवती
एतादृशंतज्जागृतंस्थानमित्यर्थः ॥ १६ ॥ पर्वतात्मकतांगताइति कालिकापुराणेष्वसर्वमेतत्स्पष्टं ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥

॥८७॥

महाकाले उज्जायिन्यां मध्यमाभिधेमध्यमेश्वरस्थाने ॥ २३ ॥ नाकुले स्थाने स्वायंभुर्वीदेवी वर्तते इत्यर्थः ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥

शांकरी तु महाकालेशर्वाणी मध्यमाभिधे ॥ केदाराख्ये महाक्षेत्रे देवी सामार्गदायिनी ॥ २३ ॥ भैरवाख्ये भैरवी
सागयायां मंगला स्मृता ॥ स्थाणुप्रिया कुरुक्षेत्रे स्वायंभुव्यपिनाकुले ॥ २४ ॥ कनखले भवेदुग्राविश्वेशाविम
लेश्वरे ॥ अट्टहासे महानंदामहेंद्रे तु महांतका ॥ २५ ॥ भीमे भीमेश्वरी प्रोक्ता स्थाने वस्त्रापथे पुनः ॥ भवानी शां
करी प्रोक्ता रुद्राणी त्वर्धकोटिके ॥ २६ ॥ अविमुक्ते विशालाक्षी महाभागामहालये ॥ गोकर्णे भद्रकर्णी स्याद्भद्रा
स्याद्भद्रकर्णके ॥ २७ ॥ उत्पलाक्षी सुवर्णाक्षे स्थाण्वीशा स्थाणुसंज्ञिके ॥ कमलालये तु कमलाप्रचंडाच्छूलं
के ॥ २८ ॥ कुरंडले त्रिसंध्या स्यान्माकोटे मुकुटेश्वरी ॥ मंडलेशे शांडकी स्यात्काली कालंजरे पुनः ॥ २९ ॥ शंकु
कर्णे ध्वनिः प्रोक्ता स्थूला स्यात्स्थूलकेश्वरे ॥ ज्ञानिनां हृदयां भोजे हृल्लेखा परमेश्वरी ॥ ३० ॥ प्रोक्तानीमानि स्था
नानि देव्याः प्रियतमानि च ॥ तत्क्षेत्रस्य माहात्म्यं श्रुत्वा पूर्वं न गोत्तम ॥ ३१ ॥ तदुक्तेन विधानेन पश्चाद्देवीं प्रपू
जयेत् ॥ अथ वा सर्वक्षेत्राणिकाश्यां संति न गोत्तम ॥ ३२ ॥ तत्र नित्यं वसेन्नित्यं देवी भक्तिपरायणः ॥ तानि स्था
नानि संपश्यन् जपन् देवीं निरंतरं ॥ ३३ ॥ ध्यायंस्तच्चरणां भोजं मुक्तो भवति बंधानात् ॥ इमानि देवीनामानि प्रा
तरुत्थाय यः पठेत् ॥ ३४ ॥ भस्मी भवन्ति पापानि तत्क्षणान्न सत्त्वर ॥ श्राद्धकाले पठेत्तान्यमलानि द्विजाग्रतः
॥ ३५ ॥ मुक्तास्तत्पितरः सर्वे प्रयांति परमां गतिं ॥ अधुना कथयिष्यामि व्रतानि तव सुव्रत ॥ ३६ ॥ ॥ ॥

॥ २७ ॥ छगलंडके इदं स्थानं दक्षिणदेशे समुद्रसन्निधौ तिष्ठति ॥ २८ ॥ २९ ॥ हृल्लेखापदव्युत्पत्तिर्यामले भुवनेश्वरी रहस्ये
हृदिलेखे वबागतिं प्राणशक्तिरियंपरा हृल्लेखा कथ्यते तस्मादिति ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

दे.भा.स

॥८८॥

व्रतमनंततृतीयाख्यामिति इमानितृतीयाव्रतानिमत्स्यपुराणेप्रसिद्धानिताद्विधिश्वतत्रैवोक्तः ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ यत्रप्रदोषकाले ॥ ३९ ॥
निशामुखेरजनीमुखे तस्मात्प्रदोषव्रतं देव्याः शिवस्य च सिद्धं ॥ ४० ॥ ४१ ॥ नवरात्रद्वये चैवेति तच्च शारदं वासंतिकं च चकारे
ण पूर्वोक्तमपि माघाषाढस्थं नवरात्रद्वयं ग्राह्यं ॥ ४२ ॥ एवमन्यान्यपीति अन्यान्यप्युपांगललिताव्रतादीनि व्रतानि पुराणांतरेषु तत्रांतरे

टी.अ.
३८

नारीभिश्च नरैश्चैव कर्तव्यानि प्रयत्नतः ॥ व्रतमनंततृतीयाख्यं रसकल्याणिनीव्रतं ॥ ३७ ॥ आर्द्रानंदकरं
नाम्ना तृतीयायां व्रतं च यत् ॥ शुक्रवारव्रतं चैव तथा कृष्णचतुर्दशी ॥ ३८ ॥ भौमवारव्रतं चैव प्रदोषव्रतमेव
च ॥ यत्र देवो महादेवो देवी संस्थाप्य विष्टरे ॥ ३९ ॥ नृत्यं करोति पुरतः सार्धं देवैर्निशामुखे ॥ तत्रोपोष्य रज
न्यादौ प्रदोषे पूजयेच्छिवां ॥ ४० ॥ प्रतिपक्षं विशेषेण तद्देवी प्रीतिकारकं ॥ सोमवारव्रतं चैव ममातिप्रियकृ
न्नग ॥ ४१ ॥ तत्रापि देवी संपूज्य रात्रौ भोजनमाचरेत् ॥ नवरात्रद्वयं चैव व्रतं प्रीतिकरं मम ॥ ४२ ॥ ए
वमन्यान्यपि विभो नित्यनैमित्तिकानि च ॥ व्रतानि कुरुते यो वै मत्प्रीत्यर्थं विमत्सरः ॥ ४३ ॥ प्राप्नोति मम सा
युज्यं समेभक्तः समेप्रियः ॥ उत्सवानपि कुर्वीत दोलोत्सवमुखान्विभो ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४५ ॥

ष्वप्युक्तानीत्यर्थः ॥ ४३ ॥ दोलोत्सवमुखानिति तद्विधिश्वतत्रैवोक्तः देवीपुराणे चैत्रशुक्लतृतीयायां कुर्याद्दोलोत्सवं बुधः तृतीयायां
यजेद्देवीं शंकरेण समान्वितां कुंकुमागरुकं पूरमणिवस्त्रसुगंधकैः स्तग्गंधधूपदीपैश्च दमनेन विशेषतः आंदोलयेत्ततो वत्सशिवो मातुष्ट
ये सदेति ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४५ ॥

॥८८॥

शयनोत्सवमिति तत्कालश्चामनपुराणे उक्तः आषाढपौर्णमासीत उत्तरायतृतीयातद्वृषः तथा जागरणोत्सवकालश्च कार्तिकपौर्णमासीत उत्तरायतृतीयातद्वृषः शयनोत्सवविधिर्जागरणोत्सवविधिश्च सर्वदेवतासमानो देवताभेदेन तु कालभेदेन एव केवलं भिन्नः सर्वचेदं वामनपुराणे स्पष्टं रथोत्सवमिति तद्विधिश्चोमासंहितयां शिवपुराणे आषाढशुक्लपक्षीयतृतीयायां रथोत्सवं देव्याः प्रियतमं गुर्याद्यथा वित्तानुसारतः रथं पृथ्वीविजानीयाद्रथांगे चंद्रभास्करो वेदान्ध्वान्विजानीयात्सारथिपद्मसंभवं नानामणिगणाकीर्णपुष्पमालाविराजितं एव रथं कल्पयित्वा त

शयनोत्सवं यथा कुर्यात् तथा जागरणोत्सवं ॥ रथोत्सवं च मे कुर्याद् दमनोत्सवमेव च ॥ ४५ ॥ पवित्रोत्सवमेवापि श्रावणे प्रीतिकारकं ॥ मम भक्तः सदा कुर्याद् देवमन्यान्महोत्सवान् ॥ ४६ ॥ मद्भक्तान् भोजयेत् प्रीत्या तथा चैव सुवासिनीः ॥ कुमारी बटुकांश्चापि महुल्या मद्भक्तांतरः ॥ ४७ ॥ वित्तशठेन रहितो यजेद्देवान् सुमादिभिः ॥ य एवं कुरुते भक्त्या प्रतिवर्षं मतंद्रितः ॥ ४८ ॥ स धन्यः कृतकृत्यो सौमत्प्रीतेः पात्रमंजसा ॥ सर्वमुक्तं समासेन मम प्रीतिप्रदायकं ॥ ४९ ॥ नारीष्याय प्रदातव्यं नाभक्ताय कदाचन ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे सप्तमस्कंधे देवीगीतायामष्टत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३८ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥

स्मिन् संस्थापयेच्छिवां लोकसंरक्षणार्थाय लोकान्द्रष्टुं परां बिका रथमध्ये संस्थितेति भावयेन्मतिमात्रम् रथे प्रचलिते मंदं जयशब्दमुदीरयेत् पाहि देवि जनान् स्मान् प्रपन्नान् दानि वत्सले इति वाक्यैस्तोषयेच्च नानावादित्रिभिः स्वनैः सीमांतेतुरथं नीत्वा तत्र संपूजयेद्रथे नानास्तोत्रैस्ततस्तु त्वाप्या नयेत्तांस्ववेश्मनीति दमनोत्सवश्चैत्रपौर्णमास्यां तद्विधिश्च धर्मशास्त्रे तंत्रेषु च प्रसिद्ध एव ॥ ४५ ॥ पवित्रोत्सवमिति सप्तश्रावणपौर्णमास्यां तद्विधिश्च धर्मशास्त्रे तंत्रेषु च प्रसिद्ध एव ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ सुमादिभिः कुसुमादिभिरेतान् कुमारी बटुकब्राह्मणान् पूजयेदित्यर्थः ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके सप्तमस्कंधे देवीगीतायामष्टत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३८ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥

दे.भा.स

॥८९॥

शताधिकैश्चत्वारिंशत्पदैरथ पूजनं ॥ भगवत्याः कथ्यते त्रयेन देवी प्रसीदति ॥ १ ॥ पूर्वबहुषु स्थलेषु पूजायामहिमानं श्रुत्वा पूजाविधिं पृच्छति
देवदेवीति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ मूर्तिभेदेन वक्ष्यमाणेन वेदोक्तदीक्षासमन्वितैर्वैदिकविदोक्तप्रकारा पूजाकर्तव्येत्यर्थः साचविराट्स्वरूपस्य पूर्वदेव्याह
र्षितस्य ध्यानरूपा प्रथमा द्वितीया तु करचरणादिविशिष्टां सुकुमारां भगवती मूर्तिं ध्यात्वा वेदोक्तमंत्रैरत्वाहनादिविसर्जनांतं कुर्यादिति द्वितीया पूजा
इत्येवं मूर्तिभेदेन वैदिकी पूजाद्विविधेत्यर्थः ॥ ४ ॥ तांत्रिक्यप्रमाधिकारिणमाह तत्रोक्तेति कुंडमंडपादिपुरःसरतांत्रिकमंत्रैर्दीक्षां कुर्वद्भि

टी.अ.
३९

श्रीहिमालय उवाच ॥ देवदेवि महेशानिकरुणा सागरेऽंबिके ॥ ब्रूहि पूजाविधिं सम्यग्यथा वदधुना निजं ॥ १ ॥
श्रीदेव्युवाच ॥ वक्ष्ये पूजाविधिं राजन्नंबिकाया यथा प्रियं ॥ अत्यंतश्रद्धया सार्धं शृणु पर्वतपुंगव ॥ २ ॥ द्विवि
धाममपूजास्याद्वाह्याचाभ्यंतरापि च ॥ बाह्यापि द्विविधा प्रोक्ता वैदिकी तांत्रिकी तथा ॥ ३ ॥ वैदिक्यर्चापि द्वि
विधामूर्तिभेदेन भूधर ॥ वैदिकी वैदिकैः कार्यविददीक्षासमन्वितैः ॥ ४ ॥ तत्रोक्तदीक्षावद्भिस्तु तांत्रिकी संश्रि
ता भवेत् ॥ इत्थं पूजारहस्यं च न ज्ञात्वा विपरीतकं ॥ ५ ॥ करोतियो नरो मूढः स पतत्येव सर्वथा ॥ तत्र या वैदि
की प्रोक्ता प्रथमा तावदाम्यहं ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥

स्तांत्रिकी तत्रोक्तविधिना पूजाकर्तव्येत्यर्थः न ज्ञात्वेति यस्य यस्य पूजायामधिकारस्तन्न ज्ञात्वेत्यर्थः विपरीतकं वैदिकस्तांत्रिकं करोति तांत्रिको
वैदिकं करोतीत्येवं रूपं यः करोति मूढः संपतत्येव नरकादिष्विति शेषः तथा च श्रुतिः यो वै स्वां देवतां मति यजते प्रस्वायै देवतायै च्यवते न परां प्राप्नोति पा
पीयान् भवति अतियजते त्यजति च्यवते गृह्णाति स्वां देवतां मतिस्वोचितमागोपलक्षणं ॥ ५ ॥ तत्र वैदिक्यर्चाया एव स्वरूपं प्राशस्त्यं च वदति
तत्र या वैदिकीति प्रथमामिति वैदिकी तत्र तांत्रिकी तथेति वाक्योक्ता प्रथमा वैदिकीत्यर्थः ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥

॥८९॥

॥ ७ ॥ ८ ॥ शांत्यादियुक्तोवैदिकीपूजांकुर्यादित्याह शांतःसमाहितइति ॥ ९ ॥ तत्परस्तन्ममविराट्स्वरूपमेवपरमुत्कृष्टंयस्यसतत्परः
॥ १० ॥ मामेवविराट्स्वरूपां ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ ननुतर्हि केवलंकर्मनिरर्थकमितिचेन्नेत्याह धर्मात्संजायतेभक्तिरिति यदिकर्म
नाचरितंतदापक्षयाभावाद्भक्तिरेवदुर्लभास्याद्वक्तेरभावश्चपरंब्रह्माप्यत्यंतदुर्लभस्यादितिकर्माचरणंसार्थकमेवेतिभावः परमितिज्ञानमित्यर्थः

यन्मेसाक्षात्परंरूपंदृष्टवानसिभूधर ॥ अनंतशीर्षनयनमनंतचरणमहत् ॥ ७ ॥ सर्वशक्तिसमायुक्तंप्रेरकंय
त्परात्परं ॥ तदेवपूजयेन्नित्यंनमेद्व्यायेत्स्मेरेदपि ॥ ८ ॥ इत्येतत्प्रथमार्चायाःस्वरूपंकथितंनग ॥ शांतःस
माहितमनादंभाहंकारवर्जितः ॥ ९ ॥ तत्परोभवतद्याजीतदेवशरणंब्रज ॥ तदेवचेतसापश्यजपध्यायस्वस
र्वदा ॥ १० ॥ अनन्ययाप्रेमयुक्तभक्त्यामद्भावमाश्रितः ॥ यज्ञैर्यजतपोदानैर्मामेवपरितोषय ॥ ११ ॥ इत्थं
ममानुग्रहतोमोक्ष्यसेभवबंधनात् ॥ मत्परायेमदासक्तचित्ताभक्तवरामताः ॥ १२ ॥ प्रतिजानेभवादस्मादु
त्थराम्यचिरेणतु ॥ ध्यानेनकर्मयुक्तेनभक्तिज्ञानेनवापुनः ॥ १३ ॥ प्राप्याहंसर्वथाराजन्नतुकेवलकर्मभिः ॥
धर्मात्संजायतेभक्तिर्भक्त्यासंजायतेपरं ॥ १४ ॥ श्रुतिस्मृतिभ्यामुदितंयत्सधर्मःप्रकीर्तितः ॥ अन्यशास्त्रेण
यःप्रोक्तोधर्माभासःसउच्यते ॥ १५ ॥ सर्वज्ञात्सर्वशक्तेश्चमत्तोवेदःसमुत्थितः ॥ अज्ञानस्यममाभावादप्र
माणानचश्रुतिः ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥

॥ १४ ॥ तच्चकर्मनान्यशास्त्रोदितंकिंतुवेदोक्तमेवेत्याह श्रुतिस्मृतिभ्यामुदितमिति यदुदितंकर्मसधर्मइत्यर्थः ॥ १५ ॥ किमितिवेदो
क्तएवधर्मोनान्यशास्त्रोदितइतिचेत्तत्राह सर्वज्ञादिति सर्वज्ञात्सर्वशक्तेश्चमत्तोमत्स्वरूपादेवःसमुत्थितःसदाममाज्ञानाभावाद्यन्मयोक्तं
त्सत्यमेवेतिश्रुतिर्नाप्रमाणवेदानिरिक्तशास्त्राणित्वसर्वज्ञपुरुषबुद्धिकल्पितानिततश्चाज्ञप्रणितत्वादप्रमाणान्येवेतितदुक्तोधर्मोधर्माभासोवेदोक्त
एवतुधर्मइत्यर्थः ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥

दे.भा.स

॥९०॥

ननुमन्वादिस्मृतीनामप्येवंरीत्याप्रामाण्याभावआगतइतिचेत्तत्राह स्मृतयश्चेति श्रुत्यर्थेऽप्यनुस्मृतिभिरुच्यतेततोमूलभूतश्रुतेः प्रामाण्यात्तन्मूलकस्मृतीनामपिप्रामाण्यमव्याहतमेवेत्यर्थः ॥१७॥ ननुमन्वादिस्मृतीनांपुराणानांचसप्रमाणत्वेततमुद्राविधानवामाचारादिवेदविरुद्धाचारस्यचपुराणस्मृतिषुसत्त्वात्प्राह्यत्वंस्यादितिचेत्तत्राह क्वचित्कदाचिदिति तंत्रार्थकटाक्षेणतंत्रार्थविलोकेनपरोदितंवेदातिरिक्तशास्त्रोदितमपिधर्मवदंति सधर्मः प्रत्यक्षश्रुतिविरुद्धत्वाच्चैरुक्तोपिनवेदिकैर्ग्राह्यइत्यर्थः ॥१८॥ तत्रहेतुमाह अन्येषांशास्त्रकर्तृणामिति ॥१९॥२०॥ सर्वेशान्याःसर्वे

टी.अ.

३९

स्मृतयश्चश्रुतेरर्थगृहीत्वैवचनिर्गताः ॥ मन्वादीनांश्रुतानाचततःप्रामाण्यमिष्येतै ॥१७॥ क्वचित्कदाचितंत्रार्थकटाक्षेणपरोदितं ॥ धर्मवदंतिसौंरास्तुनैवग्राह्योस्तिवैदिकैः ॥ १८॥ अन्येषांशास्त्रकर्तृणामज्ञानप्रभवत्वतः ॥ अज्ञानदोषदुष्टत्वात्तदुक्तेर्नप्रमाणता ॥ १९॥ तस्मान्मुनुभुर्धर्मार्थसर्वथावेदमाश्रयेत् ॥ राजाज्ञाचयथालोकेहन्यतेनकदाचन ॥ २०॥ सर्वेशान्याममाज्ञासाश्रुतिस्त्याज्याकथंनृभिः ॥ मदाज्ञारक्षणार्थं तुब्रह्मक्षत्रियजातयः ॥ २१॥ मयासृष्टास्ततोज्ञेयंरहस्यंमेश्रुतेर्वचः ॥ यदायदाहिधर्मस्यग्लानिर्भवतिभूधर ॥ २२॥ अयुत्थानमधर्मस्यतदावेषान्विभर्म्यहं ॥ देवदैत्यविभागश्चाप्यतएवाभवन्नृप ॥ २३॥ येनकुर्वतितद्धर्मतच्छिक्षार्थमयासदा ॥ संपादितास्तुनरकास्त्रासोयच्छ्रवणाद्भवेत् ॥ २४॥ योवेदधर्ममुद्भित्यधर्ममन्यंसमाश्रयेत् ॥ राजाप्रवासयेद्देशान्निजादेतानधर्मिणः ॥ २५॥ ब्राह्मणैर्नचसंभाष्याःपंक्तिग्राह्यानच द्विजैः ॥ अन्यानियानिशास्त्राणिलोकेस्मिन्विधानिच ॥ २६॥ ॥ ६५॥ ॥ ६५॥

श्रुत्याममसाश्रुतिराज्ञास्ति सानृभिः कथं त्याज्येत्यर्थः तथाच कूर्मपुराणे देवीवाक्यं द्वादशाध्याये ममैवाज्ञा पराशक्तिर्वेदसंज्ञापुरातनी ऋग्यजुः सामरूपेण सर्गादौ संप्रवर्तते इति ममाज्ञाभूतश्रुतिरक्षणार्थमयामहान्यत्नः कृतोस्तीत्याह मदाज्ञेति ॥ २१॥ ततस्तस्माद्धेतोर्ज्ञेयंश्रुतेर्वचो मे ममरहस्यमस्तीति ॥ २२॥ वेषान्शाकंभर्यादिरामकृष्णाद्यवतारान् अतएवेति वेदसंरक्षकादेवास्तत्राशकदित्येति विभागो वेदसद्भा सदेवजातइत्यर्थः ॥ २३॥ २४॥ २५॥ ननुतर्हि किमर्थं तंत्राणि शिवेन प्रणीतानीति चेत्तत्राह अन्यानियानीति ॥ २६॥

॥९०॥

तेषां नामान्याह वामंकापालिकमिति ॥ २७ ॥ पापिनां वेदधर्माचरणे सद्गतिः स्यादितिकमवैचित्र्याभावात्पंचवैचित्र्यं न स्यादिति तेषां नामाना
फलप्रदर्शनेन तत्र प्रवृत्तये मोहार्थमेवेदं श्रद्धाप्रच्युत्यर्थं च तंत्राणि प्रणीतानीत्यर्थः किंच शापदग्धानां वेदबहिष्कृतानां ब्राह्मणानां सोपानक्रमेण ज
न्मांतरे वेदाधिकारप्राप्त्यर्थं केचित्परमेश्वरोपासनं वक्तव्यमिति तदनुग्रहार्थं च तंत्राणि प्रणीतानीत्याह दक्षशापादिति शापकथा च कूर्मपुराणे
सूतसंहितायामस्मिन् द्वादशस्कंधे च प्रसिद्धा पुराणांतरेषु च ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ननु तर्हि तंत्राणि सर्वथा त्याज्यानीति पर्यवसन्नमिति चेन्नेत्या

श्रुतिस्मृतिविरुद्धानि तामसान्येव सर्वशः ॥ वामंकापोलकंचैव कौलकं भैरवागमः ॥ २७ ॥ शिवेन मोहनार्था
यप्रणीतो नान्यहेतुकः ॥ दक्षशापाद्भृगोः शापादधीचस्य च शापतः ॥ २८ ॥ दग्धाये ब्राह्मणवरवेदमार्गबहि
ष्कृताः ॥ तेषामुद्धरणार्थाय सोपानक्रमतः सदा ॥ २९ ॥ शैवाश्च वैष्णवाश्चैव सौराः शाक्तास्तथैव च ॥ गणप
त्या आगमाश्च प्रणीताः शंकरेण तु ॥ ३० ॥ तत्र वेदाविरुद्धोऽप्युक्त एव क्वचित्क्वचित् ॥ वैदिकैस्तद्गृहे दोषो न भव
त्येव कर्हिचित् ॥ ३१ ॥ सर्वथा वेदभिन्नार्थेनाधिकारी द्विजो भवेत् ॥ वेदाधिकारहीनस्तु भवेत्तत्राधिकारवान् ॥
॥ ३२ ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन वैदिको वेदमाश्रयेत् ॥ धर्मेण सहितं ज्ञानं परं ब्रह्म प्रकाशयेत् ॥ ३३ ॥ सर्वेषणाः
परित्यज्य मामेव शरणं गताः ॥ सर्वभूतदयावंतो मानाहंकारवर्जिताः ॥ ३४ ॥ मच्चित्ता मद्गतप्राणामत्स्थानकथ
ने रताः ॥ सन्यासिनो वनस्थाश्च गृहस्था ब्रह्मचारिणः ॥ ३५ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६२ ॥

ह तत्र वेदाविरुद्धांश इति तंत्रेषु द्विविधोऽंशोऽस्ति एको वेदाविरुद्धो द्वितीयो वेदाविरुद्धस्तत्र वैदिकैर्वेदाविरुद्धांशस्त्याज्ये वेदाविरुद्धांशस्तु ग्राह्य इत्य
र्थः तदुक्तं वायुसंहितायां शैवागमोपि द्विविधः श्रौता श्रौतश्च तन्मयः श्रुतिसारमयः श्रौतः स्वतंत्र इतरो मत इत्यादि श्रौतो ग्राह्यस्तु वैदिकैरि
तिसूतसंहितायां तथापि योऽंशो मार्गाणां वेदेन न विरुध्यते सोऽंशः प्रमाणमित्युक्तमिति इत्थमेतावत्पर्यंतं वैदिकं मतमुपपादितं तंत्राणां स्वतः प्रामा
ण्यमंगीकुर्वतां तंत्रिकाणां मतं त्वन्यदेवेति दिक् ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ यस्माद्देवाः क्त एव धर्मस्तस्माद्देवमाश्रयेदित्याह तस्मादिति धर्मेण वेदो
क्तेन ॥ ३३ ॥ पुनर्विराट्स्वरूपोपासकस्य निष्ठामाह सर्वेषणा इति ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.स

॥९१॥

ऐश्वरसंज्ञितंविराट्स्वरूपोपासनाभिधं ॥ ३६ ॥ प्रथमवैदिकपूजास्वरूपकथनमुपसंहरति इत्यमिति ॥ ३७ ॥ वेदमार्गेणकरचरणादि
विशिष्टसुकुमारमूर्तिपूजारूपायाद्वितीयवैदिकपूजायाः स्वरूपमाह द्वितीयायाइति ॥ ३८ ॥ महापटपटवस्त्रे ॥ ३९ ॥ सुकुमारांमूर्ति
माह स्वगुणामिति ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ इत्थंबाह्यपूजाकियत्कालपर्यंतकर्तव्येतिचेत्तत्राह यावदांतरेति आंतरपूजायामधि
उपासंतेसदाभक्त्यायोगमैश्वरसंज्ञितं ॥ तेषानित्याभियुक्तानामहमज्ञानजंतमः ॥ ३६ ॥ ज्ञानसूर्यप्रवाशेन
नाशयामिनसंशयः ॥ इत्थंवैदिकपूजायाः प्रथमायानगाधिप ॥ ३७ ॥ स्वरूपमुक्तंसंक्षेपाद्वितीयायाअथोब्रुवे
॥ मूर्तौवास्थंडिलेवापितथासूर्येदुमंडले ॥ ३८ ॥ जलेऽथवाबाणलिंगेयंत्रेवापिमहापटे ॥ तथाश्रीहृदयांभोजे
ध्यात्वादेवींपरात्परां ॥ ३९ ॥ सगुणांकरुणापूर्णातरुणीमरुणारुणां ॥ सौंदर्यसारसीमांतांसर्वावयवसुंदरां ॥
॥ ४० ॥ शृंगाररससंपूर्णासदाभक्तातिंकातरां ॥ प्रसादसुमुखीमंवांचंद्रखंडशिखंडिनीं ॥ ४१ ॥ पाशांकुशवराभी
तिधरामानंदरूपिणीं ॥ पूजयेदुपचारैश्चयथावित्तानुसारतः ॥ ४२ ॥ यावदांतरपूजायामधिकारोभवेन्नहि ॥ ताव
द्बाह्यामिमांपूजांश्रयेज्जातेतुतांत्यजेत् ॥ ४३ ॥ आभ्यंतरातुयापूजासातुसंविच्छेदः स्मृतः ॥ संविदेवपरंरूपमुपा
धिरहितंमम ॥ ४४ ॥ अंतःसंविदिमद्रूपेचेतःस्थाप्यंनिराश्रयं ॥ संविद्रूपातिरिक्तंतुमिथ्यामायामयंजगत् ॥ ४५ ॥
प्रातःसंसारनाशायसाक्षिणीमात्मरूपिणीं ॥ भावयेन्निर्मनस्केनयोगयुक्तेनचेतसा ॥ ४६ ॥ अतःपरंबाह्यपूजा
विस्तारःकथ्यतेमया ॥ सावधानेनमनसाशृणुपर्वतसत्तमा ॥ ४७ ॥ इ० दे० स० एकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ३९ ॥
कारेजातेइत्यर्थः तदुक्तंसूतसंहितायांपंचमाध्यायेशक्तिपूजाप्रकरणे अथाभ्यंतरपूजायामधिकारोभवेद्यादि त्यक्त्वाबाह्यामिमांपूजामाश्रये
दपरांबुधइति ॥ ४३ ॥ आंतरपूजास्वरूपमाह आभ्यंतरेति संविदिज्ञानरूपेब्रह्माणिमायियच्चेतसोलयस्तद्रूपेइत्यर्थः ॥ ४४ ॥ ४५ ॥
निर्मनस्केननिर्विकल्पेन योगयुक्तेनभक्तियोगयुक्तेन ॥ ४६ ॥ इयंयामूर्तौपूजासंक्षेपेणोक्ततांविस्तरेणवक्तुंप्रतिज्ञानीते अतःपरामिति
॥ ४७ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेसप्तमः कंधेदेवीर्गातायामेकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ३९ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अ. टी.

३९

॥९१॥

पंचाधिकैश्चत्वारिंशद्विःपद्यैरतःपरं ॥ ब्राह्मपूजाविधानंचयथावदभिधीयते ॥१॥ ब्राह्मपूजावक्तुमुपक्रमते प्रातरुत्थायेति अष्टपंचभवेत्प्रा-
तरेतिधर्मशास्त्रोक्तप्रातःकालेइत्यर्थः शिरसिस्वमस्तकेब्रह्मरंध्रेपद्मसहस्रारं तत्रतस्मिन्पद्मेनिजरूपिणंनिजगुरुसमाभाकारामित्यर्थः ॥१॥
शक्तिसंयुतंस्वपत्नीसंयुतं माताएवगुरुश्चेत्तापतिसंयुतांध्यायेत् ॥ २ ॥ प्रकाशमानामिति प्रथमेप्रयाणेब्रह्मरंध्रगमनरूपेप्रकाशमानांचि-
द्रूपत्वेनभासमानांप्रतिप्रयाणेब्रह्मरंध्रान्मूलाधारंपुनरागमनेअमृतायमानां आनंदामृतभरितां अंतःपदव्यांसुषुम्नायामनुसंचरंतीगमनागमने

श्रीदेव्युवाच ॥ प्रातरुत्थायशिरसिसंस्मरेत्पद्ममुज्ज्वलं ॥ कर्पूराभंस्मरेत्तत्रश्रीगुरुंनिजरूपिणं ॥ १ ॥ सुप्रस-
न्नंलसद्गूषाभूषितंशक्तिसंयुतं ॥ नमस्कृत्यततोदेवीकुंडलींसंस्मरेद्बुधः ॥ २ ॥ प्रकाशमानांप्रथमेप्रयाणेप्र-
तिप्रयाणेप्यमृतायमानां ॥ अंतःपदव्यामनुसंचरंतीमानंदरूपामबलांप्रपद्ये ॥ ३ ॥ ध्यात्वैवंतच्छिखामध्ये
सच्चिदानंदरूपिणीं ॥ मांध्यायेदन्नशौचादिक्रियाःसर्वाःसमापयेत् ॥ ४ ॥ अग्निहोत्रंततोहुत्वामत्प्रीत्यर्थंद्विजोत्त-
मः ॥ होमांतेस्वासनेस्थित्वापूजासंकल्पमाचरेत् ॥ ५ ॥ भूतशुद्धिंपुराकृत्वामातृकान्यासमेवच ॥ हृल्लेखा
मातृकान्यासंनित्यमेवसमाचरेत् ॥ ६ ॥ मूलाधारेहकारंचहृदयेचरकारकं ॥ भूमध्येतद्वदीकारंहींकारंमस्त-
केन्यसेत् ॥ ७ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥

कुर्वतीमबलांशक्तिंप्रपद्येशरणंगतोस्मीत्यर्थः नविद्यतेबलंयस्याःसकाशादन्यत्रेत्यबला इत्थंयोगिभिः कुंडलिनींसाक्षात्कर्तव्यायोगा-
भावेभावनात्राकर्तव्या ॥ ३ ॥ तच्छिखामध्येसायाद्विखामूलाधारस्याचिदग्नेःशिखाकुंडलिनीतस्याःशिखायामध्येपरमात्माव्यवस्थि-
तइतितीर्त्तरीयश्रुत्युक्तातन्मध्येमांसच्चिदानंदरूपिणींध्यायोदेत्यर्थः सर्वाःक्रियाःसंध्यावंदनांता ॥ ४ ॥ होमांतेमत्प्रीत्यर्थमग्निहोत्रहोमांतेइ-
त्यर्थः ॥ ५ ॥ भूतशुद्धिमातृकान्यासौप्रसिद्धौगौरवान्नलिख्येते हृल्लेखामातृकेति हृल्लेखामायात्रीजंप्रत्यक्षरंमायात्रीजंपूर्वदत्वामातृ-
कान्यासोयःकर्तव्यःसहृल्लेखामातृकान्यासःशारदायांदशविधमातृकान्यासेषुप्रसिद्धः ॥ ६ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

बाह्यपीठे पूर्वोक्तेयंत्रादौ ॥ १५ ॥ प्राणस्थापनविद्यया प्राणप्रतिष्ठा मंत्रेण ॥ १६ ॥ १७ ॥ पुष्पांतं पूजां कृत्वा यंत्रस्थानामावृतीनामावरणदेव
 तानां पूजनं कुर्यादित्याह यंत्रस्थानामिति ताश्च देवतास्तत्तन्मंत्रकल्योक्ताग्राह्याः प्रतिवारमिति प्रतिदिनमावरणदेवता पूजनं कर्तुं मशक्तश्चेत् शु
 क्रवारेऽवश्यं कुर्यादित्यर्थः ॥ १८ ॥ आवरणदेवतासु भावनामाह मूलदेवीति ॥ १९ ॥ पुनरावृत्तीति इत्थमावरणदेवता यथा स्थानेषु
 स्थिता ध्यात्वा संपूज्य पुनः सावरणां सायुधां सशक्तिकां श्रीभुवनेश्वरीं गंधादिदक्षणां तैस्तैश्चरैः पूजयेदित्यर्थः ॥ २० ॥ त्वत्कृतेनेति त्वया हि
 तदनुज्ञां समादाय बाह्यपीठे ततः परं ॥ हृदिस्थां भावितां मूर्तिसमदिव्यां मनोहरां ॥ १५ ॥ आवाहयेत्ततः पीठे
 प्राणस्थापनविद्यया ॥ आसनावाहने चार्घ्यपाद्याद्याचमनं तथा ॥ १६ ॥ स्नानं वा सोद्वयं चैव भूषणानि च सर्व
 शः ॥ गंधपुष्पं यथा योग्यं दत्त्वा देव्यै स्वभक्तितः ॥ १७ ॥ यंत्रस्थानामावृतीनां पूजनं सम्यगाचरेत् ॥ प्रतिवारम
 शक्तानां शुक्रवारो नियम्यते ॥ १८ ॥ मूलदेवी प्रभारूपाः स्मर्तव्या अंगदेवताः ॥ तत्प्रभापटलव्याप्तत्रैलोक्यं
 च विचिंतयेत् ॥ १९ ॥ पुनरावृत्तिसहितां मूलदेवीं च पूजयेत् ॥ गंधादिभिः सुगंधैस्तु तथा पुष्पैः सुवासितैः ॥ २० ॥
 नैवेद्यैस्तर्पणैश्चैव तां ब्रूलैर्दक्षिणादिभिः ॥ तोषयेन्मां त्वत्कृतेन नाम्नां साहस्रकेण च ॥ २१ ॥ कवचेन च सूक्तेना
 हं रुद्रेभिरिति प्रभो ॥ देव्यथर्वशिरोमंत्रैर्हल्लेखोपनिषद्भवैः ॥ २२ ॥ महाविद्यां महामंत्रैस्तोषयेन्मां मुहुर्मुहुः
 ॥ क्षमापयेज्जगद्वात्रीं प्रेमार्द्रहृदयो नरः ॥ २३ ॥ पुलकांकितसर्वांगैर्वाष्पस्रुत्वा क्षिप्तिः स्वनः ॥ नृत्यगीतादिघो
 षेण तोषयेन्मां मुहुर्मुहुः ॥ २४ ॥ विदपारायणैश्चैव पुराणैः सकलैरपि ॥ प्रतिपाद्याय तोहवै तस्मात्तैस्तोषयेत्तु मां ॥ २५ ॥
 मालयेन कृतं यत्सहस्रनामस्तोत्रं मते न मां तोषयेदित्यर्थः अनेनैव ज्ञापकेन हि मालयेन देवीदक्षिणे जाते सहस्रनामस्तोत्रेण देवीस्तुतेति बोधितं तच्च
 सहस्रनामस्तोत्रं यद्यप्यस्मिन्पुराणेनास्ति तथापि कूर्मपुराणे द्वादशाध्याये वर्तते तदुक्तं तत्राप्यतत्प्रसंगेनैव सहस्रनामकथनात् चकारे मूल
 मंत्रजपं कृत्वा पश्चात्सहस्रनामस्तोत्रं पठेदित्यर्थः ॥ २१ ॥ कवचेन तंत्रादिषु प्रोक्तेन अहं रुद्रेभिरिति देवीसूक्तेनेत्यन्वयः देव्यथर्वशिरोनाम
 सर्वे वै देवा देवीमुपतस्थुरित्यादिकं हल्लेखोपनिषत्भुवनेश्वर्या उपनिषत् ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

॥९३॥

टी.अ.
४०

इति तथाचब्रह्मांडपुराणेह्रींकारादर्शविवेकि ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ उरोजयोः
स्तनयोः ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥

॥१३॥

ततोदेवीवरप्रदानानंतरं ॥३९॥ इयंचगौर्याउत्पत्तिर्वैष्णवचतुर्थीतदुक्तंकृत्यरत्नावल्यां ज्येष्ठशुक्लचतुर्थीतुजातापूर्वमुमासती तस्मात्सा
तत्रसंपूज्यासर्वसौभाग्यहेतवे उपहारैश्चैविविधैर्गीतनृत्योत्सवादिभिः होमैःपयोभिर्वस्त्रैश्चपत्रपुष्पैःसुगंधिभिरिति साचोत्पत्तिरुणोदयवे
लायां तदुक्तंमात्स्येतारकासुरयुद्धप्रस्तावे ततो जगत्परित्राणहेतुं हिमगिरेःप्रिया ब्राह्मेमुहूर्ते सुभगे प्रासूयत गुहारणिमिति इत्यंगौर्याउत्पत्ति
तस्याःशिवस्य प्राप्तिं सविस्तरामुपवर्ण्य लक्ष्म्युत्पत्तिस्तस्याविष्णुप्राप्तिं च संक्षेपेण वदति, समुद्रमंथने इति रत्नान्यासूरत्नान्युत्पन्नानीत्यर्थः ॥४०॥

व्यासउ० ॥ ततो हिमालये जज्ञे देवी हैमवती तु सा ॥ या गौरीति प्रासिद्धा सीदत्त सा शंकराय च ॥३९॥ ततः स्कं
धः समुद्रतस्तारकस्तेन पातितः ॥ समुद्रमंथने पूर्वरत्नान्यासुर्नराधिप ॥४०॥ तत्र देवैस्तुता देवी लक्ष्मी प्राप्त्य
र्थमादरात् ॥ तेषामनुग्रहार्थाय निर्गता तुरमा ततः ॥४१॥ वैकुण्ठाय सुरैर्दत्ता तेन तस्य शमो भवत् ॥ इति ते कथि
तं राजन् देवी माहात्म्यमुत्तमं ॥४२॥ गौरी लक्ष्म्योः समुद्रूतिविषयं सर्वकामदं ॥ नवाच्यं ते तदन्यस्मै रहस्यं क
थितं यतः ॥४३॥ गीतारहस्यभूते यंगोपनीया प्रयत्नतः ॥ सर्वमुक्तं समासेन यत्पृष्ठं तत्त्वयानघ ॥४४॥ प
वित्रं पावनं दिव्यं किंभूयः श्रोतुमिच्छसि ॥४५॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे ऽष्टादशसाहस्र्यां संहिता
यां सप्तमस्कंधे देवीगीतायां चत्वारिंशोऽध्यायः ॥४०॥ ॥ ४१॥ सप्तमस्कंधः समाप्तः ॥ ७ ॥

तत्रेति तस्मिन्नपि समये देवैर्देवीपराशक्तिः स्तुता किमर्थं लक्ष्मीप्राप्त्यर्थं ॥४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ विस्तारस्तुमत्कृतदेवीगीताबृहद्गी
तायां द्रष्टव्यः ॥ श्रीमच्छैवकुलोत्पन्नोरंगनाथात्मजः सुधीः ॥ श्रीलक्ष्मीगर्भसंभूतो निलकंठोभिधानतः ॥१॥ देवीभागवतस्यास्य व्याख्यानरहित
स्य च ॥ व्याख्यायः कृतवान् सम्यक् कृतिलकाख्यां महत्तरां ॥२॥ सप्तमस्कंध एतस्याः समाप्तो भूच्छुभार्थदः ॥ प्रीयतां तेन मे नंतकोटिब्रह्मंडनायिका
॥३॥ इति श्रीशैवकुलोत्पन्नोरंगनाथात्मजलक्ष्मीगर्भजनीलकंठकृते श्रीमद्देवीभागवततिलके सप्तमस्कंधे देवीगीतायां चत्वारिंशोऽध्यायः ॥४०॥

॥ इति श्रीमद्देवीभागवतसप्तमस्कंधः समाप्तः ॥

॥ अथश्रीमद्देवीभागवतअष्टमस्कंधप्रारंभः ॥

... ॥ १ ॥ जनमेजय उवाच ॥ सूर्यचंद्रान्वयोत्थानां नृपाणां सत्कथाश्रितं ॥ चरितं भवता प्रोक्तं श्रुतं
 तदमृतास्पदं ॥ १ ॥ अधुना श्रोतुमिच्छामि सा देवा जगदांबिका ॥ मन्वन्तरेषु सर्वेषु यद्यद्रूपेण पूज्यते ॥ २ ॥ य
 स्मिन् यस्मिन् श्रवणस्थाने येन येन च कर्मणा ॥ देव्या विराट् स्वरूपं स्वर्णनं च यथा तथं ॥ ३ ॥ येन ध्यानेन त
 त्सूक्ष्मे स्वरूपे स्यान्मतेर्गतिः ॥ तत्सर्वं वद विप्रर्षेयेन श्रेयो ह माशुभां ॥ ४ ॥ व्यास उवाच ॥ शृणु राजन्
 प्रवक्ष्यामि देव्याराधनमुत्तमं ॥ यत्कृतेन श्रुतेनापि नरः श्रेयो त्रिविदं ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥

टी. अ.

... ॥ १ ॥ जनमेजय उवाच ॥ सूर्यचंद्रान्वयोत्थानां नृपाणां सत्कथाश्रितं ॥ चरितं भवता प्रोक्तं श्रुतं
 तदमृतास्पदं ॥ १ ॥ अधुना श्रोतुमिच्छामि सा देवा जगदांबिका ॥ मन्वन्तरेषु सर्वेषु यद्यद्रूपेण पूज्यते ॥ २ ॥ य
 स्मिन् यस्मिन् श्रवणस्थाने येन येन च कर्मणा ॥ देव्या विराट् स्वरूपं स्वर्णनं च यथा तथं ॥ ३ ॥ येन ध्यानेन त
 त्सूक्ष्मे स्वरूपे स्यान्मतेर्गतिः ॥ तत्सर्वं वद विप्रर्षेयेन श्रेयो ह माशुभां ॥ ४ ॥ व्यास उवाच ॥ शृणु राजन्
 प्रवक्ष्यामि देव्याराधनमुत्तमं ॥ यत्कृतेन श्रुतेनापि नरः श्रेयो त्रिविदं ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥

... ॥ १ ॥ जनमेजय उवाच ॥ सूर्यचंद्रान्वयोत्थानां नृपाणां सत्कथाश्रितं ॥ चरितं भवता प्रोक्तं श्रुतं
 तदमृतास्पदं ॥ १ ॥ अधुना श्रोतुमिच्छामि सा देवा जगदांबिका ॥ मन्वन्तरेषु सर्वेषु यद्यद्रूपेण पूज्यते ॥ २ ॥ य
 स्मिन् यस्मिन् श्रवणस्थाने येन येन च कर्मणा ॥ देव्या विराट् स्वरूपं स्वर्णनं च यथा तथं ॥ ३ ॥ येन ध्यानेन त
 त्सूक्ष्मे स्वरूपे स्यान्मतेर्गतिः ॥ तत्सर्वं वद विप्रर्षेयेन श्रेयो ह माशुभां ॥ ४ ॥ व्यास उवाच ॥ शृणु राजन्
 प्रवक्ष्यामि देव्याराधनमुत्तमं ॥ यत्कृतेन श्रुतेनापि नरः श्रेयो त्रिविदं ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥

॥ १ ॥

जगतस्त्वमित्यवदेवाप्रोक्तमयापिहि ॥ त्रैलोक्येभिर्देवगणैर्वैरन्यैश्चापिमनीषिभिः ॥ १६ ॥ साजगत्सृजतैर्दे-
वैर्तथाचप्रतिपाल्यते ॥ तथाचनाश्यतेसर्वमितिप्रोक्तंगुणत्रयात् ॥ १७ ॥ तस्याः स्वरूपं वक्ष्यामिदेव्याः सि-
द्धयर्जनितं ॥ स्मरतांसर्वपापघ्नंकामदंमोक्षदंतथा ॥ १८ ॥ मनुःस्वायंभुवस्त्वाद्यःपद्मपुत्रःप्रतोपवासः ॥
॥ शतिरूपापतिःश्रीमान्सर्वमन्वंतराधिपः ॥ १९ ॥ समनुःपितरंदेवंप्रजापतिमकल्मषं ॥ भक्त्यापर्यचरन्पू-
र्वतमुवाचात्मभूःसुतं ॥ २० ॥ पुत्रपुत्रत्वयाकार्यदेव्याराधनमुत्तमं ॥ तत्प्रसादेनतेतातप्रजासर्गःप्रसिद्ध-
तिः ॥ २१ ॥ एवमुक्तःप्रजास्रष्टामनुःस्वायंभुवोविराट् ॥ जगद्योनिं तद्वादेवीतपसातर्पयद्विभुः ॥ २२ ॥ तुष्टा-
वदेवीदेवेशीसमाहितमतिःकिल ॥ आद्यांमायांसर्वशक्तिसर्वकारणकारणां ॥ २३ ॥ मनुस्वाच ॥ नमो
नमस्तेदेवेशिजगत्कारणकारणे ॥ शंखचक्रगदाहस्तेनारायणहृदाश्रिते ॥ २४ ॥ वेदमूर्तेजगन्मातःकारण-
स्थानरूपिणि ॥ वेदत्रयप्रमाणज्ञेसर्वदेवनुतेशिवे ॥ २५ ॥ माहेश्वरिमहाभागेमहामायेमहोदये ॥ महादेव-
प्रियावासेमहादेवप्रियंकरि ॥ २६ ॥ गोपेन्द्रस्यप्रियेज्येष्ठेमहानंदेमहोत्सवे ॥ महामारीभयहरेनमोदेवादिपू-
जिते ॥ २७ ॥ सर्वमंगलमांगल्येशिवेसर्वार्थसाधिके ॥ शरण्येर्त्र्यंबकेगौरिनारायणिनमोस्तुते ॥ २८ ॥

॥ २८ ॥ जगत्कारणहिरण्यगर्भस्तस्याधिकारिण्यर्थः ॥ नारायणहृदाश्रितेदं चैवैणव्याःशक्तेः स्वरूपं जगत्कारणं तद्वत्तत्त्वात् ॥ २९ ॥ गोपेन्द्रस्यप्रियेज्येष्ठेमहानंदेमहोत्सवे ॥ महामारीभयहरेनमोदेवादिपू-
जिते ॥ २९ ॥ सर्वमंगलमांगल्येशिवेसर्वार्थसाधिके ॥ शरण्येर्त्र्यंबकेगौरिनारायणिनमोस्तुते ॥ ३० ॥

यतश्चेदं यया विश्वमोतं प्रोतं च सर्वदा ॥ चैतन्यमेकमाद्यंतरहितं तेजसां निधिः ॥ २९ ॥ ब्रह्माय दीक्षणात्सर्वक
 रोति च हरिः सदा ॥ पालयत्यपि विश्वेशः संहर्ता यदनुग्रहात् ॥ ३० ॥ मधुकैटभसंभूतभयार्तः पद्मसंभवः ॥
 यस्यास्तवेन मुमुचे घोरदैत्यभवां बुधेः ॥ ३१ ॥ त्वं ह्रीः कीर्तिः स्मृतिः कांतिः कमलागिरिजासती ॥ दाक्षायणी वि
 दगर्भा बुद्धिदात्री सदा भया ॥ ३२ ॥ स्तोष्येत्वां च नमस्या निपूजयामि जपामि च ॥ ध्यायामि भावयेवीक्ष्ये श्रो
 ष्ये देवि प्रसीद मे ॥ ३३ ॥ ब्रह्मावेदनिधिः कृष्णो लक्ष्म्यावासः पुरंदरः ॥ त्रिलोकाधिपतिः पाशीयादसां पतिरु
 त्तमः ॥ ३४ ॥ कुबेरो निधिनाथो भूद्यमोजातः परेतराट् ॥ नैऋतो रक्षसां नाथः सोमोजातो ह्यपोमयः ॥ ३५ ॥
 त्रिलोकबन्धलोकेशी महामांशस्य रूपिणी ॥ नमस्तेस्तु पुनर्भूयोजगन्मातर्नमो ममः ॥ ३६ ॥ नारायण उवा
 च ॥ एवं स्तुता भगवती दुर्गानाशायणी परा ॥ प्रसन्ना प्राह देवेषु ब्रह्मपुत्रे मिदं वचः ॥ ३७ ॥ देव्युवाच ॥ वरं
 वरय राजेंद्र ब्रह्मपुत्र यदिच्छसि ॥ प्रसन्ना हंस्तवेनात्र भक्त्या चाराधनेन च ॥ ३८ ॥ मनुस्वाच ॥ यदि देवि प्रस
 न्नासि भक्त्या का स्रणि कोत्तमे ॥ तदानिर्विघ्नतः सृष्टिः प्रजायाः स्यात्तवाज्ञया ॥ ३९ ॥ देव्युवाच ॥ प्रजासर्गः प्र
 भवतु ममानुग्रहतः किल ॥ निर्विघ्नेन च राजेंद्र वदिष्याम्युज्ज्वलं ॥ ४० ॥ यः कश्चित्पठते स्तोत्रं स द्रक्ष्यात्स्वल्क
 तं सदा ॥ तेषां विद्या प्रजासिद्धिः कीर्तिः कांत्युदयः खलु ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥

॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ब्रह्मावेदनिधिरिति यस्याः प्रसादात् ब्रह्मावेदनिधिर्जातः कृष्णस्तुलक्ष्म्यावासो लक्ष्मीपतिर्जातः पुरंदरो लक्ष्मीत्रि
 लोकाधिपतिः ॥ सतिषयाभयेयं यो कनीयं ॥ नारायणः ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥

034

जायतेधनधान्यानिशक्तिरप्रहतानृणां ॥ सर्वत्रविजियोरान्मुखंशत्रुपक्षिणः ॥ ४२ ॥ नारायणउवाच ॥
एवंदत्त्वावसन्देहीमनवेब्रह्मसूनुवे ॥ अंतर्धानंगताचासीत्पश्यतस्तस्यधीमतः ॥ ४३ ॥ अथलब्धवरोराजा
ब्रह्मपुत्रःप्रतापवान् ॥ ब्रह्माणमब्रवीत्तातस्थानंमेदीयतारहः ॥ ४४ ॥ यत्राहंसमधिष्ठायप्रजाःस्रक्ष्यामिपु
ष्कलाः ॥ यक्ष्यामियज्ञैर्देवेशंतत्समादिशमाचिरं ॥ ४५ ॥ इतिपुत्रवचःश्रुत्वाप्रजापतिपतिर्विभुः ॥ चिंतयामा
ससुविचरंकथंकार्यंभवेदिदं ॥ ४६ ॥ सृजतेमेगतःकालोविपुलो नंतसंख्यकः ॥ धरावार्भिःप्लुतामग्नारसंयाता
खिलश्रया ॥ ४७ ॥ इदंमच्चिंतितंकार्यंभगवानादिपुरुषः ॥ करिष्यतिसहायोमेयदादेशेहमाश्रितः ॥ ४८ ॥
इतिश्रीदेवीभागवतेमाहापुराणेअष्टमस्कंधेभुवनकोशोनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ नारायणउवाच ॥ एवंमीमां
सतस्तस्यपद्मयोनेःपरंतप ॥ मन्वादिभिर्मुनिवरैर्मरीचाद्यैःसमंततः ॥ १ ॥ ध्यायतस्तस्यनासाग्राद्विरं
चेःसहसानघ ॥ बराहरूपोनिरगादेकांगुलप्रमाणतः ॥ २ ॥ तस्यैवपश्यतःस्वस्थःक्षणेनकिलनारद ॥ करि
मात्रंप्रववृधेतदद्भुततमंह्यभूत् ॥ ३ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥

देनापृष्ठस्य कथनेनोपयोग इति चेन्न अत्रापृष्ठकथनान्यथानुपपत्त्यैवनारदेनैव तत्पृष्ठमस्तीत्यर्थस्यापि कल्पनात् अतएवाग्रे विराट् स्वरूपसाक्षिबेश
प्रभस्य नारदकृतस्याभावेऽपि प्रथमाध्यायस्य तन्मैर्योगात्मनेन त्वात्र द्वादशे वतनूद्रवः पर्यपृच्छदिमं चार्थं यत्पृष्टे भवतानघेति जनमेजय प्रतिव्यासवाक्यं सं
मुख्येति समंततस्त्वैर्मन्त्रादिभिः परिवर्द्धितस्त्वेषति शेषः ॥ १ ॥ ध्यायतः पद्मयोनेरित्यन्वयः ॥ २ ॥ तत्स्वैव विरंचिरव खल्वप्यप्यव्य
भावदीप्ताश्च स्योत्रपादः ॥ ३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

દી.અ.

11 3 11

मरीचिमुख्यैः सहितो मेरां चिस्वद्वैत्ययः ॥ ४ ॥ सत्वं महाभूतमित्ययः ॥ ५ ॥ दृष्टेऽमुष्ठाशिरोमात्रं इति यः पूर्वमंमुष्ठाशिरोमात्रं गुष्ठ
मात्रपरिमितो दृष्टः सः क्षणात्पवंतसन्निभो वात इत्ययः ॥ ६ ॥ ब्रह्मणः परमात्मनोऽग्रे इति शेषः ॥ ७ ॥ संहतान् मिलितान् ॥ ८ ॥ ९ ॥

मरीचिमुख्यैर्विप्रेन्द्रैः सनकाद्यैश्च नारद ॥ तद्दृष्ट्वा सौकरं रूपं तर्कयामास पद्मभूः ॥ ४ ॥ किमेतत्सौकरं व्याजं
दिव्यं सत्त्वमवस्थितं ॥ अत्याश्चर्यमिदं जातं नासिकाया विनिःसृतां ॥ ५ ॥ दृष्टेऽमुष्ठाशिरोमात्रः क्षणाच्छैलैर्द्रसन्निभः ॥
आहोस्विद्भगवान्किं वायज्ञो मे खेदयन्मनः ॥ ६ ॥ इति तर्कयतस्तस्य ब्रह्मणः परमात्मनः ॥ वराहरूपो भग
वान्जगर्ज्ज्वलसन्निभः ॥ ७ ॥ विरंचिहर्षयामास संहतांश्च द्विजोत्तमान् ॥ स्वगर्जशब्दमात्रेणादिकप्रांतमनु
नादयन् ॥ ८ ॥ ते निशम्य स्वखेदस्य क्षयिष्णुं घुर्घुरस्वनं ॥ जनस्तपः सत्यलोकवासिनो मरवर्यकाः ॥ ९ ॥
छंदोमयैः स्तोत्रवरैर्ऋक्सामाथर्वसंभवैः ॥ वचोभिः पुरुषं त्वाद्यं द्विजैर्द्राः पर्यवाकिरन् ॥ १० ॥ तेषां स्तोत्रं नि
शम्याद्यो भगवान्हरिरीश्वरः ॥ कृपावलोकमात्रेणानुगृहीत्वा पआविशत् ॥ ११ ॥ तस्यांतर्विशतः क्रूरसटा
घातप्रपीडितः ॥ समुद्रोत्था ब्रवीद्विवरक्षमांशरंणार्तिहन् ॥ १२ ॥ इत्याकर्ण्य समुद्रोक्तं वचनं हरिरीश्वरः ॥ वि
दारयन् जलचरान् जगामांतर्जले विभुः ॥ १३ ॥ इतस्ततो भिधावन्सविविन्वन् पृथिवीं धरां ॥ आघ्रायाघ्राय
सर्वेशो घरामासादयच्छनैः ॥ १४ ॥ अंतर्जल गतां भूमिं सर्वसत्त्वाश्रयांतदा ॥ भूमिं स देवदेवेशो दंष्ट्रयोदाजहा
रतां ॥ १५ ॥ तां समुद्रदंष्ट्रां ग्रेयज्ञेशो यज्ञपूरुषः ॥ शुशुभादगंजीयद्बहुदृष्ट्याथ सुपद्मिनीं ॥ १६ ॥ १७ ॥

॥ १० ॥ अपः जलानि आविशत्प्रविवेश ॥ ११ ॥ सटाघातः कठोरशरीरकेशाघातः ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ पद्मिनीं कमलिनीं
सुधाश्रेणोदृत्यादिगंजीयथाशुशुभे ॥ १५ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥

दे.भा.अ.

॥ ३ ॥

॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके अष्टमस्कंधे प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ अष्टमिहैर्महापर्वोऽन्तर्गते
वराहर्षिः ॥ जलादुद्धृतमित्येतत्कथानकमिहोच्यते ॥ १ ॥ पूर्वाध्याये इदं मञ्चितितं कार्यं भगवानादिपुरुषः करिष्यति प्रोक्तेन वनेन पद्मयोगेनैव
यज्ञात्वा भगवान् वराहरूपेण प्रादुर्भूदित्वाह एवंमीमांसत इति ननु नारदेन जगतस्तत्त्वमेव पृष्टं च नारायणेनाभिहितं पुनस्तदुत्तरकथानकस्य नार

जायंते धनधान्यानि शक्तिरप्रहतानृणां ॥ सर्वत्र विजियो राजन्सुखं शत्रुपक्षिणः ॥ ४२ ॥ नारायण उवाच ॥
एवं दत्त्वा वरान् देवी मनवे ब्रह्मसूनुवे ॥ अंतर्धानं गता चासीत् पश्यतस्तस्य धीमतः ॥ ४३ ॥ अथ लब्धवरो राजा
ब्रह्मपुत्रः प्रतापवान् ॥ ब्रह्माणमब्रवीत्तातस्थानं मे दीयतां रहः ॥ ४४ ॥ यत्राहं समधिष्ठाय प्रजाः स्त्रक्ष्यामि पु
ष्कलाः ॥ यक्ष्यामि यज्ञैर्देवेशं तत्समादिशमाचिरं ॥ ४५ ॥ इति पुत्रवचः श्रुत्वा प्रजापतिपतिर्विभुः ॥ चिंतयामा
स सुचिरं कथं कार्यं भवेदिदं ॥ ४६ ॥ सृजते मे गतः कालो विपुलो नंत संस्रवः ॥ धरावार्भिः प्लुता मग्नार संयाता
खिलाश्रया ॥ ४७ ॥ इदं मञ्चितितं कार्यं भगवानादिपुरुषः ॥ करिष्यति सहायो मे यदादेशेह माश्रितः ॥ ४८ ॥
इति श्रीदेवीभागवते माहापुराणे अष्टमस्कंधे भुवनकोशो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ नारायण उवाच ॥ एवंमीमां
सतस्तस्य पद्मयोनेः परंतप ॥ मन्वादिभिर्मुनिवरैर्मरीचाद्यैः समंततः ॥ १ ॥ ध्यायतस्तस्य नासाग्राद्विरं
चेः सहसानघ ॥ वराहरूपो निरगादेकांगुलप्रमाणतः ॥ २ ॥ तस्यैव पश्यतः स्वस्थः क्षणेन किल नारद ॥ करि
मात्रं प्रववृधेत दद्भुततमं ह्यभूत् ॥ ३ ॥

॥ ४९ ॥

॥ ४९ ॥

॥ ४९ ॥

देना पृष्ठस्य कथनेनोपयोग इति चेन्न अत्रापृष्ठकथनान्यथानुपपत्त्यैव नारदेनैव तत्पृष्ठमस्तीत्यर्थं स्यात्पिकल्पनान् अतएवाग्रे विराट्स्वरूपसाम्प्रवेश
प्रश्नस्य नारदकृतस्याभावेऽपि प्रथमाध्यायस्य तस्मै योगात्मने नत्वा ब्रह्मदेवतनूदयः पर्यपृच्छादिमंचार्थयत्पृष्ठे भवतानवेति जनमेजयप्रतिव्यासवाक्यं सं
गच्छतेति समंततस्तेर्मन्वादिभिः परिवेष्टितस्त्विति शेषः ॥ १ ॥ ध्यायतः पद्मयोनेरित्यन्वयः ॥ २ ॥ तस्यैव विरंचेरेव स्वस्थः पृथिव्य
भावादकाशस्थो वराहः ॥ ३ ॥

टी.अ.

१

॥ ३ ॥

मरीचिमुख्यैः सहितो विरंचिस्त्वं दृष्ट्वैत्ययः ॥ ४ ॥ सत्त्वं महाभूतमित्ययः ॥ ५ ॥ दृष्ट्वैगुष्ठशिरोमात्रं इति यः पूर्वमंगुष्ठशिरोमात्रं गुष्ठ
मात्रं परिमितो दृष्टः सः क्षणात्पर्वतसन्निभो जाता इत्ययः ॥ ६ ॥ ब्रह्मणः परमात्मनोऽग्रे इति शेषः ॥ ७ ॥ संहतान् मिलितान् ॥ ८ ॥ ९ ॥

मरीचिमुख्यैर्विप्रेन्द्रैः सनकाद्यैश्च नारद ॥ तद्वृष्ट्वा सौकरं रूपं तर्कयामास पद्मभूः ॥ ४ ॥ किमेतत्सौकरं व्याजं
दिव्यं सत्त्वमवस्थितां अत्याश्चर्यमिदं जातं नासिकाया विनिःसृतां ॥ ५ ॥ दृष्ट्वैगुष्ठशिरोमात्रः क्षणाच्छैलैर्द्रसन्निभः ॥
आहोस्विद्भगवान्किं वायज्ञो मे खेदयन्मनः ॥ ६ ॥ इति तर्कयतस्तस्य ब्रह्मणः परमात्मनः ॥ वराहरूपो भग
वान्जगर्जवलसन्निभः ॥ ७ ॥ विरंचिं हर्षयामास संहतांश्च द्विजोत्तमान् ॥ स्वगर्जशब्दमात्रेणादिकप्रांतमनु
नादयन् ॥ ८ ॥ ते निशम्य स्वखेदस्य क्षयिष्णुं घुर्घुरस्वनं ॥ जनस्तपःसत्यलोकवासिनो मरवर्यकाः ॥ ९ ॥
छंदोमयैः स्तोत्रवरैर्ऋक्सामाथर्वसंभवैः ॥ वचोभिः पुरुषं त्वाद्यं द्विजैर्द्राः पर्यवाकिरन् ॥ १० ॥ तेषां स्तोत्रं नि
शम्याद्यो भगवान्हरिरीश्वरः ॥ कृपावलोकमात्रेणानुगृहीत्वा पआविशत् ॥ ११ ॥ तस्यांतर्विशतः क्रूरसटा
घातप्रपीडितः ॥ समुद्रोथा ब्रवीद्विवरक्षमांशरणातिहन् ॥ १२ ॥ इत्याकर्ण्य समुद्रोक्तं वचनं हरिरीश्वरः ॥ वि
दारयन् जलचरान् जगामांतर्जले विभुः ॥ १३ ॥ इतस्ततो भिधावन्सविचिन्वन् पृथिवीधरां ॥ आघ्रायाघ्राय
सर्वेशोधरामासादयच्छनैः ॥ १४ ॥ अंतर्जलगतां भूमिं सर्वसत्त्वाश्रयांतदा ॥ भूमिं स देवदेवेशो दंष्ट्रयोदाजहा
रतां ॥ १५ ॥ तां समुद्रतटं दृष्ट्वा ग्रेयज्ञेशो यज्ञपूरुषः ॥ शुशुभादगंजीयद्बुद्ध्याथ सुपद्मिनीं ॥ १६ ॥ १७ ॥

॥ १० ॥ अपः जलानि आविशत्प्रविवेश ॥ ११ ॥ सटाघातः कठोरशरीरकेशाघातः ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ पद्मिनीं कमलिनीं
शुंडाग्रेणोद्धृत्यादिगंजीयथा शुशुभे ॥ १५ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥

॥ भा. अ. ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

टी. अ.

२

॥ ४ ॥

तदंशुदेवदेवेशोविंशतिःसमनुःस्वराट् ॥ नुग्रववाग्निरेवेशदं ग्रीवृतवसुंधरं ॥ १७ ॥ श्रीब्रह्मोवाच ॥ जितंते
पुंडरीकाक्षभक्तानामोर्तिशासन ॥ खर्वीकृतसुराधारसर्वकामफलप्रद ॥ १८ ॥ इयंचधरणीदेवशोभतेवसु
धातव ॥ पद्मिनीवसुपत्राढ्यामतंगप्रकारोदृता ॥ १९ ॥ इदंचतेशरीरंवेशोभतेभूमिसंगमात् ॥ उद्धृतांबुज
शुंडाग्रकरींद्रतनुसन्निभं ॥ २० ॥ नमोनमस्तेदेवेशसृष्टिसंहारकारक ॥ दाववानांविनाशायकृतनामाकृतेप्र
भो ॥ २१ ॥ अग्रतश्चनमस्तेस्तुपृष्ठतश्चनमोनमः ॥ सर्वामराधारभूतवृहद्ब्रह्मनमोस्तुते ॥ २२ ॥ त्वयाहं
चप्रजासर्गेनियुक्तःशक्तिवृंहितः ॥ त्वदाज्ञावशतःसर्गेकरोमिविकरोमिच ॥ २३ ॥ त्वत्सहायेनदेवेशाअमरा
श्चपुराहरे ॥ सुधांविभेजिरेसर्वेयथाकालंयथाबलं ॥ २४ ॥ इंद्रस्त्रिलोकीसाध्याज्यंलब्धवांस्त्वन्निवेशतः ॥ भु
नेकिलक्ष्मीबहुलांसुरसंघप्रपूजितः ॥ २५ ॥ बन्धिःपावकतालध्वजाठरादिविभेदतः ॥ देवासुरमनुष्या
णांकरोत्याप्यायनंतथा ॥ २६ ॥ धर्मराजोथपितृणामधिपःसर्वकर्मदृक् ॥ कर्मणांफलदातासौत्वन्नियोगादधी
श्वरः ॥ २७ ॥ नैर्ऋतोरक्षसामीशोयक्षोविघ्नविनाशनः ॥ सर्वेषांप्राणिनांकर्मसाक्षीत्वत्तःप्रजायते ॥ २८ ॥
वरुणोयादसामीशोलोकपालोजलाधिपः ॥ त्वदाज्ञाबलमाश्रित्यलोकपालत्वमागतः ॥ २९ ॥ वायुर्गंधवहः
सर्वभूतप्रणनकारणं ॥ जातस्तवनिदेशेनलोकपालोजगद्गुरुः ॥ ३० ॥ कुबेरःकिन्नरादीनांयक्षाणांजीवना
शयः ॥ त्वदाज्ञांतर्गतःसर्वलोकपेषुचमान्यभूः ॥ ३१ ॥

॥ ६२ ॥

॥ ६३ ॥

॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

॥ ४ ॥

॥३२॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५॥ ३६॥३७ ॥ ३८ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलकेष्टमस्कंधेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ त्रयोविंशतिपद्यै

ईशानः सर्वरुद्राणामीश्वरांतकरः प्रभुः ॥ जातो लोके शवंद्योसौ सर्वदेवाधिपालकः ॥ ३२ ॥ नमस्तुभ्यं भगव
ते जगदीशाय कुर्महे ॥ यस्यांशभागाः सर्वे हि जाता देवाः सहस्रशः ॥ ३३ ॥ नारायण उवाच ॥ एवंस्तुतो विश्व
सृजा भगवानादिपुरुषः ॥ लीलावलोकमात्रेणाप्यनुग्रहमवासृजत् ॥ ३४ ॥ तत्रैवाभ्यागतं दैत्यं हिरण्याक्षं
महासुरं ॥ रुंधानमध्वनो भीमं गदया ताडयद्भरिः ॥ ३५ ॥ तद्रक्तपंकदिग्धांगो भगवानादिपुरुषः ॥ उद्धृत्य ध
रणीं देवो दंष्ट्रया लीलया सुतां ॥ ३६ ॥ निवेश्य लोकनाथे शोजगाम स्थानमात्मनः ॥ एतद्भगवताश्चित्रधरपु
द्गरणं परं ॥ ३७ ॥ शृणु यादः पुमान्यश्च पठेच्चरितमुत्तमं ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तो वैष्णवीं गतिमाप्नुयात् ॥ ३८ ॥
इति श्रीदेवीभागवते माहापुराणे अष्टमस्कंधे द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ नारायण उवाच ॥ महीं देवः प्रतिष्ठाप्य यथास्थाने
च नारद ॥ वैकुण्ठलोकमगमद्ब्रह्मोवाच स्वमात्मजं ॥ १ ॥ स्वायंभुवमहाबाहो पुत्र ते जस्विनां वरा ॥ स्थाने महीमयेति
ष्टप्रजाः सृजयथोचितं ॥ २ ॥ देशकालविभागेन यज्ञेशं पुरुषं जय ॥ उच्चावचपदार्थैश्च यज्ञसाधनकैर्विभो ॥ ३ ॥
धर्ममाचरशास्त्रोक्तवर्णाश्रमनिबन्धनं ॥ एतेन क्रमयोगेन प्रजावृद्धिर्भविष्यति ॥ ४ ॥ पुत्रानुत्पाद्य गुणतः कीर्त्या
कां त्यात्मरूपिणः ॥ विद्याविनयसंपन्नान्सदाचारवतांवरान् ॥ ५ ॥ कन्याश्च दत्त्वा गुणवद्यशोवद्भ्यः समाहितः ॥
मनःसम्यक् समाधाय प्रधानपुरुषे परे ॥ ६ ॥ भक्तिसाधनयोगेन भगवत्स्मरि चर्ययां ॥ गतिमिच्छां सदा
बन्धां योगिनां गमिता भवान् ॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

स्तुमनोः स्वायंभुवस्य तु ॥ वंशस्य वर्णनं सम्यग्यथा वदनुवर्ण्यते ॥ १ ॥ धरोद्धारानंतरं जातं कृत्यमाह महीं देव इति देवो वराहः स्वमात्मजं स्वयंभूमनुं

॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

वे.भा.अ.

॥ ५ ॥

॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ आकूत्यामितिपूर्वेणान्वयः ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ यज्ञश्चेति दृष्टेः पुत्रो यज्ञो नामपुरुषः

इत्याश्वास्यमनुपुत्रो यज्ञो निः प्रजापतिः ॥ प्रजासर्गेनियम्यामुस्वधामप्रत्यपद्यत ॥ ८ ॥ प्रजाःसृजतपुत्रेति
पितुराज्ञां समादधत् ॥ स्वायंभुवः प्रजासर्गमकरोत्पृथिवीपतिः ॥ ९ ॥ प्रियव्रतोत्तानपदौमनुपुत्रौमहौजसौ
॥ कन्यास्तिस्रः प्रसूताश्च तासां नामानि मेशृणु ॥ १० ॥ आकूतिः प्रथमा कन्या द्वितीया देवहूतिका ॥ तृतीया
च प्रसूतिर्हि विख्याता लोकपावनी ॥ ११ ॥ आकूतिं रुचये प्रादात् कर्दमाय च कन्यामम् ॥ दक्षायादात् प्रसूतिं च
यासां लोक इमाः प्रजाः ॥ १२ ॥ रुचेः प्रजज्ञे भगवान्यज्ञो नामादिपुरुषः ॥ आकूत्यां देवहूत्यां च कपिलोसौ
च कर्दमात् ॥ १३ ॥ सांख्याचार्यः सर्वलोके विख्यातः कपिलो विभुः ॥ दक्षात् प्रसूत्यां कन्याश्च बहुशोज्जिरे प्रजाः
॥ १४ ॥ यासां संतानं संभूता देवतिर्यङ्नरादयः ॥ प्रसूता लोकविख्याताः सर्वे सर्गप्रवर्तकाः ॥ १५ ॥ यज्ञश्च
भगवान् स्वायंभुवमन्वन्तरे विभुः ॥ मनुं रक्षरक्षोभ्यो यामैर्देवगणैर्वृतः ॥ १६ ॥ कपिलोऽपि महायोगी भगवान्
स्वाश्रमे स्थितः ॥ देवहूत्यै परं ज्ञानं सर्वा विद्या निवर्तकं ॥ १७ ॥ सविशेषं ध्यानयोगमध्यात्मं ज्ञाननिश्चयं ॥
कापिलं शास्त्रमाख्यातं सर्वा ज्ञानविनाशनं ॥ १८ ॥ उपदिश्य महायोगी स ययौ पुलहाश्रमं ॥ अद्यापि वर्तते दे
वोसां ख्याचार्यो महाशयः ॥ १९ ॥ यन्नाम स्मरणेनापि सांख्ययोगश्च सिध्यति ॥ तं वंदे कपिलं योगाचार्यं सर्वव
रप्रदं ॥ २० ॥ एवमुक्तं मनोः कन्यावंशवर्णनमुत्तमं ॥ पठतां शृण्वतां चापि सर्वपापविनाशनं ॥ २१ ॥ अतः प
रं प्रवक्ष्यामि मनुपुत्रान्वयं शुभं ॥ यदां कर्णनमात्रेण परंपदमवाप्नुयात् ॥ २२ ॥

॥ ६१ ॥

कर्त्तिमन्ति तस्मै रक्षोभिस्तद्भुतं स्वायंभुवं मनुं यामैस्तस्मात् कैर्देवगणैर्वृतः संस्तेभ्योरक्षोभ्यो मनुं रक्षेतिकथापुराणां चरेत्सिद्धा ॥ १६ ॥ १७ ॥

॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥

॥ ७१ ॥

॥ ७२ ॥

॥ ७३ ॥

॥ ७४ ॥

टी.अ.
३

॥ ५ ॥

॥ २२ ॥ इति श्रीदेवीभागवतीतलके ऽष्टमस्कंधे तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ अष्टाविंशतिभिः श्लोकैः प्रियव्रतकथानकं । यत्र द्वीपोद्वयः प्रोक्तस्त
देतत्संस्पृगीयते ॥ १ ॥ मनुकन्यावंशकथनोत्तरं मनोः पुत्राणां वंशमाह मनोः स्वायंभुवस्येति ॥ १ ॥ विश्वकर्मणः प्रजापतेरित्यन्वयः ॥ २ ॥
दशपुत्रान्गुणैरन्वितान् कवीयसीदशपुत्रेभ्यः कनिष्ठामूर्जस्वर्तीनाम् ॥ ३ ॥ रुक्मशुक्रो हिरण्यरेतो नामकः ॥ ४ ॥ बन्हेर्नामानियेषां

द्वीपवर्षसमुद्रादिव्यवस्थायत्सुतैः कृता ॥ व्यवहारप्रासिद्धयर्थं सर्वभूतसुखाप्तये ॥ २३ ॥ इति श्रीदेवीभागवते म
हपुराणे ऽष्टमस्कंधे भुवनकोशे तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ नारायण उवाच ॥ मनोः स्वायंभुवस्यासीज्येष्ठः पुत्रः
प्रियव्रतः ॥ पितुः सेवापरो नित्यं सत्यधर्मपरायणः ॥ १ ॥ प्रजापतेर्दुहितरं सुरूपां विश्वकर्मणः ॥ बर्हिष्मतिं
चोपथे मे समानां शीलकर्मभिः ॥ २ ॥ तस्यां पुत्रान्दशगुणैरन्वितान् भावितात्मनः ॥ जनयामास कन्यां चोर्जस्व
ती च यवीयसीं ॥ ३ ॥ आग्नीध्रश्चेध्मजिह्वश्च यज्ञबाहुस्तृतीयकः ॥ महावीरश्चतुर्थस्तु पंचमो रुक्मशुक्रकः ॥ ४ ॥
धृतपृष्ठश्च सवनो मेधातिथिरथाष्टमः ॥ वीतिहोत्रः कविश्चेति दशैते बन्हेर्नामकाः ॥ ५ ॥ एतेषां दशपुत्राणां त्रयो
प्यासन् विरागिणः ॥ कविश्च सवनश्चैव महावीर इति त्रयः ॥ ६ ॥ आत्मविद्यापरिष्णाताः सर्वे ते ह्यूर्ध्वरेतसः ॥
आश्रमे परहंसाख्ये निस्पृहा ह्यभवन्मुदा ॥ ७ ॥ अपरस्यां च जायायां त्रयः पुत्राश्च जज्ञिरे ॥ उत्तमस्तामसश्चै
व रैवतश्चेति विश्रुताः ॥ ८ ॥ मन्वंतराधिपतय एते पुत्रा महीजसः ॥ प्रियव्रतः सराजेंद्रो बुभुजे जगतीमिमां ॥ ९ ॥
एकादशार्बुदाब्दानामव्याहतबलेंद्रियः ॥ यदा सूर्यः पृथित्याश्च विभागे प्रथमे तपत् ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥

नत्वेत एव न्हय इति भमित्वं ॥ ५ ॥ ६ ॥ आत्मविद्योति ते आत्मविद्यायामर्भकभावादारभ्य कृतपरिचयाः पारमहंस्यमेवाश्रममभवन् ॥ ७ ॥

॥ ८ ॥ ९ ॥ दशकोटिभिरेकमर्बुदमेतादृशानि वर्णाणामेकादशानुर्हानि जगती बुभुजे इत्यन्वयः विभागे प्रथमे इति यदैकस्मिन् भागे ऽतपत्
तदा द्वितीयां भागं तृतीयां च आसीदित्यर्थः ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥

दे.भा.अ.

॥ ६ ॥

॥ ११ ॥ योगनलेमतप्रोक्तले ॥ १२ ॥ नमस्कृत्यः प्रदक्षिणाचकार एवंकुवाणं प्रियव्रतमागत्यचतुराननस्तवाधिकारोयं
मस्तीति निजरायामासेति पुण्यं तरे प्रसिद्धं ॥ १३ ॥ रथनेमयः सप्तकृत्वः प्रदक्षिणासमवेयस्मिन् भूप्रदेशे रथनेमयः पतितास्तत्र सप्तमा
मतां वातस्ते सप्तसमुद्राश्च्युतं ॥ १४ ॥ प्रदेशा इति द्वयोर्द्वयोः समुद्रयोर्मध्ये भूप्रदेशास्तेषु संख्यामध्यस्थ भूप्रदेशश्च सप्तम इति सप्तद्वीपा इ

टी.अ

४

भागे द्वितीये तत्रासीदंधकारोदयः किल ॥ एवं व्यतिकरं राजा विलोक्य मनसा विरं ॥ ११ ॥ तत्रास्ति मयि भू
म्यांचतमः प्रादुर्भवेत्कथं ॥ एवं निवारयिष्यामि भूमौ योगबलेन च ॥ १२ ॥ एवं व्यवसितो राजा पुत्रः स्वायं भुव
स्यसः ॥ रथेनादित्यवर्णेन सप्तकृत्वः प्रकाशयन् ॥ १३ ॥ तस्यापि गच्छतो राज्ञो भूमौ यद्रथनेमयः ॥ पतितास्ते
समुद्राख्यां भोजिरे लोकहेतवे ॥ १४ ॥ जाताः प्रदेशास्ते सप्तद्वीपा भूमौ विभागशः ॥ रथनेमि समुत्थास्ते परि
खाः सप्तसिंधवः ॥ १५ ॥ यत आसंस्ततः सप्तभुवो द्वीपाहिते स्मृताः ॥ जंबुद्वीपः कृक्षद्वीपः शाल्मलीद्वीपः संज्ञकः
॥ १६ ॥ कुशद्वीपः क्रौंचद्वीपः शाकद्वीपश्च पुष्करः ॥ तेषांच परिमाणं तु द्विगुणं चोत्तरोत्तरं ॥ १७ ॥ समंततश्चो
पकृतं बहिर्भागक्रमेण च ॥ क्षारोदक्षुरसोदौ च सुरोदश्च घृतोदकः ॥ १८ ॥ क्षीरोदोदधि मंडोदः शुद्धोदश्चेति ते
स्मृताः ॥ सप्तैते प्रति विख्याताः पृथिव्यां सिंधवस्तदा ॥ १९ ॥ प्रथमो जंबुद्वीपाख्यो यः क्षारोदेन वेष्टितः ॥
तत्पतिविदधे राजा पुत्रमाग्नीध्रसंज्ञकं ॥ २० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥

स्वयंः तदेव विशदयति रथनेमीति ॥ १५ ॥ यतः सप्तसिंधव आसंस्ततः द्वयोः समुद्रयोर्मध्ये याः षट्भुवो मध्यस्था चैका भूस्ते सप्तद्वीपाः स्मृ
ता इत्यर्थः ॥ १६ ॥ द्विगुणं चोत्तरोत्तरं पूर्वस्य यदि स्तारमानं उत्तरस्तत् द्विगुणेन मानेनेत्येवं सिंधुभ्यो बहिः समंततः सप्तद्वीपाः पूर्वोक्तभागक्रमे
ण संज्ञिताः ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥

॥ ६ ॥

इध्मादिजिह्वकः इध्माजिह्वः ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥

॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके ऽष्टस्कंधे चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ अर्धाधिकेऽध्यायः ॥ ४ ॥

इत्यस्याविष्ठाधेयमाह भुवर्णते ॥ १ ॥ अधुना भुवनकोशविस्तारमाह देवर्षे इति अत्रापिनारदस्य भुवनकोशविस्तारविषयकः प्रश्नोऽमुषिवः अ

लक्षद्वीपे द्वितीये स्मिन् द्वीपे क्षुरससंलुते ॥ जातस्तदधिपः प्रैयव्रत इध्मादिजिह्वकः ॥ २१ ॥ शाल्मली द्वीप एत
स्मिन्सुरोदधिपरिभ्रुते ॥ यज्ञवाहुंतदधिपं करोति स्म प्रियव्रतः ॥ २२ ॥ कुशद्वीपेऽतिरम्ये च घृतोदेनोपवेष्टिते
॥ हिरण्यरेताराजाभूत् प्रियव्रततनूजनिः ॥ २३ ॥ क्रौंचद्वीपे पंचमेतुक्षीरोदपरिसंलुते ॥ प्रैयव्रतो घृतपृष्ठः प
तिरासीन्महाबलः ॥ २४ ॥ शाकद्वीपे चास्तरे दधिमंडोदसंकुले ॥ मेधातिथिरभूद्राजा प्रियव्रतमुतोवरः ॥ २५ ॥
पुष्करद्वीपके शुद्धोदकसिंधुसमाकुले ॥ वीतिहोत्रे बभूव सौराजा जनकसंमतः ॥ २६ ॥ कन्यामूर्जस्वती
नाम्नीददावुशनसो विभुः ॥ आसीत्तस्यां देवयानी कन्या काव्यस्य विश्रुता ॥ २७ ॥ एवं विभज्य पुत्रेभ्यः सप्त
द्वीपान् प्रियव्रतः ॥ विवेकवशो भूत्वा योगमार्गाश्रितो भवत् ॥ २८ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे ऽष्टम
स्कंधे भुवनकोशो नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ १ ॥ श्रीनारायण उवाच ॥ देवर्षे शृणु विस्तारं द्वीपवर्षा विभेदतः ॥ भूमंड
लस्य सर्वस्य यथा देवप्रकल्पितं ॥ १ ॥ समासात्संप्रवक्ष्यामि नालं विस्तरतः क्वचित् ॥ जंबुद्वीपः प्रथमतः प्रमा
णलक्षयोजनः ॥ २ ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥

इत्युक्तं भुवनकोशं प्रदानस्यासंगत्यापत्तेः ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके ऽष्टस्कंधे चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ अर्धाधिकेऽध्यायः ॥ ४ ॥
इत्युक्तं भुवनकोशं प्रदानस्यासंगत्यापत्तेः ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके ऽष्टस्कंधे चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ अर्धाधिकेऽध्यायः ॥ ४ ॥
इत्युक्तं भुवनकोशं प्रदानस्यासंगत्यापत्तेः ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके ऽष्टस्कंधे चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ अर्धाधिकेऽध्यायः ॥ ४ ॥

दे.भा.अ.

॥७॥

नववर्षाणीति तदयं सन्निवेशप्रकारः पूर्वापरायतदक्षिणोत्तरमध्यसूत्रद्वयपातोत्तरं समं वर्तुलं कृत्वा पूर्वापररेखाया उत्तरभागे पूर्वापरायतं समांशं रेखात्रयंदद्यात् एवं दक्षिणभागेऽपि समांशं रेखात्रयं दद्यात् तथा दक्षिणोत्तररेखाया उत्तरभागे समांशभागेनैकां रेखां दक्षिणभागेऽपि समांशं रेखां दद्यात् पूर्वापरायतं मध्यस्थं ॥ ६ ॥ अष्टमं मध्यं सूत्रं च मानयेदेवं कृतेन वकोष्ठानि संपद्यंते तानि नववर्षाणि याश्चाष्टौ रेखाः पूर्वापरायताः षट् दक्षिणोत्तरायतं च दूरं खंता अष्टौ मर्यादापर्वताः तानि नववर्षाणि आयनानि ॥ ७ ॥ इत्युक्तं योजनैः परिसंख्यानिज्ञेयानीत्यर्थः एकैकवर्षस्य नवसहस्रयोजनो विस्तार इत्यर्थः एतच्च भद्राश्वके तु मालव्यातिरेकेण द्रष्टव्यं तयोश्च तुल्ये शब्देऽन्वयसहस्रायामत्वात् मध्यस्थगिरिनाह गिरिभिरिति विशालो वर्तुलाकारो यथाब्जस्य च कर्णिका ॥ नववर्षाण्यस्मिंश्च नवसाहस्रयोजनैः ॥ ३ ॥ आपानैः च स्तंभ्यानि गिरिभिः परितः श्रितैः ॥ अष्टभिर्दीर्घरूपैश्च सुविभक्तानि सर्वतः ॥ ४ ॥ धनुर्वत्संस्थिते ज्ञेये द्वे वर्षे दक्षिणोत्तरे ॥ दीर्घाणि तत्र चत्वारि चतुरस्रमिलावृतं ॥ ५ ॥ इलावृतं मध्यवर्षयन्नाभ्यां सुप्रतिष्ठितः ॥ सौवर्णो गिरिराजो यं लक्षयोजनमुच्छ्रितः ॥ ६ ॥ कर्णिकारूप एवायं भूगोलकमलस्य च ॥ मूर्ध्नि द्वात्रिंशत्सहस्रयोजनैर्विततस्त्वय ॥ ७ ॥ मूले षोडशसाहस्रस्तावतांतर्गतः क्षितौ ॥ इलावृतस्योत्तरतो नीलश्वेतश्च शृंगवान् ॥ ८ ॥ त्रयो वै गिरयः प्रोक्ता मर्यादावधयस्त्रिषु ॥ रम्यकास्येतथा वर्षे द्वितीये च हिरण्मये ॥ ९ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥

दीर्घरूपैः समुद्रपर्यंतं गामिभिरष्टमर्यादापर्वतैस्तानि नववर्षाणि प्रविभक्तानीत्यर्थः ॥ ३ ॥ ४ ॥ जंबुद्वीपस्य संनिवेशं स्वयमेवाह धनुर्वत्संस्थिते इति दक्षिणोत्तरे अंतिमे द्वे वर्षे चत्वारि चतुरस्रे लावृतधनुराकारवर्षद्वयमध्यस्थानीत्यर्थः चतुरस्रमिति यदि लावृतं तच्चतुरस्रं भवतीत्यर्थः ॥ ५ ॥ इलावृतवर्षमध्ये मेरुसंस्थामाह इलावृतमिति नाभ्यां मध्ये ॥ ६ ॥ भूगोलरूपकमलस्यायं कर्णिकास्थानो मेरुरित्यर्थः मूर्ध्नि मस्त्वके विततो विस्तीर्णः ॥ ७ ॥ मूलेऽर्धभागे षोडशसहस्रः षोडशसहस्रयोजनपरिमितविस्तृतिरित्यर्थः तावता षोडशसहस्रयोजनमानेन चतुर्दशीतियोजनसहस्रमानेन बहिर्दृश्यते एवं लक्षयोजनोच्चाहः मर्यादापर्वतनामान्याह इलावृतस्येति उत्तरतः उत्तरस्यां दिशि ॥ ८ ॥ मर्यादावधयः त्रिषु वक्ष्यमाणवर्षेषु प्रोक्ता इत्यर्थः तेषां त्रयाणामान्याह रम्यकोति ॥ ९ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥

टी.अ.

५

॥७॥

प्रागायताः पूर्वतोदीर्घाः उभयतोमूलेऽग्रभागे च क्षारोद एवावधिषांतेतथोक्ताः ॥ १० ॥ द्विसहस्रपृथुतराः द्विसहस्रयोजनविस्तीर्णाः
एकैकशः एकस्मादेकस्मात्पूर्वात्पूर्वांदुत्तरस्यांदिशिदशांशादधि कांशस्तैर्दैर्घ्येणैव हसंति न तूच्चत्वे पृथुत्वे वा तदुक्तं विष्णुपुराणे
लक्षप्रमाणौ द्वौ मध्ये दशहीनास्तथापरे इति एतदपि स्थूलदृष्ट्यैवोक्तं तयोरपि यथावन्मध्यत्वाभावेन लक्षप्रमाणत्वाभावात् ॥ ११ ॥ दक्षिणतो दक्षि
णस्यांदिशि ॥ १२ ॥ प्राग्विस्तीर्णाः प्रागायताः अयुतोत्सेधभाजः अयुतयोजनं उत्सेध उल्लासोयेषां अयंचोत्सेधो नीलादिपर्वतानामपि

कुरुवर्षे तृतीये तु मर्यादां व्यंजयंतिते ॥ प्रागायता उभयतः क्षारोदावधयस्तथा ॥ १० ॥ द्विसहस्रपृथुतरास्तथा
एकैकशः क्रमात् ॥ पूर्वात्पूर्वाच्चोत्तरस्यां दशांशादधिकांशतः ॥ ११ ॥ दैर्घ्येणैव हसंती मे नानानदनदीयुताः ॥
इलावृता दक्षिणतो निषधो हेमकूटकः ॥ १२ ॥ हिमालयश्चेति त्रयः प्राग्विस्तीर्णाः सुशोभनाः ॥ अयुतोत्सेधभा
जस्ते योजनैः परिकीर्तिताः ॥ १३ ॥ हरिवर्षे किंपुरुषं भारतं च यथा तथं ॥ विभागात्कथयंत्येते मर्यादां गिरयस्त्र
यः ॥ १४ ॥ इलावृता त्पश्चिमतो माल्यवान्नाम पर्वतः ॥ पूर्वेण च ततः श्रीमान् गंधमादन पर्वतः ॥ १५ ॥ आनी
लनिषधं त्वेतौ चायतौ द्विसहस्रतः ॥ योजनैः पृथुतां यातौ मर्यादाकारकौ गिरी ॥ १६ ॥ ॥ ६२ ॥

बोध्यः नीलादिपृथक् चैषामपि द्रष्टव्यं ॥ १३ ॥ हरिवर्षादीनां त्रयः ॥ १४ ॥ हरिवर्षमिति, एते त्रयो गिरयो वर्षत्रय
स्य मर्यादा कथयन्ति बोधयन्तीत्यर्थः ॥ १४ ॥ पश्चिमः तत्पश्चिमभागे माल्यवान् पर्वतः पूर्वेण पूर्वभागे गंधमादनः ॥ १५ ॥ अनयोर्दैर्घ्यमर्यादा
माह आनीलनिषधं त्वेताविति उभावपि नीलनिषधपर्यंतं दीर्घावित्यर्थः अनयोर्विस्तारमाह द्विसहस्रतः द्विसहस्रयोजनैः पृथुतां विस्तार
मां प्रकथयित्वा ॥ १६ ॥ तावेकैरेतुमालभद्राभ्यवर्षयोर्मर्यादाकारकौ ॥ १६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

टी.अ.
५

ननेसादिपुतापररेखायामिलावृतवेधितोमेरुर्मथेततःपूर्वापरतोमिरिद्वयं वर्धद्वयं च नातः परमस्ति दक्षिणोत्तरत्वेरेखायांतुर्विकल्पितवेधितोमथे
मेरुसभयतस्त्रीणित्रीणिर्वाणिगिरिस्यध्रुवोत्तपारिमाणाः संतितत्कथं सर्वतो लक्षप्रमाणत्वं नंबुद्धिपस्येति वेदमोच्यते मेरोः षोडशसहस्राणि संवतः
रिपतत्वादिलवृतस्याष्टदशान्येषां वर्षाणां चतुःपंचाहस्रिणीं षण्णां द्वादशेत्येवं दक्षिणोत्तररेखायां तावत्लक्षं पूर्वापररेखायामपि सुमेरोरिलावृत
स्य चतुर्दशद्विर्गोश्चत्वारिंशोपाणिद्वयं अष्टाण्युवापरवर्षयोर्द्व्येन्द्रष्टकाः ॥ १७ ॥ अथ नपूर्वापरविरोध इति श्रीधरस्वामिनः मेरोरवष्टं भागिरी
नाह मंदरश्चेति ॥ १७ ॥ मेरोः पादा इत्यर्थः योजनायुतेति अयुतयोजनेन सहस्रायामेकापुंस्त्वस्तीणमूधामरारवष्टमत्वा

केतुमालास्यभद्राश्ववर्षयोःप्रथितौचतौ ॥ मंदरश्चतथामेरुर्मंदरश्चसुपार्श्वकः ॥ १७ ॥ कुमुदश्चेतिविरूपा
तागिरयोमेरुपादकाः ॥ योजनायुतविस्तारोन्नाहामेरोश्चतुर्दिशं ॥ १८ ॥ अवष्टंभकरास्तेतुसर्वतोभिविरा
जिताः ॥ एतेषुगिरिषुप्राप्ताःपादपाश्वतजंबुनी ॥ १९ ॥ कदंबन्यग्रोधइतिचत्वारःपर्वतस्थिताः ॥ केतवोगि
रिराजेषुएकादशशतोच्छ्रयाः ॥ २० ॥ तावद्विष्टपविस्ताराःशतास्यपरिणाहिनः ॥ चत्वारश्चहृदास्तेषुपयोम
ध्विक्षुसज्जलाः ॥ २१ ॥ यदुपस्पर्शिनोदेवायोगैश्वर्याणिबिंदते ॥ देवोद्यानानिचत्वारिभवंतिललनासुखाः ॥ २२ ॥

देतेवष्टंभकाइत्युच्यतेइत्यर्थः ॥ १८ ॥ पूर्वपश्चिमौगिरीदक्षिणोत्तराविस्तारौदक्षिणोत्तरौचपूर्वापरविस्तारौद्रष्टव्यौ सर्वतोदशयोजनसहस्रां
र्गिकारोत्तिलावृतलोपात्पूर्वेणोलावृतमुपप्लावयतीत्यादिविरोधः स्यात् ॥ १९ ॥ गिरिराजेषुचतुर्वेतेपादपाः केतवो ध्वजरूपा इत्यर्थः ए
कादशशतोच्छ्रयाः एकादशशतयोजनोन्नताः ॥ २० ॥ तावत्प्रमाणाविटंपविस्तारायेषांशताख्यपरिणाहिनः शतयोजनपरिणाहोवि
स्तारोयेषां इदमुत्तरचन्नेति तेष्वेकपर्वतेषुहृदचतुष्टयमाह पयोमध्विति पयोहृदोमधुहृदइधुरसहृदः सञ्जलः मधुरस्रजलहृदइत्यर्थः ॥ २१ ॥
तनुपर्वतयोः पर्वतयोः तेनेत्यवर्ततेषुदेवोद्यानान्याह देवोद्यानानीति ललग्नसुखाः पुंस्त्वमार्घ्यं कस्मिन्सुखादीष्वित्यर्थः ॥ २२ ॥

11211

॥२३॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ सुरसेनशोभनरसेनारुणोदसमानवर्णेनारुणोदानामनदीप्रादुर्भूतेत्यर्थः ॥ २७ ॥ तत्रत्याः सर्वदेवाः
सललनास्तत्पर्वतस्थितां श्रीभगवतीमरुणाभिधांसर्वभावेन सर्वदोषासंयतीत्याह अरुणाख्याति ॥ २८ ॥ कल्मषघ्नीचासावभयप्रदाचेतिकर्म
धारयः ॥ २९ ॥ यैर्नामभिः पूजयंतितानिनामानिप्राह आद्यात्रद्वारुणिणी मायातद्विशिष्टा ईश्वरंमालतेशोभयतितच्छ्रीला ॥ ३० ॥

नंदनचैत्ररथकंवैभ्राजंसर्वभद्रकं ॥ येषुस्थित्वामरगणाललनायूसंयुताः ॥ २३ ॥ उपदेवगणैर्गीतमहिमानो
महाशयाः ॥ विहरंतिस्वतंत्रास्तेयथाकामंयथासुखं ॥ २४ ॥ मंदरोत्संगसंस्थस्यदेवचूतस्यमस्तकात् ॥ ए
कादशशतोच्छ्रायात्फलान्यमृतभांजिच ॥ २५ ॥ गिरिकूटप्रमाणानिसुस्वादूनिमृदूनिच ॥ तेषांविशीर्यमा
णानांफलानांसुरसेनच ॥ २६ ॥ अरुणोदसवर्णेनअरुणोदाप्रवर्तते ॥ नदीरम्यजलादेवदैत्यराजप्रपूजिता
॥ २७ ॥ अरुणाख्यामहाराजवर्ततेपापहारिणी ॥ पूजयंतिचतां देवींसर्वकामफलप्रदां ॥ २८ ॥ नानोपहा
रबलिभिः कल्मषघ्न्यभयप्रदां ॥ तस्याः कृपावलोकनेनक्षेमरोग्यंत्रजंतिते ॥ २९ ॥ आद्यामायातुलानंतापुष्टि
रीश्वरमालिनी ॥ दुष्टनाशकरीकांतिदायिनीतिस्मृताभुवि ॥ ३० ॥ अस्याः पूजाप्रभावेणजांबूनदमुदावह
त् ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेअष्टमस्कंधेभुवनलोकवर्णनं नामपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ श्रीनारायणउवाच
॥ अरुणोदानदीयातुमयाप्रोक्ताचनारद ॥ मंदरान्निपतंतीसापूर्वेणैलावृतं प्रनेत्र ॥ १ ॥ नोषणाद्भवान्या
श्वानुचरीणांस्त्रियामपि ॥ यक्षगंधर्वपत्नीनांदेहगंधवहो निलः ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥

एतस्याः पूजाप्रभावेणजांबूनदंसुवर्णमुदावहन्निरगतमित्यर्थः ॥ इतिश्रीदेवीभा ० ति ० अष्टमस्कंधेपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ द्वात्रिंशद्विमहापद्यैरितरद्रुम
वर्णनं ॥ देवीनांवर्णनंसर्वजनोपास्तिश्ववर्ष्यते ॥ १ ॥ अरुणोदाअरुणोयआम्रफलरसः स एवोदकंयस्याः साअरुणोदापूर्वेणैलावृतमिलावृतस्वपूर्वभागे
पूजेत्युच्छेदित्यर्थः ॥ २ ॥ तस्मिन्नैलावृतपूर्वभागेपरमेश्वरेणक्रीडत्याभवान्याअनुचरीणांयज्जोषणाद्यस्यरसस्यसेवनादित्यर्थः ॥ ३ ॥

दे.भाअ

॥ ९ ॥

एवमेव जंबूवृक्षस्य फलानि पतन्तीत्याह जंबूवृक्षफलेति ॥ ३ ॥ अनस्थानामातिसूक्ष्मजिह्वा मेवाख्यमंदरान्मेरुमंदरपर्वतादित्यर्थः
॥ ४ ॥ इलावृतस्य दक्षिणभागे मतेत्यर्थः तत्रत्याः सर्वे मरास्तत्र स्थिता जंबूफलादनंभक्षणं कर्त्तव्यं तच्छीलां जंबूनादिनीनाम्नी देवीभगवतीमुपसंते
वासयत्यभितोभूमिदशयोजनसंख्यया ॥ एवं जंबूफलानां चतुंगदेशानि पातनात् ॥ ३ ॥ विशीर्यतामनस्थीनां
कुंजरांगप्रमाणिनां ॥ रसेन च नदीजंबूनाम्नीमिवाख्यमंदरा ॥ पतन्तीभूमिभागे च दक्षिणे लावृतंगता ॥
देवीजंबूफलास्वादतुष्टजंबूवादिनीस्मृता ॥ ५ ॥ तत्रत्यानां च लोकोन्मर्शकः ॥ १७ ॥ पूजनीयपदामा
न्यासर्वभूतदयाकरी ॥ ६ ॥ पावनीपापिनारोगनाशिनी स्मरतामपि ॥ कीर्तिता विघ्नसंहर्त्रा माननीया दिवौकसां
॥ ७ ॥ कोकिलाक्षी कामकलाकरुणा कामपूजिता ॥ कठोरविग्रहा धन्यानां किमान्यागभस्तिनी ॥ ८ ॥ एभिर्नामपदैः
कामं जपनीया सदानृणां ॥ जंबूनदीरोधसोर्यामृत्तिकार्तीरवर्तिनी ॥ ९ ॥ जंबूरसेनानुविद्यमाना वाय्वर्कयोग
तः ॥ विद्यधरामरस्त्रीणां भूषणं विविधं महत् ॥ १० ॥ जंबूनदसुवर्णचप्रोक्तं देवविनिर्मितं ॥ यत्सुवर्णचविबुधा
योषिद्भिः कामुकाः सदा ॥ ११ ॥ मुकुटंकटिसूत्रं च केयूरादीन् प्रकुर्वते ॥ महाकदंबः संप्रोक्तः सुपाश्वर्गिरि संस्थितः
॥ १२ ॥ तस्य कोटरदेशेभ्यः पंचधाराश्च याः स्मृताः सुपाश्वर्गिरिर्मूर्धो ह पतन्त्येता भुवंगताः ॥ १३ ॥ मधुधारा पंचता
स्तुपश्चिमे लावृतं जुताः ॥ याश्चोपभुज्यमानानां देवानां मुखगंधभृता ॥ १४ ॥ वायुः समंततः गच्छन् शतयोजनवास
नः ॥ धारेश्वरी महादेवी भक्तानां कार्यकारिणी ॥ १५ ॥ देव्या सहोत्साहा कालरूपामहानना ॥ वसते कर्मफलदा
कांतारग्रहणे स्वरी ॥ १६ ॥ करालदेहा कालांगी कामकोटिप्रवर्तिनी ॥ त्वेतैर्नामभिः पूज्या देवी सर्वसुरेश्वरी १७ ॥

इत्याह देवीजंबूफलेति ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ नाकिमान्यानां किनो देवास्तोषाम्ना पूज्याः ॥ ८ ॥ रोधसोरुभयतटयोः ॥ ९ ॥ वाय्वर्क
योगतो वाय्वर्कयोगजन्यपश्चिपाकेन सुवर्णभूता विविधं भूषणं सृजतीत्यर्थः ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ पश्चिमे लावृतं छांदसः प्रयोगः
इत्याह तस्य पश्चिमे लावृतं इत्यर्थः ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥

टी.अ.

५

॥ ९ ॥

कुमुदः कुमुदपर्वतः तत्स्कंधेभ्यः पंचनदाः कुमुदपर्वतमूर्धन्योत्पत्तीत्यर्थः ॥ १८ ॥ आभरणयुक्ताः पंचनदा इत्यर्थः ॥ १९ ॥ इकावृ
तस्योत्तरभागेति गच्छन्तीत्यर्थः तत्रत्यामैरूपास्यामीनाक्षीभगवतीतत्रवर्ते इति ह मीनाक्षीति ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥

एवंकुमुदरूढो योनाम्नाशतबलोवटः ॥ तत्स्कंधेभ्यो धोः स्तुक्श्चनदा कुमुदमूर्धतः ॥ १८ ॥ पयोदधिमधुघृत
गुडान्नाद्यंबरादिभिः ॥ शय्यासनाद्याभरणैः सर्वेकामदुघाश्चते ॥ १९ ॥ उत्तरेणैलावृतं तेषावयंतिसमंततः ॥
मीनाक्षीतत्तले देवी देवासुरनिषेविता ॥ २० ॥ निलांबरारौ वीज्जीलालकयुता चसा ॥ नाकिनां देवसंधानां
फलदा वरदा चसा ॥ २१ ॥ अतिमान्यातिपूज्या च मत्तमा तं गीता विनी ॥ मदनोन्मादिनी मानप्रियामानप्रियां
तरा ॥ २२ ॥ मारवेगधरामारूपूजिता मारमादिनी ॥ सयुक्ता आढ्या शिखिवाहनगर्भभूः ॥ २३ ॥ एभिर्ना
मपदैर्वद्या देवीसामीनलोचना ॥ जपतां स्मरतां मानदा त्रीचैश्चरमिनी ॥ २४ ॥ तेषां नदानां पानीयपानानु
गतचेतसां ॥ प्रजानां न कदाचित्स्याद्वली पलितलक्षणं ॥ २५ ॥ क्लृप्तस्वेदादिदौर्गन्ध्यं जरामयभृतिर्ध्रुमः ॥
शीतोष्णवातवैवर्ण्यं मुखोपप्लवसंचयाः ॥ २६ ॥ नापदश्चैव जायंते यौवज्जीवं सुखं भवेत् ॥ नैरंतर्येण तत्स्या
द्वै सुखं निरातिशायकं ॥ २७ ॥ तत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि संनिवेशं चतद्विरेः ॥ सुवर्णमयान्नो वै सुमेरोः पर्वताः पृथक्
॥ २८ ॥ गिरयो विंशतिपराः कर्णिकाया इवेह ते ॥ केसरीभूय सर्वेऽपि मेरोर्मूलविभागके ॥ २९ ॥ परितश्चोपकृ
त्तास्ते तेषां नामानि शृण्वतः ॥ कुरंगः कुरगश्चैव कुशुंभो थोविकं कतः ॥ ३० ॥ त्रिकटुः शिशिरश्चैव पतंगो रुचक
स्तथा ॥ निषधश्च शितीवासः कपिलः शंख एव च ॥ ३१ ॥ वैडूर्यश्चास्रधश्चैव हंसा ॥ ३२ ॥ नागः कालंज
रश्चैव नारदश्चेति विंशतिः ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

॥ २५ ॥ जरामययोभृतिर्भरणं मुखोपप्लवो मुखरोमः ॥ २६ ॥ २७ ॥

॥ २८ ॥ मूलविभागके मूलदेशे केसरीभूय कमल केसरसदृशाः अल्पपरिमाणविंशतिगिरयः ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

दे.भा.अ.

॥१०॥

इति श्रीदेवीभागवतमहापुराणेऽष्टमस्कंधेऽष्टोऽध्यायः ॥ ६ ॥ सप्ताधिकैश्चित्रिणांमहापौरतः परं ॥ मूलादूर्ध्वमहामेरोर्वर्णनं संभ्यमुच्यते ॥ १ ॥ मेरुं पू
र्वेण मेरोः पूर्वभागे मेरौ गिरिः ॥ दशयोजनैः सहस्रैः सहस्रात्मकैरष्टादशसहस्रवीजमनित्यर्थः ॥ उदक् उदगायतौ सन्नेव द्विसहस्रं पृथुष्वकौ मृषु
तुंगौ भवत इत्यर्थः ॥ पूर्वदिक्षु मेरुमूलाद्यो ज्ञानसहस्रं त्यक्त्वा बन्हेः परिधय इव जठरदेवकूटादयस्तिष्ठन्ति अतोऽष्टादशयोजनसहस्रं परिमाणमत्रोक्तं
वैष्णवादिपुराणेषु परिमाणादिवत्पुनरन्यथा वर्णितं तत्तु कल्पभेदाद्यपेक्षया ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ प्रागायतौ पूर्वदिशि दीर्घौ ॥ ४ ॥ ५ ॥ पंक

टी.अ.

७

इति श्रीदेवीभागवतमहापुराणेऽष्टमस्कंधेऽष्टोऽध्यायः ॥ ६ ॥ श्रीनारायण उवाच ॥ गिरीमेरुं च पूर्वोर्णद्वौ चाष्टा
दशयोजनैः ॥ सहस्रैरायतौ चोदक् द्विसहस्रं पृथुष्वकौ ॥ १ ॥ जठरोवदेकूटश्च तावेतौ गिरिवर्यकौ ॥ मेरोः पश्चिम
तोऽद्वीद्वौ पवमानस्तथा परः ॥ २ ॥ पारिमात्रश्च तौ तावद्विरूपातौ तुंगविस्तरौ ॥ मेरोर्दक्षिणतः स्यात्तौ कैलासकर
वीरकौ ॥ ३ ॥ प्रागायतौ पूर्ववत्तौ महापर्वतराजकौ ॥ एवं चोत्तरतो मेरोस्त्रिशृंगमकरौ गिरी ॥ ४ ॥ एतैश्चाद्रि
वरैरष्टसंख्यैः परिवृतौ गिरिः ॥ सुमेरुः कांचनगिरिः परिभ्राजत्र विर्यथा ॥ ५ ॥ मेरोर्मूर्धनि धातुर्हि पुरीपंकज
जन्मनः ॥ मध्यतश्चोपकृतेयं दशासाहस्रयोजनैः ॥ ६ ॥ समानचतुरस्रां च शतकौं भमर्यापरां ॥ वर्णयन्ति म
हात्मानः परावरविदो बुधाः ॥ ७ ॥ तां पुरीमनु लोकानामष्टानामीशिषां पराः ॥ पुर्यः प्रख्यातसौवर्णरूपास्ता
श्च यथादिशं ॥ ८ ॥ यथारूपं सार्धनेत्रसहस्रप्रमिताः कृताः ॥ मेरोर्नवपुराणि स्युर्मनोवत्यमरावती ॥ ९ ॥

जन्मनश्चतुराननस्य ॥ ६ ॥ ७ ॥ तां पुरीमनु लक्ष्मीकृत्याष्टानां लोकानामीशिषां पराभिन्नाः पुर्यः यथादिशं प्राच्यादिदि
क्षु ॥ ८ ॥ यथारूपं स्युर्दिक्षु लक्ष्यं यथाशरीरवर्णस्तत्समानवर्णाः सार्धनेत्रसहस्रप्रमिताः सार्धाद्द्विसहस्रप्रमाणेन परिच्छिन्नाः तासां न
वपुराणां मेरोर्नवपुराणां ॥ अष्टादिप्रमाणेनामष्टादिप्रमाणैकमित्युक्त्यर्थः ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥

॥१०॥

॥ ११ ॥ गंगासुनिवेशमाह तत्रैवेति मेरोर्मूर्धन्यत्यर्थः यत्तल्लिङ्गस्यबलेयंज्ञेलिङ्गत्रिविक्रममूर्तिर्यस्य ॥ ११ ॥ विष्णोर्गामपादमुप
 गच्छेन्नभिर्भोज्योऽकटहस्तस्योर्ध्वभागस्तेनपतितं यद्वर्धतस्यरंध्यस्यमध्यात्संविशत्यंतः प्रविष्टादिवोमूर्धन्यवततारेयंगंगा ॥ १२ ॥ संविशंती
 संख्यंती ॥ १३ ॥ युगसाहस्रकेनकालेनबहुकालेनेत्यर्थः ॥ १४ ॥ आगत्यस्थितेत्यर्थः कोसौदिवोमूर्धातदाह यत्तद्विष्णुपदमिति

तेजोवतीसंयमनीतथाकृष्णांगनापरा ॥ श्रद्धावतीगंधवतीतथार्चान्यामहोदया ॥ १० ॥ यशोवतीचब्रह्मेन्द्रव
 न्हादीनांयथाक्रमं ॥ तत्रैवयज्ञेलिङ्गस्यविष्णोर्भगवतोविभोः ॥ ११ ॥ वामपादांगुष्ठनखनिर्भिन्नस्यचनार
 दः ॥ अंडोर्ध्वभागरंध्यस्यमध्यात्संविशतीदिवः ॥ १२ ॥ मूर्धन्यवततारेयंगंगासंविशतीविभो ॥ लोकानामखि
 लाजांघपापहारिजलाकुला ॥ १३ ॥ इयंचसाक्षाद्भगवत्पदीलोकेषुविश्रुता ॥ कालेनमहतासातुयुगसाहस्रके
 नतु ॥ १४ ॥ दिवोमूर्ध्यानमागत्यदेवीदेवनदीश्वरी ॥ यत्तद्विष्णुपदं नामस्थानं त्रैलोक्यविश्रुतं ॥ १५ ॥ औत्ता
 नपादिर्यत्रास्तेध्रुवः परमपावनः ॥ भगवत्पादयुगलंपद्मकोशरजोदधत् ॥ १६ ॥ अद्याप्यास्तेसराजर्षिः प
 दवीमचलांश्रितः ॥ तत्रसप्तर्षयस्तस्यप्रभावज्ञानहाशयाः ॥ १७ ॥ प्रदक्षिणंप्रक्रमंतिसर्वलोकहितेप्सवः ॥
 आत्यंतिकीसिद्धिरियंतपतांसिद्धिदायिनी ॥ १८ ॥ आद्रियंतेचशिरसाजटाजूटोषितैनच ॥ ततोविष्णुपदाद्दे
 वीर्नैकसाहस्रकोटिभिः ॥ १९ ॥

॥ ६४ ॥

॥ ६५ ॥

॥ ६६ ॥

॥ १५ ॥ उक्तानपादस्यापत्यं ॥ १६ ॥ गंगाप्रथमतोबहुकालेनध्रुवमंडलमागतेत्यर्थः तत्रध्रुवमंडलेसप्तर्षयः प्रदक्षिणांकुर्वन्ति तस्यगं
 गामाहस्यमभ्यनम्राभ्यात्यंतिकीमोक्षसिद्धिरियंतपतांतपस्विनांभवतिसिद्धिदायिनीतिमत्वाबटाबूटैरुषितेनयुक्तेनशिरसातांगंगामाद्रियंतेत्यं
 तपतंकुर्वन्तित्यर्थः ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥

॥ ७० ॥

॥ ७१ ॥

॥ ७२ ॥

॥ ७३ ॥

दे.भा.अ.

॥११॥

॥२०॥ चंद्रमंडलात्त्रहल्लोकेपतनसमयेचत्वारः प्रवाहा जाता इत्याह चतुर्थेति अभिसृतागतां ॥ २१ ॥ तस्मात्पातितायेचत्वारः प्रवा
हास्तेषांचत्वारिनामान्यभवन्सर्वेप्रवाहाः समुद्रंगता इत्याह सरितांचेति नामान्याह सीताचेति ॥ २२ ॥ सीतानाम्नीगंगात्रहसदना
निर्गतापूर्वप्रोक्तायेक्षमाभूतः पर्वताः केसराभिधनामानः सुमेरुकर्णिकाकेसरभूतास्तेषांशिखरेभ्यः प्रस्रवन्तीगंधमादनपर्वतमूर्धनिपतितेत्यन्वयः

टी.अ.
७

विमानैराकुलेदेवयानेवतरतीचसा ॥ चंद्रमंडलमाह्वयपतंतत्रिहसदानी ॥ २० ॥ चतुर्धाभिद्यमानासाब्रं
हल्लोकेचनारद ॥ चतुर्भिर्नामभिर्देवीचतुर्दशमभिसृता ॥ २१ ॥ सरितांचनदीनांचपतिमेवान्वपद्यतं ॥ सी
तांचालकनंदाचचतुर्भद्रेतिनामभिः ॥ २२ ॥ सीताचब्रह्मसदनाच्छिखरेभ्यःक्षमाभूतां ॥ केसराभिधनाम्नां
चप्रस्रवन्तीचस्वर्नदी ॥ २३ ॥ गंधमादनमूर्ध्निहपतितापापहारिणी ॥ अंतरेणतुभद्राश्ववर्षप्राच्यांसमागता
॥ २४ ॥ क्षारोदधिगतासातुद्युनदीदेवपूजिता ॥ ततोमाल्यवतःशृंगात्द्वितीयापरिनिर्गता ॥ २५ ॥ ततोवे
गवतीभूत्वाकेतुमालंसमागता ॥ चक्षुर्नाम्नीदेवनदीप्रतीच्यांदिश्युपागता ॥ २६ ॥ सरितांपतिमाविश्रसा
गंगादेववादिता ॥ ततस्तृतीयाधारातुनाम्नाख्याताचनारद ॥ २७ ॥ पुण्याचालकनंदवैदक्षिणेनाब्जभूपदा
त् ॥ वनानिगिरिकूटानिसमतिक्रम्यचागता ॥ २८ ॥ हेमकूटगिरिवरंप्राप्तातोपीहनिर्गता ॥ अतिवेगवतीभू
त्वाभारतंचागतापरा ॥ २९ ॥ दक्षिणंजलधिंप्राप्तातृतीयासासरिद्वरा ॥ यस्याःस्नानायसरतांमनुजानां
पदेपदे ॥ ३० ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

केसराचलानांसमानिच्छ्रयत्वात्प्रथमंतेषामादिशिखरेषुमुख्यशृंगेषुपतितस्तेभ्योऽधः प्रस्रवन्तीसती ॥ २३ ॥ भद्राश्ववर्षस्यांतरेणमध्यतइ
त्यर्थः ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ स्नानायस्नानार्थंसरतांगच्छतां ॥ ३० ॥

॥११॥

॥३१॥समुद्रमुत्तरसमुद्रं ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ मौमस्वर्गप्रदानिचेत्यस्यार्थस्वयमेवाह स्वर्गिणामिति तत्रत्यंभोगमाह पुरुषाणामि
ति ॥ ३५ ॥ दशभिर्नागसहस्रैः समबलेनपरिकल्पिताः दशसहस्रनागबलाइत्यर्थः ॥ ३६ ॥ एकवर्षेनेति आयुषि एकैकवर्षेणेनेन्यूनसतिआप्त
गर्भागर्भवत्यः स्त्रियोभवांतेतावत्पर्यंतं युवतय इत्यर्थः ॥ ३७ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके अष्टमस्कंधे सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ ॥ त्रिंशद्विरेकेनैन

राजसूयाश्वमेधादिफलं तु न हि दुर्लभं ॥ ततश्चतुर्थीधारातु शृंगवत्पर्वतात्पुनः ॥ ३१ ॥ भद्राभिधासंस्त्रवंतीकु
रुन्संतर्प्यचोत्तरान् ॥ समुद्रं समनुप्राप्तागंगात्रैलोक्यपावनी ॥ ३२ ॥ अन्येन दाश्चनद्यश्च वर्षे वर्षेपि संतिहि ॥
बहुशोमेरुमंदारप्रसूताश्चैव नारद ॥ ३३ ॥ तत्रापि भारतं वर्षं कर्मक्षेत्रमुशंतिहि ॥ अन्यानि चाष्टवर्षाणि भौम
स्वर्गप्रदानि च ॥ ३४ ॥ स्वर्गिणां पुण्यशेषस्य भोगस्थानानि नारद ॥ पुरुषाणां चायुतायुर्वज्रांगादेव सन्निभाः
॥ ३५ ॥ पुरुषानागसाहस्रैर्दशभिः परिकल्पिताः ॥ महासौरतसंतुष्टाः कलत्राढ्याः सुखान्विताः ॥ ३६ ॥ ए
कवर्षेन केचायुष्याप्तगर्भाः स्त्रियोपि हि ॥ त्रेतायुगसमः कालो वर्तते सर्वदैव हि ॥ ३७ ॥ इति श्रीदेवीभागवते
महापुराणेऽष्टमस्कंधे सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ श्रीनारायण उवाच ॥ तेषु वर्षेषु देवेशाः पूर्वोक्तैस्तवनैः सदा
॥ पूजयन्ति मम देवीं जपध्यानसमाधिभिः ॥ १ ॥ सर्वर्तुकुसुमश्रेणीशोभितावनराजयः ॥ फलानां पल्लवानां
च यत्र शोभानिरंतरं ॥ २ ॥ तेषु काननवर्षेषु वर्षपर्वतसानुषु ॥ गिरिद्रोणीषु सर्वासु निर्मलोदकराशिषु ॥ ३ ॥

स्तुपैरथसविस्तरं ॥ इलावृतसमाचारः कथ्यते भक्तिवृद्धये ॥ १ ॥ सर्वेषु वर्षेषु वै शमाना देवादयः श्रद्धिर्वा मुपासन्ते इत्याह तेषु वर्षेषु विवर्ति देवेशास्त
सर्वेषु तत्तद्गीपस्थिता विष्णुरुद्रसंकर्षणान्यादयो देवावक्ष्यमाणाः पूर्वोक्तैस्तवनैरुणाजंबवादिनीधारेऽवरीमीनाक्षिणां कथितैः स्तोत्रैर्जपध्यानसमा
धिभिश्च श्रीभगवती सर्वे उपासन्तेत्यन्वयः ॥ १ ॥ तत्रत्यवनवर्णनमाह सर्वर्तुकुसुमेति ॥ २ ॥ वर्षावर्षाः पूर्वोक्ता वर्षमया दाकारकाऽपर्व
तास्तेषां सानुषु शिखरेषु ॥ ३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥१२॥

उपधावते इत्यन्वयः ॥ १० ॥ आत्मनः प्रकृतिकारणं पितामहं ॥ ११ ॥ उपासनामंत्रमाह ॐ नम इति सर्वेषां गुणानां संख्यानां प्रका
शायकत्वात् स्वत्वव्यक्त्या प्रमेयाय ॥ १२ ॥ भजे भजन्येति हे भजन्य भजनीयत्वात्वांपरमेष्ठिनं भजे इत्यन्वयः अरणं शरणं पादपंकजं य
त्कृत्स्नस्य भगस्यैव नर्वादिषु गुणस्पर्शमयनमाश्रयः भक्तेषु चालमत्यर्थभावं प्रकटितं भूतभावनं स्वरूपं येन भवापहं संसारहरं भक्ते
षु चानुभवं भवं संसारं भावयतीति तत्पातमर्थाद् भक्तेषु चितिद्वयं ॥ १३ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

टी.अ.
८

॥१२॥

इति च ननु पादार्थं प्रकृत्यैव प्रकृत्यैव न स्याति नयस्येति निरीक्षमाणस्यापि दृष्टिर्मायागुणैर्विषयैश्च तत्त्वैः करणैश्च अश्वपीषदपि ना
 न्यते न लिप्यते किमर्थं निरीक्षमाणस्य ईशो ईशनाय नियमनाय ईशानमीट् संपदादित्वाद्वावेकिप् अत्र वैधर्म्ये दृष्टांतः यथा जितक्रोधवैरा
 न्यायस्माकं दृष्टिरन्यते न तथेति अत आत्मन इन्द्रियाणि जिगीषुर्ज्ञेता मेच्छुर्मुमुक्षुस्तंको न मन्येत नाद्रियेत ॥ १४ ॥ ननु सुरामद्याभ्यां सत्स्य
 कुतो दृष्टिर्नान्यते तत्राह असदृशो य इति असतीदृक् दृष्टिर्न स्यात् स्वमायया क्षीवामत्त इव यो भयंकरः प्रतिभाति मध्वासवाभ्यामाताच्च
 लोचन इव च नागवभ्रुविमोहेन तथा तथा प्रतिभानं युक्तमित्याह नेति पादार्चनेयस्य पादयोः स्पर्शनेन धर्षितं मोहितं इन्द्रियं मनो यासां ताः हियाल

नयस्य मायागुणकर्मवृत्तिभिर्निरीक्षितो ह्यप्यपि दृष्टिरन्यते ॥ ईशेयथानोजितमन्युरंहसा कस्तं न मन्येत जिगी
 पुरात्मनः ॥ १४ ॥ असदृशो यः प्रतिभाति मायया क्षीवैव मध्वासवताम्रलोचनः ॥ न नागवध्वोर्हण ईशे शिरेऽहि प्राय
 त्पादयोः स्पर्शन धर्षितेन्द्रियाः ॥ १५ ॥ यमाहुरस्य स्थितिजन्मसंयमं त्रिभिर्विहीनं यमनंतमृषयः ॥ न वेदसि
 द्वार्थमिव क्वचित् स्थितं भूमंडलं मूर्धसहस्रधामसु ॥ १६ ॥ यस्याद्य आसीद्गुणविग्रहो महान् विज्ञानधिष्ण्यो भगवा
 नजः किलः ॥ यत्संवृतो हं त्रिवृतास्वतेजसा वैकारिकं तामसमैन्द्रियं सृजे ॥ १७ ॥ ॥ १४ ॥

जयाभुजादहर्णेन ईशेरेन शोकुः कस्तं न मन्येतेति पूर्वोक्तान्वयः ॥ १५ ॥ यमाहुरिति अस्य विश्वस्य स्थितिजन्मसंयमहेतुं यमाहुः अतए
 व त्रिभिः स्थित्यादिभिर्विहीनं अनंतं च यमाहुः ऋषयो मन्त्राः छंदोऽनुरोधेन दीर्घपाठे ऋकारो देवमाता लक्ष्मीः स च ऋषयश्चेत्यर्थः अनंत
 त्वं दर्शयति मूर्धसहस्रमेव धामानि स्थानानि तेषु क्वचिदेकदेशे स्थितं भूमंडलयो न वेदसि द्वार्थं सर्षपमिव तस्मै नमः इति चतुर्थेनान्वयः ॥ १६ ॥
 तत्र बन्महेतुत्वं महदादिद्वारेण प्रपंचयति यस्याद्य इति यस्य गुणनिमित्तो महान्नामविग्रह आसीत् विज्ञानं सत्त्वं धिष्ण्यमाश्रयो यस्य सः त
 स्मात्तत्त्वरूपेण सत्त्वमिधानत्वात् स एव किलाधिदैवैवा सुदेवाभेदविवक्षया भगवान् अतो ब्रह्मायत्संभवः यस्माद्ब्रह्मणः संभूतो हं रुद्रः त्रिवृतागुणे
 तस्मै तेजसा विभूतिरूपेणाहंकारेण वैकारिकं देवतावर्गं तामसंभूतवर्गं ऐन्द्रियमिन्द्रियवर्गं च सृजामि ॥ १७ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥

दे.भा.अ.
॥१३॥

किं चैत्रयं महादयः सर्वेष्वपानुषादिद्वन्द्वान्दं सृजाम कथं भूता यस्य महात्मनो वशो स्थिताः संतो यतः सूत्रेण क्रियाशक्त्या यंत्रिताः प्रोताः शकुं
ताः पक्षिणः प्लौकिके केन सूत्रेण स्यमित्युक्तं तानाह महानहंकारश्चैकतादयः पूर्वोक्तावर्गाश्च ॥ १८ ॥ स्थितिलयहेतुत्वं दर्शयन् प्रणमति ये
न निर्मितमेतां मायामेवायं जज्ञे जसावेद ननु तानि स्तारणयोगमृपायं कर्हि चेदपि वेदेति स्थितिहेतुत्वं दर्शयति कीदृशीं किमप्येव पवाणिग्रंथयस्तानि
नयति प्रापयतीति तथा तां प्रलब्धहेतुत्वमाह विलीयतोऽस्मिन्निति विलयः उदेत्यस्मादित्युदयः विलयश्चोदयश्चात्मा स्वरूपं यस्य तस्मै नमः नन्व
त्रत्यश्लोकानुपूर्व्या विष्णुभागवतोक्तश्लोकानुपूर्व्याश्चैकस्वकथं सिध्यतीति चेन्न एतद्रथस्यात्रत्यविष्णुभागवतग्रंथस्यापि तत्तद्वर्षस्थितदेवादिभिः
एते वयं यस्य वशमहात्मनः स्थिताः शकुंता इव सूत्रयंत्रिताः ॥ महानहं वैकृततामसैर्द्रियाः सृजाम सर्वे यदनुग्रहादि
दं १८ ॥ यन्निर्मितां कर्ह्यपि कर्मपर्वणमिहाजनाये गुरुसर्गमोहितः ॥ न वेद निस्तारणयोगमजसा तस्मै नमस्ते विल
यादयात्मने ॥ १९ ॥ नारायण उवाच ॥ एवं स भगवान् रुद्रो देवं संकर्षणं प्रभुं ॥ इलावृत उपासीत देवी गणसमाहितः
॥ २० ॥ तथैव धर्मपुत्रोऽसौ नाम्ना भद्रश्रवा इति ॥ तत्कुलस्यापि पतयः पुरुषा भद्रसेवकाः ॥ २१ ॥ भद्राश्ववर्षेतां मूर्तिं वा
सुदेवस्य विश्रुताम् ॥ हयमूर्तिं भिदातां तु हयग्रीवपदां कितां ॥ २२ ॥ परमेण समाध्यन्यवारकेण नियंत्रितां ॥
एवमेव चतां मूर्तिं गृणंत उपयांति च ॥ २३ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४५ ॥

कृ तोषासनामंत्राणां तैः कृतस्तोत्राणां चानुवादकत्वाद्यसमानानुपूर्विकत्वस्यापेक्षितत्वात् किं च क्वचित्कचित्पुराणांतरश्लोकानुपूर्विकत्वस्य पुरा
णांतरे दृष्टत्वात् यथानारदपुराणीयमंत्रखंडस्य तंत्रराजस्थयामलस्थश्लोकानुपूर्विकत्वं शिवरहस्यस्थप्रदोषाध्यायस्य ब्रह्मोत्तरखंडस्य प्रदो
षाध्यायसमानानुपूर्विकत्वं तथा ब्रह्मवैवर्तीयप्रकृतिखंडस्य देवीभागवतनवमस्कंधसमानानुपूर्विकत्वमित्याद्युक्तं तत्रैष्वपि बहुषु तंत्रांतरसमानानुपूर्वी
कत्वमुपलभ्यत एवेति ॥ १९ ॥ २० ॥ अयं भद्राश्ववर्षीयसेव्यसेवकभावमुपवर्णयति तथैवति भद्रश्रवानामधर्मपुत्रो वर्षपतिः तत्कु
लस्यापि पतयस्तास्मिन्कुले जायमानाः पुरुषाः कथं भूताः भद्रस्य भद्रनाम्नावर्षपतेः सेवकास्ते चेत्यर्थः ॥ २१ ॥ हयमूर्तिं भिदाहयग्रीवम
ूर्तिं भेदेन विभुतां तु तां हयग्रीवपदां कितां हयग्रीवनाम्नीं ॥ २२ ॥ समाध्यन्यवारकेणिति समाधेरन्यवाह्यव्यापारादितद्वारकेण तत्रैव वारके
ण परमेण तत्रैव नियंत्रितां समाधिनैव नियंत्रितां कथां विषयकृतामित्यर्थः गृणंतः स्तुवंतः उपयांति च सिद्धिं मूर्तिना ॥ २३ ॥ ॥ ४५ ॥

टी.अ.
८

॥३१॥

मदं भवसक्तचुःखेति ॥ अणुभूतजगदभासतिवदृणलक्षणतथातद्योगात्गुणिलिंगसमनायन्यायेन बहुवचनं अहोविचित्रमिति अयं जगो मिथ्यनपि
पश्यन्वापि जगत्तर्हि सतं मृत्युं तपश्यतीति भववद्विषेष्टमेव तच्च विचित्रं अदर्शनेल्लिंगं पुत्रं वापि तत्र च वृद्धं मृतं निहृत्य दग्ध्वा स्वयंतदुभयधनैर्जजीवि
पुत्रीं नेतुमिच्छतीत्यर्थः किं धर्मार्थेन यर्हि यतोऽसु सुच्छं विषयसुखं सेवितुं विकर्मपापमेव ध्यायन् ॥ २४ ॥ नन्वावेद्वान् पश्यति किमत्राचित्रं तत्रा
ह वदंतीति न इव रं नदंति स्म शास्त्रतः पश्यंति च समाधौ हे अज्ञ तथापि मुह्यंति एतच्च तव कृत्यं चेष्टितं सुविस्मितं अतिचित्रं अतः शास्त्रादिभ्रमं विहा
य तत्त्वां अजं नतोऽस्मि ॥ २५ ॥ इदमपरां चित्रवत्प्रतीयमानमपित्वयि न चित्रमित्याह विश्वोद्वेति विश्वोद्वेदादिकर्माकर्तुरपि अपगता आवृत्ता वरणं

भद्रश्रवसञ्जु ॥ ॐ नमो भगवते धर्मायात्मविशोधनाय नम इति ॥ अहो विचित्रं भगवद्विचेष्टितं घ्नंतं जनो यं हि मि
षन्न पश्यति ॥ ध्यायन्न स द्यौर्हविकर्म सेवितुं निहत्य पुत्रं पितरं जिजीषिषुः ॥ २४ ॥ वदंति विश्वं कवयः स्मनश्चरं
पश्यंति चाध्यात्मविदो विपश्चितः ॥ तथापि मुह्यंतित वाजमायया सुविस्मितं कृत्यमजं नतोऽस्मितं ॥ २५ ॥ वि
श्वोद्भवस्थाननिरोधकर्म ते ह्यकर्तुरंगीकृतमप्यपावृतः ॥ युक्तं न चित्रं त्वयि कार्यकारणे सर्वात्मनि व्यतिरिक्ते च
वस्तुतः ॥ २६ ॥ वेदान्युगांते तमसातिरस्कृता न्न सा तलाद्यो नृतुरंगविग्रहः ॥ प्रत्याददे वै कवयो भिया च ते त
स्मै नमस्ते वितथे हिताय ते ॥ २७ ॥ एवं स्तुवंति देवेशं हयशीर्षं हरिं च ते ॥ भद्रश्रवसनामानो वर्णयंति च तद्गुणा
न् ॥ २८ ॥ एषां चरितमेतद्वियः पठेच्छावयेच्च यः ॥ पापकंचुकमुत्सृज्य देवीलोके ब्रजेच्च सः ॥ २९ ॥ इति श्रीदेवी
भागवते महापुराणे ऽष्टमस्कंधे ऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥

यस्मात्तादृशस्यापिते अङ्कित्वेदेन त्वायेतन्नाचित्रं यतो मायया सर्वात्मनः कार्यस्य कारणे स्वष्टरिकर्म युक्तं वस्तुतः सर्वव्यतिरिक्ते निरूपाधा
वनावृतत्वमकर्तृ च युक्तं ॥ २६ ॥ परमेश्वरत्वेन स्तुत्वा प्रस्तुतावतारचरितमाह वेदानिति तमसा दैत्येन तिरस्कृतानपनीतान् नाचतुरंग
धाम्तुर्गोप्तूषो विप्रहौ यस्य के बयं ब्रह्मणे तद्दर्श्यावितथे हिताय सत्यसंकल्पाय ॥ २७ ॥ २८ ॥ देवील्लोकमणिद्वीपे ॥ २९ ॥ इति श्री
देवीकण्ठस्थितिलोकाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

119811

टी.अ.

श्रीनारायणउवाच ॥ हरिवर्षेचभगवान्नृहरिःपापनाशनः ॥ वर्ततेयोगयुक्तात्माभक्तानुग्रहकारकः ॥ १ ॥ तस्य
तद्वयितंरूपंमहाभागवतोसुरः ॥ पश्यन्भक्तिसमायुक्तस्तौतितद्गुणतत्त्ववित् ॥ २ ॥ प्रल्हादउवाच ॥ ॐ न
मोभगवतेनरसिंहायनमस्तेजस्तेजसेआविराविर्भववज्रदंष्ट्रकर्माशयानुरंधयरंधयतमोग्रसंॐस्वाहा ॥ अम
यंममात्मनिभूयिष्ठाःॐक्षीं ॥ स्वस्त्यस्तुविश्वस्यखलःप्रसीदतांध्यायंतुभूतानिशिवमिथोधिया ॥मनश्चभद्रं
भजतादधोक्षजेआवेश्यतांनोमतिरप्यहैतुकी ॥ ३ ॥ मागारदारात्मजवित्तबंधुषुसंगोयादिस्याद्भगवत्प्रियेषुनः
॥ यःप्राणवृत्त्यापरितुष्टआत्मवान्सिद्ध्यत्यदूरान्नतयेंद्रियप्रियः ॥ ४ ॥ यत्संगलब्धंनिजवीर्यवैभवंतर्हिमुहुः
संस्पृशतांहिमानसं ॥ हरत्यजोतःश्रुतिभिर्गतांगजंकोवैनसेवेतमुकुंदविक्रमं ॥ ५ ॥ ॥ ७१ ॥

प्कामासती ॥ ३ ॥ मागारेति नः संगः क्वापिमास्यान्त्यदिकथंचित्स्यात्तर्हि अगारादिषुमास्यात् किंतु भगवत्प्रियेष्वेव अगारादिसंगेदोषमाह यद्
 किंचित्प्रियप्रयोगहेत्वा सक्तः ॥ ४ ॥ भगवत्प्रियसंगे गुणमाह यत्संगेति येषां भगवत्प्रियाणां संबालब्धं मुकुंदाविक्रमं श्रुतिभिः श्रवणादिभिः संस्पृ
 श्य संसक्तमाभावात्पुंसमंतर्गतोऽजो यामसंमलं हरति कथं भूतं विक्रमं निजमसाधारणं वीर्यवैभवं भावातिशयोयस्व तीर्त्तुं गंगादिमुहुः संस्पृ
 श्य संसक्तमाभावात्पुंसमंतर्गतोऽजो यामसंमलं हरति तामकोविनसेवेत्यन्वयः ॥ ५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥

119811

.. 11-2-11

11-25-61

ममसमलभ्यतेकस्यहः मध्येति । अकिंचनानिष्कामामनः शुद्धौहरेभक्तिर्भवति ततश्चतत्प्रसादे सतिसर्वदेवाः सर्वैर्गुणैर्धर्मज्ञानादिभिः
सहस्रसंख्यासतेनित्यं वसन्ति । गृहाद्यासक्तस्य नुहरीभक्त्यसंभवात्कुतोमहतां गुणाज्ञानैराग्यादयो भवन्ति । असतिविषयसुखे मनोरथेन
बहिर्भावतः ॥ ६ ॥ मनुहरिविमुखस्यापि गृहाद्यासक्तस्य लोके महत्त्वं दृश्यते सत्यं तत्पहासास्पदामेति सहेतुकमाह हरिर्हीति यथा

यस्यास्ति भक्तिर्भगवत्यकिंचना सर्वैर्गुणैस्तत्र समासते सुराः ॥ हरावभक्तस्य कुतो महद्गुणामनोरथेनासति धा
वतो बहिः ॥ ६ ॥ हरिर्हि साक्षाद्गवान्शरीरिणामात्मा झषाणामिव तोयमीप्सितं ॥ हित्वा महांस्तं यदि सज्जते गृ
हेतदानहत्त्वं वयसादं पतीनां ॥ ७ ॥ तस्माद्रजोरागाविषादमन्युमानस्पृहाभयदैर्न्याधि मूलं ॥ हित्वा गृहं संसृ
तिचक्रवालं नृसिंहपादं भजतां कुतो भयं ॥ ८ ॥ एवं दैत्यपतिः सोऽपि भक्त्या नुदिनमीडते ॥ नृहरिं पापमातंगह
रिहृत्पद्मवासिनं ॥ ९ ॥ केतुमाले च वर्षे हि भगवान्स्मररूपधृक् ॥ आस्तेतद्वर्षनाथानां पूजनीयश्च सर्वदा
॥ १० ॥ एतेनोपासते स्तोत्रजालेन चरमाब्धिजा ॥ तद्वर्षनाथा सततं महतां मानदायिका ॥ ११ ॥ ॥ ६५ ॥

झषाणामर्मानामिप्सितं तोयमेवात्मा तेन विना जीवनाभावात् महानतिप्रसिद्धोऽपि मृहे यदि सज्जते तदादं पतीनां मिथुनानां शूद्रादिष्वपि प्रसिद्धं वयसैव के
वलं यन्महत्त्वं तदेव तस्य भवति न तु ज्ञानादिना मिथुनेषु तेषु पूज्यमानेषु स्त्रीभ्यः पुंसां महत्त्वं बालमिथुनेभ्यश्च वृद्धमिथुनानां महत्त्वं यथेत्यर्थः ॥ ७ ॥ य
स्मादेतत्तस्मात् गृहं हित्वा कुतो भयं नृसिंहपादं भजते तस्य सुरानुमतिश्च तस्मादिति कीदृशं गृहं रजस्तृष्णा रागोऽभिनिवेशः रजआदी
नां प्रसङ्गः ॥ अतएव संसृतीनां जन्ममरणदीनां चक्रवालं मंडलमविच्छेदो यस्मात् ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.अ.

॥१५॥

पौर्णमासी वैः भोजनस्तु भिक्षुः कश्चित्पुत्रोऽपि कुलभक्त्या यस्य आकूतीनां क्रियाणां चित्तीनां ज्ञानानां चेतसां संकल्पाध्यवसायादीनां विशेषा
ण्डं विप्रयाणां षोडशकला अंशा एकादशो विप्रचविषयलक्षणायस्य छंदोमया मवेदोक्तकर्मप्राप्त्याय अजमया भान्तेनोपस्थित्या
असृज्यमानं दानं दानं विष्णुत्तरत्वात् सर्वमयाय सर्वविषयत्वात् सहसे ओजसे बलाय तदेतुत्वात् त्वत्कामेनैव त्वत्सेवकत्वाद्दहंकृताप्रोस्मि
अन्त्याकामनयानुत्वाच्चर्यत्यो न परिपूर्णमनोरथाः स्युरित्याह स्त्रिय इति स्तत्र एव हृषीकाणामीश्वरं पतिं संतं त्वामाराध्ययाः स्त्रियोऽन्यपतिं प्र
थयंते पतिकामानां हिकामाराधनं व्रतेषु प्रासिद्धं तासामपत्यादीनि ते पतयोनपातुं शक्ताः ॥ १२ ॥ अतस्ते पतय एव न भवंतीत्याह सवा इति स

टी.अ.

९

रमोवाच ॥ ॐ ह्रीं हूं ॐ नमो भगवते हृषीकेशाय सर्वगुणविशेषैर्विलक्षितात्मने ॥ आकूतीनां चित्तीनां चेतसां वि
शेषाणां चाधिपतये षोडशकलाय छंदोमया यान्नमयायामृतमयाय सहसे ओजसे बलाय कांताय कामाय नमस्ते
उभयत्र भूयात् ॥ स्त्रियो व्रतैस्त्वां हृषीकेश्वरं स्वतो ह्याराध्य लोके पतिमाशासते न्यं ॥ तासां न ते वै परिपांत्य पत्यं
प्रियं धनं यूपियतोऽस्वतंत्राः ॥ १२ ॥ सर्वैः पतिः स्यादकुतोभयः स्वतः समंततः पाति भयातुरं जनं ॥ स एक एव
तरथामिथो भयं नैवात्मलाभादधि मन्यते परं ॥ १३ ॥ यातस्य ते पादसरोरुहार्हणं न कामयेत्सा खिलकामलं
पटा ॥ तदेव रासीप्सितमीप्सितोर्चितो यद्गमयाच्चा भगवन् प्रतप्यते ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥

चैवं भूतः पतिर्भवानेक एव नान्यः यो भवानात्मलाभात्परमन्यदधिकं न मन्यते इतरथान्याधीनसुखस्य न स्वतंत्रता स्वतंत्रनानात्वे च मंडलेश्व
राणां भिवामिभयोभयं स्यादित्यर्थः ॥ १३ ॥ किंच निष्कामभजने अप्राप्यता एव सर्वे कामा भवंति सकामभजने तु कामितमात्रमनित्यं चेत्याह यातस्य
इति ॥ या स्त्री तस्योक्तलक्षणस्य ते पादसरोरुहार्हणं पूजामेव कामयेत्तु फलान्तरं स्वाखिलेषु कामेषु लंपट्या सर्वान् कामान् प्राप्नोतीत्यर्थः इति
लक्षितम् ॥ फलान्तरं पुण्येति सन्भविता भवेत्तर्हि तदेव तदेकं प्राप्तिददाति किंच यद्यतः फलभोगानंतरं भगवाञ्चाया भितोर्यो यस्याः सा प्रत
प्यते ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥

॥१५॥

मत्प्राप्तये नृणां सर्वकल्याणमिच्छतेति काम्यार्थिभिः सेन्यसेतत्राह मत्प्राप्तये इति मत्प्राप्तये नृणां दयस्तपस्तप्राप्तये कुर्वति कथंभूताः ऐन्द्रिये सु
 कोटीर्मेधाः शत्रुहृत्परायः तस्याभिभवत्पादपरायणाद्वेत्मानं विदंति मत्कटाक्षविलसिता विभूतर्निलभंते इत्यर्थः यतस्त्वय्येव हृदयं यस्याः
 सा त्वत्पदं तं कृतं त्वदनुवर्तनं विलोकयामि नान्यमिदं यः ॥ १५ ॥ इदानीं त्वत्कृपां प्रार्थयते सत्वमिति यद्वज्रं न विना न कश्चित्पुरुषा
 नोऽस्मिन् स्यादिति त्वमायत्करां नुनं सत्वतां भक्तानां शीर्ष्णिअभायिकृपयान्यस्तंतन्ममापि शीर्ष्णिनिधेहीति शेषः कथंभूतं वंदितं सर्वकामवर्षि

मत्प्राप्तये जेशसुरासुरादयस्तप्यंत उग्रंत पऐन्द्रिये धियः ॥ ऋते भवत्पादपरायणा न्नमां विदंत्य हं त्वद्वृदयाय तो
 जित ॥ १५ ॥ सत्त्वं ममाप्यच्युत शीर्ष्णि वंदितं करां नुजं यत्त्वदधायि सत्वतां ॥ विभर्षि मां लक्ष्मवरेण्यमायया
 कर्दश्वरस्यो हितमूहितुं विभुः ॥ १६ ॥ एवं कामंस्तुवंत्येव लोकबंधुस्वरूपिणं ॥ प्रजापतिमुखा वर्षनाथा काम
 स्यसि दये ॥ १७ ॥ रम्यकेनामवर्षे च मूर्तिं भगवतः परां ॥ मात्सीदेवा सुरैर्वैद्यां मनुःस्तौति निरंतरं ॥ १८ ॥
 मनुस्वाचा ॥ ॐ नमो मुख्यतमाय नमः सत्त्वाय प्राणायौ जसे बलाय महामत्स्याय नमः ॥ अंतर्बहिश्चांखिललोकपा
 लकैरदृष्टरूपो विचरस्युरुस्वनः ॥ स ईश्वरस्त्वं य इदं वशेन प्रत्नाम्नायथादा रुमग्रीनरक्षियं ॥ १९ ॥ ग्रं लोकपालाः
 किल मत्सरज्वराहित्वा यतंतोऽपि पृथक्समत्यच ॥ पातुं न शेकुर्द्विपदश्चतुष्पदः सरीसृपं स्थाणुयदत्र दृश्यते ॥ २० ॥

लेनसादिः स्तुतं न च मायितवानादरः यतो हे वरेण्यमां वक्षसिलक्ष्मा विभर्षि अहो चित्रमेतन्मयिकेवलमादरमात्रं भक्तेषु तु परमा कृपा अतर्हं श्व
 रस्य तव यन्मायया ईहितं तत्को वितर्कयितुं समर्थ इत्यर्थः ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ सत्त्वाय सत्वप्रधानाय प्राणाय सूत्रात्मने उरुस्वनो वेदात्मको
 ऋते यस्मै यद्वदं विभ्रं द्यणादि सत्त्वा विधिनिषेधालंबनभूतेन वशे अनयतु नियमितवान् सत्वमीश्वरः तथा च भ्रुतिः तस्य वाक्कंतिर्गमनीति ॥ १९ ॥
 नमिहाहो तत्प्राप्तये नृणां सर्वकल्याणमिच्छतेति काम्यार्थिभिः सेन्यसेतत्राह मत्प्राप्तये इति मत्प्राप्तये नृणां दयस्तपस्तप्राप्तये कुर्वति कथंभूताः ऐन्द्रिये सु
 कोटीर्मेधाः शत्रुहृत्परायः तस्याभिभवत्पादपरायणाद्वेत्मानं विदंति मत्कटाक्षविलसिता विभूतर्निलभंते इत्यर्थः यतस्त्वय्येव हृदयं यस्याः
 सा त्वत्पदं तं कृतं त्वदनुवर्तनं विलोकयामि नान्यमिदं यः ॥ १५ ॥ इदानीं त्वत्कृपां प्रार्थयते सत्वमिति यद्वज्रं न विना न कश्चित्पुरुषा
 नोऽस्मिन् स्यादिति त्वमायत्करां नुनं सत्वतां भक्तानां शीर्ष्णिअभायिकृपयान्यस्तंतन्ममापि शीर्ष्णिनिधेहीति शेषः कथंभूतं वंदितं सर्वकामवर्षि

दे.भा.अ.

॥१६॥

भवान्युगांतार्णवऊर्मिमालिनिक्षोणीमिमामोषधिवीरुधांनिधिं ॥ मयासहोरुक्रमतेजओजसातस्मैजगत्प्रा
गगणात्मनेनमः ॥ २१ ॥ एवंस्तौतिचदेवेशमनुःपार्थिवसत्तमः ॥ मत्स्यावतारंदेवेशंसंशयच्छेदकारणं ॥
२२ ॥ ध्यानयोगेनदेवस्यनिर्धूताशेषकल्मषः ॥ आस्तेपरिचरन्भक्त्यामहाभागवतोत्तमः ॥ २३ ॥ इतिश्रीदे
वीप्रियमवतरेमहापुराणेऽष्टमस्कंधेभुवनकोशवर्णनेनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ हिरण्यमेनामवर्षे
भगवान्कूर्मरूपधृक् ॥ आस्तेयोगपतिःसोयमर्यम्णापूज्यईज्यते ॥ १ ॥ अर्यमोवाच ॥ ॐ नमोभगवतेअकूपा
स्यसर्वसत्वगुणविशेषणायनोपलक्षितस्थानायनमोवर्ष्मणेनमोभूम्नेनमोवस्थानायनमस्ते ॥ यद्रूपमेतन्नि
जमाययार्पितमर्थस्वरूपं बहुरूपरूपितं ॥ संख्यानयस्यास्त्ययथोपलंभनात्तस्मै नमस्तेऽव्यपदेशरूपिणे ॥ २ ॥

टी.अ.

९

अस्तीतिरेवपि ॥ सेव्यसेवकरूपाणां वर्णनं सम्यगीर्यते ॥ १ ॥ अर्यमापितृगणाधिपतिः ॥ २ ॥ अकूपरायकूर्माय सर्वः संपूर्णः सत्वगुणविशेषणयस्य
कोपलक्षितस्थानं स्ववाचिचरत्वात् वर्ष्मणेवर्षीयसेकालानवच्छिन्नाय भूध्वेसर्वगत्य अवस्थानाय आधाराय यद्रूपमिति निजमाययार्पितं यका
निरूपेत सर्वस्वरूपं बह्वयं धियादियस्यैवं रूपं यतः प्रपूज्यास्ति कथंभूतं बहुभीरूपैरूपितं निरूपितं यस्यचसंख्यानास्ति कुतः अयथा
विहितोऽयं ॥ इतिमूर्तिचरत्वेतावदितिसंख्यातुंशक्यते अन्यपदेशरूपिणे अनिरुक्तप्रपंचाकाराय ॥ २ ॥ ॥ ७ ॥

॥१६॥

जरायुजंस्वेदजमंडजोद्विदं चराचरं देवर्षिपितृभूतमैन्द्रियं ॥ द्यौः स्वक्षितिः शैलसरित्समुद्रंद्वीपग्रहक्षेत्यभिधेय
 एकः ॥ ३ ॥ यस्मिन्नसंख्येयविशेषनामरूपाकृतौ कविभिः कल्पितेयं ॥ संख्याययातत्वदृशापनीयते तस्मै
 नमः सांख्यनिदर्शनाय तो ॥ ४ ॥ एवंस्तुवति देवेश मर्यमा सह वर्षपैः ॥ गीयते चापि भजते सर्वभूतभवं प्रभुं ॥ ५ ॥
 तथोत्तरेषु कुरुषु भगवान्यज्ञपुरुषः ॥ आदिवाराहरूपो सौधरण्या पूज्यते सदा ॥ ६ ॥ संपूज्यविधिवद्देवं तद्र
 त्त्यार्द्रार्द्रहृत्कजा ॥ भूमिः स्तौति हरिं यज्ञवाराहं दैत्यमर्दनं ॥ ७ ॥ भूस्वाच ॥ ॐ नमो भगवते मंत्रतत्त्वलिङ्गाय यज्ञक्र
 तवे महाध्वरावयवाय महावराहाय नमः कर्मशुक्लाय त्रियुगाय नमस्ते ॥ ८ ॥ यस्य स्वरूपं कवयो विपश्चितो गुणे
 षु दासृष्विव जातवेदसं ॥ मथन्ति मथ्ना मनसा दिदृक्षवो गूढं क्रियार्थैर्नम ईरितात्मने ॥ ९ ॥ द्रव्यक्रियाहेत्वयने श
 कर्तृभिर्मर्यादागुणैर्वस्तुभिरीक्षितात्मने ॥ आन्वीक्ष्यां गातिशयात्मबुद्धिभिर्निरस्तमायाकृतये नमोस्तुते ॥ १० ॥

अतएव महांतो ध्वरावयवभूतायस्य कर्मणा शुक्लाय शुद्धाय यज्ञानुष्ठाने त्रियुगाय कृतयुगे यज्ञाभावात् यद्वाकलियुगे छत्रत्वात् ॥ ८ ॥
 कवयो विद्वांसः विपश्चितो निपुणाः गुणेषु देहेन्द्रियादिषु मथन्ति विचिन्वन्ति मथ्ना विवेकसाधनेन मनसा क्रियार्थैः कर्माभिस्तत्फलैश्च गूढं अम
 कांशमभिदिदृक्षवः एवं मथने ईरितः प्रकटित आत्मा स्वरूपं यस्य तस्मै नमः ॥ ९ ॥ मथनमेव दर्शयंत्याह द्रव्यक्रियेति द्रव्यविषयः कि
 म्ना हि द्रव्यव्यापारः हेतुर्देवता अयनं देहः ईशः कालः कर्त्ता अहंकारः एते मर्यादागुणैः कार्यैरुपलक्षणैर्वस्तुत्वेन निरीक्षितो य आत्मा तस्मै
 आन्वीक्ष्यां गातिशयात्मबुद्धिभिर्निरस्तमायाकृतये नमोस्तुते ॥ १० ॥

वि.भा.अ.

॥१७॥

तदेवंभिर्गुणैः स्वप्नेन त्वमहमेव रूपेण प्रणमति करोतीति यस्येक्षितुर्जीवार्यमीक्षितमत्यंतानिच्छायामीक्षणाद्योगात् स्वार्थतुनेप्सितं विश्व
स्थित्यादिस्वगुणैर्मायाप्रकृतिस्तस्याजडत्वेपि परमेश्वरसन्निधानात्प्रवृत्तिदृष्टान्तेनाह यथाबोलोहं ग्राह्योऽयस्कांतादिनिमित्तात्प्रमति तदाभ्र
यंतदभिगुणं सद्गुणानां कर्मणां वा दृष्टानां च साक्षिणे तस्मै नमः ॥१२॥ अवतारचरित्रमाह प्रमथ्येति योजगतामादिः कारणभूतः सूकरः
सांपृथ्वीमज्जेतुं प्राये कृत्वा रसातलादारभ्य उदन्वतः प्रलयार्णवात् भोगजइवनिरगात् ततश्च प्रतिगमनतुल्यं दैत्यं प्रमथ्य यः क्रीडन् स्थितस्तं विभुं प्र

टी.अ.
१०

करोति विश्वस्थिति संयमो दयं यस्येप्सितं नेप्सितमीक्षितुर्गुणैः ॥ माया यथा यो भ्रमते तदाश्रयं ग्राह्यो नमस्ते
गुणकर्मसाक्षिणे ॥ ११ ॥ प्रमथ्य दैत्यं प्रतिवारणं मृधेयो मां रसायाजगदादिसूकरः ॥ कृत्वा ग्रदंष्ट्रे निरगादु
दन्वतः क्रीडन्निवेभः प्रणतास्मितं विभुं ॥ १२ ॥ किंपुरुषे वर्षेस्मिन् भगवंतं दाशरथिं च सर्वेशं ॥ सीतारामं देवं श्री
हनुमानादिपूरुषं स्तौति ॥ १३ ॥ हनुमानुवाच ॥ ॐ नमो भगवते उत्तमश्लोकाय नम इति ॥ आर्यलक्षणशील
व्रताय नम उपशिक्षितात्मने उपासितलोकाय नमः साधुवादनिकषणाय नमो ब्रह्मण्यदेवाय महापुरुषाय महाभा
गाय नम इति ॥ यत्तद्विशुद्धानुभवात्ममेकं स्वतेजसा ध्वस्तगुणव्यवस्थं ॥ प्रत्यक् प्रशांतं सुधयोपलभनं ह्यना
मरूपं निरहं प्रपद्ये ॥ १४ ॥

॥ ६४ ॥

॥ ६४ ॥

॥ ६४ ॥

सास्मीत्यन्वयः ॥ १२ ॥ किंपुरुषे इत्याद्यां च्छंदः ॥ १३ ॥ आर्याणिलक्षणानि शीलं व्रतं च यास्मिन् उपशिक्षितात्मने संयतचित्ताय
व्यसितो नुसृतो लोको येन साधुवादः साधुत्वप्रसिद्धिस्तस्य निकषणाय निकषात्मवन्निर्धारणस्थानाय परमसीम्ने इत्यर्थः श्रीरामं परमार्थरूपेण प्र
णमति यत्तदिति यदेकं वेदांतेषु प्रसिद्धं तत्स्वतत्प्रपद्ये कथं भूतं विशुद्धासावनुभवश्च एवमात्रास्वरूपं यस्य विशुद्धत्वे हेतुः प्रशांतं नाम हेतुः
स्तीमसास्वरूपमकादो न च स्तगुणानां विविधा जायदाद्यवस्था यस्मिन् अनुभवमात्रत्वे हेतुः प्रत्यक् इत्यादयः तत्कुतः अनामरूपं ॥ १४ ॥

॥१७॥

ननु एतत्तस्यापि विषयोक्तसर्वविषयोदृश्यते तत्राह विभोर्मत्यान्तारस्तु रक्षसोरावणस्य बधाय तस्य मनुष्यादन्वतोऽवध्यत्वात् न केव
 लमेतावदेव किंतु इह ससंरेखीसंगादेकृतंदुःखंदुर्वारमिति मर्त्यानां शिक्षणं च शिक्षार्थमपीत्यर्थः अन्यथास्वेस्वरूपे रममाणस्येश्वरस्य सी
 तानिरुक्तानि व्यसनानि कुतः स्युः ॥ १५ ॥ विषयासक्त्यभावेन व्यसनानर्हत्वं मुपादयति नवैसभगवांस्त्रिलोक्यां कापि सक्तः
 सत आत्मवतां धीराणां मात्मा सुहृत्तमश्च अतो न स्त्रीकृतं मोहं प्राप्नुयात् न लक्ष्मणं च देवदूतेन श्रीरामं मंत्रयता विज्ञापितमत्रागतस्त्वया बध्य इति
 तदैवदारिस्थितं लक्ष्मणं दुर्वाससमागतो वज्ञापयितुं प्रविष्टं हंतुमुद्यतो वासिष्ठवाक्यात् तया जतश्च न युज्येतेत्यर्थः ॥ १६ ॥ अतः श्रीराम एव सर्वैः से

मर्त्यावतारस्त्विह मर्त्यशिक्षणं रक्षोवधायैव न केवलं विभोः ॥ कुतो न्यथा स्याद्रमतः स्वआत्मनः सीताकृतानि व्य
 सनानीदृशस्य ॥ १५ ॥ नवैस आत्मात्मवतां सुहृत्तमः सक्तस्त्रिलोक्यां भगवान्वासुदेवः ॥ न स्त्रीकृतं कश्मल
 मभुवीत न लक्ष्मणं चापि विहातुमर्हति ॥ १६ ॥ न जन्मनूनं महतो न सौभगं न वाङ्मनबुद्धिर्नाकृतिस्तोषहेतुः ॥
 तैर्यद्विसृष्टानपि नो वनौकसश्चकार सस्येव तलक्ष्मणाग्रजः ॥ १७ ॥ सुरोऽसुरोवाप्यथ वानरो नरः सर्वात्मना
 यः सुकृतज्ञमुत्तमं ॥ भजेतरामं मनुजाकृतिं हरिं यत्तत्तराननयत्को सलान्दिवं ॥ १८ ॥ नारायण उवाच ॥ एवं
 किं पुरुषे वर्षे सत्यसंधं दृढव्रतं ॥ रामं रार्जावपत्राक्षं हनुमान्वानरोत्तमः ॥ १९ ॥ स्तौति गायति भक्त्या च संपूज
 यति सर्वशः ॥ य एतच्छृणुयाच्चित्रं रामचंद्रकथानकं ॥ २० ॥ सर्वपापविशुद्धात्मा याति रामसलोकतां ॥ इति
 श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टमस्कंधे दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥

ननु इति वक्तुं न तस्य तोषहेतुः सत्कुलबन्मादि किंतु भक्तिरेवेत्याह न बन्मेति महतः पुरुषा बन्म महतः श्रीरामचंद्रस्येति वा सौभगं सौंदर्य
 अकृतिर्वातिः यद्यस्मात्तैर्जन्मादिभिर्विसृष्टान्यक्तानपि नो वने चरान्वता हो लक्ष्मणस्याग्रजोपि सखित्वे कृतवान् ॥ १७ ॥ तस्मात्सुरो वान्यो
 लक्ष्मणः कोपि श्रीराममेव सर्वं प्रकारेण भजेत् सुकृतज्ञं अर्पयिष्यति भजेत् नो वदुमाकिं उत्तरान्को सलानयोऽध्यावासिनः ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥
 इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टमस्कंधे दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥

भा.अ.

॥१८॥

असक्तश्चासौविविक्तश्चाक्षीतस्मै नमः असक्तत्वं दर्शयति अस्य विश्वस्य सर्गादिषु कर्तापियो न बध्यते अहं कर्तेति न मन्यते विविक्त
त्वमाह देहगतोऽपि दैहिकैः क्षुत्पिपासादिभिर्यो न हन्यते नाभिभूयते साक्षित्वमाह यस्य द्रष्टुं पितृतादृष्टिगुणैर्दृश्यैर्न दूष्यते न विक्रियते ॥ २ ॥
श्रीनारायण उवाच ॥ भारताख्ये च वर्षेऽस्मिन्नहमादिजपूरुषः ॥ तिष्ठामि भवता चैव स्तवनं क्रियतेऽनिशं ॥ १ ॥ ना
रद उवाच ॥ ॐ नमो भगवते उपशमशीलायो परतानात्म्याय नमोऽकिंचन वित्ताय ऋषिऋषभाय नरनारायणाय
परमहंस परमगुरवे आत्मारामाधिपतये नमो नम इति ॥ कर्तास्य सर्गादिषु यो न बध्यते न हन्यते देहगतोऽपि दैहिकैः
॥ द्रष्टुं न दृश्यस्य गुणैर्विदूष्यते तस्मै नमो सक्तविविक्तसाक्षिणे ॥ २ ॥ इदं हियोगेश्वरयोगेनैपुणं हिरण्यग
र्भो भगवान् जगाद यत् ॥ यदंतकाले त्वयि निर्गुणे मनोभक्त्या दधीतोऽस्मि तदुष्कलेवरं ॥ ३ ॥ यथैहिकामुष्मि
ककामलंपटः सुतेषु दारैषु धनेषु चित्तं यत् ॥ शंकेतविद्वान्कुललेवरात्ययाद्यस्तस्य यत्नः श्रम एव केवलं ॥ ४ ॥
तन्नः प्रभो त्वं कुललेवरार्पितां त्वन्मायया हं ममतामधोक्षज ॥ भिद्यामयेनाशु वयं मुदुर्भिदां विधेहियोगं त्वयिनः
स्वभावं ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥

योगकौशलं निरूपयन् योगं प्रार्थयते इदमिति त्रिभिः हेयोगेश्वर हिरण्यगर्भो यद्योगेनैपुणं जगाद इदमेव तत् किं जन्म प्रभृतिभक्त्या तंतकाले पुमांस्त्व
यिमनोधारयेदित्यत् कथं भूतः सन् च दृष्ट्वा तदुष्कलेवरं तदाभिमानो येन ॥ ३ ॥ अन्यथा तस्य शास्त्राभ्यासादिश्रमो व्यर्थ इत्याह ऐहिकामु
ष्मिककामेषु लंपटो भूत्वा सुतादिषु योगक्षेमं विचिंतयन् कुत्सितस्य कलेवरस्यात्ययात् मृत्योर्यथा शंकेत तया विद्वानपि सन्नः शंकेतस्य यत्नः
श्रम एव ॥ ४ ॥ यस्माद्विदुषोऽपीयमवदशा ततस्तस्माद्देप्रभो अधोक्षजत्वमेव नो योगं विधेहि कीदृशं त्वयि स्वभावं सहजवासनारूपं येन योगेन
वयं त्वन्मायया नः कुललेवरेऽर्पितामहं ममतां शीघ्रं भिद्यां त्यजेम सुदुर्धियामुपायांतरेः सर्वथा त्यक्तुमशक्या ॥ ५ ॥ ॥ ११ ॥

टी.अ.

११

॥१८॥

॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ वेदस्मृतिश्चमहानदीचेतिद्वंद्वः ॥ १६ ॥ १७ ॥

एवंस्तौतिसदादेवंनारायणमनामयं ॥ नारदोमुनिशार्दूलःप्रज्ञाताखिलसारदृक् ॥ ६ ॥ अस्मिन्वैभारतेवर्षे
सरिच्छैलास्तुसंतिहि ॥ तान्प्रवक्ष्यामिदेवर्षेशृणुष्वैकाग्रमानसः ॥ ७ ॥ मलयोमंगलप्रस्थोमैनाकश्चत्रिकूट
कः ॥ ऋषभःकूटकःकोल्लःसह्योदेवगिरिस्तथा ॥ ८ ॥ ऋष्यमूकश्चश्रीशैलोव्यंकटोद्रिर्महेंद्रकः ॥ वारिधारश्च
विंध्यश्चभुक्तिमानृक्षपर्वतः ॥ ९ ॥ पारियात्रस्तथाद्रोणश्चित्रकूटगिरिस्तथा ॥ गोवर्धनोरैवतकःककुभोनील
पर्वतः ॥ १० ॥ गौरमुखश्चेंद्रकीलोगिरिःकामगिरिस्तथा ॥ एतेचान्येप्यसंख्यातागिरयोबहुपुण्यदाः ॥ ११ ॥
एतदुत्पन्नसरितःशतशोथसहस्रम् ॥ पानावगाहनस्नानदर्शनोत्कीर्तनैरपि ॥ १२ ॥ नाशयंतिचषापानित्रि
विधानिशरीरिणां ॥ ताम्रपर्णीचंद्रवशाकृतमालावटोदका ॥ १३ ॥ वैहायसीचकावेरीवेणाचैवपयस्विनी ॥
तुंगभद्राकृष्णवेणाशर्करावर्तकातथा ॥ १४ ॥ गोदावरीभीमरथीनिर्विध्याचपयोष्णिका ॥ तार्परेवाचसुरसा
नर्मदाचसरस्वती ॥ १५ ॥ चर्मण्वतीचसिंधुश्चअंधशोणौमहानदौ ॥ ऋषिकुल्यात्रिसामाचवेदस्मृतिमहान
दी १६ ॥ कौशिकीयमुनाचैवमंदाकिनीदृषद्वती ॥ गोमतीशरयूरोधवतीसप्तवतीतथा ॥ १७ ॥ सुषोमाचश
तद्रुश्चचंद्रभागामरुद्धा ॥ वितस्ताचअसिक्रीचविश्वाचेतिप्रकीर्तिताः ॥ १८ ॥ अस्मिन्वर्षेलब्धजन्मपुरुषैः
स्वस्वकर्मभिः ॥ शुक्लोहितकृष्णार्यैर्दिव्यमानुषनारकाः ॥ १९ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४३ ॥

॥ १८ ॥ शुक्लोहितकृष्णार्यैःसालिकराजसतामसैःस्वकर्मभिर्यथाक्रमोद्व्यमानुषनारकाभोगाभवन्तीत्युत्तरेणान्वयः ॥ १९ ॥

वे.भा.अ.

एतदेव सर्वेषां च भिन्ना सिद्धां कर्तुं शिष्यान् प्रामुख्यमावा विविधभोगा भवन्तीत्यर्थः यथा वर्णेति यस्य वर्णस्य यद्विधानं मोक्षप्रकारः संन्यासवानप्रस्थादि
तदनतिक्रमेणास्मिन्नेव वर्णकृष्णामपवर्गश्च भवति एतच्च कर्मादिबहुसाधनसंभवाभिप्रायेणोक्तं न त्वन्यत्रापवर्गाभावेन तदुपर्यपि बाह्यरायणः सं
भवादिति देवानामपि मोक्षस्यैवाचितत्वात् ॥ २० ॥ एतदेव प्राधान्यमस्य वर्षस्य किंतु कार्यसिद्धितः सार्वविभक्तिकस्तसिः अनायासेनैव
रप्रसादरूपकार्यसिद्धिस्वरूपमित्यर्थः अनेन हि सर्वलोकापेक्षयायं लोकः प्रधान इति स्वर्गवासिनोऽपि वदन्ति ॥ २१ ॥ किं स्वर्गवासिनोऽपि वदन्ति

अथैतद्विधिविधानां भोगाः सर्वेषां चानेवासिनां ॥ यथावर्णविधानेनाषवर्गो भवति स्फुटं ॥ २० ॥ एतदे
वचनं वर्षस्य प्राधान्यं कार्यसिद्धितः ॥ वदंति मुनयो वेदवादिनः स्वर्गवासिनः ॥ २१ ॥ अहो अमीषां किम
कारि शोभनं प्रसन्न एषां स्विदुतस्वयं हरिः ॥ यैर्जन्मलब्धं नृषु भारताजिरे मुकुन्दसेवौपयिकं स्पृहाहिनः ॥ २२ ॥
किं दुष्करैर्नः क्रतुभिस्तपो ब्रतैर्दानादिभिर्बाहुजयेन फल्गुना ॥ नयत्र नारायणपादपंकजस्मृतिः प्रमुञ्चति शयैर्द्रि
योत्सवात् ॥ २३ ॥ कल्पायुषां स न जयात्पुनर्भवात् क्षणायुषां भारतभूजयोवरं ॥ क्षणेन मर्त्येन कृतं मनस्वि
नः सन्यस्य संयात्यभयं पदं हरेः ॥ २४ ॥ नयत्र वैकुण्ठकथा सुधापगानसाधवो भागवतास्तदाश्रयाः ॥ नयत्र य
ज्ञेशमखामहोत्सवाः सुरेशलोकोपिनैवै ससेव्यतां ॥ २५ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥

चाह अहोइति अमीषामेभिः उतास्वित् अयवास्वयमेवसाधनंविनैवहरिरेषांप्रसन्नोभूत् एवंभूतस्यपुण्यस्यदुष्करत्वात् भारताजिरेभार
तांगणेनःकेवलंस्पृहैवयत्रतन्मुकुंदसेवोपयोगिजन्मनृषुलब्धं ॥ २२ ॥ स्पृहामेवाह किमित्यादिसप्तभिः दुष्करैःकृत्वादिभिर्नःफलानातुच्छे
नद्युजयेनस्वर्गमाप्त्याकिंनकिंचित्फलं कुतः यन्नारायणपादपंकजस्मृतिर्नास्तिप्रत्युतातिशयितादिद्वियोत्सवाद्वागात्प्रमुष्टाभूत् ॥ २३ ॥
क्षणमल्पमेवायुर्येषां वरत्वेहेतुः मर्त्येनापिदेहेनक्षणेनैवकालेनकृतंकर्मसंन्यस्यहरेःपदंसम्यग्यांति ॥ २४ ॥ अतोयत्रैकुंठकथामृतनद्यो
सि तदाभ्युक्त्यापत्ताभ्याःसहांतोत्प्राप्तुत्स्वायेषुतादृशयज्ञेयस्यमयाभ्यूनाःससुरेभ्यस्तद्वानोपिनेकोनसेव्यतां ॥ २५ ॥

मा.अ.

॥२०॥

सर्वत्रैव सप्तविंशतिः प्रयत्नः ॥ द्विषांस्तस्माच्चारोयथावदभिवर्ण्यते ॥ १ ॥ तावतालक्षविस्तारेण ॥ २ ॥ जंबुद्वीपेन यथामेखेष्टितस्तथादि
गुणविस्तारेण त्रिशांलेन द्विषांस्तस्माच्चारोदधिर्वेष्टितः ॥ २ ॥ यथापरिखाबाह्योपवनेन वेष्टितस्तद्वत् तस्मिन्प्लक्ष्मक्षेत्रे द्वीपे प्लक्ष्मक्षेत्रः प्लक्ष्मनाम
को नृक्षोजंबुद्वीपस्थजंबुद्वीपप्रमाणेन समानो ज्ञातविस्तारः स्वयंतिष्ठति कथं भूतो हिरण्ययो हिरण्यकांतिः द्वीपरूपं नाम तद्धारयति द्वीपाख्याकारः
तच्चामैव हितद्वीपं प्रसिद्धमिदं द्वीपशब्दो न पुंसकोपि ॥ ३ ॥ तत्रैव तद्वृक्षाधेवाग्निमूर्तिमांस्तिष्ठति लोकानां देवीधर्मानुपादिशुन्स्वयं

टी.अ.

१२

श्रीनारद उवाच ॥ जंबुद्वीपो यथाचायं यत्प्रमाणेन कीर्तितः ॥ तावता सर्वतः क्षारोदधिना परिवेष्टितः ॥ १ ॥ जं
ब्वाख्ये जयथामेरुस्तथा क्षारोदकेन च ॥ क्षारोदधिस्तु द्विगुणं प्लक्ष्मक्षेत्रे नोपवेष्टितः ॥ २ ॥ यथैव परिखाबाह्योप
वनेन हि वेष्टिते ॥ प्लक्ष्मक्षेत्रं स्वयं जंबुद्वीपप्रमाणो द्वीपरूपधृक् ॥ ३ ॥ हिरण्ययोऽग्निस्तत्रैव तिष्ठतीति विनिश्चयः
॥ प्रियव्रतात्मजस्तत्र सप्तजिह्व इति स्मृतः ॥ ४ ॥ अग्निस्तदधिपस्त्विध्मजिह्वः स्वं द्वीपमेव च ॥ विभज्य सप्त
वर्षाणि स्वपुत्रेभ्यो ददौ विभुः ॥ ५ ॥ स्वयमात्मविदां मान्यां योगचर्यां समाश्रितः ॥ तेनैव चात्मयोगेन भगवंतमु
पागतः ॥ ६ ॥ शिवं च यवसंभद्रं शांतं क्षेमामृतं तथा ॥ अभयं चेति सप्तैव तद्वर्षाणि स देक्षतां ॥ ७ ॥ तेषु प्रोक्तान
द्वीः सप्तगिरयः सप्तचैव हि ॥ अरुणानृग्णांगिरसीसावित्री सुप्रभातिका ॥ ८ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १२ ॥

च देव्याराधनं कुर्वन्नित्यनुक्तमपि पूर्वग्रंथानुरोधेनौच्यं कोसावग्निस्तत्राह सप्तजिह्व इति स्मृतौ यैः सौमित्रित्यर्थः प्रियव्रतात्मज इत्यस्य तु त
दुत्तरदेशे कस्येनैव धमजिह्व इत्यनेनान्वयः तदुक्तं विष्णुभागवते यत्राग्निरुपास्ते सप्तजिह्वस्तस्याधिपतिः प्रियव्रतात्मज इध्मजिह्व इति ॥ ४ ॥
सप्तद्वीपाधिपतिरिध्मजिह्वः स्वं द्वीपं स्वयं विभज्य तानि सप्तवर्षाणि सप्तखंडानि स्वपुत्रेभ्यो दक्ष्यमाणेभ्यो ददौ ॥ ५ ॥ भगवंतं परब्रह्मात्मकमुपाग
तः ॥ ६ ॥ तत्रान्येनैव तत्पुत्रनामानि तान्येव तद्वर्षनामानि बोध्यादीत्यभिप्रायेण वर्षनामान्याह शिवमिति भद्रं सुभद्रं क्षेमामृतं
लोकां पृथगेत्यर्थः ॥ ७ ॥ तद्वीर्यं तत्राद्यं सीति पूर्वसवर्णदीर्घः सुप्रभातिका सुप्रभाता ॥ ८ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १२ ॥

॥२०॥

दे.भा.अ.

॥२१॥

॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ श्रुतधरादयश्चत्वारो ब्राह्मणादिस्थानीयावर्णाः ॥ २५ ॥ स्वगोभिः स्वराश्विभिः अन्नमिति शो
षः कृष्णशुक्रयोः पक्षयोः पितृदेवभ्यो विभजान्निस्तान्वयः ॥ २६ ॥ सुरोद्गाहनंतरामित्यर्थः द्विगुणः पूर्वद्वीपपेक्षया सुरोद्गाद्विगुण इति वा
जातः स एव सप्तभ्यः स्वपुत्रेभ्यो ददौ धरां ॥ तद्वर्षाणां च नामानि कथितानि निबोधत ॥ २७ ॥ सुरोचनं सौमनस्यं
रमणं देववर्षकं ॥ पारिभद्रं तथा चाप्यायनं चाविज्ञातनामकं ॥ २८ ॥ तेषु वर्षाद्रयः सप्त सप्तैव सरितः स्मृताः ॥
सरसः शतशृंगश्च वामदेवश्च कंदकः ॥ २९ ॥ कुमुदः पुष्पवर्षश्च सहस्रश्रुतिरेव च ॥ एते च पर्वताः सप्त नदीनामा
नि चोच्यते ॥ ३० ॥ अनुमतिः सिनीवाली सरस्वती कुहूस्तथा ॥ रजनी चैव नंदा चराकेति परिकीर्तिताः ॥ ३१ ॥
तद्वर्षपुरुषाः सर्वे चातुर्वर्ण्यसमावहयाः ॥ श्रुतधरेस्वीर्यधरो वसुंधर इषुंधरः ॥ ३२ ॥ भगवंतं वेदमयं यजंते सोम
मीश्वरं ॥ स्वगोभिः पितृदेवभ्यो विभजन् कृष्णशुक्रयोः ॥ ३३ ॥ सर्वासांच प्रजानां च राजा सोमः प्रसीदतु ॥
एवं सुरोद्गातृद्विगुणः स्वमानेन प्रकीर्तितः ॥ ३४ ॥ घृतोदेनावृतः सोयंकुशद्वीपः प्रकाशते ॥ यस्मिन्नास्ते कुशस्तं
द्वीपस्याकारो ज्वलन् ॥ ३५ ॥ स्वशष्परोचिषा काष्ठाभासयन् परि तिष्ठते ॥ हिरण्यरेतास्ततद्वीपपतिः
प्रेयव्रतः स्वराट् ॥ ३६ ॥ स्वपुत्रेभ्यश्च सप्तभ्यस्तद्वीपं सप्तधा भजत् ॥ वसुश्च वसुदानश्च तथा दृढरुचिः परः ॥
३७ ॥ नाभिमुत्तस्तुत्यव्रतौ विविक्तनाम्न देवकौ ॥ तेषां वर्षेषु सप्तैव सीमागिरिवराः स्मृताः ॥ ३८ ॥ नद्यः सप्तै
व सती हतन्नामानि निबोधत ॥ चक्रस्तथा चतुशृंगः कपिलश्चित्रकूटकः ॥ ३९ ॥ देवानीकश्चोर्ध्वसेमाद्रविणः
सप्तपर्वताः ॥ रसकुल्यामधुकुल्या मित्रविंदा तथैव च ॥ ४० ॥ श्रुतविंदा देवगर्भा घतप्युन्मंत्रमालिके ॥ यत्प
योभिः कुशद्वीपवासिनः सर्व एव ते ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥

॥ ४६ ॥ कुशद्वीपे देवेन कृतः ॥ ४७ ॥ स्वशष्परोचिषा स्वशष्पाभिस्वकोमलशिखास्तेषां रोचिषा ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥
५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥

टी.अ.
१२

॥२१॥

कुशलादयश्चत्वारो ब्राह्मणादिस्थानीयावर्णाः ॥ ३५ ॥ कर्मजकौशलैः कुशलकर्मभिः ॥ ३६ ॥ देवातेदः त्वं साक्षात्परस्य ब्रह्मणो ह्यस्य
 शरासि अतो ते कर्मायज्ञेन परमेश्वरमेव यज अंगानां नाग्नादत्तमंगिनं समर्पयेत्यर्थः ॥ ३७ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके अष्टमस्कंधे द्वादशोऽर्धो

कुशलकर्मविदश्चैवाप्यभियुक्तस्तथैव च ॥ कुलकश्चेतिसंज्ञाभिश्चतुर्वर्णाः प्रकीर्तिताः ॥ ३५ ॥ जातवेदस रूपं
 त्वं कर्मजकौशलैः ॥ यजंते देववर्याभाः सर्वे सर्वविदो जनाः ॥ ३६ ॥ परस्य ब्रह्मणः साक्षाज्जातवेदोऽसि ह्यस्य
 कर्तृ ॥ देवानां पुरुषां गानां यज्ञेन पुरुषं यज ॥ ३७ ॥ एवं यजंते ज्वलनं सर्वद्वीपाधिवासिनः ॥ इति श्रीदेवीभा
 गवते महापुराणे अष्टमस्कंधे द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ नारद उवाच ॥ शिष्टद्वीपश्चमाणं च वद सर्वार्थदर्शन ॥ ये
 न विज्ञातमात्रेण परानंदमयो भवेत् ॥ १ ॥ श्रीनारायण उवाच ॥ कुशद्वीपस्य परितो घृतोदावरणं सहत् ॥ त
 तो बहिः कौचद्वीपो द्विगुणः स्यात्स्वमानतः ॥ २ ॥ क्षीरोद्वेन वृत्ते भवति यस्मिन् कौचाद्रिरस्ति च ॥ नाम निर्वर्त
 कः सोऽयं द्वीपस्य परिवर्तते ॥ ३ ॥ योऽसौ गृहस्य शक्त्या च भिन्नकुक्षिः पुरा भवत् ॥ क्षीरोद्वेनाऽसि च्यमानो वरुणेन
 चरति ॥ ४ ॥ घृतपट्टं नाम यस्य भिभाति किल नायकः ॥ प्रियव्रतात्मजः श्रीमान् सर्वलोकनमस्कृतः ॥ ५ ॥
 स्वद्वीपं तु निभज्यैव सप्तधा स्वात्मजान् ददौ ॥ पुत्रनाम सुवर्षेषु वर्षपान् सन्निवेशयन् ॥ ६ ॥ स्वयं भगवतस्त
 स्य शरणं संजगाम ह ॥ आमोमधुरुहश्चैव मेघपृष्ठः सुधामकः ॥ ७ ॥ आजिष्टे लोहे हितार्णश्च वनस्पतिर्तिव्र
 तः ॥ नमान्यश्च सप्तैव विख्याता भुवि सर्वतः ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥

ध्यायः ॥ १२ ॥ अर्द्धाधिकैश्च षट्प्रशान् महापदैरनंतरं ॥ शिष्टद्वीपसमाचारो यथा वदनुकर्म्यते ॥ १ ॥ शिष्टद्वीपेति ॥ २ ॥ द्विगुणः पूर्वद्वीपापेक्ष
 या ॥ ३ ॥ त्रयानिर्वर्तकः सप्तधा द्वीपनामोऽयमहकः ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥

भा.अ.

॥२२॥

॥ १९ ॥ २० ॥ पुरुषादसोमस्यैवादिस्थानीयावर्णाः ॥ २१ ॥ २२ ॥ आपः पुरुषवीर्याः स्थपुनंतीर्भूवः स्व

टी.अ.

१३

शुद्धोर्वैवर्धमानश्च भोजनश्चोपवर्हणः ॥ नन्दश्चनन्दनः सर्वतोभद्रइतिकीर्तिताः ॥ १९ ॥ अभयाअमृतौघाचा
र्यत्ततीर्थवतीति च ॥ वृत्तिरूपवतीशुद्धापवित्रवतिकातथा ॥ १० ॥ एतासामुदकं पुण्यं चातुर्वर्ण्येन पीयते ॥
पुरुषः स पृथोतद्वत्तद्विणास्यश्च देवकः ॥ ११ ॥ एते चतुर्वर्णजाताः पुरुषानिवसंति हि ॥ तत्रत्याः पुरुषा आपो
मयं केवमपां पतिं ॥ १२ ॥ पूर्णेनां जलिना भक्त्या यजंते विविधक्रियाः ॥ आपः पुरुषवीर्याः स्थपुनंतीर्भूवः स्व
रः ॥ १३ ॥ तानः पुनीतामीव ब्रवीः स्पृशतामात्मना भुवः ॥ इति मंत्रजपांते च स्तुवंति विविधैः स्तवैः ॥ १४ ॥
एवं परस्तात्क्षीरोदात्परितश्चोपवेशितः ॥ द्वात्रिंशल्लक्षसंख्याकयोजनायाममाश्रितः ॥ १५ ॥ स्वमानेन च
द्वीपो यं दधिमंडोदकेन च ॥ शाकद्वीपो विशिष्टो यं यस्मिन् शाको महीरुहः ॥ १६ ॥ स्वक्षेत्रव्यपदेशस्य कारणं स
हिनारद ॥ प्रैयत्रतोधिपस्तस्य मेधातिथिरिति स्मृतः ॥ १७ ॥ विभज्य सप्तवर्षाणि पुत्रनामानितेषु च ॥ सप्त
पुत्राभिजान्स्थाप्य स्वयं योगगतिं गतः ॥ १८ ॥ पुरोजवो मनः पूर्वजयोथ पवमानकः ॥ धूम्रानीकश्चित्ररेफो
बहुरूपो यविश्वधृक् ॥ १९ ॥ मर्यादागिरयः सप्तनद्यः सप्तैव कीर्तिताः ॥ ईशान ऊरुशृंगोथबलभद्रः शतकेस
रः ॥ २० ॥ सहस्रस्त्रोतको देवपालोऽप्यंते महासनः ॥ एते द्वयः सप्तचोकाः सरिन्नानामानि सप्त च ॥ २१ ॥ अन
घाप्रथमायुर्दाउभयस्पृष्टिरेव च ॥ अपराजिता पंचपदी सहस्रस्तुतिरेव च ॥ २२ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ६९ ॥

त एव भूवः स्वः त्रैलोक्यं पुनंत्यः तभवंत्यो नोस्माकं स्पृशतां स्पर्शनं कुर्वतां भुवः शरीराणि पुनंतु यतः आत्मना स्वरूपेणैव अमीव ब्रवीः पापहंत्र्यः

॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७० ॥

॥२२॥

॥ २३ ॥ २४ ॥ आत्मकेतुभिः प्राणादिवृत्तिभिः ॥ २५ ॥ २६ ॥ शाकद्वीपद्विसंगुणः शाकद्वीपद्विगुणपरिमाणइत्यर्थः ॥ २७ ॥
ज्वलन्निशिखावदमलानां कनकपत्राणामयुतानियस्मिस्तत् ॥ २८ ॥ २९ ॥ तस्मिन्द्वीपे एकएवपर्वतः खंडद्वयं चेत्याह तद्वीपे एकएवेति ॥

ततो निजधृतिश्चोक्ताः सप्तनद्यो महोज्ज्वलाः ॥ तद्वर्षपुरुषाः सर्वे सत्यव्रतक्रतुव्रतौ ॥ २३ ॥ दानव्रतानुव्रतौ च चतु
र्वर्णा उदीरिताः ॥ भगवंतं प्राणवायुं प्राणायामेन संयुताः ॥ २४ ॥ यजंति निर्धूत रजस्तमसः परमं हरिं ॥ अंतः
प्रविश्य भूतानि यो विभर्त्यात्मकेतुभिः ॥ २५ ॥ अंतर्यामीश्वरः साक्षात्पातुनो यद्वशे इदं ॥ परस्तादधिमंडोदा
त्तस्तु बहुविस्तरः ॥ २६ ॥ पुष्करद्वीपनामायं शाकद्वीपद्विसंगुणः ॥ स्वसमानेन स्वादूदकेनायं परिवेष्टितः
॥ २७ ॥ यत्रास्ते पुष्करं भ्राजदग्निचूडानि भानि च ॥ पत्राणि विशदानीह स्वर्णपत्रायुतायुतं ॥ २८ ॥ श्रीमद्भ
गवतश्चायमासनं परमेष्ठिनः ॥ कल्पितं लोकगुरुणा सर्वलोकसि सृक्षया ॥ २९ ॥ तद्वीपे एकएवायं मानसोत्त
रनामकः ॥ अर्वाचीनपराचीनवर्षयोरवधिर्गिरिः ॥ ३० ॥ उच्छ्रायायामयोः संख्यायुतयोजनसंमिता ॥ यत्र
दिक्षु च चत्वारि च तसृषु पुराणि ह ॥ ३१ ॥ इंद्रादिलोकपालानां यदुपर्यर्कनिर्गमः ॥ मेरुप्रदक्षिणी कुर्वन् भानुः
पर्येत्यत्राहि ॥ ३२ ॥ संवत्सरात्मकं चक्रं देवाहोरात्रतो भ्रमन् ॥ प्रैयव्रतो धिपो वीतिहोत्रः स्वात्मजकद्वयं ॥ ३३ ॥
वर्षद्वये परिस्थाप्य वर्षनामधरं क्रमात् ॥ रमणो धातकिश्चैव तत्तद्वर्षपती उभौ ॥ ३४ ॥ कृताः स्वयं पूर्वजवद्भग
वद्भक्तितत्पराः ॥ तद्वर्षपुरुषा ब्रह्मरूपिणं परमेश्वरं ॥ ३५ ॥ सकर्मकेन योगेन यजंति परिशीलिताः ॥ यत्तत्कर्म
मयं लिङ्गं ब्रह्मलिङ्गं जनोर्चयेत् ॥ ३६ ॥

॥ ६१ ॥

॥ ६१ ॥

॥ ६१ ॥

३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ देवाहोरात्रतः देवानामहोरात्राभ्यामुत्तरदक्षिणायनाभ्यामित्यर्थः ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ब्रह्मरूपिणं कमलासनमूर्तिं
॥ ३५ ॥ सकर्मकेन ब्रह्मसालोक्त्यादिसाधनेन कर्ममयं कर्मफलरूपं ब्रह्मलिङ्गं तेषां स्मृत् ॥ ३६ ॥

॥ ७३ ॥

द.भा.अ.

॥२३॥

एकस्मिन्नेनपरमेश्वरेतोनिष्ठास्यतत् अतएववस्तुतोद्वैतं इतिश्रीदेवीभागवततिलकेअष्टमस्कंधेत्रयोदशोऽध्यायः ॥२३॥ त्रिशद्विरेकेनोनै
स्तुपयैरथततःपरं॥लोकालोकमिरेःसम्यक्व्यवस्थास्पष्टमुच्यते॥१॥ततःपरस्तादिति ततःशुद्धोदात्परस्तात् लोकःसूर्याद्यालोकवान्देशोलो
कस्तद्ब्रहितस्तयोरंतरालेमध्ये तयोर्विभागार्थयःकल्पितः सलोकालोकाचलोस्तीत्यर्थः ॥ २ ॥ ततःपरस्तादित्युक्तंतदेतत्कियतांतरेणे
त्यपेक्ष्यतदंतर्वातेनीमूमिमाह यावदस्तीति यावन्मानसोत्तरमेवोरंतरंसार्धसमलक्षोत्तरसार्धकोटिपरिमितं तावतीभूःशुद्धोदात्परतोस्ति
तत्रप्राणिनोपिसंति कांचनीभूमिरित्यत्रपूर्वोक्तभूमेरन्येतिशेषः एवंचततःपूर्वोक्तभूमेरन्याकांचनीभूमिरस्तीत्यर्थः साचैकोनचत्वारिंशल्ल
क्षतोत्तरकोट्यष्टकपरिमिताज्ञेया अर्धगुणकरद्विपेनसहशुद्धोदःषण्णवतिलक्षाणि एवंहिसतिमेवल्लोकालोकयोरंतरंसार्द्धद्वादशकोटिपरिमितं

एकांतमद्वयंशांतंतस्मैभगवतेनमः इ०दे०भा०अष्ट० त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३॥ श्रीनारायणउवाच ॥ ततः
परस्तादचलोलोकालोकेतिनामकः ॥ अंतरालेचलोलोकयोर्यःपरिकल्पितः ॥१॥ यावदस्तिचदेवर्षेह्यंत
रंमानसोत्तरात् ॥ सुमेरोस्तावतीशुद्धाकांचनीभूमिरस्तिहि॥२॥दर्पणोदरतुल्यासासर्वप्राणिविवर्जिता ॥ य
स्यांपदार्थःप्रहितोनकिंचित्प्रत्युदीयते ॥३॥अतःसर्वप्राणिसंघरहितासाचनारद॥लोकालोकइतिव्याख्या
दत्रपरिकल्पिता॥४॥लोकालोकांतरेचास्यवर्ततेसर्वदास्थितिः॥ईश्वरेणसलोकानांत्रयाणामंतगःकृतः॥५॥

वक्ष्यमाणमुपपन्नंभवति एतदेवशैवतंत्रेषूक्तं कोटिद्वयंत्रिपंचाशल्लक्षाणिचततःपरं पंचाशच्चसहस्राणिसतद्वीपाःसमागताः ततोहेममयी
भूमिर्दशकोटिवरानने देवानांक्रीडनार्थायलोकालोकस्ततःपरमिति अत्रचदशकोटित्वंपूर्वोक्तभूम्यासहद्वष्टव्यं ॥ २ ॥ सर्वप्राणिविवर्जि
तेतिदेवव्यतिरेकेणेतिविज्ञेयं देवानांक्रीडनार्थायेत्युक्तत्वात् प्रत्युदीयते प्रत्युपलभ्यते सुवर्णमेवभवतीत्यर्थः ॥ ३ ॥ यतःसुवर्णमेवभवतिनतु
गौषधिधान्यादिकंतोन्यप्राणिनिवासयोग्यस्यानाभावादन्यप्राणिनोदेवादिव्यतिरिक्तानसंतीत्याह अतइति ॥ ४ ॥ लोकालोकइतिव्याख्या
यत्रपरिकल्पिता पूर्वतस्यकारणंशृण्वित्याह लोकालोकांतरेचेति लोकबद्देशलोकाभावबद्देशयोरंतरेतोस्यवर्तस्यस्थितिर्वर्ततेतद्व्यर्थः
केनैतस्यास्थितिःकल्पितातत्राह ईश्वरेणेति अंतगःलोकत्रयस्यांतरेपरिमितोमर्यादास्योपब्रहितः ॥ ५ ॥

टी.अ.

१४

॥२३॥

नचेमित्याह यस्मात्प्रतिबंधकात् सूर्यआदिर्येषां ध्रुवोत्तोयेषां आतन्वानाः समंतात्प्रकाशयंतः परतो गंतुं न शक्नुवन्ति तावदुन्नहनमुत्सेधस्तदनु
स्य आयामश्च विस्तारो यस्य ध्रुवादप्युच्छिन्नत्वाद्भिलोकी मर्यादाभूत इत्यर्थः ॥ ६ ॥ ७ ॥ एतावानिति संस्थाकारः कथितः कविभिर्मया वा
लोकालोकाचलस्य परिमाणमाह सात्वेति सोर्यंतुलोकालोकाचलश्चतुर्थीशसार्द्धद्वादशकोट्योमेरोरेकत इति द्रष्टव्यं ॥ ८ ॥ तस्योप
रिपर्वतोपरि ॥ ९ ॥ १० ॥ तेषांचेति तेषां दिग्गजानां स्वाविभूतीनां स्वांशभूतानां महेंद्रादीनां च विविधवीर्योपबृंहणाय सकललोकस्वस्तये

सूर्यादीनां ध्रुवांस्तानां रश्मयो यद्वशादिह ॥ अर्वाचीनाश्च त्रीं लोकानां तन्वानाः कदापि हि ॥ ६ ॥ पराचीनत्वभा
जोहिनभजंति च नारद ॥ तावदुन्नहनायामः पर्वतेन्द्रो महोदयः ॥ ७ ॥ एतावां लोकविन्यासोऽयं संस्थामानलक्षणैः
॥ कविभिः संपंचाशत्कोटिभिर्गणितस्य च ॥ ८ ॥ भूगोलस्य चतुर्थीशो लोकालोकाचलो मुने ॥ तस्योपरि
चतुर्दिक्षु ब्रह्मणा चात्मयोनिना ॥ ९ ॥ निवेशिता दिग्गजा ये तन्नामानि निबोधत ॥ ऋषभः पुष्कचूडोथवामनो
थापराजितः ॥ १० ॥ एते समस्तलोकस्य स्थितिहेतव ईरिताः ॥ तेषां च स्वविभूतीनां बहुवीर्योपबृंहणं ॥
॥ ११ ॥ विशुद्धसत्त्वं चैश्वर्यं वर्धयन् भगवान्हरिः ॥ आस्ते सिध्यष्टकोपेतो विष्वक्सेनादिसंबृतः ॥ १२ ॥ निजा
युधैः परिवृतो भुजदंडैः समंततः ॥ आस्ते सकललोकस्य स्वस्तये परमेश्वरः ॥ १३ ॥ आकल्पमेवं वेषं सगतो
विष्णुः सनातनः ॥ स्वमायारचितस्यास्य गोपीथायात्मसाधनः ॥ १४ ॥ योतर्विस्तार एतेन ह्यलोकपरिमाण
कं ॥ व्याख्यातं यद्वा हि लोका लोकाचल इतीरणात् ॥ १५ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥

च भगवांस्तस्मिन्नास्ते इत्यन्वयः किं कुर्वन् आत्मनः स्वस्य यद्विशुद्धं सत्त्वं तत्संधारयमाणः आविः कुर्वन् कीदृशं सत्त्वं धर्मज्ञानादीन्यष्टमहासि
द्धयश्चोपलक्षणं यस्य तत् दंडैर्दंडैरुपलक्षितः समहाविभूतेः परमैश्वर्यस्य पतित्वादेकयैव मूर्त्या आत्मनो योगमाययारचितस्यास्य लोकस्य गोपीथा
यरक्षणा यैष भगवानेवंभूत आकल्पवेवं गत इति सार्धं त्रिंश्लोकानामर्थः ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ योतरिति योयमंतरविस्तार आख्यातः
एतेन लोकपरिमाणं मेरोरेकतः सार्द्धद्वादशकोट्यो व्याख्यातं भवति यद्यस्मादेतस्माद्वा हि लोका लोकाचलो भवतीति कथितं तस्मादित्यर्थः ॥ १५ ॥

दे.भा.अ.

॥२४॥

ततः परस्तालोका लोका चलात् आलोकाद्वापरस्तात्तुविशुद्धादिजपुत्रानयनेजुनस्यश्रीकृष्णेनदर्शिता विस्तारेणोक्तं ब्रह्मांडमानं सर्वतोऽपि निरूपयति अंडमध्यगतइति अंडमध्यगतः कितन्मध्यंतदाह द्यावाभूम्योः पूर्वोत्तरकपालयोर्यदंतरं मध्यस्थानं ॥ १६ ॥ सर्वतः पंचविंशति कोट्यः अंडमध्यावस्थाने कारणं तन्नामनिर्वचनेनाह मृतेऽचेतने एष वै राजरूपेण यस्मात्प्रविष्टस्तदित्यर्थः ॥ १७ ॥ किंच सूर्येणैवाविभ

टी.अ.

१४

ततः परस्ताद्योगेशगतिं शुद्धांबरं बहिः ॥ अंडमध्यगतः सूर्यो द्यावाभूम्योर्यदंतरं ॥ १६ ॥ सूर्याडगोलयोर्मध्ये कोट्यः स्युः पंचविंशतिः ॥ मृतेऽएष एतस्मिन् जातो मार्तण्डशब्दभाक् ॥ १७ ॥ हिरण्यगर्भ इति यद्विरण्याड समुद्रवः ॥ सूर्येण हि विभज्यंते दिशः खंद्योर्महीभिदा ॥ १८ ॥ स्वर्गापवर्गौ नरकारसौ कांसि च सर्वशः ॥ देवतिर्यङ्मनुष्याणां सरीसृपसविरुधां ॥ १९ ॥ सर्वजीवनिकायानां सूर्य आत्मा दृगीश्वरः ॥ एतावान्भूमंडलस्य सन्निवेश उदाहृतः ॥ २० ॥ एतेन हि दिवो मानं वर्णयंति च तद्विदः ॥ द्विदलानां च निष्पावादीनां च दलयोर्यथा ॥ २१ ॥ अंतरेण तयोरंतरिक्षं तदुभयसंधितं ॥ यन्मध्यगश्च भगवान्भानुर्वैतपतावरः ॥ २२ ॥ आतपेन त्रिलोकीं च प्रतपत्येव भासयन् ॥ उत्तरायणमासाद्य गतिमांघ्रं वितन्वते ॥ २३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥

अंतरेण तयोरंतरिक्षं भिदा अन्योपि विभागः स्वर्गापवर्गौ भोगमोक्षदेशौ रसौ कांसि अतलादीनि ॥ १८ ॥ उपासनार्थमाह देवादीनां सूर्य आत्मा दृगीश्वरेणैवाधिष्ठाता च ॥ १९ ॥ भूमंडलसन्निवेशकथनमुपसंहरति एतावानिति विस्तारेण पंचाशत्कोट्यः उत्सेधेन पंचविंशतिः ॥ २० ॥ एतत्परिमाणं दिवोऽलोकस्य तत्र दृष्टान्तो द्विदलयोर्मध्ये यैकस्य मानेनापरस्य मानमुपदिश्यते तद्वत् ॥ २१ ॥ तयोर्विदलयोर्मध्ये यदंतरं कितन्नाह तदुभयसंधितं तद्भ्यामुभयतः संलग्नं यन्मध्यगोयस्यांतरिक्षस्य मध्यग इत्यर्थः ॥ २२ ॥ २३ ॥ ॥ ७४ ॥

॥२४॥

उत्तरायणं गत्वा किमिति गतिमांशं करोति तेन च किं भवति तदाह आरोहणस्थानमुच्चस्थानं पर्वतमारोहतियतस्तस्य गतिमांशं प्रसिद्धमेव तथा
त्रापि उत्तरायणकाले आरोहणस्थानेन गच्छति तेन चाहोदैर्घ्यं दिवसदैर्घ्यं भवतीत्यर्थः एवमेवावरोहस्थानेन नीचमार्गेण गमने गतिशैर्घ्यां दिवसात्प
दं भवतीत्याह दक्षिणायनेति ॥ २४ ॥ एवमेव साम्यमार्गेण गच्छतः साम्यं भवतीत्याह विषुवदिति ॥ २५ ॥ तदेव प्रपंचयति यदेति
॥ २६ ॥ समानानीति अत्यंतवैषम्याभावात् समानानीत्युक्तं ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके ऽष्टमस्कंधे चतुर्दशो

आरोहणस्थानमसौ गत्वा होदैर्घ्यमाचरेत् ॥ दक्षिणायनमासाद्य गतिशैर्घ्यं वितन्वते ॥ २४ ॥ अवारोहस्थान
मसौ गच्छन् ह्रस्वं दिनं चरेत् ॥ विषुवत्संज्ञमासाद्य गतिसाम्यं वितन्वते ॥ २५ ॥ समस्थानमथासाद्य दिनसा
म्यं करोति च ॥ यदा च मेषतुल्योऽसं चरेद्दिदिवाकरः ॥ २६ ॥ समानानित्वहोरात्राण्यातनोति त्रयीमयः ॥ वृषा
दिपंचसु यदाराशिष्वर्को विरोचते ॥ २७ ॥ तदाहानि च वर्धते रात्रयोपि ह्रस्वसंति च ॥ वृश्चिकादिषु सूर्यो हियदासं
चरते रविः ॥ २८ ॥ तदापीमान्यहोरात्राण्यभवंति विपर्ययात् ॥ २९ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे ऽष्टम
स्कंधे चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ श्रीनारायण उवाच ॥ अतः परं प्रवक्ष्यामि भानोर्गमने मुत्तमं ॥ शीघ्रमंदादिग
तिभिस्त्रिविधं गमनं रवेः ॥ १ ॥ सर्वग्रहाणां त्रीण्येव स्थानानि सुरसत्तम ॥ स्थानं जरद्वयं मध्यंतथैरावतमुत्तरं
॥ २ ॥ वैश्वानरं दक्षिणतो निर्दिष्टमिति तत्त्वतः ॥ अश्विनीकृत्तिकायाम्यानागवीथीति शब्दिता ॥ ३ ॥ रोहिण्या
द्रागृगशिरोजवीथ्याभिधीयते ॥ पुण्याश्लेषा तथादित्यावीथी चैरावती स्मृता ॥ ४ ॥

॥ ६२ ॥

भायः ॥ २४ ॥ पंचाधिकैश्च चत्वारिंशत्पदैरथ विस्तरात् ॥ रवेर्गमनमांशादिप्रकारः सम्यगुच्यते ॥ १ ॥ २ ॥ मध्यं गतिस्थानं जरद्वयसंज्ञक
मुत्तरमैरावतं दक्षिणं वैश्वानरमित्यर्थः ॥ २ ॥ तत्रैकैकं स्थानं वीथीत्रयात्मकमस्तीत्याह अश्विनीति याम्याभरणी आदित्यादि
विश्वनासापुनर्वसुः तथ चित्राभिधिभिराश्विन्यादिनक्षत्रैर्नाम वीथीगजवीथी ऐरावती चेत्युत्तरमार्गेण वीथीत्रयं संपन्नं ॥ ३ ॥ ४ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.अ.

॥२५॥

पूर्वाफल्गुनी उत्तराफल्गुनी मघा चैतिनक्षत्रत्रयादिमन्त्रावर्षभीमती ॥ ५ ॥ तथा च त्रिभिस्त्रिभिः पूर्वाफल्गुन्यादिनक्षत्रैरवर्षभीमोवीथीजारद्वी
वीथीतिवैषुवते मध्यममार्गे वीथीत्रयसंपन्नं ॥ ६ ॥ मूलेति मूलनक्षत्रं व्याषाढापूर्वाषाढेत्यर्थः ॥ ७ ॥ मार्गीमृगवीथीत्यर्थः तथा च त्रिभिस्त्रिभिः
भिर्मूलादिनक्षत्रैरजवीथीमृगवीथीवैश्वानरीचेति दक्षिणमार्गे वीथीत्रयसंपन्नं ॥ ८ ॥ उत्तरायणमिति युगाक्षांतर्निबद्धयोः पाशयोरित्यन्वयः

टी.अ.

१५

एतास्तु वीथयस्तिस्त्रउत्तरोमार्ग उच्यते ॥ तथा द्वे चापि फल्गुन्यौ मघा चैव वर्षभीमता ॥ ५ ॥ हस्तश्चित्रा तथा स्वा
तीमोवीथीति तु शब्दिता ॥ ज्येष्ठा विशाखानुराधा वीथीजारद्वीमता ॥ ६ ॥ एतास्तु वीथयस्तिस्त्रो मध्यमो मार्ग
उच्यते ॥ मूलाषाढोत्तराषाढा अजवीथ्यभिः शब्दिता ॥ ७ ॥ श्रवणं च धनिष्ठा च मार्गी शतभिषक्तया ॥ वैश्वान
रीभाद्रपदे रेवती चैव कीर्तिता ॥ ८ ॥ एतास्तु वीथयस्तिस्त्रो दक्षिणो मार्ग उच्यते ॥ उत्तरायणमासाद्य युगाक्षान्त
निबद्धयोः ॥ ९ ॥ कर्षणं पाशयोर्वायुबद्धयोरोहणं स्मृतं ॥ तदाभ्यन्तरगान्मंडलाद्रथस्य गते भवेत् ॥ १० ॥ मांघ्रं
दिवसवृद्धिं च जायते सुरसत्तम ॥ रात्रिहासश्च भवति सौम्यायनक्रमो ह्ययं ॥ ११ ॥ दक्षिणायनके पाशे प्रेरणा
द्वरोहणं ॥ बहिर्मेडलवेशेन गतिशैथिल्यं तदा भवेत् ॥ १२ ॥ तदादिनाल्पतारात्रिवृद्धिश्च परिकीर्तिता ॥ वैषुवे पा
शसाम्यात्तु समावस्थानतोरवेः ॥ १३ ॥ मध्यमं डलवेशश्च साम्यं रात्रिदिनादिके ॥ आकृष्येते यदा तौ तु ध्रुवेण
समधिष्ठितौ ॥ १४ ॥ तदाभ्यन्तरतः सूर्यो भ्रमते मंडलानि च ॥ ध्रुवेण मुच्यमानेन पुनारश्मियुगेन तु ॥ १५ ॥

वायुबद्धयोरिताद्वयोः पाशयोर्यत्कर्षणं तदेव रोहणं स्मृतमित्यर्थः अयं भावः ध्रुवेण युगाक्षकोटिनिबद्धवायुपाशद्वयाकर्षणे रथस्यारोहणं त
दाभ्यन्तरमंडलप्रवेशो गतिमांघ्रं चेति दिनवृद्धीरात्रिहासश्च दक्षिणायने च पाशप्रेरणाद्वरोहणे बहिर्मेडलप्रवेशो गतिशैथिल्यं चेत्यहोरात्रयोर्विष
यः नैषुवते तु पाशसाम्यात्समावस्थाने मध्यममंडलप्रवेशो गतिसाम्यं चेत्यहोरात्रयोः साम्यामिति ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥
एतदेव स्पष्टं ॥ आकृष्येते इति तैत्तिरीयशास्त्रेऽप्युक्तं ॥ १४ ॥ १५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥२५॥

मृतीवकोटिस्त्वर्थादुक्तेतिबोधं अथोदयास्तादिकं वक्तुमुपक्रमते तस्मिन्मेराविति पूर्वमेरावष्टपुर्योभिहितास्तास्वैद्रीपुरीपूर्वभागेवर्ततइत्य
र्थः एवमुत्तरत्र ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ प्रवृत्तेश्चनिमित्तानिगमनानीतिशेषः चतुर्दिशमित्यनेनयेमेरोर्दक्षिणेदेशेतेषामैद्री
मारभ्यपूर्वदयः येषांश्चमेदेशेतेषांयाम्यामारभ्ययेउत्तरेतेषांवारुणीमारभ्ययेपूर्वतेषांसौम्यामारभ्येत्युक्तं ॥ २० ॥ सव्यंगच्छन्निति नक्ष
त्राभिमुखतयास्वगत्यामेरुवामतः कुर्वन्नभिप्रदाक्षिणावर्तप्रवहाख्यवायुभ्राम्यमाणव्योतिश्चक्रवशात्प्रत्यहंदक्षिणं करोति अतश्चक्रगतिवशाद

तथैवबाह्यतःसूर्योभ्रमतेमंडलानिच ॥ तस्मिन्मेरौपूर्वभागेपुर्यैद्रीदेवधानिका ॥ १६ ॥ दक्षिणेवैसंयमनीना
मयाम्यामहापुरी ॥ पश्चात्त्रिम्लोचनीनामवारुणीवैमहापुरी ॥ १७ ॥ तदुत्तरेपुरीसौम्याप्रोक्तानामविभाव
री ॥ ऐंद्रपुर्यारिवेःप्रोक्तउदयोब्रह्मवादिभिः ॥ १८ ॥ संयमन्यांचमध्यान्होनिम्लोचन्यानिमीलनं ॥ विभाव
र्यानिशीथःस्यात्तिग्मांशोःसुरपूजितः ॥ १९ ॥ प्रवृत्तेश्चनिमित्तानिभूतानांतानिसर्वशः ॥ मेरोश्चतुर्दिशं
भानोःकीर्तितानिमयामुने ॥ २० ॥ मेरुस्थानांसदामध्यंगतएवविभातिहि ॥ सव्यंगच्छन्दक्षिणेनकरोतिस्व
र्णपर्वतं ॥ २१ ॥ उदयास्तमयेचैवसर्वकालंतुसन्मुखे ॥ दिशास्वशेषासुतथासुरर्षेविदिशासुच ॥ २२ ॥ यैर्य
त्रदृश्यतेभास्वान्सतेषामुदयःस्मृतः ॥ तिरोभावंचयत्रैतितत्रैवास्तमनंरवेः ॥ २३ ॥ नैवास्तमनमर्कस्य
नोदयःसर्वदासतः ॥ उदयास्तमनाख्यंहिदर्शनादर्शनंरवेः ॥ २४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥

तिदूरतोभूंसंलग्नस्येवदर्शनमुदयः आकाशमारुढस्येवदर्शनमध्यान्हः भूमिंप्रविष्टस्येवदर्शनमस्तमयः ततोतीवदूरगमनेनिशीथइतिसमु
द्रतीरस्यदृष्ट्याच अद्भ्योवाएषप्रातरुदेत्यपःसायंप्रविशतीतिश्रुतिव्यवहारो नवस्तुतः इदं सर्वमनासेनिभायाह दक्षिणेनकरोतीत्यादिना
॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

34

IREN

शक्रादीनामिति यदाशक्रपुर्यातिष्ठतितदापुरत्रयंइन्द्रपुरंयमपुरंसौम्यपुरंवेकणौईशानकोणवन्हिकोणौस्पृशति अन्यपुरेषुवेकणेषुचस्यशां
भवामेवैषान्यवधानात् ॥ एवेवेकणस्थोवन्हिपुरनिष्ठोयदाभवतितदन्त्रिकोणान्वन्हिकोणनिर्गतेकोणेशानकोणान्दपुरेइन्द्रपुरंयमपुरंचस्पृश
तिनान्यदुक्तयुक्तेरितिभावः एवंयाम्यादिपुरस्थस्यापिबोध्यं ॥२५॥ २६॥ यदाचैद्याःसकाशात्पंचदशषटिकाभिर्याम्यांप्रचलतेतदा

शक्रादीनां पुरेतिष्ठन्स्पृशत्येष पुरत्रयं ॥ विकर्णौ द्वौ विकर्णस्थस्त्रीन्कोणान् द्वे पुरे तथा ॥ २५ ॥ सर्वेषां द्वीपवर्षा
णामेकस्मिन्तरतः स्थितः ॥ यैर्यत्र दृश्यते भानुः सैव प्राचीति चोच्यते ॥ २६ ॥ तद्वामभागतो मेरुर्वर्ततेति विनिर्णयः ॥
यदि चेद्वाः प्रचलते घटिकादशपंचभिः ॥ २७ ॥ याम्यांतदा योजनानां सपादं कोटियुग्मकं ॥ सार्द्धं द्वादशलक्षा
णि पंचनेत्रसहस्रकं ॥ २८ ॥ प्रक्रामतिसहस्रांशुः कालमार्गप्रदर्शकः ॥ एवंततो वारुणीं च सौम्यामैंद्रीं सहस्र
हृत् ॥ २९ ॥ पर्येति कालचक्रात्माद्युमणिः कालबुद्धये ॥ तथा चान्ये ग्रहाः सोमादयो ये दिविचारिणः ॥ ३० ॥
नक्षत्रैः सह चोद्यंतिसहचास्तं व्रजंतिते ॥ एवं मुहूर्ते नरथो भानोरष्टशताधिकं ॥ ३१ ॥ योजनानां चतुस्त्रिंशल्ल
क्षाणि घ्रमातिप्रभुः ॥ त्रयीमयश्चतुर्दिक्षु पुरीषु च समीरणात् ॥ ३२ ॥ प्रवहाख्यात्सदा कालचक्रं पर्येति भानुमा
न् ॥ यस्य चक्रं रथस्यैकं द्वादशारं त्रिनाभिकं ॥ ३३ ॥

योबनानांसपादकोटिद्वयंसार्धद्वादशलक्षाणि पंचनेत्रसहस्रकं नेत्रशब्देनद्वौ अंकानांवामतोगतिः पंचविंशतिसहस्रंगच्छतीत्यर्थः ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ नक्षत्रैःसहेति यद्यपिवस्तुतःसूर्यस्यापिनक्षत्रैःसहैवोदयास्तमयौतथापितस्यतत्साहित्यादर्शनात्सोमादीनामेवतत्साहित्यमुक्तं ॥ ३१ ॥ त्रयीमयइत्याद्युपासनार्थं प्रवहाख्यात्समीरणाद्वायोरेत्यर्थः ॥ ३२ ॥ कालचक्रंसंबत्सरात्मकं द्वादशसांख्यप्रणयस्य त्रीणिचातुर्मास्यानिनाभयोयस्य ॥ ३३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

टी.अ.

94

॥२६॥

प्रदुःखतवेनेत्रयोयस्य मानसोत्तरपर्वते लक्षार्धादुपरिवावुनदभूमावेति ह प्रव्यं च कंसावदुच्छ्रितमिति मंतव्यं अन्यथा युतमात्रोच्छ्रायत्वान्मानसो
 चरस्यमयोश्चतुरशीत्युच्छ्रायत्वादक्षस्य साम्यानुपपत्तैः ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ तस्मिन्नक्षेत्रे चक्रप्रांशुकृतमूलं निबद्धपूर्वभागः प्रथमोक्षोमेरुमानसोत्तराय
 तः सार्धसतलक्षधिकसार्धकोटिप्रमाणः तस्य तुर्यमानेन सार्धसप्तत्रिंशत्सहस्राधिकैकोनचत्वारिंशलक्षमानेन ध्रुवे कृतो वायुपाशेन निबद्धः

षण्णेमिः कवयस्तंचवत्सरात्मकमूचिरे ॥ मेरुमूर्धनितस्याक्षोमानसोत्तरपर्वते ॥ ३४ ॥ कृतेतरविभागोयः
 प्रोतंतत्ररथांगकं ॥ तैलकारकयंत्रेणचक्रसाम्यं परिभ्रमन् ॥ ३५ ॥ मानसोत्तरनाम्नीहगिरौपर्येतिचांशुमा
 न् ॥ तस्मिन्नक्षेत्रे कृतं मूलं द्वितीयोक्षो ध्रुवे कृतः ॥ ३६ ॥ तुर्यमानेन तैलस्य यंत्राक्षवदितीरितः ॥ कृतोपरितनोभा
 गः सूर्यस्य जगतांपतेः ॥ ३७ ॥ रथनीडस्तुषट्त्रिंशलक्षयोजनमायतः ॥ तत्तुर्यभागतः सोयं परिणाहेन कीर्ति
 तः ॥ ३८ ॥ तावानर्करथस्यात्रयुगस्तस्मिन्हयाः शुभाः ॥ सप्तच्छंदोभिधानाश्च सूरसूतेन योजिताः ॥ ३९ ॥
 वहंति देवमादित्यं लोकानां सुखहेतवे ॥ पुरस्तात्सवितुः सूतोऽरुणः पश्चान्नियोजितः ॥ ४० ॥ सौत्ये कर्मणि संयु
 को वर्तते गरुडाग्रजः ॥ तथैव वालखिल्याख्याऋषयो गुष्ठपर्वकाः ॥ ४१ ॥ प्रमाणेन परिख्याताः षष्टिसाहस्र्यसं
 ख्यकाः ॥ स्तुवंति पुरतः सूर्यसूक्तवाक्यैः सूशोभनैः ॥ ४२ ॥ तथा चान्ये च ऋषयो गंधर्वा अप्सरो रगाः ॥ ग्राम
 ण्यो यातुधानाश्च देवाः सर्वे परेश्वरं ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४४ ॥

परिभागोयस्य ॥ ३६ ॥ उपरितनोभागः कृत इति विभाक्तिलोपच्छांदसः ॥ ३७ ॥ नीड उपवेशस्थानं परिणाहोदैर्घ्यं ॥ ३८ ॥ युग
 इत्यस्य परिणाहेन कीर्तिरित्यनेनान्वयः सप्तच्छंदाभिधानाः गायत्र्यादिच्छंदोनामानः सूरसूतेनारुणेन साराधना ॥ ३९ ॥ पुरस्तात्सवि
 त्पुरिति पुरस्तात्सवितोपि पश्चात्सूर्यमुख आस्ते यदायत्सूर्यस्य पुरस्तात्तस्यैव षष्टि मत्वा त्वादिषु कृतं ॥ ४० ॥ ४१ ॥ सूक्तवाक्यैर्वेदमं
 तैः शुभापि तैर्वा ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.अ.

॥२७॥

एकैकशः सप्तसप्तमासिमासिविरोचनं ॥ ४४ ॥ गव्यूतिः क्रोशयुगं सव्यूत्युत्तरं यथा भवति तथा ॥ ४५ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके अष्टमस्कंधे पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ सप्तमिंशच्छ्लोकवर्गः सोमादीनामधोत्तरं ॥ स्थानगत्यनुसारेण विविधं फलमुच्यते ॥ १ ॥ ममादिकं मनस्यानादिकमित्यर्थः शुभाशुभनिदर्शनातयोः प्राप्तिस्तद्व्यनुसृता सोमादिगत्यनुरोधेन नृणां भवतीत्यर्थः ॥ १ ॥ ननु मेरुं प्रद

टी.अ.

१६

एकैकशः सप्तसप्तमासिमासिविरोचनं ॥ सार्द्धलक्षोत्तरं कोटिनवकं भूमिमंडलं ॥ ४४ ॥ द्विसहस्रं योजनानां सग
व्यूत्युत्तरं क्षणात् ॥ पर्येति देवदेवेशो विश्वव्यापी निरंतरं ॥ ४५ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे ऽष्टमस्कंधे पं
चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ श्रीनारायण उवाच ॥ अथातः श्रूयतां चित्रं सोमादीनां गमादिकं ॥ तद्व्यनुसृतानृणां शु
भाशुभनिदर्शना ॥ १ ॥ यथा कुलालचक्रेण भ्रमता भ्रमतां सह ॥ तदा श्रयाणां च गतिरन्या कीटादिनां भवेत् ॥ २ ॥
एवं हिराशिवंदेन कालचक्रेण तेन च ॥ मेरुधुरं च सरतां प्रादक्षिण्येन सर्वदा ॥ ३ ॥ ग्रहाणां भानुमुख्यानां गतिर
न्येव दृश्यते ॥ नक्षत्रांतरगामित्वान्यराशिगमनात् तथा ॥ ४ ॥ गतिद्वयं चाविरुद्धं सर्वत्रैष विनिर्णयः ॥ स एव भ
गवानादिपुरुषो लोकभावनः ॥ ५ ॥ नारायणो खिलाधारो लोकानां स्वस्तये भ्रमन् ॥ कर्मशुद्धिनिमित्तं तु आत्मा
न वै त्रयीमयं ॥ ६ ॥ कविभिश्चैव वेदेन विजिज्ञास्योर्कधा भवत् ॥ षट्संक्रमेण ऋतुषु वसंतादिषु च स्वयं ॥ ७ ॥
यथोपजोषं ऋतुजान् गुणान्वै विदधाति च ॥ तमेन पुरुषाः सर्वे त्रय्याच विद्यया सदा ॥ ८ ॥ ॥ ६२ ॥

क्षिणी कुर्वत आदित्यस्य राशनामभिमुखं प्रदाक्षिणं मनमुपवर्णितं न तद्व्यारुढं दृष्टं तेन विना भवतीत्याशं कां श्रोतुं मनसि जायमानां निराकरोति य
था कुलालेति कीटादिनामिति दीर्घाभावार्थः ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ चक्रवशात् स्वतश्च गतिद्वयमविरुद्धमिति परिहारार्थः ॥ ५ ॥ ६ ॥
विजिज्ञास्योपितर्कमाणः अर्कधादादशधा ॥ ७ ॥ यथोपजोषं यथा कर्मभोगं ऋतुगुणान्शीतोष्णादीन् ॥ ८ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥

॥२७॥

॥ २० ॥ मतमभीष्टं स एष ह्यस्वगत्यामासादेव्योक्तिकारणमित्याह अथैवेति एष लोकात्तनामात्माद्यावापृथिव्योरंतरेण मध्येयदंतरिक्षंत
 स्वमध्येयत्कालत्रकं तद्वत्तमेष्टादिद्वादशराशिभिः संज्ञायेषां द्वादशमासानां तान्मासान्भुंक्ते इत्यर्थः चैत्रादिसंज्ञास्तु चांद्रमासानां ॥ २० ॥
 संवत्सरस्यावयवानिति पूर्वेष्वन्यः मासमाह पक्षद्वयमास इति इदं चांद्रेण मानेन सपादं चक्षुद्वयसौरेण दिवानक्तं चाहोरात्रमिति पित्र्ये
 ण ॥ २१ ॥ षष्ठमंशराशिद्वयसंक्रतुरित्यर्थः ॥ २२ ॥ यावतार्द्धेन ऋतुत्रयात्मकेन ॥ २३ ॥ तं कालमयनमिति प्राक्तनावर्णयंति अथ

वर्णाश्रमाचारपथातथा म्नातैश्च कर्मभिः ॥ उच्चावचैः श्रद्धया च योगानां च वितानकैः ॥ ९ ॥ अंजसा च यजंते ये
 श्रेयोविंदंति ते मतं ॥ अथैष आत्मा लोकानां द्यावाभूम्यंतरेण च ॥ १० ॥ कालचक्रगतो भुंक्ते मासान् द्वादशराशि
 भिः ॥ संवत्सरस्यावयवान्मासः पक्षद्वयं दिवा ॥ ११ ॥ नक्तं चेति सपादं क्षुद्रयमित्युपदिश्यते ॥ यावता षष्ठमं
 शं सभुंजीत ऋतुरुच्यते ॥ १२ ॥ संवत्सरस्यावयवः कविभिश्चोपवर्णितः ॥ यावतार्द्धेन चाकाशवीथ्यां प्रचरते
 रविः ॥ १३ ॥ तं प्राक्तनावर्णयंति अयनं मुनिपूजिताः ॥ अथ यावन्नभोमंडलं सह प्रतिगच्छति ॥ १४ ॥ का
 ल्स्त्र्येन सह भुंजीत कालं तं वत्सरं विदुः ॥ संवत्सरं परिवत्सरमिडावत्सरमेव च ॥ १५ ॥ अनुवत्सरमिद्वत्सरमि
 ति पंचकमरितं ॥ भानोर्माद्यशौघ्यसमगांतेभिः कालवित्तमैः ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥

यावदिति सह द्यावापृथिव्योर्मंडलाभ्यामिति शेषः ताभ्यामंडलाभ्यां सह गच्छति स सूर्यः ॥ १४ ॥ यं कालं कात्स्त्र्येन षड्ऋतुभिर्द्वादशरा
 शिभिर्वाभुंजीत तं कालं वत्सरं विदुरित्यर्थः स च संवत्सरः पंचधाभिन्न इत्याह संवत्सरपरिवत्सरमिति ॥ १५ ॥ भानोरिति अयं भावः
 यदा सूर्यप्रतिपदिसंक्रांतिस्तदा सौरचांद्रयोर्मासयोर्युगपदुपक्रमो भवति स संवत्सरः ततः सौरमानेन वर्षे षट्दिनानि वर्द्धते चांद्रमानेन षट्हसंती
 तिस्रदशदिनान्यवधामादुभयोरप्यश्वाद्वावो भवति एवं पंचवर्षाणि गच्छंति तन्मध्ये द्वौ मलमासौ भवतस्तत्र पुनः संवत्सरो भवति तदेव मतांतरभेदेन
 संवत्सरदिपंचकं भानोर्माद्यशौघ्यसममिति भिर्भवतीति ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥

दे.भा.अ

॥२८॥

सोमादीनामपि स्थानं कर्षे च ह एवं चंद्र इति अर्कं रादेमभ्योमंडलरूपेभ्यः ॥ १७ ॥ मित्रस्य सूर्यस्य संवत्सरभुक्तिं पक्षाभ्यां भुंक्ते मित्रस्य
मासभुक्तिं सपादभाभ्यां भुंक्ते पक्षाभ्यां सपाददिनद्वयेन भुंक्ते मित्रस्य पक्षभुजिपक्षभुक्तिं दिवसभुक्तिं चरेत् एकदिने नैव भुनक्तित्यर्थः
एवं द्रुततरगमनं द्रुमा भवतीत्यर्थः ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ पूर्वापरसुघस्रकैः पूर्वपक्षापरपक्षाभ्यामहोरात्राणि विलम्बान इत्यर्थः सर्वेषां

टी.अ.

१६

एवं भानोर्गतिः प्रोक्ता चंद्रादीनां निबोधत ॥ एवं चंद्रोर्करश्मिभ्यो लक्षयोजनमूर्ध्वतः ॥ १७ ॥ उपलभ्यमानो मि
त्रस्य संवत्सरभुजिचसः ॥ पक्षाभ्यां चौषधीनाथो भुंक्ते मासभुजिचसः ॥ १८ ॥ सपादभाभ्यां दिवसभुक्तिं पक्ष
भुजिचरेत् ॥ एवं शीघ्रगतिः सोमो भुंक्ते नूनं भचक्रकं ॥ १९ ॥ पूर्यमाणकलाभिश्चामराणां प्रीतिमावहन् ॥ क्षी
यमाणकलाभिश्चापितृणां चित्तरंजकः ॥ २० ॥ अहोरात्राणितन्वानः पूर्वापरसुघस्रकैः ॥ सर्वजीविकायस्य
प्राणोर्जीवः स एव हि ॥ २१ ॥ भुंक्ते चैकैकनक्षत्रं मुहूर्तं त्रिंशता विभुः ॥ स एव षोडशकलः पुरुषोऽनादिरुत्तमः ॥
॥ २२ ॥ मनोमयो व्यन्नमयो मृतधामा सुधाकरः ॥ देवपितृमनुष्यादिसरीसृपसवीरुधां ॥ २३ ॥ प्राणाप्याय
नशीलत्वात्सर्वमय उच्यते ॥ ततो भवक्रं भ्रमति योजनानां त्रिलक्षतः ॥ २४ ॥ मेरुप्रदक्षिणे नैव योजितं चेश्व
रेण तु ॥ अष्टाविंशतिं संख्यानि गणिता नि सहाभिजित् ॥ २५ ॥ ततः शुक्रोद्विलक्षेण योजनानामथोपरि ॥ पुरः
पश्चात्सहैवासावर्कस्त्वं परिवर्तते ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥

जीवनिवहानां प्राणो नमयत्वाद् मृतमयत्वाच्च अतएव जीवनहेतुत्वाज्जीवश्च ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ प्रदक्षिणे नैव न तु तेषां पृथग
न्यासातिरस्तीत्यर्थः योजितं कालचक्रं भ्रमति नैव यो जेतामेव सः सहाभिजित् ॥ २५ ॥ अष्टाविंशतिं संख्यानि गणिता नि सहाभिजित् ॥ २६ ॥
नक्षत्रविशेषेषु कल्पितं तेन सहैव ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥

॥२८॥

॥ २७ ॥ इष्टेर्विष्टं भवति तस्मात्प्रहासमुपशमयति ॥ २८ ॥ शुक्रादिभिः पञ्चसूर्यस्य चरतीत्यर्थः कंचिद्विशेषं
यद्वदयति सौम्योनुभः ॥ २९ ॥ ३० ॥ यदिवक्रः यदि नवक्रः पञ्चविंशतेतर्हि त्रिभिस्त्रिभिः पक्षैः ॥ ३१ ॥ अषानादुःखानां

शीघ्रमंदसमानाभिर्गतिभिर्विचरन्विभुः ॥ लोकाः मनुकूलोयं प्रायः प्रोक्तः शुभावहः ॥ २७ ॥ वृष्टिविष्टं भवति
नोभार्गवः सर्वदामुने ॥ शुक्राद्बुधः समाख्यातो योजनानां द्विलक्षतः ॥ २८ ॥ शीघ्रमंदसमानाभिर्गतिभिः शुक्र
वत्सदा ॥ यदाऽर्काद्वारिच्येत सौम्यः प्रपिणतत्र तु ॥ २९ ॥ अतिवाताभ्रपातानां वृष्ट्यादिभयसूचकः ॥ उपरि
ष्टात्ततोभौमो योजनानां द्विलक्षतः ॥ ३० ॥ पक्षैस्त्रिभिस्त्रिभिः सोयं भुंक्ते राशी नयैकशः ॥ द्वादशापि च देवर्षेयदि
वक्रो न जायते ॥ ३१ ॥ प्रायेणाशुभकृत् सोयं ग्रहो घानां च सूचकः ॥ ततो द्विलक्षमानेन योजनानां च गीष्पतिः ॥
३२ ॥ एकैकस्मिन्नथो राशौ भुंक्ते संवत्सरं चरन् ॥ यदिवक्रो भवेन्नैवानुकूलो ब्रह्मवादिनां ॥ ३३ ॥ ततः शनैश्च
रोघोरोलक्षद्वयपरोमितः ॥ योजनैः सूर्यपुत्रोयं त्रिंशन्मासैः परिभ्रमन् ॥ ३४ ॥ एकैकराशौ पर्येतिसर्वात्राशी
न्महाग्रहः ॥ सर्वेषामशुभो मंदः प्रोक्तः काशविदांवरैः ॥ ३५ ॥ तत उत्तरतः प्रोक्तमेकादशसुलक्षकैः ॥ योजनैः
परिसंख्यातं सप्तर्षीणां च मंडलं ॥ ३६ ॥ लोकानां शंभावयंतो मुनयः सप्तते मुने ॥ यत्तद्विष्णुपदं स्थानं दक्षिणं
क्रमते चते ॥ ३७ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे ऽष्टमस्कंधे षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥

॥ ३२ ॥ यदिवक्रो भवेन्नैवेति यदि नवक्रः स्यात्तर्हि परिवत्सरमित्यर्थः ॥ ३३ ॥ त्रिंशन्मासैरिति एकैकस्मिन् राशौ त्रिंशन्मासान्विलं
बमानः सर्वानेवानुपर्येति तावद्विरनुवत्सरैः प्रायेण हि सर्वेषामशांति करः ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ दक्षिणं क्रमतं चते इति प्रदाक्षिणं प्रक्रमं
वर्तते ॥ ३७ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके ऽष्टमस्कंधे षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥

दे.भा.अ.

॥२९॥

विष्णुर्देवो नमोऽस्तु भगवते सर्वविघ्नहर्त्रे ॥ ध्रुवमंडलसंस्थानं यथा बहनुवर्ष्यते ॥ १ ॥ कैष्णवं परमं पदमस्तीत्यर्थः ॥ १ ॥ यत्र वैष्णवे पदे महाभागवतो ध्रुवोऽस्तीत्यर्थः ॥ २ ॥ समकालमेव युज्यते इति तर्था तेन नक्षत्रगणेन सहित इत्यर्थः ॥ ३ ॥ ४ ॥ कालेनेति सहिध्रुवः सर्वेषां न्योतिर्गणानां सर्वेषां ग्रहनक्षत्राणां दिनां ह्रस्वार्थः ॥ अव्यक्तरं हसास्पष्टवेगेनानिमिषेण कालेन भ्राम्यतां भ्राम्यमाणानां स्थाणुरिवावष्टंभः परमेश्वरेण विहि

टी.अ.
१७

श्रीनारायण उवाच ॥ अथ विमंडलादूर्ध्वयोजनानां प्रमाणतः ॥ लक्षैस्त्रयोदशमितैः परमं वैष्णवं पदं ॥ १ ॥ महाभागवतः श्रीमान्वर्तते लोकवंदितः ॥ औत्तानपादिरिद्रेण वह्निना कश्यपेन च ॥ २ ॥ धर्मेण सह चैवास्ते समकालयुजा ध्रुवः ॥ बहुमानंदक्षिणतः कुर्वद्भिः प्रेक्षकैः सदा ॥ ३ ॥ आजव्यः कल्पजीविनामुपास्ते भगवत्पदं ॥ ज्योतिर्गणानां सर्वेषां ग्रहनक्षत्राणां दिनां ॥ ४ ॥ कालेनानिमिषेणायं भ्राम्यतां व्यक्तरं हसा ॥ अवष्टंभस्थाणुरिव विहितश्चेश्वरेण सः ॥ ५ ॥ भासते भासयन् भासास्वीयया देवपूजितः ॥ मेढिस्तं भेयथा युक्ताः पशवः कर्षणार्थकाः ॥ ६ ॥ मंडलानि चरन्तीमे सवनत्रितयेन च ॥ एवं ग्रहादयः सर्वे भगणाद्या यथाक्रमं ॥ ७ ॥ अंतर्बहिर्विभागेन कालचक्रेनियोजिताः ॥ ध्रुवमेवावलंब्या शुवायुनोदीरिताश्चरन् ॥ ८ ॥ आकल्पांतं चक्रमंति खेयनाद्याः खगा इव ॥ कर्मसारथयो वायुवशाः सर्वतएव ते ॥ ९ ॥ एवं ज्योतिर्गणाः सर्वे प्रकृतेः पुरुषस्य च ॥ संयोगानुगृहीतास्ते भूमौ न निपतन्ति च ॥ १० ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥

तइत्यनयः ॥ ५ ॥ मेढिस्तं भेयति मेढिस्तं भेयुक्ता बद्धाः पशवो बलीवर्दाः ॥ ६ ॥ सवनत्रितयेन त्रिकालं ॥ ७ ॥ ध्रुवमेव मेढिस्थाना पञ्चचरन् चरन्त इत्यर्थः ॥ ८ ॥ खे आकाशे श्येनाद्याः खगाः पक्षिणो यथाक्रमंति गच्छन्ति तद्वा इत्यर्थः ॥ कर्मसारथिः सहायो येषां ॥ ९ ॥ नन्ते न्योतिर्गणानिराभाराः कुतो भुवि पतन्ति तत्राह एवमिति प्रकृतेः पुरुषस्य चयः संयोगो त्यंतस्तेनानुगृहीताः प्रायाशवलवद्रूपभगवत्यनुगृहीताः तान्तित्यर्थः ॥ १० ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७५ ॥

॥२९॥

केचिदेति एतस्यापिशिशुमारचक्रस्यपरिच्छिन्नत्वादितस्यापिकआधारइत्याकां
 क्षयां सर्वव्यापकमायाशबलब्रह्मरूपिणीभगवत्येवाधारइतिवक्तव्यंतस्मात्प्रथममतमं मुख्यमीर्तिकोचैत्यदनेसूचितं योगधारणकर्मणियो
 गधारणायांस्थितमितिशेषः ॥ ११ ॥ १२ ॥ लांगूलेअग्रादधोभागे ॥ १३ ॥ १४ ॥ उत्तरायणभानिअभिजिदादीनिपुनर्वस्वतानिच

ज्योतिश्चक्रंकेचिदेतच्छिशुमारस्वरूपकं ॥ सोपयोगंभगवतोयोगधारणकर्मणि ॥ ११ ॥ यस्यार्वाकशिर
 सःकुंडलीभूतवपुषोमुने ॥ पुच्छाग्रेकल्पितोयोयंध्रुवउत्तानपादजः ॥ १२ ॥ लांगूलेस्यचसंप्रोक्तःप्रजापतिर
 कल्मषः ॥ अग्निरिंद्रश्चधर्मश्चतिष्ठतेसुरपूजिताः ॥ १३ ॥ धाताविधातापुच्छांतेकट्यांसप्तर्षयस्ततः ॥ दक्षि
 णावर्तेभोगेनकुंडलाकारमीयुषः ॥ १४ ॥ उत्तरायणभानीहदक्षपार्श्वेर्षितानिच ॥ दक्षिणायनभानीहसव्ये
 पार्श्वेर्षितानिच ॥ १५ ॥ कुंडलाभोगवेशस्यपार्श्वयोरुभयोरपि ॥ समसंख्याश्चावयवाभवंतिकजनंदन ॥
 ॥ १६ ॥ अजवीथीपृष्ठभागेआकाशसरिदौदरे ॥ पुनर्वसुश्चपुष्यश्चश्रोण्यौदक्षिणवामयोः ॥ १७ ॥ आर्द्रा
 श्लेषेपश्चिमयोःपादयोर्दक्षवामयोः ॥ अभिजिच्चोत्तराषाढानासयोर्दक्षवामयोः ॥ १८ ॥ यथासंख्यंचदेवर्षे
 श्रुतिश्चजलभंतथा ॥ कल्पितेकल्पनाविद्धिनेत्रयोर्दक्षवामयोः ॥ १९ ॥ धनिष्ठाचैवमूलंचकर्णयोर्दक्षवामयोः
 मघादीन्यष्टभानीहदक्षिणायनगानिच ॥ २० ॥ युंजीतवामपार्श्वीयवंक्रिषुक्रमतोमुने ॥ तथैवमृगशीर्षादी
 न्युदग्भानिचयानिहि ॥ २१ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥

तुर्दशनक्षत्राणि दक्षिणपार्श्वेदक्षिणायनानिपुष्यादीन्युत्तराषाढांतानिचतुर्दशवामपार्श्वे ॥ १५ ॥ १६ ॥ आकाशसरित्आकाशगंगा
 भौदरेउदरेदक्षयोः तदेवस्थानविशेषेणविभज्यदर्शयति पुनर्वसुश्चेति दक्षिणवामयोःश्रोण्यावित्यर्थः ॥ १७ ॥ दक्षिणवामयोःपश्चिमयोः
 मघादीन्यष्टभानिच ॥ १८ ॥ श्रुतिःश्रवणक्षत्रं जलभंपूर्वाषाढानक्षत्रं इमेदक्षवामनेत्रयोःकल्पितेइत्यर्थः ॥ १९ ॥ २० ॥
 मृगशीर्षादीन्युदग्भानिचयानिहि ॥ २१ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७५ ॥

दे.भा.अ.

॥३०॥

दक्षपाश्वेवंक्रिकेषुप्रातिलोम्येनयोजयेत् ॥ शततारातथाज्येष्ठास्कंधयोर्दक्षवामयोः ॥ २२ ॥ अगस्तिश्चोत्तर
रहनावधरायां हनौयमः ॥ मुखेष्वंगारकः प्रोक्तो मंदः प्रोक्त उपस्थके ॥ २३ ॥ बृहस्पतिश्च ककुदिवक्षस्य कौ
ग्रहाधिपः ॥ नारायणश्च हृदये चंद्रो मनसि तिष्ठति ॥ २४ ॥ स्तनयोरश्विनौ नाभ्यामुशनाः परिकीर्तितः ॥ बु
धः प्राणापानयोश्च गले राहुश्च केतवः ॥ २५ ॥ सर्वांगेषु तथारोमकूपेतारागणाः स्मृताः ॥ एतद्भगवतो विष्णोः
सर्वदेवमयं वपुः ॥ २६ ॥ संध्यायां प्रत्यहं ध्यायेत् प्रयतो वाग्यतो मुनिः ॥ निरीक्षमाणश्चोत्तिष्ठेन्मंत्रेणानेन धीध
रः ॥ २७ ॥ नमोज्योतिर्लोकयकालायानिमिषां पतये महापुरुषायाभिर्धीमहीति ॥ २८ ॥ ग्रहर्क्षतारामयमा
धिदैविकं पापापहं मंत्रकृतां त्रिकालं ॥ नमस्यतः स्मरतो वा त्रिकालं नश्येत् तत्कालजमा शुपापं ॥ २९ ॥ इति
श्रीदेवीभागवते महापुराणे ऽष्टमस्कंधे सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ श्रीनारायण उवाच ॥ अधस्तात्सवितुः प्रो
क्तमयुतं राहुमंडलं ॥ नक्षत्रवच्चरति च सैंहिके यो तदर्हणः ॥ १ ॥ सूर्या चंद्रमसौ रेवमर्दनः सिंहिकासुतः ॥ अमर
त्वं वस्वेटत्वं लेभे यो विष्णु वनुग्रहात् ॥ २ ॥ यददस्तरणे विंबंतपतो योजनायुतं ॥ तच्छादको सुरोज्ञो योऽप्यर्कसा
हस्रविस्तरं ॥ ३ ॥

महामं वस्तुमाह यददस्तरणे रिति योजनायुतंतरणे विंबमित्यन्वयः अर्कसाहस्रविस्तरं द्वादशसाहस्रयोजनविस्तारं सोमस्य मंडलमित्यन्वयः
सौम्यसाहस्रं तु त्रयोदशसाहस्रयोजनपरिमाणं तु आच्छादको ग्रहो राहुर्वर्तते स तच्छादकस्तयोः सूर्यसोममंडलयोराच्छादको भवतीत्यर्थः ३

टी.अ.
१७

॥३०॥

कदाच्छादकस्तदाह पर्वसमयेति अमावास्यापूर्णिमारूपेकालेयच्छादकोभवदित्यन्वयः वैरानुबन्धीअमृतपानसमयेसूर्याचंद्रमसोर्मध्ये
प्रविष्टस्यताभ्यांविष्णवेकयनानयोर्वैरमनुबधातिततोहेतोःसूर्याचंद्रमसोर्दूराच्छादनकारकोभवेदित्यन्वयः ॥ ४ ॥ तर्हि सूर्याचंद्रमसौकुतो
नभक्षयतितत्राह तन्निशम्येति ॥ ५ ॥ समंतात्परिवारितंचक्रामित्यन्वयः ॥ ६ ॥ दुःसहेनतत्तेजसामुहूर्तोद्विजमानोमुहूर्तखिद्यमानश्चकि

त्रयोदशसहस्रंनुसोमस्याच्छादकोग्रहः ॥ यःपर्वसमयेवैरानुबन्धीच्छादकोभवत् ॥ ४ ॥ सूर्याचंद्रमसोर्दूराद्
वेच्छादनकारकः ॥ तन्निशम्योभयत्रापिविष्णुनाप्रेरितंस्वकं ॥ ५ ॥ चक्रंसुदर्शनंनामज्वालामालातिभीषणं ॥
तत्तेजसादुःसहेनसमंतात्परिवारितं ॥ ६ ॥ मुहूर्तोद्विजमानस्तुदूराच्चकितमानसः ॥ आरान्निवर्ततेसोयमुप
रागइतीवह ॥ ७ ॥ उच्यतेलोकमध्येतुदेवर्षेअवबुध्यतां ॥ ततोधस्तात्समाख्यातालोकाःपरमपावनाः ॥ ८ ॥
सिद्धानांचारणानांचविद्याध्राणांचसत्तम ॥ योजनायुतविख्यातालोकाःपुण्यनिषेविताः ॥ ९ ॥ ततोप्यधस्ता
त्तेवर्षेयक्षाणांचसरक्षसां ॥ पिशाचप्रेतभूतानांविहाराजिरमुत्तमं ॥ १० ॥ अंतरिक्षंचतत्प्रोक्तंयावद्वायुःप्रवा
तिहि ॥ यावन्मेघास्तथोद्यंतितत्प्रोक्तंज्ञानकोविदैः ॥ ११ ॥ ततोधस्ताद्योजनानांशतंयावत्द्विजोत्तम ॥ पृथि
वीपरिसंख्यातासुपर्णश्येनसारसाः ॥ १२ ॥ हंसादयःप्रोत्पतंतिपार्थिवाःपृथिवीभवाः ॥ भूसान्निवेशावस्था
नंयथावदुपवर्णितं ॥ १३ ॥

॥ ६ ॥

॥ ७ ॥

॥ ८ ॥

तद्वदयःसन्नारात्दूरादेवनिवर्ततेसोयमुपरागइतिलोकेप्रोच्यतेइत्यर्थः ॥ ७ ॥ ८ ॥ विद्याध्राणांविद्याधराणां अधस्तादित्युक्तंतन्मर्यादा
माह योजनयुतेइति राहुमंडलादधस्ताद्योजनायुतपरिमितदेशेसिद्धादीनांलोकाःसंतीत्यर्थः ॥ ९ ॥ विहाराजिरवासस्थानं ॥ १० ॥
अंतरिक्षंग्रहहीनं तस्यावधिमाह यावद्वायुःप्रवातीतिर्ताम्रोवातितस्याप्यवधिमाह यावन्मेघाइति ॥ ११ ॥ १२ ॥ पृथिव्याउपरिभूर्लोक
कानाधिमाह हंसादय इति पार्थिवाःपृथिवीविकाराः ॥ १३ ॥

॥ ७ ॥

॥ ८ ॥

॥ ९ ॥

॥ १० ॥

दे.भा.अ. एकैकशोयोजनानामिति योजनयुतांतरेणप्रत्येकमुच्छ्रिताः आयामोयोप्यंडकटाहस्यतद्विस्तारेण ॥ १४ ॥ अयुतमंतरमेकैकस्यविवर
स्य ॥ १५ ॥ १६ ॥ विप्रोतिसंनोधनं ॥ १७ ॥ १८ ॥ काद्रवेयाः सर्पाः ॥ १९ ॥ अनुजीवाद्यैरनुचारदिभिः ईश्वरादपिअप्रतिहतः कामोये

टी.अ.

१८

अधस्तादवनेःसप्तदेवर्षेविवराःस्मृताः ॥ एकैकशोयोजनानामायामोच्छ्रायतःपुनः ॥ १४ ॥ अयुतांतरावि
स्याताःसर्वर्तुसुखदायकाः ॥ अतलंप्रथमंप्रोक्तंद्वितीयंवितलंतथा ॥ १५ ॥ तृतीयंसुतलंप्रोक्तंचतुर्थवैतलात
लं ॥ महातलंपंचमंचषष्ठंप्रोक्तरसातलं ॥ १६ ॥ सप्तमंविप्रपातालंसप्तैतेविवराःस्मृताः ॥ एतेषुबिलस्वर्गेषु
द्विवोप्यधिकमेवच ॥ १७ ॥ कामभोगैश्वर्यसुखसमृद्धभुवनेषुच ॥ नित्योद्यानविहारेषुसुखास्वादःप्रवर्तते
॥ १८ ॥ दैत्याश्चकाद्रवेयाश्चदानवाबलशालिनः ॥ नित्यंप्रमुदितारक्ताःकलत्रापत्यबंधुभिः ॥ १९ ॥ सुह
द्विरनुजीवाद्यैःसंयुताश्चगृहेश्वराः ॥ ईश्वरादप्रतिहतकाममायाविनश्यते ॥ २० ॥ निवसंतिसदाहृष्टाः
सर्वर्तुसुखसंयुताः ॥ मयेनमायाविभुनायेषुयेषुचनिर्मिताः ॥ २१ ॥ पुरःप्रकामशोभक्तामणिप्रवरशालिनः
॥ विचित्रभवनाट्टालगोपुराद्याःसहस्रशः ॥ २२ ॥ सभाचत्वरचैत्यादिशोभाढ्याःसुरदुर्लभाः ॥ नागासुरा
णांमिथुनैःसपारावतसारिकैः ॥ २३ ॥ कीर्णकृत्रिमभूमिश्चविवरेशगृहोत्तमैः ॥ अलंकृताश्चकासंतिउद्यानानि
महांतिच ॥ २४ ॥ मनःप्रसन्नकारीणिफलपुष्पविशालिभिः ॥ ललत्तानांविलासार्हस्थानैःशोभितभांजिच
॥ २५ ॥ नानाविहंगमव्रातसंयुक्तजलराशिभिः ॥ स्वच्छार्णपूरितहृदैःपाठीनसमलंकृतैः ॥ २६ ॥ जलजंतुक्षु
ब्धनरिनीरजातैरनेकशः ॥ कुमुदोत्पलकल्हारनीलरक्तोत्पलैस्तथा ॥ २७ ॥

षां ॥ २० ॥ मायाविभुनामायास्वामिनामायाविनेत्यर्थः ॥ २१ ॥ प्रकामशोययेच्छंभक्ताविभक्ताःकृताइत्यर्थः मणिप्रवरशालिनइति
उच्यते ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ स्वच्छार्णेनस्वच्छजलेनपूरिताहृदयेषुतैःपाठीनामत्स्याः ॥ २६ ॥ नीरजातैःकमलैः ॥ २७ ॥

॥ ३१ ॥

॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ जीर्णत्वञ्जरावैवर्ण्यदेहस्यवयोवस्थासहिताएतेनबाधंतेइत्यन्वयः ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ यस्मिन्भगवत्तेजासिप्रविष्टे ॥ ३४ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेऽष्टमस्कंधेऽष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ इतिशतत्ययकैःपञ्चादतलादेश्वर्णनं ॥ क्रियते

तेषुस्तनिकेतानांविहारैःसंकुलानिच ॥ इंद्रियोत्सवकारैश्चतथैवविविधैःस्वरैः ॥ २८ ॥ अमराणांचपरमां
भ्रियंवातिशयंतिच ॥ यत्रनैवभयंकपिकालांगैर्दिनरात्रिभिः ॥ २९ ॥ यत्राहिप्रवराणांचशिरस्थैर्मणिरश्मि
भिः ॥ नित्यंतमःप्रबाध्येतसदाप्रस्फुटकांतिभिः ॥ ३० ॥ नवाएतेषुवसतांदिव्यौषधरसायनैः ॥ रसान्नपा
नस्नानाद्यैर्नाधयोनचव्याधयः ॥ ३१ ॥ वलीपलीतजीर्णत्ववैवर्ण्यस्वेदगंधताः ॥ अनुत्साहवयोवस्थान
बाधंतेकदाचन ॥ ३२ ॥ कल्याणानांसदातेषांनचमृत्युभयंकुतः ॥ भगवत्तेजसोन्यत्रचक्राच्चैवसुदर्शनात्
॥ ३३ ॥ यस्मिन्प्रविष्टेदैतेयवधूनांगभरशयः ॥ प्रायोभयात्पतंत्येवस्त्रवंतिब्रह्मपुत्रक ॥ ३४ ॥ इतिश्रीदे
वीभागवतेमहापुराणेऽष्टमस्कंधेऽष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ प्रथमेविवरेविप्रअतलास्येम
नोरमे ॥ मयपुत्रोबलोनामवर्ततेखर्वगर्वकृत् ॥ १ ॥ षण्णवत्योयेनसृष्टमायाःसर्वार्थसाधकाः ॥ मायाविनोया
श्चसद्योधारयंतिचकाश्चन ॥ २ ॥ जृम्भमाणस्ययस्यैवबलस्यबलशालिनः ॥ स्त्रीगणाउपपद्यंतेत्रयोलोकविमो
हनाः ॥ ३ ॥ पुंश्चल्यश्चैवस्वैरिण्यःकामिन्यश्चेतिविश्रुताः ॥ यवैबिलायनंप्रेष्ठंप्रविष्टंपुरुषरंहः ॥ ४ ॥ रसेनहा
टकास्येनसाधयित्वाप्रयत्नतः ॥ स्वविलासावलोकानुरागस्मितविगूहनैः ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥

यत्रभोगानांपराकाष्ठास्फुटाभवेत् ॥ १ ॥ अखर्वोमहान्योगर्वस्तंकरोतिसतथा ॥ २ ॥ षण्णवतिमायामध्येकाश्चनधारयंतिनसर्वाः दुःसंपाद्यत्वात्
॥ २ ॥ उपपद्यंतउत्पन्नाः ॥ ३ ॥ सवर्गेरताःस्वैरिण्यः कामिन्यस्त्वसवर्गे तत्राप्यतिचंचलाःपुंश्चल्यः बिलायनंविलायतनं ॥ ४ ॥
साधयित्वासंभोगसमर्थकृत्वास्वस्मिन्नसाधारणाविलासास्तत्पूर्वकमेतलोकस्तेनानुरागयुक्तंस्मितंतेनविगूहनमुपगूहनमालिंगनंतदादिभिः ॥ ५ ॥

दे.भा.अ.

॥३२॥

यस्मिन् रसे उपयुक्ते सेविते इत्यर्थः ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ मादृतासमीरणेन समिद्धो दीप्तः ॥ ११ ॥ निष्ठूतमिति तेन बन्धि

संलापविभ्रमाद्यैश्चरमयं त्यपिताः स्त्रियः ॥ यस्मिन्नुपयुक्ते जनो मनुते बहुधा स्वयं ॥ ६ ॥ श्वरो ह म हं सिद्धो
नागा युत बलो महाम् ॥ आत्मानं मन्यमानः सन्मदांध इव कथ्यते ॥ ७ ॥ एवं प्रोक्ता स्थितिश्च अतलस्य च ना
रद ॥ द्वितीयविवरस्यात्र वितलस्य निबोधत ॥ ८ ॥ भूतलाधस्तले चैव वितले भगवान् भवः हाटकेश्वरना
मायं स्वपार्षदगणैर्वृतः ॥ ९ ॥ प्रजापतिकृतस्यापि सर्गस्य बृंहणाय च ॥ भवान्यामिथुनीभूय ऋते देवाधिपू
जितः ॥ १० ॥ भवयोर्वीर्यसंभूता हाटकी सरिदुत्तमा ॥ समिद्धो मरुता बन्धिरो जसा पिवती वहि ॥ ११ ॥ तन्नि
ष्ठूतं हाटकाख्यं सुवर्णं दैत्यवल्लभं ॥ दैत्यांगनाभूषणार्हं सदा संधारयंति हि ॥ १२ ॥ तद्विलाधस्तत्रोक्तं सुत
लाख्यं बिलेश्वरं ॥ पुण्यश्लोको बलिर्नामा आस्ते वैरोचनिर्मुने ॥ १३ ॥ महेंद्रस्य च देवस्य चिर्षुः प्रियमुत्त
मं ॥ त्रिविक्रमोऽपि भगवान्सुतले बलिमानयत् ॥ १४ ॥ त्रैलोक्यलक्ष्मीमाक्षिप्य स्थापितः किल स्यराट् ॥ इं
द्रादिष्वप्यलब्धाया सा श्रीस्तमनुवर्तते ॥ १५ ॥ तमेव देवदेवेशमाराधयति भक्तिः ॥ व्यपेता ध्वसोद्या
पिवर्तते सुतलाधिपः ॥ १६ ॥ भूमिदानफलं ह्येतत्पात्रभूते खिलेश्वरे ॥ वर्णयंति महात्मानो नैतद्युक्ते नारद
॥ १७ ॥ वासुदेवे भगवति पुरुषार्थप्रदे हरौ ॥ एतद्दानफलं विप्रसर्वथाना हि युज्यते ॥ १८ ॥ यस्यैव देवदेवस्य
नामापि विवशो गृणन् ॥ स्वकीयकर्मबंधीयगुणान् विधुनुतेऽजसा ॥ १९ ॥ यत्क्लेशबंधहानाय स संख्ययोगादि
साधनं ॥ कुर्वते यतयो नित्यं भगवत्यखिलेश्वरे ॥ २० ॥ न चायं भगवानस्माननुजग्राह नारद ॥ माशमयं च
भोगानामैश्वर्यं व्यतनोत्परं ॥ २१ ॥

॥ ६ ॥

॥ ६ ॥

टी.अ.
१९

॥३२॥

नानिष्ठूतं भूत्कृत्यत्यक्तं ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ अस्माननुजग्राहेति नारायणोक्तिः ॥ २१ ॥

सर्वकेशाधिहेतुतदात्मानुस्मृतिमोषणं ॥ २२ ॥ २३ ॥ गिरिदर्यामवमुच्यस्थितस्तस्यद्वारेदं दवरस्तदुःखं
विष्णोः संपदं लोकस्यमित्यमयाचत् ॥ २४ ॥ प्रसन्नविष्णुं लोकसंपदं लोकस्वामित्वमयाचत् ॥ २५ ॥ लोकसंपदं

सर्वकेशाधिहेतुतदात्मानुस्मृतिमोषणं ॥ यं साक्षाद्भगवान्विष्णुः सर्वोपायविदीश्वरः ॥ २२ ॥ याच्ञाच्छलेना
पहतं सर्वस्वं देहशेषकं ॥ अप्राप्तान्योपाय ईशः पार्श्वैर्वारुणसंभवैः ॥ २३ ॥ बंधयित्वावमुच्यपि गिरिदर्यामि
वाब्रवीत् ॥ असाविंद्रो महामूढो यस्य मंत्री बृहस्पतिः ॥ २४ ॥ प्रसन्नमिममत्यर्थमयाचल्लोकसंपदं ॥ त्रैलो
क्यमिदमैश्वर्यं कियदेवा तितुच्छकं ॥ २५ ॥ आशिषां प्रभवं मुक्त्वा यो मूढो लोकसंपदि ॥ अस्मत्पितामहः श्रीमा
नू प्रल्हादो भगवत्प्रियः ॥ २६ ॥ दास्यं वब्रे विभोस्तस्य सर्वलोकोपकारकः ॥ पित्र्यमैश्वर्यमतुलं दीयमानं च
विष्णुना ॥ २७ ॥ पितर्युपरते वीरि नैवेच्छद्भगवत्प्रियः ॥ तस्या तुलानुभावस्य सर्वलोकोपधीमतः ॥ २८ ॥ अस्म
द्विधो नोल्पपक्वेतरदोषो वगच्छति ॥ एवं दैत्यपतिः सोयंबलिः परमपूजितः ॥ २९ ॥ सुतले वर्तते यस्य द्वारपा
लो हरिः स्वयं ॥ एकदा दिग्विजये राजा रावणो लोके करावणः ॥ ३० ॥ प्रविशन् सुतले येन भक्तानुग्रहकारिणा ॥
पादांगुष्ठेन प्रक्षिप्तो यो जनायुतमत्राह ॥ ३१ ॥ एवं भूतानुभावो यंबलिः सर्वसुरैकभुक् ॥ आस्ते सुतलराज्य
स्थो देवदेव प्रसादतः ॥ ३२ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे ऽष्टमस्कंधे एकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥

आसक्त इति शेषः इदमिद्रेणात्यंतमनुचितं कृतमिति भावः प्रल्हादं वर्णयति अस्मादिति ॥ २६ ॥ २७ ॥ सर्वलोकोपधीमतः सर्वलोकोपाधि
युक्तस्य विष्णोस्तुल्यप्रभावस्यांतमिति शेषः ॥ २८ ॥ पक्वेभ्यः परिपक्वेभ्य इतरे अपरिपक्वा येन लग्नबहवो दोषास्ते यस्य सति सोऽस्मद्विधो मत्सह
शो दुष्टः को वमच्छति न कोपीत्यर्थः ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके ऽष्टमस्कंधे एकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥

दे.भा.अ.

॥३३॥

सप्तार्चिःशम्भुपदौर्ध्वंशोकेवचमधिकैः॥ तलातलस्थितिःसम्यक्विचारेणोपपाद्यते॥१॥ त्रिपुराधिपतिस्त्रिपुरस्वामी॥१॥ त्रिलोक्याःशंकरे
णकल्याणकरेणाशिवेनदग्धुश्चयंयस्यसदग्धपूज्योमयासुरोमहादेवभक्तोयंपालितोरक्षितोदेवदेवस्यशिवस्यप्रसादेनतत्रास्तेत्यर्थः॥२॥

॥३॥ ४॥ अनेकशिरसांमध्येप्रधानान्॥५॥ पतत्रिराजोगहडः॥६॥ ७॥ ८॥ प्रसनीकाःशत्रोहविर्भुजांदेवानां॥९॥

श्रीनारायणउवाच॥ ततोधस्ताद्विवरकंतलातलमुदीरितं॥ दानवेन्द्रेमयोनामत्रिपुराधिपतिर्महान्॥१॥
त्रिलोक्याःशंकरेणायंपालितोदग्धपूज्यः॥ देवदेवप्रसादानुलब्धराज्यःसुखारूपदः॥२॥ आचार्योमायि
नांसोयन्नानामायाविशारदः॥ पूज्यतेराक्षसैर्धैरैःसर्वकार्यसमृद्धये॥३॥ ततोधस्तात्सुविख्यातंमहातल
मितिस्फुटं॥ सर्पाणांकाद्रवेयाणांगणःक्रोधवशोमहान्॥४॥ अनेकशिरसांविप्रप्रधानान्कीर्तयामिते॥
कुहकस्तक्षकश्चैवसुषेणःकालियस्तथा॥५॥ महाभोगामहासत्वाःक्रूराःक्रूरस्वजातयः॥ पतत्रिराजाधिप
तेरुद्विग्राःसर्वएवते॥६॥ स्वकलत्रापत्यसुहृत्कुटुंबस्यचसंगताः॥ प्रमत्ताविहरंत्येवनानाक्रीडाविशारदाः
॥७॥ ततोधस्ताच्चविवरेरसातलसमाह्वये॥ दैतेयानिवसंत्येवपणयोदानवाश्चये॥८॥ निवातकवचा
नामहिरण्यपुरवासिनः॥ कालेयाइतिचप्रोक्ताःप्रत्यनीकाहविर्भुजां॥९॥ महौजसश्चोत्पत्यैवमहासाहसि
नस्तथा॥ सकलेशस्यचहरेस्तेजसाहतविक्रमाः॥१०॥ बिलेशयाइवसदाविवरेनिवसन्तिहि॥ येवैवाग्निः
सरमयाशक्रदूत्यानिरंतरं॥११॥ ॥१२॥ ॥१३॥ ॥१४॥ ॥१५॥

॥१०॥ सरमयाशक्रदूत्येति इन्द्रदूत्याप्रयुक्ताभिर्मन्त्ररूपाभिर्वाग्भिः एवंहिबौदिकमाख्यानंपणिभिरसुरैर्नियूढांगांअन्वेष्टुंसरमांदेवशु
नीर्दिष्टेप्रादित्तांसंधिमिच्छंतःपणयःप्राहुःकिमिच्छंतीसरमेत्यादि साचसंधिमनिच्छंतीद्रस्तुतिपूर्वकंताप्रतिपक्षमाह हताइंद्रेणपणयः
शम्भुमिष्यादितेचतच्छ्रुत्वाविभ्यतीति॥११॥ ॥१२॥ ॥१३॥ ॥१४॥ ॥१५॥

टी.अ.
२०

॥३३॥

॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ संकर्षणनाम्नोक्तिमाह अहमित्यभिमानस्योति द्रष्टृदृश्ययोःसम्यक्
कर्षणेकीकरणेनतत्कृतोहमित्यभिमानोलक्षणंचिन्हमाधिष्ठानुर्यस्याहंकाराधिष्ठानेनचदृष्टदृश्यसंकर्षणात्संकर्षणद्वयवर्षः ॥ १९ ॥ २० ॥

मंत्रवर्णाभिरसुरास्ताडिताविभ्यतिस्मह ॥ ततोप्यधस्तात्पातलिनागलोकाधिपालकाः ॥ १२ ॥ वासुकि
प्रमुखाःशंखःकुलिकःश्वेतएवच ॥ धनंजयोमहाशंखोधृतराष्ट्रस्तथैवच ॥ १३ ॥ शंखचूडःकंबलाश्वतरोदिवो
पदतकः ॥ महामर्षामहाभोगानिवसंतिविषोल्बणाः ॥ १४ ॥ पंचमस्तकवंतश्चफणासप्तकभूषिताः ॥ केचि
द्वंशफणाःकेचिच्छतशीर्षास्तथापरे ॥ १५ ॥ सहस्रशिरसःकेपिरोचिष्णुमणिधारकाः ॥ पातालरंध्रातिमिर
निकरंस्वमरीचिभिः ॥ १६ ॥ विधमंतिचदेवर्षेसदासंजातमन्यवः ॥ अस्यमलप्रदेशोहित्रिशत्साहस्रकैतरे
॥ १७ ॥ योजनैःपरिसंख्यातेतामसीभगवत्कला ॥ अनंताख्यासमास्तेहिसर्वदेवप्रपूजिता ॥ १८ ॥ अह
मित्यभिमानस्यलक्षणंयंप्रचक्षते ॥ संकर्षणंसात्वतीयाःकर्षणंद्रष्टृदृश्ययोः ॥ १९ ॥ इदंभूमंडलयस्यसह
स्रशिरसःप्रभोः ॥ अनंतमूर्तेशेषस्याधियमाणंचशीर्षके ॥ २० ॥ पृथ्वीगोलमशेषंहिसिद्धार्थइवलक्ष्यते ॥
यस्यकालेनदेवस्यसंजिहीर्षोःसमंविभोः ॥ २१ ॥ चराचरंभ्रुवोरंतीववरादुदपद्यत ॥ सांकर्षणोनामरुद्रोव्यू
हैकादशशोभितः ॥ २२ ॥ त्रिलोचनश्चात्रिशिखंशूलमुत्तंभयन्स्वयं ॥ उदतिष्ठन्महासत्वोमहाभूतक्षयंकरः
॥ २३ ॥ यस्यांग्रिकमलद्वंद्वशोणाच्छनखमंडले ॥ विराजन्मणिबिंबेषुमहाहिपतयोनिशं ॥ २४ ॥ एकांत
भक्तियोगेनसहसात्वतपुंगवैः ॥ प्रणमंतःस्वमूर्ध्नातिस्वमुखानिसमीक्षते ॥ २५ ॥ ॥ ६५ ॥

विद्यार्थःसर्षः ॥ २१ ॥ न्यूहैकादशशोभितः एकादशरुद्रमूर्तेरूपेण ॥ २२ ॥ २३ ॥ नखमंडलेद्विजात्यैकवचनं मंडलेष्वित्य
र्थः ॥ विराजन्मणिमंडलेष्वित्यनुरोधात् ॥ २४ ॥ २५ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥

॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ मतंगमोहस्त्रीयथाकांचनीस्वर्णमयीवर
कांचनीकक्षादिभस्मितयैवाकांचनीकक्षाप्रभतीत्यर्थः उमासंहितायां भुवमंडलमारभ्यशेषलोकांतमीश्वरि नानालोकाः समाख्यातास्तत्र

स्फुरत्कुंडलमाणिक्यप्रभामंडलभांज्यपि ॥ सुकपोलानिचारुणिगंडस्थलयुमंतिच ॥ २६ ॥ नागराजकु
मार्योपिचार्वगविलसत्त्रिषः ॥ विशदैर्विपुलैस्तद्वद्वलैः सुभगैस्तथा ॥ २७ ॥ रुचिरैर्भुजदंडैश्चशोभमाना
इतस्ततः ॥ चंदनागरुकाश्मीरपंकलेपेनभूषिताः ॥ २८ ॥ तदभिमर्षसंजातकामवेशसमायुताः ॥ ललितस्मि
तसंयुक्ताः सत्रीडंलोकयंतिच ॥ २९ ॥ अनुरागमदोन्मत्तविधूर्णारुणलोचनं ॥ करुणावलोकनेत्रंचआशासा
नोस्तथाशिषः ॥ ३० ॥ सोनंतोभगवान्देवोनंतसत्वोमहाशयः ॥ अनंतगुणवर्द्धिश्चआदिदेवोमहाद्युतिः ॥
३१ ॥ संहतामर्षरोषादिवेगोलोकशुभायच ॥ आस्तेमहासत्वनिधिः सर्वदेवप्रपूजितः ॥ ३२ ॥ ध्यायमा
मः सुरैः सिद्धैरसुरैश्चोरगैस्तथा ॥ विद्याधरैश्चगंधर्वैर्मुनिसंघैश्चानित्यशः ॥ ३३ ॥ अनारतमदोन्मत्तलोकवि
ह्वललोचनः ॥ वाक्यामतेनविबुधान्स्वपार्षदगणानपि ॥ ३४ ॥ आप्यायमानः सविभुर्वैजयंतीस्त्रजदधत्
॥ अम्लानाभिनवैः स्वच्छैस्तुलसीदलसंचयैः ॥ ३५ ॥ माद्यन्मधुकरव्रातघोषश्रीसंयुतः सदा ॥ नीलवासदेवदे
वएककुंडलभूषितः ॥ ३६ ॥ हलस्यककुदिम्यस्तसुपीवरभुजोव्ययः ॥ माहेंद्रः कांचनीयद्वद्वरत्रांचमतंगमः ॥ ३७
उदारलीलोदेवेशोवर्णितः सात्वतर्षभैः ॥ इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टमस्कंधेर्विशोऽध्यायः ॥ २० ॥

तल्लोकवासिनः नानारत्नमयीमूर्तिनानाधातुमयीतथा स्थापयित्वा पूजयंति नानास्वच्छोपचारकैः कैलासे चैवैकुण्ठे ब्रह्मलोके तथैव च नवरत्न
मूर्तिमूर्तिभक्त्या विरंतरं शिवदुहिणैकुण्ठाः पूजयंति विधानतः नानावर्षेषु वर्षाधिपतयश्च तथैव च नक्षत्रिषु लोकेषु लोकैर्विधः कश्चि
त् यत्र देव्याः पदार्पणं तत्रास्तस्याः स्मृतिः प्रोति ॥ ३७ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलकेऽष्टमस्कंधेर्विशोऽध्यायः ॥ २० ॥

अष्टाविंशतिभिः श्लोकैः शेषस्तुतिपुरःसरं ॥ भरकाणां स्वरूपं च यथावदभिर्वर्ण्यते ॥ १ ॥ तस्येति तस्य अनंतस्य ॥ १ ॥ उत्पत्तीति अस्य जगत उ
त्पत्त्यादिहेतवे गुणायस्य यस्येक्षया कल्पाः समर्थाः स्वस्वकार्ये आसन् यस्यतुरूपं ध्रुवमनंतमकृतमनादि तत्र हेतुः यदेकमेव सन् आत्मन्नात्मानि
नानाकार्यप्रपञ्चमधात् तस्य ब्रह्मस्वरूपस्य वर्त्मतत्त्वं जनः कथमुहवेदनवेदैवेत्यर्थः ॥ २ ॥ तर्हि कथमसौ मुमुक्षुभिः सेव्यते तत्राह मूर्तिमिति य

नारायण उवाच ॥ तस्यानुभावं भगवान् ब्रह्मपुत्रः सनातनः ॥ सभायां ब्रह्मदेवस्य गायमान उपासते ॥ १ ॥
उत्पत्तिस्थितिलयहेतवोस्य कल्पाः सत्त्वाद्याः प्रकृतिगुणाय दीक्षया सन् ॥ यद्रूपं ध्रुवमकृतं यदेकमात्मन्नानां
धात्कथमुहवेद तस्य वर्त्म ॥ २ ॥ मूर्तिनः पुरुकृपया बभार सत्त्वं संशुद्धं सदसदिदं विभातियत्र ॥ यल्लीलामृ
गपतिराददेन वद्यामादातुं स्वजनमनां स्युदारवीर्यः ॥ ३ ॥ यन्नामश्रुतमनुकीर्तयेदकस्मादार्तो वायदिषतितः
प्रलंभनाद्वा ॥ हंत्यंहः सपदि नृणामशेषमन्यं कं शेषाद्भगवत आश्रयेन्मुमुक्षुः ॥ ४ ॥ मूर्धन्यर्पितमणुव
त्सहस्रमूर्ध्ना भूगोलं सगिरिसरित्समुद्रसत्त्वं ॥ आनंत्यादनमितविक्रमस्य भूम्नः को वीर्याण्यधिगणयेत्सह
स्रजिह्वः ॥ ५ ॥ एवं प्रभावे भगवाननंतोदुरंतवीर्यो रूगुणानुभावः ॥ मूले रसायाः स्थित आत्मतंत्रो यो
लीलया क्षमां स्थितये विभर्ति ॥ ६ ॥ एताहो वेह नृभिर्गतयो मुनिसत्तम ॥ गंतव्या बहू शोयद्वद्यथा कर्म
विनिर्मिताः ॥ ७ ॥

॥ ६ ॥

॥ ६ ॥

॥ ६ ॥

॥ ६ ॥

त्रेदं सदसद्विभातिसनोस्माकं भक्तानां पुरुकृपया बहुकृपया संशुद्धं सत्त्वं मूर्तिं बभार स्वजनानां मनां स्यादातुं वशीकर्तुं यस्य लीलामृगपतिः सिंहः
आददे आशिक्षयत् यत उदाराणि वीर्याण्यस्य तस्मादन्यं मुमुक्षुः कमाश्रयेदित्युत्तरेणान्वयः ॥ ३ ॥ प्रलंभनाद्वा परिहासात् ॥ ४ ॥ सत्त्वं
मिप्राणिनः सहस्रजिह्वोपि को गणयत् ॥ ५ ॥ ६ ॥ एतावत्येवैह कामान् कामान् नैर्नृभिर्गुणं तव्यायतय इत्यन्वयः ॥ ७ ॥

दे.भा.अ.

॥३५॥

यथोपदेशं यथाशास्त्रं कामान्कामयमानकैः कामयमावैरित्यर्थः ॥ ८ ॥ ९ ॥ कर्मणां सर्वप्राणिकर्मणां समानत्वे वैवर्त्यनैर्घृण्यराहितेन मायाश
बलब्रह्मणा कथमेतय वैचित्र्यं कृतमिति यथा तथं तन्नो ब्रूहीत्यन्वयः ॥ १० ॥ कर्मणां समानत्वमेव नास्तिकर्मकर्तृणां त्रिगुणमायाशक्तिसंबद्ध
त्वात् तया मायाशक्त्या पूर्वपूर्वकर्मवशाद्यथा यथा सात्विकादिकर्मसु प्रेर्यते तथा तथा करोति तदनुरूपफलोपभोगाय च लोकभोगफलवैचित्र्यं कृत

यथोपदेशं च कामान्सदा कामयमानकैः ॥ एतावतीर्हि राजेन्द्रमनुष्यमृगपक्षिषु ॥ ८ ॥ विपाकगतयः प्रोक्ता
धर्मस्य वशगास्तथा ॥ उच्चावचाविसदृशायथा प्रश्नं निबोधत ॥ ९ ॥ नारद उवाच ॥ वैचित्र्यमेतल्लोकस्य क
थं भगवता कृतं ॥ समानत्वे कर्मणां च तन्नो ब्रूहीत्यथा तथं ॥ १० ॥ नारायण उवाच ॥ कर्तुः श्रद्धावशादेव गतयो
पि पृथग्विधाः ॥ त्रिगुणत्वात् सदा तासां फलं विसदृशं त्विह ॥ ११ ॥ सात्विक्या श्रद्धया कर्तुः सुखित्वं जायते सदा
॥ दुःखित्वं च तथा कर्तुः राजस्या श्रद्धया भवेत् ॥ १२ ॥ दुःखित्वं चैव मूढत्वं तामस्या श्रद्धयोदितं ॥ तारतम्यात्तु
श्रद्धानां फलवैचित्र्यमीरितं ॥ १३ ॥ अनाद्यविद्याविहितकर्मणां परिणामजाः ॥ सहस्रशः प्रवृत्तास्तु गतयो
द्विजपुंगव ॥ १४ ॥ तद्भेदान्वर्णयिष्यामि प्राचुर्येण द्विजोत्तम ॥ त्रिजगत्या अंतराले दक्षिणस्यां दिशि ह वै ॥
१५ ॥ भूमेरधस्तादुपरित्व तलस्य च नारद ॥ अग्निष्वात्ताः पितृगणा वर्तन्ते पितरश्च ह ॥ १६ ॥ वसंतियस्यां
स्वीयानां गोत्राणां परमाशीषः ॥ सत्याः समाधिना शीघ्रं त्वाशासानाः परेण वै ॥ १७ ॥ पितृराजोऽपि भगवान्
संपरेतेषु जंतुषु ॥ विषयं प्रापितेष्वेषु स्वकीयैः पुरुषैरिह ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥

मित्याह कर्तुः श्रद्धावशादेवेति तासां श्रद्धानां त्रिगुणत्वात् सात्त्विकादिभेदेन गुणत्रयात्मकत्वादिसदृशमसमानं फलमित्यर्थः ॥ ११ ॥
॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ तस्मान्मायाशक्तिशबलब्रह्मरूपभगवत्या एवाराधनं कर्तव्यमिति गूढोभिसंधिः ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥
॥ १७ ॥ विषयं यमलोक रूपं देशं ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥

टी.अ.
२१

॥३५॥

दमधारकोदंडधारकोविदधातिदंडमिति शेषः ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ वज्रकंटकशाल्मलीत्येकोनरकः ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥

सगणो भगवत्प्रोक्ताज्ञापरोदमधारकः ॥ यथाकर्मयथादोषं विदधाति विचारदृक् ॥ १९ ॥ स्वान्गणान्धर्म
तत्त्वज्ञान्सर्वानाज्ञाप्रवर्तकान् ॥ सदाप्रेरयति प्राज्ञो यथादेशनियोजितान् ॥ २० ॥ नरकानेकविंशत्यासंस्थ
यावर्णयंति हि ॥ अष्टाविंशमिह तन्केचित्ताननुक्रमतो ब्रुवे ॥ २१ ॥ तामिस्रं अंधतामिस्रो रौरवोऽपि तृतीयकः ॥
महारौरवनामा च कुंभीपाको परोमतः ॥ २२ ॥ कालसूत्रं तथा चासिपत्रारण्यमुदाहृतं ॥ सूकरस्य मुखं चांधकू
पोथकर्मभोजनः ॥ २३ ॥ संदंशस्तप्तमूर्तिश्च वज्रकंटक एव च ॥ शाल्मली चाथ देवर्षेनाम्नावैतरणी तथा ॥
२४ ॥ पूयोदः प्राणरोधश्च तथा विशसनं मतं ॥ लालाभक्षः सारमेयादनमुक्तमतः परं ॥ २५ ॥ अवीचिरप्य
पः पानं क्षारकर्दम एव च ॥ रक्षोगणास्यसंभोजः शूलप्रोतोऽप्यतः परं ॥ २६ ॥ दंडशूको वटारोधोऽपर्यावर्तनकः
परं ॥ शूचीमुखमिति प्रोक्ता अष्टाविंशतिनारकाः ॥ २७ ॥ इत्येते नारकानामयातनाभूमयः पराः ॥ कर्मभिश्चापि
भूतानां गम्याः पद्मजसंभव ॥ २८ ॥ इति श्रीदेवीभागवते म० अष्टमस्कंधे एकविंशोऽध्यायः ॥ २९ ॥ नारद उ०
कर्मभेदाः कतिविधाः सनातनमुने मम ॥ श्रोतव्याः सर्वथैवैते यातनाप्राप्तिभूमयः ॥ १ ॥ श्रीनारायण उवाच ॥
ये वै परस्य वित्तानि दारापत्यानि चैव हि ॥ हरते स हि दुष्टात्मा ममानुचरगोचरः ॥ २ ॥ कालपाशेन संबद्धो या
म्यैरतिभयानकैः ॥ तामिस्रनामनरके पात्यते यातनास्पदे ॥ ३ ॥ ताडनं दंडनं चैव संतर्जनमतः परं ॥ या
म्याः कुर्वति पाशाढ्याः कश्च मलयति चैव हि ॥ ४ ॥

॥ ६५ ॥

॥ ६५ ॥

इति श्रीदेवीभागवततिलके ऽष्टमस्कंधे एकविंशोऽध्यायः ॥ २९ ॥ द्विपंचाशत्यध्यायैर्यातनाकारकाणि च ॥ पातकानि समासेन प्रोच्यन्ते संग्रहे
ननु ॥ १ ॥ कर्मभेदायातनाप्राप्तिभूमयो यातनाकारकाः ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.अ

॥३६॥

यःपतिमिति यांस्त्रियंगच्छतितस्याःपतिवचयित्वेत्यर्थः उपभुज्यतिसैवतेइत्यर्थः ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ एतन्ममाहमिति एतदहोमिति
माहमितिभूतद्रोहेणेत्यर्थः ॥ ८ ॥ यत्कुटुंबार्थमेवंकरोतितदैतदत्रैवविहायस्वाशुभेनकर्मणाइहरौरवेपतेदित्यर्थः ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥

टी.अ.
२२

मूर्च्छामायातिविषशीनारकीपद्मभूसुत ॥ यःपतिवचयित्वातुदारादीनुपभुज्यति ॥ ५ ॥ अंधतामिस्त्रनरकेपा
त्यतेयमकिंकरैः ॥ पात्यमानोयत्रजंतुर्वेदनापरवान्भवेत् ॥ ६ ॥ नष्टदृष्टिर्नष्टमतिर्भवत्येवविलंबतः ॥ वनस्प
तिर्भज्यमानमूलोयद्वद्वेदिह ॥ ७ ॥ तस्मादप्यंधतामिस्त्रनाम्नाप्रोक्तःपुरातनैः ॥ एतन्ममाहमितियोभूत
द्रोहेणकेवलं ॥ ८ ॥ पुष्पातिप्रत्यहंस्वीयकुटुंबंकार्यलंपटः ॥ एतद्विहायचात्रैवस्वाशुभेनपतेदिह ॥ ९ ॥ रौ
रवेनामनरकेसर्वसत्वभयावहे ॥ इहलोकेऽमुनायेतुहिंसिताजंतवःपुरा ॥ १० ॥ तएवरुरवोभूत्वापरत्रपीडयं
तितं ॥ तस्माद्रौरवमित्याहुःपुराणज्ञामनीषिणः ॥ ११ ॥ रुरुःसर्पादतिक्रूरोजंतुरुक्तःपुरातनैः ॥ एवंमहारौ
रवारुयोनरकोयत्रपूरुषः ॥ १२ ॥ यातनांप्राप्यमाणोहियःपरंदेहसंभवः ॥ क्रव्यादानामरुरवस्तंक्रव्येघात
यंतिच ॥ १३ ॥ यउग्रःपुरुषःक्रूरःपशुपक्षिगणानपि ॥ उपरंधयतेमूढोयाम्यास्तंरंधयंतिच ॥ १४ ॥ कुंभी
पाकेतप्ततैलेउपर्यपिचनारद ॥ यावंतिपशुरोमाणितावद्वर्षसहस्रकं ॥ १५ ॥ पितृविप्रब्राह्मणध्रुक्कालसूत्रे
सनारके ॥ अग्न्यर्काभ्यांतप्यमानेनारकीविनिवेशितः ॥ १६ ॥ क्षुत्पिपासादह्यमानोतःशरीरस्तथाबहिः ॥
आस्तेशेतेचेष्टतेचावतिष्ठतिचधावति ॥ १७ ॥ निजवेदपथाद्योवैपाखंडंचोपयातिच ॥ अनापद्यपिदेवर्षेतंपा
पंपुरुषंभटाः ॥ १८ ॥ असिपत्रवनंनामनरकंवेशयंतिच ॥ कशयाप्रहरंत्येवनारकीतद्वतस्तदा ॥ १९ ॥

॥ १२ ॥ क्रव्येमांसिघातयंति ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ पाखंडमिति तदुक्तंपुराणांतरे यानिरूपाणिजगृहेइंद्रोह
वजिहीर्षया ॥ तानिपापस्यखंडानिलिंगंखंडमिहोच्यतेइति ॥ १ ॥ पाशब्देनतुर्वेदार्थः पाखंडास्तस्यखंडकाइतिच ॥ १८ ॥ १९ ॥

॥३६॥

धारभिरार्धप्रयोगोपाराभिरित्यर्थः ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ विविक्तपरिपीडित इति ईश्वरेणोपकल्पितारक्तपानादि
लक्षणावृत्तिर्येषां मत्कुणादीनां न विविक्ता विज्ञाता परव्यथायैरविवेकिभिस्तेषां द्वितीयाषष्ट्यर्थे ब्राह्मणादिभावेन विधिनिषेधपूर्वकमुपकल्पितावृ

इतस्ततो धावमान उतालमतिवेगितः ॥ असिपत्रैश्छिद्यमान उभयत्र च धारभिः ॥ २० ॥ संचिद्यमानः सर्वा
गोहाहतोऽस्मीति मूर्च्छितः ॥ वेदनां परमां प्राप्तः पतत्येव पदे पदे ॥ २१ ॥ स्वधर्मानुगतं भुंक्ते पाखंडफलमल्प
धीः ॥ यो राजाराजपुरुषो दंडयेद्वै त्वधर्मतः ॥ २२ ॥ द्विजेशरीरदंडं च पापीयान्नारकी च सः ॥ नरके सूकरमुखे
पात्यते यमकिंकरैः ॥ २३ ॥ विनिष्पिष्टावयवको बलवद्भिस्तथेक्षुवत् ॥ आर्तस्वरेण स्वनयन् मूर्छितः कश्मलं
गतः ॥ २४ ॥ सपीड्यमानो बहुधा वेदनां यात्यतीव हि ॥ विविक्तपरिपीडो योऽप्यविविक्तपरव्यथां ॥ २५ ॥
ईश्वरांकितवृत्तीनां व्यथामाचरते स्वयं ॥ सचांधकूपे पतति तदभिद्रोहयंत्रिते ॥ २६ ॥ तत्रास्मै जंतुभिः क्रूरैः प
शुभिर्मृगपक्षिभिः ॥ सरीसृपैश्च मशकैर्यूकामत्कुणजातिभिः ॥ २७ ॥ मक्षिकाभिश्च तमसि दंशूकैश्च पीड्य
ते ॥ परिक्रामति चैवात्र कुशरीरे च जंतुवत् ॥ २८ ॥ यस्तु संविहितः पंचयज्ञैः काकैश्च संस्तुतः ॥ अश्नाति चासं
विभज्य यत्किंचिदुपपद्यते ॥ २९ ॥ स पापपुरुषः क्रूरैर्याम्यैश्च कृमिभोजने ॥ नरकाधमकेदुष्टकर्मणा परिपा
त्यते ॥ ३० ॥ लक्षयोजनविस्तीर्णे कृमिकुंडे भयंकरे ॥ कृमिरूपं समासाद्य भक्षमाणश्च तैः स्वयं ॥ ३१ ॥

त्तिर्यस्य विविक्ता विज्ञाता परव्यथायेन विवेकिना स यदि तादृशानां व्यथामाचरते सोऽंधकूपे पततीत्यन्वयः ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ अत्रास्मि
ल्लोके ॥ २८ ॥ यस्त्विति यत्किंचिद्वनान्नादिकमुपपद्यते प्राप्तं भवति तत्संविहितैः शास्त्रेण विहितैः पंचमहायज्ञैर्देवताभ्योऽसंविभज्य न दत्वा अ
दनाति यः पुरुषः कथं भूतः काकैः संस्तुतः समत्वेन वर्णित इत्यन्वयः ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.अ.

॥३७॥

अप्रत्ताप्रहुतादोयःपातमाप्नोतितत्रवै ॥ यस्तुतेयेनचवलाद्विरण्यंरत्नमेवच ॥ ३२ ॥ ब्राह्मणस्यापिहरतिअ
न्यस्यापिचकस्यधित् ॥ अनापदिचदेवर्षेतममुत्रयमानुगाः ॥ ३३ ॥ अयस्मयैरग्निपिडैःसदृशैर्निष्कुषंति
च ॥ योगम्यांयोषितंगच्छेदगम्यंपुरुषंचया ॥ ३४ ॥ तावमुत्रापिकशयाताडयंतोयमानुगाः ॥ तिग्मयालोहम
व्याचसूर्म्याप्यालिंगयंतितं ॥ ३५ ॥ तांचापियोषितंसूर्म्यालिंगयंतियमानुगाः ॥ यस्तुसर्वाभिगमनःपुरुषःपा
पसंचयी ॥ ३६ ॥ निरयेमुत्रतंयाम्याःशाल्मलीरोपयंतिते ॥ वज्रकंटकसंयुक्तांशाल्मलीतामयस्मयीं ॥ ३७ ॥
राजन्याराजपुरुषायेवापाषंडवर्तिनः ॥ धर्मसेतुंविभिंदंतितेपरेत्यगतानराः ॥ ३८ ॥ वैतरण्यांपतंत्येवभिन्न
मर्यादपातकाः ॥ नद्यांनिरयदुर्भस्यपरिखायांचनारद ॥ ३९ ॥ यादोगणैःसमंतात्तुभक्षमाणाइतस्ततः ॥ नात्म
चावियुजंत्येवनासुभिश्चापिनारद ॥ ४० ॥ स्वीयेनकर्मपाकेनोपतपंतिवसर्वतः ॥ विष्णुमूत्रपूयरक्तैश्चकेशास्थि
नखमांसकैः ॥ ४१ ॥ मेदोवसासंयुतायांनद्यामुपपतंतिते ॥ वृषलीपतयोयेचनष्टौचागतत्रपाः ॥ ४२ ॥ आचा
रनियमैस्त्यक्ताःपशुचर्यापरायणाः ॥ तेषानुकृष्टगतयोविष्णुमूत्रश्लेष्मरक्तकैः ॥ ४३ ॥ श्लेष्ममलसमापूर्णे
मिपतंतिदुराग्रहाः ॥ तदेवखादयंत्येतान्यमानुचरवर्गकाः ॥ ४४ ॥ येश्वानगर्दभादीनांपतयोवैद्विजादयः ॥ मृ
गधारसिकानित्यमतीर्थेमृगघातकाः ॥ ४५ ॥ परेतास्तान्यमभटालशीभूतान्नराधमान् ॥ इषुभिश्चविभिंदंति
तांस्तान्दुर्नयमागतान् ॥ ४६ ॥ येदंभादंभयज्ञेषुपशून्म्रंतिनराधमाः ॥ तानमुष्मिन्यमभटानरकैर्वैशसेतदा ॥ ४७ ॥

मम्यासूर्याप्राप्तेमया ॥ ३५ ॥ सूर्यापुरुषप्राप्तेमयाततया सर्वाभिगमनःपश्चाद्युपसंगतः ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ नात्मदेहेनवियुजंतिवियो
मं प्राप्नुवन्ति असुभिः प्राणैरोदमाना ऊर्ध्वोच्छ्वासवन्त इत्यर्थः ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ पशुचर्यास्त्रेष्ठाचारः ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥

टी.अ.
२२

॥३७॥

॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ सप्तशत्येति विंशत्याधिकसप्तशतसंख्याः सारमेयाइत्यन्यः ॥ ५२ ॥ इति श्रीदेवीभागवतसिलके
अष्टमस्कंधे द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥ एकत्रिंशन्महापर्वैः शिष्टास्तु नरकाभिधाः ॥ वर्णनं क्रियते तेषां वैराग्यं लभ्यते यतः ॥ १ ॥ येन साहसि ॥ २ ॥

निपात्य पीडयंत्येव कशायातैर्दुरासदैः ॥ योभार्याचसवर्णावैद्विजोमदनमोहितः ॥ ४८ ॥ रेतःपाययते मूढो
मुत्रतं यमकिंकराः ॥ रेतःकुण्डे पातयंति रेतःसंपाययंति च ॥ ४९ ॥ येदस्य वोभिदाश्चैव गरदाः सार्धघातकाः ॥
ग्रामान्सार्धान्विलुपंति राजानो राजपूरुषाः ॥ ५० ॥ तान्परेतान्यमभयानयंति श्वानकादमं ॥ विंशत्यधिक
संख्याताः सारमेयामहाद्भुताः ॥ ५१ ॥ सप्तशत्यासमाख्यातारभसंखादयंति ते ॥ सारमेयादनं नाम नरकं
दारुणं मुने ॥ ५२ ॥ अतः परं प्रवक्ष्यामि अवीचिप्रमुखान्मुने ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे ऽष्टमस्कंधे द्वाविं
शोऽध्यायः ॥ २२ ॥ श्रीनारायण उ० ॥ येनराः सर्वदा साक्ष्ये अनृतं भाषयंति च ॥ दाने विनिमये र्थस्य देवर्षे पापबुद्ध
यः ॥ १ ॥ ते प्रेत्यामुत्र नरके अवीच्याख्येति दारुणे ॥ योजनानां शतोच्छ्रायाद्विरिमुर्ध्नः पतंति हि ॥ २ ॥ अना
काशेधः शिरसस्त्वदवीचीति नामके ॥ यत्र स्थलं दृश्यते च जलवद्भीचिसंयुतं ॥ ३ ॥ अवीचिमत्ततस्तत्रातिलश
श्छिन्नविग्रहः ॥ घ्रियते नैव देवर्षे पुनरेवावरोप्यते ॥ ४ ॥ योवा द्विजो वाराजन्यो वैश्यो वा ब्रह्मसंभव ॥ सोमपीथ
स्तत्कलत्रं सुरांवापि बतीव हि ॥ ५ ॥ प्रमादतस्तु तेषां वै निरये परिपातनं ॥ कुर्वति यमदूतास्ते पानं कार्णाय
सोमुने ॥ ६ ॥ बन्धिना द्रवमाणस्य नितरां ब्रह्मसंभव ॥ संभावेन न स्वस्यैव यो ऽधमोऽपि न राधमः ॥ ७ ॥

॥ २ ॥ अनाकाशे निरवकाशे निरालंबे इत्यर्थः ॥ ३ ॥ वीचिस्तरंगस्तद्भीचिमत् नवीचिमदवीचिमत् ततो हेतोस्तत्स्थलमवीचिमदवी
चिसंज्ञकमित्यर्थः ॥ ४ ॥ अन्योऽपि वात्र तस्थः स नृराजन्यो वा वैश्यो वा सोमपीथः कृतसोमपान इत्यर्थः ॥ ५ ॥ ६ ॥ बन्धिना द्रवमाणस्य का
र्णाय सोमो ह्यस्य तत्र कार्णमसीति शेषः संभावेन न आत्मसंभावनयेत्यर्थः ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥

दे.भा.अ

॥३८॥

॥ ८ ॥ यातनाश्रुतेभ्रमविभक्तलोपआर्षः ॥ ९ ॥ यजंतिअन्यदेवं भैरवादीनरमेधेनरपशुना ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ वैश्रंभक
विश्रासोपायैःविश्रंभय्यविश्रासंकारयित्वा ॥ १३ ॥ क्रीडनोत्कारकान्क्रीडासाधनानिबविद्यमानान्घातयंतिविश्रासघातिनइत्यर्थः ॥ १४ ॥
॥ १५ ॥ आत्मशमलमात्मनाकृतं पापं उद्वेजयंतिकठोरभाषणादिभिर्भयं ददाति उल्बणवृत्तयः क्रूरस्वभावाः ॥ १६ ॥ यथासर्पादिकाः

विद्याजन्मतपोवर्णाश्रमाचारवतोनरान् ॥ वरीयसोपिनबहुमन्यतेपुरुषाधमः ॥ ८ ॥ सनीयतेयमभटैःक्षा
स्कर्दमनामके ॥ निरयेर्वाक्शिराघोरांदुरंतयातनाश्रुते ॥ ९ ॥ येवैनरायजंत्यन्यंनरमेधेनमोहिताः ॥ स्त्रियो
पिबानरपशुंस्वादंत्यत्रमहामुने ॥ १० ॥ पशवोनिहितास्तेतुयमसद्गनिसंगताः ॥ शौनिकाइवतेसर्वेविदार्या
सितधारया ॥ ११ ॥ असृक्पिबंतिनृत्यंतिगायंतिबहुधामुने ॥ यथेहमांसभोक्तारःपुरुषादादुरासदाः ॥ १२ ॥
अनागसोपियोरण्येग्रामेवाब्रह्मपुत्रक ॥ वैश्रंभकैरुपसृतान्विश्रंभय्यजिजोविषून् ॥ १३ ॥ शूलसूत्रादि
षुप्रोतान्क्रीडनोत्कारकानिवा ॥ पातयंतिचतेप्रेत्यशूलप्रोतेपंतंतिह ॥ १४ ॥ शूलादिषुप्रोतदेहाःक्षुतृङ्क्षां
चातिपीडिताः ॥ तिग्मतुंडैःकंकषकैरितश्चेतश्चताडिताः ॥ १५ ॥ पीडिताआत्मशबलंबहुधासंस्मरंतिहि ॥
येभूतानुद्वेजयंतिनराउल्बणवृत्तयः ॥ १६ ॥ यथासर्पादिकास्तेपिनरकेनिपतंतिहि ॥ दंदशूकाभिधानेचव
त्रोत्तिष्ठंतिसर्वतः ॥ १७ ॥ पंचाननाःसप्तमुखाग्रसंतिनरकागतान् ॥ यथाबिलेशयाविप्रक्रूरबुद्धिसमन्विताः
॥ १८ ॥ येऽवटेषुकुसूलादिगुहादिषुनिरुंधते ॥ तानमुत्रोद्यतकराःकीनाशपरिसेवकाः ॥ १९ ॥ तेष्वेवोपवि
शित्वाचसगरेणचवन्हिना ॥ धूमेनचनिरुंधंतिपापकर्मरतान्नरान् ॥ २० ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १५ ॥

क्रूराउद्वेजयंतितथा ॥ १७ ॥ पंचाननाःसप्तमुखाःसर्पाः बिलेशयामूषकान्यथाग्रसंतितथा ॥ १८ ॥ अवटेषुअंधकूपेषु कुसूलादिषुनिः
प्रकाशगृहादिषु गुहादिषुपांधकारयुक्तासु निरुंधतेबीजान्रोधयंति ॥ १९ ॥ तेष्वेवस्थानेषुउपविशित्वास्थापयित्वा समरेणसविषेण ॥ २० ॥

टी.अ.
२३

॥३८॥

॥२२॥२२॥आढ्याभिमतिर्धनगर्वितः अहंकृत्यातिगर्वितः ॥२३॥तिर्यक्प्रेक्षणमस्य अभिविशंकीगुर्वादिरापिधनं चोरयिष्यतीतिविशंकीमा
नः अर्थस्य धनस्यायतिः प्राप्तिर्व्ययश्च तत्स्वरूपयातद्विषयया ॥२४॥शुष्यमाणं हृदयं वक्रं च यस्य ग्रहवद्रक्षते पिशाचवदर्थरक्षतेयः ॥२५॥
वित्तग्रहं वित्तरक्षकं ब्रह्मराक्षसं तपुरुषं याम्यकायमसंबन्धिनः किंकरावायका इव परिवयंति सूत्रप्रोतान् कुर्वन्ति ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ तत्र

योतिथीन्समयप्राप्तान्दिधक्षुरिवचक्षुषा ॥ पापेनेहालोकयेच्चस्वयंगृहपतिर्द्विजः ॥ २१ ॥ तस्यापिषापदृष्टे
हिंनिरयेयमकिंकराः ॥ अक्षिणीवज्रतुंडायेकंकाःकाकवटादयः ॥ २२ ॥ गृध्राःक्रूरतराश्चापिप्रसह्योत्पाटयं
तिहि ॥ यआढ्याभिमतिर्यातिअहंकृत्यातिगर्वितः ॥२३॥तिर्यक्प्रेक्षणएवात्राभिविशंकीनराधमः ॥ चिंतया
र्थस्यसर्वत्रायतिव्ययस्वरूपया ॥ २४ ॥ शुष्यहृदयवक्रश्चनिर्वृतिनैवगच्छति ॥ ग्रहवद्रक्षतेचार्थसंप्रेतोय
मकिंकरैः ॥ २५ ॥ सूचिमुख्येचनरकेपात्यतेनिजकर्मणा ॥ वित्तग्रहंचपुरुषंवायकाइवयाम्यकाः ॥ २६ ॥
किंकराःसर्वतंगेषुसूत्रैःपरिवयंतिहि ॥ एतेबहुविधावित्तनरकाःपापकर्मणां ॥ २७ ॥ नराणांशतशःसंतिया
तनास्थानभूमयः ॥ सहस्रशोपिदेवर्षेउक्तानुक्तास्तथापिहि ॥ २८ ॥ विशंतिनरकानेतान्यातनाबहुलान्मुने ॥
तथाधर्मपराश्चापिलोकान्यांतिसुखोद्गतान् ॥ २९ ॥ स्वधर्मोबहुधागीतोयथातदमहामुने ॥ देवीपूजनरू
पोहिदेव्याराधनलक्षणः ॥ ३० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥

यद्यपिउत्तमलोकप्रापकोपिधर्मोबहुधाविगीतःकथितस्तथापिसर्वधर्मेषुश्रीभगवतीचरणसपर्याधर्मएवमुख्यइत्याह स्वधर्मइति यथातदबहुधा
विगीतोऽमस्कंधेप्रथमाध्यायेजंबादनीधरिश्चरीमीनाक्षरुणामाहात्यप्रसंगेनचध्यानपूजादिलक्षणःकथितःसएवदेवीपूजनरूपोदेव्याराधनल
क्षणोमुख्योधर्मइत्यर्थःतत्रदेवीपूजनरूपेत्यनेनस्थूलमूर्तेर्यहणंदेव्याराधनलक्षणइत्यनेनसूक्ष्मस्वरूपभगवत्यादेवीपदेनग्रहणमितिविवेकः ॥ ३० ॥

दे.भा.अ

॥३९॥

कुतः स्वधर्मो मुख्य इति चेत्तत्राह वेनेति नरकं नैव भजेत् किंच सा देवीति एकैकगुणोपाधिब्रह्मविष्णुरुद्राण्येक्षया सा म्यावस्थमायोपाधिकब्रह्म
रूपिण्याभिव्यक्ताः स्वतंत्रत्वात् सर्वोत्कृष्टत्वाच्चैव देवीभवपाथो धेर्भवसमुद्रादुद्गृहीततत्पूजनरूपो धर्म एव मुख्य इत्यर्थः ब्रह्मविष्णुरुद्रास्तु तत्प्रेरिता
एव फलं प्रयच्छन्ति न स्वातंत्र्येण तस्मात्सैव देवी पूज्येति भावः तथा च भुक्तिः अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवो भस्ममानुषेभिः यं कामयेत तं मुग्रं कृ
णोमि तं ब्रह्माणं तं मृषं तं सुमेधामिति ॥ ३१ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके अष्टमस्कंधे त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥ एकोनसतति श्लोकैर्देव्याराध

टी.अ.
२४

येनानुष्ठितमात्रेण नरो नरकं व्रजेत् ॥ सा देवी भवपाथो धेरुद्धर्त्री पूजितानूणां ॥ ३१ ॥ इति श्रीदेवीभागव
ते महापुराणे ऽष्टमस्कंधे त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥ श्रीनारद उवाच ॥ धर्मश्च कीदृशस्तात देव्याराधनलक्षणः
॥ कथमराधिता देवी सा ददाति परंपदं ॥ १ ॥ आराधनविधिः को वा कथमाराधिता कदा ॥ केन सा दुर्ग नरकादु
र्गात्राण प्रदा भवेत् ॥ २ ॥ श्रीनारायण उवाच ॥ देवर्षेशृणु चित्तैकाग्र्येण मे विदुषां वर ॥ यथा प्रसीदते देवी ध
र्मा राधनतः स्वयं ॥ ३ ॥ स्वधर्मो यादृशः प्रोक्तस्तं च मे शृणु नारद ॥ अनादा विहसं सारे देवी संपूजिता स्वयं ॥ ४ ॥
परिपालयते घोरसंकटादिषु सामुने ॥ सा देवी पूज्यते लोकैर्यथावत्ताद्विधिं शृणु ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥

नमुच्यते । नानाविधोपचारैश्च भुक्तिमुक्तिप्रदायकं ॥ १ ॥ प्रथमतो नारदेन वेदशास्त्रप्रतिपाद्यं जगतस्तत्त्वं पृष्ठं तन्नारायणेन मायाशक्तिशबलब्रह्मा
दिकं श्रीभगवतीरूपमेव सर्ववेदसर्वशास्त्रसारभूतं जगतस्तत्त्वं प्रतिपाद्यतस्य ध्यानोपयोगिस्वरूपं विराडात्मकं प्रतिपादितं तदनंतरं च तस्या देव्याराध
नमेव सर्वधर्मेषु वरिष्ठो धर्मः सच भोगमोक्षदायक इत्युक्तं तच्छ्रुत्वा तदाराधनविधौ वैशेषतो जिज्ञासुर्नारदः पृच्छति धर्मश्चेति ॥ १ ॥ कथमाराधि
तेति स्थानप्रश्नाभिप्रायेणोच्यते कदेति कालप्रश्नः केनेति स्तोत्रप्रश्नः ॥ २ ॥ ३ ॥ प्राणिमात्रस्य नान्यः स्वधर्मः किंतु श्रीदेव्याराधनलक्षण
एवात एव सर्वत्र यस्य श्रीमायय्युपासनमेवानित्यत्वेन विहितं नान्यदेवतोपासनं तथेत्यभिप्रायेणाह स्वधर्मो यादृश इति ॥ ४ ॥ संकटादिषु संसा
रसंकटादिषु ॥ ५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥३९॥

तन्मन्त्रदक्षिणपूजनमाह आन्येन आन्यनैवेद्येन तद्वाज्वंगोघृतं गोघृतेन च पूजयेदित्यरुणाचलमाहात्म्ये कथनात् तत्र षोडशोपचारेषु मुख्योपचारस्तु नैवेद्यवत्स्य ग्रहणेन षोडशोपचारा अप्याक्षिप्तावेदितव्याः ब्राह्मणाय घृतदानं सदाक्षिणं कार्यं ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥

प्रतिपत्तिथिमासाद्य देवीमाज्येन पूजयेत् ॥ घृतं दद्याद्ब्राह्मणाय रोगहीनो भवेत्सदा ॥ ६ ॥ द्वितीयायां शर्करया पूजयेज्जगदंबिकां ॥ शर्करां प्रदेद्विप्रेदीर्घायुर्जायते नरः ॥ ७ ॥ तृतीयादिवसे देव्यै दुग्धं पूजनकर्मणि ॥ क्षीरं दत्त्वा द्विजाद्याय सर्वदुःखातिगो भवेत् ॥ ८ ॥ चतुर्थ्यां पूजने पूपादेया देव्यै द्विजाय च ॥ अपूप एव दातव्या न विघ्नैरभिभूयते ॥ ९ ॥ पंचम्यां कदलीजातं फलं देव्यै निवेदयेत् ॥ तदेव ब्राह्मणे देयं मेधावान्पुरुषो भवेत् ॥ १० ॥ षष्ठीतिथौ मधुप्रोक्तं देवीपूजनकर्मणि ॥ ब्राह्मणाय च दातव्यं मधुकांतिर्यतो भवेत् ॥ ११ ॥ सप्तम्यां गुडनैवेद्यं देव्यै दत्त्वा द्विजाय च ॥ गुडं दत्त्वा शोकहीनो जायते द्विजसत्तम ॥ १२ ॥ नारीकेलमथाष्टम्यां देव्यै नैवेद्यमर्पयेत् ॥ ब्राह्मणाय प्रदातव्यं तापहीनो भवेन्नरः ॥ १३ ॥ नवम्यां लाजमंबायै चार्पयित्वा द्विजाय च ॥ दत्त्वा सुखाधिको भूयादिह लोके परत्र च ॥ १४ ॥ दशम्यामर्पयित्वा तु देव्यै कृष्णतिलान्मुने ॥ ब्राह्मणाय प्रदत्त्वा तु यमलोकाद्भयं न हि ॥ १५ ॥ एकादश्यां दधितथा देव्यै चार्पयते तु यः ॥ ददाति ब्राह्मणायैतद्देवी प्रियतमो भवेत् ॥ १६ ॥ द्वादश्यां पृथुकान् देव्यै दत्त्वा चार्या यो ददेत् ॥ तानेव च सुरश्रेष्ठसदेवी प्रियतां व्रजेत् ॥ १७ ॥ त्रयोदश्यां च दुर्गायै चणकान् प्रददाति च ॥ तानेव दत्त्वा विप्राय प्रजासंततिवान्भवेत् ॥ १८ ॥ चतुर्दश्यां च देवर्षे देव्यै सक्तून् प्रयच्छति ॥ तानेव दद्याद्दिप्राय शिवस्य दयितो भवेत् ॥ १९ ॥ पायसं पूर्णिमातिथ्यामपर्णायै प्रयच्छति ॥ ददाति च द्विजाद्याय पितृनुद्धरते खिलान् ॥ २० ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥

॥ २० ॥ मधुकांतिः सुंदरकांतिः ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥

दे.भा.अ

॥४०॥

अमावास्यायांतुषरशेषात्पूर्णिमा नैवेद्यावस्थाः । हवामिति नित्यहोमोयः पूजापटले उक्तः स इत्यर्थः ॥ २१ ॥ अर्युजनमाह राविवारे
इति अत्रवारतिथिकरणयोगादीनां पूजात्वेकैव नैवेद्या एव तु पृथक् देयाः ॥ २२ ॥ गुह्यासरे शर्करा रक्तदेया सैव सितशर्करा शुक्रवा
रे ॥ २३ ॥ एतेषां द्वयं नामपि नित्यहोमः कर्तव्यः ॥ २४ ॥ किलाटकं दुग्धमलयातिभाषया दधिकूर्चील्लोके दधिमलयातिप्रसिद्धा कं
चित्तुशर्करायुक्तं मयितं दधिदधिकूर्चीशब्देनोच्यते इत्याहुः तथा च कोशः कूर्चिकाक्षीरविकृतिः स्याद्द्रसालातुमार्जिकेति फेणिकामहा

तत्तिथौ हवनं प्रोक्तं देवीप्रीत्यै महामुने ॥ तत्तत्तिथ्युक्तवस्तूनामशेषारिष्टनाशनं ॥ २१ ॥ राविवारे पायसंचने
वेद्यं परिकीर्तितं ॥ सोमवारे पयः प्रोक्तं भौमे च कदलीफलं ॥ २२ ॥ बुधवारे च संप्रोक्तं नवनीतं नवं द्विज ॥ गुरु
वारेशर्करांचसितां भार्गववासरे ॥ २३ ॥ शनिवारे घृतं गव्यं नैवेद्यं परिकीर्तितं ॥ सप्तविंशतिनक्षत्रनैवेद्यं श्रू
यतां मुने ॥ २४ ॥ घृतं तिलं शर्करांच दधिदुग्धं किलाटकं ॥ दधिकूर्चीमोदकं च फेणिकां घृतमंडकं ॥ २५ ॥ कं
सारं वटपत्रं च घृतपूरमतः परं ॥ वटकं कोकरसकं पूरणं मधुसूरणं ॥ २६ ॥ गुडं पृथुकद्राक्षे च स्वर्जूरं चैव राजकं ॥
अपूपं नवनीतं च मुद्गं मोदक एव च ॥ २७ ॥ मातुर्लिंगमिति प्रोक्तं भनैवेद्यं च नारद ॥ विष्कंभादिषु योगेषु प्र
वक्ष्यामि निवेदनं ॥ २८ ॥ पदार्थानां कृतेष्वेव प्रीणातिजगदं विका ॥ गुडं मधुघृतं दुग्धं दधितक्रं त्वपूपकं २९ ॥

राष्ट्रभाषायां तारफेणीति प्रसिद्धा घृतमंडकं शकरवारा इति प्रसिद्धं ॥ २५ ॥ कंसारमिति गोधूमपिष्टगुडनिर्मितं गुंजरभाषायां प्रसिद्धं म
हाराष्ट्रभाषायां सांजा इति वटपत्रं पाण्ड इति प्रसिद्धं घृतपूरं घीवर इति प्रसिद्धं वटकं प्रसिद्धं कोकरसकं कोंकश्चक्रेवृके ज्येष्ठ्यां खर्जूरिदुम
दुर्दरे इति मोदिनीकोशात् खर्जूरस इत्यर्थः पूरणं चणकपिष्टगुडनिर्मितं महाष्ट्रभाषायां प्रसिद्धं प्रधुमाक्षिकं सूरणं प्रसिद्धं तच्च घृतपकं शर्क
रामिधितं प्राचीनं अन्यत्सर्वं प्रसिद्धं ॥ २६ ॥ २७ ॥ भनैवेद्यं नक्षत्रनैवेद्यमित्यर्थः ॥ २८ ॥ कृतेषु दत्तोचित्यर्थः ॥ २९ ॥ ॥ ॥

टी.अ.
२४

॥४०॥

॥ ३० ॥ ३१ ॥ जम्भफलं जम्भद्वैत्यविशेषस्याहतेजवीरभक्षयोचितिमेदिनीकोशाब्जंभफलशब्देनजंवीरफलं ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ कं
सारद्वयःपूर्वमुक्ताएव ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ मधूकवृक्षमिति मधूकवृक्षेवक्ष्यमाणतत्तन्मासनामभिर्मंगलावैष्णवीमायेत्यादिभिःश्रीदेवीमावा

नवनीतंकर्कटीचकूष्माण्डांचापिमोदकं ॥ पनसंकदलंजंबूफलमाश्रफलंतिलं ॥ ३० ॥ नारंगंदाडिमंचैवबदरी
फलमेवच ॥ धात्रीफलंपायसंचपृथुकंचणकंतथा ॥ ३१ ॥ नारिकेलंजंभफलंकसेरुंसूरणंतथा ॥ एतानिक्रम
शोविप्रनैवेद्यानिशुभानिच ॥ ३२ ॥ विष्कंभादिषुयोगेषुनिर्णीतानिमनीषिभिः ॥ अथनैवेद्यमाख्यास्येकर
णानांपृथङ्भुने॥३३॥ कंसारंमंडकंफेणीमोदकंवटपत्रकं ॥ लड्डुकंघृतपूरंचतिलंदधिघृतंमधु॥३४॥ करणा
नामिदंप्रोक्तंदेवीनैवेद्यमदरात् ॥ अथान्यत्संप्रवक्ष्यामिदेवीप्रीतिकरंपरं ॥ ३५ ॥ विधानंनारदमुनेशृणुत्स
र्वमाहृतः ॥ चैत्रेशुद्धतृतीयायांनरोमधूकवृक्षकं ॥३६॥ पूजयेत्पंचखाद्यंचनैवेद्यमुपकल्पयेत् ॥ एवंद्वादशमा
सेषुतृतीयातिथिषुक्रमात् ॥ ३७ ॥ शुक्लपक्षेविधानेननैवेद्यमभिदध्महे ॥ वैशाखमासेनैवेद्यंगुडयुक्तंचनारद
॥ ३८ ॥ ज्येष्ठमासेमधुप्रोक्तंदेवीप्रीत्यर्थमेवतु ॥ आषाढेनवनीतंचमधूकस्यनिवेदनं ॥ ३९ ॥ श्रावणेदधि
नैवेद्यंभाद्रमासेचशर्करा ॥ आश्विनेपायसंप्रोक्तंकार्तिकेपयउत्तमं ॥ ४० ॥ मार्गेफेण्युत्तमाप्रोक्तापौषेचदधि
कूर्चिका ॥ माघेमासिचनैवेद्यंघृतंगव्यंसमाहरेत् ॥ ४१ ॥ नारिकेलंचनैवेद्यंफाल्गुनेपरिकीर्तितं॥एवंद्वादश
नैवेद्यैर्मासेचक्रमतोर्चयेत् ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥

अपूजयेदित्यर्थः मधूकवृक्षोमधुदुमः भाषायांमहुवाइतिप्रसिद्धः ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ मासभेदेननैवेद्यभेदमाह वैशाखमासइति ॥ ३८ ॥
॥ ३९ ॥ ४० ॥ मार्गमासंशर्षे फेणीपूर्वोक्ता दधिकूर्चिकापूर्वोक्ता ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥

दि.भा.अ.

द्वादशमासेषु भगवत्याद्वादशमामान्याह मंगलेति मतंगीमातंगी ॥ ४३ ॥ नामपदैरिति एकैकमासेक्रमेणैकैकनाम्ना ॥ ४४ ॥ ४५ ॥
॥ ४६ ॥ प्रजायाविश्वस्योत्पत्तिर्यस्याः सकाशात्सा प्रजोत्पत्तिः ॥ ४७ ॥ मार्तण्डसहचारिणी सूर्यमण्डलवर्तिनी ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥

॥४१॥

टी.अ.
२४

मंगलवैष्णवीमायाकालरात्रिर्दुरत्यया ॥ महामायामतंगीचकालीकमलवासिनी ॥ ४३ ॥ शिवासहस्रचर
णां सर्वमंगलरूपिणी ॥ अभिर्नामपदैर्देवींमधूकेपरिपूजयेत् ॥ ४४ ॥ ततस्तुवीतदेवेशींमधुकस्थांमहेश्वरीं
॥ सर्वकामसमृद्ध्यर्थं व्रतपूर्णत्वसिद्धये ॥ ४५ ॥ नमःपुष्करनेत्रायैजगद्धात्र्यैनमोस्तुते ॥ माहेश्वर्यैमहादेव्यै
महामंगलमूर्तये ॥ ४६ ॥ परमापापहन्त्रीचपरमार्गप्रदायिनी ॥ परमेश्वरीप्रजोत्पत्तिः परब्रह्मस्वरूपिणी ॥
४७ ॥ मददात्रीमदोन्मत्तामानगम्यामहोन्नता ॥ मनस्विनीमुनिध्येयामार्तण्डसहचारिणी ॥ ४८ ॥ जयलोके
श्वरिप्राज्ञेप्रलयांबुदसन्निभे ॥ महामोहविनाशार्थं पूजितासिसुरासूरैः ॥ ४९ ॥ यमलोकाभावकर्त्रीयमपूज्या
यमाग्रजा ॥ यमनिग्रहरूपाचयजनीयेनमोनमः ॥ ५० ॥ समस्वभावासर्वेशीसर्वसंगविवर्जिता ॥ संगना
शकरीकाम्यरूपाकारुण्यविग्रहा ॥ ५१ ॥ कंकालक्रूराकामाक्षीमीनाक्षीमर्मभेदिनी ॥ माधुर्यरूपशीलाचमधुर
स्वरपूजिता ॥ ५२ ॥ महामंत्रवतीमंत्रगम्यामंत्रप्रियंकरी ॥ मनुष्यमानसगमामन्मथारिप्रियंकरी ॥ ५३ ॥

॥ ५१ ॥ मधुरस्वरः प्रणवस्तेन पूजिता ॥ ५२ ॥ महामंत्रोमायाबीजादिरूपस्तद्वतीवाच्यवाचकतासंबन्धेन मंत्रेणैवगम्याप्राप्यामंत्रज्ञेन
प्रसन्नैवप्राप्यतेयतः मंत्रएकांतविचारोनिदिध्यासनरूपः सप्रियं करोयस्याः एतादृशीसर्वोत्कृष्टापिपामरमनुष्यमानसेनगम्यतेप्राप्यतेसाम
नगम्यमानसगमाएतादृश्यतिकरुणावतीत्यर्थः ॥ ५३ ॥

॥ ५३ ॥

॥ ५३ ॥

॥ ५३ ॥

॥४१॥

अश्वत्थेत्यादिनामधूकवृक्षपूजावत् अश्वत्थादिवृक्षेष्वपि पूजनमस्तीति सूचितं ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ वेदसंपन्नो भवेद्दि

अश्वत्थवटनिंबास्रकपित्थबदरीगते ॥ पनसार्ककरीरादिक्षीरवृक्षस्वरूपिणि ॥ ५४ ॥ दुग्धवल्लीनिवासाहं द
यनीयेदयाधिके ॥ दाक्षिण्यकरुणारूपे जयसर्वज्ञवल्लभे ॥ ५५ ॥ एवंस्तवेन देवेशी पूजनांतेस्तु वीततां ॥ व्र
तस्य सकलं पुण्यं लभते सर्वदानरः ॥ ५६ ॥ नित्यं यः पठते स्तोत्रं देवी प्रीतिकरं नरः ॥ आधिव्याधिभयं नास्ति
रिपुभीतिर्न तस्य हि ॥ ५७ ॥ अर्थार्थी चार्थमाप्नोति धर्मार्थी धर्ममाप्नुयात् ॥ कामानवाप्नुयात् कामी मोक्षार्थी मोक्ष
माप्नुयात् ॥ ५८ ॥ ब्राह्मणे वेदसंपन्नो विजयी क्षत्रियो भवेत् ॥ वैश्यश्च धनधान्याढ्यो भवेच्छूद्रः सुखादिकः ॥ ५९ ॥
स्तोत्रमेतच्छ्राद्धकाले यः पठेत् प्रयतो नरः ॥ पितृणामक्षया तृप्तिर्जायते कल्पवर्तिनी ॥ ६० ॥ एवमाराधनं देव्याः
समुक्तं सुरपूजितं ॥ यः करोति नरो भक्त्या स देवीलोकभाक् भवेत् ॥ ६१ ॥ देवी पूजनतो विप्रसर्वे कामा भवांति हि
॥ सर्वपापहतिः शुद्धामतिरंते प्रजायते ॥ ६२ ॥ यत्र तत्र भवेत् पूज्यो मान्यो मानधनेषु च ॥ जायते जगदंबायाः प्र
सादेन विरंचिज ॥ ६३ ॥ नरकाणां न्तस्यास्ति भयं स्वप्नेऽपि कुत्रचित् ॥ महामाया प्रसादेन पुत्रपौत्रादिवर्ध
नः ॥ ६४ ॥ देवी भक्तो भवत्येव नात्र कार्या विचारणा ॥ इत्येवं ते समाख्यातं नरकोट्यारलक्षणं ॥ ६५ ॥ पूजनं
हि महादेव्याः सर्वमंगलकारकं ॥ मधूकपूजनं तद्वन्मासानां क्रमतो मुने ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥

त्यर्थः ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ तद्वच्चैत्रवत् ॥ ६६ ॥

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

॥ इति श्रीमद्देवीभागवतअष्टमस्कंधः समाप्तः ॥

॥ अथ श्रीमद्देवीभागवतनवमस्कंधप्रारंभः ॥

दे.भा.न

॥ १ ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीदेव्यैनमः ॥ काश्मीरत्रिंशुभालांकरुणाशृंगारसारसीमांतां ॥ सीमंतवद्धचंद्रामुनिद्रांभोरुहाननांवंदे ॥ १ ॥ स्कंधोऽस्मिन्नवमेपंचप्रकृतीनांप्रपंचनं ॥ तत्प्रसंगेनचान्यासांक्रियतेविस्तरेणच ॥ १ ॥ आर्धाधिकाष्टपंचाशत्संयुतैःशतपद्यकैः ॥ संक्षेपेणचशक्तीनांवर्णनंतावदुच्यते ॥ १ ॥ ननुसर्वोऽप्ययंनवमस्कंधोऽध्यायतोऽग्रंथानुपूर्वितश्चब्रह्मवैवर्तीतर्गतप्रकृतिखंडेनसमानएव कचिद्वचिद्वेदोपिप्रायशः कथंजातइतिचेत्सत्यं किंतावदत्राश्चर्यकारणं कुत्रचिदेतादृशंसमानानुपूर्विकत्वेनदृष्टमितिचेत्तदसत् शिवरहस्योक्तप्रदोषपूजाध्यायस्यब्रह्मोत्तरखंडस्थप्रदोषपूजाध्यायेनसमानानुपूर्विकत्वदर्शनात् तथानारदपुराणीयमंत्रखंडस्थवचनानांतंनराजस्थवचनैःसमानत्वात् तथातंत्रेषु बहुषुतंत्रांतरस्थपटलानांसमानानामुपलंभात् तथावेदेषिरुद्राध्यायस्यशतशाखासुसमानत्वात् पुरुषसूक्तादिमूक्तानांचशाखांतरेषुसमानानुपूर्विकत्वस्यस्पष्टमुपलभ्यमानत्वात् तथाचयथासर्वत्रसमानानुपूर्विकत्वमन्यत्रदृष्टंतादेवीभागवतेऽपिनवमस्कंधस्यप्रकृतिखंडसमानानुपूर्विकत्वमस्तुकिमाश्चर्यं ननुतथाप्यत्रपूर्वापरविरोधःस्पष्टएव तथाहि पूर्वत्रतृतीयस्कंधेब्रह्मविष्णुरुद्राणांसाम्यावस्थमायोपाधिकब्रह्मणोभगवतीपदवाच्यादुत्पत्तिरभिहिता तथागौरीलक्ष्मीसरस्वतीनांचभगवतीसकाशादेवोत्पत्तिरुक्ताभगवत्यैवताःशक्तयस्तेभ्योदत्ताइत्युक्तं नवमस्कंधेतुगोपालसुंदरीरूपश्रीकृष्णमूर्तेर्ब्रह्मादीनामुत्पत्तिस्तथागौर्यादीनामुत्पत्तिस्ताश्चशक्तयोब्रह्मादिभ्योदत्ताः श्रीकृष्णेनैवेत्यादिकमुक्तमन्यच्चकचिदास्मिन्स्कंधेपूर्वाविस्तृमेवोक्तं तथाचपूर्वापरविरोधःस्पष्टएवेतिचेन्न भिन्नवक्तृकत्वात् पूर्वग्रंथस्यवक्ताव्यासो नवमस्कंधस्यवक्ता नारायणइतिभिन्नवक्तृकत्वात्कल्पभेदेनोभयमप्युपपद्यते यथापुराणेषुकचिच्छिवा ब्रह्मविष्ण्वोरुत्पत्तिः कचिन्ब्रह्मणःसकाशाच्छिवविष्णोः कचिद्गणेशादेतेषांत्रयाणांतथासूर्यादेतेषांत्रयाणांकल्पभेदेनोत्पत्तिरभिहिता तथैवात्रापिकल्पभेदेनउभयार्थस्यापिसंभवात् ननुपुराणभेदेनतत्र भिन्नभिन्नासृष्टिप्रक्रियाअभिहिता अत्रत्वेकस्मिन्नेवपुराणेभिन्नाप्रक्रियाभिहितेतिजनमेजयस्यैकस्यश्रोतुर्व्यामोहःस्यादितिचेन्न महाभारते शिवमाहात्म्यप्रकरणेशिवस्यब्रह्मविष्णूकारणत्वंविष्णुमाहात्म्यप्रकरणेविष्णोरेवब्रह्मरुद्रौकारणत्वमितिमर्यादायाएकस्मिन्नपिपुराणेदृष्टत्वादे

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ गणेशजननीदुर्गाराधालक्ष्मीःसरस्वती ॥
सावित्रीचसृष्टिविधौप्रकृतिःपंचधास्मृता ॥ १ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७४ ॥

विंक्तत्वमस्तुकिमाश्चर्यं ननुतथाप्यत्रपूर्वापरविरोधःस्पष्टएव तथाहि पूर्वत्रतृतीयस्कंधेब्रह्मविष्णुरुद्राणांसाम्यावस्थमायोपाधिकब्रह्मणोभगवतीपदवाच्यादुत्पत्तिरभिहिता तथागौरीलक्ष्मीसरस्वतीनांचभगवतीसकाशादेवोत्पत्तिरुक्ताभगवत्यैवताःशक्तयस्तेभ्योदत्ताइत्युक्तं नवमस्कंधेतुगोपालसुंदरीरूपश्रीकृष्णमूर्तेर्ब्रह्मादीनामुत्पत्तिस्तथागौर्यादीनामुत्पत्तिस्ताश्चशक्तयोब्रह्मादिभ्योदत्ताः श्रीकृष्णेनैवेत्यादिकमुक्तमन्यच्चकचिदास्मिन्स्कंधेपूर्वाविस्तृमेवोक्तं तथाचपूर्वापरविरोधःस्पष्टएवेतिचेन्न भिन्नवक्तृकत्वात् पूर्वग्रंथस्यवक्ताव्यासो नवमस्कंधस्यवक्ता नारायणइतिभिन्नवक्तृकत्वात्कल्पभेदेनोभयमप्युपपद्यते यथापुराणेषुकचिच्छिवा ब्रह्मविष्ण्वोरुत्पत्तिः कचिन्ब्रह्मणःसकाशाच्छिवविष्णोः कचिद्गणेशादेतेषांत्रयाणांतथासूर्यादेतेषांत्रयाणांकल्पभेदेनोत्पत्तिरभिहिता तथैवात्रापिकल्पभेदेनउभयार्थस्यापिसंभवात् ननुपुराणभेदेनतत्र भिन्नभिन्नासृष्टिप्रक्रियाअभिहिता अत्रत्वेकस्मिन्नेवपुराणेभिन्नाप्रक्रियाभिहितेतिजनमेजयस्यैकस्यश्रोतुर्व्यामोहःस्यादितिचेन्न महाभारते शिवमाहात्म्यप्रकरणेशिवस्यब्रह्मविष्णूकारणत्वंविष्णुमाहात्म्यप्रकरणेविष्णोरेवब्रह्मरुद्रौकारणत्वमितिमर्यादायाएकस्मिन्नपिपुराणेदृष्टत्वादे

टी.अ.

१

॥ १ ॥

नमेवकूमंपुराणादिषुकल्पभेदेनसृष्टिभेदस्यैकपुराणेएवदृष्टत्वाच्च ननुतथापिश्रोतुर्व्यामोहःकथंनभवतीतिचेन्न उभयोर्विरुद्धयोःप्रतिपादने
नसृष्टेर्मादृक्त्वेनमिथ्यात्वान्मिथ्यापदार्थेश्रुतेःपुराणादीनांचनाग्रहद्वितीश्रोतुर्बोधसंभवात् यथेदंजालंकस्मादुत्पन्नमितिबिमर्शनतत्रकिंचित्का
रणंमयातिरिक्तंलभ्यते तथात्रापिसृष्टौमायैवमुख्यंकारणमितिबोधनार्थमेवव्यासेनतथोक्तत्वाच्च यदैकविधैवसृष्टिस्तस्याश्वकारणमेकविधमे
वप्रतिपाद्येततदाजगतःसत्यत्वशंकापिस्यात्सामाभवतुकिंत्विर्नवचनीयमेवजगद्वतीत्यनिर्वचनीयत्वज्ञानार्थैविविधसृष्टिप्रतिपादनस्यविविधका
रणप्रतिपादनस्यावश्यकत्वाच्च तदुक्तंगौडपादाचार्यैः मृल्लोहविस्फुल्लिगाद्यैःसृष्टिर्याचोदितान्यथा उपायःसोवतारायनास्तिभेदःकथंचनेति
व्याख्यातंचभगवद्विर्भाष्यकारैर्मृल्लोहविस्फुल्लिगादिदृष्टान्तोपन्यासैःसृष्टिर्याचोदिताप्रकाशितान्यथान्यथाचसर्वसृष्टिप्रकारोजीवपरमात्मैक
त्वबुद्ध्यवतारायोपायोऽस्माकंयथाप्राणसंवादेवागाद्यासुरपामवेदाख्यायिकाकलिताप्राणमुख्यत्वबोधनायतदप्यसिद्धमितिचेन्नशाखाभेदेन्य
थान्यथाचप्राणादिसंवादश्रवणात् यदिसंवादःपरमार्थेवाभूदेकरूपएवसंवादःसर्वशाखास्वश्रोत्र्यादिरुद्धानेकप्रकारेणनाश्रोत्र्यतुभ्रूयतेतु

नारदउवाच ॥ आविर्बभूवसाकेनकावासाज्ञानिनांवर ॥ किंवातल्लक्षणंसाधोबभूवपंचधाकथं ॥ २ ॥

तस्मान्नतादर्थ्यंसंवादश्रुतीनांतयोत्पत्तिवाक्यानिप्रत्येतव्यानीति तत्राष्टमस्कंधांतेनारायणेनअथान्यदपिवक्ष्यामिप्रकृतेःपंचकंपरमितिप्रतिज्ञातं
प्रकृतिपंचकंनिर्दिशति नारायणउवाच गणेशजननीति गणेशजननीदुर्गेत्येकादेवताप्रकृतिःपंचधेति गुणत्रयसाम्यावस्थात्मकमायाशबलब्रह्म
रूपाप्रकृतिः प्रकृतिश्चप्रतिज्ञादृष्टान्तानुरोधादितिह्यसूत्रप्रतिपादिता अपरेयमितस्त्वन्यांविद्धिमेप्रकृतिंपरां जीवरूपांमहाबाहोययेदंधार्यतेजगदि
तिस्मृतिप्रतिपाद्याच्च सैवपंचधापंचविग्रहरूपेणस्मृता एकस्याभगवत्यामूलप्रकृतेरेवैतेदुर्गादयःपंचावताराइत्यर्थः सृष्टिविधौसृष्टिविधाने
सृष्टिसमयेइत्यर्थः सृष्ट्युपकारार्थमितिवार्थः तथाचैतासांपूजनेऽपिमूलप्रकृतेःश्रीभुवनेश्वर्याएवपूजाजायतइतिबोद्धव्यं ॥ १ ॥ प्रकृति
पंचकनामश्रवणमात्रेणसंजातहर्षोनारदःपृच्छति नारदउवाच आविर्बभूवेति केननिमित्तेनसापंचधाआविर्भूतायाचाविर्भूतासाकावा जडावाचे
तनावा जडायामायायाब्रह्मणश्चप्रकृतित्वस्यशास्त्रेश्रवणादाशंकायुक्तैव यदिजडायादिवाचेतनाकिंवातस्यालक्षणंज्ञापकंसाचपंचधाकथंके
वप्रकारेणबभूव साक्षादेवपंचावतारामृहीताउतरूपांतरद्वारेणेतिप्रश्नार्थः तदेतत्संशयचतुष्टयंव्याख्यातुमर्हसीत्यर्थः ॥ २ ॥ ॥७॥

॥ २ ॥

॥ २ ॥

किंच सर्वासांचरितं पूजाविधानं गुणैर्हृत्पित्तो गुणो यस्य देवताया उपासने योगे मुमुक्षुः कलंभसितिसगुणः कस्या अपि
 त्वरं कुत्र कस्यास्तन्मे व्याख्यातुमर्हसीत्यर्थः ॥ ३ ॥ उत्तरमाह नारायण उवाच प्रकृतेरिति क्षमो धर्मवत्तस्या अनादित्वात्
 निर्गुणीयत्वाच्च तदुक्तं सायमानानां परिच्छिन्नानामस्माकमल्पपरिच्छिन्नबुद्धेरविषयत्वाच्च तस्या लक्षणं यथावदुक्तं न कोऽपि समर्थ इत्यर्थः ॥ ४ ॥
 तत्र प्रथमतस्तदस्य लक्षणमाह प्रकृष्टवाचक इति प्राप्तरण इति धातोः पचाद्यचि निष्पन्नः प्रशब्दः कृतिशब्दस्य व्यापारसामान्यार्थकत्वात् सृष्टि
 व्यापारार्थकत्वं तथा च प्राप्रकृष्टा मुख्या कृतौ सृष्टौ यासां प्रकृतिरिति व्यधिकरणपदबहुव्रीहिणा त्वेतस्यार्थस्य लाभः पृषोदरादित्वात् प्राशब्दस्य न

टी. अ.

१

सर्वासांचरितं पूजाविधानं गुणैर्हृत्पित्तः ॥ अवतारः कुत्र कस्यास्तन्मे व्याख्यातुमर्हसि ॥ ३ ॥ श्रीनारायण उ
 वाच ॥ प्रकृतेर्लक्षणं वत्सको वा वक्तुं क्षमो भवेत् ॥ किंचित् तथापि वक्ष्यामि यच्छ्रुतं धर्मवक्तः ॥ ४ ॥ प्रकृष्टवाचकः
 प्रथमकृतिश्च सृष्टिवाचकः ॥ सृष्टौ प्रकृष्टाया देवी प्रकृतिः सा प्रकीर्तिता ॥ ५ ॥ गुणे सत्त्वे प्रकृष्टे च प्रशब्दो वर्तते श्रु
 तः ॥ मध्यमे रजसि कृश्नि शब्दस्तमसि स्मृतः ॥ ६ ॥ त्रिगुणात्मस्वरूपा या सा च शक्तिसमान्विता ॥ प्रधा
 ना सृष्टिकरणे प्रकृतिस्तेन कथ्यते ॥ ७ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥

स्वत्वं तथा च मुख्यत्वेन सृष्टिकर्त्री या सा प्रकृतिरित्यर्थः ॥ ५ ॥ स्वरूपलक्षणमाह गुणे सत्त्वे इति प्रकृष्टे सत्त्वे गुणे प्रशब्दो वर्तते न्युत्पत्तिस्तु पूर्वमेव
 मध्यमे रजसि मध्यमः कृश्नो वर्तते मध्यमत्वसादृश्यात् तमसि तमो गुणे च रमे चरमस्ति शब्दो वर्तते चरमत्वसादृश्यादित्यर्थः ॥ ६ ॥
 प्रधायं भूतकावेति शेषमाह त्रिगुणात्मेति निरतिशयावरणविक्षेपदिशक्तिरहिता गुणत्रयसाम्यावस्थात्पिका सृष्टिकरणे प्रधानाया सा प्रकृति
 रिति नोक्त्यर्थः तथा च प्रसंयुक्तः कृः प्रकृः सत्त्वेन गुणेन सद्वितोरनो गुण इत्यर्थः शाकपार्थिवदित्वात्संयुक्तपदलोपः पुनः प्रकृष्टगुणसि
 त्तमो गुणेन गुणसि त्तमो गुणे यस्य स्यात्तन्मे व्याख्यातुमर्हसीत्यर्थः पृषोदरादित्वात् प्राशब्दस्य न ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ २ ॥

पुनर्लक्षणांतरमाह प्रथमेवर्ततेइति प्रशब्दव्युत्पत्तिःपूर्ववत् तथाचप्राप्रथमासृष्टेर्यासाप्रकृतिःसृष्टेरादिभूतेत्यर्थः व्यधिकरणबहुव्रीहिः
 षुषोदरादित्वात्साधुत्वं ॥८॥ एतेनकिंवातल्लक्षणसाधोइतिप्रश्रस्योत्तरमुक्तं गुणत्रयसाम्यावस्यात्मिकावर्ततइतिलक्षणेनबडावर्ततइत्युक्तं
 तेनकावासेतिप्रश्रस्योत्तरमुक्तं इतःपरमाविर्बभूवसाकेनबभूवंपंचधाकथमित्यस्योत्तरमाह योगेनात्मेति सृष्टिविधौसृष्टिविधाननिमित्तयो
 मेनमायाशक्त्यापूर्वोक्तलक्षणयाप्रकृत्यायुक्तआत्मापरत्मादिधारूपोर्धनारीश्वररूपोबभूवेत्यर्थः तस्मिंदेहेषुषभागस्त्रीभागयोर्देहमाह पुमां
 श्चेति मायाशबलब्रह्मणोभगवतीपदवाच्यादर्धनारीश्वरःकृष्णःसमुत्पन्नइतिवक्ष्यमाणग्रंथादवसेयं॥ ९ ॥ ननुमायाशक्तिर्जडानिर्विकाराप
 रमात्मापीनिर्विकारइत्यनयोर्विभिन्नयोर्निर्विकारयोगःकथंघटेतेत्याशंक्याह साचब्रह्मस्वरूपाचेति तथावन्हेदाहिकाशक्तिर्नवन्हेभिन्नातिष्ठति

प्रथमेवर्ततेप्रश्रकृतिश्चसृष्टिवाचकः ॥ सृष्टेरादौचयादेवीप्रकृतिःसाप्रकीर्तितां ॥ ८ ॥ योगेनात्मासृष्टिवि
 धौद्विधारूपोबभूवसः ॥ पुमांश्चदक्षिणार्धंगोवामार्धाप्रकृतिःस्मृता ॥ ९ ॥ साचब्रह्मस्वरूपाचनित्यासाच
 सनातनी ॥ यथात्माचतथाशक्तिर्यथाग्नौदाहिकास्थिता ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥

किंतुवन्ह्यभेदेनैवतिष्ठति तथेयमपिब्रह्मशक्तिर्नततोभिन्नातिष्ठतिकिंतुब्रह्मस्वरूपाब्रह्मभेदेनैवतिष्ठतीत्यर्थः तथाचनित्यसंबंधत्वादुभयोर्योगःकथं
 घटेतेतिनशंकनीयंशक्तेःकेवलायाजडत्वान्निर्विकारत्वेपिचैतन्यरूढायास्तस्याःसविकारत्वस्यसर्वश्रुतिष्वभ्युपगमाहोहचुंबकवदृष्टांतसंभवा
 द्दमायाशक्तेर्निर्विकारत्वंसंभावनीयमितिभावः नित्यामोक्षपर्वतंस्थायिनी सनातनीअनादिरित्यर्थः तेनचानादिसांतेतिबोधितंयस्मा
 दनयोर्नित्यसंबंधस्तस्मादात्मोपासनायांशक्तेरुपासनाजातैव तथाशक्त्युपासनायाप्यात्मपूजाजातैवेतियथात्मनोमहिमासर्वोत्तरस्तथैवतच्छ
 क्तेरपीत्याह यथात्माचतथाशक्तिरिति यथावन्हौहोमइववन्हिशक्तौहोमोऽर्थसिद्धोभवति तथावन्हिशक्तौहोमेपिवन्हौहोमोऽर्थसिद्ध
 तिश्चक्षिश्चक्षिमतोरपिदपिनकिंचिदभेदकमस्तीतिभावः ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥

दे.भा.न

॥ ३ ॥

अतएवेति यतःशक्तेःशक्तिमतश्चनभेदोऽतएवयोगींद्रैर्विकेकेभिःस्त्रीपुंभेदइयंस्त्रीअयंपुमानितिभेदोनमन्यते किंतुस्त्रीपुरुषोवाइयमपि
मायाविशिष्टब्रह्मैवास्तीतिमन्यतइत्यर्थः अयंभावः मायाविशिष्टब्रह्मैवब्रह्मविष्ण्वादिपुरुषरूपेणगौरीलक्ष्म्यादिस्त्रीरूपेणचभासते तथाचो
भयोरपिमायाविशिष्टब्रह्मात्मकत्वमविशिष्टमितिनेतेषांस्त्रीपुरुषत्वोपितत्वतःकश्चिद्देदइत्यर्थः एतेनगौरीलक्ष्म्यादिशक्तनिमुपासनायांकेव
लमायाशक्तेरेवोपास्यत्वंब्रह्मविष्ण्वाद्युपासनायांतुमायाविशिष्टब्रह्मणउपास्यत्वमितिवदंतःपरास्ताः शक्त्युपासनायामपिशक्तेर्ब्रह्मानतिरेका
त्वेवलायाउपासनायाअसंभवेनमायाविशिष्टब्रह्मणएवतत्रोपास्यत्वात् तदेवाह सर्वब्रह्ममयमिति मायाविशिष्टब्रह्ममयमित्यर्थः ब्रह्मन्निति
संबोधनं ॥ ११ ॥ केननिमित्तेनपंचधाजातातत्राह स्वेच्छामयेति स्वंप्रकृतिस्तस्यायाइच्छासैवेच्छापरमात्मनोपिभवत्युभयोरभिन्नत्वात् त
तःस्वेच्छामयस्यपरमात्मनइच्छया किमात्मिकया श्रीकृष्णस्यसिसृक्षयाकृष्णकर्मकसर्जनेच्छात्मिकया सापराशक्तिःपंचमहाभूतोत्पत्त्य

अतएवहियोगींद्रैःस्त्रीपुंभेदौनमन्यते ॥ सर्वब्रह्ममयंब्रह्मञ्छश्वत्सदपिनारद ॥ ११ ॥ स्वेच्छामयस्येच्छया
चश्रीकृष्णस्यसिसृक्षया ॥ साविर्बभूवसहसामूलप्रकृतिरीश्वरी ॥ १२ ॥ तदाज्ञयापंचविधासृष्टिकर्मविभेदि
का ॥ अथभक्तानुरोधाद्वाभक्तानुग्रहविग्रहा ॥ १३ ॥

॥ ६४ ॥

॥ ६४ ॥

नंतरंपंचभूतांशान्गृहीत्वाप्रथमंकृष्णरूपेणाविर्बभूवेत्यर्थः नहिपंचभूतोत्पत्तिविनादेहधारणंसंभवतितस्मात्तदुत्पत्त्यनंतरमेवकृष्णस्योत्पत्तिःश्री
भगवत्याकृतेतिबोध्यं अयंचोत्पन्नःकृष्णगोपालसुंदरीइतिवक्ष्यति ततोऽनन्यैष्णवमतप्रवेशइतिबोध्यं ॥ १२ ॥ अनंतरंतदाज्ञयापरमात्माज्ञया
श्रीकृष्णस्यस्वेनगृहीतावतारस्यशरीरात्पंचविधापंचप्रकारादुर्गादिभेदेनसृष्टिकर्मविभेदिकातत्कर्मणोनानाभेदेनकर्त्रीप्रादुर्बभूवेत्यर्थः श्री
कृष्णशरीरेयःस्वकीयांशःस्थितस्तमंशंसृष्ट्युपयोगार्थंपंचधादुर्गादिभेदेनाकरोदितिपिण्डितोर्थः तत्रविकल्पमाह अथभक्तानुरोधाद्देति भ
क्तकार्यार्थेवापंचविधाजातेत्यर्थः अत्रयद्यपिस्वाज्ञयैवस्वयंप्रकृतिःपंचधानाताननुपरमात्माज्ञयातस्यनिर्विकारत्वात्तथापिस्वास्वकीयाज्ञैवपर
मात्मनोऽपिभवतिद्वयोरप्येकत्वात्तस्मात्तदाज्ञयैत्युक्तं तत्रपंचविधरूपधारणेस्वेच्छारूपंनिमित्तंभक्तानुग्रहनिमित्तंसृष्ट्युपयोगरूपंनिमित्तंचो
क्तंभवति कृष्णावतारद्वारापंचविधानातेत्यनेनबभूवपंचधाकथमितिप्रश्नस्योत्तरंचोक्तंभवति ॥ १३ ॥

॥ ७५ ॥

टी.अ.

१

॥ ३ ॥

पञ्चविधावतारमध्येदुर्गावतारमहिमानमह गणेशमातेति कृष्णोगणेशरूपेण जनितस्तस्य माता पूर्णब्रह्मस्वरूपिणी मायाविशिष्टब्रह्मरूपि
 ण्यादुर्गायाः स्वस्वरूपावरणाभावात्पूर्णत्वं ॥ १४ ॥ १५ ॥ धर्मसत्याधर्मप्रज्ञापालनादिरूपसत्योव्यभिचाररहितोयस्याः सा ॥ १६ ॥
 तदधिष्ठातृदेवतातच्छब्देन कृष्णस्य अंतःकरणरूपं तेजो गृह्यते तस्याधिष्ठातृदेवतातदुक्तमुत्तरत्र देवतातदुक्तद्वितीयाध्याये बुद्ध्याधिष्ठातृदे
 वी सा कृष्णस्य परमात्मन इतितत्रापि बुद्धिशब्देनांतःकरणं ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ सर्वशक्तिस्वरूपेति बुद्धेः सर्वशक्तिमत्त्वाकृष्ण
 स्य बुद्धेरधिष्ठान्यादुर्गायाः सर्वशक्तिरूपत्वं युक्तमेव ॥ २० ॥ उक्तः श्रुतौ श्रुतगुण इति श्रुतौ वेदेयः श्रुतगुणः प्रसिद्धो गुणोऽस्ति दुर्गायाः
 गणेशमातादुर्गाया शिवरूपा शिवप्रिया ॥ नारायणी विष्णुमाया पूर्णब्रह्मस्वरूपिणी ॥ १४ ॥ ब्रह्मादिदेवैर्मुनि
 भिरमनुभिः पूजितास्तुता ॥ सर्वाधिष्ठात्री देवी सा सर्वरूपा सनातनी ॥ १५ ॥ धर्मसत्यापुण्यकीर्तिर्यशोमंगल
 दायिनी ॥ सुखमोक्षहर्षदात्री शोकार्तिदुःखनाशिनी ॥ १६ ॥ शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणा ॥ तेजःस्वरू
 पा परमातदधिष्ठातृदेवता ॥ १७ ॥ सर्वशक्तिस्वरूपा च शक्तिरीशस्य संततं ॥ सिद्धेश्वरी सिद्धरूपा सिद्धिदा
 सिद्धिरीश्वरी ॥ १८ ॥ बुद्धिर्निद्राक्षुत्पिपासा छाया तंद्रादया स्मृतिः ॥ जातिः क्षांतिश्च भ्रांतिश्च शांतिः कांतिश्च
 चेतना ॥ १९ ॥ तुष्टिः पुष्टिस्तथा लक्ष्मीर्धृतिर्माया तथैव च ॥ सर्वशक्तिस्वरूपा सा कृष्णस्य परमात्मनः ॥ २० ॥
 उक्तः श्रुतौ श्रुतगुणश्चापि स्वल्पो यथा गमं ॥ गुणोऽस्त्यनंताऽनंताया अपरां च निशामय ॥ २१ ॥ शुद्धसत्त्वस्व
 रूपाया पद्मा सा परमात्मनः ॥ सर्वसंपत्स्वरूपा सा तदधिष्ठातृदेवता ॥ २२ ॥ ॥ ६५ ॥

सगुणो यथा गममागमाननतिक्रम्यातिस्वल्पो मयोक्तः वेदोक्ता गुणाः सर्वे मयानोक्ता इत्यर्थः कुत इति चेद्दुर्गाया अनंतगुणवत्त्वस्य वेदे प्रतिपाद
 नात् तावद्गुणप्रतिपादने शक्त्यभावादित्याह गुणोऽस्त्यनंत इति गुण इति जात्यैकवचनं अपरामिति पञ्चप्रकृत्यवतारमध्ये एको वता
 र उक्तो द्वितीयावतारं निशामय शृण्वित्यर्थः ॥ २१ ॥ शुद्धसत्त्वेति या शुद्धसत्त्वस्वरूपा पद्मा लक्ष्मीः सा परात्मनो द्वितीया शक्तिः द्वितीयश
 क्त्यावताररूपा सर्वसंपत्स्वरूपा तदधिष्ठातृदेवता परमेश्वरसंपत्तैरधिष्ठात्रीत्यर्थः इदमप्यग्रे वक्ष्यति ॥ २२ ॥ ॥ ७५ ॥

दे.भा.न

॥ ४ ॥

॥ २३ ॥ २४ ॥ सर्वसस्यात्मिकासर्वधान्यात्मिकेत्यर्थः सर्वशस्यात्मिकेति पाठे सर्वप्रशस्तपदार्थरूपेत्यर्थः वैकुण्ठेति इयं वैकुण्ठवासिनीत्यर्थः ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ सैवलक्ष्मीः पुण्यवतां धर्माय भवति पापिनां तु पापाय भवतीत्याह पापिनामिति ॥ २८ ॥ अन्यापंचसु मध्ये तृतीयां ज्ञानाधिष्ठात्री तच्च ज्ञानं परमात्मनः परमेश्वरस्य बुद्धिवृत्तिरूपं गृह्यते सरस्वत्याविद्याधिष्ठातृत्वात् ॥ २९ ॥ तदेवाह सर्वविद्या

टी.अ.
१

कांतातिदांताशांताचसुशीलासर्वमंगला लोभमोहकामरोषमदाहंकारवर्जिता ॥ २३ ॥ भक्तानुरक्तापत्यु
श्च सर्वाभ्यश्च पतिव्रता ॥ प्राणतुल्या भगवतः प्रेमपात्रं प्रियंवदा ॥ २४ ॥ सर्वसस्यात्मिका देवी जीवनोपायरू
पिणी ॥ महालक्ष्मीश्च वैकुण्ठे पतिसेवारतासती ॥ २५ ॥ स्वर्गे च स्वर्गलक्ष्मीश्च राजलक्ष्मीश्च राजसुगृहेषु गृ
हलक्ष्मीश्च मर्त्यानां गृहिणां तथा ॥ २६ ॥ सर्वप्राणिषु द्रव्येषु शोभारूपामनोहरा ॥ प्रीतिरूपा पुण्यवतां प्रभारू
पानृपेषु च ॥ २७ ॥ वाणिज्यरूपा वाणिजां पापिनां कलहांकुरा ॥ दयारूपा च कथितविदोक्ता सर्वसंमता ॥
॥ २८ ॥ सर्वपूजासर्वबंधाचान्यामत्तो निशामय ॥ वाग्बुद्धिविद्याज्ञानाधिष्ठात्री च परमात्मनः ॥ २९ ॥ सर्ववि
द्यास्वरूपा या सा च देवी सरस्वती ॥ सा बुद्धिः कविता मेधा प्रतिभा स्मृतिदानृणां ॥ ३० ॥ नानाप्रकारसिद्धां
तभेदार्थकलनामता ॥ व्याख्या बोधस्वरूपा च सर्वसंदेहभंजिनी ॥ ३१ ॥ विचारकरिणी ग्रंथकारिणी शक्ति
रूपिणी ॥ स्वरसंगीतसंधानतालकारणरूपिणी ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥

स्वरूपेति कवितापदरचनारूपकविताकारिणी कवितारूपा मेधाग्रंथधारणसामर्थ्यं प्रतिभाविषयस्फुरणं ॥ ३० ॥ नानाप्रकारसिद्धां
तभेदास्तेषां यैर्धाविषयास्तेषां कलना आकलनरूपेत्यर्थः ॥ ३१ ॥ स्वराः सप्तस्वराः षट्जादयस्तद्विशिष्टसंगीतंगायनंतस्य संधानेनानुसंधाने
नयस्तत्तत्कारणतत्प्रातिपादकं शास्त्रं तस्य कारिणी ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥

॥ ४ ॥

विषयज्ञानरूपाप्रतिविम्बोपजीविनीः ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

विषयज्ञानबाधुपाप्रतिविम्बोपजीविनी ॥ व्याख्यावादकरीशांतावीणापुस्तकधारिणी ॥ ३३ ॥ शुद्धसत्त्व
स्वरूपाचसुशीलश्रीहरिप्रिया ॥ हिमचंदनकुंदेंदुकुमुदांभोजसन्निभा ॥ ३४ ॥ यजंतीपरमात्मानंश्रीकृष्णं
त्नमालया ॥ तपस्वरूपातपसांफलदात्रीतपस्विना ॥ ३५ ॥ सिद्धिविद्यास्वरूपाचसर्वसिद्धिप्रदासदा ॥
यथाविनातुविप्रौघोमूकोमृतसमःसदा ॥ ३६ ॥ देवीतृतीयागदिताश्रुत्युक्ताजगदंबिका ॥ यथागमंयथाकिं
चिदपरांल्वन्निबोधमे ॥ ३७ ॥ माताचतुर्णीवर्णानांवेदांगानांचछंदसां ॥ संध्यावंदनमंत्राणांतंत्राणांचविच
क्षणां ॥ ३८ ॥ द्विजातिजातिरूपाचजपरूपातपस्विनी ॥ ब्रह्मण्यतेजोरूपाचसर्वसंस्काररूपिणी ॥ ३९ ॥
पवित्ररूपासावित्रीगायत्रीब्रह्मणःप्रिया ॥ तीर्थानियस्याःसंस्पर्शवांछंतिह्यात्मशुद्धये ॥ ४० ॥ शुद्धस्फटि
कसंकाशाशुद्धसत्त्वस्वरूपिणी ॥ परमानंदरूपाचपरमाचसनातनी ॥ ४१ ॥ परब्रह्मस्वरूपाचनिर्वाणप
ददायिनी ॥ ब्रह्मतेजोमयीशक्तिस्तदधिष्ठातृदेवता ॥ ४२ ॥ यत्पादरजसापूतंजगत्सर्वचनारद ॥ देवीच
तुर्थीकथितापंचर्मावर्णयामिते ॥ ४३ ॥ पंचप्राणाधिदेवीपंचप्राणस्वरूपिणी ॥ प्राणाधिकप्रियतमासर्वा
भ्यःसुंदरीपरा ॥ ४४ ॥ सर्वयुक्ताचसौभाग्यमानिनीगौरवान्विता ॥ वामार्धगस्वरूपाचगुणेनतेजसास
मा ॥ ४५ ॥ परावरासारभूतापरमाद्यासनातनी ॥ परमानंदरूपाचधन्यामान्याचपूजिता ॥ ४६ ॥ रास
क्रीडाधिदेवीश्रीकृष्णस्यपरमात्मनः ॥ रासमंडलसंभूतारासमंडलमंडिता ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥

॥ ३९ ॥ ब्रह्मणःप्रियेत्यनेनगायत्रीब्रह्मलोकवासिनीत्युक्तं ॥ ४० ॥ ४१ ॥ तदधिष्ठातृदेवताब्रह्मतेजोजीवरूपाधिदाभासस्तदधिष्ठात्री
त्यर्थः ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ पंचप्राणाधिदेवीराधापंचप्राणाधिष्ठात्रीत्यर्थः ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥

दे.भा.न.

॥ ५ ॥

गोपीवेषविधायिकागोपिकारूपाणांजनयित्रीत्यर्थः ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ वेदानुसारिध्यानेनवेदोक्तध्यानेनविज्ञाताध्यातेत्यर्थः ॥ ५० ॥ दृष्टिदृष्टेति ईश्वरीश्वरैरपिसुरैर्द्रैर्मुनिपुंगवैश्चसादृष्टिदृष्टाचक्षुषादृष्टानभवतीत्यर्थः वन्दिशुद्धांशुकधरावन्हीत्युक्तमपिनदम्भंभवत्येतादृशंयत्तुविशेषस्यांशुकं वस्त्रं तद्वन्दिशुद्धांशुकमित्युच्यतेतत्परिधानकर्त्रीत्यर्थः ॥ ५१ ॥ पुष्टापूर्णायासर्वश्रीः श्रीकृष्णस्ययेभक्तिदास्येतयोःकरा

टी.अ.

१

रासेश्वरीसुरसिकारासावासनिवासिनी ॥ गोलोकवासिनीदेवीगोपीवेषविधायिका ॥ ४८ ॥ परमाल्हादरूपाचसंतोषहर्षरूपिणी ॥ निर्गुणाचनिराकरानिर्लिप्तात्मस्वरूपिणी ॥ ४९ ॥ निरोहानिरहंकाराभक्तानुग्रहविग्रहा ॥ वेदानुसारध्यानेनविज्ञातासाविचक्षणैः ॥ ५० ॥ दृष्टिदृष्टानसाचेशैःसुरैर्द्रैर्मुनिपुंगवैः ॥ वन्दिशुद्धांशुकधरानानालंकारभूषिता ॥ ५१ ॥ कोटिचंद्रप्रभापुष्टसर्वश्रीयुक्तविग्रहा ॥ श्रीकृष्णभक्तिदास्यैककराचसर्वसंपदां ॥ ५२ ॥ अवतारेचवाराहेवृषभानुसुताचया ॥ यत्पादपद्मसंस्पर्शपवित्राचवसुंधरा ॥ ५३ ॥ ब्रह्मादिभिरदृष्टायासर्वैर्दृष्टाचभारते ॥ स्त्रीरत्नसारसंभूताकृष्णवक्षस्थलेस्थिता ॥ ५४ ॥ यथांबरेनवघनेलोलासौदामिनीमुने ॥ षष्टिवर्षसहस्राणिप्रतप्तं ब्रह्मणापुरा ॥ ५५ ॥ यत्पादपद्मनखरदृष्टयेचात्मशुद्धये ॥ नचदृष्टं च स्वप्नेपिप्रत्यक्षस्यापिकाकथा ॥ ५६ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥

संपदांचकराकर्त्रीत्यर्थः ॥ ५२ ॥ अवतारेचवाराहेइति वाराहावतारेवाराहकल्पेइत्यर्थः तस्मिन्कल्पेवृषभानुर्ब्रजस्थःकश्चनगोपस्तस्यसुताचयाभवतीत्यर्थः ॥ ५३ ॥ याब्रह्मादिभिरप्यदृष्टायासर्वैर्भारतेखंडेवृंदावनेदृष्टेत्यर्थः ॥ ५४ ॥ यथांबरेइति अंबरेविद्यमानोयोनवघनस्वरूपवनोनिबिडघनस्तस्मिन्सासौदामिनीविद्युत्तातदृच्छोभतेइत्यर्थः ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥

॥ ५ ॥

अयंभावः मूलप्रकृतिस्त्वावत्सर्वेश्वरीमायाविशिष्टब्रह्मरूपेणीयथासमाष्टिव्यष्टींद्रियाणामधिष्ठात्रीदेवतादिग्वताकं प्रचेतोऽश्विनहोद्रेपेन्द्रमित्ररूपाविनिर्गमे तथैवसमाष्टिव्यष्ट्यंतःकरणानामधिष्ठात्रींदुर्गासमाष्टिव्याष्टिसंपत्त्याधिष्ठात्रीलक्ष्मीसमाष्टिव्याष्टिबुद्ध्याधिष्ठात्रीज्ञानाधिष्ठात्रीसरस्वतीसमाष्टिव्यष्ट्यात्मब्रह्मतेजोरूपजीवाधिष्ठात्रीसावित्रीतथैवपंचप्राणाधिष्ठात्रीराधांचश्रीकृष्णस्वरूपंधृत्वातस्वरूपस्थितशक्तितोनिर्गमे आसांचपंचदेवीनांमूलप्रकृत्यवतारत्वात्सर्वव्यापकत्वंमूलप्रकृतिसमानमहिमत्वंचास्तीति मूलप्रकृतेर्मायाविशिष्टब्रह्मरूपिण्याअधिष्ठातृरूपंतुश्रीभुवनेश्वरीति तृतीयस्कंधेउक्तंनविस्मर्तव्यं यद्यपिपदार्थमात्रस्यमूलपदार्थप्रकृतिरूपत्वात् ब्रह्माविष्ण्वादिपुरुषाअपिमूलप्रकृतिरूपास्तदंशाएवतथापिस्त्रीषुप्रसवधर्मित्वरूपस्यविशेषगुणस्याधिकस्यसत्वादतएवस्त्रीलिंगप्रयोगस्यतत्रैवसत्वाच्चस्त्रीष्वेवतदंशव्यवस्थितिरुक्तापरमार्थतस्तुपुरुषाअपिमूलप्रकृत्यंशरूपाएव तदुक्तमाचार्यैःप्रपंचसारेप्रथमपटले पुन्रपुंसकयोस्तुल्याप्यंगनासुविशिष्यतेइति सर्वदेवीमयंजगादितिच श्रुतिश्चमायां

तेनैवतपसादृष्टाभुविंवृंदावनेवने ॥ कथितापंचर्मादेवीसाराधाचप्रकीर्तिता ॥ ५७ ॥ अंशरूपाःकलारूपाः
कलांशांशांशसंभवाः ॥ प्रकृतेःप्रतिविश्वेषुदेव्यश्चसर्वयोषितः ॥ ५८ ॥ परिपूर्णतमाःपंचविद्यादेव्यःप्रकीर्ति
ताः ॥ यायाःप्रधानांशरूपावर्णयामिनिशामय ॥ ५९ ॥ प्रधानांशस्वरूपासांगंगाभुवनपावनी ॥ विष्णुवि
ग्रहसंभूताद्रवरूपासनातनी ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥

तुप्रकृतिविद्यान्मायिनंतुमहेश्वरं तयोर्विभूतिलेशोवैजगदेत्तच्चराचरमिति ॥ ५७ ॥ ननुकिमेतावत्यएवदेव्योनेत्याह अंशरूपाइति काश्चिदेवताआभ्योदेवताभ्योअन्याःप्रकृतेरंशूताअर्धांशभूताब्रह्मःसंतितत्तत्काश्चित्कलारूपाअर्धांशार्धांशरूपाःतथाकाश्चित्कलांशरूपाः काश्चित्कलांशांशरूपाःकाश्चित्कलांशांशांशरूपाब्रह्मःसंतीत्यर्थः ताःकसंतीतिचेत्प्रतिविश्वेषुसर्वलोकेषुयादेव्योयाश्चसर्वयोषितस्तद्रूपेणसंतीत्यर्थः ॥ ५८ ॥ तर्हिपंचैवेतिकथमुक्तमितिचेत्पंचदेव्यःप्रकृतेःपूर्णावताराःसंतीत्यभिप्रायेणोक्तमित्याह परिपूर्णतमाइतिपंचदेव्योदुर्गादयः तत्रकाश्चिदंशरूपादेवीर्दर्शयति प्रधानांशेति प्रधानंमूलप्रकृतिस्तदंशभूतायायास्तावर्णयामीत्यर्थः ॥ ५९ ॥ प्रधानांशेति अत्रप्रधानशब्देनमूलप्रकृतिस्तदंशभूतागंगेत्यर्थः याप्रधानांशसंभूतासाप्रधानाभिन्नविष्णुविग्रहसंभूताज्ञातैवेत्यभिप्रायेणाह विष्णुविग्रहेति अनेनचसर्वदेवतानांनकेवलशक्तिरूपत्वंकिंतुशक्तिविशिष्टब्रह्मरूपत्वमितिस्पष्टमेवोक्तमितिबोध्यं ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥

दे.भा.न.

पापरूपकाष्ठदाहंकर्तुं ज्वलदग्निरेवेत्यर्थः ॥ ६१ ॥ प्रस्थानं गमनं सोपानं निश्रेणिका परं भिन्नं तीर्थं मवरं कनिष्ठं यस्याः ॥ ६२ ॥ जटारु
गोमेरुः मुक्तापंक्तिस्वरूपिणी श्वेतवर्णत्वात् ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ प्रधानांशसंभूतां तुलसीमाह प्रधानांशोति इयंचतुलसीवृक्षाधिष्ठात्री स्त्रीमूर्तिर्वर्तते

॥ ६ ॥

पापिपापेध्मदाहायज्वलदग्निस्वरूपिणी ॥ सुखस्पर्शास्नानपानैर्निर्वाणपददायिनी ॥ ६१ ॥ गोलोकस्था
नप्रस्थानसुखसोपानरूपिणी ॥ पवित्ररूपातीर्थानां सरितांचपरावरा ॥ ६२ ॥ शंभुमौलिजटामेरुमुक्तापंक्ति
स्वरूपिणी ॥ तपःसंपादिनी सद्योभारतेषु तपस्विनां ॥ ६३ ॥ चंद्रपद्मक्षीरनिभाशुद्धसत्वस्वरूपिणी ॥ नि
र्मलानिरहंकारासाध्वीनारायणप्रिया ॥ ६४ ॥ प्रधानांशस्वरूपा चतुलसीविष्णुकामिनी ॥ विष्णुभूषणरू
पा चविष्णुपादस्थितासती ॥ ६५ ॥ तपःसंकल्पपूजादिसंघसंपादिनी मुने ॥ सारभूता च पुष्पाणां पवित्रा पुण्य
दासदा ॥ ६६ ॥ दर्शनस्पर्शनाभ्यांच सद्यो निर्वाणदायिनी ॥ कलौ कलुषशुष्केध्मदहनायाग्निरूपिणी
॥ ६७ ॥ यत्पादपद्मसंस्पर्शात्सद्यः पूता वसुंधरा ॥ यत्स्पर्शदर्शने चैवेच्छंति तीर्थानि शुद्धये ॥ ६८ ॥ ययावि
नाच विश्वेषु सर्वकर्मचानिष्फलं ॥ मोक्षदायामुमुक्षूणां कामिनी सर्वकामदा ॥ ६९ ॥ कल्पवृक्षस्वरूपाया भारते
वृक्षरूपिणी ॥ भारतीनां प्रीणनायजाताया परदेवता ॥ ७० ॥ प्रधानांशस्वरूपायामनसा कश्यपात्मजा ॥
शंकरप्रियशिष्या च महाज्ञानविशारदा ॥ ७१ ॥ नागेश्वरस्यानंतस्य भगिनी नागपूजिता ॥ नागेश्वरी नागमा
तासुंदरी नागवाहिनी ॥ ७२ ॥ नागेंद्रगणसंयुक्ता नागभूषणभूषिता ॥ नागेंद्रवंदिता सिद्धयोगिनी नागशायि
नी ॥ ७३ ॥ विष्णुरूपा विष्णुभक्ता विष्णुपूजापरायणा ॥ तपःस्वरूपा तपसां फलदा त्रीतपस्विनी ॥ ७४ ॥

एवं गंगापि स्त्रीमूर्तिरस्तीति बोध्यं ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ प्रधानांशसंभूतां मनसा देवीं वर्णयति मनसा कश्यपात्म
जाति शंकरस्य प्रियशिष्या भूतेत्यर्थः शंकरेणोपदेशो मनसा देव्यै दत्त इत्यर्थः अतएव महाज्ञानविशारदा ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥

टी.अ.
१

॥ ६ ॥

॥ ७५ ॥ ७६ ॥ कृष्णांशस्यजरत्कारुमुनेःपत्नीत्यर्थः इयंकथापूर्वमुक्तासर्वसत्रप्रसंगे ॥ ७७ ॥ प्रधानांशसंभूतां देवसेनां वर्णयति ॥ ७८ ॥
 षष्ठीनाच्चेहेनुमाह षष्ठांशरूपाप्रकृतेरिति देवसेनेति षष्ठीतिच नामद्वयमस्यादित्यर्थः ॥ ७९ ॥ वृद्धरूपानतुतरुणी पूजाद्वादशमासेष्वि
 ति प्रसूतिकालमारभ्यद्वादशमासपर्यंतं प्रतिमासमित्यर्थः ॥ ८० ॥ अत्राशक्तं प्रत्याह षष्ठदिने शिशोरिति तत्राप्यसंभवे आह एक
 दिव्यं त्रिलक्षवर्षं च तपस्तप्त्वा च याहरेः ॥ तपस्विनीषु पूज्या च तपस्विषु च भारते ॥ ७५ ॥ सर्वमंत्राधिदेवी च
 ज्वलंती ब्रह्मतेजसा ॥ ब्रह्मस्वरूपा परमा ब्रह्म भावनतत्परा ॥ ७६ ॥ जरत्कारुमुनेः पत्नी कृष्णांशस्य पतिव्रता
 ॥ आस्तिकस्य मुनेर्माता प्रवरस्य तपस्विनां ॥ ७७ ॥ प्रधानांशस्वरूपा या देवसेना च नारद ॥ मातृका सुपू
 ज्यतमा सा षष्ठी च प्रकीर्तिता ॥ ७८ ॥ पुत्रपौत्रादिदात्री च धात्री त्रिजगतां सती ॥ षष्ठांशरूपा प्रकृतेस्तेन षष्ठी
 प्रकीर्तिता ॥ ७९ ॥ स्थानेशिशूनां परमा वृद्धरूपा च योगिनी ॥ पूजाद्वादशमासेषु यस्या विश्वेषु संततं ॥ ८० ॥
 पूजा च सूतिकागारे पुरा षष्ठदिने शिशोः ॥ एकविंशतिमेव पूजा कल्याणहेतुकी ॥ ८१ ॥ मुनिभिर्नमिता चैषा
 नित्यकामाप्यतः परा ॥ मातृका च दयारूपा शश्वद्रक्षणकारिणी ॥ ८२ ॥ जले स्थले चांतरिक्षे शिशूनां सद्गोचरो
 प्रधानांशस्वरूपा च देवी मंगलचंडिका ॥ ८३ ॥ प्रकृतेर्मुखसंभूता सर्वमंगलदा सदा ॥ सृष्टौ मंगलरूपा च सं
 हारे कोप रूपिणी ॥ ८४ ॥ तेन मंगलचंडी सा पंडितैः परिकीर्तिता ॥ प्रतिमंगलवारेषु प्रतिविश्वेषु पूजिता ॥ ८५ ॥
 पुत्रपौत्रधनैश्वर्ययशोमंगलदायिनी ॥ परितुष्टा सर्ववांछाप्रदात्री सर्वयोषितां ॥ ८६ ॥ ॥ ६५ ॥

विंशतिमेदति ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ सद्गोचरे गृहस्थाने प्रधानांशभूतां मंगलचंडिकां वर्णयति प्रधानांशेति ॥ ८३ ॥ प्रकृतेर्मुखसंभूतेति
 प्रकृतेर्व्यापिकाया मुखस्यासंभवेऽपि प्रकृतेः पूर्णावतारभूताया दुर्गाया मुखं ग्राह्यं मंगलचंडीति नाम निरुक्तिमाह सृष्टाविति चंडिकोप इत्य
 स्य चंडीति रूपं सृष्टिसमये मंगलत्वादातिशांतिरूपत्वात् संहारकाले कोपनत्वात् मंगलचंडीति नाम मंगलाचासौ चंडी च मंगलचंडी ॥ ८४ ॥
 ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥

दे.भा.न

॥ ७ ॥

प्रधानांशसंभूतां कालीं वर्णयति कालीति ॥ ८७ ॥ दुर्गाललाटेति यथा ब्रह्मणो ललाटादुद्रुत्पन्नस्तथा दुर्गाललाटात्प्रधानमूलप्रकृत्यंशभूता
काली उत्पन्नेत्यर्थः दुर्गादींशेति दुर्गायाः पूर्णावतारत्वात्तस्याअर्धाशत्वोक्तौ मूलप्रकृत्या अपि अर्धाशत्वमुक्तमिति बोध्यं दुर्गाया गुणेन ते
जसा चेत्यन्वयः ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ परमायोगरूपिणी परमासिद्धयोगिनी त्यापि पाठः ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ननु निश्वासमात्रेण यदि ब्रह्मांडसंहर्त्री

रुष्टाक्षणेन संहर्तुं शक्ता विश्वं महेश्वरी ॥ प्रधानांशस्वरूपा सा काली कमललोचना ॥ ८७ ॥ दुर्गाललाटसंभूता
रणेशुंभनिशुंभयोः ॥ दुर्गार्धांशस्वरूपा सा गुणेन तेजसा समा ॥ ८८ ॥ कोटिसूर्यसमा जुष्टपुष्टजा ज्वलाविग्र
हा ॥ प्रधाना सर्वशक्तीनां बलाबलवती परा ॥ ८९ ॥ सर्वसिद्धिप्रदा देवी परमायोगरूपिणी ॥ कृष्णभक्ता कृ
ष्णतुल्या तेजसा विक्रमैर्गुणैः ॥ ९० ॥ कृष्णभावनया शश्वत्कृष्णवर्णा सनातनी ॥ संहर्तुं सर्वं ब्रह्मांडं शक्ता
निश्वासमात्रतः ॥ ९१ ॥ रणंदैत्यैः समंतस्याः क्रीडया लोकशिक्षया ॥ धर्मार्थकाममोक्षांश्च दातुं शक्ता च पूजि
ता ॥ ९२ ॥ ब्रह्मादिभिः स्तूयमाना मुनिभिर्मनुभिर्नरैः ॥ प्रधानांशस्वरूपा सा प्रकृतेः श्रवसुंधरा ॥ ९३ ॥
आधाररूपा सर्वेषां सर्वसस्या प्रकीर्तिता ॥ रत्नाकरारत्नगर्भा सर्वरत्नाकराश्रया ॥ ९४ ॥ प्रजाभिश्च प्रजेशै
श्च पूजिता वंदिता सदा ॥ सर्वोपजीव्यरूपा च सर्वसंपद्धिधायिनी ॥ ९५ ॥ यया विना जगत्सर्वं निराधारं चरा
चरं ॥ प्रकृतेः श्रवकलायायास्तानि बोधमुनीश्वर ॥ ९६ ॥ यस्य यस्य च यापत्नी तत्सर्वं वर्णयामिते ॥ स्वाहा दे
वी वह्निपत्नी प्रतिविश्वेषु पूजिता ॥ ९७ ॥

॥ ६४ ॥

॥ ६४ ॥

॥ ६४ ॥

तदापामरैर्दैत्यैः सह किमर्थं युद्धं कृतवतीति चेत्तत्राह रणमिति लोकशिक्षयेत्यत्र लोकं रंजयेत्यपि पाठः लोकं रंजनार्थं युद्धं दैत्यैः संमंकृतवती
त्यर्थः ॥ ९२ ॥ प्रधानांशस्वरूपां सुंधरां वर्णयति सुंधरोति ॥ ९३ ॥ सर्वशस्य प्रसूतिकेत्यापि पाठः ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ अथ प्रकृतेः
कलास्तारामह कलायायाति ॥ ९६ ॥ ९७ ॥

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

टी. अ.

१

॥ ७ ॥

दीयते निमलं ज्ञानं क्षीयते कर्मवासना तेन दीक्षेति सा प्रोक्तेत्युक्तलक्षणा दीक्षापदवाच्यासायज्ञस्य पत्नीत्यर्थः दक्षिणायज्ञपत्नीति श्रुतेर्दक्षिणादी
क्षाचयज्ञपत्नीत्यर्थः यज्ञपुरुषो मूर्तिमान् दक्षिणाचमूर्तिमतीति बोध्यं एवमेव सर्वत्र ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ आदानं प्रतिग्रहः प्रदानं द्रव्यस्य दानं

ययाविनाहविर्दानं न गृहीतुं सुराक्षमाः ॥ दक्षिणायज्ञपत्नीच दीक्षा सर्वत्र पूजिता ॥ ९८ ॥ ययाविनाहिविश्वे
षु सर्वकर्महिनिष्फलं ॥ स्वधापितृणां पत्नीच मुनिभिर्मनुभिर्नरैः ॥ ९९ ॥ पूजितापितृदानं हि निष्फलं च यया
विना ॥ स्वस्ति देवी वायुपत्नी प्रतिविश्वेषु पूजिता ॥ १०० ॥ आदानं च प्रदानं च निष्फलं च ययाविना ॥ पुष्टि
र्गणपतेः पत्नी पूजिता जगती तले ॥ १०१ ॥ ययाविना परिक्षीणाः पुमांसो येषि तेषु च ॥ अनंतपत्नी तुष्टिश्च
पूजिता वंदिता भवत् ॥ २ ॥ ययाविना न संतुष्टाः सर्वलोकाश्च सर्वतः ॥ ईशानपत्नी संपत्तिः पूजिता च सुरैर्नरैः
॥ ३ ॥ सर्वलोकाद रिद्राश्च विश्वेषु च ययाविना ॥ धृतिः कपिलपत्नी च सर्वैः सर्वत्र पूजिता ॥ ४ ॥ सर्वलोका अ
धैर्याश्च जगत्सु च ययाविना ॥ सत्यपत्नी सती मुक्तैः पूजिता जगती प्रिया ॥ ५ ॥ ययाविना भवे लोको बंधुतार
हितः सदा ॥ मोहपत्नी दयासाध्वी पूजिता च जगत्प्रिया ॥ ६ ॥ सर्वलोकाश्च सर्वत्र निष्फलाश्च ययाविना ॥ पु
ण्यपत्नी प्रतिष्ठासा पूजिता पुण्यदा सदा ॥ ७ ॥ ययाविना जगत्सर्वं जीवन्मृतसमं मुने ॥ सुकर्मपत्नी संसिद्धा की
र्तिर्धन्यैश्च पूजिता ॥ ८ ॥ ययाविना जगत्सर्वं यशोहीनं मृतं यथा ॥ क्रियातूद्योगपत्नी च पूजिता सर्वसंमता ॥ ९ ॥

उभे अपि स्वस्तित्युक्ते सफले भवत इत्यर्थः ॥ १०० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ यत्र सत्यशक्तिर्नास्ति तत्राविश्वासान्मनुष्यः स्नेहं न
करोतीति बंधुतारहितो भवतीति युक्तमेव मोहपत्नीति यत्र मोहोस्ति तत्र दयायाः सत्त्वाद्या मोहपत्नी ॥ ६ ॥ ७ ॥ जीवन्मृतं प्रतिष्ठाभावे जीवतो
पिमृतं प्रायत्वात् ॥ ८ ॥ उद्योगो यत्नः ॥ ९ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.न

॥ ८ ॥

विधिहीनंक्रियाभावेतत्स्वरूपविधेरप्यभावः ॥ १० ॥ विधिनिर्मितं ईश्वरनिर्मितं सर्वजगत्पूतं समुदायरूपमुच्छिन्नं भवति मिथ्याभाषणाभावेधूत
त्वस्याभावात् मिथ्यावक्ताहिधूतः युगभेदेनास्याः स्थितिमाह ॥ ११ ॥ १२ ॥ इयं मिथ्या कपटेन भ्रातृसहिता प्रातिगृहं भ्रमतीत्यर्थः ॥ १३ ॥

॥ १४ ॥ धर्मपत्नीमूर्तिः सा च कांतिरूपा शोभारूपेत्यर्थः ॥ १५ ॥ शोभां विना परमात्मापि निराधारो निरर्थको भवतीत्यर्थः ॥ १६ ॥

यया विना जगत्सर्वं विधिहीनं च नारद ॥ अधर्मपत्नीमिथ्या सा सर्वधूर्तैश्च पूजिता ॥ १० ॥ यया विना जग
त्सर्वमुच्छिन्नं विधिनिर्मितं ॥ सत्ये अदर्शनाया च त्रेतायां सूक्ष्मरूपिणी ॥ ११ ॥ अर्धावयवरूपा च द्वापरे चैव सं
वृता ॥ कलौ महाप्रगल्भा च सर्वत्र व्यापिका बलात् ॥ १२ ॥ कपटेन समं भ्रात्रा भ्रमते च गृहे गृहे ॥ शांतिर्ल
ज्जा च भार्ये द्वे सुशीलस्य च पूजिते ॥ १३ ॥ याभ्यां विना जगत्सर्वमुन्मत्तमिव नारद ॥ ज्ञानस्य तिस्रो भार्याश्च
बुद्धिर्मेधा धृतिस्तथा ॥ १४ ॥ याभिर्विना जगत्सर्वमूढं मत्तं समं सदा ॥ मूर्तिश्च धर्मपत्नी सा कांतिरूपामनोह
रा ॥ १५ ॥ परमात्मा च विश्वो धो निराधारो यया विना ॥ सर्वत्र शोभारूपा च लक्ष्मीर्मूर्तिमती सती ॥ १६ ॥ श्री
रूपामूर्तिरूपा च मान्या धन्या ति पूजिता ॥ कालाग्नी रुद्रपत्नी च निद्रा सा सिद्धयोगिनी ॥ १७ ॥ सर्वलोका सम
च्छन्ना यया योगेन रात्रिषु ॥ कालस्य तिस्रो भार्याश्च संध्या रात्रिदिनानि च ॥ १८ ॥ याभिर्विना विधाता च सं
ख्यां कर्तुं न शक्यते ॥ क्षुत्पिपासे लोभभार्ये धन्ये मान्ये च पूजिते ॥ १९ ॥ याभ्यां व्याप्तं जगत्सर्वं नित्यं चिंतातुरं
भवत् ॥ प्रभा च दाहिका चैव द्वे भार्ये तेजसस्तथा ॥ २० ॥ याभ्यां विना जगत्स्रष्टुं विधातुं च न हीश्वरः ॥ कालक
न्ये मृत्युजरे प्रज्वारस्य प्रिया प्रिये ॥ २१ ॥

॥ ६१ ॥

॥ ६२ ॥

॥ ६३ ॥

॥ २७ ॥ रात्रिषु योगेन संबन्धेन संध्या रात्रिदिनानामपि कालाधीनत्वात् स्त्रीसदृशत्वात् स्त्रीत्वं ॥ २८ ॥ २९ ॥ चिंतातुरं क्षुत्पिपासा
न शक्नोति बलं चिंतातुरमित्यर्थः ॥ २० ॥ बरावन्मृत्योरपि कालादुत्पन्नत्वात् कन्यासदृशत्वात् कन्यात्वं ते मृत्युजरे कालस्य कन्ये प्रज्वारस्य
प्रकृष्टश्वरस्य प्रिया प्रिये पत्न्यौ भवतः प्रिया तोषि प्रियेति शयित प्रियेत्यर्थः ॥ २१ ॥

॥ ७० ॥

॥ ७१ ॥

टी. अ.

१

॥ ८ ॥

दे.भा.न.

॥ ९ ॥

कृष्णभगिनीदुर्गाविधवाशिनीत्यर्थः एकनंदाचमैव एकनंदाचकाचिदम्भवाएवमन्याअपिकलाः संतीत्याह बव्याइति ॥ ३६ ॥ एवं कलावतारदेवतास्वरूपमुक्त्वा कलांशांश्चावतारदेवतास्वरूपमाह प्रतिविश्वेषुयोषितइति प्रतिलोकेषुयाः श्रियः संतिताइत्यर्थः ॥ ३७ ॥ यस्मात्सर्वाअपिश्रियः प्रकृत्यंशभूतास्तस्मात्तासामवमानेप्रकृतेरेवावमानइत्याह योषितावमानेइति पराभवोवमानस्तासांपूजनेप्रकृतेः पूजा

एकनंदाचदुर्गासाश्रीकृष्णभगिनीसती॥ बव्याः सत्यः कलाश्चैव प्रकृतेरेव भारते ॥ ३६ ॥ योषितामवमानेन प्रकृतेश्च परा
स्ताः सर्वाः प्रकृतेः कलाः ॥ कलांशांशसमुद्भूताः प्रतिविश्वेषु योषितः ॥ ३७ ॥ योषितामवमानेन प्रकृतेश्च परा
भवः ॥ ब्राह्मणी पूजिता येन पतिपुत्रवती सति ॥ ३८ ॥ प्रकृतिः पूजिता तेन वस्त्रालंकारचंदनैः ॥ कुमारी चाष्ट
वर्षाया वस्त्रालंकारचंदनैः ॥ ३९ ॥ पूजिता येन विप्रस्य प्रकृतिः स्तेन पूजिता ॥ सर्वाः प्रकृति संभूता उत्तमा धमम
ध्यमाः ॥ ४० ॥ सत्वांशाश्चोत्तमा ज्ञेयाः सुशीलाश्च पतिव्रताः ॥ मध्यमारजसः श्वांशास्ताश्च भोग्याः प्रकीर्तिताः
॥ ४१ ॥ सुखसंभोगवश्याश्च स्वकार्यतत्पराः सदा ॥ अधमास्तमसः श्वांशा अज्ञातकुलसंभवाः ॥ ४२ ॥ दुर्मु
खाः कुलहाधूर्ताः स्वतंत्राः कलहप्रियाः ॥ पृथिव्यां कुलटायाश्च स्वर्गे चाप्सरसांगणाः ॥ ४३ ॥ प्रकृतेस्तमसा
श्वांशाः पुंश्चल्यः परिकीर्तिताः ॥ एवं निगदितं सर्वं प्रकृतेरूपवर्णनं ॥ ४४ ॥ ताः सर्वाः पूजिताः पृथ्व्यां पुण्यक्षेत्रे
च भारते ॥ पूजिता सुरयेनादौ दुर्गादुर्गार्तिनाशिनी ॥ ४५ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥

भवतीत्याह ब्राह्मणीति ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ सत्वांशानां लक्षणं पतिव्रताइति रजोशानां लक्षणं भोग्याइति विषयासक्ताइत्यर्थः
॥ ४१ ॥ ताः पूजयानवश्याः स्युः किंतु भोगेनैवेत्याह सुखसंभोगेति अज्ञातकुलसंभवास्ताश्च अधमाइत्यर्थः ॥ ४२ ॥ कुलहाकुलहंशः
॥ ४३ ॥ ४४ ॥ एवं त्रैविध्येपि पूजार्हा एव ताः सर्वा इति फलतारतम्यं नुसात्त्विक्यादिपूजायामस्त्येव अधुना पंचप्रकृतीनां सर्वैः पूज्यत्वमाह
पूजितेति पृथिव्यां सुरयेनादौ पूजिता तेन देवादिभिर्देवैर्लोकैर्निरंतरं कृतायां पूजायामपि न दोषः सुरयो नमराजा ॥ ४५ ॥ ॥ ७ ॥

य.भि.

१

॥ ९ ॥

॥ ४६ ॥ दुर्वैवदक्षकन्यास्येणोत्पत्तेत्याह जातादाविति ॥ ४७ ॥ स्वयंकृष्णइति श्रीकृष्णएवपूर्णावतारोपर्यत्याः पुत्रौ गणेशस्येण
 जातः स्कंदस्तुविष्णुकलोद्भवः विष्णवंशस्यन्योनतुपूर्णवतारः ॥ ४८ ॥ मंगलभूषे मंगलप्रभिराज्ञा ॥ ४९ ॥ अश्वपतिनाराज्ञाकाचित्
 ततः श्रीरामचंद्रेणरावणस्यवधार्थिना ॥ तत्पश्चाज्जगतां माता त्रिषुलोकेषु पूजिता ॥ ४६ ॥ जातादौदक्षक
 न्यायानिहत्यदैत्यदानवान् ॥ ततोदेहंपरित्यज्ययज्ञेभर्तुश्चनिंदया ॥ ४७ ॥ जज्ञेहिमवतः पत्न्यां लेभे पशुप
 त्तिपतिं ॥ गणेशश्च स्वयंकृष्णः स्कंदो विष्णुकलोद्भवः ॥ ४८ ॥ बभूवतुस्तौ तनयौ पश्चात्तस्याश्च नारद ॥ ल
 क्ष्मीर्मंगलभूषेन प्रथमं परिपूजिता ॥ ४९ ॥ त्रिषुलोकेषु तत्पश्चाद्देवतामुनिमानवैः ॥ सावित्रीचाश्वपतिमा प्र
 थमं परिपूजिता ॥ १५० ॥ तत्पश्चात्त्रिषुलोकेषु देवतामुनिपुंगवैः ॥ आदौ सरस्वती देवी ब्रह्मणा परिपूजिता ॥
 ॥ ५१ ॥ तत्पश्चात्त्रिषुलोकेषु देवतामुनिपुंगवैः ॥ प्रथमं पूजिताराधागोलोके रासमंडले ॥ ५२ ॥ पौर्णमास्यां
 कार्तिकस्य कृष्णेन परमात्मना ॥ गोपिकाभिश्च गोपैश्च बालिकाभिश्च बालकैः ॥ ५३ ॥ गवांगणैः सुरभ्या च
 सत्पश्चादाज्ञया हरेः ॥ तदा ब्रह्मादिभिर्देवैर्मुनिभिः परयामुदा ॥ ५४ ॥ पुष्पधूपादिभिर्भक्त्या पूजिता वंदिता
 सदा ॥ पृथिव्यां प्रथमं देवी सुयज्ञेनैव पूजिता ॥ ५५ ॥ शंकरेणोपदिष्टेन पुण्यक्षेत्रे च भारते ॥ त्रिषुलोकेषु तत्प
 श्चादाज्ञया परमात्मनः ॥ ५६ ॥ पुष्पधूपादिभिर्भक्त्या पूजिता मुनिभिः सदा ॥ कलायायाः समुद्रताः पूजिता
 स्ताश्च भारते ॥ ५७ ॥ पूजिता ग्रामदेव्यश्च ग्रामे च नगरे मुने ॥ एवमेकचित्सर्वप्रकृतेश्च रितं शुभं ॥ १५८ ॥ य
 था गमं लक्षणं च किंभूयः श्रोतुमिच्छसि ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे नवमस्कंधे प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥
 सावित्री च सरस्वत्या इत्युपि पाठः ॥ १५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ प्रथमं देवीति भूतले प्रथमं राधा देवी सुयज्ञेन राज्ञा पूजि
 तेत्यर्थः ॥ ५५ ॥ उपदिष्टेन विधिनेति शेषः ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ १५८ ॥ यस्माद्देवं तस्मादिता देवतानियमेन पूज्या इति तात्पर्यं ॥
 इति श्रीदेवीभागवतसिंहकेनवमस्कंधे प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.न.

॥१०॥

अष्टाशीतिमाहापद्यैः पञ्चप्रकृतिसंभ्रः ॥ प्रोच्यते विस्तरेणैव तद्वर्णनां च संभवः ॥ १ ॥ पृष्ठवतेनारदाय सर्वोऽपि न वमस्कंधोक्तोऽर्थः संक्षेपेण सू-
त्रभूतवाक्यैर्भगवता वर्णितस्तमर्थसामान्यरूपेण ज्ञातुं विशेषाकारेण ज्ञातुं पुनर्नारदः पृच्छति नारद उवाच समासेनेति समासेन संक्षेपेण बोधस्य
सामान्याकारेण बोधविषयस्य पूर्वोक्तार्थस्य विबोधनाय विशेषाकारेण बोधनाय व्यासेन विस्तारेण ॥ १ ॥ विशेषार्थविषयं प्रश्नं स्वयमेव करो-
तिसृष्टेरिति सृष्टेर्देवतपञ्चस्य कार्यभूतस्याद्याकारणरूपामूलप्रकृतिर्मायाशक्तिपरादिशब्दवाच्यासृष्टिविधौ सृष्टिक्रियायां प्रथमतः कथमावि-
र्बभूवोत्यन्ना पश्चाच्च कथं पञ्चधा भूता पञ्च प्रकारेण दुर्गादिरूपेण भिन्ना कथं वा जाता तद्वदेत्यर्थः ॥ २ ॥ किंच भूतोति भवे संसारे त्रिगुणया प्रकृतेरं-

नारद उवाच ॥ समासेन श्रुतं सर्वदेवीनां चरितं प्रभो ॥ विबोधनाय बोधस्य व्यासेन वक्तुमर्हसि ॥ १ ॥ सृष्टेरा-
द्यासृष्टिविधौ कथमाविर्बभूव ह ॥ कथं वा पञ्चधा भूता वदेदविदां वर ॥ २ ॥ भूतायायां शकलया तया त्रिगुणया
भवे ॥ व्यासेन तासां चरितं श्रोतुमिच्छामि सांप्रतं ॥ ३ ॥ तासां जन्मानुकथनं पूजाध्यानं विधिं बुध ॥ स्तोत्रं
कवचमैश्वर्यं शौर्यं वर्णय मंगलं ॥ ४ ॥ श्रीनारायण उवाच ॥ नित्य आत्मानभो नित्यं कालो नित्यो दिशो यथा ॥ वि-
श्वानां गोलकं नित्यं नित्यो गोलो लोक एव च ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥

शकलयाया भूता संभूता शक्तिर्गीगा तुलस्यादिरूपिणी तासां चरितमित्यर्थः ॥ ३ ॥ किंच तासामिति तासां तुलस्यादीनां ॥ ४ ॥ नाराय-
णः प्रथमं प्रकृतेः स्वरूपमाह नारायण उवाच नित्येति नित्य आत्मा यथा तथा प्रकृतिर्नित्येत्यर्थः आत्मा त्रिचिदाभासो जीवः अस्य मोक्षप-
र्यंतमवस्थाना न्नित्यत्वं न त्वन्नात्मशब्देन परमात्मा तस्य गृहणे तस्मिन् परमात्मानि त्रिकालाबाध्यत्वरूपं नित्यत्वस्य सत्त्वात्तदेव नित्यत्वं मायायां बोधितं
भवेत्तच्च मायायां न संभवाति असत्त्वमरजस्कमतमस्कममायमिति तापनीयश्रुत्या मोक्षदशायां मायायानाशाभ्युपगमात्तस्मान्जीव एवात्मशब्देन
ग्राह्यस्तद्ग्रहणे तस्य मोक्षपर्यंतमवस्थाना न्मायायाश्च मोक्षपर्यंतमवस्थाना दुभयोः समानयोगक्षेमं नित्यत्वं सित्यतीति नभः कालदिशादीनामपि
प्राकृतप्रलयपर्यंतमवस्थाना न्नित्यत्वमपेक्षिकमेव बोधव्यं विश्वानां भूरादिलोकानां गोलकं ब्रह्मांडमित्यर्थः ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥

टी. अ.
२

॥१०॥

तदेकदेशोगोलोकैकदेशः न च भागानुसारको गोलोका न्नमदेशो स्थितो वैकुण्ठ इत्यर्थः परमार्थतो नित्यस्तु परमात्मैव एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म नेह
 नानास्ति किंच नेत्यादि श्रुतेः ॥ ६ ॥ ननु सा प्रकृतिः सांख्यशास्त्रोक्तप्रधानवदात्मनो भिन्ना स्वतंत्रा वास्तिकं तत्राह यथा ग्नौ दाहिका इति य
 था वह्नौ दाहिका शक्तिः शश्वन्निरंतरं युक्ता संयुक्तैव वह्नौ नानभिन्नावह्नेः कदापि यथा वाचं द्वेपद्मे च शोभानित्यं समवेतैव न भिन्ना यथा वारवौ प्र
 भातदाभिन्ने व न भिन्ना कदाचिदपि तथैवेयं शक्तिः परात्मनितदभेदे वैवतिष्ठति शक्तेः शक्तव्यतिरेकेणादर्शनात् तथा च श्वेताश्वेतरश्रुतिः परास्य
 शक्तिर्विविधैव भूयते स्वाभाविकी ज्ञानबलक्रिया चेति तत्रैषापि शक्तिश्च शक्तिमद्रूपा द्यतिरेकं न वांछति तादात्म्यमनयोर्नित्यं वह्निदाहकयो
 रिवेति तस्मान्न भिन्ना जडा स्वतंत्रा किंतु चेतनाधिष्ठिता चेतनेव भवतीति भावः तदुक्तं चिच्छायावेशतः शक्तिश्चेतनेव विभाति सेतिसूतसंहितायां

तदेकदेशे वैकुण्ठे न च भागानुसारकः ॥ तथैव प्रकृतिर्नित्या ब्रह्मलीलासनातनी ॥ ६ ॥ यथा ग्नौ दाहिका च द्वेपद्मे
 शोभाप्रभारवौ ॥ शश्वद्युक्तानभिन्ना सा तथा प्रकृतिरात्मनि ॥ ७ ॥ विना स्वर्णं स्वर्णकारः कुण्डलं कर्तुं मक्षमः ॥
 विना मृदा घटं कर्तुं कुललोहिनर्हीश्वरः ॥ ८ ॥ न हि क्षमस्तथात्मा च सृष्टिं स्त्रुं तथा विना ॥ सर्वशक्तिस्वरूपा सा य
 या च शक्तिमान्सदा ॥ ९ ॥ ऐश्वर्यवचनः शश्वक्तिः पराक्रम एव च ॥ तत्स्वरूपा तयोर्दात्री सा शक्तिः परिकीर्तिता
 ॥ १० ॥ ज्ञानं समृद्धिः संपत्तिर्यशः श्रैव बलं भगः ॥ तेन शक्तिर्भगवती भगरूपा च सा सदा ॥ ११ ॥ ॥ ६४ ॥

॥ ७ ॥ ननु शक्तिर्यदि परमात्मनो न भिन्ना किंतु तदाभिन्ना तदा परमात्मैव जगत्करोतु किमर्थं शक्तिस्तदेति चेत्तदाह विना स्वर्णमिति ॥ ८ ॥
 न हि क्षम इति शक्तिरहितस्य निर्गुणस्य निर्विकारस्य निरवयवस्यात्मनो न जगत्कर्तृत्वमुपपद्यते तस्मात्सर्वजननकर्त्री सापेक्षितैवेति भावः ॥ ९ ॥
 शक्तिशब्दस्य निर्वचनमाह ऐश्वर्येति शशब्दो मंगलवाचकत्वाद् ऐश्वर्यवचनः कृतिशब्दस्य पृषोदरादित्वाद्दकारलोपेति शब्दः पराक्रमवा
 चकः शयुक्ताक्तिर्यस्यामिति व्युत्पत्त्या शक्तिशब्दः प्रकृतिवाचकः पृषोदरादित्वाद्भुक्तपदलोपस्तत्फलेतसाह तत्स्वरूपेति ॥ १० ॥ भगव
 तीपदव्युत्पत्तिमाह ज्ञानमिति ज्ञानादिवलांतानां पदार्थानां वाचको भगशब्दः तेन कारणेन शक्तिर्भगवति पदे नोच्यत इत्यर्थः भगानि संत्वस्या
 मिति व्युत्पत्तेः ननु भगानि पराशक्तेर्भिन्नानि कस्मादभ्युपगम्यतानि तत्राह भगरूपा च सेति भगान्यापि तस्या एव विकारा इत्यर्थः ॥ ११ ॥

दे.भा.न

॥११॥

ननुतर्हिपरमात्माकयभगवच्छब्देनोच्यतेइतिचेत्तादृशभगवतिशक्तियोगदेवेत्याह तयायुक्तइति तस्यागुणाएवपरमात्मनोगुणाभवंतिपरस्य
राध्यासादित्यर्थःइत्यंपराशक्तिर्वर्णयित्वातदवच्छिन्नंचैतन्यरूपंपरमात्मानंवर्णयति सचस्वेच्छामयइति प्रकृतेरिच्छैवेतस्येच्छानांभेदेति
प्रकृतीच्छैवस्वेच्छामयइत्युच्यते अयंचपरमात्मानिराकारःसाकारश्चभवतौत्यर्थः॥१२॥ निराकारस्वरूपंचवर्णयति तेजोरूपमिति चिद्रूप
स्वप्रकाशतेजोरूपमित्यर्थः इदमेवपरंब्रह्मोतिवदंति ॥१३॥ इत्यंनिराकारंपरमात्मरूपंयोगिनेज्ञानिनोवेदांताश्चयद्यपिवदंतितथापेतद्रूपेण

तयायुक्तःसदात्माचभगवांस्तेनकथ्यते ॥ सचस्वेच्छामयोदेवःसाकारश्चनिराकृतिः ॥ १२ ॥ तेजोरूपंमिरा
कारंध्यायंतयोगिनःसदा ॥ वदंतिचपरंब्रह्मपरमात्मानमीश्वरं ॥ १३ ॥ अदृश्यंसर्वद्रष्टारंसर्वज्ञंसर्वकारणं ॥
सर्वदंसर्वरूपंतंवैष्णवास्तंनमन्वते ॥ १४ ॥ वदंतिधैवतेकस्यतेजःस्तेजःस्विनाविना ॥ तेजोमंडलमध्यस्थं
ब्रह्मतेजःस्विनंपरं ॥ १५ ॥ स्वेच्छामयंसर्वरूपंसर्वकारणकारणं ॥ अतीवसुंदरंरूपंबिभ्रतंसुमनोहरं ॥ १६ ॥
किशोरवयसंशांतंसर्वकांतंपरात्परं ॥ नवीननीरदाभासंधामैकंश्यामविग्रहं ॥ १७ ॥ शरन्मध्यान्हपद्मौघ
शोभामोचनलोचनं ॥ मुक्ताछविविनिधैकदंतपंक्तिमनोरमं ॥ १८ ॥ मयूरपिच्छचूडंचमालतीमाल्यमंडितं ॥
सुनसंसास्मितकांतंभक्तानुग्रहकारणं ॥ १९ ॥ ज्वलदग्निविशुद्धैकपीतांशुकसुशोभितं ॥ द्विभुजंमुरलीहस्तं
रत्नभूषणभूषितं ॥ २० ॥ सर्वाधारंचसर्वेशंसर्वशक्तियुतंविभुं ॥ सर्वैश्वर्यप्रदंसर्वस्वतंत्रंसर्वमंगलं ॥ २१ ॥

वाःस्यूलमूर्त्यभिमानिनोनमन्वतेइत्यरुचिपूर्वकमाह वैष्णवास्तंनमन्वतइति ॥१४॥तेकिंवदंतितत्राह वदंतीति भवादिर्यत्तेजःस्वीक्रियते तच्चेज
स्तेजस्विनाविनाकस्यसंभवेनकस्यापिनिहिचंद्रिकाप्रभादीनिचंद्रसूर्याद्याभयरहितानिक्वाचिदुपलभ्यंतेततोन्मथानुपपत्त्याकाचननित्यासावयवा
मूर्तिःस्वीकर्तव्येतिवदंतीत्यर्थः कीदृशीमूर्तिःस्वीकर्तव्येतिर्तादृशयाति तेजोमंडलेति ॥१५॥१६॥किशोरोवालः ॥१७॥ शोभायामोच
नेनाशनेलोचनेभ्यः मुक्ताछविविनिधाययाएतादृशीयाएकाविरलामध्येव्यवधानरहितादंतपंक्तिस्त्यामनोरमं ॥१८॥१९॥२०॥२१॥

दी.भा.

२

॥११॥

॥ २२ ॥ निमेषोनेत्रमीलनं ॥ २३ ॥ कृष्णपदं निर्वक्ति कृषिस्तद्वर्त्तति कृषधातोर्भजनवाचकाद्वावेकिप्रत्यये कृषशब्दो निष्पन्नः सः तद्व-
क्तिवचनः कृष्णभक्तिवाचक इत्यर्थः णमुधातो रपि प्रवृत्तवाचकाद्वावेडप्रत्यये कृष्णदास्यवाचको न शब्दः तथाच कृट्चनं च कृष्णेतेदात्
त्वेन वर्तते यस्मिन्नित्यर्थः शर्श आद्यच् पृषोदरादित्वात्षकारश्रवणं ॥ २४ ॥ तत्फलितमाह भक्तिदास्येति ॥ २५ ॥ एतावत्यर्थं तं वैष्णवं
मतमुपपादितं तत्रारुच्यैवमतातिरस्कारोदाशितस्तत्रयुक्तिस्त्वित्यं न ह्यस्माभिश्चंद्रसूर्यतेजोवद्वद्वतेजः स्वीक्रियते येन तदाश्रयस्याकांक्षा स्यात्
किंतु शुद्धत्वात्तेजः सदृशं स्वयंप्रकाशं ज्ञानरूपमेव तेजः पदेनोच्यते न हि तस्य सर्वाधारस्याधारापेक्षास्ति अनवस्थापत्तेः स भगवः कस्मिन्प्राति-
ष्ठितः स्वमहिम्नीति श्रुत्या च निराधारस्यैवात्मनः प्रतिपादनात् किंच यामूर्तिः सावयवाभवाद्भिः स्वीक्रियते तस्यानित्यत्वं न स्याद्यद्यत्सावयवं तत्तन्न

परिपूर्णतमं सिद्धं सिद्धेशं सिद्धिकारकं ॥ ध्यायंते वैष्णवाः शश्वदेवदेवं सनातनं ॥ २२ ॥ जन्ममृत्युजराव्याधिशो-
कभीतिहरं परं ॥ ब्रह्मणो वयसायस्य निमेष उपचर्यते ॥ २३ ॥ स चात्मा स परं ब्रह्म कृष्ण इत्यभिधीयते ॥ कृ-
षिस्तद्वक्तिवचनो न श्रुतदास्यवाचकः ॥ २४ ॥ भक्तिदास्यप्रदातायः सच कृष्णः प्रकीर्तितः ॥ इत्याहु वैष्णवा-
स्तत्र सिद्धांतः प्रोच्यते मया ॥ २५ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४५ ॥

श्रममिति व्याप्तेः किंच याभवतामभिमतामूर्तिः सा कं पांच भौतिकी वा तद्रहिता वा यदि पांच भौतिकी तदानित्यत्वप्रसंगो यदि तद्रहिता तर्हि तस्याऽ-
स्मत्त्वाभावः स्यात्तथा च तस्याः सत्वे प्रमाणाभावः न च वेद एव कृष्णमूर्तेर्ब्रह्मत्वप्रतिपादकः प्रमाणमिति चेत् न कृष्णमूर्त्यतर्गतं ब्रह्मरूपं प्रतिपादकं
त्वेनापि वेदवाक्यस्य विषयलाभेन चारितार्थात् अतएव सर्वत्र त्विदं ब्रह्मेति सामानाधिकरण्यप्रतिपादिकश्रुतिश्चरितार्था किंच भवाद्भिः कृष्णमू-
र्तिप्रतिपादिकाया श्रुतिरुच्यते सा किमुपासनकांडस्यावाज्ञानकांडस्या यद्युपासनाकांडस्या तर्हि सर्वश्रुतीनामुपक्रमोपसंहारादिषु द्विधा तत्पर्यं
लिङ्गेनैते ब्रह्मणि समन्वयान्निर्गुणब्रह्मप्रतिपादकश्रुतिभ्योऽप्युपासनाकांडस्य श्रुतीनां दुर्बलत्वात्तन्मूर्त्यतर्गतं ब्रह्मवर्णनं प्रतिपादनेनापि तासां श्रुतीनां
सार्यक्याद्यनतदुक्तार्थे प्रामाण्यं यदि ज्ञानकांडस्यातदपि संभवति नाहि ज्ञानकांडे ब्रह्मरूपं निर्गुणं विहाय कचिदपि सगुणं रूपं सावयवंपारिच्छिन्नं

दे.भा.न

॥१२॥

प्रतिपादितमस्ति तस्मान्मूलप्रकृतेर्हिरण्यगर्भोत्पत्तिद्वारापंचमहाभूतसृष्ट्युत्तरपंचमहाभूतांशमादायहिरण्यगर्भरूपाभगवतीनानारूपाणिधार
यामासेत्येवसर्वश्रुतिसिद्धांतः तदुक्तं नृसिंहतापनीयेतिमेखंडे उपद्रष्टानुमंतेषात्मासिंहाश्वदूषणाविकारोद्युपलब्धसर्वत्रनद्यास्तिइति
द्विरात्मैवसिद्धोद्वितीयोमाययाद्यन्यादिवसबाष्पआत्मापरएवैषसर्वतयाहिमाज्ञेसैषाविद्याजगत्सर्वमात्मापरमात्मैवस्वप्रकाशोप्यविषयज्ञानत्वा
ज्ज्ञानमेवद्यन्मविज्ञानीत्यनुभूतेर्मायाचतमोरूपानुभूतेरित्यादिएवमेवैषामायास्वाऽव्यतिरिक्तनिक्षेपाणिदर्शयित्वाजीवेशावाभासेनकरोतिमा
यायाऽविद्याचस्वयमेवभवति सैषाचिन्नासुदृढाबद्धंकुरागुणभिर्भाकुरेष्वापिगुणाभेदासर्वत्रब्रह्मविष्णुशिवरूपिणीचैतन्यदीप्तातस्मादात्मनएवत्रै
विध्यंसर्वत्रयोनित्वमप्यभिमंताजीवेनियंतेश्वरः सर्वाहंमानोहिरण्यगर्भस्त्रिरूपईश्वरवद्व्यक्तचैतन्यः सर्वगोद्वेषईश्वरः क्रियाज्ञानात्मासर्वसर्वम
यंसर्वजीवाः सर्वमयाः सर्वावस्थासुतथाप्यल्पासवाष्पभूतानींद्रियाणिविराजंदेवताः कोशांश्चसृष्ट्वाप्रविश्यामूढोमूढइवव्यहरन्नास्तेमाययैवतस्मा

विच्छक्तिरूपः स्रष्टादौसिसृक्षन्नेकएवच ॥ सृष्ट्युन्मुखस्तदंशेनकालेनप्रेरितः प्रभुः ॥ २६ ॥

ददयएवात्मेति ननुतर्हिप्रथमाध्याये स्वेच्छामयस्येच्छयाचश्रीकृष्णस्यसिसृक्षया साविर्बभूवसहसामूलप्रकृतिरीश्वरीतिवाक्येश्रीकृष्ण
स्येच्छयेतिकथमुक्तंपरमात्मनइच्छयेतिवक्तव्यमितिचेच्छृणु कृष्णशब्दोहियोगरूढ्यागोलोकवासिदेवतायारूढः केवलयोगार्थमादायतु
परमात्मानिप्रयुक्तएवमेवसर्वेपिशब्दायोगरूढ्यातत्तद्विशेषपदार्थवाचकाअपियोगार्थमादायसर्वेब्रह्मवाचकाअपिभवन्तीतिनदोषः ननुतर्हिसा
म्यावस्थमायोपाधिकसर्वकारणब्रह्मणः किंमुख्यंयोगरूढेनामेतिचेदुच्यते केवलब्रह्मणोनिर्मुणब्रह्मप्रतिपादकश्रुतिषुसत्यंज्ञानमनंतब्रह्मेत्यादि
वाक्येषुप्रतिपादितानिसत्यंज्ञानमित्यादीनिवामानिमुख्यानितदतिरिक्तंनामानिशिवविष्णुब्रह्मेत्यादीनियौगिकानितेषांतत्तद्गुणोपाधिचैतन्येरु
द्धत्वेनैकत्रकृतशक्त्यामिर्वाहेन्यत्रशक्तिकल्पनेप्रमाणाभावात् गौरवाच्च तत्तद्गुणोपाधिषुशिवविष्णादिनाम्नाशक्तिस्तुमैत्रायणीयश्रुतावभिहि
ता योद्वखलुवावास्यसात्विकोशः सविष्णुर्योहखलुवावास्यतामसोशः सयोर्यरूद्रइत्यादिवाक्यैः कृष्णादेशब्दास्तुरुद्ध्याविष्णुत्वस्यैववाच
काः तत्तदुपनिषत्सुतथैवप्रतिपादनात् समुणशबलकारणब्रह्मणः साम्यावस्थामातः प्रविष्टस्यतुमुख्याः शब्दाः मायाशक्तिप्रकृतिपराभगवती

टी. अ.

२

॥१२॥

देवीत्यादयः यथागजादिशरीरेषां प्रविष्टस्य चैतन्यस्य गजादिसंज्ञाः मुख्यास्तद्वन् तदुक्तं श्वेताश्वेतरे देवात्मशक्तिस्वगुणैर्निगूढमिति आत्मरूपां शक्तिमित्यर्थः सूतसंहितायां सौरसंहितायां कूर्मपुराणे च चिन्मात्राश्रयमायायाः शक्त्याकारे द्विजोत्तमाः अनुप्रविष्टायां संविन्निर्विकल्पास्वयंप्रभा सा शिवापरमादेवी शिवाभिन्ना शिवंकरीति तस्मात्कारणब्रह्मणोऽपि मायाशक्त्यादिसंज्ञा एव मुख्या ब्रह्मविष्ण्वादिसंज्ञास्तु गौणाः तत्तदुणोपाधिषु तेषां शक्तेः कृत्वत्वेनान्यत्र शक्तिकल्पने प्रमाणाभावात् गौरवाच्च तस्मात्कारणब्रह्मोपासकेन मायाशक्तिपरामूलप्रकृतिर्भगवती देवीत्यादि मुख्यशब्दैरेव कारणब्रह्मोपास्यं न तु ब्रह्मविष्ण्वादिशब्दैरित्येव तत्त्वं अतएव कारणब्रह्मणः शक्तितत्त्वमिति संज्ञा शैवसिद्धां तेषां सिद्धा शक्तदर्शने चेत्पलमप्रसक्तानुप्रसक्तया वस्तुतस्तु पूर्वत्र परमात्मन इच्छयेत्येव पूर्ववचनार्थः श्रीकृष्णस्येत्यस्यासि सृष्टयेत्यनेनान्व

स्वेच्छामयः स्वेच्छया च द्विधारूपो बभूव ह ॥ स्त्रीरूपो वामभागांशो दक्षिणांशः पुमान् स्मृतः ॥ २७ ॥ तां ददर्श महाकर्माकामाधारां सनातनः ॥ अतीव कमनीयां च चारुपंकजसन्निभां ॥ २८ ॥ चंद्रविंबविनिर्घैकनितंबयुगलां परां ॥ सुचारुकदलीस्तंभनिर्दिता श्रोणि सुंदरी ॥ २९ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥

यइति पूर्वव्याख्यातं तदानकोपि दोषः इत्थं वैष्णवमतमरुच्या विनिर्दिष्टा तृदेवीनां देवानां च साकारमूर्तीनां निराकारब्रह्मणो मायाविशिष्टा दुत्पत्तिमाह चिच्छक्तिरूपः स्रष्टा इति आदौ त्वमं सर्वस्रष्टा मायाशबलः परमेश्वरो अपंचीकृतभूतात्मकहिरण्यगर्भोत्पत्तिद्वारा पंचमहाभूतात्मकब्रह्मांडोत्पत्त्यनंतरमिदमर्थोद्घोषं सिसृक्षन् सृष्टानां पदार्थानामधिष्ठातृदेवताः स्रष्टुमिच्छन् परमात्मनोऽश्रितस्मिन् विद्यमानेन कालेन प्रेरितः सन् ॥ २६ ॥ स्वेच्छामयो यतो भवति ततो हेतोः स्वेच्छया शक्त्या र्द्धनारीश्वररूपेण द्विधा बभूव इत्यर्थः तत्र स्वेच्छामयः स्वेच्छयेति पदद्वयेना द्विधा भवनं प्रकृतेरेव कार्यतत्प्रकृतेः कार्यमात्मन्यारोपेण भासत इत्युक्तं भवति तथा च र्द्धनारीश्वररूपेण मूलप्रकृतिरेव परिणामं प्राप्ता इत्यर्थः सा च प्रकृतिश्चैतन्यरहिता नैव तिष्ठतीति तदधिष्ठानं विवर्तकारणं सर्वत्रागतमेव ॥ २७ ॥ उत्पत्त्यनंतरं वृत्तमाह तां ददर्शेति ॥ २८ ॥ चंद्रविंबविनिर्घयस्य तादृशमेकं मिलितं नितंबयुगलं यस्य सा कदलीस्तंभो निर्दिता यथा तथा श्रोण्यालक्षणा श्रोण्यधोभागेन सुंदरी ॥ २९ ॥

दे.भा.न

॥१३॥

श्रीफलंबिल्वफलं मौलौपुष्पैर्बुधंसेवितां ॥ ३० ॥ वक्रलोचनांकटाक्षवतीं ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ कस्तूरीबिंदुवैति सीमंतसन्निधौसिंदूरावि
दुस्तदधःकाश्मीरचंदनबिंदुस्तदधःकस्तूरीबिंदुरितिफलितोर्यः ॥ ३३ ॥ वंकिमंकुटिलंकवरीकेशसन्निवेशः ॥ ३४ ॥ पुष्टशोभापू

टी. अ.
२

श्रीयुक्तश्रीफलकारस्तनयुग्ममनोरमां ॥ पुष्पजुष्टांसुवलितांमध्यक्षीणांमनोहरां ॥ ३० ॥ अतीवसुंदरीं
शांतांसस्मितांवक्रलोचनां ॥ वन्दिशुद्धांशुकाधारांरत्नभूषणभूषितां ॥ ३१ ॥ शश्वच्चक्षुश्चकोराभ्यांपिबन्तीं
सततमुदा ॥ कृष्णस्यमुखचंद्रचंद्रकोटिविनिर्दितां ॥ ३२ ॥ कस्तूरीबिंदुनासार्द्धमधश्चंदनबिंदुना ॥ समांसिं
दूरबिंदुचभालमध्येचबिभ्रतीं ॥ ३३ ॥ वंकिमंकवरीभारंमालतीमाल्यभूषितां ॥ रत्नेंद्रसारहारचंदनवतीकांत
कामुकीं ॥ ३४ ॥ कोटिचंद्रप्रभामृष्टपुष्टशोभासमन्वितां ॥ गमनेनराजहंसगजगर्वविनाशिनीं ॥ ३५ ॥ दृष्ट्वा
तांतुतयासार्द्धरासेशोरासमंडले ॥ रासोच्छासेसुरसिकोरासक्रीडांचकारह ॥ ३६ ॥ नानाप्रकारशृंगारंशृंगा
रोमूर्तिमानिव ॥ चकारसुखसंभोगंयावद्वैब्रह्मणोदिनं ॥ ३७ ॥ ततःसचपरिश्रान्तस्तस्यायोनौजगत्पिता ॥
चकारवीर्याधानंचनित्यानंदेशुभक्षणे ॥ ३८ ॥ गात्रतोयोषितस्तस्याःसुरतांतेचसुव्रत ॥ निःससारश्रमज
लंश्रान्तायास्तेजसाहरेः ॥ ३९ ॥ महाक्रमणक्लिष्टायानिश्वासश्चबभूवह ॥ तदावब्रेश्रमजलंतत्सर्वविश्वगोल
कं ॥ ४० ॥ सचनिश्वासवायुश्चसर्वाधारोबभूवह ॥ विश्वासवायुःसर्वेषांजीविनांचभवेषुच ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

णशोभाराजहंसगजयोगवैस्यगमनाभिमानस्यविनाशिनीं ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ शृंगारंकुर्वन्नितिशेषः ब्रह्मणोदिनपरिमितकालपर्यंतं ॥ ३७ ॥
शुभक्षणे शुभकाले ॥ ३८ ॥ श्रमजलंघर्मजलं ॥ ३९ ॥ महाक्रमणंमहालिङ्गनपंचीकृतपंचमहाभूतात्मकाविश्वगोलकंपूर्वमेवजातंतत्सर्वश्रम
जलंवब्रेआवृणोदित्यर्थः अतोपिज्ञापकात्पंचमहाभूतोत्पत्त्यनंतरेमेवयमधिष्ठातृदेवतानामुत्पत्तिरितिबोध्यं ॥ ४० ॥ जीविनांप्राणिनां ॥ ४१ ॥

॥१३॥

मूर्तिमद्वायोरित्वेनेनसस्मिन्नेवसमयेप्रकृत्यासर्वप्राणिनांनिश्वासवायोरधिष्ठात्रीमूर्तिरविप्रकटीकृतेतिबोध्यं बलीचमूर्तिमती प्राणाःपंचपुत्रा
अपिपंचप्राणानामधिदेवामूर्तिरूपाएव ॥ ४२ ॥ अधःप्राणाःकनिष्ठायप्राणानागादयःपंचतेषामप्यधिदेवाःपंचतदैवोत्पादिताइत्याह व
भूवुरेवेति एतेदशप्राणाधिदेवावायुपर्णातउत्पन्नाइत्यर्थः ॥ ४३ ॥ घर्मस्यतोयस्यचाधिदेवोवरुणोबभूव प्रकृत्याउत्पादितइत्यर्थः ॥ ४४ ॥

बभूवमूर्तिमद्वायोर्वामांगात्प्राणवल्लभा ॥ तत्पत्नीसाचतत्पुत्राःप्राणाःपंचचजीविनां ४२ ॥ प्राणोपानःसमा
नश्चोदानप्यानौचवायवः ॥ बभूवुरेवतत्पुत्राअधःप्राणाश्चपंचच ॥ ४३ ॥ घर्मतोयाधिदेवश्चबभूववरुणोम
हान् ॥ तद्वामांगाच्चतत्पत्नीवरुणानीवभूवसा ॥ ४४ ॥ अथसाकृष्णविच्छक्तिःकृष्णगर्भदधारह ॥ शतमन्वं
तरंयावज्ज्वलंतीब्रह्मतेजसा ॥ ४५ ॥ कृष्णप्राणाहिदेवीसाकृष्णप्राणाधिकप्रिया ॥ कृष्णस्यसंगिनीशश्वत्कृ
ष्णवक्षस्थलस्थिता ॥ ४६ ॥ शतमन्वंतरांतेचकालेतीतेपिसुंदरी ॥ सुषावडिंभंस्वर्णाभिंविश्वाधारालयंपरं
॥ ४७ ॥ दृष्ट्वाडिंभंचसादेवीहृदयेनव्यदूयत ॥ उत्ससर्जचकोपेनब्रह्मांडगोलकेजले ॥ ४८ ॥ दृष्ट्वाकृष्णश्चत
त्यागंहाहाकारंचकारह ॥ शशापदेवीदेवेशस्तत्क्षणंचयथोचितं ॥ ४९ ॥ यतोपत्यंत्वयात्यक्तंकोपशीलेच
निष्ठुरे ॥ भवत्वंत्वनपत्यापिचाद्यप्रभृतिनिश्चितं ॥ ५० ॥ यायास्त्वदंशरूपाश्चभविष्यंतिसुरस्त्रियः ॥ अ
नपत्याश्चताःसर्वास्त्वत्समानित्ययौवनाः ॥ ५१ ॥ एतस्मिन्नंतरेदेवीजिह्वायात्सहसाततः ॥ आविर्बभूव
कन्यैकाशुक्लवर्णीमनोहरा ॥ ५२ ॥

॥ ४३ ॥

॥ ४४ ॥

॥ ४५ ॥

॥ ४५ ॥ ४६ ॥ डिंभंवालकं ॥ ४७ ॥ व्यदूयतभयंकंरंमहांतंवालकं दृष्ट्वाहृदयेनांतःकरणावच्छेदेनचकंपेइत्यर्थः यथाभिलषितसु
कुमारवालकाभावप्रयुक्तसंज्ञातकोपेनब्रह्मांडगोलकेयज्जलंतस्मिन्नुत्सर्ज ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ जिह्वायात्कृ
ष्णवधूनिह्वायादित्यर्थः ॥ ५२ ॥

॥ ४३ ॥

॥ ४४ ॥

॥ ४५ ॥

॥ ४६ ॥

॥ ४७ ॥

दे.भा.न.

॥१४॥

॥ ५३ ॥ साचेति कृष्णस्त्रित्यर्थः ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ वार्णीजिह्वाग्राब्जातांकृष्णोद्विभुजः. अस्यचतुर्भुजनारायणस्यमानिनीराधा
अत्रैवमन्निकटे एवस्थास्यतिममपत्नीभविष्यतीत्यर्थः यतोमानिनीततस्तवैतस्याश्चैकपतित्वेसामानाधिकरण्यंसंभवेदित्यर्थः ॥ ५६ ॥

टी. अ.
२

श्वेतवस्त्रपरीधानावीणापुस्तकधारिणी ॥ रत्नभूषणभूषाढ्यासर्वशास्त्राधिदेवता ॥ ५३ ॥ अथकालांतरेसा
चद्विधारूपावभूवह ॥ वामार्धांगाच्चकमलादक्षिणार्द्धाच्चराधिका ॥ ५४ ॥ एतस्मिन्नंतरेकृष्णोद्विधारूपोबभू
वसः ॥ दक्षिणार्द्धश्चद्विभुजोवामार्धश्चतुर्भुजः ॥ ५५ ॥ उवाचवार्णीकृष्णस्तांत्वमस्यकामिनीभव ॥ अत्रै
वमानिनीराधातवभद्रंभविष्यति ॥ ५६ ॥ एवंलक्ष्मींचप्रददौतुष्टोनारायणायच ॥ सजगामचवैकुण्ठेताभ्यां
सार्द्धजगत्पतिः ॥ ५७ ॥ अनपत्येचतेद्वेचजातेराधांशसंभवे ॥ भूतानारायणांगाच्चपार्षदाश्चतुर्भुजाः ॥ ५८ ॥
तेजसावयसारूपगुणाभ्यांचसमाहरेः ॥ बभूवुःकमलांगाच्चदासीकोट्यश्चतत्समाः ॥ ५९ ॥ अथगोलोकना
थस्यलोम्नांविवरतोमुने ॥ भूताश्चासंख्यगोपाश्चवयसातेजसासमाः ॥ ६० ॥ रूपेणचगुणेनैवबलेनविक्रमे
णच ॥ प्राणतुल्यप्रियाःसर्वेबभूवुःपार्षदाविभोः ॥ ६१ ॥ राधांगलोमकूपेभ्योवभूवुर्गोपकन्यकाः ॥ राधातु
ल्याश्चताःसर्वाराधादास्यःप्रियंवदाः ॥ ६२ ॥ रत्नभूषणभूषाढ्याःशश्वत्सुस्थिरयौवनाः ॥ अनपत्याश्चताः
सर्वाःपुंसःशापेनसंततं ॥ ६३ ॥

॥ ६४ ॥

॥ ६५ ॥

॥ ६६ ॥

ताभ्यांलक्ष्मीसरस्वतीभ्यां ॥ ५७ ॥ अनपत्येपूर्वोक्तशापाद्यतोराधांशसंभवेत्ततः नारायणांगाद्वैकुण्ठाधिपतेश्चतुर्भुजात् ॥ ५८ ॥ ५९ ॥
गोलोकनाथस्यद्विभुजकृष्णस्यभूताजाताः ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥

॥ ६४ ॥

॥ ६५ ॥

॥१४॥

एतस्मिन्नंतरे इति राधाकृष्णशरीरविभागसमये विष्णोः परमात्मनो मायाशक्तिर्दुर्गारूपेण प्रादुर्बभूवेत्यर्थः यथा लक्ष्मीसरस्वत्यौ राधावतारौ तथान्तराध्यात्मवतारः किंतु मूलप्रकृतेरेव साक्षादवतार इति भावः लक्ष्मीसरस्वत्यौ राधावतारावपि मूलप्रकृतेः पूर्णावताराविव प्रथममध्यायस्थवचनात्साक्षान्मूलप्रकृतेर्दुर्गाराधातस्तु लक्ष्मीसरस्वत्यावेतावानेव विशेषः ॥ ६४ ॥ साक्षादवतारत्वेनाधिकं माहिमानं दुर्गाया वर्णयति देवीत्यादिना नारायणी लक्ष्मीस्तत्स्वरूपत्वादियमपि नारायणीबुद्ध्याधिष्ठात्री अत्र बुद्धिशब्देनांतःकरणं परमात्मनो गृह्यते सरस्वत्याः पृथक् बुद्ध्य

एतस्मिन्नंतरे विप्रसहस्राकृष्णदेवता ॥ आविर्बभूव दुर्गासाविष्णुमायासनातनी ॥ ६४ ॥ देवी नारायणी शा
ना सर्वशक्तिस्वरूपिणी ॥ बुद्ध्याधिष्ठातृदेवी साकृष्णस्य परमात्मनः ॥ ६५ ॥ देवीनां बीजरूपा च मूलप्रकृतिरी
श्वरी ॥ परिपूर्णतमा तेजःस्वरूपा त्रिगुणात्मका ॥ ६६ ॥ तप्तकांचनवर्णा भाकोटिसूर्यसमप्रभा ॥ ईषद्वास्य
प्रसन्नास्यासहस्रभुजसंयुता ॥ ६७ ॥ नानाशस्त्रास्त्रनिकरं बिभ्रती सा त्रिलोचना ॥ वह्निशुद्धांशुकाधानार
त्नभूषणभूषिता ॥ ६८ ॥ यस्याश्वांशांशकलयावभूवुः सर्वयोषितः ॥ सर्वैर्विश्वस्थिता लोकामोहिताः स्युश्च
मायया ॥ ६९ ॥ सर्वैश्वर्यप्रदा त्रीच तामिनां गृहवासिनां ॥ कृष्णभक्तिप्रदाया च वैष्णवानां च वैष्णवी ॥ ७० ॥
मुमुक्षूणां मोक्षदा त्रीसुखिनां सुखदायिनी ॥ स्वर्गेषु स्वर्गलक्ष्मीश्च गृहलक्ष्मीर्गृहेषु च ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥

धिष्ठातृत्वेनाभिधानात् परमात्मन इत्युपलक्षणं व्यष्टिर्जीवानामपि तथा च समष्टिव्यष्ट्यंतःकरणाधिष्ठात्री दुर्गेत्यर्थः ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥
॥ ६८ ॥ लोकाः कृष्णादयः मायया यस्यामाययेत्यर्थः तेन माया विशिष्टब्रह्मरूपिणी यमिति स्पष्टमेवोक्तं भवति ॥ ६९ ॥ कृष्ण
भक्तिप्रदा त्री कृष्णशब्दो यौगिकार्थेन परमात्मवाचकस्तथा च स्वस्वरूपभूत परमात्मनो भक्तेर्दात्रीत्यर्थः वैष्णवानामुपास्या वैष्णवलक्ष्मीस्त
द्वैत्येति ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥

दे.भा.न

॥१५॥

॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ सर्वेशंमूलप्रकृतेः पूर्णावतारस्वस्मात्प्रथमतः प्रादुर्भूतं वयसाधिकं श्रीकृष्णं संस्तूयेत्यर्थः ॥ ७७ ॥
निःससारेति सस्त्रीकः सावित्रीस्त्रियासद्वितउत्पन्नइत्यर्थः ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ तंस्त्रापेक्षयावयसाज्ञानेनचाधिकं श्रीकृष्णं तुष्टवे

तपस्विषुतप्रस्याचश्रीरूपातुनृपेषुच ॥ यावन्हौदाहिकारूपाप्रभारूपाचभास्करे ॥ ७२ ॥ शोभारूपाचचं
द्रेचसापद्मेषुचशोभना ॥ सर्वशक्तिस्वरूपायाश्रीकृष्णेपरमात्मनि ॥ ७३ ॥ ययाचशक्तिमानात्माययाचश
क्तिमज्जगत् ॥ ययाविनाजगत्सर्वजीवन्मृतमिवस्थितं ॥ ७४ ॥ याचसंसारवृक्षस्यबीजरूपासनातनी ॥ स्थि
तिरूपाबुद्धिरूपाफलरूपाचनारद ॥ ७५ ॥ क्षुत्पिपासादयारूपानिद्रातंद्राक्षमाधृतिः ॥ शान्तिलज्जातुष्टिपुष्टि
भ्रांतिकांत्यादिरूपिणी ॥ ७६ ॥ साचसंस्तूयसर्वेशंतत्पुरःसमुवासह ॥ रत्नसिंहासनंतस्यैप्रददौराधिकेश्व
रः ॥ ७७ ॥ एतस्मिन्नंतरेतत्रसस्त्रीकश्चतुर्मुखः ॥ पद्मनाभेर्नाभिपद्मान्निस्ससारमहामुने ॥ ७८ ॥ कमंड
लुधरः श्रीमांस्तपस्वीज्ञानिनांवरः ॥ चतुर्मुखैस्तंतुष्टावप्रज्वलन्ब्रह्मतेजसा ॥ ७९ ॥ सातदासुंदरीसृष्टाश
तचंद्रसमप्रभा ॥ वह्निशौचांशुकाधानारत्नभूषणभूषणा ॥ ८० ॥ रत्नसिंहासनेरम्येसंस्तूयसर्वकारणं ॥
उवासस्वामिनासार्द्धकृष्णस्यपुरतोमुदा ॥ ८१ ॥ एतस्मिन्नंतरेकृष्णोद्विधारूपोबभूवसः ॥ वामार्द्धांगोमहा
देवोदक्षिणेगोपिकापतिः ॥ ८२ ॥ शुद्धस्फटिकसंकाशः शतकोटिरविप्रभः ॥ त्रिशूलपट्टिशधरोव्याघ्रचर्मोव
रोहरः ॥ ८३ ॥ तप्तकांचनवर्णाभोजटाभारधरः परः ॥ भस्मभूषितगात्रश्चसस्मितश्चंद्रशेखरः ॥ ८४ ॥
दिगंबरोनीलकंठः सर्पभूषणभूषितः ॥ बिभ्रदक्षिणहस्तेनरत्नमालांसुसंस्कृतां ॥ ८५ ॥ ॥ ६४ ॥

त्यर्थः ॥ ८१ ॥ एकएवकृष्णोद्विधाभूतइत्यर्थः ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ रत्नमालारत्ननिर्मितानप्योगिनीमक्षमालांसुसंस्कृतांमा
लासंस्कारोदितविधिनासुसंस्कृतांदाक्षिणहस्तेनविभत् ॥ ८५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

टी.अ.

२

॥१५॥

ब्रह्मज्योतिर्मायाशबलसर्वकारणमूलप्रकृत्यात्मकब्रह्मज्योतिर्मन्त्रप्रणवमायाबीजादिरुपंजपन्नित्यर्थः सत्यस्वरूपं श्रीकृष्णं संस्तूयेत्यन्वयः ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ यतः श्रीकृष्णो मृत्योरपि मृत्युर्मारकस्ततस्तदभिन्नस्य शिवस्यापि मृत्युं जयेति संज्ञा इत्यर्थः अत्र दुर्गास्त्रीत्वेन महादेवाय दत्ता श्रीकृष्णेनेत्येतदनुक्तमपि नारदपुराणादवगंतव्यं ॥ ८८ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधे द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ द्विषष्टिश्लोकवर्गैश्च सृष्टं देवतादिकं ॥ व्यवस्थितिस्तस्य सम्यग्यथावदभिधीयते ॥ १ ॥ अथ डिंभ इति डिंभोऽपि बालिशे बाले इति मेदिनी कोशात् डिंभो बालो यो राधया पूर्वं स्वस्मान्नातो जले प्रक्षिप्तः स यावद्ब्रह्मणो वयस्तावत्परिमितकालपर्यंतं जले तिष्ठन्ततः स बालकः काले परिपूर्णसमये जाते सति द्विधा भूतो बभूव तदंडं

प्रजपन् पंचवक्त्रेण ब्रह्मज्योतिः सनातनं ॥ सत्यस्वरूपं श्रीकृष्णं परमात्मानमर्माश्वरं ॥ ८६ ॥ कारणं कारणा नांच सर्वमंगलमंगलं ॥ जन्ममृत्युजराव्याधिशोकभीतिहरं परं ॥ ८७ ॥ संस्तूय मृत्योर्मृत्युं तं यतो मृत्युं जया भिधः ॥ रत्नसिंहासने रम्ये समुवास हरः पुरः ॥ ८८ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे नवमस्कंधे द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ श्रीनारायण उवाच ॥ अथ डिंभो जले तिष्ठन् यावद्ब्रह्मणो वयः ॥ ततः सकाले सहसा द्विधा भूतो बभूव ह ॥ १ ॥ तन्मध्ये शिशुरेकश्च शतकोटिरविप्रभः ॥ क्षणं रोरूयमाणश्च स्तनांधः पीडितः क्षुधा ॥ २ ॥ पित्रा मात्रापरित्यक्तो जलमध्ये निराश्रयः ॥ ब्रह्मांडासंख्यनाथो यो ददर्शोर्ध्वमनाथवत् ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥

निर्भेद्यबहिर्निर्गत इत्यर्थः अनेन च ग्रंथेन पूर्वाधाया उदरात्पक्ष्यं दृढवदंडरूपेण निर्गतः स च बृहदंडरूपो भयात्तया जले क्षिप्तस्तदंडं बहुना कालेन पुनर्भिन्नं सत् द्विधा जातं तन्मध्ये पुरुषो बालकरूपोऽयं स्थित इति प्रतिभाति पुराणांतरे च तदंडमुदके शयमित्यादिना तथैव प्रतिपादनाच्च ॥ १ ॥ तदेवाह तन्मध्ये शिशुरेकश्चेति स्तनांध इति स्तनवेवांधो भक्ष्यमाणमन्नं यस्य स स्तनांधो मात्रात्यक्तत्वात् स्तनपानराहितः क्षुधाक्षुधया पीडितो रोरूयमाणः पुनः पुनरोदनकर्ता भवदित्यर्थः ॥ २ ॥ अनाथवादिति सर्वेश्वरादुत्पन्नः स्वयमसंख्यब्रह्मांडनाथः सन्नपि एतादृशी दुर्दशां प्राप्तवांस्तदन्यस्य का कथास्मिन् संसारे तस्मात्त्रिगयं संसार इति संसाराद्विरन्येतेत्युक्तं भवति ऊर्ध्वददर्शको ममपालयिता स्यादित्यभिप्रायेण ॥ ३ ॥

॥१६॥

परमाणुरिति यथापरमाणुः सूक्ष्मादपि परः सूक्ष्मस्तद्वदयं स्थूलात्स्थूलद्वयार्थः ॥ ४ ॥ अयं विराट्कृष्णस्य षोडशांशो भवतीत्याह तेन स
ति शक्त्येत्यर्थः प्राकृतः राधा प्रकृतेस्तु न्नः ॥ ५ ॥ विराजं वर्णयति प्रत्येकमिति सर्वस्थूलसमाष्टिप्रपञ्चस्याधिपतित्वादेतद्वर्णनं युक्त
मेव ॥ ६ ॥ संख्या चेदिति चोदिति निपातो यथा शब्दार्थकः यथा विश्वानां विश्वसंबन्धिरजसां यथा संख्यानकदाचनास्ति तथा स्य शरीरे विद्य

स्थूलात्स्थूलतमःसोपिनाम्नादेवोमहाविराट् ॥ परमाणुर्यथासूक्ष्मात्परस्थूलात्तथाप्यसौ ॥ ४ ॥ तेजसा
षोडशांशोऽयंकृष्णस्यपरमात्मनः ॥ आधारःसर्वविश्वानांमहाविष्णुश्चप्राकृतः ॥ ५ ॥ प्रत्येकंलोमकूपेषुवि
श्वानिनिखिलानिच ॥ अस्यापितेषांसंख्यांचकृष्णोवक्तुंनहिक्षमः ॥ ६ ॥ संख्याचेद्भजसामस्तिविश्वानां
कदाचन ॥ ब्रह्मविष्णुशिवादीनांतथासंख्यानविद्यते ॥ ७ ॥ प्रतिविश्वेषुसंत्येवंब्रह्मविष्णुशिवादयः ॥ पाता
लाद्ब्रह्मलोकांतंब्रह्मांडंपरिकीर्तितं ॥ ८ ॥ अत ऊर्ध्वंचवैकुण्ठोब्रह्मांडाद्बहिरेवसः ॥ तत ऊर्ध्वंचगोलोकःपंचा
शत्कोटियोजनः ॥ ९ ॥ नित्यःसत्यस्वरूपश्चयथाकृष्णस्तथाप्ययं ॥ सप्तद्वीपमितापृथ्वीसप्तसागरसंयुता
॥ १० ॥ ऊनपंचाशदुपद्वीपासंख्यशैलवनान्विता ॥ ऊर्ध्वंसप्तस्वर्गलोकाब्रह्मलोकसमन्विताः ॥ ११ ॥
पातालानिचसप्ताधश्चैवंब्रह्मांडमेवच ॥ ऊर्ध्वंधरायाभूर्लोकोभूवर्लोकस्ततःपरं ॥ १२ ॥ ततःपरश्चस्वर्लो
कोजनलोकस्तथापरः ॥ ततःपरस्तपोलोकःसत्यलोकस्ततःपरः ॥ १३ ॥ ततःपरंब्रह्मलोकस्तत्तत्कांचनस
न्निभः ॥ एवंसर्वंकृत्रिमंचबाह्याभ्यंतरमेवच ॥ १४ ॥

मानानां ब्रह्मविष्णुशिवादीनां संख्यानविद्यतइत्यर्थः ॥ ७ ॥ प्रतिविशेषु प्रतिब्रह्मांडेषु यतः संतिततस्तेषां संख्यानं न विद्यते इत्यभिप्रायः प्रसं
भेन ब्रह्मांडस्वरूपमाह पातालादिति ॥ ८ ॥ ९ ॥ तथाप्ययंतयैवायं प्राकृतप्रलयपर्यंतमेतस्यावस्थान्नानित्यत्वं न तु परमार्थतो नित्यत्वं एकं
मेवाद्वितीयं ब्रह्मेति श्रुतिविरोधात् ॥ १० ॥ ब्रह्मांडस्वरूपं विशदयति सप्तद्विपिति ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥

टी.अ.
३

119511

तद्विनाशेब्रह्मांडविनाशेजलबुद्बुदवन्मायिकत्वात् ॥ १५ ॥ नित्याविति प्रलप्यतमवस्थितत्वात् ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ चराचराः एतत्सर्वब्रह्मांडांतर्गतमेवास्तीत्यर्थः ॥ १९ ॥ ऊर्ध्वदृष्ट्वाडिभस्यांतरे अंडस्यांतरे मध्ये शून्यमेव दर्शयिष्येति चेन्न दर्शयिष्येति चेन्न ॥ २० ॥

तद्विनाशे विनाशश्च सर्वेषामेव नारद ॥ जलबुद्बुदवत्सर्वविश्वसंघमनित्यकं ॥ १५ ॥ नित्यौगोलोकवैकुण्ठौ प्रोक्तौ शब्दकृत्रिमौ ॥ प्रत्येकं लोमकूपेषु ब्रह्मांडं परिनिश्चितं ॥ १६ ॥ एषां संख्यां न जानाति कृष्णो न्यस्यापिका कथा ॥ प्रत्येकं प्रति ब्रह्मांडं ब्रह्मविष्णुशिवादयः ॥ १७ ॥ तिस्रः कोटयः सुराणां च संख्या सर्वत्र पुत्रक ॥ दिगीशाश्चैव दिक्पालानक्षत्राणि ग्रहादयः ॥ १८ ॥ भुविवर्णाश्च चत्वारोऽप्यधो नागाश्चराचराः ॥ अथ काले न स विराडूर्ध्वदृष्ट्वा पुनः पुनः ॥ १९ ॥ डिभांतरे च शून्यं च न द्वितीयं च किंचन ॥ चिंतामवापक्षुद्युक्तो रुरोद च पुनः पुनः ॥ २० ॥ ज्ञानं प्राप्य तदा दध्यौ कृष्णं परमपूरुषं ॥ ततो ददर्श तत्रैव ब्रह्म ज्योतिः सनातनं ॥ २१ ॥ नवीनजलदश्यामं द्विभुजं पीतवाससं ॥ सस्मितं मुरलीहस्तं भक्तानुग्रहकातरं ॥ २२ ॥ जहास बालकस्तुष्टे दृष्ट्वा जनकमीश्वरं ॥ वरं तदा ददौ तस्मै वरेशः समयोचितं ॥ २३ ॥ मत्समो ज्ञानयुक्तश्च क्षुत्पिपासादिवर्जितः ॥ ब्रह्मांडा संख्यनिलयो भववत्सलयावाधे ॥ २४ ॥ निष्कामो निर्भयश्चैव सर्वेषां वरदो भव ॥ जरामृत्युरोगशोकपीडादिवर्जितो भव ॥ २५ ॥ इत्युक्ता तस्य कर्णे समहामंत्रं षडक्षरं ॥ त्रिःकृत्वश्च प्रजजाप वेदांगप्रवरं परं ॥ २६ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥

ज्ञानं प्राप्येति पूर्वकल्पस्थ एव कश्चिज्जीवो ज्ञानकर्मवशात् प्रजापतिभावमापद्यत इति सो विभेत्स नैवरे मे इत्यादिना बृहदारण्यके प्रतिपादितं तथा च स जीवो बालकः पूर्वकृतश्रवणपरिपाकेन तत्संस्कारवशादस्ति कश्चिदीश्वर इति स्मृत्वा तं दध्यौ ध्यातवानित्यर्थः ॥ २१ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७१ ॥

दे.भा.न

॥१७॥

प्रणवादीति वन्हिजायास्वाहाॐ कृष्णायस्वाहेत्येवंमंत्रः ॥ २७ ॥ २८ ॥ प्रतिविश्वमिति प्रतिविश्वं प्रतिब्रह्मांडं यैवैष्णवो जनो नैवेद्यं ददाति तस्य षोडशांशो विषयिणो विषयो वैकुण्ठरूपो देशस्तद्वत्स्तत्पतेर्विष्णोः कल्पित इति शेषः पंचदशभागा अस्य विराट्पुरुषस्य कल्पिता इति

टी.अ.
३

प्रणवादिचतुर्थ्यंतं कृष्ण इत्यक्षरद्वयं ॥ वन्हिजायां तमिष्टं च सर्वविघ्नहरं परं ॥ २७ ॥ मंत्रं दत्वा तदाहारं कल्पयामास वै विभुः ॥ श्रूयतां तद्ब्रह्म पुत्रनिबोध कथयामि ते ॥ २८ ॥ प्रतिविश्वं यन्नैवेद्यं ददाति वैष्णवो जनः ॥ तत्षोडशांशो विषयिणो विष्णोः पंचदशास्य वै ॥ २९ ॥ निर्गुणस्यात्मनश्चैव परिपूर्णतमस्य च ॥ नैवेद्ये चैव कृष्णस्य न हि किंचित्प्रयोजनं ॥ ३० ॥ यद्यह ददाति नैवेद्यं तस्मै देवाय योजनः ॥ स च खादति तत्सर्वं लक्ष्मीनाथो विराट् तथा ॥ ३१ ॥ तं च मंत्रवरं दत्वा तमुवाच पुनर्विभुः ॥ वरमन्यं किमिष्टं ते तन्मे ब्रूहि ददामि च ॥ ३२ ॥ कृष्णस्य वचनं श्रुत्वा तमुवाच विराड्विभुः ॥ कृष्णं तं बालकस्तावद्वचनं समयोचितं ॥ ३३ ॥ बालक उवाच ॥ वरो मे त्वत्पदांभोजे भक्तिर्भवतु निश्चला ॥ सततं यावदायुर्मैक्षणं वा सुचिरं च वा ॥ ३४ ॥ त्वद्भक्तियुक्तो लोके स्मिन् जीवन्मुक्तश्च संततं ॥ तव भक्तिहीनो मूर्खश्च जीवन्नपि मृतो हि सः ॥ ३५ ॥ किं तज्जपेन तपसा यज्ञेन पूजनेन च ॥ व्रतेन चोपवासेन पुण्येन तीर्थसेवया ॥ ३६ ॥ कृष्णभक्तिविहीनस्य मूर्खस्य जीवनं वृथा ॥ येनात्मना जीवितश्च तमेव न हि मन्यते ॥ ३७ ॥ यावदात्मा शरीरे स्तितावत्स शक्तिसंयुतः ॥ पश्चाद्यांति गते तस्मिन् स्वतंत्राः सर्वशक्तयः ॥ ३८ ॥ स च त्वंच महाभाग सर्वात्मा प्रकृतेः परः ॥ स्वेच्छामयश्च सर्वाद्यो ब्रह्मज्योतिः सनातनः ॥ ३९ ॥

शेषः ॥ २९ ॥ स्वस्य नित्यतृप्तत्वात् स्वार्थे नैवेद्यः कल्पित इत्याह निर्गुणस्येति ॥ ३० ॥ स चेति सच लक्ष्मीनाथो वैकुण्ठपतिर्विष्णुर्विराट्चेत्यर्थः ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ येनात्मना यं जीवो जीवितस्तमेवात्मानं न हि मन्यते तत्तस्य जीवितं कृतं तस्यैव स्वार्थमित्यर्थः ॥ ३७ ॥ आत्मनां जीवितत्वेनैवोपादयति यावदात्मेति ॥ ३८ ॥ स च त्वंचेति हे कृष्ण स चात्मा त्वमेवासीत्यर्थः ॥ ३९ ॥

॥१७॥

॥ ४० ॥ ब्रह्मणोसंख्यपातेचेति अनेकब्रह्मदेवपातेनाशोपितवनाशोभविष्यतीत्यर्थः अनेकब्रह्मांडाभिप्रायेणेयमुक्तिः ॥ ४१ ॥ अं
शेनेति त्वंस्वांशेनप्रतिब्रह्मांडंधुद्रविराट्अल्पोविराट्भवप्रतिब्रह्मांडंभिन्नोभिन्नोविराट्स्वरूपोभवेत्यर्थः तेनचार्यविराट्नेककोटिब्रह्मांडांतर्ग
तविराट्स्वरूपाणांसमष्टिरधिपतिरस्तीतिबोधितं ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ तेषुएकादशरूढेषुएकःकालाग्निरुद्रइत्यर्थः विषयीविषयभोगवान्क्षु
द्रांशेनअल्पांशेन ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ यामीति हेवत्सत्वमत्रतिष्ठाहंलोकंस्वलोकंगोलोकंयामिगच्छामीत्युक्त्वासकृष्णोत्तरधीयतांतर्धानंम

इत्युक्त्वाबालकस्तत्रविररामचनारद ॥ उवाचकृष्णःप्रत्युक्तिंमथुरांश्रुतिसुंदरीं ॥ ४० ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥
मुचिरंसुस्थिरंतिष्ठयथाहंत्वंतथाभव ॥ ब्रह्मणोसंख्यपातेचपातस्तेनभविष्यति ॥ ४१ ॥ अंशेनप्रतिब्रह्मांडे
त्वंक्षुद्रविराट्भव ॥ त्वन्नाभिपद्माद्ब्रह्माचविश्वस्रष्टाभविष्यति ॥ ४२ ॥ ललाटेब्रह्मणश्चैवरुद्राश्चैकादशैवते ॥
शिवांशेनभविष्यंतिसृष्टिसंहरणायवै ॥ ४३ ॥ कालाग्निरुद्रस्तेष्वेकोविश्वसंहारकारकः ॥ पाताविष्णुश्चविष
यीक्षुद्रांशेनभविष्यति ॥ ४४ ॥ मद्भक्तियुक्तःसततंभविष्यसिवरेणमे ॥ ध्यानेनकमनीयंमांनित्यंद्रक्ष्यसिनि
श्चितं ॥ ४५ ॥ मातरंकमनीयांचममवक्षस्थलस्थितां ॥ यामिलोकंतिष्ठवत्सेत्युक्त्वासोत्तरधीयत ॥ ४६ ॥
गत्वास्वलोकंब्रह्माणंशंकरंसमुवाचह ॥ स्रष्टारंस्रष्टुमीशंचसंहर्तुंचैवतत्क्षणं ॥ ४७ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ सृ
ष्टिंस्त्रष्टुंगच्छवत्सनाभिपद्मोद्भवोभव ॥ महाविराट्लोमकूपेक्षुद्रस्यचविधेशृणु ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥

तवानित्यर्थः ॥ ४६ ॥ स्वलोकंगत्वास्त्रष्टारंब्रह्माणंस्त्रष्टुंशंकरमीशंसंहर्तुंचोवाचेत्यर्थः इमौब्रह्मशंकरौयौपूर्वकृष्णशरीराभिर्गतौताविति
बोध्यं ॥ ४७ ॥ किमुवाचतदाह सृष्टिंस्त्रष्टुमिति प्रतिब्रह्मांडंयेविराट्पुरुषाअसंख्याःसंतितेषांनाभिपद्मोद्भवोभवनाभिपद्मादुत्पन्नोभव कि
मर्थसृष्टिंस्त्रष्टुमुत्पादयितुं तेविराट्पुरुषाःकसंतितत्राह महाविराडिति सर्वविराट्स्वरूपाणांसमष्टिभूतोयोमहाविराट्स्वरूपोमकूपेषुयान्यने
कानिब्रह्मांडानितत्रयोयःक्षुद्रविराट्स्वरूपाभिपद्मोशेनहेविधेत्वंभवददंमद्वचनंत्वंशृण्वित्यर्थः ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥

दे.भा.न

॥१८॥

शिवंप्रत्याह गच्छेति हे शिवत्स अनेक ब्रह्मांडांतर्गतानेक ब्रह्मदेव ललाटात्त्वमंशेन जगत्संहर्तुमुत्पन्नो भव स्वयंचत्वं सुचिरं बहुकालं तपत
श्रियाचकुर्वित्यर्थः ॥ ४९ ॥ विधेः सुत हे नारद ॥ ५० ॥ इदं ब्रह्मरुद्रौ प्रतियथोक्तं वांस्तथा चतुर्भुजमपि विष्णुं पालनार्थमुक्तवानेवेदं चानुक्त
मप्यर्थाद्बोध्यं पूर्वविराजं प्रति तथैव प्रतिज्ञानात् तदुक्तमधुनैव पाताविष्णुश्चाविषयीक्षुद्रांशेन भविष्यतीति ब्रह्मरुद्रौ यावत्कालपर्यंतं तत्र न गतौ

गच्छवत्स महादेव ब्रह्मभालोद्भवो भव ॥ अंशेन च महाभाग स्वयंच सुचिरं तप ॥ ४९ ॥ इत्युक्त्वा जगतां नाथो
विरराम विधेः सुत ॥ जगाम ब्रह्मातं न त्वा शिवश्च शिवदायकः ॥ ५० ॥ महाविराट् लोमकूपे ब्रह्मांडगोलके जले
॥ बभूव च विराट् क्षुद्रो विराट् अंशेन सांप्रतं ॥ ५१ ॥ श्यामो युवापीतवासाः शयानो जलतल्पके ॥ ईषत्थास्य प्रस
न्नास्यो विश्वव्यापी जनार्दनाः ॥ ५२ ॥ तन्नाभिकमले ब्रह्मा बभूव कमलोद्भवः ॥ संभूय पद्मदंडे च बभ्राम युगल
क्षकं ॥ ५३ ॥ नातं जगाम दंडस्य पद्मनालस्य पद्मजः ॥ नाभिजस्य च पद्मस्य चिंतामपि पिता तव ॥ ५४ ॥
स्वस्थानं पुनरागम्य दध्यौ कृष्णपदांबुजं ॥ ततो ददर्श क्षुद्रं तं ध्यानेन दिव्यचक्षुषा ॥ ५५ ॥ शयानं जलतल्पे च
ब्रह्मांडगोलकाद्भुते ॥ यल्लोमकूपे ब्रह्मांडं तं च तत्परमीश्वरं ॥ ५६ ॥ श्रीकृष्णं चापि गोलोकं गोपगोपीसमन्वितां तं
संस्तूय वरं प्राप ततः सृष्टिचकार सः ॥ ५७ ॥ बभूवुर्ब्रह्मणः पुत्रा मानसाः सनकादयः ॥ ततो रुद्रकलाश्चापि शिवस्यै
कादश स्मृताः ॥ ५८ ॥ बभूव पाताविष्णुश्च क्षुद्रस्य वामपार्श्वतः ॥ चतुर्भुजश्च भगवान् श्वेतद्वीपे सचावसत् ॥ ५९ ॥

ततः पूर्वमेव महाविराट् क्षुद्रविराट् रूपेण प्रतिब्रह्मांडं भिन्नो भिन्नो बभूवेत्याह महाविराडिति विराट् अंशेन स्वांशेनेत्यर्थः ॥ ५१ ॥ तस्य रूप
माह श्याम इति ॥ ५२ ॥ बभ्राम मूलशोधनार्थं ॥ ५३ ॥ पिता तवेति नारदं प्रत्युक्तिः ॥ ५४ ॥ क्षुद्रं विराजं ॥ ५५ ॥ तं च तत्पर
मीश्वरं क्षुद्रं विराजं महाविराजं च ददर्शेत्यर्थः ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ क्षुद्रस्य वामपार्श्वतः क्षुद्रविराजो वामभागादित्यर्थः स वामभागा
निर्मते विष्णुः श्वेतद्वीपे सन्निवासं कृतवानित्यर्थः ॥ ५९ ॥

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

टी. अ.

३

॥१८॥

॥ ६० ॥ क्षुद्रविराड्त्वविराट् ॥ ६१ ॥ अत्रेदंबोधं प्रथमस्कंधेन तस्यास्तुसात्विकीशक्तीराजसीतामसीतया महाकालीम
हालक्ष्मीमहासरस्वतीतिताम्रियः तासां तिसृणां शक्तीनां दिहांगीकारलक्षणः सृष्ट्यर्थसमाख्यातः सर्गः शास्त्रविशारदैः हरिद्रुहिण
रुद्राणामुत्पत्तिस्तुततः स्मृता पालनोत्पत्तिनाशार्थप्रतिसर्गः स्मृतो हि स इत्यनेन प्रतिज्ञातोयः सर्गः प्रतिसर्गश्च प्रथमस्कंधे पंचमस्कंधे च मधुकै
टभवधमहिषासुरशुंभनिशुंभवधप्रसंगेन महाकाल्याद्युत्पत्तिकथनेन तथा तृतीयस्कंधे गुणत्रयेण समस्तजगतोपंचीकृतभूतमहाभूतसृष्टिकथनोत्तरं
ब्रह्मविष्ण्वाद्युत्पत्तिकथनेन तेषां सृष्टिस्थितिसंहतिव्यापारे आज्ञाकरणेन च प्रतिपादितः पुनश्च स एव सर्गः प्रतिसर्गश्च कल्यांतरभेदेन भिन्नः प्रका
रांतरेण नवमस्कंधे लक्ष्यते तन्निष्कर्षस्त्वित्यं प्रथमं मूलप्रकृतिर्माया विशिष्टब्रह्मरूपिणी स्वतंत्रास्वेच्छया प्राणिकर्मवशेनापंचीकृतपंचभूतोत्पत्त्य

क्षुद्रस्य नाभिपद्मे च ब्रह्मा विश्वं ससर्ज ह ॥ स्वर्गं मृत्युं च पातालं त्रिलोकीं सचराचरां ॥ ६० ॥ एवं सर्वलोमकूपे
विश्वं प्रत्येकमेव च ॥ प्रतिविश्वे क्षुद्रविराट् ब्रह्मविष्णुशिवादयः ॥ ६१ ॥ इत्येवं कथितं ब्रह्मन्कृष्णसंकीर्तनं शुभं ॥
सुखदं मोक्षदं ब्रह्मन् किं भूयः श्रोतुमिच्छसि ॥ ६२ ॥ इति श्रीदेवीभागवते माहापुराणे नवमस्कंधे तृती
योध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥

नंतरं पंचीकृतपंचमहाभूतोत्पत्तिं तृतीयस्कंधोक्तप्रकारेणेंद्रियप्राणांतःकरणानामुत्पत्तिं पंचमहाभूतां शान्गृहीत्वानंतकोटिब्रह्मांडोत्पत्तिं च प्रथ
मंचकार ततस्तेषां ब्रह्मांडानामधिपत्याकांक्षायां पंचमहाभूतां शान्गृहीत्वा स्वयमेव प्रकृतिः सर्वाधिपत्यार्धनारीश्वरश्रीकृष्णरूपेण प्रादुर्बभूव
यांगोपालसुंदरीवदंति एवं सर्वाधिपतिः श्रीकृष्णोर्धनारीश्वर उत्पादितस्तदनंतरं चतयार्धनार्यासकृष्णो मिथुनीभूयस्वषोडशांशेनानंतकोटिब्र
ह्मांडानियस्यरोमकूपेषु स्थास्यंति तादृशं सर्वब्रह्मांडानामधिपतिं महाविराजं श्रीमूलप्रकृतिप्रेरणयैव जनयामास ततः श्रीकृष्णार्धभागिनीपराश
क्तिः समष्टिव्यष्टिज्ञानाधिष्ठात्री सरस्वतीस्वजिह्वाग्राब्जनयामास ततः कालांतरे कृष्णार्धभागिनीशक्तिर्द्विधा बभूव वामभागेन लक्ष्मीरूपेण
दक्षिणभागेन राधारूपेण तत्र लक्ष्मीः समष्टिव्यष्टिसंपत्त्याधिष्ठातृत्वेन कल्पिता राधानुसमष्टिव्यष्टिप्राणाधिष्ठातृत्वेन कल्पिता मूलप्रकृतिप्रेरण

दे.भा.न

॥१९॥

येन ततोर्ध्वभागरूपः श्रीकृष्णोऽपि मूलप्रकृतीच्छ्रयैवामभागेन विष्णुरूपेण दक्षिणभागेन श्रीकृष्णरूपेण द्विधा जाताः तदनंतरं वार्धिलक्ष्मीश्च चतुर्भुजाय विष्णवे स्त्रीत्वेन ददौ राधां तु स्त्रीत्वेन स्वयमेव कृष्णो जग्राह ततो मूलप्रकृतेः सकाशात् सहस्रभुजादुर्गादेव तां समाष्टिव्यष्टयंतः करणाधिष्ठात्रीं समुत्पन्ना ततः पद्मनाभे चतुर्भुजस्य विष्णोर्नाभिकमलात् सावित्री स्त्रीसहितो ब्रह्मा देवः समुत्पन्नो मूलप्रकृतिरूप एव तत्र सावित्री सर्वजीवाध्याधिष्ठात्री देवता ततः श्रीकृष्णो द्विभुजोऽपि पुनर्वांमभागेन महादेवरूपेण दक्षिणभागेन श्रीकृष्णरूपेण द्विधा जाताः ततः सादुर्गादेवता महादेवाय स्त्रीत्वेन दत्तेत्येतदनुक्तमपि नारदपुराणादवगंतव्यं एते सर्वे कृष्णादयः पुरुषाः दुर्गादयः पंचप्रकृतयश्च मूलप्रकृतेः पूर्णवितारा एव ततः श्रीकृष्णाज्ञायामहाविराट् प्रतिब्रह्मांडं भिन्नभिन्नविराटरूपेण बभूव ततः श्रीकृष्णाज्ञायामूलभूतश्चतुर्मुखो ब्रह्मा स स्त्रीको भिन्नभिन्नरूपैस्तत्तद्ब्रह्मांडांतर्गतविराट्पुरुषनाभिकमलात् प्रादुर्बभूव महादेवोऽपि श्रीकृष्णाज्ञया तत्तद्ब्रह्मांडांतर्गतचतुर्मुखललाटाद्विन्नभिन्नरूपैः प्रादुर्बभूव ततः श्रीकृष्णा

नारद उवाच ॥ श्रुतं सर्वं मया पूर्वं त्वत्प्रसादात् सुधोपमं ॥ अधुना प्रकृतीनां च व्यस्तं वर्णय पूजनं ॥ १ ॥

ज्ञया चतुर्भुजो विष्णुरपि तत्तद्ब्रह्मांडांतर्गतविराट्पुरुषवामभागाद्विन्नरूपैः प्रादुर्बभूव तदेवं प्रकारेण प्रतिब्रह्मांडं ब्रह्मा विष्णु महेश्वराः स स्त्रीकाः सृष्टिस्थित्यंतकारिणो भिन्नाः विराट्पुरुषोऽपि भिन्नो मूलभूता विराट् ब्रह्मा विष्णु महेश्वरास्तु सकलब्रह्मांडांतर्गतविराट् चतुर्मुखविष्णुरुद्राणामधिपतयस्तेषां सर्वेषामधिपतिर्वक्ष्यमाणरीत्या गोपालसुंदरीरूपः श्रीकृष्णस्तस्याप्याधिपतिः सकलमूलभूता मूलप्रकृतिर्माया शबलब्रह्मरूपेण तदाभिमानिनो देवता तु श्रीभुवनेश्वरी तितुर्तीयस्कंधे भिहितं ताः पंचप्रकृतयस्ते कृष्णब्रह्मादिपुरुषाश्चैरस्परमभिन्ना एव न तन्न्यूनाधिकभावः केनचित्कर्तव्यः न्यूनाधिकभावेन नरकपातश्रवणात् तदेवं प्रकारेण सर्वस्त्रीपुरुषात्मकं चेतन्य चैतनात्मकं च जगन्मूलप्रकृतिमयं मूलप्रकृत्यर्धनं च तिसैव मूलप्रकृतिः सर्वदा सर्वैः सर्वरूपोपास्येति तत्त्वमिति ॥ ६२ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके नवमस्कंधे तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ एकाधिकैश्च नवविश्वैरयसमासतः ॥ सरस्वतीस्तोत्रपूजाकवचादिकमुच्यते ॥ १ ॥ अधुना नारदः पूर्वोक्तानां देवतानां पूजादिकं पृच्छति नारद उवाच श्रुतं सर्वमिति व्यस्तं भिन्नं भिन्नं ॥ १ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

टी.अ.

४

॥१९॥

कस्याः पूजाकेनपुष्पेनकृतमर्त्यलोके कथंकेनप्रकारेणतस्यादेवतायाः पूजाप्रचारिता केनचमंत्रेणकादेवतापूजिताकेनवास्तोत्रेणकादेवता
स्तुतातत्सर्वदेवत्यर्थः ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ आसांपूजेति आसांपंचदेवतानांपूजास्तोत्रमंत्रचरित्रादिकंसर्वप्रसिद्धमेवसर्वत्रवेदपुरा
णतंत्रादिषुनियतेऽतस्तन्मयानोच्यते किंतु याः प्रकृत्यंशभूताः कलास्तासांपूजादिकंसर्ववक्ष्यामीत्याह प्रकृत्यंशादिति ॥ ६ ॥ कास्ताः

कस्याः पूजाकृताकेनकथंमर्त्येप्रचारिता ॥ केनवापूजिताकावाकेनकावास्तुताप्रभो ॥ २ ॥ तासांस्तोत्रंचध्या
नंचप्रभावंचरितंशुभं ॥ काभिः केभ्योवरोदत्तस्तन्मेव्याख्यातुमर्हसि ॥ ३ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ गणेश
जननीदुर्गाराधालक्ष्मीः सरस्वती ॥ सावित्रीचसृष्टिविधौप्रकृतिः पंचधास्मृता ॥ ४ ॥ आसांपूजाप्रसिद्धाच
प्रभावः परमाद्भुतः ॥ सुधोषमंचचरितंसर्वमंगलकारणं ॥ ५ ॥ प्रकृत्यंशाः कलायाश्चतासांचचरितंशुभं ॥ स
र्ववक्ष्यामि ते ब्रह्मन्सावधानोनिशामय ॥ ६ ॥ कालीवसुंधरागंगाषष्ठीमंगलचंडिका ॥ तुलसीमनसानिद्रास्व
धास्वाहावदक्षिणा ॥ ७ ॥ संक्षिप्तमासांचरितंपुण्यदंश्रुतिसुंदरं ॥ जीवकर्मविपाकंचतच्चवक्ष्यामिसुंदरं ॥
॥ ८ ॥ दुर्गायाश्चैवराधायाविस्तीर्णंचरितंमहत् ॥ तद्वत्पश्चात्प्रवक्ष्यामिसंक्षेपक्रमतः शृणु ॥ ९ ॥ आदौसरस्व
तीपूजाश्रीकृष्णेनविनिर्मिता ॥ यत्प्रसादान्मुनिश्रेष्ठमूर्खोभवतिपंडितः ॥ १० ॥ आविर्भूतायथादेवीवक्रतः कृ
ष्णयोषितः ॥ इयेषकृष्णंकामेनकामुकीकामरूपिणी ॥ ११ ॥ सचविज्ञायतद्भावंसर्वज्ञः सर्वमातरं ॥ तामु
वाचहितंसत्यंपरिणामेसुखावहं ॥ १२ ॥

॥ ६ ॥

॥ ६ ॥

॥ ६ ॥

कलास्तदाह कालीवसुंधरेति ॥ ७ ॥ संक्षिप्तमासामिति आसामेतादृशीनां देवतानांचरितंप्रसंगेन जीवकर्मविपाकंचवैराग्यार्थवक्ष्यामी
त्यर्थः ॥ ८ ॥ किंचदुर्गायादिति चरितमनुष्ठानविधिसंक्षेपतः पश्चादंते प्रवक्ष्यामीत्यन्वयः ॥ ९ ॥ १० ॥ कृष्णयोषितोराधायः देवी
सरस्वती वक्रतोबिम्बायात् इयंकथापूर्वमुक्ता इयेषकृष्णमिति पतित्वेनकृष्णमियेषेत्यर्थः ॥ ११ ॥ १२ ॥

॥ ७ ॥

दे.भा.न.

॥२०॥

॥ १३ ॥ १४ ॥ कांतेहेसरस्वति ममराधापत्नीत्वत्तोबलवत्प्रधिकामानिनीभवत्यतस्तवमत्पत्नीत्वेसपत्नीजन्यदुःखेनभद्रंनभविष्यतीत्यर्थः

॥ १५ ॥ ननुतांपत्नीशिक्षयेतिचेत्तत्राह योयस्मादिति हेवाणि यःपुरुषोयस्मानिर्बलाद्बलवान्भवतितस्मानिर्बलात्सकाशाद्रक्षितुमन्यं

ससबलःक्षमोभवेत्ति नाहंराधातोबलवांस्ततश्चराधातोराक्षितुंत्वांक्षमोऽस्मीत्यर्थः तत्रप्रसिद्धंन्यायमाह कथमिति साधयतिरक्षति

॥ १६ ॥ सर्वशास्ताहंयदपीत्यर्थः ॥ १७ ॥ प्राणतोपीति केषामपिपुरुषाणांकश्चनकोपिपुत्रःप्राणतोऽपिकिंप्रियोऽस्तिनास्तीत्यर्थः तथा

श्रीकृष्णउवाच ॥ भजनारायणंसाध्विमदंशंचचतुर्भुजं ॥ युवानंसुंदरंसर्वगुणयुक्तंचमत्समं ॥ १३ ॥ कामज्ञं

कामिनीनांचतासांचकामपूरकं ॥ कोटिकंदर्पलावण्यंलीलालंकृतमीश्वरं ॥ १४ ॥ कांतेकांतंचमांकृत्वायादि

स्थातुमिहेच्छसि ॥ त्वत्तोबलवतीराधानभद्रंतेभविष्यति॥१५॥योयस्माद्बलवान्वाणिततोऽन्यंराक्षितुंक्षमः ॥

कथंपरान्साधयतियादिस्वयमनीश्वरः ॥ १६ ॥ सर्वेशःसर्वशास्ताहंराधांवाधितुमक्षमः ॥ तेजसामत्समा

साचरूपेणचगुणेनच ॥ १७ ॥ प्राणाधिष्ठातृदेवीसाप्राणांस्त्यक्तुंचकःक्षमः ॥ प्राणतोपिप्रियःपुत्रःकेषांवा

स्तिचकश्चन ॥ १८ ॥ त्वंभद्रेगच्छवैकुण्ठंतवभद्रंभविष्यति ॥ पतितमीश्वरंकृत्वामोदस्वसुचिरंसुखं ॥१९॥

लोभमोहकामक्रोधमानहिंसाविवर्जिता ॥ तेजसात्वत्समालक्ष्मरूपेणचगुणेनच ॥ २० ॥ तथासाद्धितव

प्रीत्याशश्चत्कालःप्रयास्यति ॥ गौरवंचहरिस्तुल्यंकरिष्यतिद्वयोरपि ॥२१॥ प्रतिविश्वेषुतांपूजांमहतींगौर

वान्वितां ॥ माघस्यशुक्लपंचम्यांविद्यारंभेचसुंदरि ॥ २२ ॥

चपुत्रेभ्योपिप्रियःप्राणस्तत्प्राणरूपांराधांत्यक्तुंचकथमहंक्षमइत्यर्थः ॥ १८ ॥ तर्हिममकागातिस्तत्राह त्वंभद्रेति ॥ १९ ॥ ननुतत्रापिल

क्ष्मीःसपत्नीवर्ततइतिचेन्नसालक्ष्मीराधासदृशीमानिनीकित्वतिशांतास्तीत्याह लोभेति ॥ २० ॥ २१ ॥ प्रतिविश्वेषुप्रतिब्रह्मांडंतांपूजा

मित्यस्यकरिष्यतीत्यनेनान्वयः माघस्यशुक्लपंचम्यामित्यनेनतद्दिनेसरस्वत्यामहोत्सवोबोधितः तद्दिनस्याविद्यारंभइतिविशेषणंतुशास्त्रे

दिनेविद्यारंभःकर्तव्यइतिश्रवणात् ॥ २२ ॥

टी.अ.

४

॥२०॥

॥ २३ ॥ २४ ॥ कण्वशास्त्रोक्तेति यद्यपिसविधिरधुनोपलब्धशाखायांनास्तितथाप्युच्छिन्नशाखासुवर्ततइतिबोध्यं घटेपुस्तकेवात्रा

मानवामनवोदेवामुनींद्राश्चमुमुक्षवः ॥ वसवोयोगिनःसिद्धानागागंधर्वराक्षसाः ॥ २३ ॥ मद्वरेणकरिष्यन्ति
कल्पेकल्पेलयावधि ॥ भक्तियुक्ताश्चदत्वावैचोपचाराणिषोडश ॥ २४ ॥ कण्वशास्त्रोक्तविधिनाध्यानेनस्त
वनेनच ॥ जितेंद्रियाःसंयताश्चघटेचपुस्तकेपिच ॥ २५ ॥ कृत्वासुवर्णगुटिकांगंधचंदनचर्चितां ॥ कवचंतेगृहि
ष्यंतिकंठेवाक्षिणेभुजे ॥ २६ ॥ पठिष्यन्तिचविद्वांसःपूजाकालेचपूजिते ॥ इत्युक्त्वापूजयामासतांदेवींसर्व
पूजितां ॥ २७ ॥ ततस्तत्पूजनंचक्रुर्ब्रह्मविष्णुशिवादयः ॥ अनंतश्चापिधर्मश्चमुनींद्राःसनकादयः ॥ २८ ॥
सर्वदेवाश्चमुनयोनृपाश्चमानवादयः ॥ बभूवपूजितामित्यासर्वलोकैःसरस्वती ॥ २९ ॥ नारदउवाच ॥ पू
जाविधानंकवचंध्यानंचापिनिरंतरं ॥ पूजोपयुक्तंनैवेद्यंपुष्पंचंदनादिकं ॥ ३० ॥ वदवेदविदांश्रेष्ठश्रोतुंको
तूहलंमम ॥ वर्ततेहृदयेऽश्वत्किमिदंश्रुतिसुंदरं ॥ ३१ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ शृणुनारदवक्ष्यामिकण्वशा
स्त्रोक्तपद्धतिं ॥ जगन्मातुःसरस्वत्याःपूजाविधिसमन्वितां ॥ ३२ ॥ माघस्यशुक्लपंचम्यांविद्यारंभेदिनेपिच ॥
पूर्वेन्हिसमयंकृत्वातत्रान्हिसंयतःशुचिः ॥ ३३ ॥ स्नात्वानित्यक्रियाःकृत्वाघटंसंस्थाप्यभक्तितः ॥ स्वशा
स्त्रोक्तविधानेनतांत्रिकेणाथवापुनः ॥ ३४ ॥ गणेशंपूर्वमभ्यर्च्यततोभीष्टांप्रपूजयेत् ॥ ध्यानेनवक्ष्यमाणेन
ध्यात्वाबाह्यघटेध्रुवं ॥ ३५ ॥ ध्यात्वापुनःषोडशोपचारेणपूजयेद्भ्रती ॥ पूजोपयुक्तंनैवेद्यंयच्चवेदनिरूपितं ॥ ३६

वाद्येत्यर्थः ॥ २५ ॥ सुवर्णगुटिका इति भूर्जपत्रेकवचमष्टगंधेनसंलिख्यस्वर्णगुटिकायांधारयेत्तांचगुटिकांकंठादिषुधारयेदित्यर्थः
॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ समयंसंकेतं ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ अभीष्टांसरस्वती ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

दे.भा.न.

॥२१॥

॥ ३७ ॥ इक्षुसंपूर्णखंडं स्वस्तिकामिति स्वस्तिकोमंगलद्रव्येचतुष्कगृहभेदयोरितिमेदिनीकोशान्मंगलद्रव्यंयद्यत्तत्सर्वथा ॥३८॥
॥ ३९ ॥ स्वस्तिकस्यापियस्यकस्यापिमंगलद्रव्यस्यापिष्टकंघृतसंयुतमित्यर्थः पकरंभाफलस्यशुष्कस्यापिष्टकमित्यर्थः ॥ ४० ॥ परमा

टी.अ.

४

वक्ष्यामिस्मैस्यतत्किंचिद्यथाधीतंयथागमं ॥ नवनीतंदधिक्षीरंलाजांश्चातिललङ्कं ॥ ३७ ॥ इक्षुमिक्षुरसंशुक्ल
वर्णपक्वगुडमधु ॥ स्वस्तिकंशर्कराशुक्लधान्यस्याक्षतमक्षतं ॥ ३८ ॥ अस्विन्नशुक्लधान्यस्यपृथुकंशुक्लमोद
कं ॥ घृतसैधवसंयुक्तंहविष्यान्नंयथोदितं ॥ ३९ ॥ यवगोधूमचूर्णानांपिष्टकंघृतसंयुतं ॥ पिष्टकंस्वस्तिक
स्यापिपकरंभाफलस्यच ॥ ४० ॥ परमान्नंचसघृतंमिष्टान्नंचसुधोपमं ॥ नारिकेलंतदुदकंकसेरुमूलमार्द्रकं
॥ ४१ ॥ पकरंभाफलंचारुश्रीफलंबदरीफलं ॥ कालदेशोद्भवंचारुफलंशुक्लंचसंस्कृतं ॥ ४२ ॥ सुगंधंशुक्लपु
ष्पंचसुगंधंशुक्लचंदनं ॥ नवीनशुक्लवस्त्रंचशंखंचसुंदरंमुने ॥ ४३ ॥ माल्यंचशुक्लपुष्पाणांशुक्लहारंचभूषणां
यादृशंचश्रुतौध्यानंप्रशस्यंश्रुतिसुंदरं ॥ ४४ ॥ तन्निबोधमहाभागभ्रमभंजनकारणं ॥ सरस्वतींशुक्लवर्णांस
स्मितांसुमनोहरां ॥ ४५ ॥ कोटिचंद्रप्रभामुष्टपुष्टश्रीयुक्तविग्रहां ॥ वह्निशुद्धांशुकाधानांवीणापुस्तकधारि
णीं ॥ ४६ ॥ रत्नसारेंद्रनिर्माणनवभूषणभूषितां ॥ सुपूजितांसुरगणैर्ब्रह्मविष्णुशिवादिभिः ॥ ४७ ॥ वंदे
भक्त्यार्वदितांचमुनींद्रमनुमानवैः ॥ एवंध्यात्वाचमूलेनसर्वदत्तविचक्षणः ॥ ४८ ॥ संस्तूयकवचंचधृत्वाप्रणमे
दंडवद्भुवि ॥ येषांचेयमिष्टदेवीतेषांनित्याक्रियामुने ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥

नंपायसंकसेरुःप्रसिद्धः मूलंमूलकं ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ कोटिचंद्रप्रभामुष्टपुष्टश्रीयुक्तविग्रहां
विग्रहोयस्याः ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ नित्याक्रियेति सर्वेषांजनानांविद्यारंभेवर्षातेपंचमीदिनेमाषशुक्लपंचम्यामियंक्रियानित्याव
द्यंकर्तव्येत्यर्थः ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥

॥२१॥

मूलं च सर्वस्य मूलभूतमित्यर्थः ॥ ५० ॥ येषां पुरुषाणां येन हेतुनोपदेशो जातस्तेन हेतुना तेषां समं त्रैव सर्वस्य मूलो मूलभूत इत्यर्थः ॥ ५१ ॥

विद्यारंभे च वर्षति सर्वेषां पंचमी दिने ॥ सर्वोपयुक्तो मूलं च वैदिकाष्टाक्षरः परः ॥ ५० ॥ येषां येनोपदेशो वा तेषां
समूल एव च ॥ सरस्वती चतुर्थ्यंतं न्हि जायांत मेव च ॥ ५१ ॥ लक्ष्मीमायादिकं चैव मंत्रोयं कल्पपादपः ॥ पुरा
नारायणश्चेमं वाल्मीकायकृपानिधिः ॥ ५२ ॥ प्रददौ जान्हवी तीरे पुण्यक्षेत्रे च भारते ॥ भृगुर्ददौ च शुक्राक्षपु
ष्करे सूर्यपर्वणि ॥ ५३ ॥ चंद्रपर्वणि मारीचो ददौ वाक्पतये मुदा ॥ भृगोश्चैव ददौ तुष्टो ब्रह्मा बदारिकाश्रमे ॥ ५४ ॥
अस्तिकस्य जरत्कारुर्ददौ क्षीरोदसन्निधौ ॥ विभांडको ददौ मेरौ ऋष्यशृंगाय धीमते ॥ ५५ ॥ शिवः कणादमुन
ये गौतमाय ददौ मुदा ॥ सूर्यश्च याज्ञवल्क्याय तथा कात्यायनाय च ॥ ५६ ॥ शेषः पाणिनये चैव भारद्वाजाय धी
मते ॥ ददौ शाकटायनाय सुतले बलिसंसादि ॥ ५७ ॥ चतुर्लक्ष जपेनैव मंत्रः सिद्धो भवेन्नृणां ॥ यदि स्यान्मंत्र
सिद्धो हि बृहस्पतिसमो भवेत् ॥ ५८ ॥ कवचं शृणु विप्रं द्रव्यदत्तं ब्रह्मणा पुरा ॥ विश्वस्त्रं चाविश्वजयं भृगवे गंधमा
दने ॥ ५९ ॥ भृगुरुवाच ॥ ब्रह्मन् ब्रह्मविदां श्रेष्ठं ब्रह्मज्ञानविशारदं ॥ सर्वज्ञ सर्वजनक सर्वेश सर्वपूजित ॥ ६० ॥
सरस्वत्याश्च कवचं ब्रूहि विश्वजयं प्रभो ॥ अयातयामं मंत्राणां समूहं संयुतं परं ॥ ६१ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ शृणु वत्स
प्रवक्ष्यामि कवचं सर्वकामदं ॥ श्रुतिसारं श्रुति सुखं श्रुत्युक्तं श्रुतिपूजितं ॥ ६२ ॥ उक्तं कृष्णेन गोलोके मह्यं
दावनेवने ॥ रासेश्वरेण विभुनारासे वैरासमंडले ॥ ६३ ॥ अतीव गोपनीयं च कल्पवृक्षसमं परं ॥ अश्रुताद्ब्रु
तमंत्राणां समूहैश्च समन्वितं ॥ ६४ ॥

॥ ६१ ॥

॥ ६२ ॥

॥ ६३ ॥

मंचोयमिति श्रीं ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहेति वैदिको मंत्रः कल्पवृक्ष इत्यर्थः ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ बलिसंसादि बलिसभायां
॥ ५७ ॥ ५८ ॥ विश्वजयंतं नामकं ॥ ५९ ॥ ६० ॥ अयातयामं निहोषं ॥ ६१ ॥ श्रुति सुखं कर्मधुरं ॥ ६२ ॥ ब्रह्मं ब्रह्मणे ॥ ६३ ॥ ६४ ॥

दे.भा.न

॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ शारदाशारंशीर्णशरीरसमूहं प्रति खंडयति सा शारदादेवता ॥ ७१ ॥ ७२ ॥
प्रथममंत्रे श्रीबीजं मायाबीजं क्रमेणादौ वर्तते श्रीबीजाद्यो द्वितीयः ॥ ७३ ॥ तारमायाद्यस्तृतीयः तारश्रीमायाद्यश्चतुर्थकः ॥ ७४ ॥

टी. अ.

४

॥२२॥

यदृत्वा भगवाञ्छुक्रः सर्वदैत्येषु पूजितः ॥ यदृत्वा पठनाद्ब्रह्मन्बुद्धिमांश्च बृहस्पतिः ॥ ६५ ॥ पठनाद्धारणाद्वा
ग्मीकर्वोद्गोवाल्मीको मुनिः ॥ स्वायंभुवो मनुश्चैव यदृत्वा सर्वपूजितः ॥ ६६ ॥ कणादो गौतमः कण्वः पाणिनिः
शाकटायनः ॥ ग्रंथं चकार यदृत्वा दक्षः कात्यायनः स्वयं ॥ ६७ ॥ धृत्वा वेदविभागं च पुराणान्यखिलानि च ॥
चकार लीला मात्रेण कृष्णद्वैपायनः स्वयं ॥ ६८ ॥ शातातपश्च संवर्तो वसिष्ठश्च पराशरः ॥ यदृत्वा पठनाद्ग्रंथं
याज्ञवल्क्यश्चकार सः ॥ ६९ ॥ ऋष्यशृंगो भरद्वाजश्चास्तिको देवलस्तथा ॥ जैगीषव्यो ययातिश्च धृत्वा सर्व
त्रपूजिताः ॥ ७० ॥ कवचस्यास्य विप्रेन्द्र ऋषिरेव प्रजापतिः ॥ स्वयं छंदश्च बृहती देवता शारदां बिका ॥ ७१
सर्वतत्त्वपरिज्ञानसर्वार्थसाधनेषु च ॥ कवितासु च सर्वासु विनियोगः प्रकीर्तितः ॥ ७२ ॥ श्रीं ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा
शिरो मे पातु सर्वतः ॥ श्रीं वाग्देवतायै स्वाहा भालं मे सर्वदा वतु ॥ ७३ ॥ ॐ ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहेति श्रोत्रे पातु निरं
तरं ॥ ॐ श्रीं ह्रीं भगवत्यै सरस्वत्यै स्वाहानेत्रयुग्मं सदा वतु ॥ ७४ ॥ ऐं ह्रीं वाग्वादिन्यै स्वाहानासां मे सर्वदा वतु
॥ ॐ ह्रीं विद्याधिष्ठातृदेव्यै स्वाहा चोष्ठं सदा वतु ॥ ७५ ॥ ॐ श्रीं ह्रीं ब्राह्म्यै स्वाहेति दंतपंक्तिं सदा वतु ॥ ऐमित्ये
काक्षरो मंत्रो मम कंठं सदा वतु ॥ ७६ ॥ ॐ श्रीं ह्रीं पातु मे ग्रीवांस्कंधौ मे श्रीं सदा वतु ॥ ॐ ह्रीं विद्याधिष्ठातृदेव्यै स्वा
हा वक्षः सदा वतु ॥ ७७ ॥

॥ ७४ ॥

॥ ७५ ॥

॥ ७६ ॥

वाग्भवमायाद्यः पंचमः तारमायाद्यः षष्ठः ॥ ७५ ॥ तारश्रीमायाद्यः सप्तमः वाग्भवयोष्टमः ॥ ७६ ॥ तारश्रीमायाद्यो नवमः श्रीबी
जाद्यो दशमः तारमायाद्यो मंत्रहकादशः ॥ ७७ ॥

॥ ७४ ॥

॥ ७५ ॥

॥ ७६ ॥

॥ ७७ ॥

॥२२॥

तारमायाद्योद्वादशः तारमायाकामबीजाद्यष्टयोदशः ॥ ७८ ॥ ताराद्यौचतुर्दशपंचदशौ ॥ ७९ ॥ ताराद्यौषोडशसप्तदशौ ॥ ८० ॥
तारवाग्भवमायाश्रीकामबीजाद्योष्टादशः ८१ ॥ वाग्भवमायाश्रीबीजाद्यऊनविंशः तारवाग्भवाद्योविंशः ॥ ८२ ॥ ताराद्यैकविंशः

ॐ ह्रीं विद्यास्वरूपायै स्वाहामेपातुनाभिकां ॥ ॐ ह्रीं क्लीं वाण्यै स्वाहेतिममहस्तौ सदावतु ॥ ७८ ॥ ॐ सर्ववर्णा
त्मिकायै पादयुग्मं सदावतु ॥ ॐ वागधिष्ठातृदेव्यै स्वाहा सर्वं सदावतु ॥ ७९ ॥ ॐ सर्वकंठवासिन्यै स्वाहा प्राच्यां
सदावतु ॥ ॐ सर्वजिह्वाग्रवासिन्यै स्वाहामिदिशिरक्षतु ॥ ८० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सरस्वत्यै बुधजनन्यै स्वाहा ॥
सततं मंत्रराजो यंदक्षिणे मां सदावतु ॥ ८१ ॥ ऐं ह्रीं श्रीं त्र्यक्षरो मंत्रो नैऋत्यां सर्वदावतु ॥ ॐ ऐं जिह्वाग्रवासि
न्यै स्वाहामां वारुणे वतु ॥ ८२ ॥ ॐ सर्वांबिकायै स्वाहा वायव्ये मां सदावतु ॥ ॐ ऐं श्रीं क्लीं गद्यवासिन्यै स्वाहामा
मुत्तरे वतु ॥ ८३ ॥ ऐं सर्वशास्त्रवासिन्यै स्वाहे शान्यां सदावतु ॥ ॐ ह्रीं सर्वपूजितायै स्वाहा चोर्ध्वं सदावतु
॥ ८४ ॥ ह्रीं पुस्तकवासिन्यै स्वाहा धोमां सदावतु ॥ ॐ ग्रंथबीजस्वरूपायै स्वाहामां सर्वतो वतु ॥ ८५ ॥ इति ते
कथितं विप्रब्रह्म मंत्रौघविग्रहं ॥ इदं विश्वजयं नाम कवचं ब्रह्मरूपकं ॥ ८६ ॥ पुराश्रुतं धर्मवक्त्रात्पर्वते गंधमाद
ने ॥ तव स्नेहान्मया स्यात्तं प्रवक्तव्यं न कस्यचित् ॥ ८७ ॥ गुरुमभ्यर्च्य विधिवद्वस्त्रालंकारचंदनैः ॥ प्रणम्य
दंडवद्भूमौ कवचं धारयेत्सुधीः ॥ ८८ ॥ पंचलक्ष जपेनैव सिद्धं तु कवचं भवेत् ॥ यदि स्यात्सिद्धकवचो बृहस्पति
समो भवेत् ॥ ८९ ॥ महावाग्मी कवींद्रश्च त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥ शक्नोति सर्वं जेतुं च कवचस्य प्रसादतः ॥ ९० ॥

तारवाग्भवश्रीकामाद्योद्वाविंशः ॥ ८३ ॥ वाग्भवाद्यष्टयोविंशः तारमायाद्यश्चतुर्विंशः ॥ ८४ ॥ मायाद्यः पंचविंशः ताराद्यः षड्विंशः
॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥

दे.भा.न

॥२३॥

॥ ९१ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ अर्धाधिकैश्वर्यानिशतयैर्धर्मात्मजः परं ॥ सरस्वत्यामहास्तोत्रं ना
रदायोक्तवान्स्फुटं ॥ १ ॥ नारायण उवाच ॥ वाग्देवताया इति ॥ १ ॥ रविस्थानं लोलाकं ॥ २ ॥ ३ ॥ सूर्यस्तमिति देवः सूर्यस्तं या

टी.अ.

५

इदं च कण्वशास्त्रोक्तं कवचं कथितं मुने ॥ स्तोत्रपूजाविधानचध्यानचवंदनं शृणु ॥ ११ ॥ इति श्रीदेवीभागवते
महापुराणेनवमस्कंधेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ श्रीनारायण उवाच ॥ वाग्देवतायाः स्तवनं श्रूयतां सर्वकामदं ॥ महा
मुनिर्याज्ञवल्क्यो येन तुष्टावतां पुरा ॥ १ ॥ गुरुशापाच्च समुनिर्हता वेद्योऽबभूव ह ॥ तदा जगाम दुःखार्तो रविस्था
नं सुपुण्यदं ॥ २ ॥ संप्राप्य तपसा सूर्यलोलाकं दृष्टिगोचरे ॥ तुष्टावसूर्यशोकेन रुरोद च मुहुर्मुहुः ॥ ३ ॥ सूर्यस्तं
पाठयामास वेदवेदांगमीश्वरः ॥ उवाच स्तौहि वाग्देवीं भक्त्या च स्मृतिहेतवे ॥ ४ ॥ तमित्युत्कादीननाथो
प्यंतर्धानं च कारसः ॥ मुनिः स्नात्वा च तुष्टावभक्तिनम्रात्मकंधरः ॥ ५ ॥ याज्ञवल्क्य उवाच ॥ कृपां कुरु जग
न्मातर्ममैवं हततेजसं ॥ गुरुशापात्स्मृतिभ्रष्टं विद्याहीनं च दुःखितं ॥ ६ ॥ ज्ञानं देहि स्मृतिं विद्यां शक्तिं शिष्यप्र
बोधिनीं ॥ ग्रंथकर्तृत्वशक्तिं च सुशिष्यं सुप्रतिष्ठितं ॥ ७ ॥ प्रतिभां सत्सभायां च विचारक्षमतां शुभां ॥ लुप्तं स
र्वदैवयोगान्नवीभूतं पुनः कुरु ॥ ८ ॥ यथां कुरुं भस्मनि च करोति देवता पुनः ॥ ब्रह्मस्वरूपा परमाज्योतीरूपा स
नातनी ॥ ९ ॥ सर्वविद्याधिदेवी या तस्यैवाण्येन मोनमः ॥ विसर्गविंदुमात्रा सुयदधिष्ठानमेव च ॥ १० ॥ तद
धिष्ठात्रीया देवी तस्यै नित्यं नमो नमः ॥ व्याख्यास्वरूपा सा देवी व्याख्याधिष्ठातृरूपिणी ॥ ११ ॥ १२ ॥

ज्ञवल्क्ये वेदं वेदांगं च पाठयामासेत्यर्थः ॥ ४ ॥ ५ ॥ दुःखितं पाहीति शेषः ॥ ६ ॥ सुशिष्यं सुप्रतिष्ठितं मह्यं देहीत्यन्वयः ॥ ७ ॥ ८ ॥
तद्वद्विद्यं तोयया भस्मन्यप्यं कुरुं देवता सर्वेश्वरः कदाचित्करोति तद्वन्मयि सर्वलुप्तं साधयेत्यर्थः ॥ ९ ॥ विसर्गविंदुमात्रास्त्विति विसर्गविंदुमा
त्रा सुयदधिष्ठानं सर्वाक्षरपणितदाश्रयाद्विसर्गविंदुमात्राः तेषामक्षराणामधिष्ठात्रीत्यर्थः ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥

॥२३॥

॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ आनममेतिहेदः ॥ १५ ॥ १६ ॥ सिद्धांतं ब्रह्मसिद्धांतं ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ सस्मारवाल्मीकिः
पुराणसूत्ररचनाश्रुत्वास्मृतवानित्यर्थः हेदेवित्वद्वारेण तदा सवाल्मीकिर्भगवत्प्राप्यसिद्धांतं पुराणसूत्रभूतं चकार

यथाविना प्रसंख्यावान् संख्यां कर्तुं न शक्यते ॥ कलासंख्यास्वरूपाया तस्यैदेव्यैनमोनमः ॥ १२ ॥ भ्रमसिद्धां
तरूपाया तस्यैदेव्यैनमोनमः ॥ स्मृतिशक्तिज्ञानशक्तिबुद्धिशक्तिस्वरूपिणी ॥ १३ ॥ प्रतिभाकल्पनाशक्ति
र्याचतस्यैनमोनमः ॥ सनत्कुमारो ब्रह्माणं ज्ञानं पप्रच्छ यत्र वै ॥ १४ ॥ बभूवमूकवत्सोपि सिद्धांतं कर्तुं मक्षमः ॥
तदा जगाम भगवानात्मा श्रीकृष्ण ईश्वरः ॥ १५ ॥ उक्त्व सचतांस्तौ हि वाणीमिष्टां प्रजापते ॥ सचतुष्टयतां ब्र
ह्माचाज्ञया परमात्मनः ॥ १६ ॥ चकार तत्प्रसादेन तदा सिद्धांतमुत्तमं ॥ यदाप्यनंतं पप्रच्छ ज्ञानमेकं वसुंधरा ॥
॥ १७ ॥ बभूवमूकवत्सोपि सिद्धांतं कर्तुं मक्षमः ॥ तदा तां सचतुष्टयसंज्ञां स्तः कथयामास ॥ १८ ॥ ततश्च का
रसिद्धांतं निर्मलं भ्रमभंजनं ॥ व्यासः पुराणसूत्रं च पप्रच्छ वाल्मीकिं यदा ॥ १९ ॥ मौनीभूतश्च सस्मारतामे
व जगदंबिकां ॥ तदा चकार सिद्धांतं तद्वारेण मुनीश्वरः ॥ २० ॥ संप्राप्य निर्मलं ज्ञानं भ्रमांधध्वंसदीपकं ॥ पुरा
णसूत्रं श्रुत्वा च व्यासः कृष्णकलौ द्वयः ॥ २१ ॥ तां शिवां वेदद्वयौ च शतवर्षं च पुष्करे ॥ तदा त्वत्तोवरं प्राप्य सत्क
वोत्रिबभूव ह ॥ २२ ॥ तदा वेदविभागं च पुराणं च चकार सः ॥ यदा महेंद्रः पप्रच्छ तत्त्वज्ञानं सदाशिवं ॥ २३ ॥
क्षपंतामेव संचिंत्य तस्मै ज्ञानं ददौ विभुः ॥ पप्रच्छ शब्दशास्त्रं च महेंद्रश्च बृहस्पतिं ॥ २४ ॥ दिव्यं वर्षसहस्रं च
सत्त्वां दध्यौ च पुष्करे ॥ तदा त्वत्तोवरं प्राप्य दिव्यवर्षसहस्रकं ॥ २५ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥

॥ २० ॥ तत्पुराणसूत्रं व्यासः कृष्णकलौ द्वयः कृष्णकलांशः श्रुत्वा तदर्थं कविस्त्वेन सप्री कर्तुं तां शिवां वेदद्वयौ ध्यातवांश्चेत्यर्थः ॥ २१ ॥

॥ २२ ॥ सदाशिवं पप्रच्छ किं पप्रच्छ तत्राह तत्त्वज्ञानमिति ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ बृहस्पतिः ॥ २५ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.न

॥२४॥

शब्दशास्त्रं व्याकरणं तस्यार्थचोवाच ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधे
पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ अर्धाधिकैः सप्तषष्टिंशोऽकैरथ समासतः ॥ लक्ष्मीगंगाभारतीनां शापाब्जन्मोच्यते भुवि ॥ १ ॥ सरस्वतीतुवैकुण्ठे

उवाच शब्दशास्त्रं च तदर्थं च सुरेश्वरं ॥ अध्यापिताश्च ये शिष्या यैरधीतं मुनीश्वरैः ॥ २६ ॥ ते च तां परिसंचित्य प्र
वर्तते सुरेश्वरी ॥ त्वं संस्तुता पूजिता च मुनीर्द्रिर्मनुमानवैः ॥ २७ ॥ दैत्यैर्द्रैश्च सुरैश्चापि ब्रह्मविष्णुशिवादिभिः ॥
जडीभूतः सहस्रास्यः पंचवक्त्रश्चतुर्मुखः ॥ २८ ॥ यांस्तोतुं किमहंस्तौ मितामेकास्येन मानवः ॥ इत्युत्काया ज्ञ
वल्क्यश्च भक्तिनम्रात्मकंधरः ॥ २९ ॥ प्रणनाम निराहारो रुरोद च मुहुर्मुहुः ॥ ज्योतीरूपामहामाया तेन दृष्टा
प्युवाच तं ॥ ३० ॥ सुकर्वाद्रो भवेत्युक्ता वैकुण्ठं च जगाम ह ॥ याज्ञवल्क्यकृतं वाणीस्तोत्रमेतत्तु यः पठेत् ॥ ३१ ॥
सुकर्वाद्रो भवेत् ॥ महासूखं च दुर्बुद्धिर्वर्षमेकं यदा पठेत् ॥ ३२ ॥ संपंडितश्च मेधावी
सुकर्वाद्रो भवेत्सुखं ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे नवमस्कंधे पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ श्रीनारायण उवाच ॥
सरस्वतीतुवैकुण्ठे स्वयं नारायणांतिके ॥ गंगाशापेन कलहात्कलया भारते सरित् ॥ १ ॥ पुण्यदा पुण्यरूपा
च पुण्यतीर्थस्वरूपिणी ॥ पुण्यवद्भिर्निषेव्या च स्थितिः पुण्यवतां मुने ॥ २ ॥ तपस्विनां तपोरूपा तपसःफल
रूपिणी ॥ कृतपापे ध्मदा हायज्वलदग्निस्वरूपिणी ॥ ३ ॥ ज्ञानात्सरस्वती तोये मृताये मानवा भुवि ॥ तेषां
स्थितिश्च वैकुण्ठे सुचिरं हरि संसदि ॥ ४ ॥ भारते कृतपापश्च स्नात्वा तत्रावलीलया ॥ मुच्यते सर्वपापेभ्यो वि
ष्णुलोके वसेच्चिरं ॥ ५ ॥

॥ ६ ॥

॥ ७ ॥

॥ ८ ॥

॥ ९ ॥

ति स्वयं पूर्णरूपेण वैकुण्ठे तिष्ठतीत्यर्थः यश्चाङ्गगायाः शापेन कलयां शेन भारते खंडे सरित्सरस्वतीनाम्नी सरिज्जातेत्यर्थः ॥ १ ॥ यस्यास्ती
रे पुण्यवतां स्थितिरित्यर्थः ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

टी. अ.

५

॥२४॥

अक्षयायांतिथावक्ष्यनवम्यां ॥ ६ ॥ अनुषंगेणान्यकार्यार्थमागतोमध्येतीर्थपतितमस्तीतिस्नानमपिकर्तव्यमितिनुत्थाहेतुनान्येनवाकारणेनद्र
नग्रहणरूपेणअश्रद्धयापीतिछेदः ॥ ७ ॥ तत्रसरस्वतीतीरे ॥ ८ ॥ मुंडयन्नेकवारंप्रथमतोमुंडनंकुर्वन् ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥

चातुर्मास्यांपौर्णमास्यामक्षयायांदिनक्षये ॥ व्यतीपातेचग्रहणेऽन्यस्मिन्पुण्यदिनेपिच ॥ ६ ॥ अनुषंगेण
यःस्नातोहेतुनाश्रद्धयापिवा ॥ सारूप्यलभतेनूनवैकुण्ठेसहरेरपि ॥ ७ ॥ सरस्वतीमनुंतत्रमासमेकंचयोजयेत्
॥ महामूर्खःकवीद्रश्चसभवेन्नात्रसंशयः ॥ ८ ॥ नित्यंसरस्वतीतोयेयःस्नायान्मुंडयन्नरः ॥ नगर्भवासंकुरु
तेपुनरेवसमानवः ॥ ९ ॥ इत्येवंकथितंकिंचिद्भारत्यागुणकीर्तनं ॥ सुखदंकामदंसारंभूयःकिंश्रोतुमिच्छसि
॥ १० ॥ सूतउवाच ॥ नारायणवचःश्रुत्वानारदोमुनिसत्तमः ॥ पुनःपप्रच्छसंदेहमिमंशौनकसत्वरं ॥ ११ ॥
श्रीनारदउवाच ॥ कथंसरस्वतीदेवीगंगाशापेनभारते ॥ कलयाकलहेनैवबभूवपुण्यदासरित् ॥ १२ ॥ श्रव
णेश्रुतिसाराणांवर्द्धतेकौतुकंमम ॥ कथामृतेनमेतृप्तिःकेनश्रेयसितृप्यते ॥ १३ ॥ कथंशशापसांगंगापूजितां
तांसरस्वतीं ॥ सातुसत्त्वस्वरूपायापुण्यदाशुभदासदा ॥ १४ ॥ तेजस्विनोर्द्वयोर्वादकारणंश्रुतिसुंदरं ॥ सु
दुर्लभंपुराणेषुतन्मेव्याख्यातुमर्हसि ॥ १५ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ शृणुनारदवक्ष्यामिकथामेतांपुरातनीं ॥
यस्याःश्रवणमात्रेणसर्वपापात्प्रमुच्यते ॥ १६ ॥ लक्ष्मीःसरस्वतीगंगातिस्त्रोभार्याहरेरपि ॥ प्रेम्णासमा
स्तास्तिष्ठंतिसततंहरिसन्निधौ ॥ १७ ॥ चकारसैकदागंगाविष्णोर्मुखनिरीक्षणं ॥ सस्मिताचसकामाचसक
टाक्षंपुनःपुनः ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥

श्रुतेःसाराणांसारभूतानांकथानांश्रवणेइत्यन्वयः ॥ मेतृप्तिःकथामृतेनैवास्ति ॥ केनश्रेयसितृप्यतेनकेनापीत्यर्थः ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥
॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥

दे.भा.न.

॥२५॥

तदृष्ट्वाविष्णोर्हास्यं दृष्ट्वा लक्ष्मीः क्षमां चकार न क्रोधं सरस्वती तु न क्षमां चकार किंतु क्रोधं ॥ १९ ॥ तां कुडां सरस्वतीं ॥ २० ॥ २१ ॥
॥ २२ ॥ सौभाग्यं प्रेमां च गंगालक्ष्म्योस्तव प्रेमास्ति मयि नास्तीत्यर्थः ॥ २३ ॥ गंगाया इति यदि लक्ष्म्यां गंगा तुल्या तव प्रीतिर्न स्यात्ततो गंगा

टी.अ.

६

विभुर्जहास तद्वक्त्रं निरीक्ष्य च क्षणं तदा ॥ क्षमां चकार तदृष्ट्वा लक्ष्मीर्नैव सरस्वती ॥ १९ ॥ बोधयामास पद्मातां
सत्वरूपा च सा स्मिता ॥ क्रोधा विष्टा च सा वाणी न च शांता बभूव ह ॥ २० ॥ उवाच वाणी भर्तारं रक्तास्थारक्तलो
चना ॥ कंपिता कामवेगेन शब्दप्रस्फुरिता धरा ॥ २१ ॥ सरस्वत्युवाच ॥ सर्वत्र समता बुद्धिः सद्गर्तुः कामिनी प्र
ति ॥ धर्मिष्ठस्य वरिष्ठस्य विपरीता खलस्य च ॥ २२ ॥ ज्ञातं स्तौ भाग्यमधिकं गंगायां ते गदाधर ॥ कमलायां च त
त्तुल्यं न च किंचिन्मयि प्रभो ॥ २३ ॥ गंगायाः पद्मया सार्धं प्रीतिश्चास्ति सुसंमत्ता ॥ क्षमां चकार तेनेदं विपरीतं
हरिप्रिया ॥ २४ ॥ किं जीवने न मे त्रैव दुर्भगायाश्च सांप्रतं ॥ निष्कलं जीवनं तस्यायापत्युः प्रेमवंचित ॥ २५ ॥
त्वां सर्वे सत्वरूपं च ये वदन्ति मनीषिणः ॥ ते च मूर्खानवेदज्ञानजानंति मतिं तव ॥ २६ ॥ सरस्वती वचः श्रुत्वा दृष्ट्वा
तां कोपसंयुतां ॥ मनसा च समालोच्य स जगाम बहिः सभां ॥ २७ ॥ गतेनारायणे गंगामुवाच निर्भयं रुषा ॥ व
गधिष्ठातृदेवी सा वाक्यं श्रवणदुष्करं ॥ २८ ॥ हे निर्लजे हे सकामे स्वामि सर्वं करोषि किं ॥ अधिकं स्वामि सौभा
ग्यं वेज्ञापयतु मिच्छसि ॥ २९ ॥ मानचूर्णं करिष्यामि तवाद्य हरि सन्निधौ ॥ किं करिष्याति तेकां तोममैव कां तव ह
भे ॥ ३० ॥ इत्येव मुक्ता गंगायाः केशं गृहीतुमुद्यता ॥ वारयासास तां पद्मा मध्यदेशं समाश्रिता ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

सार्धं लक्ष्म्याः प्रीतिर्नैव भवेत्प्रीतिस्तु वर्त्तते यतस्तेन हेतुना प्रीतिः सद्भावहेतुना विपरीतमिदं सपत्नीहास्यं तव दृष्ट्वा क्षमां चकार हरिप्रिया तस्मात्क्षमयात
योः प्रीतिर्विधीयते तया प्रीत्या च तयोः समः प्रेमा तव निश्चीयत इत्यर्थः ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ मध्य
देशं तयोर्गंगायास्तस्मात् ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥

॥२५॥

शशापवाणीतांपद्मांसपत्नीपक्षपातिनीयमिति मत्वा तांपद्मांवृक्षरूपेण भविष्यसि सरिद्रूपा च भविष्यसीति शशापेत्यर्थः ॥ ३२ ॥ विपरीतमिति
 मतः कारणं यथा सभामध्ये वादे प्राप्ते वृक्षः सरिद्रूपा इत्यादि किंचिद्दत्तं किंचिदुक्ते वलंतिष्ठत्येव तथा त्वं विपरीतमन्याय्यं मंगायामृष्टा किंचिदपि वक्तुं
 न उक्त्वा हंसि न योग्यासितस्माच्च डात्मकवृक्षसरिद्रूपा भवेत्यर्थः ॥ ३३ ॥ न शशापनचुकोपचेत्यर्थः शांतत्वादिति भावः वाणीं धृत्वेति

शशापवाणीतांपद्मां महाबलवती सती ॥ वृक्षरूपा सरिद्रूपा भविष्यसि न संशयः ॥ ३२ ॥ विपरीतं ततो दृष्ट्वा
 किंचिद्वक्तुं मर्हसि ॥ सतिष्ठतिसभामध्ये यथा वृक्षो यथा सरित् ॥ ३३ ॥ शापं श्रुत्वा तु सा देवी न शशापचुकोप
 ह ॥ तत्रैव दुःखिता तस्थौ वाणीं धृत्वा करेण च ॥ ३४ ॥ अत्युन्नतां तु तां दृष्ट्वा कोपप्रस्फुरिता धरा ॥ उवाच गंगा
 तां देवी पद्मां चारक्तलेचनां ॥ ३५ ॥ श्रीगंगोवाच ॥ त्वमुत्सृजमहोग्रां च पद्मे किं मे करिष्यति ॥ दुःशीलामुखरा
 नष्टानित्यं वाचालरूपिणी ॥ ३६ ॥ वागधिष्ठातृदेवी यंस ततं कलहप्रिया ॥ यावती योग्यता चास्या यावती श
 क्तिरेव च ॥ ३७ ॥ तथा करोतु वादं च मया सार्धं च दुर्मुखी ॥ स्वबलं यन्मम बलं विज्ञापयितुमिच्छति ॥ ३८ ॥
 जानंतु सर्वे ह्युभयोः प्रभावं विक्रमं सति ॥ इत्येव मुक्त्वा सा देवी वाण्यै शापं ददाविति ॥ ३९ ॥ सरित्स्वरूपा भव
 तु सा या त्वां च शशाप ह ॥ अधो मर्त्ये सा प्रयातु संतियत्रैव पापिनः ॥ ४० ॥ कलौ तेषां च पापानि गृहिष्यति न संश
 यः ॥ इत्येवं वचनं श्रुत्वा तां शशाप सरस्वती ॥ ४१ ॥ त्वमेव यास्यसि महीं पापि पापं लभिष्यसि ॥ एतस्मिन्नं
 तरे तत्र भगवानाजगाम ह ॥ ४२ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४५ ॥

परस्परताडननिवारणार्थं करेण वाणीं धृत्वा तस्थावित्यर्थः ॥ ३४ ॥ अत्युन्नता मत्युन्मत्तां तां वाणीं ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ स्वबलमिति
 यद्यस्मात्कारणात्स्वबलं मम बलं चेयं ज्ञातुमिच्छति तस्मान्मुंचेत्यर्थः ॥ ३८ ॥ सा देवी गंगा ॥ ३९ ॥ या सरस्वती त्वां पद्मां शशाप सा सर
 स्वती सरिद्रूपावित्यर्थः ॥ ४० ॥ तां गंगां ॥ ४१ ॥ लभिष्यसि लप्स्यसे ॥ ४२ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४५ ॥

दे.भा.न.

॥२६॥

॥ ४३ ॥ ४४ ॥ सामयिकांसमयोचितां धर्मध्वजोराजा कलयांशेन ॥ ४५ ॥ भूमौस्थिताभूमेस्तत्पत्नीभवेत्यर्थः ॥ ४६ ॥ शंखचूडस्यका
मिमीपत्नी ॥ ४७ ॥ सुखीतिनाशापश्चान्ममपत्नीभविष्यसीत्यन्वयः कलयांशेनसरिदपिमव ॥ ४८ ॥ पद्मामुत्कार्गमामाहगंगेति
॥ ४९ ॥ ५० ॥ जावेभवेः यदाहेजायेसमुद्रस्यजायाभवेत्यर्थः ॥ ५१ ॥ शंतनोश्चकारणवशाज्जायाभवेत्यर्थः सरस्वतीमाह गंगा
चतुर्भुजश्चतुर्भिश्चपार्षदैश्चचतुर्भुजैः ॥ सरस्वतींकरेधृत्वावासयामासवक्षसि ॥ ४३ ॥ बोधयामाससर्वज्ञः
सर्वज्ञानपुरातनं ॥ श्रुत्वारहस्यंतासांचशापस्यकलहस्यच ॥ ४४ ॥ उवाचदुःखितास्ताश्चवाचंसामयिकांवि
भुः ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ लक्ष्मिर्त्वंकलयागच्छधर्मध्वजगृहंशुभे ॥ ४५ ॥ अयोनिसंभवाभूमौतस्यकन्या
भविष्यसि ॥ तत्रैवदैवदोषेणवृक्षत्वंचलभिष्यसि ॥ ४६ ॥ मदंशस्यासुरस्यैवशंखचूडस्यकामिनी ॥ भू
त्वापश्चाच्चमत्पत्नीभविष्यसिनसंशयः ॥ ४७ ॥ त्रैलोक्यपावनीनाम्नातुलसीतिचभारते ॥ कलयाचसरि
ज्ञावंशीघ्रंगच्छवरानने ॥ ४८ ॥ भारतंभारतीशापान्नाम्नापद्मावतीभव ॥ गंगेयास्यसिपश्चात्त्वमंशेनविश्व
पावमी ॥ ४९ ॥ भारतंभारतीशापात्पापदाहायपापिनां ॥ भगीरथस्यतपसातेननीतासुकल्पिते ॥ ५० ॥
नामाभागीरथीपूताभविष्यसिमहीतले ॥ मदंशस्यसमुद्रस्यजायाजायेममाज्ञया ॥ ५१ ॥ मत्कलांशस्य
भूपस्यशंतनोश्चसुरेश्वरि ॥ गंगाशापेनकलयाभारतंगच्छभारति ॥ ५२ ॥ कलहस्यफलंभुंक्ष्वसपत्नीभ्यां
सहाच्युते ॥ स्वयंचब्रह्मसदनेब्रह्मणःकामिनीभव ॥ ५३ ॥ गंगायातुशिवस्थानमत्रपद्मैवतिष्ठतु ॥ शांताच
क्रोधरहितामद्रक्तासत्वरूपिणी ॥ ५४ ॥

॥ ४४ ॥

॥ ४४ ॥

शापेनेति ॥ ५२ ॥ सपत्नीभ्यांसहकलहस्येत्यन्वयः स्वयंचेति अंशेनभारतेसरिद्वस्वयंचपूर्णरूपेणब्रह्मलोकेब्रह्मणःपत्नीभवेत्यर्थः
॥ ५३ ॥ गंगात्विति गंगाप्यंशेनसरिद्वत्पूर्णरूपेणतुशिवस्थानंयानुतस्यपत्नीभवतु अत्रमानिकटेतुपद्मैवतिष्ठतु यतःशांतेत्याह
शांताचेति ॥ ५४ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५४ ॥

टी. ज.

६

॥२६॥

॥ ५५ ॥ स्वखेदं वर्णयति तिष्ठति त्रिशूलाभिन्नस्वभावाः त्रिशूलेतिसर्वत्रान्वेति एते त्रयो वेदविद्वद्भवेदानुमत्यविषयाः ॥ ५६ ॥ ये

महासाध्वीमहाभागामुशीलघर्मचारिणी ॥ यदंशकलयासर्वाधर्मिष्ठाभ्यपतिव्रताः ॥ ५५ ॥ शांतरूपाः सुशी
ल्यभ्यप्रतिविश्वेषु पूजिताः ॥ तिस्रो भार्यास्त्रिशूलाभ्यत्रयोभृत्याभ्यबांधवाः ॥ ५६ ॥ ध्रुवं वेदविरुद्धाभ्यनह्येते मंग
लप्रदाः ॥ स्त्रीपुंवच्चगृहेयेषां गृहिणां स्त्रीवशः पुमान् ॥ ५७ ॥ निष्फलं जन्म तेषामशुभं च पदे पदे ॥ मुखे दुष्टयो
निदुष्टयस्य स्त्रीकलहप्रिया ॥ ५८ ॥ अरण्यं तेन गंतव्यं महारण्यं गृहाद्वरं ॥ जलानां च स्थलानां च फलानां प्राप्ति
रेव च ॥ ५९ ॥ सततं सुलभा तत्र न तेषां गृह एव च ॥ वरमग्नौ स्थितिर्हि त्रजंतूनां सन्निधौ सुखा ॥ ६० ॥ ततोऽपि दुःखं पुं
सां च दुष्टस्त्री सन्निधौ ध्रुवं ॥ व्याधिज्वाला विषज्वाला वरं पुंसां वरानने ॥ ६१ ॥ दुष्टस्त्रीणां मुखज्वालामरणाद
तिरिच्यते ॥ पुंसां च स्त्रीजितां चैव भस्मांतं शौचमध्रुवं ॥ ६२ ॥ यदहिकुस्ते कर्म न तस्य फलभाग भवेत् ॥ नि
दितोऽत्र परत्रैव सर्वत्र नरकं व्रजेत् ॥ ६३ ॥ यशः कीर्तिविहीनो यो जीवन्नपि मृतो हि सः ॥ बहूनां च सपत्नीनां नै
कत्र श्रेयसे स्थितिः ॥ ६४ ॥ एकभार्यः सुखी नैव बहुभार्यः कादाचन ॥ गच्छ गंगेशिवस्थानं ब्रह्मस्थानं सरस्व
ति ॥ ६५ ॥ अत्र तिष्ठतु मद्गृहे सुशीला कमलालया ॥ सुसाध्यायस्य पत्नी च सुशीला च पतिव्रता ॥ ६६ ॥ इह स्वर्गे
सुखं तस्य धर्मो मोक्षः परत्र च ॥ पतिव्रतायस्य पत्नी स च मुक्तः शुचिः सुखी ॥ ६७ ॥ जीवन्मृतोऽशुचिर्दुःखी दुः
शीला पतिरेव च ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे नवमस्कंधे षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥

पांगृहे पुंवत्पुरुषवत्प्रधाना स्त्री भवतीत्यर्थः ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ भस्मांतं मरणांतं शौचं पावित्र्याभ्यधुनं भवतीत्यर्थः
॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके नवमस्कंधे षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.न.

॥२७॥

अर्धाधिकैश्चतुःपंचाशद्विःपद्यैस्तःपरं ॥ शापेद्वारमकारश्चतिसृष्णसम्यमुच्यते ॥ १ ॥ विररात्रचनारदेसी नारदं प्रतिनारायणोक्तिः
॥ १ ॥ २ ॥ प्रथमं सरस्वतीप्रार्थनां करोति विशाप्नमिति ॥ ३ ॥ अत्युन्नततायाः फलं मया लब्धमित्याह अत्युन्नतोहीति ॥ ४ ॥ तद
श्रीनारायण उवाच ॥ इत्युक्त्वा जगतां नाथो विररामचनारद ॥ अतीवरुरुदुर्देव्यः समालिङ्ग्य परस्परं ॥ १ ॥
ताश्च सर्वाः समालोक्य क्रमेणोचुस्तद्देश्वरं ॥ कंपिताः साश्रुनेत्राश्च शोकेन धभयेन च ॥ २ ॥ सरस्वत्युवाच ॥
विशापं देहि हे नाथ दुष्टमाजन्मशोचनं ॥ संत्स्वामिनापरित्यक्ताः कुतो जीवंति ताः स्त्रियः ॥ ३ ॥ देहत्यागं करि
ष्यामि योगेन भारते भ्रुवं ॥ अत्युन्नतो हि नियतं पातुमर्हति निश्चितं ॥ ४ ॥ गंगोवाच ॥ अहं केनापराधेन त्वया त्य
क्ता जगत्पते ॥ देहत्यागं करिष्यामि निर्दोषायावधं लभ ॥ ५ ॥ निर्दोषकामिनी त्यागं करोति यो नरो भुवि ॥
स याति नरकं घोरं किंतु सर्वेश्वरोऽपि वा ॥ ६ ॥ पद्मोवाच ॥ नाथ स त्वस्वरूपस्त्वं कोपः कथमहोतव ॥ प्रसादं कु
रु भार्ये द्वे सदीशस्य क्षमावरा ॥ ७ ॥ भारते भारतीशापाद्यास्यामि कलया ह्यहं ॥ कियत्कालं स्थितिस्तत्र क
दा द्रक्ष्यामि ते पदे ॥ ८ ॥ दास्यंति पापिनः पापं सद्यः स्नानावगाहनात् ॥ केन तेन विमुक्ताह मागमिष्यामि ते
पदं ॥ ९ ॥ कलया तुलसीरूपधर्मध्वजसुता सती ॥ भुक्त्वा कदालं भिष्यामि त्वत्पदां बुजमघ्नुत ॥ १० ॥
वृक्षरूपा भविष्यामि त्वदधिष्ठातृदेवता ॥ समुद्धरिष्यसि कदा तन्मे ब्रूहि कृपानिधो ॥ ११ ॥ गंगा सरस्वतीशापाद्य
दियास्यति भारते ॥ शापेन मुक्तापापाश्च कदात्वांचलं भिष्यति ॥ १२ ॥ गंगाशापेन वा वाणीयदियास्यति
भारतं ॥ कदाशापाद्विनिर्मुच्यलं भिष्यति पदं तव ॥ १३ ॥ तां वाणीं ब्रह्मसदनं गंगां वा शिवमंदिरं ॥ गंतुं बह
सि हे नाथ तत्क्षमस्व च ते वचः ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥

नंतरं गंगोवाच अहं केनेति सरस्वत्या अपराधः कृतो मया तु न कृत इति भावः तेन कारणेन निर्दोषायास्त्वं वधं लभस्वेत्यर्थः ॥ ५ ॥ सर्वे
श्वरोऽपि यदित्याह तथापि ॥ ६ ॥ द्वे भार्ये प्रतीत्यर्थः ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥

टी.अ.

॥२७॥

॥ १५ ॥ १६ ॥ भारतीकलयैकाशेनदीभवनुअर्धाशेनब्रह्मसदनंगच्छतुष्णीशेनवैकुण्ठेतिष्ठतु तत्रैवैवमपि तेनममवाक्यमपिसत्यंजातंवेकुं
ठवासेनतिसृणांसमताचजातभविष्यतीति ॥ १७ ॥ १८ ॥ तत्रैवेति एकांशावतारेएवेत्यर्थः ननुतस्याःसरस्वतीकद्वर्धीशावताइत्यर्थः

इत्युक्त्वाकमलाकांतपादंधृत्वाननामसा ॥ स्वकेशैर्वेष्टनंकृत्वारुरोदचपुनःपुनः ॥ १५ ॥ श्रीमगवानुवाच ॥
त्वद्वाक्यमाचरिष्यामिस्ववाक्यंचसुरेश्वरि ॥ समतांचकरिष्यामिशृणुत्वंकमलेक्षणे ॥ १६ ॥ भारतीयातु
कलयासरिद्रूपाचभारते ॥ अर्धासाब्रह्मसनंस्वयंतिष्ठतुमद्गृहे ॥ १७ ॥ भगीरथेनसानीतागंगायास्यतिभा
रते ॥ पूतंकर्तुंत्रिभुवनंस्वयंतिष्ठतुमद्गृहे ॥ १८ ॥ तत्रैवचंद्रमौलेश्चमौलिंप्राप्स्यतिदुर्लभं ॥ ततःस्वभावतः
पूताप्यतिपूताभविष्यति ॥ १९ ॥ कलांशांशेनगच्छत्वंभारतेवामलोचने ॥ पद्मावतीसरिद्रूपातुलसीवृक्षरू
पिणी ॥ २० ॥ कलेःपंचसहस्रेचगतेवर्षेचमोक्षणं ॥ युष्माकंसरितांचैवमद्गृहेचागमिष्यथ ॥ २१ ॥ संपदां
हेतुभूताचविपत्तिःसर्वदेहिनां ॥ विनाविपत्तेर्महिमाकेषांपद्मभवेभवे ॥ २२ ॥ मन्मंत्रोपासकानांचसतांस्नाना
वगाहनात् ॥ युष्माकमोक्षणंपापादर्शनात्स्पर्शनात्तथा ॥ २३ ॥ पृथिव्यांलानितीर्थानिसंत्यसंस्थानिसुंदरि
॥ भविष्यंतिचपूतानिमद्भक्तस्पर्शदर्शनात् ॥ २४ ॥ मन्मंत्रोपासकाभक्ताविश्रमंतिचभारते ॥ पूतंकर्तुंतापि
तुंचसुपवित्रांचसुंधरां ॥ २५ ॥ ॥ मद्भक्तायत्रतिष्ठंतिपादंप्रक्षालयंतिच ॥ तत्स्थानंचमहातीर्थंसुपवित्रंभवे
त्पुनः ॥ २६ ॥ स्त्रीघ्नोघ्नःकृतघ्नश्चब्रह्मघ्नोऽगुरुस्तल्पगः ॥ जीवन्मुक्तोभवेत्पूतोमद्भक्तस्पर्शदर्शनात् ॥ २७ ॥

तदपेक्षयास्यान्यूनापराधत्वात् ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ हेपद्मभवे ॥ २२ ॥ मन्मंत्रोपासकानामिति इदमुपलक्षणंब्रह्मनिष्ठशैवशाक्त
माणेशसौराणांभक्तानामपि तेषामपिपुराणांतरेषुतीर्थादिपावकत्वस्यश्रवणात् ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥

दे.भा.न

॥ २८ ॥ धावक इति रजककर्मकर्ताग्राहण इत्यर्थः ॥ २९ ॥ ३० ॥ पूतश्चभवतीत्यर्थः ॥ ३१ ॥ सूपकारः पाककर्ता ॥ ३२ ॥

टी.अ.

७

॥ २८ ॥

एकादशीविहीनश्चसंख्याहीनोयनास्तिकः ॥ नरघातीभवेत्पूतोमद्भक्तस्पर्शदर्शनात् ॥ २८ ॥ असिजीवीम
सीजीवीषाधिकोग्रामयाजकः ॥ वृषवाहोभवेत्पूतोमद्भक्तस्पर्शदर्शनात् ॥ २९ ॥ विश्वासघातीमित्रघ्नोमिथ्या
साक्षस्वदायकः ॥ स्थाप्यहारीभवेत्पूतोमद्भक्तस्पर्शदर्शनात् ॥ ३० ॥ अत्युग्रवाग्दूषकश्चजारकःपुंश्चली
पतिः ॥ पूतश्चपुंश्चलीपुत्रोमद्भक्तस्पर्शदर्शनात् ॥ ३१ ॥ शूद्राणांसूपकारश्चदेवलोग्रामयाजकः ॥ अदीक्षि
तोभवेत्पूतोमद्भक्तस्पर्शदर्शनात् ॥ ३२ ॥ पितरंमातरंभार्याभ्रातरंतनयंसुतां ॥ गुरोःकुलंचभगिनींचक्षुर्हो
नंचबांधवं ॥ ३३ ॥ श्वश्रूंचश्वशुरंचैवयोनपुण्यातिसुंदरि ॥ समहापातकीपूतोमद्भक्तस्पर्शदर्शनात् ॥ ३४ ॥
अभ्युत्थनाशकश्चैवमद्भक्तनिंदकस्तथा ॥ शूद्राग्नभोजीविप्रश्चपूतोमद्भक्तदर्शनात् ॥ ३५ ॥ देवद्रव्यापहारी
चविप्रद्रव्यापहारकः ॥ अक्षालोहरसानांचविक्रेतादुहितुस्तथा ॥ ३६ ॥ महापातकिनश्चैवशूद्राणांशवदा
हकः ॥ भवेयुरेतेपूताश्चमद्भक्तस्पर्शदर्शनात् ॥ ३७ ॥ श्रीमहालक्ष्मीस्त्वाच ॥ भक्तानांलक्षणंब्रूहिभक्तानु
ग्रहकातर ॥ येषांसुदर्शनस्पर्शासद्यःपूतानराधमाः ॥ ३८ ॥ हरिभक्तिविहीनाश्चमहाहंकारसंयुताः ॥
स्वप्रशंसारताधूर्ताःशठाश्चसाधुनिंदकाः ॥ ३९ ॥ पुनंतिसर्वतीर्थानियेषांस्नानावगाहनात् ॥ येषांच
पादरजसापूतापादोदकान्मही ॥ ४० ॥ येषांसंदर्शनंस्पर्शयेवावांचंतिभारते ॥ सर्वेषांपरमोल्लभोवै
ष्णवानांसमागमः ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥

॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ कीदृशानराधमास्तानाह हरिभक्तीति ॥ ३९ ॥ कीदृशवैष्णवास्तानाह पुनंती
ति क्षणादहोदत्येतत्पर्यंतंलक्ष्मीप्रभः ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥

॥ २८ ॥

अम्मयानिबलमयावीत्यर्थः ॥ ४२ ॥ श्रेष्ठोपचक्रमेइत्यत्रश्रेष्ठेतिलुप्रथमांतं आर्षत्वात्श्रेष्ठउपचक्रमेइत्यर्थः ॥ ४३ ॥ ४४॥४५॥
विष्णुमंत्रइति इदमुपलक्षणंक्षिप्रशक्तिगणेशसूर्यमंत्राणामपि ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ स्वात्मास्वदेहोभक्तिवशतयाविस्मृतो

नह्यम्मयानितीर्यानिनदेवामृच्छिलामयाः ॥ तेषुनंत्यपिकालेनविष्णुभक्ताःक्षणादहो ॥ ४२ ॥ सूतउवाच॥
महार्क्षमीवचःश्रुत्वालक्ष्मीकांतश्चसस्मितः ॥ निगूढतत्वंकथितुमपिश्रेष्ठोपचक्रमे ॥ ४३ ॥ श्रीभगवानुवा
च ॥ भक्तानांलक्षणंलक्ष्मिगूढंश्रुतिपुराणयोः ॥ पुण्यस्वरूपंपापघ्नंसुखदंभक्तिमुक्तिदं ॥ ४४ ॥ सारभूतंगो
पनीयंनवक्तव्यंखलेषुच ॥ त्वांपवित्रांप्राणतुल्यांकथयामिनिशामय ॥ ४५ ॥ गुरुवक्त्राद्विष्णुमंत्रोयस्यकर्णे
पतिष्यति ॥ वदंतिवेदास्तंचापिपवित्रंचनरोत्तमं ॥ ४६ ॥ पुरुषाणांशतंपूर्वतथातज्जन्ममात्रतः ॥ स्वर्गस्थं
नरकस्थंवामुक्तिमाप्नोतितक्षणात् ॥ ४७ ॥ यैःकैश्चिद्यत्रवाजन्मलब्धयेषुचजंतुषु ॥ जीवन्मुक्तास्तुतेपूता
यांतिकालेहरेःपदं ॥ ४८ ॥ मद्भक्तियुक्तोमर्त्यश्चसमुक्तोमद्गुणान्वितः ॥ मद्गुणार्धीनवृत्तिर्यःकथाविष्टश्चसंततं
॥ ४९ ॥ मद्गुणश्रुतमात्रेणसानंदःपुलकान्वितः ॥ सगद्गदःसाश्रुनेत्रःस्वात्माविस्मृतएवच ॥ ५० ॥ नवांचंति
सुखंमुक्तिसालोक्यादिचतुष्टयं ॥ ब्रह्मत्वममरत्वंवातद्वांच्छाममसेवने ॥ ५१ ॥ इंद्रत्वंचमनुत्वंचब्रह्मत्वंचसुदु
र्लभं ॥ स्वर्गराज्यादिभोगंचस्वप्नेपिचनवांच्छति ॥ ५२ ॥ भ्रमंतिभारतेभक्तास्तादृग्जन्मसुदुर्लभं ॥ मद्गुण
श्रवणश्राव्यगानैर्नित्यंमुदान्विताः ॥ ५३ ॥ तेषांतिचमहींपूत्वानरंतीर्थंममालयं ॥ इत्येवंकथितंसर्वपद्मेकु
रुयथोचितं ॥ ५४ ॥ तदाज्ञयातास्तच्चक्रुर्हरिस्तस्थौसुखासने ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधे
सप्तमोध्यायः ॥ ७ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥

येनवाहिताःयादिषुइत्यनेनसाधुत्वं ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ श्राव्यगानैर्मधुरगानैः ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतातिलकेनव
मस्कंधेसप्तमोध्यायः ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.न.

॥२९॥

दशोत्तरशतैः पथैर्यगादीनां च भारते ॥ कथयित्वा समुत्पत्तिकलौ वर्तनमुच्यते ॥ १ ॥ पूर्वाध्यायेतदाज्ञया तास्तत्राकुरित्यनेन सरस्वत्याद
यो नदीरूपा अभवन्व्युत्कृष्टतदेव स्पष्टयति नारायण उवाच सरस्वतीति गंगायाः शापेन सरस्वती कल्याणं शोभयति खंडे आजगाम स्वयं पू
र्णरूपेण हरेः पदे वैकुण्ठे तस्थौ स्थितवतीत्यर्थः ॥ १ ॥ सरस्वती नामानि सक्तिमाह भारतीति भारतखंडे नदीरूपेणागमनाद्वारतीत्वं अर्श
आद्यजं तादौ रादिपाठान्डीप् ब्रह्मणः प्रियात्वाद्वाह्मी ब्रह्मण इयमित्यास्मिन्नर्थे नित्राहो जाताविनिनिपातनादिलोपेकृतेण तत्त्वान्डीप् वाप्यधि
ष्ठात्रिति वाप्या अधिष्ठातृत्वालक्षणया वाणीतिनाम ॥ २ ॥ सरोवाण्यामिति हियतः सरसि वाप्यां स्रोतस्सु अन्यत्रापि सर्वत्र देशे हरिर्दृश्यते स

श्रीनारायण उवाच ॥ सरस्वती पुण्यक्षेत्रमाजगाम च भारते ॥ गंगाशापेन कल्याणं स्वयंतस्थौ हरेः पदे ॥ १ ॥ भा
रती भारतं गत्वा ब्राह्मी च ब्रह्मणः प्रिया ॥ वाप्यधिष्ठातृदेवी सति न वाणी प्रकीर्तिता ॥ २ ॥ सरोवाण्यां च स्रोतस्सु
सर्वत्रैव हि दृश्यते ॥ हरिः सरस्वांस्तस्येयं ते न नाम्ना सरस्वती ॥ ३ ॥ सरस्वती नदी सा च तीर्थरूपा तिपाविनी
॥ प्रापिनां पापदाहाय ज्वलदग्निस्वरूपिणी ॥ ४ ॥ पश्चाद्वागीर्यनीतामर्ही भगीरथेन च ॥ सार्वजगाम क
ल्याणाय शपेन नारद ॥ ५ ॥ तत्रैव समये तां च दधार शिरसा शिवः ॥ वेगं सोढुमयं शक्तो भुवः प्रार्थनया विभुः
॥ ६ ॥ पश्चाजगाम कल्याणं पश्चावती नदी ॥ भारतं भारती शापात्स्वयंतस्थौ हरेः पदे ॥ ७ ॥ ॥ १९ ॥

वेन व्यापकत्वात्तेन हेतुना सरसि विद्यमानत्वाद्हरिः सरस्वान् भवति तस्येयं शक्तिर्यतस्तेन हेतुना नाम्ना सरस्वतीयं कथ्यते इत्यर्थः सरस्वच्छ
न्दस्य लक्षणया सरस्वत्संबन्धिनी शक्तिरित्यर्थे उचित इति डीपि सरस्वतीशब्दः सिद्धः ॥ ३ ॥ ४ ॥ सरस्वत्युत्पत्त्यनंतरं गंगैत्युक्तिमाह
पश्चादिति वाणीशापेन कल्याणं शोभयति ॥ ५ ॥ तत्रैवेति कल्याणं शापः पतनसमये एव तस्याधाराया वेगमसहमानाया भुवः प्रार्थनया वेगं
सोढुं शक्तः समयः शिवः शिरसा तां गंगां दधार इत्यर्थः ॥ ६ ॥ पश्येति यापश्चात् कल्याणं गमनापश्चावती नामानदी अभवदित्यर्थः स्वयं पूर्ण
रूपेण हरेः पदे वैकुण्ठे तस्थौ स्थितिपूर्वम् ॥ ७ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ १९ ॥

टी.अ.

८

॥२९॥

ततोऽन्ययेति एकं शेषेन ग्रथानदीनां तद्वत्तद्वत्तरं अन्यथा कलया द्वितीयया कलया भारते खंडे नमले भेदे नमधर्मध्वजोदरे जातमिति धर्मध्व
जमुतेति तया लक्ष्म्यां शालालक्ष्मीव्रितया तुलसीति च नाम्ना विख्याता अभवदित्यर्थः ॥ ८ ॥ पुरेति शालक्ष्मीः पुण्यपूर्वयः सरस्वतीशाप उपपादित
स्तस्यात्पश्चाच्च हरिशापो नातस्तस्माच्च मनुष्यरूपिणी तुलसीति नाम्ना स्थितापि वृक्षरूपा न भूवेत्यर्थः तव केशसमूहश्च पुण्यवृक्षो भविष्यतीति च नु
विंशाध्याये वक्ष्यमाणो हरिशापः ॥ ९ ॥ एतानद्यः कियत्पर्यंतमत्र स्यास्यंतीति चेत्तत्राह कलेरिति जग्मुर्गमिष्यंतीत्यर्थः हरेः पदं वैकुण्ठं

ततोऽन्यया सा कलया लेभे जन्म च भारते ॥ धर्मध्वजसुता लक्ष्मीर्विख्याता तुलसीति च ॥ ८ ॥ पुरा सरस्वतीशा
पात्पश्चाच्च हरिशापतः ॥ नभूववृक्षरूपा सा कलया विश्वपावनी ॥ ९ ॥ कलेः पंचसहस्रं च वर्षं स्थित्वा च भारते
॥ जग्मुस्ताश्च सरिद्रूपं विहाय श्रीहरेः पदं ॥ १० ॥ यानि सर्वाणि तीर्थानि काशीवृंदावनं विना ॥ यास्यंति सार्धं
ताभिश्च वैकुण्ठमाज्ञय हरेः ॥ ११ ॥ शालग्रामः शक्तिश्चैव जगन्नाथश्च भारतं ॥ कलेर्दशसहस्रं तेत्युक्त्वा यांति
निजं पदं ॥ १२ ॥ साधवश्च पुराणानि शंखानि श्राद्धतर्पणे ॥ वेदोक्तानि च कर्माणि ययुस्तैः सार्धमेव च ॥ १३ ॥
देवपूजादेवनाम्न तर्कानि गुणकीर्तनं ॥ वेदांगानि च शास्त्राणि ययुस्तैः सार्धमेव च ॥ १४ ॥ संतश्च सत्यधर्मश्च
वेदाश्च ग्रामदेवताः ॥ व्रतं तपश्चानशनं ययुस्तैः सार्धमेव च ॥ १५ ॥ वामाचाररताः सर्वे मिथ्याकपटसंयुताः ॥
तुलसीरहिता पूजा भविष्यति ततः परं ॥ १६ ॥

॥ ६१ ॥

॥ ६२ ॥

॥ १० ॥ काशीवृंदावनं विनेति इदं क्षेत्रद्वयं तु प्रलयपर्यंतं लोकोत्थराय भूमात्रे ब्रह्मस्थास्यतीति भावः ॥ ११ ॥ जगन्नाथः पुरुषोत्तमः श
क्तिश्चैव शक्तिश्चैव शिवमूर्तिस्थापनान् स्मादित्यर्थः भारतं भारतखंडं त्यक्त्वा अन्यत्र यः निजं पदं स्वस्थानं ॥ १२ ॥ साधवश्चेति शाक्तशैवै
व्याख्याः साधवः शंखानि क्रीडन्तु सार्धं ययुर्यास्यंतीत्यर्थः ॥ १३ ॥ देवपूजादेवादीनां पूजांतेषां मेवनामतेषां मेव कीर्तनं गुणानां च
कीर्तनं ॥ १४ ॥ अन्नश्च व्रतं ॥ १५ ॥ वामाचारो मयमांसनिषेवणादिः काश्चाचाररता इत्यपि पाठः यथेष्टाचाररता इति तत्पक्षेऽर्थः ॥ १६ ॥

दे.भा.न.

॥३०॥

॥ १७ ॥ पुंसां परस्परं भेदो मित्रत्वाभाव इत्यर्थः यदा स्त्रीपुंभेद एव केवलं स्यात् तिननुजातिभेद इत्यर्थः अतएव जातिभेदाभावाद् विवाहः सर्व
स्त्रीभिः सह सर्वपुरुषाणां निर्भयः स्यादित्यर्थः स्वस्वामिभेद इति पितुर्वस्तुपितुरेव पुत्रस्य वस्तुपुत्रस्यैव परस्परं दास्यंतीत्यर्थः ॥ १८ ॥

॥ १९ ॥ भृत्याधिको भृत्यापेक्षयाप्यधिको धर्मो गृही गृहस्वामीत्यर्थः वध्वाः स्नुषायाः श्वश्रूः चेटी समादासी समाध्वशुरश्च दाससमः स्यादित्य

शठाः क्रूरादां भिकाश्च महान्कारसंयुताः ॥ चौराश्च हिंसकाः सर्वे भविष्यंति ततः परं ॥ १७ ॥ पुंसां भेदश्च स्त्री
भेदो विवाहो वापि निर्भयः ॥ स्वस्वामिभेदो वस्तूनां भविष्यति ततः परं ॥ १८ ॥ सर्वे स्त्रीवशगाः पुंसः पुंश्च ल्य
श्च गृहे गृहे ॥ तर्जनैर्भर्त्सनैः शश्वत्स्वामिनं ताडयंति च ॥ १९ ॥ गृहेश्वरी च गृहिणी गृही भृत्याधिको धर्मः ॥ चेटी दास
समो वध्वाः श्वश्रूश्च श्वशुरस्तथा ॥ २० ॥ कर्तारो बलिनो गेहे यो नि संबंधि बांधवाः ॥ विद्या संबंधिभिः सार्धं संभा
षापि न विद्यते ॥ २१ ॥ यथा परिचिता लोकास्तथा पुंसश्च बांधवाः ॥ सर्वकर्माक्षमाः पुंसो योषिता माज्ञया विना
॥ २२ ॥ ब्रह्मक्षत्रविट्शूद्राणां जात्याचारविवर्जिताः ॥ संध्याचयज्ञसूत्रं च भवेच्छुभं न संशयः ॥ २३ ॥ म्लेच्छाचा
रा भविष्यंति वर्णाश्च त्वार एव च ॥ म्लेच्छशास्त्रं पठिष्यंति स्वशास्त्राणि विहाय च ॥ २४ ॥ ब्रह्मक्षत्रविशां वंशाः
शूद्राणां सेवकाः कलौ ॥ सूपकारा धावकाश्च वृषवाहाश्च सर्वशः ॥ २५ ॥ सत्यहीना जनाः सर्वे सस्यहीना च मेदि
नी ॥ फलहीनाश्च तरवोपत्यहीनाश्च योषिताः ॥ २६ ॥ क्षीरहीनास्तथा गावः क्षीरं सर्पिर्विवर्जितं ॥ दंपती प्री
तिहीनौ च गृहिणः सत्यवर्जिताः ॥ २७ ॥

॥ ६४ ॥

॥ ६४ ॥

॥ ६४ ॥

र्थः ॥ २० ॥ योनि संबंधिनः स्त्री संबंधिनो बांधवा गृहेषु कर्तारो न स्वबांधवाः विद्या संबंधिभिः सतीर्थैः ॥ २१ ॥ यथा परिचितेति पुंसो
मृदस्वामिनो बांधवा यथा परिचयः पठिता लोकास्तथा भविष्यंतीत्यर्थः सर्वकर्माक्षमाः सर्वकर्माणि कर्तुं मक्षमा असमर्थाः ॥ २२ ॥ जात्याचा
रविर्जितास्ते ते वर्णा इत्यर्थः ॥ २३ ॥ २४ ॥ सूपकाराः शूद्राणामन्नपाचका इत्यर्थः तेषामेव धावका वृषवाहाः ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥

टी. अ.

८

॥३०॥

दीर्घिकाअल्पमयः ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ह्रस्वकुटीकुटीरः ॥ ३१ ॥ करपीडिताः राजघातोभागः करः ॥ ३२ ॥ तडागेषु अ
न्यत्र वृष्ट्यभावादिषु भविष्यति प्रकृष्टवंशजाः कुलीनाहीनानीचा भविष्यति ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ये देवभक्तास्ते नास्तिका भविष्यति अदेवम

प्रतापहीना भूपाश्च प्रजाश्च करपीडिताः ॥ जलहीना महानद्यो दीर्घिका कंदरादयः ॥ २८ ॥ धर्महीनाः पुण्यही
नावर्णाश्च त्वार एव च ॥ लक्षेषु पुण्यवान्कोपिनतिष्ठति ततः परं ॥ २९ ॥ कुत्सिता विकृताकारानरानार्यश्च बा
ल्काः ॥ कुवार्ता कुत्सितः शब्दो भविष्यति ततः परं ॥ ३० ॥ केचिद्रूमाश्च नगरानरशून्या भयानकाः ॥ केचि
त्स्वल्पकुटीरेण नरेण च समन्विताः ॥ ३१ ॥ अरण्यानि भविष्यंति ग्रामेषु नगरेषु च ॥ अरण्यवासिनः सर्वे जना
श्च करपीडिताः ॥ ३२ ॥ सस्यानि च भविष्यंति तडागेषु नदीषु च ॥ प्रकृष्टवंशजा हीना भविष्यंति कलौ युगे
॥ ३३ ॥ अलीकवादिनो धूर्ताः शठश्चासत्यवादिनः ॥ प्रकृष्टानि च क्षेत्राणि सस्यहीनानि नारद ॥ ३४ ॥ हीनाः प्र
कृष्टा धनिनो देवभक्ताश्च नास्तिकाः ॥ हिंसकाश्च दयाहीनाः पौराश्च नरघातिनः ॥ ३५ ॥ वामनाव्याधियुक्ता
श्च नरानार्यश्च सर्वतः ॥ स्वलायुषोगदायुक्ता यौवनैरहिताः कलौ ॥ ३६ ॥ पलिताः षोडशे वर्षे महावृद्धश्च विं
शतौ ॥ अष्टवर्षा च युवती रजोयुक्ता च गर्भिणी ॥ ३७ ॥ वत्सरांत प्रसूता स्त्री षोडशे च जरान्विता ॥ पतिपुत्रव
तीकाचित्सर्वा वंध्याः कलौ युगे ॥ ३८ ॥ कन्या विक्रयिणः सर्वे वर्णाश्च त्वार एव च ॥ मातृजाया वधूनां च जारोपे
तान्न भक्षकाः ॥ ३९ ॥ कन्यानां भगिनीनां वारोपात्तान्नजीविनः ॥ हरेर्नाम विक्रयिणो भविष्यंति कलौ युगे ॥ ४० ॥

क्ता इति बाह्येदः ॥ ३५ ॥ गदैरोगैरायुक्ताः संबद्धाः ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ वधूः स्नुषा एतासां जारैरुपेतानि दत्तान्यन्नानि तेषां भक्षकाः
॥ ३९ ॥ हरेर्नामपित्वा तन्नान्यं पुण्यं द्रव्यं गृहीत्वा विक्रेष्यंतीत्यर्थः ॥ ४० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.न

स्वयमुत्सृज्येति प्रथमतोदानंकीर्त्यैकरिष्यतिनत्वीश्वरप्रीत्यर्थततःपश्चादनंतरंयद्वचंगवादिकंदानंतत्स्वयमुलंघयिष्यति मयानब्राह्मणाय दत्तमित्युत्काब्राह्मणादपहरिष्यति ॥ ४१ ॥ देववृत्तिदेवजीविकां ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ पत्नीनामिति कस्यकापत्नीत

॥३१॥

स्वयमुत्सृज्यदानंचकीर्तिवर्द्धनहेतवे ॥ ततःपश्चात्स्वदानंचस्वयमुलंघयिष्यति ॥ ४१ ॥ देववृत्तिब्रह्मवृत्तिवृत्तिगुरुकुलस्यच ॥ स्वदत्तांपरदत्तांवासर्वमुलंघयिष्यति॥४२॥कन्यकागामिनःकेचित्केचिच्चश्वश्रुगामिनः॥ केचिद्वधूगामिनश्चकेचिच्चसर्वगामिनः ॥ ४३ ॥ भगिनीगामिनःकेचित्सपत्नीमातृगामिनः ॥ भ्रातृजाया गामिनश्चभविष्यंतिकलौयुगे ॥ ४४ ॥ अगम्यागमनंचैवकरिष्यंतिगृहेगृहे ॥ मातृयोनिंपरित्यज्यविहरिष्यं तिसर्वतः॥४५॥ पत्नीनांनिर्णयोनास्तिभर्तृणांचकलौयुगे ॥ प्रजानांचैवग्रामाणांवस्तूनांचविशेषतः॥४६॥ अलीकवादिनःसर्वेसर्वेचौराश्चलंपटाः ॥ परस्परंहिसकाश्चसर्वेचनरघातिनः ॥ ४७ ॥ ब्रह्मक्षत्रविशांवंशाः भविष्यंतिचपापिनः ॥ लाक्षालोहरसानांचव्यापारंलवणस्यच ॥ ४८॥ वृषवाहाविप्रवंशाःशूद्राणांशवदाहि नः ॥ शूद्रान्नभोजिनःसर्वेसर्वेचवृषलीरताः ॥ ४९ ॥ पंचयज्ञविहीनाश्चकुहूरात्रौचभोजिनः ॥ यज्ञसूत्रविही नाश्चसंध्याशौचविहीनकाः ॥ ५० ॥ पुंश्चलीवार्धुषाजीवाकुट्टनीचरजस्वला ॥ विप्राणांरंधनागारेभविष्यति चपाचिका॥५१॥ अन्नानांनियमोनास्तियोनीनांचविशेषतः ॥ आश्रमाणांजनानांचसर्वेम्लेच्छाःकलौयुगे॥५२॥

स्याःकोवाभर्तेतिनिर्णयः सर्वेषांपरस्परंपत्नीभर्तृभावान् वस्तूनांचविशेषतोनिर्णयइत्यर्थः ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ कुहूरा त्रिरमावास्यारात्रिः ॥ ५० ॥ कुट्टनीत्यत्रकुष्ठिनीत्यपिकचित्पाठः तदाकुष्ठवतीत्यर्थः रंधनागरेणकशालायां ॥ ५१ ॥ योनीनांस्त्री नांजनानामाश्रमाणांचननियमइत्यर्थः ॥ ५२ ॥

टी.अ.

८

॥३१॥

मानवेमनुष्ये गुष्ठे गुष्ठप्रमाणे वृक्षे च हस्तप्रमाणे नाते सति कलियुगशेषे वृक्षमनुष्या एतत्प्रमाणा भविष्यंतीत्यर्थः ॥ ५३ ॥ विष्णुयज्ञो नामा कश्चि
द्वाहणः ॥ ५४ ॥ घोटकोश्वः ॥ ५५ ॥ कल्के रतर्धाने उत्तरं वृत्तमाह अराजकेति ॥ ५६ ॥ स्थूला स्थूलरूपामही अप्रमाणा बहुविस्ती
र्णेत्यर्थः षड्रात्रमत्यंतसंयोगे द्वितीया षड्रात्रव्यापकवर्षधाराभिराप्नुता सती लोकशून्येत्यर्थः ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ इत्यंकले रवसो नैवातेष

एवं कलौ संप्रवृत्ते सर्वं म्लेच्छमयं भवेत् ॥ हस्तप्रमाणे वृक्षे च अंगुष्ठे चैव मानवो ॥ ५३ ॥ विप्रस्य विष्णुयज्ञसः पुत्रः
कल्किर्भविष्यति ॥ नारायणकलांशश्च भगवान्बलिनां वरः ॥ ५४ ॥ दीर्घेण करवालेन दीर्घघोटकवाहनः ॥
म्लेच्छशून्यां च पृथिवीं त्रिरात्रेण करिष्यति ॥ ५५ ॥ निम्लेच्छां च सुधां कृत्वा चांतर्धनं करिष्यति ॥ अराजका च व
सुधादस्युग्रस्ता भविष्यति ॥ ५६ ॥ स्थूणा प्रमाणं षड्रात्रं वर्षधाराप्नुता मही ॥ लोकशून्या वृक्षशून्या गृहशून्या
भविष्यति ॥ ५७ ॥ ततश्च द्वादशादित्याः करिष्यंत्युदयं मुने ॥ प्राप्नोति शुष्कतां पृथ्वी समातेषां च तेजसा
॥ ५८ ॥ कलौ गते च दुर्दशे प्रवृत्ते च कृते युगे ॥ तपःसत्त्वसमायुक्तो धर्मः पूर्णो भविष्यति ॥ ५९ ॥ तपस्विनश्च ध
र्मिष्ठा वेदज्ञा ब्राह्मणा भुवि ॥ पतिव्रताश्च धर्मिष्ठा योषितश्च गृहे गृहे ॥ ६० ॥ राजानः क्षत्रियाः सर्वे विप्रभक्ता म
नस्विनः ॥ प्रतापवंतो धर्मिष्ठाः पुण्यकर्मरताः सदा ॥ ६१ ॥ वैश्यावाणिज्यनिरता विप्रभक्ताश्च धार्मिकाः ॥ शू
द्राश्च पुण्यशीलाश्च धर्मिष्ठा विप्रसेविनः ॥ ६२ ॥ विप्रक्षत्रविशां वंशादेवी भक्तिपरायणाः ॥ देवीमंत्ररताः सर्वे
देवीध्यानपरायणाः ॥ ६३ ॥

॥ ६४ ॥

॥ ६५ ॥

॥ ६६ ॥

आत्पुनः कृतयुगं प्रवर्तते इत्याह कलौ गते इति ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ सर्वेष्कृतयुगे देवीभक्ताः सर्वकारणमूलप्रकृतिभक्ताः
भविष्यंतीत्यर्थः देवीमंत्रा मायावीजादयस्तस्मिन्निरताः तथा देवीध्यानं तृतीयस्कंधादिषु कृतं तत्परायणाः तन्नामैकविधं तदुक्तं यामले की
रणां पितये देवीं पुंरुमां च विधितयेत् अथवा निष्कलं ध्यायेत् सच्चिदानंदविग्रहमिति पुंरुमां विराड्रूपमित्यर्थः ॥ ६३ ॥

॥ ७ ॥

दे.भा.म

॥३२॥

पूर्वोधर्मः कृतयुगे धर्मः पूर्वधर्मः कृतयुगादित्यर्थः ॥ ६४ ॥ उत्तरोत्तरमेकैकपादसहस्रमाह धर्मस्त्रिपादिति ॥ ६५ ॥ अधुना कालस्वरूपमाह वाराः सप्तैति वाराः सप्तैति वाराः ॥ ६६ ॥ पक्षौ शुक्लकृष्णौ दक्षिणावगमुत्तरावग ॥ ६७ ॥ वर्षपंचविधं त्रिषष्टिमाह वारः सप्तैति वाराः ॥ ६८ ॥ संवत्सरपरिचयसरेडावत्सरादिभेदैः यथाचायांति यांत्येवेति यथादिना न्यायांति यांति च तथादिनात्मकत्वाद्युगानां तान्यप्यायांति यांति चेत्यर्थः ॥ ६८ ॥ मनुष्यादिदिनादीनां स्वरूपमुक्त्वा देवदिनादि स्वरूपमाह वर्षपूर्णे इति मनुष्यवर्षमेव देवानामेकदिनं भवति नराणां षष्टि

श्रुतिस्मृतिपुराणज्ञाः पुमांसक्रतुगामिनः ॥ लेशो नास्ति ह्यधर्मस्य पूर्णोधर्मः कृतयुगे ॥ ६४ ॥ धर्मस्त्रिपादश्चेतायां द्विपादश्चापरेततः ॥ कलौ वृत्ते चैकपादश्च सर्वलुप्तिस्ततः परं ॥ ६५ ॥ वाराः सप्त तथा विप्रतिथयः षोडशस्मृताः ॥ तथा द्वादशमासाश्च क्रतवश्च षडेव च ॥ ६६ ॥ द्वौ पक्षौ चापनेद्वे च चतुर्भिः प्रहरैर्दिनं ॥ चतुर्भिः प्रहरैर्त्रिभिर्मासस्त्रिंशदिनैस्तथा ॥ ६७ ॥ वर्षपंचविधं ज्ञेयं कालसंख्याविधिक्रमे ॥ यथाचायांति यांत्येव यथायुगचतुष्टयं ॥ ६८ ॥ वर्षपूर्णे नराणां च देवानां च दिवानि शं ॥ शतत्रयेष्वधिकेन नराणां च युगे गते ॥ ६९ ॥ देवानां च युगं ज्ञेयं कालसंख्याविदां मतं ॥ मन्वंतरं तु दिव्यानां युगानामेकसप्ततिः ॥ ७० ॥ मन्वंतरं समं ज्ञेयमायुष्यं च शचीपतेः ॥ अष्टाविंशतिमेवैतरे गते ब्रह्मा दिवानि शं ॥ ७१ ॥ अष्टोत्तरशते वर्षे गते पातश्च ब्रह्मणः ॥ प्रलयः प्राकृतो ज्ञेयस्तत्राष्टवसुंधरा ॥ ७२ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ६९ ॥

युगाधिकश्चतस्रयुगविशिष्टे युगे युगसमूहात्मके काले गते सतीत्यर्थः तावत्कालो देवानामेकयुगं ज्ञेयं ॥ ६९ ॥ देवानामेकसप्तति युगात्मकः काल एकं मन्वंतरमित्युच्यते ॥ ७० ॥ एवमष्टाविंशतिमेव शचीपतौ गते सति तावत्परिमितः कालो ब्रह्मणो हिरण्यगर्भस्यैकं दिनं भवतीत्यर्थः ॥ ७१ ॥ एवमष्टोत्तरशतवर्षात्मके काले गते ब्रह्मा पतति तदा प्राकृतः प्रलयो भवतीत्यर्थः तत्रक्रममाह तत्राष्टैति भुवं बले बलं बन्हौ बहिर्वायौ नभस्य भुवि वाप्यस्य महंकारे महत्तत्त्वेऽप्यहं कृतिमहंति प्रकृतौ मायामात्मनि प्रविष्टा पयेदित्येवं क्रमेणोत्तरोत्तरं भूतेषु पूर्वपूर्वभूतानां लयी भवति तथा च बलं च सत्तामिहंकारादिभिरुत्तरोत्तरं मन्वंतरं काले भवति सुंधराः अष्टादश विषयो न भवतीत्यर्थः ॥ ७२ ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७१ ॥

दी.अ.

८

॥३२॥

क्वसुंधरासीनेति चेत्तत्राह जलप्लुतानीति विश्वानिब्रह्मांडानि सर्वाणि वसुंधरासहितानि बलेलीनानीत्यर्थः तदुत्तरं बलमपि न्हौलीनमित्यनु-
 स्मर्यार्थादोध्यं ब्रह्मादयस्तु ज्ञानित्वाच्चिदात्मनिर्लीना भवन्तीत्याह ब्रह्माविष्ण्विति ॥ ७३ ॥ तत्रैवेति चिदात्मन्येव प्रकृतिर्लीना तदभेदे नैव तिष्ठती-
 त्यर्थः तत्र तस्मिन्काले सलयः प्रकृत इत्युच्यते प्रकृतेरपि ब्रह्मणि लीनत्वात् ॥ ७४ ॥ अयं प्राकृतप्रलयपर्यंतं सर्वापि कालः परमेश्वर्यामूलं प्रकृते-
 निमेषमात्रमुच्यत इत्याह निमेषमात्रमिति श्रीदेव्यामायाविशिष्टब्रह्मरूपिण्यामूलप्रकृतेः ॥ ७५ ॥ पुनर्निमेषमात्रेण श्रीमूलप्रकृतेर्निमेषमा-
 त्रेण सृष्टिक्रमेणानंतानि ब्रह्मांडानि भवन्तीत्यत्र गणनासृष्टिप्रलयानां नास्तीत्याह निमेषान्तरकालेनेति तदुक्तमुमासंहितायां निमेषमात्रतोयस्यात्र
 ब्रह्मांडानां च कोटयः जायन्तेऽपि च नश्यन्ति सैषा भगवती शिवेति ॥ ७६ ॥ गतायाता आदौ गताः पश्चादागता इत्यर्थः ॥ ७७ ॥ ब्रह्मां-
 जलप्लुतानि विश्वानि ब्रह्मविष्णुशिवादयः ॥ ऋषयो ज्ञानिनः सर्वे लीनाः सत्ये चिदात्मनि ॥ ७३ ॥ तत्रैव प्रकृ-
 तिर्लीना तत्र प्राकृतिको लयः ॥ लये प्राकृतिके जाते पाते च ब्रह्मणो मुने ॥ ७४ ॥ निमेषमात्रं कालश्च श्रीदेव्याः
 प्रोच्यते मुने ॥ एवं नश्यन्ति सर्वाणि ब्रह्मांडान्यखिलानि च ॥ ७५ ॥ निमेषान्तरकालेन पुनः सृष्टिक्रमेण च ॥ एवं
 कतिविधा सृष्टिर्लयः कतिविधोऽपि वा ॥ ७६ ॥ कति कल्पा गता याताः संख्यां जानाति कः पुमान् ॥ सृष्टीनां चलयानां
 च ब्रह्मांडानां च नारद ॥ ७७ ॥ ब्रह्मादीनां च ब्रह्मांडे संख्यां जानाति कः पुमान् ॥ ब्रह्मांडानां च सर्वेषां ईश्वरश्चैक ए-
 व सः ॥ ७८ ॥ सर्वेषां परमात्मा च सच्चिदानंदरूपधृक् ॥ ब्रह्मादयश्च तस्यां शास्तस्यां शश्च महाविराट् ॥ ७९ ॥
 तस्यां शश्च विराट् क्षुद्रः सैवेयं प्रकृतिः परा ॥ तस्याः सकाशत्संजातोऽप्यर्द्धनारीश्वरस्ततः ॥ ८० ॥ ॥ ६४ ॥
 देहातिजातविकवचनं अनंतब्रह्मांडेष्वनंतब्रह्मविष्ण्वादीनां सत्त्वान्नतेषां संख्यास्तीत्यर्थः तर्हि सर्वेषामपीश्वरः कस्तत्राह ब्रह्मांडानां चेति ॥ ७८ ॥
 महाविराडिति अनेकब्रह्मांडांतर्गतक्षुद्रविराड् रूपानां पूर्वोक्तानां समाप्तिभूतो महाविराडपि परमात्मनोऽश इत्यर्थः ॥ ७९ ॥ ननु पूर्वमूलप्रकृतेः कार-
 णत्वमुक्तमधुना परमात्मनः कारणत्वं कथमुच्यते तत्राह सैवेयं प्रकृतिः परेति न केवलनिर्गुणस्यात्मनः कारणत्वं संभवति किंतु मायाविशिष्टस्यैव त-
 थाचयथा गजशरीरे प्रविष्टं चैतन्यं गज इत्युच्यते तथैव मूलप्रकृतौ प्रविष्टं प्रथमतः चैतन्यं मूलप्रकृतिरेत्युच्यते इति न तयोर्भेद इत्यर्थः तस्या इति तस्याः
 मूलप्रकृतेः सकाशाच्छ्रुत्युक्तप्रकारेण पंचमहाभूतोत्पत्त्यनंतरं पांचभौतिकोर्द्धनारीश्वरोगोपालसुंदरीसंज्ञकः श्रीकृष्णो जात इत्यर्थः ॥ ८० ॥

दे.भा.न.

॥३३॥

॥ ८१ ॥ ८२ ॥ तस्मात्कृष्णाद्ब्रह्मादयोदेवा उत्पन्ना इति पूर्वमुक्तमेव तदेव प्रकारेण सर्वजगद्ब्रह्मैव सत्यमस्तीत्याह सत्यं नित्यमिति
॥ ८३ ॥ तस्यैव मूलप्रकृतेः स्वरूपस्य महिमानमाह करोतीति ॥ ८४ ॥ तपस्तपश्चर्याशिवश्चकारेति शेषः ॥ ८५ ॥ ८६ ॥

सैव कृष्णो द्विधा भूतो द्विभुजश्चतुर्भुजः ॥ चतुर्भुजश्च वैकुण्ठे गोलोके द्विभुजः स्वयं ॥ ८१ ॥ ब्रह्मादितृणपर्यंतं सर्वं प्रा-
कृतिकं भवेत् ॥ यद्यत्प्राकृतिकं सृष्टं सर्वं नश्वरमेव च ॥ ८२ ॥ एवं विधं सृष्टिहेतुसत्यं नित्यं सनातनं ॥ स्वेच्छामयं
परं ब्रह्म निर्गुणं प्रकृतेः परं ॥ ८३ ॥ निरुपाधि निराकारं भक्तानुग्रहकातरं ॥ करोति ब्रह्मा ब्रह्मांडं यज्ज्ञानात्कमलोद्भवः ॥ ८४ ॥
शिवो मृत्युं जयश्चैव संहर्ता सर्वसत्त्ववित् ॥ यज्ज्ञानाद्यस्य तपसा सर्वेशस्तु तपो महान् ॥ ८५ ॥
महाविभूतियुक्तश्च सर्वज्ञः सर्वदर्शनः ॥ सर्वव्यापी सर्वपाताप्रदाता सर्वसंपदां ॥ ८६ ॥ विष्णुः सर्वेश्वरः श्रीमा-
न्यद्भक्त्या यस्य सेवया ॥ महामाया च प्रकृतिः सर्वशक्तिमयी श्वरी ॥ ८७ ॥ सैव प्रोक्ता भगवती सच्चिदानंदरू-
पिणी ॥ यज्ज्ञानाद्यस्य तपसा यद्भक्त्या यस्य सेवया ॥ ८८ ॥ सा वित्री देवमाता च वेदाधिष्ठातृदेवता ॥ पूज्या
द्विजानां वेदज्ञाय ज्ञानाद्यस्य सेवया ॥ ८९ ॥ सर्वविद्याधिदेवी सा पूज्या च विदुषां परा ॥ यत्सेवया यत्तपसा स-
र्वविश्वेषु पूजिता ॥ ९० ॥ सर्वग्रामाधिदेवी सा सर्वसंपत्प्रदायिनी ॥ सर्वेश्वरी सर्ववंध्या सर्वेषां पुत्रदा-
यिनी ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥

॥ ८७ ॥ ८८ ॥ पूर्वोक्ताः पंचप्रकृतयोऽपि मूलप्रकृत्या राधादेवमहत्वं प्राप्नुवन्तीत्याह सा वित्री चेति वेदज्ञात्मा तेत्यर्थः ॥ ८९ ॥
सर्वविद्याधिदेवी सरस्वती पूज्या तेत्यर्थः यत्सेवया यस्या मूलप्रकृतेः सेवया एवं यज्ज्ञानाद्यत्तपसेत्यत्रापि सर्वत्र नोध्यं ॥ ९० ॥ सर्वसंपत्प्रदायि-
नी कर्तुः यज्ज्ञानाद्यत्तपसा सर्वसंपत्प्रदायिनी तेत्यर्थः ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥

टी.अ.

८

॥३३॥

दुर्गासर्वसंस्तुतायस्तेव्याजातेत्यर्थः वत्सेवयाराधिकाप्येवंगुणविशिष्टाजातेत्याह कृष्णवामांशेति ॥९२॥ शक्तिसेवयामूलप्रकृतिसेवयेत्य
र्थः ॥ ९३ ॥ कदाकुत्राराधिकायामूलप्रकृतेःसेवाकृतातदाह तपश्चकारेति ॥ ९४ ॥ किमर्थतपश्चकारतदाह अतिप्राप्त्यर्थमेवचेति
गोपालसुंदरीरूपश्रीकृष्णोमेपतिर्भवत्वेतदर्थमित्यर्थः ततःशक्तेःप्रसादेजातेश्रीकृष्णःपतिरभवदित्याह दृष्ट्वाचंद्रकलोपमामिति ॥ ९५ ॥

सर्वस्तुताचसर्वज्ञासर्वदुर्गार्तिनाशिनी ॥ कृष्णवामांशसंभूताकृष्णप्राणाधिदेवता ॥९२॥ कृष्णप्राणाधिका
प्रेम्णाराधिकाशक्तिसेवया ॥ सर्वाधिकंचरूपंचसौभाग्यंमानगौरवे ॥ ९३ ॥ कृष्णवक्षस्थलस्थानंपत्नीत्वे
प्रापसेवया ॥ तपश्चकारसापूर्वशतशृंगेचपर्वते ॥ ९४ ॥ दिव्यवर्षसहस्रंचपतिप्राप्त्यर्थमेवच ॥ जातेशक्ति
प्रसादेतुदृष्ट्वाचंद्रकलोपमां ॥ ९५ ॥ कृष्णोवक्षस्थलेकृत्वारुरोदकपयाविभुः ॥ वरंतस्यैददौसारंसर्वेषामपिदु
र्लभं ॥ ९६ ॥ ममवक्षस्थलेतिष्ठममभक्ताचशाश्वता ॥ सौभाग्येनचमानेनप्रेम्णाचगौरवेणच ॥९७॥ त्वमे
श्रेष्ठाचज्येष्ठाचप्रेयसीसर्वयोषितां ॥ वरिष्ठाचगरिष्ठाचसंस्तुतापूजितामया ॥ ९८॥ सततंतवसाध्योहंवश्य
श्चप्राणवल्लभे ॥ इत्युक्त्वाचजगन्नाथश्चकारललनांततः ॥ ९९ ॥ सपत्नीरहितांतांचचकारप्राणवल्लभां ॥
अन्यायायाश्चतादेव्यःपूजिताःशक्तिसेवया ॥१००॥ तपस्तुयादृशंयासांतादृक्तादृक्फलंमुने ॥ दिव्यवर्षस
हस्रंचतपस्तत्त्वाहिमाचले ॥ १ ॥ दुर्गाचतत्पदंध्यात्वासर्वपूज्याबभूवह ॥ सरस्वतीतपस्तत्त्वापर्वतेगंध
मादने ॥ २ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥

॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ अन्यायायाइति पंचप्रकृतिव्यातिरिक्तायायादेव्यःपूर्वकलारूपाः कलांशांशरूपावोक्तास्ताः
सर्वाअपिशक्तिसेवयामूलप्रकृतिसेवयैवपूजिताजाताइत्यर्थः ॥ १०० ॥ कयाकतिवर्षपर्यंततपःकृतं तदाह दिव्यवर्षसहस्रमिति ॥ १ ॥
तत्पदंमूलप्रकृतिपदं ॥ २ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.न.

॥३४॥

दिव्यदेवानां लक्षणवर्णनमित्यर्थः ॥ ३ ॥ ४॥ पंचप्रकृतिवद्ब्रह्मादिभिरपिमूलप्रकृत्याराधनादेव तत्तत्पदलब्धमित्याह शतमन्वंतरमिति ॥ ५॥
॥६॥ ७॥ ८॥ ९॥ १०॥ एवं प्रकारासर्वोत्तमा सर्वव्यासर्वकारणामूलप्रकृतिर्भवतीत्यर्थः ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके नवमस्कंधे ऽष्टमोऽध्या

लक्षवर्षे च दिव्यं च सर्वव्यासं भूवसा ॥ लक्ष्मीर्युगशतं दिव्यं तपस्तत्त्वाचपुष्करे ॥ ३ ॥ सर्वसंपत्प्रदा त्रीचजा
ता देवी निषेवणात् ॥ सा वित्री मलये तत्त्वा पूज्या वंद्या भूवसा ॥ ४ ॥ षष्टिवर्षसहस्रं च दिव्यं ध्यात्वा च तत्पदं ॥
शतमन्वंतरं तत्संशंकरेण पुरा विभो ॥ ५ ॥ शतमन्वंतरं चैव ब्रह्मा शक्तिं जजाप ह ॥ शतमन्वंतरं विष्णुस्तत्त्वा पा
ता भूवह ॥ ६ ॥ दशमन्वंतरं तत्त्वा श्रीकृष्णः परमंतपः ॥ गोलोकं प्राप्तवान् दिव्यं मोदते द्यापि यत्र हि ॥ ७ ॥
दशमन्वंतरं धर्मस्तत्त्वा च भक्तिसंयुतः ॥ सर्वप्राणः सर्वपूज्यः सर्वाधारो भूवसः ॥ ८ ॥ एवं देव्याश्च तपसा स
र्वदेवाश्च पूजिताः ॥ मुनयो मनवो भूपा ब्राह्मणाश्चैव पूजिताः ॥ ९ ॥ एवं ते कथितं सर्वपुराणं च यथा गमं ॥ गुरुव
क्ता यथा ज्ञातं किं भूयः श्रोतुमिच्छसि ॥ १० ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापु० नवमस्कंधे शक्तिप्रादुर्भावे नारदना
रायणसंवादे ऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ श्रीनारद उवाच ॥ देव्यानि मे षमात्रेण ब्रह्मणः पात एव च ॥ तस्य पातः प्राकृति
कः प्रलयः परिकीर्तितः ॥ १ ॥ प्रलये प्राकृते चोक्ता तत्रादृष्टा वसुंधरा ॥ जलक्षुतानि विश्वानि सर्वे लीनाः परात्म
नि ॥ २ ॥ वसुंधरा तिरोभूता कुत्र वासा च तिष्ठति ॥ सृष्टेर्विधानसमये सा विभूता कथं पुनः ॥ ३ ॥ कथं बभूव
सा धन्या मान्या सर्वा श्रया जया ॥ तस्याश्च जन्म कथनं वदमंगलकारणं ॥ ४ ॥

॥ ६५ ॥

यः ॥ ८ ॥ त्रिषष्टिश्चोर्वैस्तु शतयुत्पत्तिप्रसंगतः ॥ भूमिशक्तेः समुत्पत्तिर्यथा वदामि वर्ण्यते ॥ १ ॥ अत्रेष्टमं प्रार्थयित्वा ध्यायित्वा योक्तार्यं संक्षेपेण
बुद्धति देव्यानि मे षेति ॥ २ ॥ अदृष्टा जले लीनेत्यर्थः ॥ २ ॥ कथं पुनरिति जले लीना पुनः कथमुत्पत्तेर्यर्थः ॥ ३ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥

टी. अ.

८

॥३४॥

तत्र सर्वेमादसदुत्पत्तिमादंखंडयन्सदुत्पत्तिवादमखंड्योत्तरयति सर्वादिसृष्टावेति इतिश्रुतिरिति मयावाएषानारसिंहीसर्वमिदंसृजतीत्यादि नतस्यकारणकारणमिदमेतस्यशास्त्रिर्विधैवभूयतेइत्यादि सर्वेदेवादेवीमुपस्थुः कासिल्लमहादेवि सज्जवीदंजवास्मिमीमत्तःभूतिपुरुषात्मकंजगदित्यादिश्रुतयक्रहाः तत्रोत्पत्तिनामनापूर्वोद्भवोऽध्यापुत्रादेरप्युत्पत्तिप्रसंगात्किंतुसतांमूलप्रकृत्यात्मनाविद्यमानानामेवाविर्भावउत्पत्तिस्तिरोभावोनाशइत्यभिप्रायेणाह आविर्भावइति ॥ ५ ॥ ६ ॥ भूजन्मविषयेपरमतमुपन्यस्यखंडयति अहोकेचिदिति मधुकैटभयोर्मरणेतयोःशरीरान्मेदउत्पन्नंजलोपरिस्थितमेवसूर्यकिरणैर्घनीभूतंमेदिनीपदवाच्यंभवतीत्यर्थः तन्मतमतोवक्ष्यमाणात्कारणादिरुद्धंभवति किंतत्कारणंताहिंशृगु ॥ ७ ॥ ऊचतुरिति हेविष्णोतवयुद्धेनतेजसावांतुष्टौस्वोवरंवृणु ततोमत्तोभवतोर्मरणंभवत्विति विष्णुनावृतेयत्रोर्वीपाथसाज

श्रीनारायणउवाच ॥ सर्वादिसृष्टैसर्वेषांजन्मदेव्याइतिश्रुतिः ॥ आविर्भावस्तिरोभावःसर्वेषुप्रलयेषुच ॥ ५ ॥ श्रूयतांवसुधाजन्मसर्वमंगलकारणं ॥ विघ्ननिघ्नकरंपापनाशनंपुण्यवर्धनं ॥ ६ ॥ अहोकेचिद्वदंतीतिमधुकैटभमेदसा ॥ बभूववसुधाधन्यातद्विरुद्धमतःशृणु ॥ ७ ॥ ऊचतुस्तौपुराविष्णुंतुष्टौयुद्धेनतेजसा ॥ आवांवधोनयत्रोर्वीपाथसासंवृतेतिच ॥ ८ ॥ तयोर्जीवनकालेनप्रत्यक्षासाभवत्स्फुटं ॥ ततोबभूवमेदश्चमरणानंतरंतयोः ॥ ९ ॥ मेदिनीतिचविख्यातेत्युक्तमेतन्मतंशृणु ॥ जलधौताकृतापूर्ववर्धितामेदसायतः ॥ १० ॥

लेननसंवृतानयुक्तातत्रावांस्त्वयाकार्यइतितावूचतुरित्यर्थः यदितयोर्मरणात्पूर्वमुर्वीनास्तितदानयत्रोर्वीतिकथनमसंगतमेवस्यात्किंचमेदसोरसत्वेनजलसंबंधेसूर्यशतेरपितस्यशुष्कतापादनस्यासंभवश्चस्यादितिभावः ॥ ८ ॥ तस्मात्पूर्वोक्तंमतंनयुक्तंकिंत्वेतादित्याह तयोर्जीवनेति तयोर्जीवनकालेमेदिनीजलेनिमग्रास्थिताताभ्यांज्ञाताचसाप्रत्यक्षातुनासीत्तज्ज्ञात्वाताभ्यामुर्व्यभावान्मरणंनभविष्यतीतिविचिंत्यनयत्रोर्वीपाथसासंवृतेतिवाक्यमुक्तंतदन्तरंजघनरूपायामुर्वीतयोर्नाशकृतेमेदउत्पन्नंजलोपरिस्थितं पश्चाद्वराहेणधरोद्वारेजलात्कृतेसतिमेदःसंबंधोपरायांजातस्ततोमेदोयुक्तत्वान्मेदिनीतिनामाभवदित्यर्थः ॥ ९ ॥ एतन्मतमेवमुख्यंसंग्रहेणोच्यतेतच्छृण्वित्याह मतंशृण्विति संग्रहवाक्यंवदति जलधौतेति यतोऽजलाभिष्कासनानंतरंमेदसावर्द्धिताततएवमेदिनीजातेतिशेषः ॥ १० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.न

॥३५॥

इत्थंस्तमतमुपपाद्यधरोत्पत्तिमाह कथयामीति सार्यकंसप्रयोजनं ॥ ११ ॥ महाविराजःपूर्वोक्तस्यमनःसर्वागव्यापकंबभूव ततस्तन्मनो
लोक्षांस्त्रिवरेषुप्रविष्टमास ततःपञ्चीकरणसमयेयामहापृथ्वीजातातस्याअनेकान्खंडान्कृत्वालोमविवरेषुजलमध्येखंडशःपृथ्वीस्यापिताससृ
ष्टिकालेआविर्भूताभवतिजलात् प्रलयकालेतिरोभूताजलेएवभवतीत्यर्थः ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ अतिब्रह्मांडंविद्यमानं

कथयामि च तज्जन्मसार्थकं सर्वमंगलं ॥ पुराश्रुतं यच्छ्रुत्युक्तं धर्मवक्त्राच्च पुष्करे ॥ ११ ॥ महाविराट्शरीरस्य जलस्थ
स्य चिरं स्फुटं ॥ मनो बभूव कालेन सर्वांगव्यापकं ध्रुवं ॥ १२ ॥ तच्च प्रविष्टं सर्वेषां तल्लोम्नां विवरेषु च ॥ कालेन
महता पश्चाद्बभूव वसुधामुने ॥ १३ ॥ प्रत्येकं प्रतिलोम्नां च कूपेषु संस्थिता सदा ॥ आविर्भूता तिरोभूता स जला
च पुनः पुनः ॥ १४ ॥ आविर्भूता सृष्टिकाले तज्जलोपर्युपस्थिता ॥ प्रलये च तिरोभूता जलस्याभ्यन्तरे स्थिता
॥ १५ ॥ प्रतिविश्वेषु वसुधा रैल काननसंयुता ॥ सप्तसागरसंयुक्ता सप्तद्वीपसमन्विता ॥ १६ ॥ हेमाद्रिमेरु
संयुक्ता ग्रहचन्द्रार्कसंयुता ॥ ब्रह्मविष्णुशिवाद्यैश्च सुरैर्लोकैस्तदाज्ञया ॥ १७ ॥ पुण्यतीर्थसमायुक्ता पुण्यभार
तसंयुता ॥ कांचनीभूमिसंयुक्ता सप्तस्वर्गसमन्विता ॥ १८ ॥ पातालसप्ततदधस्तदूर्ध्वं ब्रह्मलोककः ॥ ध्रुव
लोकश्च तत्रैव सर्वविश्वं च तत्र वै ॥ १९ ॥ एवं सर्वाणि विश्वानि पृथिव्यां निर्मितानि च ॥ न श्वराणि च विश्वानि सर्वा
णि कृत्रिमाणि वै ॥ २० ॥ प्रलये प्राकृते चैव ब्रह्मणश्च निपातने ॥ महाविराडादिसृष्ट्यैः सृष्टः कृष्णेन चात्मना
॥ २१ ॥ नित्यौ स्थितिश्च प्रलयौ काष्ठाकालेश्वरैः सह ॥ नित्याधिष्ठातृदेवी सा वाराहे पूजिता सुरैः ॥ २२ ॥

वसुधावर्णयति प्रतिविशेष्यति ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ पातालसंपातालसप्तकमित्यर्थः ॥ १९ ॥ विश्वानिलोकादित्यर्थः कृत्रिमा
णिमिथ्यानीत्यर्थः ॥ २० ॥ २१ ॥ नित्यौप्रवाहरूपेणनित्यौननुपरमार्थनित्यौस्थितिप्रलयौ नित्याधिष्ठात्रीति नित्याप्रवाहरूपेणनित्याधृषि
कालमाधधिष्ठात्रीदेवीमूर्तिमतीवाराहेवाराहकल्पेभूम्युद्धारानंतरंपूजितेत्यर्थः ॥ २२ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

टी.अ.

2

013 031

साम्प्रतिर्वाहस्यविष्णोःपत्नीत्यर्थः ॥ २३ ॥ तत्पुत्रोवराहात्पृथिवीदेवतायागर्भेवातोमंगलस्तत्पुत्रोवदेशित्यर्थः ॥ २४ ॥ वापली
पृथ्वी पृथिव्याविशेषणं मूलप्रकृतिसंभूतेति केनप्रकारेणमूलप्रकृतेःसंभूतातत्राह पंचीकरणमार्गतइति ॥ २५ ॥ अथःपृथिव्यामूर्ध्वस्तर्जोके

मुनिभिर्मनुभिर्विप्रैर्गंधर्वादिभिरेवच ॥ विष्णोर्वराहरूपस्यपत्नीसाश्रुतिसंमता ॥ २३ ॥ तत्पुत्रोमंगलेज्ञेयो
घटेशोमंगलात्मजः ॥ श्रीनारदउवाच ॥ पूजिताकेनरूपेणवाराहेचसुरैर्मही ॥ २४ ॥ वाराहेचैववाराहीसर्वैः
सर्वाश्रयासती ॥ मूलप्रकृतिसंभूतापंचीकरणमार्गतः ॥ २५ ॥ तस्याःपूजाविधानंचाप्यधश्चोर्ध्वमनेकशः ॥
मंगलमंगलस्यापिजन्मव्यासंवदप्रभो ॥ २६ ॥ नारायणउवाच ॥ वाराहेचवराहश्चब्रह्मणासंस्तुतःपुरा ॥
उद्धधारमहीहत्वाहिरण्याक्षंरसातलात् ॥ २७ ॥ जलेतांस्थापयामासपद्मपत्रंयथाहृदे ॥ तत्रैवनिर्ममेब्रह्मावि
श्वंसर्वमनोहरं ॥ २८ ॥ दृष्ट्वातदाधिदेवींचसकामांकामुकोहरिः ॥ वाराहरूपीभगवानूकोटिसूर्यसमप्रभः ॥ २९ ॥
कृत्वारतिकलांसर्वांमूर्तिंचसुमनोहरां ॥ क्रीडांचकाररहसिदिव्यवर्षमहर्निशं ॥ ३० ॥ सुखसंभोगसंस्पर्शा
न्मूर्त्तीसंप्रापसुंदरी ॥ विदग्धायाविदग्धेनसंगमोतिसुखप्रदः ॥ ३१ ॥ विष्णुस्तदंगसंश्लेषाद्बुधेनादिवानिशं ॥
वर्षांतेचेतनांप्राप्यकामीतत्याजकामुकीं ॥ ३२ ॥ पूर्वरूपंवराहंचदधारसचलीलया ॥ पूजांचकारत्तदधिदेवींध्यात्वा
चधरणींसतीं ॥ ३३ ॥ धूपैर्दीपैश्चनैवेद्यैःसिंदूरैरनुलेपनैः ॥ वस्त्रैःपुष्पैश्चबलिभिःसंपूज्योवाचतांहरिः ॥ ३४ ॥
श्रीभगवानुवाच ॥ सर्वाधाराभवशुभेसर्वैःसंपूजितासुखं ॥ मुनिभिर्मनुभिर्देवैःसिद्धैश्चदानवादिभिः ॥ ३५ ॥

थापूजाविधानंभवतितत्त्व्यासंविस्तारेणयथास्यात्तथाकथय जन्मापिकथयेत्यर्थः ॥ २६ ॥ हिरण्याक्षंहत्वेत्यर्थः ॥ २७ ॥ २८ ॥
अधिदेवीपृथ्वीस्वामिनीसुंदरीस्त्रियं ॥ २९ ॥ मूर्तिमिति वराहोरतियोम्यांस्वमूर्तिकृतवानित्यर्थः ॥ ३० ॥ विदग्धायाविरहिण्याः
॥ ३१ ॥ ३२ ॥ वराहरूपंधृत्वातेनरूपेणतांदेवींध्यात्वापूजांचकारेत्यर्थः ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥

दे.भा.न

॥३६॥

अंबुवाचीत्यागेति आर्द्राक्षत्रावपादावच्छेदेनपृथिवीऋतुमतीतिष्ठतितस्यारजस्वलायाःपृथ्व्याअंबुवाचीतिसंज्ञातस्यागदिनेतद्विनादिनेतवपूजां
करिष्यंतीत्यन्वयः तदिहस्यनिषिद्धत्वंकृत्यतत्वेज्योतिःशास्त्रोक्तं मृगशिरसिनिपातेरौद्रपादैर्बुवाचिऋतुमातिखलुपृथ्वीवर्जयेन्नीप्यहानि न

टी.अ.

९

अंबुवाचीत्यागादिनेगृहारंभेप्रवेशने ॥ वापीतडागारंभेचगृहेचकृषिकर्मणि ॥ ३६ ॥ तवपूजांकरिष्यंतिमद्व
रेणसुरादयः ॥ मूढायेनकरिष्यंतियास्यंतिनरकंचते ॥ ३७ ॥ वसुधोवाच ॥ वहामिसर्ववाराहरूपेणाहंतवा
ज्ञया ॥ लीलामात्रेणभगवन्विश्वंचसचराचरं ॥ ३८ ॥ मुक्तांशुक्तिंहरेरर्चाशिवलिङ्गंशिवांतथा ॥ शंखंप्रदीपं
यंत्रंचमाणिक्यंहीरकंतथा ॥ ३९ ॥ यज्ञसूत्रंचपुष्पंचपुस्तकंतुलसीदलं ॥ जपमालांपुष्पमालांकर्पूरंचसुव
र्णकं ॥ ४० ॥ गोरोचनंचंदनंचशालग्रामजलंतथा ॥ एतान्वोदुमशक्ताहंछिद्यचभगवञ्छृणु ॥ ४१ ॥ श्रीभ
गवानुवाच ॥ द्रव्याण्येतानियेमूढाअर्पयिष्यंतिसुंदरि ॥ यास्यंतिकालसूत्रंतेदिव्यंवर्षशतंत्वयि ॥ ४२ ॥ इ
त्येवमुक्त्वाभगवान्विररामचनारद ॥ बभूवतेनगर्भेणतेजस्वीमंगलग्रहः ॥ ४३ ॥ पूजांचक्रुःपृथिव्याश्रितेस
र्वेचाज्ञयाहरेः ॥ कण्वशास्त्रोक्तध्यानेनतुष्टुवृश्चस्तवेनते ॥ ४४ ॥ ददुर्मूलेनमंत्रेणनैवेद्यादिकमेवच ॥ संस्तु
तात्रिषुलोकेषुपूजितासाबभूवह ॥ ४५ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ किंध्यानंस्तवनंतस्यामूलमंत्रंचकिंवद ॥ गूढं
सर्वपुराणेषुश्रोतुंकौतूहलंमम ॥ ४६ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ आदौचपृथिवीदेवीवराहेणचपूजिता ॥ ततो
हिब्रह्मणापश्चात्पूजितापृथिवीतदा ॥ ४७ ॥ ततःसर्वैर्मुनींद्रैश्चमनुभिर्मानवादिभिः ॥ ध्यानंचस्तवनमंत्रंशृ
णुवक्ष्यामिनारद ॥ ४८ ॥

॥ ४९ ॥

॥ ४९ ॥

॥ ४९ ॥

स्वाध्यायोवषट्कारोदेवपितृपूजनं नापिपाठोबीजवापोनवाभूखननादिकमित्यादि ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ अहंरूपेणस्वरूपेणेत्यर्थः ॥ ३८ ॥ अर्चा
तिमांशालग्रामश्चशिवादेवीप्रतिमां ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥

प्रणवमायार्थीकामर्त्तिपूर्वकोवसुधायैस्महेतिमंत्रः ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥
 ॥ ५९ ॥ भूमिदानहरणात्पापादित्यर्थः अंबुवाचीभूकरणेति अंबुवाचीपूर्वोक्तलक्षणारजस्वलाभूः पृथिवीतस्याः करणात्स्वननादित्यर्थः
 ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं वसुधायै स्वाहेत्यनेन मंत्रेण विष्णुना पूजितापुरा ॥ श्वेतपंकजवर्णाभ्यां शरच्चंद्रानिभाननां ॥ ४९ ॥
 चंदनोत्क्षिप्तसर्वांगीरत्नभूषणभूषितां ॥ रत्नाधारारत्नगर्भां रत्नाकरसमन्वितां ॥ ५० ॥ वान्निशुद्धां शुकाधा-
 नां सस्मितां वंदितां भजे ॥ ध्यानेनानेन सा देवी सर्वैश्च पूजिता भवत् ॥ ५१ ॥ स्तवनं शृणु विप्रेन्द्र कण्वशाखोक्त-
 मेव च ॥ श्रीनारायण उवाच ॥ जये जये जलाधारे जलशाले जयप्रदे ॥ ५२ ॥ यज्ञसूकरजाये च जयं देहि जयावहे
 ॥ मंगले मंगलाधारे मां गल्ये मंगलप्रदे ॥ ५३ ॥ मंगलार्थं मंगलेशे मंगलं देहि मे भवे ॥ सर्वाधारे च सर्वज्ञे सर्वशक्ति-
 समन्विते ॥ ५४ ॥ सर्वकामप्रदे देवि सर्वेष्टं देहि मे भवे ॥ पुण्यस्वरूपे पुण्यानां बीजरूपे सनातनि ॥ ५५ ॥
 पुण्याश्रये पुण्यवतामालये पुण्यदे भवे ॥ सर्वसस्यालये सर्वसस्याढ्ये सर्वसस्यदे ॥ ५६ ॥ सर्वसस्यहरे काले
 सर्वसस्यात्मिके भवे ॥ भूमे भूमिप सर्वस्वे भूमिपाल परायणे ॥ ५७ ॥ भूमिपानां सुखकरे भूमिदेहि च भूमिदे ॥
 इदं स्तोत्रं महापुण्यं प्रातरुत्थाय यः पठेत् ॥ ५८ ॥ कोटिजन्मसु स भवेद्बलवान् भूमिपेश्वरः ॥ भूमिदानकृतं
 पुण्यं लभते पठनाज्जनैः ॥ ५९ ॥ भूमिदानहरात्पापान्मुच्यते नात्र संशयः ॥ अंबुवाचीभूकरणपापात्समुच्य-
 ते ध्रुवं ॥ ६० ॥ अन्यकूपे कूपखननपापात्समुच्यते ध्रुवं ॥ परभूमिहरात्पापान्मुच्यते नात्र संशयः ॥ ६१ ॥
 भूमौ वीर्यत्यागपापाद्भूमौ दीपादिस्थापनात् ॥ पापेन मुच्यते सोऽपि स्तोत्रस्य पठनान्मुने ॥ ६२ ॥ अश्वमेध-
 शतं पुण्यं लभते नात्र संशयः ॥ भूमिदेव्या महास्तोत्रं सर्वकल्याणकारकं ॥ ६३ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापु-
 राणेन वमस्कंधेन वमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

॥ ६१ ॥

॥ ६२ ॥

॥ ६३ ॥

॥ ६० ॥ अन्यकूपे इति अन्येन कृते निर्जले कूपे तस्याज्ञां विना तस्य कूपस्य खननजन्यात्पापादित्यर्थः ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ इति श्रीदेवी-
 भागवततिलकेन वमस्कंधेन वमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

दे.भा.न.

॥३७॥

त्रिंशत्यौधरादेव्या अपराधे कृते सति ॥ नरकादिफलप्राप्तिर्जायते चेति कथ्यते ॥१॥ भूमिदानेति ॥ १॥२॥ पापफलं तत्प्रतीकारं च वेदस्यैः ॥३॥ ४ ॥ ५ ॥ उभौ दानुप्रतिगृहीतारौ देवीपुरस्थितौ देवीलोकवासिनौ भवत इत्यर्थः ॥६॥ ७ ॥ वृत्तिवेतनं ॥ ८ ॥ ९ ॥ गवां मार्गवि

टी.अ.

१०

नारद उवाच ॥ भूमिदानकृतं पुण्यं पापं तद्वरणेन च ॥ परभूहरणात्पापं कूपे कूपस्वनने तथा ॥१॥ अंबुवाच्यां
भूखनने वीर्यस्य त्याग एव च ॥ दीपादिस्थापनात्पापं श्रातुमिच्छामि यत्नतः ॥ २ ॥ अन्यवापृथिवीजन्यं पा
पं यत्पृच्छते परं ॥ यदस्ति तत्प्रतीकारं वेदविदां वर ॥ ३ ॥ श्रीनारायण उवाच ॥ वितस्ति मात्रं भूमिं च यो द
दाति च भारते ॥ संध्यापूताय विप्राय स याति शिवमंदिरं ॥ ४ ॥ भूमिं च सर्वसस्याढ्यां ब्राह्मणाय ददाति च ॥ भू
मिरेणुप्रमाणाब्दमंते विष्णुपदे स्थितिः ॥ ५ ॥ ग्रामं भूमिं च धान्यं च ब्राह्मणाय ददाति यः ॥ सर्वपापाद्विनिर्मुक्तौ
चोभौ देवीपुरस्थितौ ॥ ६ ॥ भूमिदानं च तत्कालेयः साधुश्चानुमोदते ॥ स च प्रयाति वैकुण्ठे मित्रगोत्रसमन्वितः
॥ ७ ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा ब्रह्मवृत्तिं हरे तु यः ॥ स तिष्ठति कालसूत्रे यावच्चंद्रादिवाकरौ ॥ ८ ॥ तत्पुत्रपौत्रप्र
भृतिर्भूमिहीनः श्रिया हतः ॥ पुत्रहीनो दरिद्रश्च घोरं याति चरौरवं ॥ ९ ॥ गवां मार्गविनिष्कृष्य यश्च सस्यं ददाति
च ॥ दिव्यं वर्षशतं चैव कुंभीपाके च तिष्ठति ॥ १० ॥ गोष्ठं तडागं निष्कृष्य मार्गं सस्यं ददाति यः ॥ स च तिष्ठत्यसि
पत्रे यावदिंद्राश्चतुर्दश ॥ ११ ॥

॥ ६४ ॥

॥ ६४ ॥

॥ ६४ ॥

निष्कृष्येति धर्मशास्त्रे ग्रामाद्वह्निर्गोप्रचारदेशं विहाय सस्यं क्षेत्रं कर्तव्यमिति नियमस्तत्र यः पुरुषस्तं गवां मार्गं गोप्रचारदेशं विनिष्कृष्य मृहीत्वा
तस्मिन् देशे सस्यं कृत्वा तत्सस्यं धान्यं क्षेत्रं ब्राह्मणाय ददातीत्यर्थः ॥ १० ॥ गोष्ठं तडागमिति यत्र देशो गावो वर्षातपादिनिवृत्त्यर्थं वर्षातपादिना
भ्राष्ट्रित्ते देशे तिष्ठति स देशो गोष्ठः तं देशं तपातडागं च निष्कृष्य कृष्योपमृशतस्मिन् मार्गं स्थाने सस्यं कृत्वा ददातीत्यर्थः ॥ ११ ॥

॥३७॥

पंचपिंडान्मृत्तिकायाः परकूपेऽदमुपलक्षणंतडागादेः ॥ १२ ॥ वर्षमिति ज्ञात्यैकवचनं वर्षाणीत्यर्थः ॥ १३ ॥ अंबुवाचीपूर्वोक्तलक्षणारब्धस्वल्पापृथिवीतस्यां भूकरणादुत्पन्ननादित्यर्थः ॥ १४ ॥ कूपं मूढ इति तत्कूपस्वामिन आज्ञां विनेत्यर्थः तदा ज्ञया करणे तु बीर्णोद्धारफलस्य सत्त्वाद्दोषः तथैव लुप्तायां पुष्करिण्यां तत्स्वामिन आज्ञां विना पुष्करिणीकृत्वेत्यर्थः तदा ज्ञया करणे तु पुण्यमेव ॥ १५ ॥ १६ ॥

पंचपिंडाननुत्थृत्य परकूपे च स्नातियः ॥ प्राप्नोति नरकं चैव स्नानं निष्फलमेव च ॥ १२ ॥ कामी भूमौ च रहसि वीर्यत्यागं करोति यः ॥ भूमिरेणुप्रमाणं च वर्षं तिष्ठति रौरवे ॥ १३ ॥ अंबुवाच्यां भूकरणं यः करोति च मानवः ॥ स याति कृमिदंशं च स्थितिस्तत्र चतुर्युगं ॥ १४ ॥ परकीये लुप्तकूपे कूपं मूढः करोति यः ॥ पुष्करिण्यां च लुप्तायां पुष्करिणीं ददाति यः ॥ १५ ॥ सर्वफलं परस्यैव तत्तकुंडं ब्रजे च सः ॥ तत्र तिष्ठति संतप्तो यावदिन्द्राश्चतुर्दश ॥ १६ ॥ परकीये तडागे च पंकमुद्भृत्य चोन्मृजेत् ॥ रेणुप्रमाणवर्षं च ब्रह्मलोके वसेन्नरः ॥ १७ ॥ पिंडं पित्रे भूमिभर्तुर्न प्रदाय च मानवः ॥ श्राद्धं करोति यो मूढो नरकं याति निश्चितं ॥ १८ ॥ भूमौ दीपं यो र्पयति स चांधः सप्तजन्मसु ॥ भूमौ शंखं च संस्थाप्य कुष्ठं जन्मांतरे लभेत् ॥ १९ ॥ मुक्तं माणिक्यं हीरो च सुवर्णं च मणितथा ॥ पंचसंस्थापयेद्भूमौ स चांधः सप्तजन्मसु ॥ २० ॥ शिवलिंगं शिवमर्चयिष्यति भूतले ॥ शतमन्वंतरं यावत्कृमिभक्षस्स तिष्ठति ॥ २१ ॥ शंखं यंत्रं शिलातोयं पुष्पं च तुलसीदलं ॥ यश्चार्पयति भूमौ च स तिष्ठेन्नरकं ध्रुवं ॥ २२ ॥ ॥ ६४ ॥

पंकमुद्भृत्योन्मृजेत्स्नायात् ॥ १७ ॥ पिंडं पित्रे इति पिंडमित्युपलक्षणं किंचित्द्रव्यं यथासंभवं भूमिभर्तुरिषीव तितत्पित्रादेस्तास्मिन्मृते सति तत्सहितस्य श्राद्धोद्देशेन ब्राह्मणाय न प्रदाय श्राद्धं करोतीत्यर्थः इदं यन्मौल्येन गृहं न गृहीतं तद्विषयमौल्येन गृहीते तु न तत्र तदुद्देशेन तदेयमिति ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ मणिमाणिक्यादिकं ॥ २० ॥ शिवां देवीमूर्तिं अर्चीक्षालग्रामं ॥ २१ ॥ शंखादीनां पुनरुपलक्षणमिति निषिद्धवचनो धनार्थः ॥ २२ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.न.

॥३८॥

॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ सर्ववर्णकैः सर्ववर्णैः पूज्यं न को वाप्यवत्तनः कर्तव्य इति प्रसंगादुक्तं यदा यतः पूज्यं ततो भूमौ यः स्थापयेदिति पूर्वोक्तम् ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ भूम्यादिष्वदामां निरुक्तिमाह भवनमिति पृथो राज्ञः कन्यात्वाद्विस्तृतत्वाद्वापृथिवीत्यर्थः पृषोद

टी. अ.

१०

जपमालां पुष्पमालां कूर्पूरं रोचनां तथा ॥ यौमूढश्चार्पयेद्भूमौ स याति नरकं ध्रुवं ॥ २३ ॥ भूमौ चंदनकाष्ठं च रुद्राक्षं कुशमूलकं ॥ संस्थाप्य भूमौ नरके वसेन्मन्वंतरावधि ॥ २४ ॥ पुस्तकं यज्ञसूत्रं च भूमौ संस्थापयेन्नरः ॥ न भवेद्विप्रयो नौ च तस्य जन्मांतरे जनिः ॥ २५ ॥ ब्रह्महत्यासमं पापमिह वैलभते ध्रुवं ॥ ग्रंथियुक्तं यज्ञसूत्रं पूज्यं च सर्ववर्णकैः ॥ २६ ॥ यज्ञं कृत्वा तु यो भूमिं क्षीरेण न हि सिंचति ॥ स याति तप्तभूमिं च संतप्तः सप्तजन्मसु ॥ २७ ॥ भूकं पेग्रहणे यो हिकरोति खननं भुवः ॥ जन्मांतरे महापापो ह्यंगहीनो भवेत्ध्रुवं ॥ २८ ॥ भवनं यत्र स वैष्णो भूमिस्तेन प्रकीर्तिता ॥ काश्यपीकश्यपस्येयमचला स्थिररूपतः ॥ २९ ॥ विश्वं भूराधारणाच्चानंतानंतस्वरूपतः ॥ पृथिवी पृथुकन्यात्वाद्विस्तृतत्वान्महामुने ॥ ३० ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे नवमस्कंधे दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ नारद उवाच ॥ श्रुतं पृथिव्युपाख्यानमतीव सुमनोहरं ॥ गंगोपाख्यानमधुनावददेद्विदांबर ॥ १ ॥ भारते भारतीशापात्साजगाम सुरेश्वरी ॥ विष्णुस्वरूपा परमास्वयं विष्णुपदीति च ॥ २ ॥ कथं कुत्र युगेऽत्रैतत्प्रार्थिता प्रेरिता पुरा ॥ तत्कर्म श्रोतुमिच्छामि पापघ्नं पुण्यदं शुभं ॥ ३ ॥ श्रीनारायण उवाच ॥ राजराजेश्वरः श्रीमान्सगरः सूर्यवंशजः ॥ तस्य भार्या च वैदर्भी शैब्या च द्वे मनोहरे ॥ ४ ॥ ॥ ६५ ॥

रादित्वात्साधुत्वं ॥ २९ ॥ ३० ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके नवमस्कंधे दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ पंचसप्ततिपद्यैस्तु गंगोत्पत्तिः समुच्यते ॥ यस्यास्तु भ्रवणेनैवाचित्तशुद्धो भवेन्नरः ॥ १ ॥ पृथिव्युपाख्यानानंतरं गंगोपाख्यानं पृच्छति नारद उवाच श्रुतं पृथिव्युपाख्यानमिति ॥ २ ॥ भारतीशापात्सर्वमुपपादितान् ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥३८॥

शैब्याय शिवेरपत्यकन्यायां असमंजास्तन्नामकः पुत्रो जातः ॥ ५ ॥ अन्यावैदर्भो नान्नीराजकामिनी ॥ ६ ॥ करोति किमिदं त्वया फलं
दत्तमित्यभिप्रायेण ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ कपिलस्येति सगरे अश्वमेधार्थं प्रवृत्ते तं यज्ञीयमश्वमपहृत्यैद्रोधाननिष्ठस्य कपिलस्य पृष्ठदेशे बन्धपश्च

तत्पत्न्यामेकपुत्रश्च बभूव सुमनोहरः ॥ असमंजा इति ख्यातः शैब्यायां कुलवर्द्धनः ॥ ५ ॥ अन्याचाराधयामा
सशंकरं पुत्रकामुकी ॥ बभूव गर्भस्तस्याश्च हरस्य च वरेण च ॥ ६ ॥ गतेशताब्दे पूर्णे च मांसपिंडं सुषावसा ॥
तं दृष्ट्वा सा शिवं ध्यात्वा रुरोदोच्चैः पुनः पुनः ॥ ७ ॥ शंभुर्ब्राह्मणरूपेण तत्समीपं जगाम ह ॥ चकार संविभज्यैत
त्पिंडं षष्टिसहस्रधा ॥ ८ ॥ सर्वे बभूवुः पुत्राश्च महाबलपराक्रमाः ॥ ग्रीष्ममध्याह्नमार्तेऽप्रभामुष्टकलेवराः
॥ ९ ॥ कपिलस्य मुनेः शापाद्बभूवुर्भस्मसाञ्चते ॥ राजारुरोद तच्छ्रुत्वा जगाम गहने वने ॥ १० ॥ तपश्चकारा
समंजा गंगानयनकारणात् ॥ लक्षवर्षं तपस्तप्त्वा ममार कालयोगतः ॥ ११ ॥ अंशुमांस्तस्य तनयोगं
गानयनकारणात् ॥ तपः कृत्वा लक्षवर्षं ममार कालयोगतः ॥ १२ ॥ भगीरथस्तस्य पुत्रो महाभागवतः
सुधीः ॥ वैष्णवो विष्णुभक्तश्च गुणवान्जरामरः ॥ १३ ॥ तपः कृत्वा लक्षवर्षं गंगानयनकारणात् ॥ दद
र्शकृष्णं ग्रीष्मस्थसूर्यकोटि समप्रभं ॥ १४ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥

द्राजपुत्राः सगरा अश्वान्वेषणे चलितास्तत्र देशे कपिलसंनिधावश्वं दृष्ट्वन्तस्ततो यमेवाश्वहर्त्ता चैरोस्तीत्युचुः ततो मुनिना शापेन भस्मीकृता इति क
थापुराणां तरे प्रसिद्धं ॥ १० ॥ असमंजाद्वितीयो राजपुत्रः पितृव्यानां शापदग्धानामुद्धारार्थं गंगानयने देशे न तपश्चकारेत्यर्थः ॥ ११ ॥
तत्पुत्रोऽंशुमानस्यैव ममारेत्याह अंशुमानिति ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥

दे.भा.न

॥३९॥

गोपालसुंदरीरूपमिति कदाचिदाद्याललितापुंरूपाकृष्णविग्रहेतितंभराबेस्यावतारस्यसष्टत्वात् ध्यानंचतंत्रांतरेस्पष्टमेव गोपालसुंदर्याःगो
लोकेअधिष्ठात्रीदेवतामुख्यत्वेनगोपालसुंदर्यैवसृष्टेरादौमूलप्रकृतेर्गोपालसुंदरीउत्पन्नाततोऽन्याःशक्तयस्ततएवास्मिन्भागवतेगोपालसुंदरीरू
पश्रीकृष्णस्यपुनःपुनर्महिमाप्रोच्यतेइतिबोध्यं सखीविषधारीश्रीकृष्णोगोपालसुंदरी ॥ १५ ॥ १६ ॥ प्रकृतेःपरमितिवास्तविकात्म

द्विभुजंमुरलीहस्तंकिशोरंगोपवेषिणं ॥ गोपालसुंदरीरूपंभक्तानुग्रहरूपिणं ॥ १५ ॥ स्वेच्छामयंपरं
ब्रह्मपरिपूर्णतमंप्रभुं ॥ ब्रह्मविष्णुशिवाद्यैश्चस्तुतंमुनिगणैर्नुतं ॥ १६ ॥ निर्लिप्तंसाक्षिरूपंचनिर्गुणंप्रकृ
तेःपरं ॥ ईषद्वास्यप्रसन्नास्यंभक्तानुग्रहकारकं ॥ १७ ॥ बन्दिशुद्धांशुकाधानंरत्नभूषणभूषितं ॥ तुष्टा
वदृष्टानृपतिःप्रणम्यचपुनःपुनः ॥ १८ ॥ लीलयाचवरंप्रापवांछितंवंशतारणं ॥ कृत्वाचस्तवनंदिव्यंपुल
कांकितविग्रहः १९ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ भारतंभारतीशापाद्गच्छशीघ्रंसुरेश्वरि ॥ सगरस्यसुतान्सर्वान्
पूतान्कुरुममाज्ञया ॥ २० ॥ त्वत्स्पर्शवायुनापूतायास्यंतिमममंदिरं ॥ बिभ्रंतोमममूर्तीश्चदिव्यस्यंदनगा
मिनः ॥ २१ ॥ मत्पार्षदाभविष्यंतिसर्वकालंनिरामयाः ॥ समुच्छिद्यकर्मभोगान्कृतान्जन्मनिजन्मनि ॥ २२ ॥
कोटिजन्मार्जितंपापंभारतेयत्कृतंनृभिः ॥ गंगायावातस्पर्शेननश्यतीतिश्रुतौश्रुतं ॥ २३ ॥ स्पर्शनादर्शनाद्दे
व्याःपुण्यंदशगुणंततः ॥ मौसलस्नानमात्रेणसामान्यदिवसेनृणां ॥ २४ ॥ शतकोटिजन्मपापंनश्यतीति
श्रुतौश्रुतं ॥ यानिकानिचपापानिब्रह्महत्यादिकानिच ॥ २५ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥

रूपेणवर्णनं ॥ १७ ॥ १८ ॥ दर्शनोत्तरंस्तवनंकृत्वावांछितंवंशतारणंवरंत्वत्पूर्वजोद्धारार्थंगंगांददामीत्येवंरूपंप्रापेत्यन्वयः ॥ १९ ॥
इत्थंगोपालसुंदरीरूपःश्रीकृष्णोवरंदत्वागंगायदुक्त्वांस्तदाह श्रीभगवानुवाच भारतंभारतीशापादिति ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥
॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

टी.अ.

११

॥३९॥

॥ २६ ॥ किञ्चिदिति पुण्याहादिवसस्नानफलं वेदायत्किञ्चिदेवबुद्धेराविषयत्वाददन्तीत्यर्थः ॥ २७ ॥ संकल्पं स्नानसंकल्पजन्यं फलमित्यर्थः ॥ २८ ॥ संकल्पराहितमुसलस्नानतो विधिराहितस्नानतो यत्फलं पूर्वोक्तं तस्मादशगुणं संकल्पपुरःसरस्नानतो भवतीत्यर्थः ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ अक्षयायामक्षय्यनवम्यां ॥ ३१ ॥ स्नानफलमुक्त्वा दानफलमाह सामान्यदिवसेति शतगुणमिति सामान्यदिवसस्नानाच्छतगुणं

जन्मसंख्यार्जितान्येव कामतोपि कृतानि च ॥ तानि सर्वाणि नश्यन्ति मौसलस्नानतो नृणां ॥ २६ ॥ पुण्याहं स्नानतः पुण्यं वेदानैव वदन्ति च ॥ किञ्चिद्वदन्ति ते विप्रफलमेव यथागमं ॥ २७ ॥ ब्रह्मविष्णुशिवाद्याश्च सर्वे नैव वदन्ति च ॥ सामान्यदिवसस्नानसंकल्पं शृणु सुन्दरि ॥ २८ ॥ पुण्यं दशगुणं चैव मौसलस्नानतः परं ॥ तत्स्त्रिंशद्गुणं पुण्यं रविसंक्रमणे दिने ॥ २९ ॥ अमायां चापि तुल्यं द्विगुणं दक्षिणायने ॥ ततो दशगुणं पुण्यं नराणामुत्तरायणे ॥ ३० ॥ चातुर्मास्यां पौर्णमास्यामनन्तं पुण्यमेव च ॥ अक्षयायां च तुल्यं चैतद्वेदेनिरूपितं ॥ ३१ ॥ असंख्यपुण्यफलदमेतेषु स्नानदानकं ॥ सामान्यदिवसस्नानादानाच्छतगुणं फलं ॥ ३२ ॥ मन्वंतराद्यायांति थौयुगाद्यायां तथैव च ॥ माघस्य सितसप्तम्यां भीष्माष्टम्यां तथैव च ॥ ३३ ॥ अथाप्यशोकाष्टम्यां च नवम्यां च तथा हरेः ॥ ततोऽपि द्विगुणं पुण्यं नन्द्यां तव दुर्लभं ॥ ३४ ॥ दशहरादशम्यां तु युगाद्यादिसमं फलं ॥ नन्दासमं च वारुण्यां महत्पूर्वैश्चतुर्गुणं ॥ ३५ ॥ ततश्चतुर्गुणं पुण्यं द्विमहत्पूर्वैके सति ॥ पुण्यं कोटिगुणं चैव सामान्यस्नानतोऽपि यत् ॥ ३६ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥

मातीरे दानात्फलं भवतीत्यर्थः ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ हरेर्नवम्यां रामनवम्यां नन्दायां तवेति तव दशहरायां नन्दाप्रतिपत्तिरिति स्तस्यामित्यर्थः ॥ ३४ ॥ नन्दा पूर्वोक्ता महत्पूर्वैर्गुह्यगमार्थं महानाख्यामित्यर्थः ॥ ३५ ॥ द्विमहत्पूर्वैके सतीति द्विमहच्छब्दपूर्वैकत्वे वारुणीशब्दस्य सतीत्यर्थः तेन महाम्ना वारुणीति सिद्धं ॥ ३६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.न

चंद्रोपरागसमयेसामान्यस्नानफलात्पूर्वोक्तात्कोटिगुणफलंभवतीत्यर्थः सूर्येसूर्यग्रहेष्वंघ्रहणाद्दशगुणमित्यर्थः ततःसूर्यग्रहफलात्
॥३७॥ तयोर्गंगाभगीरथयोः ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ममान्यद्वांछितमिति भूतलममपातेःकोवाभविष्यतीत्ये

टी.अ.

११

॥४०॥

चंद्रोपरागसमयेसूर्येदशगुणंततः ॥ पुण्यमर्द्धोदयेकालेततःशतगुणफलं ॥ ३७ ॥ इत्येवमुक्तादेवेशोपविररा
मतयोःपुरः ॥ तमुवाचततोगंगाभक्तिनद्यात्मकंधरा ॥ ३८॥ गंगोवाच ॥ यामिवेद्भारतंनाथभारतीशापतःपु
रा ॥ तवाज्ञयाचराजेंद्रतपसाचैवसांप्रतं ॥ ३९॥ दास्यंतिपापिनोमह्यंपापानियानिकानिच ॥ तानिमेकेनन
श्यंतितमुपायंवदप्रभो ॥ ४० ॥ कतिकालंपरिमितंस्थितिर्मेतत्रभारते ॥ कदायास्यामिदेवेशतद्विष्णोःपरमं
पदं ॥ ४१ ॥ ममान्यद्वांछितंयद्यत्सर्वजानासिसर्ववित् ॥ सर्वांतरात्मन्सर्वज्ञतदुपायंवदप्रभो ॥ ४२ ॥ श्री
भगवानुवाच ॥ जानामिवांछितंगंगेतवसर्वसुरेश्वरि ॥ पतिस्तेद्रवरूपायालवणोदोभविष्यति ॥ ४३ ॥ स
ममांशस्वरूपश्चत्वंचलक्ष्मीस्वरूपिणी ॥ विदग्धायाविदग्धेनसंगमोगुणवान्भुवि ॥ ४४ ॥ यावंत्यःसंतिन
द्यश्चभारत्याद्याश्चभारते ॥ सौभाग्यात्त्वंचतास्वेवलवणोदस्यसौरते ॥ ४५॥ अद्यप्रभृतिदेवेशिकलेःपंचसह
स्रकं ॥ वर्षेस्थितिस्तेभारत्याःशापेनभारतेभुवि ॥ ४६॥ नित्यंत्वमब्धिनासार्द्धकरिष्यसिरहोरतिं ॥ त्वमेवर
सिकादेविरसिकेंद्रेणसंयुता ॥ ४७ ॥ त्वांस्तोष्यंतिचस्तोत्रेणभगीरथकृतेनच ॥ भारतस्थाजनाःसर्वेपूजयि
ष्यंतिभक्तिः ॥ ४८ ॥ कण्वशाखोक्तध्यानेनध्यात्वात्वांपूजयिष्यति ॥ यस्तौतिप्रणमेन्नित्यंसौश्वमेधफलं
लभेत् ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥

तद्वर्षांछितंलब्धयावत्कुंनशक्नोमीतिभावः ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ विदग्धायाविरहिण्याः ॥ ४४ ॥ सौभाग्यामुच्येत्यर्थः
॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥

॥४०॥

॥ ५० ॥ प्रकृतेर्मूलप्रकृतेर्भुवनेभ्योभक्तस्यसंस्पर्शादित्यर्थः ॥ ५१ ॥ पापिनांसहस्राणांशकानांस्पर्शेनचयत्पापंत्वयिभविष्यतितदपि
मन्त्रोपासकस्नानात्तस्यामूलप्रकृतेर्भुवनेभ्योभक्तस्यसंस्पर्शादित्यर्थः ॥ तदुक्तंमुद्रमालायां मंदंशा

गंगागंगेति यो ब्रूयाद्योजनानां शतैरपि ॥ मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति ॥ ५० ॥ सहस्रपापिनां
स्नानाद्यत्पापं ते भविष्यति ॥ प्रकृतेर्भक्तसंस्पर्शादेव तद्विविनक्ष्यति ॥ ५१ ॥ पापिनां तु सहस्राणां शवस्पर्शे
नयत्त्वमि ॥ तन्मन्त्रोपासकस्नानात्तदध्वं च विनक्ष्यति ॥ ५२ ॥ तत्रैव त्वमधिष्ठानं करिष्यत्यधमोचनं ॥ सार्द्धं
सरिद्धिः श्रेष्ठाभिः सरस्वत्यादिभिः शुभे ॥ ५३ ॥ तत्तु तीर्थं भवेत्सद्यो यत्र तद्गुणकीर्तनं ॥ त्वद्रेणुस्पर्शमात्रेण पू
तो भवति पातकी ॥ ५४ ॥ रेणुप्रमाणवर्षे च देवीलोके वसेत्भुवं ॥ ज्ञानेन त्वयि ये भक्त्या मन्त्रा मस्मृतिपूर्वकं ॥
॥ ५५ ॥ समुत्सृजंति प्राणांश्च ते गच्छंति हरेः पदं ॥ पार्षदप्रवरास्ते च भविष्यंति हरेः श्विरं ॥ ५६ ॥ लयं प्राकृ
तिकं ते च द्रक्ष्यंति चाप्यसंख्यकं ॥ मृतस्य बहुपुण्येन तच्छवं त्वयि विन्यसेत् ॥ ५७ ॥ प्रयातिसचैकुंठया व
दन्हः स्थितिस्त्वयि ॥ कायव्यूहं ततः कृत्वा भोजयित्वा स्वकर्मकं ॥ ५८ ॥ तस्मै ददामि सालोक्यं करोमि तं च
पार्षदं ॥ भजानी त्वज्जलरुपर्शादिप्राणान् समुत्सृजेत् ॥ ५९ ॥ तस्मै ददामि सालोक्यं करोमि तं च पार्षदं ॥
अन्यत्र वा त्यजेत् प्राणांस्त्वन्नामस्मृतिपूर्वकं ॥ ६० ॥ तस्मै ददामि सालोक्यं यावद्ब्रह्मणो वयः ॥ अन्यत्र वा
त्यजेत् प्राणांस्त्वन्नामस्मृतिपूर्वकं ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥

यैस्येभूतास्ते शैवानां संशयः त्वदंशाश्चैव शास्त्राश्च सत्यं वै गिरि नंदिनीति ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ तद्गुणकीर्तनं मूलप्रकृतिमुणकीर्तनमित्यर्थः
॥ ५४ ॥ देवीलोके मणिद्वीपे ॥ तृतीयस्कंधोक्ते ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ कायव्यूहमनेकं देहं ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ पूर्वन्नाम
स्मृतिर्यथा कथंचित् ॥ द्वितीयवचने तु भक्तिपूर्वकात्ततो विशेषः ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥

दे.भा.न.

॥४१॥

॥ ६२ ॥ मन्मन्त्रोपासकानांतुतवनोपयोगः किंतुतेस्वयमेवपूताअतएवपापिसंबंधजन्यत्वयिविद्यमानंपापंतेपहरंतीतिपूर्वमुक्तंनविस्मृतंन्यामिस्य
भिप्रायेणाह तीर्थेप्यतीर्थेइति ॥ ६३ ॥ मन्मन्त्रोपासकानामिति गोपालसुंदरीमन्त्रोपासकानामित्यर्थः इदमुपलक्षणंशैवशाक्तब्रह्मनिष्ठगा
णपत्यसौरभक्तानामपि तदुक्तंमुंडमालायां राजानमाश्रितानांतुचोराद्यावशगायथा तथैवदेवीभक्तानांकामक्रोधदिशत्रवः राजचिन्हां

तस्मैददामिस्वारूप्यमसंख्यंप्राकृतंलयं ॥ रत्नेंद्रसारनिर्माणयानेनसहपार्षदैः ॥ ६२ ॥ सद्यःप्रयातिगोल्ये
कंममतुल्योभवेत्ध्रुवं ॥ तीर्थेप्यतीर्थेमरणेविशेषोनास्तिकश्चन ॥ ६३ ॥ मन्मन्त्रोपासकानांचनित्यंनैवेद्यभो
जिनां ॥ पूतंकर्तुंसशक्तोहिलीलयाभुवनत्रयं ॥ ६४ ॥ रत्नेंद्रसारयानेनगोलोकंसंप्रयातिच ॥ मद्भक्तबांधवा
येषांतेपिपश्चादयोपिहि ॥ ६५ ॥ प्रयांतिरत्नयानेनगोलोकंचातिदुर्लभं ॥ यत्रयत्रस्मृतास्तेचज्ञानेनज्ञानि
नःसति ॥ ६६ ॥ जीवन्मुक्ताश्चतेपूतामद्भक्तेःसंविधानतः ॥ इत्युक्त्वाश्रीहरिस्तांचप्रत्युवाचभगीरथं ॥ ६७ ॥
स्तुहिगंगामिमांभक्त्यापूजांचकुरुसांप्रतं ॥ भगीरथस्तांतुष्टावपूजयामासभक्तितः ॥ ६८ ॥ कौथुमोक्तेनध्या
नेनस्तोत्रेणापिपुनःपुनः ॥ प्रणनामचश्रीकृष्णंपरमात्मानमीश्वरं ॥ ६९ ॥ भगीरथश्चगंगाचसौतर्धानंच
कारह ॥ नारदउवाच ॥ केनध्यानेनस्तोत्रेणकेनपूजाक्रमेणच ॥ ७० ॥ पूजांचकारनृपतिर्वदवेदविदांवर ॥
श्रीनानारायणउवाच ॥ स्नात्वानित्यक्रियांकृत्वाधृत्वाधौतेचवाससी ॥ ७१ ॥ संपूज्यदेवषट्कंचसंयतोभ
क्तिपूर्वकं ॥ गणेशंचदिनेशंचवर्हिविष्णुंशिवंशिवां ॥ ७२ ॥

॥ ६४ ॥

॥ ६५ ॥

कितंदष्टासामंताःपर्युपासते देवीभक्त्यंकितंदष्टाब्रह्माद्याःसमुपासते यमेनापिस्वदूतास्तुशप्ताअतिभयेनच शाक्तेषुदेवीभक्तेषुनवोदष्टिः
पतत्वाति शाक्तास्तुसर्वतीर्थानिपुनंतिनिजवैभवादिति ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ कौथुमोक्तेनकौथुमिशाखोक्तेन
॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ बहिमग्निहोत्रस्थितं ॥ ७२ ॥

॥ ७३ ॥

॥ ७४ ॥

॥ ७५ ॥

टी.अ.

११

॥४१॥

॥ ७३ ॥ शौचायशुद्धयर्थलक्ष्मीप्राप्त्यर्थविष्णुपूजयेदित्यर्थः मुक्तिसिद्धयेमोक्षार्थं शिवांमूलप्रकृतिदेवीं पूजयेदित्यर्थः ॥ ७४ ॥ ७५ ॥
इति श्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ एकोनाशीतिपद्यैस्तुराधाकृष्णांगसंभवा ॥ गोलोकेप्रथमंगंगासमुद्रोत्ति-
चोच्यते ॥ १ ॥ नारायणो गंगायाध्यानं वदति नारायण उवाच ध्यानमिति ॥ १ ॥ कृष्णविग्रहसंभूतां कृष्णशरीरोद्भवामियं कथा वक्ष्य-

संपूज्य देवषट्कं च सोधिकारी च पूजने ॥ गणेशं विघ्ननाशाय आरोग्याय दिवाकरं ॥ ७३ ॥ वन्निह शौचाय विष्णुं च
लक्ष्म्यर्थं पूजयेन्नरः ॥ शिवं ज्ञानाय ज्ञानेशं शिवां च मुक्तिसिद्धये ॥ ७४ ॥ संपूज्यैतां लभेत्प्राज्ञो विपरीतमत्तं
न्यथा ॥ दध्यावनेन ध्यानेन तत्त्वानं शृणु नारद ॥ ७५ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे नवमस्कंधे एकादशो-
ऽध्यायः ॥ ११ ॥ नारायण उवाच ॥ ध्यानं च कण्वशास्त्रोक्तं सर्वपापप्रणाशनं ॥ श्वेतपंकजवर्णाभां गंगायाषप्र-
णाशिनीं ॥ १ ॥ कृष्णविग्रहसंभूतां कृष्णतुल्यां परां सतीं ॥ वन्निह शुद्धां शुकाधानां रत्नभूषणभूषितां ॥ २ ॥ श-
रत्पूणे दुशतकमृष्टशोभाकरां परां ॥ ईषद्वास्यप्रसन्नास्यां शश्वत्सु स्थिरयौवनां ॥ ३ ॥ नारायणप्रियां शांतां त-
त्सौ भाग्यसमन्वितां ॥ विभ्रतीं कवरीभारं मालतीमाल्यसंयुतां ॥ ४ ॥ सिंदूरबिंदुं ललितं सार्द्धं चंदनविंदुभिः ॥
कस्तूरीपत्रकं गण्डेनानाचित्रसमन्वितं ॥ ५ ॥ पद्मविंशतिनिंदाच्छावोऽष्टपुटभुजं ॥ मुक्तापंक्तिप्रभामुष्टदं
तपंक्तिमनोरमं ॥ ६ ॥ सुचारुवक्रनयनं सकटाक्षं मनोहरं ॥ कठिनं श्रीफलाकारं स्तनयुग्मं च विभ्रतीं ॥ ७ ॥
बृहच्छोणिं सुकठिनारंभास्तं भविनिदितां ॥ स्थलपद्मप्रभामुष्टपदपद्मयुगंबरं ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥

माणाध्याये स्पष्टा ॥ २ ॥ इंदुशतकस्य मृष्टाशुद्धाया प्रभातस्या आकरां खनिं ॥ ३ ॥ ४ ॥ नानाचित्रसमन्वितं विभ्रतीत्यर्थः ॥ ५ ॥ विं-
नफलं विनिंद्य स्यैतादृशमच्छावोऽष्टपुटं विभ्रतीत्यर्थः ॥ ६ ॥ ७ ॥ रंभास्तं भविनिदितो यया स्वकीयो रुद्रयशो-
भयेति शेषः ॥ पदपद्मयुगंबरं वक्ष्यंतं तस्यैतं विभ्रतीति शेषः ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ ९ ॥

दे.भा.न.

॥४२॥

रत्नपादुकेत्यारभ्य सर्वभोगदयेतत्पर्यंतं पादपद्मस्याविशेषणानि यावत्पादभूषणंतत्सहितं ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ उपचाराणि दत्तेत्यन्वयः नृपुंसकत्वमार्थं ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ शिवसंगीतेति इदं सर्वमनुषदोक्तं कथायां स्पष्टीभविष्यति

रत्नपादुकसंयुक्तं कुंकुमाक्तं सयावकं ॥ देवैर्द्रुमौलिमंदारमकरंदकणारुणं ॥ ९ ॥ सुरसिद्धमुनींद्रैश्च दत्तार्घसंयुतं सदा ॥ तपस्विमौलिनिकरधमरश्रेणिसंयुतं ॥ १० ॥ मुक्तिप्रदं मुमुक्षूणां कामिनां सर्वभोगदं ॥ वरांकरेण्यां वरदां भक्तानुग्रहकारिणीं ॥ ११ ॥ श्रीविष्णोः पददात्री च भजे विष्णुपदीं सतीं ॥ इत्यनेनैव ध्यानेन ध्यात्वा त्रिपथगां शुभां ॥ १२ ॥ दत्त्वा संपूजयेद्ब्रह्मन्नुपचाराणि षोडश ॥ आसनं पाद्यमर्घ्यं च स्नानीयं चानुलेपनं ॥ १३ ॥ धूपं दीपं च नैवेद्यं तांबूलं शीतलं जलं ॥ वसनं भूषणं माल्यं गंधमाचमनीयकं ॥ १४ ॥ मनोहरं सुतल्पं च देयान्येतानि षोडश ॥ दत्त्वा भक्त्या च प्रणमेत्संस्तूय संपुटांजलिः ॥ १५ ॥ संपूज्यैवंप्रकारेण सोऽश्वमेधफलं लभेत् ॥ नारद उवाच ॥ श्रोतुमिच्छामि देवेश लक्ष्मीकांत जगत्पते ॥ १६ ॥ विष्णो विष्णुपदींस्तोत्रं पाषाणं पुण्यकारकं ॥ श्रीनारायण उवाच ॥ शृणु नारद वक्ष्यामि पापघ्नं पुण्यकारणं ॥ १७ ॥ शिवसंगीतसंमुग्धश्रीकृष्णांगसमुद्भवां ॥ राधांगद्रवसंयुक्तां तांगंगां प्रणमाम्यहं ॥ १८ ॥ यज्जन्मसृष्टेरादौ च गोलोके रासमंडले ॥ सन्निधानेशंकरस्य तांगंगां प्रणमाम्यहं ॥ १९ ॥ गोपैर्गोपीभिराकीर्णैश्शुभे राधामहोत्सवे ॥ कार्तिकी पूर्णिमायां च तांगंगां प्रणमाम्यहं ॥ २० ॥ कोटियोजनविस्तीर्णा दैर्घ्ये लक्षगुणा ततः ॥ समावृताया गोलोके कंतांगंगां प्रणमाम्यहं ॥ २१ ॥

शिवसंगीतेन संमुग्धो मोक्षितो यः श्रीकृष्णस्तस्यांगसमुद्भवां राधांगद्रवेण संयुतां राधांगजलेन संयुतां ॥ १८ ॥ १९ ॥ कार्तिक्या पूर्णिमायां राधामहोत्सवे यज्जन्मप्रथमतो भूदिति पूर्वां पुवृत्त्या योजनीयं ॥ २० ॥ कोटियोजनेति अतिदीर्घातिविस्तृतं त्वेव तात्पर्यं बोध्यं न तु तावद्योजनीयं ॥ २१ ॥ एवमेवोत्तरां च ॥ २२ ॥

॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

टी.अ.

१२

॥४२॥

थयार्यस्तुस्पष्ट एव आयामेन षष्टिलक्षयोजनेत्यर्थः एवमुत्तरत्र बोध्यं ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥

षष्टिलक्षयोजनाया ततो दैर्घ्ये चतुर्गुणा ॥ समावृताया वैकुण्ठेतांगंगां प्रणमाम्यहं ॥ २२ ॥ त्रिशल्लक्षयोजनाया
दैर्घ्ये पंचगुणा ततः ॥ आवृता ब्रह्मलोके यातांगंगां प्रणमाम्यहं ॥ २३ ॥ त्रिशल्लक्षयोजनाया दैर्घ्ये चतुर्गुणा ततः ॥
आवृता शिवलोके यातांगंगां प्रणमाम्यहं ॥ २४ ॥ लक्षयोजनविस्तीर्णा दैर्घ्ये सप्तगुणा ततः ॥ आवृता ध्रुवलो
के यातांगंगां प्रणमाम्यहं ॥ २५ ॥ लक्षयोजनविस्तीर्णा दैर्घ्ये पंचगुणा ततः ॥ आवृता चंद्रलोके यातांगंगां
प्रणमाम्यहं ॥ २६ ॥ षष्टिसहस्रयोजनाया दैर्घ्ये दशगुणा ततः ॥ आवृता सूर्यलोके यातांगंगां प्रणमाम्यहं
॥ २७ ॥ लक्षयोजनविस्तीर्णा दैर्घ्ये पंचगुणा ततः ॥ आवृता यातपोलोके तांगंगां प्रणमाम्यहं ॥ २८ ॥
सहस्रयोजनायामा दैर्घ्ये दशगुणा ततः ॥ आवृता जनलोके यातांगंगां प्रणमाम्यहं ॥ २९ ॥ दशलक्षयोजनाया
दैर्घ्ये पंचगुणा ततः ॥ आवृता यामहर्लोकं तांगंगां प्रणमाम्यहं ॥ ३० ॥ सहस्रयोजनायामा दैर्घ्ये शतगुणा ततः ॥
आवृता याचकैलासं तांगंगां प्रणमाम्यहं ॥ ३१ ॥ शतयोजनविस्तीर्णा दैर्घ्ये दशगुणा ततः ॥ मंदाकिनीयेन्द्र
लोके तांगंगां प्रणमाम्यहं ॥ ३२ ॥ पाताले भोगवती चैव विस्तीर्णा दशयोजना ॥ ततो दशगुणा दैर्घ्ये तांगंगां
प्रणमाम्यहं ॥ ३३ ॥ क्रोशैकमात्रविस्तीर्णा ततः क्षीणा च कुत्रचित् ॥ क्षितौ चालकनंदा यातांगंगां प्रणमाम्य
हं ॥ ३४ ॥ सत्येयाक्षीरवर्णा च त्रेतायामिंदुसन्निभा ॥ द्वापरे चंद्रनाभा यातांगंगां प्रणमाम्यहं ॥ ३५ ॥ जलप्र
भाकलौया च नान्यत्र पृथिवीतले ॥ स्वर्गे च नित्यं क्षीराभा तांगंगां प्रणमाम्यहं ॥ ३६ ॥ यत्तोयकणिकास्पर्शो
पापिनां ज्ञानसंभवः ॥ ब्रह्महत्यादिकं पापं कोटिजन्मार्जितं दहेत् ॥ ३७ ॥

॥ ६१ ॥

॥ ६१ ॥

॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

॥ ७१ ॥

॥ ७१ ॥

दे.भा.न

॥४३॥

॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ अयनारायणे उपरते प्रथमं गंगाया जन्मगोलोके कार्तिव्यापौर्णिमायां श्रीगो
पालसुंदरीरूपकृष्णशरीरात्कथं ज्ञातमित्यादिकं पृच्छति नारद उवाच कथं गंगा त्रिपथगेति ॥ ४५ ॥ तत्रस्थास्तल्लोकस्थाः ॥ ४६ ॥
इत्येवं कथिता ब्रह्मन् गंगा पद्मैकविंशतिः ॥ स्तोत्ररूपं च परमं पापघ्नं पुण्यजीवनं ॥ ३८ ॥ नित्यं यो हि पठेद्भ
क्त्या संपूज्य च सुरेश्वरीं ॥ सोऽश्वमेधफलं नित्यं लभते नात्र संशयः ॥ ३९ ॥ अपुत्रो लभते पुत्रं भार्याहीनो लभे
त्स्त्रियं ॥ रोगात्प्रमुच्यते रोगी बन्धान्मुक्तो भवेत्ध्रुवं ॥ ४० ॥ अस्पृष्टकीर्तिः सुयशामूर्खो भवति पण्डितः ॥ यः पठे
त्प्रातरुत्थाय गंगास्तोत्रमिदं शुभं ॥ ४१ ॥ शुभं भवेच्च दुःस्वप्ने गंगास्नानफलं लभेत् ॥ श्रीनारायण उवाच ॥
स्तोत्रेणानेन गंगां च स्तुत्वा चैव भगीरथः ॥ ४२ ॥ जगाम तांगृहीत्वा च यत्र नष्टाश्च सागराः ॥ वैकुण्ठे ययुस्तू
र्णं गंगायाः स्पर्शवायुना ॥ ४३ ॥ भगीरथेन सानीता तेन भागीरथी स्मृता ॥ इत्येवं कथितं सर्वं गंगोपाख्यान
मुत्तमं ॥ ४४ ॥ पुण्यदं मोक्षदं सारं किं भूयः श्रोतुमिच्छसि ॥ नारद उवाच ॥ कथं गंगा त्रिपथगा जाता भुवनपा
विनी ॥ ४५ ॥ कुत्र वा केन विधिना तत्सर्वं वद मे प्रभो ॥ तत्रस्थाश्च जना ये ये ते च किंच क्रुरुत्तमं ॥ ४६ ॥ एत
त्सर्वं सुविस्तीर्णं कृत्वा वक्तुमिहार्हसि ॥ नारायण उवाच ॥ कार्तिकी पूर्णिमायां तुराधायाः सुमहोत्सवः ॥ ४७ ॥
कृष्णः संपूज्यतां राधामुवासरा समंडले ॥ कृष्णेन पूजितां तां तु संपूज्य हृष्टमानसाः ॥ ४८ ॥ ऊषुर्ब्रह्मादयः स
र्वे ऋषयः शौनकादयः ॥ एतस्मिन्नंतरे कृष्णसंगीता च सरस्वती ॥ ४९ ॥ जगौ सुंदरतालेन वीणया च मनोह
रं ॥ तुष्टे ब्रह्माददौ तस्यैरत्नेन्द्रसारहारकं ॥ ५० ॥ शिवो मणीन्द्रसारं तु सर्वब्रह्मांडदुर्लभं ॥ कृष्णः कौस्तुभर
त्नं च सर्वरत्नात्परं वरं ॥ ५१ ॥

॥ ४२ ॥

॥ ४३ ॥

॥ ४४ ॥

॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ऊषुः संपूज्य स्तिता इत्यर्थः कृष्णसंगीता कृष्णसंबन्धिनी संगीतशास्त्राधिष्ठात्रीत्यर्थः ॥ ४९ ॥ हारकरत्नहार
मित्यर्थः ॥ ५० ॥ मणिसारं सर्वोत्तमं मणिं ॥ ५१ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

टी. अ.

१२

॥४३॥

हारसारंहारश्रेष्ठं ॥ ५२ ॥ विष्णुमायाब्रह्मायामूलप्रकृतिर्मूलप्रकृतेः साक्षादुद्भवान्मूलप्रकृतित्वं ॥ ५३ ॥ ब्रह्मभक्तिपरमात्मभक्तिं भवेत्प्रपंचे ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ कृष्णसंगीतं रासोल्लासस्य वर्णनं यस्मिन्सादृशं गोपालसुंदर्यात्मककृष्णोद्देश्यकंसंगीतंगानमित्यर्थः एतस्य कृष्णस्य गोपालसुंदर्यात्मकत्वेन पूर्वमभिधानात्तद्वत्स्वर्गसर्वत्र कृष्णशब्देन गोपालसुंदर्यात्मककृष्णस्यैवात्र ग्रहणमिति बोध्यं ॥ ५६ ॥

अमूल्यरत्ननिर्माणं हारसारंचराधिका ॥ नारायणश्च भगवान्ददौ मालां मनोहरां ॥ ५२ ॥ अमूल्यरत्ननिर्माणं लक्ष्मीः कृत्वा न ककुडलं ॥ विष्णुमाया भगवती मूलप्रकृतिरीश्वरी ॥ ५३ ॥ दुर्गानारायणीशाना ब्रह्मभक्तिं सुदुर्लभां ॥ धर्मबुद्धिचधर्मश्च यशश्च विपुलं भवे ॥ ५४ ॥ बन्दिशुद्धांशुकं बन्दिर्वायुश्च मणिनूपुरान् ॥ एतस्मिन्नंतरे शंभुर्ब्रह्मणा प्रेरितो मुहुः ॥ ५५ ॥ जगौ श्रीकृष्णसंगीतं रासोल्लाससमन्वितं ॥ मूर्छां प्रापुः सुराः सर्वे चित्रपुत्तलिका यथा ॥ ५६ ॥ कष्टेन चेतनां प्राप्य ददृशूरा समंडले ॥ स्थलं सर्वजलाकीर्णं राधाकृष्णविहीनकं ॥ ५७ ॥ अत्युच्चैरुद्दुःसर्वे गोपा गोप्यः सुराद्विजाः ॥ ध्यानेन ब्रह्मा बुबुधे सर्वतीर्थमभीप्सितं ॥ ५८ ॥ गतश्च राधया सादृशं श्रीकृष्णो द्रवतामिति ॥ ततो ब्रह्मादयः सर्वे तुष्टुवुः परमेश्वरं ॥ ५९ ॥ स्वमूर्तिं दर्शय विभो वांछितं वरमेव नः ॥ एतस्मिन्नंतरे तत्र वाग्बभूवा शरीरिणी ॥ ६० ॥ तामेव शुश्रुवुः सर्वे सुव्यक्तं मधुरान्वितां ॥ सर्वात्माहमियं शक्तिर्भक्तानुग्रहविग्रहा ॥ ६१ ॥ ममाप्यस्याश्च देहेन कर्तव्यं च किमावयोः ॥ मनवो मानवाः सर्वे मुनयश्चैव वैष्णवाः ॥ ६२ ॥

॥ ५७ ॥ सर्वतीर्थमिति लोकोद्धारार्थं राधाकृष्णस्तीर्थरूपो जात इत्यर्थः ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ अयमेव वांछितो वर इत्यर्थः ॥ ६० ॥ सर्वात्माहमिति अहं सर्वात्मा सर्वव्यापकोऽस्येवं न कदाचिन्मम भवतां चार्थयोगोऽस्ति तथेयं राधिका शक्तिरपि सर्वव्यापिकाऽस्येवेति न तथापि भवतां वियोगोऽस्ति केवलमावयोर्देहेनैव भवतां वियोगो जातस्तत्र मिथ्या देहेन किं कर्तव्यं भवतामस्ति न किंचिदपीत्यर्थः ॥ ६१ ॥ अथापि मम भक्तानां दर्शनार्थं मन्मूर्तिरपेक्षिते तीच्छयदितदायन्मयोऽव्यतेतत्कर्तव्यमित्याह मनव इति ॥ ६२ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.न

॥४४॥

॥ ६३ ॥ स्वयंविधातरिति हेविधातस्त्वंजगद्गुरुंशिवंप्रत्याज्ञांकुरु ॥ ६४ ॥ किंविषयामितिचेत्तत्राह कर्तुमिति शास्त्रंसात्वतंतत्रमित्यर्थः ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ भवंतीति येनगोपनेनजनाःपापिष्ठामयिविमुखाभविष्यंतितत्गोपनंकरिष्यतिकरोत्वित्यर्थः सर्वयामोपनैशास्त्रप्रणयनंव्ययं मेवस्यादितिचेत्पुण्यवतांसाधूनामग्रेप्रकाशंकरोत्वित्यभिप्रायेणाह सहस्रेष्विति ॥ ६७ ॥ अन्यथाममशस्त्राभावे ॥ ६८ ॥ ननुकेषांचिदग्रे प्रकाशनेपिपरंपरयासर्वत्रप्रकाशोभविष्यतिततश्चसर्वेपिगोलोकवासिनोभविष्यंतितदाब्रह्मांडंनिष्फलंप्राणिनामभावात्स्यादितिचेत्त्वंहेब्रह्मण्यंच

मन्मंत्रपूतामांद्रष्टुमागमिष्यंतिमत्पदं ॥ मूर्तिद्रष्टुंचसुव्यक्तायदीच्छथसुरेश्वराः ॥ ६३ ॥ करोतुशंभुस्तत्रैवंम दीयंवाक्यपालनं ॥ स्वयंविधातस्त्वंब्रह्मन्नाज्ञांकुरुजगद्गुरुं ॥ ६४ ॥ कर्तुंशास्त्रविशेषंचवेदांगंसुमनोहरं ॥ अ पूर्वमंत्रनिकरैःसर्वाभीष्टफलप्रदैः ॥ ६५ ॥ स्तोत्रैश्चनिकरैर्ध्यानैर्युतंपूजाविधिक्रमैः ॥ मन्मंत्रकवचस्तोत्रं कृ त्वायत्नेनगोपनं ॥ ६६ ॥ भवंतिविमुखायेनजनामांतत्करिष्यति ॥ सहस्रेषुशतेष्वेकोमन्मंत्रोपासकोभवेत् ॥ ६७ ॥ जनामन्मंत्रपूताश्चगमिष्यंतिचमत्पदं ॥ अन्यथानभविष्यंतिसर्वेगोलोकवासिनः ॥ ६८ ॥ निष्फलं भवितासर्वब्रह्मांडंचैवब्रह्मणः ॥ जनाःपंचप्रकाराश्चयुक्ताःस्रष्टुंभवेभवे ॥ ६९ ॥ पृथिवीवासिनःकेचित्केचित्स्व र्गनिवासिनः ॥ इदंकर्तुमहादेवःकरोतिदेवसंसदि ॥ ७० ॥ प्रतिज्ञांसुदृढांसद्यस्ततोमूर्तिंचद्रक्ष्यति ॥ इत्येवमु त्कागगनेविररामसनातनः ॥ ७१ ॥ तच्छ्रुत्वाजगतांधातातमुवाचशिवमुदा ॥ ब्रह्मणोवचनंश्रुत्वाज्ञानेशो ज्ञानिनांवरः ॥ ७२ ॥ गंगातोयंकरेकृत्वास्वीकारंचचकारसः ॥ संयुक्तंविष्णुमायायामंत्रौघैःशास्त्रमुत्तमं ॥ ७३ ॥

प्रकारान्सात्विकादिभेदेननानाविधान्जनान्कुरुकर्मवशात्तदातेजनाःपपवाहुल्यात्प्रकाशमानमपितंत्रंनगृहीष्यंतिततश्चनब्रह्मांडांतर्गतलोका नामभावेनब्रह्मांडंनिष्फलंस्यादित्यभिप्रायेणाह निष्फलंचेति ॥ ६९ ॥ हेब्रह्मन्निदंमच्छास्त्रंकर्तुंशिवोयदिप्रातिज्ञांकरिष्यतिततोमन्मूर्तिंदर्शनं स्यादित्याह इदंकर्तुमिति ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ स्वीकारमिति गंगाबलंहस्तेगृहीत्वाशपथपुरःसरंप्रतिज्ञांकृतवानित्यर्थः प्रतिज्ञास्वरूप माह संयुक्तमिति विष्णुमायायाराधायामंत्रौघैःसहितंशास्त्रंविष्णुमंत्रविषयंवेदसारंवेदाविष्कृतंकरिष्यामीत्यर्थः ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥

टी.अ.

१२

॥४४॥

गंगाजलेन शपथं कृत्वा तत्कार्यं करणे महानर्थ इति दर्शयितुं शिवेन गंगाजलं मृहीतमित्यभिप्रायेणाह गंगातोयमिति ॥ ७४ ॥ हे ब्रह्मन् हे नारायणोक्तिः ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ मुक्तिदीपं मुक्तिप्रकाशकं सात्वतं तन्त्रमित्यर्थः स एव श्रीकृष्ण एव द्रवरूपा गंगेत्युच्यते इत्यर्थः ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके नवमस्कंधे द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ षट्त्रिंशदधिकैः पद्यैः शतसंख्यैस्तु जगन्हवी ॥

वेदसारं करिष्यामि प्रतिज्ञापालनाय च ॥ गंगातोयमुपस्पृश्य मिथ्यायदिवदेज्जनः ॥ ७४ ॥ स यातिकालसूत्रं च यावद्वैब्रह्मणो वयः ॥ इत्युक्तेशंकरे ब्रह्मन्गोलोकसुरसंसदि ॥ ७५ ॥ आविर्बभूव श्रीकृष्णो राधया सहितस्ततः ॥ तं सुदृष्ट्वा च संहृष्टस्तुष्टुवुः पुरुषोत्तमं ॥ ७६ ॥ परमानंदपूर्णाश्चक्रुश्च पुनरुत्सवं ॥ कालेन शंभुर्भगवान्मुक्तिदीपंचकार सः ॥ ७७ ॥ इत्येवं कथितं सर्वसुगोप्यं च सुदुर्लभं ॥ स एव द्रवरूपा सा गंगालोकसंभवा ॥ ७८ ॥ राधाकृष्णांगसंभूता भुक्तिमुक्तिफलप्रदा ॥ स्थाने स्थाने स्थापिता सा कृष्णेन परात्मना ॥ ७९ ॥ कृष्णस्वरूपा परमा सर्वब्रह्मांडपूजिता ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे नवमस्कंधे द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ नारद उवाच ॥ कलेः पंचसहस्राब्दे समन्तीते सुरेश्वर ॥ क्वगता सा महाभाग तन्मे व्याख्यातुमर्हसि ॥ १ ॥ नारायण उवाच ॥ भारतं भारतीशापात्समागत्येश्वरेच्छया ॥ जगाम तत्र वैकुण्ठेशापांते पुनरेव सा ॥ २ ॥ भारती भारतं त्यक्त्वा तज्जगाम हरेः पदं ॥ पद्मावती च शापांते गंगासा चैव नारद ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥

नारायणप्रिया जाता विस्तरादेतदुच्यते ॥ १ ॥ कलेः पंचसहस्रांते भुवं त्यक्त्वा वैकुण्ठं गंगामिष्यतीत्युक्तं तत्र गोलोकोद्भवा गंगालोकं विहाय किमिति वैकुण्ठं गमिष्यतीत्यभिप्रायेण पृच्छति नारद उवाच कलेरिति क्वगतेति वैकुण्ठ इति पूर्वमुक्तमपितन्मोषणं कृत्वेयमुक्तिः ॥ १ ॥ ॥ २ ॥ पद्मावती गंगा चोभेन यौ वैकुण्ठं गते इत्यर्थः ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥

दे.भा.न.

॥४५॥

ननुगोलोकंविहायकिमितिचैकुण्ठगताइतिचैकुण्ठवासिनोनारायणस्ययतएताश्चतस्रःस्त्रियोभवंतिततइत्याह गंगेति ॥ ४ ॥ तत्रगंगाकथंवि
ष्णुपदाब्जान्निर्गताकथंवनारायणस्त्रीजाताब्रह्मणाकथंमंडलौस्थापिताशिवेनकथंमस्तकेभृतातत्सर्ववर्णयेत्याह नारदउवाच केनोपायेने
ति शिवप्रियाशिववधूःकथंजाता ॥ ५ ॥ ६ ॥ तदंशाराधाकृष्णांशा ॥ ७ ॥ द्रवोजलंतत्स्वामिनी ॥ ८ ॥ तप्तकांचनेति
गंगासरस्वतीलक्ष्मीश्चैतास्तिस्त्रःप्रियाहरेः ॥ तुलसीसहिताब्रह्मंश्चतस्रःकीर्तिताःशुभाः ॥ ४ ॥ नारदउवा
च ॥ केनोपायेनसादेवीविष्णुपादाब्जसंभवा ॥ ब्रह्मकमंडलुस्थाचश्रुताशिवप्रियाचसा ॥ ५ ॥ बभूवसामु
निश्रेष्ठगंगानारायणप्रिया ॥ अहेकेनप्रकारेणतन्मेव्याख्यातुमर्हसि ॥ ६ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ पुराबभू
वगोलोकेसागंगाद्रवरूपिणी ॥ राधाकृष्णांगसंभूतातदंशातत्स्वरूपिणी ॥ ७ ॥ द्रवाधिष्ठातृदेवीयारूपेणा
प्रतिमाभुवि ॥ नवयौवनसंपन्नासर्वाभरणभूषिता ॥ ८ ॥ शरन्मध्यान्हपद्मास्यासस्मितासुमनोहरा ॥ तप्त
कांचनवर्णाभाशरच्चंद्रसमप्रभा ॥ ९ ॥ स्निग्धप्रभातिसुस्निग्धाशुद्धसत्वस्वरूपिणी ॥ सुपीनकठिनश्रोणिः
सुनितंबयुगंबरा ॥ १० ॥ पीनोन्नतंमुकठिनंस्तनयुग्मंसुवर्तुलं ॥ सुचारुनेत्रयुगलंसकटाक्षंसुवक्रिमं ॥ ११ ॥
वक्रिमंकबरीभारंमालतीमाल्यसंयुतं ॥ सिंदूरबिंदुललितंसाद्वैचंदनबिंदुभिः ॥ १२ ॥ कस्तूरीपत्रिकायुक्तं
गंडयुग्मंमनोरमं ॥ बंधूककुसुमाकारमधरोष्ठंचसुंदरं ॥ १३ ॥ पक्वदाडिमबीजाभदंतपंकिसमुज्ज्वलं ॥ वा
ससीवन्दिशुद्धेचनीवियुक्तेचबिभ्रती ॥ १४ ॥ सासकामाकृष्णपार्श्वेसमुवाससलज्जिता ॥ वाससामुखमा
च्छाद्यलोचनाभ्यांविभोर्मुखं ॥ १५ ॥

पूर्वस्फटिकरूपत्वेनवर्णनंत्वतिशुद्धत्वाभेप्रायेण ॥ ९ ॥ सुपीनाकठिनाश्रोणिर्यस्याःसुनितंत्रयुगंबरंवस्त्रयस्याः ॥ १० ॥ अथद्वितीयांता
नांपदानांविभर्तित्यनेनान्वयः वक्रिमंक्वामं ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ द्रवरूपिणीगंगामूर्तिधृत्वाकृष्णसन्निधौकाम्यातुरास्य
तेतिसमुदायार्थः ॥ १५ ॥

टी.अ.

१३

॥४५॥

॥ १६ ॥ १७ ॥ गंगां पत्नीमवलोक्य राधाकोपिता जज्ञेत्याह कोपेनेति ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥

निमेषरहिताभ्यांचपि बन्ती सततं मुदा ॥ प्रफुल्लवदनाहर्षान्नवसंगमलालसा ॥ १६ ॥ मूर्छिताप्रभुरूपेण पुल
कांकितविग्रहा ॥ एतस्मिन्नंतरे तत्र विद्यमाना चराधिका ॥ १७ ॥ गोपीत्रिंशत्कोटियुक्ता कोटिचंद्रसमप्रभा ॥
कोपेन रक्तपद्मा स्यारक्तपंकजलोचना ॥ १८ ॥ पीतचंपकवर्णा भागजेंद्रमंदगामिनी ॥ अमूल्यरत्ननिर्माण
नानाभूषणभूषिता ॥ १९ ॥ अमूल्यरत्नस्वचितममूल्यं वह्निशौचकं ॥ पीतवस्त्रस्य युगलं नीवीयुक्तं च विभ्रती
॥ २० ॥ स्थलपद्मप्रभामुष्टं कोमलं च सुरंजितं ॥ कृष्णदत्तार्घ्यसंयुक्तं विन्यसंती पदांबुजं ॥ २१ ॥ रत्नेंद्रसारनि
र्माणविमानादवरुह्यसा ॥ सेव्यमाना च ऋषिभिः श्वेतचामरवायुना ॥ २२ ॥ कस्तूरीबिंदुभिर्युक्तं चंदनेन सम
न्वितं ॥ दीपदीपप्रभाकारं सिंदूरं बिंदुशोभितं ॥ २३ ॥ दधती भालमध्ये च सीमंताधःस्थलोज्वले ॥ पारिजात
प्रसूनानां मालायुक्तं सुवंक्रिमं ॥ २४ ॥ सुचारुकवरीभारं कंपयंती सुकंपिता ॥ सुचारुरागसंयुक्तमोष्ठं कंपयती
रुषा ॥ २५ ॥ गत्वोवासकृष्णपार्श्वे रत्नमिहासने शुभे ॥ सखीनां च समूहैश्च परिपूर्णा विभोः प्रिया ॥ २६ ॥
तां दृष्ट्वा च समुत्तस्थौ कृष्णः सादरपूर्वकं ॥ संभाष्य मधुरालापैः सस्मितश्च ससंभ्रमः ॥ २७ ॥ प्रणे मुरति संत्र
स्ता गोपानम्रात्मकंधराः ॥ तुष्टुवुस्ते च भक्त्या चतुष्टयपरमेश्वरः ॥ २८ ॥ उत्थाय गंगासहसास्तुतिबहुच
कारसा ॥ कुशलं परिपप्रच्छ भीतातिविनयेन च ॥ २९ ॥ नम्रभागस्थिता त्रस्ता शुष्ककंठोष्ठतालुका ॥ ध्या
नेन शरणायत्ता श्रीकृष्णचरणांबुजे ॥ ३० ॥ तां दृष्ट्वा स्थितां कृष्णो भीतायै चाभयंददौ ॥ बभूव स्थिरचित्ता
सा सर्वेश्वरवरेण च ॥ ३१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥

॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ नम्रभागो नीचस्थानं ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.न.

॥४६॥

॥ ३२ ॥ द्वादशवर्षवयोवतीकन्याचासावभिनवयौवनाचेत्यर्थः ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ महालक्ष्मीराधां ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

ऊर्ध्वसिंहासनस्थांचराधांगंगाददर्शया ॥ सुस्निग्धांसुखदृश्यांचज्वलन्तीं ब्रह्मतेजसा ॥ ३२ ॥ असंख्यब्रह्म
णःकर्त्रीमादिसृष्टेःसनातनीं ॥ सदाद्वादशवर्षीयांकन्याभिनवयौवनां ॥ ३३ ॥ विश्ववृंदेनिरुपमांरूपेणचगु
णेनच ॥ शांतांकांतामनन्तांतामाद्यंतरहितांसतीं ॥ ३४ ॥ शुभांसुभद्रांसुभगांस्वामिसौभाग्यसंयुतां ॥ सौ
दर्यसुंदरींश्रेष्ठांसर्वासुसुंदरीषुच ॥ ३५ ॥ कृष्णादींगांकृष्णसमांतेजसावयसात्विषा ॥ पूजितांचमहालक्ष्मींल
क्ष्म्यालक्ष्मीश्वरेणच ॥ ३६ ॥ प्रच्छाद्यमानांप्रभयासभामीशस्यसुप्रभां ॥ सखीदत्तंचतांबूलभुक्तवंतीचदुर्ल
भां ॥ ३७ ॥ अजन्यांसर्वजननींधन्यामान्यांचमानिनीं ॥ कृष्णप्राणाधिदेवींचप्राणप्रियतमंरमां ॥ ३८ ॥
दृष्ट्वारासेश्वरींतृप्तिंनजगामसुरेश्वरी ॥ निमेषरहिताभ्यांचलोचनाभ्यांपपौचतां ॥ ३९ ॥ एतस्मिन्नंतरेराधा
जगदीशमुवाचसा ॥ वाचामधुरयाशांताविनीतासस्मितामुने ॥ ४० ॥ राधोवाच ॥ केयंप्राणेशकल्याणीस
स्मितात्वन्मुखांबुजं ॥ पश्यंतीसस्मितंपार्श्वेसकामावक्रलोचना ॥ ४१ ॥ मूर्ध्नांप्राप्नोतिरूपेणपुलकांकितवि
ग्रहा ॥ वस्त्रेणमुखमाच्छाद्यनिरीक्षंतीपुनःपुनः ॥ ४२ ॥ त्वंचापितांसंनिरीक्ष्यसकामःसस्मितःसदा ॥ म
यिजीवतिगोलोकेभूतादुर्वृत्तिरीदृशी ॥ ४३ ॥ त्वमेवचैवदुर्वृत्तंचारंवारंकरोषिच ॥ क्षमांकरोमिप्रेम्णाचस्त्रीजा
तिःस्निग्धमानसा ॥ ४४ ॥ संगृह्येमांप्रियामिष्टांगोलोकाद्गच्छलंपट ॥ अन्यथानहितेभद्रंभविष्यतिव्रजे
श्वर ॥ ४५ ॥ दृष्टस्त्वंविरजायुक्तोमयाचंदनकानने ॥ क्षमाकृतामयापूर्वसखीनांवचनादहो ॥ ४६ ॥

॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ कृष्णेनपूर्वकृतानपराधाननुवदति दृष्टस्त्वमिति विरजानांनिकाचिद्रोपी ॥ ४६ ॥

टी.अ.

१३

॥४६॥

देहंत्याजेति राधात्रासादित्यर्थः ॥ ४७ ॥ कोटियोजनेति इवमुक्तिरतिशयदीर्घविस्तृतत्वे एव न तु तावत्प्रमाणदीर्घविस्तृतत्वेपीत्यर्थः ॥ ४८ ॥ तदंतिकेविरजामदीसर्मापेत्वंपुनर्गत्वेत्यर्थः ॥ ४९ ॥ ५० ॥ समाक्षिप्य आकृत्यमिथुनीभूय सप्तसमुद्रांस्तदाधिष्ठातारः

त्वयामच्छब्दमात्रेणतिरोधानंकृतंपुरा ॥ देहंत्याजविरजानदीरूपाबभूवसा ॥ ४७ ॥ कोटियोजनविस्तीर्णाततोदैर्घ्यंचतुर्गुणा ॥ अद्यापिविद्यमानासातवसत्कीर्तिरूपिणी ॥ ४८ ॥ ग्रहंमयिगतायांचपुनर्गत्वातदंतिके ॥ उच्चैरुरोदविरजेविरजेचेतिसंस्मरन् ॥ ४९ ॥ तदातोयात्समुत्थायसायोगात्सिद्धियोगिनी ॥ सालंकारामूर्तिमतीददौतुभ्यंचदर्शनं ॥ ५० ॥ ततस्तांचसमाक्षिप्यवीर्याधानंकृतंत्वया ॥ ततोबभूवुस्तस्यांचसमुद्राः सप्तएवच ॥ ५१ ॥ दृष्टस्त्वंशोभयागोप्यायुक्तश्चंपककानने ॥ सद्योमच्छब्दमात्रेणतिरोधानंकृतंत्वया ॥ ५२ ॥ शोभादेहंपरित्यज्यजगामचंद्रमंडले ॥ ततस्तस्याःशरीरंचस्निग्धंतेजोबभूवह ॥ ५३ ॥ संविभज्यत्वयादत्तंहृदयेनविदूयता ॥ रत्नायकिंचित्स्वर्णायकिंचिन्मणिवरायच ॥ ५४ ॥ किंचित्स्त्रीणांमुखाब्जेभ्यःकिंचिद्राज्ञेचकिंचन ॥ किंचित्किसलयेभ्यश्चपुष्पेभ्यश्चापिकिंचन ॥ ५५ ॥ किंचित्फलेभ्यःपक्वेभ्यःसस्येभ्यश्चापिकिंचन ॥ नृपदेवगृहेभ्यश्चसंस्कृतेभ्यश्चकिंचन ॥ ५६ ॥ किंचिन्नूतनपत्रेभ्योदुग्धेभ्यश्चापिकिंचन ॥ दृष्टस्त्वं प्रभयागोप्यायुक्तोवृंदावनेवने ॥ ५७ ॥ सद्योमच्छब्दमात्रेणतिरोधानंकृतंत्वया ॥ प्रभादेहंपरित्यज्यजगामसूर्यमंडले ॥ ५८ ॥ ततस्तस्याःशरीरंचतीव्रंतेजोबभूवह ॥ संविभज्यत्वयादत्तंप्रेम्णाप्ररुदतापुरा ॥ ५९ ॥ विसृष्टंचक्षुषोःकृष्णलज्जयाचभयेनच ॥ हुताशनायकिंचिच्चयक्षेभ्यश्चापिकिंचन ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥

पुरुषाः ॥ ५१ ॥ द्वितीयमपराधमाह दृष्टस्त्वमिति ॥ ५२ ॥ स्निग्धंशीतलंकोमलंवा ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ तृतीयमपराधमाह दृष्टस्त्वमिति ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.न.

॥४७॥

॥ ६१ ॥ ६२ ॥ चतुर्थमपराधमाह शांतीति ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ मयिराधिकायां ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ पंच

किंचित्पुरुषसिंहेभ्योदेवेभ्यश्चापिकिंचन ॥ किंचिद्विष्णुजनेभ्यश्चनागेभ्योपिचकिंचन ॥ ६१ ॥ ब्राह्मणेभ्यो
मुनिभ्यश्चतपस्विभ्यश्चकिंचन ॥ स्त्रीभ्यःसौभाग्ययुक्ताभ्योयशस्विभ्यश्चकिंचन ॥ ६२ ॥ तत्तुदत्वाच
सर्वेभ्यःपूर्वप्ररुदितंत्वया ॥ शांतिगोप्यायुतस्त्वंचट्टोसिरासमंडले ॥ ६३ ॥ वसंतेपुष्पशय्यायांमा
ल्यवांश्चंदनोक्षितः ॥ रत्नप्रदीपैर्युक्तेचरत्ननिर्माणमंदिरे ॥ ६४ ॥ रत्नभूषणभूषाढ्योरत्नभूषितयास
ह ॥ तयादत्तंचतांबूलंभुक्तवांश्चपुराविभो ॥ ६५ ॥ सद्योमच्छब्दमात्रेणतिरोधानंकृतंत्वया ॥ शांतिर्देहंप
रित्यज्यंभियालीनात्वयिप्रभो ॥ ६६ ॥ ततस्तस्याःशरीरंचगुणश्रेष्ठंबभूवह ॥ संविभज्यत्वयादत्तंप्रेम्णा
प्ररुदतापुरा ॥ ६७ ॥ विश्वेतुविपिनेकिंचिद्ब्राह्मणेचमयिप्रभो ॥ शुद्धसत्वस्वरूपायैकिंचिल्लक्ष्म्यैपुरावि
भो ॥ ६८ ॥ त्वन्मंत्रोपासकेभ्यश्चशक्तेभ्यश्चापिकिंचन ॥ तपस्विभ्यश्चधर्मायधर्मिष्ठेभ्यश्चकिंचन ॥ ६९ ॥
मयापूर्वंचत्वंट्टोप्याचक्षमयासह ॥ सुवेषयुक्तोमालावान्गंधचंदनचर्चितः ॥ ७० ॥ रत्नभूषितयागंधचं
दनोक्षितयासह ॥ सुखेनमूर्छितस्तल्पेपुष्पचंदनचर्चिते ॥ ७१ ॥ शिलघ्नेनिद्रितयासद्यःसुखेननवसंगमात् ॥
मयाप्रबोधितासाचभवांश्चस्मरणंकुरु ॥ ७२ ॥ गृहीतंपीतवस्त्रंचमुरलीचमनोहरा ॥ वनमालाकौस्तुभ
श्चाप्यमूल्यंरत्नकुंडलं ॥ ७३ ॥ पश्चात्प्रदत्तंप्रेम्णाचसखीनांवचनादहो ॥ लज्जयाकृष्णवर्णोभूद्भवान्पापे
नयःप्रभो ॥ ७४ ॥ क्षमादेहंपरित्यज्यलज्जयापृथिवींगता ॥ ततस्तस्याःशरीरंचगुणश्रेष्ठंबभूवह ॥ ७५ ॥
संविभज्यत्वयादत्तंप्रेम्णाप्ररुदतापुनः ॥ किंचिद्वत्तंविष्णवेचवैष्णवेभ्यश्चकिंचन ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥

ममपराधमाह मयापूर्वमिति ॥ ७० ॥ ७१ ॥ इतिपूर्वजातंसत्यंनवेतिस्मर ॥ ७२ ॥ गृहीतंमयेतिशेषः ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥

टी.अ.

१३

॥४७॥

॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ स्वजलं पूर्वमुत्पन्नं ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ जलशून्यं चेति गंगानलस्य कृष्णचरणैर्लनत्वात्
 धार्मिकेभ्यश्च धर्माय दुर्बलेभ्यश्च किंचन ॥ तपस्विभ्योऽपि देवेभ्यः पंडितेभ्यश्च किंचन ॥ ७७ ॥ एतत्ते कथितं
 सर्वकिंभूयः श्रोतुमिच्छसि ॥ त्वद्गुणं चैव बहुशो न जानामि परं प्रभो ॥ ७८ ॥ इत्येवमुक्त्वा साराधारकपंकजलो
 चना ॥ गंगां वक्तुं समारेभे न म्नास्यां लज्जितां सतीं ॥ ७९ ॥ गंगारहस्यं विज्ञाय योगेन सिद्धयोगिनी ॥ तिरोभू
 य स भामध्ये स्वजलं प्रविवेश सा ॥ ८० ॥ राधा योगेन विज्ञाय सर्वत्रावस्थितां च तां ॥ पानं कर्तुं समारेभे गंडूषा
 त्सिद्धयोगिनी ॥ ८१ ॥ गंगारहस्यं विज्ञाय योगेन सिद्धयोगिनी ॥ श्रीकृष्णचरणां भोजे विवेश शरणं ययौ
 ॥ ८२ ॥ गोलोके सा च वै कूठे ब्रह्मलोकादिके तथा ॥ ददर्श राधा सर्वत्र नैव गंगां ददर्श सा ॥ ८३ ॥ सर्वत्र जलशून्यं
 च शुष्कपंकं च गोलकं ॥ जलजंतु समूहैश्च मृतदेहैः समन्वितं ॥ ८४ ॥ ब्रह्मविष्णुशिवानंतधर्मेन्द्रैर्दुर्दिवाकराः ॥ म
 नवो मुनयः सर्वे देवसिद्धतपस्विनः ॥ ८५ ॥ गोलोकं च समाजग्मुः शुष्ककंठोष्ठतालुकाः ॥ सर्वे प्रणे मुर्गो विंदं स
 र्वेशं प्रकृतेः परं ॥ ८६ ॥ वरं वरेण्यं वरदं वरिष्ठं वरकारणं ॥ गोपिका गोपवृंदानां सर्वेषां प्रवरं प्रभुं ॥ ८७ ॥ नि
 रीहं च निराकारं निर्लिप्तं च निराश्रयं ॥ निर्गुणं च निरुत्साहं निर्विकारं निरंजनं ॥ ८८ ॥ स्वेच्छामयं च साकारं भ
 क्तानुग्रहकारकं ॥ सत्त्वस्वरूपं सत्येशं साक्षिरूपं सनातनं ॥ ८९ ॥ परं परेशं परमं परमात्मानमीश्वरं ॥ प्रणम्य
 तुष्टुवुः सर्वे भक्तिनम्रात्मकंधराः ॥ ९० ॥ सगद्गदाः साश्रुनेत्राः पुलकांकिता विग्रहाः ॥ सर्वे संस्तूय सर्वेशं भगवंतं
 परात्परं ॥ ९१ ॥ ज्योतिर्मयं परं ब्रह्म सर्वकारणकारणं ॥ अमूल्यरत्ननिर्माणचित्रसिंहासनास्थितं ॥ ९२ ॥
 सेव्यमानं च गोपालैः श्वेतचामरवायुना ॥ गोपालिकानृत्यगीतं पश्यंतं सस्मितं मुदा ॥ ९३ ॥ ॥ ६४ ॥

॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ॥ ७७ ॥

॥ ७७ ॥

दे.भा.न.

॥४८॥

॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥ १ ॥ किंसेव्यंसेवकंकिंवेति सर्वेषांतत्रत्यानांभगवत्समानरूपैश्वर्यवत्वात्

टी.अ.

१३

प्राणाधिकप्रियतमराधावक्षस्थलस्थितं ॥ तथाप्रदत्तंतांबूलंभुक्तवतंसुवासितं ॥ ९४ ॥ परिपूर्णतमंरासेदह
शुभसुरेश्वरं ॥ मुनयोमानवाःसिद्धास्तपसावतपस्विनः ॥ ९५ ॥ प्रहृष्टमनसःसर्वेजग्मुःपरमविस्मयं ॥
परस्परंसमालोक्यप्रोद्युस्तेचचतुर्मुखं ॥ ९६ ॥ निवेदितंजगन्नाथंस्वाभिप्रायमभीप्सितं ॥ ब्रह्मातद्वचनंश्रु
त्वाविष्णुंरुत्वास्वदक्षिणे ॥ ९७ ॥ वामतोवामदेवंचजगामकृष्णसन्निधिं ॥ परमानंदयुक्तंचपरमानंदरूपिणं
॥ ९८ ॥ सर्वंकृष्णमयंधाताददर्शरासमंडले ॥ सर्वंसमामवेपंचसमानासनसंस्थितं ॥ ९९ ॥ द्विभुजंमुरलीह
स्तंवनमालाविभूषितं ॥ मयूरपिच्छचूडंचकौस्तुभेमविराजितं ॥ १०० ॥ अतीवकमनीयंचसुंदरंशांतविग्र
हं ॥ गुणभूषणरूपेणतेजसावयसात्विषा ॥ १ ॥ परिपूर्णतमंसर्वैश्वर्यसमन्वितं ॥ किंसेव्यंसेवकंकिंवा
दृष्टानिर्वक्तुमक्षमः ॥ २ ॥ क्षणतिजःस्वरूपंचरूपंतप्रस्थितंक्षणं ॥ निराकारंचसाकारंददर्शद्विविधंक्षणं ॥
॥ ३ ॥ एकमेवक्षणंकृष्णंराधयारहितंपरं ॥ प्रत्येकासनसंस्थंचतयासार्द्धंचतत्क्षणं ॥ ४ ॥ राधारूपधरंकृ
ष्णंकृष्णरूपंकलत्रकं ॥ किंस्त्रीरूपंचपुरुषंविधाताध्यातुमक्षमः ॥ ५ ॥ हृत्पद्मस्थंचश्रीकृष्णंध्यात्वाध्यानेनच
क्षुषा ॥ चकारस्तवनंभक्त्यापरिहारमनेकधा ॥ ६ ॥ ततःस्वचक्षुरुन्मील्यपुनश्चतदनुज्ञया ॥ ददर्शकृष्णमे
कंचराधावक्षस्थलस्थितं ॥ ७ ॥ स्वपार्षदैःपरिवृतंगोपीमंडलमंडितं ॥ पुनःप्रणेमुस्तंदृष्टुतुष्टुवुःपरमेश्व
रं ॥ ८ ॥ तदाभिप्रायमाज्ञायतानुवाचरमेश्वरः ॥ सर्वात्मासचसर्वज्ञःसर्वेशःसर्वभावनः ॥ ९ ॥ ॥ ६४ ॥

दुर्ज्ञेयत्वमितिभावः ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ कलत्रकंराधाकृष्णरूपेत्वर्थः एतेनप्रकृतिपदयोरेत्यंताभेदःसूचितः ॥ ५ ॥ परिहारमपरा
धक्षमापनं ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥४८॥

॥ १० ॥ ११ ॥ राधाइमामितिछेदः यूयमिमांगंगांराधाप्रार्थनयानिर्भयाकुस्त ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ मुग्धयोर्मोहितयोः

श्रीभगवानुवाच ॥ आगच्छकुशलं ब्रह्मन्नागच्छकमलापते ॥ इहागच्छमहादेवशश्वत्कुशलमस्तुवः ॥ १० ॥

आगताहिमहाभागागंगानयनकारणात् ॥ गंगाचचरणांभोजेभयेनशरणंगता ॥ ११ ॥ राधेमांपातुमिच्छं

तीदृष्टमत्सन्निधानतः ॥ दास्यामीमांचभवतांयूयंकुस्तनिर्भयां ॥ १२ ॥ श्रीकृष्णस्यवचःश्रुत्वासस्मितःकम

लोद्भवः ॥ तुष्टवराधामाराध्यांश्रीकृष्णपरिपूजितां ॥ १३ ॥ वक्त्रैश्चतुर्भिःसंस्तूयभक्तिनम्रात्मकंधरः ॥ धाताच

तुर्णावेदानामुवाचचतुराननः ॥ १४ ॥ चतुराननउवाच ॥ गंगात्वदंगसंभूताप्रभोश्चरासमंडले ॥ युवयोर्द्रवरू

पासामुग्धयोःशंकरस्वनात् ॥ १५ ॥ कृष्णांशाचत्वदंशाचत्वत्कन्यासदृशीप्रिया ॥ त्वन्मंत्रग्रहणंकृत्वाकरो

तुतवपूजनं ॥ १६ ॥ भविष्यतिपतिस्तस्यवैकुण्ठेशश्चतुर्भुजः ॥ भूस्थायाःकलयातस्याःपतिर्लवणवारिधिः

॥ १७ ॥ गोलोकस्थाचयागंगासर्वत्रस्थातथांबिके ॥ तदंबिकात्वंदेवेशिसर्वदासात्वदात्मजा ॥ १८ ॥ ब्रह्म

णोवचनंश्रुत्वास्वीचकारचसस्मिता ॥ बहिर्बभूवसाकृष्णपादांगुष्ठनखाग्रतः ॥ १९ ॥ तत्रैवसत्कृताशांतात

स्थैतेषांचमध्यतः ॥ उवासतोयातुत्यायतदधिष्ठातृदेवता ॥ २० ॥ ततोयंब्रह्मणाकिंचित्स्थापितंचकमंडलौ ॥

किंचिदधारशिरसिचंद्रार्धकृतशेखरः ॥ २१ ॥ गंगायैराधिकामंत्रंप्रददौकमलोद्भवः ॥ तत्स्तोत्रंकवचंपू

जांविधानंध्यानमेवच ॥ २२ ॥ सर्वतत्सामवेदोक्तंपुरश्चर्याक्रमंतथा ॥ गंगातामेवसंपूज्यवैकुण्ठप्रययौ

सह ॥ २३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥

॥ १५ ॥ १६ ॥ कलयाभूस्थायाइत्यन्वयः ॥ १७ ॥ तदंबिकातस्यागंगायामातात्वमित्यर्थः ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥

॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥

दे.भा.न

॥४९॥

यत्पृष्ठं गङ्गा कृष्णशरीराभिर्गङ्गासापदांबुजात्कथं जाता ब्रह्मकमंडलौकयंगता शिवशिशिकथंगता नारायणप्रियाकथंजातेतितत्सर्वविस्तरेण वर्णितंतदुपसंहरति लक्ष्मीः सरस्वतीति ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ कल्पक्षयोधुनेति खंडप्रलयः केषांश्चिद्ब्रह्मांडानां जात इत्यर्थः

लक्ष्मीः सरस्वती गङ्गा तुलसी विश्वपाविनी ॥ एतानां नारायणस्यैव च तस्त्रोयोषितो मुने ॥ २४ ॥ अथ तं सा स्मितः कृष्णो ब्रह्माणं समुवाच सः ॥ सर्वकालस्य वृत्तांतं दुर्बोधमविपश्चितां ॥ २५ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ गृहाण गङ्गां हि ब्रह्मन् हे विष्णो हे महेश्वर ॥ शृणु कालस्य वृत्तांतं तं ततो ब्रह्म त्रिंशमय ॥ २६ ॥ यूयं च येन्ये देवाश्च मुनयो मनवस्तथा ॥ सिद्धाय शस्विनश्चैव ये ये त्रैव समागताः ॥ २७ ॥ एते जीवन्ति गोलोके कालचक्रवर्जिते ॥ जलघृतं सर्वं विश्वं जातं कल्पक्षयोधुना ॥ २८ ॥ ब्रह्माद्या येन्य विश्वस्थास्ते विलीना धुना मायि ॥ वैकुण्ठं च विना सर्वं जलमग्नं च पद्मज ॥ २९ ॥ गत्वा सृष्टिं कुरु पुनर्ब्रह्मलोकादिकं भवं ॥ स्वं ब्रह्मांडं विरचय पश्चाद्गंगं प्रयास्यति ॥ ३० ॥ एवमन्येषु विश्वेषु सृष्टौ ब्रह्मादिकं पुनः ॥ करोम्यहं पुनः सृष्टिं गच्छ शीघ्रं सुरैः सह ॥ ३१ ॥ गतो बहुतरः कालो युष्माकं च चतुर्मुखाः ॥ गताः कतिविधास्ते च भविष्यन्ति च वेधसः ॥ ३२ ॥ इत्युत्काराधिकानाथो जगामांतःपुरे मुने ॥ देवा गत्वा पुनः सृष्टिं चक्रुरेव प्रयत्नतः ॥ ३३ ॥ गोलोके च स्थिता गङ्गा वैकुण्ठे शिवलोके ॥ ब्रह्मलोके स्थिता न्यत्र यत्र यत्र पुरः स्थिता ॥ ३४ ॥ तत्रैव सा गत गङ्गा चाज्ञया परमात्मनः ॥ निर्मिता विष्णुपादाब्जात्तेन विष्णुपदी स्मृता ॥ ३५ ॥ इत्येवं कथितं ब्रह्म गङ्गां गोपाख्यानमुत्तमं ॥ सुखदं मोक्षदं सारं किं भूयः श्रोतुमिच्छसि ॥ ३६ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे नवस्कंधे गङ्गा गोपाख्यानं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ ॥ ३७ ॥

॥ २८ ॥ तदेवाह ब्रह्माद्या इति ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके नवस्कंधे त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥

टी. अ.

१३

॥४९॥

त्रयोविंशतिभिः पर्यैर्गमाविज्योः परस्परं ॥ संबंधस्तु कृतः केनैत्येतदत्राभिधीयते ॥ १ ॥ पूर्वोक्तमनूय नारदः पृच्छति नारद उवाच ल
क्ष्मीसरस्वतीति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ राधाकृष्णांगयोः संभूता ॥ ४ ॥ तदंगसंभवाकृष्णांगसंभवतंकृष्णविनानान्यपतिवृणोतीत्यर्थः

नारद उवाच ॥ लक्ष्मीः सरस्वती गंगा तु लसी विश्वपाविनी ॥ एतानारायणस्यैव च तस्मिन् प्रिया इति ॥ १ ॥
गंगा जगाम वै कुंठमिदमेव श्रुतं मया ॥ कथं सा तस्य पत्नी च बभूवेति च न श्रुतं ॥ २ ॥ नारायण उवाच ॥ गंगा
जगाम वै कुंठं तत्पश्चाज्जगतां विधिः ॥ गत्वोवाच तया सार्द्धं प्रणम्य जगदीश्वरं ॥ ३ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ राधाकृष्णांग
संभूताया देवी द्रवरूपिणी ॥ नवयौवनसंपन्ना सुशीला सुंदरी वरा ॥ ४ ॥ शुद्धसत्त्वस्वरूपा च क्रोधाहंकारवर्जि
ता ॥ तदंगसंभवानान्यं वृणोतीयं च तं विना ॥ ५ ॥ तत्रातिमानि नीराधासा च तेजस्विनी वरा ॥ समुद्युक्ता पातु
मिमांभीतियं बुद्धिपूर्वकं ॥ ६ ॥ विवेश च रणां भोजे कृष्णस्य परमात्मनः ॥ सर्वत्र गोलकं शुष्कं दृष्ट्वा ह मम तदा
॥ ७ ॥ गोलोके यत्र कृष्णश्च सर्ववृत्तांतप्राप्तये ॥ सर्वांतरात्मा सर्वेषां ज्ञात्वाभिप्रायमेव च ॥ ८ ॥ बहिश्चकार
गंगां च पादांगुष्ठनखाग्रतः ॥ दत्त्वा स्यैराधिकामंत्रं पूरयित्वा च गोलकान् ॥ ९ ॥ प्रणम्य तां च राधेशं गृहीत्वा
त्रागमं प्रभो ॥ गांधर्वेण विवाहेन गृहाणे मां सुरेश्वरी ॥ १० ॥ सुरेश्वरेषु रसिकोरसिकेयं समागता ॥ त्वं रत्नं पुं
सुदेवेश स्त्री रत्नं स्त्री प्वियं सती ॥ ११ ॥ विदग्धाया विदग्धेन संगमो गुणवान् भवेत् ॥ उपस्थितां स्वयं कन्यां न गृ
ह्णातीह यः पुमान् ॥ १२ ॥ तं विहाय महा लक्ष्मीरुष्टा याति न संशयः ॥ यो भवेत्पंडितः सोऽपि प्रकृतिनावमन्यते ॥ १३ ॥

॥ ५ ॥ तर्ह्यत्रा किमर्थमागतेति चेच्छृणु तत्रातीति इमां गंगां पातुं भक्षितुं समुद्युक्ता यदा तदेयं भीता सती कृष्णस्य चरणे विवेश मुक्ता बभूव ॥ ६ ॥

७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ रसिके त्वयि ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ ॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

दे.भा.न

॥५०॥

प्राकृतिकामूलप्रकृतेरुद्धताः कामिन्योपिप्रकृतेः कलाः मूलप्रकृतेरेवोद्धताः अतः परस्परमेकत्वादवमानोनकर्त्तव्यइत्यर्थः तदुक्तंपुराणांत
रे स्त्रियस्तुष्टास्त्रियोस्तुष्टास्तुष्टाश्चदेवताः वर्धयंतिकुलंतुष्टानाशयंत्यपमानिताइति ननुकृष्णासक्तेयंकयंमांवरितुमागतेतिचेद्युवयोः कृ
ष्णनारायणयोः पूर्वोक्तोत्पत्त्यनुसारेणैकत्वादित्याह त्वमेवेति ॥ १४ ॥ १५ ॥ साचराधिकादक्षिणांशः वामांशः कमला येनकार

सर्वेप्राकृतिकाः पुंसः कामिन्यः प्रकृतेः कलाः ॥ त्वमेवभगवान्नाथोनिर्गुणः प्रकृतेः परः ॥ १४ ॥ अर्द्धांगद्विभुजः
कृष्णोयोर्द्धांगेनचतुर्भुजः ॥ कृष्णवामांगसंभूतावभूवराधिकापुरा ॥ १५ ॥ दक्षिणांशः स्वयंसाचवामांशः क
मलातथा ॥ तेनेयंत्वांवृणोत्येवयतस्त्वद्देहसंभवा ॥ १६ ॥ एकांगंचैवस्त्रीपुंसोर्यथाप्रकृतिपूरुषौ ॥ इत्येवमु
क्ताधातातांतंसमर्प्यजगामसः ॥ १७ ॥ गांधर्वेणविवाहेनतांजग्राहहरिः स्वयं ॥ नारायणः करंधृत्वापुष्पचं
दनचर्चितं ॥ १८ ॥ रेमेरमापतिस्तत्रगंगयासहितोमुदा ॥ गंगापृथ्वींगतायासास्वस्थानंपुनरागता ॥
॥ १९ ॥ निर्गताविष्णुपादाब्जात्तेनविष्णुपदीतिच ॥ मूर्ध्नीसंप्रापसादेवीनवसंगमलीलया ॥ २० ॥ रसिका
सुखसंभोगाद्रसिकेश्वरसंयुता ॥ तांदृष्ट्वादुःखितावाणीपद्मयावर्जितापिच ॥ २१ ॥ नित्यमीर्ष्यतितांवाणीन
चगंगासरस्वती ॥ गंगाशशापकोपेनभारतेचहरिप्रिया ॥ २२ ॥ गंगयासहतस्यैवतिस्त्रोभार्यारमापतेः ॥
सार्द्धतुलस्यापश्चाच्चतस्त्रश्चाभवन्मुने ॥ २३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

गेनैवंरीत्योभयोः कृष्णनारायणयोरभेदस्तेनकारणेनेत्यर्थः ॥ १६ ॥ यथामूलप्रकृतियुक्तः पुरुषः परमात्मा एकस्तथास्त्रीपुंसोरेकांगमेवभ
वतीत्यर्थः ॥ १७ ॥ १८ ॥ उपसंहरति गंगेति एवंप्रकारेणपृथ्वींगतापुनः स्वस्थानंवैकुण्ठगता १९ ॥ २० ॥ वर्जितानिवारिता
पितांगंगावाणीसरस्वतीनित्यमीर्ष्यतिद्वेष्टि गंगानुचसरस्वतीद्वेष्टिसर्वोयंपूर्वोक्तकथोपसंहारः ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ इतिश्रीदेवीभा
गवततिलकेनवमस्कंधेचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

टी.अ.

१४

॥५०॥

अर्धाधिकैकपंचाशत्यद्यैरथतु नारदः ॥ ज्ञातुं तुलस्युपाख्यानं प्रच्छेति च वर्ण्यते ॥ १ ॥ तुलस्युपाख्यानं वृच्छति नारद उवाच नारायण प्रियोति ॥ १ ॥ प्रकृतेः परं विष्णुं केन तपसा प्राप्तेत्यन्वयः ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ एतादृशमहाविष्णुप्रियासत्यपीत्यर्थः असुरग्रस्तारावणेनीडितेत्यर्थः

नारद उवाच ॥ नारायण प्रिया सा ध्वी कथं सा च बभूव ह ॥ तुलसी कुत्र संभूता का वा सा पूर्वजन्मनि ॥ १ ॥ कस्य वा सा कुले जाता कस्य कन्या कुले सती ॥ केन वा तपसा सा च संप्राप्ता प्रकृतेः परं ॥ २ ॥ निर्विकारं निरीहं च सर्वा विश्वस्वरूपकं ॥ नारायणं परं ब्रह्म परमेश्वरमीश्वरं ॥ ३ ॥ सर्वाराध्यं सर्वेशं सर्वज्ञं सर्वकारणं ॥ सर्वाधारं सर्वरूपं सर्वेषां परिपालकं ॥ ४ ॥ कथं मे तादृश देवी वृक्षत्वं समवाप ह ॥ कथं साप्यसुरग्रस्ता संबभूव तपस्विनी ॥ ५ ॥ सुस्निग्धं मे मनो लोलं प्रेरयन्मां मुहुर्मुहुः ॥ छेतुमर्हसि संदेहं सर्वसंदेहभंजन ॥ ६ ॥ नारायण उवाच ॥ मनुश्च दक्षसावर्णिः पुण्यवान्वैष्णवः शुचिः ॥ यशस्वी कीर्तिमांश्चैव विष्णो रंशसमुद्रवः ॥ ७ ॥ तत्पुत्रो ब्रह्मसावर्णिर्धर्मिष्ठो वैष्णवः शुचिः ॥ तत्पुत्रो धर्मसावर्णिर्वैष्णवश्चाजितेन्द्रियः ॥ ८ ॥ तत्पुत्रो रुद्रसावर्णिर्भक्तिमान्विजितेन्द्रियः ॥ तत्पुत्रो देवसावर्णिर्विष्णुव्रतपरायणः ॥ ९ ॥ तत्पुत्र इन्द्रसावर्णिर्महाविष्णुपरायणः ॥ वृषध्वजश्च तत्पुत्रो वृषध्वजपरायणः ॥ १० ॥ यस्याश्रमे स्वयं शंभुरासीद्देवयुगत्रयं ॥ पुत्रादपि परः स्नेहो नृपेतस्मिन् शिवस्य च ॥ ११ ॥ न च नारायणं मे नेन लक्ष्मीं न सरस्वतीं ॥ पूजां च सर्वदेवानां दूरीभूतां च कारसः ॥ १२ ॥ भद्रे मासि महालक्ष्मीपूजां मत्तो बभंज ह ॥ तथामाघीयपंचम्यां विस्तृतां सर्वदेवतैः ॥ १३ ॥ ॥ ६१ ॥

॥ ५ ॥ प्रेरयन्मां कथाश्रवणे प्रवर्तयत्सत्तिष्ठतीत्यर्थः अतश्छेतुमर्हसि संदेहमित्याह छेतुमिति ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ वृषध्वजपरायणः शिवभक्तः ॥ १० ॥ देवानां युगत्रयं ॥ ११ ॥ १२ ॥ बभंज ह न कृत्वा नू ॥ १३ ॥

दे.भा.न.

॥५१॥

सरस्वतीपूजांमाघपंचम्या यज्ञंअग्निहोत्रादिकं निदंतं सर्वदेवानिदंतं कृष्णधर्मं पात्रानंदिवाकरश्चुकोपेत्यन्वयः ॥ १४ ॥ शिवकारणात्सर्वव्या-
पकस्य सर्वदेवतामयस्याशिवस्य परिच्छेदकत्वात् नैतभावेन पूजनादित्यर्थः एतेनैकं देवं परिच्छिन्नतया ज्ञात्वा तमेव संपूज्यान्त्येदेवता पूजनत्यागे महा-
नन्यो भवति किंतु स्वैष्टदेवं सर्वात्मकत्वेन ज्ञात्वा सर्वदेवतास्वरूपं स्वैष्टदेवमभेदबुद्ध्या वेदोक्तानुष्ठानप्रकारेण तत्तत्काले तत्तदेवतारूपेण पूजयेदित्यु-

टी.अ.

१५

पापः सरस्वतीपूजांदूरीभूतांचकारसः ॥ यज्ञंचविष्णुपूजांचनिदंतं तं दिवाकरः ॥ १४ ॥ चुकोपदेवोभूपेद्रंशशा-
पशिवकारणात् ॥ अष्टश्रीस्त्वं च भवेति तं शशाप दिवाकरः ॥ १५ ॥ शूलंगृहीत्वा तं सूर्यमधावच्छंकरः स्वयं ॥ पि-
त्रासादीदिने शश्वद्ब्रह्माणं शरणं ययौ ॥ १६ ॥ शिवस्त्रिशूलहस्तश्च ब्रह्मलोकं ययौ क्रुधा ॥ ब्रह्मासूर्यपुरस्कृत्य वैकुं-
ठं ययौ भिया ॥ १७ ॥ ब्रह्मकश्यपमार्तंडाः सं त्रस्ताः शुष्कतालुकाः ॥ नारायणं च सर्वेशं ते ययुः शरणं भि-
या ॥ १८ ॥ मूर्धा प्रणेमुस्ते गत्वा तु प्लुवुश्च पुनः पुनः ॥ सर्वं निवेदनं च क्रुर्भयस्य कारणं हरौ ॥ १९ ॥ नारा-
यणश्च रूपयातेभ्यश्चाह भयं ददौ ॥ स्थिता भवत हे भीता भयं किंच मयि स्थिते ॥ २० ॥ स्मरंति ये यत्र तत्र मां
विपत्तौ भयान्विताः ॥ तांस्तत्र गत्वा रक्ष्यामि चक्रहस्तस्त्वरान्वितः ॥ २१ ॥ पाताहं जगतां देवाः कर्ता च सत-
तं सदा ॥ त्रष्टा च ब्रह्मरूपेण संहर्ता शिवरूपतः ॥ २२ ॥ शिवो हं त्वमहं चापि सूर्यो हं त्रिगुणात्मकः ॥ विधाय ना-
नारूपं च करोमि सृष्टिपालनं ॥ २३ ॥ यूयं गच्छत भद्रं वो भविष्यति भयं कुतः ॥ अद्य प्रभृतिमद्वरेण भयं वो नास्ति
शंकरात् ॥ २४ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥

संभवतीति बोध्यं ॥ १५ ॥ अधावच्छंकर इति इमामेव वेदोक्तानामयांदां स्थापयितुमेतादृशभक्तस्य स्वैष्टदेवतयापि कल्याणं कर्तुं न शक्यत इति
बोधनार्थं सूर्येण ममाभिलाषितं कृतमिति ज्ञानवपि सर्वज्ञः शिवो भिनिवेशेन सूर्यप्रत्यधावसूतवानिति भावः पित्राकश्यमेव ॥ १६ ॥ १७ ॥
॥ १८ ॥ १९ ॥ मयि स्थिते किं भयं न किमपीत्यर्थः ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ त्वं ब्रह्माग्रहमेव ॥ २३ ॥ २४ ॥ ॥ ७ ॥

॥५१॥

विष्णुः शंकरस्त्वर्गोक्तभिर्भयं मनसि ज्ञात्वा सम्यक् शंकरेण कृतमित्याभिप्रायेण शंकरं स्तोत्रं सर्वेश्वर इति ॥ २५ ॥ सुदर्शनः सूर्यः ॥ २६ ॥

सर्वेशो वै स भगवान् शंकरश्च स तां पतिः ॥ भक्ताधीनश्च भक्तानां भक्तात्मा भक्तवत्सलः ॥ २५ ॥ सुदर्शनः शिव
श्चैव मम प्राणाधिकः प्रियः ॥ ब्रह्मांडेषु न तेजस्वी हे ब्रह्मन्ननयोः परः ॥ २६ ॥ शक्तः स्रष्टुं महादेवः सूर्यकोटिचली
लया ॥ कोटिच ब्रह्मणामेवं नासाध्यं शूलिनः प्रभोः ॥ २७ ॥ बाह्यज्ञानं नैव किंचित् ध्यायते मां दिवानिशं ॥ मन्मं
त्रान्मद्गुणान्भक्त्या पंचवक्त्रेण गायति ॥ २८ ॥ अहमेव चिंतयामि तत्कल्याणं दिवानिशं ॥ यथा च मां प्रपद्यंते
तांस्तथैव भजाम्यहं ॥ २९ ॥ शिवस्वरूपो भगवान् शिवाधिष्ठातृदेवता ॥ शिवं भवति तस्माच्च शिवं तेन विदुर्बु
धाः ॥ ३० ॥ एतस्मिन्नंतरे तत्र जगाम शंकरः स्थितः ॥ शूलहस्तो वृषारूढोरक्तपंकजलोचनः ॥ ३१ ॥
आरूढ्य च वृषातूर्णं भक्तिनद्यात्मकंधरः ॥ ननाम भक्त्या तं शांतं लक्ष्मीकांतं परात्परं ॥ ३२ ॥ रत्नसिंहासन
स्थं च रत्नालंकारभूषितं ॥ किरीटिनं कुंडलिनं चक्रिणं वनमालिनं ॥ ३३ ॥ नवीननीरदश्यामं सुंदरं च चतुर्भु
जं ॥ चतुर्भुजैः सेवितं च श्वेतचामरवायुना ॥ ३४ ॥ चंदनोक्षितसर्वांगं भूषितं पीतवाससं ॥ लक्ष्मीप्रदत्ततांबू
लं भुक्त्वं तं च नारद ॥ ३५ ॥ विधाधरी नृत्यगीतं पश्यंतं सस्मितं सदा ॥ ईश्वरं परमात्मानं भक्तानुग्रहविग्रहं
॥ ३६ ॥ तं ननाम महादेवो ब्रह्मणानमितश्च सः ॥ ननाम सूर्यो भक्त्या च सं त्रस्तश्चंद्रशेखरं ॥ ३७ ॥ कश्यप
श्च महाभक्त्या तुष्टावचमनाम च ॥ शिवः संस्तूय सर्वेशं समुवास सुखासने ॥ ३८ ॥ सुखासने सुखासीनं विश्रांतं
चंद्रशेखरं ॥ श्वेतचामरवातेन सेवितं विष्णुपार्षदैः ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥

॥ २७ ॥ बाह्यज्ञानं तस्य न किंचिदप्यस्ति किंतु निरंतरं मामेव ध्यायतीत्यर्थः ॥ २८ ॥ २९ ॥ शिवस्य मोक्षस्याधिष्ठाता ॥ ३० ॥

॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥

दे.भा.न

॥५२॥

॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ कमलातपसालक्ष्म्युद्देश्यकतपस्ययायुक्तौ कल्याणेशेन

पीयूषतुल्यमधुरं वचनं सुमनोहरं ॥ विष्णुरुवाच ॥ आगतोसिकथंचात्रवदकोपस्यकारणं ॥ ४० ॥ महादेव
उवाच ॥ वृषध्वजं च मद्भक्तं मम प्राणाधिकं प्रियं ॥ सूर्यः शशाप इति मे प्रकोपस्य तु कारणं ॥ ४१ ॥ पुत्रवत्सल
शोकेन सूर्यं हंतुं समुद्यतः ॥ सब्रह्माणं प्रपन्नश्च सूर्यश्च सविधिस्त्वयि ॥ ४२ ॥ त्वयि येशरणापन्ना ध्यानेन वच
सापिवा ॥ निरापदो विशंकास्ते जरामृत्युश्च तैर्जितः ॥ ४३ ॥ प्रत्यक्षं शरणापन्नास्तत्फलं किं वदामि भो ॥ हरि
स्मृतिश्चाभयदा सर्वमंगलदा सदा ॥ ४४ ॥ किं मे भक्तस्य भविता तन्मे ब्रूहि जगत्प्रभो ॥ श्रीहितस्यास्य मूढ
स्य सूर्यशापेन हेतुना ॥ ४५ ॥ विष्णुरुवाच ॥ कालो तियातो दैवेन युगानामेकविंशतिः ॥ वैकुण्ठे घटिका र्द्धेन
शीघ्रं गच्छत्वमालयं ॥ ४६ ॥ वृषध्वजो मृतः कालाद्दुर्निवार्यात्सुदारुणात् ॥ रथध्वजश्च तत्पुत्रो मृतः सोऽपि श्रिया
हतः ॥ ४७ ॥ तत्पुत्रौ च महाभागौ धर्मध्वजकुशध्वजौ ॥ हतश्रियौ सूर्यशापात्स्मृतौ परमवैष्णवौ ॥ ४८ ॥
राज्यभ्रष्टौ श्रियाभ्रष्टौ कमलातपसारथौ ॥ तयोश्च भार्ययोर्लक्ष्मीः कमलाच भविष्यति ॥ ४९ ॥ संपद्युक्तौ तदा
तौ च नृपश्रेष्ठौ भविष्यतः ॥ मृतस्ते सेवकः शंभोगच्छ यूयं च गच्छत ॥ ५० ॥ इत्युक्त्वा च सलक्ष्मीः सभातोभ्यन्तरं
गतः ॥ देवाजग्मुः संत्रह्णाः स्वाश्रमं परमं मुदा ॥ ५१ ॥ शिवश्च तपसे शीघ्रं परिपूर्णतमो ययौ ॥ इति श्रीदेवी
भागवते महापुराणे नवमस्कंधे नारायणनारदसंवादेशक्तिप्रादुर्भाविपंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ श्रीनारायण उ
वाच ॥ लक्ष्मीतौ च समाराध्य चोग्रेण तपसामुने ॥ वरमिष्टं च प्रत्येकं संप्रापतुरभीप्सितं ॥ १ ॥ ॥ ६२ ॥

लक्ष्मीर्भविष्यति अवतरिष्यति ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके नवमस्कंधे पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ त्रिषष्टिः श्लोकवर्गस्तु अ
र्द्धश्लोकेन चाधिकैः ॥ महाक्ष्म्याराजगृहे जन्म सम्यग्योच्यते ॥ १ ॥ नारायणस्तदुत्तरं ब्राह्मणं वृत्तांतमाह लक्ष्मीतौ चेति ॥ १ ॥

टी.अ.

१५

॥५२॥

॥ २ ॥ कमलांशां लक्ष्म्यां भाषिष्ठकालेन सुतां कन्यासा सुषावेत्याह सुषावेति ॥ ३ ॥ सा च जन्मनैव ज्ञानयुक्ता लक्ष्म्यां शत्वा

महालक्ष्मीवरेणैव तौ पृथ्वीं शीबभूवतुः ॥ पुण्यवंतौ पुत्रवंतौ धर्मध्वजकुशध्वजौ ॥ २ ॥ कुशध्वजस्य पत्नी च देवी
मालावती सती ॥ सा सुषावचकालेन कमलांशां सुतां सती ॥ ३ ॥ सा च भूयिष्ठकालेन ज्ञानयुक्ता बभूव ह ॥ कृत्वा
वेदध्वनिं रूपमुत्तस्थौ सूतिकागृहात् ॥ ४ ॥ वेदध्वनिं सा च कारजातमात्रेण कन्यका ॥ तस्मात्तां च वेदवतीं प्रव
दंति मनीषिणः ॥ ५ ॥ जातमात्रेण सुस्नाता जगाम तपसेवनं ॥ सर्वैर्निषिद्धायत्नेन नारायणपरायणा ॥ ६ ॥
एकमन्वन्तरं चैव पुष्करे च तपस्विनी ॥ अत्युग्रां च तपस्यां च लीलाया हि चकार सा ॥ ७ ॥ तथापि पुष्टान्छिद्यन्
वयौवनसंयुता ॥ शुश्राव सा च सह सा सुवाच मशरीरिणीं ॥ ८ ॥ जन्मान्तरे च ते भर्ता भविष्यति हरिः स्वयं ॥ ब्र
ह्मादिभिर्दुराराध्यं पतिलप्स्यसि सुन्दरि ॥ ९ ॥ इति श्रुत्वा च सा दृष्ट्वा चकार ह पुनस्तपः ॥ अतीव निर्जनस्थाने प
र्वते गन्धमादने ॥ १० ॥ तत्रैव सुचिरं तत्त्वा विश्वस्य समुवास सा ॥ ददर्श पुरतस्तत्र रावणं दुर्निवारणं ॥ ११ ॥
दृष्ट्वा सा तिथिभक्त्या च पाद्यं तस्मै ददौ किल ॥ सुस्वादभूतं च फलं जलं चापि सुशीतलं ॥ १२ ॥ तच्च भुक्त्वा स पा
पिष्ठश्चो वास तत्समीपतः ॥ चकार प्रभ्रमिति तां कात्वं कल्याणि वर्तसे ॥ १३ ॥ तां दृष्ट्वा स वरारोहां पीनश्रोणि
पयोधरां ॥ शरत्पद्मे तस्वास्यां च सस्मितां सुदतीं सतीं ॥ १४ ॥ मूर्छामवाप कृपणः कामबाणप्रपीडितः ॥ स
करेण समाकृष्य शृंगारं कर्तुमुद्यतः ॥ १५ ॥ सती चुकोप दृष्ट्वा तं स्तंभितं च चकार ह ॥ सजडो हस्तपादैश्च किंचि
द्वक्तुं न च क्षमः ॥ १६ ॥

॥ ६२ ॥

॥ ६३ ॥

॥ ६४ ॥

दभूव ह ॥ ४ ॥ ५ ॥ जातमात्रेण जन्ममात्रेण ॥ ६ ॥ ७ ॥ सुवाचं देवाचं ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥
॥ १४ ॥ शृंगारं मे युनं ॥ १५ ॥ १६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.न

॥५३॥

तस्य रावणस्य स्तनं सुकृतं परलोकप्रदानेन फलं चकारेत्यर्थः नहि पराशक्तैस्तनं व्यर्थं भविष्यतीति ॥ १७ ॥ इदं मम वाचो नलं सामर्थ्यं वि-
लोक्य ॥ १८ ॥ देहत्यागमिति परपुरुषेण स्पृष्टदेहस्य दुष्टत्वाच्च त्याग एवोचित इति सती धर्ममया दानो धिता ॥ १९ ॥ विललापरावणः

टी.अ.
१६

गुप्तावमनसा देवीप्रययौ प्रदल्लोचनां ॥ सा तु शतस्य स्तनं सुकृतं चकार ह ॥ १७ ॥ सा शशापमदर्थे त्वं वि-
नक्ष्यसि सबांधवः ॥ स्पृष्टा हं च त्वया कामाद्वलं चाप्यवलोक्य ॥ १८ ॥ इत्युत्कासाच योगेन देहत्यागं चकार
सा ॥ गंगायां तां च सन्यस्य स्वगृहं रावणो ययौ ॥ १९ ॥ अहो किमद्भुतं दृष्टं किं कृतं वानयाधुना ॥ इति संचित्य सं-
चित्य विललाप पुनः पुनः ॥ २० ॥ सा च कालांतरे सा ध्वी बभूव जनकात्मजा ॥ सीता देवीति विख्यात इदं रावणो
हतः ॥ २१ ॥ महातपस्विनी सा च तपसा पूर्वजन्मतः ॥ लेभे रामं च भर्तारं परिपूर्णतमं हरिं ॥ २२ ॥ संप्रापत
पसाराध्यं दुराराध्यं जगत्पतिं ॥ सारमा सुचिरं रे मे रामेण सह सुंदरी ॥ २३ ॥ जातिस्मरान् स्मरति तपसश्च क्लमं
पुरा ॥ सुखेन तज्जहौ सर्वदुःखं चापि सुखं फले ॥ २४ ॥ नाना प्रकारविभवं चकार सुचिरं सती ॥ संप्राप्य सुकु-
मारं तमतीव नवयौवना ॥ २५ ॥ गुणिनं रासिकं शांतं कांतं देवमनुत्तमं ॥ स्त्रीणां मनोज्ञं सचिरं तथालेभे यथेप्सि-
तं ॥ २६ ॥ पितुः सत्यपालनार्थं सत्यसंधोरघूद्वहः ॥ जगाम काननं पश्चात्कालेन च वलीयसा ॥ २७ ॥ तस्थौ
समुद्रनिकटे सीतया लक्ष्मणेन च ॥ ददर्श तत्र बह्विचविप्ररूपधरं हरिः ॥ २८ ॥ रामं च दुःखितं दृष्ट्वा स च दुःखी ब-
भूव ह ॥ उवाच किंचित्सत्येष्टं सत्यं सत्यपरायणः ॥ २९ ॥ द्विज उवाच ॥ भगवन् श्रूयतां रामकाले यं यदुपास्थि-
तः ॥ सीताहरणकाले यं तवैव समुपास्थितः ॥ ३० ॥

॥ ३१ ॥

॥ ३२ ॥

॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ तपसः क्लमं खेदं दुःखं चापि सुखं फले इति परिणामे च तमफले सति दुःखमपि सुखमेव भवतीत्यर्थः
॥ २४ ॥ तं रामं ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥

॥ ३१ ॥

॥ ३२ ॥

॥५३॥

नमत्प्रसूसीतां ॥ ३१ ॥ विप्रो नार्हं किं तु हुताशनः ॥ ३२ ॥ लक्ष्मणं प्रति मर्धनं प्रकाशयन् प्रकटीकृत्वा ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ इदं गोप्यं वस्तु कस्मै
 चिद् वक्तुं निषिध्यसीतां गृहीत्वा सोऽग्रिर्ययौ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ पूर्वद्वारपालयोः किं कर आसीत् सकारणवशाद्वाक्षसो भूत्स पुनर
 देवं च दुर्निवार्यं च न च देवात्परो बली ॥ जगत्प्रसूमयि न्यस्य छायां रक्षांतिके धुना ॥ ३९ ॥ दास्यामि सीतां तुभ्यं च
 परीक्षा समये पुनः ॥ देवैः प्रस्थापितो हं च न च विप्रो हुताशनः ॥ ३२ ॥ रामस्तद्वचनं श्रुत्वा न प्रकाशय च लक्ष्मणं ॥
 स्वीकारं वचसश्च क्रेहदयेन विदूयता ॥ ३३ ॥ बन्धिर्योगेन सीतायामायासीतां च कारह ॥ तत्तुल्यगुणसर्वी
 गांददौ रामाय नारद ॥ ३४ ॥ सीतां गृहीत्वा सययौ गोप्यं वक्तुं निषिध्य च ॥ लक्ष्मणो नैव बुबुधे गोप्यमन्यस्य
 का कथा ॥ ३५ ॥ एतस्मिन्नंतरे रामो ददर्श कनकं मृगं ॥ सीता तं प्रेरयामास तदर्थं यत्नपूर्वकं ॥ ३६ ॥ सन्यस्य
 लक्ष्मणं रामो जानक्यारक्षणे वने ॥ स्वयं जगाम तूर्णं तं विव्याध सायकेन च ॥ ३७ ॥ लक्ष्मणेति च शब्दं सकृत्वा
 च माययामृगः ॥ प्राणांस्तत्याज सहसा पुरो दृष्ट्वा हरिं स्मरन् ॥ ३८ ॥ मृगदेहं परित्यज्य दिव्यरूपं विधाय च ॥
 रत्ननिर्माणयानेन वैकुण्ठं सजगाम ह ॥ ३९ ॥ वैकुण्ठलोकद्वार्यासीत् किं करोद् द्वारपालयोः ॥ पुनर्जगाम तद्द्वारमा
 देशाद् द्वारपालयोः ॥ ४० ॥ अथ शब्दं च सा श्रुत्वा लक्ष्मणेति च विह्वलं ॥ तं हि सा प्रेरयामास लक्ष्मणं रामसन्निधौ
 ॥ ४१ ॥ गते च लक्ष्मणे रामं रावणो दुर्निवारणः ॥ सीतां गृहीत्वा प्रययौ लंकामेव स्वलीलया ॥ ४२ ॥ विषसाद
 च रामश्च वने दृष्ट्वा च लक्ष्मणं ॥ तूर्णं च स्वाश्रमं गत्वा सीतां नैव ददर्श सः ॥ ४३ ॥ मूर्छां संप्राप सुचिरं विललाप
 भृशं पुनः ॥ पुनः पुनश्च बभ्राम तदन्वेषणपूर्वकं ॥ ४४ ॥ कालेन प्राप्य तद्द्वार्तीगोदावरीनदीतटे ॥ सहायान्वान
 रान्कृत्वा बंधसागरं हरिः ॥ ४५ ॥ लंकां गत्वा रघुश्रेष्ठो जघान सायकेन च ॥ कालेन प्राप्य तंहत्वा रावणं बांध
 वैः सह ॥ ४६ ॥ तां च बन्धिपरिक्षां च कारयामास सत्वरं ॥ हुताशस्तत्र काले तु वास्तवीं जानकीं ददौ ॥ ४७ ॥

पिरामबाणेन हतो वैकुण्ठे द्वारपालयोः समीपे जगामेत्यर्थः ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ तां सीतां बन्धिपरिक्षां दिव्यं ॥ ४७ ॥

दे.भा.न

॥५४॥

कविप्रमं च छायासीतादहः परं हि वंद्यं हरिण्यामि किं मया कर्तव्यमिदं नु मां वंदस्ते युवाच ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ सा चेति स्वर्गलक्ष्मीः
उवाच छाया बहिर्हरामं च निनया न्विता ॥ करिष्यामीति किमहंतदुपायं वदस्व मे ॥ ४८ ॥ श्रीरामा ग्रीऊचतुः ॥ त्वं
गच्छतपसे देवी पुष्करं च सुपुण्यदं ॥ कृत्वा तपस्यां तत्रैव स्वर्गलक्ष्मीर्भविष्यसि ॥ ४९ ॥ सा च तद्वनं श्रुत्वा प्रत
प्यपुष्करे तपः ॥ दिव्यं त्रिलक्षवर्षं च स्वर्गलक्ष्मीर्बभूव ह ॥ ५० ॥ सा च कालेन तपसा यज्ञकुंडसमुद्भवा ॥ कामि
नी पांडवानां च द्रौपदीद्रुपदात्मजा ॥ ५१ ॥ कृते युगे वेदवती कुशध्वजसुता शुभा ॥ त्रेतायां रामपत्नी च सीति तिज
मकात्मजा ॥ ५२ ॥ तच्छाया द्रौपदी देवी द्वापारे द्रुपदात्मजा ॥ त्रिहायणी च संप्रोक्ता विद्यमाना युगत्रये ॥ ५३ ॥
नारद उवाच ॥ प्रियाः पंचकथं तस्या बभूवुर्मुनिपुंगव ॥ इति मञ्चित्तसंदेहं भंजसंदेहं भंजन ॥ ५४ ॥ नारायण उ
वाच ॥ लंकायां वास्तवी सीतारामं संप्राप नारद ॥ रूपयौवनसंपन्ना छाया च बहुचिंतया ॥ ५५ ॥ रामा इयोरज्ञ
वातसुमुपास्ते शंकरं परं ॥ कामातुरा पतिव्यग्रा प्रार्थयंती पुनः पुनः ॥ ५६ ॥ पतिं देहि पतिं देहि पतिं देहि त्रिलो
चन ॥ पतिं देहि पतिं देहि पंचवारं च कारसा ॥ ५७ ॥ शिवस्तत्प्रार्थनां श्रुत्वा प्रहस्य रसिकेश्वरः ॥ प्रियेतव प्रि
याः पंचभविष्यंति वरंददौ ॥ ५८ ॥ तेन सा पांडवानां च बभूव कामिनी प्रिया ॥ इति ते कथितं सर्वं प्रस्तावं वास्तवं
शृणु ॥ ५९ ॥ अथ संप्राप्य लंकायां सीतारामो मनोहरां ॥ विभीषणाय तां लंकां दत्वा यो ध्याययौ पुनः ॥ ६० ॥
एकादशसहस्राब्दं कृत्वा रज्यं च भारते ॥ जगाम सर्वैर्लोकैश्च सार्धैर्वैकुण्ठमेव च ॥ ६१ ॥ कमलांशवेदवती कम
लायां शिवेशसा ॥ कथितं पुण्यमास्यानं पुण्यदं पापनाशनं ॥ ६२ ॥ सततं मूर्तिमंतं भवेदाश्च त्वार एव च ॥
संति यस्याश्च जिह्वाग्रे सा च वेदवती श्रुता ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥

॥ ५१ ॥ ५२ ॥ बभूवुर्मुनेर्लंकां तां तत्र जिहावणीति नामहायवशब्दो न युगपरः ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

टी.अ.

१६

॥५४॥

इति श्रीदेवीभागवतातेलकेनवमस्कंधेषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ अष्टाधिकैश्चत्वारिंशत्पद्यैस्तुसविस्तरं ॥ धर्मध्वजसुतायास्तुतुलस्याश्च
कथोच्यते ॥ १ ॥ तुलसीकथायांप्रवृत्तायांप्रसंगागतांकुशध्वजसुताकथांसमाप्यधर्मध्वजसुतायास्तुलस्याः कथामाह श्रीनारायणउवाच

धर्मध्वजसुतास्यानंनिबोधकथयामिते ॥ इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥
श्रीनारायणउवाच ॥ धर्मध्वजस्यपत्नीचमाधवीतिचविश्रुता ॥ नृपेणसार्धेसारामेरेमेचगंधमादने ॥ १ ॥ श
रत्पारतिकरीकृत्वापुष्पचंदनचर्चितां ॥ चंदनालिप्तसर्वांगीपुष्पचंदनवायुना ॥ २ ॥ स्त्रीरत्नमतिचार्वंगीरत्न
भूषणभूषिता ॥ कामुकीरसिकासृष्टरसिकेनचसंयुता ॥ ३ ॥ सुरतेविरतिर्नास्तितयोः सुरतिविज्ञयोः ॥
गतंदेववर्षशतंनज्ञातंचदिवांनिशं ॥ ४ ॥ ततोराजामतिंप्राप्यसुरताद्विररामच ॥ कामुकीसुंदरीकिंचिन्नच
तृप्तिजगामसा ॥ ५ ॥ दधारगर्भसासद्योदैवादब्दशतंसती ॥ श्रीगर्भाश्रीयुतासाचसाबभूवदिनेदिने ॥ ६ ॥
शुभेक्षणेशुभदिनेशुभयोगेचसंयुते ॥ शुभलग्नेशुभांशेचशुभस्वामिग्रहान्विते ॥ ७ ॥ कार्तिकीपूर्णिमायांतु
सितवारेचपाद्मज ॥ सुषावसाचपद्मांशंपद्मिनीतांमनोहरां ॥ ८ ॥ शरत्पार्वणचंद्रास्यांशरत्पंकजलोचनां ॥
पक्वविबाधरौष्ठीचपश्यंतींसस्मितागृहं ॥ ९ ॥ हस्तपादतलारक्तांनिम्ननाभिंमनोरमां ॥ तदधस्त्रिवलीयुक्तां
नितंबयुगवर्तुलां ॥ १० ॥ शतिसुखोष्णसर्वांगीग्रीष्मेचसुखशीतलां ॥ श्यामांसुकेशीरुचिरान्यग्रोधपरिमंड
लां ॥ ११ ॥ पीतचंपकवर्णाभांसुंदरीष्वेवसुंदरीं ॥ नरानार्यश्चतांदृष्टुतुलनांदातुमक्षमाः ॥ १२ ॥

धर्मध्वजस्येति साआरामेइतिछेदः ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ सितवारेशुक्रवारे पाद्मजपद्माब्जातोब्रह्मापाद्मस्त
स्याब्जातोभरदःपाद्मजः ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ न्यग्रोधसद्यवहंवावमानंकेक्षणरिमंडलयस्याः सा ॥ ११ ॥ १२ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.न

तुलसीति तुलामुपमामस्यतिक्षिपतिसातुलसी असुक्षेपणेइतिधातोः पचाद्यांचिशकंद्वादित्वात्पररूपेणैरादिषाठान्डीप् भूमिष्ठमात्रेणभूमौ

टी.अ.

१७

॥५५॥

तेननाम्नाचतुलसीतांवदंतिमनीषिणः ॥ साचभूमिष्ठमात्रेणयोग्यास्त्रीप्रकृतिर्यथा ॥ १३ ॥ सर्वैर्निषिद्धातप
सेजगामबदरीवनं ॥ तत्रदेवाब्दलक्षचकारपरमंतपः ॥ १४ ॥ मनसानारायणःस्वामीभ्रवितेतिचनिश्चि
ता ॥ ग्रीष्मेपंचतपाःशीतेतोयवस्त्राचप्रावृषि ॥ १५ ॥ आसनस्थावृष्टिधाराःसहंतीतिदिवानिशं ॥ विंशत्स
हस्रवर्षचफलतोयाशनाचसा ॥ १६ ॥ त्रिंशत्सहस्रवर्षचपत्राहारातपस्विनी ॥ चत्वारिंशत्सहस्राब्दंवाय्वा
हाराकृशोदरी ॥ १७ ॥ ततोदशसहस्राब्दंनिराहाराबभूवसा ॥ निर्लक्षांचैकपादस्थांदृष्ट्वातांकमलोद्भवः
॥ १८ ॥ समाययौवरंदातुंपरंबदरिकाश्रमं ॥ चतुर्मुखंचसादृष्ट्वाननामहंसवाहनं ॥ १९ ॥ तामुवाचजगत्कर्ता
विधाताजगतामपि ॥ ब्रह्मोवाच ॥ वरंवृणीष्वतुलसियत्तेमनसिवांचितं ॥ २० ॥ हरिभक्तिंहरेर्दास्यमजराम
रतामपि ॥ तुलस्युवाच ॥ शृणुतातप्रवक्ष्यामियन्मेमनसिवांचितं ॥ २१ ॥ सर्वज्ञस्यापिपुरतःकालज्जामम
सांप्रतं ॥ अहंतुतुलसीगोपीगोलोकेहंस्थितापुरा ॥ २२ ॥ कृष्णप्रियाकिंकरीचतदंशातत्सखीप्रिया ॥ गोविं
दरतिसंभुक्तामतृप्तामांचमूर्छितां ॥ २३ ॥ रासेश्वरीसमागत्यददर्शरासमंडले ॥ गोविंदंभर्त्सयामासमांशशा
परुषान्विता ॥ २४ ॥ याहित्वंमानवीयोनिमित्येवंचशशापह ॥ मामुवाचसगोविंदोमदंशंचचतुर्भुजं ॥ २५ ॥
लभिष्यसितपस्तप्त्वाभारतेब्रह्मणोवरात् ॥ इत्येवमुक्तादेवेशोप्यंतर्धानंचकारसः ॥ २६ ॥ ॥ ६५ ॥

पतनमात्रेणेत्यर्थः ॥ १३ ॥ १४ ॥ तोयवस्त्रातोयमेववस्त्रंयस्याबलस्येत्यर्थः ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥

॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

॥५५॥

॥ २७ ॥ २८ ॥ राधिकाशापादितिसचशापोवक्ष्यमाणः ॥ २९ ॥ ३० ॥ विलंभितुंत्वामाळिगयितुं ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

देव्याभियातनुंत्यत्काप्राप्तंजन्मगुरोभुवि ॥ अहंनारायणंकांतंशांतंसुंदरविग्रहं ॥ २७ ॥ सांप्रतंतंपतिलब्धुं
वरयेत्वंचदेहिमे ॥ ब्रह्मदेवउवाच ॥ सुदामानामगोपश्चश्रीकृष्णांगसमुद्भवः ॥ २८ ॥ तदंशश्चातितेजस्वीलेभे
जन्मचभारते ॥ सांप्रतराधिकाशापादनुवंशसमुद्भवः ॥ २९ ॥ शंखचूडेतिविख्यातस्त्रैलोक्येनचतत्समः ॥ गो
लोकेत्वांपुरादृष्ट्वाकामोन्मथितमानसः ॥ ३० ॥ विलंभितुंनशशकराधिकायाःप्रभावतः ॥ सचजातिस्मरस्त
स्मात्सुदामाभूच्चसागरे ॥ ३१ ॥ जातिस्मरात्वमपिसासर्वजानासिसुंदरि ॥ अधुनातस्यपत्नीत्वंसंभवि
ष्यसिशोभने ॥ ३२ ॥ पश्चान्नारायणंशांतंकांतमेववरिष्यसि ॥ शापान्नारायणस्यैवकलयादैवयोगतः ॥ ३३ ॥
भविष्यसिवृक्षरूपात्वंपूताविश्वपाविनी ॥ प्रधानासर्वपुष्पेषुविष्णुप्राणाधिकाभवेः ॥ ३४ ॥ त्वयाविनाचसर्वे
षांपूजाचविफलाभवेत् ॥ वृंदावनेवृक्षरूपानाम्नावृंदावनीतिच ॥ ३५ ॥ त्वत्पत्रैर्गोपिगोपाश्चपूजयिष्यं
तिमाधवं ॥ वृक्षाधिदेवीरूपेणसार्द्धकृष्णेनसंततं ॥ ३६ ॥ विहरिष्यसिगोपेनस्वच्छंदंमद्वरेणच ॥ इत्येवंचनं
श्रुत्वासास्मिताहृष्टमानसा ॥ ३७ ॥ प्रणनामचब्रह्माणंतंचकिंचिदुवाचसा ॥ तुलस्युवाच ॥ यथामेद्विभुजे
कृष्णेवांछाचश्यामसुंदरे ॥ ३८ ॥ सत्यंब्रवीमिहेतातनतथाचचतुर्भुजे ॥ अतृप्ताहंचगोविंदेदैवाच्छृंगारभंगतः
॥ ३९ ॥ गोविंदस्यैववचनात्प्रार्थयामिचतुर्भुजं ॥ त्वत्प्रसादेनगोविंदंपुनरेवसुदुर्लभं ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥

॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ वृक्षाधिदेवीति तुलसीवृक्षस्ययाधिदेव्यधिदेवतास्त्रीमूर्तिमतीतद्रूपेणेत्यर्थः ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥
॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥

दे.भा.न.

॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ इति श्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेसप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

॥५६॥

ध्रुवमेवलभिष्यामिराधाभीतिप्रमोचय ॥ ब्रह्मदेवउवाच ॥ गृहाणराधिकामंत्रंददामिषोडशाक्षरं ॥ ४१ ॥ त
स्याश्वप्राणतुल्यात्वंमद्वरेणभविष्यसि ॥ शृंगारंयुवयोर्गोप्यनंज्ञास्यतिचराधिका ॥ ४२ ॥ राधासमात्वंसुभ
गेगोविंदस्यभविष्यसि ॥ इत्येवमुक्त्वादत्वाचदेव्यावैषोडशाक्षरं ॥ ४३ ॥ मंत्रंचैवजगद्धातास्तोत्रंचकवचं
वरं ॥ सर्वपूजाविधोमंचपुरश्चर्याविधिक्रमं ॥ ४४ ॥ परांशुभाशिर्षचैवपूजांचैवचकारसा ॥ बभूवसिद्धासादे
वीतंप्रसादाद्रमायथा ॥ ४५ ॥ सिद्धमंत्रेणतुलसीवरंप्रापयथोदितं ॥ बुभुजेचमहाभोगंयद्विश्वेषुचदुर्लभं ॥
॥४६॥ ॥ प्रसन्नमनसादेवीतस्याजतपसःकृमं ॥ सिद्धेफलेनराणांचदुःखंचसुखमुत्तमं ॥ ४७ ॥ मुक्तापीत्वाच
संतुष्टाशयनंचचकारसा ॥ तल्पेमनोरमेतत्रपुष्पचंदनचर्चिता ॥ ४८ ॥ इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवम
स्कंधेनारदनारायणसंवादेतुलस्युपाख्यानेसप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ तुलसीपरितुष्टा
चसुष्वापहृष्टमानसा ॥ नवयौवनसंपन्नावृषध्वजवरांगना ॥ १ ॥ चिक्षेपपंचबाणश्चपंचबाणांश्चतांप्रति ॥
पुष्पायुधेनसीदग्धापुष्पचंदनचर्चिता ॥ २ ॥ पुलकांचितसर्वांगीकंपितारक्कलोचना ॥ क्षणंसाशुष्कतांप्राप
क्षणंमूर्छामवापह ॥ ३ ॥ क्षणमुद्विग्नतांप्रापक्षणंतद्रांसुखावेहां ॥ क्षणंचदहनंप्रापक्षणंप्रापप्रसन्नतां ॥ ४ ॥
क्षणंसाचेतनांप्रापक्षणंप्रापविषण्णतां ॥ उतिष्ठंतीक्षणंतल्पाद्रच्छंतीनिकटंक्षणं ॥ ५ ॥ ॥ ध्या ॥

एकाधिकैःशतश्लोकैःशंखचूडेनसंगतिः ॥ बातातुलस्याःसंवादोप्यभूत्तेनेतिकथ्यते ॥ १ ॥ तपश्चर्यातस्तुलस्यामुपरतायामनंतरंजातंवृत्त
माह तुलसीपरितुष्टाचेति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ विषण्णतांखिन्नतां निकटंतल्पनिकटं ॥ ५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

टी.अ.

१७

॥५६॥

॥ ६ ॥ सुंदरं सुखं सुखकरं फलं बलं च विषहारि विषोपमं ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ यत्ते मनसि
 भ्रमंती क्षणमुद्वेगान्निवसंती क्षणं पुनः ॥ क्षणमेव समुद्वेगात्सुष्वाप पुनरेव सा ॥ ६ ॥ पुष्पचंदनतल्पंचतद्व
 भूवातिकंटकं ॥ विषहारि सुखं दिव्यं सुंदरं च फलं जलं ॥ ७ ॥ निलयं च बिलाकारं सूक्ष्मवस्त्रं हुताशनः ॥ सिंदूर
 पत्रकं चैव व्रणतुल्यं च दुःखदं ॥ ८ ॥ क्षणंददर्शतंद्रायां सुवेषं पुरुषं सती ॥ सुंदरं च युवानं च सस्मितं रसिकेश्वरं
 ॥ ९ ॥ चंदनोक्षितसर्वांगरत्नभूषणभूषितं ॥ आगच्छंतं माल्यवंतं पिबंतं तन्मुखांबुजं ॥ १० ॥ कथयंतरतिक
 थांब्रुवंतं मधुरं मुहुः ॥ संभुक्तवंतं तल्पे च समाश्लिष्यंतं मीप्सितं ॥ ११ ॥ पुनरेव तु गच्छंतं मागच्छंतं च सन्निधौ ॥
 यांतं कया सिप्राणेशतिष्ठेत्येवमुवाच सा ॥ १२ ॥ पुनश्च चेतनां प्राप्य विललाप पुनः पुनः ॥ एवं सा यौवनं प्राप्य
 तस्थौ तत्रैव नारद ॥ १३ ॥ शंखचूडो महायोगी जैगीषव्यान्मनोहरं ॥ कृष्णमंत्रं च संप्राप्य कृत्वा सिद्धं तु पुष्क
 रे ॥ १४ ॥ कवचं च गले बध्वा सर्वमंगलमंगलं ॥ ब्रह्मणश्च वरं प्राप्य यत्ते मनसि वाञ्छितं ॥ १५ ॥ आज्ञया ब्रह्मणः
 सोऽपि बदरीं च समाययौ ॥ आगच्छंतं शंखचूडंददर्शतुलसीमुने ॥ १६ ॥ नवयौवनसंपन्नं कामदेवसमप्रभं ॥
 श्वेतचंपकवर्णाभं रत्नभूषणभूषितं ॥ १७ ॥ शरत्पार्वणचंद्रास्यं शरत्पंकजलोचनं ॥ रत्नसारविनिर्माणविमान
 स्थं मनोहरं ॥ १८ ॥ रत्नकुंडलयुग्मेन गंडस्थलविराजितं ॥ पारिजातप्रसूनानां मालावंतं च सुस्थितं ॥ १९ ॥
 कस्तूरीकुंकुमायुक्तं सुगंधिचंदनान्वितं ॥ सादृष्ट्वासन्निधावेतं मुखमाच्छाद्य वाससा ॥ २० ॥ सस्मिता तं निरीक्षं
 ती सकटाक्षं पुनः पुनः ॥ बभूवातिनघमुखी नैव संगमलाज्जिता ॥ २१ ॥ शरदिंदुविनिर्द्यौकस्वमुखेन्दुविराजि
 ता ॥ अमूल्यरत्ननिर्माणयावकावलि संयुता ॥ २२ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥

वाञ्छितं तद्वद्वितिवरं प्राप्य बदरीं च समाययावित्यन्वयः ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ यावकं पादभूषणं
 तस्यावलिः पंक्तिः ॥ २२ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.न

॥५७॥

॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ तपस्यायांतिष्ठामीत्यन्वयः ॥ ३० ॥ कुलेजातःकुलीनो न पृच्छतीत्यर्थः ॥ ३१ ॥
मणींद्रसारनिर्माणकणन्मंजीरंजिता ॥ दधतीकबरीभारंमालतीमाल्यसंयुतं ॥ २३ ॥ अमूल्यरत्नानिर्माण
मकराकृतिकुंडला ॥ चित्रकुंडलयुग्मेनगंडस्थलविराजिता ॥ २४ ॥ रत्नेंद्रसारहारेणस्तनमध्यस्थलोज्ज्व
ला ॥ रत्नकंकणकेयूरशंखभूषणभूषिता ॥ २५ ॥ रत्नांगुलीयकैर्दिव्यैरंगुल्यावलिराजिता ॥ दृष्ट्वा तां ललितां र
म्यां सुशीलां सुंदरीं सतीं ॥ २६ ॥ उवासतत्समीपे तु मधुरं तामुवाच सः ॥ शंखचूड उवाच ॥ कात्वं कस्य च क
न्या च धन्यामान्या च योषितां ॥ २७ ॥ कात्वं मानिनि कल्याणिसर्वकल्याणदायिनि ॥ मौनीभूते किं करे मांसं
भाषांकुरु सुंदरि ॥ २८ ॥ इत्येवं वचनं श्रुत्वा सकामा वामलोचना ॥ सस्मितानघवदना सकामं तमुवाच सा ॥
॥ २९ ॥ तुलस्युवाच ॥ धर्मध्वजसुता हंचतपस्यायां तपोवने ॥ तपस्विन्यहं तिष्ठामि कस्त्वं गच्छयथा सुखं ॥
॥ ३० ॥ कामिनीकुलजातां च रहस्ये काकिनीं सतीं ॥ न पृच्छति कुले जात इत्येवं मे श्रुतौ श्रुतं ॥ ३१ ॥ लंपटोऽ
सत्कुले जातो धर्मशास्त्रार्थवर्जितः ॥ येनाश्रुतः श्रुतेरर्थः सकामीच्छति कामिनीं ॥ ३२ ॥ आपातमधुरां मत्तामं
तकां पुरुषस्य तां ॥ विषकुंभाकाररूपाममृतास्यांच संततं ॥ ३३ ॥ हृदये क्षुरधाराभां शश्वन्मधुरभाषिणीं ॥
स्वकार्यपरिनिष्पत्यैतत्परां सततंच तां ॥ ३४ ॥ कार्यार्थे स्वामिव शगामन्यथैवावशांसदा ॥ स्वांतर्मलिनरू
पांच प्रसन्नवदने क्षणां ॥ ३५ ॥ श्रुतौ पुराणे यासांच चरित्रमतिदूषितं ॥ तासु को विश्वसेत्प्राज्ञः प्रज्ञावांश्च दुरा
शयः ॥ ३६ ॥ तासां को वारिपुर्मित्रं प्रार्थयंती न वं नवं ॥ दृष्ट्वा सुवेषं पुरुषमिच्छंती हृदये सदा ॥ ३७ ॥ बाह्ये स्वार्थं
सतीत्वं च ज्ञापयंती प्रयत्नतः ॥ शश्वत्कामाचरामाचकामाधारामनोहरा ॥ ३८ ॥

कीदृशः पुरुषस्तर्हि कामिनीं पृच्छति तत्राह लंपट इति ॥ ३२ ॥ कीदृशीं कामिनीं तत्राह आपातमणीयामित्यादि प्रसन्नवदने क्षणमित्यंतं
॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ दुराशयो न इत्यर्थः ॥ ३६ ॥ को वारिपुः को वामित्रं न कोपिरिपुर्मित्रं वेत्यर्थः स्वार्थपरा एव केवलं ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

टी.अ.

१८

॥५७॥

खेदयंतीपुरुषमित्यर्थः ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ तपोमार्गार्गलातपोमार्गप्रतिबंधकां ॥ ४५ ॥

बाह्येच्छलात्खेदयंतीस्वांतमैथुनमानसा ॥ कांतंहसंतीरहसिबाह्येतीवसुलज्जिता ॥ ३९ ॥ मानिनीमैथुनाभा
वेकोपनाकलहांकुरा ॥ सुप्रीताभूरिसंभोगात्स्वल्पमैथुनदुःखिता ॥ ४० ॥ सुमिष्टान्नाच्छीततोयादाकांक्षं
तीचमानसे ॥ सुंदरंरसिकंकांतंयुवानंगुणिनंसदा ॥ ४१ ॥ सुतात्परमभिस्नेहं कुर्वतीरसिकोपरि ॥ प्राणाधि
कंप्रियतमंसंभोगकुशलंप्रियं ॥ ४२ ॥ पश्यंतीरिपुतुल्यंचवृद्धंमैथुनाक्षमं ॥ कलहंकुर्वतीशश्वत्तेनसार्द्धं सुकोप
ना ॥ ४३ ॥ वाचयाभक्षयंतीतंसर्पआखुमिवोल्बणं ॥ दुःसाहसस्वरूपाचसर्वदोषाश्रयासदा ॥ ४४ ॥ ब्रह्मविष्णु
शिवादीनांदुःसाध्यामोहरूपिणी ॥ तपोमार्गार्गलाशश्वन्मोक्षद्वारकपाटिका ॥ ४५ ॥ हरिभक्तिव्यवहितासर्वमा
याकरंडिका ॥ संसारकारागारेचशश्वन्निगडरूपिणी ॥ ४६ ॥ इंद्रजालस्वरूपाचमिथ्याचस्वप्नरूपिणी ॥ विभ्र
तीबाह्यसौंदर्यमधोंगमतिकुत्सितं ॥ ४७ ॥ नानाविष्णुमूत्रपूयानामाधारंमलसंयुतं ॥ दुर्गंधिदोषसंयुक्तंरक्त
मसंस्कृतं ॥ ४८ ॥ मायारूपामायिनांचविधिनानिर्मितापुरा ॥ विषरूपामुमुक्षूणामद्रक्ष्याप्यनवांछिता ॥ ४९ ॥
इत्युक्तातुलसीतंचविररामचनारद ॥ सस्मितःशंखचूडश्चप्रवक्तुमुपचक्रमे ॥ ५० ॥ शंखचूडउवाच ॥ त्वया
यत्कथितंदेविनचसर्वमलीककं ॥ किंचित्सत्यमलीकंचकिंचिन्मत्तोनिशामय ॥ ५१ ॥ निर्मितंद्विविधंधात्रास्त्री
रूपंसर्वमोहनं ॥ कृत्वारूपंवास्तवंचप्रशस्यंचाप्रशंसितं ॥ ५२ ॥ लक्ष्मीसरस्वतीदुर्गासावित्रीराधिकादि
का ॥ सृष्टिसूत्रस्वरूपाचआद्यासृष्टिर्वनिर्मिता ॥ ५३ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥

भक्तिव्यवहिताभक्तिराहिता अधोंगयोनिरूपं ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ रक्तेनारक्तं ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ लक्ष्मी
सरस्वतीति लक्ष्म्यादीनांपूर्णावताराणांगंगादीनामंशावताराणांतथाकलाकर्लाशानांचस्वरूपंप्रशस्यमन्यदप्रशस्यमित्यर्थः सृष्टिसूत्रस्वरूपा
चमृष्टिमूलभूतेत्यर्थः ॥ ५३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.न

॥५८॥

॥५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ कलांशस्वरूपंचोत्तममित्यर्थः स्वर्वेश्यादिकमेवचेत्यस्यतदप्रशस्यमि
त्युत्तरेणान्वयः ॥ ६१॥ साध्वीरूपमुत्तममित्याह सत्वप्रधानमिति ॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ यतएतामध्यमाएतादृशदोषविशिष्टाअतोः

एतासामंशरूपंचस्त्रीरूपंचवास्तवंस्मृतं ॥ तत्प्रशस्यंयशोरूपंचसर्वमंगलकारकं ॥ ५४॥ शतरूपादेवहूतीस्व
धास्वाहाचक्षिणा ॥ छायावतीरोहिणीचवरुणानीशचीतथा ॥ ५५॥ कुबेरस्यचपत्नीयाप्यदितिश्चदितिस्त
था ॥ लोपामुद्रानुसूयाचकोटभीतुलसीतथा ॥ ५६॥ अहल्यारुंधतीमेनातारामंदोदरीतथा ॥ दमयंतीवेदव
तीगंगाचमनसातथा ॥ ५७॥ पुष्टिस्तुष्टिःस्मृतिर्मेधाकालिकाचवसुंधरा ॥ षष्ठीमंगलचंडीचमूर्तिश्चधर्मकामि
नी ॥ ५८॥ स्वस्तिश्रद्धाचशांतिश्चकांतिःक्षांतिस्तथापरा ॥ निद्रातंद्राक्षुत्पिपासासंध्यारात्रिदिनानिच ॥ ५९॥
संपत्तिर्धृतिर्कीर्तीचक्रियाशोभाप्रभाशिवा ॥ यत्स्त्रीरूपंचसंभूतमुत्तमतुयुगेयुगे ॥ ६०॥ कलांकलांशरूपंच
स्वर्वेश्यादिकमेवच ॥ तदप्रशस्यंविश्वेषुपुंश्चलीरूपमेवच ॥ ६१॥ सत्वप्रधानंयद्रूपंतद्युक्तंचप्रभावतः ॥
तदुत्तमंचविश्वेषुसाध्वीरूपंचप्रशंसितं ॥ ६२॥ तद्वास्तवंचविज्ञेयंप्रवदंतिमनीषिणः ॥ रजोरूपंतमोरूपंक
लासुविविधंस्मृतं ॥ ६३॥ मध्यमारजसश्चांशास्तास्तुभोगेषुलोलुपाः ॥ सुखसंभोगवश्याश्चस्वकार्येनिरताः
सदा ॥ ६४॥ कपटामोहकारिण्योधर्मार्थविमुखाःसदा ॥ रजोरूपस्यसाध्वीत्वमतो नैवोपजायते ॥ ६५॥
इदंमध्यमरूपंचप्रवदंतिमनीषिणः ॥ तमोरूपंदुर्निवार्यमधमंतद्विदुर्बुधाः ॥ ६६॥ नपृच्छतिकुलेजातःपंडि
तश्चपरस्त्रियं ॥ निर्जनेनिर्जलेवापिरहस्यपिपरस्त्रियं ॥ ६७॥ ॥ ६४॥ ॥ ६४॥

जोरूपस्यस्त्रीवस्तुनःसाध्वीत्वनैवोपजायतइत्यर्थः ॥ ६५॥ तमोरूपंतुर्निवार्यत्वादधममेवेत्यर्थः ॥ ६६॥ तथाचतत्त्वक्षम्यंशत्वात्तत्वरूपं
त्वदुक्तरित्यानिर्बन्धनकित्वतिप्रशस्तमेवभवतीतिममत्वयीच्छाजातायुक्तेतिभावः यदुक्तंत्वयाकुलीनःपरस्त्रियंनपश्यतीतितत्तथैवतथाप्यहं
ह्यन्याज्ज्ञयात्वत्समीपमागतोस्मीत्यभिप्रायेणाह नपृच्छतीति ॥ ६७॥ ॥ ७॥ ॥ ७॥

टी.अ.

१८

॥५८॥

॥ ६८ ॥ दनुवंशोवातः पुरापूर्वहरेः सखासुदामाहं अधुनातुशापाह्नोर्वशोमातदस्यः ॥ ६९ ॥ ७० ॥ पूर्वकयांस्मारयति जातिस्मरोहमिति ॥ ७१ ॥ संभोक्तुं नालं समर्थो राधाभयादित्यन्वयः ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ एवंविधो बुध्यमाणस्त्रीजितादन्यदित्यर्थः विश्वेषु लोकेषु ॥ ७४ ॥

आगच्छामित्वत्समीपमाज्ञया ब्रह्मणो धुना ॥ गांधर्वेण विवाहेन त्वांगृहीष्यामिशोभने ॥ ६८ ॥ अहमेव शंखचू
डो देवविद्रावकारकः ॥ दनुवंशो विशेषेण सुदामाहं हरेः पुरा ॥ ६९ ॥ अहमष्टसु गोपेषु गोपोपि पार्षदेषु च ॥ अ
धुना दानत्रेद्रोहं राधिकायाश्च शापतः ॥ ७० ॥ जातिस्मरोहं जानामि कृष्णमंत्रप्रभावतः ॥ जातिस्मरात्वं तुल
सीसंभुक्ता हरिणा पुरा ॥ ७१ ॥ त्वमेव राधिकाकोपाज्जातासि भारते भुवि ॥ त्वांसंभोक्तुमुत्सुकोहं नालं राधा
भयात्ततः ॥ ७२ ॥ इत्येवमुक्त्वास पुमान्विरराममहामुने ॥ सस्मितं तुलसीतुष्टाप्रवक्तुमुपचक्रमे ॥ ७३ ॥ तुल
स्युवाच ॥ एवंविधो बुधो नित्यं विश्वेषु च प्रशंसितः ॥ कांतमेव विधं कांताशश्च दिच्छाति कामतः ॥ ७४ ॥ त्वया ह
मधुना सत्यं विचारेण पराजिता ॥ सनिंदितश्चाप्यशुचिर्यः पुमांश्च स्त्रियाजितः ॥ ७५ ॥ निंदन्ति पितरो देवा बांध
वाः स्त्रीजितांतरं ॥ स्त्रीजितं मनसामाता पिता भ्राता च निंदति ॥ ७६ ॥ शुद्धो विप्रो दशाहेन जातके मृतके यथा ॥
भूमिपो द्वादशाहेन वैश्यः पंचदशाहतः ॥ ७७ ॥ शूद्रो मासेन वेदेषु मातृवद्दीनसंकरः ॥ अशुचिः स्त्रीजितः शुध्ये
च्चितादहनकालतः ॥ ७८ ॥ न गृण्मंती च्छयातस्य पितरः पिंडतर्पणं ॥ न गृण्मंती वेदेवाश्च तस्य पुष्पजलादि
कं ॥ ७९ ॥ किंवाज्ञानेन तपसा जपहोमप्रपूजनैः ॥ किं विद्यया च यशसा स्त्रीभिर्यस्य मनो हृतं ॥ ८० ॥

त्वयाहं विचारेण पूर्वोक्तवादेन जितास्मि नमयात्वं नित इति त्वं स्त्रीजितो नासीत्यर्थः ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ एषु वर्णसंकरश्चेत्स मातृवत्तु
ज्जातीयमाता तन्मातुक्तसूतकपरिपालनेन शुध्येदित्यर्थः स्त्रीजितस्य तु देहांतप्रायश्चित्तैर्नैव शुद्धिरित्याह अशुचिरिति एतादृशोतिनीचोय
मिति भावः ॥ ७८ ॥ तदेवाह न गृण्मंतीति ॥ ७९ ॥ ८० ॥

॥ ७५ ॥

॥ ७६ ॥

॥ ७७ ॥

दे.भा.न.

॥ ५९ ॥

मयातुतवविद्यापरीक्षाकृतेत्याह विद्याप्रभावेति ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ एतस्मिन्नंतरेतत्र

विद्याप्रभावज्ञानार्थमयात्वंचपरीक्षितः ॥ कृत्वापरीक्षांकांतस्यवृणोतिकामिनिवरं ॥ ८९ ॥ वरायमुणहीना
यवृद्धायाज्ञानिनेतथा ॥ दरिद्रायचमूर्खायरोगिणेकुत्सितायच ॥ ८२ ॥ अत्यंतकोपयुक्तायवात्यंतदुर्मुखायच
॥ पंगवेचांगहीनायचांधायबधिरायच ॥ ८३ ॥ जडायचैवमूकायकृबितुल्यायपापिने ॥ ब्रह्महत्यालभेत्सो
पिस्वकन्यांप्रददातियः ॥ ८४ ॥ शांतायगुणिनेचैवयूनेचविदुषेपिच ॥ साधवेचसुतांदत्वादशयज्ञफलंलभे
त् ॥ ८५ ॥ यःकन्यापालनंकृत्वाकरोतियदिविक्रयं ॥ विक्रेताधनलोभेनकुंभीपाकंसगच्छति ॥ ८६ ॥ कन्या
मूत्रंपुरीषंचतत्रभक्षतिपातकी ॥ कृमिभिर्दंशितःकाकैर्यावदिद्राश्चतुर्दश ॥ ८७ ॥ तदंतेव्याधिसंयुक्तंसलभेज्ज
न्मनिश्चितं ॥ विक्रीणातिमांसभारंवहत्येवदिवानिशं ॥ ८८ ॥ इत्येवमुक्तातुलसीविररामतपोनिधे ॥ ब्रह्मोवा
च ॥ किंकरोषिशंखचूडसंवादमनयासह ॥ ८९ ॥ गांधर्वेणविवाहेनत्वंचास्याग्रहणंकुरु ॥ त्वंहिपुरुषेषुरत्नं
स्त्रीषुरत्नंत्वियंसती ॥ ९० ॥ विदग्धायाविदग्धेनसंगमोगुणवान्भवेत् ॥ निर्विरोधसुखंराजन्कोवात्यजतिदु
र्लभं ॥ ९१ ॥ योऽविरोधसुखत्यागीसपशुर्नात्रसंशयः ॥ किंपरीक्षसित्वंकांतमीदृशंगुणिनंसति ॥ ९२ ॥ देवा
नामसुराणांचदानवानांविमर्दकं ॥ यथालक्ष्मीश्चलक्ष्मीशेयथाकृष्णेचराधिका ॥ ९३ ॥ यथामयिचसावैत्री
भवानीचभवेयथा ॥ यथाधरावराहेचदक्षिणाचयथाध्वरे ॥ ९४ ॥ यथात्रेरेनुसूयाचदमयंतीयथानले ॥ रोहि
णीचयथाचंद्रेयथाकमेरतिःसती ॥ ९५ ॥ यथादितिःकश्यपेचवासिष्ठेरुंधतीसती ॥ यथाहल्यागौतमेचदेवहू
तिश्चकर्दमे ॥ ९६ ॥ यथाबृहस्पतौताराशतरूपामनौयथा ॥ यथाचदक्षिणायज्ञेयथास्वाहाहुताशने ॥ ९७ ॥

ब्रह्मोवाचेत्यर्थाद्बोध्यं किमुवाचतदाह ब्रह्मोवाच किंकरोषीति ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥

टी.अ.

१८

॥ ५९ ॥

॥ १८ ॥ १९ ॥ २०० ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ चतुर्नवातिपयैस्तुतुलसीशंखचूडयोः ॥ विवाहा
नंतरं देवावैकुण्ठं गच्छन्तः ॥ १९ ॥ इत्यंन्रक्षणात्तौ बोधितावित्युक्तं ततः परं किं ज्ञातमिति पृच्छति नारद उवाच विचित्रमिदमिति ॥ १८ ॥ २० ॥ ३ ॥

यथाशचीमहेंद्रे च यथापुष्टिर्गणेश्वरे ॥ देवसेनायथास्कंदे धर्मे मूर्तिर्यथासती ॥ १८ ॥ सौभाग्यासुप्रियात्वं च शं
खचूडे तथा भव ॥ अनेन सार्धं सुचिरं सुंदरेण च सुंदरि ॥ १९ ॥ स्थाने स्थाने विहारं च यथेच्छं कुरु संततं ॥ पश्चात्प्रा
प्स्यसि गोलोके श्रीकृष्णं पुनरेव सा ॥ १०० ॥ चतुर्भुजं च वैकुण्ठे शंखचूडे मृते सति ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापु
राणेनवमस्कंधेष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ नारद उवाच ॥ विचित्रमिदमाख्यानं भवता समुदाहृतं ॥ श्रुतेन येन मे
तृप्तिर्न कदापि हि जायते ॥ १ ॥ ततः परं तु यज्जातं तत्त्वं वद महामते ॥ नारायण उवाच ॥ इत्येवमाशिषं दत्त्वा स्वा
लयं च ययौ विधिः ॥ २ ॥ गांधर्वेण विवाहेन जगृहेतां च दानवः ॥ स्वर्गे दुन्दुभिवाद्यं च पुष्पवृष्टिर्बभूव ह ॥ ३ ॥
सरे मे रामयासाद्वैवासगे हे मनोरमे ॥ मूर्ध्नि सा प्राप तुलसीनवसंगमसंगता ॥ ४ ॥ निमग्नानिर्जले सा ध्वसिं भो
गसुखसागरे ॥ चतुःषष्टिकलामानं चतुःषष्टिविधं सुखं ॥ ५ ॥ कामशास्त्रे यन्निरुक्तं रसिकानां यथेप्सितं ॥ अंघ्रि
प्रत्यंगसंश्लेषपूर्वकं स्त्रीमनोहरं ॥ ६ ॥ तत्सर्वं रसशृंगारं च काररसिकेश्वरः ॥ अतीवरम्यदेशे च सर्वजंतुविवं
र्जिते ॥ ७ ॥ पुष्पचंदनतल्पे च पुष्पचंदनवायुना ॥ पुष्पोद्याने नदीतीरे पुष्पचंदनचर्चिते ॥ ८ ॥ गृहीत्वा रसि
कोरासे पुष्पचंदनचर्चितां ॥ भूषितो भूषणेनैव रत्नभूषणभूषितां ॥ ९ ॥ सुरते विरतिर्नास्ति तयोः सुरतिविज्ञा
योः ॥ जहार मानसं भर्तुं लोलयालीलया सती ॥ १० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥

॥ ४ ॥ चतुःषष्टिशृंगारकलाभिर्मयिते परिच्छिद्यते तत्तादृशं चतुःषष्टिविधं सुखं ताः कलाश्च रसालोके स्पष्टीकृताः ॥ ५ ॥ ६ ॥
॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ ११ ॥ ॥ ११ ॥ ॥ ११ ॥ ॥ ११ ॥ ॥ ११ ॥

दे.भा.न

॥ ६० ॥

॥ ११ ॥ जहारपरस्परशरीरावयवमर्दनेन ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥

चेतनारसिकायाश्चजहाररसभाववित् ॥ वक्षसश्चंदनंराज्ञस्तिलकंविजहारसा ॥ ११ ॥ सचजहारतस्याश्च
सिंदूरंविंदुपत्रकं ॥ सतद्वक्षस्युरोजेचनखरेखांददौमुदा ॥ १२ ॥ साददौतद्वामपार्श्वेकरभूषणलक्षणं ॥
राजातदोष्ठपुटकेददौरदनदंशनं ॥ १३ ॥ तद्वडयुगलेसाचप्रददौतच्चतुर्गुणं ॥ आलिंगनंचुंबनंचजंघादि
मर्दनंतथा ॥ १४ ॥ एवंपरस्परंक्रीडांचक्रतुस्तौविजानतौ ॥ सुरतेविरतेतौचसमुत्थायपरस्परं ॥ १५ ॥ सुवे
षंचक्रतुस्तत्रयद्यन्मनसिवाञ्छितं ॥ चंदनैःकुंकुमारक्तैःसातस्यतिलकंददौ ॥ १६ ॥ सर्वांगेसुंदरेरम्येचकारचा
नुलेपनं ॥ सुवासंचैवतांबूलंबन्दिशुद्धेचवाससी ॥ १७ ॥ पारिजातस्यकुसुमंजरारोगहरंपरं ॥ अमूल्यरत्ननिर्मा
णमंगुलीयकमुत्तमं ॥ १८ ॥ सुंदरंचमणिवरंत्रिषुलोकेषुदुर्लभं ॥ दासीतवाहमित्येवंसमुच्चार्यपुनःपुनः ॥ १९ ॥
ननामपरयाभक्त्यास्वामिनंगुणशालिनं ॥ सस्मितातन्मुखांभोजंलोचनाभ्यांपुनःपुनः ॥ २० ॥ निमेषर
हिताभ्यांचकटाक्षंचसुसुंदरं ॥ सचतांचसमाकृष्यचकारवक्षसिप्रियां ॥ २१ ॥ सस्मितंवाससाछन्नंददर्शमुख
पंकजं ॥ चुचुंबकठिनेगण्डेविंबोष्ठौपुनरेवच ॥ २२ ॥ ददौतस्यैवस्त्रयुग्मंवरुणादाहतंचयत् ॥ तदाहतांरत्नमा
लांत्रिषुलोकेषुदुर्लभां ॥ २३ ॥ ददौमंजीरयुग्मंचस्वाहायाआहतंचयत् ॥ केयूरयुग्मंछायायारोहिण्याश्चैव
कुंडलं ॥ २४ ॥ अंगुलीयकरत्नानिरत्याश्चकरभूषणं ॥ शंखंचरुचिरंचित्रयहत्तंविश्वकर्मणा ॥ २५ ॥ विचि
त्रपद्मकश्रेणीशय्यांचापिसुदुर्लभां ॥ भूषणानिचदत्वाचभूपोहासंचकारह ॥ २६ ॥ ॥ ६५ ॥

॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ स्वाहायाबन्हेयंदाहृतंछायायाःसूर्यपत्न्याः रोहिण्याश्चंद्रपत्न्याः ॥ २४ ॥ २५ ॥ विचित्राणांपद्मकानांपद्मरा
जमणीनांश्रेणयौयस्यांशय्यायां ॥ २६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

टी.अ.

१९

॥ ६० ॥

पत्रकंचंदनवलीरूपं ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ विस्पंदनेतन्नामिवनेतयैवसुरसमनामिवने
 निर्ममेकबरीभारेतस्यामांगल्यभूषणं ॥ सुचित्रपद्मकंगंडेकपोलेस्याः समंतथा ॥ २७ ॥ चंद्रलेखात्रिभिर्युक्तं
 चंदनेनसुगंधिना ॥ परीतंपरितश्चित्रैः सार्द्धकुंकुमविंदुभिः ॥ २८ ॥ ज्वलत्प्रदीपाकारंचसिंदूरतिलकंददौ ॥
 तत्पादपद्मयुगलेस्थलपद्मविनिंदिते ॥ २९ ॥ चित्रालक्तकराग्रंचनखरेषुददौमुदा ॥ स्ववक्षसिमुहुर्न्यस्य
 सरागंचरणांबुजं ॥ ३० ॥ हेदेवितवदासोहमित्युच्चार्यपुनःपुनः ॥ रत्नभूषितहस्तेनतंचकृत्वास्यवक्षसि ॥
 ॥ ३१ ॥ तपोवनंपरित्यज्यराजास्थानांतरंययौ ॥ मलयेदेवनिलयेशैलेषौलेतपोवने ॥ ३२ ॥ स्थानेस्थाने
 तिरम्येचपुष्पोद्यानेचनिर्जने ॥ कंदरेकंदरेसिंधुतीरेचैवातिसुंदरे ॥ ३३ ॥ पुष्पभद्रानदीतीरेनीरवातमनो
 हरे ॥ पुलिनेषुलिनेदिव्येनद्यानद्यानदेनदे ॥ ३४ ॥ मधौमधुकराणांचमधुरध्वनिनादिते ॥ विस्पंदनेसुर
 सनेनंदनेगंधमादने ॥ ३५ ॥ देवोद्यानेनंदनेचचित्रचंदनकानने ॥ चंपकानांकेतकीनांमाधवीनांचमाधवे
 ॥ ३६ ॥ कुंदानांमालतीनांचकुमुदांभोजकानने ॥ कल्पवृक्षेकल्पवृक्षेपारिजातवनेवने ॥ ३७ ॥ निर्जनेकां
 चनेस्थानेधन्येकांचनपर्वते ॥ कांचीवनेकिंजलकेकंचुकेकांचनाकरे ॥ ३८ ॥ पुष्पचंदनतल्पेषुपुंस्कोकिलरु
 तश्रुते ॥ पुष्पचंदनसंयुक्तःपुष्पचंदनवायुना ॥ ३९ ॥ कामुक्याकामुकःकामात्सरेमेरमयासह ॥ नहितृप्तो
 दानवेद्रस्तृप्तिनैवजगामसा ॥ ४० ॥ हविषाकृष्णवर्त्मववृधेमदनस्तयोः ॥ तयासहसमागत्यस्वाश्रमंदान
 वस्ततः ॥ ४१ ॥ रम्यंक्रीडालयंगत्वाविजहारपुनःपुनः ॥ एवंसबुभुजेराज्यंशंखचूडःप्रतापवान् ॥ ४२ ॥
 एकमन्वंतरंपूर्णराजराजेश्वरोमहान् ॥ देवानामसुराणांचदानवानांचसंततं ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥

॥ ३५ ॥ माधवेवसंतेमाधवीनांवासंतीमाधवीलतेत्यमरादासंतीलतानांवनेइत्युत्तरेणान्वयः ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ पुंस्कोकि
 लरुतंश्रुतंप्रसिद्धंयस्मितस्मिन्वने ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥

दे.भा.न

॥६१॥

॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ आश्रमाणां लोकानां स्थानानां ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥

गंधर्वाणां किन्नराणां राक्षसानां च शांतिदः ॥ हताधिकारा देवाश्च चरंति भिक्षुका यथा ॥ ४४ ॥ ते सर्वेति विषण्णा
श्च प्रजग्मुर्ब्रह्मणः सभां ॥ वृत्तांतं कथयामासू रुरुदुश्च भृशं मुहुः ॥ ४५ ॥ तदा ब्रह्मा सुरैः सार्द्धं जगाम शंकराल
यं ॥ सर्वेशं कथयामास विधाता चंद्रशेखरं ॥ ४६ ॥ ब्रह्मा शिवश्च तैः सार्द्धं वैकुण्ठं च जगाम ह ॥ दुर्लभं परमं धाम ज
रामृत्युहरं परं ॥ ४७ ॥ संप्राप च वरं द्वारमाश्रमाणां हरेरहो ॥ ददर्श द्वारपालांश्च रत्नसिंहासनस्थितान् ॥ ४८ ॥
शोभितान् पीतवस्त्रैश्च रत्नभूषणभूषितान् ॥ वनमालान्वितान् सर्वान् श्रयाम सुंदरविग्रहान् ॥ ४९ ॥ शंखचक्र
गदापद्मधरांश्चैव चतुर्भुजान् ॥ सस्मितान् स्मेरवक्त्रा स्यान्पद्मनेत्रान् मनोहरान् ॥ ५० ॥ ब्रह्मा तान् कथयामा
स वृत्तांतं गमनार्थकं ॥ तेनुज्ञां च ददुस्तस्मै प्रविवेश तदा ज्ञया ॥ ५१ ॥ एवं षोडशद्वाराणि निरीक्ष्य कमलोद्भवः ॥
देवैः सार्द्धं तान् तीत्य प्रविवेश हरेः सभां ॥ ५२ ॥ देवर्षिभिः परिवृतां पार्षदैश्च चतुर्भुजैः ॥ नारायणस्वरूपैश्च स
र्वैः कौस्तुभभूषितैः ॥ ५३ ॥ नवैदुमंडलाकारां चतुरस्रां मनोहरां ॥ मणींद्रहारनिर्माणां हीरासारसुशोभितां ॥
॥ ५४ ॥ अमूल्यरत्नखचितारचितां स्वेच्छया हरेः ॥ माणिक्यमालाजालाभां मुक्तापंक्तिविभूषितां ॥ ५५ ॥ मंडि
तां मंडलाकारैरत्नदर्पणकोटिभिः ॥ विचित्रैश्चित्ररेखाभिर्नानाचित्रविचित्रितां ॥ ५६ ॥ पद्मरागेंद्ररचितां रु
चिरां मणिपंकजैः ॥ सोपानशतकैर्युक्तां स्यमंतकविनिर्मितैः ॥ ५७ ॥ पट्टसूत्रग्रंथियुक्तैश्चारुचंदनपल्लवैः ॥ इंद्र
नीलस्तंभवर्यैर्वेष्टितां सुमनोहरां ॥ ५८ ॥ सद्रत्नपूर्णकुंभानां समूहैश्च समन्वितां ॥ पारिजातप्रसूनानां माला
जालैर्विराजितां ॥ ५९ ॥ कस्तूरीकुंकुमारक्तैः सुगंधिचंदनद्रुमैः ॥ सुसंस्कृतां तु सर्वत्र वासितां गंधवायुना ॥ ६० ॥

॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥

टी.अ.

१९

॥६१॥

॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ शापमाह तत्रैकदेति

विद्याधरीसमूहानां नृत्यजालैर्विराजितां ॥ सहस्रयोजनायामापरिपूर्णचर्किकरैः ॥ ६१ ॥ ददर्शश्रीहरिं ब्रह्मा
शंकरश्च सुरैः सह ॥ वसंतं तन्मध्यदेशे यथेदुंतारकावृतं ॥ ६२ ॥ अमूल्यरत्ननिर्माणचित्रसिंहासने स्थितं ॥
किरीटिनं कुंडलिनं वनमालाविभूषितं ॥ ६३ ॥ चंदनोक्षितसर्वांगविभ्रंतं केलिपंकजं ॥ पुरतो नृत्यगीतं च पश्यं
तं सस्मितमुदा ॥ ६४ ॥ शांतं सरस्वतीकांतं लक्ष्मीधृतपदांबुजं ॥ लक्ष्म्या प्रदत्ततांबूलं भुक्त्वा तं सुवासितं
॥ ६५ ॥ गंगया परया भक्त्या सेवितं श्वेतचामरैः ॥ सर्वैश्च स्तूयमानं च भक्तिनद्यात्मकंधरैः ॥ ६६ ॥ एवं विशिष्टं
तं दृष्ट्वा परिपूर्णतमं प्रभुं ॥ ब्रह्मादयः सुराः सर्वे प्रणम्य तुष्टुवुस्तदा ॥ ६७ ॥ पुलकांचितसर्वांगाः साश्रुनेत्राश्च
गद्गदाः ॥ भक्ताश्च परया भक्त्या भीतानद्यात्मकंधराः ॥ ६८ ॥ कृतांजलिपुटो भूत्वा विधाता जगतामपि ॥ वृत्तां
तं कथयामास विनयेन हरेः पुरः ॥ ६९ ॥ हरिस्तद्वचनं श्रुत्वा सर्वज्ञः सर्वभाववित् ॥ प्रहस्योवाच ब्रह्माणं रहस्यं च
मनोहरं ॥ ७० ॥ भगवानुवाच ॥ शंखचूडस्य वृत्तांतं सर्वजानामि पद्मज ॥ मद्भक्तस्य च गोपस्य महातेजस्विनः
पुरा ॥ ७१ ॥ शृणु तत्सर्ववृत्तांतं मिहि हासं पुरातनं ॥ गोलोकस्यैव चरितं पापघ्नं पुण्यकारकं ॥ ७२ ॥ सुदामाना
मगोपश्च पार्षदप्रवरो मम ॥ सप्रापदानवीयो निर्वाधाशापात्सुदारुणात् ॥ ७३ ॥ तत्रैकदा हमगमं स्वालयाद्रा
समंडलं ॥ विरजामपि नीत्वा च मम प्राणाधिका परा ॥ ७४ ॥ सामां विरजया सार्द्धं विज्ञाय किं करीमुखात् ॥ प
श्चात्क्रुत्वा सा जगाम न ददर्श च तत्र मां ॥ ७५ ॥ विरजां च नदीरूपां मां ज्ञात्वा च तिरोहितं ॥ पुनर्जगाम सा दृष्ट्वा
स्वालयां सखिभिः सह ॥ ७६ ॥

॥ ७७ ॥

॥ ७८ ॥

॥ ७९ ॥

॥ ७३ ॥ विरजां कांचनगोपीं प्राणाधिका राधा ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥

॥७७॥७८॥७९॥८०॥ तत्ताडनं ते शंखचूडेन कृतं तासां सखीनां ताडनं श्रुत्वेत्यर्थः ॥८१॥ मां प्रणम्य च्छतं शंखचूडं तुष्टासा वारयामासेख

मां दृष्ट्वा मंदिरं देवी सुदाम्ना सहितं पुरा ॥ भृशं सा भर्त्सयामास मौनी भूतं च सुस्थिरं ॥ ७७ ॥ तच्छ्रुत्वा सहमान
 श्वसुदामा तां च कोपह ॥ सच तां भर्त्सयामास कोपेन मम सन्निधौ ॥ ७८ ॥ तच्छ्रुत्वा कोपयुक्ता सारक्तपंकजलो
 चना ॥ बहिः कर्तुं च काराज्ञां संप्रस्तं मम संसदि ॥ ७९ ॥ सखीलक्षं समुत्तस्थौ दुर्वारं तेजसो लवणं ॥ बहिश्चका
 रतं तूष्णीं जल्पंतं च पुनः पुनः ॥ ८० ॥ सा च तत्ताडनं तासां श्रुत्वा रुष्टा शशापह ॥ याहिरेदानवीयोनिमित्येव दा
 रुणं वचः ॥ ८१ ॥ तंगच्छतं शपंतं च रुदंतं मां प्रणम्य च ॥ वारयामास तुष्टा सारुदंती कृपया पुनः ॥ ८२ ॥ हेवत्स
 तिष्ठ मागच्छ क्रियासीति पुनः पुनः ॥ समुच्चार्य च तत्पश्चाज्जगाम सा च विह्वलं ॥ ८३ ॥ गोप्यश्च रुरुदुःसर्वा गोपा
 श्चापि सुदुःखिताः ॥ ते सर्वे राधिकाचापितत्पश्चाद्बोधिता मया ॥ ८४ ॥ आयास्यति क्षणार्धेन कृत्वा शापस्य पा
 लमं ॥ सुदामं स्त्वमिहा गच्छेत्युक्ता सा च निवारिता ॥ ८५ ॥ गोलोकस्य क्षणार्धेन चैकं मन्वंतरं भवेत् ॥ पृथि
 व्या जगतां धातरित्येव वचनं ध्रुवं ॥ ८६ ॥ इत्येवं शंखचूडश्च पुनस्तत्रैव यास्यति ॥ महाबलिष्ठो योगेशः सर्वमा
 या विशारदः ॥ ८७ ॥ मम शूलं गृहीत्वा च शीघ्रं गच्छत भारतं ॥ शिवः कारोतु संहारं मम शूलेन रक्षसः ॥ ८८ ॥
 ममैव कवचं कंठे सर्वमंगलकारकं ॥ विभर्ति दानवः शश्वत्संसारं विजयीत तः ॥ ८९ ॥ तस्मिन् ब्रह्मस्थिते नैव न
 कोपि हिंसितुं क्षमः ॥ तद्याचनां करिष्यामि विप्ररूपो ह मेव च ॥ ९० ॥ सती त्वहानिस्तत्पत्न्या यत्र काले भवि
 ष्यति ॥ तत्रैव काले तन्मृत्युरिति दत्तो वरस्त्वया ॥ ९१ ॥ तत्पत्न्याश्चोदरे वीर्यमर्पयिष्यामि निश्चितं ॥ तत्क्षणे
 चैव तन्मृत्युर्भविष्यति न संशयः ॥ ९२ ॥

॥ ७७ ॥

॥ ७८ ॥

॥ ७९ ॥

॥ ६२ ॥

नमः विष्णवे ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ रक्षसः दानवस्य ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ प्रश्नत्वेति तत्पत्न्या इत्यर्थः ॥ ९२ ॥

॥ ९३ ॥ ९४ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेएकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥ चतुरशीतिपदैस्तुशंखचूडासुरस्य च ॥ देवानां

पश्चात्सादेहमुत्सृज्यभविष्यतिममप्रिया ॥ इत्युक्त्वाजगतां नाथोददौ शूलं हराय च ॥ ९३ ॥ शूलं दत्वा ययौ शी
घ्रं हरिरभ्यंतरे मुदा ॥ भारतं च ययुर्देवा ब्रह्मरुद्रपुरोगमाः ॥ ९४ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे नवमस्कंधे ए
कोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥ श्रीनारायण उवाच ॥ ब्रह्माशिवं सन्नियोज्य संहारे दानवस्य च ॥ जगाम स्वालयंतू
र्णयथास्थानं सुरोत्तमाः ॥ १ ॥ चंद्रभागानदीतीरिवटमूले मनोहरे ॥ तत्र तस्थौ महादेवो देवविस्तारहेतवे
॥ २ ॥ दूतं कृत्वा चित्ररथं गंधर्वेश्वरमीप्सितं ॥ शीघ्रं प्रस्थापयामास शंखचूडांतिकं मुदा ॥ ३ ॥ सर्वेश्वराज्ञया शी
घ्रं ययौ तन्नगरं परं ॥ महेंद्रनगरोत्कृष्टं कुबेरभवनाधिकं ॥ ४ ॥ पंचयोजनविस्तीर्णं दैर्घ्ये तद्विगुणं भवेत् ॥ स्फटि
काकारमणिभिर्निर्मितं यानवेष्टितं ॥ ५ ॥ सप्तभिः परिखाभिश्च दुर्गमाभिः समन्वितं ॥ ज्वलदग्निनिभैः शश्वत्क
ल्पितं रत्नकोटिभिः ॥ ६ ॥ युक्तं च वीथीशतैर्कर्मणि वेदिविचित्रितैः ॥ परितो वणिजांसौ धैर्नानावस्तुविराजितैः
॥ ७ ॥ सिंदूराकारमणिभिर्निर्मितैश्च विचित्रितैः ॥ भूषितं भूषितैर्दिव्यैराश्रमैः शतकोटिभिः ॥ ८ ॥ गत्वा ददर्श
तन्मध्ये शंखचूडालयं परं ॥ अतीव वलयाकारं यथा पूर्णं दुमंडलं ॥ ९ ॥ ज्वलदग्निशिखाक्ताभिः परिखाभिश्च त
सृभिः ॥ तदुर्गमं च शत्रूणामन्येषां सुगमं सुखं ॥ १० ॥ अत्युच्चैर्गगनस्पर्शमणिशृंगविराजितं ॥ राजितं द्वाद
शद्वारैर्द्वारपालसमन्वितं ॥ ११ ॥ मणींद्रसारनिर्माणैः शोभितं लक्षमंदिरैः ॥ शोभितं रत्नसोपानैरत्नस्तंभवि
राजितं ॥ १२ ॥

॥ ६४ ॥

॥ ६४ ॥

॥ ६४ ॥

चैव संग्रामो यथावदभिवर्ण्यते ॥ १ ॥ भारते देवागमनोत्तरं जातं वृत्तमाह ब्रह्माशिवमिति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ महेंद्रनगरादुत्कृष्टं ॥ ४ ॥
॥ ५ ॥ ६ ॥ वणिजां महाजनानां वैश्यानां ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ अत्युच्चैश्चतानि गगनस्पर्शानि मणिशृंगानितैर्विराजितं ॥ ११ ॥ १२ ॥

दे.भा.न

॥६३॥

॥ १३ ॥ १४ ॥ रणस्यरणसंबन्धिनंयुद्धाब्धानार्थमागतं दूतरूपं पुरुषं श्रुत्वा न कोपिरक्षतितस्य प्रीतिबंधो न क्रियत इत्यर्थः एतादृशः शंख
चूडः शूर इति भावः ॥ १५ ॥ रणस्य सर्ववृत्तांतं राजानं प्रति शीघ्रं विज्ञापयत इत्युवाच ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ माल्येन

तदृष्ट्वा पुष्पदंतोऽपि वरं द्वारं ददर्श सः ॥ द्वारे निरुक्तं पुरुषं शूलहस्तं च सस्मितं ॥ १३ ॥ तिष्ठंतं पिंगलाक्षं च ताम्रव
र्णं भयंकरं ॥ कथयामास वृत्तांतं जगाम तदनुज्ञया ॥ १४ ॥ अतिक्रम्य च तद्वारं जगामाभ्यंतरं पुनः ॥ न कोपि
रक्षति श्रुत्वा दूतरूपं रणस्य च ॥ १५ ॥ गत्वा सोभ्यंतरं द्वारं द्वारपालमुवाच ह ॥ रणस्य सर्ववृत्तांतं विज्ञापयत मा
चिरं ॥ १६ ॥ स च तं कथयित्वा च दूतो गंतुमुवाच ह ॥ स गत्वा शंखचूडं तं ददर्श सुमनोहरं ॥ १७ ॥ राजमंडल
मध्यस्थं स्वर्णसिंहासने स्थितं ॥ मणींद्रचरितं दिव्यं रत्नदंडं समन्वितं ॥ १८ ॥ रत्नकृत्रिमपुष्पैश्च प्रशस्तैः
शोभितं सदा ॥ भृत्येन मस्तकेन्यस्तं स्वर्णछत्रं मनोहरं ॥ १९ ॥ सेवितं पार्षदगणैरुचिरैः श्वेतचामरैः ॥ सुवेषं
दरं रम्यं रत्नभूषणभूषितं ॥ २० ॥ माल्येन लेपनं सूक्ष्मं सुवस्त्रं दधतं मुने ॥ दानवैर्द्रैः परिवृतं सुवेषैश्च त्रिकोटि
भिः ॥ २१ ॥ शतकोटिभिरन्यैश्च भ्रमद्भिरस्त्रपाणिभिः ॥ एवं भूतं च तदृष्ट्वा पुष्पदंतः स विस्मयः ॥ २२ ॥ उ
वाच स च वृत्तांतं यदुक्तं शंकरेण च ॥ पुष्पदंत उवाच ॥ राजेंद्र शिव भृत्योऽहं पुष्पदंताभिधः प्रभो ॥ २३ ॥ यदुक्तं शं
करेणैव तद्वीमिनिशामय ॥ राज्यं देहि च देवानामधिकारं च सांप्रतं ॥ २४ ॥ देवाश्च शरणापन्ना देवेशं श्रीहरिं
परं ॥ हरिर्देत्वा स्य शूलं च तेन प्रस्थापितः शिवः ॥ २५ ॥ पुष्पं भद्रानदीतीरिवटमूले त्रिलोचनः ॥ विषयं देहिते
षां च युद्धं वा कुरु निश्चितं ॥ २६ ॥

॥ ६५ ॥

॥ ६५ ॥

॥ ६५ ॥

॥ ६५ ॥

सहितं लेपनं दधतमित्यन्वयः ॥ २१ ॥ पुष्पदंत इति चित्ररथगंधर्वस्यैव नामांतरं पुष्पदंत इति ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ पुष्प
भद्रेति चंद्रभागायानामांतरं विषयं स्वदेशं तेषां देवानां ॥ २६ ॥

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

टी.अ.

२०

॥६३॥

॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ अभया

गत्वावक्ष्यामि किं शंभुमथ तद्वदमामपि ॥ दूतस्य वचनं श्रुत्वा शंखचूडः प्रहस्य च ॥ २७ ॥ प्रभाते हंगमिष्यामि
त्वं च गच्छेत्पुत्रावह ॥ सगत्वा वाचतं तूर्णं वटमूलस्थमीश्वरं ॥ २८ ॥ शंखचूडस्य वचनं तदीयं तन्मुखोदितं ॥ एत
स्मिन्नन्तरे स्कंद आजगाम शिवांतिकं ॥ २९ ॥ वीरभद्रश्च नंदी च महाकालः सुभद्रकः ॥ विशालाक्षश्च बाणश्च पिंग
लाक्षो विकंपनः ॥ ३० ॥ विरूपो विकृतिश्चैव मणिभद्रश्च बाष्कलः ॥ कपिलास्यो दीर्घदंष्ट्रा विकटस्ताम्रलोचनः
॥ ३१ ॥ कालकंठो बलीभद्रः कालजिह्वः कुटीचरः ॥ बलोन्मतोरणश्लाघी दुर्जयो दुर्गमस्तथा ॥ ३२ ॥ अष्टौ
च भैरवार्द्रा रुद्राश्चैकादश स्मृताः ॥ वसवोऽष्टौ वासवश्च आदित्या द्वादश स्मृताः ॥ ३३ ॥ हुताशनश्च चंद्रश्च वि
श्वकर्माश्चिनौ चतौ ॥ कुबेरश्च यमश्चैव जयंतो नलकूबरः ॥ ३४ ॥ वायुश्च वरुणश्चैव बुधश्च मंगलस्तथा ॥ धर्मश्च
शनिरीशानः कामदेवश्च वीर्यवान् ॥ ३५ ॥ उग्रदंष्ट्रा चोग्रचंडा कोटरकैटभी तथा ॥ स्वयंचाष्टभुजा देवी भद्रकाली
भयंकरी ॥ ३६ ॥ रत्नेंद्रसारनिर्माणविमानो परिसंस्थिता ॥ रक्तवस्त्रपरीधानारक्तमाल्यानुलेपना ॥ ३७ ॥ नृत्यं
ती च हसंती च गायंती सुस्वरं मुदा ॥ अभयं ददाति भक्तेभ्यो भयासा च भयं रिपुं ॥ ३८ ॥ बिभ्रती विकटां जिह्वां सु
लोलां योजनायतां ॥ शंखचक्रगदापद्मखड्गवर्धनुःशरान् ॥ ३९ ॥ स्वर्परं वर्तुलाकारं गंभीरं योजनायतं ॥ त्रिशू
लं गगनस्पर्शि शक्तिं च योजनायतां ॥ ४० ॥ मुद्गरं मुसलं वज्रं खेटं फलकं मुज्ज्वलं ॥ वैष्णवास्त्रं वारुणास्त्रं वान्हेयं
नागपाशकं ॥ ४१ ॥ नारायणास्त्रं गांधर्वं ब्रह्मास्त्रं गारुडं तथा ॥ पर्जन्यास्त्रं पाशुपतं जृम्भणास्त्रं च पार्वतं ॥ ४२ ॥

स्तरिपुंरिपवेभयंददातीत्यर्थः ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.न.

॥६४॥

॥ ४३॥४४॥४५ ॥४६॥४७ ॥४८॥४९॥ मनसिवांछितंरतिकीडां ॥५०॥ ५१॥५२॥५३॥५४ ॥५५॥५६॥यापराप्रकृतिः

माहेश्वरास्त्रंवायव्यंदंडंसंमोहनंतथा ॥ अव्यर्थमस्त्रकंदिव्यंदिव्यास्त्रशतकंपरं ॥४३॥ आगत्यतत्रतस्थौचयो
गिनीनांत्रिकोटिभिः ॥ सार्द्धचडाकिनीनांचविकटानांत्रिकोटिभिः ॥ ४४ ॥ भूतप्रेतपिशाचाश्चकूष्मांडाब्रह्म
राक्षसाः ॥ वेतालाराक्षसाश्चैवयक्षाश्चैवतुकिन्नराः ॥ ४५ ॥ ताभिश्चैवसहस्कंदःप्रणम्यचंद्रशेखरं ॥ पितुःपा
र्श्वेसहायार्थसमुवासतदाज्ञया ॥ ४६ ॥ अथदूतेगतेतत्रशंखचूडःप्रतापवान् ॥ उवाचतुलसीवार्तागत्वाभ्यं
तरमेवच ॥ ४७ ॥ रणवार्त्ताचसाश्रुत्वाशुष्ककंठोष्ठतालुका ॥ उवाचमधुरंसाध्वीहृदयेनविदूयता ॥ ४८ ॥
तुलस्युवाच ॥ हेप्राणबंधोहेनाथतिष्ठमेवक्षसिक्षणं ॥ हेप्राणाधिष्ठातृदेवरक्षमेजीवितंक्षणं ॥४९॥भुंक्ष्वजन्म
समासाद्ययन्मेमनसिवांछितं ॥ पश्यामित्वांक्षणंकिंचिल्लोचनाभ्यांचसादरं ॥५०॥ आंदोलयंतेप्राणामेमनो
दग्धंचसंततं ॥ दुःस्वप्नश्चमयादृष्टश्चाद्यैवचरमेनिशि ॥५१॥ तुलसीवचनंश्रुत्वाभुत्कार्पात्त्वानृपेश्वरः ॥ उवा
चवचनंप्राज्ञोहितंसत्यंयथोचितं ॥ ५२ ॥ शंखचूडउवाच ॥ कालेनयोजितंसर्वकर्मभोगनिबंधनं ॥ शुभंहर्ष
सुखंदुःखंभयंशोकश्चमंगलं ॥ ५३ ॥ कालेभवंतिवृक्षाश्चस्कंधवंतश्चकालतः ॥ क्रमेणपुष्पवंतश्चफलवंतश्च
कालतः ॥ ५४ ॥ तेषांफलानिपक्वानिप्रभवंत्येवकालतः ॥ तेसर्वेफलिताःकालेपातंयांतिचकालतः ॥ ५५ ॥
कालेभवंतिविश्वानिकालेनश्यंतिसुंदरि ॥ कालात्स्रष्टाचसृजतिपातापातिचकालतः ॥ ५६ ॥ संहर्त्तासंहरे
त्कालेक्रमेणसंचरांतिते ॥ ब्रह्मविष्णुशिवादीनामीश्वरःप्रकृतिःपरा ॥ ५७ ॥ स्रष्टापाताचसंहर्त्तासिचात्माका
लनर्त्तकः ॥ कालेसएवप्रकृतिस्वाभिन्नांस्वेच्छयाप्रभुः ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥

सैवब्रह्मादीनामीश्वरइत्यर्थः ॥५७॥ सप्रकृतिरूपएवेश्वरः पातासंहर्त्तास्रष्टाचभवतिसएवात्माभवतिसएवकालस्यापिनर्त्तकः ॥५८॥

टी.अ.
२०

॥६४॥

सहस्रसृष्टिकांस्त्रिभिर्जाप्रकृतिमायाख्यानिर्मायपृथक्कृत्यचराचरंचकृतवानित्यर्थः ॥ ५९ ॥ स एव जनेन जनं जनितान्न जनयितेत्यर्थः तथा जनेन जनं पातिरक्षति तथा जनेन जनं हरति यस्मादेवं मूलप्रकृत्यात्मक ईश्वर एव करोति सर्वतस्मात्तादृशस्येच्छां को निवारयितुं समर्थस्तर्हि किं कर्तुं

निर्मायकृतवान्सर्वान्विश्वस्यांश्चराचरान् ॥ सर्वेशः सर्वरूपश्च सर्वात्मा परमेश्वरः ॥ ५९ ॥ जनं जनेन जनिता जनं पाति जनेन यः ॥ जनं जनेन हरते तं देवं भजसांप्रतं ॥ ६० ॥ यस्याज्ञया वातिवातः शीघ्रगामी च सांप्रतं ॥ यस्याज्ञया च तपनस्तपत्येव यथाक्षणं ॥ ६१ ॥ यथाक्षणं वर्षतींद्रो मृत्युश्चरति जंतुषु ॥ यथाक्षणं दहत्यग्निश्चंद्रो भ्रमति शीतवान् ॥ ६२ ॥ मृत्योर्मृत्युं कालकालं यमस्य च यमं परं ॥ विभुं स्रष्टुश्च स्रष्टारं पातुश्च पातकं भवे ॥ ६३ ॥ संहर्तारं च संहर्तुस्तं देवं शरणं व्रज ॥ को वा बंधुश्च केषां वा सर्वबंधुं भज प्रियो ॥ ६४ ॥ अहं को वा च त्वं का वा विधिना योजितः पुरा ॥ त्वया सार्द्धं कर्मणा च पुनस्तेन वियोजितः ॥ ६५ ॥ अज्ञानी कातरः शोके विपत्तौ न च पण्डितः ॥ सुखे दुःखे भ्रमत्येव कालनेमि क्रमेण च ॥ ६६ ॥ नारायणं तं सर्वेशं कांतं यास्यसि निश्चितं ॥ तपःकृतं यदर्थं च पुरा बदरिकाश्रमे ॥ ६७ ॥ मया त्वं तपसालब्धा ब्रह्मणस्तु वरेण च ॥ हर्यर्थं यत्तव तपो हरिं प्राप्स्यसि कामिनि ॥ ६८ ॥ वृंदावने च गोविंदं गोलोके त्वं लभिष्यसि ॥ अहं यास्यामि तल्लोकं तनुं त्यक्त्वा च दानवीं ॥ ६९ ॥ तत्र द्रक्ष्यसि मां त्वं च द्रक्ष्यामि त्वां च सांप्रतं ॥ अगमं राधिकाशापाद्भारतं च सुदुर्लभं ॥ ७० ॥ पुनर्यास्यामि तत्रैव कः शोको मे शृणु प्रिये ॥ त्वं च देहं परित्यज्य दिव्यरूपं विधाय च ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥

व्यमिति चेत्तमेव शरणं गंतव्यमित्याह तं देवमिति ॥ ६० ॥ ६१ ॥ मृत्युश्चरति जंतुष्विति तथा च श्रुतिः भीषास्माद्वातः पवते भीषो देति सूर्यः भीषास्मादग्निश्चेद्रश्च मृत्युर्धावति पंचम इति ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥

दे.भा.न

॥६५॥

॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ गोळोकेभांडीरेस्यानेतत्त्वज्ञानं ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥

तत्कालंप्राप्स्यसिहरिंमाकांतिकातराभव ॥ इत्युत्काचदिनतिचतयासाद्धमनोहरं ॥ ७२ ॥ सुष्वापशोभनेत
ल्पेपुष्पचंदनचर्चिते ॥ नानाप्रकारविभवंचकाररत्नमंदिरे ॥ ७३ ॥ रत्नप्रदीपसंयुक्तेस्त्रीरत्नंप्राप्यसुंदरीं
॥ निनायरजर्षीराजाक्रीडाकौतुकमंडलैः ॥ ७४ ॥ कृत्वावक्षसितांकांतांरुदंतीमतिदुःखितां ॥ कृशोदरींनि
राहारांनिमग्नांशोकसागरे ॥ ७५ ॥ पुनस्तांबोधयामासदिव्यज्ञानेनज्ञानवित् ॥ पुराकृष्णेनयद्वतंभांडीरेत
त्वमुत्तमं ॥ ७६ ॥ सचतस्यैददौसर्वसर्वशोकहरंपरं ॥ ज्ञानंसंप्राप्यसादेवीप्रसन्नवदनेक्षणा ॥ ७७ ॥ क्रीडां
चकारहर्षेणसर्वमत्वेतिनश्वरं ॥ तौदंपतीचक्रीडंतौनिमग्नौसुखसागरे ॥ ७८ ॥ पुलकांचितसर्वांगौमूर्छितौनि
र्जनेमुने ॥ अंगप्रत्यंगसंयुक्तौसुप्रीतौसुरतोत्सुकौ ॥ ७९ ॥ एकांगौचतथातौद्वौचार्द्धनारीश्वरौयथा ॥ प्राणेश्व
रंचतुलसीमेनेप्राणाधिकंपरं ॥ ८० ॥ प्राणाधिकांचतांमेनेराजाप्राणेश्वरींसतीं ॥ तौस्थितौसुखसुप्तौचतंद्रितौ
सुंदरौसमौ ॥ ८१ ॥ सुवेषौसुखसंभोगादचेष्टौसुमनोहरौ ॥ क्षणंसुचेतनौतौचकथयंतौरसाश्रयात् ॥ ८२ ॥
कथांमनोरमांदिव्यांहसंतौचक्षणंपुनः ॥ क्षणंचकेलिसंयुक्तौरसभावसमन्वितौ ॥ ८३ ॥ सुरतेविरतिर्नास्ति
तौतद्विषयपंडितौ ॥ सततंजययुक्तौद्वौक्षणंनैवपराजितौ ॥ ८४ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कं
धेनारदनारायणसंवादेशक्तिप्रादुर्भावेविंशोऽध्यायः ॥ २० ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ श्रीकृष्णंमनसाध्यात्वार
क्षःकृष्णपरायणः ॥ ब्राह्मेमुहूर्तेउत्थायपुष्पतल्पान्मनोहरात् ॥ १ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥

॥ ८३ ॥ ८४ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेविंशोऽध्यायः ॥ २० ॥ इत्यशीतिपद्यैस्तुगंखचूडमहेशयोः ॥ युद्धंमहात्रसक
रंयथावदभिवर्ण्यते ॥ १ ॥ रात्र्युत्तरंजातंवृत्तमाह श्रीकृष्णमिति रक्षोरक्षसः ॥ १ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

टी.अ.

२०

॥६५॥

॥ २ ॥ ३ ॥ नित्यं नित्यदात्रं ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ स्वस्य मरणं निश्चितं ज्ञात्वा भांडाराणि ददावित्याह ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥

रात्रिवासः परित्यज्य स्नात्वा मंगलवारिणा ॥ धौते च वाससीधृत्वा कृत्वा तिलकमुज्ज्वलं ॥ २ ॥ चकारान्हिकमा
वश्यमभीष्टदेव वंदनं ॥ दध्याज्यमधुलज्जांश्च ददर्श वस्तुमंगलं ॥ ३ ॥ रत्नश्रेष्ठमणिश्रेष्ठवस्त्रश्रेष्ठचक्रांचनं ॥ ब्रा
ह्मणेभ्यो ददौ भक्त्या यथानित्यं च नारद ॥ ४ ॥ अमूल्यरत्नं यत्किंचिन्मुक्तामाणिक्यहीरकं ॥ ददौ विप्राय गुर
वे यात्रामंगलहेतवे ॥ ५ ॥ गजरत्नमश्वरत्नं धनरत्नं मनोहरं ॥ ददौ सर्वदरिद्राय विप्राय मम मलाय च ॥ ६ ॥ भां
डाराणां सहस्राणि नगराणां द्विलक्षकं ॥ ग्रामाणां शतकोटिं च ब्राह्मणाय ददौ मुदा ॥ ७ ॥ पुत्रं कृत्वा तुराजेंद्रं स
र्वेषु दानवेषु च ॥ पुत्रे समर्प्य भार्यां ताराज्यं च सर्वसंपदं ॥ ८ ॥ प्रजानुचरसंघं च भांडारं वाहनादिकं ॥ स्वयं स
न्नाहयुक्तश्च धनुष्पाणिर्बभूव ह ॥ ९ ॥ भृत्यद्वाराक्रमेणैव चकार सैन्यसंचयं ॥ अश्वानां च त्रिलक्षेण लक्षेण
वरहस्तिनां ॥ १० ॥ रथानामयुतेनैव धानुष्काणां त्रिकोटिभिः ॥ त्रिकोटिभिर्वर्मिणां च शूलिनां च त्रिकोटि
भिः ॥ ११ ॥ कृतासेना परिमिता दानवैरेण नारद ॥ तस्यां सेनापतिश्चैव युद्धशास्त्रविशारदः ॥ १२ ॥ महा
रथः सविज्ञेयोरथिनां प्रवरोरणे ॥ त्रिलक्षाक्षौहिणी सेनापतिं कृत्वा नराधिपः ॥ १३ ॥ त्रिंशदक्षौहिणी बाधं
भांडौघं च चकार ह ॥ बहिर्वभूव शिबिरान् मनसा श्रीहरिं स्मरन् ॥ १४ ॥ रत्नेन्द्रसारनिर्माणविमानमारुरोह सः ॥
गुरुवर्गान् पुरस्कृत्य प्रययौ शंकरांतिकं ॥ १५ ॥ पुण्यभद्रानदीतीरियत्राक्षयवटः शुभः ॥ सिद्धाश्रमं च सिद्धानां
सिद्धिक्षेत्रं च नारद ॥ १६ ॥ कपिलस्य तपःस्थानं पुण्यक्षेत्रं च भारते ॥ पश्चिमोदधिपूर्वे च मलयस्य च पश्चिमे ॥ १७ ॥

धानुष्काणां धनुर्धराणां ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ भांडौघं द्रव्यसमूहं त्रिंशदक्षौहिणी बाधं पीडितं च काररक्षितं त्रिंशदक्षौहिणी भिक्षुकारे
त्यर्थः ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.न

॥ ६६ ॥

॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥

श्रीशैल्येत्तरभागेचगंधमादनदक्षिणे ॥ पंचयोजनविस्तीर्णादैर्घ्येशतगुणातथा ॥ १८ ॥ शुद्धस्फटिकसंका
शाभारतेचसुपुण्यदा ॥ शाश्वतीजलपूर्णाचपुण्यभद्रानदीशुभा ॥ १९ ॥ लवणोदधिप्रियाभार्याशश्वत्सौभाग्य
संयुता ॥ शरावतीमिश्रिताचनिर्गतासाहिमालयात् ॥ २० ॥ गोमतीवामतःकृत्वाप्रविष्टापश्चिमोदधौ ॥ तत्रग
त्वाशंखचूडोददर्शचंद्रशेखरं ॥ २१ ॥ वटमूलेसमासीनंसूर्यकोटिसमप्रभं ॥ कृत्वायोगासनंदंष्ट्रमुद्रायुक्तंचस
स्मितं ॥ २२ ॥ शुद्धस्फटिकसंकाशंज्वलंतं ब्रह्मतेजसा ॥ त्रिशूलपट्टिशधरंव्याघ्रचर्मोवरंवरं ॥ २३ ॥ भक्तमृत्युह
रंशांतंगौरीकांतमनोहरं ॥ तपसांफलदातारंदातारंसर्वसंपदां ॥ २४ ॥ आशुतोषंप्रसन्नास्यंभक्तानुग्रहकातरं
विश्वनाथंविश्वबीजंविश्वरूपंचविश्वजं ॥ २५ ॥ विश्वंभरंविश्ववरंविश्वसंहारकारकं ॥ कारणंकारणानांचनरका
र्णवितारणं ॥ २६ ॥ ज्ञानप्रदंज्ञानबीजंज्ञानानंदंसनातनं ॥ अवरुह्यविमानाच्चतंदंष्ट्रदानवेश्वरः ॥ २७ ॥ सर्वैः
सार्धंभक्तियुक्तःशिरसाप्रणनामसः ॥ वामतोभद्रकालींचस्कंदंचतत्पुरस्थितं ॥ २८ ॥ आशिषंचददौतस्मैका
लीस्कंदश्चशंकरः ॥ उत्तस्थुरागतंदंष्ट्रसर्वेनंदीश्वरादयः ॥ २९ ॥ परस्परंचभाषांतेचक्रुस्तत्रचसांप्रतं ॥ राजाकृ
त्वाचसंभाषामुवासशिवसन्निधौ ॥ ३० ॥ प्रसन्नात्मामहादेवोभगवांस्तमुवाचह ॥ महादेवउवाच ॥ विधाताजग
तांब्रह्मापिताधर्मस्यधर्मवित् ॥ ३१ ॥ मरीचिस्तस्यपुत्रश्चवैष्णवश्चापिधार्मिकः ॥ कश्यपश्चापितत्पुत्रोधर्मि
ष्ठश्चप्रजापतिः ॥ ३२ ॥ दक्षःप्रीत्याददौतस्मैभक्त्याकन्यास्त्रयोदश ॥ तास्वेकाचदनुःसाध्वीतत्सौभाग्यविवर्दि
ता ॥ ३३ ॥ चत्वारिंशदनोःपुत्रादानवास्तेजसोल्बणाः ॥ तेष्वेकोविप्रचित्तिश्चमहाबलपराक्रमः ॥ ३४ ॥

॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

टी.अ.

२१

॥ ६६ ॥

॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ देवानां भवेविषयेमिथ्यारूपेदेशेतर्वाकिंवाफलंनकिमपीत्यर्थः ॥ ४० ॥ ४१ ॥ सर्वेयूयं देवासु
राः कश्यपवंशोत्पन्ना बंधवोऽतो न परस्परं द्रोहोयुक्त इत्यर्थः ॥ ४२ ॥ देवेभ्यो रात्र्येदत्तेममसंपदोहानिःस्था च त्राह स्वसंपदामिति ॥ ४३ ॥

तत्पुत्रो धार्मिको दंभो विष्णुभक्तो जितेंद्रियः ॥ जजाप परमं मंत्रं पुष्करे लक्षवत्सरं ॥ ३५ ॥ शुक्राचार्यं गुरुं कृत्वा
कृष्णस्य परमात्मनः ॥ तदा त्वं तनयं प्राप परं कृष्णपरायणं ॥ ३६ ॥ पुरा त्वं पार्षदो गोपोगोपेष्वपि सुधार्मि
कः ॥ अधुना राधिकाशापाद्गारते दानवेश्वरः ॥ ३७ ॥ आब्रह्मस्तं वपर्यंतं तुच्छं मेने च वैष्णवः ॥ सांलोक्य सार्ष्टि
सारूप्यं सीमाप्यंच हरेरपि ॥ ३८ ॥ दीयमानं न गृह्णंति वैष्णवाः सेवनं विना ॥ ब्रह्मत्वममरत्वं वा तुच्छं मेने च वै
ष्णवः ॥ ३९ ॥ इंद्रत्वं वामनुत्वं वानमेने गणना सुच ॥ कृष्णभक्तस्य ते किं वा देवानां विषये भ्रमे ॥ ४० ॥ देहिराज्यं
च देवानां मत्प्रीतिरक्षममपि ॥ सुखं स्वराज्ये त्वं तिष्ठ देवास्तिष्ठंतु वैपदे ॥ ४१ ॥ अलं भूतविरोधेन सर्वे कश्य
पवंशजाः ॥ यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यादिकानि च ॥ ४२ ॥ ज्ञातिद्रोहस्य पापानि कलां नार्हति षोडशीं ॥
स्वसंपदां च हानिं च यदि राजेद्रमन्यसे ॥ ४३ ॥ सर्वावस्था च समतां केषां याति च सर्वदा ॥ ब्रह्मणश्च तिरोभावो
लये प्राकृतिके सदा ॥ ४४ ॥ आविर्भावः पुनस्तस्य प्रभावादीश्वरे च्छया ॥ ज्ञानवृद्धिश्च तपसा स्मृतिलोपश्च नि
श्चितं ॥ ४५ ॥ करोति स्पृष्टं ज्ञानेन स्रष्टा सोऽपि क्रमेण च ॥ परिपूर्णतमो धर्मः सत्ये सत्याश्रये सदा ॥ ४६ ॥
त्रिभागः सोऽपि त्रेतायां द्विभागो द्वापरे स्मृतः ॥ एकभागः कलौ पूर्वतदंशश्च क्रमेण च ॥ ४७ ॥ कलामात्रं कलेः
शेषे कुब्हां चंद्रकलमयथा ॥ यादृक्तेजो रवेर्गोष्मेन तादृक् शिशिरे पुनः ॥ ४८ ॥ दिनेषु यादृक् मध्याह्ने सायं प्रात
र्न तत्समं ॥ उदयं यातिकालेन बाल्यतां च क्रमेण च ॥ ४९ ॥ प्रकांडतां च तत्पश्चात्काले स्तं पुनरेतिसः ॥ दिने
प्रच्छन्नतां यातिकालेन दुर्दिने घने ॥ ५० ॥

॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ब्रह्मणो न्यूनत्वं कालवशादुपपाद्यधर्मस्यापि न्यूनत्वमाह

धर्मः सत्ये इति सत्ये सत्ययुगे पूर्णधर्म इत्यर्थः ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ कुब्हां अमावास्यायां ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ प्रकांडतां प्रचंडतां ॥ ५० ॥

दे.भा.न.

॥६७॥

॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ यथैतेकालेननश्यंतितन्नदुःखंतथातवसंपदस्त्वंचनंद्यसितत्रकिंदुःखमित्यर्थः
तर्हि न्यूनत्वादिदोषाभाववान्कस्तत्राह ईश्वरस्यैवेति यस्मात्परमात्मनोनुग्रहादहंमृत्युंजयोजातोऽथचप्राकृतंलयंपश्यामिकारणात्मनाभिन्नः

राहुग्रस्तेकंपितश्चपुनरेवप्रसन्नतां ॥ परिपूर्णतमश्चंद्रः पूर्णिमायांचजायते ॥ ५१ ॥ तादृशो न भवेन्नित्यंक्षयं
यातिदिनेदिने ॥ पुनश्चपुष्टिमायातिपरःकुव्हादिनेदिने ॥ ५२ ॥ संपद्युक्तः शुक्लपक्षे कृष्णे म्लानश्चयक्ष्मणा ॥
राहुग्रस्तेदिने म्लानो दुर्दिनेन विरोचते ॥ ५३ ॥ काले चंद्रो भवेच्छुक्लो भ्रष्टश्रीः कालभेदतः ॥ भविष्यति बलिश्च
द्रो भ्रष्टश्रीः सुतलेधुना ॥ ५४ ॥ कालेन पृथ्वी स स्यादद्या सर्वा धारावसुंधरा ॥ काले जले निमग्ना सा तिरोभूतां बुवि
प्लुता ॥ ५५ ॥ काले नश्यंति विश्वानि प्रभवंत्येव कालतः ॥ चराचराश्च कालेन नश्यंति प्रभवंति च ॥ ५६ ॥ ईश्व
रस्यैव समता ब्रह्मणः परमात्मनः ॥ अहंमृत्युंजयो यस्मादसंख्यं प्राकृतं लयं ॥ ५७ ॥ अदर्शं चापि द्रक्ष्यामि
वारंवारं पुनः पुनः ॥ सच प्रकृतिरूपं च स एव पुरुषः स्मृतः ॥ ५८ ॥ स चात्मा स च जीवश्च नाना रूपधरः परः ॥
करोति स ततं यो हितं नाम गुण कीर्तनं ॥ ५९ ॥ काले मृत्युं स जयति जन्म रोगं भयं जरां ॥ स्रष्टा कृतो विधिस्तेन पा
ता विष्णुः कृतो भवेत् ॥ ६० ॥ अहंकृतश्च संहर्ता वयं विषयिणः कृताः ॥ कालाग्निरुद्रं संहारे नियोज्य विषये नृप
॥ ६१ ॥ अहंकरो मि स ततं तं नाम गुण कीर्तनं ॥ तेन मृत्युंजयो हं च ज्ञानेनानेन निर्भयः ॥ ६२ ॥ मृत्युर्मृत्युभया
द्यातिवैनतेया दिवोरगाः ॥ इत्युक्त्वा स च सर्वेशः सर्वभावनतत्परः ॥ ६३ ॥ विरराम च शंभुश्च स भामध्ये च नार
द ॥ राजा तद्वचनं श्रुत्वा प्रशशंस पुनः पुनः ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥

सन्स ईश्वर इत्यर्थः स एवेश्वरो माया विशिष्टत्वात्माया शक्तिप्रकृतिपुरुष इत्यादि शब्दैर्व्यवहियते गजशरीरे प्रविष्टश्चैतन्यस्य गज इति व्यवहा
रवत् ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ अतो जन्म मरणादिभयमवश्यभावेत्वात्त्याग्यमेव तर्हि किं कर्तव्यमिति चेत्सर्वभावेन मूलप्रकृतिरूपः स एवाराधनीय इ
त्याह तन्नामेति ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥

टी.अ.

२१

॥६७॥

॥६५॥६६॥ गृहीत्वेति धर्मवद्विर्भवद्विर्बलिधनंगृहीत्वाकुतः प्रस्थापितस्तत्र किं न ज्ञातिद्रोहोस्तीतितस्मात्परोपदेशे कुशला एव युज्यमिति प्रतिभाती
 त्यभिप्रायः तत्पातालगतमैश्वर्यमधुना मयोर्ध्वसमुद्धृतं तत्कथं जीवन्दास्यामीति भावः ॥६७॥ तर्हि बलिस्त्वया कुतो नेत्धृत इति चेत् सामर्थ्याभावा
 दित्याह सुतलाच्चेति समुद्धर्तुं बलिमिति शेषः कुतः सामर्थ्याभावो यतस्तत्र बलिद्वारिगदाधरस्तिष्ठति तत इत्यर्थः तथानेके पराधाभवतां संतीत्या
 ह सभ्रातृक इति ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ते सर्वे देवाः प्रकृतेर्मूलप्रकृतिसंज्ञस्य परात्मन इत्यर्थः ॥ ७० ॥ ७१ ॥ पराजयोजय इति कदाचित्ते
 उवाच मधुरं देवं परं विनयपूर्वकं ॥ शंखचूड उवाच ॥ त्वया यत्कथितं देवनान्यथा वचनं स्मृतं ॥ ६५ ॥
 तथापि किंचिद्यथार्थं श्रूयतां मन्निवेदनं ॥ ज्ञातिद्रोहे महत्पापं त्वयोक्तमधुना च यत् ॥ ६६ ॥ गृहीत्वा तस्य सर्व
 स्वं कुतः प्रस्थापितो बलिः ॥ मया समुद्धृतं सर्वमूर्ध्वमैश्वर्यमीश्वर ॥ ६७ ॥ सुतलाच्च समुद्धर्तुं नालं तत्र गदाधरः ॥
 सभ्रातृको हिरण्याक्षः कथं देवैश्च हिंसितः ॥ ६८ ॥ शुभादयश्चासुराश्च कथं देवैर्निपातिताः ॥ पुरा समुद्रम
 थनेपीयूषं भक्षितं सुरैः ॥ ६९ ॥ क्लेशभाजो वयं तत्र ते सर्वे फलभोगिनः ॥ क्रीडाभाण्डमिदं विश्वं प्रकृतेः परमात्म
 नः ॥ ७० ॥ यस्मै यत्र सददाति तस्यैश्वर्यं भवेत्तदा ॥ देवदानवयोर्वादः शश्वन्नैमित्तिकः सदा ॥ ७१ ॥ परा
 जयोजयस्तेषां कालेस्माकं क्रमेण च ॥ तदा वयोर्विरोधे वागमनं निष्फलं परं ॥ ७२ ॥ समसंबन्धि नो बंधोरीश्वर
 स्य महात्मनः ॥ इयं ते महती लज्जा युद्धे स्माभिः सहाधुना ॥ ७३ ॥ जयेत तो धिका कीर्तिर्हानिश्चैव पराजये ॥
 इत्येतद्वचनं श्रुत्वा प्रहस्य च त्रिलोचनः ॥ ७४ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७४ ॥

षां जयपराजयौ कदाचिदस्माकमित्यर्थः इदं त्वधिकमित्याह तदा वयोरेति आवयोर्देवासुरयोर्विरोधे तवागमनं निःफलं ॥ ७२ ॥ कुत इति
 चेत्तव देवासुरयोः समत्वादित्याह समसंबन्धिन इति समसंबन्धि नो बंधोर्देवासुरमित्रस्य तवागमनं नो चितमिति भावः किंच इयं ते इति अस्मा
 भिः सह युद्धे तव महती लज्जा अस्मासु नीचत्वाच्च यिमहत्वात् ॥ ७३ ॥ किंच जयेद्वा इति अस्माकं जये अस्माकमेवाधिका कीर्तिस्तव जयेतु न तादृशी
 नाहि सिंहः सृगालं हत्वा कीर्तिलभते तव पराजयेतु तव महती हानिर्न तथा स्माकं साभवतीति विशेष इति ॥ ७४ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७४ ॥

दे.भा.न

॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ कालज्जोति अस्माकं देवतानां दैत्यैः सह युद्धं कर्तव्यमित्येव सनातनो धर्मश्चलितोऽस्ति ततो न का
पिलज्जोत्यर्थः ॥ ८० ॥ शरणस्याश्रयस्य प्रेषितस्तेन प्रेषित इत्यर्थः ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधे एकविंशोऽध्यायः

टी.अ.
२१

॥ ६८ ॥

यथोचितमुत्तमं मुवाच दानवेश्वरं ॥ महादेव उवाच ॥ युष्माभिः सह युद्धे मे ब्रह्मवंशसमुद्भवैः ॥ ७५ ॥ कालज्जा
महती राजन्ना कीर्तिर्वापराजये ॥ युद्धमादौ हरेरेव मधुना कैटभेन च ॥ ७६ ॥ हिरण्यकशिपोश्चैव सह तेनात्मना
नृप ॥ हिरण्याक्षस्य युद्धं च पुनस्तेन गदाभृता ॥ ७७ ॥ त्रिपुरैः सह युद्धं च मया पिचपुराकृतं ॥ सर्वैश्चर्याः सर्व
मातुः प्रकृत्याश्च बभूव ह ॥ ७८ ॥ सहशुभादिभिः पूर्वसमरः परमाद्भुतः ॥ पार्षदप्रवरस्त्वं च कृष्णस्य परमा
त्मनः ॥ ७९ ॥ ये ये हताश्च दैतेयान हि कोपित्वया समाः ॥ कालज्जामहती राजन्मम युद्धे त्वया सह ॥ ८० ॥ सु
राणां शरणस्यैव प्रेषितश्च हरेरहो ॥ देहिराज्यं च देवानामिति मे निश्चितं वचः ॥ ८१ ॥ इत्युक्त्वा शंकरस्तत्र वि
रराम च नारद ॥ उत्तस्थौ शंखचूडश्च ह्यमात्यैः सह सत्वरं ॥ ८२ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे अष्टादशसा
हस्र्यां संहितायां नवमस्कंधे नारदश्रीनारायणसंवादे एकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥ श्रीनारायण उवाच ॥ शिवं प्र
णम्य शिरसा दानवेन्द्रः प्रतापवान् ॥ समारुरोहयानं च सहामात्यैः ससत्वरः ॥ १ ॥ शिवः स्वसैन्यं देवांश्च
प्रेरयामास सत्वरं ॥ दानवेन्द्रः ससैन्यश्च युद्धारं भेदभूवह ॥ २ ॥ स्वयं महेंद्रो युयुधे सार्द्धं च वृषपर्वणा ॥
भास्करो युयुधे विप्रचित्तिना सह सत्वरः ॥ ३ ॥ दंभेन सह चंद्रश्च चकार परमं रणं ॥ कालस्वरेण कालश्च गो
कर्णेन हुताशनः ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥

॥ २१ ॥ पंचसत्तापि पद्यैस्तु युद्धारंभः सचोच्यते ॥ यत्र देवासुराणां च पराक्रम उदीर्यते ॥ १ ॥ शंखचूडो युद्धार्यं मुत्थितवानित्युक्तं तदुत्तरं जातं
वृचसाह शिवं प्रणम्येति ॥ १ ॥ २ ॥ केन साकं कस्य युद्धं दंभेन जातं तदाह स्वयं महेंद्र इति ॥ ३ ॥ अत्र तृतीयांता दैत्याः प्रथमांता देवाः ॥ ४ ॥

॥ ६८ ॥

॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ गोधामुखादिभिरादित्यायायुयुधुः एकादशरुद्राएकादशभयंकरैर्दैत्यैर्युयुधुः ॥ १० ॥ महामा

कुबेरःकालकेयेनविश्वकर्म्मामयेनच ॥ भयंकरेणमृत्युश्चसंहारेणमयस्तथा ॥ ५ ॥ विकंकणेनवरुणश्चंधलेनस
मीरणः ॥ बुधश्चधृतपष्ठेनरक्तक्षेणशनैश्चरः ॥ ६ ॥ जयंतोरत्नसारेणवसवोवर्चसांगणैः ॥ अश्विनौचदीप्ति
मताधूक्षेणनलकुबेरः ॥ ७ ॥ धुरंधरेणधर्मश्चउषाक्षेणचमंगलः ॥ शोभाकरेणवैभानुःपिठरेणचमन्मथः ॥
॥ ८ ॥ गोधामुखेनचूर्णेनस्तद्धेनचध्वजेनच ॥ कांचीमुखेनपिंडेनधूक्षेणसहमंदिना ॥ ९ ॥ विश्वेनचपलशेना
दित्यायायुयुधुःपरे ॥ एकादशरुद्रावैएकादशभयंकरैः ॥ १० ॥ महामारीचयुयुधेचोग्रचंडादिभिःसह ॥ नं
दीश्वरादयःसर्वेदानवानांगणैःसह ॥ ११ ॥ युयुधुश्चमहायुधेप्रलयेपिभयंकरे ॥ वटमूलेचशंभुश्चतस्थौका
ल्यासुतेनच ॥ १२ ॥ सर्वेचयुयुधुःसैन्यसमूहाःसततंमुने ॥ रत्नसिंहासनेरम्येकोटिभिर्दानवैःसह ॥ १३ ॥
उवासशंखचूडश्चरत्नभूषणभूषितः ॥ शंकरस्यचयेयोधादानवैश्चपराजिताः ॥ १४ ॥ देवाश्चदुद्रुवुःसर्वेभीता
श्चक्षताविग्रहाः ॥ चकारकोपंस्कंदश्चदेवेभ्यश्चभयंददौ ॥ १५ ॥ बलंचस्वगणानांचवर्द्धयामासतेजसा ॥ सो
यमेकश्चयुयुधेदानवानांगणैःसह ॥ १६ ॥ अक्षौहिणीनांशतकंसमरेचजघानसः ॥ असुरान्पातयामासका
लीकमललोचना ॥ १७ ॥ पपौरकंदानवानामातिक्रुद्धाततःपरं ॥ दशलक्षंगजेंद्राणांशतलक्षंचकोटिशः ॥ १८ ॥
समादायैकहस्तेनमुखेचिक्षेपलीलया ॥ कबंधानांसहस्रंघननर्तसमरेमुने ॥ १९ ॥ स्कंदस्यशरजालेनदा
नवाःक्षतविग्रहाः ॥ भीताश्चदुद्रुवुःसर्वेमहारणपराक्रमाः ॥ २० ॥ वृषपर्वाविप्रचित्तिर्दंभश्चापिविकंकणः ॥
स्कंदेनसार्धंयुयुधुस्तेसर्वेविक्रमेणच ॥ २१ ॥

॥ ६१ ॥

॥ ६२ ॥

॥ ६३ ॥

रीदैत्यपक्षीयावृषचंडादयोदेवताः ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥

॥ २२ ॥ २३ ॥ एवाग्रं च ब्रूः ॥ २४ ॥ कण्ठान्तरं रसरश्मिर्वापणं ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ वक्ष

महामारीचयुयुधेन बभूव पराङ्मुखी ॥ बभूवुस्ते च संक्षुब्धाः स्कंदस्य शक्तिपीडिताः ॥ २२ ॥ नदुद्रुवुर्भयात्स्व
गेपुष्पवृष्टिर्बभूव ह ॥ स्कंदस्य समरं दृष्ट्वा महारुद्रं समुल्बणं ॥ २३ ॥ दानवानां क्षयकरं यथा प्राकृतिको लयः ॥
राजाधिमानमारुह्य चकार बाणवर्षणं ॥ २४ ॥ नृपस्य शरवृष्टिश्च घनस्य वर्षणं यथा ॥ महाघोरांधकारश्च बभूव
त्थामं बभूव च ॥ २५ ॥ देवाः प्रदुद्रुवुः सर्वेऽप्यन्येन दीश्वरादयः ॥ एक एव कार्तिकेयस्तस्थौ समरमूर्धनि ॥ २६ ॥
पर्वतानां च सर्पाणां शिलानां शास्त्रिणां तथा ॥ नृपश्चकार वृष्टिं च दुर्वां च भयं करीं ॥ २७ ॥ नृपस्य शरवृष्ट्या
च प्रहितः शिवमंदनः ॥ नीहारेण च सांद्रेण प्रहितीभास्करो यथा ॥ २८ ॥ धनुश्चिच्छेदस्कंदस्य दुर्वहं च भयंकरः ॥
बभूज च रथं दिव्यं चिच्छेद रथपीठकान् ॥ २९ ॥ मयूरं जर्जरीभूतं दिव्यास्त्रेण चकार सः ॥ शक्तिं चिच्छेद सूर्याभांत
स्य वक्षस्य घातिनीं ॥ ३० ॥ क्षणं मूर्ध्नि च संप्राप बभूव चेतनः पुनः ॥ गृहीत्वा तदनुर्दिव्यं यद्वत्तं विष्णुना पुरा ॥
॥ ३१ ॥ रत्नेन्द्रसारनिर्माणं यानमारुह्य कार्तिकः ॥ शस्त्रास्त्रं च गृहीत्वा च चकार रणमुल्बणं ॥ ३२ ॥ सर्पींश्च पर्व
तांश्चैव वृक्षांश्च प्रस्तरांस्तथा ॥ सर्वांश्चिच्छेद कोपेन दिव्यास्त्रेण शिवात्मजः ॥ ३३ ॥ बन्धिनिर्वापयामास पार्ज
त्येन प्रतापवान् ॥ रथं धनुश्चिच्छेद शंखचूडस्य लीलया ॥ ३४ ॥ सन्नाहं सारथिं चैव किरीटं मुकुटं ज्वलं ॥ चि
क्षेप शक्तिं शुक्लाभां दानवैर्द्रस्य वक्षसि ॥ ३५ ॥ मूर्ध्नि संप्राप्य राजा च चेतनश्च बभूव ह ॥ आरुरोह यानमन्यं धनु
र्जया ह सत्वरः ॥ ३६ ॥ चकार शरजालं च मायया मायिनां वरः ॥ गुहं चच्छाद समरेशरजालेन नारद ॥ ३७ ॥
जग्राह शक्तिमव्यग्रां शतसूर्यसमप्रभां ॥ प्रलयाग्निशिखारूपां विष्णोश्च तेजसा वृतां ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥

वक्षस्य घातिनीः ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

॥ ३९ ॥

॥ ४० ॥

॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ कार्तिकस्यस्कंदस्यसमरंरक्षितुं ॥ ४२ ॥ वायभांडःसमुदायः ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

चिक्षेपतांचकोपेनमहावेगेनकार्तिके ॥ पपातशक्तिस्तद्वात्रेवन्हिराशिरिवोज्ज्वल ॥ ३९ ॥ मूर्छासंप्रापशक्त्या
चकार्तिकेधोमहाबलः ॥ कालीगृहीत्वातंक्रोडेनिनायशिवसन्निधौ ॥ ४० ॥ शिवस्तंचापिज्ञानेनजीवयामास
लीलया ॥ ददौबलमनंतंचसमुत्तस्थौप्रतापवान् ॥ ४१ ॥ कालीजगामसमरंरक्षितुंकार्तिकस्यया ॥ वीरास्ता
मनुजमुश्नतेचनंदीश्वरादयः ॥ ४२ ॥ सर्वेदेवाश्चगंधर्वायक्षराक्षसकिन्नराः ॥ वायभांडश्चबहुशःशतशोमधु
वाहकाः ॥ ४३ ॥ साचगत्वाथसंग्रामंसिंहनादंचकारच ॥ देव्याश्चसिंहनादेनप्रापुर्मूर्च्छांचदानवाः ॥ ४४ ॥
अट्टाट्टहासमशिवंचकारचपुनःपुनः ॥ दृष्ट्वापपौचमाध्वीकंननर्तरणमूर्धनि ॥ ४५ ॥ उग्रदंष्ट्रचोग्रदंडाकोट
कीचपपौमधु ॥ योगिनीडाकिनीनांचगणाःसुरगणादयः ॥ ४६ ॥ दृष्ट्वाकालींशंखचूडःशीघ्रमाजौसमाययौ ॥
दानवाश्चभयंप्रापूराजातेभ्योभयंददौ ॥ ४७ ॥ कालीचिक्षेपवन्हिंचप्रलयाग्निशिखोपमं ॥ राजानिर्वापया
मासपार्जन्येनचलीलया ॥ ४८ ॥ चिक्षेपवारुणंसाचतीव्रंचमहदद्भुतं ॥ गांधर्वेणचचिच्छेददानवेंद्रश्चलीलया
॥ ४९ ॥ माहेश्वरंप्रचिक्षेपकालीवन्हिशिखोपमं ॥ राजाजघानतांशीघ्रंवैष्णवेनचलीलया ॥ ५० ॥ नाराय
णास्त्रंसादेवीचिक्षेपमंत्रपूर्वकं ॥ राजाननामतदृष्ट्वाचावरुह्यरथादसौ ॥ ५१ ॥ उर्ध्वजगामतच्चास्त्रंप्रलयाग्नि
शिखोपमं ॥ पपातशंखचूडश्चभक्त्यातंदंडवद्भुवि ॥ ५२ ॥ ब्रह्मास्त्रंसाचचिक्षेपयत्नतोमंत्रपूर्वकं ॥ ब्रह्मास्त्रेण
महाराजानिर्वापंचकारसः ॥ ५३ ॥ तदाचिक्षेपदिव्यास्त्रंसादेवीमंत्रपूर्वकं ॥ राजादिव्यास्त्रजालेनतन्निर्वाणं
चकारच ॥ ५४ ॥ देवीचिक्षेपशक्तिंचयत्नतोयोजनायतां ॥ राजादिव्यास्त्रजालेनशतखंडांचकारह ॥ ५५ ॥

॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

दे.भा.न.

॥७०॥

पाशुपतस्तत्त्वायं विरोधुं आकाशशब्दणीव भूवेत्यर्थः ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ग्रस्तुं प्रसितुं ॥ ६२ ॥ ६३ ॥

टी.अ.

२२

जग्राह मंत्रपूतं च देवीं पाशुपतं रुषा ॥ निक्षेपणं निरोद्धुं च बाग्बभूवा शरीरिणी ॥ ५६ ॥ मृत्युः पाशुपतेनास्ति
नृपस्य च महोत्थिनः ॥ यावदस्ति च मंत्रस्य कवचं च हरेरिति ॥ ५७ ॥ यावत्सतीत्वमस्त्येव सत्याश्च नृपयोषि
तः ॥ तावदस्य जरामृत्युर्नास्तीति ब्रह्मणो वचः ॥ ५८ ॥ इत्याकर्ण्य भद्रकालीनतश्चिक्षेप शस्त्रकं ॥ शतलक्षं दा
नवानां जग्राह सलीलया क्षुधा ॥ ५९ ॥ ग्रस्तुं जगाम वेगेन शंखचूडं भयं करी ॥ दिव्यास्त्रेण सुतीक्ष्णेन वारयामास
दानवः ॥ ६० ॥ खड्गं चिक्षेप सा देवी ग्रीष्मसूर्योपमं यथा ॥ दिव्यास्त्रेण दानवैर्द्रुःशतखंडं च कारसः ॥ ६१ ॥ पु
नर्ग्रस्तुं महादेवी वेगेन च जगाम तं ॥ सर्वसिद्धेश्वरः श्रीमान् बभूवे दानवेश्वरः ॥ ६२ ॥ वेगेन मुष्टिना कालीकोष
युक्ता भयं करी ॥ बभ्रं जघरयंत स्य जघान सारथिं सती ॥ ६३ ॥ सा च शूलं च चिक्षेप प्रलयाग्निशिखोपमं ॥ बाम
हस्तेन जग्राह शंखचूडः सलीलया ॥ ६४ ॥ मुष्ट्या जघान तं देवी महाकोपेन वेगतः ॥ बभ्राम च तया दैत्यः क्षणं
मूर्छामवाप च ॥ ६५ ॥ क्षणेन चेतनां प्राप्य समुत्तस्थौ प्रतापवान् ॥ न च कारबाहुयुद्धं देव्या सह ननामतां ॥ ६६ ॥
देव्याश्वासं सचिच्छेद जग्राह च स्वतेजसा ॥ नास्त्रं चिक्षेप तां भक्तो मातुर्भक्त्या तु वैष्णवः ॥ ६७ ॥ गृहीत्वा दानवं
देवी आश्रयित्वा पुनः पुनः ॥ ऊर्ध्वं च प्राप यामास महो वेगेन कोपिता ॥ ६८ ॥ ऊर्ध्वात्पपात वेगेन शंखचूडः प्रताप
वान् ॥ निपत्य च समुत्तस्थौ प्रणम्य भद्रकालिकां ॥ ६९ ॥ रत्नेंद्रसारनिर्माणं विमानं सुमनोहरं ॥ आरुशेह
र्षयुक्तो न विभ्रांतो महारणे ॥ ७० ॥

॥ ६१ ॥

॥ ६२ ॥

॥ ६४ ॥ ६५ ॥ देव्या सह नाहु युद्धं न च कार किं तु दाननाम किं च देव्या अस्त्रं स्वयं चिच्छेद न तु तस्या उपरि स्वयं चिक्षेप स्वतेजसा अस्त्रं ज
ग्राह च मुष्टेनास्त्रं चिक्षेप यतो वैष्णवस्ततो मातुर्भक्त्या नास्त्रं चिक्षेप ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥

॥ ७१ ॥

॥७०॥

ततमरक्तंक्षुधाक्षुधाक्षणी ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ शशुप्तेनहंतुमुद्युक्तैत्यर्थः तदेतिशेषः ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलके
स्वमस्कंधेद्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥ अर्धाधिकैश्चविंशतिः पद्यैरयमनादनः ॥ शंखचूडस्यकवचंमहारेतिचवर्ण्यते ॥ १ ॥ भद्रकालीवा

दानवानांचक्षतजंसादेवीचपपौक्षुधा ॥ पीत्वाभुक्ताभद्रकालीजगामशंकरांतिकं ॥ ७१ ॥ उवाचरणवृत्तांतं
पौर्वापर्येयथाक्रमं ॥ श्रुत्वाजहासशंभुश्चदानवानांविनाशनं ॥ ७२ ॥ लक्षंक्षदानवेद्राणामवशिष्टंरणेधुमा ॥
भुंजंत्यानिर्गतंवक्त्रात्तदन्यंभुक्तमीश्वर ॥ ७३ ॥ संग्रामेदानवेद्रंचहंतुंपाशुपतेनवै ॥ अवध्यस्तवराजेतिवा
ग्वभूवाशरीरिणी ॥ ७४ ॥ राजेंद्रश्चमहाज्ञानीमहाबलपराक्रमः ॥ नचक्षिपेमय्यस्त्रंचिच्छेदममसायकं ॥
॥ ७५ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेनारदनारायणसंवादेद्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥ श्रीनाराय
णउवाच ॥ शिवस्तत्त्वंसमाकर्ण्यतत्त्वज्ञानविशारदः ॥ ययौस्वयंचसमरेस्वर्गणैःसहनारद ॥ १ ॥ शंखचूडः
शिवंदृष्ट्वाविमानादबहूदृष ॥ ननामपरयाभक्त्याशिरसादंडवद्भुवि ॥ २ ॥ तंप्रणम्यचवेगेनविमानमारुरोह
सः ॥ तूर्णचकारसन्नादंधनुर्जग्राहदुर्वहं ॥ ३ ॥ शिवदानवयोर्युद्धंपूर्णमब्दशतंपुरा ॥ नबभूवतुरन्योन्यं
ह्यनजयपराजयौ ॥ ४ ॥ न्यस्तशस्त्रश्चभगवानन्यस्तशस्त्रश्चदानवः ॥ रथस्थःशंखचूडश्चवृषस्थोवृषभध्व
जः ॥ ५ ॥ दानवानांचशतकमुद्धृतंचबभूवह ॥ रणेयेयेमृताःशंभुर्जीवयामासतान्विभुः ॥ ६ ॥ एतस्मिन्नंतरेवृ
द्धब्राह्मणःपरमातुरः ॥ आगत्यचरणस्थानमुवाचदानवेश्वरं ॥ ७ ॥ वृद्धब्राह्मणउवाच ॥ देहिभिक्षांचराजेंद्र
मह्यंविप्रायसांप्रतं ॥ त्वंसर्वसंपदांदातायन्मेमनसिवांच्छितं ॥ ८ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥

न्यश्रवणोत्तरंशिवोयच्चकारतदाह शिवस्तत्त्वमिति युद्धवृत्तांतरूपंतत्त्वमित्यर्थः ॥ १ ॥ २ ॥ तंप्रणम्येति एतादृशोयंभगवद्वक्तृद्विभावः संज्ञा
हंयुद्धोद्योगं ॥ ३ ॥ अब्दशतमभूदितिशेषः ॥ ४ ॥ ५ ॥ उद्धृतमुन्मथितंदानवानांशतकमनेकेदानवाइत्यर्थः ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥

दे.भा.न.

॥ ७१ ॥

मत्सुरः प्रथमतोतिष्ठत्संक्रुद्धास्यासीद्विज्ञापयंकुरूपश्चात्वायन्मदभिषिक्तत्कयमिष्यामीत्यर्थः ॥ १९ ॥ २० ॥ कवचं
भूनेपचेविद्विष्यस्वर्णपेटिकायांस्थापयित्वाकंठेयत्तुतदित्यर्थः ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ शिवकेशवयोरन्येनताभ्यामन्येनपुरुषेणदुर्वहं

निरीहायचवृद्धायतृषितायचसांप्रतं ॥ पश्चात्त्वांकथयिष्यामिपुरःसत्यंचकुर्वति ॥ ९ ॥ ॐमित्युवाचराजेंद्रःप्र
सन्नवदनेक्षणः ॥ कवचार्योजनश्चाहमित्युवाचेतिमायया ॥ १० ॥ तच्छ्रुत्वाकवचंदिव्यंजग्राहहरिरेवच ॥ शंख
चूडस्यरूपेणजगामतुलसींप्रति ॥ ११ ॥ गत्वातस्यांमाययाचवीर्याधानंचकारच ॥ अथशंभुर्हरेःशूलंजग्राह
दानवंप्रति ॥ १२ ॥ ग्रीष्ममध्यान्हमार्तंडप्रलयाग्निशिखोपमं ॥ दुर्निवार्यंचदुर्धर्मव्यर्थैर्वैरिघातकं ॥ १३ ॥
तेजसाचक्रतुल्यंचसर्वशस्त्रास्त्रसारकं ॥ शिवकेशवयोरन्यदुर्वहंचभयंकरं ॥ १४ ॥ धनुःसहस्रंदैर्घ्येणप्रस्थेनश
तहस्तकं ॥ सजीवंब्रह्मरूपंचनित्यरूपमनिर्दिशं ॥ १५ ॥ संहर्तुंसर्वब्रह्मांडमलयत्स्वीयलीलया ॥ चिक्षेप
तोलनंकृत्वाशंखचूडेचनारद ॥ १६ ॥ राजाचापंपारित्यज्यश्रीकृष्णचरणांबुजं ॥ ध्यानेचकारभक्त्याचकृत्वा
योगासनंधिया ॥ १७ ॥ शूलंचधमणंकृत्वापपातदानवोपरि ॥ चकारभस्मसातंचसरथंचावलीलया ॥
१८ ॥ राजाधृत्वादिव्यरूपंकिशोरंगोपवेषकं ॥ द्विभुजंमुरलीहस्तरत्नभूषणभूषितं ॥ १९ ॥ रत्नेंद्रसारनिर्मा
णंविष्टितंगोपकोटिभिः ॥ गोलोकादागतंयानमारुरोहपुरंययौ ॥ २० ॥ गत्वाननामशिरसासराधाकृष्णयोर्मु
ने ॥ भक्त्याचचरणांभोजरासेवृंदावनेवने ॥ २१ ॥ सुदामानंचतौदृष्ट्वाप्रसन्नवदनेक्षणौ ॥ क्रोडेचक्रतुरत्यं
तंप्रेम्णातिपरिसंयुतौ ॥ २२ ॥ अथशूलंचवेनेनप्रययौतंचसादरं ॥ अस्थिभिःशंखचूडस्यशंखजातिवैभूष
ह ॥ २३ ॥ नानाप्रकाररूपेणशम्भुत्पूतासुरार्चने ॥ प्रशस्तंशंखतोयंचदेवानांप्रीतिदंपरं ॥ २४ ॥

मित्यर्थः ॥ २४ ॥ प्रस्थेनविस्तारेणचजीवंचेतनयासहितमित्यर्थः नित्यरूपमित्याद्यतिशयोक्तिः ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥
॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥

टी.अ.

२३

॥ ७१ ॥

शंभुना विनित्यनेन शिवोपरिशंखचक्रं न देयमिति भावः ॥ २५ ॥ २६ ॥ स्त्रीणां चोति स्त्रीशुद्धैः शंखध्वनिर्न कर्तव्य इत्यर्थः ॥ २७ ॥
निपक्षेनाधकमाह ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके नवमस्कंधेत्रयोर्विशोभ्यायः ॥ २३ ॥ एकाधिकशतश्लोकैस्तुल

तीर्षतोऽस्य स्वरूपं च पवित्रं शंभुना विना ॥ शंखशब्दो भवेद्यत्र तत्र लक्ष्मीः सुसंस्थिरा ॥ २५ ॥ सस्नातः सर्वती
र्षेषु यः स्नातः शंखवारिणा ॥ शंखो हरेरधिष्ठानं यत्र शंखस्ततो हरिः ॥ २६ ॥ तत्रैव वसते लक्ष्मीर्दूरीभूतममंग
लं ॥ स्त्रीणां च शंखध्वनिभिः शूद्राणां च विशेषतः ॥ २७ ॥ भीतारुण्यातिलक्ष्मीस्तत्स्थलादन्यदेशतः ॥ शिवो
पिदानवं हत्वा शिवलोकं जगाम ह ॥ २८ ॥ प्रहृष्टे वृषभारूढः स्वर्गणैश्च समावृतः ॥ सुराः स्वविषयं प्रापुः पर
मानंदसंयुताः ॥ २९ ॥ नेदुर्दुभयः स्वर्गे जगुर्गंधर्वकिन्नराः ॥ बभूव पुष्पवृष्टिश्च शिवस्योपरि संततं ॥ ३० ॥
प्रशशंसुः सुरास्तंच मुनींद्रप्रवरादयः ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे नवमस्कंधेत्रयोर्विशोभ्यायः ॥ २३ ॥
नारद उवाच ॥ नारायणश्च भगवान् वीर्याधानं चकार ह ॥ तुलस्यां केन रूपेण तन्मे ठ्याख्यातुमर्हसि ॥ १ ॥
श्रीनारायण उवाच ॥ नारायणश्च भगवान् देवानां साधनेषु च ॥ शंखचूडस्य कवचं गृहीत्वा विष्णुमाश्रया ॥ २ ॥
मुनर्विधाय तद्रूपं जगाम तत्सती गृहं ॥ पातिव्रत्यस्य नाशेन शंखचूडजिघांसया ॥ ३ ॥ दुंदुभिर्वा दयामास तु
लसी द्वारसन्निधौ ॥ जयशब्दं च तद्द्वारे बोधयामास सुंदरीं ॥ ४ ॥ तच्छ्रुत्वा चरत्साध्वी परमानंदसंयुता ॥ रा
जमार्गं गवाक्षेण ददर्श परमादरात् ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥

सीसंगवर्णनं ॥ कृत्वा तदुत्तरं तस्यामाहात्म्यमपि चोच्यते ॥ १ ॥ नारायणस्तुलसीसंगं कथं कृतवानिति कथां पृच्छति नारदः नारद उवाच
नारायणश्चेति ॥ १ ॥ साधनेषु साधननिमित्तमित्यर्थः ॥ २ ॥ तस्यास्तुलस्याः पातिव्रत्यनाशेन तत्पतेः शंखचूडस्य हनने चेत्यर्थः ॥ ३ ॥
॥ ४ ॥ परमानंदेति मत्पतिर्नयं संपाद्या गत इति हेतोर्मित्यर्थः ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥

दे.भा.न.

॥ ७२ ॥

॥ ६ ॥ ७ ॥ कांतसुंदरं ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ संहर्त्राशिवेन ॥ १२ ॥ १३ ॥ अब्दमन्दशतमित्यर्थः पूर्वशतवर्षयुत्थस्यो

ब्राह्मणेभ्यो धनं दत्त्वा कारयामास मंगलं ॥ बन्दिभ्यो भिक्षुकेभ्यश्च वाचिभ्यश्च धनं ददौ ॥ ६ ॥ अवरुह्य रथाद्देवो
देव्याश्च भवन्त्ययौ ॥ अमूल्यरत्ननिर्माणं सुंदरं सुमनोहरं ॥ ७ ॥ दृष्ट्वा च पुरतः कांतं सातं कांतं मुदान्विता ॥
तत्पादं क्षालयामासननामचरुदोदधे ॥ ८ ॥ रत्नसिंहासने रम्ये वासयामास कामुकी ॥ तां बूलं च ददौ तस्मै क
पूरादिसुवासितं ॥ ९ ॥ अद्य मे सफलं जन्म जीवनं च बभूव ह ॥ रणे गतं च प्राणेशं पश्यंत्याश्च पुनर्गृहे ॥ १० ॥
संस्मिता सकटाक्षं च सकामा पुलकांकिता ॥ पप्रच्छ रणवृत्तांतं कांतं मधुरयागिरा ॥ ११ ॥ तुलस्युवाच ॥ असं
ख्यविश्वसंहर्त्रा सार्धमाजौ तव प्रभो ॥ कथं बभूव विजयस्तन्मे ब्रूहि कृपानिधे ॥ १२ ॥ तुलसीवचनं श्रुत्वा प्रहस्य
कमलापतिः ॥ शंखचूडस्य रूपेण तामुवाचामृतं वचः ॥ १३ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ आवयोः समरः कांते पूर्णम
ब्दं बभूव ह ॥ नाशो बभूव सर्वेषां दानवानां च कामिनि ॥ १४ ॥ प्रीतिं च कारयामास ब्रह्मा च स्वयमावयोः ॥ दे
वानामधिकारश्च प्रदत्तो ब्रह्मणा ज्ञया ॥ १५ ॥ मया गतं स्वभवनं शिवलोकां शिवो गतः ॥ इत्युत्काजगतां नाथः श
यनं च चकार ह ॥ १६ ॥ रे मे रामापतिस्तत्र रामया सह नारद ॥ सा साध्वी सुखसंभोगादाकर्षणव्यतिक्रमात् ॥
॥ १७ ॥ सर्वचित्तं कयामास कस्त्वमेवेत्युवाच सा ॥ तुलस्युवाच ॥ को वा त्वं वद मायेश भुक्ता हं मायया त्वया ॥
१८ ॥ दूरीकृतं मत्सती त्वं यदतस्त्वांशपामिहे ॥ तुलसीवचनं श्रुत्वा हरिः शापभयेन च ॥ १९ ॥ दधारलीलया
ब्रह्मन्सुमूर्तिसुमनोहरां ॥ ददर्श पुरतो देवी देवदेवं सनातनं ॥ २० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥

कृत्वात् ॥ १४ ॥ आवयोः शिवस्य मम च प्रीतिस्तेहं ॥ १५ ॥ १६ ॥ व्यतिक्रमात् पूर्वपतिसंगमाकर्षणोपक्षयाभेदात् ॥ १७ ॥ नाथं
पतिः किं तु पतिवेषधारी कश्चिदिति मत्साह कस्त्वमिति ॥ १८ ॥ यदस्मात् ॥ १९ ॥ २० ॥ ॥ ७२ ॥

टी.अ.

२४

॥ ७२ ॥

॥ ७२ ॥

॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ भवेत्पंच ॥ २५ ॥ भक्तः शंखचूडः परावैद्यार्थ ॥ २६ ॥ २७ ॥ मदर्थे मत्प्रयोजनाय ममपतिः

नवीननीरदश्यामंशरत्पंकजलोचनं ॥ कोटिकंदर्पलीलाभंरत्नभूषणभूषितं ॥ २१ ॥ ईषद्वास्यं प्रसन्नास्यं
शोभितपीतवाससं ॥ तंदृष्ट्वा कामिनीकामंमूर्छीसंप्रापलीलया ॥ २२ ॥ पुनश्चचेतनांप्राप्यपुनः सातमुवाचह ॥
तुलस्युवाच ॥ हेनाथतेदयानास्तिपाषाणसदृशस्यच ॥ २३ ॥ छलेनधर्मभंगेनममस्वामित्वयाहतः ॥ पाषा
णहृदयस्त्वं हिदयाहीनोयतः प्रभो ॥ २४ ॥ तस्मात्पाषाणरूपस्त्वं भवेदेवभवाधुना ॥ येवदंतिचसाधुंत्वांति
घांताहिनसंशयः ॥ २५ ॥ अक्लोविनापराधेनपरार्थेचकथं हतः ॥ भृशंरुरोदशोकार्ताविललापमुहुर्मुहुः ॥ २६ ॥
ततश्चकरुणां दृष्ट्वाकरुणारससागरः ॥ नयेनतांबोधयितुमुवाचकमलापतिः ॥ २७ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ तप
स्त्वयाकृतंभद्रेमदर्थेभारतेचिरं ॥ त्वदर्थेशंखचूडश्चकारसुचिरंतपः ॥ २८ ॥ कृत्वात्वांकामिनीसोपिविजहा
रचतक्षणात् ॥ अधुनादातुमुचितंतवैवतपसःफलं ॥ २९ ॥ इदंशरीरं त्यक्त्वाचदिव्यदेहंविधायच ॥ रामेरम
मयासार्द्धत्वंरमासदृशीभव ॥ ३० ॥ इयंतनुर्नदीरूपागंडकीतिचविश्रुता ॥ पूतासुपुण्यदानृणांपुण्येभवतु
भारते ॥ ३१ ॥ तवकेशसमूहश्चपुण्यवृक्षोभविष्यति ॥ तुलसीकेशसंभूतातुलसीतिचविश्रुता ॥ ३२ ॥ त्रिषु
लोकेषुपुष्पाणांपत्राणांदिवपूजने ॥ प्रधानरूपातुलसीभविष्यतिवरानने ॥ ३३ ॥ स्वर्गेमर्त्येचपातालेगो
लोकेममसन्निधौ ॥ भवत्वंतुलसीवृक्षवरापुष्पेषुसुंदरी ॥ ३४ ॥ गोलोकेविरजातीरेरासेवृंदावनेवने ॥ भां
डीरेचंपकवनेरम्येचंदनकानने ॥ ३५ ॥

॥ ६४ ॥

॥ ६४ ॥

॥ ६४ ॥

कृष्णोभवत्वितीच्छयेत्यर्थः ॥ २८ ॥ तेनतपश्चर्यात्त्वदर्थकृतातस्यफलंतेनभुक्तं अधुनात्वयायदर्थतपस्तप्तंतस्यफलंदातुमुचितमितिकृत्वामयै
तादृशंकृतमित्यर्थः ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ तस्यपुण्यवृक्षस्यतुलसीकेशसंभूतत्वात्तुलसीतिसंज्ञास्यादित्यर्थः ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥

॥ ३६ ॥ ३७ ॥ मस्तकेतुलसीपत्रपतनप्राप्तयेत्यर्थः ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ स्वीकार

माधवीकेतकीकुंदमालिकामालतीवने ॥ वासस्तेत्रैवभवतुपुण्यस्थानेषुपुण्यदः ॥ ३६ ॥ तुलसीतरुमूलेषुपु
ण्यदेशेषुपुण्यदः ॥ अधिष्ठानं च तीर्थानां सर्वेषां च भविष्यति ॥ ३७ ॥ तत्रैव सर्वदेवानां ममाधिष्ठानमेव च ॥
तुलसीपत्रपतनप्राप्तये च वरानने ॥ ३८ ॥ सस्नातः सर्वतीर्थेषु सर्वयज्ञेषु दीक्षितः ॥ तुलसीपत्रतोयेन योऽभि
षेकं समाचरेत् ॥ ३९ ॥ सुधाघटसहस्राणां यातुष्टिस्तु भवेद्दरेः ॥ सा च तुष्टिर्भवेन्नूनं तुलसीपत्रदानतः ॥ ४० ॥
गवामयुतदानेन यत्फलं तत्फलं भवेत् ॥ तुलसीपत्रदानेन तत्फलं कार्तिके सति ॥ ४१ ॥ तुलसीपत्रतोयं च मृ
त्युकाले च यो लभेत् ॥ मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोके महीयते ॥ ४२ ॥ नित्यं यस्तुलसीतोयं भुंक्ते भक्त्या च मा
नवः ॥ लक्षाभ्यमेधजं पुण्यं संप्राप्नोति च मानवः ॥ ४३ ॥ तुलसीं स्वकरे कृत्वा धृत्वा देहे च मानवः ॥ प्राणांस्त्यज
ति तीर्थेषु विष्णुलोकं स गच्छति ॥ ४४ ॥ तुलसीकाष्ठनिर्माणमालांगृण्हाति यो नरः ॥ पदे पदेष्वमेधस्य लभते
निश्चितं फलं ॥ ४५ ॥ तुलसीं स्वकरे कृत्वा स्वीकारं यो नरः ॥ स याति कालसूत्रं च यावच्चंद्रादिवाकरो ॥ ४६ ॥
करोति मिथ्या रापयं तुलस्यां यो नरः ॥ स याति कुंभीपाकं च यावदिंद्राश्चतुर्दश ॥ ४७ ॥ तुलसीतोयकणि
कां मृत्युकाले च यो लभेत् ॥ रत्नयानं समारुह्य वैकुण्ठे प्राप्यते ध्रुवं ॥ ४८ ॥ पूर्णिमायाममायां च द्वादश्यां रविसं
क्रमे ॥ तैलाभ्यंगं च कृत्वा च मध्याह्ने निशि संध्ययोः ॥ ४९ ॥ अशौचे शुचिकाले ये रात्रिवासो न्वितानराः ॥ तुल
सीविचित्रं च तित्तिष्ठंति हिरेः शिरः ॥ ५० ॥

॥ ४१ ॥

॥ ४२ ॥

॥ ४३ ॥

॥७३॥

मित्रभ्रातृमिदं करिष्यामीत्येवं रूपं तुलसीं स्वकरे कृत्वा धृत्वा कृतं स्वीकारं यो नरः क्षतीत्यर्थः ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥

॥ ५१ ॥ ५२ ॥ एवं वृक्षरूपेण त्वं प्रयिन्यास्यास्य सितहृदिष्ठातृमूर्तीरूपेण तु यो लोके मत्सन्निधौ स्यात्स्वसीत्याह ॥ ५३ ॥ नद्यधिष्ठात्री गंडक्य
धिष्ठात्री ॥ ५४ ॥ त्वंचस्वयंपूर्णरूपेणेत्यर्थः ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ मदीयकंचक्रंसुदर्शनं ॥ ५७ ॥ वनमाळाधिष्ठोपरिमाळाकाररेषाल

त्रिरात्रंतुलसीपत्रं शुद्धं पर्युषितं सति ॥ श्राद्धे ब्रते च दाने च प्रतिष्ठायां सुरार्चने ॥ ५१ ॥ भूगतंतो यपतितं यदत्तं
विष्णवे सति ॥ शुद्धंच तुलसीपत्रं क्षालनादन्यकर्मणि ॥ ५२ ॥ वृक्षाधिष्ठातृदेवीयामोलोके च निरामये ॥ कृष्णेन
सार्द्धं नित्यंच नित्यं क्रीडां करिष्यसि ॥ ५३ ॥ नद्यधिष्ठातृदेवीयां भारते च सुपुण्यदा ॥ लवणोदस्य सापत्नीमदं
शस्यं भविष्यसि ॥ ५४ ॥ त्वंचस्वयं महासाध्वी वैकुण्ठे मम सन्निधौ ॥ रमासमाचरामाच भविष्यसि न संशयः
॥ ५५ ॥ अहंच शैलरूपेण गंडकीतीरसन्निधौ ॥ अधिष्ठानं करिष्यामि भारते तव शापतः ॥ ५६ ॥ कोटि संख्या
स्तत्र कीटास्तीक्ष्णदंष्ट्रावरायुधैः ॥ तच्छिलाकुहरे च क्रंकरिष्यंति मदीयकं ॥ ५७ ॥ एकद्वारंचतुश्चक्रं वनमाला
विभूषितं ॥ नवीननीरदाकारं लक्ष्मीनारायणाभिधं ॥ ५८ ॥ एकद्वारंचतुश्चक्रं नवीननीरदोपमं ॥ लक्ष्मीज
नार्दनो ज्ञेयोरहितो वनमालया ॥ ५९ ॥ द्वारद्वये चतुश्चक्रं गोष्पदेन विराजितं ॥ रघुनाथाभिधं ज्ञेयं रहितं वन
मालया ॥ ६० ॥ अतिक्षुद्रं द्विचक्रं च नवीनजलदप्रभं ॥ तद्वामनाभिधं ज्ञेयं रहितं वनमालया ॥ ६१ ॥ अतिक्षुद्रं
द्विचक्रं च वनमालाविभूषितं ॥ विज्ञेयं श्रीधरं रूपं श्रीप्रदं गृहिणां सदा ॥ ६२ ॥ स्थूलंच वर्तुलाकारं रहितं वनमाल
या ॥ द्विचक्रं स्फुटमत्यंतं ज्ञेयं दामोदराभिधं ॥ ६३ ॥ मध्यमं वर्तुलाकारं द्विचक्रं बाणविक्षतं ॥ रणरामाभिधं ज्ञेयं
शरतूणसमन्वितं ॥ ६४ ॥ मध्यमं सप्तचक्रं च त्रभूषणभूषितं ॥ राजराजेश्वरं ज्ञेयं राजसंपत्प्रदं नृणां ॥ ६५ ॥

क्ष्मीनारायणाभिधं रूपमिति शेषः ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ गोष्पदं प्रसिद्धं ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ बाणविक्षतं शरप्रहारचिह्नं कित
मित्यर्थः शरतूणसमन्वितं शरचिह्नसमन्वितं तूष्णीनिषंगस्तत्समान्वितामित्यर्थः ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.न.

॥ ६६ ॥ चक्राकारं सधीकं यमकिलक्ष्मीचिह्नसहितमिति राघवभट्टः मध्यममध्यमपरिमाणमित्यर्थः ॥ ६७ ॥ हयवक्त्राभं हयमुखाकारं
॥ ६८ ॥ विकटं भयंकरं ॥ ६९ ॥ ७० ॥ द्वारदेशे द्वारस्थाने एव न तु मध्यतः समं वक्रभिन्नं ॥ ७१ ॥ सुषिरे मल्लमुखांतः सूक्ष्मछिद्रा

टी.अ.

२४

॥७४॥

द्विसप्तचक्रं स्फूर्तं च नवीरदसुप्रभं ॥ अनंतास्यं च विज्ञेयं चतुर्वर्गफलप्रदं ॥ ६६ ॥ चक्राकारं द्विचक्रं च सश्री
कं जलदप्रभं ॥ सगोष्पदं मध्यमं च विज्ञेयं मधुसूदनं ॥ ६७ ॥ सुदर्शनं चैकचक्रं गुप्तचक्रं गदाधरं ॥ द्विचक्रं हयव
क्त्राभं हयग्रीवं प्रकीर्तितं ॥ ६८ ॥ अतीव विस्तृतास्यं च द्विचक्रं विकटं स्मृति ॥ नरसिंहं सुविज्ञेयं सद्यो वैराग्यदं नृ
णां ॥ ६९ ॥ द्विचक्रं विस्तृतास्यं च वनमालासमन्वितं ॥ लक्ष्मीनृसिंहं विज्ञेयं गृहिणां च सुखप्रदं ॥ ७० ॥ द्वार
देशे द्विचक्रं च सश्रीकं च समं स्फुटं ॥ वासुदेवं तु विज्ञेयं सर्वकामफलप्रदं ॥ ७१ ॥ प्रद्युम्नं सूक्ष्मचक्रं च नवीननी
रदप्रभं ॥ सुषिरे छिद्रं बहुलं गृहिणां च सुखप्रदं ॥ ७२ ॥ द्वेचक्रे चैकलये च पृष्ठं यत्र तु पुष्कलं ॥ संकर्षणं सुविज्ञेयं
सुखदं गृहिणां सदा ॥ ७३ ॥ अनिरुद्धं तु पीताभं वर्तुलं चातिशोभनं ॥ सुखप्रदं गृहस्थानां प्रवदंति मनीषिणः
॥ ७४ ॥ शालग्रामशिलायत्रतत्र सान्निहितो हरिः ॥ तत्रैव लक्ष्मीर्वसति सर्वतीर्थसमन्विता ॥ ७५ ॥ यानिका
मिषपापानि ब्रह्महत्यादिकानि च ॥ तानि सर्वाणि नश्यन्ति शालग्रामशिलार्चनात् ॥ ७६ ॥ छत्राकारे भवेद्राज्यं
वर्तुले च महाभियः ॥ दुःखं च शकटाकारे शूलाग्रे मरणं ध्रुवं ॥ ७७ ॥ विकृतास्ये च दारिद्र्यं पिङ्गले हानिरेव च ॥ भग्न
चक्रे भवेद्वाधिर्विदीर्णं मरणं ध्रुवं ॥ ७८ ॥ व्रतं दानं प्रतिष्ठा च श्राद्धं च देवपूजनं ॥ शालग्रामस्य सान्निध्यात्प्रश
स्तं तद्वेदिति ॥ ७९ ॥ सस्नातः सर्वतीर्थेषु सर्वयज्ञेषु दीक्षितः ॥ सर्वयज्ञेषु तीर्थेषु व्रतेषु च तपःसु च ॥ ८० ॥

पिनदुक्तानियस्मिन् ॥ ७२ ॥ इयोश्चक्रयोर्मुखं परस्परं संलग्नं यत्र तथा तयोः चक्रयोः पृष्ठं पुष्कलं विशालं यत्र तथारूपमित्यर्थः ॥ ७३ ॥

॥७४॥

॥७४॥ ७५ ॥ ७६ ॥ छत्राकारे ह्येव लक्ष्मीकारं वस्त्रात् ॥ ७७ ॥ विदीर्णे स्फुटि ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ॥ ७॥

॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥

पाठेचतुर्णिवेदानांतपसांकरणेसति ॥ तत्पुण्यंलभतेनूनंशालग्रामशिलार्चनात् ॥ ८१ ॥ शालग्रामशिलातो
यंनित्यंभुंक्तेचयोनरः ॥ सुरेप्सितंप्रसादंचलभतेनात्रसंशयः ॥ ८२ ॥ तस्यस्पर्शचवांछंतितीर्थानिनिखिला
निच ॥ जीवन्मुक्तोमहापूतोप्यंतेयातिहरेःपदं ॥ ८३ ॥ तत्रैवहरिणासार्धमसंख्यंप्राकृतंलयं ॥ यास्यत्येवहि
दास्येचन्त्रियुक्तोदास्यकर्मणि ॥ ८४ ॥ यानिकानिचपापानिब्रह्महत्यासमानिच ॥ तदृष्ट्वाचपलायंतेवैनते
यादिवोरगाः ॥ ८५ ॥ तत्पादरजसादेवीसद्यःपूतावसुंधरा ॥ पुंसांलक्षंतत्पितृणांनिस्तरेत्तस्यजन्मतः
॥ ८६ ॥ शालग्रामशिलतोयंमृत्युकालेचयोलभेत् ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तोविष्णुलोकंसगच्छति ॥ ८७ ॥ निर्वाण
मुक्तिलभतेकर्मभोगात्प्रमुच्यते ॥ विष्णोःपदेप्रलीनश्चभविष्यतिनसंशयः ॥ ८८ ॥ शालग्रामशिलांधृत्वा
मिथ्यावाक्यंवदेत्तुयः ॥ सयातिकुंभीपाकेचयावद्वैब्रह्मणोवयः ॥ ८९ ॥ शालग्रामशिलांधृत्वास्वीकारंयोनपालये
त् ॥ सप्रयात्यसिपत्रंचलक्षमन्वंतरावधि ॥ ९० ॥ तुलसीपत्रविच्छेदंशालग्रामेकरोतिच ॥ तस्यजन्मांतरेकां
तेस्त्रीविच्छेदोभविष्यति ॥ ९१ ॥ तुलसीपत्रविच्छेदंशंखेयोहिकरोतिच ॥ भार्याहीनोभवेत्सोपिरोगीचसप्तज
न्मसु ॥ ९२ ॥ शालग्रामंचतुलसीशंखंचैकत्रमेवच ॥ योरक्षातिमहाज्ञानीसभवेच्छ्रीहरेःप्रियः ॥ ९३ ॥ सकृदे
वहियोयस्यांवीर्याधानंकरोतिच ॥ तद्विच्छेदेतस्यदुःखंभवेदेवपरस्परं ॥ ९४ ॥ त्वंप्रियाशंखचूडस्यचैकम
न्वंतरावधि ॥ शंखेनसार्धंत्वद्भेदःकेवलंदुःखंदस्तथा ॥ ९५ ॥ इत्युक्त्वाश्रीहरिस्तांचविररामचनारद ॥ सा
चदेहंपरित्यज्यदिव्यरूपंविधायच ॥ ९६ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥

पत्रविच्छेदंवियोगं ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

दे.भा.न.

॥७५॥

॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥ रवेरुपतापातिंगलाभवंति ताःस्थलस्थानपूज्या इति पूर्वमुक्तं नदीजलस्थाः पूज्याः

यथाश्रीश्वतथासाचाप्युवासहरिवक्षसि ॥ सजगामतयासार्धवैकुण्ठकमलपतिः ॥ ९७ ॥ लक्ष्मीःसरस्वतीगं
गातुलसीचापिनारद ॥ हरेःप्रियाश्वतस्त्रश्वबभूवुरीश्वरस्यच ॥ ९८ ॥ सद्यस्तद्देहजाताचबभूवगंडकीनदी
॥ ईश्वरःसोपिशैलश्वतस्तीरेपुण्यदोनृणां ॥ ९९ ॥ कुर्वीतितत्रकीटाश्वशिलांबहुविधांमुने ॥ जलेपतंतियाया
श्वफलदास्ताश्वनिश्चितं ॥ १०० ॥ स्थूलस्थाःपिंगलाज्ञेयाश्वोपतापाद्रवेरिति ॥ इत्येवंकथितं सर्वकिंभूयः
श्रोतुमिच्छसि ॥ १०१ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेनारदनारायणसंवादेचतुर्विंशोऽध्यायः
॥ २४ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ तुलसीचयदापूज्याकृतानारायणप्रिया ॥ अस्याःपूजाविधानंचस्तोत्रंचवंदसां
प्रतं ॥ १ ॥ केनपूजाकृताकेनस्तुताप्रथमतोमुने ॥ तत्रपूज्यासाबभूवकेनवावदमामहो ॥ २ ॥ सूतउवाच ॥
नारदस्यवचःश्रुत्वाप्रहस्यमुनिपुंगवः ॥ कथांकथितुमारेभेपुण्यां पापहरांपरां ॥ ३ ॥ नारायणउवाच ॥ ह
रिःसंपूज्यतुलसीरिमेचरमयासह ॥ रमासमानसौभाग्यांचकारगौरवेणच ॥ ४ ॥ सेहेचलक्ष्मीर्गंगाचतस्या
श्वनवसंगमं ॥ सौभाग्यंगौरवंकोपात्तनसेहेसरस्वती ॥ ५ ॥ सातांजघानकलहेमानिनीहरिसन्निधौ ॥ ब्रीडया
चापमानेनसांतर्धानंचकारह ॥ ६ ॥ सर्वसिद्धेश्वरीदेवीज्ञानिनांसिद्धियोगिनी ॥ जगामादर्शनंकोपात्सर्वत्र
चहरेरहो ॥ ७ ॥ हरिर्नदृष्टुतुलसींबोधयित्वासरस्वतीं ॥ तदनुज्ञांगृहीत्वाचजगामतुलसीवनं ॥ ८ ॥ तत्र
गत्वाचसुस्नातोहरिःसतुलसीसतीं ॥ पूजयामासतांध्यात्वास्तोत्रंभक्त्याचकारह ॥ ९ ॥ ॥६॥

॥१०१॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेचतुर्विंशोऽध्यायः ॥२४॥ चतुर्भिराधेकैश्चत्वारिंशत्ययैस्तुपूजनं ॥ तुलस्याश्वमहामंत्रसहि
तंनदुच्यते ॥१॥ अतुलसीपूजाविधानंनारदःपृच्छति तुलसीचेति ॥१॥२॥३॥४॥ ५॥ सातुलसीअंतर्धानंचकार ॥६॥७॥८॥९॥

टी.अ.

२५

॥७५॥

लक्ष्मीः श्रीबीजं मायाभुवनेश्वरीबीजं कामोमन्मथबीजं वाणीवाग्भवबीजं एतद्बीजं चतुष्टयपूर्वकं वृंदावनीतिर्देवतं तेन वृंदावन्यै इति इति सिद्धं देवतं

लक्ष्मीमायाकामवाणीबीजपूर्वदशाक्षरं ॥ वृंदावनीतिर्देवतं वन्हिजायांतमेव च ॥ १० ॥ अनेन कल्पतरुणामं
त्रराजेन नारद ॥ पूजयेद्यो विधानेन सर्वसिद्धिं लभेत्पुत्रं ॥ ११ ॥ घृतदीपेन धूपेन सिंदूरचंदनेन च ॥ नैवेद्येन
च पुष्पेण चोपचारेण नारद ॥ १२ ॥ हरिस्तोत्रेण तुष्टासाचा विभूतामहीरुहात् ॥ प्रसन्नाचरणां भोजे जगाम
शरणं शुभा ॥ १३ ॥ वरंतस्यैददौ विष्णुः सर्वपूज्या भवेरिति ॥ अहंत्वां धारयिष्यामि सुरूपां मूर्ध्नि वक्षसि ॥ १४ ॥
सर्वेत्वां धारयिष्यंति स्वमूर्ध्नि च सुरादयः ॥ इत्युक्त्वा तां गृहीत्वा च प्रययौ स्वालयं विभुः ॥ १५ ॥ नारद उवाच ॥
किं ध्यानं स्तवनं किं वा किं वा पूजा विधानकं ॥ तुलस्याश्च महाभाग तन्मे व्याख्यातुमर्हसि ॥ १६ ॥ नारायण उवा
च ॥ अंतर्हितायांतस्यां च हरिर्वृंदावने तदा ॥ तस्याश्च क्रेस्तुतिं गत्वा तुलसीं विरहातुरः ॥ १७ ॥ श्रीभागवानु
वाच ॥ वृंदरूपाश्च वृक्षाश्च यदैकत्र भवंति च ॥ विदुर्बुधास्तेन वृंदां मत्प्रियां तां भजाम्यहं ॥ १८ ॥ पुरा बभूव यादे
वीत्वा दौ वृंदावने वने ॥ तेन वृंदावनाख्यातां सौभाग्यां तां भजाम्यहं ॥ १९ ॥ असंख्येषु च विश्वेषु पूजितायानि
रंतरं ॥ तेन विश्वपूजिताख्या पूजितां च भजाम्यहं ॥ २० ॥ असंख्यानि च विश्वानि पवित्राणि त्वया सदा ॥ तां वि
श्वपाविर्नो देवीं विरहेण स्मराम्यहं ॥ २१ ॥ देवान तुष्टाः पुष्पाणां समूहेन ययाविना ॥ तां पुष्पसारां शुद्धां च द्रष्टुमि
च्छामि शोकतः ॥ २२ ॥ विश्वेयत्प्राप्तिमात्रेण भक्तानंदो भवेत्पुत्रं ॥ नंदिनी तेन विख्याता सा प्रीता भवता दिह ॥
॥ २३ ॥ यस्या देव्यास्तुलानास्ति विश्वेषु निखिलेषु च ॥ तुलसी तेन विख्याता तां यामि शरणं प्रियां ॥ २४ ॥

चतुर्थं तं वन्हिजाया स्वाहा तथा च दशाक्षरो मंत्रः संपन्नः ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥

॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

२५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

कृष्णजीवनरूपासाश्वत्थिप्रियतमासती ॥ तेनकृष्णजीवनीसासामेरक्षतुजीवनं ॥ २५ ॥ इत्येवंस्तवनंकृत्वा
तस्थैतत्ररमापतिः ॥ ददर्शतुलसींसाक्षात्पादपद्मनतांसती ॥ २६ ॥ रुदंतीमवमानेनमानिनीमानपूजितां ॥
प्रियांदृष्ट्वाप्रियःशीघ्रंवासयामासवक्षसि ॥ २७ ॥ भारत्याज्ञांगृहीत्वाचस्वालयंचययौहरिः ॥ भारत्यासहत
त्प्रीतिकारयामाससत्वरं ॥ २८ ॥ वरंविष्णुर्ददौतस्यैसर्वपूज्याभवेरिति ॥ शिरोधार्याचसर्वेषांवंद्यामान्याम
मेतिच ॥ २९ ॥ विष्णोर्वरेणसादेवीपरितुष्टाबभूवच ॥ सरस्वतीतामाकृष्यवासयामाससन्निधौ ॥ ३० ॥
लक्ष्मीर्गंगास्मिताचतांसमाकृष्यनारद ॥ गृहंप्रवेशयामासविनयेनसतींसदा ॥ ३१ ॥ वृंदावृंदावनीविश्व
पूजिताविश्वपावनी ॥ पुष्पसारांनंदनीचतुलसीकृष्णजीवनी ॥ ३२ ॥ एतन्नामाष्टकंचैवस्तोत्रं नामार्थसंयुतं
॥ यःपठेत्तांचसंपूज्यसोश्वमेधफलंलभेत् ॥ ३३ ॥ कार्तिकीपूर्णिमायांचतुलस्याजन्ममंगलं ॥ तत्रतस्याश्चपू
जाचबिहिताहरिणापुरा ॥ ३४ ॥ तस्यांयःपूजयेत्तांचभक्त्याचविश्वपावनीं ॥ सर्वपापाद्विनिर्मुक्तोविष्णुलोकं
सगच्छति ॥ ३५ ॥ कार्तिकेतुलसीपत्रंयोददातिचविष्णवे ॥ गवामयुतदानस्यफलंप्राप्नोतिनिश्चितं ॥ ३६ ॥
अपुत्रोलभतेपुत्रंप्रियाहीनोलभेत्प्रियां ॥ बंधुहीनोलभेद्वंधूंस्तोत्रश्रवणमात्रतः ॥ ३७ ॥ रोगीप्रमुच्यतेरो
गाद्वद्वेमुच्येतबंधनात् ॥ भयान्मुच्येतभीतस्तुपापान्मुच्येतपातकी ॥ ३८ ॥ इत्येवंकथितंस्तोत्रंध्यानंपूजा
विधिंशृणु ॥ त्वमेववेदेजानासिकण्वशास्त्रोक्तमेवच ॥ ३९ ॥ तद्दृक्षेपूजयेत्तांचभक्त्याचाबाहनंविना ॥ तांध्या
त्वाचोपचरेणध्यानंपातकनाशनं ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥

॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥

॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेपंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥ सप्ताक्षातिमहापदैरधंश्लोकाधिकै
रथ ॥ सावित्र्याः सर्ववेदेषु श्रुतमाख्यानमुच्यते ॥ १ ॥ सावित्र्युपाख्यानं नारदः पृच्छति नारद उवाच तुलस्युपाख्यानमिति ॥ १ ॥ पुराकेनेति
सासावित्रीश्रुतेर्वेदस्य प्रसूतं न नीभवति तादृशीयं महती देवो वेदोत्पादकत्वरूपब्रह्मलिङ्गान्नित्यैव भवति तथापि तया मनुष्यदेहधारणं तु कृतमास्ति तत्के
नानिमित्तेन कृतमिति तन्निमित्तरूपं वेदेति तात्पर्यं किंच सोऽप्यत्र प्रथमे काले प्रथममित्यर्थः तथापरे काले अनंतरमित्यर्थः केन पूजिता तदपि वेदस्य

तुलसीपुष्पसारां च सतीं पूतां मनोहरां ॥ कृतपापे ध्मदाहाय ज्वलदग्निशिखोपमां ॥ ४१ ॥ पुष्पेषु तुलनायस्या
नास्ति वेदेषु भाषितं ॥ पवित्ररूपा सर्वासु तुलसीसा च कीर्तिता ॥ ४२ ॥ शिरोधार्या च सर्वेषामीप्सिता विश्वपाव
नी ॥ जीवन्मुक्तां मुक्तिदां च भजेतां हरिभक्तिदां ॥ ४३ ॥ इति ध्यात्वा च संपूज्यस्तुत्वा च प्रणमेत्सुधीः ॥ उक्तं तुल
स्युपाख्यानं किं भूयः श्रोतुमिच्छसि ॥ ४४ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे नवमस्कंधे पंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥
नारद उवाच ॥ तुलस्युपाख्यानमिदं श्रुतं चातिसुधोपमं ॥ ततं सावित्र्युपाख्यानं तन्मे व्याख्यातुमर्हसि ॥ १ ॥
पुराकेन समुद्धृता सा श्रुता च श्रुतेः प्रसूः ॥ केन वा पूजिता लोके प्रथमे कैश्च वा परे ॥ २ ॥ नारायण उवाच ॥ ब्रह्मणा
वेदजननी प्रथमे पूजिता मुने ॥ द्वितीये च वेदगणैस्तत्पश्चाद्विदुषांगणैः ॥ ३ ॥ तदा चाश्वपतिर्भूपः पूजयामास
भारते ॥ तत्पश्चात् पूजयामासुर्वर्णाश्च त्वार एव च ॥ ४ ॥

॥ ४५ ॥

॥ ४६ ॥

र्थः तथा च श्रुतिर्गोपय ब्राह्मणे तत्सावितुर्वरेण्यमिति सावित्र्याः प्रथमः पादः पृथिव्यर्च समदधात्वाग्निमाग्निनाश्रियमित्यादिना तथा भर्गो देवस्य
धीमहीति सावित्र्या द्वितीयः पादो तद्विज्ञेयजुः समदधादित्यादि पूर्ववत् तथा धियो यो नः प्रचोदयादिति सावित्र्यास्तृतीयः पादो दिवा साम समद
धात्सान्नादित्यामित्यादि पूर्ववत् अनया च श्रुत्या सावित्रीपादत्रया द्वेदत्रयलोकत्रयाग्न्यादितेजस्त्रय पूर्वक सर्वब्रह्मांडसृष्टिः सावित्री त एवोक्ता त
या सर्ववेदेषु पुराणेषु च ॥ २ ॥ तत्र प्रथमप्रश्नोत्तरमग्रे दास्यति द्वितीयप्रश्नोत्तरं तु संप्रति वदति ब्रह्मणेति या ब्रह्मणा सहोत्पन्नेति पूर्वमुक्तं
सा प्रथमे काले प्रथममित्यर्थः द्वितीये द्वितीयकाले अनंतरमित्यर्थः ॥ ३ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥

॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ प्रत्यादेशमिति तथा बहुकालं तपश्चर्या कृता तथापि साराज्ञी भगवत्याः सावित्र्याः प्रत्यादेशं प्रत्युत्तरं वरं न प्राप्तान्
 तां देवीं ददर्श च ततस्तस्मात् गृहं जगाम ॥ ९ ॥ १० ॥ तदाराजा देवीं तु न ददर्श परंतु तस्याः प्रत्यादेशं आज्ञारूपो बभूव ॥ ११ ॥ को सौ त
 दाह शुभावेति दशलक्षमिति ननु शतसंवत्सरमनुष्ठानस्य कृतत्वेन दशलक्षजपो जात एवेति चेन्न गायत्र्यातिरिक्तमंत्रेणैव शतसंवत्सरमनुष्ठा
 नारद उवाच ॥ को वा सोऽश्वपतिर्ब्रह्मन् केन वा तेन पूजिता ॥ सर्वपूज्या च सा देवी प्रथमे कैश्वरापरे ॥ ५ ॥ नारा
 यण उवाच ॥ भद्रदेशे महाराजो बभूवाऽश्वपतिर्मुने ॥ वैरिणां बलहर्ता च मित्राणां दुःस्वनाशनः ॥ ६ ॥ आसीत्तस्य
 महाराज्ञी महिषी धर्मचारिणी ॥ मालतीति समारूपा तायथा लक्ष्मीर्गदाभृतः ॥ ७ ॥ सा च राज्ञी च वंध्या च वसि
 ष्ठस्योपदेशतः ॥ चकाराराधानं भक्त्या सावित्र्याश्चैव नारद ॥ ८ ॥ प्रत्यादेशं न सा प्राप्ता महिषी न ददर्शतां ॥ गृ
 हं जगाम दुःखार्ता हृदयेन विदूयता ॥ ९ ॥ राजा तां दुःखितां दृष्ट्वा बोधयित्वा नयेन वै ॥ सावित्र्यास्तपसे भक्त्या
 जगाम पुष्करंतदा ॥ १० ॥ तपश्चकार तत्रैव संयतः शतवत्सरं ॥ न ददर्श च सावित्र्याः प्रत्यदेशो बभूव च ॥ ११ ॥
 शुभ्रावाकाशवाणीं च नृपेन्द्रश्चाशरीरिणीं ॥ गायत्र्या दशलक्षं च जपं त्वंकुरु नारद ॥ १२ ॥ एतस्मिन्नंतरे तत्र आज
 गाम पराशरः ॥ प्रणनाम ततस्तं च मुनिर्नृपमुवाच च ॥ १३ ॥ मुनिरुवाच ॥ सकृज्जपश्च गायत्र्याः पार्ष्णिदिन भ
 वं हरेत् ॥ दशवारं जपञ्चैव नश्येत्पापं दिवानिशं ॥ १४ ॥ शतवारं जपेच्चैव पापं मासार्जितं हरेत् ॥ सहस्रधा ज
 पश्चैव कल्मषं वत्सरार्जितं ॥ १५ ॥ लक्षो जन्म कृतं पापं दशलक्षो न्यजन्मजं ॥ सर्वजन्म कृतं पापं शतलक्षाद्दिन
 श्यति ॥ १६ ॥ करोति मुक्तिं विप्राणां जपो दशगुणस्ततः ॥ करं सर्पफणाकारं कृत्वा तद्रंभमुद्रितं ॥ १७ ॥

न कृतामित्याशयान् हे नारद इति आकाशवाणीं शुभावेत्यन्वयः ॥ १२ ॥ तत्र राजसमीपे तं पराशरं ॥ १३ ॥ मुनिर्जपमहिमानं वदति सकृज्जप इ
 ति दिवानिशं रात्रिदेव सकृतामित्यर्थः ॥ १४ ॥ १५ ॥ लक्षो जपः हरेदिति शेषः ॥ १६ ॥ मुक्तिं ज्ञानप्राप्तिद्वारा दशगुणो दशकोटिः जपका
 ले दक्षिणहस्तमुद्रामाह करमिति रंभमंगुलिछिद्रं मुद्रितं तस्य तमूर्ध्वगुल्यग्रमधोभुग्रमचलं यस्य तादृशं करं हृदये कृत्वा जपेदित्यर्थः ॥ १७ ॥

करमालामाह अनामिकोतिअवामक्रमेणद्वक्षावतंक्रमेणेत्यर्थः ॥ १८ ॥ १९ ॥ मालासंस्कारमाह संस्थाप्येति अश्वत्थपत्रेचपद्मपत्रे
 ॥ २० ॥ २१ ॥ स्नात्वास्नाणयित्वेत्यर्थः ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ कर्मसत्कर्म ॥ २५ ॥ पूर्वीप्रातःसंध्यांष्विमांसायंसंध्यां ॥ २६ ॥ २७ ॥
 आनघमूर्द्धमचलंप्रजपेत्प्राङ्मुखोद्विजः ॥ अनामिकामध्यदेशादधोवामक्रमेणच ॥ १८ ॥ तर्जनीमूलपर्यं
 तंजपस्यैवंक्रमःकरे ॥ श्वेतपंकजबीजानांस्फटिकानांचसंस्कृतां ॥ १९ ॥ कृत्वावामालिकांराजनृजपेत्तीर्थं
 सुरालये ॥ संस्थाप्यमालामश्वत्थपत्रेपद्मेचसंयतः ॥ २० ॥ कृत्वागोरोचनाक्तांचगायत्र्यास्नापयेत्सुधीः ॥
 गायत्रीशतकंतस्यांजपेच्चविधिपूर्वकं ॥ २१ ॥ अथवापंचगव्येनस्नात्वामालांसुसंस्कृतां ॥ अथगंगोदकेनै
 वस्नात्वावासुसंस्कृतां ॥ २२ ॥ एवंक्रमेणराजर्षेदशलक्षंजपंकुरु ॥ साक्षाद्दृश्यसिसावित्रीत्रिजन्मपातक
 क्षयात् ॥ २३ ॥ नित्यंसंध्यांचहेराजन्करिष्यसिदिनेदिने ॥ मध्यान्हेचापिसायान्हेप्रातरेवशुचिःसदा ॥ २४ ॥
 संध्याहीनोशुचिर्नित्यमनर्हःसर्वकर्मसु ॥ यदन्हात्कुरुतेकर्मनतस्यफलभाग्भवेत् ॥ २५ ॥ नोपतिष्ठतियः
 पूर्वानोपास्तेयस्तुपश्चिमां ॥ सशूद्रवद्वहिःकार्यःसर्वस्माद्विजकर्मणः ॥ २६ ॥ यावज्जीवनपर्यंतंत्रिःसंध्यायः
 करोतिच ॥ सचसूर्यसमोविप्रस्तेजसातपसासदा ॥ २७ ॥ तत्पादपद्मरजसासद्यःपूतावसुंधरा ॥ जीवन्मु
 क्तःसतेजस्वीसंध्यापूतोहियोद्विजः ॥ २८ ॥ तीर्थानिचपवित्राणितस्यसंस्पर्शमात्रतः ॥ ततःपापानियांत्येव
 वैनतेयादिवोवरगाः ॥ २९ ॥ नगृण्हंतिसुराःपूजांपितरःपिंडतर्पणं ॥ स्वेच्छयाचद्विजातेश्चत्रिसंध्यारहितस्य
 च ॥ ३० ॥ मूलप्रकृत्यभक्तोयस्तन्मंत्रस्याप्यनर्चकः ॥ तदुत्सवविहीनश्चविषहीनोयथोरगः ॥ ३१ ॥ विष्णु
 मंत्रविहीनश्चत्रिसंध्यारहितोद्विजः ॥ एकादशीविहीनश्चविषहीनोयथोरगः ॥ ३२ ॥ ॥ ६५ ॥

॥ २८ ॥ ततस्तस्मात्पुरुषान् ॥ २९ ॥ ३० ॥ तन्मंत्रस्यमूलप्रकृतिमंत्रस्यग्रायाबीजस्येत्यर्थः तदुत्सवोमूलप्रकृतेरुत्सवःसचसप्तमस्कं
 धेडक्तः विषहीनःसर्पोअनगरइत्यर्थः ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा. न

॥७८॥

॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ विप्रस्यावीरापतिपुत्ररहिताब्राह्मणीत्यर्थः ऋतुस्नाताचतुर्थदिवसेत्यर्थः ॥ ३६ ॥ भगजीवीकुड्मःवार्धुषिको
वृत्त्याजीवति विद्याविक्रयीद्रव्यगृहीत्वाविद्यांददाति ॥ ३७ ॥ शिवापूजादेवीपूजा ॥ ३८ ॥ मुनिश्रेष्ठःपराशरः ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥
हरेरनैवेद्यभोजीधावकोवृषवाहकः ॥ शूद्रान्नभोजीयोविप्रोविषहीनोयथोरगः ॥ ३३ ॥ शूद्राणांशवदाहीयोस
विप्रोवृषलीपतिः ॥ शूद्राणांसूपकारश्चविषहीनोयथोरगः ॥ ३४ ॥ शूद्राणांचप्रतिग्राहीशूद्रयाजीचयोद्विजः ॥
मसिजीवीअसिजीवीविषहीनोयथोरगः ॥ ३५ ॥ यःकन्याविक्रयीविप्रोयोहरेर्नामविक्रयी ॥ योविप्रोवीरान्न
भोजीऋतुस्नातान्नभोजकः ॥ ३६ ॥ भवजीवीवार्धुषिकोविषहीनोयथोरगः ॥ योविद्याविक्रयीविप्रोविषहीनो
यथोरगः ॥ ३७ ॥ सूर्योदयेस्वपेद्योहिमत्स्यभोजीचयोद्विजः ॥ शिवापूजादिरहितोविषहीनोयथोरगः ॥ ३८ ॥
इत्युक्त्वाचमुनिश्रेष्ठःसर्वपूजाविधिक्रमं ॥ तमुवाचचसावित्र्याध्यानादिकमभीप्सितं ॥ ३९ ॥ दत्त्वासर्वनृपेन्द्रा
यययौचस्वाश्रमेमुने ॥ राजासंपूज्यसावित्रींददर्शवरमापच ॥ ४० ॥ नारदउवाच ॥ किंवाध्यानंचसावित्र्याः
किंवापूजाविधानकं ॥ स्तोत्रंमंत्रंचकिंदत्त्वाप्रययौसपराशरः ॥ ४१ ॥ नृपकेनविधानेनसंपूज्यश्रुतिमातरं ॥
वरंचकंवासंप्रापसंपूज्यतुविधानतः ॥ ४२ ॥ तत्सर्वंश्रोतुमिच्छामिसावित्र्याःपरमंमहत् ॥ रहस्यातिरहस्यं
चश्रुतिसिद्धंसमासतः ॥ ४३ ॥ नारायणउवाच ॥ ज्येष्ठकृष्णत्रयोदश्यांशुद्धकालेचयत्नतः ॥ व्रतमेवंचतुर्दश्यां
व्रतीभक्त्यासमाचरेत् ॥ ४४ ॥ व्रतंचतुर्दशाब्दंचद्विसप्तफलसंयुतं ॥ दत्त्वाद्विसप्तनैवेद्यंपुष्पधूपादिकंचरेत्
॥ ४५ ॥ वस्त्रंयज्ञोपवीतंचभोजनंविधिपूर्वकं ॥ संस्थाप्यमंगलघटंफलशाखाससमन्वितं ॥ ४६ ॥

॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ज्येष्ठकृष्णत्रयोदश्यामथवाशुद्धकालेचतुर्दश्यामित्यन्वयः यद्वाज्येष्ठकृष्णस्थमेवतिथिद्वयंग्राह्यं तथाचज्येष्ठकृष्णत्रयो
दश्यामथवाज्येष्ठशुक्लचतुर्दश्यांवक्ष्यमाणप्रकारेणव्रतंकर्तव्यमित्यर्थः पक्षद्वयस्थस्याप्येतन्निरात्रस्यसावित्रीव्रतपरत्वेनोक्तत्वात् धर्मशास्त्रग्रं
थेस्फुटमेतत् ॥ ४४ ॥ द्विसप्तफलसंयुतंचतुर्दशफलसंयुतंचतुर्दशफलानिदेव्यैसमर्पणीयानितथानैवेद्याश्चतुर्दशैवेत्याह दत्त्वेति ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

टी.अ.

२६

॥७८॥

आवाहितेघटेदृष्टं पूजयेत्सावित्रीघटेआवाहपूजयेदित्यर्थः ॥ ४७ ॥ माध्यादिनेतच्छाखायां ॥ ४८ ॥ तप्तकांचनेति रक्तवर्णेत्यर्थः पूर्वोक्तं
स्फटिकवर्णत्वंतुस्वच्छताभिप्रायेण बोध्यं ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ वेदबीजं प्रणवः ॥ ५२ ॥ स्वमूर्धनिपाणिमंजलिं दत्त्वा नमस्कुर्यादित्यर्थः

गणेशं च दिनेशं च वह्निं विष्णुं शिवं शिवां ॥ संपूज्य पूजयेदिष्टं घटे आवाहिते द्विजः ॥ ४७ ॥ शृणु ध्यानं च सावि
त्र्या श्रुतं माध्यादिने च यत् ॥ स्तोत्रं पूजाविधानं च मंत्रं च सर्वकामदं ॥ ४८ ॥ तप्तकांचनवर्णाभां ज्वलन्तीं ब्रह्मते
जसा ॥ ग्रीष्ममध्याह्नमार्तंडसहस्रसमितप्रभां ॥ ४९ ॥ ईषद्वास्यप्रसन्नास्यां रत्नभूषणभूषितां ॥ वह्निशुद्धां
शुकाधानां भक्तानुग्रहाविग्रहां ॥ ५० ॥ सुखदां मुक्तिदां शांतां कांतां च जगतां विधेः ॥ सर्वसंपत्स्वरूपां च प्रदात्रीं
सर्वसंपदां ॥ ५१ ॥ वेदाधिष्ठातृदेवीं च वेदशास्त्रस्वरूपिणीं ॥ वेदबीजस्वरूपां च भजेतां वेदमातरं ॥ ५२ ॥ ध्या
त्वा ध्यानेन नैवेद्यं दत्त्वा पाणिं स्वमूर्धनि ॥ पुनर्ध्यात्वा घटे भक्त्या देवीमावाहयेद्ब्रती ॥ ५३ ॥ दत्त्वा षोडशोपचारं वे
दोक्तमंत्रपूर्वकं ॥ संपूज्यस्तुत्वा प्रणमेद्देवदेवीं विधानतः ॥ ५४ ॥ आसनं पाद्यमर्घ्यचरुना नीयं चानुलेपनं ॥ धू
पं दीपं च नैवेद्यं तांबूलं शीतलं जलं ॥ ५५ ॥ वसनं भूषणं माल्यं गंधमाचमनीयकं ॥ मनोहरं सुतल्पं च देयान्ये
तानि षोडश ॥ ५६ ॥ दारुसारदिकारं च हेमादिनिर्मितं च वा ॥ देवाधारं पुण्यदं च मया तुभ्यं निवेदितं ॥ ५७ ॥ ती
र्थोदकं च पाद्यं च पुण्यदं प्रीतिदं महत् ॥ पूजां गभूतं शुद्धं च मया तुभ्यं निवेदितं ॥ ५८ ॥ पवित्ररूपमर्घ्यं च दूर्वापु
ष्पदलान्वितं ॥ पुण्यदं शंखतोयाक्तं मया तुभ्यं निवेदितं ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥

इत्थं प्रथमतो हृदये ध्यात्वा नैवेद्यं दत्त्वा नैवेद्यामित्युपलक्षणं षोडशोपचारान्मनसा दत्त्वा नमस्कृत्य पश्चात् घटे आवाहयेत् पूजयेदित्याह पुनर्ध्यात्वेति
॥ ५३ ॥ ५४ ॥ उपचारानाह आसनमिति ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ आसनादीनां स्वरूपं मंत्रस्वरूपदर्शनं नैवेद्यं दर्शयति दारुसारं इति दारुसारं च
दनमिति राघवभट्टः तन्निर्मितं पीठमासनमित्यर्थः ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥

दे.भा.न.

॥७९॥

॥ ६० ॥ गंधद्रव्यकुंकुमादि तदुद्धवं ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ कृमिजपद्रव्यं ॥ ६८ ॥

सुगंधगंधतोयंचस्नेहंसौगंधकारकं ॥ मयानिवेदितं भक्त्या स्नानीयं प्रतिगृह्यतां ॥ ६० ॥ गंधद्रव्योद्धवं पुण्यं
प्रीतिदं दिव्यगंधदं ॥ मयानिवेदितं भक्त्या गंधतोयंतवांबिके ॥ ६१ ॥ सर्वमंगलरूपं च सर्वमंगलप्रदं ॥
पुण्यदं च सुधूपंतं गृहाण परमेश्वरि ॥ ६२ ॥ सुगंधयुक्तं सुखदं मया तुभ्यं निवेदितं ॥ जगतां दर्शनार्थाय प्रदी
पं दीप्तिकारकं ॥ ६३ ॥ अंधकारध्वंसबीजं मया तुभ्यं निवेदितं ॥ तुष्टिदं पुष्टिदं चैव प्रीतिदं क्षुद्धिनाशनं ॥ ६४ ॥
पुण्यदं स्वादुरूपं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यतां ॥ तांबूलप्रवरं रम्यं कूर्पूरादिसुवासितं ॥ ६५ ॥ तुष्टिदं पुष्टिदं चैव मया
तुभ्यं निवेदितं ॥ सुसीतलं वारिशीतं पिपासानाशकारणं ॥ ६६ ॥ जगतां जीवरूपं च जीवनं प्रतिगृह्यतां ॥ दे
हशोभास्वरूपं च सभाशोभाविवर्धनं ॥ ६७ ॥ कार्पासजं च कृमिजं वसनं प्रतिगृह्यतां ॥ कांचनादिविनिर्माणं श्री
करं श्रीयुतं सदा ॥ ६८ ॥ सुखदं पुण्यदं रत्नभूषणं प्रतिगृह्यतां ॥ नानावृक्षसमुद्भूतं नानारूपसमन्वितं ॥ ६९ ॥
फलस्वरूपं फलदं फलं च प्रतिगृह्यतां ॥ सर्वमंगलरूपं च सर्वमंगलमंगलं ॥ ७० ॥ नानापुष्पविनिर्माणं बहु
शोभासमन्वितं ॥ प्रीतिदं पुण्यदं चैव माल्यं च प्रतिगृह्यतां ॥ ७१ ॥ पुण्यदं च सुगंधाढ्यं गंधं च देवि गृह्यतां ॥
सिंदूरं च वरं रम्यं भालशोभाविवर्धनं ॥ ७२ ॥ भूषणानां च प्रवरं सिंदूरं प्रतिगृह्यतां ॥ विशुद्धग्रंथिसंयुक्तं पुण्यसू
त्रविनिर्मितं ॥ ७३ ॥ पवित्रं वेदमंत्रेण यज्ञसूत्रं च गृह्यतां ॥ द्रव्याण्येतानि मूलेन दत्त्वा स्तोत्रं पठेत्सुधीः ॥ ७४ ॥
ततो विप्राय भक्त्या च व्रती दद्याच्च दक्षिणां ॥ सावित्रीति चतुर्थ्यंतं वह्निजायांतमेव च ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥

॥ ६९ ॥ ७० ॥ गालायादलंजिनीयातां ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥

॥ ७६ ॥

॥ ७७ ॥

टी.अ.
२६

॥७९॥

लक्ष्मीवीर्यश्रीवीर्यमायावीर्यभुवनेश्वरीवीर्यकामोन्मथवीर्यतद्वीर्यत्रयपूर्वकः सावित्र्यैस्वाहेतिमंत्रोष्टाक्षरः एतन्मंत्रपूर्वकपूर्वमंत्रैस्तथा
रादेयाः स्वाहारहितोनमोतस्मृच्छाणिानयेपि ॥ ७६ ॥ कृष्णेनगोपालसुंदरीरूपेण ॥ ७७ ॥ नायातिनागच्छतिततः करणात्तुष्टावेत्यर्थः

लक्ष्मीमायाकामपूर्वमंत्रमष्टाक्षरंविदुः ॥ माध्यंदिनोक्तंस्तोत्रंचसर्वकामफलप्रदं ॥ ७६ ॥ विप्रजीवनरूपंच
निबोधकथयामिते ॥ कृष्णेनदत्तांसावित्रीगोलोकेब्रह्मणेपुरा ॥ ७७ ॥ नायातिसातेनसार्धब्रह्मलोकेचनारद ॥
ब्रह्माकृष्णाज्ञयाभक्त्यातुष्टावेदमातरं ॥ ७८ ॥ तदासापरितुष्टाचब्रह्माणंचकमेपतिं ॥ ब्रह्मोवाच ॥ सच्चि
दानंदरूपेत्वंमूलप्रकृतिरूपिणि ॥ ७९ ॥ हिरण्यगर्भरूपेत्वंप्रसन्नाभवसुंदरि ॥ तेजःस्वरूपेपरमेपरमानं
दरूपिणि ॥ ८० ॥ द्विजातीनांजातिरूपेप्रसन्नाभवसुंदरि ॥ नित्येनित्यप्रियेदेविनित्यानंदस्वरूपिणि
॥ ८१ ॥ सर्वमंगलरूपेचप्रसन्नाभवसुंदरि ॥ सर्वस्वरूपेविप्राणांमंत्रसारेपरात्परे ॥ ८२ ॥ सुखदेमोक्षदेदे
विप्रसन्नाभवसुंदरि ॥ विप्रपापेध्मदाहायज्वलदग्निशिखोपमे ॥ ८३ ॥ ब्रह्मतेजःप्रदेदेविप्रसन्नाभवसुंदरि ॥
कायेनमनसावाचायत्पापंकुरुतेनरः ॥ ८४ ॥ तत्त्वत्स्मरणमात्रेणभस्मीभूतंभविष्यति ॥ इत्युत्काजग
तांधातातस्थौतत्रचसंसदि ॥ ८५ ॥ सावित्रीब्रह्मणासार्धब्रह्मलोकंजगामसा ॥ अनेनस्तवराजेनसंस्तूया
श्वपतिर्नृपः ॥ ८६ ॥ ददर्शतांचसावित्रीवरंप्रापमनोगतं ॥ स्तवराजमिमंपुण्यसंध्यांकृत्वाचयःपठेत् ॥ ८७ ॥
पाठेचतुर्णांवेदानांयत्फलंलभतेचतत् ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेषड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥

॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेषड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥

ननु यमस्तं पुरुषं दृष्ट्वा बध्वांगुष्ठसममुने ॥ गृहीत्वा गमनं चक्रे तत्पश्चात्प्रययौ सती ॥ १२ ॥
 पश्चात्तां सुदर्तीं दृष्ट्वा यमः संयमनी पतिः ॥ उवाच मधुरं सार्धं साधूनां प्रवरो महान् ॥ १३ ॥
 नयनचपतिवियोगभयात्तत्संपादनं पतिव्रतानामावश्यकमित्यस्य विषयोऽस्ति मयैतत्सहैव गमने पतिवियोगस्यैवाभावात् न च यमलोके प्रमुष्य देहो न
 गमिष्यतीति सह गमनमपिकेनाभिप्रायेण भविष्यतीति वाच्यं परमेश्वरदर्शनेन सदेहानामपि पूर्वराजं शूराणां स्वर्गादिगमनस्य जातस्य श्रुतत्वेन म
 मापि परमेश्वरस्यैतस्य दर्शनस्य जातत्वेन सह गमनं भविष्यतीत्यभिप्रायस्य सत्त्वादिति यमस्तुतं गृहीत्वा अतिसामर्थ्यवर्तीयं निरोत्थुं समर्थोऽपि केमि
 ति मपतिवयने निरोधकृतवती किंचिदस्यामन्नासिकिमप्यन्यत्कतं व्यमस्तीति भियां पृष्ठतो ददर्श तत्र च सुदर्तीतां ददर्श दंतवर्णने नैष द्वा स्यं वती ददर्श
 स्यर्थः सा दृशानयेहास्यकारणं त्वित्यं मयसामर्थ्यसत्यपेक्षा दृशमहानुभावस्येश्वरस्यातिथ्या र्थिसंतोषार्थमाणाधिकमपि पातं दत्तवतीति देतदौदा
 यममदृष्ट्वा कथं न देवस्तुतोष किंचिद्वाषणमपि न कृतवान् किंचैता दृशदर्शने कल्याणमेव भवतीति दर्शनं स्वभावतः तत्कथमयं दृष्टालुः सर्वज्ञः सन् स्वस
 र्गादिगमनातिज्ञात्वा च कथमनलायाममपतिं नयतीत्याश्चर्यमेवेति यमोऽपि तदभिप्रायेण हसं ज्ञात्वा लज्जितो मधुरं प्रोवाच नन्वतेऽहं केमि

यमस्तं पुरुषं दृष्ट्वा बध्वांगुष्ठसममुने ॥ गृहीत्वा गमनं चक्रे तत्पश्चात्प्रययौ सती ॥ १२ ॥

पश्चात्तां सुदर्तीं दृष्ट्वा यमः संयमनी पतिः ॥ उवाच मधुरं सार्धं साधूनां प्रवरो महान् ॥ १३ ॥

नयनचपतिवियोगभयात्तत्संपादनं पतिव्रतानामावश्यकमित्यस्य विषयोऽस्ति मयैतत्सहैव गमने पतिवियोगस्यैवाभावात् न च यमलोके प्रमुष्य देहो न
 गमिष्यतीति सह गमनमपिकेनाभिप्रायेण भविष्यतीति वाच्यं परमेश्वरदर्शनेन सदेहानामपि पूर्वराजं शूराणां स्वर्गादिगमनस्य जातस्य श्रुतत्वेन म
 मापि परमेश्वरस्यैतस्य दर्शनस्य जातत्वेन सह गमनं भविष्यतीत्यभिप्रायस्य सत्त्वादिति यमस्तुतं गृहीत्वा अतिसामर्थ्यवर्तीयं निरोत्थुं समर्थोऽपि केमि
 ति मपतिवयने निरोधकृतवती किंचिदस्यामन्नासिकिमप्यन्यत्कतं व्यमस्तीति भियां पृष्ठतो ददर्श तत्र च सुदर्तीतां ददर्श दंतवर्णने नैष द्वा स्यं वती ददर्श
 स्यर्थः सा दृशानयेहास्यकारणं त्वित्यं मयसामर्थ्यसत्यपेक्षा दृशमहानुभावस्येश्वरस्यातिथ्या र्थिसंतोषार्थमाणाधिकमपि पातं दत्तवतीति देतदौदा
 यममदृष्ट्वा कथं न देवस्तुतोष किंचिद्वाषणमपि न कृतवान् किंचैता दृशदर्शने कल्याणमेव भवतीति दर्शनं स्वभावतः तत्कथमयं दृष्टालुः सर्वज्ञः सन् स्वस
 र्गादिगमनातिज्ञात्वा च कथमनलायाममपतिं नयतीत्याश्चर्यमेवेति यमोऽपि तदभिप्रायेण हसं ज्ञात्वा लज्जितो मधुरं प्रोवाच नन्वतेऽहं केमि

नयनचपतिवियोगभयात्तत्संपादनं पतिव्रतानामावश्यकमित्यस्य विषयोऽस्ति मयैतत्सहैव गमने पतिवियोगस्यैवाभावात् न च यमलोके प्रमुष्य देहो न
 गमिष्यतीति सह गमनमपिकेनाभिप्रायेण भविष्यतीति वाच्यं परमेश्वरदर्शनेन सदेहानामपि पूर्वराजं शूराणां स्वर्गादिगमनस्य जातस्य श्रुतत्वेन म
 मापि परमेश्वरस्यैतस्य दर्शनस्य जातत्वेन सह गमनं भविष्यतीत्यभिप्रायस्य सत्त्वादिति यमस्तुतं गृहीत्वा अतिसामर्थ्यवर्तीयं निरोत्थुं समर्थोऽपि केमि
 ति मपतिवयने निरोधकृतवती किंचिदस्यामन्नासिकिमप्यन्यत्कतं व्यमस्तीति भियां पृष्ठतो ददर्श तत्र च सुदर्तीतां ददर्श दंतवर्णने नैष द्वा स्यं वती ददर्श
 स्यर्थः सा दृशानयेहास्यकारणं त्वित्यं मयसामर्थ्यसत्यपेक्षा दृशमहानुभावस्येश्वरस्यातिथ्या र्थिसंतोषार्थमाणाधिकमपि पातं दत्तवतीति देतदौदा
 यममदृष्ट्वा कथं न देवस्तुतोष किंचिद्वाषणमपि न कृतवान् किंचैता दृशदर्शने कल्याणमेव भवतीति दर्शनं स्वभावतः तत्कथमयं दृष्टालुः सर्वज्ञः सन् स्वस
 र्गादिगमनातिज्ञात्वा च कथमनलायाममपतिं नयतीत्याश्चर्यमेवेति यमोऽपि तदभिप्रायेण हसं ज्ञात्वा लज्जितो मधुरं प्रोवाच नन्वतेऽहं केमि

अहोक्रयासीति यद्यपितत्रमलोकगमनेसामर्थ्यमस्ति तथापि साधुभिरीश्वरमयां दोलं चनं कर्तुं प्रनुचितमिति भावः ॥ १४ ॥ ईश्वरमयां दमिव दर्शयति गंतुमिति ॥ १५ ॥ तत्र भर्ता मयानति इति मदपराधं कदापि न जानीहि किंच त्वमपि पतिवियोगजन्यं खेदमाकुसुपाणिमात्रस्य कर्माधीनत्वादिति दर्शयितुं तव मर्यादया तु ग्रेहं ब्रह्मविद्यां दास्यामीति स्वौदार्यं सावित्र्यौदार्यं पितृयाधिकमिति च दर्शयितुमाह भर्तुस्ते

धर्मराज उ० ॥ अहोक्रयासिसावित्रि गृहीत्वामानुषोतनुं ॥ यदि यास्यसि कांतेन सार्द्धं देहं तदा त्यज ॥ १४ ॥ गंतुं मर्त्यो न शक्नोति गृहीत्वा पांचभौतिकं ॥ देहं च मम लोकं च न श्वरं न श्वरः सदा ॥ १५ ॥ भर्तुस्ते पूर्णकालो वै बभूव भारते सति ॥ स्वकर्मफलभोगार्थं सत्यवान्याति मद्रुहं ॥ १६ ॥ कर्मणा जायते जंतुः कर्मणैव प्रलीयते ॥ सुखंदुःखं भयं शोकः कर्मणैव प्रणीयते ॥ १७ ॥ कर्मणो द्रोभवेज्जीवो ब्रह्मपुत्रः स्वकर्मणा ॥ स्वकर्मणा हरेर्दासो जन्मादि रहितो भवेत् ॥ १८ ॥ स्वकर्मणा सर्वसिद्धि मम रत्नं लभेत् ध्रुवं ॥ लभेत् स्वकर्मणा विष्णोः सालोक्यादि चतुष्टयं ॥ १९ ॥ सुरत्वं च मनुत्वं च राजेंद्रत्वं लभेन्नरः ॥ कर्मणा च शिवत्वं च गणेशत्वं तथैव च ॥ २० ॥ कर्मणा च मुनींद्रत्वं तपस्वित्वं च स्वकर्मणा ॥ स्वकर्मणा क्षत्रियत्वं वैश्यत्वं च स्वकर्मणा ॥ २१ ॥ कर्मणैव च म्लेच्छत्वं लभते नात्र संशयः ॥ स्वकर्मणा जंगमत्वं शैलत्वं च स्वकर्मणा ॥ २२ ॥ कर्मणाराक्षसत्वं च किन्नरत्वं च स्वकर्मणा ॥ कर्मणैवाधिपत्यं च वृक्षत्वं च स्वकर्मणा ॥ २३ ॥ कर्मणैव पशुत्वं च वनजीवी स्वकर्मणा ॥ कर्मणा क्षुद्रजंतुत्वं कृमि च स्वकर्मणा ॥ २४ ॥ दैतेयत्वं दानवत्वं असुरत्वं च स्वकर्मणा ॥ इत्येतदुत्कासावित्री विररामसवैयमः ॥ २५ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे नवमस्कंधे सप्तविंशोऽध्यायः ॥ २७ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥

पूर्णकालं ॥ णिमात्रस्य कर्माधीनत्वं वर्णयति कर्मणेत्यादिविररामसवैयम इत्यंतं तथा च यदितवमदर्शनफलमपेक्षितं तदा तव पतिव्य. ॥ ३ ॥ १५ ॥ ततश्चास्यापि पतितुं नैव दास्यामीति गूढोभिसंधिः ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके नवमस्कंधे सप्तविंशोऽध्यायः ॥ २७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

अर्धाधिकैश्चित्रिशक्तिः परैरध्यात्ममेव च ॥ पप्रच्छ देवी संक्षेपात्तदिदानीमयोच्यते ॥ १ ॥ सावित्रीतु कर्मणा बद्धं सर्वभवति न कश्चित्प्रपञ्चे स्वतन्त्रो
स्ति ब्रह्मविष्णुरुद्रादयोऽपि कर्मणैव जाताः कर्मणैव ब्रह्माश्चेति यमधर्मवाक्यं श्रुत्वा तिशुद्धांतः कर्णा संसारादिरक्ता सती पतिनिष्कासनोपायं देवसंतो
षेणैव पश्चात् करिष्यामि प्रथमं वयं वक्तुमुद्युक्तो देवदेवो ब्रह्मविष्टोऽस्मिन् समये दुर्लभा ब्रह्मविद्यापि पृच्छ्यते चेन्मायि संतोषाद्वक्ष्यतीति भासते नैतादृशज्ञा
नि प्रवरस्य समागमो मम दुर्भगायाः कदाचिदपि स्यात् ततः सर्वसारभूता ब्रह्मविद्या प्रष्टव्येत्यभिप्रायेण तत्कर्मणा शायकर्मस्वरूपं तन्निमित्तकारणं त
दुपादानकारणं यः कर्मणा बद्धो देही सकृदस्यादिकं सर्वं पृच्छति यमस्येति तुष्टावेति हे देवदेव त्वं ममाद्यारभ्य गुरुः त्वया यद्वक्ष्यते तत्सत्यमेवेत्यादिवा

श्रीनारायण उवाच ॥ यमस्य वचनं श्रुत्वा सावित्री च पतिव्रता ॥ तुष्टावपरया भक्त्या तमुवाच मनस्विनी ॥ १ ॥
सावित्र्युवाच ॥ किं कर्म तद्भवेत्केन को वा तदेतुरेव च ॥ को वा देही च देहः कः को वा त्रकर्मकारकः ॥ २ ॥ किं वा ज्ञा
नं च बुद्धिः का को वा प्राणः शरीरिणां ॥ कानां द्रियाणि किं तेषां लक्षणं देवताश्च काः ॥ ३ ॥ भोक्ता भोजयिता को वा को वा
भोगश्च निष्कृतिः ॥ को जीवः परमात्मा कस्तन्मे व्याख्यातुमर्हसि ॥ ४ ॥ धर्म उवाच ॥ वेदप्रणिहितो धर्मः कर्म
यन्मंगलं परं ॥ अवैदिकं तु यत्कर्म तदेवा शुभमेव च ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥

क्यैस्तुष्टावेत्यर्थः तथापि तत्र कश्चिन्मम प्रष्टव्यां शोर्वर्तते तदं कृत्वा वेदस्य अभिप्रायेण पृच्छति ॥ १ ॥ किं कर्मोति कर्मस्वरूपं कीदृशं केन कीदृशेन
निमित्तेन तत्कर्म भवेत् किंच तस्य कर्मणो हेतु रूपादानभूतः कः तेन कर्मणा बद्धो देही कः देहश्च कः कर्मकारकः कर्मकर्ता च कः ॥ २ ॥ येन ज्ञाने
न मुक्तिर्भवतीति तच्च ज्ञानं कीदृशं बुद्धिश्च का कीदृशी तेषां मिन्द्रियाणां लक्षणं किं तेषां देवताश्च काः ॥ ३ ॥ कश्च भोक्ताऽस्मिन् देहे भोजयिता वा कः क
श्च भोगः तस्यास्य संसारस्य निष्कृतिर्नाशश्च कीदृशः को जीवः कश्च परमात्मा तदेतत्सर्वं वदयदिपतिवियोगेन संतप्तायाममाचिच्छांतिं कर्तुमिच्छ
सीत्यर्थः ॥ ४ ॥ तत्र प्रथमतः कर्मस्वरूपमाह वेदेति द्विविधं हि कर्म शुद्धं मशुद्धं शुभं मशुभं च तत्र वेदोक्तं कर्म शुभं तारकं वेदानुक्तं तु कर्मा शुभं नर
कादिप्रदमित्यर्थः वेदस्य सर्वमूलप्रकृतिप्रणीतत्वेन तस्मिन् भ्रांतवाक्यत्वाभावादितरेषां शास्त्राणां त्वसर्वज्ञानविशिष्टकर्तृप्रणीतत्वेन तेषां भ्रांत
वाक्यत्वादिति भावः ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥

भा.न

॥८२॥

ननुवेदोक्तशुभकर्मणामपिस्वर्गकामोयजेतेत्यादिवाक्यैरनित्यफलमेकभवतीति कथं तस्य तारकत्वं किंचैतादृशशुभाशुभकर्मतद्गोप्रवाहपतित
स्यनरस्यनकेनापि प्रकारेण निष्कासनोपायो दृश्यत इति चेत्तत्राह अहेतुकीति हेतुः फलं तद्रहिता किंच संकल्पः फलवासना तद्रहिता च या देवसे
वादेव प्रीत्यर्थं सेवा सा कर्मनिर्मूलनं यावत्कर्माभावस्तदूपातस्य कर्त्री चेत्तदुद्दिष्टा यिनीत्यर्थः अयं भावः वेदोक्तमेव कर्म परमेश्वरप्रीत्यर्थं निष्कामन
या क्रियमाणं चित्तशुद्धिद्वारा परात्मनि परानुरक्तिरूपपरभक्त्युत्पादनद्वारा ज्ञानप्राप्तये भवतीति तारकमेव तत्कर्म इत्यर्थ इति ॥ ६० ॥ को वा कर्म इति
इत्थं परभक्तियः प्राप्तः स ब्रह्मभक्तः सर्वतो निर्लिप्तश्च को वा कर्म करोतीति शेषः तथा को वा फलं कर्मणो भुंक्ते न कोप्येतादृशो ब्रह्मभक्तः कर्म करोति
न च तत्फलं भुंक्ते किंतु भुतौ स एव नरो मुक्त इति श्रुत इत्यर्थः न चैतादृशस्य कर्मफलभोगप्रवाहपतित्वं संभवतीति भावः ॥ ७॥ मुक्तस्वरूपं वर्णयति ज

अहेतुकी देवसेवासंकल्परहिता सती ॥ कर्मनिर्मूलरूपा च सा एव परभक्तिदा ॥ ६॥ को वा कर्मफलं भुंक्ते को वा
निर्लिप्त एव च ॥ ब्रह्मभक्तो यो नरश्च स च मुक्तः श्रुतः श्रुतौ ॥ ७॥ जन्ममृत्युजरा व्याधिशोकभीतिविवर्जितः ॥
भक्तिश्चाद्विविधा सा ध्विश्रुत्युक्ता सर्वसंमता ॥ ८॥ निर्वाणपददार्त्री च हरिरूपप्रदानृणां ॥ हरिरूपस्वरूपां
च भक्तिं वाञ्छन्ति वैष्णवाः ॥ ९॥ अन्ये निर्वाणमिच्छन्ति योगिनो ब्रह्मवित्तमाः ॥ कर्मणो बीजरूपश्च स ततं तत्फल
प्रदः ॥ १० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥

जन्ममृत्युजरोति तत्र भक्तिः किं निर्गुणे स्थापनीयो तस्य गुणे इति विशेषमाह द्विविधेति ॥ ८॥ निर्वाणेति एकानिर्वाणपददार्त्रीकैवल्यपददार्त्री
निर्गुणात्मविषयिणीत्यर्थः द्वितीया हरिरूपप्रदा हरिरित्युपलक्षणं सगुणब्रह्मणः तथा च सगुणब्रह्मरूपप्रदा त्रीसगुणब्रह्मविषयिणी द्वितीया भक्ति
रित्यर्थः तत्र द्विविधयोर्भक्त्योरधिकारिणमाह हरिरूपस्वरूपां चेति हरिपदमुपलक्षणं सगुणब्रह्मणो वैष्णवपदमुपलक्षणं साधकानां तथा
च साधकाः मध्यमाधिकारिण उत्तमाधिकारप्राप्त्यर्थं हरिस्वरूपां सगुणब्रह्मविषयिणीं भक्तिं वाञ्छन्ति ॥ ९॥ अन्ये इति ब्रह्मवित्तमा
योगिनो निर्वाणमिच्छन्ति अर्थात् निर्गुणभक्तिं वाञ्छन्तीत्यर्थः कर्मण उपादानकारणस्वरूपमाह कर्मणो बीजरूपश्चेति यः परमात्मा कर्मणो
बीजरूपस्तत्फलप्रदः कर्मफलप्रदाता च ॥ १० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥

टी.अ.
२८

॥८२॥

कर्मरूपसृष्टिस्वितिसंहारात्मकस्तत्कर्तृचयः प्रकृतिः परमूलप्रकृतिरूपः सोऽपि स एव तदेतु रूपश्च कर्मण उपादानकारणमित्यर्थः मायाविशिष्टं
 सृष्टिणीमूलप्रकृतिः कर्मण उपादानकारणं विवर्तकारणं निमित्तकारणं चेति भावः तत्राविद्योपादानमविद्यायां चित्पतिर्बिम्बो निमित्तकारणं ब्रह्मवि-
 वर्तकारणमिति विभागः अविद्यातः कामः कामतः क्रमेति सिद्धांतात् एतेन निमित्तकारणमदृष्टरूपमकथ्यं मूल्यां देदितव्यं देहः कइत्यस्योत्तर-
 माह वधर एवेति योऽमृतस्य न श्वरः पतति स देह इत्यर्थः ॥ ११ ॥ स च पांचभौतिक इत्याह पृथिवी वायुरिति सूत्ररूपाणि मणिषु सूत्रवत्सर्वदेहव्यापका-
 नि एतानि पंचभूतानीत्यर्थः सतो ब्रह्मणः सृष्टिरूपविधौ देहादिसृष्टिविधावेतानि सूत्राणि पंचभूतानीत्यर्थः ततश्च पांचभौतिको देह इति सिद्धं ॥ १२ ॥ क-
 र्मकर्तेति यः कर्मकर्ता जीवः स एव देही नान्य इत्यर्थः अनेन प्रश्रद्धयोत्तरं दत्तं भवति देही चेति चकारेण भोक्तापि स एवेति बोध्यं आत्मा भोजयितेति

कर्मरूपश्च भगवान् परात्मा प्रकृतिः परा ॥ सोऽपि तद्वैतु रूपश्च देहो न श्वर एव च ॥ ११ ॥ पृथिवी वायुराकाशो ज-
 लं तेजस्तथैव च ॥ एतानि सूत्ररूपाणि सृष्टिरूपविधौ सतः ॥ १२ ॥ कर्मकर्ता च देही च आत्मा भोजयिता सदा ॥
 भोगो विभ्रमभेदश्च निष्कृतिर्मुक्तिरेव च ॥ १३ ॥ सदसद्देहबीजं च ज्ञानं नानाविधं भवेत् ॥ विषयाणां विभागा-
 नां भेदिबीजं च क्रीर्तितं ॥ १४ ॥ बुद्धिर्विवेचनां सा च ज्ञानबीजं श्रुतौ श्रुतं ॥ वायुभेदाश्च प्राणाश्च बलरूपाश्च दे-
 हिनां ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥

अंतर्गामी भोजयिता प्रेरक इत्यर्थः विभ्रमभेदः सुखदुःखसाक्षात्काररूपो भोगशब्देनोच्यत इत्यर्थः निष्कृतिर्मुक्तिः आत्मस्वरूपावस्थानरूपामु-
 क्तिर्निष्कृतिपदवाच्य इत्यर्थः ॥ १३ ॥ सदसद्देहबीजं चेति सदात्मा असन्मायादिकं तयोर्भेदो विवेकस्तस्य बीजं कारणं यत्तज्ज्ञानशब्देनोच्यते अ-
 परोक्षात्मवस्तुविषयं ब्रह्मविद्यारूपं ज्ञानशब्देनोच्यत इत्यर्थः नानाविधमिति नानाविधं घटपटादिविषयकं तथा विषयाणां ये परस्परं विभागास्तेषां भे-
 दिभेदकं यद्बीजं सर्ववासनानां क्रीर्तितं ॥ १४ ॥ सा संविवेचनरूपानिश्चयरूपा बुद्धिपदेनोच्यत इति सा च बुद्धिः पूर्वोक्तस्यानुभवात्मकस्य ज्ञानस्य बी-
 जं भवति एकैव बुद्धिरंतर्मुखतया विलसती ज्ञानब्रह्मविद्येत्यादिपदैर्बाहिर्मुखतया विलसती बुद्ध्यादिपदैरुच्यत इत्यर्थः वायुभेदा ऊर्ध्वार्धोभेदेन ये हृद-
 यादिप्राणसिद्धस्ते प्राणपदेनोच्यत इत्यर्थः त एव बलरूपा इति विशेषरूपप्रदर्शनार्थः ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥

१८३॥

नुदेर्निष्कामं कुरुत्वा स कल्पविकल्पात्कर्मणः स्वरूपमाह इन्द्रियाणां प्रकृतिमिति तेषां त्रैलोक्यं परस्परमात्मनोर्भिन्नभूतस्याद्याः अंशरूपं
अंशः प्रतिबिम्बरूपो यस्मिन् च तत्कारणरूपे मग्नस्तादृशं अनूहकं ऊहस्तर्को निश्चयात्मकस्तदभावात्संशयात्मकमित्यर्थः कर्मणां मिद्विषयापास्त
प्राणैरकं दुर्निवार्यस्वाधीनं कर्तुं शक्यमतिचंचलमित्यर्थः ॥ १६ ॥ अनिरूप्यमेतादृशमिति निरूपयिषुः शब्दज्ञानभेदो बुद्धिभेदो यत्तदेव मन इत्य
र्थः बुद्धेरैवैतौ भेद इति नित्यर्थः ज्ञानेन्द्रियाण्याह लोचनामिति ॥ १७ ॥ अंगिनामवयवविनामंगरूपमवयवरूपं सर्वकर्मणां सर्वकर्मेन्द्रियव्यापाराणां
प्रेरकमित्यर्थः रिपुरुपमेतदेवेन्द्रियविषयेष्वसत्कारिपुरुषंदुःखदं हति तदेव सादृश्येष्वा सत्कर्मिन्नरूपं सुखदं भवतीत्यर्थः ॥ १८ ॥ इन्द्रियाणां

इन्द्रियाणां च प्रवरमीश्वरांशमनूहकं ॥ प्रेरकं कर्मणां चैव दुर्निवार्यं च देहिनां ॥ १६ ॥ अनिरूप्यमदृश्यं च ज्ञानभे
दो मनः स्मृतं ॥ लोचनं श्रवणं घ्राणं त्वक्करसनमिन्द्रियं ॥ १७ ॥ अंगिनामंगरूपं च प्रेरकं सर्वकर्मणां ॥ रिपुरुपं
मित्ररूपं सुखरूपं च दुःखदं ॥ १८ ॥ सूर्यो वायुश्च पृथिवी ब्रह्माद्या देवताः स्मृताः ॥ प्राणदेहादिभूद्यो हि स जीवः प्र
रिकीर्तितः ॥ १९ ॥ परमं व्यापकं ब्रह्म निर्गुणः प्रकृतेः परः ॥ कारणं कारणानां च परमात्मा स उच्यते ॥ २० ॥ इ
त्येवं कथितं सर्वं त्वया पृष्ठं यथा गमं ॥ ज्ञानिनां ज्ञानरूपं च गच्छ वत्से यथा सुखं ॥ २१ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥

देवता आह सूर्य इति अत्र संग्रहेणोक्ताः अन्यत्र तु दिग्वाताकं प्रचेतो भिन्नोद्गोपेन्द्रमित्रक इति विशेषणोक्ताः जीवस्वरूपमाह प्राणदेहादिति
यः प्राणदेहादीनां धारकोऽतः करणे प्रतिबिम्बरूपः सौत्रजीवशब्देनोच्यत इत्यर्थः ॥ १९ ॥ परमात्मा स्वरूपमाह परममिति स्पष्टार्थः ॥ २० ॥
इत्येवमिति हे वत्से मम तन्त्रे यस्त्वया पृष्ठं मप्रष्टव्यमपि यदर्थमिन्द्रादयो पिशतसंस्तरंगुरुशुभ्राण्यं कृतवन्तस्तत्सर्वं यथा गममौपनिषदंतत्वं कथितं के
वलं तत्सौजन्यवशादिदमेव ज्ञानिनां ज्ञानरूपं एतज्ज्ञानेनैव ज्ञानिनः कृतकृत्याः संनकादयो जीवन्मुक्ताः संतो मुक्तिं प्रापुस्तदेतन्मयोक्तं हृदि निश्चि
त्यप्राप्तिरियोगजन्यं खेदं मा कार्षीः अकृत्वा च खेदं यथा सुखं स्वस्थानं प्रति गच्छेत्यर्थः अत्र सार्वज्ञ्याः सौजन्यं परमास्तिकतां स्वोपदिष्टाति सूक्ष्म
मात्मतत्त्वांस्त्वत्सौजन्यं च यथा भाषणादिभिर्विषयांश्च भक्तिं च ज्ञानात्मातिगददांतः करणोद्घाटितवत्स्वेत्युवाचेति बोध्यं ॥ २१ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७० ॥

सावित्रीनुमां प्रीतेन देवेन समुत्सृजेव त्वेदं त्युक्तं तत्तद्व्याप्येक्येष्टभाषणे को दोष इत्यादि प्रयेण वदति त्यक्तेति हे देव कांतं पतिं त्वत्कया मिया
स्यामिनका चित्तुं स्थलमस्तीत्यर्थः अयं भावः यावत्पर्यंतं महं सामान्या स्थिता तावत्पर्यंतं सर्वे पिदे श्रोममंगंतव्य एव स्थितो धुना तु न यमत्सेत्युक्तं
तो नाहं सामान्या कृतुव केन्या स्मिन्तते यमकं न्येयं विधवा लोके व्यवहरतीति तवायशः कर्तुं कथं लोके गमिष्यमीति किंचित्त्रियः प्रथमं पतिः संरक्ष
कस्तदभावे पुत्रस्तत्र मम द्वयोरभावस्तदा पित्रैव सापालनीया ततश्च त्वां पितरं ज्ञानार्णवं हित्वा कया मिनका चित्तुं स्थलमस्तीति नियमादित्याह

सावित्र्युवाच ॥ त्यक्त्वा कयामिकां तं वा त्वां वा ज्ञानार्णवं ध्रुवं ॥ यद्यत्करोमि प्रभञ्चतद्गवां च कुमर्हसि ॥ २२ ॥ कां
कां यो निंयाति जिवः कर्मणा केन वा पुनः ॥ केन वा कर्मणा स्वर्गं केन वा नरकं पितः ॥ २३ ॥ केन वा कर्मणा मुक्तिः केन
भक्तिर्भवेद्दुरौ ॥ केन वा कर्मणा योगी रोगी वा केन कर्मणा ॥ २४ ॥ केन वा दीर्घजीवी च केन ल्पायुश्च कर्मणा ॥ के
न वा कर्मणा दुःखी सुखी वा केन कर्मणा ॥ २५ ॥ अंगहीनश्च काणश्च बधिरः केन कर्मणा ॥ अंधो वा पंगुरपि वा प्रम
त्तः केन कर्मणा ॥ २६ ॥ क्षिप्तोतिर्लुब्धकश्चौरः केन वा कर्मणा भवेत् ॥ केन सिद्धिं वा प्राप्नोति सलोक्यादि चतुष्टयं
॥ २७ ॥ केन वा ब्राह्मणत्वं च तपस्वित्वं च केन वा ॥ स्वर्गभोगादिकं केन वैकुण्ठं केन कर्मणा ॥ २८ ॥ गोलोकः केन वा
ब्रह्मन्सर्वोत्कृष्टैर्निरामयः ॥ नरको वा कतिविधः किं संख्यो नाम किंच वा ॥ २९ ॥ को वा कं नरकं याति कियंतं तेषु ति
ष्ठति ॥ पापिनां कर्मणां केन को वा व्याधिः प्रजायते ॥ ३० ॥ यद्यत्प्रियं मया पृष्टं तन्मे व्याख्यातुमर्हसि ॥ इति श्रीदे
वीभागवते महापुराणे नवमस्कंधे नारदनारायणसंवादे सावित्र्युपाख्याने ऽष्टविंशोऽध्यायः ॥ २८ ॥ ॥ ६५ ॥

त्वां वा ज्ञानार्णवमिति यद्यपि भर्तुरः पालकोऽस्ति तथापि त्वं पिता ब्रह्मविद्योपदेष्टा गुरुश्च भवसिततस्त्वां हित्वा कथं यास्यामि न हि ब्रह्मदाम्पत्यगुरोर्वियोगः
कस्यापि सोढव्यो भवतीति ज्ञानार्णवपदेन सूचितं ननु गुरोः सन्निधौ कितव प्रष्टव्यमस्तीति चेद्बहुप्रष्टव्यमस्तीत्याह यद्यत्करोमितीति ॥ २२ ॥
ननु केते प्रश्ना इति चेत्तत्राह कां कां यो निंयाति तेन यमराजेन वत्से इत्युक्ते सति सावित्री पितृपदेन संबोधयति पितरिति ॥ २३ ॥
भवेद्दुरौ सर्वजनकपरमात्मनीत्यर्थः ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ गोलोकं केन वा यातीत्यन्वयः ॥ २९ ॥ कियंतं कालमि
त्यर्थः तेषु नरकेषु कियंतं ॥ ३० ॥ इति श्रीदेवीभागवतस्य तैलके नवमस्कंधे ऽष्टविंशोऽध्यायः ॥ २८ ॥ ॥ ६५ ॥

सावित्रीस्त्राभिलषितंवृणोति सत्यवतइति ॥ ९ ॥ श्वशुरस्यांधस्यराज्यलाभःशत्रुणापहतस्यराज्यस्यलाभःनेत्रादिलाभः ॥ १० ॥ सम
तीतेलक्षवर्षेलक्षवर्षानंतरमंतेसत्यवतापतिनासहैवेत्यर्थः ॥ ११ ॥ तन्मेव्याख्यातुमिति इत्थंवरंदत्वातदपिवदेत्यर्थः ॥ १२ ॥ १३ ॥
नान्यत्रेति अन्यत्रभारतखंडादितरत्रनोभयंशुभाशुभंभुंजतेकिंतुस्वर्गादौशुभमेवनरकादावशुभमेवभुंजतेइत्यर्थः ॥ १४ ॥ कर्मजनकाएतेस

सावित्र्युवाच ॥ सत्यवतऔरसानांपुत्राणांशतकंमम ॥ भविष्यतिमहाभागवरमेतन्मदीप्सितं ॥ ९ ॥ मत्पि
तुःपुत्रशतकंश्वशुरस्यचक्षुषी ॥ राज्यलाभोभवत्वेवंवरमेतन्मदीप्सितं ॥ १० ॥ अंतेसत्यवतासार्धयास्या
मिहरिमंदिरं ॥ समतीतेलक्षवर्षेदेहीदंमेजगत्प्रभो ॥ ११ ॥ जीवकर्मविपाकंचश्रोतुंकौतूहलंमम ॥ विश्वनिस्ता
रबीजंचतन्मेव्याख्यातुमर्हसि ॥ १२ ॥ धर्मराजउवाच ॥ भविष्यतिमहासाध्विसर्वमानसिकंतव ॥ जीवकर्म
विपाकंचकथयामिनिशामय ॥ १३ ॥ शुभानामशुभानांचकर्मणांजन्मभारते ॥ पुण्यक्षेत्रेचनान्यत्रसर्वचभुं
जतेजनः ॥ १४ ॥ सुरादैत्यादानवाश्चगंधर्वाक्षसादयः ॥ नरश्चकर्मजनकोनसर्वजीविनःसति ॥ १५ ॥
विशिष्टजीविनःकर्मभुंजतेसर्वयोनिषु ॥ शुभाशुभंचसर्वत्रस्वर्गेषुनरकेषुच ॥ १६ ॥ विशेषतोजीविनश्चभ्रमंते
सर्वयोनिषु ॥ शुभाशुभंभुंजतेचकर्तृपूर्वार्जितंपरं ॥ १७ ॥ शुभेनकर्मणायातिस्वल्लोकादिकमेवच ॥ कर्मणाचा
शुभेनैवभ्रमंतिनरकेषुच ॥ १८ ॥ कर्मनिर्मूलनेभक्तिःसाचोक्ताद्विविधासति ॥ निर्वाणरूपाभक्तिश्चब्रह्मणः
प्रकृतेरिह ॥ १९ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ १९ ॥

वेकर्मजनकाः कर्मकारिणोनसर्वजीविनःपश्चादयइतिकर्माधिकारिणोदाशिताः ॥ १५ ॥ विशिष्टजीविनःमुख्यजीविनःकर्माधिकृतमनुष्याद
यःपूर्वोक्ताइत्यर्थः ॥ १६ ॥ पूर्वार्जितंपूर्वसंपादितं ॥ १७ ॥ १८ ॥ निर्वाणरूपेति एकानिर्गुणभक्तिःद्वितीयाब्रह्मणःप्रकृतेर्मायाविशिष्ट
ब्रह्मरूपिण्यामूलप्रकृतेरित्यर्थः उभयोरपिभक्तिःकर्मनिर्मूलनेकर्मनाशनेक्षमेत्यर्थः ॥ १९ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ १९ ॥

दे.भा.न

॥८५॥

॥ २० ॥ इदं सर्वपूर्वोक्तैकैकप्रश्नानामुत्तरं भवतीति बोध्यं ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ ये स्वधर्माचारवन्तः स
कामाः पंचायतनदेवोपासकास्ते तत्तद्देवतालोकं गत्वा पुनरायांति ये निष्कामाः संतः स्वधर्माचारवन्तः पंचदेवतोपासकास्ते तत्तद्देवतालोकं गत्वा
रोगीकुर्मणा जीवश्चरोगीशुभकर्मणा ॥ दीर्घजीवी च क्षीणायुः सुखी दुःखी च कर्मणा ॥ २० ॥ अंधादयश्चां
गहीनाः कर्मणा कुत्सितेन च ॥ सिद्ध्यादिकमवाप्नोति सर्वो लोकेन कर्मणा ॥ २१ ॥ सामान्यं कथितं देवि विशेषं शृणु
सुंदरि ॥ सुदुर्लभं सुगोप्यं च पुराणेषु स्मृतिष्वपि ॥ २२ ॥ दुर्लभामानुषीजातिः सर्वजातिषु भारते ॥ सर्वेभ्यो
ब्राह्मणः श्रेष्ठः प्रशस्तः सर्वकर्मसु ॥ २३ ॥ ब्रह्मनिष्ठो द्विजश्चैव गरीयान् भारते सति ॥ निष्कामश्च सकामश्च ब्रा
ह्मणो द्विविधः सति ॥ २४ ॥ सकामाच्च प्रधानश्च निष्कामो भक्त एव च ॥ कर्मभागी सकामश्च निष्कामो निरुपद्र
वः ॥ २५ ॥ स याति देहं त्यक्त्वा च पदं यत्तन्निरामयं ॥ पुनरागमनं नास्ति तेषां निष्कामिणां सति ॥ २६ ॥ सेवं
ते द्विभुजं कृष्णं परमात्मानमीश्वरं ॥ गोलोकं प्रतिते भक्ता दिव्यरूपविधारिणः ॥ २७ ॥ सकामिनो वैष्णवाश्च ग
त्वा वैकुण्ठमेव च ॥ भारतं पुनरायांति तेषां जन्मद्विजातिषु ॥ २८ ॥ कालेन ते च निष्कामा भवंत्येव क्रमेण च ॥ भ
क्तिं च निर्मलां तेभ्यो दास्यामि निश्चितं पुनः ॥ २९ ॥ ब्राह्मणवैष्णवाश्चैव सकामाः सर्वजन्मसु ॥ न तेषां निर्मला
भक्तिर्भक्तिविवर्जिताः ॥ ३० ॥ तीर्थाश्रिता द्विजा ये च तपस्यानिरताः सति ॥ तेषांति ब्रह्मलोकं च पुनरायां
ति भारते ॥ ३१ ॥ स्वधर्मनिरता ये च तीर्थान्यत्र निवासिनः ॥ व्रजंतिते सत्यलोकं पुनरायांति भारते ॥ ३२ ॥
स्वधर्मनिरता विप्राः सूर्यभक्ताश्च भारते ॥ व्रजंतिते सूर्यलोकं पुनरायांति भारते ॥ ३३ ॥ मूलप्रकृतिभक्ता ये
निष्कामा धर्मचारिणः ॥ मणिद्वीपं प्रयांत्येव पुनरावृत्तिवर्जितं ॥ ३४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥
तत्र ज्ञानं लब्ध्वा मुक्ता भवंति न पुनरावृत्तेः इति समुदायार्थः ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ द्विपंतृतीयस्कं
धोक्तं देवीलोकं ॥ ३४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥

टी.अ.

२९

॥८५॥

॥ ३५ ॥ अन्यदेवेज्याःपंचायतनदेवभ्योन्यदेवोपासकाइत्यर्थः ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ देवान्यसेवनदेवसेवारहिताइत्यर्थः ॥ ३८ ॥ स्व
धर्मेति स्वधर्मनिरताःशुभकर्मफलभोगिनः ॥ ३९ ॥ तद्गहितानरकगामिनस्तेचनकदापिभारतेखंडेसाम्यकर्मफलभागिनोभवंतिनरका
त्तेषामनुद्वारादित्यर्थः ॥ ४० ॥ तस्मात्स्वधर्मनिरतत्वमेवचतुर्भिर्वर्णैःसंपादनीयमित्याह स्वधर्मनिरताइति इदानींविशेषकर्मणांविशेष

स्वधर्मनिरताभक्ताःशैवाःशाक्ताश्चगाणपाः ॥ तेयांतिशिवलोकंचपुनरायांतिभारते ॥ ३५ ॥ येविप्राअन्यदे
वेज्याःस्वधर्मनिरताःसति ॥ तेयांतिसर्वलोकंचपुनरायांतिभारते ॥ ३६ ॥ हरिभक्ताश्चनिष्कामाःस्वकर्मनि
रताद्विजाः ॥ तेचयांतिहरेर्लोकंक्रमाद्भक्तिबलादहो ॥ ३७ ॥ स्वधर्मरहिताविप्रादेवान्यसेवनाःसदा ॥ भ्रष्टाचा
राश्चकामाश्चतेयांतिनरकंध्रुवं ॥ ३८ ॥ स्वधर्मनिरताएववर्णाश्चत्वारएवच ॥ भवंत्येवशुभस्यैवकर्मणःफल
भोगिनः ॥ ३९ ॥ स्वकर्मरहितायेचनरकंयांतिध्रुवं ॥ भारतेनभवंत्येवकर्मणःफलभोगिनः ॥ ४० ॥ स्व
धर्मनिरताएववर्णाश्चत्वारएवच ॥ स्वधर्मनिरताविप्राःस्वधर्मनिरतायच ॥ ४१ ॥ कन्यांददातिविप्रायचं
द्रलोकंप्रयांतिते ॥ वसंतितत्रतेसाध्वियावर्दिंद्राश्चतुर्दश ॥ ४२ ॥ सालंकृतायादानेनाद्विगुणंफलमुच्य
ते ॥ सकामायांतितल्लोकंननिष्कामाश्चसाधवः ॥ ४३ ॥ तेप्रयांतिविष्णुलोकंफलसंघातवर्जिताः ॥ ग
व्यंचरजतंस्वर्णवस्त्रंसर्पिःफलंजलं ॥ ४४ ॥ येददत्येवविप्रेभ्यश्चंद्रलोकंप्रयांतिते ॥ वसंतितेचतल्लोकेयाव
न्मन्वंतरंसति ॥ ४५ ॥

॥ ४१ ॥

॥ ४२ ॥

॥ ४३ ॥

फलंदर्शयति स्वधर्मनिरताविप्राइति ॥ ४१ ॥ ददतिप्रयच्छंति ॥ ४२ ॥ सकामाइति यदितल्लोकप्राप्तीच्छयाकन्यांप्रयच्छंतितदातल्लोकं
यांतियदितुनिष्कामतयेश्वरप्रीत्यर्थंकन्यांप्रयच्छंतितदाचित्तशुद्धिरेवफलमितिबोध्यं ॥ ४३ ॥ ततश्चित्तेशुद्धेज्ञानंभवतिप्रतिबंधकसत्त्वेनज्ञाना
भावेतुविष्णवादीनांस्वेष्टदेवतानांयेलोकास्तान्प्रातिगच्छंतीत्याह तेप्रयांतीति विष्णुपद्मपुलक्षणंस्वेष्टदेवतानां ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.न

॥८६॥

सुवर्णाःशोभनवर्णाः ॥ ४६ ॥ ब्राह्मणायददतीत्यन्वयः ॥ ४७ ॥ विपुलेविस्तीर्णलोके ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ विपुलंबहुकालं ॥ ५० ॥
॥ ५१ ॥ यस्मैयस्मैचेति यद्यदेवप्रीत्यर्थमित्यर्थः ॥ ५२ ॥ सौधेराजसदनेदेवायब्राह्मणायवादत्तेगृहापेक्षयाचतुर्गुणमित्यर्थः ॥ ५३ ॥
प्रकृष्टेमहत्तरेदेशेइत्यर्थः ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ वार्षालक्षणमाह धनुश्चतुःसहस्रेणेति धनुःप्रमाणमुक्तंमार्कंडेयपुराणे चतुर्हस्तोधनुर्दंडो

सुचिराःसुचिरंवासंकुर्वंतितेनतेजनाः ॥ योददातिसुवर्णाश्चगाश्चताम्रादिकंसति ॥ ४६ ॥ तेषांतिसूर्यलोकं
चशुचयेब्राह्मणायच ॥ वसंतितेतत्रलोकेवर्षाणामयुतंसति ॥ ४७ ॥ विपुलेसुचिरंवासंकुर्वंतिचनिरामयाः ॥
ददातिभूमिंविप्रेभ्योधनानिविपुलानिच ॥ ४८ ॥ सयातिविष्णुलोकंचश्वेतद्वीपमनोहरं ॥ तत्रैवनिवसत्येव
यावच्चंद्रदिवाकरौ ॥ ४९ ॥ विपुलेविपुलंवासंकरोतिपुण्यवान्मुने ॥ गृहंददतिविप्राययेजनाभक्तिपूर्वकं ॥ ५० ॥
तेषांतिविष्णुलोकंचसुचिरंसुखदायकं ॥ गृहरेणुप्रमाणंचविष्णुलोकेमहत्तमे ॥ ५१ ॥ विपुलेविपुलंवासंकु
र्वंतिमानवाःसति ॥ यस्मैयस्मैचदेवाययोददातिगृहनरः ॥ ५२ ॥ सयातितस्यलोकंचरेणुमानाब्दमेवच ॥
सौधेचतुर्गुणंपुण्यदेशेशतगुणंफलं ॥ ५३ ॥ प्रकृष्टेद्विगुणंतस्मादित्याहकमलोद्भवः ॥ योददातितडागंचसर्व
पापापनुत्तये ॥ ५४ ॥ सयातिजनलोकंचरेणुमानाब्दमेवच ॥ वाप्यांफलंदशगुणंप्राप्नोतिमानवःसदा
॥ ५५ ॥ सतुवापीप्रदानेनतडागस्यफलंभवेत् ॥ धनुश्चतुःसहस्रेणदैर्घ्यमानेननिश्चितं ॥ ५६ ॥ न्यूनावा
तावतीप्रस्थेसावापीपरिकीर्तिता ॥ दशवापीसमाकन्यायादिपात्रेप्रदीयते ॥ ५७ ॥ ॥ ६१ ॥

नालिकात्तद्युगेनतु क्रोशोधनुःसहस्रेद्वेगव्यूतिश्चतुर्गुणेति धनुश्चतुःसहस्रदैर्घ्यवतीत्यर्थः ॥ ५६ ॥ प्रस्थेविस्तारेतावतीधनुश्चतुःसहस्र
प्रमाणवतीत्यर्थः न्यूनाचेति अथवाविस्तारेप्रमाणनियमोनास्तीत्यर्थः देविपुराणेतुवापीदंडमयादूर्ध्वदशवर्गान्नयोत्तमैरिति वचनाच्चत्वारिं
शत्त्वस्तावाप्युक्ताचतुर्हस्तोदंडस्तदादिदशवर्गाःदशगुणदंडावधिचत्वारिंशत्त्वस्तपर्यंतमित्यर्थः ॥ ५७ ॥ ॥ ७१ ॥

टी.अ.
२९

॥८६॥

पंकोद्वारेतडागपंकोद्वारेइत्यर्थः ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ चित्रयुक्तेविचित्रेविमानेदत्तेइत्यर्थः विपुलेविस्तीर्णेइत्यर्थः

फलं ददाति द्विगुणं यदि सालं कृता भवेत् ॥ यत्फलं च तडागे च तदुद्वारे च तत्फलं ॥ ५८ ॥ वाप्याश्च पंकोद्वारेणैवा
पीतुल्यफलं लभेत् ॥ अश्वत्थवृक्षमारोप्य प्रतिष्ठां यः करोति च ॥ ५९ ॥ स प्रयाति तपो लोकं वर्षाणामयुतं सति ॥
पुष्पोद्यानं यो ददाति सा वित्रि सर्वभूतये ॥ ६० ॥ स वसेत् ध्रुवलोकं च वर्षाणामयुतं ध्रुवं ॥ यो ददाति विमानं च वि
ष्णवे भारते सति ॥ ६१ ॥ विष्णुलोके वसेत् सोऽपि यावन्मन्वंतरं परं ॥ चित्रयुक्ते च विपुले फलं तस्य चतुर्गुणं ॥ ६२ ॥
तस्यार्द्धं शिविकादाने फलमेव लभेत् ध्रुवं ॥ यो ददाति भक्तियुक्तो हरये दोलमंदिरं ॥ ६३ ॥ विष्णुलोके वसेत् सोऽपि
यावन्मन्वंतरं शतं ॥ राजमार्गं सौधयुक्तं यः करोति पतिव्रते ॥ ६४ ॥ वर्षाणामयुतं सोऽपि शक्रलोके महीयते ॥ ब्रा
ह्मणेभ्यो थदेवेभ्यो दाने समफलं लभेत् ॥ ६५ ॥ यद्विदत्तं च तद्भुक्तेन दत्तं नोपतिष्ठते ॥ भुक्त्वा स्वर्गादिजंसौ
ख्यं पुण्यवान् जन्मभारते ॥ ६६ ॥ लभेद्विप्रकुलेष्वेव क्रमेणैवोत्तमादिषु ॥ भारते पुण्यवान् विप्रो भुक्त्वा स्वर्गा
दिकं फलं ॥ ६७ ॥ पुनः सोऽपि भवेद्विप्रश्चैवं क्षत्रियादयः ॥ क्षत्रियो वाथ वैश्यो वा कल्पकोटिशतेन च ॥ ६८ ॥
तपसा ब्राह्मणत्वं च न प्राप्नोति श्रुतौ श्रुतं ॥ नाभुक्तं क्षीयते कर्म कल्पकोटिशतैरपि ॥ ६९ ॥ अवश्यमेव भोक्तव्यं कृ
तं कर्म शुभाशुभं ॥ दैवतीर्थसहायेन कायव्यूहेन शुद्ध्यति ॥ ७० ॥ एतत्ते कथितं किंचिद्विभूयः श्रोतुमिच्छसि ॥ इ
ति श्रीदेवीभागवते महापुराणे नवमस्कंधे नारदनारायणसंवादे सावित्र्युपाख्यानोऽष्टमोऽध्यायः ॥ २९ ॥

॥ ६२ ॥ दोलमंदिरं दोलस्थानयोग्यं तद्युक्तं वामंदिरं ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ब्राह्मणत्वमतिदुर्लभं नैतत्तपसालभ्यते
किंतु जन्मनैवेत्याह क्षत्रियोवेति ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके नवमस्कंधे एकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥ २९ ॥ ॥ ७० ॥

दे.भा.न

॥८७॥

शताधिकैश्चत्वारिंशत्संख्यैः पद्यैकैरथ ॥ नानादानफलसम्यक्स्वर्गादिप्रदमुच्यते ॥ १ ॥ अथनानाविधदानानिस्वर्गादिफलप्रदानिपृच्छ
तिप्रयांतीति अन्नप्रदानवर्षअन्नस्येरेणवस्तत्प्रमाणवर्षमित्यर्थः शिवलोकेकैलासे ॥ १ ॥ २ ॥ अन्येभ्योब्राह्मणातिरिक्तेभ्यः ॥ ३ ॥

सावित्र्युवाच ॥ प्रयांतिस्वर्गमन्यंचयेनैवकर्मणायम ॥ मानवाः पुण्यवंतश्चतन्मेव्याख्यातुमर्हसि ॥ १ ॥
धर्मराजउवाच ॥ अन्नदानंचविप्राययःकरोतिचभारते ॥ अन्नप्रमाणवर्षंचशिवलोकेमहीयते ॥ २ ॥ अन्नदा
नंमहादानमन्येभ्योपिकरोतियः ॥ अन्नदानप्रमाणंचशिवलोकेमहीयते ॥ ३ ॥ अन्नदानात्परंदानंनभूतंनभ
विष्यति ॥ नात्रपात्रपरीक्षास्यान्नकालनियमःकचित् ॥ ४ ॥ देवेभ्योब्राह्मणेभ्योवाददातिचासनंयदि ॥ मही
यतेविष्णुलोकेवर्षाणामयुतंसति ॥ ५ ॥ योददातिचविप्रायदिव्यांधेनुंपयस्विनीं ॥ तल्लोममानवर्षंचविष्णु
लोकेमहीयते ॥ ६ ॥ चतुर्गुणंपुण्यदिनेतीर्थेशतगुणंफलं ॥ दानंनारायणक्षेत्रेफलंकोटिगुणंभवेत् ॥ ७ ॥ गांयो
ददातिविप्रायभारतेभक्तिपूर्वकं ॥ वर्षाणामयुतंचैवचंद्रलोकेमहीयते ॥ ८ ॥ यश्चोभयमुखीदानंकरोतिब्राह्म
णायच ॥ तल्लोममानवर्षंचविष्णुलोकेमहीयते ॥ ९ ॥ योददातिब्राह्मणायश्वेतच्छत्रंमनोहरं ॥ वर्षाणामयुतंसो
पिमोदतेवरुणालये ॥ १० ॥ विप्रायपीडितांगायवस्त्रयुग्मंददातिच ॥ महीयतेवायुलोकेवर्षाणामयुतंसति
॥ ११ ॥ योददातिब्राह्मणायशालग्रामंसवस्त्रकं ॥ महीयतेसौवैकुण्ठेयावच्चंद्रदिवाकरौ ॥ १२ ॥ योददातिब्राह्मणा
यदिव्यांशय्यांमनोहरां ॥ महीयतेचंद्रलोकेयावच्चंद्रदिवाकरौ ॥ १३ ॥ योददातिप्रदीपंचदेवेभ्योब्राह्मणायच ॥
यावन्मन्वंतरंसोपिवन्हिलोकेमहीयते ॥ १४ ॥ करोतिगजदानंचयदिविप्रायभारते ॥ यावदिद्रोनरस्ताव
दिद्रस्वार्द्धासनेवसेत् ॥ १५ ॥ भारतेयोश्वदानंचकरोतिब्राह्मणायच ॥ मोदतेवारुणलोकेयवदिंद्राश्चतुर्दश ॥ १६ ॥

॥ ४ ॥ आसनमुपवेशनाय ॥ ५ ॥ ६ ॥ नारायणक्षेत्रइति तच्चक्षेत्रंगंगाप्रवाहसन्निधचतुर्हस्तपारिमितदेशात्मकमग्रेवक्ष्यमाणं ॥ ७ ॥
गांयइतिवृषभमित्यर्थः ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥

टी.अ.

३०

॥८७॥

॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ हरेर्नामेति इदमुपलक्षणं शिवदेवीगणेशसूर्यनाम्नामपि ॥ २१ ॥ दौलनंसर्वदेवानांपूर्णिमारान्ने
श्वरमभागे ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ इदं स्त्रीदानं प्रथमतः कृत्वा पश्चात् स्त्रीभारपरिमितं सुवर्णं

प्रकृष्टां शिविकां यो हि ददाति ब्राह्मणाय च ॥ मोदते वारुणे लोके यावदिन्द्राश्चतुर्दश ॥ १७ ॥ प्रकृष्टां वाटिकां यो हि
ददाति ब्राह्मणाय च ॥ महीयते वायुलोके यावन्मन्वंतरं सति ॥ १८ ॥ यो ददाति च विप्राय व्यजनं श्वेतचामरं ॥
महीयते वायुलोके वर्षाणामयुतं ध्रुवं ॥ १९ ॥ धान्यं रत्नं यो ददाति चिरजीवी भवेत्सुधीः ॥ दाता गृहीता तौ द्वौ च
ध्रुवं वैकुण्ठगामिनौ ॥ २० ॥ सततं श्रीहरेर्नामभारते योजयेन्नरः ॥ स एव चिरजीवी च ततो मृत्युः पलायते ॥ २१ ॥
यो नरो भारते वर्षे दौलनं कारयेत्सुधीः ॥ पूर्णिमारजनी शेषे जीवन्मुक्तो भवेन्नरः ॥ २२ ॥ इह लोके स्खंभुक्त्वा
यात्यंते विष्णुमंदिरं ॥ निश्चितं निवसेत्तत्र शतमन्वंतरावधि ॥ २३ ॥ फलमुत्तरफालगुण्यां ततोऽपि द्विगुणं भवेत् ॥
कल्पांत जीवी स भवेदित्याह कमलोद्भवः ॥ २४ ॥ तिलदानं ब्राह्मणाय यः करोति च भारते ॥ तिलप्रमाणवर्षं
च मोदते शिवमंदिरे ॥ २५ ॥ ततः सुयोनिं संप्राप्य चिरजीवी भवेत्सुखी ॥ ताम्रपात्रस्य दानेन द्विगुणं च फलं लभे
त् ॥ २६ ॥ सालंकृतां च भोग्यां च गवस्त्रांसुंदरीं प्रियां ॥ यो ददाति ब्राह्मणाय भारते च पतिव्रतां ॥ २७ ॥ मही
यते चंद्रलोके यावदिन्द्राश्चतुर्दश ॥ तत्र स्वर्वेश्यासार्धं मोदते च दिवानिशं ॥ २८ ॥ ततो गंधर्वलोके च वर्षाणाम
युतं ध्रुवं ॥ दिवानिशं कौतुकेन चोर्वश्यासह मोदते ॥ २९ ॥ ततो जन्मसहस्रं च प्राप्नोति सुंदरीं प्रियां ॥ सतीं सौ
भाग्ययुक्तां च कोमलां प्रियवादिनीं ॥ ३० ॥

॥ ६५ ॥

॥ ६५ ॥

ब्राह्मणाय दत्त्वा तां स्त्रियं स्वयं गृहीयादिति पतिव्रतापदेन सूचितं अन्यथा दातृप्रातिगृहीतो रुभयोर्नरकः स्यादिति स्पष्टमन्यपुराणे तदुक्तं स्कांदि
स्त्रियं दत्त्वा ततस्तां तु क्राणीयात्कांचनादिनेति ॥ ३० ॥

॥ ७॥

॥ ७॥

॥ ७॥

दे.भा.न

॥३१॥

॥३२॥

॥३३॥

॥३४॥

॥३५॥

॥३६॥

॥३७॥

॥३८॥

टी.अ.

३०

॥८८॥

प्रददातिफलंचारुब्राह्मणायचयोनरः ॥ फलप्रमाणवर्षचशक्रलोकेमहीयते ॥ ३१ ॥ पुनःसुयोनिंसंप्राप्यल
भतेसुतमुत्तमं ॥ सफलानांचवृक्षाणांसहस्रंचप्रशंसितं ॥ ३२ ॥ केवलंफलदानंवाब्राह्मणायददातिच ॥ सुचि
रंस्वर्गवासंचकृत्वायातिचभारते ॥ ३३ ॥ नानाद्रव्यसमायुक्तंनानासस्यसमन्वितं ॥ ददातियश्चविप्रायभा
रतेविपुलंगृहं ॥ ३४ ॥ सुरलोकेवसेत्सोपियावन्मन्वंतरंशतं ॥ ततःसुयोनिंसंप्राप्यसमहाधनवान्भवेत् ॥ ३५ ॥
योनरःसस्यसंयुक्तांभूमिंचसुचिरांसति ॥ ददातिभक्त्याविप्रायपुण्यक्षेत्रेचभारते ॥ ३६ ॥ महीयतेचवैकुंठे
मन्वंतरशतंध्रुवं ॥ पुनःसुयोनिंसंप्राप्यमहांश्चभूमिपोभवेत् ॥ ३७ ॥ तंनत्यजतिभूमिश्चजन्मनाशतकंप
रं ॥ श्रीमांश्चधनवांश्चैवपुत्रवांश्चप्रजेश्वरः ॥ ३८ ॥ सत्रजंचप्रकृष्टंचग्रामंदद्याद्विजायच ॥ लक्षमन्वंतरंचै
ववैकुंठेसमहीयते ॥ ३९ ॥ पुनःसुयोनिंसंप्राप्यग्रामलक्षसमन्वितः ॥ नजहातिचतंपृथ्वीजन्मनांलक्षमेव
च ॥ ४० ॥ सुप्रजंचप्रकृष्टंचपक्वसस्यसमन्वितं ॥ नानापुष्करणीवृक्षफलवल्लीसमन्वितं ॥ ४१ ॥ नगरंच
श्चविप्रायददातिभारतेभुवि ॥ महीयतेसकैलासेदशलक्षेन्द्रकालकं ॥ ४२ ॥ पुनःसुयोनिंसंप्राप्यराजेंद्रोभार
तेभवेत् ॥ नगराणांचनियुतंसलभेन्नात्रसंशयः ॥ ४३ ॥ धरातंनजहात्येवजन्मनामयुतंध्रुवं ॥ परमैश्वर्यनि
युतोभवेदेवमहीतले ॥ ४४ ॥ नगराणांचशतकंदेशंयोहिद्विजातये ॥ सुप्रकृष्टमध्यकृष्टंप्रजायुक्तंददातिच
॥ ४५ ॥ वापीतडागसंयुक्तंनानावृक्षसमन्वितं ॥ महीयतेसवैकुंठकोटिमन्वंतरावधि ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥

॥३९॥

॥४०॥

॥४१॥

॥४२॥

॥४३॥

॥४४॥

॥४५॥

॥४६॥

॥८८॥

॥ ४७॥४८॥ स्वाधिकारंस्वकृतरात्रामात्माधिकारं ॥४९॥ ५०॥ सर्वान्वर्षामाजिदानामित्यासर्वास्तपश्चर्यास्तथासर्वमन्यत्पुण्यकर्मदे
 वीभक्तेस्तुलनांनार्हतीत्याह जंबुद्वीपमहीदातुरिति ॥५१॥ महेशितुर्मूलप्रकृतेर्भक्तस्येत्यर्थः ॥५२॥ तदेव्याभक्ताभुवनेशितुर्भुवनेश्वर्यामाणि
 पुनःसुयोनिंसंप्राप्यजंबुद्वीपपतिर्भवेत् ॥ परमैश्वर्यसंयुक्तोयथाशक्रस्तथाभुवि ॥४७॥ महीतंनजहात्येवजन्म
 नांकोटिमेवच ॥ कल्पांतजीवीसभवेद्राजराजेश्वरोमहान् ॥ ४८ ॥ स्वाधिकारंसमग्रंचयोददातिद्विजातये ॥
 चतुर्गुणंफलंचांतेभवेत्तस्यनसंशयः ॥ ४९ ॥ जंबुद्वीपंयोददातिब्राह्मणायतपस्विने ॥ फलंशतगुणंचांतेभवे
 त्तस्यनसंशयः ॥ ५० ॥ जंबुद्वीपमहीदातुःसर्वतीर्थानिसेवितुः ॥ सर्वेषांतपसांकर्तुस्सर्वेषांवासकारिणः
 ॥ ५१ ॥ सर्वदानप्रदातुश्चसर्वसिद्धेश्वरस्यच ॥ अस्त्येवपुनरावृत्तिर्नभक्तस्यमहेशितुः ॥ ५२ ॥ असंख्यब्र
 ह्मणांपातंपश्यंतिभुवनेशितुः ॥ निवसंतिमणिद्वीपेश्रीदेव्याःपरमेपदे ॥ ५३ ॥ देवीमंत्रोपासकाश्चविहायमा
 नवीतनुं ॥ विभूतिर्दिव्यरूपंचजन्ममृत्युजराहरं ॥ ५४ ॥ लब्ध्वादेव्याश्चसारूप्यंदेवीसेवांचकुर्वते ॥ पश्यं
 तितेमणिद्वीपेसखंडंलोकसंक्षयं ॥ ५५ ॥ नश्यंतिदेवाःसिद्धाश्चविश्वानिनिखिलानिच ॥ देवीभक्ताननश्यंतिज
 न्ममृत्युजराहराः ॥ ५६ ॥ कार्तिकेतुतुलादानंकरोतिहरयेचयः ॥ युगत्रयप्रमाणंचमोदतेहरिमंदिरे ॥ ५७ ॥
 पुनःसुयोनिंसंप्राप्यहरिभक्तिलभेत्ध्रुवं ॥ जितेंद्रियाणांप्रवरःसभवेद्भारतेभुवि ॥ ५८ ॥ मध्येयःस्नातिगंगाया
 मरुणोदयकालतः ॥ युगषष्टिसहस्राणिमोदतेहरिमंदिरे ॥ ५९ ॥ पुनःसुयोनिंसंप्राप्यविष्णुमंत्रंलभेत्ध्रुवं ॥ त्य
 क्त्वाचमानुषंदेहंपुनर्यातिहरेःपदं ॥ ६० ॥ नास्तितत्पुनरावृत्तिर्वैकुण्ठाच्चमहीतले ॥ करोतिहरिदास्यंचतथासा
 रूप्यमेवच ॥ ६१ ॥ नित्यस्नानीचगंगायांसपूतःसूर्यवद्भुवि ॥ पदेपदेश्वमेधस्यलभतेनिश्चितंफलं ॥ ६२ ॥
 द्वीपेनिवसंतितत्रस्थित्वाअसंख्यब्रह्मणांपातंपश्यंति तावत्कालपर्यंतंवसंतित्यर्थः ॥ ५३ ॥ तदेवस्पष्टयति देवीमंत्रोपासकाश्चेति ॥ ५४ ॥
 लोकसंक्षयंप्रलयंसखंडंकल्पप्रलयमित्यर्थः ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.न

॥८९॥

॥ ६३ ॥ ६४ ॥ यदाभास्करस्तपातेतदेत्यर्थः ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥

तस्यैवपादरजसासद्यःपूतावसुंधरा ॥ मोदतेसचवैकुण्ठेयावच्चंद्रदिवाकरौ ॥ ६३ ॥ पुनःसुयोनिंसंप्राप्यहरि
भक्तिलभेत्पुनः ॥ जीवन्मुक्तोतितेजस्वीतपस्विप्रवरोभवेत् ॥ ६४ ॥ स्वधर्मनिरतःशुद्धोविद्वांश्चसजितेंद्रियः ॥
मीनकर्कटयोर्मध्येगाढंतपतिभास्करः ॥ ६५ ॥ भारतेयोददात्येवजलमेवसुवासितं ॥ समोदतेचकैलासेया
वदिन्द्राश्चतुर्दश ॥ ६६ ॥ पुनःसुयोनिंसंप्राप्यरूपवांश्चसुखीभवेत् ॥ शिवभक्तश्चतेजस्वीवेदवेदांगपारगः
॥ ६७ ॥ वैशाखेसक्तुदानंचयःकरोतिद्विजातये ॥ सक्तुरेणुप्रमाणाब्दंमोदतेशिवमंदिरे ॥ ६८ ॥ करोतिभारते
योहिकृष्णजन्माष्टमीव्रतं ॥ शतजन्मकृतंपापमुच्यतेनात्रसंशयः ॥ ६९ ॥ वैकुण्ठेमोदतेसोपियावदिन्द्राश्चतुर्द
श ॥ पुनःसुयोनिंसंप्राप्यकृष्णेभक्तिलभेत्पुनः ॥ ७० ॥ इहैवभारतेवर्षेशिवरात्रिकरोतियः ॥ मोदतेशिवलोके
सप्तमन्वंतरावधि ॥ ७१ ॥ शिवायशिवरात्रौचबिल्वपत्रंददातिच ॥ पत्रमानयुगंतत्रमोदतेशिवमंदिरे
॥ ७२ ॥ पुनःसुयोनिंसंप्राप्यशिवभक्तिलभेत्पुनः ॥ विद्यावानपुत्रवान्श्रीमान्प्रजावान्भूमिमान्भवेत् ॥ ७३ ॥
चैत्रमासेथवामाघेशंकरंयोर्चयेद्व्रती ॥ करोतिनर्तनंभक्त्यावेत्रपाणिर्दिवानिशं ॥ ७४ ॥ मासंवाप्यर्द्धमासंवाद
शसप्तदिनानिच ॥ दिनमानयुगंसोपिशिवलोकेमहीयते ॥ ७५ ॥ श्रीरामनवमीयोहिकरोतिभारतेपुमान् ॥
सप्तमन्वंतरंयावन्मोदतेविष्णुमंदिरे ॥ ७६ ॥ पुनःसुयोनिंसंप्राप्यरामभक्तिलभेत्पुनः ॥ जितेंद्रियाणांप्रवरो
महांश्चधनवान्भवेत् ॥ ७७ ॥ शारदीयांमहापूजांप्रकृतेर्यःकरोतिच ॥ महिषैश्छागलेर्मेषैःखड्गैर्भेकादिभिःस
ति ॥ ७८ ॥ नैवेद्यैरुपहारैश्चधूपदीपादिभिस्तथा ॥ नृत्यगीतादिभिर्वाद्यैर्नानाकौतुकमंगलं ॥ ७९ ॥ ८० ॥

॥ ७७ ॥ महिषैश्छागलेरिति ब्रह्मणातिरिक्तविषयंकाळिकापुराणादिषुतथाविधवलिदानेब्राह्मणस्यनिषेधस्तु ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥

टी.अ.
३०

॥८९॥

॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥

शिवलोकेवसेत्सोपिसप्तमन्वन्तरावधि ॥ पुनःसुयोनिंसंप्राप्यनरोबुद्धिचनिर्मलां ॥ ८० ॥ अतुलांश्रियमाप्नो
तिपुत्रपौत्रविवर्दनीं ॥ महाप्रभावयुक्तश्रगजवाजिसमन्वितः ॥ ८१ ॥ राजराजेश्वरःसोपिभवेदेवनसंशयः ॥
ततःशुक्लाष्टमींप्राप्यमहालक्ष्मींचयोर्चयेत् ॥ ८२ ॥ नित्यंभक्त्यापक्षमेकंपुण्यक्षेत्रेचभारते ॥ दत्वातस्यैप्र
कृष्टानिचोपचाराणिषोडश ॥ ८३ ॥ गोलोकेचवसेत्सोपियावदिंद्राश्वतुर्दश ॥ पुनःसुयोनिंसंप्राप्यराजराजे
श्वरोभवेत् ॥ ८४ ॥ कार्तिकीपूर्णिमायांतुकृत्वातुरासमंडलं ॥ गोपानांशतकंकृत्वागोपीनांशतकंतथा ॥ ८५ ॥
शिलायांप्रतिमायांचभ्रीकृष्णंराधयासह ॥ भारतेपूजयेद्भक्त्याचोपचाराणिषोडश ॥ ८६ ॥ गोलोकेवसतेसो
पियावद्वैब्रह्मणोवयः ॥ भारतेपुनरागत्यकृष्णेभक्तिलभेदृढां ॥ ८७ ॥ क्रमेणसुदृढांभक्तिलब्ध्वामंत्रंहरेरहो ॥
देहंत्यत्काचगोलोकंपुनरेवप्रयातिसः ॥ ८८ ॥ ततःकृष्णस्यसारूप्यंपार्षदप्रवरोभवेत् ॥ पुनस्तत्पतनंनस्ति
जरामृत्युहरोभवेत् ॥ ८९ ॥ शुक्लांप्राप्यथवाकृष्णांकरोत्येकादशींचयः ॥ वैकुण्ठेमोदतेसोपियावद्वैब्रह्मणोवयः
॥ ९० ॥ भारतंपुनरागत्यकृष्णभक्तिलभेद्भुवं ॥ क्रमेणभक्तिसुदृढांकरोत्येकाहरेरहो ॥ ९१ ॥ देहंत्यत्काच
गोलोकंपुनरेवप्रयातिसः ॥ ततःकृष्णस्यसारूप्यंसंप्राप्यपार्षदोभवेत् ॥ ९२ ॥ पुनस्तत्पतनंनस्तिजरामृ
त्युहरोभवेत् ॥ भाद्रेचशुक्लद्वादश्यांचयःशक्रंपूजयेन्नरः ॥ ९३ ॥ षष्टिवर्षसहस्राणिशक्रलोकेमहीयते ॥ रविवा
रेचसंक्रांत्यांसप्तम्यांशुक्लपक्षके ॥ ९४ ॥ संपूज्यार्कंहविष्यान्नयःकरोतिचभारते ॥ महीयतेसोर्कलोके
यावदिंद्राश्वतुर्दश ॥ ९५ ॥

॥ ६१ ॥

॥ ६२ ॥

॥ ६३ ॥

॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥

॥ ७॥

॥ ७॥

॥ ७॥

॥ ७॥

दे.भा.न

॥९०॥

॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ गांसुवर्णादिकमिति इदं नित्यं प्रतिदिनं क्रियमाणं दानं पूर्वोक्तं गोस्वर्णादिकं दानं तु नैमित्तिकमिति विशे

टी.अ.

३०

भारतं पुनरागत्य चारोगीश्रीयुतो भवेत् ॥ ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां सावित्रीयोहि पूजयेत् ॥ ९६ ॥ महीयते ब्रह्मलोके
सप्तमन्वंतरावधि ॥ पुनर्महीं समागत्य श्रीमानतुलविक्रमः ॥ ९७ ॥ चिरजीवी भवेत्सोऽपि ज्ञानवान्संपदायुतः ॥
माघस्य शुक्लपंचम्यां पूजयेद्यः सरस्वतीं ॥ ९८ ॥ संयतो भक्तितो दत्त्वा चोपचाराणि षोडश ॥ महीयते मणि
द्वीपे यावद्ब्रह्मदिवानि शं ॥ ९९ ॥ संप्राप्य च पुनर्जन्म स भवेत्कविपंडितः ॥ गांसुवर्णादिकं यो हि ब्राह्मणाय ददा
ति च ॥ १०० ॥ नित्यं जीवनपर्यंतं भक्तियुक्तश्च भारते ॥ गवां लोमप्रमाणाब्दं द्विगुणं विष्णुमंदिरे ॥ १०१ ॥
मोदते हरिणा सार्द्धं क्रीडाकौतुकमंगलैः ॥ तदंते पुनरागत्य राजराजेश्वरो भवेत् ॥ २ ॥ श्रीमांश्च पुत्रवान्विद्वा
न्ज्ञानवान्सर्वतः सुखी ॥ भोजयेद्योऽपि मिष्टान्नं ब्राह्मणेभ्यश्च भारते ॥ ३ ॥ विप्रलोमप्रमाणाब्दं मोदते विष्णु
मंदिरे ॥ ततः पुनरिहागत्य सुखी च धनवान् भवेत् ॥ ४ ॥ विद्वान्सुचिरजीवी च श्रीमानतुलविक्रमः ॥ यो वक्ति वा
ददात्येव हरेर्नामानि भारते ॥ ५ ॥ युगं नाम प्रमाणं च विष्णुलोके महीयते ॥ ततः पुनरिहागत्य स सुखी धनवा
न्भवेत् ॥ ६ ॥ यद्दिनारायणक्षेत्रे फलं कोटिगुणं भवेत् ॥ नाम्नां कोटिं हरयो हि क्षेत्रे नारायणे जपेत् ॥ ७ ॥ सर्व
पापविनिर्मुक्तो जीवन्मुक्तो भवेत्ध्रुवं ॥ न लभेत्स पुनर्जन्म वैकुण्ठे समहीयते ॥ ८ ॥ लभेद्विष्णोश्च सारूप्यं न तस्य
पतनं भवेत् ॥ विष्णुभक्तिलभेत्सोऽपि विष्णुसारूप्यमाप्नुयात् ॥ ९ ॥ शिवं यः पूजयेन्नित्यं कृत्वा लिंगं च पार्थिवं ॥
यावज्जीवनपर्यंतं स याति शिवमंदिरं ॥ १० ॥ मृदोरेणुप्रमाणाब्दं शिवलोके महीयते ॥ ततः पुनरिहागत्य राजे
न्द्रो भारते भवेत् ॥ ११ ॥ शिलां च पूजयेन्नित्यं शिलातोयं च भक्षति ॥ महीयते च वैकुण्ठे यावद्ब्रह्मणः शतं ॥ ११२ ॥

षः ॥ १०० ॥ १०१ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ ११२ ॥ ॥ ॥

॥९०॥

॥ ११३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ अथसर्वयज्ञापेक्षयादेवीयज्ञस्यसर्वोत्कृष्टत्वमाह सर्वेभ्योपीति देवीमूलप्रकृतिः श्रीभुवनेश्वरीतत्प्रा
प्त्यर्थयद्यदनुष्ठानं ज्योतिष्टोमाद्यश्वमेधांतंतथाकोटिहोमादिकंतथानवरात्रोत्सवादिकंतत्सर्वदेवीमखशब्देनोच्यते सदेवीमखोदेवीप्रीत्यर्थक्रिय
माणोयज्ञः सर्वेभ्योपिमखेभ्यस्तत्तदेवतोद्देशेनकृतेभ्यः सर्वयज्ञेभ्यः परः श्रेष्ठोभवतीत्यर्थः मूलप्रकृत्युद्देशेनकृतत्वादितिभावः ॥ १८ ॥ सचयज्ञः

ततोलब्ध्वापुनर्जन्महरिभक्तिंचदुर्लभां ॥ महीयतेविष्णुलोकेनतस्यपतनंभवेत् ॥ ११३ ॥ तपांसिचैवसर्वा
णिब्रतानिनिखिलानिच॥कृत्वातिष्ठतिवैकुण्ठेयावदिन्द्राश्रतुर्दश ॥ १४ ॥ ततोलब्ध्वापुनर्जन्मराजेंद्रोभारतेभवे
त्॥ततोमुक्तोभवेत्पश्चात्पुनर्जन्मनविद्यते ॥ १५ ॥ यःस्नात्वासर्वतीर्थेषुभुवःकृत्वाप्रदक्षिणां ॥ सतुनिर्वाणतां
यातिनतुजन्मभवेद्भुवि ॥ १६ ॥ पुण्यक्षेत्रेभारतेचयोश्वमेधंकरोतिच ॥ अश्वलोममिताब्दंचशक्रस्यार्द्धासनंभ
वेत् ॥ १७ ॥ चतुर्गुणंराजसूयेफलमाप्नोतिमानवः ॥ सर्वेभ्योपिमखेभ्योहिपरोदेवीमखःस्मृतः ॥ १८ ॥ वि
ष्णुनाचकृतःपूर्वब्रह्मणाचवरानने ॥ शंकरेणमहेशेनत्रिपुरासुरनाशने ॥ १९ ॥ शक्तियज्ञःप्रधानश्चसर्वयज्ञे
पुसुंदरि ॥ नानेनसदृशोयज्ञस्त्रिषुलोकेषुविद्यते ॥ २० ॥ दक्षेणचकृतःपूर्वमहान्संभारसंयुतः ॥ बभूवकल
होयत्रदक्षशंकरयोःसति ॥ २१ ॥ शंपुश्चनंदिनंविप्रानंदीविप्रांश्चकोपतः ॥ यद्वेतोर्दक्षयज्ञंचवभंजचंद्रशेखरः
॥ २२ ॥ चकारदेवीयज्ञं सपुरादक्षःप्रजापतिः ॥ धर्मश्चकश्यपश्चैवशेषश्चापिचकर्दमः ॥ २३ ॥ स्वायंभुवोम
नुश्चैवतत्पुत्रश्चाप्रियव्रतः ॥ शिवःसनत्कुमारश्चकपिलश्चध्रुवस्तथा ॥ २४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥

पूर्वविष्ण्वादिभिःकृतइत्याह विष्णुनाचेति साचकथातृतीयस्कंधेउक्ता त्रिपुरासुरजयार्थंशिवेनकृतइत्यर्थः ॥ १९ ॥ १२० ॥ दक्षेणतु
यदायंदेवीमखःकृतस्तदामहाननर्थोजातइत्याह दक्षेणचेति ॥ २१ ॥ २२ ॥ दक्षप्रभृतयःसर्वेपिदेवीमखकर्तारोभवन्तीत्याह धर्म
श्चकश्यपश्चेति ॥ २३ ॥ १२४ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.न.

॥९१॥

॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ अश्वमेधस्य कामनापरत्नमप्याह अश्वमेधेति पृथुः पूर्वजातो राजा
॥ ३३ ॥ इतः परं सर्वकामापेक्षया श्रीदेवीसेवनं सर्वोत्कृष्टमित्याह स्नानं च सर्वतीर्थानामिति ॥ ३४ ॥ फलभूतमिति एतैः सर्वैः पुण्यैर्जायमानैरेव

राजसूयसहस्राणां फलमाप्नोति निश्चितं ॥ देवीयज्ञात्परो यज्ञो नास्ति वेदे फलप्रदः ॥ २५ ॥ वर्षाणां शतजीवी
च जीवन्मुक्तो भवेत्ध्रुवः ॥ ज्ञानेन तेजसा चैव विष्णुतुल्यो भवेदिह ॥ २६ ॥ देवानां च यथा विष्णुर्वैष्णवानां च नार
दः ॥ शास्त्राणां च यथा वेदा वर्णानां ब्राह्मणो यथा ॥ २७ ॥ तीर्थानां च यथा गंगा पवित्राणां शिवो यथा ॥ एकादशी
व्रतानां च पुष्पाणां तुलसी यथा ॥ २८ ॥ नक्षत्राणां यथा चंद्रः पक्षिणां गरुडो यथा ॥ यथा स्त्रीणां च प्रकृती राधा
वाणी वसुंधरा ॥ २९ ॥ शीघ्राणां चेंद्रियाणां च चंचलानां मनो यथा ॥ प्रजापतीनां ब्रह्मा च प्रजानां च प्रजापतिः
॥ ३० ॥ वृंदावनं वनानां च वर्षाणां भारतं तथा ॥ श्रीमतां च यथा श्रीश्च विदुषां च सरस्वती ॥ ३१ ॥ पतिव्रतानां
दुर्गा वसौभाग्यानां च राधिका ॥ देवीयज्ञस्तथा वत्से सर्वयज्ञेषु भामिनि ॥ ३२ ॥ अश्वमेधशतेनैव शक्रत्वं च
लभेत्ध्रुवं ॥ सहस्रेण विष्णुपदं संप्राप्तः पृथुरेव च ॥ ३३ ॥ स्नानं च सर्वतीर्थानां सर्वयज्ञेषु दीक्षणं ॥ सर्वेषां च व्र
तानां च तपसां फलमेव च ॥ ३४ ॥ पाठे च तुर्णविदानां प्रादक्षिण्यं भुवस्तथा ॥ फलभूतमिदं सर्वं भुक्तिदंशक्ति
सेवनं ॥ ३५ ॥ पुराणेषु च वेदेषु वेतिहासेषु सर्वतः ॥ निरूपितं सारभूतं देवीपादांबुजार्चनं ॥ ३६ ॥ तद्वर्णनं
च तद्भ्यानं तन्नामगुणकीर्तनं ॥ तत्स्तोत्रस्मरणं वैवदं न जपमेव च ॥ ३७ ॥ तत्पादोदकनैवेद्यं भक्षणं नित्यमे
व च ॥ सर्वसम्मतमित्येवं सर्वेप्सितमिदं सति ॥ ३८ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥

श्रीशक्तिसेवनं मुक्तिप्रदं लभ्यते नान्यथेत्यर्थः तस्मात्सर्वोत्कृष्टं श्रीमूलप्रकृतिसेवनमिति भावः ॥ ३५ ॥ अतएव सर्वशास्त्रेषु पुराणादिषु मूलप्रकृ
तिसेवनमेव सर्वोत्कृष्टत्वेन वर्णितमित्याह पुराणेषु चेति ॥ ३६ ॥ तद्वर्णनमित्यादौ तत्पदेन मूलप्रकृतिः ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ॥ ७ ॥

टी.अ.

३०

॥९१॥

यस्मादेवंतस्मान्मूलप्रकृतिर्भजेत्याह भजनित्यमिति परं ब्रह्मनिर्गुणं प्रकृतिं परां मायाविशिष्टब्रह्मरूपिणीं मूलप्रकृतिमित्यर्थः ॥ ३९ ॥ ४० ॥
इति श्रीदेवीभागवततिलकेन वमस्कंधे त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥ अर्द्धाधिकैः समदशश्लोकैरथ महाविभोः ॥ मूलशक्तेर्महामंत्रं सावित्र्यैदत्तवान्यमः
॥ १ ॥ पूर्वाध्याये मूलप्रकृतेः सर्वोत्कृष्टत्वेन प्रतिपादनं श्रुत्वा तन्मंत्रग्रहणेच्छया सावित्रीयमंप्रत्याहेति नारायण आह शक्तेरुत्कीर्तनामिति शक्तेर्मूल
शक्तेरुत्कीर्तनं सर्वोत्कृष्टत्वेन प्रतिपादनमित्यर्थः ॥ १ ॥ सावित्री किमाहीत चेत्तत्राह सावित्र्युवाच शक्तेरुत्कीर्तनामिति मूलप्रकृतेरुत्कीर्तनं स

भजनित्यं परं ब्रह्मनिर्गुणं प्रकृतिं परां ॥ गृहाण स्वामिनं वत्से सुखं वस च मंदिरे ॥ ३९ ॥ अयं ते कथितः कर्मविपा
को मंगलो नृणां ॥ सर्वेऽपि स तस्सर्वमतस्तत्त्वज्ञानप्रदः परः ॥ ४० ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे नवमस्कंधे
त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥ श्रीनारायण उ० ॥ शक्तेरुत्कीर्तनं श्रुत्वा सावित्री यमवक्रतः ॥ साश्रुनेत्रा स पुलकाय मंपुन
रुवाच सा ॥ १ ॥ सावित्र्युवाच ॥ शक्तेरुत्कीर्तनं धर्मसकलोद्धारकारणं ॥ श्रोतॄणां चैव वक्तॄणां जन्ममृत्युजराहरं
॥ २ ॥ दानवानां वसिष्ठानां तपसां च परंपदं ॥ योगानां चैव वेदानां कीर्तनं सेवनं विभो ॥ ३ ॥ मुक्तित्वममरत्वं च स
र्वसिद्धित्वमेव च ॥ श्रीशक्तिसेवकस्यैव कलां नार्हति षोडशीं ॥ ४ ॥ भजामिकेन विधिना वद वेदविदां वर ॥ शुभक
र्मविपाकं च श्रुतं नृणां मनोहरं ॥ ५ ॥ कर्माशुभविपाकं च तन्मे व्याख्यातुमर्हसि ॥ इत्युक्त्वा च सती ब्रह्मन्भक्तिनम्रा
त्मकंधरा ॥ ६ ॥ तु त्वावधर्मराजं च वेदोक्तेन स्तवेन च ॥ सावित्र्युवाच ॥ तपसा धर्ममाराध्य पुष्करेभास्करः पुरा ॥ ७ ॥

वोत्कृष्टत्वेन वर्णनं सकलोद्धारकं भवति तथा जन्ममृत्युजराहरं भवति ॥ २ ॥ तथा तपसां परमं स्थानं भवति तथा विभोः शक्तेः कीर्तनं योगानां वेदा
नां च सेवनं भवति ॥ ३ ॥ मुक्तित्वादिफलमपि तेनैव कीर्तनेनासिध्यतीत्याह मुक्तित्वमिति किं बहुना शक्तिसेवकतुल्यः कोऽपि नास्तीत्याह श्रीश
क्तिसेवकस्यैवेति ॥ ४ ॥ यस्मादेवं तस्मात्केन विधिना भजामि तं विधिं शुभकर्मविपाककथनं वद शुभकर्मविपाकं च वदेत्याह भजामीति ॥ ५ ॥
॥ ६ ॥ तुष्टावेति गुरुप्रसन्नतया लब्ध्वा विद्याफलाय भवति नान्यथेत्यभिप्राये गयं गुरुं तुष्टावेत्यर्थः तथा च श्रुतिः यस्य देवे पराभक्तिर्यथा देव तथा
गुरौ तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशं ते महात्मन इति धर्मधर्ममूर्तिदेवं ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.न

॥९२॥

सूर्योर्धर्मधर्मांशसुतंप्राप तंसूर्यसुतंधर्मांशधर्मराजसंज्ञकं नमामीत्यर्थः ॥ ८ ॥ ९ ॥ दंडायदंडनायशिक्षणायेत्यर्थः ॥ १० ॥ ११ ॥ ॥१२॥ १३॥१४॥ १५ ॥ ततएतत्स्तोत्रेणस्तुतोयमस्तस्यैसावित्र्यैशक्तिभजनंमूलप्रकृतिमंत्रमशुभकर्मविपाकं चोवाचेत्यर्थः ॥१६॥ ॥ १७ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधे एकत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥ अष्टाविंशतिपदैश्चपातकानां स्थलानि च ॥ नानाविधानिकुंडा

धर्मसूर्यः सुतंप्रापधर्मराजनमाम्यहं ॥ समतासर्वभूतेषु यस्य सर्वस्य साक्षिणः ॥ ८ ॥ अतो यन्नामशमनमिति तंप्रणमाम्यहं ॥ येनांतश्चकृतो विश्वे सर्वेषां जीविनां परं ॥ ९ ॥ कामानुरूपं कालेन तं कृतांतं नमाम्यहं ॥ विभर्ति दंडं दंडाय पापिनां शुद्धिहेतवे ॥ १० ॥ नमामि तं दंडधरं यः शास्ता सर्वजीविनां ॥ विश्वंच कलयत्येव यः सर्वेषु च स तं ॥ ११ ॥ अतीव दुर्निवार्यं च तं कालं प्रणमाम्यहं ॥ तपस्वी ब्रह्मनिष्ठो यः संयमी संजितेन्द्रियः ॥ १२ ॥ जीवानां कर्मफलदस्तं यमं प्रणमाम्यहं ॥ स्वात्मारामश्च सर्वज्ञो मित्रं पुण्यकृतां भवेत् ॥ १३ ॥ पापिनां क्लेशदोयस्तं पुण्यमित्रं नमाम्यहं ॥ यज्जन्म ब्रह्मणोऽंशेन ज्वलंतं ब्रह्म तेजसा ॥ १४ ॥ यो ध्यायति परं ब्रह्म तमीशं प्रणमाम्यहं ॥ इत्युक्त्वा सा च सावित्री प्रणनामयमं मुने ॥ १५ ॥ यमस्तां शक्तिभजनं कर्मपाकमुवाच ह ॥ इदं यमाष्टकं नित्यं प्रातरुत्थाय यः पठेत् ॥ १६ ॥ यमात्तस्य भयं नास्ति सर्वपापात्प्रमुच्यते ॥ महापापी यदि पठेन्नित्यं भक्तिसमन्वितः ॥ १७ ॥ यमः करोति संशुद्धं कायव्यूहेन निश्चितं ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे नवमस्कंधे एकत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥ नारायण उवाच ॥ माया बीजं महामंत्रं प्रदत्त्वा विधिपूर्वकं ॥ कर्माशुभविपाकं च तामुवाच रवेः सुतः ॥ १ ॥

निप्रोच्यंते दुःखदानि च ॥ १ ॥ पूर्वाध्याये यमस्तां शक्तिभजनं कर्मपाकमुवाच हेत्युक्तं तत्कीदृशं शक्तिभजनं कथं वा कर्मविपाक उक्तस्तत्स्पष्टीकर्तुमाह नारायण उवाच माया बीजं महामंत्रमिति मूलप्रकृतेर्भुवनेश्वर्यमन्त्र इत्येत्यर्थः तथा च श्रीभुवनेश्वर्युपासनारूपं शक्तिभजनमुक्तवानित्यर्थः विधिपूर्वकं चाक्षुषदीक्षाविधिनेत्यर्थः रवेः सुतो यमः अशुभकर्मविपाकं चोक्तवानित्यर्थः ॥ १ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

टी.अ.
३१

॥९२॥

शुभकर्मैति शुभकर्मणांवेदोक्तकर्मणांविपाकान्नरकंकदापिनयातीत्यर्थः कर्माशुभेति कर्मणोवेदविस्तृतकर्मणोऽशुभविपाकादेवनरकंया
तितंकर्माशुभविपाकंकथयामीत्यर्थः ॥ २ ॥ तत्रशुभकर्मणांफलानिस्वर्गानां विःसंतातिप्रसंगादाह नानापुराणेति नानाभेदेनविशि
ष्टनानाप्रकारकंस्वर्गमित्यन्वयः ॥ ३ ॥ सर्वथाशुभकर्मणाननरकःकिंत्वशुभकर्मणेत्याह शुभकर्मैति ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ तत्रषड

धर्मराजउवाच ॥ शुभकर्मविपाकान्नरकंयातिमानवः ॥ कर्माशुभविपाकंचकथयामिनिशामय ॥ २ ॥ नाना
पुराणभेदेननामभेदेनभाभिनि ॥ नानाप्रकारंस्वर्गंचयातिजीवःस्वकर्मभिः ॥ ३ ॥ शुभकर्मविपाकान्नर
कंयातिकर्मभिः ॥ कुकर्मणाचनरकंयातिनानाविधंनरः ॥ ४ ॥ नरकाणांचकुंडानिसंतिनानाविधानिच ॥ ना
नाशास्त्रप्रमाणेनकर्मभेदेनयानिच ॥ ५ ॥ विस्तृतानिचगर्तानिक्लेशदानिचदुःखिनां ॥ भयंकराणिघोराणि
हेवत्सेकुत्सितानिच ॥ ६ ॥ षडशीतिचकुंडानिएवमन्यानि संतिच ॥ निबोधतेषांनामानिप्रसिद्धानिश्रुतौस
ति ॥ ७ ॥ वह्निकुंडंतप्तकुंडंक्षारकुंडंभयानकं ॥ विट्कुंडंमूत्रकुंडंचश्लेष्मकुंडंचदुःसहं ॥ ८ ॥ गरकुंडंदूषिका
कुंडंवसाकुंडंतथैवच ॥ शुक्रकुंडमसृकुंडंपशुकुंडंचकुत्सितं ॥ ९ ॥ कुंडंगात्रमलानांचकर्णविट्कुंडमेवच ॥ म
ज्जाकुंडंमांसकुंडंनखकुंडंचदुस्तरं ॥ १० ॥ लोमकुंडंकेशकुंडमस्थिकुंडंचदुस्तरं ॥ ताम्रकुंडंलोहकुंडंप्रतप्तं
क्लेशदंमहत् ॥ ११ ॥ चर्मकुंडंतप्तसुराकुंडंचपरिकीर्तितं ॥ तीक्ष्णकंटककुंडंचविषोदंविषकुंडकं ॥ १२ ॥

शीतिकुंडानिमुख्यानि तदन्यानि तूपकुंडानिसंतीत्याह षडशीतीति ॥ ७ ॥ कुंडनामान्याह वह्निकुंडमिति अत्रोत्तराध्यायद्वयेनक्रमे
णकुंडानिकथितानितेनैवक्रमेणात्रापिकथितानिनामानिसंतीतिबोध्यं भयानकमितिस्वतंत्रकुंडंचतुर्थकं दुःसहमितिश्लेष्मकुंडविशेषणं
॥ ८ ॥ दूषिकाकुंडंनेत्रमलकुंडं शुक्रबीजकुंडं असृकुंडंरक्तकुंडं अभ्रकुंडंनेत्राभ्रकुंडंकुत्सितमिति विशेषणं ॥ ९ ॥ १० ॥ दुस्त
रमितिपदद्वयंविशेषणं नतुस्वतंत्रकुंडं प्रतप्तंक्लेशदंमहदितिलोहकुंडविशेषणं ॥ ११ ॥ विषोदमिति विषकुंडविशेषणं ॥ १२ ॥

दे.भा.न

॥९३॥

कुंतकुंडंनानाविधायुधकुंडंदुर्वहमिति विशेषणं दुरंतकमिति विशेषणं ॥ १३ ॥ १४॥ मशकुंडंमशकानांकुंडंवृश्चिकानांकुंडमिति शेषः
शुचास्पदमिति विशेषणं ॥ १५॥ मंथानकुंडंमंथानोजीवविशेषः तस्यकुंडंबीजकुंडंबीजोजीवविशेषः दुःसहमिति विशेषणं ॥ १६॥ महोल्ब

टी.अ.

३२

प्रतप्तकुंडंतैलस्यकुंतकुंडचदुर्वहं ॥ कृमिकुंडंपूयकुंडंसर्पकुंडंदुरंतकं ॥ १३ ॥ मशकुंडंदंशकुंडंभीमंगरलकुं
डकं ॥ कुंडंचवज्रदंष्ट्राणांवृश्चिकानांचसुव्रते ॥ १४ ॥ शरकुंडंशूलकुंडंखड्गकुंडंचभीषणं ॥ गोलकुंडंनक्रकुं
डंकाककुंडंशुचास्पदं ॥ १५ ॥ मंथानकुंडंबीजकुंडंवज्रकुंडंचदुःसहं ॥ तप्तपाषाणकुंडंचतीक्ष्णपाषाणकुंडं
॥ १६ ॥ लालाकुंडंमसीकुंडंचूर्णकुंडंतथैवच ॥ चक्रकुंडंवक्रकुंडंकूर्मकुंडंमहोल्बणं ॥ १७ ॥ ज्वालाकुंडंभ
स्मकुंडंदग्धकुंडंशुचिस्मिते ॥ तप्तसूचीमसिपत्रंक्षुरधारंसूचीमुखं ॥ १८ ॥ गोकामुखंनक्रमुखंगजदंशंचगो
मुखं ॥ कुंभीपाकंकालसूत्रंमत्स्योदंकृमिकंतुकं ॥ १९ ॥ पांसुभोज्यंपाशवेष्टंशूलप्रोतंप्रकंपनं ॥ उल्का
मुखमंधकूपंवेधनंताडनंतथा ॥ २० ॥ जालरंध्रंदेहचूर्णदलनंशोषणंकषं ॥ शूर्पज्वालमुखंचैवधूमांधनागवे
ष्टनं ॥ २१ ॥ कुंडान्येतानिसावित्रिपापिनांक्लेशदानिच ॥ नियुतैःकिंकरगणैरक्षितानिचसंततं ॥ २२ ॥
दंडहस्तैःपाशहस्तैर्मदमतैर्भयंकरैः ॥ शक्तिहस्तैर्गदाहस्तैरसिहस्तैःसुदारुणैः ॥ २३ ॥ तमोयुक्तैर्दयाहीनै
र्निवार्यैश्चनसर्वतः ॥ तेजस्विभिश्चनिःशंकैराताम्रपिंगलोचनैः ॥ २४ ॥ योगयुक्तैःसिद्धियुक्तैर्नानारूपधरै
र्भटैः ॥ आसन्नमृत्युभिर्दृष्टैःपापिभिःसर्वजीविभिः ॥ २५ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥

णमिति विशेषणं ॥ १७॥ १८॥ गोकामुखंनक्रमुखंनक्राकारंमुखंयस्यतत्पूर्वोक्तंनक्रकुंडंतुनक्रसमूहघटितत्वान्नक्रकुंडं कृमिकंतुकंएतस्य
वक्ष्यमाणाध्यायद्वयेस्तुदमितिसंज्ञा ॥ १९ ॥ २० ॥ कषंकषनामकंकुंडं शूर्पशूर्पाकारंकुंडं ॥ २१ ॥ नियुतैरनेकैरित्यर्थः ॥ २२॥
॥ २३ ॥ २४ ॥ आसन्नमृत्युभिःपापिभिःदृष्टैर्दृष्टैरित्यन्वयः ॥ २५ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७४ ॥

॥९३॥

पुण्यवद्विरदृश्यैरित्यन्वयः ॥ २६ ॥ स्वतंत्रकैर्ज्ञानेभिः स्वप्रदृष्टदेवरूपैः पुरुषैरदृश्यायमदूता इत्यर्थः इत्थं पापि स्थानमुक्ता तच्छ्रुत्वा पुण्यवतां भयं स्यादितितद्वयनिरासार्थमाह येषां निवास इति तान् कथयामीत्यर्थः ॥ २७ ॥ २८ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलकेन वमस्कंधे द्वात्रिंशोऽध्यायः ॥ ३२ ॥ षड्विंशत्यधिकैः श्लोकैः शतसंख्यैरतः परं ॥ कुंडेषु ये पतन्त्येव तेषां लक्षणमुच्यते ॥ १ ॥ पुण्यवतः कदापि नरकं न गच्छंतीति निश्चयार्थं पुनराह हरिसेवेति हरिपदं देवतांतरस्याप्युपलक्षणं सतीति संबोधनं ॥ १ ॥ तर्हि केषु कुंडेषु गच्छंतीति तान् पूर्वोक्तकुंडक्रमानुरोधेन प्रत्येक

स्वकर्मनिरतैः सर्वैः शाक्तैः सौरैश्च गाणपैः ॥ अदृश्यैः पुण्यकृद्भिश्च सिद्धैर्योगिभिरेव च ॥ २६ ॥ स्वधर्मनिरतैर्वा पिविततैर्वा स्वतंत्रकैः ॥ बलवद्भिश्च निःशंकैः स्वप्रदृष्टैश्च वैष्णवैः ॥ २७ ॥ एतत्ते कथितं साध्वि कुंडसंख्या निरूपणं ॥ येषां निवासो यत्कुंडे निबोध कथयामि ते ॥ २८ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे नवमस्कंधे नारदनारायणसंवादे सावित्र्युपाख्याने द्वात्रिंशोऽध्यायः ॥ ३२ ॥ धर्मराज उवाच ॥ हरिसेवारतः शुद्धो योगसिद्धो ब्रती सति ॥ तपस्वी ब्रह्मचारी च नयाति नरकं ध्रुवं ॥ १ ॥ कटुवाचा बांधवांश्च बललेपेन यो नरः ॥ दग्धान् करोति बलवान्वह्नि कुंडं प्रयातिसः ॥ २ ॥ स्वगात्रलोममानाब्धं तत्र स्थित्वा हुताशने ॥ पशुयोनिमवाप्नोति रौद्रदग्धां त्रिजन्मनि ॥ ३ ॥ ब्राह्मणं तृषितं तप्तं क्षुधितं गृहमागतं ॥ न भोजयति यो मूढस्तप्तकुंडं प्रयातिसः ॥ ४ ॥ तत्र तल्लोममानं च वर्षं स्थित्वा च दुःखदे ॥ तत्र स्थले वह्नि तले पक्षी च सप्तजन्मसु ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥

कुंडगामिनः पापिन आह कटुवाचेति कटुवाचा अप्रियवाचा बांधवांश्च चकारेण तदतिरिक्ता अपि जनाः बललेपेन शरीरसामर्थ्यधनविद्यादिरूपबलगर्वेण दग्धान् संतमान् ॥ २ ॥ कियत्कालपर्यंतं तत्र तिष्ठति तत्राह स्वगात्रेति वह्नि कुंडभोगोत्तरं पुनः कगच्छंति तत्राह पशुयोनिमिति रौद्रदग्धां विनेत्युष्णेन सूर्यसंतापेन दग्धां छाया रहितवने एव पशुजन्मत्रयं भवतीत्यर्थः ॥ ३ ॥ अथाद्वितीयतप्तकुंडगामिन आह ब्राह्मणमिति ॥ ४ ॥ तल्लोममानं ब्राह्मणलोममानं वर्षं तावन्ति वर्षाणीत्यर्थः अन्यत्सर्वपूर्ववत् ॥ ५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.न

॥९४॥

॥ ६ ॥ क्षारकुंडमाह रविवारेचेति क्षारसंयोगंमलनिष्कासनार्थंरजकैःक्षारोदीयतेसक्षारः ॥ ७ ॥ भयानककुंडाधिकारिणआह
मूलप्रकृतीति मूलकृतिः साम्यावस्थमायोपाधिकब्रह्मरूपिणीशास्त्रनिंदास्मृतिरूपधर्मशास्त्रनिंदा ॥ ८ ॥ शिवादीत्यत्रादिपदेनगणेश
सूर्यादयः वाण्यादीत्यादिपदेनगायत्रीलक्ष्म्यादयः ॥ ९ ॥ भयानककुंडस्यसर्वकुंडोपेक्षयातिदुःखप्रदत्वमाह नातःपरमिति तस्मान्नैते
षानिंदाकदापिकर्तव्येनिभावः ॥ १० ॥ तत्रब्रह्मादिदेवानांनिंदायांप्रायश्चित्तंस्यात्सर्वकारणमूलप्रकृतिनिंदारूपापराधस्यतुप्रायश्चित्तमेव
रविवारेचसंक्रांत्याममायांश्राद्धवासरे ॥ वस्त्राणांक्षारसंयोगंकरोतिकेवलंनरः ॥ ६ ॥ सयातिक्षारकुंडंचसूत्र
मानाब्दमेवच ॥ सत्रजेद्रजकीयोनिंसतजन्मसुभारते ॥ ७ ॥ मूलप्रकृतिनिंदांयःकुरुतेमानवाधमः ॥ वेदनिं
दांशास्त्रनिंदांपुराणानांतथैवच ॥ ८ ॥ ब्रह्मविष्णुशिवादीनांतथानिंदापरोजनः ॥ गौरीवाण्यादिदेवीनांतथा
निंदापरोजनः ॥ ९ ॥ तेसर्वेनिरयेयांतितस्मिन्कुंडेभयानके ॥ नातःपरतरंकुंडंदुःखदंतुभविष्यति ॥ १० ॥
तत्रस्थित्वानेककल्पंसर्पयोनिंत्रजेत्पुनः ॥ देवीनिंदापराधस्यप्रायश्चित्तंनविद्यते ॥ ११ ॥ स्वदत्तांपरदत्तां
वावृत्तिंचसुरविप्रयोः ॥ षष्टिवर्षसहस्राणिविट्कुंडंचप्रयातिसः ॥ १२ ॥ तावंत्येवचवर्षाणिविट्भोजीतत्रति
ष्ठति ॥ षष्टिवर्षसहस्राणिविट्कृमिश्रपुनर्भुवि ॥ १३ ॥ परकीयतडागेचतडागंयःकरोतिच ॥ उत्सृजेद्देवदोषे
णमूत्रकुंडंचप्रयातिसः ॥ १४ ॥ तद्रेणुमानवर्षंचतद्भोजीतत्रतिष्ठति ॥ पुनःपूर्णशताब्दंचसवृषोभारतेभवेत्
॥ १५ ॥ एकाकीमिष्टमश्नातिश्लेष्मकुंडंचप्रयातिच ॥ पूर्णमब्दशतंचैवतद्भोजीतत्रतिष्ठति ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥
नास्तीत्याह देवीनिंदेति ॥ ११ ॥ विट्कुंडमाह स्वदत्तामिति वृत्तियोहरेदितिशेषः ॥ १२ ॥ तावंत्येवषष्टिवर्षसहस्राण्येव ॥ १३ ॥
मूत्रकुंडमाह परकीयेति परकीयेतडागेशुष्कजलेतदनुज्ञांविनायस्तडागंकरोतिअथचसजलेतडागंदेवदोषेणमूत्रंयद्युत्सृजेत्तर्हिंसमूत्रकुंडंच
यातीत्यर्थः केचित्तुपरकीयतडागसमीपेयस्तडागंकरोतीत्यर्थइतिवदंति ॥ १४ ॥ तद्रेणुमानंतडागरेणुमानं तद्भोजीमूत्रभोजी शताब्दंचेति
शतसंवत्सरपर्यंतंपुनःपुनर्वृषोभवतीत्यर्थः ॥ १५ ॥ श्लेष्मकुंडमाह एकाकीति ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥

टी.अ.
३३

॥९४॥

भुंक्तेप्रेतयोनावित्यर्थः ॥ १७ ॥ गरकुंडमाह पितरमिति अनाथकंचनान्यं ॥ १८ ॥ १९ ॥ दूषिकाकुंडमाह दृष्ट्वेति वक्रचक्षुःक्रोधे
नकुटिलचक्षुः ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ वसाकुंडमाह दत्त्वेति तदेवद्रव्यमन्यस्मैयदिदीयतेइत्यर्थः द्रव्यमित्युपलक्षणंदानमात्रस्य

ततःपूर्णशताब्दंचसप्रेतोभारतेभवेत् ॥ श्लेष्ममूत्रपरंचैवपूयंभुंक्तेततःशुचिः ॥ १७ ॥ पितरंमातरंचैवगुरुं
भार्यासुतंसुतां ॥ योनपुष्णात्यनाथंचगरकुंडंप्रयातिसः ॥ १८ ॥ पूर्णमब्दशतंचैवतद्भोजीतत्रतिष्ठति ॥ ततो
ब्रजेद्रूतयोनिंशतवर्षततःशुचिः ॥ १९ ॥ दृष्ट्वातिथिंवक्रचक्षुःकरोतियोहिमानवः ॥ पितृदेवास्तस्यजलंनगृण्णंति
चपापिनः ॥ २० ॥ यानिकानिचपापानिब्रह्महत्यादिकानिच ॥ इहैवलभतेचांतेदूषिकाकुंडमाब्रजेत् ॥ २१ ॥
पूर्णमब्दशतंचैवतद्भोजीतत्रतिष्ठति ॥ ततोब्रजेद्रूतयोनिंशतवर्षततःशुचिः ॥ २२ ॥ दत्त्वाद्रव्यंचविप्रायचान्य
स्मैदीयतेयदि ॥ सतिष्ठतिवसाकुंडेतद्भोजीशतवत्सरं ॥ २३ ॥ कृकलासोभवेत्सोपिभारतेसप्तजन्मसु ॥ ततो
भवेन्महारौद्रेदरिद्रोल्पायुरेवच ॥ २४ ॥ पुमांसंकामिनीवापिकामिनीवापुमानथ ॥ यःशुक्रंपाययत्येवशुक्र
कुंडंप्रयातिसः ॥ २५ ॥ पूर्णमब्दशतंचैवतद्भोजीतत्रतिष्ठति ॥ कृमियोनिंशताब्दंचब्रजेद्रूत्वाततःशुचिः ॥ २६ ॥
संताड्यचगुरुंविप्रंरक्तपातंचकारयेत् ॥ सचतिष्ठत्यसृकुंडेतद्भोजीशतवत्सरं ॥ २७ ॥ ततोलभेद्वाघजन्म
सप्तजन्मसुभारते ॥ ततःशुद्धिमवाप्नोतिमानवश्चक्रमेणह ॥ २८ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥

॥ २३ ॥ कृकलासःसरटः ॥ २४ ॥ शुक्रकुंडमाह पुमांसमिति शुक्रंपाययतिकामानुरागादिनेत्यर्थः ॥ २५ ॥ २६ ॥ असृकुं
डमाहसंताड्येति ॥ २७ ॥ २८ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.न

॥९५॥

अश्रुकुण्डमाह योऽश्रुतयाजेति योनरोदेवमुद्दिश्यसगद्गदंयथास्यात्तथादेवगुणान्गायंतंभक्तं दृष्ट्वा तदसहमानोऽश्रुतयाजप्रेमाश्रुयस्यनागतमि
त्यर्थः यद्वातादृशंभक्तं दृष्ट्वा तज्जन्यं गायनजन्यं च हर्षसुखमकृत्वा तस्मिन्समये स्वसंसारजन्यदुःखेनाश्रुतयाजरोदितितथाश्रुकृष्णगुणसंगी

टी.अ.
३३

योऽश्रुतयाजगायंतंभक्तं दृष्ट्वा सगद्गदं ॥ श्रीकृष्णगुणसंगीतेहसत्येवहियोनरः ॥ २९ ॥ सवसेदश्रुकुण्डेचतद्गो
जीशतवर्षकं ॥ ततोभवेच्चचंडालस्त्रिजन्मनिततःशुचिः ॥ ३० ॥ करोतिशठतांतद्वन्नित्यंसुहृदियोनरः ॥ कुण्डं
गात्रमलानांचसप्रयातिशताब्दकं ॥ ३१ ॥ ततःसगर्दभोयोनिमवाप्नोतित्रिजन्मनि ॥ त्रिजन्मनिचसार्गा
लीततःशुद्धोभवेत्ध्रुवं ॥ ३२ ॥ बधिरंयोहसत्येवनिंदत्येवाभिमानतः ॥ सवसेत्कर्णविट्कुण्डेतद्गोजीशतवत्स
रं ॥ ३३ ॥ ततोभवेत्सबधिरोदरिद्रःसप्तजन्मसु ॥ सप्तजन्मन्यंगहीनस्ततःशुद्धिलभेत्ध्रुवं ॥ ३४ ॥ लोभा
त्स्वभरणार्थायजीविनंहंतियोनरः ॥ मज्जाकुण्डेवसेत्सोपितद्गोजीलक्षवत्सरं ॥ ३५ ॥ ततोभवेच्चशशकोमी
नश्चसप्तजन्मसु ॥ त्रिजन्मनिवराहश्चकुक्कुटःसप्तजन्मसु ॥ ३६ ॥ एणादयश्चकर्मभ्यस्ततःशुद्धिलभेत्ध्रुवं ॥
स्वकन्यापालनंकृत्वाविक्रीणातिचयोनरः ॥ ३७ ॥ अर्थलोभान्महामूढोमांसकुण्डंप्रयातिसः ॥ कन्यालोम
प्रमाणाब्दंतद्गोजीतत्रतिष्ठति ॥ ३८ ॥ तस्यदंडप्रहारंचकुर्वतिममकिकराः ॥ मांसभारंमूर्ध्निकृत्वारक्तभारं
लिहेत्क्षुधा ॥ ३९ ॥ ततोहिभारतेपापीकन्याविट्कृमिगोभवेत् ॥ षष्ठिवर्षसहस्राणिव्याधश्चसप्तजन्मसु
॥ ४० ॥ त्रिजन्मनिवराहश्चकुक्कुटःसप्तजन्मसु ॥ मंडूकोहिजलौकाश्चसप्तजन्मसुभारते ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥

तेकृष्णेत्युपलक्षणं देवगुणसंगीते देवगुणगायने प्रचलिते सतियोनरो विनोदादिना हसतिसोऽश्रुकुण्डे वसेदित्यर्थः ॥ २९ ॥ ३० ॥ गात्रम
लकुण्डमाह शठतां धूर्ततां ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ कन्याविट्कृमि
गस्तत्कीटोदरे जन्मभवतीत्यर्थः ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥

॥९५॥

अथनखकुंडलोमकुंडकेशकुंडास्थिकुंडचतुष्टयस्यसमुच्चित्यपृथक्चाधिकारिणमाह व्रतानामिति संगमेप्राप्तौतद्दिनेइत्यर्थः ॥ ४२ ॥
 ॥ ४३ ॥ दैवदिनमानाब्दंदेववर्षपरिमितकालमित्यर्थः ॥ ४४ ॥ मृद्रेणुमानवर्षकंमृद्रेणुप्रमाणवर्षाणीत्यर्थः ॥ ४५ ॥ शताब्दपर्यंतंततो
 राक्षसोभवतीत्याह शताब्दादिति विष्णुपदेगयास्थिते ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ताम्रकुंडमाहयःसेवतइति ॥ ४८ ॥ ततलोहकुंडमाह अवीरा
 सप्तजन्मसुकाकश्चततःशुद्धिलभेत्ध्रुवं ॥ व्रतानामुपवासानांश्राद्धादीनांचसंगमे ॥ ४२ ॥ करोतियःक्षौरकर्म
 सोशुचिःसर्वकर्मसु ॥ सचतिष्ठतिकुंडंचनखादीनांचसुंदरि ॥ ४३ ॥ तदैवदिनमानाब्दंतद्गोर्जादिंदताडितः ॥
 सकेशंपार्थिवंलिङ्गंयेवार्चयतिभारते ॥ ४४ ॥ सतिष्ठतिकेशकुंडेमृद्रेणुमानवर्षकं ॥ तदंतेयावर्नीयोनिंप्रया
 तिहरकोपतः ॥ ४५ ॥ शताब्दाच्छुद्धिमाप्नोतिराक्षसःसभवेत्ध्रुवं ॥ पितृणांयोविष्णुपदेपिंडंनैवददातिच
 ॥ ४६ ॥ सचतिष्ठत्यस्थिकुंडेस्वलोमाब्दंमहोल्बणे ॥ ततःसुयोनिंसंप्राप्यकुखंजःसप्तजन्मसु ॥ ४७ ॥ भवेन्म
 हादरिद्रश्चततःशुद्धोहिदेहतः ॥ यःसेवतेमहामूढोगुर्विणोचस्वकामिनीं ॥ ४८ ॥ प्रतप्तेताम्रकुंडेचशतवर्षस
 तिष्ठति ॥ अवीरान्नंचयोभुंक्तेऋतुस्नातान्नमेवच ॥ ४९ ॥ लोहकुंडेशताब्दंचसचतिष्ठतितप्तके ॥ सत्रजेद्रज
 कीयोनिंकाकानांसप्तजन्मसु ॥ ५० ॥ महात्रणीदरिद्रश्चततःशुद्धोभवेन्नरः ॥ योहिचर्माक्तहस्तेनदेवद्रव्यमु
 पस्पृशेत् ॥ ५१ ॥ शतवर्षप्रमाणंचचर्मकुंडेसतिष्ठति ॥ यःशूद्रेणाभ्यनुज्ञातोभुंक्तेशूद्रान्नमेवच ॥ ५२ ॥ सच
 ततसुराकुंडेशताब्दंतिष्ठतिद्विजः ॥ ततोभवेच्छूद्रयाजीब्राह्मणःसप्तजन्मसु ॥ ५३ ॥ शूद्रश्राद्धान्नभोजीचत
 तःशुद्धोभवेत्ध्रुवं ॥ वाग्दुष्टःकटुकोवाचाताडयेत्स्वामिनंसदा ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥
 नंचेति अवीरापुत्रहानाविधवाऋतुस्नातासुदासिर्नाचतुर्यदिवसेसुवासीनीतयास्पृष्टमन्नमित्यर्थः ॥ ४९ ॥ ततलोहकुंडेइत्यन्वयः ॥ ५० ॥
 चर्मकुंडमाह योहीतिचर्माक्तहस्तेनचर्मस्पर्शहस्तेनाधौतेन ॥ ५१ ॥ ततसुराकुंडमाह यःशूद्रेणेति अभ्यनुज्ञातोनिमंत्रितः ॥ ५२ ॥
 ॥ ५३ ॥ तीक्ष्णकंठककुंडमाह वाग्दुष्टेति कटुकोकटुभाषी ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥

दे.भा.न

॥९६॥

॥ ५५ ॥ ततो नरकभोगानंतरं सप्तजन्मसूचैः श्रवाः श्रोत्राः भवतीत्यर्थः विषकुण्डमाह विषेणेति ॥ ५६ ॥ नृघातीभिर्लोत्रणीव्रणवान् ॥ ५७ ॥ प्रतप्तैलकुण्डमाह दंडेनेति ॥ ५८ ॥ स्वतंत्रः स्वयमेव पुण्यक्षेत्रे च कारादन्यत्रापि ॥ ५९ ॥ कुंतकुण्डमाह कुंतेनेति वन्हि

टी.अ.
३३

तीक्ष्णकंटककुण्डे सतद्गो जीतत्रतिष्ठति ॥ ताडितो यमदूतेन दंडेन च चतुर्गुणं ॥ ५५ ॥ तत उच्चैः श्रवाः सप्तजन्मस्वे
वततः शुचिः ॥ विषेण जीविनं हंति निर्दयो यो हि मानवः ॥ ५६ ॥ विषकुण्डे च तद्गो जीसहस्राब्दं च तिष्ठति ॥ ततो
भवेन्नृघाती च व्रणी च शतजन्मसु ॥ ५७ ॥ सप्तजन्मसुकुष्ठी च ततः शुद्धो भवेत्ध्रुवं ॥ दंडेन ताडयेद्ग्राहि वृषं च वृषवा
हकः ॥ ५८ ॥ भृत्यद्वारा स्वतंत्रो वा पुण्यक्षेत्रे च भारते ॥ प्रतप्तैलकुण्डे ग्नौ तिष्ठति स्म चतुर्युगं ॥ ५९ ॥ गवां
लोमप्रामाणाब्दं वृषो भवति तत्परं ॥ कुंतेन हंतियोजीवं वन्हिलोहेन हेलया ॥ ६० ॥ कुंतकुण्डे वसेत्सोऽपि वर्षा
णामयुतं सति ॥ ततः सुयोनिं संप्राप्य चोदरे व्याधिसंयुतः ॥ ६१ ॥ जन्मनैकेन क्लेशेन ततः शुद्धो भवेन्नरः ॥ यो
भुंक्ते च वृथामांसं मांसलोभी द्विजाधमः ॥ ६२ ॥ हरेरनैवेद्यभोजी कृमिकुण्डं प्रयातिसः ॥ स्वलोममानवर्षं च तद्गो
जीतत्रतिष्ठति ॥ ६३ ॥ ततो भवेन्मलेच्छजातिस्त्रिजन्मनिततो द्विजः ॥ ब्राह्मणः शूद्रया जी च शूद्रश्चाद्वान्न भोजकः
॥ ६४ ॥ शूद्राणां शवदाही च पूयकुण्डे वसेत्ध्रुवं ॥ यावलोमप्रामाणाब्दं यमदंडेन सुव्रते ॥ ६५ ॥ ताडितो यमदू
तेन तद्गो जीतत्रतिष्ठति ॥ ततो भारतमागत्य स शूद्रः सप्तजन्मसु ॥ ६६ ॥ महारोगी दरिद्रश्च बधिरो मूक एव च ॥
कृष्णं पद्मं च केयस्य तं सर्पं हंतियो नरः ॥ ६७ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥

लोहेन वन्हिना तप्तेन लोहरूपेण कुंतशस्त्रेणेत्यर्थः हेलया पीत्यर्थः ॥ ६० ॥ ६१ ॥ कृमिकुण्डमाह यो भुंक्ते चेति वृथामांसं यज्ञातिरिक्तं
॥ ६२ ॥ तथा हरेरित्युपलक्षणं देवतांतरस्यापि तद्गो जीमांसभोजी ॥ ६३ ॥ पूयकुण्डमाह ब्राह्मण इति ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ सर्प
कुण्डमाह कृष्णमिति कृष्णं सर्पं तथा यस्य केमस्तके पद्मं पद्माकारं चिन्हमास्ति तं च सर्पमित्यर्थः इदमुपलक्षणं सर्पजातिमात्रस्य ॥ ६७ ॥

॥९६॥

॥ ६८ ॥ ६९ ॥ सर्पेणभक्षितात्सर्पेणकृतेनभक्षणेनैवतस्यमृत्युर्भवतीत्यर्थः दंशमशयोःकुण्डद्वयंसमुच्चित्याह विधिदत्तेति विधिनादे
वेनप्रदत्ताउपजीव्यावृत्तिर्येषामेतादृशायेनाथाःक्षुद्रजंतवः ॥ ७० ॥ शब्दवान्हाहेतिशब्दकुर्वाणः ॥ ७१ ॥ क्षुद्रजंतुजन्मोत्तरयावनीयवन
जातिर्भवेदित्यर्थः ॥ ७२ ॥ गरलकुण्डमाह योमूढइति मधुमाक्षिकं ॥ ७३ ॥ गारलेगरलामधुमाक्षिकास्तत्पूर्णेकुण्डे ॥ ७४ ॥ वज्रदंष्ट्रकुण्डमाह

स्वलोममानवर्षेचसर्पकुण्डंप्रयातिसः ॥ सर्पेणभक्षितःसोथममदूतेनताडितः ॥ ६८ ॥ वसेच्चसर्पविट्भोजीत
तःसर्पोभवेत्ध्रुवं ॥ ततोभवेन्मानवश्चस्वल्पायुर्दद्रुसंयुतः ॥ ६९ ॥ महाक्लेशेनतन्मृत्युःसर्पेणभक्षितात्ध्रुवं ॥
विधिप्रदत्तजीव्यांश्चक्षुद्रजंतूंश्चहंतियः ॥ ७० ॥ सदंशमशयोःकुण्डेजंतुमानाब्दमेवच ॥ दिवानिशंभक्षितस्तै
रनाहारश्चशब्दवान् ॥ ७१ ॥ हस्तपादादिबद्धश्चयमदूतेनताडितः ॥ ततोभवेत्क्षुद्रजंतुर्जातिश्चयावनीभवे
त् ॥ ७२ ॥ ततोभवेन्मानवश्चसौगहीनस्ततःशुचिः ॥ योमूढोमधुमश्चातिहत्वाचमधुमाक्षिकाः ॥ ७३ ॥ स
एवगारलेकुण्डेजीवमानाब्दकंवसेत् ॥ भक्षितोगरलैर्दग्धोममदूतेनताडितः ॥ ७४ ॥ ततोहिमाक्षिकाजातिस्त
तःशुद्धोभवेन्नरः ॥ दंडंकरोत्यदंडेचविप्रेदंडंकरोतिच ॥ ७५ ॥ सकुण्डंवज्रदंष्ट्राणांकीटानांयातिसत्वरं ॥ सत
ल्लोमप्रमाणाब्दंतत्रतिष्ठत्यहर्निशं ॥ ७६ ॥ शब्दकृद्भक्षितस्तैस्तुममदूतेनताडितः ॥ करोतिरोदनंभद्रेहाहाका
रंक्षणेक्षणे ॥ ७७ ॥ पुनःसूकरयोनौचजायतेसप्तजन्मसु ॥ त्रिजन्मनिकाकयोनौततःशुद्धोभवेन्नरः ॥ ७८ ॥
अर्थलोभेनयोमूढःप्रजादंडंकरोतिसः ॥ वृश्चिकानांचकुण्डंचतल्लोमाब्दंवसेत्ध्रुवं ॥ ७९ ॥ ततोवृश्चिकजातिश्च
सप्तजन्मसुभारते ॥ ततोनरश्चांगहीनोव्याधिशुद्धोभवेत्ध्रुवं ॥ ८० ॥ ब्राह्मणःशस्त्रधारीयोह्यन्येषांधावकोभ
वेत् ॥ संध्याहीनश्चयोविप्रोहरिभक्तिविहीनकः ॥ ८१ ॥

दंडंकरोतीति अदंज्येपराधराहितेविप्रेचसापराधेअयोग्यं
दंडंयःकरोतीत्यर्थः ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ शब्दकृत्हाहादिशब्दकृत् ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ वृश्चिककुण्डमाह अर्थलोभेनेति तल्लोमाब्दंप्रजालोमाब्दं
॥ ७९ ॥ ८० ॥ अथशरकुण्डशूलकुण्डखड्गकुण्डानिसमुच्चित्याह ब्राह्मणइति धावकोवस्त्रक्षालकःहरिपदमन्यदेवस्याप्युपलक्षणं ॥ ८१ ॥

दे.भा.न

॥ ८२ ॥ गोलकुंडमाह कारागारेइति ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ नक्रकुंडमाह सरोवरादिति आदिनामत्स्यादीन् ॥ ८६ ॥

॥ ८७ ॥ काकतुंडमाह वक्षःश्रोणीति पुण्यक्षेत्रेचकारादन्यत्रच ॥ ८८ ॥ दग्धोदयादिना ॥ ८९ ॥ मंथानकुंडमाह स्वर्णस्तेयीति ॥ ९० ॥

॥ ९७ ॥

सतिष्ठतिस्वलोमाब्दकुंडेषुचशरादिषु ॥ विध्यःशरादिभिःशश्वत्ततःशुद्धोभवेन्नरः ॥ ८२ ॥ कारागारेसांधकारे
प्रणिहंतिप्रजाश्रयः ॥ प्रमत्तःस्वस्यदोषेणगोलकुंडंप्रयातिसः ॥ ८३ ॥ संपंकतप्ततोयाक्तंसांधकारंभयंकरं ॥
तीक्ष्णदंष्ट्रैश्चकीटैश्चसंयुक्तंगोलकुंडकं ॥ ८४ ॥ कीटैर्विद्धोवसेत्तत्रप्रजालोमाब्दमेवच ॥ ततोभवेत्प्रजाभृ
त्यस्ततःशुद्धोभवेत्क्रमात् ॥ ८५ ॥ सरोवरादुत्थितांश्चनक्रादीन्हंतियोनरः ॥ नक्रकंटकमानाब्दंनक्रकुंडंप्रया
तिसः ॥ ८६ ॥ ततो नक्रादिजातीयोभवेन्नक्रादिषुध्रुवं ॥ ततःसद्योविशुद्धोहिदंडेनैवपुनःपुनः ॥ ८७ ॥ वक्षः
श्रोणीस्तनास्यंचयःपश्यतिपरस्त्रियः ॥ कामेनकामुकोयोहिपुण्यक्षेत्रेचभारते ॥ ८८ ॥ सवसेत्काकतुंडे
चककैःसंचूर्णलोचनः ॥ ततःस्वलोममानाब्दंभवेद्दग्धस्त्रिजन्मनि ॥ ८९ ॥ स्वर्णस्तेयीचयोमूढोभारतेसुर
विप्रयोः ॥ सचमंथानकुंडेवैस्वलोमाब्दंवसेत्ध्रुवं ॥ ९० ॥ ताडितोयमदूतेनमंथानैश्छन्नलोचनः ॥ तद्विट्
भोजीचतत्रैवततश्चांधस्त्रिजन्मनि ॥ ९१ ॥ सप्तजन्मदरिद्रश्चमहाक्रूरश्चपातकी ॥ भारतेस्वर्णकारश्च
सचस्वर्णवणिक्ततः ॥ ९२ ॥ योभारतेताम्रचौरोलोहचौरश्चसुंदरि ॥ सचस्वलोममानाब्दंबीजकुंडंप्रया
तिसः ॥ ९३ ॥ तत्रैवबीजविट्भोजीबीजैश्चछन्नलोचनः ॥ ताडितोयमदूतेनततःशुद्धोभवेन्नरः ॥ ९४ ॥ ध् ॥

मंथानैर्मथानदंडैः तद्विट्मंथानःकीटविशेषस्तस्यवित्तस्यमल्लहृत्यर्थः ॥ ९१ ॥ स्वर्णकारोत्तरंस्वर्णवणिकस्वर्णविक्रेताभवतीत्यर्थः
॥ ९२ ॥ कुंडमाह योभारतेइति बीजकुंडेअत्रबीजशब्देनाष्टमोधातुरोजोगृह्यतेननुशुक्रंतकुंडस्यपूर्वमुक्तत्वात् यद्वाबीजोबीजविशेषः
॥ ९३ ॥ बीजरूपविट्भोजी जीवपक्षेतेषांविट्भोजी ॥ ९४ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

टी.अ.

३३

॥ ९७ ॥

वज्रकुंडमाह भारतेदेवचौरश्चेति ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ तमपाषाणकुंडमाह रौप्यगव्येति ॥ ९७ ॥ कंसःकूर्मःश्वेतरूपःकुष्ठीश्वेतचि
न्हःकुष्ठचिन्हः श्वेतपक्षिणोयावन्तस्तेषांयोर्निप्रथमंप्राप्नोति ततोमनुष्यजन्मनिकुष्ठीभवतीतिबोध्यं ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ तीक्ष्णपाषाणकुंडमाह

भारतेदेवचौरश्चदेवद्रव्यापहारकः ॥ सदुस्तरेवज्रकुंडेस्वलोमाब्दंवसेत्ध्रुवं ॥ ९५ ॥ देहदग्धोपितद्वज्रैरनाहा
रश्चशब्दकृत् ॥ ताडितोयमदूतैश्चततःशुद्धोभवेन्नरः ॥ ९६ ॥ रौप्यगव्यांशुकानांचयश्चौरःसुरविप्रयोः ॥ ती
क्ष्णपाषाणकुंडेचस्वलोमाब्दंवसेत्ध्रुवं ॥ ९७ ॥ त्रिजन्मनिचकंसोपिश्वेतरूपस्त्रिजन्मनि ॥ जन्मैकंश्वेतचिन्ह
श्चततोन्येश्वेतपक्षिणः ॥ ९८ ॥ ततो रक्तविकारीघशूलीवैमानवोभवेत् ॥ सप्तजन्मसुचाल्पायुस्ततःशुद्धोभ
वेन्नरः ॥ ९९ ॥ रैतंकांस्यमयंपात्रंयोहरेद्देवविप्रयोः ॥ तीक्ष्णपाषाणकुंडेचस्वलोमाब्दंवसेन्नरः ॥ १०० ॥
सभवेदश्वजातिश्चभारतेसप्तजन्मसु ॥ ततोधिकांगजातिश्चपादरोगीततःशुचिः ॥ १ ॥ पुंश्चल्यन्नंचयोभुंक्ते
पुंश्चलीजीव्यजीविनः ॥ स्वलोममानवर्षंचलालाकुंडेवसेत्ध्रुवं ॥ २ ॥ ताडितोयमदूतेनसभोजीतत्रदुःखितः॥
ततश्चक्षुःशूलरोगीततःशुद्धःक्रमेणसः ॥ ३ ॥ म्लेच्छसेवीमसीजीवीयोविप्रोभारतेभुवि ॥ वसेत्स्वलोममाना
ब्दंमसीकुंडेसदुःखभाक् ॥ ४ ॥ ताडितोयमदूतेनतद्गोजीतत्रतिष्ठति ॥ ततस्त्रिजन्मनिभवेत्कृष्णवर्णःपशुः
सति ॥ ५ ॥ त्रिजन्मनिभवेच्छागःकृष्णवर्णस्त्रिजन्मनि ॥ ततःसतालवृक्षश्चततःशुद्धोभवेन्नरः ॥ ६ ॥ धान्या
दिशस्यंतांबूलंयोहरेत्सुरविप्रयोः ॥ आसनंचतथातल्पंचूर्णकुंडेप्रयातिसः ॥ ७ ॥ शताब्दंतत्रनिवसेद्यमदू
तेनताडितः ॥ ततोभवेन्मेषजातिःकुक्कुटश्चत्रिजन्मनि ॥ १०८ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥

रैतेति रैतंपित्तलनिर्मितं ॥ १०० ॥ अधिकांगजातिःअंडवृत्त्यादिरोगवान् ॥ १०१ ॥ लालाकुंडमाह पुंश्चल्यन्नंचेति ॥ २ ॥ ३ ॥
मसीकुंडमाह म्लेच्छसेवीति ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ चूर्णकुंडमाह धान्यादीस्ति शस्यंप्रशस्तंकिंचिद्वस्तु ॥ ७ ॥ ॥ १०८ ॥

दे.भा.न

॥९८॥

॥ १०९ ॥ चक्रकुंडमाह करोतीति विप्राणां द्रव्यं हृत्वा यश्चक्रं चक्रपूजां करोति मंत्रशास्त्रे प्राप्ते द्वाचक्रपूजा यद्वाचक्रं कुलालादिचक्रं यः करोतीत्यर्थः ॥ १० ॥ ११ ॥ वक्रकुंडमाह गोधनेष्विति वक्रतां कुटिलदृष्टिं ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ कूर्मकुंडमाह निपिद्ध

ततो भवेद्वानरश्चकासव्याधियुतो भुवि ॥ वंशहीनो दरिद्रश्च अल्पायुश्च ततः शुचिः ॥ १०९ ॥ करोति चक्रं विप्रा
णां हृत्वा द्रव्यं च योजनः ॥ सवसे चक्रकुंडे च शताब्दं दंडताडितः ॥ १० ॥ ततो भवेन्मानवश्च तैलकारस्त्रिजन्मनि ॥
व्याधियुक्तो भवेद्गोवी वंशहीनस्ततः शुचिः ॥ ११ ॥ गोधनेषु च विप्रेषु करोति वक्रतां पुमान् ॥ प्रयाति वक्रतुंडं
सति षष्ठ्युगशतं सति ॥ १२ ॥ ततो भवेत्सवक्रांगो हीनांगः सप्तजन्मनि ॥ दरिद्रो वंशहीनश्च भार्याहीनस्ततः
शुचिः ॥ १३ ॥ ततो भवेद्भ्रजन्मात्रिजन्मनि च सूकरः ॥ त्रिजन्मनि बिडालश्च मयूरश्च त्रिजन्मनि ॥ १४
निषिद्धं कूर्ममांसं च ब्राह्मणो यो हि भक्षति ॥ कूर्मकुंडे वसेत्सोऽपि शताब्दं कूर्मभक्षितः ॥ १५ ॥ ततो भवेत्कूर्मजन्म
त्रिजन्मनि च सूकरः ॥ त्रिजन्मनि बिडालश्च मयूरश्च ततः शुचिः ॥ १६ ॥ घृतं तैलादिकं चैव यो हरेत्सुरविप्रयोः ॥
सयाति ज्वालाकुंडं च भस्मकुंडं च पातकी ॥ १७ ॥ तत्र स्थित्वा शताब्दं च स भवेत्तैलपाचितः ॥ सप्तजन्मनि मत्स्य
श्च मूषकश्च ततः शुचिः ॥ १८ ॥ सुगंधितैलं धात्रीं वा गंधद्रव्यान् यदेव वा ॥ भारते पुण्यवर्षे च यो हरेत्सुरविप्रयोः
॥ १९ ॥ सवसे हृद्गंधं च भवेद्गंधो दिवानिशं ॥ स्वलोममानवर्षे च ततो दुर्गंधिको भवेत् ॥ २० ॥ दुर्गंधिकः सप्त
जन्ममृगनाभिस्त्रिजन्मनि ॥ सप्तजन्मसुमंथानस्ततो हिमानवो भवेत् ॥ २१ ॥ बलेनैव छलेनैव हिंसा रूपेण वा
सति ॥ बलिष्ठश्च हरेद्भूमिं भारते परपैतृकीं ॥ २२ ॥ सवसे तप्तसूचीं च भवेत्तापी दिवानिशं ॥ तप्ततैले यथा
जीवो दग्धो भवति संततं ॥ १२३ ॥

मिति ॥ १५ ॥ १६ ॥ ज्वालाकुंडं भस्मकुंडं च समुच्चित्याह घृतमिति ॥ १७ ॥ १८ ॥ दग्धकुंडमाह सुगंधीति धात्रीमामलकचूर्ण
॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ तप्तसूचीकुंडमाह बलेनैवेति ॥ २२ ॥ १२३ ॥

टी.अ.

३३

॥९८॥

॥ २४ ॥ २५ ॥ १२६ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेत्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३३ ॥ अर्धाधिकैकनवतिश्लोकैरथसविस्तरं ॥

भस्मसान्नभवत्येवभोगेदेहीननश्यति ॥ सप्तमन्वंतरंपापीसंतप्तस्तत्रतिष्ठति ॥ २४ ॥ शब्दंकरोत्यनाहारो
यमदूतेनताडितः ॥ षष्टिवर्षसहस्राणिविट्कृमिश्चभवेत्ततः ॥ २५ ॥ ततोभवेद्भूमिहीनोदरिद्रश्चततःशुचिः ॥
ततःस्वयोर्निसंप्राप्यशुभकर्माचरेत्पुनः ॥ १२६ ॥ इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेत्रयस्त्रिंशोऽध्या
यः ॥ ३३ ॥ यमधर्मउवाच ॥ छिनत्तिजीवंखड्गेनदयाहीनःसुदारुणः ॥ नरघातीहंतिनरमर्थलोभेनभारते
॥ १ ॥ असिपत्रेवसेत्सोपियावदिंद्राश्चतुर्दश ॥ तेषुयोब्राह्मणान्हंतिशतमन्वंतरंवसेत् ॥ २ ॥ छिन्नांगःसव
सेत्सोपिखड्गधारेणसंततं ॥ अनाहारःशब्दमुच्चैर्यमदूतेनताडितः ॥ ३ ॥ मंथानःशतजन्मानिशतजन्मानि
सूकरः ॥ कुक्कुटःसप्तजन्मानिसृगालःसप्तजन्मसु ॥ ४ ॥ व्याघ्रश्चसप्तजन्मानिवृकश्चैवत्रिजन्मसु ॥ सप्तज
न्मसुमंडूकोयमदूतेनताडितः ॥ ५ ॥ सभवेद्भारतेवर्षेमहिषश्चततःशुचिः ॥ ग्रामाणांनगराणांवादहनंयःक
रोतिच ॥ ६ ॥ क्षुरधारेवसेत्सोपिछिन्नांगस्त्रियुगंसाति ॥ ततःप्रेतोभवेत्सद्योवन्हिवक्रोभ्रमन्महीं ॥ ७ ॥ सप्त
जन्मामेध्यभोजीकपोतःसप्तजन्मसु ॥ ततोभवेन्महाशूलीमानवःसप्तजन्मनि ॥ ८ ॥ सप्तजन्मगलत्कुप्रीत
तःशुद्धोभवेन्नरः ॥ परकर्णेमुखंदत्वापरनिंदांकरोतियः ॥ ९ ॥ परदोषेमहाश्लार्घीदेवब्राह्मणनिंदकः ॥ सूची
मुखेवसेत्सोपिसूचीविद्धोयुगत्रयं ॥ १० ॥

॥ ४५ ॥

॥ ४५ ॥

कुंडानामवशिष्टानांकथ्यंतेह्यधिकारिणः ॥ ११ ॥ क्रमप्राप्तमसिपत्रकुंडमाह छिनत्तीति ॥ ११ ॥ २ ॥ ३ ॥ मंथानोर्जीवविशेषः ॥ ४ ॥ ५ ॥
क्षुरधारंकुंडमाह ग्रामाणामिति ॥ ६ ॥ वन्हिवक्रोर्नित्यं प्रव्वलद्वय इत्यर्थः ॥ ७ ॥ ८ ॥ सूचीमुखंकुंडमाह परकर्णेति ॥ ९ ॥ १० ॥

दे.भा.न

॥ ११ ॥ गोकामुखकुंडमाह गृहिणांहीति ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ नक्रमुखकुंडमाह सामान्येति नक्रमुखनक्राकारं
मुखंयस्यपूर्वोक्तंनक्रकुंडंतुनक्रजंतुघटितत्वान्नक्रकुंडं ॥ १६ ॥ १७ ॥ गजदंशकुंडमाह हंतीति नगान्वृक्षान् ॥ १८ ॥ १९ ॥

टी.अ.
३४

॥९९॥

ततोभवेद्दृश्चिकश्चसर्पश्चसप्तजन्मसु ॥ वज्रकीटःसप्तजन्मभस्मकीटस्ततःपरं ॥ ११ ॥ ततोभवेन्मानव
श्चमहाव्याधिस्ततःशुचिः ॥ गृहिणांहिगृहंभित्वावस्तुस्तेयंकरोतियः ॥ १२ ॥ गाश्चछागांश्चमेषांश्चयातिगो
कामुखेचसः ॥ ताडितोयमदूतेनवसेत्तत्रयुगत्रयं ॥ १३ ॥ ततोभवेत्सप्तजन्मगोजातिर्व्याधिसंयुतः ॥ त्रिज
न्मनिमेषजातिश्छागजातिस्त्रिजन्मनि ॥ १४ ॥ ततोभवेन्मानवश्चनित्यरोगीदरिद्रकः ॥ भार्याहीनोबंधुहीनः
संतापीचततःशुचिः ॥ १५ ॥ सामान्यद्रव्यचौरश्चयातिनक्रमुखंचसः ॥ ताडितोयमदूतेनवसेत्तत्राब्दकत्रयं
॥ १६ ॥ ततोभवेत्सप्तजन्मगोपतिर्व्याधिसंयुतः ॥ ततोभवेन्मानवश्चमहारोगीततःशुचिः ॥ १७ ॥ हंतिगा
श्चगजांश्चैवतुरगांश्चनगांस्तथा ॥ सयातिगजदंशंचमहापापीयुगत्रयं ॥ १८ ॥ ताडितोयमदूतेननागदंते
नसंततं ॥ सभवेद्गजजातिश्चतुरगश्चत्रिजन्मनि ॥ १९ ॥ गोजातिम्लेच्छजातिश्चततःशुद्धोभवेन्नरः ॥ जलं
पिबंतींतृषितांगांवारयतियःपुमान् ॥ २० ॥ नरकंगोमुखाकारंकृमिस्तोदकान्वितं ॥ तत्रतिष्ठतिसंतप्तोयावन्म
न्वंतरावधि ॥ २१ ॥ ततोनरोपिगोहीनोमहारोगीदरिद्रकः ॥ सप्तजन्मांत्यजातिश्चततःशुद्धोभवेन्नरः ॥ २२ ॥
गोहत्यांब्रह्महत्यांचकरोतिह्यातिदेशिकीं ॥ योहिगच्छत्यगम्यांचयःस्त्रीहत्यांकरोतिच ॥ २३ ॥ ॥ ६९ ॥

गोमुखकुंडमाह जलंपिबंतीमिति ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ कुंभीषाककुंडमाह गोहत्यामिति आतिदेशिकींशास्त्रवचनोक्तांअगम्यां
स्त्रियंवक्ष्यमाणांयोनरोगच्छति ॥ २३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥९९॥

॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ अधुनागोहत्याब्रह्महत्यांचयःकरोत्यातिदेशिकीमितिधर्मवाक्यंभृत्वातिदेशिकीगोहत्याब्रह्महत्याचकीदृशीभवतिर्केवातस्यालक्षणमितिसावित्रीपृच्छति सावित्र्युवाच विप्रहृत्येकिं चागम्यायागम्यायाश्चलक्षणंवदतथासंध्याविहीनस्यादीक्षितस्यतीर्थप्रतिग्राहिणश्चलक्षणंतथाग्रामयाजिदेवलयोश्चलक्षणंवदेत्यर्थः ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ तदर्चायांकृष्णप्रतिमायांत

भिक्षुहत्यांमहापापीभूणहत्यांचभारते ॥ कुंभीपाकेवसेत्सोपियावर्दिद्राश्चतुर्दश ॥ २४ ॥ ताडितोयमदूतेन चूर्णमानश्चसंततं ॥ क्षणंपततिवन्हौचक्षणंपततिकंटके ॥ २५ ॥ क्षणंपतेत्तप्ततैलेतप्तोयेनक्षणंक्षणं ॥ क्षणं चतप्तलोहेचक्षणंचतप्तताम्रके ॥ २६ ॥ गृध्रोजन्मसहस्राणिशतजन्मानिसूकरः ॥ काकश्चसप्तजन्मानिसर्पश्चसप्तजन्मसु ॥ २७ ॥ षष्टिवर्षसहस्राणिविष्टायांजायतेकृमिः ॥ नानाजन्मसुवृषस्ततःकुष्ठीदरिद्रकः ॥ २८ ॥ सावित्र्युवाच ॥ विप्रहृत्याचगोहत्याकिंविधाचांतिदेशिकी ॥ कावानृणामगम्याचकोवासंध्याविहीनकः ॥ २९ ॥ अदीक्षितःपुमान्कोवाकोवातीर्थप्रतिग्रही ॥ द्विजःकोवाग्रामयाजीकोवाविप्रोथदेवलः ॥ ३० ॥ शूद्राणांसूपकारश्चप्रमत्तोवृषलीपतिः ॥ एतेषांलक्षणंसर्ववदवेदविदांवर ॥ ३१ ॥ धर्मराजउवाच ॥ श्रीकृष्णेचतदर्चायामन्येषांप्रकृतौसति ॥ शिवेचशिवालिंगेचसूर्येसूर्यमणौतथा ॥ ३२ ॥ गणेशेवाथदुर्गायामेवंसर्वत्रसुंदरि ॥ यःकरोतिभेदबुद्धिंब्रह्महत्यांलभेतुसः ॥ ३३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥

याअन्येषांदेवानांचप्रकृतौप्रतिमायांसूर्यमणौसूर्यकांतेतथागणेशेतत्प्रतिमायांतथादुर्गायांतत्प्रतिमायांचएतेषुदेवेषुपरस्परंभेदबुद्धियःकरोति तथैतेषांप्रतिमादिषुभेदबुद्धियःकरोतिसइत्यर्थः इयंवचननोधितत्वादातिदेशिकीब्रह्महत्यासाक्षाद्ब्रह्महत्यासमफलैवेत्यर्थः एवमुत्तरत्रापि सर्वत्रबोध्यं ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.न

॥१००॥

स्वगुराविति इष्टेदेवगुरुपितृजननीषुपरस्परंयोभेदबुद्धिकरोतीत्यर्थः तदुक्तं गुरौमनुष्यबुद्धिचमंत्रेचाक्षरबुद्धिता प्रतिमासुशिलाबुद्धिकुवाणो
नरकं व्रजेदिति ॥३४॥ वैष्णवेष्विति इदं देवतांतरभक्तानामप्युपलक्षणं ॥३५॥ ३६॥ शिवनैवेद्यके इति यथाशिवनैवेद्यमहिमातथैवावि
ष्णुनैवेद्यमहिमानात्रतरतमभावः कर्तव्यो यदि करोति तर्हि ब्रह्महत्यांलभेदेवेत्यर्थः शिवमंत्रदीक्षितानां शिवनैवेद्यभक्षणस्यावश्यं विहितत्वान् शिव

स्वगुरौस्वेष्टेदेवेचजन्मदातरिमातरि ॥ करोतिभेदबुद्धियोब्रह्महत्यांलभेतुसः ॥३४॥ वैष्णवेषुचभक्तेषुब्राह्म
णेष्वितरेषुच ॥ करोतिभेदबुद्धियोब्रह्महत्यांलभेतुसः ॥३५॥ विप्रपादोदकेचैवशालग्रामोदकेतथा ॥ करोति
भेदबुद्धियोब्रह्महत्यांलभेतुसः ॥३६॥ शिवनैवेद्यकेचैवहरिनैवेद्यकेतथा ॥ करोतिभेदबुद्धियोब्रह्महत्यांलभे
तुसः ॥३७॥ सर्वेश्वरेश्वरेकृष्णेसर्वकारणकारणे ॥ सर्वाद्येसर्वदेवानांसेव्येसर्वातरात्मनि ॥३८॥ माययाने
करूपेवाप्येकएवहिनिर्गुणे ॥ करोतीशेनभेदयोब्रह्महत्यांलभेतुसः ॥३९॥ शक्तिभक्तेष्वेवबुद्धिशक्तिशास्त्रे
थैवच ॥ द्वेपयःकुरुतेमर्त्योब्रह्महत्यांलभेतुसः ॥ ४०॥ पितृदेवार्चनंयोवात्यजेद्वेदनिरूपितं ॥ यःकरोतिनि
षिद्धंचब्रह्महत्यांलभेतुसः ॥४१॥ योनिंदतिहृषिकेशंतन्मंत्रोपासकंतथा ॥ पवित्राणांपवित्रंचज्ञानानंदंसना
तनं ॥४२॥ प्रधानंवैष्णवानांचदेवानांसेव्यमीश्वरं ॥ येनार्चयंतिनिंदंतिब्रह्महत्यांलभंतिते ॥४३॥ येनिंदंति
महादेवींकारणब्रह्मरूपिणीं ॥ सर्वशक्तिस्वरूपांचप्रकृतिसर्वमातरं ॥ ४४॥ सर्वदेवस्वरूपांचसर्वेषांवदि
तांसदा ॥ सर्वकारणरूपांचब्रह्महत्यांलभंतिते ॥४५॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४५ ॥

नैवेद्यभक्षणनिषेधवाक्यानित्वदीक्षितविषयाणीतिद्व्यप्यदीक्षितग्रंथेषुस्पष्टं ॥३७॥ कृष्णेगोपालसुंदरीरूपे ॥३८॥ निर्गुणब्रह्मणाकृष्णेनच
योभेदद्विबुद्धिकरोतीत्यर्थः अथवाईशेनमहादेवेनकृष्णस्यचभेदबुद्धियःकरोतीत्यर्थः ॥ ३९॥ ४०॥४१॥ ४२॥ ४३॥ कार
णब्रह्मरूपिणींमूलप्रकृतिंश्रीभुवनेश्वरीमित्यर्थः ॥ ४४॥ ४५॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४५ ॥

टी.अ.

३४

॥१००॥

वारेरवेः राविवासरइत्यर्थः ॥ ४६ ॥ पंचपर्वाणि त्रतदिनानीत्यर्थः ॥ ४७ ॥ अंबुवाची आर्द्रा नक्षत्राद्यपादावच्छेदेन त्रिदिनं पृथ्वीरजस्वलाति
ष्ठतिसा अंबुवाची पदवाच्येति ज्योतिःशास्त्रे उक्तं तस्यां रजस्वलायां भुवि भूखननात् तथा शौचादिकरणात् ब्रह्महत्यां लभते इत्यर्थः ॥ ४८ ॥ ४९ ॥

कृष्णजन्माष्टमी रामनवमी च सुपुण्यदां ॥ शिवरात्रिं तथा चैकादशीं वारेरवेस्तथा ॥ ४६ ॥ पंचपर्वाणि पुण्यानि
येन कुर्वति मानवाः ॥ लभन्ति ब्रह्महत्यांते चांडालाधिकपापिनः ॥ ४७ ॥ अंबुवाच्यां भूखननं जलशौचादिकं च
ये ॥ कुर्वति भारते वर्षे ब्रह्महत्यां लभन्ति ते ॥ ४८ ॥ गुरुं च मातरं तातं साध्वीं भार्यां सुतं सुतां ॥ अनिद्यां येन पुण्या
ति ब्रह्महत्यां लभेत्तु सः ॥ ४९ ॥ विवाहो यस्य न भवेन्न पश्यति सुतं तु यः ॥ हरिभक्तिविहीनो यो ब्रह्महत्यां लभेत्तु
सः ॥ ५० ॥ हरेरनैवेद्यभोजी नित्यं विष्णुं न पूजयेत् ॥ पुण्यं पार्थिवलिङ्गं च ब्रह्महासौ प्रकीर्तितः ॥ ५१ ॥ गोप्र
हारं प्रकुर्वन्तं दृष्ट्वा यो न निवारयेत् ॥ याति गोविप्रयोर्मध्ये गोहत्यां तु लभेत्तु सः ॥ ५२ ॥ दंडैर्गास्ताडयेन्मूढो यो विप्रो
वृषवाहनः ॥ दिने दिने गोवधं च लभते नात्र संशयः ॥ ५३ ॥ ददाति गोभ्य उच्छिष्टं भोजयेद्दृषवाहकं ॥ भुनक्ति
वृषवाहान्नं स गोहत्यां लभेत्ध्रुवं ॥ ५४ ॥ वृषलीपतिं याजयेद्यो भुंक्तेन्न तस्य यो नरः ॥ गोहत्याशतकं सोऽपि लभते ना
त्र संशयः ॥ ५५ ॥ पादं ददाति व हौयोगाश्च पादेन ताडयेत् ॥ गेहं विशेदधौ तांघ्रिः स्नात्वा गोवधमाप्नुयात्
॥ ५६ ॥ यो भुंक्ते स्निग्धपादेन शेतो स्निग्धांघ्रिरेव च ॥ सूर्योदये च यो भुंक्ते स गोहत्यां लभेत्ध्रुवं ॥ ५७ ॥ अवीरा
न्नं च यो भुंक्ते यो निजीव्यस्य च द्विजः ॥ यस्त्रिं संध्याविहीनश्च गोहत्यां लभते च सः ॥ ५८ ॥ ॥ ४९ ॥

॥ ५० ॥ इत्यमातिदेशिक ब्रह्महत्यामुक्त्वा ॥ तिदेशिक गोहत्यामाह गोप्रहारमिति गोविप्रयोर्मध्ये मार्गं तरे सतीति तात्पर्यं ॥ ५१ ॥ ५२ ॥
॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ स्नात्वा धौतांघ्रिं गेहं देवगृहं यादिविशेदित्यन्वयः ॥ ५६ ॥ स्निग्धपादेनार्द्रपादेन ॥ ५७ ॥ अवीरा पुत्ररहिता
यो निजीवीकुट्टनः त्रिं संध्याविहीनलक्षणमग्रे वक्ष्यति ॥ ५८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥

दे.भा.न

१०१

॥ ५९ ॥ गोमार्गेति अस्यार्थः पूर्वमुक्त एव पृथिव्युपाख्याने वर्जनं नाशनं सस्यं क्षेत्रं तथा तडागे दुर्गे वा तडागं दुर्गं वोपमृद्यतास्मिन् स्थाने इत्यर्थः
॥ ६० ॥ पुत्रलोभादिति पुत्रेण कृतायां गोहत्यायां प्रायश्चित्ते प्राप्ते तस्य व्यतिक्रममुलंघनं पुत्रलोभाद्यः पिता करोति सोऽपि गोहत्यां लभेदित्यर्थः

स्वभर्तरि च देवे वा भेदबुद्धिं करोति या ॥ कटूक्त्या ताडयेत्कांतं सा गोहत्यां लभेत्ध्रुवं ॥ ५९ ॥ गोमार्गवर्जनं कृत्वा
ददाति सस्यमेव वा ॥ तडागे वा तु दुर्गे वा स गोहत्यां लभेत्ध्रुवं ॥ ६० ॥ प्रायश्चित्ते गोवधस्य यः करोति व्यतिक्रमं
॥ पुत्रलोभादथाज्ञानात् स गोहत्यां लभेत्ध्रुवं ॥ ६१ ॥ राजके देवके यत्नाद्गोस्वामी गां न रक्षति ॥ दुःखं ददाति यो
मूढो गोहत्यां स लभेत्ध्रुवं ॥ ६२ ॥ प्राणिनो लंघयेद्यो हि देवार्चामनलं जलं ॥ नैवेद्यं पुष्पमन्नं च स गोहत्यां लभेत्ध्रु-
वं ॥ ६३ ॥ शश्वन्नास्तीति यो वादी मिथ्यावादी प्रतारकः ॥ देवद्वेषी गुरुद्वेषी स गोहत्यां लभेत्ध्रुवं ॥ ६४ ॥ देवता
प्रतिमां दृष्ट्वा गुरुं वा ब्राह्मणं सति ॥ संभ्रमान्न न मेद्यो हि स गोहत्यां लभेत्ध्रुवं ॥ ६५ ॥ न ददात्याशिषं को पात्प्रणता
यच यो द्विजः ॥ विद्यार्थिने च विद्यां च स गोहत्यां लभेत्ध्रुवं ॥ ६६ ॥ गोहत्याविप्रहत्या च कथिता चातिदेशिकी ॥
गम्यां स्त्रियं नृणामेव निबोधकथयामि ते ॥ ६७ ॥ स्वस्त्री गम्या च सर्वेषामिति वेदानुशासनं ॥ अगम्या च तदन्या
याचेति वेदविदो विदुः ॥ ६८ ॥ सामान्यं कथितं सर्वविशेषं शृणु सुंदरि ॥ अत्यगम्या हि यायाश्च निबोधकथया
मिताः ॥ ६९ ॥ शूद्राणां विप्रपत्नी च विप्राणां शूद्रकामिनी ॥ अत्यगम्या च निन्द्या च लोके वेदे पतिव्रते ॥ ७० ॥
शूद्रश्च ब्राह्मणो गत्वा ब्रह्महत्याशतं लभेत् ॥ तत्समं ब्राह्मणी चापि कुंभीपाकं लभेत्ध्रुवं ॥ ७१ ॥ ॥ ६४ ॥

॥ ६१ ॥ राजके राजोपद्रवे देवके देवोपद्रवे ॥ ६२ ॥ लंघयेदित्यस्य सर्वत्रानुषंगः ॥ ६३ ॥ शश्वन्नास्तीति अतिथिप्रतीतिशेषः ॥ ६४ ॥ ६५ ॥
॥ ६६ ॥ उपसंहरति गोहत्येति अधुना गम्यामगम्यां च स्त्रियं वदति गम्यामिति ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ अतिशयेनागम्या आह अत्यगम्या हीति
॥ ६९ ॥ ७० ॥ कुंभीपाके उभावापि शूद्रब्राह्मणपत्न्यौ गच्छत इत्यर्थः ॥ ७१ ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७१ ॥

टी.अ.
३४

१०१

॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ सुरापीति सुरापस्तथाविड्भोजीतथावृषलीपतिस्तथातप्तमुद्राभिर्दग्धोदेहोयस्यसतप्तमुद्राधारीवैष्णवस्तथातप्तशूल
धारीशैवोहरिवासरभोजीएकादशीव्रतेष्वन्नभुक् एतेकुंभीपाकेव्रजंतीत्यर्थः ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ सगर्भाकांचनस्त्रियंयद्वासगर्भासोदरांभगि

शूद्राणांविप्रपत्नीचविप्राणांशूद्रकामिनी ॥ यदिशूद्रां व्रजेद्विप्रोवृषलीपतिरेवसः ॥ ७२ ॥ सभ्रष्टोविप्रजाते
श्चचांडालात्सोधमःस्मृतः ॥ विष्ठासमश्चतत्पिंडोमूत्रंतस्यचतर्पणं ॥ ७३ ॥ नपितृणांसुराणांचतदत्तमुपति
ष्ठति ॥ कोटिजन्मार्जितंपुण्यंतस्यार्चातपसार्जितं ॥ ७४ ॥ द्विजस्यवृषलीलोभान्नश्यत्येवनसंशयः ॥ ब्राह्म
णश्चसुरापीतिविड्भोजीवृषलीपतिः ॥ ७५ ॥ तप्तमुद्रादग्धोदेहस्तप्तशूलांकितस्तथा ॥ हरिवासरभोजीचकुं
भीपाकंव्रजेद्विजः ॥ ७६ ॥ गुरुपत्नींराजपत्नींसपत्नीमातरंध्रुवं ॥ सुतांपुत्रवयूंश्चश्रूंस्सगर्भांभगिनींसतीं
॥ ७७ ॥ सोदरभ्रातृजायांचमातुलानींपितुःप्रसूं ॥ मातुःप्रसूतस्त्वसारंभगिनींभ्रातृकन्यकां ॥ ७८ ॥ शि
ष्यांशिष्यस्यपत्नींचभागिनेयस्यकामिनीं ॥ भ्रातुष्पुत्रप्रियांचैवात्यगम्याआहपद्मजः ॥ ७९ ॥ एताःका
मेनकांतायोव्रजेद्वैमानवाधमः ॥ समातृगामीवेदेषुब्रह्महत्याशतंव्रजेत् ॥ ८० ॥ अकर्माहोप्यसंस्पृश्यलोके
वेदेचनिंदितः ॥ सयातिकुंभीपाकेमहापापीसुदुष्करे ॥ ८१ ॥ करोत्यशुद्धांसंध्यांवानसंध्यांवाकरोतिच ॥
त्रिसंध्यांवर्जयेद्योवासंध्याहीनश्चसाद्विजः ॥ ८२ ॥ वैष्णवंचतथाशैवंशाक्तंसौरंचगाणपं ॥ योहंकारान्नगृ
ह्णातिमंत्रंसोदीक्षितःस्मृतः ॥ ८३ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥

नीमित्यन्वयः ॥ ७७ ॥ तत्त्वसारंमातृप्रसूतस्त्वसारमित्यर्थः भगिनीभ्रात्रोःकन्यकामित्यर्थः ॥ ७८ ॥ एताभ्रगम्यास्त्रियइत्यर्थः ॥ ७९ ॥
॥ ८० ॥ ८१ ॥ संध्याहीनमाह करोत्यशुद्धामिति अशुद्धांशास्त्रोक्तप्रकाररहितां तिसृणांसंध्यानांसमाहारःत्रिसंध्यमेवंप्रकारेणसंध्या
रहितोयःससंध्याहीनइत्यर्थः ॥ ८२ ॥ तथादीक्षितमाह वैष्णवामिति ॥ ८३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.न

१०२

तीर्थप्रतिग्राहिणमाह प्रवाहमवधिमिति ॥ ८४ ॥ तत्रनारायणक्षेत्रेकाश्यादिस्थानेषुचयःप्रतिग्राहीसतीर्थप्रतिग्राहीतिसमुदायार्थः॥८५॥
हरिहरक्षेत्रेच्यंबके मातृपुरंमातृपुरसंज्ञकंश्रीरेणुकास्थानं ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ कामतइच्छातो न त्वनुपपत्तितः ॥ ८८ ॥ ग्रामया
ज्यादीनांलक्षणान्याह शूद्रसेवीति ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेचतुस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३४ ॥ अर्धा

प्रवाहमवधिकृत्वायावद्वस्तचतुष्टयं ॥ तत्रनारायणःस्वामीगंगागर्भातिरेवसत् ॥ ८४ ॥ तत्रनारायणक्षेत्रे
मृतोयातिहरेःपदं ॥ वाराणस्यांबदर्याचगंगासागरसंगमे ॥ ८५ ॥ पुष्करेहरिहरक्षेत्रेप्रभासेकामरूस्थ
ले ॥ हरिद्वारेचकेदारेतथामातृपुरेपिच ॥ ८६ ॥ सरस्वतीनदीतीरेपुण्येवृंदावनेवने ॥ गोदावर्याचकौशिक्यां
त्रिवेण्यांचहिमाचले ॥ ८७ ॥ एषुतीर्थेषुयोदानंप्रतिगृह्णातिकामतः ॥ सचतीर्थप्रतिग्राहीकुंभीपाकेप्रयाति
सः ॥ ८८ ॥ शूद्रसेवीशूद्रयाजीग्रामयाजीतिकीर्तितः ॥ तथादेवोपजीवीचदेवलःपरिकीर्तितः ॥ ८९ ॥ शूद्र
पाकोपजीवीयःसूपकारइतिस्मृतः ॥ संध्यापूजनहीनश्चप्रमत्तःपतितःस्मृतः ॥ ९० ॥ उक्तंसर्वमयाभद्रेलक्ष
णंवृषलीपतेः ॥ एतेमहापातकिनःकुंभीपाकंप्रयांतिते ॥ ९१ ॥ कुंडान्यन्यानियेयांतिनिबोधकथयामिते ॥
इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेनारदनारायणसंवादेसावित्र्युपाख्यानेचतुस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३४ ॥
धर्मराजउवाच ॥ देवसेवांविनासाध्विनभवेत्कर्मकृतनं ॥ शुद्धकर्मशुद्धबीजंनरकश्चकुर्मणा ॥ १ ॥ पुंश्च
ल्यन्नंचयोभुंक्तेयोऽस्यांगच्छेत्पतिव्रते ॥ सद्विजःकालसूत्रंचमृतोयातिसुदुर्गमं ॥ २ ॥ ॥ ६५ ॥

धिकैकोनषष्टिश्लोकैरथसविस्तरं ॥ कुंडानामवशिष्टानांकथ्यंतेह्यधिकारिणः ॥ १ ॥ एतादृशनानाविधदुःखानिवृत्तिरीश्वरसेवांविनाभवं
तीतिधैर्यार्थमाह धर्मराजउवाच देवसेवामिति सुकर्मणातुसुकर्मवर्द्धतेनतुतस्यकर्मणोनिर्कृतनमित्याह शुद्धकर्मोति शुद्धबीजंशुद्धकर्मबीजं
चेत्यर्थःकुर्मर्मणातुनरकश्चकारात्कुर्मचभवतीत्यर्थः ॥ १ ॥ कालसूत्रकुंडमाह पुंश्चल्यन्नमिति ॥ २ ॥ ॥ ७ ॥

टी.अः
३४

१०२

तत्रजन्मनिकालसूत्रभोगोत्तरजन्मनीत्यर्थः ॥ ३ ॥ मत्स्योदकुंडगामिनआह पतिव्रताचैकपताविति द्वितीयेपतौसतिकुलटाएवंसर्वत्रज्ञेयं
 ॥ ४ ॥ पंचमेषष्ठेचपतौवेद्येत्यन्वयः सप्तमेषष्ठेचपतौपुंगीभवतीत्यन्वयःसाधस्पृश्येतिछेदः ॥ ५ ॥ ६ ॥ चतुर्गुणंचतुःशताब्दंएवंस
 शतवर्षकालसूत्रेस्थिरीभूतोभवेत्ध्रुवं ॥ तत्रजन्मनिरोगीचततःशुद्धोभवेद्विजः ॥ ३ ॥ पतिव्रताचैकपतौद्वितीये
 कुलटास्मृता ॥ तृतीयेधर्षिणीज्ञेयाचतुर्थेपुंश्चलीत्यपि ॥ ४ ॥ वेश्याचपंचमेषष्ठेपुंगीचसप्तमेषष्ठे ॥ तत ऊर्ध्वं
 महावेश्यासास्पृश्यासर्वजातिषु ॥ ५ ॥ योद्विजःकुलटांगच्छेत्धर्षिणीपुंश्चलीमपि ॥ पुंगीवेश्यामहावेश्याम
 त्स्योदेयातिनिश्चितं ॥ ६ ॥ शताब्दंकुलटागामीधृष्टगामीचतुर्गुणं ॥ षड्गुणंपुंश्चलीगामीवेश्यागामीगुणाष्ट
 कं ॥ ७ ॥ पुंगीगामीदशगुणंवसेत्तत्रनसंशयः ॥ महावेश्याकामुकश्चततोदशगुणंवसेत् ॥ ८ ॥ तत्रैवयातनां
 भुंक्तेयमदूतेनताडितः ॥ तित्तिरिःकुलटागामीधृष्टगामीचवायसः ॥ ९ ॥ कोकिलःपुंश्चलीगामीवेश्यागामीवृ
 कःस्मृतः ॥ पुंगीगामीसूकरश्चसप्तजन्मानिभारते ॥ १० ॥ महावेश्याप्रगामीचजायतेशाल्मलीतरुः ॥ योभुंक्ते
 ज्ञानहीनश्चग्रहणेचंद्रसूर्ययोः ॥ ११ ॥ अरुंदुदंसयात्येवाप्यन्नमानाब्दमेवच ॥ ततोभवेन्मानवश्चाप्युदरेरो
 गपीडितः ॥ १२ ॥ गुल्मयुक्तश्चकणश्चदंतहीनस्ततःशुचिः ॥ वाक्प्रदत्तांस्वकन्यांचयोन्यस्मैप्रददातिच ॥
 ॥ १३ ॥ सवसेत्पांसुकुंडेचतद्गोजीशतवत्सरं ॥ तद्रव्यहारीयःसाध्विपांसुवेष्टेशताब्दकं ॥ १४ ॥ निवसेच्छ
 रशय्यायांममदूतेनताडितः ॥ भक्त्यानपूजयेद्विप्रःशिवलिंगंचपार्थिवं ॥ १५ ॥ सयातिशूलिनःपापाच्छूल
 प्रोतंसुदारुणं ॥ स्थित्वाशताब्दंतत्रैवश्वापदःसप्तजन्मसु ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥

वंत्रज्ञेयं ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ कृमिकंतुककुंडमाह योभुंक्तेइति ॥ ११ ॥ अरुंदुदस्तुमर्मस्पृक् कीटाविशेषःतस्यकुंडं अन्न
 मानाब्दंयावंतोन्नस्यावयवास्तावंतिवर्षाणीत्यर्थः ॥ १२ ॥ पांसुभोज्यंकुंडमाह वाक्प्रदत्तामिति ॥ १३ ॥ पांसुवेष्टंकुंडमाह तद्रव्यहा
 रीति कन्याविक्रेताइत्यर्थः ॥ १४ ॥ शूलप्रोतंकुंडमाह भक्तयेति ॥ १५ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥

प्रकंपनकुंडमाह करोतीति कुंठितकुतर्केण ॥१७॥ उल्कामुखकुंडमाह प्रकोपेति ॥१८॥१९ ॥२०॥ अंधकूपकुंडमाह ब्राह्मणीशूद्र

ततोभवेद्देवलश्चसप्तजन्मततःशुचिः ॥ करोतिकुंठितंविप्रंयद्रियाकंपतेद्विजः ॥ १७ ॥ प्रकंपनेवसेत्सोपि
विप्रलोमाब्दमेवच ॥ प्रकोपवदनाकोपात्स्वामिनंयाचपश्यति ॥ १८ ॥ कटूक्तितंप्रवदतिसोल्मुकंसंप्रयाति
हि ॥ उल्कांददातितद्वक्त्रेसततंममकिंकरः ॥ १९ ॥ दंडेनताडयेन्मूर्ध्नितल्लोमाब्दप्रमाणकं ॥ ततोभवेन्मान
वीचविधवासप्तजन्मसु ॥ २० ॥ साभुक्काचैववैधव्यंव्याधियुक्ताततःशुचिः ॥ याब्राह्मणीशूद्रभोग्याचांधकूपे
प्रयातिसा ॥ २१ ॥ तप्तशौचोदकेध्वांतेतदाहारीदिवानिशं ॥ निवसेदतिसंतप्तायमदूतेनताडिता ॥ २२ ॥
शौचोदकेनिमग्नासायावदिंद्राश्चतुर्दश ॥ काकीजन्मसहस्राणिशतजन्मानिसूकरी ॥ २३ ॥ सृगालीशतजन्मा
निशतजन्मानिकुकुटी ॥ पारावतीसप्तजन्मवानरीसप्तजन्मसु ॥ २४ ॥ ततोभवेत्साचांडालीसर्वभोग्याच
भारते ॥ ततोभवेच्चरजकीयक्षमग्रस्ताचपुंश्चली ॥ २५ ॥ ततःकुष्ठयुतातैलकारीशुद्धाभवेत्ततः ॥ निवसेद्वेध
नेवेश्यापुंगीचदंडताडने ॥ २६ ॥ जलरंध्रेवसेद्वेश्याकुलटादेहचूर्णके ॥ स्वैरिणीदलनेचैवधृष्टाचशोषणे तथा
॥ २७ ॥ निवसेद्यातनायुक्ताममदूतेनताडिता ॥ विण्मूत्रभक्षासततंयावन्मन्वंतरंसति ॥ २८ ॥ ततोभवे
द्विट्कृमिश्चलक्षवर्षततःशुचिः ॥ ब्राह्मणोब्राह्मणीगच्छेत्क्षत्रियांवापिक्षत्रियः ॥ २९ ॥ वैश्योवैश्यांचशूद्रांवा
शूद्रश्चापित्रजेद्यदि ॥ सवर्णपरदारैश्चकषायंयांतितेजनाः ॥ ३० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥

भोग्येति ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ वेधनकुंडमाह निवसेदिति ताडनादिपंचकुंडान्याह पुंगीचेति ॥ २६ ॥
॥ २७ ॥ २८ ॥ कषकुंडमाह ब्राह्मणइति ॥ २९ ॥ परदारैस्सहेत्यर्थः कषेयांतितयासहेत्यापिपाठः ॥ ३० ॥ ॥ ७ ॥

॥ ३१ ॥ शूर्पकुंडमाह क्षत्रियोब्राह्मणीमिति ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ज्वालामुखंकुंडमाह करेधृत्वेति तुलसीकरेधृत्वाकृतांप्रतिज्ञां
 योनपालयेदित्यर्थः ॥ ३५ ॥ तथैवगंगातोयेपिज्ञेयं ॥ ३६ ॥ शिलांशालग्रामशिलां देवप्रतिमांवाकरेकृत्वाकृतांप्रतिज्ञांयोनपालयेदित्य
 र्थः तथास्वदक्षिणहस्तंतस्यहस्तोपरिदत्त्वाकृतांप्रतिज्ञामित्यर्थः ॥ ३७ ॥ स्थित्वेति देवगृहेस्थित्वाकृतांप्रतिज्ञांयोनपालयेदितिशेषः त

भुक्त्वाकषायंतप्तोदंनिवसेद्वादशाब्दकं ॥ ततोविप्रोभवेच्छुद्धस्ततोवैक्षत्रियादयः ॥ ३१ ॥ योपितश्चापिशु
 त्थ्यंतीत्येवमाहपितामहः ॥ क्षत्रियोब्राह्मणीगच्छेद्वैश्योवापिपतिव्रते ॥ ३२ ॥ मातृगामीभवेत्सोपिशूर्पेचनर
 केवसेत् ॥ शूर्पाकारैश्चकृमिभिर्ब्राह्मण्यासहभाक्षितः ॥ ३३ ॥ प्रतप्तमूत्रभोजीचयमदूतेनताडितः ॥ तत्रैवया
 तनांभुक्तेयावदिंद्राश्चतुर्दश ॥ ३४ ॥ सप्तजन्मवराहश्चछागलश्चततःशुचिः ॥ करेधृत्वातुतुलसींप्रतिज्ञांयोन
 पालयेत् ॥ ३५ ॥ मिथ्यावाशपथंकुर्यात्सचज्वालामुखंव्रजेत् ॥ गंगातोयंकरेकृत्वाप्रतिज्ञांयोनपालयेत् ॥ ३६ ॥
 शिलांवादेवप्रतिमांसचज्वालामुखंव्रजेत् ॥ दत्त्वादक्षिणहस्तंचप्रतिज्ञांयोनपालयेत् ॥ ३७ ॥ स्थित्वादेवगृहेवा
 पिसचज्वालामुखंव्रजेत् ॥ आस्पृश्यब्राह्मणं गांचज्वालावर्हिंव्रजेद्विजः ॥ ३८ ॥ नपालयेत्प्रतिज्ञांचसचज्वा
 लामुखंव्रजेत् ॥ मित्रद्रोहीकृतघ्नश्चयश्चविश्वासघातकः ॥ ३९ ॥ मिथ्यासाक्षप्रदश्चैवसचज्वालामुखंव्रजेत्
 एतेतत्रवसंत्येवयावदिंद्राश्चतुर्दश ॥ ४० ॥ तथांगारप्रदग्धाश्चयमदूतेनताडिताः ॥ चांडालस्तुलसींस्पृष्ट्वा
 सप्तजन्मततःशुचिः ॥ ४१ ॥ म्लेच्छो गंगजलस्पर्शीपंचजन्मततःशुचिः ॥ शिलास्पर्शीविट्कृमिश्चसप्तजन्म
 सुसुंदरि ॥ ४२ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४२ ॥

थाब्राह्मणं गांचास्पृश्यस्पर्शकृत्वाकृतांप्रतिज्ञामित्यर्थः ॥ ३८ ॥ नपालयेदिति पूर्वोक्तंशपथमकृत्वापिकृतांप्रतिज्ञांयोनपालयेत्सोपीत्यर्थः
 ॥ ३९ ॥ ४० ॥ एतेशपथकारिणोज्वालामुखेवसंति ज्वालामुखभोगोत्तरंकःशपथकारीकिंजन्मप्राप्नोतीतितदुच्यते चांडालइति तुल
 सींस्पृष्ट्वायेनकृतांप्रतिज्ञानपालितासज्वालामुखभोगोत्तरंसप्तजन्मसुचांडालोभवतीत्येवंसर्वत्रज्ञेयं ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ॥ ४२ ॥

ब्रह्मकृमिर्ब्राह्मणगृहस्थः कृमिः ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ गंडक इति गंडकः पुंसि खड्गे स्यात्संध्याविद्याप्रभेदयोः अवच्छेदे तत्राये चेति मोदिनी
कोशालक्षणयांतरायकर्ता विघ्नकर्ता भवतीत्यर्थः ॥ ४६ ॥ मंडूकः सप्तजन्मसु भल्लूक इत्यापि पाठः ॥ ४७ ॥ एतेषां सर्वेषां चतुर्दशपुरुषाः

अर्चास्पर्शी ब्रह्मकृमिः सप्तजन्मततः शुचिः ॥ दक्षहस्तप्रदाता च सर्पश्च सप्तजन्मसु ॥ ४३ ॥ ततो भवेद्ब्रह्मही
नो मानवश्च ततः शुचिः ॥ मिथ्यावादी देवगृहे देवलः सप्तजन्मसु ॥ ४४ ॥ विप्रादिस्पर्शकारी च व्याघ्रजातिर्भ
वेत्पुं ॥ ततो भवेच्चमूकः सबधिरश्च त्रिजन्मानि ॥ ४५ ॥ भार्याहीनो बंधुहीनो वंशहीनस्ततः शुचिः ॥ मित्रद्रो
ही च नकुलः कृतघ्नश्चापि गंडकः ॥ ४६ ॥ विश्वासघाती व्याघ्रश्च सप्तजन्मसु भारते ॥ मिथ्यासाक्षी च वक्तव्ये मंडू
कः सप्तजन्मसु ॥ ४७ ॥ पूर्वान्सप्तापरान्सप्तपुरुषान्हंति चात्मनः ॥ नित्यक्रियाविहीनश्च जडत्वेन युतो द्विजः
॥ ४८ ॥ यस्यानास्था वेदवाक्ये मंदं हसति संततं ॥ व्रतोपवासहीनश्च सद्वाक्यपरनिंदकः ॥ ४९ ॥ धूमांधे च
वसेत्सोपिशताब्दं धूमभक्षकः ॥ जलजंतुर्भवेत्सोपिशतजन्मक्रमेण च ॥ ५० ॥ ततो नानाप्रकारश्च मत्स्यजा
तिस्ततः शुचिः ॥ यः करोत्युपहासं च देवब्राह्मणयोर्धने ॥ ५१ ॥ पातयित्वा सपुरुषान् दशपूर्वान् दशापरान् ॥
सोयं याति च धूमांधं धूमध्वांत समन्वितं ॥ ५२ ॥ धूमच्छिष्टो धूमभोजी वसेत्तत्र चतुर्गुणं ॥ ततो मूषकजातिश्च
सप्तजन्मसु भारते ॥ ५३ ॥ ततो नानाविधाः पक्षिजातयः कृमिजातिभिः ॥ ततो नानाविधा वृक्षाः पशवश्च ततो न
रः ॥ ५४ ॥ विप्रो दैवज्ञ जीवी च वैद्य जीवी चिकित्सकः ॥ लाक्षालोहादिव्यापारी रसादिविक्रयी च यः ॥ ५५ ॥ ६४ ॥

प्यधः पतंतीत्याह पूर्वान्सतेति धूमांधकुंडमाह नित्यक्रियेति ॥ ४८ ॥ मंदं हसति कपटेन ॥ ४९ ॥ ५० ॥ उपहास्यं इदमतिनिंद्यं भवतीत्य
भिप्रायेण धनमित्युपलक्षणं तद्वस्तुमात्रस्य ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ चतुर्गुणमिति शताब्दं धूमभक्षक इति पूर्वमुक्तं तदपेक्षया र्थाच्चतुर्गुणं ग्राह्यं चतुर्गुण
मित्यपि पाठः ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ नागवैष्टनं कुंडमाह विप्रो दैवज्ञ इति ॥ ५५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेपंचत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३५ ॥ अर्धाधिकैस्त्रयस्त्रिंशत्पदैर्यम
पुरीभयं ॥ देवभक्त्यानश्यतीतिविस्तरेणोपवर्ण्यते ॥ १ ॥ नरककुंडवर्णनंतदधिकारिणस्तद्यातनाश्वश्रुत्वाकोहिनरोभूत्वातेषुपातकेष्वेकम
पिपातकंनकुर्यात्ततश्चकथंगतिर्भविष्यतीतिर्भातासावित्रीपृच्छति धर्मराजेति यत्सारंसंसारोद्धारकारकमित्यर्थः ॥ १ ॥ २ ॥ सर्वप्रदंसर्वब्रह्म

सयातिनागवेष्टंनगैर्वेष्टितमेवच ॥ वसेत्सलोममानाब्दंतत्रैवनागपाशितः ॥ ५६ ॥ ततो नानाविधाःपक्षि
जातयश्चततो नरः ॥ ततोभवेत्सगणकोवैद्यश्चसप्तजन्मसु ॥ ५७ ॥ गोपश्चकर्मकारश्चरंगकारस्ततःशुचिः ॥
प्रसिद्धानिचकुंडानिकथितानिपतिव्रते ॥ ५८ ॥ अन्यानिचाप्रसिद्धानिक्षुद्राणिसंतितत्रवै ॥ संतिपातकिन
स्तेषुस्वकर्मफलभोगिनः ॥ ५९ ॥ भ्रमंतिनानायोर्निचकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ इति श्रीदेवीभागवतेमहापुरा
णेनवमस्कंधेपंचत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३५ ॥ सावित्र्युवाच ॥ धर्मराजमहाभागवेदवेदांगपारग ॥ नानापुराणेतिहा
सेयत्सारंतत्प्रदर्शय ॥ १ ॥ सर्वेषुसारभूतंयत्सर्वेष्टंसर्वसंमतं ॥ कर्मच्छेदबीजरूपंप्रशस्तंसुखदंनृणां ॥ २ ॥
सर्वप्रदंचसर्वेषांसर्वमंगलकारणं ॥ भयंदुःखंनपश्यंतियेनवैसर्वमानवाः ॥ ३ ॥ कुंडानितेनपश्यंतितेषुनैवप
तंतितच ॥ नभवेद्येनजन्मादितत्कर्तव्यदसांप्रतं ॥ ४ ॥ किमाकाराणिकुंडानितानिवानिर्मितानिच ॥ केचकेनैव
रूपेणतत्रतिष्ठंतिपापिनः ॥ ५ ॥ स्वदेहेभस्मसाद्भूतेयातिलोकांतरंनरः ॥ केनदेहेनवाभोगंकरोतिचशुभाभुभं
॥ ६ ॥ सुचिरंक्लेशभोगेनकथंदेहोननश्यति ॥ देहोवाकिंविधोब्रह्मन्तन्मेव्याख्यातुमर्हसि ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

तत्प्रदं ॥ ३ ॥ ४ ॥ किंचप्रश्नांतरमाह किमाकाराणीति ॥ ५ ॥ प्रश्नांतरमाह स्वदेहेइति देहेभस्मनिजातेकेनदेहेनपरलोकेशुभाशुभभोगं
करोतीत्यर्थः ॥ ६ ॥ किंचप्रश्नांतरमाह सुचिरमिति क्षणमात्रंनहौपतितंवस्नुदग्धंभवति अनेकवर्षेणश्चादिकुंडेषुपतितोदेहः कथंन
नष्टोभवतीत्यर्थः तस्माद्विलक्षणोदेहः स्यात्सूचकीदृशइतिवदेत्यर्थः ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ पंचदेवाः शिवशक्तिविष्णुगणेशमूर्त्याः ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ स्वधर्म

नारायणउवाच ॥ सावित्रीवचनं श्रुत्वा धर्मराजो हरिं स्मरन् ॥ कथां कथितुमारेभे कर्मबंधनिकृंतनीं ॥ ८ ॥
 धर्मराजउवाच ॥ वत्से चतुर्षु वेदेषु धर्मेषु संहितासु च ॥ पुराणेष्वितिहासेषु पांचरात्रादिकेषु च ॥ ९ ॥ अन्ये
 पुधर्मशास्त्रेषु वेदांगेषु च सुब्रतो ॥ सर्वेष्टं सारभूतं च पंचदेवानुसेवनं ॥ १० ॥ जन्ममृत्युजराव्याधिशोकसंतापना
 शनं ॥ सर्वमंगलरूपं च परमानंदकारणं ॥ ११ ॥ कारणं सर्वसिद्धीनां नरकार्णवतारणं ॥ भक्तिवृक्षांकुरकरं क
 र्मवृक्षनिकृंतनं ॥ १२ ॥ विमोक्षसोपानमिदमविनाशपदं स्मृतं ॥ सालोक्यसार्ष्टिसारूप्यसामीप्यादिप्रदं शु
 भं ॥ १३ ॥ कुंडानियमदूतैश्च रक्षितानि सदा शुभे ॥ न हि पश्यन्ति स्वप्ने च पंचदेवार्चकानराः ॥ १४ ॥ देवीभ
 क्तिविहीना ये ते पश्यन्ति ममालयं ॥ यांति ये हरितीर्थं वा श्रयन्ति हरिवासरं ॥ १५ ॥ प्रणमन्ति हरिं नित्यं हर्यर्चाकल
 यन्ति च ॥ न यांति ते पिघोरां च मम संयमिनीं पुरीं ॥ १६ ॥ त्रिसंधिपूता विप्राश्च शुद्धाचारसमन्विताः ॥ निवृत्तिं
 नैव लप्स्यन्ति देवीसेवां विना नराः ॥ १७ ॥ स्वधर्मनिरता चाराः स्वधर्मनिरतास्तथा ॥ गच्छन्तो मृत्युलोकं च दुर्द
 र्शाममकिंकराः ॥ १८ ॥ भीताः शिवोपासकेभ्यो वै न ते यादिवोरगाः ॥ स्वदूतं पाशहस्तं च गच्छन्तं वारयाम्यहं
 ॥ १९ ॥ यास्यन्ति ते च सर्वत्र हरिदासाश्च यं विना ॥ कृष्णमंत्रोपासकाश्च वै न ते यादिवोरगाः ॥ २० ॥ देवीमंत्रो
 पासकानां नाम्नां चैव निकृंतनं ॥ करोति न खले खन्याचित्रगुप्तश्च भीतवत् ॥ २१ ॥ ॥ ६५ ॥

निरतेति स्वधर्मेनिरतो बाह्य आचारो येषां तथा स्वधर्मेनिरतमंतःकरणं येषां ते स्वधर्मनिरताः ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ नाम्नामज्ञानाच्च
 त्रगुप्तेन लिखितानां ॥ २१ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

लोकंगच्छंतीति मणिद्वीपसंज्ञकंदेवलोकंगच्छंतीत्यर्थः ॥ २२ ॥ २३ ॥ यथाचप्रज्वलद्वन्हावितिपूर्वान्वयि मोहोपिसंमोहंप्राप्नोतितान्प्र
तिमोहोनगच्छतीत्यर्थः ॥ २४ ॥ ततस्तस्मात्पुरुषालोभक्रोधौगच्छतइत्यर्थः ॥ २५ ॥ येयेनयांतीति पंचदेवोपासकाइत्यर्थः ॥ २६ ॥

मधुपर्कादिकंतेपांकुरुतेचपुनःपुनः ॥ विलंघ्यब्रह्मलोकंचलोकंगच्छंतितेसति ॥ २२ ॥ दुरितानिचनश्यंतियेषां
संस्पर्शमात्रतः ॥ तेमहाभाग्यवंतोहिसहस्रकुलपावनाः ॥ २३ ॥ यथाचप्रज्वलद्वन्हौशुष्काणिचतृणानिच
प्राप्नोतिमोहःसम्मोहंतांश्चदृष्ट्वाचभीतवत् ॥ २४ ॥ कामश्चकामिनंयातिलोभक्रोधौततःसति ॥ मृत्युःप्रलीय
तेरोगोजराशोकोभयंतथा ॥ २५ ॥ कालःशुभाशुभंकर्महर्षोभोगस्तथैवच ॥ येयेनयांतितांपीडांकथिता
स्तेमयासति ॥ २६ ॥ शृणुदेहविवरणंकथयामियथागमं ॥ पृथिवीवायुराकाशस्तेजस्तोयमितिस्फुटं ॥ २७ ॥
देहिनांदेहबीजंचस्रष्टृसृष्टिविधौपरं ॥ पृथिव्यादिपंचभूतैर्येदेहोनिर्मितोभवेत् ॥ २८ ॥ सकृत्त्रिमोनश्वरश्च
भस्मसाच्चभवेदिह ॥ बद्धौगुष्ठप्रमाणश्चयोजीवःपुरुषःकृतः ॥ २९ ॥ बिभर्तिसूक्ष्मंदेहंतद्रूपंभोगहेतवे ॥
सदेहोनभवेद्भस्मज्वलदग्नौयमालये ॥ ३० ॥ जलेननष्टेदेहीवाप्रहारेसुचिरंकृते ॥ नशस्त्रेणनवास्त्रेणसुतीक्ष्ण
कंटेकेतथा ॥ ३१ ॥ तप्तद्रवेतप्तलेहेतप्तपाषाणएवच ॥ प्रतप्तप्रतिमाश्लेषेयत्पूर्वपतनेपिच ॥ ३२ ॥ नद
ग्धेनचभग्नःसभुंक्तेसंतापमेवच ॥ कथितोदेहवृत्तांतःकारणंचयथागमं ॥ ३३ ॥ कुंडानालक्षणंसर्वंबोधाय
कथयामिते ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेषट्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३६ ॥ ॥ ६५ ॥

अधुनाद्वितीयप्रश्नोत्तरंविस्तरेणाग्रेवक्तव्यमस्तीतितद्विहायान्यप्रश्नानामुत्तराण्याह शृण्विति पंचभूतात्मकेदेहेदग्धेप्यंगुष्ठपरिमितोलिंगदेहो
मोक्षपर्यंतंकथमपिवन्हादिकुंडेषुपतितोपिननश्यतीतितेनदेहेनभोगःसंभवतीतिसमुदायार्थः ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥
॥ ३३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेषट्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३६ ॥ ॥ ७॥ ॥ ७॥ ॥ ७॥

एकोनविंशत्यधिकैः शतश्लोकैः सविस्तरं ॥ कुंडानां लक्षणं सम्यक् यथावदभिवर्ण्यते ॥ १ ॥ अधकुंडाकारविषयकस्य सावित्र्याकृतप्रश्नस्योत्तरमाह पूर्णकुंडमंडलेति अतिनिम्नमित्यपि पाठः पाषाणभेदैर्विलक्षणपाषाणरूपांगारैः पाचितं ज्वलितमित्यर्थः ॥ १ ॥ २ ॥ ऊर्ध्वशतहस्तपरिमिताः शिखाज्वालास्ताभिः समन्वितं ॥ ३ ॥ तप्तकुंडाकारमाह प्रतप्तोदकेति काकुशब्दं तत्रास्थितानां प्राणिनां शब्दस्यानुकरणं

धर्मराज उवाच ॥ पूर्णकुंडमंडलाकारं सर्वकुंडं च वर्तुलं ॥ निम्नं पाषाणभेदैश्च पाचितं बहुभिः सति ॥ १ ॥ न न श्वरं चाप्रलयं निर्मितं चेश्वरे च छया ॥ क्लेशदं पातकानां च नानारूपं तदालयं ॥ २ ॥ ज्वलदंगाररूपं च शतहस्तशिखान्वितं ॥ परितः क्रोशमानं च वह्निं कुंडं प्रकीर्तितं ॥ ३ ॥ महाशब्दं प्रकुर्वद्भिः पापिभिः परिपूरितं ॥ रक्षितं मम दूतैश्च ताडितैश्चापि संततं ॥ ४ ॥ प्रतप्तोदकपूर्णं च हिंस्त्रजंतुसमन्वितं ॥ महाघोरं काकुशब्दं प्रहारेण दृढेन च ॥ ५ ॥ क्रोशार्द्रमानं तद्दूतैस्ताडितैर्मम पार्षदैः ॥ तप्तक्षारोदकैः पूर्णं पुनः कार्कैश्च संकुलं ॥ ६ ॥ संकुलं पापिभिश्चैव क्रोशमानं भयानकं ॥ त्राहीति शब्दं कुर्वद्भिर्मम दूतैश्च ताडितैः ॥ ७ ॥ प्रचलद्भिरनाहारैः शुष्ककंठोष्ठतालुकैः ॥ विड्भिरेव कृतं पूर्णं क्रोशमानं च कुत्सितं ॥ ८ ॥ अतिदुर्गंधिसंस्कृतं व्याप्तं पापिभिरन्वहं ॥ ताडितैर्मम दूतैश्च तदाहारैः सुदारुणैः ॥ ९ ॥ रक्षेति शब्दं कुर्वद्भिस्तत्कीटैरेव भक्षितैः ॥ तप्तमूत्रद्रवैः पूर्णं मूत्रकीटैश्च संकुलं ॥ १० ॥ युक्तं महापातकिभिस्तत्कीटैर्भक्षितैः सदा ॥ गव्यूतिमानं ध्वांताक्तं शब्दकृद्भिश्च संततं ॥ ११ ॥ मद्दूतैस्ताडितैर्घोरैः शुष्ककंठोष्ठतालुकैः ॥ श्लेष्मपूर्णं प्रशमितं तत्कीटैः पूरितं सदा ॥ १२ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥

काकु इति ॥ ४ ॥ ५ ॥ तद्दूतैरेत्यत्र तदिति पूर्वान्वयि तप्तक्षारोदकमाह तप्तक्षारेति पुनः कार्कैश्च संकुलं न क्रैश्च संकुलमित्यपि पाठः ॥ ६ ॥ भयानककुंडमाह संकुलं पापिभिरिति ॥ ७ ॥ विट्कुंडमाह विड्भिरिति ॥ ८ ॥ ९ ॥ मूत्रकुंडमाह तप्तमूत्रेति ॥ १० ॥ ११ ॥ श्लेष्मकुंडमाह श्लेष्मपूर्णमिति ॥ १२ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७५ ॥

वेष्टितैः श्लेष्मणेतिशेषः गरकुण्डमाह क्रोशार्धमिति ॥ १३ ॥ १४ ॥ दूषिकाकुण्डमाह नेत्रयोरिति ॥ १५ ॥ वसाकुण्डमाह वसारसेनेति क्रोशतुर्यक्रोशचतुर्थीशमानमित्यर्थः ॥ १६ ॥ शुक्रकुण्डमाह ॥ १७ ॥ द्रवद्विधावद्विः रक्तकुण्डमाह दुर्गधीति वापीमा

तद्भोजिभिः पापिभिश्चवेष्टितवेष्टितैः सदा ॥ क्रोशार्धगरकुण्डचगरभोजिभिरान्वितं ॥ १३ ॥ गरकीटैर्भक्षितैश्च
पापिभिः पूर्णमेव च ॥ ताडितैर्ममदूतैश्चशब्दकृद्भिश्चकंपितैः ॥ १४ ॥ सर्पाकारैर्वज्रदंष्ट्रैः शुष्ककंठैः सुदारुणैः ॥
नेत्रयोर्मलपूर्णचक्रोशार्धकीटसंयुतं ॥ १५ ॥ पापिभिः संकुलं शब्दमद्भिः कीटभक्षितैः ॥ वसारसेनसंपूर्ण
क्रोशतुर्यसुदुःसहं ॥ १६ ॥ तद्भोजिभिः पातकिभिर्यमदूतैश्चताडितैः ॥ शुक्रकुण्डक्रोशमितं शुक्रकीटैश्चसंयुतं
॥ १७ ॥ पापिभिः संकुलं शब्दवद्भिः कीटभक्षितैः ॥ दुर्गधिरक्तपूर्णचवापीमानं गभीरकं ॥ १८ ॥ तद्भोजि
भिः पापिभिश्चसंकुलं कीटभक्षितं ॥ पूर्णनेत्राश्रुभिस्तप्तं बहुपापिभिरान्वितं ॥ १९ ॥ वापीतुर्यप्रमाणं च रुदद्भिः
कीटभक्षितैः ॥ नृणां गात्रमलैर्युक्तं तद्भक्षैः पापिभिर्युतं ॥ २० ॥ ताडितैर्ममदूतैश्चव्यग्रैश्चकीटभक्षितैः ॥ क
र्णविट्परिपूर्णचतद्भक्षैः पापिभिर्वृतं ॥ २१ ॥ वापीतुर्यप्रमाणं च ब्रुवद्भिः कीटभक्षितैः ॥ मज्जापूर्णनराणां च म
हादुर्गधिसंयुतं ॥ २२ ॥ महापातकिभिर्युक्तं वापीतुर्यप्रमाणकं ॥ परिपूर्णस्निग्धमांसैर्ममदूतैश्चताडितैः
॥ २३ ॥ पापिभिः संकुलं चैव वापीमानं भयानकं ॥ कन्याविक्रयिभिश्चैव तद्भक्ष्यैः कीटभक्षितैः ॥ २४ ॥ ४५ ॥

नेप्रमाणं पूर्वमुक्तं तन्मानं ॥ १८ ॥ कीटभक्षितैः पापिभिः संकुलमित्यन्वयः अश्रुकुण्डमाह पूर्णनेत्राश्रुभिरिति ॥ १९ ॥ वापीतुर्येति पूर्वं
क्तवापीमानचतुर्थीशमानमित्यर्थः गात्रमलकुण्डमाह नृणामिति ॥ २० ॥ कर्णविट्कुण्डमाह कर्णविडिति ॥ २१ ॥ ब्रुवद्भिर्हाहेति शब्दं
कुर्वाणैः मज्जाकुण्डमाह मज्जापूर्णमिति ॥ २२ ॥ मांसकुण्डमाह परिपूर्णमिति ॥ २३ ॥ २४ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.न

१०७

नखादिकुंडचतुष्टयमाह वापीतुर्येति चतुष्टयंनखकुंडलोमकुंडकेशकुंडास्थिकुंडात्मकमित्यर्थः ॥ २५ ॥ प्रतप्तताम्रकुंडमाह प्रतप्तेति ॥ २६ ॥ २७ ॥ गव्यूतिस्त्रिक्रोशयुगं लोहकुंडमाह प्रतप्तेति ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ चर्मकुंडमाह चर्मकुंडमिति तप्तसुराकुंडमा

टी.अ.

३७

पाहीतिशब्दंकुर्वद्भिस्त्रासितैश्चभयानकैः ॥ वापीतुर्यप्रमाणंचनखादिकचतुष्टयं ॥ २५ ॥ पापिभिःसंयुतंशश्व
न्ममदूतैश्चताडितैः ॥ प्रतप्तताम्रकुंडंचताम्रोपर्युल्मुकान्वितं ॥ २६ ॥ ताघ्राणांप्रतिमालक्षैःप्रतप्तैर्व्यापृतं
सदा ॥ प्रत्येकंप्रतिमाश्लिष्टैरुदद्भिःपापिभिर्युतं ॥ २७ ॥ गव्यूतिमानंविस्तीर्णंयमदूतैश्चताडितैः ॥ प्रतप्तलो
हधारंचज्वलदंगारसंयुतं ॥ २८ ॥ लोहानांप्रतिमाश्लिष्टैरुदद्भिःपापिभिर्युतं ॥ प्रत्येकंप्रतिमाश्लिष्टैःशश्वत्प्र
ज्वलितैर्भिषा ॥ २९ ॥ रक्षरक्षेतिशब्दंचकुर्वद्भिर्दूतताडितैः ॥ महापातकिभिर्युक्तंद्विगव्यूतिप्रमाणकं ॥ ३० ॥
भयानकंध्वांतयुक्तंलोहकुंडंप्रकीर्तितं ॥ चर्मकुंडंतप्तसुराकुंडंवाप्यर्द्धमेवच ॥ ३१ ॥ तद्भौजिपापिभिर्व्याप्तंम
मदूतैश्चताडितैः ॥ अतःशाल्मलीकुंडंचवृक्षकंटकशोभितं ॥ ३२ ॥ लक्षपौरुषमानंचक्रोशमानंचदुःखदं ॥ धनु
र्मानैःकंटकैश्चसुतीक्ष्णैःपरिवेष्टितं ॥ ३३ ॥ प्रत्येकंविद्वगात्रैश्चमहापातकिभिर्युतं ॥ वृक्षाग्रान्निपतद्भिश्चय
मदूतैश्चपातितैः ॥ ३४ ॥ जलंदेहीतिशब्दंचकुर्वद्भिःशुष्कतालुकैः ॥ महाभियातिव्यग्रैश्चदंडैःसंभग्नमस्तकैः
॥ ३५ ॥ प्रचलद्भिर्यथातप्ततैलजीविभिरेवच ॥ विषोदैस्तक्षकाणांचपूर्णंचक्रोशमानकं ॥ ३६ ॥ तद्भक्षैःपापि
भिर्युक्तंममदूतैश्चताडितैः ॥ प्रतप्ततैलपूर्णंचकीटादिपरिवर्जितं ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥

ह तप्तसुरेति ॥ ३१ ॥ कंटककुंडमाह अतःशाल्मलीति ॥ ३२ ॥ धनुर्मानैर्हस्तचतुष्टयपरिमितैःकंटकैरित्यर्थः ॥ ३३ ॥ वृक्षाग्राच्छाल्मली
वृक्षाग्रान्निपतद्भिःकंटकैरित्यर्थः ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ तत्रदृष्टांतोयथेति विषोदंकुंडमाह विषोदैरिति ॥ ३६ ॥ प्रतप्ततैलकुंडमाह प्रतप्तेति ॥ ३७ ॥

१०७

॥ ३८ ॥ कुंतकुंडमाह शूलाकारैरिति ॥ ३९ ॥ तल्पमास्तरणंकुंतंशस्त्रविशेषः ॥ ४० ॥ कृमिकुंडमाह कीटैरिति ॥ ४१ ॥
॥ ४२ ॥ पूयकुंडमाह द्विगव्यूतीति ॥ ४३ ॥ सर्पकुंडमाह तालेति ॥ ४४ ॥ मशकुंडदंशकुंडगरलकुंडान्याह कुंडत्रयमिति

महापातकिभिर्युक्तदग्धांगारैश्चवेष्टितं ॥ काकुशब्दंप्रकुर्वद्भिश्चलद्भिर्दूतपीडितैः ॥ ३८ ॥ ध्वांतयुक्तंक्रोशमा
नंक्लेशदंचभयानकं ॥ शूलाकारैःसुतीक्ष्णाग्रैर्लोहशस्त्रैश्चवेष्टितं ॥ ३९ ॥ शस्त्रतल्पस्वरूपंचक्रोशतुर्यप्रमाण
कं ॥ वेष्टितंतत्पातकिभिःकुंतविद्वैश्चवेष्टितैः ॥ ४० ॥ ताडितैर्ममदूतैश्चशुष्ककंठेष्ठतालुकैः ॥ कीटैश्चशंकुप्र
मितैःसर्पमानैर्भयंकरैः ॥ ४१ ॥ तीक्ष्णदंतैश्चविकृतैर्व्याप्तंध्वांतयुतंसति ॥ महापातकिभिर्युक्तंममदूतैश्चता
डितैः ॥ ४२ ॥ द्विगव्यूतिप्रमाणंचपूयकुंडंप्रचक्षते ॥ तद्भक्षैःप्राणिभिर्युक्तंयमदूतैश्चताडितैः ॥ ४३ ॥ ता
लवृक्षप्रमाणैश्चसर्पकोटिभिरावृतं ॥ सर्पवेष्टितगात्रैश्चपापिभिःसर्पभक्षितैः ॥ ४४ ॥ संकुलंशब्दकृद्भिश्चम
मदूतैश्चताडितैः ॥ कुंडत्रयंमशादीनांपूर्णंचमशकादिभिः ॥ ४५ ॥ सर्वक्रोशाद्धमानंचमहापातकिभिर्युतं ॥
हस्तपादादिबद्धैश्चक्षतजौघेनलोहितैः ॥ ४६ ॥ हाहेतिशब्दंकुर्वद्भिस्ताडितैर्ममपार्षदैः ॥ वज्रवृश्चिकयोःकुंडं
ताभ्यांचपरिपूरितं ॥ ४७ ॥ वाप्यर्द्धपापिभिर्युक्तंवज्रवृश्चिकदंशितैः ॥ कुंडत्रयंशरादीनांतैरेवपरिपूरितं
॥ ४८ ॥ तैर्विद्वैःपापिभिर्युक्तंवाप्यर्द्धैरक्तलोहितैः ॥ तप्ततोयोदकैःपूर्णसध्वांतंगोलकुंडकं ॥ ४९ ॥ कीटैः
संकुलमानैश्चभक्षितैःपापिभिर्युतं ॥ वाप्यर्द्धमानंभीतैश्चपापिभिःकीटभक्षितैः ॥ ५० ॥ रुदद्भिःक्रोशमानै
श्चयमदूतैश्चताडितैः ॥ अतिदुर्गधिसंयुक्तंदुःखदंपापिनांसदा ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥

॥ ४५ ॥ ४६ ॥ वज्रदंष्ट्रकुंडवृश्चिककुंडद्वयमाह वज्रेति ॥ ४७ ॥ दंशितैर्दंष्ट्रैरित्यर्थः शरकुंडशूलकुंडखड्गकुंडान्याह कुंडत्रयमिति
॥ ४८ ॥ वाप्यर्द्धमानंकुंडत्रयं गोलकुंडमाह तप्ततोयोदकैरिति ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥

नक्रकुंडमाह दारुणैरिति ॥ ५२ ॥ काककुंडमाह विष्मूत्रेति ॥ ५३ ॥ मंथानकुंडमाह मंथानेति व्रीजकुंडमाह व्रीजेति मंथानव्रीजौकीटविशेषौ ॥ ५४ ॥ वज्रकुंडमाह धनुःशतमिति जीवयुक्तवज्राकारदंष्ट्रान्वितजीवयुक्तमित्यर्थः ॥ ५५ ॥ तप्तपाषाणकुंडमाह वापीद्विगुणैरिति ॥ ५६ ॥ तीक्ष्णपाषाणकुंडमाह क्षुरधारोपमैरिति परंतीक्ष्णपाषाणकुंडमित्यर्थः लालाकुंडमाह लालाकुंडचलोहितैरितिलोहितयुक्तैः

दारुणैर्विकृताकारैर्भक्षितं पापिभिर्युतं ॥ वाप्यर्द्धपरिपूर्णचजलस्थैर्नक्रकोटिभिः ॥ ५२ ॥ विष्मूत्रश्लेष्मभक्षैश्चसंयुतं शतकोटिभिः ॥ काकैश्च विकृताकारैर्भक्षितैः पापिभिर्युतं ॥ ५३ ॥ मंथानकुंडं व्रीजकुंडं ताभ्यां पूर्णधनुःशतं ॥ भक्षितैः पापिभिर्युक्तं शब्दकृद्भिश्च संततं ॥ ५४ ॥ धनुःशतं जीवयुक्तं पापिभिः संकुलं सदा ॥ शब्दकृद्भिर्वज्रदंष्ट्रैः सांद्रध्वांतमयं परं ॥ ५५ ॥ वापीद्विगुणमानं च तत्प्रस्तरनिर्मितं ॥ ज्वलदंगारसदृशं चलद्भिः पापिभिर्युतं ॥ ५६ ॥ क्षुरधारोपमैस्तीक्ष्णैः पाषाणैर्निर्मितं परं ॥ महापातकिभिर्युक्तं लालाकुंडं च लोहितैः ॥ ५७ ॥ क्रोशमात्रं च गंभीरं ममदूतैश्च ताडितैः ॥ तप्तांजनाचलाकारैः परिपूर्णधनुःशतं ॥ ५८ ॥ चलद्भिः पापिभिर्युक्तं ममदूतैश्च ताडितैः ॥ पूर्णचूर्णद्रवैः क्रोशमानं पापिभिरन्वितं ॥ ५९ ॥ तद्गोजिभिः प्रदग्धैश्च ममदूतैश्च ताडितैः ॥ कुंडंकुलालचक्रं च घूर्णमानं च संततं ॥ ६० ॥ सुतीक्ष्णं षोडशारं च चूर्णितैः पापिभिर्युतं ॥ अतीववक्रं निम्नं च द्विगव्यूतिप्रमाणकं ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥

प्राणिभिरन्वितमित्यर्थः ॥ ५७ ॥ मसीकुंडमाह तप्तांजनेति तप्तोयोजनाचलस्तदाकारैः पाषाणैरन्वितमित्यर्थः ॥ ५८ ॥ यमदूतैश्च ताडितैर्महापातकिभिर्युक्तमित्यनुक्तस्थले सर्वत्र बोध्यम् चूर्णकुंडमाह पूर्णचूर्णेति तत्तचूर्णरेणुभिरित्यर्थः ॥ ५९ ॥ चक्रकुंडमाह कुलालेति घूर्णमानं भ्रममाणं ॥ ६० ॥ वक्रकुंडमाह अतीववक्रमिति ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥

कंदरादरी ॥ ६२ ॥ कूर्मकुंडमाह कोटिभिरिति ॥ ६३ ॥ जलस्थैःकच्छपैःसंयुतैःकच्छपैर्भक्षितैःपापिभिर्युतामित्यन्वयः ज्वा
लाकुंडमाह ज्वालाकलापैरिति ॥ ६४ ॥ भस्मकुंडमाह क्रोशमानमिति ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ दग्धकुंडमाह क्रोशमानंध्वांतयुक्तमि

कंदराकारनिर्माणंतप्तोदैश्चसमन्वितं ॥ महापातकिभिर्युक्तंभक्षितैर्जलजंतुभिः ॥ ६२ ॥ ज्वलद्भिःशब्दकृद्भि
श्चध्वांतयुक्तंभयानकं ॥ कोटिभिर्विकृताकारैःकच्छपैश्चसुदारुणैः ॥ ६३ ॥ जलस्थैःसंयुतैश्चभक्षितैःपापि
भिर्युतं ॥ ज्वालाकलापैस्तेजोभिर्निर्मितंक्रोशमानकं ॥ ६४ ॥ शब्दकृद्भिःपातकिभिःसंयुतंक्लेशदंसदा ॥ क्रो
शमानंचगंभीरंतप्तभस्मभिरन्वितं ॥ ६५ ॥ शश्वज्ज्वलद्भिःसंयुक्तंपापिभिर्भस्मभक्षितैः ॥ तप्तपाषाणलो
हानांसमूहैःपरिपूरितैः ॥ ६६ ॥ पापिभिर्दग्धगात्रैश्चयुक्तंचशुष्कतालुकैः ॥ क्रोशमानंध्वांतयुक्तंगंभीरमति
दारुणं ॥ ६७ ॥ ताडितैश्चप्रदग्धैश्चदग्धकुंडंप्रकीर्तितं ॥ अतीवोर्मियुतंतोयंप्रतप्तक्षारसंयुतं ॥ ६८ ॥ ना
नाप्रकारैर्विस्तैर्जलजंतुभिरन्वितं ॥ द्विगव्यूतिप्रमाणंचगंभीरंध्वांतसंयुतं ॥ ६९ ॥ तद्गक्ष्यैःपातकिभिर्युक्तं
दंशितैर्जलजंतुभिः ॥ ज्वलद्भिःशब्दकृद्भिश्चनपश्यद्भिःपरस्परं ॥ ७० ॥ प्रतप्तसूचीकुंडंचकीर्तितंचभयानकं
॥ असीवधारापत्रस्याप्युच्चैस्तालतरोरधः ॥ ७१ ॥ क्रोशार्धमानंकुंडंचपतत्पत्रसमन्वितं ॥ पापिनांरक्तपूर्णं
चवृक्षाग्रात्पततांध्रुवं ॥ ७२ ॥ परित्राहीतिशब्दंचकुर्वतामसतामपि ॥ गंभीरंध्वांतयुक्तंचरक्तकीटसमन्वि
तं ॥ ७३ ॥ तदसिपत्रकुंडंचकीर्तितंचभयानकं ॥ धनुःशतप्रमाणंचक्षुरधारास्त्रसंयुतं ॥ ७४ ॥ ॥ ६५ ॥

ति क्रोशमानंपापिभिःशब्दायमानं ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ तप्तसूचीकुंडमाह प्रतप्तसूचीति असिपत्रकुंडमाह असीवेति
यस्यतालतरोःपत्रस्यधाराअसीवासिलताधारेवभवति तस्यतालतरोःक्रोशार्धमानाधोदेशेपतत्तालसमन्वितंतदसिपत्रकुंडंभवतीत्यर्थः दी
र्घस्तुछांदसः क्षुरधारकुंडमाह धनुःशतेति ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥

दे.भा.न.

१०९

सूचीमुखकुंडमाह सूचीमुखेति ॥ ७५ ॥ गोकामुखकुंडमाह कस्यचिदिति गोकामुखस्यगोकानामकस्यकस्याचिज्जंतुविशेषस्यमु
खस्येवमुखंयस्यतद्रोकामुखमित्यभिप्रायः ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ तत्कीटभक्षितानां गोकामुखकीटभक्षितानांपातकिनामित्यर्थः नक्रमुखा
कारकुंडमाह कुंडनक्रेति ॥ ७८ ॥ गजदंशकुंडमाह धनुःशतमिति पापिभिःसंयुतमित्यादिकमत्राप्युदाहार्यं ॥ ७९ ॥ गोमुखा

टी.अ.

३७

पापिनांरक्तपूर्णचक्षुरधारंभयानकं ॥ सूचीमुखास्त्रसंयुक्तंपापिरक्तौघपूरितं ॥ ७५ ॥ पंचाशद्वनुरायामंक्लेश
दंचसूचीमुखं ॥ कस्यचिज्जंतुभेदस्यगोकामुखस्यमुखाकृति ॥ ७६ ॥ कूपरूपंगभीरंचधनुर्विशत्प्रमाणकं ॥
महापातकिनांचैवमहत्क्लेशप्रदंपरं ॥ ७७ ॥ तत्कीटभक्षितानांचनम्रास्यानांचसंततं ॥ कुंडनक्रमुखाकारंध
नुःषोडशमानकं ॥ ७८ ॥ गंभीरंकूपरूपंचपापिनांसंकुलंसदा ॥ धनुःशतप्रमाणंचकीर्तितंगजदंशनं ॥ ७९ ॥
धनुस्त्रिशत्प्रमाणंचकुंडंचगोमुखाकृति ॥ पापिनांक्लेशदंशश्वद्रोमुखंपरिकीर्तितं ॥ ८० ॥ कालचक्रेणसंयुक्तं
भ्रममाणंभयानकं ॥ कुंभाकारंध्वांतयुक्तंद्विगव्यूतिप्रमाणकं ॥ ८१ ॥ लक्षपौरुषमानंचगंभीरंविस्तृतंसति ॥
कुत्रचित्तप्ततैलंचताम्रादिकुंडमेवच ॥ ८२ ॥ पापिनांचप्रधानैश्चमूर्छितैःकृमिभिर्युतं ॥ परस्परंचनश्यद्भिःशब्द
कृद्भिश्चसंततं ॥ ८३ ॥ ताडितैर्यमदूतैश्चमुसलैर्मुद्गरैस्तथा ॥ घूर्णमानैःपतद्भिश्चमूर्छितैश्चक्षणक्षणं ॥ ८४ ॥
पातितैर्यमदूतैश्चरुदंत्यस्मात्क्षणंपुनः ॥ यावंतःपापिनःसंतिसर्वकुंडेषुसुंदरि ॥ ८५ ॥ ततश्चतुर्गुणाःसंतिकुं
भीपाकेचदुःखदे ॥ सुचिरंवध्यमानास्तेभोगदेहाननश्वराः ॥ ८६ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥

कारंकुंडमाह धनुस्त्रिशदिति ॥ ८० ॥ कुंभीपाककुंडमाह कालचक्रेणेति कालाकारभयंकरचक्रेणेत्यर्थः ॥ ८१ ॥ तस्मिन्कुंभी
पाकेन्यानिकुंडान्यप्यंतर्भूतानिसंतीत्याह कुत्रचित्तप्ततैलमिति ॥ ८२ ॥ मूर्छितैःपापिनांप्रधानैःकृमिभिश्चयुतमित्यर्थः ॥ ८३ ॥
॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥

१०९

कालसूत्रकुंडमाह कालनिर्मितेति कालेननिर्मितमतिकर्कशसूत्रमित्यर्थः ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ मत्स्योदकुंडमाह अवटइति सएवम
त्स्योदइत्यर्थः तल्लक्षणमाह प्रतप्तेति चतुर्विंशत्धनुःप्रमाणकंविस्तरेणेत्यर्थः ॥ ९० ॥ ९१ ॥ धनुःशतेतत्प्रमाणेगतेइत्यर्थः ॥ ९२ ॥ कृमि

सर्वकुंडप्रधानंचकुंभीपाकंप्रकीर्तितं ॥ कालनिर्मितसूत्रेणनिबद्धायत्रपापिनः ॥ ८७ ॥ उत्थापिताश्चदूतैश्च
क्षणमेवनिमज्जिताः ॥ निश्वासबद्धाःसुचिरंतथामोहंगताःपुनः ॥ ८८ ॥ अतीवक्लेशसंयुक्तादेहभोगेनसुंद
रि ॥ प्रतप्ततोययुक्तंचकालसूत्रंप्रकीर्तितं ॥ ८९ ॥ अवटःकूपभेदश्चमत्स्योदःसउदाहृतः ॥ प्रतप्ततोयपूर्णंच
चतुर्विंशत्प्रमाणकं ॥ ९० ॥ व्याप्तंमहापातकिभिर्व्यादग्धांगैश्चसंततं ॥ मद्दूतैस्ताडितैःशब्दवटोदंप्रकीर्ति
तं ॥ ९१ ॥ यत्रोदस्पर्शमात्रेणसर्वव्याधिश्चपापिनां ॥ भवेदकस्मात्पततांयस्मिन्कुंडेधनुःशते ॥ ९२ ॥
अस्तुदैर्भक्षितैस्तुप्राणिभिर्यच्चसंकुलं ॥ हाहेतिशब्दंकुर्वद्भिस्तदेवास्तुदंविदुः ॥ ९३ ॥ तप्तपांसुभिराकीर्ण
ज्वलद्भिस्तुषदग्धकैः ॥ तद्भक्षैःपापिभिर्युक्तंपांसुभोजैर्धनुःशतं ॥ ९४ ॥ पातमात्रेणपापीचपाशेनवेष्टितोभ
वेत् ॥ क्रोशमात्रेणकुंडंचतत्पाशवेष्टनंविदुः ॥ ९५ ॥ पातमात्रेणपापीचशूलेनवेष्टितोभवेत् ॥ धनुर्विंशत्प्रमा
णंचशूलप्रोतंप्रकीर्तितं ॥ ९६ ॥ पततांपापिनांयत्रभवेदेवप्रकंपनं ॥ अतीवहिमतोयाक्तंक्रोशाद्धैचप्रकंपनं
॥ ९७ ॥ ददत्येवहिमेदूतायत्रोल्काःपापिनांमुखे ॥ धनुर्विंशत्प्रमाणंतदुल्काभिश्चसुसंकुलं ॥ ९८ ॥ लक्ष
पौरुषमानंचगंभीरंचधनुःशतं ॥ नानाप्रकारकृमिभिःसंयुक्तंचभयानकं ॥ ९९ ॥ ॥ १०॥

कंतुकंकुंडमाह अस्तुदैति अस्तुदंकृमिकंतुकं ॥ ९३ ॥ पांसुभोज्यंकुंडमाह तप्तपांसुभिरिति ॥ ९४ ॥ पाशवेष्टनंकुंडमाह पातमात्रेणेति पतनमा
त्रेणेत्यर्थः ॥ ९५ ॥ शूलप्रोतमाह पातमात्रेणेति ॥ ९६ ॥ प्रकंपनंकुंडमाह पततामिति ॥ ९७ ॥ उल्कामुखंकुंडमाह ददत्येवहीति उल्काज्व
लत्काष्ठानि ॥ ९८ ॥ अंधकूपमाह लक्षपौरुषमानंचेति गंभीरमधइत्यर्थः धनुःशतंविस्तीर्णं ॥ ९९ ॥ ॥ १०॥ ॥ १०॥

दे.भा.न.

११०

॥ १०० ॥ १०१ ॥ वेधनकुंडमाह नानाप्रकारेति ॥ २ ॥ ताडनकुंडमाह दंडेनेति ॥ ३ ॥ जालरंध्रकुंडमाह निरुद्धा इति ॥ ४ ॥
देहचूर्णकुंडमाह पततांपापिनामिति लोहबंदीलोहबेडीतिभाषया ॥ ५ ॥ धनुर्विशत्प्रमाणकंविस्तृत्या ॥ ६ ॥ दलनकुंडमाह द

टी.अ.

३७

अत्यंधकारव्याप्तचकूपाकारचवर्तुलं ॥ तद्गक्ष्यैःपापिभिर्युक्तं प्रणश्यद्भिः परस्परं ॥ १०० ॥ तप्ततोयप्रदग्धै
श्रज्वलाद्भिः कीटभक्षितैः ॥ ध्वांतेनचक्षुषाचांधैरंधकूपंप्रकीर्तितं ॥ १ ॥ नानाप्रकारशस्त्रौघैर्यत्रविद्धाश्चपापिनः
॥ धनुर्विशत्प्रमाणंचवेधनंतत्प्रकीर्तितं ॥ २ ॥ दंडेनताडितायत्रयमदूतैश्चपापिनः ॥ धनुःषोडशमानंचतत्कुं
डदंडताडनं ॥ ३ ॥ निरुद्धाश्चमहाजालैर्यथामीनाश्चपापिनः ॥ धनुर्विशत्प्रमाणंचजालरंध्रंप्रकीर्तितं ॥ ४ ॥
पततांपापिनांकुंडेदेहशूर्णोभवेदिह ॥ लोहबंदीनिबद्धानांकोटिपौरुषमानकं ॥ ५ ॥ गंभीरंध्वांतसंयुक्तंधनु
र्विशत्प्रमाणकं ॥ मूर्छितानांजडानांचदेहचूर्णंप्रकीर्तितं ॥ ६ ॥ दलिताःपापिनोयत्रयमदूतैश्चताडिताः ॥ ध
नुःषोडशमानंचतत्कुंडदलनंस्मृतं ॥ ७ ॥ पतनेनैवपापीचशुष्ककंठौष्ठतालुकः ॥ वालुकासुचतप्तासुधनुस्त्रिश
त्प्रमाणकं ॥ ८ ॥ शतपौरुषमानंचगंभीरंध्वांतसंयुतं ॥ शोषणंकुंडमेतद्विपापिनांपरदुःखदं ॥ ९ ॥ नाना
चर्मकषायोदपरिपूर्णधनुःशतं ॥ दुर्गंधियुक्तंतद्गक्ष्यैःप्राणिभिःसंकुलंकषं ॥ १० ॥ शूर्पाकारमुखंकुंडंधनुर्द्वादश
मानकं ॥ तप्तलोहवालुकाभिःपूर्णपातकिसंयुतं ॥ ११ ॥ दुर्गंधियुक्तंतद्गक्ष्यैःपापिभिःसंकुलंसति ॥ शूर्पाका
रमुखंकुंडंधनुर्द्वादशमात्रकं ॥ १२ ॥ प्रतप्तवालुकापूर्णमहापातकिभिर्युतं ॥ अंतरग्निशिखानांचज्वालाव्या
प्तमुखंसदा ॥ ११३ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥

लिता इति ॥ ७ ॥ शोषणंकुंडमाह पतनेनैवेति ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ कषंकुंडमाह नानाचर्मैति ॥ १० ॥ शूर्पकुंडमाह शूर्पाकार
मुखमिति ॥ ११ ॥ १२ ॥ ब्वालामुखंकुंडमाह प्रतप्तवालुकेति ॥ ११३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

११०

॥११४॥१५॥ धूमांधकुंडमाह तप्तेष्टकाभ्यंतरितमिति ॥ १६॥ नागवेष्टनकुंडमाह पातमात्राद्यत्रेति ॥१७॥११८॥ इति श्रीदेवीभा
गवततिलकेनवमस्कंधेसप्तत्रिंशोऽध्यायः ॥३७॥ नवतिश्लोकवर्गैश्चषट्पद्यैः संयुतैस्तथा ॥ देव्याः कृत्वामहोत्कर्षभाक्तिरूपंचवर्ण्यते ॥१॥ पूर्वा
ध्यायेनानायातनाप्रदानिकुंडानिश्रुत्वातिर्भातासावित्रीदेवीभक्त्यासर्वमिदंभयादिकंनश्यतीतिधर्मराजवदनात्पूर्वश्रुत्वाययाभक्त्यासर्वमिदंनश्य

धनुर्विंशतिमात्रंचप्रमाणंयस्यसुंदरि ॥ ज्वालाभिर्दग्धगात्रैश्चपापिभिर्व्याप्तमेवच ॥११४॥ तन्महाक्लेशदं
शश्वत्कुंडंज्वालामुखंस्मृतं ॥ पातमात्राद्यत्रपापीमूर्छितोवैनरोभवेत् ॥१५॥ तप्तेष्टकाभ्यंतरितंवाप्यर्धजिह्वा
कुंडकं ॥ धूमांधकारसंयुक्तंधूमांधैःपापिभिर्युतं ॥ १६॥ धनुःशतंश्चासरंभ्रैर्धूमांधंपरिकीर्तितं ॥ पातमात्रा
द्यत्रपापीनागैश्चवेष्टितोभवेत् ॥ १७॥ धनुःशतंनागपूर्णतन्नागैर्वेष्टितंभवेत् ॥ षडशीतिचकुंडानिमयोक्ता
निनिशामय ॥११८॥ लक्षणंचापितेपांचकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधे
नारदनारायणसंवादेसावित्र्युपाख्यानेसप्तत्रिंशोऽध्यायः ॥३७॥ सावित्र्युवाच ॥ देवीभक्तिर्देहिमहं सारा
णांचैवसारकं ॥ पुंसांमुक्तिद्वारबीजंनरकार्णवतारकं ॥१॥ कारणंमुक्तिसाराणांसर्वाशुभविनाशनं ॥ दारकं क
र्मवृक्षाणांकृतपापौघहारणं ॥ २॥ मुक्तिश्चकतिधाप्यस्ति किंवातासांचलक्षणं ॥ देवीभक्तिर्भक्तिभेदंनिषेक
स्यापिखंडनं ॥ ३॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥

तिसाभक्तिरेवप्रथमंगुरुप्रसादंविनादुर्लभेत्यभिप्रायेणधर्मराजंगुरुंप्राप्तिदेवीभाक्तिमेवयाचते देवीभक्तिर्देहीति गुरुप्रसादमंतरादुर्लभास्तीति
त्वमेवप्रसादंकृत्वादेहीत्यभिप्रायः भक्तिमेववर्णयति पुंसामिति द्वारबीजंभक्तिरूपंवस्त्वितिशेषःपुंसकप्रयोगात् ॥ १॥ २॥ किंचमुक्त
यःकतिविधाःसंतितासांचलक्षणंचकिंतथाभक्तेःस्वरूपंकिंतद्देवाश्चकतिसंतितयानिषेकःकृतकर्मणांभोगोवक्ष्यमाणलक्षणस्तस्यखंडनंनानाशनंच
केनभवतितदेतत्सर्ववदेत्यभिप्रायेणपृच्छति मुक्तिश्चेति ॥ ३॥ ॥ ७॥ ॥ ७॥ ॥ ७॥

दे.भा.न

१११

ननुत्वमेवबुद्ध्याज्ञानाहीतिचेत्तत्राह तत्त्वज्ञानेति विधिनादेवैवस्त्रीजातिर्वेदशास्त्रानधिकारिण्यतिमूढानिर्मितातथाचतादृशीसाकथमतिसूक्ष्मं वस्तुस्वबुद्ध्याज्ञातुंसमर्थेतिभावः ननुतादृश्यामूढायामयापिकिवक्तव्यमितिचेत्तत्राह किंचिज्ज्ञानमिति केवलंसारभूतंवस्तुगुर्वनुग्रहवशान्मूढे नापिज्ञातुंशक्यतेतर्कादिकमेवतुबुद्धिसाध्यंतन्नास्तिचेन्मास्तितिभावः तथाचश्रुतिः यस्यदेवेपराभक्तिर्यथादेवेतथागुरौ तस्यैतेकथिताह्य र्थाःप्रकाशंतेमहात्मनइति वेदविदांवरेत्यनेननचिकेतसेबालकायत्वैवकृपयाब्रह्मविद्योपदिष्टातयाचसज्ञानिप्रवरोजातइतिकठवल्गुक्ताकथा सूचिता ॥ ४ ॥ मादृश्याःपामरायाअनाथायाउद्वारेमहतीधर्मवृद्धिस्तवस्यादित्याह सर्वदानंचेति अनेनचोपदेश्यवस्तुनःसर्वसारभूतत्वंस्व

तत्त्वज्ञानविहीनाचस्त्रीजातिर्विधिनिर्मिता ॥ किंचिज्ज्ञानंसारभूतंवदवेदविदांवर ॥ ४ ॥ सर्वदानंचयज्ञश्चती र्थस्नानंव्रतंतपः ॥ अज्ञानिज्ञानदानस्यकलांनार्हतिषोडशीं ॥ ५ ॥ पितुःशतगुणामातागौरवेचेतिनिश्चितं ॥ मातुःशतगुणःपूज्योज्ञानदातागुरुःप्रभो ॥ ६ ॥ धर्मराजउवाच ॥ पूर्वसर्वोवरोदत्तोयस्तेमनसिवांछितः ॥ अधुनाशक्तिभक्तिस्तेवत्सेभवतुमद्वारात् ॥ ७ ॥ श्रोतुमिच्छसिकल्याणिश्रीदेवीगुणकीर्तनं ॥ वक्तृणांपृच्छका नांचश्रोतृणांकुलतारणं ॥ ८ ॥ शेषोवक्रसहस्रेणनहियद्वक्तुमीश्वरः ॥ मृत्युंजयोक्षमश्चवक्तुंपंचमुखेनच ॥ ९ ॥ धाताचतुर्णांवेदानांविधाताजगतामपि ॥ ब्रह्माचतुर्मुखेनैवनालंविष्णुश्चसर्ववित् ॥ १० ॥ ७५ ॥

स्यचतस्मिन्नातुरतासूचिता ॥ ५ ॥ ननुतवपरमेश्वरेयद्यपिप्रेमास्ति तथापिगुरौनास्तीतिचेत्तत्राह पितुःशतगुणेति मनसात्वयिप्रेमानिरति शयएवममास्तिब्राह्मंसेवादिकंतुतवपरमेश्वरस्यमयाकिंकर्तुंशक्यतइतिभावः ॥ ६ ॥ इत्यंसावित्रीवाक्यंश्रुत्वाहृदयेसगद्गदोधर्मराजआह धर्मराजउवाच पूर्वसर्वइति हेवत्सेयत्त्वयाज्ञानंप्रार्थ्यतेसवांछितस्तेमनसिविद्यमानोवरोमयापूर्वमेवदत्तोनातःपरमधिकंज्ञानमास्ति तत्रैवविश्वा संकुर्वितिभावः यस्याभगवत्याःप्रसादेनतत्त्वज्ञानंजायतेतद्वक्तिरधुनाप्रार्थ्यतेचेत्सापिमद्वरप्रसादाद्भवत्वित्याह अधुनाशक्तिभक्तिस्तेइति ॥ ७ ॥ अथयदिमूलप्रकृतेर्जगन्मातुर्गुणश्रवणेनववांछास्तिचेत्तत्राह श्रोतुमिच्छसीति ॥ ८ ॥ तस्यागुणवर्णनंतुमहतामपिदुःशंकमित्याह शेषोवक्रसहस्रेणेति ॥ ९ ॥ १० ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥

टी.अ.
३८

१११

॥११॥ यद्गुणानां यस्य भगवत्या गुणानामित्यर्थः ॥१२॥ ॥१३॥ ॥१४॥ ॥१५॥ १६॥ लोकेषु कश्चिन्मनुष्यः किञ्चिद्विजानाति तदपेक्षया अतिरिक्तमधिकं तु ब्रह्मा विजानातीत्याह कश्चिदिति ॥ १७॥ तदपेक्षया अधिकं गणेशो जानातीत्याह ततोतिरिक्तमिति ॥ १८॥ १९॥ तत्रैव गोलोके एव तद्गुणोत्कीर्तनं भगवती गुणोत्कीर्तनं श्रीकृष्णेन शिवं प्रतिकथितमित्यर्थः धर्मचेति तच्छ्रुत्वा तस्याः देव्याः प्रापकं धर्मतन्त्रादिषु शि

कार्तिकेयः षण्मुखेन नापि वक्तुमलं ध्रुवं ॥ न गणेशः समर्थश्च योगोद्गाणां गुरोर्गुरुः ॥ ११ ॥ सारभूताश्च शास्त्राणां वेदाश्च त्वार एव च ॥ कलामात्रं यद्गुणानां न वदंति बुधाश्च ये ॥ १२ ॥ सरस्वतीजिडीभूतानां लंतद्गुणवर्णने ॥ सनत्कुमारी धर्मश्च सनंदनश्च सनातनः ॥ १३ ॥ सनकः कपिलः सूर्यो येऽन्ये च ब्रह्मणः सुताः ॥ विचक्षणान यद्वक्तुं किंचान्ये जडबुद्धयः ॥ १४ ॥ न यद्वक्तुं क्षमाः सिद्धामुनीन्द्रा योगिनस्तथा ॥ केचान्ये च वयं केवा श्रीदेव्या गुणवर्णने ॥ १५ ॥ ध्यायंते यत्पदांभोजं ब्रह्मविष्णुशिवादयः ॥ अतिसाध्यं स्वभक्तानां तदन्येषां सुदुर्लभं ॥ १६ ॥ कश्चिर्किञ्चिद्विजानाति तद्गुणोत्कीर्तनं शुभं ॥ अतिरिक्तं विजानाति ब्रह्मा ब्रह्मविशारदः ॥ १७ ॥ ततोतिरिक्तं जानाति गणेशो ज्ञानिनां गुरुः ॥ सर्वातिरिक्तं जानाति सर्वज्ञः शंभुरेव सः ॥ १८ ॥ तस्मै दत्तं पुरा ज्ञानं कृष्णेन परमात्मना ॥ अतीव निर्जने रण्ये गोलोके रासमंडले ॥ १९ ॥ तत्रैव कथितं किञ्चित्तद्गुणोत्कीर्तनं शुभं ॥ धर्मं च कथयामास शिवलोकेशिवः स्वयं ॥ २० ॥ धर्मस्तु कथयामास भास्वते पृच्छते तथा ॥ यामाराध्यमत्पितापि संप्रापत पसासति ॥ २१ ॥ पूर्वस्वविषयं चाहं न गृणहामि प्रयत्नतः ॥ वैराग्ययुक्तस्तपसे गंतुमिच्छामि सुव्रते ॥ २२ ॥

वः शिवलोकमागत्य कथयामासेत्यर्थः ॥ २० ॥ तमेव धर्मं पृच्छते भास्वते सूर्याय धर्ममूर्तिं भगवान् कथयामासेत्याह धर्मस्त्विति यां भगवती माराध्य मत्पिता सूर्यस्तपसा प्राप भगवती स्वरूपमिति शेषः ॥ २१ ॥ स्वविषयं यमलोकाधिपत्यं देवैर्दायमानं न गृणहामि न गृहीतवान् कुतो यतो हं वैराग्ययुक्तस्ततो लोकानां पीडाकरमधिकारं कथं गृहीष्यामि किंतु तपसे गंतुमिच्छामि इच्छां कृतवान् ॥ २२ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

तदामामिति यदैवमिच्छाकृतवांस्तदामत्पितासूर्यः तस्याभगवत्यागुणकैर्तनस्वरूपानुभवेनभवतितथातत्कृतवांस्तदाहंभगवतीस्वरूपज्ञानेन
निर्भयोभूत्वाधिकारयमलोकस्यकृतवानित्यर्थः तदेवमत्पित्रोपदिष्टत्वांप्रतिकथयामीत्याह यथागममिति ॥ २३ ॥ तद्गुणमिति सैवस्वयं
भगवतीस्वस्यगुणंनजानातितदन्यस्यतुकाकथातथापियथामतिवक्ष्यामीतिभावः तत्रदृष्टान्तमाह यथाकाशइति ॥ २४ ॥ मायाविशिष्टब्रह्मरूपि
प्याभगवत्याः स्वरूपप्रथमतः सकलकारणकारणवर्णयति सर्वात्मेति ॥ २५ ॥ नित्योदेहः स्वरूपस्य ॥ २६ ॥ स एव परमात्मा मायाविशिष्टः

तदामांकथयामासपितातद्गुणकीर्तनं ॥ यथागमंतद्वदामिनिबोधातीवदुर्गमं ॥ २३ ॥ तद्गुणं सानजानातितद
न्यस्यचकाकथा ॥ यथाकाशोनजानातिस्वांतमेववरानने ॥ २४ ॥ सर्वात्मा सर्वभगवान् सर्वकारणकारणः ॥
सर्वेश्वरश्च सर्वाद्यः सर्ववित्परिपालकः ॥ २५ ॥ नित्यरूपी नित्यदेही नित्यानंदो निराकृतिः ॥ निरंकुशो निराशं
को निर्गुणश्च निरामयः ॥ २६ ॥ निर्लिप्तः सर्वसाक्षी च सर्वाधारः परात्परः ॥ मायाविशिष्टः प्रकृतिस्तद्विकाराश्च प्रा
कृताः ॥ २७ ॥ स्वयंपुमांश्च प्रकृतिस्तावभिन्नौ परस्परं ॥ यथावन्हेस्तस्य शक्तिर्नभिन्नास्त्येव कुत्रचित् ॥ २८ ॥ से
यं शक्तिर्महामाया सच्चिदानंदरूपिणी ॥ रूपं विभर्त्य रूपा च भक्तानुग्रहहेतवे ॥ २९ ॥ गोपालसुंदरी रूपं प्रथमं सा
ससर्जह ॥ अतीव कमनीयं च सुंदरं सुमनोहरं ॥ ३० ॥ नवीननीरदश्यामं किशोरंगोपवेपकं ॥ कंदर्पकोटिलावण्यं
लीलाधाममनोहरं ॥ ३१ ॥ शरन्मध्यान्हपद्मानां शोभामोचनलोचनं ॥ शरत्पार्वणकोटीं दुशोभाप्रच्छादनाननं ॥ ३२ ॥

प्रकृतिर्मूलप्रकृतिर्भगवतीत्यर्थः यथागजशरीरेप्रविष्टचैतन्यस्य गजेतिसंज्ञा तथा मायाशरीरेप्रविष्टचैतन्यस्य मायाप्रकृतिरितिसंज्ञेतिभावः त
स्याविकाराः प्रकृतपदवाच्याः सर्वे भवन्तीत्यर्थः ॥ २७ ॥ तदेवोपपादयति स्वयंपुमांश्चेति स्वयमेवात्मा प्रकृतियोगात्प्रकृतिशब्दवाच्यइत्यर्थः
॥ २८ ॥ २९ ॥ सा सर्वकारणभूता मूलप्रकृतिः सृष्टिसमये भूतोत्पत्तिक्रमेण ब्रह्मांडं सृष्ट्वा भक्तानुग्रहार्थं नानारूपाणि ब्रह्मा तत्र कस्मिंश्चित्कल्पे गोपा
लरूपमेव प्रथमतो बभूवेत्याह गोपालसुंदरीति तदुक्तं तत्र राजे कदाचिदाद्याललितापुरुषा कृष्णविग्रहेति कूर्मपुराणेऽपि प्रकृत्याः प्रथमो भाग उमा
देवी यशस्विनी व्यक्तः सर्वमयो विष्णुः स्त्रीसंज्ञो लोकभावन इति गोपालसुंदरी सखीवैपधारी श्रीकृष्णः कृष्णध्यानमाह अतीवेति ३०।३१।३२

॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥

अमूल्यरत्ननिर्माणनानाभूषणभूषितं ॥ सस्मितंशोभितंशश्वदमूल्यपीतवाससा ॥ ३३ ॥ परब्रह्मस्वरूपं
चज्वलंतं ब्रह्मतेजसा ॥ सुखदृश्यं च शांतं च राधाकांतमनंतकं ॥ ३४ ॥ गोपीभिर्वीक्ष्यमाणं च सास्मिताभिश्च संत-
तं ॥ रासमंडलमंध्यस्थं रत्नासिंहासनास्थितं ॥ ३५ ॥ वंशीं कण्ठं तं द्विभुजं वनमालाविभूषितं ॥ कौस्तुभेन्द्रम-
णीन्द्रेण शश्वदक्षस्थलोज्ज्वलं ॥ ३६ ॥ कुंकुमागरुकस्तूरीचंदनार्चितविग्रहं ॥ चारुचंपकमालाक्तं मालतीमाल्य-
मंडितं ॥ ३७ ॥ चारुचंद्रकशोभाढ्यं चूडावंक्रिमराजितं ॥ एवंभूतं च ध्यायंते भक्ता भक्तिपरिपुताः ॥ ३८ ॥ य-
द्भयाज्जगतां धाता विधत्ते सृष्टिमेव च ॥ कर्मानुसारां लिखितं करोति सर्वकर्मणां ॥ ३९ ॥ तपसां फलदाता च कर्म-
णां च यदाज्ञया ॥ विष्णुः पाताच सर्वेषां यद्भयात्पातिसंततं ॥ ४० ॥ कालाग्निरुद्रः संहर्ता सर्वविश्वेषु यद्भयात् ॥
शिवो मृत्युं जयश्चैव ज्ञानिनां च गुरोर्गुरुः ॥ ४१ ॥ यज्ज्ञानाज्ज्ञानवानस्ति योगीशो ज्ञानवित्प्रभुः ॥ परमानंदयुक्त-
श्च भक्तिवैराग्यसंयुतः ॥ ४२ ॥ यद्भयाद्वातिपवनः प्रवरः शीघ्रगामिनां ॥ तपनश्च प्रतपति यद्भयात्संततं सति
॥ ४३ ॥ यदाज्ञया वर्षतीन्द्रो मृत्युश्चरति जंतुषु ॥ यदाज्ञया दहेद्वह्निर्जलमेवं सुशीतलं ॥ ४४ ॥ दिशोरक्षंति दि-
क्पाला महाभीता यदाज्ञया ॥ भ्रमंति राशिचक्राणि ग्रहाश्च यद्भयेन च ॥ ४५ ॥ भयात्फलंति वृक्षाश्च पुष्पं त्यपि च
यद्भयात् ॥ यदाज्ञांतु पुरस्कृत्य कालः काले हरेद्भयात् ॥ ४६ ॥ तथा जलस्थलस्थाश्च न जीवंति यदाज्ञया ॥ अ-
कालेनाहरेद्विद्वंरणेषु विषमेषु च ॥ ४७ ॥ धत्ते वायुस्तोयराशितोयं कूर्मं तदाज्ञया ॥ कूर्मो न तं स च क्षोणीं समुद्रा-
न्साचपर्वतान् ॥ ४८ ॥

॥ ४१ ॥

॥ ४२ ॥

॥ ४३ ॥

॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥

दे.भा.न

११३

॥ ४९ ॥ इंद्रायुश्चेति तदुक्तं प्रपंचसारे युगानामेकसप्तत्यामन्वंतरामिहोच्यते ब्रह्मणोदिवसेप्रोक्तामनवस्तुचतुर्दश तावतीतस्यरात्रि
श्वकथिताकालवेदिभिः तथाविधंतदब्दानांशतत्त्वमपिजीवसीत्यंतं ॥ ५० ॥ वयःस्मृतमिति एवंशतवर्षपरिमितमितिशेषः ॥ ५१ ॥ ५२ ॥

सर्वाचैवक्षमारूपानानारत्नंविभर्ति ॥ यतःसर्वाणिभूतानिस्थीयंतेहंतितत्रहि ॥ ४९ ॥ इंद्रायुश्चैवदिव्या
नांयुगानामेकसप्ततिः ॥ अष्टाविंशेशक्रपातेब्रह्मणश्चदिवानिशं ॥ ५० ॥ एवंत्रिंशदिनैर्मसोद्वाभ्यामाभ्यामृ
तुःस्मृतः ॥ ऋतुभिःषट्द्विरेवाब्दंब्रह्मणोवैवयःस्मृतं ॥ ५१ ॥ ब्रह्मणश्चनिपातेचक्षुरुन्मीलनंहरेः ॥ चक्षुरु
न्मीलनेतस्यलयंप्राकृतिकंविदुः ॥ ५२ ॥ प्रलयेप्राकृतेसर्वेदेवाद्याश्चराचराः ॥ लीनाधाताविधाताचश्रीक
ण्णनाभिपंकजे ॥ ५३ ॥ विष्णुःक्षीरोदशायीचैकुण्ठेश्चतुर्भुजः ॥ विलीनोवामपार्श्वेचकृष्णस्यपरमात्मनः
॥ ५४ ॥ यस्यज्ञानेशिवोलीनोज्ञानाधीशःसनातनः ॥ दुर्गायांविष्णुमायायांविलीनाःसर्वशक्तयः ॥ ५५ ॥
साचकृष्णस्यबुद्धौचबुद्ध्यधिष्ठातृदेवता ॥ नारायणांशःस्कंदश्चलीनोवक्षसितस्यच ॥ ५६ ॥ श्रीकृष्णांशश्च
तद्वाहैदेवाधीशोगणेश्वरः ॥ पद्मांशाश्चैवपद्मायांसाराधायांचसुव्रते ॥ ५७ ॥ गोप्यश्चापिचतस्यांचसर्वा
श्चदेवयोषितः ॥ कृष्णप्राणाधिदेवीसातस्यप्राणेषुसंस्थिता ॥ ५८ ॥ सावित्रीचसरस्वत्यांवेदाःशास्त्राणि
निच ॥ स्थितावाणीचजिह्वायांतस्यैवपरमात्मनः ॥ ५९ ॥ गोलोकस्यचगोपाश्चविलीनास्तस्यलोमसु ॥
तत्प्राणेषुचसर्वेषांप्राणावाताहुताशनः ॥ ६० ॥ जठराग्नौविलीनाश्चजलंतद्रसनाग्रतः ॥ वैष्णवाश्चरणं
भोजेपरमानंदसंयुताः ॥ ६१ ॥ सारात्सारतराभक्तीरसपीयूषपायिनः ॥ विराडंशाश्चमहतिलीनाःकृष्णेमहा
विराट् ॥ ६२ ॥ यस्यैवलोमकूपेषुविश्वानिनिखिलानिच ॥ यस्यचक्षुषउन्मेषेप्राकृतःप्रलयोभवेत् ॥ ६३ ॥

॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ विराडंशाश्चमहतीति क्षुद्रविराड्दूपाणिमहतिमहाविराड्
पेलीनानीत्यर्थः अत्रनवमस्कंधेप्रथमाध्यायेयस्माद्यस्माद्यस्योत्पत्तिरुक्तातस्मिन्नेवतस्यलयउक्त इतिबोध्यं ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ॥ ॥ ॥

टी.अ.
३८

११३

॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ एतादृशमहोभववान्कृष्णस्तयामूलप्रकृत्यासृष्टिसमयेप्रथममुत्पादितः सप्रलयसमयेतस्यामेवविलीनोभवतीत्याह सकृष्णइति ॥ ६७ ॥ तत्रश्रुतिप्रमाणयति सदेवेदमिति ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ एतादृश्यामूलप्रकृत्यासृष्टिणीकीर्तनकर्तृकः समर्थो न कोपीत्याह तद्रूपोत्कीर्तनमिति अधुनासावित्र्यापृष्टान्मुक्तिभेदानाह मुक्तयश्चेति ॥ ७० ॥ मुक्त्यपेक्षयाभक्तिर्गरीयसीतिभक्तौश्रद्धोत्पादनार्थमु

चक्षुरुन्मीलनेसृष्टिर्यस्यैवपुनरेवसः ॥ यावत्कालोनिमेषेणतावदुन्मीलनेनच ॥ ६४ ॥ ब्रह्मणश्चशताब्देचसृष्टेः
सूत्रलयःपुनः ॥ ब्रह्मसृष्टिलयानांचसंस्थानास्त्येवसुव्रते ॥ ६५ ॥ यथाभूरजसांचैवसंस्थाननैवविद्यते ॥ च
क्षुर्निमेषेप्रलयोयस्यसर्वांतरात्मनः ॥ ६६ ॥ उन्मीलनेपुनःसृष्टिर्भवेदेवेश्वरेच्छया ॥ सकृष्णःप्रलयेतस्यांप्रकृ
तौलीनएवहि ॥ ६७ ॥ एकैवचपराशक्तिर्निर्गुणःपरमःपुमान् ॥ सदेवेदमग्रआसीदितिबेदविदोविदुः ॥ ६८ ॥
मूलप्रकृतिरव्यक्ताप्यव्याकृतपदाभिदा ॥ चिदाभिन्नत्वमापन्नाप्रलयेसैवतिष्ठति ॥ ६९ ॥ तद्रूपोत्कीर्तनवक्तुं
ब्रह्मांडेषुचकःक्षमः ॥ मुक्तयश्चचतुर्वेदैर्निरुक्ताश्चचतुर्विधाः ॥ ७० ॥ तत्प्रधानादेवभक्तिर्मुक्तेरपिगरीयसी ॥ सा
लोक्यदाभवेदेकातथासारूप्यदापरा ॥ ७१ ॥ सामीप्यदाथनिर्वाणप्रदामुक्तिश्चतुर्विधा ॥ भक्तास्तानहिवां
छंतिविनातत्सेवनंविभोः ॥ ७२ ॥ शिवत्वममरत्वंचब्रह्मत्वंचावहेलया ॥ जन्ममृत्युजराव्याधिभयशोकादि
कंदनं ॥ ७३ ॥ दिव्यरूपधारणंचनिर्वाणंमोक्षणंविदुः ॥ मुक्तिश्चसेवारहिताभक्तिःसेवाविवर्द्धिनी ॥ ७४ ॥ भ
क्तिमुक्तयोरयंभेदोनिषेकखंडनंशृणु ॥ विदुर्बुधानिषेकंचभोगंचकृतकर्मणां ॥ ७५ ॥ ॥ ६४ ॥

क्तामुक्तिभेदानाह तत्प्रधानेति मुक्त्यपेक्षयाप्रधानेत्यर्थः ॥ ७१ ॥ विभोर्मूलप्रकृतेःसेवनंविनेत्यर्थः ॥ ७२ ॥ शिवत्वादीन्यापिनिर्वाणमो
क्षांतानिस्थानानिभक्तास्तुच्छतयाविदुरित्याह शिवत्वमिति विदुस्तुच्छतयेतिशेषः ॥ ७३ ॥ कुतोभक्तामांमुक्त्यपेक्षयाभक्तौनिर्भरइतिचेत्त
त्रहेतुमाह मुक्तिश्चेति अत्रयतइतिशेषः ॥ ७४ ॥ निषेकखंडनस्यस्वरूपंसावित्र्यापृष्टवक्तुं प्रथमतोनिषेकस्वरूपंवाक्ति विदुर्बुधाइति ॥ ७५ ॥

श्रीविभोर्मूलप्रकृतेः सेवनं सर्वकृतकर्मणां निषेकपदवाच्यानां खंडनं नाशनमित्यर्थः तस्मात्तदेव सर्वैराश्रयणीयमिति भावः उपसंहरति तत्त्वज्ञानमिति ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ साधुच्छेदेन साधुवियोगेन ॥ ७९ ॥ एतादृशीं सुशीलां कन्यां पुनः कदाहं द्रक्ष्यामीति कन्यावियोगजन्यदुःखेन यमोपि रोदनं कृतवानित्यहं स्वयंचैव रुरोदहेति तदुक्तं पुत्रात्प्रियतरः शिष्यो यदियोग्यगुणो भवेदिति ॥ ८० ॥ तल्लोकं देवीलोकं मणिदीपसंज्ञकं

तत्खंडनं च शुभदं श्रीविभोः सेवनं परं ॥ तत्त्वज्ञानमिदं साध्विस्थिरं च लोकवेदयोः ॥ ७६ ॥ निर्विघ्नं शुभदं चोक्तं गच्छवत्सेयथा सुखं ॥ इत्युत्वासूर्यपुत्रश्च जीवयित्वा च तत्पतिं ॥ ७७ ॥ तस्यैशुभाशिषंदत्वा गमनं कर्तुमुद्यतः ॥ दृष्ट्वा यमं च गच्छंतं सा सावित्री प्रणम्य च ॥ ७८ ॥ रुरोदचरणौ धृत्वा साधुच्छेदेन दुःखिता ॥ सावित्री रोदनं श्रुत्वा यमश्चैव कृपानिधिः ॥ ७९ ॥ तामित्युवाच संतुष्टः स्वयंचैव रुरोदह ॥ धर्म उवाच ॥ लक्षवर्षं सुखं भुंक्त्वा पुण्यक्षेत्रे च भारते ॥ ८० ॥ अंते यास्यसि तल्लोकं यत्र देवी विराजते ॥ गत्वा च स्वगृहं भद्रे सावित्र्याश्च व्रतं कुरु ॥ ८१ ॥ द्विसप्तवर्षपर्यंतं नारीणां मोक्षकारणं ॥ ज्येष्ठशुक्लचतुर्दश्यां सावित्र्याश्च व्रतं शुभं ॥ ८२ ॥ शुक्लाष्टम्यां भाद्रपदे महालक्ष्म्या यथा व्रतं ॥ द्वाष्टवर्षं व्रतं चैव प्रत्यादेयं शुचिस्मिते ॥ ८३ ॥ करोति भक्त्या यानारी सायाति च विभोः पदं ॥ प्रतिमंगलवारे च देवीं मंगलदायिनीं ॥ ८४ ॥ प्रतिमासं शुक्लपष्ठ्यां पृष्ठीं मंगलदायिनीं तथा चाषाढसंक्रांत्यां मनसां सर्वसिद्धिदां ॥ ८५ ॥ राधां रासे च कार्तिक्यां कृष्णप्राणाधिकप्रियां ॥ उपोष्य शुक्लाष्टम्यां च प्रतिमासं वरप्रदां ॥ ८६ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥

इतः परं त्वंगृहं गत्वान्यत्सर्वं हत्वा देवीव्रतानि कुर्वित्याह गत्वेति देवीव्रतान्याह सावित्र्याश्चेति ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ विभोः पदं मूलप्रकृतेः स्थानं मंगलदायिनीं मंगलचंडिकां ॥ ८४ ॥ पृष्ठीं देवसेनाभिधां ॥ ८५ ॥ कार्तिक्यां कार्तिकपौर्णमास्यां राधां शुक्लाष्टम्यामिति दुर्गाव्रतं तदुक्तमीशानसंहितायां एकादशीकोटिसहस्रतुल्या जन्माष्टमी पर्वतराजपुण्याः ततोपि शुक्ला गुणिता शतेन पञ्चाशद्व्यासवसिष्ठमुख्यैः ॥ ८६ ॥

॥ ८७ ॥ एतादेवतास्तदुक्तदिनेषुयंत्रेषुप्रतिमासुवायानारीपूजयेदितिसर्वत्रद्वितीयां तृपदात्ममन्त्रान्वयः ॥ ८८ ॥ विभोःपदंमूलप्रकृतेःस्था
न ॥ ८९ ॥ इत्यंत्रतानिकुर्वतीसर्वकालंमूलप्रकृतिंश्रीभुवनेश्वरींभजेत्याह सर्वकालमिति नातःपरतरंकिंचित्कृतकृत्य
त्वदायकंनैवास्ति ततस्तत्कृत्वावत्सेतिष्ठशांताभव अहंगुहस्त्वदृदयेचैतन्यरूपेणातिष्ठान्ततोऽदि योगजन्यखेदेनरोदनंमाकुर्वीतिभावः
॥ ९० ॥ ९१ ॥ अन्यान्स्वबाह्यान् ॥ ९२ ॥ जनकःपितालक्ष्मसावित्री ॥ ९३ ॥ देवीलोकंमणिदीपं ॥ ९४ ॥ सावित्रीपदनिसक्ति

विष्णुमायांभगवतींदुर्गांदुर्गार्तिनाशिनीं ॥ प्रकृतिंजगदंबांचपतिपुत्रवतीषुच ॥ ८७ ॥ पतिव्रतासुशुद्धासुयंत्रे
षुप्रतिमासुच ॥ यानारीपूजयेद्भक्त्याधनसंतानहेतवे ॥ ८८ ॥ इहलोकेसुखंभुक्त्वायात्यंतेश्रीविभोःपदं ॥ एवं
देव्याविभूतीश्चपूजयेत्साधकोनिशं ॥ ८९ ॥ सर्वकालंसर्वरूपासंसेव्यापरमेश्वरी ॥ नातःपरतरंकिंचित्कृतकृ
त्यत्वदायकं ॥ ९० ॥ इत्युक्तातांधर्मराजोजगामनिजमंदिरं ॥ गृहीत्वास्वामिनंसाचसावित्रीचनिजालयं
॥ ९१ ॥ सावित्रीसत्यवांश्चैवप्रययौचयथागमं ॥ अन्यांश्चकथयामासस्ववृत्तांतंहिनारद ॥ ९२ ॥ सावित्रीज
नकःपुत्रान्संप्राप्तःप्रक्रमेणच ॥ श्वशुरश्चक्षुषीराज्यंसाचपुत्रान्वरेणच ॥ ९३ ॥ लक्षवर्षसुखंभुक्त्वापुण्यक्षेत्रेच
भारते ॥ जगामस्वामिनासार्धेदेवीलोकंपतिव्रता ॥ ९४ ॥ सवितुश्चाधिदेवीयामंत्राधिष्ठातृदेवता ॥ सावित्री
ह्यपिवेदानांसावित्रीतेनकीर्तिता ॥ ९५ ॥ इत्येवंकथितंत्वत्ससाविऽयारूयानमुत्तमं ॥ जीवकर्मविपाकंचकिंपुनः
श्रोतुमिच्छसि ॥ ९६ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेना० ना० सावि० अष्टत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३८ ॥

माह सवितुश्चेति सूर्यमंडलात्मकसवितुरधिदेवीतदंतर्यामिब्रह्मरूपिणीमंत्रःसूर्यातर्गतब्रह्मप्रतिपादकोगायत्रीरूपस्तदधिष्ठात्रीचदेवतायतस्त
तोभगवत्यागायत्र्याःसावित्रीनामेत्यर्थःसवितुरियंसावित्रीतिव्युत्पत्तेः किंचवेदानांसावित्रीजननतिषामुत्पादनकर्त्रीभवतिततोपिसावित्रीनामेत्या
हसावित्रीदृष्टीति सूर्यतेप्राणिप्रसवंकरोतीतिसासावित्रीतिव्युत्पत्तेः ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेष्टत्रिंशोऽध्यायः ३८ ॥

दे.भा.न

११५

अर्धाधिकैस्त्रयस्त्रिंशत्पदैरथसविस्तरं ॥ महालक्ष्म्याउपाख्यानंयथावदभिवर्ण्यते ॥ १ ॥ सावित्र्युपाख्यानानंतरंमहालक्ष्म्याउपाख्यानं पृच्छति श्रीमूलप्रकृतेरिति मूलप्रकृतेर्गायत्र्याश्वयशःश्रुतमित्यन्वयः ॥ १ ॥ २ ॥ केनकर्त्राकिंभूताकिंस्वरूपाकेनमंत्रेणस्तोत्रेणचेत्यर्थः

नारदउवाच ॥ श्रीमूलप्रकृतेर्देव्यागायत्र्यास्तुनिराकृतेः ॥ सावित्रीयमसंवादेश्रुतं वैनिर्मलयशः ॥ १ ॥ तद्गुणोत्कीर्तनंसत्यमंगलानांचमंगलं ॥ अधुनाश्रोतुमिच्छामिलक्ष्म्युपाख्यानमीश्वर ॥ २ ॥ केनादौपूजितासापि किंभूताकेनवापुरा ॥ तद्गुणोत्कीर्तनंमह्यंवदवेदविदांवर ॥ ३ ॥ नारायणउवाच ॥ सृष्टेरादौपुराब्रह्मन्कृष्णस्यपरमात्मनः ॥ देवीवामांसंभूताबभूवरासमंडले ॥ ४ ॥ अतीवसुंदरीश्यामान्यग्रोधपरिमंडिता ॥ यथाद्वादशवर्षीयाशश्वत्सुस्थिरयौवना ॥ ५ ॥ श्वेतचंपकवर्णाभासुखदृश्यामनोहरा ॥ शरत्पार्वणकोटींदुप्रभाप्रच्छादनानना ॥ ६ ॥ शरन्मध्यान्हपद्मानांशोभामोचनलोचना ॥ सादेवीद्विविधाभूतासहसैवेश्वरेच्छया ॥ ७ ॥ स्वीयरूपेणवर्णेनतेजसावयसात्विषा ॥ यशसावाससाकृत्याभूषणेनगुणेनच ॥ ८ ॥ स्मितेनवीक्षणेनैवप्रेम्णावानुनयेनच ॥ तद्वामांसान्महालक्ष्मीर्दक्षिणांसाच्चराधिका ॥ ९ ॥ राधादौवरयामासद्विभुजंचपरात्परं ॥ महालक्ष्मीश्चतत्पश्चाच्चकमेकमनीयकं ॥ १० ॥ कृष्णस्तद्वैरवेणैवद्विधारूपोवभूवह ॥ दक्षिणांशश्चद्विभुजोवामांशश्चतुर्भुजः ॥ ११ ॥ चतुर्भुजायद्विभुजोमहालक्ष्मीर्ददौपुरा ॥ लक्ष्यतेदृश्यतेविश्वंस्निग्धदृष्ट्याययानिशं ॥ १२ ॥ देवीभूताचमहतीमहालक्ष्मीश्चसास्मृता ॥ राधाकांतश्चद्विभुजोलक्ष्मीकांतश्चतुर्भुजः ॥ १३ ॥

॥ ३ ॥ पूर्वोक्तंवृत्तंकथयति सृष्टेरादाविति देवीराधावामांशःकृष्णस्यवामांशइत्यपिपाठः ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ यथैवराधायागुणास्तथैवलक्ष्म्याअपिगुणाइत्याह स्वीयरूपेणेति ॥ ८ ॥ ९ ॥ चकमेद्विभुजमित्यर्थः ॥ १० ॥ तद्वैरवेणराधायागौरवेण ॥ ११ ॥ महालक्ष्मीपदनिसक्तिमाह लक्ष्यतेइति लक्ष्यतेदृश्यतेययासालक्ष्मीरित्यर्थः ॥ १२ ॥ १३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

टी.अ.

३९

११५

॥ १४ ॥ योगेन शक्त्या ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ कलांशतइति एतानिरूपाण्यंशरूपाणीत्यर्थः पूर्णांशस्तु वैकुण्ठे एवास्तीत्यर्थः ॥ १८ ॥ सु
रभ्यादयोऽपि लक्ष्म्यंशभूता इत्याह गवां प्रसूतिरिति ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ एतेषु सर्वेषु लक्ष्म्यंशाः संतीत्यर्थः ॥ २४ ॥

शुद्धसत्त्वस्वरूपा च गोपैर्गोपीभिरावृता ॥ चतुर्भुजश्च वैकुण्ठं प्रययौ पद्मया सह ॥ १४ ॥ सर्वोऽनेन समो तौ द्वौ कृ
ष्णनारायणौ परौ ॥ महालक्ष्मीश्च योगेन नानारूपा बभूव सा ॥ १५ ॥ वैकुण्ठे च महालक्ष्मीः परिपूर्णतमामा
शुद्धसत्त्वस्वरूपा च सर्वसौभाग्यसंयुता ॥ १६ ॥ प्रेम्णा सा च प्रधाना च सर्वासुरमणीषु च ॥ स्वर्गेषु स्वर्गलक्ष्मी
श्च शक्रसंपत्स्वरूपिणी ॥ १७ ॥ पाताले नागलक्ष्मीश्च राजलक्ष्मीश्च राजसु ॥ गृहलक्ष्मीर्गृहेष्वेव गृहिणां च कलां
शतः ॥ १८ ॥ संपत्स्वरूपा गृहिणां सर्वमंगलमंगला ॥ गवां प्रसूता सा सुरभिर्दक्षिणायज्ञकामिनी ॥ १९ ॥ क्षीरोद
सिंधुकन्या सा श्रीरूपा पद्मिनीषु च ॥ शोभास्वरूपा चंद्रे च सूर्यमंडलमंडिता ॥ २० ॥ विभूषणेषु रत्नेषु फलेषु च
जलेषु च ॥ नृपेषु नृपपत्नीषु दिव्यस्त्रीषु गृहेषु च ॥ २१ ॥ सर्वसस्येषु वस्त्रेषु स्थानेषु संस्कृतेषु च ॥ प्रतिमासु च देवा
नां मंगलेषु घटेषु च ॥ २२ ॥ माणिक्येषु च मुक्तासु माल्येषु च मनोहरा ॥ मर्णद्विषु च हरीषु क्षीरेषु चंदनेषु च ॥ २३ ॥
वृक्षशाखासुरम्यासु नवमेघेषु वस्तुषु ॥ वैकुण्ठे पूजिता सा दौर्देवी नारायणेन च ॥ २४ ॥ द्वितीये ब्रह्मणा भक्त्या तृ
तीयेशंकरेण च ॥ विष्णुना पूजिता सा च क्षीरोदे भारते मुने ॥ २५ ॥ स्वायंभुवेन मनुना मानवंद्रैश्च सर्वतः ॥ ऋ
षींद्रैश्च मुनींद्रैश्च सद्भिश्च गृहिभिर्भवे ॥ २६ ॥ गंधर्वैश्चैव नागाद्यैः पातालेषु च पूजिता ॥ शुक्लाष्टम्यां भाद्रपदे कृ
ता पूजा च ब्रह्मणा ॥ २७ ॥ भक्त्या च पक्षपथं तं त्रिषु लोकेषु नारद ॥ चैत्रे पौषे च भाद्रे च पुण्ये मंगलवासरे ॥ २८ ॥

किंभूतेत्यस्योत्तरमुक्त्वा केनादौ पूजितेत्यस्योत्तरमाह वैकुण्ठे पूजितेति ॥ २५ ॥ ततः परं केन केन कस्मिन्काले पूजितेत्यत्राह ॥ २६ ॥

॥ २७ ॥ २८ ॥

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

॥२९॥ मंगलेनराज्ञा ॥३०॥ केदारनीलादयोराजानः ॥३१॥ ३२॥ ३३॥ इति श्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेएकोनचत्वारिंशोऽध्यायः

विष्णुना पूजिता सा च त्रिषु लोकेषु भक्तिः ॥ वर्षाति पौष संक्रांत्यां माघ्यामावाह्यमंगले ॥ २९ ॥ मनुस्तां पूजया
माससाभूता भुवनत्रये ॥ पूजिता सामहेन्द्रेण मंगलेनैव मंगले ॥ ३० ॥ केदारेणैव नीलेन सुबलेन नलेन च ॥ ध्रुवे
णोत्तानपादेन शक्रेण बलिना तथा ॥ ३१ ॥ कश्यपेन च दक्षेण कर्दमेन विवस्वता ॥ प्रियव्रतेन च द्रेण कुबेरेणैव
वायुना ॥ ३२ ॥ यमेन वह्निना चैव वरुणेनैव पूजिता ॥ एवं सर्वत्र सर्वेषु पूजिता वंदिता सदा ॥ ३३ ॥ सर्वैश्वर्या
धिदेवी सा सर्वसंपत्स्वरूपिणी ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे नवमस्कंधे एकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ३९ ॥
नारद उवाच ॥ नारायण प्रिया सा च वरवैकुण्ठवासिनी ॥ वैकुण्ठाधिष्ठातृदेवी महालक्ष्मीः सनातनी ॥ १ ॥ कथं ब
भूवसा देवी पृथिव्यां सिंधुकन्यका ॥ पुरा केन स्तुता दौसा तन्मे व्याख्यातुमर्हसि ॥ २ ॥ श्रीनारायण उवाच ॥ पु
रा दुर्वाससः शापाद्ब्रष्टृश्रीश्च पुरंदरः ॥ बभूव देवसंघश्च मर्त्यलोके च नारद ॥ ३ ॥ लक्ष्मीः स्वर्गादिकं त्यक्त्वा रुष्टा
परमदुःखिता ॥ गत्वा लीना च वैकुण्ठे महालक्ष्मीश्च नारद ॥ ४ ॥ तदा शोकाद्युःसर्वे दुःखिता ब्रह्मणः सभां ॥ ब्र
ह्माणं च पुरस्कृत्य युर्वैकुण्ठमेव च ॥ ५ ॥ वैकुण्ठेशरणापन्ना देवानां नारायणे परे ॥ अतीव दैन्ययुक्ताश्च शुष्ककंठौ
ष्ठतालुकाः ॥ ६ ॥ तदा लक्ष्मीश्च कलयापुराणपुरुषाज्ञया ॥ बभूव सिंधुकन्या सा सर्वसंपत्स्वरूपिणी ॥ ७ ॥
तथामथित्वा क्षीरोदं देवा दैत्यगणैः सह ॥ संप्राप्ताश्च महालक्ष्मीं विष्णुस्तां च ददर्श ह ॥ ८ ॥ सुरादिभ्यो वरं दत्त्वा
वनमालां च विष्णवे ॥ ददौ प्रसन्नवदना तुष्ठाक्षीरोदशायिनी ॥ ९ ॥

॥६३॥

॥६३॥

॥६३॥

॥ ३९ ॥ द्व्यधिकैर्नवतिश्लोकैर्नारदाय सविस्तरं ॥ लक्ष्मीजन्मानिमित्तं च प्रोच्यते भक्तिशालिने ॥ १ ॥ नारदो लक्ष्म्युत्पत्तिं पृच्छति
नारायणेति ॥ १ ॥ केन स्तुता सती सिंधुकन्यका ज्ञातेत्यर्थः ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ कलयां शौन ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥

॥ १० ॥

॥ ११ ॥

॥ १२ ॥ तयोः शक्रदुर्वाससोः ॥ १३ ॥

॥ १४ ॥

॥ १५ ॥

॥ १६ ॥

देवाश्चाप्यसुरग्रस्तं राज्यं प्राप्नुवन् नारद ॥ तां संपूज्य च संभूय सर्वत्र च निरापदः ॥ १० ॥ नारद उवाच ॥ कथं
 शशापदुर्वासामुनिश्रेष्ठः कदाचन ॥ केन दोषेण वा ब्रह्मन् ब्रह्मिष्ठस्तत्त्ववित्पुरा ॥ ११ ॥ ममंथुः केन रूपेण जल
 धिते सुरादयः ॥ केन स्तोत्रेण वा देवीशक्रं साक्षाद्भूवसा ॥ १२ ॥ को वा तयोश्च संवादे बभूव तद्वदप्रभो ॥ श्री
 नारायण उवाच ॥ मधुपानप्रमत्तश्च त्रैलोक्याधिपतिः पुरा ॥ १३ ॥ क्रीडां च काररहसिरंभया सह कामुकः ॥ कृ
 त्वा क्रीडां तया सार्धं कामुक्या हतमानसः ॥ १४ ॥ तस्यैतत्र महारण्ये कामोन्मथितमानसः ॥ कैलासशिखरे
 यांतं वैकुण्ठादपि सत्तमं ॥ १५ ॥ दुर्वाससं ददर्श द्रोज्वलंतं ब्रह्म तेजसा ॥ ग्रीष्ममध्याह्नमार्तं सहस्रप्रभमीश्वरं
 ॥ १६ ॥ प्रतप्तकांचनाकारं जटाभारमहोज्ज्वलं ॥ शुक्लयज्ञोपवीतं च चीरदंडौकमंडलुं ॥ १७ ॥ महोज्ज्वलं च ति
 लकं विभ्रंतं चेंदुसन्निभं ॥ समन्वितं शिष्यलक्षैर्देवदेवांगपारगैः ॥ १८ ॥ दृष्ट्वा ननामशिरसासंप्रमत्तः पुरंदरः ॥
 शिष्यवर्गे तदा भक्त्या तुष्टावचमुदन्वितं ॥ १९ ॥ मुनिना च शिष्येण दत्तास्तस्मै शुभाशिषः ॥ विष्णुदत्तं पा
 रिजातपुष्पं च सुमनोहरं ॥ २० ॥ तज्जरारोगमृत्युघ्नं शोकघ्नं मोक्षकारकं ॥ शक्रः पुष्पं गृहीत्वा च प्रमत्तो राज्यसं
 पदा ॥ २१ ॥ पुष्पं सन्यस्त यामास तदैव करि मस्तके ॥ हस्ती तत्स्पर्शमात्रेण रूपेण च गुणेन च ॥ २२ ॥ ते
 जसा वयसा कस्माद्विष्णुतुल्यो बभूव ह ॥ त्यक्त्वा शक्रं गजेन्द्रश्च जगाम घोरकाननं ॥ २३ ॥ न शशाकमर्हेद्रस्तरं
 क्षितुं तेजसामुने ॥ तत्पुष्पं त्यक्तवन्तं च दृष्ट्वा शक्रं मुनीश्वरः ॥ २४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥

॥ १७ ॥

॥ १८ ॥

॥ १९ ॥

॥ २० ॥

॥ २१ ॥

॥ २२ ॥

॥ २३ ॥

॥ २४ ॥

॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ब्राह्मणान्नं तीर्थं प्रति ग्राहिणां ब्राह्मणा

तमुवाच महारुष्टोऽशशपचरुषान्वितः ॥ मुनिरुवाच ॥ अरे श्रिया प्रमत्तस्त्वं कथं मामवमन्यसे ॥ २५ ॥ महत्त
पुष्पंदत्तं च गर्वेण करि मस्तके ॥ विष्णोर्निवेदितं चैव नैवेद्यं वा फलं जलं ॥ २६ ॥ प्राप्तिमात्रेण भोक्तव्यं त्यागेन ब्रह्म
हा भवेत् ॥ अष्टश्रीर्भ्रष्टबुद्धिश्च पुरश्चष्टो भवेत्तु सः ॥ २७ ॥ यस्त्यजेद्विष्णुं नैवेद्यं भाग्येनोपस्थितं शुभं ॥ प्राप्तिमा
त्रेण यो भुंक्ते भक्तो विष्णुं निवेदितं ॥ २८ ॥ पुंसां शतं समुद्धृत्य जीवन्मुक्तः स्वयं भवेत् ॥ नैवेद्यं भोजनं कृत्वानित्यं यः
प्रणमेद्वरिं ॥ २९ ॥ पूजयेत्स्तौति वा भक्त्या स विष्णुसदृशो भवेत् ॥ तत्स्पर्शं वायुना सद्यस्तीर्थौ च श्रविशुद्ध्यति
॥ ३० ॥ तत्पादरजसामूढसद्यः पूता वसुंधरा ॥ पुंश्चल्यन्नमवीरान्नं शूद्राश्चाद्वान्नमेव च ॥ ३१ ॥ यद्वरेरनिवेद्यं च वृ
थामांसस्य भक्षणं ॥ शिवलिंगप्रदानं च यद्वत्तं शूद्रयाजिना ॥ ३२ ॥ चिकित्सकद्विजानं च देवलान्नं तथैव च ॥ कन्या
विक्रयिणामन्नं यदन्नं यो निजीविनां ॥ ३३ ॥ उच्छिष्टान्नं पर्युषितं सर्वभक्षावशेषितं ॥ शूद्रापतिद्विजानां च वृषवाह
द्विजान्नकं ॥ ३४ ॥ अदीक्षितद्विजानां च यदन्नं शवदाहिनां ॥ अगम्यागामिनां चैव द्विजानामन्नमेव च ॥ ३५ ॥ मि
त्रद्रुहांकृतघ्नानामन्नं विश्वासघातिनां ॥ मिथ्यासाक्ष्यप्रदानं च ब्राह्मणान्नं तथैव च ॥ ३६ ॥ एते सर्वे विशुद्ध्यन्ति वि
ष्णोर्नैवेद्यभक्षणात् ॥ श्वपचश्चेद्विष्णुसेवी वंशानां कोटिमुदरेत् ॥ ३७ ॥ हरेरभक्तो मनुजः स्वं च रक्षितुमक्षमः ॥ अ
ज्ञानाद्यदि गृण्हाति विष्णोर्निर्माल्यमेव च ॥ ३८ ॥ सप्तजन्मार्जितात्पापान्मुच्यते नात्र संशयः ॥ ज्ञात्वा भक्त्या च
गृण्हाति विष्णोर्नैवेद्यमेव च ॥ ३९ ॥ कोटिजन्मार्जितात्पापान्मुच्यते निश्चितं हरे ॥ यस्मात्संस्थापितं पुष्पं गर्वेण
करि मस्तके ॥ ४० ॥ तस्माद्युष्मान्परित्यज्य यातुलक्ष्मीं हरेः पदं ॥ नारायणस्य भक्तो हं न विभेमि सुराद्विधेः ॥ ४१ ॥

नामन्नमित्यर्थः ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ मायापहःप्रभोइत्यत्रमह्यंमत्तायहेप्रभोइत्यपिपाठः मायापहोमोहेनाशकइत्यर्थः किमेवंप्रार्थनयालक्ष्मीप्राप्तिमिच्छसिनेत्याह हृतांनयाचेइति तर्हि किंप्रार्थ्यतेतत्राह किंचिज्ज्ञानमिति संसारोद्धारकंज्ञानंदेहीत्यर्थः ॥ ४५ ॥ ऐश्वर्यकुतो नप्राप्यतेइति चेत्तत्राह ऐश्वर्यमिति महादोषकरत्वात्तस्यप्रार्थनानक्रियतइत्यर्थः ॥ ४६ ॥ इंद्रेणसंपत्तावुक्तंदोषंमुनिरंगीकृत्यतदुक्तंदोषमेवाविशदयति

कालान्मृत्योर्जरातश्चकानन्यान्गणयामिच ॥ किंकरिष्यतितेतातःकश्यपश्चप्रजापतिः ॥ ४२ ॥ बृहस्पतिर्गुरुश्चैवनिःशंकस्यचमेहरे ॥ इदंपुष्पंयस्यमूर्ध्नि तस्यैवपूजनं परं ॥ ४३ ॥ इतिश्रुत्वामहेंद्रश्चधृत्वासचरणंमुनेः ॥ उच्चैरुरोदशोकार्तस्तमुवाचभयाकुलः ॥ ४४ ॥ महेंद्र उ० ॥ दत्तःसमुचितःशापोमह्यंमायापहःप्रभो ॥ हृतांनयाचे संपत्तिं किंचिज्ज्ञानंचदेहिमे ॥ ४५ ॥ ऐश्वर्यंविपदांबीजंज्ञानप्रच्छन्नकारणं ॥ मुक्तिमार्गकुठारश्चभक्तेश्चव्यवधायकं ॥ ४६ ॥ मुनिरुवाच ॥ जन्ममृत्युजराशोक रोगबीजांकुरं परं ॥ संपत्तितिमिरांधश्चमुक्तिमार्गंनपश्यति ॥ ४७ ॥ संपन्मत्तोविमूढश्चसुरामत्तःसएवच ॥ बांधवैर्वेष्टितःसोपिबंधुत्वेनैवहेहरे ॥ ४८ ॥ संपत्तिमदमत्तश्चविषयांधश्चविब्हलः ॥ महाकामीराजसिकःसत्वमार्गंनपश्यति ॥ ४९ ॥ द्विविधोविषयांधश्चराजसस्तामसःस्मृतः ॥ अशास्त्रज्ञस्तामसश्चशास्त्रज्ञोराजसःस्मृतः ॥ ५० ॥ शास्त्रंचद्विविधंमार्गंदर्शयेत्सुरपुंगव ॥ प्रवृत्तिबीजमेकंचनिवृत्तेःकारणंपरं ॥ ५१ ॥ चरंतीजीविनश्चादौप्रवृत्तेर्दुःखवर्त्मनि ॥ स्वच्छंदेचप्रसन्नंचनिर्विरोधंचसंततं ॥ ५२ ॥ आयातिमधुनोलोभात्क्लेशेनसुखमानितः ॥ परिणामेनाशबीजेजन्ममृत्युजराकरे ॥ ५३ ॥ अनेकजन्मपर्यंतंकृत्वाचभ्रमणमुदा ॥ स्वकर्मविहितायांचनानायोन्यांक्रमेणच ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥

जन्ममृत्युजरेति बीजांकुरंलक्ष्मीरूपं ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ प्रवृत्तिर्लक्षणधर्मेयत्फलंतदाह चरंतीति निर्विरोधमुन्मत्तवादित्यर्थः ॥ ५२ ॥ आयातीति यथामधुनोलोभात्भ्रमरआयातिकमलेतस्मिन्मुकुलितेस्वयंबद्धोभवतीतिनजानातितथायंप्राणीक्लेशेदुःखरूपेसंसारेसुखमानितःसुखबुद्धिःसन्नायाति नाशबीजेजन्ममृत्युजरास्यानेसंसारेइतिभावः ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥

॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ यस्मात्प्रवृत्तिमार्गेण मुक्तिदस्तस्मात्प्रवृत्तिमार्गविहाय सद्गुरुमाश्रित्य ज्ञानाभ्यासेन मुक्तो भवेदिति त्वया पृष्टं ज्ञा-
नंतमयोक्तमिति भावः ॥ ५८ ॥ वर्धयामासणि च प्रयोग आर्षः वृद्धे इत्यर्थः ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ साश्रुनेत्रं ईश्वरे पूर्णप्रेम्णो
ततः श्वेशानुग्रहाच्च सत्संगलभते च सः ॥ सहस्रेषु शतेष्वेको भवाब्धिपारकारणं ॥ ५५ ॥ साधुस्तत्त्वप्रदीपे
न मुक्तिमार्गं प्रदर्शयेत् ॥ तदा करोति यत्नं च जीवो बन्धनखण्डने ॥ ५६ ॥ अनेकजन्मयोगेन तपसान् शनेन च ॥
तदालभेन्मुक्तिमार्गं निर्विघ्नं सुखदं परं ॥ ५७ ॥ इदं श्रुतं गुरोर्वक्त्राद्यत्पृच्छसि पुरंदर ॥ मुनेस्तद्वचनं श्रुत्वा चित्
रागो बभूव सः ॥ ५८ ॥ वैराग्यं वर्धयामास तस्य ब्रह्मन् दिने दिने ॥ मुनेः स्थानाद्गृहं गत्वा सददर्शमरावती ॥ ५९ ॥
दैत्यैरसुरसंघैश्च समाकीर्णो भयाकुला ॥ विपमो पल्लवांकुत्रबन्धुहीनां च कुत्रचित् ॥ ६० ॥ पितृमातृकलत्रादि-
विहीना मतिचंचला ॥ शत्रुग्रस्तां च तां दृष्ट्वा जगाम वाक्पतिं प्रति ॥ ६१ ॥ शक्रो मंदाकिनीतीरे ददर्श गुरुमीश्वरं ॥
ध्यायमानं परं ब्रह्म गंगातोये स्थितं परं ॥ ६२ ॥ सूर्याभिसंमुखं पूर्वमुखं च विश्वतोमुखं ॥ साश्रुनेत्रं पुलकिनं प-
रमानंदसंयुतं ॥ ६३ ॥ वरिष्ठं च गारिष्ठं च धर्मिष्ठं श्रेष्ठं सेवितं ॥ प्रेष्ठं च बन्धुवर्गाणामतिश्रेष्ठं च ज्ञानिनां ॥ ६४ ॥
ज्येष्ठं च भ्रातृवर्गाणामनिष्ठं सुरैरिणां ॥ दृष्ट्वा गुरुं जपंतं च तत्र तस्थौ सुरेश्वरः ॥ ६५ ॥ प्रहरांते गुरुं दृष्ट्वा चोत्थितं प्र-
णनामसः ॥ प्रणम्य चरणां भोजेरुरोदोच्चैर्मुहुर्मुहुः ॥ ६६ ॥ वृत्तांतं कथयामास ब्रह्मशापादिकं तथा ॥ पुनर्वरोप-
लब्धिं च ज्ञानप्राप्तिसुदुर्लभां ॥ ६७ ॥ वैरिग्रस्तां च स्वपुरीं क्रमेणैव सुरेश्वरः ॥ शिष्यस्य वचनं श्रुत्वा सुबुद्धिर्वदतां
वरः ॥ ६८ ॥ बृहस्पतिरुवाचे दंकोपसंरक्तलोचनः ॥ गुरुरुवाच ॥ श्रुतं सर्वसुरश्रेष्ठमारोदीर्वचनं शृणु ॥ ६९ ॥
न कातरोहिनीति ज्ञो विपत्तौ न कदाचन ॥ संपत्तिर्वा विपत्तिर्वा न श्वराश्रमरूपिणी ॥ ७० ॥ ॥ ६४ ॥

लक्षणमेतत् ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ पुनरनंतरं दरोपलब्धिं ज्ञानप्राप्तिरूपं मुनेः सकाशाज्ज्ञातां च कथयामासेत्यर्थः ॥ ६७ ॥ सुरेश्व-
रः कथयामासेत्यन्वयः ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ विपत्तावपि नीतिज्ञो धैर्यस्यैव तस्मात्कातरो न भवतीत्यर्थः नीतिमेवाह संपत्तिर्वेति ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥

पूर्वेति यतः सासंपत्तिर्वाविपत्तिर्वापूर्वजन्मनि कृतस्वकर्मायत्ता तदधीना भवति ततस्तयोः कर्तापि स्वयमेव भवति तस्मात्कर्मानुरूपफलं भविष्यत्येव
 कातरतया तन्नाशो भविष्यतीत्यर्थः एतादृशं दुःखं सर्वेषां भवतीत्याह सर्वेषां चेति ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ कमलोद्भवं ब्रह्माणं स
 पूर्वस्वकर्मायत्ता च स्वयंकर्ता तयोरापि ॥ सर्वेषां च भवत्येव शश्वज्जन्मनि जन्मनि ॥ ७१ ॥ चक्रनेमि क्रमेणैव त
 त्रका परिदेवना ॥ उक्तं हि स्वकृतं कर्म भुज्यते खिलभारते ॥ ७२ ॥ शुभाशुभं च यत्किंचित्स्वकर्मफलभुक् पुमा
 न् ॥ नाभुक्तं क्षीयते कर्म कल्पकोटिशतैरपि ॥ ७३ ॥ अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभं ॥ इत्येवमुक्तं वेदे च
 कृष्णेन परमात्मना ॥ ७४ ॥ सामवेदोक्तशाखायां संबोध्य कमलोद्भवं ॥ जन्मभोगावशेषे च सर्वेषां कृतकर्मणां
 ॥ ७५ ॥ अनुरूपं हितेषां च भारतेन्यत्र चैव हि ॥ कर्मणा ब्रह्मशापं च कर्मणा च शुभाशुभं ॥ ७६ ॥ कर्मणा च म
 हालक्ष्मीलभेदैन्यं च कर्मणा ॥ कोटिजन्मार्जितं कर्म जीविनामनुगच्छति ॥ ७७ ॥ न हित्यजेद्विना भोगं तच्छाये
 वपुरंदर ॥ कालभेदे देशभेदे पात्रभेदे च कर्मणां ॥ ७८ ॥ न्यूनताधिकभावोऽपि भवेदेव हि कर्मणा ॥ वस्तुदाने
 न वस्तूनां समं पुण्यं दिने दिने ॥ ७९ ॥ दिनभेदे कोटिगुणमसंख्यं वा अधिकं तथा ॥ समे देशे च वस्तूनां दाने पुण्यं स
 मंसुर ॥ ८० ॥ देशभेदे कोटिगुणमसंख्यं वा ततोधिकं ॥ समे पात्रे समे पुण्यं वस्तूनां कर्तुरेव च ॥ ८१ ॥ पात्र
 भेदे शतगुणमसंख्यं वा ततोधिकं ॥ यथाफलं तिस्र्यानि न्यूनान्यप्यधिकानि च ॥ ८२ ॥ कर्षकाणां क्षेत्रभेदे
 पात्रभेदे फलं तथा ॥ सामान्यदिवसे विप्रदानं समफलं भवेत् ॥ ८३ ॥ अमायां रविसंक्रांत्यां फलं शतगुणं भवे
 त् ॥ चातुर्मास्यां पौर्णमास्यामनंतं फलमेव च ॥ ८४ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६२ ॥

बोध्यतं प्रत्युक्तं कृष्णेनेत्यर्थः जन्मेति कृतकर्मणां भोगावशेषे तेषां कर्मणामनुरूपं जन्मभारतेऽन्यत्र वा भवतीत्यन्वयः ॥ ७५ ॥ ७६ ॥
 ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ देशकालपात्रभेदेन कृतानां कर्मणां फलतारतम्यं भवतीति सविस्तरं वर्णयति दिनभेदेति ॥ ८० ॥ ८१ ॥
 ॥ ८२ ॥ यथा कर्षकाणां क्षेत्रभेदे सस्यानि न्यूनान्यधिकानि वा फलं तितद्वदित्यर्थः ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७७ ॥

दे.भा.न

११९

॥ ८५ ॥ अक्षयायां नवम्यां ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ एवं कर्मांशीनत्वे सति तन्निवृत्तिः केन भवति तत्राह यस्याज्ञयेति ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥
इष्टमिष्टदेवं ॥ ९२ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधे चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४० ॥ एकोनषष्टिंशोऽकैस्तु शक्रः सुरगणैः सह ॥ निवे
ग्रहणेशशिनः कोटिगुणं च फलमेव च ॥ सूर्यस्य ग्रहणे वा पिततो शतगुणं भवेत् ॥ ८५ ॥ अक्षयायामक्षयं तदसंख्या
फलमुच्यते ॥ एवमन्यत्र पुण्याहे फलाधिक्यं भवेदिति ॥ ८६ ॥ यथा दाने तथा स्नाने जपेन्यपुण्यकर्मसु ॥ एवं स
र्वत्र बोद्धव्यं नराणां कर्मणां फलं ॥ ८७ ॥ यथा दंडेन च क्रेण शरविणध्रमेण च ॥ कुंभं निर्माति निर्माता कुंभकारो
मृदाभुवि ॥ ८८ ॥ तथैव कर्मसूत्रेण फलं धाता ददाति च ॥ यस्याज्ञया सृष्टमिदं तं च नारायणं भज ॥ ८९ ॥ स
विधाता विधातुश्च पातुः पाताजगद्यये ॥ सृष्टुः स्रष्टुश्च संहर्तुः संहर्ता फलकालकः ॥ ९० ॥ महाविपत्तौ सं
सारियः स्मरेन्मधुसूदनं ॥ विपत्तौ तस्य संपत्तिर्भवेदित्याह शंकरः ॥ ९१ ॥ इत्येषमुक्ता तत्त्वज्ञः समा
लिंग्यसुरेश्वरं ॥ दत्त्वा शुभाशिषं चेष्टं बोधयामास नारद ॥ ९२ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे नवमस्कंधे च
त्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४० ॥ नारायण उवाच ॥ हरिं ध्यात्वा हरिर्ब्रह्मन् जगाम ब्रह्मणः सभां ॥ बृहस्पतिं पुरस्कृत्य सर्वैः
सुरगणैः सह ॥ १ ॥ शीघ्रं गत्वा ब्रह्मलोकं दृष्ट्वा च कमलोद्भवं ॥ प्रणेमुर्देवताः सर्वाः सहेन्द्रो गुरुणा सह ॥ २ ॥ वृत्तां
तं कथयामास सुराचार्यो विधिं प्रति ॥ प्रहस्योवाच तच्छ्रुत्वा महेन्द्रं कमलासनः ॥ ३ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ बत्समद्वंशजातो
सिप्रपौत्रो मे विचक्षणः ॥ बृहस्पतेश्च शिष्यस्त्वं सुराणामधिपः स्वयं ॥ ४ ॥ मातामहश्च दक्षस्ते विष्णुभक्तः
प्रतापवान् ॥ कुलत्रयं यस्व शुद्धं कथं सोऽहं कृतो भवेत् ॥ ५ ॥ मातापतिव्रता यस्य पिता शुद्धो जितेन्द्रियः ॥ माता
महो मातुलश्च कथं सोऽहं कृतो भवेत् ॥ ६ ॥

॥ ६ ॥

॥ ७ ॥

॥ ८ ॥

दितुं निजंदुःखं गतो ब्रह्माणमीश्वरं ॥ १ ॥ बृहस्पतिवाक्योत्तरं शक्रो यत्कृतवान् तदाह हरिं ध्यात्वेति हरिर्द्विः ॥ २ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥
कथं सोऽहमिति कथमेतादृशोऽहं कृतोऽहं कारयुक्तो भवेदथापि त्वं जातस्तदेतदाश्चर्यमिति भावः ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥

टी.अ.
४०

११९

हरिदोषीदेवापराधवान्भवतीत्यर्थः ॥ ७ ॥ सदेवआत्मरूपोदेहाद्यस्यप्रयातीत्यन्वयः ॥ ८ ॥ देहनगरस्थितस्यात्मनोराज्ञःसेवकानांह
मनोहमिति अहं ब्रह्मा इन्द्रियेशं मनोभवामीत्यर्थः प्रकृतिर्विष्णोरात्मनःप्राणस्वरूपाराधारूपाप्रकृतिर्भवतीत्यर्थः बुद्धिस्तुसतीभगवतीदुर्गा

जनःपैतृकदोषेणदोषान्मातामहस्यच ॥ गुरुदोषात्रिभिर्दोषैर्हरिदोषीभवेत्ध्रुवं ॥ ७ ॥ सर्वांतरात्माभगवान्
सर्वदेहेष्ववस्थितः ॥ यस्यदेहात्सप्रयातिसशवस्तत्क्षणेभवेत् ॥ ८ ॥ मनोहमिन्द्रियेशंचज्ञानरूपोहिशंकरः ॥
विष्णुप्राणाचप्रकृतिर्बुद्धिर्भगवतीसती ॥ ९ ॥ निद्रादयःशक्तयश्चताःसर्वाःप्रकृतेःकलाः ॥ आत्मनःप्रतिबिंब
श्चजीवोभोगशरीरभृत् ॥ १० ॥ आत्मनीशेगतेदेहात्सर्वेयांतिससंभ्रमाः ॥ यथावर्त्मनिगच्छंतंनरदेवमिवानु
गाः ॥ ११ ॥ अहंशिवश्चशेषश्चविष्णुर्धर्मोमहाविराट् ॥ यूयंयदंशाभक्ताश्चतत्पुष्पंन्यकृतंत्वया ॥ १२ ॥ शि
वेनपूजितंपादपद्मंपुष्पेणयेनच ॥ तच्चदुर्वाससादत्तंदैवेनन्यकृतंत्वया ॥ १३ ॥ तत्पुष्पंमस्तकेयस्यकृष्णपादा
ब्जप्रच्युतं ॥ सर्वेषांचसुराणांचतत्पूजापुरतोभवेत् ॥ १४ ॥ दैवेनवंचितस्त्वंहिदैवंचबलवत्तरं ॥ भाग्यहीनंज
नंमूढंकोवारक्षितुमीश्वरः ॥ १५ ॥ साश्रीर्गताधुनाकोपात्कृष्णनिर्माल्यवर्जनात् ॥ अधुनागच्छवैकुण्ठमया
चगुरुणासह ॥ १६ ॥ निषेव्यतत्रश्रीं ताथंश्रियंप्राप्स्यसिमद्वरात् ॥ एवमुक्त्वाचसब्रह्मासर्वैःसुरगणैःसह ॥ १७ ॥
तत्रगत्वापरंब्रह्मभगवंतंसनातनं ॥ दृष्ट्वातेजःस्वरूपंतंप्रज्वलंतंस्वतेजसा ॥ १८ ॥ ग्रीष्ममध्यान्हमार्तदशत
कोटिसमप्रभं ॥ शांतमनादिमध्यांतंलक्ष्मीकांतमनंतकं ॥ १९ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६२ ॥

भवतीत्यर्थः ॥ ९ ॥ निद्राक्षुधादयस्तुतस्यैवात्मनःशक्तेःकलाभवंतीत्यर्थः आत्मनोयोबुद्धौप्रतिबिंबरूपःसजीवोभोगशरीरभृद्भवतीत्यर्थः
॥ १० ॥ तत्पुष्पंतादृशमहिमावतःश्रीगोपालसुंदरीरूपश्रीकृष्णस्यपुष्पंनिर्माल्यभूतंत्वयान्यकृतंतिरस्कृतंसण्णमहानपराधस्त्वयाकृतइतिभा
वः ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ सुराणामध्येइत्यर्थः ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ ॥ ७ ॥

१२०

चतुर्भुजैःपार्षदैश्चसरस्वत्यायुतंप्रभुं॥भक्त्याचतुर्भिर्वेदैश्चगंगयापरिवेष्टितं॥२०॥तंप्रणेमुःसुराःसर्वेमूर्ध्नात्र
ह्यपुरोगमाः॥भक्तिनम्राःसाश्रुनेत्रास्तुष्टुवुःपरमेश्वरं॥२१॥वृत्तांतंकथयामासस्वयंब्रह्माकृतांजलिः॥रु
रुदुर्देवताःसर्वाःस्वाधिकारच्युताश्चताः॥२२॥सददर्शसुरगणंविपद्रुस्तंभयाकुलं॥रत्नभूषणशून्यंचवाह
नादिविवर्जितं॥२३॥शोभाशून्यंहतश्रीकंनिष्प्रभंसभयंपरं॥उवाचकातरंदृष्ट्वाभयभीतिविभंजनः॥२४॥
भगवानुवाच॥माभैर्ब्रह्मन्हेसुराश्चभयंकिंवोमयिस्थिते॥दास्यामिलक्ष्मीमचलांपरमैश्वर्यवर्द्धिनीं॥२५॥
किंचमद्वचनंकिंचित्श्रूयतांसमयोचितं॥हितंसत्यंसारभूतंपरिणामसुखावहं॥२६॥जनाश्चासंख्यविश्व
स्थामदधीनाश्चसंततं॥यथातथाहंमद्भक्तपराधीनोऽस्वतंत्रकः॥२७॥यंयंरुष्टोहिमद्भक्तोमत्परोहिनिरंकु
शः॥तद्गृहेहंनतिष्ठामिपद्मयासहानिश्चितं॥२८॥दुर्वासाशंकरांशश्चैष्णवोमत्परायणः॥तच्छापादागतो
हंचसलक्ष्मीकोहिवोगृहात्॥२९॥यत्रशंखध्वनिर्नास्ति तुलसीनाशिवार्चनं॥नभोजनंचविप्राणांनपद्मात
त्रतिष्ठति॥३०॥मद्भक्तानांचमेनिंदायत्रब्रह्मन्भवेत्सुराः॥महारुष्टमहालक्ष्मीस्ततोयांतिपराभवं॥३१॥
मद्भक्तिहीनोयमूढोभुंक्तेयोहरिवासरे॥ममजन्मदिनेवापियातिश्रीस्तद्गृहादपि॥३२॥मन्नामविक्रयीयश्च
विक्रीणातिस्वकन्यकां॥यत्रातिथिर्नभुंक्तेचमत्प्रियायातितद्गृहात्॥३३॥योविप्रःपुंश्चलीपुत्रोमहापापीच
तत्पतिः॥पापिनोयोगृहंयातिशूद्रश्चाद्वान्नभोजकः॥३४॥॥६१॥॥६१॥॥६१॥॥६१॥॥

शिवार्चनंशिवस्याशिवायाश्चार्चनमित्यर्थः॥३०॥

॥३१॥

॥३२॥

॥३३॥

॥३४॥

॥

॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ वाचालोऽसद्वहुभाषणवान् ॥ ४२ ॥ योन्यागंपुरुषांतरस्यांगमित्य

महारुष्टततोयातिमंदिरात्कमलालया ॥ शूद्राणांशवदाहीचभाग्यहीनोद्विजाधमः ॥ ३५ ॥ यातिरुष्टतद्रुहा
च्चदेवाःकमलवासिनी ॥ शूद्राणांसूपकारीयोब्राह्मणोवृषवाहकः ॥ ३६ ॥ ततोयपानभीताचकमलायातितद्रुहा
त् ॥ अशुद्धहृदयःक्रूरोहिंसकोनिंदकोद्विजः ॥ ३७ ॥ ब्राह्मणःशूद्रायाजीचयातिदेवीचतद्रुहात् ॥ अवीरान्नचयोभुं
क्तेतस्माद्यातिजगत्प्रसूः ॥ ३८ ॥ तृणंछिनत्तिनखरैस्तैर्वायोविलिखेन्महीं ॥ निराशोब्राह्मणोयत्रतद्रुहाद्याति
मत्प्रिया ॥ ३९ ॥ सूर्योदयेद्विजोभुंक्तेदिवास्वापीचब्राह्मणः ॥ दिवामैथुनकारीचयस्तस्माद्यातिमत्प्रिया ॥ ४० ॥
आचारहीनोविप्रोयोयश्चशूद्रप्रतिग्रही ॥ अदीक्षितोहियेमूढस्तस्माद्वैयातिमत्प्रिया ॥ ४१ ॥ स्निग्धपादश्च
नग्नोहियःशेतेज्ञानदुर्बलः ॥ शश्वद्वसतिवाचालोयातिसातद्रुहात्सती ॥ ४२ ॥ शिरस्नातस्तुतैलेनयोन्यांगंस
मुपस्पृशेत् ॥ स्वांगेचवादयेद्वाद्यंरुष्टासायातितद्रुहात् ॥ ४३ ॥ व्रतोपवासहीनोयःसंध्याहीनोशुचिर्द्विजः ॥
विष्णुभक्तिविहीनस्तुतस्माद्यातिचमत्प्रिया ॥ ४४ ॥ ब्राह्मणंनिंदयेद्योहितंचयोद्वेष्टिसंततं ॥ जीवहिंसोदयाही
नोयातिसर्वप्रसूस्ततः ॥ ४५ ॥ यत्र यत्रहरेरर्चाहरेरुत्कीर्तनंतथा ॥ तत्रतिष्ठतिसादेवीसर्वमंगलमंगला ॥ ४६ ॥
यत्रप्रशंसाकृष्णस्यतद्भक्तस्यपितामह ॥ साचकृष्णप्रियादेवीतत्रतिष्ठतिसंततं ॥ ४७ ॥ यत्रशंखध्वनिःशं
खःशिलाचंतुलसीदलं ॥ तत्सेवावंदनंध्यानंतत्रसापरितिष्ठति ॥ ४८ ॥ शिवलिंगार्चनंयत्रतस्यचोत्कीर्तनं
शुभं ॥ दुर्गार्चनंतद्रुणाश्चतत्रपद्मनिवासिनी ॥ ४९ ॥ विप्राणांसेवनंयत्रतेषांचभोजनंशुभं ॥ अर्चनंसर्वदे
वानांतत्रपद्ममुखीसती ॥ ५० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥

यः ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ एतेषुस्थलेषुनातिष्ठतिचेत्कुत्रतिष्ठतितत्राह यत्रयत्रेति ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥

कलयस्वीकुरु ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ब्रह्मशापेति देवामर्यादाहेतोर्हि ब्राह्मणशापस्तदभावेतुनस्य शापस्य नाशनमभूदित्यर्थः ॥ ५७ ॥ स्वविषयं स्वस्थानं वरदानेन ब्रह्मणा श्रियं प्राप्स्यसि मद्वरादिति पूर्वोक्तवाक्येन कृतेन ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधे एकचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४१ ॥ पंचसप्ततिपद्यैस्तु महालक्ष्म्यर्चनक्रमं ॥ मंत्रस्तोत्रादिकं चैव यथावदभिवर्ण्य

इत्युक्त्वा च सुरान्सर्वान् रमामाहरमापतिः ॥ क्षीरोदसागरे जन्म कलया कलयेति च ॥ ५१ ॥ इत्युक्त्वा तां जगन्नाथो ब्रह्माणं पुनराह च ॥ मथित्वा सागरं लक्ष्मीं देवेभ्यो देहि पद्मज ॥ ५२ ॥ इत्युक्त्वा कमलाकांतो जगामांतः पुरं मुने ॥ देवाश्चिरेण कालेन ययुः क्षीरोदसागरं ॥ ५३ ॥ मंथानं मंदरं कृत्वा कूर्मं कृत्वा च भाजनं ॥ कृत्वा शेषं मंथपाशं मंथुरसुराः सुराः ॥ ५४ ॥ धन्वंतरिं च पीयूषमुच्चैः श्रवसमीप्सितं ॥ नानारत्नं हस्तिरत्नं प्रापुर्लक्ष्मीं मुदर्शनं ॥ ५५ ॥ वनमालां ददौ सा च क्षीरोदशायिने मुने ॥ सर्वेश्वराय रम्याय विष्णवे वैष्णवी सती ॥ ५६ ॥ देवैस्तु त्वा पूजिता च ब्रह्मणा शंकरेण च ॥ ददौ दृष्टिं सुरगृहे ब्रह्मशापविमोचनात् ॥ ५७ ॥ प्रापुर्देवाः स्वविषयं दैत्यग्रस्तं भयं करं ॥ महालक्ष्मीं प्रसादेन वरदानेन नारद ॥ ५८ ॥ इत्येवं कथितं सर्वं लक्ष्म्युपाख्यानमुत्तमं ॥ सुखदंसारभूतं च किं भूयः श्रोतुमिच्छसि ॥ ५९ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे नवमस्कंधे एकचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४१ ॥ नारद उ० ॥ हरेरुत्कीर्तनं भद्रं श्रुतं तद्भानमुत्तमं ॥ ईप्सितं लक्ष्म्युपाख्यानं ध्यानं स्तोत्रं वद प्रभो ॥ १ ॥ नारायण उ० ॥ स्नात्वा तीर्थे पुरा शक्रो धृत्वा धौ ते च वाससी ॥ घटं संस्थाप्य क्षीरोदेषट् देवान् पर्यपूजयत् ॥ २ ॥

ते ॥ १ ॥ अथ नारदो लक्ष्म्या ध्यानादिकं पृच्छति हरेरुत्कीर्तनमिति हरेरुत्कीर्तनं गुणानुवर्णनं लक्ष्म्या उपाख्यानं च श्रुतमधुना ध्यानं स्तोत्रं पूजादिकं च वदेत्यर्थः ॥ १ ॥ तत्र नारायणः प्रथमतः पूजाविधिक्रमेणैव सर्वमाह स्नात्वेति क्षीरोदेषट् देवान् वक्ष्यमाणान् पूजितवान् तेषां पूजां विनान्य कर्मण्यनधिकारात् ॥ २ ॥

षट्देवानाह गणेशं चेति बन्दिमग्निहोत्रहोमंपुरोधसा बोधित इति शेषः ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ध्यानं चेति हरिणा सामवेदोक्तं ध्यानं यद्ब्रह्मणे

गणेशं च दिने शं च बन्दि विष्णुं शिवं शिवां ॥ एतान् भक्त्या समभ्यर्च्य पुष्पगंधादिभिस्तदा ॥ ३ ॥ अवाह्य च म
हालक्ष्मीं परमैश्वर्यरूपिणीं ॥ पूजां च कारदेवेशो ब्रह्मणा च पुरोधसा ॥ ४ ॥ पुरःस्थितेषु मुनिषु ब्राह्मणेषु
गुरौ हरौ ॥ देवादिषु सुदेशे च ज्ञानानंदेशिवे मुने ॥ ५ ॥ पारिजातस्य पुष्पं च गृहीत्वा चंदनोक्षितं ॥ ध्यात्वा देवीं म
हालक्ष्मीं पूजयामास नारद ॥ ६ ॥ ध्यानं च सामवेदोक्तं यद्दत्तं ब्रह्मणे पुरा ॥ हरिणा तेन ध्यानेन तन्निबोधवदामिते
॥ ७ ॥ सहस्रदलपद्मस्थकार्णिका वासिनीं परां ॥ शरत्पार्वणकोटीं दुप्रभामुष्टिकरां परां ॥ ८ ॥ स्वतेजसा प्रज्व
लंतीं सुखदृश्यां मनोहरां ॥ प्रतप्तकांचननिभशोभां मूर्तिमतीं सतीं ॥ ९ ॥ रत्नभूषणभूषाढ्यां शोभितां पीत
वाससं ॥ ईषद्वास्य प्रसन्नास्यां शश्वत्सु स्थिरयौवनां ॥ १० ॥ सर्वसंपत्प्रदात्रीं च महालक्ष्मीं भजेशुभां ॥ ध्याने
नानेन तां ध्यात्वानानागुणसमन्वितां ॥ ११ ॥ संपूज्य ब्रह्मवाक्येन चोपचाराणि षोडश ॥ ददौ भक्त्या विधानेन
प्रत्येकं मंत्रपूर्वकं ॥ १२ ॥ प्रशस्तानि प्रकृतानि वराणि विविधानि च ॥ अमूल्यरत्नसारं च निर्मितं विश्वकर्मणा
॥ १३ ॥ आसनं च विचित्रं च महालक्ष्मीः प्रगृह्यतां ॥ शुद्धगंगोदकमिदं सर्ववन्दितमोप्सितं ॥ १४ ॥ पापे धमवन्दि
रूपं च गृह्यतां कमलालये ॥ पुष्पचंदनदूर्वादिसंयुतं जलं हवीजलं ॥ १५ ॥ शंखगर्भास्थितं स्वर्ध्वं गृह्यतां पद्मवा
सिनि ॥ सुगंधिपुष्पतैलं च सुगंधामलकीफलं ॥ १६ ॥ देहसौंदर्यबीजं च गृह्यतां श्रीहरेः प्रिये ॥ कार्पासजं च कृमि
जं वसनं देवि गृह्यतां ॥ १७ ॥ रत्नस्वर्णविकारं च देहभूषाविवर्धनं ॥ शोभायै श्रीकरं रत्नं भूषणं देवि गृह्यतां ॥ १८ ॥

दत्तं तेन ध्यात्वेत्यर्थः ॥ ७ ॥ मुष्टिश्चैर्य ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ प्रशस्तानीत्युपचारवस्तूनामुपलक्षणं आसनादिमंत्रानाह अमूल्येति
अत्र मंत्रा एव संगृह्यंते पूजोपचारक्रमस्तु प्रसिद्ध एव ग्राह्य इति बोध्यं ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ आमलकीफलचूणमित्यर्थः ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥

॥ १९ ॥ सुगंधियुक्तमितिवृत्तं कापांसजं चेत्यदं श्लोकावेवमंत्रौ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ स्वस्तिकं प
 सर्वसौंदर्यबीजं च सद्यः शोभाकरं परं ॥ वृक्षनिर्यासरूपं च गंधद्रव्यादिसंयुतं ॥ १९ ॥ श्रीकृष्णकांते धूपं च पवित्रं
 प्रतिगृह्यतां ॥ सुगंधियुक्तं सुखदं च दनं देवि गृह्यतां ॥ २० ॥ जगच्चक्षुस्वरूपं च पवित्रं तिमिरापहं ॥ प्रदीपं सुख
 रूपं च गृह्यतां च सुरेश्वरि ॥ २१ ॥ नानोपहाररूपं च नानारससमन्वितं ॥ अतिस्वादुकरं चैव नैवेद्यं प्रतिगृह्यतां
 ॥ २२ ॥ अन्नं ब्रह्मस्वरूपं च प्राणरक्षणकारणं ॥ तुष्टिदं पुष्टिदं चैव देव्यन्नं प्रतिगृह्यतां ॥ २३ ॥ शाल्यन्नं सुपक्वं च
 शर्करागव्यसंयुतं ॥ स्वादुयुक्तं महालक्ष्मीः परमान्नं प्रगृह्यतां ॥ २४ ॥ शर्करागव्यपक्वं च सुस्वादुसुमनोहरं ॥ म
 यानिवेदितं भक्त्या स्वस्तिकं प्रतिगृह्यतां ॥ २५ ॥ नानाविधानिरम्याणि पक्वान्नानि फलानि च ॥ सुरभिस्तनसं
 त्यक्तं सुस्वादुसुमनोहरं ॥ २६ ॥ मर्त्यामृतं सुगव्यं च गृह्यतां मच्युतप्रिये ॥ सुस्वादुरससंयुक्तमिक्षुवृक्षसमुद्भवं
 ॥ २७ ॥ अग्निपक्वमतिस्वादुगुडं च प्रतिगृह्यतां ॥ यवगोधूमसस्यानां चूर्णरेणुसमुद्भवं ॥ २८ ॥ सुपक्वं गुडग
 व्याक्तं मिष्टान्नं देवि गृह्यतां ॥ सस्यचूर्णोद्भवं पक्वं स्वस्तिकादिसमन्वितं ॥ २९ ॥ मयानिवेदितं भक्त्या नैवेद्यं प्र
 तिगृह्यतां ॥ शीतवायुप्रदं चैव दाहे च सुखदं परं ॥ ३० ॥ कमले गृह्यतां चैदं व्यजनं श्वेतचामरं ॥ तांबूलं च वरं रम्यं
 कर्पूरादि सुवासितं ॥ ३१ ॥ जिह्वाजाड्यच्छेदकरं तांबूलं प्रतिगृह्यतां ॥ सुवासितं सुशीतं च पिपासानाशकार
 णं ॥ ३२ ॥ जगज्जीवनरूपं च जीवनं देवि गृह्यतां ॥ देहसौंदर्यबीजं च सदाशोभाविबर्द्धनं ॥ ३३ ॥ कार्पासजं च
 कृमिजं वसनं देवि गृह्यतां ॥ रत्नस्वर्णविकारं च देहभूषादिवर्द्धनं ॥ ३४ ॥ शोभाधारं श्रीकिरंचभूषणं देवि गृह्यतां ॥
 नानाऋतुषु निर्माणं बहुशोभाश्रयं परं ॥ ३५ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६२ ॥

कान्नविशेषः ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ सस्यानां मुद्गादिधान्यानां ॥ २८ ॥ मिष्टान्नं लडुकं सस्यचूर्णोद्भवं मुद्गादिधान्यचूर्णोद्भवं ॥ २९ ॥
 ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

अत्रकेचिन्मंत्राः पुनः पठन्ते तदा भेदाः प्रायस्स्वित्थं यथाजना गृहे सामान्यानुपचारानुगृह्णन्ति सभायां तु विशिष्टास्तथैव देव्यै सामान्यविशेषभावेनो
पचारा देया इति ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ लक्ष्मीः श्रीबीजं मायाभुवनेश्वरी

सुरभूप्रियं शुद्धमाल्यं देवि प्रगृह्यतां ॥ शुद्धिदं शुद्धरूपं च सर्वमंगलमंगलं ॥ ३६ ॥ गंधवस्तूद्रवरं मयं गंधं देवि
प्रगृह्यतां ॥ पुण्यतीर्थोदकं चैव विशुद्धं शुद्धिदं सदा ॥ ३७ ॥ गृह्यतां कृष्णकांतित्वं रम्यमाचमनीयकं ॥ रत्नसा
रादिनिर्माणं पुष्पचंदनचर्चितं ॥ ३८ ॥ वस्त्रभूषणभूषाढ्यं सुतल्पं देवि गृह्यतां ॥ यद्यद्द्रव्यमपूर्वच पृथिव्यामपि
दुर्लभं ॥ ३९ ॥ देवभूषार्हभोग्यं च तद्द्रव्यं देवि गृह्यतां ॥ द्रव्याण्येतानि दत्त्वा च मूलेन देवपुंगव ॥ ४० ॥ मूलं जजाप
भक्त्या च दशलक्षं विधानतः ॥ जपेन दशलक्षेण मंत्रासिद्धिर्बभूव ह ॥ ४१ ॥ मंत्रश्च ब्रह्मणा दत्तः कल्पवृक्षश्च स
र्वतः ॥ लक्ष्मीर्मायाकामवाणी देता कमलवासिनी ॥ ४२ ॥ वैदिको मंत्रराजो यं प्रसिद्धः स्वाहयान्वितः ॥ कुबे
रोनेन मंत्रेण परमैश्वर्यमाप्तवान् ॥ ४३ ॥ राजराजेश्वरो दक्षः सावर्णिर्मनुरेव च ॥ मंगलोनेन मंत्रेण सप्तद्वीपेऽव
नीपतिः ॥ ४४ ॥ प्रियव्रतोत्तानपादैर्केदारो नृप एव च ॥ एते सिद्धाश्च राजेंद्रा मंत्रेणानेन नारद ॥ ४५ ॥ सिद्धे
मंत्रे महालक्ष्मीः शक्राय दर्शनं ददौ ॥ रत्नेन्द्रसारनिर्माणविमानस्थावरप्रदा ॥ ४६ ॥ सप्तद्वीपवती पृथ्वीं छा
दयंती त्विषा च सा ॥ श्वेतचंपकवर्णा भारत्नभूषणभूषिता ॥ ४७ ॥ ईषद्वास्य प्रसन्नास्य भक्तानुग्रहकातरा ॥
बिभ्रती रत्नमालां च कोटिचंद्रसमप्रभां ॥ ४८ ॥ दृष्ट्वा जगत्प्रसूं शांतां तुष्टावतां पुरंदरः ॥ पुलकांचितसर्वांगः
साश्रुनेत्रः कृतांजलिः ॥ ४९ ॥ ब्रह्मणा च प्रदत्तेन स्तोत्रराजेन संयुतः ॥ सर्वाभीष्टप्रदेनैव वैदिकेनैव तत्र च
॥ ५० ॥ पुरंदर उ ० ॥ नमः कमलवासिन्यै नारायण्यै नमो नमः ॥ कृष्णप्रियायै सततं महालक्ष्म्यै नमो नमः ॥ ५१ ॥

बीजं कामो मन्मथबीजं वाणीवाग्भवं देता चतुर्थ्यं ता कमलवासिनी तदा कमलवासिन्यै इति जातं स्वाहयान्वितः स्वाहांत इत्यर्थः ॥ ४२ ॥
॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥

॥ ५२ ॥ ५३ ॥ रत्नपद्मेस्थितायैतिशेषः ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥

पद्मपत्रेक्षणायैचपद्मास्यायैनमोनमः ॥ पद्मासनायैपद्मिन्यैवैष्णव्यैचनमोनमः ॥ ५२ ॥ सर्वसंपत्स्वरूपि
ण्यैसर्वाराध्यैनमोनमः ॥ हरिभक्तिप्रदात्र्यैचहर्षदात्र्यैनमोनमः ॥ ५३ ॥ कृष्णवक्षस्थितायैचकृष्णेशायैनमोन
मः ॥ चंद्रशोभास्वरूपायैरत्नपद्मेचशोभने ॥ ५४ ॥ संपत्त्यधिष्ठातृदेव्यैमहादेव्यैनमोनमः ॥ नमोवृद्धिस्वरू
पायैवृद्धिदायैनमोनमः ॥ ५५ ॥ वैकुण्ठायामहालक्ष्मीर्यालक्ष्मीःक्षीरसागरे ॥ स्वर्गलक्ष्मीरिंद्रगेहेराजलक्ष्मीर्नृपा
लये ॥ ५६ ॥ गृहलक्ष्मीश्चगृहिणांगेहेचगृहदेवता ॥ सुरभिःसागरेजातादक्षिणायज्ञकामिनी ॥ ५७ ॥ अदिति
र्देवमातात्वंकमलाकमलालया ॥ स्वाहात्वंचहविर्दानिकव्यदानेस्वधास्मृता ॥ ५८ ॥ त्वंहिविष्णुस्वरूपाचस
र्वाधारावसुंधरा ॥ शुद्धसत्त्वस्वरूपात्वंनारायणपरायणा ॥ ५९ ॥ क्रोधहिंसावार्जिताचवरदाशारदाशुभा ॥ प
रमार्थप्रदात्वंचहरिदास्यप्रदापरा ॥ ६० ॥ ययाविनाजगत्सर्वंभस्मीभूतमसारकं ॥ जीवन्मृतंचविश्वंचशश्व
त्सर्वययाविना ॥ ६१ ॥ सर्वेषांचपरामातासर्वबांधवरूपिणी ॥ धर्मार्थकाममोक्षाणांत्वंचकारणरूपिणी
॥ ६२ ॥ यथामातास्तनांधानांशिशूनांशैशवेसदा ॥ तथात्वंसर्वदामातासर्वेषांसर्वरूपतः ॥ ६३ ॥ मातृहीनस्त
नांधस्तुसचजीवतिदैवतः ॥ त्वयाहीनोजनःकोपिनजीवत्येवनिश्चितं ॥ ६४ ॥ सुप्रसन्नस्वरूपात्वंमांप्रसन्ना
भवांविके ॥ वैरिग्रस्तंचविषयंदेहिमह्यंसनातनि ॥ ६५ ॥ अहंयावत्त्वयाहीनोबंधुहीनश्चभिक्षुकः ॥ सर्वसंपाद्वि
हीनश्चतावदेवहरिप्रिये ॥ ६६ ॥ ज्ञानंदेहिचधर्मंचसर्वसौभाग्यमीप्सितं ॥ प्रभावंचप्रतापंचसर्वाधिकारमेवच
॥ ६७ ॥ जयंपराक्रमंयुद्धेपरमैश्वर्यमेवच ॥ इत्युक्त्वाचमहेंद्रश्चसर्वैःसुरगणैःसह ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥

स्तनांधस्तनपायीबालकोमातृहीनोपिजीवतित्वयाविनातुजनेनैवजीवतीत्यर्थः ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ॥ ७० ॥

॥ ६९ ॥ परीहारंप्रार्थनां ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेद्विचत्वारिंशोऽध्या

प्रणनामसाश्रुनेत्रोमूर्ध्नाचैवपुनःपुनः ॥ ब्रह्माचशंकरश्चैवशेषोधर्मश्चकेशवः ॥ ६९ ॥ सर्वेचक्रुःपरीहारंसुरार्थं
चपुनःपुनः ॥ देवेभ्यश्चवरंदत्वापुष्पमालांमनोहरां ॥ ७० ॥ केशवायददौलक्ष्मीःसंतुष्टासुरसंसदि ॥ ययुर्दे
वाश्चसंतुष्टाःस्वंस्वंस्थानंचनारद ॥ ७१ ॥ देवीययौहरेःस्थानंहृष्टाक्षीरोदशायिनः ॥ ययतुश्चैवस्वगृहंब्रह्मे
शानौचनारद ॥ ७२ ॥ दत्वाशुभाशिपंतौचदेवेभ्यःप्रीतिपूर्वकं ॥ इदंस्तोत्रंमहापुण्यंत्रिसंध्यंयःपठेन्नरः
॥ ७३ ॥ कुबेरतुल्यःसभवेद्राजराजेश्वरोमहान् ॥ पंचलक्षजपेनैवस्तोत्रसिद्धिर्भवेन्नृणां ॥ ७४ ॥ सिद्धस्तो
त्रंयदिपठेन्मासमेकंतुसंततं ॥ महामुखीचराजेंद्रोभविष्यतिनसंशयः ॥ ७५ ॥ इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणे
नवमस्कंधेद्विचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४२ ॥ नारायणउवाच ॥ नारायणमहाभागनारायणसमप्रभो ॥ रूपेणैवगु
णेनैवयशसातेजसात्विषा ॥ १ ॥ त्वमेवज्ञानिनांश्रेष्ठःसिद्धानांयोगिनांमुने ॥ तपस्विनांमुनीनांचपरोवेदाविदां
वरः ॥ २ ॥ महालक्ष्म्याउपाख्यानंविज्ञातंमहदद्भुतं ॥ अन्यत्किंचिदुपाख्यानंनिगूढंवदसांप्रतं ॥ ३ ॥ अती
वगोपनीयंयदुपयुक्तंचसर्वतः ॥ ३ ॥ प्रकाश्यंपुराणेषुवेदोक्तंधर्मसंयुतं ॥ ४ ॥ नारायणउवाच ॥ नानाप्रकारमा
ख्यानमप्रकाशयंपुराणतः ॥ श्रुतंकतिविधंगूढमास्तेब्रह्मन्सुदुर्लभं ॥ ५ ॥ तेषुयत्सारभूतंचश्रोतुंकिंवात्वमिच्छ
सि ॥ तन्मेब्रूहिमहाभागपश्चाद्वक्ष्यामि तत्पुनः ॥ ६ ॥ नारदउवाच ॥ स्वाहादेवीहविर्दानेप्रशस्तासर्वकर्मसु ॥
पितृदानेस्वधाशस्तादक्षिणासर्वतोवरा ॥ ७ ॥

॥ ४१ ॥

॥ ४२ ॥

यः ॥ ४२ ॥ अर्द्धाधिकैश्चतुःपंचाशाद्विःपदैरनंतरं ॥ स्वाहाशक्तेरुपाख्यानंयथावदभिवर्ण्यते ॥ १ ॥ एवमेतासामहादेवतानामाख्या
नंश्रुत्वानारदःपृच्छति नारायणेति ॥ १ ॥ २ ॥ निगूढंगुह्यंरहस्यभूतमित्यर्थः ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥

॥ ८ ॥ ९ ॥ प्रथमतो ब्रह्मलोकं ययुस्ततो ब्रह्मसभामाजग्मुः ॥ १० ॥ ब्रह्माश्रुतेति देववाक्यं श्रुत्वा भवतां ब्राह्मणैर्हविर्द्योतयते तस्य प्राप्स्याह
रन्व्यवस्थां करिष्यामीति ब्रह्मा प्रतिज्ञाय देवकल्याणार्थं हरिं निषेवे अस्तौ दित्यर्थः ॥ ११ ॥ ननु यज्ञे ब्राह्मणैर्हविर्द्योतयते तेन किं तेषां तृप्तिर्भवतीत्याशं
कते नारदः यज्ञरूपो हीति यज्ञरूपो हि परमात्मा यज्ञो वै विष्णुरिति श्रुतेः तस्मिन् यज्ञे यद्यद्वाह्ये स्तेभ्यो देवेभ्यो हविर्द्योतयते तेन किं तेषां तृप्तिर्भवतीति

एतासांचरितं जन्मफलं प्राधान्यमेव च ॥ श्रोतुमिच्छामित्वद्वक्राद्वदेदविदां वर ॥ ८ ॥ सूत उवाच ॥ नारद
स्य वचः श्रुत्वा प्रहस्य मुनिसत्तम ॥ कथां कथितुमारेभे पुराणोक्तां पुरातनीं ॥ ९ ॥ नारायण उवाच ॥ सृष्टेः प्रथ
मतो देवाः स्वाहारार्थं ययुः पुरा ॥ ब्रह्मलोकं ब्रह्मसभामाजग्मुः सुमनोहरां ॥ १० ॥ गत्वानिवेदनं चक्रुराहारे
तुकं मुने ॥ ब्रह्माश्रुत्वा प्रतिज्ञाय निषेवे श्रीहरिं परं ॥ ११ ॥ नारद उवाच ॥ यज्ञरूपो हि भगवान् कलया च बभूव
ह ॥ यज्ञे यद्यद्विदानंदं तत्तेभ्यश्च ब्राह्मणैः ॥ १२ ॥ नारायण उवाच ॥ हविर्ददति विप्राश्च भक्त्या च क्षत्रिया
दयः ॥ सुरानैव प्राप्नुवंति तद्दानं मुनिपुंगव ॥ १३ ॥ देवा विषण्णास्ते सर्वे तत्सभां च ययुः पुनः ॥ गत्वानिवेद
नं चक्रुराहाराभावहेतुकं ॥ १४ ॥ ब्रह्माश्रुत्वा तु ध्यानेन श्रीकृष्णं शरणं ययौ ॥ पूजां चकार प्रकृतेर्ध्यानैव तदाज्ञा
या ॥ १५ ॥ प्रकृतेः कलया चैव सर्वशक्तिस्वरूपिणी ॥ अतीव सुंदरी श्यामा रमणीयामनोहरा ॥ १६ ॥ ईषद्वा
स्य प्रसन्ना स्याभक्तानुग्रहकातरा ॥ उवाचेति विधेरग्रे पद्मयोने वरंवृणु ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥

शेषः ॥ १२ ॥ नारायणः समाधत्ते हविर्ददतीति सत्यं हविर्द्योतयते तथा पितृवैदेवान् प्रतिपद्यि प्राप्नुयात्तदा तेन हविषा देवानां तृप्तिः स्यान्न
च तस्य प्रापकः कश्चिदस्ति ततो न देवानां तृप्तिरित्यर्थः ॥ १३ ॥ यत एव ततो ब्रह्मसभां प्रति देवा ययुरित्याह देवा विषण्णा इति ॥ १४ ॥ ततो दे
ववाक्यं श्रुत्वा ब्रह्मा तत्कल्याणार्थं श्रीकृष्णं ध्यानस्तोत्रादिना शरणं ययौ ततः श्रीकृष्णेनैतत्कार्यार्थं मूलप्रकृतिः समाराधनीयेत्युक्ते तदाज्ञा मूलप्र
कृतिमारुधितवानित्याह पूजां चकारेति ॥ १५ ॥ ततो मूलप्रकृतेरंशः स्वाहारूपेण प्रादुरभूदित्याह प्रकृतेः कलयेति ॥ १६ ॥ १७ ॥

शक्तिःपत्नीचभवेत्यर्थः ॥ १८ ॥ किमर्थंशक्तिर्भवेतिचेत्तस्याग्नेर्दग्धुंशक्त्यभावादित्याह दग्धुमिति प्रकृतिशब्देनाहुतयस्तृप्तिकारण
त्वात्पत्नीकिमर्थंभवेतिचेद्देवैर्भ्योहुतहविःप्रापणार्थमित्याह त्वन्नामोच्चार्येति ॥ १९ ॥ सुरेभ्योदास्यतीत्यन्वयःतद्विःसुराःप्राप्नुवन्तितथाकु
र्वितिशेषः ॥ २० ॥ २१ ॥ स्वयंभुवंब्रह्माणं कृष्णोममपतिरभिलषितस्ततस्तपसाकृष्णपतिकरिष्यामीत्याह अहंकृष्णमिति ॥ २२ ॥

विधिस्तद्वचनंश्रुत्वासंभ्रमात्समुवाचतां ॥ प्रजापतिरुवाच ॥ त्वमग्नेर्दाहिकाशक्तिर्भवयातीवसुंदरी ॥ १८ ॥
दग्धुंनशक्तःप्रकृतीर्हुताशश्चत्वयाविना ॥ त्वन्नामोच्चार्यमंत्रांतेयोदास्यतिहविर्नरः ॥ १९ ॥ सुरेभ्यस्तत्प्राप्नु
वन्तिसुराःसानंदपूर्वकं ॥ अग्नेःसंपत्स्वरूपाचश्रीरूपासागृहेश्वरी ॥ २० ॥ देवानांपूजिताशश्वन्नरादीनांभवां
बिके ॥ ब्रह्मणश्चवचःश्रुत्वासाविषण्णाबभूवह ॥ २१ ॥ तमुवाचततोदेवीस्वाभिप्रायंस्वयंभुवं ॥ स्वाहोवाच ॥
अहंकृष्णंभजिष्यामितपसासुचिरेणच ॥ २२ ॥ ब्रह्मंस्तदन्यंयत्किंचित्स्वप्नवद्भ्रममेवच ॥ विधाताजगतस्त्वं
चशंभुर्मृत्युंजयोविभुः ॥ २३ ॥ विभर्तिशेषोविश्वंचधर्मःसाक्षीचधर्मिणां ॥ सर्वाद्यपूज्योदेवानांगणेषुचगणे
श्वरः ॥ २४ ॥ प्रकृतिःसर्वसंपूज्यायत्प्रसादात्पुराभवत् ॥ ऋषयोमुनयश्चैवपूजितायन्निषेवया ॥ २५ ॥ तत्पा
दपद्मानियतंभावेनचित्तयाम्यहं ॥ पद्माक्षीपादमित्युक्तापद्मनाभानुसारतः ॥ २६ ॥ जगामतपसेदेवीध्या
त्वाकृष्णानिराममयं ॥ तपस्तेपेवर्षलक्षंएकपादेनपद्मजा ॥ २७ ॥ तदाददर्शश्रीकृष्णानिर्गुणंप्रकृतेःपरं ॥
अतीवकमनीयंचरूपंदृष्ट्वाचरूपिणी ॥ २८ ॥

॥ ६५ ॥

॥ ६५ ॥

ब्रह्मंस्तदन्यमिति तस्मात्कृष्णादन्यंयत्किंचित्स्तुस्वप्नवद्भ्रमवच्चमिथ्याजानामीत्यर्थः ॥ २३ ॥ २४ ॥ प्रकृतिर्दुर्गाराधादिरूपापूर्वोक्तपंचप्र
कृतिप्रकारानतुमूलप्रकृतिस्तस्याःसर्वोत्तमत्वात् ॥ २५ ॥ पादंपद्मसंभवंब्रह्माणमित्युक्तापद्मनाभानुसारतस्तस्योद्देशेनजगामेत्यन्वयः ॥ २६ ॥
पद्मजालदम्यंशभूता ॥ २७ ॥ प्रकृतेःपरमितिकृष्णांतर्गतब्रह्माभिप्रायेण ॥ २८ ॥

॥ ७७ ॥

॥ ७७ ॥

दे.भा.न

१२५

॥ २९ ॥ वाराहेकल्ये ॥ ३० ॥ ३१ ॥ मंत्रांगरूपामंत्रांतेप्रयुज्यमानातदंगरूपा ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ संत्रस्तोमामियंवरिष्यतिनवेत्यभिप्रा
मूर्छासंप्रापकालेनकामेशस्यचकामुकी ॥ विज्ञायतदभिप्रायंसर्वज्ञस्तामुवाचह ॥ २९ ॥ समुत्थाप्यचतांक्रोडे
क्षीणांगीतपसाचिरं ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ वाराहेवैत्वमंशेनममपत्नीभविष्यसि ॥ ३० ॥ नाम्नानाग्नजिती
कन्याकांतेनग्नजितस्यच ॥ अधुनाग्नेर्दाहिकात्वंभवपत्नीचभामिनी ॥ ३१ ॥ मंत्रांगरूपापूज्याचमत्प्रसादा
द्भविष्यसि ॥ वह्निस्त्वांभक्तिभावेनसंपूज्यचगृहेश्वरी ॥ ३२ ॥ रमिष्यतित्वयासार्द्धैरामयारमणीयया ॥ इत्यु
क्तांतर्दधेदेवोदेवीसंभाष्यनारद ॥ ३३ ॥ तत्राजगामसंत्रस्तोवह्निर्ब्रह्मनिदेशतः ॥ सामवेदोक्तध्यानेनध्यात्वा
तांजगदंबिकां ॥ ३४ ॥ संपूज्यपरितुष्टावपाणिंजग्राहमंत्रतः ॥ तदादिव्यंवर्षशतंसरेमेरामयासह ॥ ३५ ॥
अतीवनिर्जनेदेशेसंभोगसुखदेसदा ॥ बभूवगर्भस्तस्यांचहुताशस्यचतेजसा ॥ ३६ ॥ तंदधारचसादेवीदिव्यं
द्वादशवत्सरं ॥ ततःसुषावपुत्रांश्चरमणीयान्मनोहरान् ॥ ३७ ॥ दक्षिणाग्निगार्हपत्याहवनीयान्क्रमेणच ॥
ऋषयोमुनयश्चैवब्राह्मणाःक्षत्रियादयः ॥ ३८ ॥ स्वाहांतमंत्रमुच्चार्यहविर्दानंचचक्रिरे ॥ स्वाहायुक्तंचमंत्रंचयो
गृण्हातिप्रशस्तकं ॥ ३९ ॥ सर्वसिद्धिर्भवेत्तस्यमंत्रग्रहणमात्रतः ॥ विषहीनोयथासर्पेर्वेदहीनोयथाद्विजः
॥ ४० ॥ पतिसेवाविहीनास्त्रीविद्याहीनोयथापुमान् ॥ फलशाखाविहीनश्चयथावृक्षोहिर्निर्दिताः ॥ ४१ ॥ स्वा
हाहीनस्तथामंत्रोऽनहुतःफलदायकः ॥ परितुष्टाद्विजाःसर्वदेवाःसंप्रापुराहुतीः ॥ ४२ ॥ स्वाहांतेनैवमंत्रेणस
फलंसर्वमेवच ॥ इत्येवंकथितंसर्वस्वाहोपाख्यानमुत्तमं ॥ ४३ ॥ सुखदंमोक्षदंसारांकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥
नारदउवाच ॥ स्वाहापूजाविधानंचध्यानंस्तोत्रंमुनीश्वर ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥

येण ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥

टी.अ.
४३

१२५

॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ मंत्रमाह ओमिति षण्वमाया श्रीबीजाद्योमंत्रः ॥ ४९ ॥ स्तोत्रमाह वह्निरुवाच स्वाहावह्नि
प्रियेति ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलेकनवमस्कंधोत्रचत्वारिंशोऽध्यायः

संपूज्यवह्निस्तुष्टावयेनतद्वदमेप्रभो ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ ध्यानंचसामवेदोक्तंस्तोत्रंपूजाविधानकं ॥ ४५ ॥
वदामिश्रूयतांब्रह्मन्सावधानोमुनीश्वर ॥ सर्वयज्ञारंभकालेशालग्रामेघटेथवा ॥ ४६ ॥ स्वाहांसंपूज्ययत्नेनय
ज्ञंकुर्यात्फलाप्तये ॥ स्वाहांमंत्रांगयुक्तांचमंत्रसिद्धिस्वरूपिणी ॥ ४७ ॥ सिद्धांचसिद्धिदानृणांकर्मणांफलदां
शुभां ॥ इतिध्यात्वाचमूलेनदत्त्वापाद्यादिकंनरः ॥ ४८ ॥ सर्वसिद्धिलभेत्स्तुत्वामूलमंत्रमुनेशृणु ॥ ॐ ह्रीं श्रीं व
ह्निजायायैदेव्यैस्वाहेत्यनेनच ॥ ४९ ॥ यः पूजयेच्चतांभक्त्यासर्वेष्टंसंभवेत्ध्रुवं ॥ वह्निरुवाच ॥ स्वाहावह्निप्रि
यावह्निजायासंतोषकारिणी ॥ ५० ॥ शक्तिः क्रियाकालदात्रीपरिपाककरीध्रुवा ॥ गतिः सदानराणांचदाहि
कादहनक्षमा ॥ ५१ ॥ संसारसाररूपाचघोरसंसारतारिणी ॥ देवजीवनरूपाचदेवपोषणकारिणी ॥ ५२ ॥ षो
डशैतानिनामानियः पठेद्भक्तिसंयुतः ॥ सर्वसिद्धिर्भवेत्तस्यइहलोकेपरत्रच ॥ ५३ ॥ नांगहीनंभवेत्तस्यसर्व
कर्मसुशोभनं ॥ अपुत्रोलभतेपुत्रंभार्याहीनोलभेत्प्रियां ॥ ५४ ॥ रंभोपमांस्वकांतिंचसंप्राप्यसुखमाप्नुयात् ॥
इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेनारदनारायणसंवादेस्वाहोपाख्यानेत्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४३ ॥
श्रीनारायणउवाच ॥ नारदशृणुवक्ष्यामिस्वधोपाख्यानमुत्तमं ॥ पितृणांचतृत्तिकरंश्राद्धान्नफलवर्द्धनं ॥ १ ॥
सृष्टेरादौपितृगणान्ससर्जजगतांविधिः ॥ चतुरश्रमूर्तिमंतस्त्रींश्चतेजस्वरूपिणः ॥ २ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥

॥ ४३ ॥ अर्धाधिकैश्चषट्त्रिंशत्पदैरथसमासतः ॥ स्वधायाः समुषाख्यानंयथावदभिवर्ण्यते ॥ १ ॥ स्वाहोपाख्यानाबंतरंस्वधोपाख्यानंवदति
नारदशृण्विति ॥ १ ॥ २ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

सप्तपितृगणान् कव्यवालोनलः सोमोयमश्चैवार्यमातथा अग्निष्वात्ताबर्हिषदः सोमपाः पितृदेवता इति पुराणांतरप्रसिद्धान् ॥ ३ ॥ तर्पणपर्यंतं श्रा

दष्टासप्तपितृगणान्सुखरूपान्मनोहरान् ॥ आहारं ससृजेतेषां श्राद्धं तर्पणपूर्वकं ॥ ३ ॥ स्नानं तर्पणपर्यंतं श्रा
द्धं तु देवपूजनं ॥ आन्हिकं च त्रिसंध्यांतं विप्राणां च श्रुतौ श्रुतं ॥ ४ ॥ नित्यं न कुर्याद्योविप्रस्त्रिसंध्यं श्राद्धतर्पणं ॥ ब
लिवेदध्वनिं सोऽपि विषहीनो यथोरगः ॥ ५ ॥ देवीं सिवाविहीनश्च श्रीहरेरनिवेद्यभुक् ॥ भस्मांतं सूतकं तस्य न क
र्माहंश्च नारद ॥ ६ ॥ ब्रह्माश्राद्धादिकं सृष्ट्यजगाम पितृहेतवे ॥ न प्राप्नुवंति पितरो ददति ब्राह्मणादयः ॥ ७ ॥
सर्वे च जग्मुः क्षुधिताः खिन्नास्तु ब्रह्मणः सभां ॥ सर्वे निवेदनं च क्रुस्तमेव जगतां विधिं ॥ ८ ॥ ब्रह्माचमानसीक
न्यां ससृजे च मनोहरां ॥ रूपयौवनसंपन्नां शतचंद्रनिभाननां ॥ ९ ॥ विद्यावतीं गुणवतीं मतिरूपवतीं सतीं ॥ श्वे
तचंपकवर्णाभारत्नभूषणभूषितां ॥ १० ॥ विशुद्धां प्रकृतेरंशां सस्मितां वरदां शुभां ॥ स्वधाभिधां च सुदतीं ल
क्ष्मीलक्षणसंयुतां ॥ ११ ॥ शतपद्मपदन्यस्तपादपद्मं च बिभ्रतीं ॥ पत्नीं पितृणां पद्मास्यां पद्मजां पद्मलोचनां
॥ १२ ॥ पितृभ्यश्च ददौ ब्रह्मा तुष्टेभ्यस्तुष्टिरूपिणीं ॥ ब्राह्मणानां चोपदेशं च कारगोपनीयकं ॥ १३ ॥ स्व
धांतं मंत्रमुच्चार्य पितृभ्यो देयमित्यपि ॥ क्रमेण तेन विप्राश्च पित्रे दानं ददुः पुरा ॥ १४ ॥ स्वाहाशस्ता देवदानेपि
तृदाने स्वधास्मृता ॥ सर्वत्र दक्षिणाशस्ता हतं यज्ञमदक्षिणं ॥ १५ ॥ पितरो देवता विप्रामुनयो मनवस्तथा ॥ पू
जां च क्रुः स्वधां शांतां तुष्टुवुः परमादरात् ॥ १६ ॥ देवादयश्च संतुष्टाः परिपूर्णमनोरथाः ॥ विप्रादयश्च पितरः
स्वधादेवीवरेण च ॥ १७ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥

तु देवपूजनं पंचायतनपूजनं त्रिसंध्यांतं आन्हिकं ॥ ४ ॥ बलिबलिहरणं ॥ ५ ॥ भस्मांतं मरणपर्यंतं तस्य सूतकमशुचित्वा मित्यर्थः तदेवाह न क
र्माहंश्चेति ॥ ६ ॥ स्वस्थानं ब्रह्मामित्यर्थः न प्राप्नुवंतीति पूर्ववत्प्रापकाभावात् ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥

॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ तारमायारमाकामबीजपूर्वोमंत्रः ॥ २५ ॥

इत्येवंकथितं सर्वस्वधोपाख्यानमेव च ॥ सर्वेषांचतुष्टिकरं किंभूयः श्रोतुमिच्छसि ॥ १८ ॥ नारद उवाच ॥ स्वधा
पूजाविधानं च ध्यानं स्तोत्रं महामुने ॥ श्रोतुमिच्छामि यत्नेन वद वेदविदां वर ॥ १९ ॥ नारायण उवाच ॥ ध्यानं
च स्तवनं ब्रह्मन्वेदोक्तं सर्वमंगलं ॥ सर्वजानासि च कथं ज्ञातुमिच्छसि वृद्धये ॥ २० ॥ शरत्कृष्ण त्रयोदश्यां मघा
यां श्राद्धवासरे ॥ स्वधां संपूज्य यत्नेन ततः श्राद्धं समाचरेत् ॥ २१ ॥ स्वधां नाभ्यर्च्य यो विप्रः श्राद्धं कुर्यादहं म
तिः ॥ न भवेत्फलभाक् सत्यं श्राद्धस्य तर्पणस्य च ॥ २२ ॥ ब्रह्मणो मानसीं कन्यां शश्वत्सु स्थिरयौवनां ॥ पूज्या
नां पितृदेवानां श्राद्धानां फलदां भजे ॥ २३ ॥ इति ध्यात्वा शिलायां वा ह्यथ वामं गले घटे ॥ दद्यात्पाद्यादिकं तस्यै
मूलेनेति श्रुतौ श्रुतं ॥ २४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं स्वधा देव्यै स्वाहेति च महामुने ॥ समुच्चार्य च संपूज्य स्तुत्वा तां प्रणमेद्वि
जः ॥ २५ ॥ स्तोत्रं शृणु मुनि श्रेष्ठ ब्रह्मपुत्र विशारद ॥ सर्ववांश्छाप्रदं नृणां ब्रह्मणाय कृतं पुरा ॥ २६ ॥ नारायण उ
वाच ॥ स्वधोच्चारणमात्रेण तीर्थस्नायी भवेन्नरः ॥ मुच्यते सर्वपापेभ्यो वाजपेयफलं भवेत् ॥ २७ ॥ स्वधास्व
धास्वधेत्येवं यदि वारत्रयं स्मरेत् ॥ श्राद्धस्य फलमाप्नोति बलेश्च तर्पणस्य च ॥ २८ ॥ श्राद्धकाले स्वधा स्तोत्रं
यः शृणोति समाहितः ॥ स लभेच्छ्राद्धसंभूतं फलमेव न संशयः ॥ २९ ॥ स्वधास्वधास्वधेत्येवं त्रिसंध्यं पठे
न्नरः ॥ प्रियां विनीतां स लभेत्साध्वीं पुत्रगुणान्वितां ॥ ३० ॥ पितृणां प्राणतुल्या त्वं द्विजजीवनरूपिणी ॥
श्राद्धाधिष्ठातृदेवी च श्राद्धादीनां फलप्रदा ॥ ३१ ॥ नित्या त्वं सत्यरूपा सि पुण्यरूपा सि सुव्रते ॥ आविर्भाव
तिरोभावौ सृष्टौ च प्रलये तव ॥ ३२ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥

दे.भा.न

१२७

॥३३॥ ३४॥३५॥३६॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधेचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥४४॥ अष्टाधिकैश्चनवतिश्लोकैरथसविस्तरं ॥

ॐस्वास्तिश्चनमःस्वाहास्वधात्वंदक्षिणातथा ॥ निरूपिताश्चतुर्वेदैःप्रशस्ताःकर्मिणांपुनः ॥ ३३ ॥ कर्मपू
त्यर्थमेवैताईश्वरेणविनिर्मिताः ॥ इत्येवमुक्तासब्रह्माब्रह्मलोकेस्वसंसदि ॥ ३४ ॥ तस्थौचसहसासद्यःस्व
धासाविर्बभूवह ॥ तदापितृभ्यःप्रददौतामेवकमलाननां ॥ ३५ ॥ तांसंप्राप्यययुस्तेचपितरश्चप्रहर्षिताः ॥
स्वधास्तोत्रमिदंपुण्यंयःशृणोतिसमाहितः ॥ ३६ ॥ सुस्नातःसर्वतीर्थेषुवाञ्छितंफलमाप्नुयात् ॥ इतिश्रीदेवी
भागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेनारदनारायणसंवादेस्वधोपाख्यानेचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४४ ॥ श्रीनारा
यणउवाच ॥ उक्तंस्वाहास्वधाख्यानंप्रशस्तंमधुरंपरं ॥ वक्ष्यामिदक्षिणाख्यानंसावधानोनिशामय ॥ १ ॥
गोपीसुशीलागोलोकेपुरासीत्प्रेयसीहरेः ॥ राधाप्रधानासध्रीचीधन्यामान्यामनोहरा ॥ २ ॥ अतीवसुंदरीरा
मासुभगासुदतीसती ॥ विद्यावतीगुणवतीचातिरूपवतीसती ॥ ३ ॥ कलावतीकोमलांगीकांताकमललो
चना ॥ सुश्रोणीसुस्तनीश्यामान्यग्रोधपरिमंडिता ॥ ४ ॥ ईषद्वास्यप्रसन्नास्यारत्नालंकारभूषिता ॥ श्वेतचंप
कवर्णाभाविंबोष्ठीमृगलोचना ॥ ५ ॥ कामशास्त्रेषुनिपुणाकामिनीहंसगामिनी ॥ भावानुरक्ताभावज्ञाकृष्णस्य
प्रियभामिनी ॥ ६ ॥ रसज्ञारसिकारासेरासेशस्यरसोत्सुका ॥ उवासादक्षिणेक्रीडेराधायाःपुरतःपुरा ॥ ७ ॥
संबभूवानम्रमुखोभयेनमधुसूदनः ॥ दृष्ट्वाराधांचपुरतोगोपीनांप्रवरोत्तमां ॥ ८ ॥ कामिनीरक्तवदनारक्तपं
कजलोचनां ॥ कोपेनकंपितांगीचकोपेनस्फुरिताधरां ॥ ९ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥

दक्षिणायाउपाख्यानंयथावदभिवर्ण्यते ॥१॥ दक्षिणाख्यानंवक्तुंप्रतिजानीतेउक्तमिति ॥१॥२॥३॥ न्यग्रोधवृक्षवटवृक्षवच्छोमिताशरी
रशोभया ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ अदक्षिणेक्रीडेवामांके ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७५ ॥

टी.अ.
४४

१२७

॥१०॥ ११ ॥१२॥ देवीराधारक्षरक्षेत्युक्तवन्त्यः ॥ १३ ॥ १४ ॥१५ ॥ गमनमात्रेणागमनमात्रेण ॥ १६ ॥ रासेशंकृष्णमाजु
हावाकारितवती ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ ननुत्वयागर्वः किमर्थकृतइति चेत्स्वयाममसंमानस्तथैवकृतस्तस्मादित्याह स्त्रीगर्वइति पतिसौ

वेगेनतांतुगच्छंतींविज्ञायतदनंतरं ॥ विरोधभीतोभगवानंतर्धानंचकारसः ॥ १० ॥ पलायंतंचकांतंचशांतं
सत्वसुविग्रहं ॥ विलोक्यकंपितागोप्यः सुशीलाद्यास्ततोभिया ॥ ११ ॥ विलोक्यलंपटंतत्रगोपीनांलक्षकोट
यः ॥ पुटांजलियुताभीताभक्तिनम्रात्मकंधराः ॥ १२ ॥ रक्षरक्षेत्युक्तवन्त्योदेवीमितिपुनःपुनः ॥ ययुर्भयेन
शरणंतस्याश्ररणपंकजे ॥ १३ ॥ त्रिलक्षकोटयोगोपाः सुदामादयएवच ॥ ययुर्भयेनशरणंतत्पादाब्जेचना
रद ॥ १४ ॥ पलायंतंचकांतंचविज्ञायपरमेश्वरी ॥ पलायंतींसहचरींसुशीलांचशशापसा ॥ १५ ॥ अद्यप्र
भृतिगोलोकंसाचेदायातिगोपिका ॥ सद्योगमनमात्रेणभस्मसाच्चभविष्यति ॥ १६ ॥ इत्येवमुक्तातत्रैवदेव
देवेश्वरीरुषा ॥ रासेश्वरीरासमध्येरासेशमाजुहावह ॥ १७ ॥ नालोक्यपुरतःकृष्णंराधाविरहकातरा ॥ युग
कोटिसमंमेनेक्षणभेदेनसुव्रता ॥ १८ ॥ हेकृष्णप्राणनाथेशागच्छप्राणाधिकप्रिय ॥ प्राणाधिष्ठातृदेवेशप्रा
णायांतित्वयाविना ॥ १९ ॥ स्त्रीगर्वःपतिसौभाग्याद्धर्धतेचदिनेदिने ॥ सुखंचविपुलंयस्मात्तंसेवेद्धर्मतःसदा
॥ २० ॥ पतिर्वैधुःकुलस्त्रीणामधिदेवःसदागतिः ॥ परसंपत्स्वरूपश्चमूर्तिमान्भोगदःसदा ॥ २१ ॥ धर्म
दःसुखदःशश्वत्प्रीतिदःशांतिदःसदा ॥ सन्मानैर्दोष्यमानश्चमानदोमानखंडनः ॥ २२ ॥ सारात्सारतरःस्वा
मीबंधूनांबंधुवर्द्धनः ॥ नचभर्तुःसमोबंधुर्वैधोर्वैधुषुदृश्यते ॥ २३ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥

भाग्यात्यतिकृतसंमानादित्यर्थः ननुतर्ह्यधुनागर्वएवपाल्यतांतत्राह सुखंचेति त्वत्प्रीतौसत्यामेवगर्वात्सुखंभवतिनान्यथायस्मादेवंतस्मात्सुखा
र्थधर्मेणपतिंसेवेदित्यर्थः ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ बंधुषुस्त्रीणांभर्तुर्वैधोःसमोबंधुर्नैत्यन्वयः ॥ २३ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.न

१२८

॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ कुलजानांपतिव्रतानां यास्वसत्कुलप्रसूताभाकांतंविज्ञातुमक्षमाभवतीतिदूरतस्तस्यपुनःसेवादिकमित्यर्थः

भरणादेवभर्ताचपालनात्पतिरुच्यते ॥ शरीरेशाच्चसस्वामीकामदःकांतउच्यते ॥ २४ ॥ बंधुश्चसुखवृद्ध्या
चप्रीतिदानात्प्रियःस्मृतः ॥ ऐश्वर्यदानादीशश्चप्राणेशात्प्राणनायकः ॥ २५ ॥ रतिदानाच्चरमणःप्रियोनास्ति
प्रियात्परः ॥ पुत्रस्तुस्वामिनःशुक्राज्जायतेतेनसप्रियः ॥ २६ ॥ शतपुत्रात्परःस्वामीकुलजानांप्रियःसदा ॥
असत्कुलप्रसूतायाकांतंविज्ञातुमक्षमा ॥ २७ ॥ स्नानंचसर्वतीर्थेषुसर्वयज्ञेषुदक्षिणा ॥ प्रादक्षिण्यंपृथिव्या
श्चसर्वाणिचतपांसिच ॥ २८ ॥ सर्वाण्येवव्रतादीनिमहादानानियानिच ॥ उपोषणानिपुण्यानियानियानिश्रुता
निच ॥ २९ ॥ गुरुसेवाविप्रसेवावेदसेवादिकंचयत् ॥ स्वामिनःपादसेवायाःकलांनार्हतिषोडशीं ॥ ३० ॥
गुरुविप्रेन्द्रदेवेषुसर्वेभ्यश्चपतिगुरुः ॥ विद्यादातायथापुंसांकुलजानांतथाप्रियः ॥ ३१ ॥ गोपीनांलक्षकोटी
नांगोपानांचतथैवच ॥ ब्रह्मांडानामसंख्यानांतत्रस्थानांतथैवच ॥ ३२ ॥ विश्वादिगोलकांतानामीश्वरीयत्प्र
सादतः ॥ अहंनजनेतंकांतंस्त्रीस्वभावोदुरत्ययः ॥ ३३ ॥ इत्युत्काराधिकाकृष्णंतत्रध्यौस्वभक्तिः ॥
रुरोदप्रेम्णासाराधानाथनाथेतिसाब्रवीत् ॥ ३४ ॥ दर्शनंदेहिरमणदीनाविरहदुःखिता ॥ अथसादक्षिणा
देवीध्वस्तागोलोकतोमुने ॥ ३५ ॥ सुचिरंचतपस्तप्त्वाविवेशकमलातनौ ॥ अथदेवादयःसर्वेयज्ञंकृत्वासुदु
ष्करं ॥ ३६ ॥ नालभंस्तेफलंतेषांविषण्णाःप्रययुर्विधिं ॥ विधिर्निवेदनंश्रुत्वादेवादीनांजगत्पतिं ॥ ३७ ॥ द
ध्यौचसुचिरंभक्त्याप्रत्यादेशमवापसः ॥ नारायणश्चभगवान्महालक्ष्म्याश्चदेहतः ॥ ३८ ॥ ॥ ६१ ॥

॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ तंकांतंसर्वापेक्षयासेव्यंनजानेयतःस्त्रीस्वभावोदुरत्ययोभवति ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥
जगत्पतिंविष्णुंध्यौचितितवान् प्रत्यादेशमुत्तरंतवकार्यकरिष्यामीत्येवंरूपमवापप्राप्तवान् ॥ ३८ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

टी.अ.

४५

१२८

मर्त्यलक्ष्मीमनुष्याणां लक्ष्मीं दक्षिणानाम्नी ब्रह्मणे ददौ यज्ञाय यज्ञपुरुषाय ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

विनिष्कृष्य मर्त्यलक्ष्मीं ब्रह्मणे दक्षिणां ददौ ॥ ब्रह्मा ददौ तां यज्ञाय पूरणार्थं च कर्मणां ॥ ३९ ॥ यज्ञः संपूज्य विधि
वत्तां तुष्टावत दामुदा ॥ तप्तकांचनवर्णाभां चंद्रकोटिसमप्रभां ॥ ४० ॥ अतीव कमनीयां च सुदर्शनमनोहरां ॥
कमलास्यां कोमलांगीं कमलायतलोचनां ॥ ४१ ॥ कमलासनपूज्यां च कमलांगसमुद्भवां ॥ वह्निशुद्धां शुका
धानां बिंबोष्ठीं सुदतीं सतीं ॥ ४२ ॥ विभ्रतीं कवरीभारं मालतीं माल्यसंयुतं ॥ ईषत्वा स्य प्रसन्नास्यां रत्नभूष
णभूषितां ॥ ४३ ॥ सुवेषाढ्यां च सुस्नातां मुनिमानसमोहिनीं ॥ कस्तूरी बिंदुभिः सार्द्धं सुगंधिचंदनेंदुभिः ॥ ४४ ॥
सिंदूरविदुनाल्पेनाप्यलिकाधस्थलोज्ज्वलां ॥ सुप्रशस्तनितं बाढ्यां बृहच्छोणिपयोधरां ॥ ४५ ॥ कामदेवा
धाररूपां कामबाणप्रपीडितां ॥ तां दृष्ट्वा रमणीयां च यज्ञो मूर्छामवापह ॥ ४६ ॥ पत्नीं तामेव जग्राह विधिबोधि
तपूर्वकं ॥ दिव्यं वर्षशतं चैव तां गृहीत्वा तु निर्जने ॥ ४७ ॥ यज्ञो रे मे मुदा युक्तो रामेशोरमया सह ॥ गर्भं दधार
सा देवी दिव्यं द्वादशवर्षकं ॥ ४८ ॥ ततः सुपावपुत्रं च फलं वै सर्वकर्मणां ॥ परिपूर्णं कर्मणि च तत्पुत्रः फलदायकः
॥ ४९ ॥ यज्ञो दक्षिणया सार्द्धं पुत्रेण च फलेन च ॥ कर्मिणां फलदाता चेत्येवं वेदविदो विदुः ॥ ५० ॥ यज्ञश्च दक्षि
णां प्राप्य पुत्रं च फलदायकं ॥ फलं ददौ च सर्वेभ्यः कर्मणां चैव नाद ॥ ५१ ॥ तदा देवादयस्तुष्टाः परिपूर्णमनो
रथाः ॥ स्वस्थाने ते ययुः सर्वे धर्मवक्त्रादिदं श्रुतं ॥ ५२ ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥

॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ दक्षिणायां दीयमानायां फलस्य जायमानत्वेन कर्मफलं दक्षिणायाः पुत्र इत्यर्थः ॥ ४९ ॥
॥ ५० ॥ तत्पुत्ररूपं फलं दक्षिणायां मुत्पन्नं सर्वेभ्यो यजमानेभ्यो ददावित्यर्थः ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥

दे.भा.न

१२९

यतएवंततोदक्षिणादानेविलंबोनकर्तव्यइत्याह कृत्वाकर्मचेति ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ तच्छतगुणा शतगुणादक्षिणाशतगुणि
तेत्यर्थः द्विगुणाशतगुणाशतगुणितादक्षिणाद्विगुणितेत्यर्थः एवमन्यत्रव्याख्येयं एवंब्राह्मणानां दक्षिणावर्धतइत्यर्थः ॥ ५६ ॥ एवं
दक्षिणायाअप्रदानेनिष्फलं कर्मभवेदित्यर्थः ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ सुराः पूजांनगृह्णंतितदत्तामाहुतिंचाग्निर्नगृह्णातीत्यर्थः

कृत्वाकर्मचकर्ताचतूर्णदद्याच्चदक्षिणां ॥ तत्क्षणफलमाप्नोतिवेदैरुक्तमिदंमुने ॥ ५३ ॥ कर्माकर्मणिपूर्णेचतत्क्ष
णेयदिदक्षिणां ॥ नदद्याद्ब्राह्मणेभ्यश्चदैवेनाज्ञानतोथवा ॥ ५४ ॥ मुहूर्तेसमर्पितेतुद्विगुणासाभवेत्ध्रुवं ॥ एकरा
त्रेव्यतीतेचभवेच्छतगुणाचसा ॥ ५५ ॥ त्रिरात्रेतच्छतगुणासप्ताहेद्विगुणाततः ॥ मासेलक्षगुणाप्रोक्ताब्राह्म
णानांचवर्द्धते ॥ ५६ ॥ संवत्सरेव्यतीतेतुसात्रिकोटिगुणाभवेत् ॥ कर्मतद्यजमानानांसर्वेवैनिष्फलंभवेत्
॥ ५७ ॥ सचब्रह्मस्वहारीचनकर्माहोशुचिर्नरः ॥ दरिद्रोव्याधियुक्तश्चतेनपापेनपातकी ॥ ५८ ॥ तद्रूहाद्या
तिलक्ष्मीश्चशापंदत्वासुदारुणं ॥ पित्रोनैवगृह्णंतितदत्तंश्राद्धतर्पणं ॥ ५९ ॥ एवंसुराश्चतत्पूजांतदत्तामग्नि
राहुतिं ॥ दत्तंनदीयतेदानंगृहीतानैवयाचते ॥ ६० ॥ उभौतौनरकेयातश्छिन्नरज्जौयथाघटः ॥ नार्पयेद्यजमा
नश्चेद्याचितश्चापिदक्षिणां ॥ ६१ ॥ भवेद्ब्रह्मस्वापहारिकुंभीपाकं ब्रजेत्ध्रुवं ॥ वर्षलक्षंवसेत्तत्रयमदूतेनताडि
तः ॥ ६२ ॥ ततोभवेत्सचांडालोव्याधियुक्तोदरिद्रकः ॥ पातयेत्पुरुषान्सप्तपूर्वाश्चसप्तजन्मतः ॥ ६३ ॥ इ
त्येवंकथितंविप्रकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ नारदउवाच ॥ यत्कर्मदक्षिणाहीनंकोभुंकेतत्फलंमुने ॥ ६४ ॥
पूजाविधिंदक्षिणायाःपुरायज्ञकृतंवद ॥ नारायणउवाच ॥ कर्मणोदक्षिणस्यैवकुतएवफलंमुने ॥ ६५ ॥

दत्तंचनदीयतइति कर्मसमयेदत्तंमनसासंकल्पितंदानंदक्षिणारूपंयजमानेनयदिनदीयतेतथागृहीताविप्रोयदितद्दक्षिणारूपंनयाचतेइत्यर्थः
॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ यज्ञपुरुषेणकृतंपूजाविधिमित्यर्थः कर्मणइति अदक्षिणस्ययज्ञस्यफलमेवना
स्तितदातत्फलंकस्यभाविष्यतीतिशंकावृथैवेतिभावः ॥ ६५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

टी.अ.

४५

१२९

एवकारोभिन्नक्रमः कर्मण्येवेत्यर्थः फलमभ्युपेत्याह तदुक्तेचबलिरिति ॥ ६६ ॥ चकोरेणादक्षिणयज्ञफलमित्यर्थः ॥ ६७ ॥

सदक्षिणेकर्मणिचफलमेवप्रवर्तते ॥ अदक्षिणंचयत्कर्मतदुक्तेचबलिर्मुने ॥ ६६ ॥ बलयेतत्प्रदत्तंचवामनेनपु
रामुनेअश्रोत्रियश्राद्धद्रव्यमश्रद्धादानमेवच ॥ ६७ ॥ वृषलीपतिविप्राणांपूजाद्रव्यादिकंचयत् ॥ असद्विजैःकृतंय
ज्ञमशुचेःपूजनंचयत् ॥ ६८ ॥ गुरावभक्तस्यकर्मबलिर्भुक्तेनसंशयः ॥ दक्षिणायाश्चयत्थ्यानंस्तोत्रंपूजाविधि
क्रमं ॥ ६९ ॥ तत्सर्वकण्वशास्त्रोक्तंप्रवक्ष्यामिनिशामय ॥ पुरासंप्राप्यतांयज्ञःकर्मदक्षांचदक्षिणां ॥ ७० ॥ मु
मोहास्याःस्वरूपेणतुष्टावकामकातरः ॥ यज्ञउवाच ॥ पुरागोलोकगोपीत्वंगोपीनांप्रवरावरा ॥ ७१ ॥ राधास
मातत्सखीचश्रीकृष्णप्रेयसीप्रिया ॥ कार्तिकीपूर्णमायांतुरासेराधामहोत्सवे ॥ ७२ ॥ आविर्भूतादक्षिणां
सालक्ष्म्याश्चतेनदक्षिणा ॥ पुरात्वंचसुशीलाख्याख्याताशीलेनशोभने ॥ ७३ ॥ लक्ष्मीदक्षांसभागात्वंराधाशा
पाच्चदक्षिणा ॥ गोलोकात्वंपरिभ्रष्टममभाग्यादुपस्थिता ॥ ७४ ॥ कृपांकुरुमाहाभागेमामेवस्वामिनंकुरु ॥
कर्मिणांकर्मणांदेवीत्वमेवफलदासदा ॥ ७५ ॥ त्वयाविनाचसर्वेषांसर्वकर्मचनिष्फलं ॥ त्वयाविनातथा
कर्मकर्मिणांचनशोभते ॥ ७६ ॥ ब्रह्मविष्णुमहेशाश्चदिक्पालादयएवच ॥ कर्मणश्चफलंदातुंनशक्ताश्चत्वया
विना ॥ ७७ ॥ कर्मरूपीस्वयंब्रह्माफलरूपीमहेश्वरः ॥ यज्ञरूपीविष्णुरहंत्वमेषांसाररूपिणी ॥ ७८ ॥ फल
दातृपरंब्रह्मनिर्गुणाप्रकृतिःपरा ॥ स्वयंकृष्णश्चभगवान्सचशक्तस्त्वयासह ॥ ७९ ॥ त्वमेवशक्तिःकांतेमेश
श्चज्जन्मनिजन्मनि ॥ सर्वकर्मणिशक्तोहंत्वयासहवरानने ॥ ८० ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥

असद्विजैर्व्यभिचारादिदोषदुष्टैः ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ दक्षिणांसादक्षिणस्कंधादित्यर्थः ॥ ७३ ॥ ७४ ॥
॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥

तंयज्ञपुरुषं पतिभेजे सेवितवती ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ भद्रके कल्याणकरे योनियागे मूलप्रकृतियागे अंबायज्ञे इत्यर्थः

इत्युक्त्वा च पुरस्तस्थौ यज्ञाधिष्ठातृदेवता ॥ तुष्टा बभूव सा देवी भेजे तं कमलाकला ॥ ८१ ॥ इदं च दक्षिणास्तोत्रं
यज्ञकाले च यः पठेत् ॥ फलं च सर्वयज्ञानां प्राप्नोति नात्र संशयः ॥ ८२ ॥ राजसूये वाजपेये गोमेधे नरमेधके ॥
अश्वमेधे लांगले च विष्णुयज्ञे यशस्करे ॥ ८३ ॥ धनदे भूमिदे पूर्ते फलदे गजमेधके ॥ लोहयज्ञे स्वर्णयज्ञे रत्नयज्ञे
थताम्रके ॥ ८४ ॥ शिवयज्ञे रुद्रयज्ञे शक्रयज्ञे च बंधुके ॥ वृष्टौ वरुणयागे च कंडके वैरिर्मर्दने ॥ ८५ ॥ शुचियज्ञे
धर्मयज्ञे ऽध्वरे च पापमोचने ॥ ब्रह्माणीकर्मयागे च योनियागे च भद्रके ॥ ८६ ॥ एतेषां च समारंभे इदं स्तोत्रं च यः
पठेत् ॥ निर्विघ्नेन च तत्कर्म सर्वं भवति निश्चितं ॥ ८७ ॥ इदं स्तोत्रं च कथितं ध्यानं पूजाविधिं शृणु ॥ शालग्रामे
घटे वापि दक्षिणां पूजयेत्सुधीः ॥ ८८ ॥ लक्ष्मीं दक्षां ससंभूतां दक्षिणां कमलाकलां ॥ सर्वकर्मसु दक्षां च फलदां स
र्वकर्मणां ॥ ८९ ॥ विष्णोः शक्तिस्वरूपां च पूजितां वंदितां शुभां ॥ शुद्धिदां शुद्धिरूपां च सुशीलां शुभदां भजे
॥ ९० ॥ ध्यात्वानेनैव वरदां मूलेन पूजयेत्सुधीः ॥ दत्त्वा पाद्यादिकं देव्यै वेदोक्तेनैव नारद ॥ ९१ ॥ ॐ श्रीं ह्रीं
ह्रीं दक्षिणायै स्वाहेति च विचक्षणः ॥ पूजयेद्विधिवद्भक्त्या दक्षिणां सर्वपूजितां ॥ ९२ ॥ इत्येवं कथितं ब्रह्मन्दक्षि
णाख्यानमेव च ॥ सुखदं प्रीतिदं चैव फलदं सर्वकर्मणां ॥ ९३ ॥ इदं च दक्षिणाख्यानं यः शृणोति समाहितः ॥
अंगहीनं च तत्कर्म न भवेद्भारते भुवि ॥ ९४ ॥ अपुत्रो लभते पुत्रं निश्चितं च गुणान्वितं ॥ भार्याहीनो लभेद्भार्या
सुशीलां सुंदरीं परां ॥ ९५ ॥ वरारोहां पुत्रवतीं विनीतां त्रियवादिनीं ॥ पतिव्रतां च शुद्धां च कुलजां च वधूं वरां ॥ ९६ ॥

एते च यागाः केचित्प्रासिद्धाः शाखायां प्रासिद्धाः केचिदप्रासिद्धाः शाखायामिति बोध्यं ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ तार
लक्ष्मीकाममायाबीजाद्योमंत्रः ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ अंगहीनं न भवेत्सांगं भवेदित्यर्थः ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ९७ ॥ ९८ ॥ इति श्रीदेवीभागवतातिलकेनवमस्कंधेपंचचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४५ ॥ त्रिसप्ततिश्लोकवर्गैः षष्ठ्युपाख्यानमदुतं ॥ पृच्छते
नारदायात्रयथावदभिवर्ण्यते ॥ १ ॥ दक्षिणोपाख्यानंभुत्वान्यश्चतुर्थ्युपाख्यानं पृच्छति नारद उवाच अनेकानामिति सरस्वत्यादिदेवीनामि
त्यर्थः अन्यासां षष्ठ्यादिदेवीनामित्यर्थः ॥ १ ॥ वेदेषु सर्वदेवीनां पृथक्पृथगाख्यानमुपवर्णितमस्ति तन्मया कियत्पर्यंतं वक्तव्यं तन्मध्ये यासां

विद्याहीनोलभेद्विद्यांधनहीनोलभेदनं ॥ भूमिहीनोलभेद्भूमिं प्रजाहीनोलभेत्प्रजां ॥ ९७ ॥ संकटेर्बधुविच्छे
देविपत्तौ बंधने तथा ॥ मासमेकमिदं श्रुत्वामुच्यते नात्र संशयः ॥ ९८ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे नवम
स्कंधे नारदनारायणसंवादे दक्षिणोपाख्याने पंचचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४५ ॥ नारद उवाच ॥ अनेकानां च देवा
नां श्रुतमाख्यानमुत्तमं ॥ अन्यासांचरितं ब्रह्मन्वदेदविदां वर ॥ १ ॥ नारायण उवाच ॥ सर्वासांचरितं विप्र
वेदेषु च पृथक्पृथक् ॥ पूर्वोक्तानां च देवीनां कासां श्रोतुमिहेच्छसि ॥ २ ॥ नारद उवाच ॥ षष्ठीमंगलचंडीचमन
साप्रकृतेः कला ॥ उत्पत्तिमासांचरितं श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः ॥ ३ ॥ नारायण उवाच ॥ षष्ठांशाप्रकृतेर्याचसा
च षष्ठीप्रकीर्तिता ॥ बालकानामधिष्ठात्री विष्णुमाया च बालदा ॥ ४ ॥ मातृकासु च विख्याता देवसेनाभिधा च
या ॥ प्राणाधिकप्रिया सा ध्वीस्कंदभार्या च सुव्रता ॥ ५ ॥ आयुःप्रदा च बालानां धात्री रक्षणकारिणी ॥ सततं
शिशुपार्श्वस्थायो गेन सिद्धियोगिनी ॥ ६ ॥ तस्याः पूजाविधिं ब्रह्मन्निति हासमिदं शृणु ॥ यच्छ्रुतं धर्मवक्त्रेण सु
खदंपुत्रदंपरं ॥ ७ ॥ राजाप्रियव्रतश्चासीत्स्वायं भुवमनोः सुतः ॥ योगीन्द्रो नो वह्नेर्द्वार्यातपस्यासुरतः सदा
॥ ८ ॥ ब्रह्माज्ञया च यत्नेन कृतदारो बभूव ह ॥ सुचिरं कृतदारश्च न लेभे तनयं मुने ॥ ९ ॥ ॥ ६५ ॥

देवीनामाख्यानं तवाभिलषितं तत्पृच्छेत्याह सर्वासामिति ॥ २ ॥ ३ ॥ तत्रातिशृणामध्ये षष्ठ्युपाख्यानमाह षष्ठांशेति प्रकृतेर्मूलप्रकृतेः
षष्ठांशत्वात् षष्ठीपदवाच्यत्वं ॥ ४ ॥ देवसेनेति आयुष्यसूक्ते तु षष्ठीं च यामिन्द्रसेनेत्युत आहुस्तां विद्यामिति वाक्येनैन्द्रसेनेति नामोक्तं तथा च देव
सेना इन्द्रसेनेत्यर्थः ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७५ ॥

॥ १० ॥ चरुभुक्तास्थिताया इति शेषः देवदेवानां द्वादशवर्षाणीत्यर्थः ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ ज्ञानयोगं विवेकं ॥ १५ ॥

पुत्रेष्टियज्ञं तं चापिकारयामास कश्यपः ॥ मालिन्यै तस्य कांतायै मुनिर्यज्ञचरुंददौ ॥ १० ॥ भुक्तवत्याश्चरुंतस्या-
सद्योगर्भो बभूव ह ॥ दधारतं च सा देवी देवं द्वादशवत्सरं ॥ ११ ॥ ततः सुषावसा ब्रह्मन् कुमारं कनकप्रभं ॥ स-
र्ववयवसंपन्नं मृतमुत्तारलोचनं ॥ १२ ॥ तं दृष्ट्वा रुरुदुः सर्वानार्यश्च बांधवस्त्रियः ॥ मूर्ध्ना मवाप तन्माता पुत्रशोके
नभूयसा ॥ १३ ॥ स्मशानं च ययौ राजा गृहीत्वा बालकं मुने ॥ रुरोद तत्र कांतरे पुत्रं कृत्वा स्ववक्षसि ॥ १४ ॥
नोत्सृजद्बालकं राजा प्राणांस्त्यक्तुं समुद्यतः ॥ ज्ञानयोगं विसस्मार पुत्रशोकात्सुदारुणात् ॥ १५ ॥ ए-
तस्मिन्नंतरे तत्र विमानं च ददर्श सः ॥ शुद्धस्फटिकसंकाशं मणिराजविनिर्मितं ॥ १६ ॥ तेजसा ज्वलितं शश्वच्छो-
भितं क्षौमवाससा ॥ नानाचित्रविचित्राढ्यपुष्पमालाविराजितं ॥ १७ ॥ ददर्श तत्र देवीं च कमनीयां मनोहरां ॥
श्वेतचंपकवर्णाभां शश्वत्सुस्थिरयौवनां ॥ १८ ॥ ईषद्वास्य प्रसन्नास्यां रत्नभूषणभूषितां ॥ कृपामयीं योग-
सिद्धां भक्तानुग्रहकातरां ॥ १९ ॥ दृष्ट्वा तां पुरतो राजा तुष्टाव परमादरं ॥ चकार पूजनं तस्या विहाय बालकं भुवि
॥ २० ॥ पप्रच्छ राजा तां तुष्टां ग्रीष्मसूर्यसमप्रभां ॥ तेजसा ज्वलितां शांतां कांतां स्कंदस्य नारद ॥ २१ ॥ राजो-
वाच ॥ कात्वं सुशोभने कांते कस्य कांतासि सुव्रते ॥ कस्य कन्यावरारोहे धन्यामान्या च योषितां ॥ २२ ॥ नृपे-
द्रस्य वचः श्रुत्वा जगन्मंगलचंडिका ॥ उवाच देवसेनासा देवानां रणकारिणी ॥ २३ ॥ देवानां दैत्यग्रस्ता-
नां पुरासेना बभूव सा ॥ जयंददौ सा तेभ्यश्च देवसेना च तेन सा ॥ २४ ॥ श्रीदेवसेनोवाच ॥ ब्रह्मणो मानसी क-
न्या देवसेना हर्माश्वरी ॥ सृष्ट्वा मां मनसा धाता ददौ स्कंदाय भूमिप ॥ २५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥

॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥

॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ परमुत्कृष्टं तादृशमहत्कर्मणो दात्र्यहमस्मीति भावः ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

मातृकासुचविख्यातास्कंदभार्याचसुव्रता ॥ विश्वेषष्ठीतिविख्याताषष्ठांशाप्रकृतेः परा ॥ २६ ॥ अपुत्रायपुत्र
दाहंप्रियादात्रीप्रियाय च ॥ धनदाहंदरिद्रेभ्यः कर्मिभ्यश्च स्वकर्मदा ॥ २७ ॥ सुखंदुःखं भयं शोको हर्षो मंगल
मेव च ॥ संपत्तिश्च विपत्तिश्च सर्वे भवति कर्मणा ॥ २८ ॥ कर्मणा बहुपुत्रश्च वंशहीनः स्वकर्मणा ॥ कर्मणा
मृतपुत्रश्च कर्मणा चिरजीवनः ॥ २९ ॥ कर्मणा गुणवांश्चैव कर्मणा चांगहीनकः ॥ कर्मणा बहुभार्यश्च भार्याही
नश्च कर्मणा ॥ ३० ॥ कर्मणारूपवान् धर्मी रोगी शश्च स्वकर्मणा ॥ कर्मणा च भवेद्वाधिः कर्मणारोग्यमेव च
॥ ३१ ॥ तस्मात्कर्मपरं राजन् सर्वेभ्यश्च श्रुतौ श्रुतं ॥ इत्येवमुक्त्वा सा देवी गृहीत्वा बालकं मुने ॥ ३२ ॥ महाज्ञानेन
सा देवी जीवयामास लीलया ॥ राजा ददर्श तं बालं सस्मितं कनकप्रभं ॥ ३३ ॥ देवसेना च पश्यंतं नृपमा पृच्छय सा
तदा ॥ गृहीत्वा बालकं देवी गगनं गंतुमुद्यता ॥ ३४ ॥ पुनस्तुष्टावतां राजा शुष्कं कंठोष्ठतालुकः ॥ नृपः स्तोत्रेण सा
देवी परितुष्टा बभूव ह ॥ ३५ ॥ उवाच तं नृपं ब्रह्मन् वेदोक्तं कर्म निर्मितं ॥ देव्युवाच ॥ त्रिषु लोकेषु त्वं राजा स्वायं भु
व मनोः सुतः ॥ ३६ ॥ मम पूजां च सर्वत्र कारयित्वा स्वयं कुरु ॥ तदा दास्यामि पुत्रं ते कुलपद्मं मनोहरं ॥ ३७ ॥ सुव्र
तं नाम विख्यातं गुणवंतं सुपंडितं ॥ जातिस्मरं च योगींद्रं नारायणकलात्मकं ॥ ३८ ॥ शतक्रतुकरं श्रेष्ठं क्षत्रियाणां
च वंदितं ॥ मत्तमातंगकक्षाणां धृतवंतं बलं शुभं ॥ ३९ ॥ धनिनं गुणिनं शुद्धं विदुषां प्रियमेव च ॥ योगिनां ज्ञानिनां
चैव सिद्धिरूपं तपस्विनां ॥ ४० ॥ यशस्विनं च लोकेषु दातारं सर्वसंपदां ॥ इत्येवमुक्त्वा सा देवी तस्मै तद्बालकं द
दौ ॥ ४१ ॥ राजा चकार स्वीकारं पूजार्थं च प्रियव्रतः ॥ जगाम देवी स्वर्गं च दत्त्वा तस्मै शुभं वरं ॥ ४२ ॥ ॥ ६५ ॥

॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७५ ॥

॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ षष्ठदिवसेयथाएकविंशतिमेवासरे वर्द्धयामासपूजामित्यर्थः ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥

आजगामसहामात्यःस्वगृहं दृष्टमानसः ॥ आगत्य कथयामास वृत्तांतं पुत्रहेतुकं ॥ ४३ ॥ श्रुत्वा बभूवुः संतुष्टाव
रानार्यश्च नारद ॥ मंगलं कारयामास सर्वत्र पुत्रहेतुकं ॥ ४४ ॥ देवीं च पूजयामास ब्राह्मणेभ्यो धनं ददौ ॥ राजा
च प्रतिमासेषु शुक्लषष्ठ्यां महोत्सवं ॥ ४५ ॥ षष्ठ्या देव्याश्च यत्नेन कारयामास सर्वतः ॥ बालानां सूतिकागारे
षष्ठाहेयत्नपूर्वकं ॥ ४६ ॥ तत्पूजां कारयामास चैकविंशतिवासरे ॥ बालानां शुभकार्येषु शुभान्नप्राशने तथा ॥
॥ ४७ ॥ सर्वत्र वर्द्धयामास स्वयमेव च कारह ॥ ध्यानं पूजाविधानं च स्तोत्रं मत्तो निशामय ॥ ४८ ॥ यच्छ्रुतं धर्मवक्त्रे
ण कौथुमोक्तं च सुव्रत ॥ शालग्रामे घटे वाथ वटमूले वा मुने ॥ ४९ ॥ भित्त्यां पुत्तलिकां कृत्वा पूजयेद्वा विचक्षणः ॥
षष्ठांशां प्रकृतेः शुद्धां प्रतिष्ठाप्य च सुप्रभां ॥ ५० ॥ सुपुत्रदां च शुभदां दयारूपां जगत्प्रसू ॥ श्वेतचंपकवर्णाभारत्न
भूषणभूषितां ॥ ५१ ॥ पवित्ररूपां परमां देवसेनां परां भजे ॥ इति ध्यात्वा स्वशिरसि पुष्पंदत्वा विचक्षणः ॥ ५२ ॥
पुनर्ध्यात्वा च मूलेन पूजयेत्सुव्रतां सतीं ॥ पाद्यार्घ्याचमनीयैश्च गंधपुष्पप्रदीपकैः ॥ ५३ ॥ नैवेद्यैर्विविधैश्चापि
फलेन शोभनेन च ॥ ॐ ह्रीं षष्ठी देव्यै स्वाहेति विधिपूर्वकं ॥ ५४ ॥ अष्टाक्षरं महामंत्रं यथाशक्ति जपेन्नरः ॥ तत
स्तुत्वा च प्रणमेद्भक्तियुक्तः समाहितः ॥ ५५ ॥ स्तोत्रं च सामवेदोक्तं वरं पुत्रफलप्रदं ॥ अष्टाक्षरं महामंत्रं ल
क्ष्म्या योजयेत्ततः ॥ ५६ ॥ सुपुत्रं सलभेन्नूनमित्याह कमलोद्भवः ॥ स्तोत्रं शृणु मुनि श्रेष्ठ सर्वकामशुभावहं
॥ ५७ ॥ वांछाप्रदं सर्वेषां गूढं वेदेषु नारद ॥ प्रियव्रतो वाच ॥ नमो देव्यै महादेव्यै सित्थ्यै शांत्यै नमो नमः
॥ ५८ ॥ शुभायै देवसेनायै षष्ठ्यै देव्यै नमो नमः ॥ वरदायै पुत्रदायै धनदायै नमो नमः ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥

॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ प्रणवमायात्रीजाद्योमंत्रः ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥

सुखदायैमोक्षदायैषष्ठ्यैदेव्यैनमोनमः ॥ सृष्ट्यैषष्ठांशरूपायैसिद्ध्यैचनमोनमः ॥ ६० ॥ मायायैसिद्धयोगि
न्यैषष्ठीदेव्यैनमोनमः ॥ सारायैशारदायैचपरादेव्यैनमोनमः ॥ ६१ ॥ बालाधिष्ठातृदेव्यैचषष्ठीदेव्यैनमो
नमः ॥ कल्याणदायैकल्याण्यैफलदायैचकर्मणां ॥ ६२ ॥ प्रत्यक्षायैस्वभक्तानांषष्ठ्यैदेव्यैनमोनमः ॥ पूज्या
यैस्कंदकांतायैसर्वेषांसर्वकर्मसु ॥ ६३ ॥ देवरक्षणकारिण्यैषष्ठीदेव्यैनमोनमः ॥ शुद्धसत्त्वस्वरूपायैवादिता
यैनृणांसदा ॥ ६४ ॥ हिंसाक्रोधवर्जितायैषष्ठीदेव्यैनमोनमः ॥ धनं देहि प्रियां देहि पुत्रं देहि सुरेश्वरि ॥ ६५ ॥
मानं देहि जयं देहि द्विषोजहि महेश्वरि ॥ धर्मं देहि यशो देहि षष्ठीदेव्यैनमोनमः ॥ ६६ ॥ देहि भूमिं प्रजां देहि विद्यां
देहि सुपूजिते ॥ कल्याणं च जयं देहि षष्ठीदेव्यैनमोनमः ॥ ६७ ॥ इति देवीं च संस्तूय लेभे पुत्रं प्रियव्रतः ॥ यशस्वि
नं च राजेंद्र षष्ठीदेव्याः प्रसादतः ॥ ६८ ॥ षष्ठीस्तोत्रमिदं ब्रह्मन्यः शृणोति तु वत्सरं ॥ अपुत्रो लभते पुत्रं वरं सुचि
रजीविनं ॥ ६९ ॥ वर्षमेकं च यो भक्त्या संपूज्येदं शृणोति च ॥ सर्वपापाद्विनिर्मुक्तो महावंध्या प्रसूयते ॥ ७० ॥ वीरं
पुत्रं च गुणिनं विद्यावंतं यशस्विनं ॥ सुचिरायुष्यवंतं च सूते देवी प्रसादतः ॥ ७१ ॥ काकवंध्या च यानारी मृतव
त्सा च या भवेत् ॥ वर्षं श्रुत्वा लभेत् पुत्रं षष्ठीदेवी प्रसादतः ॥ ७२ ॥ रोगयुक्ते च बाले च पिता माता शृणोति च ॥ मासे
न मुच्यते बालः षष्ठीदेवी प्रसादतः ॥ ७३ ॥ इति श्रीदेवीभागवते म० न० ना० नारा० षष्ठ्युपाख्याने षट्चत्वारिंशो
ध्यायः ॥ ४६ ॥ श्रीनारा० ॥ कथितं षष्ठ्युपाख्यानं ब्रह्मपुत्रयथागमं ॥ देवीमंगलचंडीचतदाख्यानं निशामय ॥ १ ॥

इति श्रीदेवीभागवततिलके नवमस्कंधे षट्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४६ ॥ अष्टाधिकैश्च पंचाशत्पदैरयं समासतः ॥ कथामंगलचंड्याश्च यथावदभि
धीयते ॥ १ ॥ मंगलचंड्युपाख्यानमाह कथितमिति ॥ १ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥२॥ मंगलचंडीनामोनिस्तुतिमाह दक्षायाइति कल्याणेषुकल्याणकरणेषुयादक्षान्चंडीप्रतापवतीतथामंगलेषुतेषामध्येयामंगलतेनमंगलचंडीतिनामेत्यर्थः मंगलाचासौचंडीचमंगलचंडीतिव्युत्पत्त्यामंगलचंडीतिनामसिद्धं ॥३॥ व्युत्पत्त्यंतरमाह पूज्यायाइति मंगलोभूमिपुत्रस्तस्यपूज्यातदभीष्टदात्रीचयाचंडीसामंगलचंडीत्यर्थः ॥४॥ ५॥ दुर्गायारूपांतरमिदंभवतीत्याह मूर्तिभेदेनेति ॥ ६॥ ७॥ संकटेदुर्गतेते

तस्याः पूजादिकंसर्वधर्मवक्त्रेणयच्छ्रुतं ॥ श्रुतिसंमतमेवेष्टं सर्वेषांविदुषामपि ॥ २॥ दक्षायावर्ततेचंडीकल्याणे
पुचमंगला ॥ मंगलेषुचयादक्षासाचमंगलचंडिका ॥ ३॥ पूज्यायावर्ततेचंडीमंगलोपिमहीसुतः ॥ मंगलाभीष्टदे
वीयासावामंगलचंडिका ॥ ४॥ मंगलोमनुवंशश्चसप्तद्वीपधरापतिः ॥ तस्यपूज्याभीष्टदेवीतेनमंगलचंडिका
॥ ५॥ मूर्तिभेदेनसादुर्गामूलप्रकृतिरीश्वरी ॥ कृपारूपातिप्रत्यक्षायोषितामिष्टदेवता ॥ ६॥ प्रथमंपूजिता
साचशंकरेणपरात्परा ॥ त्रिपुरस्यवधेघोरेविष्णुनाप्रेरितेनच ॥ ७॥ ब्रह्मन्ब्रह्मोपदेशेनदुर्गतेनचसंकटे ॥
आकाशात्पतितेत्यानेदैत्येनपातितेरुषा ॥ ८॥ ब्रह्मविष्णूपदिष्टश्चदुर्गातुष्टवशंकरः ॥ साचमंगलचंडीयाव
भूवरूपभेदतः ॥ ९॥ उवाचपुरतःशंभोर्भयंनास्तीतितेप्रभो ॥ भगवान्वृषरूपश्चसर्वेशस्तेभविष्यति
॥ १०॥ युद्धशक्तिस्वरूपाहंभविष्यामिनसंशयः ॥ मायात्मनाचहरिणासहायेनवृषध्वज ॥ ११॥ जहिदैत्यं
स्वशत्रुंचसुराणांपदघातकं ॥ इत्युक्त्वांतर्हितादेवीशंभोःशक्तिर्बभूवसा ॥ १२॥ विष्णुदत्तेनशस्त्रेणजघानत
मुमापतिः ॥ मुनीन्द्रपतितेदैत्येसर्वदेवामहर्षयः ॥ १३॥

॥ ६२ ॥

॥ ६२ ॥

नप्रातेनशिवेनेत्यर्थः किंसंकटप्राप्तमितेचेत्तत्राह आकाशादिति दैत्येनकेनचिद्युद्धसमयेरुषापातितेआकाशाद्यानेपतितेसतीत्यर्थः ॥ ८॥
॥ ९॥ भयंनास्तीति अधुनानिर्भयंयुद्धंकुर्वितिभावः ननुममवाहनाभावात्कथंयुद्धंभविष्यतितत्राह भगवानिति भगवान्विष्णुर्वृषरू
पेणतेवाहनंभविष्यतीत्यर्थः ॥ १०॥ मायात्मनामूलप्रकृत्यंशभूतेनहारीनेत्यर्थः ॥ ११॥ १२॥ १३॥

॥ ७३ ॥

॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ पिष्टकैः पूर्वोक्तलक्षणैः पञ्चानविशेषैः ॥ १८ ॥ १९ ॥ प्रणवमायाश्रीकामबीजपूर्वोमंत्रः सर्वपूज्ये इति

तुष्टुः शंकरं देवं भक्तिनम्रात्मकंधराः ॥ सद्यः शिरसि शंभोश्च पुष्पवृष्टिर्बभूव ह ॥ १४ ॥ ब्रह्माविष्णुश्च संतु
ष्टो ददौ तस्मै शुभाशिपं ॥ ब्रह्माविष्णुपदिष्टश्च सुस्नातः शंकरस्तथा ॥ १५ ॥ पूजयामास तां भक्त्या देवीं मंगल
चंडिकां ॥ पाद्यार्घ्याचमनीयैश्च वस्त्रैश्च विविधैरपि ॥ १६ ॥ पुष्पचंदननैवेद्यैर्भक्त्या नानाविधैर्मुने ॥ छागैर्म
षैश्च महिषैर्गव्यैः पक्षिभिस्तथा ॥ १७ ॥ वस्त्रालंकारमाल्यैश्च पायसैः पिष्टकैरपि ॥ मधुभिश्च सुधाभिश्च फलै
र्मानाविधैरपि ॥ १८ ॥ संगीतैर्मर्तकैर्वाद्यैरुत्सवैर्नामकीर्तनैः ॥ ध्यात्वामाध्यंदिनोक्तेन ध्यानेन भक्तिपूर्वकं
॥ १९ ॥ ददौ द्रव्याणि मूलेन मंत्रेणैव च नारद ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सर्वपूज्ये देवि मंगलचंडिके ॥ २० ॥ हुं हुं फट् स्वाहा
प्येकविंशाक्षरो मनुः ॥ पूज्यः कल्पतरुश्चैव भक्तानां सर्वकामदः ॥ २१ ॥ दशलक्षजपेनैव मंत्रसिद्धिर्भवेत्पुनः ॥
ध्यानं च श्रूयतां ब्रह्मन् वेदोक्तं सर्वसंमतं ॥ २२ ॥ देवी षोडशवर्षीयां शश्वत्सु स्थिरयौवनां ॥ बिंबोष्ठी सुदती शुद्धां
शरत्पद्मनिभाननां ॥ २३ ॥ श्वेतचंपकवर्णाभां सुनीलोत्पललोचनां ॥ जगद्धात्रीं च दात्रीं च सर्वेभ्यः सर्वसंपदां
॥ २४ ॥ संसारसागरे घेरे ज्योतीरूपां सदाभजे ॥ देव्याश्च ध्यानमित्येवं स्तवनं श्रूयतां मुने ॥ २५ ॥ महादेव
उवाच ॥ रक्षरक्षजगन्मातर्देवि मंगलचंडिके ॥ हारिके विपदाराशे हर्षमंगलकारिके ॥ २६ ॥ हर्षमंगलदक्षे च ह
र्षमंगलदायिके ॥ शुभमंगलदक्षे च शुभमंगलचंडिके ॥ २७ ॥ मंगले मंगलार्हे च सर्वमंगलमंगले ॥ सतां मंग
लदे देवि सर्वेषां मंगलालये ॥ २८ ॥

॥ ४५ ॥

॥ ४५ ॥

स्वरूपग्रहणं देवि मंगलचंडिके इत्यापि स्वरूपग्रहणं ततोक्षरद्वयं कवचात्मकं ततोऽब्जमंत्रस्ततो वह्निजाया सर्वमेकीकृत्यैकविंशाक्षरो मंत्रः ॥ २० ॥

॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥

॥ ४५ ॥

॥ ४५ ॥

दे.भा.न

१३४

॥ २९ ॥ ३० ॥ मंगसुखेति मंगसर्वतोविसंपद्यसुखंबहुलंसुखामैत्यर्थस्तत्प्रदेतिभावः मगिसर्पणद्वयस्यरूपं ॥ ३१ ॥
॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ मंगलचंद्राङ्गाङ्गाख्यावंसमाप्यमनसायाउपाख्यानमाह उक्तमिति ॥ ३८ ॥ मनसा
पदस्यव्युत्पत्तिमाह कन्येति मनोज्ञन्यत्वान्मनसादेवनादामनःशब्दादर्शआद्यचिकृतेमनसोतीसिद्धं मनसाध्यायतेइतिमनःकरणकध्यानक

पूज्येमंगलवारेचमंगलाभीष्टदैवते ॥ पूज्येमंगलभूपस्यमनुवंशस्यसंततं ॥ २९ ॥ मंगलाधिष्ठातृदेविमंगला
नांचमंगले ॥ संसारमंगलाधारेमोक्षमंगलदायिनि ॥ ३० ॥ सारेचमंगलाधारेपारेचसर्वकर्मणां ॥ प्रतिमंग
लवारेचपूज्येमंगसुखप्रदे ॥ ३१ ॥ स्तोत्रेणानेमशंभुश्चस्तुत्वामंगलचंडिकां ॥ प्रतिमंगलवारेचपूजांदत्वा
गतःशिवः ॥ ३२ ॥ प्रथमेपूजितादेवीशिवेनसर्वमंगला ॥ द्वितीयेपूजितासाचमंगलेनग्रहेणच ॥ ३३ ॥ तृती
येपूजिताभद्रामंगलेननृपेणच ॥ चतुर्थेमंगलेवारेसुंदरीभिःप्रपूजिता ॥ ३४ ॥ पंचमेमंगलाकांक्षिनरैर्मंगलचं
डिका ॥ पूजिताप्रतिविश्वेषुविश्वेशपूजितासदा ॥ ३५ ॥ ततःसर्वत्रसंपूज्याबभूवपरमेश्वरी ॥ देवैश्चमुनिभिश्चै
वमानवैर्मनुभिर्मुने ॥ ३६ ॥ देव्याश्चमंगलस्तोत्रंयःशृणोतिसमाहितः ॥ तन्मंगलंभवेत्तस्यनभवेत्तदमंगलं ॥
वर्द्धतेपुत्रपौत्रैश्चमंगलंचदिनेदिने ॥ ३७ ॥ नारायणउवाच ॥ उक्तंद्वयोरुपाख्यानंब्रह्मपुत्रयथागमं ॥ श्रूय
तांमनसाख्यानंयच्छ्रुतंधर्मवक्रतः ॥ ३८ ॥ साचकन्याभगवतीकिंयपरस्यचमानसी ॥ तेनैवमनसादेवीमन
सायाचदीव्यति ॥ ३९ ॥ मनसाध्यायतेयाचपरमात्मानमीश्वरं ॥ तेनसामनसादेवीतेनयोगेनदीव्यति ॥
॥ ४० ॥ अत्मारामाचसादेवीवैष्णवीसिद्धयोगिनी ॥ त्रियुगंचतपस्तत्त्वाकृष्णस्यपरमात्मनः ॥ ४१ ॥

नृत्वादामनसोतीसिद्धामैत्यर्थः ॥ ३९ ॥ अत्राप्यर्शआद्यजेव जनकत्वेनदेवनध्यानसाधनत्वेनवामनोस्तिरस्याइतिव्युत्पत्तेः तेनयोगेनपरमा
त्मसमाधिरूपेणयतोदीव्यतिततइत्यर्थः ॥ ४० ॥ ४१ ॥

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

दी.अ

४९

१३४

जरत्कारुवेतिजीर्णवस्त्रादिकंतदुत्तपस्ययाक्षीणंशरीरंमनसायादृष्ट्वा यद्वाजरत्कारुमुनिवक्षीणंशरीरंदृष्ट्वाकृष्णोमनसायाजरत्कारुरितिनाम
 चक्रेइत्यर्थः ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ मनसायानामंतराणिसनिमित्तकान्याह भृशमिति ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ विषंसंहर्तुमीशास्त्र
 जरत्कारुशरीरंचदृष्ट्वायत्क्षीणमीश्वरः ॥ गोपीपतिर्नामचक्रेजरत्कारुरितिप्रभुः ॥ ४२ ॥ वाञ्छितंचददौतस्यै
 कृपयाचकृपानिधिः ॥ पूजांचकारयामासचकारचस्वयंप्रभुः ॥ ४३ ॥ स्वर्गेचनागलोकेचपृथिव्यांब्रह्मलोक
 तः ॥ भृशंजगत्सुगौरीसासुंदरीचमनोहरा ॥ ४४ ॥ जगद्गौरीतिविख्यातातेनसापूजितासती ॥ शिवशिष्याच
 सादेवीतेनशैवीप्रकीर्तिता ॥ ४५ ॥ विष्णुभक्तातीवशश्वद्वैष्णवीतेनकीर्तिता ॥ नागानांप्राणरक्षित्रीयज्ञेपा
 रक्षितस्यच ॥ ४६ ॥ नागेश्वरीतिविख्यातासानागभगिनीतिच ॥ विषंसंहर्तुमीशायातेनविषहरीस्मृता
 ॥ ४७ ॥ सिद्धयोगंहरात्प्रापतेनसासिद्धयोगिनी ॥ महाज्ञानंचयोगंचमृतसंजीवनींपरां ॥ ४८ ॥ महाज्ञा
 नयुतांतांचप्रवदंतिमनीषिणः ॥ आस्तीकस्यमुनींद्रस्यमातासापितपस्विनी ॥ ४९ ॥ आस्तीकमाताविज्ञाता
 जगतीसुप्रतिष्ठिता ॥ प्रियामुनेर्जरत्कारोर्मुनींद्रस्यमहात्मनः ॥ ५० ॥ योगिनोविश्वपूज्यस्यजरत्कारुप्रिया
 ततः ॥ जरत्कारुर्जगद्गौरीमनसासिद्धयोगिनी ॥ ५१ ॥ वैष्णवीनागभगिनीशैवीनागेश्वरीतथा ॥ जरत्कारु
 प्रियास्तीकमाताविषहरेतिच ॥ ५२ ॥ महाज्ञानयुतांचैवसादेवीविश्वपूजिता ॥ द्वादशैतानिनामानिपूजाकाले
 तुयःपठेत् ॥ ५३ ॥ तस्यनागभयंनास्तितस्यवंशोद्भवस्यच ॥ नागभीतेचशयनेनागग्रस्तेचमंदिरे ॥ ५४ ॥
 नागक्षोभेमहादुर्गेनागवेष्टितविग्रहे ॥ इदंस्तोत्रंपठित्वातुमुच्यतेनात्रसंशयः ॥ ५५ ॥ नित्यंपठेद्यस्तंदृष्ट्वा
 नागवर्गःपलायते ॥ दशलक्षजपेनैवस्तोत्रसिद्धिर्भवेन्नृणां ॥ ५६ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥
 तंत्रेत्यर्थः ॥ ४७ ॥ महाज्ञानादिकंयतोहरात्प्रापततोमहाज्ञानयुतांवदंतीत्यन्वयः ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥
 ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५७ ॥

दे.भा.न

१३५

॥ ५७ ॥ ५८ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलकेनवमस्कंधे सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ५७ ॥ पंचश्लोकन्यूनसार्धशतश्लोकैरनंतरं ॥ मनसा
याः कथारतोऽध्यानादिकमिहोच्यते ॥ १ ॥ मनसायाः पूजादिकं कथयति मत्तइति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ मूलेन मूलमंत्रेण वक्ष्यमाणेन सर्वानुपचारान्

स्तोत्रसिद्धिर्भवेद्यस्य सविषं भोक्तुमीश्वरः ॥ नागैश्च भूषणं कृत्वा स भवेन्नागवाहनः ॥ ५७ ॥ नागासनो नाग
तल्पो महासिद्धो भवेन्नरः ॥ अंते च विष्णुना सार्द्धं क्रीडत्येव दिवानिशं ॥ ५८ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे
नवमस्कंधे नारदनारायणसंवादे सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ५७ ॥ श्रीनारायण उ० ॥ मत्तः पूजाविधानं च श्रूयतां
मुनिपुंगव ॥ ध्यानं च सामवेदोक्तं प्रोक्तं देवीविधानकं ॥ १ ॥ श्वेतचंपकवर्णाभारत्नभूषणभूषितां ॥ बन्दिशुद्धां
शुकाधानां नागयज्ञोपवीतिनीं ॥ २ ॥ महाज्ञानयुतां तां च प्रवरज्ञानिनां वरां ॥ सिद्धाधिष्ठातृदेवीं च सिद्धां सिद्धि
प्रदां भजे ॥ ३ ॥ इति ध्यात्वा च तां देवीं मूलेनैव प्रपूजयेत् ॥ नैवेद्यैर्विविधैर्धूपैः पुष्पगंधानुलेपनैः ॥ ४ ॥ मूलमंत्रैश्च
वेदोक्तेर्भक्तानां वाञ्छितप्रदः ॥ मुने कल्पतरुर्नाम सुसिद्धो द्वादशाक्षरः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं च मनसा देव्यै स्वाहे
तिकीर्तितः ॥ पंचलक्षजपेनैव मंत्रसिद्धिर्भवेन्नृणां ॥ ६ ॥ मंत्रसिद्धिर्भवेद्यस्य ससिद्धोजगतीतले ॥ सुधास
मं विषंतस्य धन्वंतरि समो भवेत् ॥ ७ ॥ ब्रह्मन्स्नात्वा तु संक्रांत्यां गूढशालासु यत्नतः ॥ अवाह्यदेवीमीशानां पूज
येद्योतिभक्तितः ॥ ८ ॥ पंचम्यां मनसा ध्यायन् देव्यै दद्याच्च यो बलिं ॥ धनवान्पुत्रवांश्चैव कीर्तिमान्स भवेत्पुत्रं
॥ ९ ॥ पूजाविधानं कथितं तदाख्यानं निशामय ॥ कथयामि महाभाग यच्छ्रुतं धर्मवक्त्रतः ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥

दद्यादित्यर्थः ॥ ४ ॥ ५ ॥ प्रणवमाया श्रीकामवाणीबीजपूर्वको मनसा देव्यै स्वाहेत्यंतो मंत्रः पंचलक्षजपः पुरश्चरणं होमद्रव्यानुक्तत्वात्तिलै
होमः ॥ ६ ॥ ७ ॥ प्रयोगमाह ब्रह्मन्स्नात्वेति गूढशालासु गुप्तशालासु ॥ ८ ॥ सच संक्रांतिः पंचम्यामपेक्षितेत्याह पंचम्यामिति यद्वा
पंचम्यावेत्यर्थः ॥ ९ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥

टी.अ.

४८

१३५

॥ ११ ॥ मंत्रांश्च सर्पादिविषहरान् ॥ १२ ॥ मंत्राधिष्ठातृदेवीं सर्वविषहरमंत्राधिष्ठात्रीमित्यर्थः ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ ॐ तं चतुर्थं

पुरानागभयाक्रांतावभूवुर्मानवाभुवि ॥ गतास्तेशरणं सर्वेकश्यपं मुनिपुंगवं ॥ ११ ॥ मंत्रांश्च ससृजे भीतिः
कश्यपो ब्रह्मणान्वितः ॥ वेदबीजानुसारेण चोपदेशेन ब्रह्मणः ॥ १२ ॥ मंत्राधिष्ठातृदेवीतां मनसा ससृजे तथा ॥
तपसा मनसा तेन बभूव मनसा च सा ॥ १३ ॥ कुमारी सा च संभूता जगाम शंकरालयं ॥ भक्त्या संपूज्य कैलासे तु
ष्टावचंद्रशेखरं ॥ १४ ॥ दिव्यवर्षसहस्रं तं सिषेवे च मुनेः सुता ॥ आशुतोषो महेशश्च तां चतुष्टो बभूव ह ॥ १५ ॥
महाज्ञानंदौ तस्यै पाठयामास साम च ॥ कृष्णमंत्रं कल्पतरुंददावष्टाक्षरं मुने ॥ १६ ॥ लक्ष्मीमाया कामबीजं
तं कृष्णपदंततः ॥ त्रैलोक्यमंगलं नाम कवचं पूजनक्रमं ॥ १७ ॥ पुरश्चर्याक्रमं चापि वेदोक्तं सर्वसंमतं ॥ प्राप्य
मृत्युं जयान्मंत्रं सा सती च मुनेः सुता ॥ १८ ॥ जगाम तपसे सा ध्वीपुष्करं शंकराज्ञया ॥ त्रियुगं च तपस्तप्त्वा कृष्ण
स्य परमात्मनः ॥ १९ ॥ सिद्धा बभूव सा देवी दर्शयितुं पुरतः प्रभुं ॥ दृष्ट्वा कृशांगी बालां च कृपया च कृपानिधिः ॥ २० ॥
पूजां च कारयामास चकार च स्वयं हरिः ॥ वरं च प्रददौ तस्यै पूजिता त्वं भवे भव ॥ २१ ॥ वरं दत्त्वा च कल्याण्यै तत
श्चांतर्दधे हरिः ॥ प्रथमे पूजिता सा च कृष्णेन परमात्मना ॥ २२ ॥ द्वितीये शंकरेणैव कश्यपेन सुरेण च ॥ मुनिना
मनुना चैव नागेन मानवादिभिः ॥ २३ ॥ बभूव पूजिता सा च त्रिषु लोकेषु सुव्रता ॥ जरत्कारुमुनीन्द्राय कश्यपस्तां द
दौ पुरा ॥ २४ ॥ अयाचितो मुनिश्चेष्टो जग्राह ब्राह्मणाज्ञया ॥ कृत्वोद्वाहं महायोगी विश्रान्तस्तपसा चिरं ॥ २५ ॥
सुष्वाप देव्या जघने वटमूले च पुष्करे ॥ निद्रां जगाम समुनिः स्मृत्वा निद्रेशमीश्वरं ॥ २६ ॥ जगामास्तं दिनकरः सा
यंकाल उपास्थिते ॥ संचिंत्य मनसा सा ध्वीमनसा सा पतिव्रता ॥ २७ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥

कृष्णपदं नमो तौ मंत्रः ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ देव्या मनसा या जघने शिरः स्थाप्येत्यर्थः ॥ २६ ॥ २७ ॥

दे.भा.न

१३६

चकारालोचनं विचारं कृतवतीत्यर्थः तमेव विचारमाह अकृत्वेति द्विजन्मनानित्यां ॥ २८ ॥ लभिष्यति लप्स्यति पूर्वा प्रातः सध्या ॥ २९ ॥
धर्मलोपभयेनैव चकारालोचनं सती ॥ अकृत्वा पश्चिमां संध्यां नित्यां चैव द्विजन्मनां ॥ २८ ॥ ब्रह्महत्यादिकं पा
पं लभिष्यति पतिर्मम ॥ नोपतिष्ठति यः पूर्वनोपास्तेयस्तु पश्चिमां ॥ २९ ॥ ससर्वत्राशुचिर्नित्यं ब्रह्महत्यादिकं
लभेत् ॥ वेदोक्तमिति संचिंत्य बोधयामास सुंदरी ॥ ३० ॥ सच बुद्धो मुनिश्चेष्टस्तां चुकोप भृशं मुने ॥ मुनिस्त्वाच ॥
कथं मे सुखिनः साध्विनिद्राभंगः कृतस्त्वया ॥ ३१ ॥ व्यर्थं व्रतादिकं तस्याया भर्तुश्चापकारिणी ॥ तपश्चानशनं
चैव व्रतं दानादिकं च तत् ॥ ३२ ॥ भर्तुरप्रियकारिण्याः सर्वं भवति निष्फलं ॥ यया प्रियः पूजितश्च श्रीकृष्णः पूजि
तस्तया ॥ ३३ ॥ पतिव्रता व्रतार्थं च पतिरूपो हरिः स्वयं ॥ सर्वदानं सर्वयज्ञः सर्वतीर्थनिषेवणं ॥ ३४ ॥ सर्व
व्रतं तपः सर्वमुपवासादिकं च यत् ॥ सर्वधर्मश्च सत्यं च सर्वदेवप्रपूजनं ॥ ३५ ॥ तत्सर्वं स्वामिसेवायाः कलां नार्ह
ति षोडशीं ॥ पुण्ये च भारते वर्षे पतिसेवां करोति या ॥ ३६ ॥ वैकुण्ठे स्वामिना सार्धं सायाति ब्रह्मणः पदं ॥ विप्रियं
कुस्ते भर्तुर्विप्रियं वदति प्रियं ॥ ३७ ॥ असत्कुले प्रसूता हितफलं श्रूयतां सति ॥ कुंभीपाकं ब्रजेत्सा च यावच्चंद्र
दिका करौ ॥ ३८ ॥ ततो भवति चांडाली पतिपुत्रविवर्जिता ॥ इत्युक्त्वा च मुनिश्चेष्टो बभूव रुरिता धरः ॥ ३९ ॥
चकंपेतेन सा साध्वी भयेनोवाच तं पतिं ॥ साध्युवाच ॥ संध्यालोपभयेनैव निद्राभंगः कृतस्तव ॥ ४० ॥ कुरुशां
ति महाभाग दुष्टायाममसुव्रत ॥ शृंगाराहारनिद्राणां यश्च भंगं करोति वै ॥ ४१ ॥ स ब्रजेत्कालसूत्रं वै यावच्चंद्रो दि
वाकरः ॥ इत्युक्त्वा मनसा देवी स्वामिनश्चरणं बुजे ॥ ४२ ॥ पपात भक्त्या भीता च रुरोद च पुनः पुनः ॥ कुपितं च मु
निं दृष्ट्वा श्रीसूर्यशप्तमुद्यतं ॥ ४३ ॥

॥ ४४ ॥

॥ ४५ ॥

॥ ४६ ॥

॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ शृंगारो रतिः ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ श
मुमुक्षुतामिति मदर्थदानं विना कथमयमस्ताचलं प्राप्नुवति हेतोः ॥ ४३ ॥

॥ ४४ ॥

॥ ४५ ॥

॥ ४६ ॥

टी.अ.
४८

१३६

॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ यतोयस्मात्क्रोधात् ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ प्रतिज्ञापालनायचेति यदीयंममाज्ञानपालयिष्यातितदैनांत्य

तत्राजगामभगवान्संध्ययासहनारद ॥ तत्रागत्यमुनिसम्यगुवाचभास्करःस्वयं ॥ ४४ ॥ विनयेनचभीतश्च
तयासहयथोचितं ॥ भास्करउवाच ॥ सूर्यास्तसमयंदृष्ट्वासाध्वीधर्मभयेनच ॥ ४५ ॥ बोधयामासत्वांविप्रश
रणंत्वामहंगतः ॥ क्षमस्वभगवन्ब्रह्मन्मांशप्तुंनोचितंमुने ॥ ४६ ॥ ब्राह्मणानांचहृदयंनवनीतसमंसदा ॥ तेषां
क्षणार्द्धःक्रोधश्चततोभस्मभवेज्जगत् ॥ ४७ ॥ पुनःस्त्रष्टुंद्विजःशक्नोतेजस्वीद्विजात्परः ॥ ब्राह्मणोब्रह्मणोवंशः
प्रज्वलन्ब्रह्मतेजसा ॥ ४८ ॥ श्रीकृष्णंभावयेन्नित्यं ब्रह्मज्योतिःसनातनं ॥ सूर्यस्यवचनंश्रुत्वाद्विजस्तुष्टोवभू
वह ॥ ४९ ॥ सूर्योजगामस्वस्थानंगृहीत्वाब्राह्मणाशिषं ॥ तत्याजमनसांविप्रःप्रतिज्ञापालनायच ॥ ५० ॥
रुदंतीशोकसंयुक्तांहृदयेनविदूयता ॥ सासस्मारगुरुंशंभुमिष्टदेवंविधिंहरिं ॥ ५१ ॥ कश्यपंजन्मदातारंविपत्तो
भयकर्षिता ॥ तत्राजगामगोपीशोभगवान्शंभुरेवच ॥ ५२ ॥ विधिश्चकश्यपश्चैवमनसापरिचिंतितः ॥ दृष्ट्वा
विप्रोभीष्टदेवंनिर्गुणंप्रकृतेःपरं ॥ ५३ ॥ तुष्टावपरयाभक्त्याप्रणनाममुहुर्मुहुः ॥ नमश्चकारशंभुंचब्रह्माणंकश्य
पंतथा ॥ ५४ ॥ कथमागमनंदेवाइतिप्रश्नंचकारसः ॥ ब्रह्मातद्वचनंश्रुत्वासहसासमयोचितं ॥ ५५ ॥ प्रत्यु
वाचनमस्कृत्यहृषीकेशपदांबुजं ॥ यदित्यक्ताधर्मपत्नीधर्मिष्ठामनसासती ॥ ५६ ॥ कुरुष्वास्यांसुतोत्पत्तिंस्व
धर्मपालनायवै ॥ जायायांचसुतोत्पत्तिकृत्वापश्चात्यजेन्मुने ॥ ५७ ॥ अकृत्वातुसुतोत्पत्तिंविरागीयस्त्यजेत्प्रि
यां ॥ स्रवतेतस्यपुण्यंचचालन्यांचयथाजलं ॥ ५८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥

क्षयामीतिविवाहसमयेकताप्रतिज्ञेतितुपुराणांतरेप्रसिद्धंतस्याःपालनाय ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥

॥ ५९ ॥ एवंमुनिश्रेष्ठेतिनारदसंबोधनं द्वितीयं प्रथमांतं जरत्कारोर्नाम ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ प्रियस्यपत्युः प्रियवादिनी ॥ ६३ ॥ यो
 ब्रह्मणोवचनं श्रुत्वा जरत्कारुर्मुनीश्वरः ॥ चकारनाभिसंस्पर्शयोजनं मंत्रपूर्वकं ॥ ५९ ॥ मनसायामुनिश्रेष्ठमु
 निश्रेष्ठउवाचतां ॥ जरत्कारुरुवाच ॥ गर्भेणानेन मनसेतव पुत्रो भविष्यति ॥ ६० ॥ जितेन्द्रियाणां प्रवरो धार्मि
 षो ब्राह्मणाग्रणीः ॥ तेजस्वी च तपस्वी च यशस्वी च गुणान्वितः ॥ ६१ ॥ वरो वेदविदां चैव ज्ञानिनां योगिनां तथा ॥
 स च पुत्रो विष्णुभक्तो धार्मिकः कुलमुत्थरेत् ॥ ६२ ॥ नृत्यंति पितरः सर्वे जन्ममात्रेण वै मुदा ॥ पतिव्रता सुशीला
 यासां प्रिया प्रियवादिनी ॥ ६३ ॥ धर्मिष्ठा पुत्रमाता च कुलस्त्री कुलपालिका ॥ हरिभक्तिप्रदो बंधुर्न चाभीष्टसुख
 प्रदः ॥ ६४ ॥ यो बंधुश्चेत्स च पिता हरिर्वर्मप्रदर्शकः ॥ सागर्भधारिणी या च गर्भावासविमोचनी ॥ ६५ ॥ दया
 रूपा च भगिनी यमभीतिविमोचिनी ॥ विष्णुमंत्रप्रदाता च स गुरुर्विष्णुभक्तिदः ॥ ६६ ॥ गुरुश्च ज्ञानदोहो हिय
 ज्ञानं कृष्णभावनं ॥ आब्रह्मस्तं वपर्यंतं यतो विश्वं चराचरं ॥ ६७ ॥ आविर्भूतं तिरोभूतं किं वा ज्ञानं तदन्यतः ॥
 वेदजं यज्ञजं यद्यत्तत्सारं हरिसेवनं ॥ ६८ ॥ तत्त्वानां सारभूतं च हरेरन्यद्विडम्बनं ॥ दत्तं ज्ञानं मया तुभ्यं स स्वा
 मी ज्ञानदोहियः ॥ ६९ ॥ ज्ञानात्प्रमुच्यते बंधात् सारिपुः स हि बंधदः ॥ विष्णुभक्तियुतं ज्ञानं नोददाति हियोगुरुः
 ॥ ७० ॥ सारिपुः शिष्यघाती च यतो बंधान्नमोचयेत् ॥ जननी गर्भजक्लेशाद्यमया तनया तथा ॥ ७१ ॥ नमोचये
 द्यः सकथं गुरुस्तातो हि बंधवः ॥ परमानंदरूपं च कृष्णमार्गमनश्वरं ॥ ७२ ॥ न दर्शयेद्यः स ततं कीदृशो बंधवो
 नृणां ॥ भजसाध्विपरं ब्रह्माच्युतं कृष्णं च निर्गुणं ॥ ७३ ॥ निर्मूलं च भवेत्पुंसां कर्मवैतस्य सेवया ॥ मया छलेन
 त्वं त्यक्ता क्षमस्वैवं मम प्रिये ॥ ७४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥

बंधुः स हरिभक्तिप्रदश्चेदेव बंधुर्न केवलमभीष्टसुखप्रदो बंधुरित्यर्थः ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ किं वा ज्ञानमिति किं वा
 ब्रह्मः क्षेपे कृष्णः परं ब्रह्मतस्य भावनादन्यत्किं ज्ञानमस्ति न किमपीत्यर्थः ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥

॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ यत्रस्मरामीति यदास्मरामितदामां प्रत्यागच्छेत्यर्थः ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥

क्षमायुतानां साध्वीनां सत्वात्क्रोधो न विद्यते ॥ पुष्करेतपसेयामि गच्छ देवियथा सुखं ॥ ७५ ॥ श्रीकृष्णचरणां
भोजेनिःस्पृहाणां मनोरथाः ॥ जरत्कारुवचः श्रुत्वामनसा शोककातरा ॥ ७६ ॥ साश्रुनेत्राचविनयादुवाच प्रा
णवल्लभं ॥ मनसोवाच ॥ दोषो नास्त्येवमेत्यक्तुं निद्राभंगेन ते प्रभो ॥ ७७ ॥ यत्रस्मरामित्वां नित्यं तत्र मामाग
मिष्यसि ॥ बंधुभेदः क्लेशतमः पुत्रभेदस्ततः परं ॥ ७८ ॥ प्राणेशभेदः प्राणानां विच्छेदात्सर्वतः परः ॥ पतिः पति
व्रतानां तु शतपुत्राधिकं प्रियः ॥ ७९ ॥ सर्वस्मात्तु प्रियः स्त्रीणां प्रियस्तेनोच्यते बुधैः ॥ पुत्रिणां चैव पुत्रेषु वैष्णवानां
यथा हरौ ॥ ८० ॥ नेत्रे यथैकनेत्राणां तृषितानां यथा जले ॥ क्षुधितानां यथान्नेचक्रामुकानां च मैथुने ॥ ८१ ॥ यथा
परस्वे चौराणां यथा जारे कुयोषितां ॥ विदुषां च यथा शास्त्रे वाणिज्ये वाणिजां यथा ॥ ८२ ॥ तथा शश्वन्मनः कांते सा
ध्वीनां योषितां प्रभो ॥ इत्युत्कामनसा देवी पतित्वा स्वामिनः पदे ॥ ८३ ॥ क्षणं चकार क्रोडे तां कृपया च कृपानि
धिः ॥ नेत्रोदकेन मनसां स्नापयामास तं मुनिः ॥ ८४ ॥ साश्रुनेत्रामुनेः क्रोडं सिषेवे भेदकातरा ॥ तदा ज्ञानेन तौ
द्वौ च विशोकौ संबभूवतुः ॥ ८५ ॥ स्मारं स्मारं पदां भोजं कृष्णस्य परमात्मनः ॥ जगाम तपसे विप्रः स्वकांतां
संप्रबोध्य च ॥ ८६ ॥ जगाम मनसा शंभोः कैलासं मंदिरं गुरोः ॥ पार्वती बोधयामास मनसां शोककर्षितां
॥ ८७ ॥ शिवश्चातीव ज्ञानेन शिवेन च शिवालयः ॥ सुप्रशस्ते दिने साध्वी सुषुवे मंगलक्षणे ॥ ८८ ॥ नारायणां
शंपुत्रं तं योगिनां ज्ञानिनां गुरुं ॥ गर्भास्थितो महाज्ञानं श्रुत्वा शंकरवक्रतः ॥ ८९ ॥ संबभूव च योगीन्द्रो योगिनां
ज्ञानिनां गुरुः ॥ जातकं कारयामास वाचयामास मंगलं ॥ ९० ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥

॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ क्रोडमंकं ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥

दे.भा.न

शिशोःशिवाय ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ज्ञानमपरोक्षसंजीविनीवा ॥ ९३ ॥ यस्याःमनसायाःआस्तीकशब्दोऽस्मिन्नर्थेपृषोदरादित्वात्साधुः

वेदांश्चपाठयामासशिवायचशिवःशिशोः॥ मणिरत्नकिरीटांश्चब्राह्मणेभ्योददौशिवः॥ ९१ ॥ पार्वतीचगवां
लक्षंरत्नानिविविधानिच ॥ शंभुश्चचतुरोवेदान्वेदांगानितरांस्तथा ॥ ९२ ॥ बालकंपाठयामासज्ञानंमृत्युं
जयंपरं ॥ भक्तिरस्त्यधिकाकान्तिभीष्टदेवेगुरौतथा ॥ ९३ ॥ यस्यास्तेनचतत्पुत्रोबभूवास्तीकएवच ॥ जगा
त्तपसेविष्णोःपुष्करंशंकराज्ञया ॥ ९४ ॥ संप्राप्यचमहामंत्रंततश्चपरमात्मनः ॥ दिव्यंवर्षत्रिलक्षंचतप
सेभनः ॥ ९५ ॥ आजगाममहासेनैवमस्कर्तृशिवंप्रभः ॥ शंकरंचनमस्कृत्यस्थित्वातत्रैवबालकः

०७ ॥ शतल

श्रुदिति

मितन्नि

सप्ताहेस

स्त्रि

टी.अ

४८

पितुर्वैजने ॥ राजाजित्तरसादे

पितुर्वैजने ॥ राजाजित्तरसादे

क्षकोर् ॥ ८ ॥ सेंद्रं च तक्षकं हं

ति

इत्येवं कथितं सर्वं किं भूयः श्रोतुमिच्छसि ॥ नारद उवाच ॥ केन स्तोत्रेण तुष्टावमहद्रामनसां सतीं

॥ पूजाविधिक्रमं तस्याः श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः ॥ नारायण उवाच ॥ सुस्नातः शुचिराचांतो धृत्वा धौते च
न ससी ॥ १७ ॥ रत्नसिंहासने देवीं वासयामास भक्तिः ॥ स्वर्गगायाजलेनैव रत्नकुंभास्थितेन च ॥ १८ ॥

स्नापयामास मनसां महेंद्रे वेदमंत्रतः ॥ वाससी वासयामास वह्निशुद्धे मनोहरे ॥ १९ ॥ सर्वांगे च दनं कृत्वा पा
दार्घ्यं भक्तिसंयुतः ॥ गणेशं च दिनेशं च वह्निं विष्णुं शिवां शिवां ॥ २० ॥ संपूज्या दौ देवषट्कं पूजयामास तां सतीं ॥

ॐ ह्रीं श्रीं मनसा देव्यै स्वाहेत्येवं च मंत्रतः ॥ १२१ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥

प्रणवमाया श्रीबीजाद्यो मनसा देव्यै स्वाहेत्यंतो मंत्रः ॥ १२१ ॥

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

दे.भा.न

१३८

शिशोःशिवाय ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ज्ञानमपरोक्षसंजीविनीवा ॥ ९३ ॥ यस्याःमनसायाःआस्तीकशब्दोस्मिन्नर्थेपृषोदरादित्वात्साधुः

वेदांश्चपाठयामासशिवायचशिवःशिशोः॥ मणिरत्नकिरीटांश्चब्राह्मणेभ्योददौशिवः॥ ९१ ॥ पार्वतीचगवां
लक्षंरत्नानिविविधानिच ॥ शंभुश्चतुरोवेदान्वेदांगानितरांस्तथा ॥ ९२ ॥ बालकंपाठयामासज्ञानंमृत्युं
जयंपरं ॥ भक्तिरस्त्यधिकाकांतिभीष्टदेवेगुरौतथा ॥ ९३ ॥ यस्यास्तेनचतत्पुत्रोबभूवास्तीकएवच ॥ जगा
मतपसेविष्णोःपुष्करंशंकराज्ञया ॥ ९४ ॥ संप्राप्यचमहामंत्रंततश्चपरमात्मनः ॥ दिव्यंवर्षत्रिलक्षंचतप
स्तत्त्वातपोधनः ॥ ९५ ॥ आजगाममहायोगीनमस्कर्तुंशिवंप्रभुः ॥ शंकरंचनमस्कृत्यस्थित्वातत्रैवबालकः
॥ ९६ ॥ साचाजगाममनसाकश्यपस्याश्रमंपितुः ॥ तांसपुत्रांसुतांदृष्ट्वामुदंप्रापप्रजापतिः ॥ ९७ ॥ शतल
क्षंचरत्नानांब्राह्मणेभ्योददौमुने ॥ ब्राह्मणान्भोजयामाससोसंख्यान्श्रेयसेशिशोः ॥ ९८ ॥ अदितिश्चदिति
श्चान्यामुदंप्रापपरंतप ॥ सासपुत्राचसुचिरंतस्थौतातालयेसदा ॥ ९९ ॥ तदीयंपुनराख्यानंवक्ष्यामितन्नि
शामय ॥ अथाभिमन्युतनयेब्रह्मशापःपरिक्षिते ॥ १०० ॥ बभूवसहस्राब्रह्मन्देवदोषेणकर्मणा ॥ सप्ताहेस
मतीतेतुतक्षकस्त्वांचधक्षयति ॥ १०१ ॥ शशापशृंगीतत्रैवकौशिक्याश्चजलेनवै ॥ राजाश्रुत्वातत्प्रवृत्तिंनिर्वा
तस्थानमागतः ॥ २ ॥ तत्रतस्थौचसप्ताहंदेहरक्षणतत्परः ॥ सप्ताहेसमतीतेतुगच्छंतंतक्षकंपथि ॥ ३ ॥ ध
न्वंतरिर्नृपंभोक्तुंददर्शगामुकःपथि ॥ तयोर्बभूवसंवादःसुप्रीतिश्चपरस्परं ॥ ४ ॥ धन्वंतरिर्मणिंप्रापतक्षकः
स्वेच्छयाददौ ॥ सययौतंगृहीत्वातुसंतुष्टोहृष्टमानसः ॥ १०५ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥

॥ ९४ ॥ महामंत्रंमूलप्रकृतेर्मंत्रं ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥ १०१ ॥ १०२ ॥ तक्षकमितिनृपंभोक्तुंगच्छं
तंतक्षकंधन्वंतरिंददर्शेत्यन्वयः ॥ १०३ ॥ गामुकोगंतुकामः ॥ १०४ ॥ १०५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

टी.अ.
४८

१३८

॥ १०६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥

तक्षकोभक्षयामासनृपंतमंचकेस्थितं ॥ राजाजगामतरसादेहंत्यत्कापरत्रच ॥ १०६ ॥ संस्कारंकारयामास
पितुर्वैजनमेजयः ॥ राजाचकारयज्ञंचसर्पसत्रंततोमुने ॥ ७ ॥ प्राणांस्तत्याजसर्पाणांसमूहोब्रह्मतेजसा ॥ सत
क्षकोवैभीतस्तुमहेन्द्रंशरणंययौ ॥ ८ ॥ सेंद्रंचतक्षकंहंतुंविप्रवर्गःसमुद्यतः ॥ अथदेवाश्चसैद्राश्चसंजग्मुर्मनसां
तिकं ॥ ९ ॥ तांतुष्टावमहेन्द्रश्चभयकातरविह्वलः ॥ ततआस्तीकआगत्ययज्ञंचमातुराज्ञया ॥ १० ॥ महेन्द्रत
क्षकप्राणान्ययाचेभूमिपंपरं ॥ ददौवरनृपश्रेष्ठःकृपयाब्राह्मणाज्ञया ॥ ११ ॥ यज्ञंसमाप्यविप्रेभ्योदक्षिणां
चददौमुदा ॥ विप्राश्चमुनयोदेवागत्वाचमनसांतिकं ॥ १२ ॥ मनसांपूजयामासुस्तुष्टुवुश्चपृथक्पृथक् ॥ श
क्रःसंभृतसंभारोभक्तियुक्तःसदाशुचिः ॥ १३ ॥ मनसांपूजयामासतुष्टावपरमादरं ॥ दत्वाषोडशोपचारंब
लिचतत्प्रियंतदा ॥ १४ ॥ प्रददौपरितुष्टश्चब्रह्मविष्णुशिवाज्ञया ॥ संपूज्यमनसांदेवींप्रययुःस्वालयंचते
॥ १५ ॥ इत्येवंकथितंसर्वकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥ नारदउवाच ॥ केनस्तोत्रेणतुष्टावमहेन्द्रोमनसांसतीं
॥ १६ ॥ पूजाविधिक्रमंतस्याःश्रोतुमिच्छामितत्वतः ॥ नारायणउवाच ॥ सुस्नातःशुचिराचांतोधृत्वाधौतेच
वाससी ॥ १७ ॥ रत्नसिंहासनेदेवींवासयामासभक्तिः ॥ स्वर्गंगायाजलेनैवरत्नकुंभस्थितेनच ॥ १८ ॥
स्नापयामासमनसांमहेन्द्रेवेदमंत्रतः ॥ वाससीवासयामासवन्दिशुद्धेमनोहरे ॥ १९ ॥ सर्वांगेचंदनंकृत्वापा
दार्घ्यंभक्तिसंयुतः ॥ गणेशंचदिनेशंचवर्हिंविष्णुंशिवांशिवां ॥ २० ॥ संपूज्यादौदेवषट्कंपूजयामासतांसतीं ॥
ॐ ह्रीं श्रीं मनसादेव्यै स्वाहेत्येवंचमंत्रतः ॥ १२१ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥

प्रणवमायाश्रीबीजाद्योमनसादेव्यै स्वाहेत्यंतोमंत्रः ॥ १२१ ॥

॥ १२ ॥

॥ १३ ॥

॥ १४ ॥

दे.भा.न.

दशाक्षरेणमूलमंत्रेण ॥ १२२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ नचशक्तइति तेनतवोत्तमस्वभावेनत्वांत्यक्तुंमुनिर्जरत्कारुणं

१३९

दशाक्षरेणमूलेनददौसर्वयथोचितं ॥ दत्वाषोडशोपचारान्दुर्लभान्देवनायकः ॥ १२२ ॥ पूजयामासभक्त्याच
विष्णुनाप्रेरितोमुदा ॥ वाद्यंनानाप्रकारंचवादयामासतत्रवै ॥ २३ ॥ बभूवपुष्पवृष्टिश्चनभसोमनसोपरि ॥
देवप्रियाज्ञयातत्रब्रह्मविष्णुशिवाज्ञया ॥ २४ ॥ तुष्टावसाश्रुनेत्रश्चपुलकांकितविग्रहः ॥ पुरंदरउवाच ॥ देवि
त्वांस्तोतुमिच्छामिसाध्वीनांप्रवरांवरां ॥ २५ ॥ परात्परांचपरमांनहिस्तोतुंक्षमोऽधुना ॥ स्तोत्राणांलक्षणं
वेदेस्वभावाख्यानतत्परं ॥ २६ ॥ नक्षमःप्रकृतेवक्तुंगुणानांगणनांतव ॥ शुद्धसत्त्वस्वरूपात्वंकोपहिंसावि
वर्जिता ॥ १२७ ॥ नचशक्तोमुनिस्तेनत्यक्तुंयाच्चाकृतायतः ॥ त्वंमयापूजितासाध्वीजननीमेयथादितिः
॥ १२८ ॥ दयारूपाचभगिनीक्षमारूपायथाप्रसूः ॥ त्वयामेरक्षिताःप्राणाःपुत्रदाराःसुरेश्वरि ॥ १२९ ॥
अहंकरोमित्वत्पूजांप्रीतिश्चवर्द्धतांसदा ॥ नित्यायद्यपिपूज्यात्वंसर्वत्रजगदंबिके ॥ १३० ॥ तथापितवपूजांच
वर्द्धयामिसुरेश्वरि ॥ येत्वामाषाढसंक्रांत्यांपूजयिष्यंतिभक्तितः ॥ १३१ ॥ पंचम्यांमनसाख्यायांमासांतेवा
दिनेदिने ॥ पुत्रपौत्रादयस्तेषांवर्द्धतेचधनानिवै ॥ १३२ ॥ यशस्विनःकीर्तिमंतोविद्यावंतोऽगुणान्विताः ॥
येत्वानपूजयिष्यंतिनिंदंत्यज्ञानतोजनाः ॥ १३३ ॥ लक्ष्मीहीनाभविष्यंतितेषांनागभयंसदा ॥ त्वंस्वयंसर्व
लक्ष्मीश्चवैकुण्ठेकमलालया ॥ १३४ ॥ ॥ ध ॥ ॥ ध ॥ ॥ ध ॥ ॥ ध ॥

शक्तोयतोगमनायत्वांप्रतियाच्चांकृतवांस्तस्मात्त्वमुत्तमगुणासीतिभावः ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ पंचम्यांमनसाख्यायामिति
मनसेत्याख्यायस्याःसापंचमीनागपंचमीत्यर्थः ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ १३४ ॥ ॥ ध ॥ ॥ ध ॥ ॥ ध ॥ ॥ ध ॥

टी.अ.

४८

१३९

॥१३५॥३६॥३७॥३८॥३९॥४०॥४१॥४२॥४३॥४४॥१४५॥ इति श्रीदेवीभा०ति०नवमस्कंधेष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४८ ॥

नारायणांशोभगवान्जरत्कारुर्मुनीश्वरः ॥ तपसातेजसात्वांचमनसाससृजेपिता ॥ १३५ ॥ अस्माकं रक्षणा
यैव तेन त्वं मनसाभिधा ॥ मनसादेविशक्त्या त्वं स्वात्मना सिद्धयोगिनी ॥ ३६ ॥ तेन त्वं मनसा देवी पूजिता वंदि
ता भव ॥ ये भक्त्या मनसा देवाः पूजयंत्यनिशंभृशं ॥ ३७ ॥ तेन त्वां मनसा देवीं प्रवदंति मनीषिणः ॥ सत्यस्वरूप
पादेवित्वं शश्वत्सत्यनिषेवणात् ॥ ३८ ॥ यो हित्वां भावयेन्नित्यं सत्त्वां प्राप्नोति तत्परः ॥ इन्द्रश्च मनसांस्तु त्वा गृही
त्वा भगिनीवरं ॥ ३९ ॥ प्रजगाम स्वभवनं भूषया सपरिच्छदं ॥ पुत्रेण सार्द्धं सा देवी चिरंतस्थौ पितुर्गृहे ॥ ४० ॥
धातृभिः पूजिता शश्वन्मान्या वंद्या च सर्वतः ॥ गोलोकात् सुरभिर्ब्रह्मन्तत्रागत्य सुपूजितां ॥ ४१ ॥ तां स्नापयि
त्वा क्षीरेण पूजयामास सादरं ॥ ज्ञानं च कथयामास गोप्यं सर्वं सुदुर्लभम् ॥ ४२ ॥ तया देवैः पूजिता सा स्वर्लोके च
पुनर्ययौ ॥ इन्द्रस्तोत्रं पुण्यबीजं मनसां पूजयेत्पठेत् ॥ ४३ ॥ तस्य नागभयं नास्ति तस्य वंशोद्भवस्य च ॥ विषं भ
वेत्सुधा तुल्यं सिद्धस्तोत्रो यदा भवेत् ॥ ४४ ॥ पंचलक्ष जपेनैव सिद्धस्तोत्रो भवेन्नरः ॥ सर्पशायी भवेत्सोऽपि नि
श्चितं सर्पवाहनः ॥ ४५ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे नवमस्कंधेष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४८ ॥ नारद उवा
च ॥ कावासासुरभिर्देवी गोलोकादागता च या ॥ तज्जन्मचरितं ब्रह्मन् श्रोतुमिच्छामि यत्नतः ॥ १ ॥ नारायण
उवाच ॥ गवामधिष्ठातृदेवी गवामाद्या गवां प्रसूः ॥ गवां प्रधाना सुरभिर्गोलोके सा समुद्रवा ॥ २ ॥ सर्वादि सृष्टे
श्चरितं कथयामि निशमय ॥ बभूव तेन तज्जन्मपुरा वृंदावने वने ॥ ३ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥

त्रयस्त्रिंशन्महापदैः सुरभ्याख्यानमुच्यते ॥ गावो यस्याः समुद्रताया च गोनायिका स्मृता ॥ १ ॥ पूर्वाध्याये सुरभ्यामहिमानं श्रुत्वा पृच्छति
काकसोति ॥ १ ॥ समुद्रेत्यशं आद्यं ब्रतं समुद्रेत्यर्थः ॥ २ ॥ सर्वादि सृष्टेरिति सर्वगवामादावुत्पन्नाया इत्यर्थः ॥ ३ ॥

दे.भा.न

१४०

॥ ४ ॥ ५ ॥ मनोरथोयथेष्टेच्छातद्रूपस्तस्याः सुरभ्यामनोरथोवत्सः ॥ ६ ॥ ७ ॥ भांडविस्त्रंसनेनहस्ताद्वांडस्यपतनेन ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥

एकदाराधिकानाथोराधयासहकौतुकी ॥ गोपांगनापरिवृतोपुण्यंवृंदावनंययौ ॥ ४ ॥ सहसातत्ररहसिविजहा
रसकौतुकात् ॥ बभूवक्षीरपानेच्छातस्यस्वेच्छामयस्यच ॥ ५ ॥ ससृजेसुरभिर्देवीलीलयावामपार्श्वतः ॥ वत्स
युक्तांदुग्धवर्तीवत्सोनाममनोरथः ॥ ६ ॥ दृष्ट्वासवत्सांश्रीदामानवभांडेदुदोहच ॥ क्षीरं सुधातिरिक्तंचजन्ममृत्यु
जराहरं ॥ ७ ॥ तदुत्थंचपयःस्वादुपपौगोपीपतिःस्वयं ॥ सरोवभूवपयसांभांडविस्त्रंसनेनच ॥ ८ ॥ दीर्घंच
विस्तृतंचैवपरितःशतयोजनं ॥ गोलोकेयंप्रसिद्धश्चसोपिक्षीरसरोवरः ॥ ९ ॥ गोपिकानांचराधायाःक्रीडावा
पीबभूवसा ॥ रत्नेंद्ररचितापूर्णभूताचापीश्वरेच्छया ॥ १० ॥ बभूवकामधेनूनांसहसालक्षकोटयः ॥ यावंत
स्तत्रगोपाश्चसुरभ्यालोमकूपतः ॥ ११ ॥ तासांपुत्राश्चबहवःसंबभूवुरसंख्यकाः ॥ कथिताचगवांसृष्टिस्तया
चपूजितंजगत् ॥ १२ ॥ पूजांचकारभगवान्सुरभ्याश्चपुरामुने ॥ ततोबभूवतत्पूजात्रिषुलोकेषुदुर्लभा ॥ १३ ॥
दीपान्वितापरदिनेश्रीकृष्णस्याज्ञयाहरेः ॥ बभूवसुरभिःपूज्याधर्मवक्त्रादिदंश्रुतं ॥ १४ ॥ ध्यानंस्तोत्रंमूल
मंत्रंयद्यत्पूजाविधिक्रमं ॥ वेदोक्तंचमहाभागनिबोधकथयामिते ॥ १५ ॥ ॐसुरभ्यैनमइतिमंत्रस्तस्याःषडक्ष
रः ॥ सिद्धोलक्षजपेनैवभक्तानांकल्पपादयः ॥ १६ ॥ ध्यानंयजुर्वेदगीतंतस्याःपूजाचसर्वतः ॥ ऋद्धिदावृद्धिदा
चैवमुक्तिदासर्वकामदा ॥ १७ ॥ लक्ष्मीस्वरूपांपरमाराधांसहचरींपरां ॥ गवामधिष्ठातृदेवींगवामाद्यांगवां
प्रसूं ॥ १८ ॥ पवित्ररूपांपूतांचभक्तानांसर्वकामदां ॥ ययापूतंसर्वविश्वंतांदेवींसुरभिंभजे ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥

यावंतोगोलोकेगोपाःसंतितेषांगृहेएकैकाकामधेनुर्भवात्वितीच्छयाबभूवेत्यर्थः ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ दीपान्वितेति दीपान्विताआश्विनकृ
ष्णामावास्यातस्याःपरदिनेइत्यर्थः ॥ १४ ॥ १५ ॥ प्रणवादिर्मंत्रः ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥

टी.अ.
४९

१४०

गवांबंधनस्तंभेह्यर्थः ॥ २० ॥ २१ ॥ बाराहेकलोचितिताश्चितायुक्ताः ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥
 ॥ २८ ॥ २९ ॥ सुरस्यसुरसमूहस्य ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ इति श्रीदेवीभागवतातिलकेनवमस्कंधेएकोनपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥
 घटेवाधेनुशिरसिबंधस्तंभेगवामपि ॥ शालग्रामेजलाग्नौवासुरभिंपूजयेद्विजः ॥ २० ॥ दीपान्वितापरदिने
 पूर्वाण्हेभक्तिसंयुतः ॥ यः पूजयेच्चसुरभिंसचपूज्योभवेद्भुवि ॥ २१ ॥ एकदा त्रिषुलोकेषु वाराहेविष्णुमायया ॥
 क्षीरंजहारसुरभिश्चितिताश्चसुरादयः ॥ २२ ॥ ते गत्वा ब्रह्मलोके च ब्रह्माणं तुष्टुवुस्तदा ॥ तदा ज्ञया च सुरभिं
 तुष्टावकाशसासनः ॥ २३ ॥ पुरंदर उवाच ॥ नमो देव्यै महादेव्यै सुरभ्यै च नमोनमः ॥ गवां बीजस्वरूपायै
 नमस्ते जगदंबिके ॥ २४ ॥ नमो राधा प्रियायै च पद्मांशायै नमोनमः ॥ नमः कृष्ण प्रियायै च गवां मात्रे नमोनमः
 ॥ २५ ॥ कल्पवृक्षस्वरूपायै सर्वेषां सततं परे ॥ क्षीरदायै धनदायै बुद्धिदायै नमोनमः ॥ २६ ॥ शुभदायै सुभद्रा
 यै गोप्रदायै नमोनमः ॥ यशोदायै कीर्तिदायै धर्मदायै नमोनमः ॥ २७ ॥ स्तोत्रश्रवणमात्रेण तुष्टा हृष्टा जगत्प्रसूः ॥
 आविर्बभूव तत्रैव ब्रह्मलोके सनातनी ॥ २८ ॥ महेंद्राय वरं दत्त्वा वाञ्छितं चापि दुर्लभं ॥ जगाम सा च गोलोकं ययुर्दे
 वादयो गृहं ॥ २९ ॥ बभूव विश्वं सहसा दुग्धपूर्णं च नारद ॥ दुग्धं घृतं ततो यज्ञस्ततः प्रीतिः सुरस्य च ॥ ३० ॥ इदं
 स्तोत्रं महापुण्यं भक्तियुक्तश्रवणं पठेत् ॥ स गोमान् धनवांश्चैव कीर्तिमान् पुत्रवांस्तथा ॥ ३१ ॥ स रुनातः सर्वती
 र्थेषु सर्वयज्ञेषु दीक्षितः ॥ इह लोके सुखं भुक्त्वा यात्यंते कृष्णमंदिरे ॥ ३२ ॥ सुचिरं निवसेत्तत्र करोति कृष्णसेवनं ॥
 न पुनर्भवन्तत्र ब्रह्मपुत्रो भवेत्ततः ॥ ३३ ॥ इति श्रीदेवीभा ० म ० नवमस्कंधे एकोनपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ४९ ॥
 नारद उ ० श्रुतं सर्वमुपाख्यानं प्रकृतीनां यथा तथं ॥ यच्छ्रुत्वामुच्यते जंतुर्जन्मसंसारबंधनात् ॥ १ ॥ ॥ ४९ ॥
 यः ॥ ४९ ॥ राधायाश्चैव दुर्गाया विधानं सकलार्थदं ॥ समासतः प्रोच्यते त्रिशतश्लोकैरतः परं ॥ १ ॥ अत्र नवमस्कंधे तृतीयाध्याये दुर्गा
 याश्चैव राधाया विस्तीर्णं चरितं महत् तद्वत्पश्चात्प्रवक्ष्यामि संक्षेपक्रमतः शृण्वन्मुक्तं तत्पृच्छति नारदः श्रुतं सर्वमिति ॥ १ ॥ ॥ ७ ॥

॥ २ ॥ महिमातुतयोर्वर्णितएवेतिनसपृच्छयतइत्याह महिमेति परयोराधादुर्गयोस्तंमहिमानं ॥ ३ ॥ ययोराधादुर्गयोःजगत्सर्वपूर्वोत्तरी
त्यांशोभवतीत्यर्थः विधानंमंत्रानुष्ठानप्रकाररूपं ॥ ४ ॥ ५ ॥ मूलप्रकृतिरूपिण्याःपरसंविदोभुवनेश्वर्याःसकाशाब्जगदुद्वेसतिसमाष्टिव्य
ष्टिप्राणानामधिदैवतराधाशक्तिरूपंतथासमष्टिव्यष्टिबुद्धीनामधिदैवतंदुर्गा रूपमितिशाक्तियुग्मंप्रादुर्भूतमितिपूर्वकथास्मारिता ॥ ६ ॥ ७ ॥

अधुनाश्रोतुमिच्छामिरहस्यंवेदगोपितं ॥ राधायाश्चैवदुर्गायाविधानंश्रुतिचोदितं ॥ २ ॥ महिमावर्णितोतीव
भवतापरयोर्द्वयोः ॥ श्रुत्वातंतद्गतंवेतो नकस्यस्यान्मुनीश्वर ॥ ३ ॥ ययोरंशोजगत्सर्वयन्त्रियम्यंचराचरं ॥
ययोर्भक्त्याभवेन्मुक्तिस्तद्विधानंवदाधुना ॥ ४ ॥ नारायणउवाच ॥ शृणुनारदवक्ष्यामिरहस्यंश्रुतिनोदितं ॥
यन्नकस्यापिचारुयातंसारात्सारंपरात्परं ॥ ५ ॥ श्रुत्वापरस्मैनोवाच्यंयतोतीवरहस्यकं ॥ मूलप्रकृतिरूपि
ण्याःसंविदोजगदुद्वे ॥ ६ ॥ प्रादुर्भूतंशक्तियुग्मंप्राणबुद्ध्यधिदैवतं ॥ जीवानांचैवसर्वेषांनियंतृप्रेरकंसदा
॥ ७ ॥ तदधीनंजगत्सर्वविराडादिचराचरं ॥ यावत्तयोःप्रसादोनतावन्मोक्षोहिबुर्लभः ॥ ८ ॥ ततस्तयोःप्र
सादार्थंनित्यंसेवेततद्वयं ॥ तत्रादौराधिकामंत्रंशृणुनारदभक्तितः ॥ ९ ॥ ब्रह्मविष्णवादिभिर्नित्यंसेवितोयंप
रात्परः ॥ श्रीराधेतिचतुर्थ्यंतवन्हेर्जायाततःपरं ॥ १० ॥ षडक्षरोमहामंत्रोधर्माद्यर्थप्रकाशकः ॥ मायाबीजादि
कश्चायंवांछार्चितामणिस्मृतः ॥ ११ ॥ वक्रकोटिसहस्रैस्तुजिह्वाकोटिशतैरपि ॥ एतन्मंत्रस्यमाहात्म्यंवर्णितुं
नैवशक्यते ॥ १२ ॥ जग्राहप्रथमंमंत्रंश्रीकृष्णोभक्तितत्परः ॥ उपदेशान्मूलदेव्यागोलेकेरासमंडले ॥ १३ ॥

यतएतच्छक्तियुग्मंप्राणबुद्ध्यधिदैवततःसर्वनियंतृभवतीत्याह तदधीनमिति मोक्षोहीति बुद्धिप्राणसंयमनाधीनोहियोगविचारौतदधी
नस्तुमोक्षस्तथाचबुद्धिप्राणाधिदेवताप्रसादमंतरासदुर्लभएवेत्यर्थः ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ एतस्यमंत्रस्यादौमायाबीजंदत्तामंत्रोजतव्यइत्या
ह मायाबीजेति हींश्रीराधायैस्वाहोत्रिमंत्रः ॥ ११ ॥ १२ ॥ कृष्णयाक्वाशवाचामूलदेव्यैवोपदेशःकृतइत्याह उपदेशादिति ॥ १३ ॥

तेनेत्यत्रोपदिष्टइत्यस्यानुवृत्तिः ॥ १४ ॥ अहमिति नारायणोक्तिः ॥ १५ ॥ राधामंत्रोपसनेया आवश्यकत्वमाह कृष्णार्चायापूजाया
मित्यर्थः ॥ १६ ॥ १७ ॥ राधापदव्युत्पत्तिमाह राधेतीति साधयतीत्यर्थः अत्रोक्तानामिति दुर्गमंत्रव्यतिरिक्तायेस्मिन्नवमस्कंधेमं

विष्णुस्तेनोपदिष्टस्तुतेनब्रह्माविराट् तथा ॥ तेनधर्मस्तेनचाहमित्येषाहिपरंपरा ॥ १४ ॥ अहंजपामितंमं
त्रंतेनाहमृषिरीरितः ॥ ब्रह्माद्याःसकलादेवानित्यंध्यायंतितांमुदा ॥ १५ ॥ कृष्णार्चायांनाधिकारोयतोराधा
र्चनंविना ॥ वैष्णवैःसकलैस्तस्मात्कर्तव्यंराधिकार्चनं ॥ १६ ॥ कृष्णप्राणाधिदेवीसातदधीनोविभुर्यतः ॥
रासेश्वरीतस्यनित्यंतयाहीनोनतिष्ठति ॥ १७ ॥ राधोतिसकलान्कामांस्तस्माद्राधेति कीर्तिता ॥ अत्रोक्तानां
मनूनांचक्रुषिरस्म्यहमेवच ॥ १८ ॥ छंदश्चदेवीगायत्रीदेवतात्रचराधिका ॥ तारोबीजंशक्तिबीजंशक्तिस्तुप
रिकीर्तिता ॥ १९ ॥ मूलावृत्याषडंगानिकर्तव्यानीतरत्रच ॥ अथध्यायेन्महादेवींराधिकांरासनायिकं
॥ २० ॥ पूर्वोक्तरीत्यातुमुनेसामवेदेविगीतया ॥ श्वेतचंकवर्णाभांशरदिंदुसमाननां ॥ २१ ॥ कोटिचंद्रप्रतीका
शांशरदंभोजलोचनां ॥ बिंबाधरांपृथुश्रोणीकांचीयुतनितंविनीं ॥ २२ ॥ कुंदपंकिसमानाभदंतपंकिविराजि
तां ॥ क्षौमांबरपरीधानांवह्निशुद्धांशुकान्वितां ॥ २३ ॥ ईषत्थास्यप्रसन्नास्यांकरिकुंभयुगस्तनीं ॥ सदाद्वा
दशवर्षीयांरत्नभूषणभूषिता ॥ २४ ॥ शृंगारसिंधुलहरीभक्तानुग्रहकातरां ॥ मल्लिकामालतीमालकेशपाश
विराजितां ॥ २५ ॥ सुकुमारांगलतिकांरासमंडलमध्यगां ॥ वराभयकरांशांतांशश्वत्सुस्थिरयौवनां ॥ २६ ॥

त्राउक्तास्तेषांसर्वेषामहमेवनारायणख्योऽप्यपिरित्यर्थः ॥ १८ ॥ अत्रचराधिकेति अत्रैवराधामंत्रेराधादेवताअन्यमंत्रेषुतुयायादेवताउक्ता
सैवग्राह्येत्यर्थः तारोबीजमिति सर्वमंत्रेषुनारायणऋषिः देवीगायत्रीछंदः प्रणवोबीजं भुवनेश्वरीशक्तिरित्यर्थः ॥ १९ ॥ सर्वमंत्रेषुषडंगमा
ह मूलावृत्येतिमूलमंत्रस्यषड्वारमावृत्याषडंगइत्यर्थः ॥ २० ॥ विगीतयाकथितयारीत्येत्यर्थः ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥

दे.भा.न.

१४२

॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ तत्रैवयंत्रेणैवस्नानशालांतांभावयित्वातस्यांशालायांनयेदित्यर्थः ॥ ३१ ॥ वाससीप्रथमंदत्वाततोना
नालंकारान्दत्वाचंदनंदद्यादित्यर्थः ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ततोष्टदलेषुदेव्यग्रस्थितपत्रमारभ्यदक्षिणावर्तक्रमेणमालावत्याद्यष्टशक्तिः

रत्नसिंहासनासीनांगोपीमंडलनायिकां ॥ कृष्णप्राणाधिकांवेदबोधितांपरमेश्वरीं ॥ २७ ॥ एवंध्यात्वाततो
बाह्येशालग्रामेघटेथवा ॥ यंत्रेवाष्टदलेदेवीपूजयेत्तुविधानतः ॥ २८ ॥ आवाह्यदेवीतत्पश्चादासनादिप्रदीय
तां ॥ मूलमंत्रं समुच्चार्यचासनादीनिकल्पयेत् ॥ २९ ॥ पाद्यंतुपादयोर्दद्यान्मस्तकेर्ध्वसमीरितं ॥ मुखेत्वाच
मनीयंस्यान्निवारंमूलविद्यया ॥ ३० ॥ मधुपर्कततोदद्यादेकां गां चपयस्विनीं ॥ ततो नयेत्स्नानशालांतांचत
त्रैवभावयेत् ॥ ३१ ॥ अभ्यंगंदिस्नानविधिंकल्पयित्वाथवाससीं ॥ ततश्चचंदनंदद्यान्नालंकारपूर्वकं ॥ ३२ ॥
पुष्पमालाबहुविधास्तुलसीमंजरीयुताः ॥ पारिजतप्रसूनानिशतपत्रादिकानिच ॥ ३३ ॥ ततःकुर्यात्पवित्रं
तत्परिवारार्चनंविभोः ॥ अग्नीशासुरवायव्यमध्येदिक्ष्वंगपूजनं ॥ ३४ ॥ कृत्वापश्चादष्टदलेदक्षिणावर्ततोग्रतः ॥
मालावतीमग्रदलेवन्हिकोणेचमाधवीं ॥ ३५ ॥ रत्नमालांदक्षिणेचनैर्ऋत्येतुसुशीलकां ॥ पश्चाद्वलेशशिक
लांपूजयेन्मतिमान्नरः ॥ ३६ ॥ मारुतेपारिजातांचाप्युत्तरेचपरावतीं ॥ ईशानकोणेसंपूज्यासुंदरीप्रियकारि
णी ॥ ३७ ॥ ब्राह्म्यादयस्तुतद्बाह्येप्याशापालांस्तुभूपरे ॥ वज्रादिकान्यायुधानिदेवीमित्थंप्रपूजयेत् ॥ ३८ ॥
ततोदेवींसावरणांगंधाद्यैरुपचारकैः ॥ राजोपचारसहितैःपूजयेन्मतिमान्नरः ॥ ३९ ॥ ततस्तुवीतदेवेशींस्तो
त्रैर्नामसहस्रकैः ॥ सहस्रसंख्यंचजपंनित्यंकुर्यात्प्रयत्नतः ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥

पूजयेदित्यर्थः वन्हिकोणेइति नात्रवन्हिकोणःप्रसिद्धोऽग्राह्यःप्रादाक्षिण्येत्यनेनविरोधापत्तेः किंतुपूज्यपूजकयोर्मध्येप्राचीत्यनेनोक्तक्रमेणैवेति
बोध्यं ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥

टी.अ.
५०

१४२

॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ आत्रोक्तानां सर्वमंत्राणामित्यर्थः ॥ ४४ ॥ त्रिस्वादुसंयुक्तैः पद्मो मधुघृतं चेतिसमन्निमधुरं स्मृतमिति वचनोक्तैः
य एवं पूजयेद्देवीं राधां रासेश्वरीं परां ॥ स भवेद्विष्णुतुल्यस्तु गोलोकं याति संततं ॥ ४१ ॥ यः कार्तिक्यां पौर्णमा
यां राधाजन्मोत्सवं बुधः ॥ कुरुते तस्य सान्निध्यं दद्याद्रासेश्वरीं परां ॥ ४२ ॥ केनचित्कारणेनैव राधा वृंदावनेव
ने ॥ वृषभानुसुता जाता गोलोकस्थायिनी सदा ॥ ४३ ॥ अत्रोक्तानां तु मंत्राणां वर्णसंख्याविधानतः ॥ पुरश्च
रणकर्म्मोक्तं दशांशं होममाचरेत् ॥ ४४ ॥ तिलैस्त्रिस्वादुसंयुक्तैर्जुहुयाद्भक्तिभावतः ॥ नारद उवाच ॥ स्तोत्रं व
दमुने सम्यक् येन देवी प्रसीदति ॥ ४५ ॥ नारायण उवाच ॥ नमस्ते परमेशानिरासमंडलवासिनि ॥ रासेश्व
री नमस्ते स्तुकृष्णप्राणाधिकप्रिये ॥ ४६ ॥ नमस्त्रैलोक्यजननि प्रसीद करुणार्णवे ॥ ब्रह्मविष्णवादिभिर्देवैर्व
द्यमानपदांबुजे ॥ ४७ ॥ नमः सरस्वतीरूपे नमः सावित्रीशंकरि ॥ गंगापद्मावतीरूपेष्वष्टिमंगलचंडिके ॥ ४८ ॥
मनसे तुलसीरूपे नमो लक्ष्मीस्वरूपिणि ॥ नमो दुर्गे भगवति नमस्ते सर्वरूपिणि ॥ ४९ ॥ मूलप्रकृतिरूपां
त्वां भजामः करुणार्णवां ॥ संसारसागरादस्मानुद्धरां वदयां कुरु ॥ ५० ॥ इदं स्तोत्रं त्रिसध्यं यः पठेद्राधां स्मर
न्नरः ॥ न तस्य दुर्लभं किंचित्कदाचिच्च भविष्यति ॥ ५१ ॥ देहांते च वसेन्नित्यं गोलोके रासमंडले ॥ इदं रहस्यं परमं
न चाख्येयं तु कस्यचित् ॥ ५२ ॥ अधुना शृणु विप्रेन्द्र दुर्गादेव्या विधानकं ॥ यस्याः स्मरणमात्रेण पलायंते महाप
दः ॥ ५३ ॥ एनां न भजते यो हि तादृक्नास्त्येव कुत्रचित् ॥ सर्वोपास्या सर्वमाता शैवी शक्तिर्महाद्भुता ॥ ५४ ॥
सर्वबुद्ध्यधिदेवी यमंत र्यामि स्वरूपिणी ॥ दुर्गसंकटहं त्रीति दुर्गेति प्रथिता भुवि ॥ ५५ ॥ वैष्णवानां च शैवानां
मुपास्येयं च नित्यशः ॥ मूलप्रकृतिरूपा सा सृष्टिस्थित्यंतकारिणी ॥ ५६ ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥

चतुर्धुपयोमिभित्तैस्तिलैर्जुहुयादित्यर्थः ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥

दे.भा.न

१४३

शंभुवनिताभुवनेश्वरीबीजं ॥ ५७ ॥ चामुंडायैविद्येइतिस्वरूपग्रहणं ॥ ५८ ॥ अस्यमंत्रस्यऋषिऋतयंछंदःस्त्रयंदेवतात्रयंबीजत्रयंशक्ति
त्रयंचास्तीत्याह ब्रह्मविष्णुमहेशानाइति ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ स्तनयोरितिबीजत्रयंदक्षिणस्तने शक्तित्रयंवामस्तने ॥ ६२ ॥
चतुर्भिश्चामुंडायैइत्यक्षरचतुष्टयेन द्वाभ्यांविद्येइत्यक्षरद्वयेन सर्वेणसर्वमंत्रेण जातियुक्तानिनमःस्वाहावषट्हुंवीषट्फट्पदयुक्तानीत्यर्थः

तस्यानवाक्षरंमंत्रंवक्ष्येमंत्रोत्तमोत्तमं ॥ वाग्भवंशंभुवनिताकामबीजंततःपरं ॥ ५७ ॥ चामुंडायैपदंपश्चाद्वि
द्येइत्यक्षरद्वयं ॥ नवाक्षरोमनुःप्रोक्तोभजतांकल्पपादयः ॥ ५८ ॥ ब्रह्मविष्णुमहेशानाऋषयोस्यप्रकीर्तिताः ॥
छंदांस्युक्तानिसततंगायत्र्युष्णिगनुष्टुभः ॥ ५९ ॥ महाकालीमहालक्ष्मीःसरस्वत्यपिदेवता ॥ स्याद्रक्तदंति
काबीजंदुर्गाचिध्रामरीतथा ॥ ६० ॥ नंदाशाकंभरीदेव्यौभीमाचशक्तयःस्मृताः ॥ धर्मार्थकामामोक्षेषुविनियोगउ
दाहृतः ॥ ६१ ॥ ऋषिश्छंदोदेवतानिमौलैर्वक्त्रेहृदिन्यसेत् ॥ स्तनयोःशक्तिबीजानिन्यसेत्सर्वार्थसिद्धये ॥ ६२ ॥
बीजत्रयैश्चतुर्भिश्चद्वाभ्यांसर्वेणचैवाहि ॥ षडंगानिमनोःकुर्याज्जातियुक्तानिदेशिकः ॥ ६३ ॥ शिखायांलोचन
द्वंद्वेश्रुतिनासाननेषुच ॥ गुदेन्यसेन्मंत्रवर्णान्सर्वेणव्यापकंचरेत् ॥ ६४ ॥ खड्गचक्रगदाबाणचापानिपरिघंत
था ॥ शूलंभुशुंडींचशिरःशंखंसंदधतीकरैः ॥ ६५ ॥ महाकालींत्रिनयनानानाभूषणभूषितां ॥ नीलांजनसमप्र
रूपांदशपादाननांभजे ॥ ६६ ॥ मधुकैटभनाशार्थ्यांतुष्टावांबुजासनः ॥ एवंध्यावेन्महाकालींकामबीजस्वरू
पिणीं ॥ ६७ ॥ अक्षमालांचपरशुंगदेषुकुलिशानिच ॥ पद्मंधनुष्कुंडिकांचदंडंशक्तिमसितथा ॥ ६८ ॥ ७१ ॥

॥ ६३ ॥ नर्गन्यासमाह शिखायांलोचनेति लोचनद्वयं श्रुतिद्वयं नासाद्वयंचदक्षवामभेदेनसर्वेणसर्वमंत्रेण ॥ ६४ ॥
ध्यानमाह खड्गेति ॥ ६५ ॥ दशपादांदशपनांचेत्यर्थः ॥ ६६ ॥ कामबीजस्वरूपिणींनिवार्णमंत्रांतर्गतकामबीजदेवतारूपिणीमित्यर्थः वा
च्यताचकयोर्भेदात्क्रावनीजस्वरूपत्वं ॥ ६७ ॥ महालक्ष्मीध्यानमाह अक्षमालांचेति ॥ ६८ ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७१ ॥

टी.अ.
५०

१४३

मायात्रीजस्वरूपिणीनवार्णमंत्रांतर्गतमायात्रीजदेवतामित्यर्थः ॥ ६९ ॥ ७० ॥ महासरस्वतीध्यानमाह घंटाशूलेति ॥ ७१ ॥ वाणीबीजस्वरूपिणी नवार्णमंत्रांतर्गतवाग्भवाजीजदेवतेत्यर्थः ॥ ७२ ॥ एतासांदेवतानां ध्यानावशेषस्तु सप्तशतीरहस्यत्रयेस्तितद्व्याख्यानेत्रमयास्यष्टीकृतस्तएवावधार्यः यंत्रमाह यंत्रमस्याइति त्र्यस्रं चिकोणमित्यर्थः ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ जयादिशक्तीति जयायै नमः विजयायै ० अजितायै ०

चर्मबुजंतथाघंटांसुरापात्रंचशूलकं ॥ पाशंसुदर्शनंचैवदधतीमरुणप्रभां ॥ ६९ ॥ रक्तांबुजासनगतांमायाबीजस्वरूपिणीं ॥ महालक्ष्मींभजेदेवंमहिषासुरमर्दिनीं ॥ ७० ॥ घंटाशूलेहलंशंखंमुसलंचसुदर्शनं ॥ धनुर्बाणान्हस्तपद्मेर्दधानांकुंदसन्निभां ॥ ७१ ॥ शुभादिदैत्यसंहर्त्रीवाणीबीजस्वरूपिणीं ॥ महासरस्वतींध्यायेत्सच्चिदानंदविग्रहां ॥ ७२ ॥ यंत्रमस्याःशृणुप्राज्ञत्र्यस्रंषट्कोणसंयुतं ॥ ततोष्टदलपद्मंचचतुर्विंशतिपत्रकं ॥ ७३ ॥ भूगृहेणसमायुक्तंयंत्रमेवंविचितयेत् ॥ शालग्रामेघटेवापियंत्रेवाप्रतिमासुवां ॥ ७४ ॥ बाणेलिंगेथवासूर्येयजेद्देवीमनन्यधीः ॥ जयादिशक्तिसंयुक्तेर्पीठेदेवींप्रपूजयेत् ॥ ७५ ॥ पूर्वकोणेसरस्वत्यासहितंपद्मजंयजेत् ॥ श्रियासहहरितंत्रनैर्ऋतेकोणकेयजेत् ॥ ७६ ॥ पार्वत्यासहितंशंभुंवायुकोणेसमर्चयेत् ॥ देव्याउत्तरतः पूज्यःसिंहोवामेमहासुरं ॥ ७७ ॥ महिषंपूजयेदंतेषट्कोणेषुयजेत्क्रमात् ॥ नंदजांरक्तदंतांचतथाशाकंभरींशिवां ॥ ७८ ॥ दुर्गांभीमांभ्रामरींचततोवसुदलेषु च ॥ ब्राह्मींमाहेश्वरींचैवकौमारींचैष्णवींचतथा ॥ ७९ ॥ ६९ ॥

अपराजितायै ० नित्यायै ० विलासिन्यै ० होम्यै ० अघोरायै ० मंगलायै ० इत्येताः पीठशक्तयेनवमस्कंधोक्तसर्वदेवतानां बोध्याः पीठेनृक्तैश्चास्ति पीठमितिसामान्यपरिभाषोक्तत्वात् ॥ ७५ ॥ आवरणदेवतामाह पूर्वकोणेइति देव्यग्रकोणेइत्यर्थः सरस्वतीसहितायत्राक्षणेनमः इतिप्रयोगः एवमन्यत्रबोध्यं ॥ ७६ ॥ उत्तरतोदक्षिणदेशे वामेवामभागे तदुक्तं वामभागेगतेदेव्यांश्छिन्नशार्पमहासुरं पूजयेन्महिषं येनप्राप्तंसायुज्यमीक्षयेति ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ वसुदलेषुषट्कोणेषु ॥ ७९ ॥

॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥

दे.भा.न

१४४

तत्त्वपत्रेषु चतुर्विंशतिपत्रेषु पूर्वतो देव्यग्रपत्रमारभ्य ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ तद्वाद्ये भूपुरे ॥ ८४ ॥ मंत्रार्थपूर्वकमिति अयं
मंत्रमंत्रार्थः मंत्रे बीजत्रयक्रमेण महासरस्वतीमहालक्ष्मीमहाकालीनां वाचकं विच्छेद इत्यत्रापि वित्तु च इति पदत्रयक्रमेण चित्सदानंदानां वाचकं तच्च
संबोधनांतं बीजत्रयस्य क्रमेण विशेषणं चामुंडापदं ब्रह्मविद्यावाचकं तादर्थ्ये चतुर्थी अनुसंदंभहे इति शेषः तथा चायमर्थः हे चिद्रूपिणि महा
सरस्वति हे सद्रूपिणि महालक्ष्मीः हे आनंदरूपिणि महाकालित्वां चामुंडायै ब्रह्मविद्याप्राप्त्यर्थं मनुसंदंभहे ध्यायाम इत्यर्थः तदयं संग्रहः महासरस्वति

वाराही नारासिंहीं च ऐं द्रीं चामुंडकांतथा ॥ पूजयेच्च ततः पश्चात्तत्त्वपत्रेषु पूर्वतः ॥ ८० ॥ विष्णुमायाचेतनाचबुद्धिर्नि
द्राक्षुधा तथा ॥ छायाशक्तिः परातृष्णाक्षांतिर्जातिश्चलजया ॥ ८१ ॥ शांतिः श्रद्धा कीर्तिलक्ष्म्यौ धृतिर्वृत्तिः श्रुतिः
स्मृतिः ॥ दया तुष्टिस्ततः पुष्टिर्माता भ्रातिरितिक्रमात् ॥ ८२ ॥ ततो भूपुरकोणेषु गणेशं क्षेत्रपालकं ॥ बटुकं यो
गिनीश्वरपि पूजयेन्मतिमान्नरः ॥ ८३ ॥ इंद्राद्यानपि तद्वाह्ये वज्राद्यायुधसंयुतान् ॥ पूजयेदनयारीत्या देवीं सा
वरणांततः ॥ ८४ ॥ राजोपचारान्विविधान्दद्यादंबाप्रतुष्टये ॥ ततो जपेन्नवार्णचमंत्रं मंत्रार्थपूर्वकं ॥ ८५ ॥ ततः
सप्तशतीस्तोत्रं देव्या अग्रे तु संपठेत् ॥ नानेन सदृशं स्तोत्रं विद्यते भुवनत्रये ॥ ८६ ॥ ततश्चानेन देवेशीं तोषयेत्प्र
त्यहं नरः ॥ धर्मार्थकाममोक्षाणामालयं जायते नरः ॥ ८७ ॥ इति ते कथितं विप्रश्रीदुर्गाया विधानकं ॥ कृतार्थता
येन भवेत्तदेतत्कथितं तव ॥ ८८ ॥ सर्वे देवा हरि ब्रह्म प्रमुखामनवस्तथा ॥ मुनयो ज्ञाननिष्ठाश्च योगिनश्चाश्रमा
स्तथा ॥ ८९ ॥ लक्ष्म्यादयस्तथा देव्यः सर्वे ध्यायंति तां शिवां ॥ तदैव जन्मसाफल्यं दुर्गास्मरणमस्ति चेत् ॥ ९० ॥

चित्ते महालक्ष्मीः सदात्मिके महाकाल्यानंदरूपे त्वत्त्वज्ञानासिद्धये अनुसंदंभहे देवि वयं त्वां हृदयां बुजे इति अयं चार्थः सप्तशती गुप्तवती टीकायां पद
व्युत्पत्तिप्रदर्शनपूर्वकं भास्कररायैः प्रदर्शितस्तत्त एवावधार्यः ॥ ८५ ॥ सप्तशतीस्तोत्रं मार्कंडेयपुराणे प्रसिद्धं ॥ ८६ ॥ अस्य मंत्रस्य चतुर्ल
क्षं पुरश्चरणं पायसान्नेन दशांशहोमः तदुक्तं कात्यायनातित्रेजपेक्षतुर्लक्षमेनं पायसान्नेन होमयेदिति ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ अस्य मंत्रस्य सर्वा
राध्यत्वमाह सर्वे देवा इति ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

टी.अ.

५०

१४४

॥९१॥ उपसंहरति तदेतदिति ॥९२॥ ग्रंथश्रवणफलमाह श्रुत्वैतदिति ॥ ९३॥९४॥९५॥ नित्यं पाठनवमस्कंधस्य विधत्ते नित्यमेकैक
मिति ॥ ९६॥ अस्मिन् ग्रंथेन वमस्कंधात्मके कार्यार्थकतं व्यांशकुनपरीक्षां विधत्ते शकुनांश्चेति तद्विधिमाह कुमारीति ॥९७॥९८॥ तथा

चतुर्दशापि मनवो ध्यात्वा चरणपंकजं ॥ मनुत्वं प्राप्तवं तश्च देवाः स्वं स्वं पदं तथा ॥ ९१ ॥ तदेतत्सर्वमाख्यातं
रहस्यातिरहस्यकं ॥ प्रकृतीनां पंचकस्य तदंशानां च वर्णनं ॥ ९२ ॥ श्रुत्वैतन्मनुजो नित्यं पुरुषार्थचतुष्टयं ॥
लभते नात्र संदेहः सत्यं सत्यं मयोदितं ॥ ९३ ॥ अपुत्रो लभते पुत्रं विद्यार्थी प्राप्नुयाच्च तां ॥ यं यं कामं स्मरेद्वापितं
तं श्रुत्वा समाप्नुयात् ॥ ९४ ॥ नवरात्रे पठेदेतद्देव्यग्रे तु समाहितः ॥ परितुष्टा जगद्वात्री भवत्येव हि निश्चितं ॥
॥९५॥ नित्यमेकैकमध्यायं पठेद्यः प्रत्यहं नरः ॥ तस्य वश्या भवेद्देवी देवी प्रियकरो हि सः ॥९६॥ शकुनांश्च परी
क्षेत नित्यमस्मिन् यथाविधि ॥ कुमारीं दिव्यहस्तेन यद्वा बटुकरां बुजात् ॥९७॥ मनोरथं तु संकल्प्य पुस्तकं पूज
येत्ततः ॥ देवीं च जगदीशानीं प्रणमेच्च पुनः पुनः ॥ ९८ ॥ सुस्नातां कन्यकां तत्रानीयाभ्यर्च्य यथाविधि ॥ शला
कारोपयेन्मध्ये तथा स्वर्णेन निर्मेतां ॥ ९९ ॥ शुभं वाप्यशुभं तत्र यदायाति च तद्भवेत् ॥ उदासीनेऽप्युदासीनं
कार्यं भवति निश्चितं ॥ १०० ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे नवमस्कंधे पंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५० ॥

कुमार्या ॥९९॥१००॥ श्रीमच्छैवकुलोत्पन्नारंगनाथात्मजः सुधीः ॥ श्रीलक्ष्मीगर्भसंभूतो निलंकंठोऽभिधानतः ॥ देवीभागवतस्यास्य व्याख्या
नरहितस्य च ॥ व्याख्यायः कृतवान् सम्यक् तिलकाख्यां महत्तरां ॥ नवमस्कंधस्तस्याः समाप्तो भूच्छुभार्थदः ॥ तेन तुष्यतु सा देवी पंचप्रकृतेरुपि
णी ॥ इति श्रीशैवकुलोत्पन्नारंगनाथात्मजलक्ष्मीगर्भसंभवनीलंकंठकृते देवीभागवतव्याख्याने तिलकाभिधाने नवमस्कंधे पंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५० ॥

॥ इति श्रीमद्देवीभागवतनवमस्कंधः समाप्तः ॥

॥ अथ श्रीमद्देवीभागवतदशमस्कंधप्रारंभः ॥

दे.भा.द.

श्रीगणेशायनमः देवेन्द्रमैलिमंदारमकरंदकणारुणौ ॥ अरुणाचरणौवंदेकरुणावरुणालयौ ॥ १ ॥ चतुर्विंशतिभिःपद्मैर्मनोःस्वायंभुवस्यच ॥ आ
ख्यानंवर्यतेसम्यग्यत्रदेव्याःकथानकं ॥ १ ॥ तत्राष्टमस्कंधादौजनमेजयेनराज्ञाभगवत्याविराट्ःवरुणपृष्ठं तथायस्मिन्यस्मिन्धैवैस्थानेयेनयेनच
॥ १ ॥ पूज्यते तत्सर्ववदेतिपृष्ठेव्यासोनारदनारायणसंवादमुखेनसर्ववर्णयामासनवमस्कंधपर्यंतं तथाष्टमस्कंधेऽवान्यःप्रश्नःकृतोमन्वंतरेषुसर्वेषुयद्यद्रूपे

टी.अ.
१

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीनारदउवाच ॥ नारायणधराधारसर्वपालनकारणं ॥ भवतोदीरितंदेवीचरितंपापना
शनं ॥ १ ॥ मन्वंतरेषुसर्वेषुसादेवीयत्स्वरूपिणी ॥ यदाकारेणकुस्तेप्रादुर्भावंमहेश्वरी ॥ २ ॥ तान्नःसर्वान्स
माख्याहिदेवीमाहात्म्यमिश्रितान् ॥ यथाचयेनयेनेहपूजितासंस्तुतापिहि ॥ ३ ॥ मनोरथान्पूरयतिभक्तानां
भक्तवत्सला ॥ तन्नःशुश्रूषमाणानांदेवीचरितमुत्तमं ॥ ४ ॥ वर्णयस्वकृपासिंधोयेनाप्नोतिसुखंमहत् ॥
॥ श्रीनारायणउवाच ॥ आकर्णयमहर्षेत्वंचरितंपापनाशनं ॥ ५ ॥ भक्तानांभक्तिजननंमहासंपत्तिकारकं ॥
जगद्योनिर्महातेजाब्रह्मालोकपितामहः ॥ ६ ॥ अविरासीन्नभिपद्मादेवदेवस्यवक्रिणः ॥ सचतुर्मुखआसाद्य
प्रादुर्भावंमहामते ॥ ७ ॥ मनुंस्वायभुवंनामजनयामासमानसात् ॥ समानसोमनुःपुत्रोब्रह्मणःपरमेष्ठिनः ॥ ८ ॥
शतरूपांवतत्पत्नीजज्ञेधर्मस्वरूपिणी ॥ समनुःक्षीरसिंधोश्चतीरेपरमपावने ॥ ९ ॥ देवीमाराधयामासम
हाभाग्यफलप्रदां ॥ मूर्तिचमृन्मयीतस्याविधायपृथिवीपतिः ॥ १० ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥

णपूज्यतेतत्सर्ववदेतितस्योत्तरंनारदनारायणसंवादमुखेनैवदशमस्कंधेवदति तन्नवमस्कंधांतिसर्वेभनवोभगवतीमेवाराध्यतत्तत्पदं प्राप्नुयुरितिप्रश्न
बीजमुपलभ्यनारदःपृच्छति नारायणधराधारेति ॥ १ ॥ २ ॥ तान्नःसर्वानिति तान्सर्वानाकारानित्यर्थः किंचयेनयेनमंत्रेणस्तोत्रेणवापूजितासती
मनोरथान्पूरयतिवदपिबदेत्याह यथाचयेनेति ॥ ३ ॥ शुश्रूषमाणानामितिबहुवचनंभक्त्यतिशयेनगौरवद्योतनार्थंभक्त्यतिशयद्योतनेएवपर्य
वस्यति ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ मानसादंतःकरणात् ॥ ८ ॥ ब्रह्मेउत्पादितवान् ॥ ९ ॥ १० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ १ ॥

॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ माहशामस्मदादीनां ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ ग्रन्थाःमहांतः ॥ २१ ॥

उपासतेस्मतां देवीं वाग्भवं सजपन् रहः ॥ निराहारोजितश्वासो नियमव्रतकर्तितः ॥ ११ ॥ एकपादेन संतिष्ठन्
धरायामनिशं स्थिरः ॥ शतवर्षं जितः कामः क्रोधस्तेन महात्मना ॥ १२ ॥ भेजे स्थावरतां देव्याश्चरणौ चितयन्
हृदि ॥ तस्य तत्तपसा देवी प्रादुर्भूता जगन्मयी ॥ १३ ॥ उवाच वचनं दिव्यं वरं वरय भूमिप ॥ तत आनंदजनकं
श्रुत्वा वाक्यं महीपतिः ॥ १४ ॥ वरयामास तान् हृत्स्थान् वरानमरदुर्लभान् ॥ श्रीमन्नुवाचा ॥ जय देवि विशालाक्षि
जय सर्वोत्तरस्थिते ॥ १५ ॥ मान्ये पूज्ये जगद्धात्रि सर्वमंगलमंगले ॥ त्वत्कटाक्षालोकेन पद्मभूः सृजते जगत्
॥ १६ ॥ वैकुण्ठः पालयत्येव हरः संहरते क्षणात् ॥ शचीपतिस्त्रिलोक्याश्च शासको भवदाज्ञया ॥ १७ ॥ प्राणिनः
शिक्षयत्येव दंडेन च परेतराट् ॥ यादसामधिपः पाशीपालनं माहशामपि ॥ १८ ॥ कुरुते सकुवरोऽपि निधीनां पति
रव्ययः ॥ हुतभुक् नैर्ऋतो वायुरीशानः शेष एव च ॥ १९ ॥ त्वदंशसंभवा एव त्वच्छक्तिरिबं हिताः ॥ अथापि य
दि मे देवि वरो देयोऽस्ति सांप्रतं ॥ २० ॥ तदा प्रव्हाः स्वर्गकार्ये विघ्नानश्यंतु मेरिबे ॥ वाग्भवस्यापि मंत्रस्य ये केचि
दुपसेविनः ॥ २१ ॥ तेषां सिद्धिः सत्त्वरपि कार्याणां जायतामपि ॥ ये संवादमिमं देवि पठन्ति श्रावयन्ति च ॥ २२ ॥
तेषां लोके भुक्तिमुक्तिः सुलभे भवतां शिवे ॥ जातिस्मरत्वं भवतु वक्तृत्वं सौष्टवं तथा ॥ २३ ॥ ज्ञानासिद्धिः कर्ममार्ग
संसादिरपि चास्तु हि ॥ पुत्रपौत्रसमृद्धिश्च जायेदित्येव मेव च ॥ २४ ॥ इति श्रीदेवीभा० महा० दशमस्कंधे प्रथ
मोऽध्यायः ॥ १ ॥ देव्युवाच ॥ भूमिपाल महाबाहो सर्वमेतद्गविष्यति ॥ यत्त्वया प्रार्थितं तत्ते ददामि मनुजाधिप ॥ १ ॥

॥ २२ ॥ भवतां जायतां ॥ २३ ॥ २४ ॥ इति श्रीदेवीभागवतविक्रके दशमस्कंधे प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ आष्टाविंशतिभिः पद्यैरर्धश्लोकाधिकैरपि
वरं दत्त्वा भगवती विंध्याद्विचजगाम ह ॥ १ ॥ स्वायंभुवमनुस्तोत्रं श्रुत्वा देवी यदग्रे कृतवती तदग्रे देव्युवाच भूमिपालेति ॥ १ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.द.

॥ २ ॥

॥ २ ॥ सत्पदेन्द्रद्वयदे ॥ ३ ॥ ४ ॥ कुंभोद्भवोगस्तिः गगनमंतरिक्षं स्पृशन्त्यापयन् ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ मैत्रावरुणिरगास्तिः प्रकृतिस्थं
अहंप्रसन्नादैत्येन्द्रनाशनामोघविक्रमा ॥ वाग्भवस्यजपेनैवतपसातेसुनिश्चितं ॥ २ ॥ राज्यं निष्कण्टकं तेस्तु पु
त्रांशकरा अपि ॥ मयि भक्तिर्दृढा त्वत्समोक्षांते सत्पदे भवेत् ॥ ३ ॥ एवं वरान्महादेवी तस्मै दत्त्वा महात्मने ॥ प
त्यतस्तु मनोरेव जगाम विन्ध्यपर्वतं ॥ ४ ॥ योसौ विन्ध्याचलो रुद्रः कुंभोद्भवमहर्षिणा ॥ भानुमार्गावरो धार्थं प्रवृत्तो
गगनं स्पृशन् ॥ ५ ॥ सा विन्ध्यवासिनी विष्णोरनुजावरदेश्वरी ॥ बभूव पूज्या लोकानां सर्वेषां मुनिसत्तम ॥ ६ ॥
॥ ऋषय ऊचुः ॥ कोसौ विन्ध्याचलः सूत किमर्थं गगनं स्पृशन् ॥ भानुमार्गावरो धं च किमर्थं कृतवानसौ ॥ ७ ॥ क
थंच मैत्रावरुणिः पर्वतं तं न होन्नतं ॥ प्रकृतिस्थं च कारेति सर्वं विस्तरतो वद ॥ ८ ॥ न हितृप्यामहे साधो त्वदास्य
गलितामृतं ॥ देव्याश्चरित्ररूपास्यं पीत्वा तृष्णा प्रवर्धते ॥ ९ ॥ सूत उवाच ॥ आसीद्विन्ध्याचलो नाममान्यः सर्व
धराभृतां ॥ महावनसमूहाढ्यो महापादपसंवृतः ॥ १० ॥ सुपुष्पितैरनेकैश्चलतागुल्मैस्तु संवृतः ॥ मृगावरा
हामहिषा व्याघ्राः शार्दूलका अपि ॥ ११ ॥ वानराः शशकाः शृगालाश्च समंततः ॥ विचरन्ति सदा हृष्टाः पुष्टा
एवमहोद्यमाः ॥ १२ ॥ नदी नदजलाक्रांतो देवगंधर्वकिन्नरैः ॥ अप्सरोभिः किंपुरुषैः सर्वकामफलद्रुमैः ॥ १३ ॥
एतादृशे विन्ध्यनगे कदाचित्पर्यटन्महीं ॥ देवर्षिः परमप्रीतो जगाम स्वेच्छयामुनिः ॥ १४ ॥ तं दृष्ट्वा स न गोमंक्षुतू
र्णमुत्थाय संभ्रमात् ॥ पाद्यमर्घ्यं तथा दत्त्वा वरासनमथार्पयत् ॥ १५ ॥ सुखोपविष्टं देवर्षिं प्रसन्नं न गऊचिवान्
॥ विन्ध्य उवाच ॥ देवर्षे कथ्यतां जात आगमः कुत उत्तमः ॥ १६ ॥ तवागमनतो जातमनर्घ्यं मम मंदिरं ॥ तव च
क्रमणं देवाभयार्थं हियथारवेः ॥ १७ ॥

॥ १४ ॥

॥ १५ ॥

॥ १६ ॥

॥ १७ ॥

यथा पूर्वस्वभाक्स्थं ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥

टी.अ.

२

इंद्रोऽरिः शत्रुर्यस्य पर्वतपक्षच्छेदकत्वादिद्रस्य पर्वतारित्वं स्वर्णगिरेः सुमेरोः ॥ १८ ॥ १९ ॥ अगपर्वत इति चोक्तेति सूतवाक्यं आविशतुत्य
क्तवान् ॥ २० ॥ शैलराट् विंध्याद्रिः देवऋषे इत्यत्र ऋत्यक इति प्रकृतिभावः ॥ २१ ॥ उक्तं वचनं ॥ २२ ॥ गुरुः पिता ॥ २३ ॥ आ
वसथोगृहं ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ एवं मानाभिमानं तमिति मानेनाभिमानो यस्य तं नैकं श्चिदपि प्रपंचेभिमानः कर्तव्य इति शास्त्रम

अपूर्वयन्मनोवृत्तंतद्ब्रूहि मननारद ॥ श्रीनारद उवाच ॥ ममागमनमिंद्रजितं स्वर्णगिरेरथ ॥ १८ ॥ तत्र दृष्टा
मया लोकाः शक्राग्निमपाशिनां ॥ सर्वेषां लोकपालानां भवनानि समंततः ॥ १९ ॥ मया दृष्टानि विंध्यागनाना
भोगप्रदानि च ॥ इति चोक्त्वा ब्रह्मयोनिः पुनरुच्छ्वासमाविशत् ॥ २० ॥ उच्छ्वासं तं मुनिं दृष्ट्वा पुनः पत्रच्छ शैलराट् ॥
उच्छ्वासकारणं किं तद्ब्रूहि देव ॥ २१ ॥ इत्याकर्ण्य नगस्योक्तं देवर्षिरमितद्युतिः ॥ अब्रवीच्छूयतां वत्स
ममोच्छ्वासस्य कारणं ॥ २२ ॥ गौरीगुरुस्तु हिमवान् शिवस्य श्वशुरः किल ॥ संबन्धित्वा त्पशुपतेः पूज्य आसी
त्क्षमाभृतां ॥ २३ ॥ एवमेव च कैलासः शिवस्यावसथः प्रभुः ॥ पूज्यः पृथ्वीभृतां जातो लोके पापौघधारणः ॥ २४ ॥
निषेधः पर्वतो नीलो गंधमादन एव च ॥ पूज्यः स्वस्थानमासाद्य सर्व एव क्षमाभृतः ॥ २५ ॥ यंपर्येति च दिश्यात्मा
सहस्रकिरणः स्वराट् ॥ स ग्रहर्क्षगणोपेतः सोयंकनकपर्वतः ॥ २६ ॥ अत्मानं मनुते श्रेष्ठं वरिष्ठं च धराभृतां ॥
सर्वेषां महमेवाग्र्यो नास्तिलोके पुमत्समः ॥ २७ ॥ एवं मानाभिमानं तं स्मृत्वा च्छ्वासो मयोद्भूतः ॥ अस्तु नैता
वता कृत्यं तपो बलवतां नग ॥ २८ ॥ प्रसंगतो मयोक्तं ते गमिष्यामि निजगृहं ॥ इति श्रीदेवीभा ० महा ० दश ० द्विती
योऽध्यायः ॥ २ ॥ सूत उ ० ॥ १ ॥ वंसमुपदिश्यायं देवर्षिः परमः स्वराट् ॥ जगाम ब्रह्मणो लोकं स्वैरचारी महामुनिः ॥ १ ॥

यां दातयापि सोऽभिमानं करोतीति तत्स्मरणं संजातात् स्वर्गेण मयोच्छ्वासस्त्यक्त इति भावः उद्भूतस्त्यक्तः ततो बलवतामस्माकं ॥ २८ ॥ निजगृहं
ब्रह्मलोकं ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके दशमस्कंधे द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ पंचविंशतिभिः श्लोकैरर्थश्लोकाधिकैरथ ॥ भानुमार्गनिरोधश्च विंध्येन कृत
उच्यते ॥ १ ॥ नारदगमनोत्तरं जातं वृत्तमाह एवं समुपदिश्येति ॥ १ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.द.

॥ ३ ॥

चित्तांलेभेसजातीयस्यसुमेरोरभिमानासहिष्णुश्चितांप्राप्तवानित्यर्थः अंतरभ्यंतरेकृतंशोचनंशोकोयेनसः ॥ २ ॥ अत्रकिंकार्यकथंवाकर्तव्यमित्यर्थः ॥ ३ ॥ ४ ॥ दोषकारिणीअपराधकारिणी ॥ ५ ॥ तेनकारणेनसदायंनगोदृप्यातिगर्विकरोतीत्यर्थः तथाचतस्यसूर्यस्यगतिनिरोधिमयाकृतेप्रदक्षिणासंभवादर्थान्तस्याभिमानोनष्टः स्यादित्यभिप्रायंविध्यस्याह तस्यमार्गस्येति ॥ ६ ॥ ७ ॥ भुजैःशृंगैः ॥ ८ ॥ ९ ॥

गते नुनिवरेविध्यश्चित्तांलेभेऽनपायिनीं ॥ नैवशांतिसलेभेचसदांतःकृतशोचनः॥२॥ कथंकिंत्वत्रमेकार्यकथं मेरुंजयान्यहं ॥ नैवशांतिलेभेनापिस्वास्थ्यंमेमानसेभवेत् ॥ ३ ॥ धिग्बलंमेपौरुषंधिक्स्मृतंपूर्वैर्महात्माभिः ॥ एवंचितयमानस्यविध्यस्यमनसिस्फुटं ॥ ४ ॥ प्रादुर्भूतामातिःकार्यकर्तव्येदोषकारिणी ॥ मेरुंप्रदक्षिणांकुर्वन्नित्यमेवदिवाकरः॥५॥ सग्रहर्क्षगणोपेतःसदादृप्यत्ययंनगः ॥ तस्यमार्गस्यसंरोधंकरिष्यामिनिजैःकरैः ॥ ६ ॥ तदानिरुद्धोद्युमणिःपरिक्रामेत्कथंनगं ॥ एवंमार्गेनिरुद्धेतुमयादिनकरस्यच ॥ ७ ॥ भग्नदण्डोदिव्यनगोभविष्यतिविनिश्चितं ॥ एवंनिश्चित्यविंध्याद्रिःखंस्पृशन्ववृधेभुजैः ॥ ८ ॥ महोन्नतैःशृंगवरैःसर्वव्याप्यव्यवस्थितः कदोदेप्यतिभास्वांस्तंरोधयिष्याम्यहंकदा ॥ ९ ॥ एवंसंचितयानस्यसाव्यतीयायशर्वरी ॥ प्रभातंविमलंजजेदिशोवितिमिराःकरैः ॥ १० ॥ कुर्वन्सनिर्गतोभानुरुदयायोदयेगिरौ ॥ प्रकाशतेस्मविमलंनभोभानुकरैःशुभैः ॥ ११ ॥ विकासंनलिनीभेजेमीलनं वकुमुद्वती ॥ स्वानिकार्याणिसर्वेचलोकाःसमुपतस्थिरे ॥ १२ ॥ हव्यं कव्यंभूतबलिंदेवानांचप्रवर्धयन् ॥ प्राण्हापराण्हमध्यान्हविभागेनत्विषांपतिः ॥ १३ ॥ एवंप्राचींतथाग्नेयीं समाश्वास्यवियोगिनीं ॥ ज्वलंतींचिरकालीनविरहादिवकामिनीं ॥ १४ ॥ ॥ ६४ ॥

॥ २० ॥ २१ ॥ नलिनीसूर्यविकामिनी कुमुद्वतीचंद्रविकासिनी ॥ २२ ॥ प्राण्हेति प्राण्हापराण्हमध्यान्हविभागेनहव्यंकव्यंचवर्धयन्सन् एवंक्रमेणवियोगिनींचिरहिणींप्राचीदिशंतथाग्नेयींदिशंचसमाश्वास्यथभास्करःकृशानोरग्नेर्दिशंविहाययाम्यांयमसंबंधिनींदक्षिणदिशंगंतुंप्रतस्थेप्रस्थानंकृतवानितिमुदायार्थः कथंभूतांवियोगिनींचिरकालीनविरहात्कामिनीमिवज्वलंतीं ॥ २३ ॥ २४ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

टी.अ.

३

॥ ३ ॥

॥ १५ ॥ नशेकुरिति अथाइतिशेषः व्यजिज्ञपद्विज्ञापितवान् ॥ १६ ॥ त्वद्वत्तांप्रदक्षिणांप्रेप्सुस्तस्याइच्छावानित्यर्थः अनूरुरूपः ॥ १७ ॥
 ॥ १८ ॥ दैवचरित्रमेवोपपादयति राहुबाहुग्रहेति राहोर्बाहुभ्यांग्रहेण आकलेनव्यग्रोपियः क्षणमात्रमपिनावतिष्ठते स्थिरोभवति तादृशः स इ
 भास्करोथकृशानोश्चदिशं नूनं विहाय च ॥ याम्यांगंतुंततस्तूर्णं प्रतस्थेकमलाकरः ॥ १५ ॥ नशेकुश्चाग्रतो गं
 तुंततोऽनूरुर्व्यजिज्ञपत् ॥ अनूरुवाच ॥ भानोमानोन्नतो विध्यो निरुध्य गगनं स्थितः ॥ १६ ॥ स्पर्द्धते मेरुणा प्रे
 प्सुस्त्वद्वत्तांच प्रदक्षिणां ॥ सूत उवाच ॥ अनूरुवाक्यमाकर्ण्य सविता ह्यासर्चितयन् ॥ १७ ॥ अहोगगनमा
 गोपिरुध्यते चातिविस्मयः ॥ प्रायः शूरो न किंकुर्यादुत्पथेवर्त्मनि स्थितः ॥ १८ ॥ निरुद्धो नो वाजि मार्गो दैवंहि
 बलवत्तरं ॥ राहुबाहुग्रहव्यग्रो यः क्षणं नावतिष्ठते ॥ १९ ॥ स चिरं रुद्धमार्गोऽपि किंकरोति विधिर्वली ॥ एवं च मा
 र्गं संरुद्धे लोकाः सर्वे वसेश्वराः ॥ २० ॥ नान्वविंदंत शरणं कर्तव्यं नान्वपद्यत ॥ चित्रगुप्तादयः सर्वे कालं जानन्ति
 सूर्यतः ॥ २१ ॥ सरुद्धो विध्यगिरिणा अहो दैवविपर्ययः ॥ यदा निरुद्धः सविता गिरिणा स्पर्धया तदा ॥ २२ ॥
 नष्टः स्वाहास्वधाकारेण ए प्रायमभूज्जगत् ॥ एवं च पाश्चिमालोकादक्षिणात्यास्तथैव च ॥ २३ ॥ निद्रामीलित
 चक्षुष्कानि शामेव प्रपेदिरे ॥ प्रांचस्तथौत्तराहाश्चतीक्ष्णतापप्रतापिताः ॥ २४ ॥ मृतानष्टाश्च भग्नाश्च विनाश
 मभजन् प्रजाः ॥ हाहाभूतं जगत् सर्वं स्वधाकव्यविवर्जितं ॥ २५ ॥ देवाः सेंद्राः समुद्विग्नाः किंकुर्मइति वादिनः ॥
 इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे दशमस्कंधे देवीमहात्म्ये तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ सूत उवाच ॥ ततः सर्वे सुरगणा
 महेंद्रप्रमुखास्तदा ॥ पद्मयोनिं पुरस्कृत्य रुद्रं शरणमन्वयुः ॥ १ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७२ ॥

सन्वयः किंकरोति न किंचित्कर्तुं समर्थ इत्यर्थः यतो विधिर्वली भवति ॥ १९ ॥ २० ॥ कोऽपि कर्तव्यं नान्वपद्यत न प्राप्तवान् ॥ २१ ॥ २२ ॥
 ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ इति श्रीदेवीभागवते तिलके दशमस्कंधे तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ एकोनविंशति श्लोकैर्देवदेवं वृषध्वजं ॥ स्तुत्वा सर्वे स्व
 वृत्तांतं कथयामासुरादरात् ॥ १ ॥ एवं जगदुपद्रवे सति तदनंतरं जानं वृत्तमाह ततः सर्वे इति ॥ १ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७२ ॥

दे.भा.द.

॥ ४ ॥

॥ २ ॥ पत्कजंकंजलंतस्माब्जातंकमलंकजं पच्छब्दःपदंघ्रिश्वरणोस्त्रियामितिकोशातूपादवाची चरणकमलमित्यर्थः ॥३॥४॥५॥

उपतस्थुःप्रणतिभिस्तोत्रैश्चारुविभूतिभिः॥ देवदेवंगिरिशयंशशिलोलितशेखरं॥२॥देवाऊचुः॥ जयदेवगणा
ध्यक्षउमालालितपत्कज ॥ अष्टसिद्धिविभूतीनांदात्रेभक्तजनायते ॥ ३ ॥ महामायाविलसितस्थानायपरमा
त्मने ॥ वृषांकायामरेशायकैलासस्थितिशालिने ॥ ४ ॥ अहिर्बुध्यायमान्यायमनवेमानदायिने ॥ अजाय
बहुरूपायस्वात्मारामायशंभवे ॥ ५ ॥ गणनाथायदेवायगिरिशायनमोस्तुते ॥ महाविभूतिदात्रेतेमहाविष्णु
स्तुतायच ॥ ६ ॥ विष्णुहृत्कंजवासायमहायोगरतायच ॥ योगगम्याययोगाययोगिनांपतयेनमः ॥ ७॥ यो
गीशायनमस्तु ययोगानांफलदायिने ॥ दीनदानपरायापिदयासागरमूर्तये॥ ८॥ आर्तिप्रशमनायेप्रवीर्या
यगुणमूर्तये ॥ वृषध्वजायकालायकालकालायतेनमः ॥ ९ ॥ सूतउवाच ॥ एवंस्तुतःसदेवेशोयज्ञभुग्भिर्वृष
ध्वजः ॥ प्राहगंभीरियावाचाप्रहसन्विबुधर्षभान् ॥ १० ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ प्रसन्नोहंदिविषदःस्तोत्रेणोत्त
मपुरुषाः ॥ मनोरथंपूरयामिसर्वेषांदेवतर्षभाः ॥ ११॥ देवाऊचुः ॥ सर्वदेवेशगिरिशशिमौलिविराजित ॥
आर्तानांशंकरस्त्वंचराविधेहिमहाबल ॥ १२ ॥ पर्वतोविंध्यनामास्तिमेरुद्वेष्टामहोन्नतः ॥ भानुमार्गनिरोद्ध
हिसर्वेषांदुःखदोनघ ॥ १३ ॥ तद्वृद्धिस्तंभयेशानसर्वकल्याणकृद्भव ॥ भानुसंचाररोधेनकालज्ञानंकथंभवेत्
॥ १४ ॥ नटस्वाहास्वधाकारेलोकेकःशरणंभवेत् ॥ अस्माकंचभयार्तानांभवानेवहिदृश्यते ॥ १५ ॥ दुःख
नाशकरोदेवप्रसीदगिरिजापते ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ नास्माकंशक्तिरस्तीहितद्वृद्धिस्तंभनेसुराः ॥ १६ ॥ इम
मेवचवंदामोभगवंतंरमाधवं ॥ सोस्माकंप्रभुरात्माचपूज्यःकारणरूपधृक् ॥ १७ ॥ गोविंदोभगवान्विष्णुःस
र्वकारणकारणः ॥ तंगत्वाकथयिष्यामःसदुःखांतोभविष्यति ॥ १८ ॥

॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥

टी.अ.
४

॥ ४ ॥

॥ १९ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके दशमस्कंधे चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ सर्वाविंशतिर्षोडशोकाधिकैरथ देवादिभिः कृतं स्तोत्रं महाविष्णो
रितीर्यते ॥ १ ॥ शिववाक्यश्रवणोत्तरं देवावैकुण्ठंगता इत्याह ते गत्वेति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ अकूपाराय समुद्रकूर्मरूप ॥ ५ ॥ ६ ॥ कौल

इत्येवमाकर्ण्य गिरीशभाषितं देवाश्च सेंद्राः सपयोजसंभवाः ॥ रुद्रं पुरस्कृत्य च वेपमानावैकुण्ठलोकं प्रति जग्मुरं
जसा ॥ १९ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महा० दशमस्कंधे चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ सूत उवाच ॥ ते गत्वा देवदेवेशं रमाना
थं जगद्गुरुं ॥ विष्णुं कमलपत्राक्षं ददृशुः प्रभयान्वितं ॥ १ ॥ स्तोत्रेण तु पुत्रुर्भक्त्या गद्गदस्वरसत्कृताः ॥ देवा ऊचुः ॥
जय विष्णो रमेशाद्य महापुरुष पूर्वज ॥ २ ॥ दैत्यैरेकामजनक सर्वकामफलप्रद ॥ महावराह गोविंद महायज्ञ
स्वरूपक ॥ ३ ॥ महाविष्णो ध्रुवेशाद्य जगदुत्पत्तिकारण ॥ मत्स्यावतारे वेदानामुद्गाराधाररूपक ॥ ४ ॥ स
त्यव्रतधराधीशमत्स्यरूपाय ते नमः ॥ जया कूपारदैत्यैरे सुरकार्यसमर्पक ॥ ५ ॥ अमृताक्षिकरेशानकूर्मरूपा
य ते नमः ॥ जयादिदैत्यनाशार्थमादिसूकररूपधृक् ॥ ६ ॥ मह्युद्धारकतोद्योगकोलरूपाय ते नमः ॥ नारसिंह
वपुः कृत्वा महादैत्यं ददारयः ॥ ७ ॥ करजैर्वरदृष्टांगंतस्मै नृहरये नमः ॥ वामनं रूपमास्थाय त्रैलोक्यैश्चर्यमोहि
तं ॥ ८ ॥ बलिं संछलयामास तस्मै वामनरूपिणे ॥ दुष्टक्षत्रविनाशाय सहस्रकरशत्रवे ॥ ९ ॥ रेणुकागर्भजाता
यजामदभ्याय ते नमः ॥ दुष्टराक्षसपौलस्त्यशिरश्छेदपटीयसे ॥ १० ॥ श्रीमदाशरथेतुभ्यं नमो नंतक्रमाय च ॥
कंसदुर्योधनाद्यैश्च दैत्यैः पृथ्वीशलांछनैः ॥ ११ ॥ भाराक्रांतां महीं योरावुज्जहार महाविभुः ॥ धर्मसंस्थापयामास
पापं कृत्वा मुदूरतः ॥ १२ ॥ तस्मै कृष्णाय देवाय नमोस्तु बहुधा विभो ॥ दुष्टयज्ञविघाताय पशुर्हिसानिवृत्तये ॥ १३ ॥

रूपाय वराहरूपाय ॥ ७ ॥ करजैर्नखैः ॥ ८ ॥ सहस्रकरः कार्तवीर्यः ॥ ९ ॥ जामदग्न्याय परशुरामाय पौलस्त्योरावणः
॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ १२ ॥ दुष्टयज्ञाविधियज्ञाः ॥ १३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.द.

॥ १४ ॥ १५ ॥ नारीजलात्मसुयेनरुपंधृतमित्यन्वयः ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥

टी.अ.

५

॥ ५ ॥

बौद्धरूपदंधौयोसौतस्मैदेवायतेनमः ॥ म्लेच्छप्रायेखिलेलोकेदुष्टराजन्यपीडिते ॥ १४ ॥ कल्किरूपसमाद
ध्यौदेवदेवायतेनमः ॥ दशावतारास्तेदेवभक्तानांरक्षणायवै ॥ १५ ॥ दुष्टदैत्यविघातायतस्मात्त्वंसर्वदुःखह
त् ॥ जयभक्तार्तिनाशायधृतंनारीजलात्मसु ॥ १६ ॥ रूपयेनत्वयादेवकोन्यस्त्वत्तोदयानिधिः ॥ इत्येवंदेवदे
वेशंस्तुत्वाश्रीपतिवाससं ॥ १७ ॥ प्रणेमुर्भक्तिसहिताःसाष्टांगंविबुधर्षभाः ॥ तेषांस्तवंसमाकर्ण्यदेवःश्रीपुरु
षोत्तमः ॥ १८ ॥ उवाचविबुधान्सर्वान्हर्षयन्श्रीगदाधरः ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ प्रसन्नोस्मिस्तवेनाहंदेवा
स्तापंविमुंचथ ॥ १९ ॥ भवतांनाशयिष्यामिदुःखंपरमदुःसहं ॥ वृणुध्वंचवरंमत्तोदेवाःपरमदुर्लभं ॥ २० ॥
ददामिपरमप्रीतःस्तवस्यास्यप्रसादतः ॥ यएतत्पठतेस्तोत्रंकल्पउत्थायमानवः ॥ २१ ॥ मयिभक्तिंपरांकृत्वा
नतंशोकःस्पृशेत्कदा ॥ अलक्ष्मीःकालकर्णीचनाक्रामेत्तद्रहंसुराः ॥ २२ ॥ नोपसर्गानवेतालानग्रहाब्रह्मराक्ष
साः ॥ नरोगावांतिकाःपैताःश्लेष्मसंभविनस्तथा ॥ २३ ॥ नाकालमरणंतस्यकदापिचभविष्यति ॥ संतति
श्चिरकालस्थाभोगाःसर्वेसुखादयः ॥ २४ ॥ संभविष्यंतितन्मर्त्यगृहेयस्तोत्रपाठकः ॥ किंपुनर्बहुनोक्तेनस्तो
त्रंसर्वार्थसाधकं ॥ २५ ॥ एतस्यपठनान्नृणांभुक्तिमुक्तीनदूरतः ॥ देवाभवत्सुयदुःखंकथ्यतांतदसंशयं ॥ २६ ॥
नाशयामिनसंदेहश्चात्रकार्योणुरेवच ॥ एवंश्रीभगवद्वाक्यंश्रुत्वासर्वेदिबौकसः ॥ २७ ॥ प्रसन्नमनसःसर्वेपु
नरुचुर्वृषाकपिं ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेदशमस्कंधेचंपमोध्यायः ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥

॥ ५ ॥

२५ ॥ २६ ॥ अणुमात्रमपिसंदेहोनास्तीत्यर्थः ॥ २७ ॥ वृषाकपिंविष्णुं इतिश्रीदेवीभागवततिलकेदशमस्कंधेचंपमोध्यायः ॥ ५ ॥

सप्तविंशतिपदैर्वाप्यर्धश्लोकाधिकैरथ ॥ देवैःसंप्रार्थितोगस्तिविन्ध्याद्वैवृद्धिकुण्डने ॥ १ ॥ विष्णुवाक्यश्रवणानंतरंजातंवृत्तमाह श्रीशस्येति ॥ २ ॥
॥ २ ॥ ३ ॥ पूजकः अतएवभगवत्याअगस्त्युपासितालोपामुद्रोपासंततिनामब्रह्मांडपुराणेतंत्रेषुप्राप्तिमेवेतत् ॥ ४ ॥ तत्तेजोवं

॥ सूतउवाच॥श्रीशस्यवचनाद्वेवाःसंतुष्टाःसर्वएवहि ॥ प्रसन्नमनसोभूत्वापुनरेनमवोचत ॥ १ ॥ देवाऊचुः॥
देवदेवमहाविष्णोसृष्टिस्थित्यंतकारण ॥ विष्णोर्विध्यनगोऽर्कस्यमार्गरोधंकरोतिहि ॥ २ ॥ तेनभानुविरोधे
नसर्वएवमहाविभो ॥ अलब्धभोगभागाहिकिंकुर्मःकुत्रयामहि ॥ ३ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ याकर्त्रीसर्वजगता
माद्याचकुलवर्धनी ॥ देवीभगवतीतस्याःपूजकःपरमद्युतिः॥ ४॥ अगस्त्योमुनिवर्योसौवाराणस्यांसमासते॥
तत्तेजोवंचकोगस्त्योभविष्यतिसुरोत्तमाः ॥ ५ ॥ तंप्रसाद्यद्विजवरमगस्त्यंपरमौजसं॥ याचध्वंविबुधाःकाशीं
गत्वानिश्रेयसःपदीं॥६॥सूतउवाच ॥ एवंसमुपदिष्टास्तेविष्णुनाविबुधोत्तमाः॥प्रतीताःप्रणताःसर्वेजग्मुर्वारा
णसीपुरीं ॥ ७ ॥ क्षणेनविबुधश्रेष्ठागत्वाकाशीपुरींशुभां ॥ मणिकर्णीसमाहृत्यसचैलंभक्तिसंयुताः ॥ ८ ॥
संतर्प्यदेवाश्चपितृन्दत्त्वादानंविधानतः ॥ आगत्यमुनिवर्यस्यचाश्रमंपरममहत् ॥ ९ ॥ प्रशांतश्वापदकीर्ण
नानापादपसंकुलं ॥ मयूरैःरारसैर्हंसैश्चक्रवाकैरुपाश्रितं ॥ १० ॥ महावराहैःकोलैश्चव्याघ्रैःशार्दूलकैरपि ॥
मृगैरुरुभिरत्यर्थस्वद्वैःशरभकैरपि ॥ ११ ॥ समाश्रितंपरमयालक्ष्म्यामुनिवरंतदा ॥ दंडवत्पतिताःसर्वेप्रणे
मुश्चपुनःपुनः ॥ १२ ॥ जयद्विजगणाधीशमान्यपूज्यधरासुर ॥ वातापीबलनाशायनमस्तेकुंभयोनये॥१३॥

चकोर्विन्ध्याद्वैवृद्धिखंडकः ॥ ५ ॥ निःश्रेयसोमोक्षस्यपदींस्थानं ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥
॥ १२ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥

दे.भा.द.

॥ ६ ॥

॥ १४ ॥ यस्यागस्तिनक्षत्रस्योदये ॥ १५ ॥ काशपुष्पेति अगस्तिनक्षत्रस्योदयेकाशपुष्पं मुनिपुष्पं भाषायां यस्यागस्तिपुष्पमिति संज्ञाभव
तितत्काशपुष्पंतस्यविकासोभवति ततोहेतोः काशपुष्पविकासाय लंकायां वासोगमनमभिलषितं यस्य सरामचंद्रो लंकावासस्तस्य प्रियाय गुरवे
लोपामुद्रापते श्रीमन्मैत्रावरुणिसंभव ॥ सर्वविद्यानिधेऽगस्त्यशास्त्रयोनेन मोस्तुते ॥ १४ ॥ यस्योदये प्रस
न्नानि भवंत्युज्ज्वलभांज्यपि ॥ तोयानितो यराशीनांतस्मै तुभ्यं न मोस्तुते ॥ १५ ॥ काशपुष्पविकासाय लंकावा
सप्रियाय च ॥ जटामंडलयुक्ताय सशिष्याय न मोस्तुते ॥ १६ ॥ जयसर्वामरस्तव्यगुणराशे महामुने ॥ वरिष्ठा
य च पूज्याय सस्त्रीकाय न मोस्तुते ॥ १७ ॥ प्रसादः क्रियतां स्वामिन्वयं त्वां शरणं गताः ॥ दुस्तराच्छैलजादुःखा
त्पीडिताः परमद्युते ॥ १८ ॥ इत्येवं संस्तुतो गस्त्यो मुनिः परमधार्मिकः ॥ प्राह प्रसन्नयावाचा विहसन् द्विजसत्तमः
॥ १९ ॥ मुनिरुवाच ॥ भवंतः परमश्रेष्ठा देवास्त्रिभुवनेश्वराः ॥ लोकपालामहात्मानो निग्रहानुग्रहक्षमाः ॥
२० ॥ यो मरावत्यधीशानः कुलिशं यस्य चायुधं ॥ सिद्धिष्टकंचयद्वारि सशक्रो मरुतां पतिः ॥ २१ ॥ वैश्वानरः कृ
शानुर्हि हव्यकव्यवहो निशं ॥ मुखं सर्वामराणां हि सोऽग्निः किंतस्य दुष्करं ॥ २२ ॥ रक्षोगणाधिपो भामः सर्वेषां
कर्मसाक्षिकः ॥ दंडव्यग्रकरो देवः किंतस्या सुकरं सुराः ॥ २३ ॥ तथापि यदि देवेशः कार्यं मच्छक्तिसिद्धिभृत् ॥ अ
स्ति चेदुच्यतां देवाः करिष्यामि न संशयः ॥ २४ ॥ एवं मुनिवरेणोक्तं निशम्य विबुधर्षभाः ॥ प्रतीताः प्रणयौ द्विग्नः
कार्यं निजगदुर्निजं ॥ २५ ॥ महर्षेर्विंध्यगिरिणानिरुद्धोर्कविनिर्गमः ॥ त्रैलोक्यं तेन संविष्टं हाहा भूतमचेतनं ॥
२६ ॥ तद्वृद्धिस्तं भयमुने निजया तपसः श्रिया ॥ भवतस्ते जसा गस्त्यनूनं नमो भविष्यति ॥ २७ ॥ एतदेवास्मदीयं
च कार्यं कर्तव्यमस्ति हि ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे दशमस्कंधे षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ ॥ ६४ ॥

शिवगीतोपदेशशिवमंत्रोपदेशकर्त्रे शिवगीतायां षष्ठमेतत् ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ भामो दीतिमान् ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके दशमस्कंधे षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ ॥ ६४ ॥

टी.अ.

६

॥ ६ ॥

षड्विंशतिमहापद्यैरधंश्लोकाधिकैरथा॥मुनिर्नाविध्यवृद्धे श्वकुंठनंकृतमुच्यते॥१॥देववाक्यंश्रुत्वामुनिर्यत्कृतवांस्तदाह सूत उवाच इतिवाक्यमिति

सूत उवाच ॥ इतिवाक्यंसमाकर्ण्यविबुधानां द्विजोत्तमः ॥ करिष्येकार्यमेतद्वः प्रत्युवाच ततो मुनिः ॥ १ ॥ अंगो
कृतेतदाकार्येमुनिनाकुंभजन्मना ॥ देवाः प्रमुदिताः सर्वे बभूवुर्द्विजसत्तमाः ॥ २ ॥ ते देवाः स्वानिधिष्यानिभे
जिरेमुनिवाक्यतः ॥ पत्नीं मुनिवरः श्रीमानुवाच नृपकन्यकां ॥ ३ ॥ अयेनृपसुते प्राप्तो विघ्नो नर्थस्य कारकः ॥ भा
नुमार्गनिरोधेन कृतो विध्यमहीभृता ॥ ४ ॥ आज्ञातं कारणं तच्च स्मृतं वाक्यं पुरातनं ॥ काशीमुद्दिश्य यद्गीतं मुनि
भिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ ५ ॥ अविमुक्तं न मोक्तव्यं सर्वथैव मुमुक्षुभिः ॥ किंतु विघ्ना भविष्यंतिकाश्यानि वसतां सतां
॥ ६ ॥ सौतरायो मया प्राप्तः काश्यानि वसता प्रिये ॥ इत्येवमुक्त्वा भार्यातां मुनिः परमतापनः ॥ ७ ॥ मणिक
र्ण्यं समाप्नुत्य दृष्ट्वा विश्वेश्वरं विभुं ॥ दंडपाणिं समभ्यर्च्य कालराजं समागतः ॥ ८ ॥ कालराजमहाबाहो भक्तानां
भयहारक ॥ कथं दूरयसे पुर्याः काशीपुर्यास्त्वमीश्वर ॥ ९ ॥ त्वं काशीवासि विघ्नानां नाशको भक्त रक्षकः ॥ मां
किं दूरयसे स्वामिन् भक्तार्तिविनिवारक ॥ १० ॥ परापवादो नोक्तो मे न पैशून्यं न चानृतं ॥ केन कर्मविपाकेन
काश्यादूरं करोषि मां ॥ ११ ॥ एवं प्रार्थ्य च तं कालनाथं कुंभोद्भवो मुनिः ॥ जगाम साक्षि विघ्ने शंसर्वविघ्ननिवारणं
॥ १२ ॥ तं दृष्ट्वा भ्यर्च्य संप्रार्थ्य ततः पुर्या विनिर्गतः ॥ लोपामुद्रापतिः श्रीमानगस्त्योदक्षिणां दिशं ॥ १३ ॥
काशीविरहसंतप्तो महाभाग्यनिधिर्मुनिः ॥ संस्मृत्यानुक्षणं काशीं जगाम सह भार्यया ॥ १४ ॥ तपोयानमिवा
रुह्य निमिषार्धेन वै मुनिः ॥ अग्रे ददर्श तं विध्यं रुद्धां बरमथोन्नतं ॥ १५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥

॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ एतस्य विघ्नस्य किं कारणमिति चेदधुनैव तत्कारणं स्मृतमित्याह आज्ञातमिति ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ कालराजं
कालभैरवं ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ तप एव योग एव यानं यस्य योगशक्त्या क्षणाद्वै न गत इत्यर्थः ॥ १५ ॥

दे.भा.द.

किमर्थस्त्वर्तरोनमररोजातइतिचेत्तत्रोत्प्रेक्षामाह विवक्षुरवनीमिवेति अवर्नीपृथिवीकिंचिद्रहस्यंकर्णेविवक्षुर्वक्तुमिच्छुरिव अतिशयेननमो
मातइतितात्पर्यं ॥ १६ ॥ तदेवाह दंडवदिति ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ अवारुहत्पृथिवीप्रत्यवातरदित्यर्थः ॥ २० ॥ इत्यंविध्यकथां

टी.अ.

७

॥ ७ ॥

चकंपेचाचलस्तूर्णदृष्टैवाग्रेस्थितंमुनिं ॥ गिरिःस्वर्तरोभूत्वाविवक्षुरवनीमिव ॥ १६ ॥ दंडवत्पतितोभूमौसा
ष्टांगंभक्तिभावितः ॥ तदृष्ट्वानम्रशिखरंविध्यंनाममहागिरिं ॥ १७ ॥ प्रसन्नवदनोऽगस्त्योमुनिर्विध्यमथाब्रवी
त् ॥ वत्सैवंतिष्ठतावत्त्वंयावदागम्यतेमया ॥ १८ ॥ अशक्तोहंगंडरौलारोहणेतवपुत्रक ॥ एवमुक्त्वामुनिर्या
म्यदिशंप्रतिगमोत्सुकः ॥ १९ ॥ आरुह्यतस्यशिखराण्यवारुहदनुक्रमात् ॥ गतोयाम्यदिशंचापिश्रीशैलंप्रे
क्ष्यवर्त्मनि ॥ २० ॥ मलयाचलमासाद्यतत्राश्रमपरोभवत् ॥ सापिदेवीतत्रविध्यमागतामनुपूजिता ॥ २१ ॥
लोकेषुप्रथिताविध्यवासिनीतिचशौनक ॥ सूतउवाच ॥ एतच्चरित्रंपरमंशत्रुनाशनमुत्तमं ॥ २२ ॥ अगस्त्य
विध्यनगयोराख्यानंपापनाशनं ॥ राज्ञांविजयदंतश्चद्विजानांज्ञानवर्द्धनं ॥ २३ ॥ वैश्यानांधान्यधनदंशूद्रा
णांसुखदंतथा ॥ धर्मार्थीधर्ममाप्नोतिधनार्थीधनमाप्नुयात् ॥ २४ ॥ कामानवाप्नुयात्कामीभक्त्याचास्यसकृच्छ
वात् ॥ एवंस्वायंभुवमनुर्देवीमाराध्यभक्तितः ॥ २५ ॥ लेभेराज्यंधरायाश्चनिजमन्वंतराश्रयं ॥ इत्येतद्वर्णितंसौ
म्यमयामन्वंतराश्रितं ॥ २६ ॥ आद्यंचरित्रंश्रीदेव्याःकिंपुनःकथयामिते ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेद
शमस्कंधेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ शौनकउवाच ॥ आद्योमन्वंतरःप्रोक्तोभवताचायमुत्तमः ॥ अन्येषामुद्भवंब्रूहिम
नूनांदिव्यतेजसां ॥ १ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥

समाप्यपूर्वसंबंधंयोजयति सापिदेवीति ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेदशमस्कंधेसप्तमो
ध्यायः ॥ ७ ॥ चतुर्विंशतिभिःपद्यैःस्वारोचिषमनोःकथा ॥ अर्द्धश्लोकाधिकैरेवसंक्षेपात्प्रोच्यतेधुना ॥ १ ॥ स्वायंभुवमनोःकथाश्रवणानं
त्तरंमनूनामन्येषामपिशौनकःकथांपृच्छति आद्योमन्वंतरइति ॥ १ ॥ ॥ ७ ॥

सूतस्तुयादृशंभक्तापृच्छयतेतादृशमेवनारदेननारायणंप्रतिपृष्टमित्याह एवमाद्यस्येति आद्यस्यादिभूतस्यस्वायंभुवमनोः परिपृच्छतिनारदइत्य-
न्वयः ॥ २॥ सनातनहेनारायण ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५॥६ ॥ कूलतःकूले ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ तारिणीति यादृशमहाविष्णुसुम-

सूतउवाच ॥ एवमाद्यस्यचोत्पत्तिंश्रुत्वास्वायंभुवस्यहि ॥ अन्येषांक्रमशस्तेषांसंभूतिंपरिपृच्छति ॥ २ ॥ ना-
रदःपरमोज्ञानीदेवीतत्त्वार्थकोविदः ॥ नारदउवाच ॥ मेमनूनांसमाख्याहिसूत्पत्तिंचसनातन ॥ ३ ॥ नाराय-
णउवाच ॥ प्रथमोयंमनुःस्वायंभुवउक्तोमहामुने ॥ देव्याराधनतोयेनप्राप्तंराज्यमकंटकं ॥ ४ ॥ प्रियव्रतौत्ता-
नपदौमनुपुत्रौमहौजसौ ॥ राज्यपालनकर्तारौविख्यातौवसुधातले ॥ ५ ॥ द्वितीयश्चमनुःस्वारोचिषउक्तोम-
नीषिभिः ॥ प्रियव्रतसुतःश्रीमानप्रमेयपराक्रमः ॥ ६ ॥ सस्वारोचिषनामापिकालिंदीकूलतोमनुः ॥ निवासं-
कल्पयामाससर्वसत्त्वाप्रियंकरः ॥ ७ ॥ जीर्णपत्राशनोभूत्वातपःकर्तुमनुव्रतः ॥ देव्यामूर्तिंमृन्मयींचपूजयामा-
सभक्तितः ॥ ८ ॥ एवंद्वादशवर्षाणिवनस्थस्यतपस्यतः ॥ देवीप्रादुरभूतातसहस्रार्कसमद्युतिः ॥ ९ ॥ ततःप्र-
सन्नादेवेशीस्तवराजेनसुव्रता ॥ ददौस्वारोचिषायैवसर्वमन्वंतराश्रयं ॥ १० ॥ आधिपत्यंजगद्वात्रीतारिणी-
तिप्रथामगात् ॥ एवंस्वारोचिषमनुस्तारिण्याराधनात्ततः ॥ ११ ॥ आधिपत्यंचलेभेससर्वारातिविवर्जितं ॥
धर्मसंस्थाप्यविधिवद्राज्यंपुत्रैःसमंविभुः ॥ १२ ॥ भुक्त्वाजगामस्वर्लोकांनिजमन्वंतराश्रयात् ॥ तृतीयउत्तमो-
नामप्रियव्रतसुतोमनुः ॥ १३ ॥ गंगाकूलेतपस्तप्त्वावाग्भवंसंजपन्नहः ॥ वर्षाणित्रीण्युपवसन्देव्यनुग्रह-
माविशत् ॥ १४ ॥ स्तुत्वादेवींस्तोत्रवरैर्भक्तिभावितामानसः ॥ राज्यंनिष्कंटकंलेभेसंततिंचिरकालिकीं ॥ १५ ॥

ध्येतारिणीतिप्रथामगात्सास्वारोचिषायमन्वंतराधिपत्यंदददवित्यन्वयः तारामहाविद्योपासकौयमितिभावः ॥ ११ ॥ १२ ॥ तृतीयो-
मनुस्त्वित्यन्वयः ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥

दे.भा.द.

॥ १६ ॥ चतुर्थोमनुरित्यन्वयः ॥ १७ ॥ कामराजकूटंकामबीजं तच्चदाक्षिणामूर्तिसंहितायांकामेद्वर्याउक्तमस्तीतिकामेद्वर्याअयमुपा
सकइतिभावः ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ अंबरं परलोकं तामसानुजः पूर्वोक्तोयः प्रियव्रतसुतस्तामसस्तस्यानुजः ॥ २१ ॥ २२ ॥

टी.अ.

८

॥ ८ ॥

राज्योत्थान्यानि सौख्यानि भुक्त्वा धर्मान्युगस्य च ॥ सोप्याजगाम पदवीं राजर्षिवरभावितां ॥ १६ ॥
चतुर्थस्तामसो नाम प्रियव्रतसुतो मनुः ॥ नर्मदादक्षिणे कूले समाराध्य जगन्मयीं ॥ १७ ॥ महेश्वरीं कामराज
कूटजापषरायणः ॥ वासं तेशारदे कालेन वरात्रसपर्यया ॥ १८ ॥ तोषयामास देवेशीं जलजाक्षीमनूपमां ॥ त
स्याः प्रसादमासाद्य नुत्वास्तोत्रैरनुत्तमैः ॥ १९ ॥ अकंटकं महद्राज्यं बुभुजे गतसाध्वसः ॥ पुत्रान्बलोद्धतान् शूरा
नूदशवीर्यनिकेतनान् ॥ २० ॥ उत्पाद्य निजभार्यायां जगामांबरमुत्तमं ॥ पंचमो मनुराख्यातो रैव तस्तामसा
नुजः ॥ २१ ॥ कालिंदीकूलमाश्रित्य जजाप कामसंज्ञकं ॥ बीजं परमवाग्दर्पदायकं साधकाश्रयं ॥ २२ ॥ एत
दाराधनादापस्वाराज्यं द्विमुत्तमां ॥ बलमप्रहृतं लोके सर्वसिद्धिविधायकं ॥ २३ ॥ संततिं विरकालीनां पुत्रपौत्र
मयीं शुभां ॥ धर्मान्वयस्य व्यवस्थाप्य विषयानुपभुज्य च ॥ २४ ॥ जगामाप्रतिमः शूरो महेंद्रालयमुत्तमं ॥ इति
श्रीदेवीभागवते महापुराणे दशमस्कंधे ऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ श्रीनारायण उवाच ॥ अथातः श्रूयतां चित्रं देवीमा
हात्म्यमुत्तमं ॥ अंगपुत्रेण मनुनायथास्तं राज्यमुत्तमं ॥ १ ॥ अंगस्य राज्ञः पुत्रो भूच्चाक्षुषो मनुरुत्तमः ॥ षष्ठः स पुल
हं नाम ब्रह्मर्षिं शरणं गतः ॥ २ ॥ ब्रह्मर्षे त्वामहं प्राप्तः शरणं प्रणतार्तिहना ॥ शाधि मां किंकरं स्वामिन्येनाहं प्राप्नुयां
श्रियं ॥ ३ ॥ मेदिन्याश्चाधिपत्यं मे स्याद्यथावदस्वडितं ॥ अव्याहतं भुजबलं शस्त्रास्त्रनिपुणं क्षमं ॥ ४ ॥

॥ २३ ॥ २४ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके दशमस्कंधे ऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ एकोनत्रिंशत्पदैस्तु चाक्षुषस्य मनोः कथा ॥ यथाक्वच्यते यत्र दे
वीमाहात्म्यविस्तरः ॥ १ ॥ अवशिष्टषष्ठमनोः कथामाह अथातरिति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥

॥ ८ ॥

अपमंगलाभोमोक्षलाभेति स्यादित्यर्थः ॥ ५५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ वाग्भवं बीजं महासरस्वतीदेवता ॥ १० ॥ पादः पद्मसंभवो नमः ॥ ११ ॥

संततिश्चिरकालीनाप्यस्वद्वयमुत्तमं ॥ अंतेऽपवर्गलाभश्च स्यात्तथोपदिशाद्यमे ॥ ५ ॥ इत्येवं वचनं तस्य मे
नोः कर्णपथे भवत् ॥ प्रत्युवाच मुनिः श्रीमान् देव्याः संराधनं परं ॥ ६ ॥ राजन्नाकर्णय वचो मम श्रोत्रसुखं महत् ॥
शिवामाराधयाद्यत्वं तत्प्रसादादिदं भवेत् ॥ ७ ॥ चाक्षुष उवाच ॥ कीदृगाराधनं देव्यास्तस्याः परमपावनं ॥ के
नाकरिण कर्तव्यं कारुण्याद्वक्तुमर्हसि ॥ ८ ॥ मुनिरुवाच ॥ राजन्नाकर्णय तां देव्याः पूजनं परमव्ययं ॥ वाग्भवं
बीजमव्यक्तं संजप्य मनिशं तथा ॥ ९ ॥ त्रिकालं संजपन्मर्त्यो भुक्तिमुक्ती लभेत्तुहि ॥ न बीजं वाग्भवादप्यदस्ति
राजन्यनंदन ॥ १० ॥ जपात्सिद्धिं करं वीर्यबलवृद्धिं करं परं ॥ एतस्य जापात्पाद्भ्योऽपि सृष्टि कर्ता महाबलः ॥
११ ॥ विष्णुर्यज्जपतः सृष्टिपालकः परिकीर्तितः ॥ महेश्वरोऽपि संहर्ता यज्जपादभवन्नृप ॥ १२ ॥ लोकपाला
स्तथान्येऽपि निग्रहानुग्रहक्षमाः ॥ यदाश्रयादभूवंस्ते बलवीर्यमदोद्धताः ॥ १३ ॥ एवं त्वमपि राजन्यमहेशीं जग
दंबिकां ॥ समाराध्य महर्द्धिं बलस्य ते चिस्कालतः ॥ १४ ॥ एवं समुनिवर्येण पुलहेन प्रबोधितः ॥ अंगपुत्र
स्तपस्तप्तुं जगाम विरजानदीं ॥ १५ ॥ स च तेपेतपस्तीव्रं वाग्भवस्य जपेरतः ॥ बीजस्य पृथिवीपालः शीर्ण
पर्णाशनो विभुः ॥ १६ ॥ प्रथमेऽब्दे पल्लवाशो द्वितीये तोयभक्षणः ॥ तृतीयेऽब्दे पवनभुक्तस्थौऽस्थाणुरिवाचलः
॥ १७ ॥ एवं द्वादशवर्षाणित्यक्ता हरस्य भूभुजः ॥ वाग्भवं जपतो नित्यं मतिरासीच्छुभान्विता ॥ १८ ॥ तथा च
देव्याः परमं मंत्रं संजपतोरहः ॥ प्रादुरासीज्जगन्माता साक्षाच्छ्रीपरमेश्वरी ॥ १९ ॥ तेजोमयी दुराधर्षा सर्वदेव
मयी श्वरी ॥ उवाचांगतनूजंतं प्रसन्नललिताक्षरं ॥ २० ॥

॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ तृतीयेऽब्दे तृतीयवर्षे ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ ईश्वरी महासरस्वती ॥ २० ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.द.

॥ ९ ॥

॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके दशमस्कंधेनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

देव्युवाच ॥ पृथिवीपालतेयत्स्याच्चित्तितं परमं वरं ॥ तद्ब्रूहि संप्रदास्यामितपसाते सुतोऽपि ता ॥ २१ ॥ चाक्षुष उवाच ॥ जानासि देवदेवेशि यत्प्रार्थ्य मनसेप्सितं ॥ अंतर्यामिस्वरूपेण तत्सर्वं देवपूजितो ॥ २२ ॥ तथापि मम भाग्येन जातं यत्तव दर्शनं ॥ ब्रवीमि देवि मे देहिराज्यं मन्वंतराश्रितं ॥ २३ ॥ देव्युवाच ॥ दत्तं मन्वंतरस्यास्य राज्यं राजन्यसत्तम ॥ पुत्रामहाबलास्ते च भविष्यंति गुणाधिकाः ॥ २४ ॥ राज्यं निष्कण्टकं भाविमोक्षोते चापि निश्चितः ॥ एवं दत्त्वा परं देवी मनवेवरमुत्तमं ॥ २५ ॥ जगामादर्शनं सद्यस्तेन भक्त्या च संस्तुता ॥ सोऽपि राजामनुषष्ठः प्रसादात्तु तदाश्रयात् ॥ २६ ॥ बभूव मनुमान्योऽसौ सार्वभौमसुखैर्वृतः ॥ पुत्रास्तस्य बलद्युक्ताः कार्यभारसहायताः ॥ २७ ॥ देवीभक्ताश्च शूराश्च महाबलपराक्रमाः ॥ अन्यत्र माननीयाश्च महाराज्यसुखारूपाः ॥ २८ ॥ एवं च चाक्षुषमनुर्देव्याराधनतः प्रभुः ॥ बभूव मनुवर्योऽसौ जगामांते शिवांपदं ॥ २९ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे दशमस्कंधे देवीचरित्रेनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ श्रीनारायण उवाच ॥ सप्तमो मनुराख्यातो मनुर्वैवस्वतः प्रभुः ॥ श्राद्धदेवः परानंदभोक्ता मान्यस्तु भूभुजा ॥ १ ॥ सच वैवस्वतमनुः परदेव्याः प्रसादतः ॥ तथा तत्तपसा चैव जातो मन्वंतराधिपः ॥ २ ॥ अष्टमो मनुराख्यातः सार्वर्णिः प्रथितः क्षितौ ॥ सजन्मांतरा राध्य देवीं तद्वरलाभतः ॥ ३ ॥ जातो मन्वंतरपतिः सर्वराजन्यपूजितः ॥ महापराक्रमी धीरो देवीभक्तिपरायणः ॥ ४ ॥ श्रीनारद उवाच ॥ कथं जन्मांतरे तेन मनुनाराधनं कृतं ॥ देव्याः पृथिव्युद्भवायास्तन्ममाख्यातुमर्हसि ॥ ५ ॥

पञ्चविंशतिभिः श्लोकैरर्धश्लोकाधिकैरथ ॥ मनोः सार्वर्णिसंज्ञस्य कथानकमिहोच्यते ॥ १ ॥ सप्तमाष्टममन्वोः कथामाह ॥ १ ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ४ ॥ पृथिव्युद्भवामहीमयमूर्तेर्देव्याः कथमाराधनं कृतमित्यन्वयः ॥ ५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

टी.अ.

९

सुरथोनामेति ब्रह्मणः पुत्रोऽत्रैस्तस्य पुत्रोऽनिशाकरः स एव राजसूयं कृत्वा द्विजराजो भवत् तस्य पुत्रोऽनुभस्तस्य पुत्रश्चैत्रस्तस्य पुत्रो विरधः तस्य पुत्रः
सुरथः तदुक्तं ब्रह्मवैवर्ते प्रकृतिखण्डे दुर्गापाख्याने तस्य चैत्रस्य पुत्रश्च राजा विरथ एव हि तस्य पुत्रश्च सुरथश्च क्रवर्ती बृहच्छ्रुत्वा रति ॥ ६ ॥ ७ ॥

श्रीनारायण उवाच ॥ चैत्रवंशसमुद्भूतो राजा स्वरोचिषे तरे ॥ सुरथो नाम विख्यातो महाबलपराक्रमः ॥ ६ ॥ गु
णग्राही धनुर्दारीमान्यः श्रेष्ठः कविः कृतौ ॥ धनसंग्रहकर्ता च दाता याचकमण्डले ॥ ७ ॥ अरीणां मर्दनो मानी सर्वा
स्त्रकुशलो बली ॥ तस्यैकदा बभूवुस्ते कोलाविध्वंसिनो नृपाः ॥ ८ ॥ शत्रवः सैन्यसहिताः परिवार्ये न मूर्जिताः ॥
रुरुधुर्नगरीं तस्य राज्ञो मानधनस्य हि ॥ ९ ॥ तदा स सुरथो नाम राजा सैन्यसमावृतः ॥ निर्ययौ नगरात् स्वीयात् स
र्वशत्रुनिबर्हणः ॥ १० ॥ तदा स समरे राजा सुरथः शत्रुभिर्जितः ॥ अमात्यैर्मैत्रिभिश्चैव तस्य कोशगतं धनं ॥
॥ ११ ॥ हतं सर्वमशेषेण तदा तप्यत भूमिपः ॥ निष्काशितश्च नगरात् सराजा परमद्युतिः ॥ १२ ॥ जगामाश्वम
थारुह्य मृगयामिषतो वनं ॥ एकाकी विजने रण्ये बभ्रामो द्वातमानसः ॥ १३ ॥ मुनेः कस्यचिदागत्य स्वाश्रमं शां
तमानसः ॥ प्रशांतं जंतुसंयुक्तं मुनिशिष्यगणैर्युतं ॥ १४ ॥ उवासकंचित्कालं सराजा परमशोभने ॥ आश्रमे मु
निवर्यस्य दीर्घदृष्टेः सुमेधसः ॥ १५ ॥ एकदा समहीपालो मुनिं पूजावसानके ॥ काले गत्वा प्रणम्या शुपप्रच्छ वि
नयान्वितः ॥ १६ ॥ मुने मम मनोदुःखं बाधते चाधिसंभवं ॥ ज्ञात तत्त्वस्य भूदेवनिः प्रज्ञस्य च संततं ॥ १७ ॥
शत्रुभिर्निर्जितस्यापि हृतराज्यस्य सर्वतः ॥ तथापि तेषु मनसि मम त्वं जायते स्फुटं ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥

कोलाविध्वंसिनः कोलानाम्नीराज्ञो नगरी तस्याविध्वंसिन इत्यर्थः तदप्युक्तं प्रकृतिखण्डे दुर्गा माहात्म्ये ध्रुवस्य पौत्रो बलवान्नादिस्तु कुलनंदनः
स्वायं भुवमनोर्विशः सप्तवादी जितो द्वेयः अक्षौहिणीनां शतकं गृह्णित्वा सैन्यमेव च कोलांचवेष्टयामास सुरथस्य महीपतेः युद्धं बभूव नित्यं पूर्णं
मन्दं च नारद जिगाय सुरथं राजा ध्रुवं शोद्धवस्तदेति ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥

दे.भा.द.

॥१०॥

॥ १९ ॥ २० ॥ ब्रह्मविष्णुहराणामुद्भवोजन्मयस्याः सकाशादित्यर्थः ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ इति श्रीदेवीभागव

किंकरोमिकगच्छामिकथंशर्मलभेन्मुने ॥ त्वदनुग्रहमाशासेवदेदविदांवर ॥ १९ ॥ मुनिस्वाच ॥ आकर्ण
यमहीपालमहाश्रयकरंपरं ॥ देवीमाहात्म्यमतुलंसर्वकामप्रदंपरं ॥ २० ॥ जगन्मयीमहामायाविष्णुब्रह्मह
रोऽग्रा ॥ साबलादपहत्यैवजंतूनांमानसानिहि ॥ २१ ॥ मोहायप्रतिसंयच्छेदितिजानीहिभूमिप ॥ सासृज
त्यखिलंविश्वंसापालयतिसर्वदा ॥ २२ ॥ संहारेहररूपेणसंहरत्येवभूमिप ॥ कामदात्रीमहामायाकालरात्रि
र्दुरत्यया ॥ २३ ॥ विश्वसंहारिणीकालीकमलाकमलालया ॥ तस्यांसर्वजगज्जातंतस्यांविश्वंप्रतिष्ठितं ॥
॥ २४ ॥ लयमेप्यतितस्यांचतस्मात्सैवपरात्परा ॥ तस्यादेव्याःप्रसादश्रयस्योपरिभवेन्नृप ॥ २५ ॥ सए
वमोहमत्येतिनान्यथाधरणीपते ॥ इति श्रीदेवीभा०महा०दशमस्कंधेदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ राजोवाच ॥ का
सादेवीत्वयाप्रोक्ताब्रूहिकालविदांवर ॥ कामोहयतिसत्वानिकारणंकिंभवेद्विज ॥ १ ॥ कस्मादुत्पद्यतेदेवीकिं
रूपासाकिमात्मका ॥ सर्वमाख्याहिभूदेवकृपयाममसर्वतः ॥ २ ॥ मुनिस्वाच ॥ राजन्देव्याःस्वरूपंतेवर्ण
यामिनिशामय ॥ यथाचोत्पतितदेवीयेनवासाजगन्मयी ॥ ३ ॥ यदानारायणोदेवोविश्वंसंहृत्ययोगराट् ॥
आस्तीर्यशेषंभगवान्समुद्रेनिद्रितोभवत् ॥ ४ ॥ तदाप्रस्वापवशगोदेवदेवोजनार्दनः ॥ तत्कर्णमलसंजातौ
दानवौमधुकैटभौ ॥ ५ ॥ ब्रह्माणंहंतुमुद्युक्तौदानवौघोररूपिणौ ॥ तदाकमलजोदेवोदृष्टातौमधुकैटभौ ॥ ६ ॥
निद्रितंदेवदेवेशंचितामापदुरत्ययां ॥ निद्रितोभगवानीशोदानवौचदुरासदौ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥

तातेलकेदशमस्कंधेदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ चतुस्त्रिंशन्महापद्यैस्त्रैलोक्यक्षेमकारकं ॥ महाकालीचरित्रंचसंक्षेपेणात्रकथ्यते ॥ १ ॥
मुनिवाक्यंश्रुत्वारजापृच्छति कासादेवीति सत्वानिजीवान् कारणंकिंमोहनेइत्यर्थः ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥

टी.अ.

१०

॥१०॥

॥ ८ ॥ ९ ॥ मिद्रालक्षणयानिद्राधिष्ठात्रीमहाकालीभगवती प्रथमचरित्रदेवता अतएवसर्वप्रसूतिकाभितिविशेषसंगच्छते ॥ १० ॥
समुद्रशयनेसमुद्रवंत्यस्माद्वृत्तज्ञातानीतिसमुद्रः परमात्मासशयववासस्थानंयस्याः ब्रह्मरूपिणीत्यर्थः ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ ए
काद्वितीया एकस्वरूपाएकसंख्यारूपा सद्वितीयाद्वितीयमायावस्तुसहिता द्वायात्मिकाद्वित्वसंख्याविशिष्टपदार्थात्मिका ॥ १५ ॥ त्रयीवेदत्र

किं करोमि क्व गच्छामि कथं शर्मल्लभे ह्यहं ॥ एवं चिंतयतस्तस्य पद्मयोनेर्महात्मनः ॥ ८ ॥ बुद्धिः प्रादुर्भूता तत्त
दाकार्यप्रसाधिनी ॥ यस्यावशंगतो देवो निद्रितो भगवान्हरिः ॥ ९ ॥ तां देवीं शरणं यामि मित्रां सर्वप्रसूतिकां ॥
ब्रह्मोवाच ॥ देवदेवि जगद्धा त्रिभक्ताभीष्टफलप्रदे ॥ १० ॥ जगन्माये महामाये समुद्रशयने शिवे ॥ त्वदाज्ञावश
गाः सर्वे स्वस्वकार्यविधायिनः ॥ ११ ॥ कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिर्मदेत्कटा ॥ व्यापिमीव शगामान्यामहा
नर्दैकशेवधिः ॥ १२ ॥ महनीयामहाराध्यामायामधुमतीमही ॥ परापराणां सर्वेषां परमात्वं प्रकीर्तिता ॥ १३ ॥
लज्जापुष्टिः क्षमाकीर्तिः कांतिः कारुण्यविग्रहा ॥ कामनीया जगद्व्याजाग्रदादिस्वरूपिणी ॥ १४ ॥ परमापर
मेशात्री परनंदापरायणा ॥ एकाप्येकस्वरूपा च सद्वितीया द्वयात्मिका ॥ १५ ॥ त्रयी त्रिवर्गनिलया तुर्या तुर्यप
दात्मिका ॥ पंचमी पंचभूतेशी पृष्ठी पृष्ठेश्वरीति च ॥ १६ ॥ सप्तमी सप्तवारेशी सप्तसप्तवरप्रदा ॥ अष्टमी बसुना
थाचनवग्रहमयीश्वरी ॥ १७ ॥ नवरागकलारम्यानवसंख्यानवेश्वरी ॥ दशमी दशदिक्पूज्या दशाशा व्यापि
नीरमा ॥ १८ ॥ एकादशात्मिका चैकादशरुद्रनिषेविता ॥ एकादशीतिथिप्रीता एकादशगणाधिपा ॥ १९ ॥

यतिद्रूपा गुणत्रयरूपा वा त्रिवर्गा धर्मार्थकामाः तुर्या तुर्यावस्थारूपा तुर्यपदं ब्रह्मतदात्मिका यद्वा तुर्या तुरीयसंख्यारूपा एवमेकादिपदैरपि एक
त्वादिसंख्याएव लक्षणया ग्राह्याः यद्वा प्रतिपदादितिथयो ग्राह्याः पंचमी पंचत्वसंख्यारूपा षष्ठी षट्संख्यारूपा एवमेव षष्ठेश्वरी षष्ठः षण्णां पूर
कः पदार्थस्तस्येद्वरी एवं सर्वत्र व्याख्येयं ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.द.

॥११॥

त्रयोदशात्मिकेति मलमासेनसहत्रयोदशमासात्मिकेत्यर्थः ॥ २० ॥ २१ ॥ पंचाधिकदशीपंचदशीकामराजविद्यारूपात्रिपुरसुं

टी.अ.

११

द्वादशीद्वादशभुजाद्वादशादित्यजन्मभूः ॥ त्रयोदशात्मिकादेवीत्रयोदशगणप्रिया ॥ २० ॥ त्रयोदशाभिधाभि
न्नाविश्वेदेवाधिदैवता ॥ चतुर्दशेंद्रवरदाचतुर्दशमनुप्रसूः ॥ २१ ॥ पंचाधिकदशीविद्यापंचाधिकदशीतिथिः ॥
षोडशीषोडशभुजाषोडशेंद्रुकलामयी ॥ २२ ॥ षोडशात्मकचंद्रांशुव्याप्तदिव्यकलेवरा ॥ एंवरूपासिदेवेशि
निर्गुणेतामसोदये ॥ २३ ॥ त्वयागृहीतोभगवान्देवदेवोरमापतिः ॥ एतौदुरासदौदैत्यौविक्रांतौमधुकैटभौ
॥ २४ ॥ एतयोश्चवधार्थायदेवेशंप्रतिबोधय ॥ मुनिरुवाच ॥ एंवस्तुताभगवतीतामसीभगवत्प्रिया ॥ २५ ॥
देवदेवंतदात्यत्कामोहयामासदानवौ ॥ तदैवभगवान्विष्णुःपरमात्माजगत्पतिः ॥ २६ ॥ प्रबोधमापदेवेशो
ददृशेदानवोत्तमौ ॥ तदातौदानवौघोरौदृष्ट्वातंमधुसूदनं ॥ २७ ॥ युद्धायकृतसंकल्पौजग्मतुःसन्निधिंहरिः ॥ यु
युधेचततस्ताभ्यांभगवान्मधुसूदनः २८ ॥ पंचवर्षसहस्राणिबाहुप्रहरणोविभुः ॥ तौतदातिबलोन्मतौजग
न्मायाविमोहितौ ॥ २९ ॥ त्रियतांवरइत्येवमूचतुःपरमेश्वरं ॥ एंवतयोर्वचःश्रुत्वाभगवानादिपूरुषः ॥ ३० ॥
वब्रेवध्याबुभौमेऽद्यभवेतामितिनिश्चितं ॥ तौतदातिबलौदेवंपुनरेवोचतुर्हरिं ॥ ३१ ॥ आघांजहिनयत्रोर्वोप
यसाचपरिप्लुता ॥ तथेत्युक्त्वाभगवतागदाशंखभृतानृप ॥ ३२ ॥ कृत्वाचक्रेणवैछिन्नेजघ्नेशिरसीतयोः ॥ एंव
देवीस्समुत्पन्नाब्रह्मणासंस्तुतानृप ॥ ३३ ॥ महाकालीमहाराजसर्वयोगेश्वरेश्वरी ॥ महालक्ष्म्यास्तथोत्पत्तिं
निशामयमहीपते ॥ ३४ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेदशमस्कंधेएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ ॥ध॥

दरीविद्यातपनेत्यर्थः पंचाधिकदशीतिथिःपंचदशीतिथिरूपेत्यर्थः ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥
॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेदशमस्कंधेएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ ॥ ॥

॥११॥

अधिकैर्बवतिश्लोकैर्महालक्ष्म्याः कथानकं ॥ तथामहासरस्वत्याः संक्षेपेणात्रवर्ण्यते ॥ १ ॥ प्रतिज्ञातां महालक्ष्म्या उत्पत्तिं वर्णयति महिषीगर्भेति

मुनिरुवाच ॥ महिषीगर्भसंभूतो महाबलपराक्रमः ॥ देवान्सर्वान्पराजित्य महिषो भूज्जगत्प्रभुः ॥ १ ॥ सर्वेषां
लोकपालानामधिकारान्महासुरः ॥ बलान्निर्जित्य बुभुजे त्रैलोक्यैश्वर्यमद्भुतं ॥ २ ॥ ततः पराजिताः सर्वे देवाः स्व
र्गपरिच्युताः ॥ ब्रह्माणं च पुरस्कृत्य ते जग्मुर्लोकमुत्तमं ॥ ३ ॥ यत्रोत्तमौ देवदेवौ संस्थितौ शंकराच्युतौ ॥ वृत्तांतं
कथयामासुर्महिषस्य दुरात्मनः ॥ ४ ॥ देवानां चैव सर्वेषां स्थानानि तरसासुरः ॥ विनिर्जित्य स्वयं भुंक्ते बलवी
र्यमदोद्धतः ॥ ५ ॥ महिषासुरनामा सौदु टदैत्यो मरेश्वरौ ॥ वधोपायं वतस्याशुचिंत्यतामसुरार्दनौ ॥ ६ ॥ एवं
श्रुत्वा स भगवान् देवानामार्तियुग्वचः ॥ चकार कोपं सुबहुं तथा शंकरपद्मजौ ॥ ७ ॥ एवं कोपयुतस्यास्य हरेरा
स्यान्महीपते ॥ तेजः प्रादुरभूद्विव्यं सहस्रार्कसमद्युति ॥ ८ ॥ अथानुक्रमतस्तेजः सर्वेषां त्रिदिवौकसां ॥ शरी
रादुद्भवं प्राप हर्षयद्विबुधाधिपान् ॥ ९ ॥ यदभूच्छंभुजं तेजो मुखमस्योदपद्यत ॥ केशावभूवुर्याम्येन वैष्णवेन च
बाहवः ॥ १० ॥ सौम्येन च स्तनौ जातौ माहेंद्रेण च मध्यमः ॥ वारुणेन ततो भूपजंघोररू संवभूवतुः ॥ ११ ॥ नि
तंबौ तेजसा भूमेः पादौ ब्राह्मेण तेजसा ॥ पादांगुल्योभानवेन वासवेन करांगुलीः ॥ १२ ॥ कौबिरेण तथानासादं
ताः संजज्ञिरे तदा ॥ प्राजापत्येनोत्तमेन तेजसा वसुधाधिप ॥ १३ ॥ पावकेन च संजातं लोचनं त्रितयं शुभं ॥ सा
ध्येन तेजसा जाते भ्रुकुट्यौ तेजसो निधी ॥ १४ ॥ कर्णौ वायव्यतो जातौ तेजसो मनुजाधिप ॥ सर्वेषां तेजसा देवी
जाता महिषमर्दिनी ॥ १५ ॥ शूलं ददौ शिवो विष्णुश्चक्रं शंखं च पाशभृत् ॥ हुताशनो ददौ शक्तिं मारुतश्चापसाय
कौ ॥ १६ ॥ वज्रं महेन्द्रः प्रददौ घंटां चैरावताद्भजात् ॥ कालदंडं यमो ब्रह्मा चाक्षमालाकमंडलू ॥ १७ ॥ ॥ १८

इयं कथा पंचमस्कंधे विस्तारेणोक्ता ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ करांगुलीः करांगुल्यः आर्षप्रयोगः
॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥

दे.भा.द.

॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ सप्तमः

टी.अ.

१२

॥१२॥

दिवाकरोरभिमालारोमकूपेषुसंददौ ॥ कालःखड्गं तथाचर्मनिर्मलं सुधाधिप ॥ १८ ॥ समुद्रो निर्मलहार
मजरेचांबरेनप ॥ चूडामणिंकुंडलेष्वकटकानित्वथांगदै ॥ १९ ॥ अर्धचंद्रं निर्मलं च नूपुराणि तथाददौ ॥ ग्रैवेय
कंभूषणं च तस्यैव देव्यै मुदान्वितः ॥ २० ॥ विश्वकर्माचोर्मिकाश्च ददौ तस्यै धरापते ॥ हिमवान्बाहू नोसिंहरत्नानि
विविधानि च ॥ २१ ॥ वामपात्रं सुरापूर्णं ददौ तस्यै धनाधिपः ॥ शेषश्च भगवान्देवो मागहारं ददौ विभुः ॥ २२ ॥
अन्यैरशेषविबुधैर्मानिता सा जगन्मयी ॥ तां तुष्टुवुर्महादेवी देवामहिषपीडिताः ॥ २३ ॥ नामास्तोत्रैर्महेशानीं
जगदुद्भवकारिणीं ॥ तेषां निशम्य देवेशीस्तोत्रं विबुधपूजिता ॥ २४ ॥ महिषस्य वधार्थाय महानादं चकार ह ॥
तेन नादेन महिषश्च कितो भूदरापते ॥ २५ ॥ आससाद जगद्वात्रीं सर्वसैन्यसमावृतः ॥ ततः स युयुधेदेव्यामहि
षारूपेण शसुरः ॥ २६ ॥ शस्त्रास्त्रैर्वहुधा क्षिप्तैः पूरयन्नं वरांतरं ॥ चिक्षुरोऽग्नमणीः सेनापतिर्दुर्धरदुर्मुखः ॥ २७ ॥
बाष्कलस्ताम्रकश्चैव विडालवदनोपरः ॥ एतैश्चान्यैरसंख्यातैः संग्रामांतरसन्निभैः ॥ २८ ॥ योधैः परिवृतो
वीरो महिषोदानवोत्तमः ॥ ततः साकोपताम्राक्षी देवी लोकविमोहिनी ॥ २९ ॥ जघान यो धान्समरे देवी महिषमा
भित्तान् ॥ ततस्ते पुद्गलेष्वेव सदैव्योरोपमूर्धिताः ॥ ३० ॥ आससाद तदा देवी तूर्णमायाविशारदः ॥ रूपांतराणि सं
भेजे मायया दानवेश्वरः ॥ ३१ ॥ तानि तान्यस्य रूपाणि नाशयामास सा तदा ॥ ततो ते माद्विषं रूपांश्चिन्नाण
ममगर्दनं ॥ ३२ ॥ पाशेन बध्वा सुदृढं छित्वा खड्गेन तच्छिरः ॥ पातयामास महिषं देवी देवगणांतर्क ॥ ३३ ॥ हा
हा कृतंततः शेषसैन्यं भग्नां दिशो देश ॥ तुष्टुवुर्देवदेवेशीं सर्वदेवाः प्रमोदिताः ॥ ३४ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥

॥१२॥

निगदादीनां ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

॥ ३५ ॥

॥ ३६ ॥

॥ ३७ ॥

॥ ३८ ॥

॥ ३९ ॥

॥३५॥३६॥३७॥३८॥३९॥४०॥४१॥४२॥४३॥४४॥४५॥४६॥४७॥४८॥४९॥प्रथममदर्शनंगतापुनर्हिमालयेसुंदररूपं
 एवंलक्ष्मीःसमुत्पन्नाहिषासुरमर्दिनी ॥ राजन्शृणुसरस्वत्याःप्रादुर्भावोयथाभवत् ॥ ३५॥ एकदाशुंभना
 मासीद्वैत्योमदबलोत्कटः ॥ निशुंभश्चापितद्वातामहाबलपराक्रमः ॥ ३६ ॥ तेनसंपीडितादेवाःसर्वेभ्रष्टाश्चि
 योनृप ॥ हिमवंतमथासाद्यदेवीतुष्टुवुरादरात् ॥ ३७ ॥ देवाऊचुः ॥ जयदेवेशिभक्तानामार्तिनाशनकोविदे ॥
 दानवांतकरूपेत्वमजरामरणेऽनघे ॥ ३८ ॥ देवेशिभक्तिमुलभेमहाबलपराक्रमे ॥ विष्णुशंकरब्रह्मादिस्वरू
 पेऽनंतविक्रमे ॥ ३९ ॥ सृष्टिस्थितिकरेनाशकारिकेकांतिदायिनि ॥ महातांडवसुप्रीतेमोददायिनिमाधवि ॥
 ४० ॥ प्रसीददेवदेवेशिप्रसीदकरुणानिधे ॥ निशुंभशुंभसंभूतभयापारांबुवारिधेः ॥४१॥ उद्धरास्मान्प्रप
 न्नार्तिनाशिकेशरणागतान् ॥ एवंसंस्तुवतांतेषांत्रिदशानांधरापते ॥ ४२ ॥ प्रसन्नागिरिजाप्राहब्रूतस्तवन
 कारणं ॥ एतस्मिन्नंतरेतस्याःकोशरूपात्समुत्थिता ॥ ४३ ॥ कौशिकीसाजगत्पूज्यादेवान्प्रीत्येदमब्रवीत् ॥
 ॥ प्रसन्नाहंसुरश्रेष्ठाःस्तवेनोत्तमरूपिणी ॥ ४४ ॥ त्रियतांवरइत्युक्तेदेवाःसंवत्रिरैवरं ॥ शुंभनामावरोभ्राता
 निशुंभस्तस्यविश्रुतः ॥ ४५ ॥ त्रैलोक्यमोजसाक्रांतंदैत्येनवलशालिना ॥ तद्वधश्चित्यतांदेविदुरात्मादानवे
 श्वरः ॥ ४६ ॥ बाधतेसततंदेवितिरस्कृत्यनिजौजसा ॥ देव्युवाच ॥ देवशत्रुं पातयिष्येनिशुंभंशुंभमेवच ॥
 ४७ ॥ स्वस्थास्तिष्ठतभद्रंवःकंटकंनशयामिवः ॥ इत्युक्तादेवदेवेशीदेवान्सैद्रान्दयामयी ॥ ४८ ॥ जगामा
 दर्शनंसद्योमिषतांत्रिदिवौकसां ॥ देवाःसमागताहृष्टाःसुवर्णाद्रिगुहांशुभां ॥४९॥ चंडमुंडौपश्यतस्मभृत्यौ
 शुंभनिशुंभयोः ॥ दृष्ट्वातांचारुसर्वांगीदेवीलोकविमोहिनीं ॥ ५० ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥

त्वास्थितांतांचंडमुंडौदृष्ट्वातांवित्याह चंडमुंडाविति अत्रपंचमस्कंधोक्तकथयात्रत्योक्तकथयाचक्रचित्कचिद्विरोधोदृश्यतेसबक्तृभेदात्क
 लभेदाच्चपरिहार्यः ॥ ५० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.द.

॥१३॥

॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

कथयामासतूराज्ञेभृत्यौतौचंडमुंडकौ ॥ देवसर्वासुरश्रेष्ठरत्नभोगार्हमानद ॥ ५१ ॥ अपूर्वाकामिनीदृष्टाचा
वाभ्यांरिपुमर्दन ॥ तस्याःसंभोगयोग्यत्वमस्त्येवतवसांप्रतं ॥ ५२ ॥ तांसमानयचार्वर्गीभुंक्ष्वसौख्यसम
न्वितः ॥ तादृशीनासुरीनागीनगंधर्वीनदानवी ॥ ५३ ॥ नमानवीनापिदेवीयादृशीसःमनोहरा ॥ एवंभृत्यव
चःश्रुत्वाशुभःपरबलार्दनः ॥ ५४ ॥ दूतंसंप्रेषयामाससुग्रीवंनामदानवं ॥ सदूतस्त्वरितंगत्वादेव्याःसविध
मादरात् ॥ ५५ ॥ वृत्तांतंकथयामासदेव्यैशुभस्ययद्वचः ॥ देविशुभासुरोनामत्रैलोक्यविजयीप्रभुः ॥ ५६ ॥
सर्वेषांरत्नवस्तूनांभोक्तामान्योदिवौकसां ॥ तदुक्तंशृणुमेदेविरत्नभोक्ताहमव्ययः ॥ ५७ ॥ त्वंचापिरत्नभू
तासिभजमांचारूलोचने ॥ सर्वेषुयानिरत्नानिदेवासुरनरेषुच ॥ ५८ ॥ तानिमध्येवसुभगेभजमांकामजैरसैः
॥ देव्युवाच ॥ सत्यंवदसिहेदूतदैत्यराजप्रियंकरं ॥ ५९ ॥ प्रतिज्ञायामयापूर्वकृतासाप्यनृताकथं ॥ भवेत्तांशृ
णुमेदूतयाप्रतिज्ञामयाकृता ॥ ६० ॥ योमेदर्पविधुनुतेयोमेवलमपोहति ॥ योमेप्रतिबलोभूयात्सएवममभोग
भाक् ॥ ६१ ॥ ततएनांप्रतिज्ञामेसत्यांकृत्वासुरेश्वरः ॥ गृण्हातुपाणिंतरसातस्याशक्यंकिमत्रहि ॥ ६२ ॥ त
स्माद्गच्छमहादूतस्वामिनंब्रूहिचादृतः ॥ प्रतिज्ञांचापिमेसत्यांविधास्यतिबलाधिकः ॥ ६३ ॥ एवंवाक्यंमहा
देव्याःसमाकर्ण्यसंज्ञानवः ॥ कथयामासशुभायदेव्यावृत्तांतमादितः ॥ ६४ ॥ तदप्रियंदूतवाक्यंशुभःश्रुत्वाम
हाबलः॥कोपमाहारयामासमहांतंदनुजाधिपः॥६५॥ततोधूमाक्षनामानंदैत्यंदैत्यपतिःप्रभुः॥आदिदेशशृणुव
चोधूमाक्षममचादृतः॥६६॥तांदुष्टांकेशपाशेषुधृत्वाप्यानीयतांमम॥समीपमविलंबेनशीघ्रंगच्छस्वमेपुरः॥६७॥

॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ॥ ७० ॥

टी.अ.
१२

॥१३॥

॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ बाहनेनसिंहेन ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥

इत्यादेशंसमासाद्यदैत्येशोधूम्रलोचनः ॥ षष्ठ्यासुराणांसाहिताःसहस्राणांमहाबलः ॥ ६८ ॥ तुहिनाचलमा
साद्यदेव्याःसविधमेवसः ॥ उच्चैर्देवीजगादाशुभजदैत्यपतिंशुभे ॥ ६९ ॥ शुभंनाममहावीर्यसर्वभोगानवाप्नु
हि ॥ नोघेत्केशानगृहीत्वात्वांनेष्यदैत्यपतिंप्रति ॥ ७० ॥ इत्युक्त्वासाततोदेवीदैत्येनत्रिदशारिणा ॥ उवाचदै
त्ययदूषेतत्सत्यंतेमहाबल ॥ ७१ ॥ राजाशुभासुरस्त्वंचर्किकरिष्यासितद्वद ॥ इत्युक्तोदैत्यपोधावतूर्णशस्त्रसम
न्वितः ॥ ७२ ॥ भस्मसात्तंचकाराशुहुंकारेणमहेश्वरी ॥ ततःसैन्यंवाहनेनदेव्याभग्नंमहीपते ॥ ७३ ॥ दिशो
दशाभजच्छीघ्रंहाहाभूतमचेतनं ॥ तद्वृत्तांतंसमाश्रुत्यसशुभोदैत्यराट्त्रिभुः ॥ ७४ ॥ चुकोपचमहाकोपाद्भू
कुटीकुटिलाननः ॥ ततःकोपपरीतात्मादैत्यराजःप्रतापवान् ॥ ७५ ॥ चंडमुंडरक्तबीजंक्रमतःप्रेषयद्विभुः ॥
तेचगत्वात्रयोदैत्याविक्रांताबहुविक्रमाः ॥ ७६ ॥ देवीग्रहीतुमारब्धयत्नास्तेह्यभवन्बलात् ॥ तानापततएवा
सौजगद्वात्रीमहोत्कटा ॥ ७७ ॥ शूलंगृहीत्वावेगेनपातयामासभूतले ॥ ससैन्यान्निहताञ्छुत्वादैत्यांस्त्रीन्दा
नवेश्वरौ ॥ ७८ ॥ शुभश्चैवनिशुभश्चसमाजग्मतुरोजसा ॥ निशुभश्चैवशुभश्चकृत्वायुद्धंमहोत्कटं ॥ ७९ ॥ दे
व्याश्चवशगौजातौनिहतौचतयासुरौ ॥ इतिदैत्यवरंशुभंघातयित्वाजगन्मयी ॥ ८० ॥ विबुधैःसंस्तुतातद्वत्सा
क्षाद्वागीश्वरीपरा ॥ एवंतेवर्णितोराजन्प्रादुर्भावोतिरम्यकः ॥ ८१ ॥ काल्याश्चैवमहालक्ष्म्याःसरस्वत्याःक्रमे
णच ॥ परापरेश्वरीदेवीजगत्सर्गंकरोतिच ॥ ८२ ॥ पालनंचैवसंहारंसैवदेवीदधातिहि ॥ तांसमाश्रयदेवे
शीजगन्मोहनिवारिणीं ॥ ८३ ॥

॥ ६९ ॥

॥ ७० ॥

॥ ७१ ॥

॥ ७२ ॥

॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥

॥ ७३ ॥

॥ ७४ ॥

॥ ७५ ॥

॥ ७६ ॥

॥ ७७ ॥

॥ ७८ ॥

दे.भा.द.

॥१४॥

॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके दशमस्कंधे द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

टी.अ.
१२

महामायां पूज्यतमां साकार्येते विधास्यति ॥ श्रीनारायण उवाच ॥ इति राजावचः श्रुत्वामुनेः परमशोभनं ॥ ८४ ॥
देवीं जगाम शरणं सर्वकामफलप्रदां ॥ निराहारो यतात्मा च तन्मनाश्च समाहितः ॥ ८५ ॥ देवीमूर्तिं मृन्मयीं च पू-
जयामास भक्तितः ॥ पूजनांते बलितस्यै निजगात्रामृजं ददत् ॥ ८६ ॥ तदा प्रसन्ना देवेशी जगद्योनिः कृपावती ॥
प्रादुर्बभूव पुरतो वरं ब्रूहीति भाषिणी ॥ ८७ ॥ सराजानि जमोहस्य नाशनं ज्ञानमुत्तमं ॥ राज्यं निष्कण्टकं चैव या-
चति स्म महेश्वरी ॥ ८८ ॥ देव्युवाच ॥ राजन्निष्कण्टकं राज्यं ज्ञानं वै मोहनाशनं ॥ भविष्यति मया दत्तमास्मिन्नेव
भवेत्तव ॥ ८९ ॥ अन्यच्च शृणु भूपाल जन्मान्तरविबोध्यं ॥ भानोर्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता भवान् ॥ ९० ॥
तत्र मन्वंतरस्यापि पितृबहुविक्रमं ॥ संततिं बहुलां चापि प्राप्स्यसे मद्वराद्भवान् ॥ ९१ ॥ एवं दत्वा वरं देवी जगा-
मादर्शनं तदा ॥ सोऽपि देव्याः प्रसादेन जातो मन्वंतराधिपः ॥ ९२ ॥ एवं ते वर्णितं साधो सावर्णेर्जन्मकर्म च ॥ ए-
तत्पठन् तथा शृण्वन् देव्यनुग्रहमाप्नुयात् ॥ ९३ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे दशमस्कंधे देवीमहात्म्ये द्वाद-
शोऽध्यायः ॥ १२ ॥ श्रीनारायण उवाच ॥ अथातः श्रूयतां शेषमनूनां चित्रमुद्भवं ॥ यस्य स्मरणमात्रेण देवी भक्तिः
प्रजायते ॥ १ ॥ आसन्वैवस्वतमनोः पुत्राः षड्विंशतिरदयाः ॥ करूपश्च पृथग्धश्च नाभागो दिष्ट एव च ॥ २ ॥ श-
र्यातिश्च त्रिशंकुश्च सर्व एव महाबलाः ॥ ततः षडेव ते गत्वा कालिं द्यास्तीरमुत्तमं ॥ ३ ॥ निराहारा जितश्वासाः पूजां
चक्रुस्ततः स्थिताः ॥ देव्यामहीमयीं मूर्तिं विनिर्माय पृथक् पृथक् ॥ ४ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥

सतविंशतियुक्ते श्वशतश्लोकैरुतः परं ॥ मनूनामवशिष्टानां पण्णां वृत्तमुदीर्यते ॥ १ ॥ अष्टमनूनां वृत्तमभिधाया वशिष्टपण्मनूनां वृत्तं कीर्तयति
अथात इति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥१४॥

॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ आत्मन्येव स्वात्मन्येव सर्वे जगदंशं जगाम सर्वाधिष्ठानब्रह्मरूपदेव्याः साक्षात्कारस्तेषां जातइति भावः तथा च मनुः
सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि संपश्यन्नात्मया जीवैः स्वराज्यमधिगच्छतीति तदद्भुतमिवेति यद्योगादिभिरपि वस्तुन प्राप्यते तत्के

विविधैरुपचारैस्तां पूजयामासुरादृताः ॥ ततश्च सर्वएवैते तपःसारा महाबलाः ॥ ५ ॥ जीर्णपर्णाशनावायुभक्ष
णास्तोयजीवनाः ॥ धूम्रपानारश्मिपानाः क्रमशश्च बहुश्रमाः ॥ ६ ॥ ततस्तेषामादरेणाराधनं कुर्वतां सदा ॥ वि
मलामतिरुत्पन्ना सर्वमोहविनाशिनी ॥ ७ ॥ बभूवुर्मनुपुत्रास्ते देवीपादैकचित्तनाः ॥ मत्याविमलयातेषां आत्म
न्येवाखिलं जगत् ॥ ८ ॥ दर्शनं संजगामाशुतदद्भुतमिवाभवत् ॥ एवं द्वादशवर्षां तपसा जगदीश्वरी ॥ ९ ॥
प्रादुर्बभूव देवेशी सहस्रार्कसमद्युतिः ॥ तां दृष्ट्वा विमलात्मानो राजपुत्राः षडेवते ॥ १० ॥ तुष्टुवुर्भक्तिनम्राः तः क
रणाभावसंयुताः ॥ राजपुत्रा ऊचुः ॥ महेश्वरिजयेशानि परमेकरूपालये ॥ ११ ॥ वाग्भवाराधनं प्रीतिवाग्भ
वप्रतिपादिते ॥ ह्रींकारविग्रहे देवि ह्रींकारप्रीतिदायिनि ॥ १२ ॥ कामराजमनोमोददायिनी श्वरतोषिणि ॥
महामाये मोदपरे महासाम्राज्यदायिनि ॥ १३ ॥ विष्णुर्वर्कहरशक्रादिस्वरूपे भोगवर्द्धिनि ॥ एवं स्तुता भगव
ती राजपुत्रैर्महात्मभिः ॥ १४ ॥ प्रसादसुमुखी देवी प्रोवाच वचनं शुभं ॥ देव्युवाच ॥ राजपुत्रा महात्मानो भवं
तस्तपसा युताः ॥ १५ ॥ निष्कल्मषाः शुद्धधियो जाता वै मदुपासनात् ॥ वरं मनोगतं सर्वं याचध्वं मा विलंबितं
॥ १६ ॥ प्रसन्नाहं प्रदास्यामि युष्माकं मनासि स्थितं ॥ राजपुत्रा ऊचुः ॥ देवि निष्कण्ठं कं राज्यं संततिश्चिरजीवि
मी ॥ १७ ॥ भोगा अव्याहताः कामं यशस्तेजो मतिश्च ह ॥ अकुंठितत्वं सर्वेषामेष एव रोहितः ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥

वलं भगवत्याराधनेनात्मस्वरूपं लब्धमित्याश्चर्यं लोका नाम भवदित्यर्थः ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ कामराजः
कामेश्वरः ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥

दे.भा.द.

॥१५॥

॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ भामरीजगदंबिकेति अनेनचैतेषामनवोभ्रामर्यादेवतायाउपासकाइतिबोधितं ॥ २२ ॥ २३ ॥
श्रीदेव्युवाच ॥ एवमस्तुचसर्वेषांभवतांयन्मनोगतं ॥ अथान्यदपिमेवाक्यंश्रूयतामादरादिदं ॥ १९ ॥ भवं
तःसर्वएवैतेमन्वंतरपतीश्वराः ॥ संतत्यादीर्घयाभोगैरनेकैरपिसंगमः ॥ २० ॥ अखंडितबलैश्वर्ययशस्तेजो
विभूतयः ॥ भवितारोमत्प्रसादाद्राजपुत्राःक्रमेणतु ॥ २१ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ एवंचैतेभ्योवरान्दत्त्वाभ्राम
रीजगदंबिका ॥ अंतर्धानंजगामाशुभक्त्यातैःसंस्तुतासती ॥ २२ ॥ तेराजपुत्राःसर्वेपितस्मिन्जन्मन्यनुत्तमं
॥ राज्यमहीगतान्भोगान्बुभुजुश्चमहौजसः ॥ २३ ॥ संतर्तिवाखंडितांतेसमुत्पाद्यमहीतले ॥ वंशंसंस्थाप्य
सर्वेपिमनूनांपतयोऽभवन् ॥ २४ ॥ भवांतरेक्रमेणैवसावर्णिपदभागिनः ॥ प्रथमोदक्षसावर्णिर्नवमोमनुरीरि
तः ॥ २५ ॥ अव्याहतबलोदेव्याःप्रसादादभवद्विभुः ॥ द्वितीयोमेरुसावर्णिर्दशमोमनुरेवच ॥ २६ ॥ बभूवम
न्वंतरपोमहादेवीप्रसादतः ॥ तृतीयोमनुरारूपातःसूर्यसावर्णिर्नामकः ॥ २७ ॥ एकादशोमहोत्साहोतपसा
स्वेनभावितः ॥ चतुर्थश्चंद्रसावर्णिर्द्वादशोमनुराद्विभुः ॥ २८ ॥ देवीसमाराधनेनजातोमन्वंतरेश्वरः ॥ पं
चमोरुद्रसावर्णिस्त्रयोदशमनुःस्मृतः ॥ २९ ॥ महाबलोमहासत्वोबभूवजगदीश्वरः ॥ षष्ठश्चविष्णुसावर्णिश्च
तुर्दशमनुःकृती ॥ ३० ॥ बभूवदेवीवरतोजगतांप्रथितःप्रभुः ॥ चतुर्ह्रैतेमनवोमहातेजोबलैर्युताः ॥ ३१ ॥
देव्याराधनतःपूज्यावंद्यालोकेषुनित्यशः ॥ महाप्रतापिनःसर्वेभ्रामर्यास्तुप्रसादतः ॥ ३२ ॥ नारदउवाच ॥
केयंसाभ्रामरीदेवीकथंजाताकिमात्मिका ॥ तदारूपांनंदप्राज्ञाविविचित्रंशोकनाशकं ॥ ३३ ॥ ॥ ७४ ॥

॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ भामर्यास्तुप्रसादतइतिभु
त्वापृच्छति नारदउवाच केयमिति ॥ ३३ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥

टी.अ.

१३

॥१५॥

अस्यश्रवणमात्रेणैवमृत्युर्नास्तीत्यर्थः ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ अरुणाख्यः अयंविप्रचित्तिवंशोद्भवइतिपुराणांतरेस्पष्टं ॥ ३७ ॥

नतृप्तिमधिगच्छामिपिवन्देवीकथामृतं ॥ अमृतंपिबतामृत्युर्नास्यश्रवणतोयतः ॥ ३४ ॥ नारदउ० ॥ शृणु
नारदवक्ष्यामिजगन्मातुर्विचेष्टितं ॥ अर्चित्याव्यक्तरूपायाविचित्रमोक्षदायकं ॥ ३५ ॥ यद्यच्चरित्रंश्रीदेव्या
स्तत्सर्वलोकहेतवे ॥ निर्व्याजयाकरुणयापुत्रेमातुर्यथातथा ॥ ३६ ॥ पूर्वदैत्योमहानासीदरुणाख्योमहाबलः
पातालेदैत्यसंस्थानेदेवद्वेषीमहाखलः ॥ ३७ ॥ सदेवान्जेतुकामश्चकारपरमंतपः ॥ पद्मसंभवमुद्दिश्यसन
स्त्राताभविष्यति ॥ ३८ ॥ गत्वाहिमवतःपार्श्वेगंगाजलसुशीतले ॥ पक्वपर्णाशनोयोगीसंनिरुध्यमरुद्गणं ॥ ३९ ॥
गायत्रीजपसंसक्तःसकामस्तमसायुतः ॥ दशवर्षसहस्राणिततोवारिकणाशनः ॥ ४० ॥ दशवर्षसहस्राणि
ततःपवनभोजनः ॥ दशवर्षसहस्राणिनिराहारोभवत्ततः ॥ ४१ ॥ एवंपश्यतस्तस्यशरीरादुत्थितोनलः ॥
ददाहजगतींसर्वातदद्भुतमिवाभवत् ॥ ४२ ॥ किमिदंकिमिदंचेतिदेवाःसर्वेचकांपिरे ॥ संत्रस्ताःसकलालोका
ब्रह्माणंशरणंययुः ॥ ४३ ॥ विज्ञापितंदेववरैःश्रुत्वातत्रचतुर्मुखः ॥ गायत्रीसहितोहंससमारूढोययौमुदा ॥
॥ ४४ ॥ प्राणमात्रावशिष्टंतंधमनीशतसंकुलं ॥ शुष्कोदरंक्षामगात्रंध्यानमीलितलोचनं ॥ ४५ ॥ ददर्शतेज
सादीप्तद्वितीयमिवपावकं ॥ वरंवरयभद्रंतेवत्सयन्मनसिस्थितं ॥ ४६ ॥ श्रुतिमात्रेणसंतोषकारकंवाक्यमू
चिवान् ॥ श्रुत्वाब्रह्ममुखाद्वाणींसुधाधारामिवारुणः ॥ ४७ ॥ उन्मीलिताक्षःपुरतोददर्शजलजोद्भवं ॥ गाय
त्रीसहितंदेवंचतुर्वेदसमन्वितं ॥ ४८ ॥ अक्षस्त्रक्कुंडिकाहस्तंजपंतंब्रह्मशाश्वतं ॥ दृष्ट्वोत्थायननामाथस्तु
त्वाच्चविविधैःस्तवैः ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥

॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ब्रह्मप्रणवंगायत्रीवाजपंतं ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥

दे.भा.द.

॥१६॥

॥५०॥५१॥५२॥ नपुंभ्योनापियोषितइति अत्रस्त्रीपुंशब्देनमनुष्याकारावेवस्त्रीपुमांसौगृह्येतेनपुरुषमात्रंनवास्त्रीलिंगमात्रं अन्यथाद्विपाश्च
तुष्पादादीनामपिस्त्रीपुंसोरेवांतर्भावत्तेषांपुनर्ग्रहणव्यर्थमेवस्यादतएवदेव्याःस्त्रीपुंरूपैर्भूमरैर्दैत्यस्यवधेकृतेपिनदोषइतिबोध्यं॥५३॥नोभयादि

टी.अ.
१३

वरंवब्रेस्वबुद्धिस्थंमाभवेन्मृत्युरित्यपि ॥ श्रुत्वारुणवचोब्रह्माबोधयामाससादरं ॥ ५० ॥ ब्रह्मविष्णुमहेशा
द्यामृत्युनाकवलीकृताः ॥ तदान्येषांतुकावार्तामरणेदानवोत्तमं ॥ ५१ ॥ वरंयोग्यंततोब्रूहिदातुंयःशक्यतेम
या ॥ नात्राग्रहंप्रकुर्वतिबुद्धिमंतोजनाःक्वचित् ॥ ५२ ॥ इतिब्रह्मवचःश्रुत्वापुनःप्रोवाचसादरं ॥ नयुद्धेनचश
स्त्रास्त्रान्नपुंभ्योनापियोषितः ॥ ५३ ॥ द्विपाद्भ्योवाचतुष्पाद्भ्योनोभयाकारतस्तथा ॥ भवेन्मेमृत्युरित्येवंदेवदेहि
वरंप्रभो ॥ ५४ ॥ बलंचविपुलंदेहियेनदेवजयोभवेत् ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वातथास्त्वितिवचोब्रवीत् ॥ ५५ ॥
दत्त्वावरंजगमाशुपद्भजःस्वन्निकेतनं ॥ ततोरुणाख्योदैत्यस्तुपातालात्स्वाश्रयस्थितान् ॥ ५६ ॥ दैत्याना
कारयामासब्रह्मणोवरदर्पितः ॥ आगत्यतेसुराःसर्वेदैत्येशंतंप्रचक्रिरे ॥ ५७ ॥ दूतंचप्रेषयामासुर्युद्धार्थममरा
वर्ती ॥ दूतवाक्यंतदाश्रुत्वादेवराट्भयकंपितः ॥ ५८ ॥ देवैःसार्द्धंजगमाशुब्रह्मणःसदनंप्राति ॥ ब्रह्मविष्णुपुर
स्कृत्यजग्मुस्तेशंकरालयं ॥ ५९ ॥ विचारंचक्रिरेतत्रवधार्थंतेसुरद्रुहां ॥ एतस्मिन्समयेतत्रदैत्यसेनासमावृ
तः ॥ ६० ॥ अरुणाख्योदैत्यराजोजगमाशुत्रिविष्टपं ॥ सूर्येन्दुयमवन्हीनामाधिकारान्पृथक्पृथक् ॥ ६१ ॥ स्व
यंचकारतपसानानारूपधरोमुने ॥ स्वस्वस्थानच्युताःसर्वेजग्मुःकैलासमंडलं ॥ ६२ ॥ शशंसुःशंकरंदेवाः
स्वस्वदुःखंपृथक्पृथक् ॥ महान्विचारस्तत्रासीत्किंकर्तव्यमतःपरं ॥ ६३ ॥ नयुद्धेनचशस्त्रैर्नपुंभ्योनापि
योषितः ॥ द्विपाद्भ्योवाचतुष्पाद्भ्योनोभयाकारतोपिवा ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥

पाञ्चतुष्पाद्रूपनारसिंहगजाननाद्युभयात्मकरूपान्नपुंसकरूपाश्चेत्यर्थः भमराणांषट्पदत्वान्नद्विपाञ्चतुष्पात्त्वां॥५४॥५५॥५६॥५७॥५८॥
॥५९॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥

॥१६॥

॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ जाबूनदेश्वरीं अष्टमस्कंधोक्तजंब्वादेनेश्वरीमित्यर्थः ॥ ७१ ॥

मृत्युर्भवेदिति ब्रह्माप्रोवाच वचनं यतः ॥ इति चिंतातुराः सर्वे कर्तुं किंचिन्न चक्षमाः ॥ ६५ ॥ एतस्मिन् समये
तत्र वागभूदशरीरिणी ॥ भजध्वं भुवनेशानीं सावः कार्यं विधास्यति ॥ ६६ ॥ गायत्रीजपसंस्कोदैत्यराड्य
दितां त्यजेत् ॥ मृत्युयोग्यस्तदाभूयादित्युच्चैस्तोपकारिणी ॥ ६७ ॥ श्रुत्वा देवीं तथा वाणीं मंत्रयामासु
रादृताः ॥ बृहस्पतिं समाहूय वचनं प्राह देवराट् ॥ ६८ ॥ गुरो गच्छ सुराणां तु कार्यार्थं मसुरं प्रति ॥ य
था भवेच्च गायत्रीत्यागस्तस्य तथा कुरु ॥ ६९ ॥ अस्माभिः परमेशानीं सेव्यते ध्यानयोगतः ॥ प्रसन्नासा
भगवती साहाय्यं ते करिष्यति ॥ ७० ॥ इत्यादिश्य गुरुं सर्वे जग्मुर्जीबूनदेश्वरीं ॥ सास्मान्दैत्यभयत्र
स्तान्पालयिष्यति शोभना ॥ ७१ ॥ तत्र गत्वा तपश्चर्याचक्रुः सर्वे सुनिष्ठिताः ॥ मायाबीजजपासक्ता देवी
मखपरायणाः ॥ ७२ ॥ बृहस्पतिस्ततः शीघ्रं जगामासुरसन्निधौ ॥ आगतं मुनिवर्यं तं प्रच्छाथ सदैत्य
राट् ॥ ७३ ॥ मुने कुत्रागमः कस्मात्किमर्थमिति मेवद ॥ नाहं युष्मत्पक्षपाती प्रत्युतारातिरेव च ॥ ७४
॥ इति तस्य वचः श्रुत्वा प्रोवाच मुनिनायकः ॥ अस्मत्सेव्या च या देवी सा त्वया पूज्यतेऽनिशं ॥ ७५ ॥
तस्मादस्मात्पक्षपाती न भवेस्त्वं कथं वद ॥ इति तस्य वचः श्रुत्वा मोहितो देवमायया ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥

देवीमखः पूर्वोक्तो देवीवज्रः ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ अरातिः शत्रुः तथा च शत्रुगृहे तवागमनमनुचितमिति भावः ॥ ७४ ॥ ७५ ॥
॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥

दे.भा.द.

॥१७॥

तत्याजेति ननु बृहस्पतिवाक्यश्रवणमात्रेण कथं तेन स्वेष्टे देवतामायत्रीत्युक्तेति चेत्स्वेष्टे देवतात्यागो भवतु सर्वस्वनाशो वा भवतु तथापि देवपक्षपातित्वं
स्वीकरिष्यामीत्याशयात् इत्थं देवेष्टे पिकारणं तु मोहितो देवमाययेति मूले एवोक्तं देवसेवया जांबूनदेवरीप्रसन्नादैत्यमुमोह सच मोहितो दैत्य ए
वमभिमानेन गायत्रीतत्याजेतितदर्थः ननु देव्यापि स्त्रोपासको दैत्यः कथं मोहित इति चेन्न सकामस्तमसा युत इति पूर्वोक्तवचनेन तस्य निष्कामोपा

टी.अ.

१३

तत्याजपरमं मंत्रमभिमानेन सत्तम ॥ गायत्रीत्यागतो दैत्यो निस्तेजस्को बभूव ह ॥ ७७ ॥ कृतकार्यो गुरु
स्तस्मात्स्थानान्निर्गतवान् पुनः ॥ ततो वृत्तांतमखिलं कथयामास वज्रिणे ॥ ७८ ॥ संतु शस्ते सुराः सर्वे भेजि
रे परमेश्वरीं ॥ एवं बहुगते काले कस्मिंश्चित्समये मुने ॥ ७९ ॥ प्रादुरासीजगन्माता जगन्मंगलकारिणी
॥ कोटिसूर्यप्रतीका शाकोटिकं दर्पसुंदरा ॥ ८० ॥ चित्रानुलेपना देवी चित्रवासो युगान्विता ॥ विचित्र
माल्याभरणा चित्रभ्रमरमुष्टिका ॥ ८१ ॥ वराभयकरा शांता करुणामृतसागरा ॥ नानाभ्रमरसंयुक्तपु
ष्पमालाविराजिता ॥ ८२ ॥ भ्रमरीभिर्विचित्राभिरसंख्याभिः समावृता ॥ भ्रमरैर्गायमानैश्च ह्रींकार
मनुमन्वहं ॥ ८३ ॥ समंततः परिवृता कोटिकोटिभिरंबिका ॥ सर्वशृंगारवेषाढ्या सर्ववेदप्रशंसिता ॥ ८४ ॥
सर्वात्मिका सर्वमयी सर्वमंगलरूपिणी ॥ सर्वज्ञा सर्वजननी सर्वासर्वेश्वरी शिवा ॥ ८५ ॥ दृष्ट्वा तां तरलात्मानो दे
वा ब्रह्मपुरोगमाः ॥ तुष्टुवुर्हृष्टमनसो विष्टरश्रवसं शिवां ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥

सकत्वाभावात् निष्कामोपासक एवे देवानां प्रियो भवति नान्य इति तु बृहदारण्यके पुराणां तेषु च स्पष्टं ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥
चित्रभ्रमरामुष्टाय स्याः सा ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ह्रींकारमनु ह्रींकारमंत्रं गायमानैर्भ्रमरैरित्यन्वयः एतेन सर्वे देवीनिकटस्था ह्रींकारमं
त्रजपशालिनो भवन्तीति बोधितं ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ विष्टरश्रवसं विष्टरावेदास्तेषु भवः श्रवणं यस्याः सा विष्टरेभ्यो वा श्रवो य
स्याः सा तविदप्रतिपाद्यामित्यर्थः ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥

॥१७॥

॥ ८७ ॥ ८८ ॥ अर्गलाशुंखला भर्गोपास्यभर्गो विद्यादिभर्जनादृष्टिः ॥ ८९ ॥ कालिकादयोदशमहाविद्यास्त्रोत्रेषुप्रसिद्धाः ॥ ९० ॥
 ॥ देवाउचुः ॥ नमोदेविमहाविद्येसृष्टिस्थित्यतकारिणि ॥ नमःकमलपत्राक्षिसर्वाधारेनमोस्तुते ॥ ८७ ॥ स
 विश्वतैजसप्राज्ञविराट्सूत्रात्मिकेनमः ॥ नमोव्याकृतरूपायैकूटस्थयिनमोनमः ॥ ८८ ॥ दुर्गेसर्गादिरहिते
 दुष्टसंरोधनार्गले ॥ निर्गलप्रेमगम्येभर्गेदेविनमोस्तुते ॥ ८९ ॥ नमःश्रीकालिकेमातर्नमोनीलसरस्वति ॥
 उग्रतारिमहोग्रेतेनित्यमेवनमोनमः ॥ ९० ॥ नमःपीतांबरदेविनमस्त्रिपुरसुंदरि ॥ नमोभैरविमातांशिधूमा
 वतिनमोनमः ॥ ९१ ॥ छिन्नमस्तेनमस्तेस्तुक्षीरसागरकन्यके ॥ नमःशाकंभरिशिवेनमस्तेरक्तदंतिके ॥
 ॥ ९२ ॥ निशुंभशुंभदलनिरक्तबीजविनाशिनि ॥ धूम्रलोचननिर्नाशिवृत्रासुरनिबर्हिणि ॥ ९३ ॥ चंडमुंडप्रम
 थिनिदानवांतकरेशिवे ॥ नमस्तेविजयेगंगेशारदेविकचानने ॥ ९४ ॥ पृथ्वीरूपेदयारूपेतेजोरूपेनमोनमः
 प्राणरूपेमहारूपेभूतरूपेनमोस्तुते ॥ ९५ ॥ विश्वमूर्तेदयामूर्तेधर्ममूर्तेनमोनमः ॥ देवमूर्तेज्योतिमूर्तेज्ञानमू
 र्तेनमोस्तुते ॥ ९६ ॥ गायत्रीवरदेदेविसावित्रिचसरस्वति ॥ नमःस्वाहेस्वधेमातर्दक्षिणेतेनमोनमः ॥ ९७
 नेतिनेतीतिवाक्यैर्याबोध्यतेसकलागमैः ॥ सर्वप्रत्यक्स्वरूपांतांभजामःपरदेवतां ॥ ९८ ॥ भ्रमरैर्वेष्टिताय
 स्माद्भ्रमरीयाततःस्मृता ॥ तस्यैदेव्येनमोनित्यंनित्यमेवनमोनमः ॥ ९९ ॥ नमस्तेपार्श्वयोःपृष्ठेनमस्तेपुर
 तौंबिके ॥ नमऊर्ध्वेनमश्वाघःसर्वत्रैवनमोनमः ॥ १०० ॥ कृपांकुरुमहादेविमणिद्वीपाधिवासिनि ॥ अनंत
 कोटिब्रह्मांडनायिकेजगदंबिके ॥ १ ॥ जयदेविजगन्मातर्जयदेविपरात्परे ॥ जयश्रीभुवनेशानिजयस
 र्वोत्तमोत्तमे ॥ २ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥
 पीतांबरगलामुखी ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ भ्रमरैर्वेष्टिताय भ्रमराणामियंस्वामिनीभ्रा
 मरीत्यर्थेतस्येदमि यणंतातुडोप ॥ ९९ ॥ १०० ॥ १ ॥ २ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.द.

॥१८॥

जगतोरणेनमयोने ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ मटचीयूथवदिति मटचशिब्देनशलभादछांदो

टी.अ.

१३

कल्याणगुणरत्नानामाकरेभुवनेश्वरि ॥ प्रसीदपरमेशानिप्रसीदजगतोरणे ॥३॥ नारायणउवाच ॥ इतिदेव
वचःश्रुत्वाप्रगल्भंमधुरंवचः ॥ उवाचजगदंबासामत्तकोकिलभाषिणी ॥ ४ ॥ देव्युवाच ॥ प्रसन्नाहंसदादेवा
वरदेशशिखामणिः ॥ ब्रुवंतुविबुधाःसर्वेयदेवस्याच्चिकीर्षितं ॥ ५ ॥ देवीवाक्यंसुराःश्रुत्वाप्रोचुर्दुःखस्यकारणं
॥ दुष्टदैत्यस्यचरितंजगद्वाधाकरंपरं ॥ ६ ॥ देवब्राह्मणवेदानांहेलनंनाशनंतथा ॥ स्थानभ्रंशंसुराणांचकथया
मासुरादृताः ॥ ७ ॥ ब्रह्मणोवरदानंचयथावत्तेसमूचिरे ॥ श्रुत्वादेवमुखाद्वाणीमहाभगवतीतदा ॥ ८ ॥ प्रेर
यामासहस्तस्थान्भ्रमरान्भ्रामरीतदा ॥ पार्श्वस्थानग्रभागस्थान्नानारूपधरांस्तदा ॥ ९ ॥ जनयामासबहुशो
यैर्व्याप्तंभुवनत्रयं ॥ मटचीयूथवत्तेषांसमुदायस्तुनिर्गतः ॥ ११० ॥ तदांतरिक्षंतैर्व्याप्तमंधकारःक्षितावभूत् ॥
दिविपर्वतशृंगेषुद्रुमेषुविपिनेष्वपि ॥ १११ ॥ भ्रमराएवसंजातास्तदद्भुतमिवाभवत् ॥ तेसर्वेदैत्यवक्षांसिदार
यामासुरुद्रताः ॥ ११२ ॥ नरंमधुहरंयद्वन्मक्षिकाःकोपसंयुताः ॥ उपायो न च शस्त्राणांतथास्त्राणांतदाभवत् ॥
॥ ११३ ॥ नयुद्धंनचसंभाषकेवलंमरणंखलु ॥ यस्मिन्यस्मिंस्थलेयेयेस्थितादैत्यायथायथा ॥ ११४ ॥ तत्रैव
चतथासर्वेमरणंप्रापुरुस्मयाः ॥ परस्परंसमाचारोनकस्याप्यभवत्तदा ॥ ११५ ॥ क्षणमात्रेणतेसर्वेविनष्टा
दैत्यपूंगवाः ॥ कृत्वेत्थंभ्रमराःकार्येदेवीनिकटमाययुः ॥ ११६ ॥ आश्चर्यमेतदाश्चर्यमितिलोकाःसमूचिरे ॥ किं
चित्रंजगदंबायायस्यामायेयमीदृशी ॥ ११७ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥

ग्यभाष्ये मटचीहृतेषुकुक्षिप्रतिश्रुतौमटचीशब्देनकरकागृहीतास्तावामटचीशब्देनोच्यंते ॥ ११० ॥ १११ ॥ ११२ ॥ मधुहरंमा
क्षिकहरं ॥ ११३ ॥ ११४ ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥१८॥

इ.भा.द ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ ५२ ॥ २६ ॥ १२७ ॥ श्रीमच्छैवकुलीत्पन्नोरंगनाथात्मजः

टी.अ.

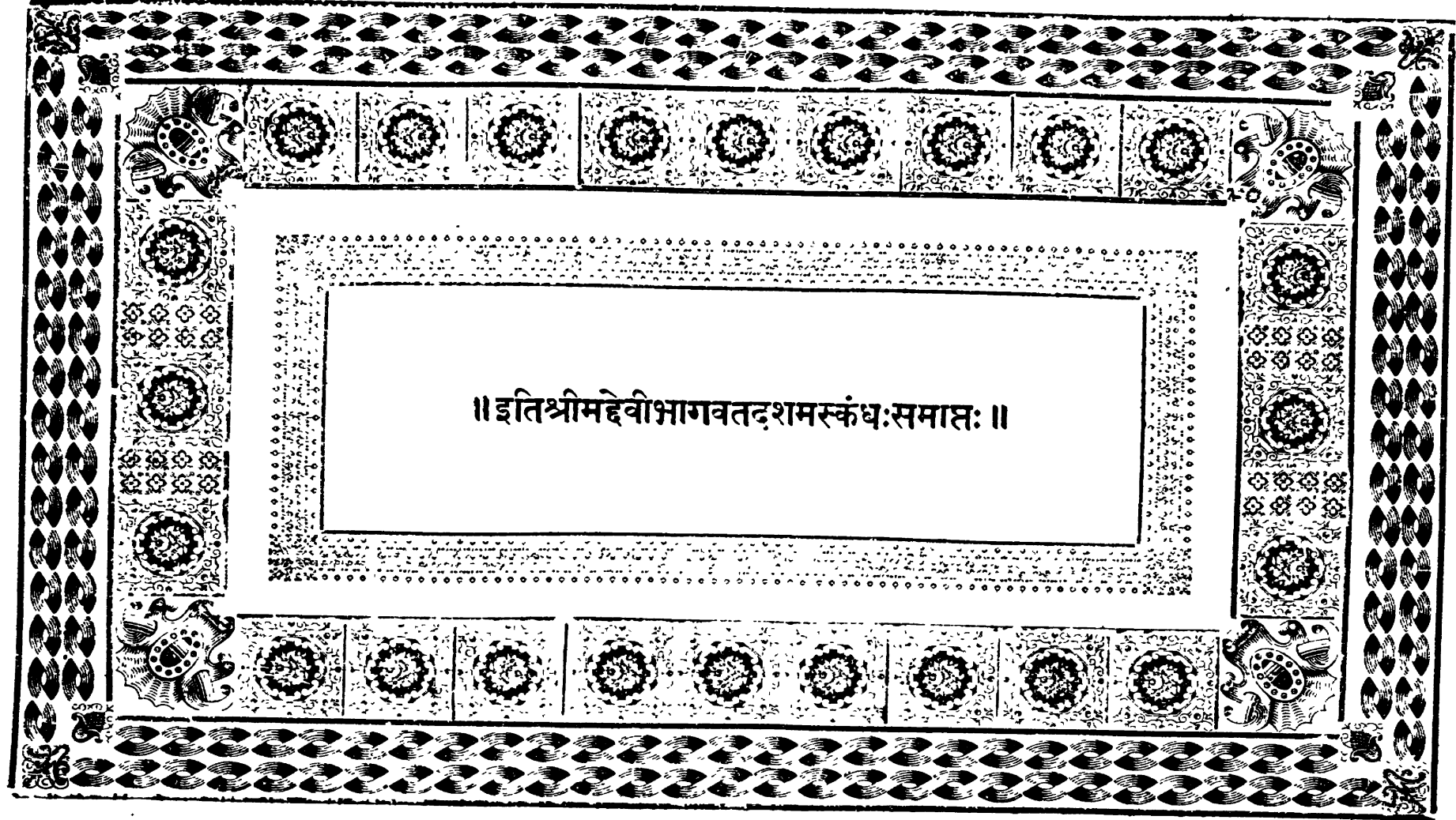
१३

१९९॥

ततोदेवगणाःसर्वेब्रह्मविष्णुपुरोगमाः ॥ निमग्राहर्षजलधौपूजयामासुरंबिकां ॥ १८ ॥ नानोपचारैर्वि
विधैर्नानोपायनपाणयः ॥ जयशब्दंप्रकुर्वाणामुमुचुःसुमनांसिच ॥ १९ ॥ दिविदुंदुभयोनेदुर्ननृतुश्चा
प्सरोगणाः ॥ पेटुर्वेदान्मुनिश्रेष्ठागंधर्वाद्याजगुस्तथा ॥ २० ॥ मृदंगमुरजावीणाढक्काडमरुनिःस्वनैः
॥ घंटाशंखनिनादैश्चव्याप्तमासीज्जगन्नयं ॥ २१ ॥ नानास्तोत्रैस्तदास्तुत्वामूर्ध्याधायांजलींस्तदा ॥
जयमातर्जयेशानीत्येवंसर्वेसमूचिरे ॥ २२ ॥ ततस्तुष्टामहादेवीवरान्दत्त्वापृथक्पृथक् ॥ स्वस्मिंश्चवि
पुलांभक्तिंप्रार्थितांतैर्ददौचतां ॥ २३ ॥ पश्यतामेवदेवानामंतर्धानंगताततः ॥ इतितेसर्वमास्यातंभ्रा
मर्याश्चरितंमहत् ॥ २४ ॥ पठतांशृण्वतांचैवसर्वपापप्रणाशनं ॥ श्रुतमाश्चर्यजनकंसंसारार्णवतार
कं ॥ २५ ॥ एवमनूनांसर्वेषांचरितंपापनाशनं ॥ देवीमाहात्म्यसंयुक्तंपठन्शृण्वन्शुभप्रदं ॥ २६ ॥
यश्चैतत्पठतेनित्यंशृणुयाद्योऽनिशंनरः ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तोदेवीसायुज्यमाप्नुयात् ॥ १२७ ॥ इतिश्रीदेवी
भागवतेमहापुराणेदशमस्कंधेत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ ॥ ६५ ॥ दशमस्कंधःसमाप्तः ॥ १० ॥

सुधीः ॥ श्रीलक्ष्मीगर्भसंभूतोनीलकंठोभिधानतः ॥ १ ॥ देवीभागवतव्याख्यांतिलकाख्यांससर्जयां ॥ दशमस्कंधेतस्याःसमाप्तोभूच्छुभा
र्थदः ॥ २ ॥ इतिश्रीशैवोपनामकरंगभट्टसुतलक्ष्मीगर्भजनीलकंठकृतेदेवीभागवतव्याख्यानेतिलकाभिधेदशमस्कंधेत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

॥१९॥



॥ इति श्रीमद्देवीभागवतदशमस्कंधः समाप्तः ॥

॥ अथ श्रीमद्देवीभागवतएकादशस्कंधप्रारंभः ॥

दे.भा.ए.

॥ १ ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ असारेसंसारेकिमपि न हि सारं भगवतीपदांभोजादन्यत्सुखकरमहोमोक्षजनकं ॥ ततोहित्वा सर्वधनसुतकलत्रादिकमुमा
पदांभोजं शश्वन्नमतजपतध्यायतजनाः ॥ १ ॥ अर्धाधिको नर्पचाशत्संख्यैः पदैरतः परं ॥ सदाचारप्रसंगेन प्रातः कृत्यं समुच्यते ॥ १ ॥ तत्राष्टमस्कं
धेमन्वन्तरेषु सर्वेषु यदा दूषेण पूज्यते यस्मिन् यस्मिन् श्वैस्थाने येन येन च कर्मणेति जनमेजयप्रश्नवाक्ये चकारेण सदाचारस्यापि संगृहीतत्वात् सदाचार
स्यापिराज्ञः प्रश्नाविषयत्वेन तं सदाचारमपि नारदाय नारायणेनोक्तमेव कथायिष्यामीत्यभिप्रायेणैकादशद्वादशस्कंधावारभ्यंते तत्र नारदोष्टमस्कं

श्रीगणेशायनमः ॥ नारद उवाच ॥ भगवन् भूतभव्येश नारायण सनातन ॥ आख्यातं परमाश्रयं देवीच
रित्रमुत्तमं ॥ १ ॥ प्रादुर्भावः परोमातुः कार्यार्थमसुरद्रुहां ॥ अधिकारातिरुक्ता त्रदेवी पूर्णकृपावशात् ॥ २ ॥
अधुना श्रोतुमिच्छामि येन प्रीणाति सर्वदा ॥ स्वभक्तान् परिपुष्णाति तमाचारं वद प्रभो ॥ ३ ॥ नारायण
उवाच ॥ शृणु नारद तत्त्वज्ञ सदाचारविधिक्रमं ॥ यदनुष्ठानमात्रेण देवी प्रीणाति सर्वदा ॥ ४ ॥ प्रातरु
त्थाय कर्त्तव्यं यत् द्विजेन दिने दिने ॥ तदहं संप्रवक्ष्यामि द्विजानामुपकारकं ॥ ५ ॥ उदयास्तमयं यावत्
द्विजः सत्कर्मकृद्भवेत् ॥ नित्यनैमित्तिकैर्युक्तः काम्यैश्चान्यैरगर्हितैः ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥

धनवमस्कंधदशमस्कंधोक्तप्रकारेण श्रीभगवत्यामहिमानं सर्वोत्तरं श्रीभगवत्या एव मुख्यत्वेन सर्वां राध्यत्वं च नारायणमुखाच्छ्रुत्वा तदाराधनप्र
कारं ज्ञातुं पृच्छति नारद उवाच भगवन् भूतभव्येशेति आख्यातं अष्टमनवमदशमस्कंधोक्तप्रकारेण चरित्रमेव चारित्रं ॥ १ ॥ प्रादुर्भावः महाका
लीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीभामर्यादिदेवीनां असुरद्रुहांदेवानां अधिकारातिदैत्यैर्हृन्स्यतत्तदाधिकारस्याप्राप्तिः प्राप्तिः यदा स्वयं भवादिमनूनां मन्वंत
राधिकारस्याप्राप्तिः प्राप्तिः ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ सत्कर्मकृदिति नाहिकश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृदिति न्यायेन व्यापाररहितत्वस्या
संभवेनान्यव्यापारं विहाय सद्रूप्यापार एवाश्रयणीय इत्यर्थः ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

टी. अ.
१

॥ १ ॥

ननुपिचादिभिर्लालनहास्यविनोदेनकालः सुखेन गच्छति तदा तद्विहाया किमिति धर्म आस्येय इति चेत्तत्राह आत्मन इति परलोकेन पित्रादयः स
हाया भविष्यति किं तु धर्म एव स चात्मनैव जायते इति आत्मैव स्वस्य सहायोनान्य इति स्त्रेनैव स्वस्य धर्माचरणेन कल्याणं कर्तव्यमिति भावः तदु
क्तमात्मैव ह्यात्मनो बंधुरात्मैव रिपुरात्मन इति ॥ ७ ॥ तदेव स्पष्टयति तस्मादिति संचिनु गृहाण तमो दुःखं अज्ञानं वा ॥ ८ ॥ तत्र धर्मस्या
नेकविधत्वे विमुख्य रूपस्य तस्याश्रयणेनापि निर्वाहादवश्यं संविधेय इति दर्शयन् धर्मस्य मुख्यं रूपमाह आचार इति प्रथमो मुख्यः स च श्रुत्यु

आत्मनो न सहायार्थं पिता माता च तिष्ठति ॥ न पुत्रदारानज्ञातिर्धर्मस्तिष्ठति केवलं ॥ ७ ॥ तस्माद्धर्मसहायार्थं
नित्यं संचिनु साधनैः ॥ धर्मेणैव सहाया तु तमस्तरति दुस्तरं ॥ ८ ॥ आचारः प्रथमो धर्मः श्रुत्युक्तः स्मार्त एव च ॥ त
स्मादस्मिन् समायुक्तो नित्यं स्यादात्मनो द्विजः ॥ ९ ॥ आचारा लभते चायुराचारा लभते प्रजाः ॥ आचारादन्नमक्ष
य्यमाचारो हंति पातकम् ॥ १० ॥ आचारः परमो धर्मो नृणां कल्याणकारकः ॥ इह लोके सुखी भूत्वा परत्र लभ
ते सुखं ॥ ११ ॥ अज्ञानांधजनानां तु मोहितैर्भ्रामितात्मनां ॥ धर्मरूपो महादीपो मुक्तिमार्गप्रदर्शकः ॥ १२ ॥
आचारात्प्राप्यते श्रेष्ठ्यमाचारात्कर्म लभ्यते ॥ कर्मणो जायते ज्ञानमिति वाक्यं मनोः स्मृतं ॥ १३ ॥ सर्वधर्मवरि
ष्ठो यमाचारः परमंतपः ॥ तदेव ज्ञानमुद्दिष्टं तेन सर्वं प्रसाध्यते ॥ १४ ॥ यस्त्वाचारविहीनो ब्रवते तद्विजसत्तमः ॥
स शूद्रवद्वहिः कार्यो यथा शूद्रस्तथैव सः ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥

क्तः स्मृत्युक्तश्च नान्यः आत्मनः सदाचारे द्विजो नित्यं समायुक्तः स्यादित्यन्वयः ॥ ९ ॥ आचाररूपधर्मस्य मुख्यत्वं प्रतिपादयति अचर
लभते इति ॥ १० ॥ ११ ॥ तत्र हारीतस्मृतिमर्थतः पठति अज्ञानांधेति मोहितैर्भ्रामितैः पुरुषैः अज्ञानात्तमसाधानां भ्रामितानां कुदृष्टिभिः
धर्मशास्त्रप्रदीपो यंधार्या मार्गोपदेशक इति हि हारीतवचः ॥ १२ ॥ अत्रैव मनुवचनमर्थतः पठति आचारात्प्राप्यत इति तथा च मनुः आ
चारात्परमो धर्म इत्यादिकर्मणो जायते ज्ञानं ज्ञानान्मोक्षमवाप्यत इत्यंतं ॥ १३ ॥ १४ ॥ पराशरस्मृतिमर्थतः पठति यस्त्वाचारविहीन इति
तथा च पराशरः आचारः परमो धर्म इत्यादि सर्वधर्मबाहिः कार्यो यथा शूद्रस्तथैव स इत्यंतं ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥

॥ १६ ॥ नैवतालंघयेदिति तथाचयौतमः यद्यपि स्यात्स्वयं ब्रह्मेत्यादि तथापि लौकिकाचारं मनसापि न लंघयेदिति ॥ १७ ॥ सदाचारस्यागेष्टदोषमाह दुराचारो हीति ॥ १८ ॥ ननु दुराचारत्यागे र्थकामावपित्यक्तौ स्यातां न हि सदाचारासक्तस्यार्थकामसंपादनं संभवति ततश्च पुरुषार्थचतुष्टये धर्ममोक्षरूपार्थद्वयमेव संपादितं स्यात्तथा च पुरुषार्थचतुष्टयां वातिः सदाचारिणां भवतीति वचनानि विरुद्धे रन्नित्यत आह परित्यजेदिति धर्मवर्जितावर्थकामौ परित्यजेदेवेत्यर्थः न हि पुरुषार्थचतुष्टये धर्मविरुद्धावर्थकामौ गृहीतौ येन तद्विराधः स्यात्किं तु धर्माविरुद्धावर्थकामौ सदाचारिणो नायासेन ज्ञायमानावेव गृहीता इति भावः ननु धर्मस्य गवालंभादिरूपस्यापि सत्त्वात्सोपिकर्तव्य इति चेत्तत्राह धर्ममप्यसुखोदकमिति असुखोदकं प्राणिनां पीडाकरं दुःखदायकं लोके विद्विष्टं गवालंभादिकमपित्यजेदित्यर्थः न हि सन्नित्यो धर्मो यदकरणे प्रत्यवायः स्यात्किं त्वभ्युद
आचारो द्विविधः प्रोक्तः शास्त्रीयो लौकिकस्तथा ॥ उभावपि प्रकर्तव्यौ न त्याज्यौ शुभमिच्छता ॥ १६ ॥ ग्रामधर्माजातिधर्मादेशधर्माः कुलोद्भवाः ॥ परिग्राह्या नृभिः सर्वे नैव तां लंघयेन्मुने ॥ १७ ॥ दुराचारो हि पुरुषो लोके भवति निर्दिष्टः ॥ दुःखभागी च स ततं व्याधिना व्याप्त एव च ॥ १८ ॥ परित्यजेदर्थकामौ यौ स्यातां धर्मवर्जितौ ॥ धर्ममप्यसुखोदकं लोके विद्विष्टमेव च ॥ १९ ॥ नारद उवाच ॥ बहुत्वादिह शास्त्राणां निश्चयः स्यात्कथं मुने ॥ किं त्प्रमाणं तद्ब्रूहि धर्ममार्गं विनिर्णये ॥ २० ॥ नारायण उवाच ॥ श्रुतिस्मृती उभेनेत्रे पुराणं हृदयं स्मृतं ॥ एतन्नयोक्तव्यस्याद्वर्मो नान्यत्र कुत्रचित् ॥ २१ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥

यार्थः सचाभ्युदयो बहुभिरन्यसाधनैः शास्त्रेषूक्त एवेति नाभ्युदयार्थं प्राणिदुःखकरं लोके विद्विष्टं धर्ममाचरोदिति भावः तथाच पक्षे मधुपकैंगवालंभो लोका विद्विष्ट एव च सच नैव प्रकर्तव्यो यतः सनियतो न हीति ॥ १९ ॥ तत्र धर्मस्यावश्यकर्तव्यतायां प्रतिपादितायां शास्त्रकारैर्धर्मस्वरूपस्यानेकधा प्रतिपादनात्तन्निश्चयस्यासंभवेन कथं तन्निश्चयं विना धर्मः कर्तव्य इति पृच्छति नारद उवाच बहुत्वादिहेति अनेकशास्त्रेषु धर्ममार्गं विनिर्णये धर्मनिश्चयो किं शास्त्रं प्रमाणं तद्ब्रूहि त्यर्थः ॥ २० ॥ उभेनेत्रे परमेश्वरस्यैवार्थः चक्षुर्वै सत्यमिति श्रुतेः परमेश्वरेण श्रुतिस्मृतिरप्यक्षुष्यादृष्टमेव मनसि निश्चिनोतीति पुराणरूपहृदये निश्चितो धर्मोऽपि सत्य इत्यर्थः ॥ २१ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥

ननुत्राणामपिकुत्रचित्तमुद्रादिविधौविरोधोदृश्यतेतत्रकिंवरमितिचेत्तत्राह विरोधोयत्रत्विति श्रुतिस्तत्रेति स्मृतिपुराणापेक्षयाश्रुतिःप्र
बलेत्यर्थः इयोरिति पुराणस्मृत्योःपरस्परंविरोधेइत्यर्थः स्मृतिर्वरेति पुराणापेक्षयास्मृतेर्वेदमूलकत्वात्प्रामाण्यमित्यर्थः ॥ २२ ॥
श्रुतिद्वैधोदशीयहणाग्रहणादिषुधर्मावुभौननत्ररस्परंबाधः किंतुधर्मद्वयमपिसत्यामित्यर्थः विषयःकल्प्यतामिति भिन्नविषयकल्पनयाविरो
धःपरिहरणीयइत्यर्थः ॥ २३ ॥ ननुयथास्मृतीनांवेदमूलकत्वात्प्रामाण्यंतथापुराणानामपि वेदमूलकत्वादेवप्रामाण्यंस्मृतिसमानमेवाकिनस्या
दतआह पुराणेष्विति नकेवलंपुराणानि वेदमूलकानि किंतुतत्रमूलकान्यपिसंति तथाचपुराणापेक्षयाकेवलवेदमूलकत्वात्स्मृतीनांपुराणापे
क्षयाप्राबल्यमुक्तमन्याहतमेव तदुक्तंस्कांदेसूतसंहितायां कचित्कदाचित्तंत्रार्थकटाक्षेणमुनीश्वराः संतितानिपुराणानिसौशोयाह्योन
वैदिकैरिति ॥ २४ ॥ ननुतंत्राणामपिसाक्षादीश्वरप्रणीतत्वात्प्रामाण्यंतथाचतन्मूलकपुराणानामपिप्रामाण्यंकिनस्यात्तत्राह वेदाविरोधी
विरोधोयत्रतुभवेन्नयाणांचपरस्परं ॥ श्रुतिस्तत्रप्रमाणंस्याद्वयोर्द्वैधेश्रुतिर्वरा ॥ २२ ॥ श्रुतिद्वैधंभवेद्यत्रतत्र
धर्मावुभौस्मृतौ ॥ स्मृतिर्द्वैधंतुयत्रस्याद्विषयःकल्प्यतां पृथक् ॥ २३ ॥ पुराणेषुक्वचिच्चैवतंत्रदृष्टंयथातथं ॥ धर्म
वदंतितंधर्मगृणीयान्नकथंचन ॥ २४ ॥ वेदाविरोधिचेत्तंत्रतत्प्रमाणंनसंशयः ॥ प्रत्यक्षश्रुतिरुद्वयत्तत्प्र
माणंभवेन्नच ॥ २५ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥

ति देहवताशिवेनप्रणीतस्यागमस्यस्वतःप्रामाण्यंकिंतुवेदमूलकत्वादेव तथाचब्राह्मणस्यप्रत्यक्षश्रुतिर्विदुस्तत्रमुद्राधारणादिप्रतिपादकतंत्रस्यन
प्रामाण्यंकिंतुवेदाविरोध्यंशो एवप्रामाण्यमितिभावः श्रुतिरुद्वंश्रुतिर्विदुमित्यर्थः तत्प्रमाणंभवेन्नचेति वैदिकस्येतिशेषः तथाचतंत्रार्थप्रति
पादकपुराणस्यप्रत्यक्षश्रुतिर्विरोधान्नप्रामाण्यमितिभावः तदुक्तंशिवेनैवमहाकालसंहितादिषु वेदाविरोधीयोऽस्तुसैवग्राह्योद्विजोत्तमैः अ
धिकारित्रहुत्वाच्चाप्यनेकार्थोत्रकथ्यते अनेकाधिकारिणोदृश्यंतंत्रविधीयतेतथाचयस्ययत्राधिकारस्तत्तेनग्राह्यमितिदर्थः ब्राह्मणविषय
कतत्रमुद्राधारणादिप्रतिपादकतंत्राणांवेदानाधिकारिब्राह्मणविषयकत्वमितितुरहस्यं अनेनचाधिकारिभेदेनसर्वेषांतंत्राणांप्रामाण्यंसमर्थितं
तथाचमूतसंहितायांतंत्रप्रकृत्याधिकारिविभेदेनप्रमाणंनान्नसंशयः मृषावादीकथंशिवइतिच तथाचतंत्राणामपिस्मृतिष्वेवातिर्भावादुर्मप्रतिपा
दकचतुर्दशविद्यासुसंग्रहोस्तीतिबोध्यं ॥ २५ ॥ ॥ ७१ ॥

दे.भा.ए.

॥ ३ ॥

यस्मादेवंतस्मादाह सर्वथावेदएवेति ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ तादृग्वेदविरुद्धाचरणवंतः केतान्दर्शयति कामाचाराइति य
थेष्टाचरणवंतइत्यर्थः लिंगधारिणइतिपाशुपताइत्यस्यविशेषणं ॥ ३० ॥ वैखानसमतानुगाइतिततमुद्रांकिताइत्यस्याविशेषणं ॥ ३१ ॥
उत्थायोत्थायेति प्रतिदिनमितिशेषः कृतंसुकृतंकिंमयाद्यकृतमित्यन्वयः ॥ ३२ ॥ किमित्यस्यदत्तादिष्वन्वयः महत्स्वपिपातकेषुकिंम
यापातकंकृतमितिविचार्यमितिभावः ॥ ३३ ॥ अथान्हिकमाह अवाप्येति यामंचतुर्थं तत्रध्यानमुद्रामाह ऊरुस्थोत्तानचरणइति ऊरुस्थ
सर्वथावेदएवासौधर्ममार्गप्रमाणकः ॥ तेनाविरुद्धंयत्किंचित्प्रमाणंनचान्यथा ॥ २६ ॥ योवेदधर्ममुद्भित्य
वर्ततेन्यप्रमाणतः ॥ कुंडानितस्याशिक्षार्थंयमलोकेवसंतिहि ॥ २७ ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनवेदोक्तधर्ममाश्र
येत् ॥ स्मृतिःपुराणमन्यद्वातंत्रंवाशास्त्रमेवच ॥ २८ ॥ तन्मूलत्वेप्रमाणंस्यान्नान्यथातुकदाचन ॥ येकुशा
स्त्राभियोगेनवर्तयंतीहमानवान् ॥ २९ ॥ अधोमुखोर्ध्वपादास्तेयास्यंतिनरकार्णवं ॥ कामाचाराःपाशुपता
स्तथावैलिंगधारिणः ॥ ३० ॥ तत्तमुद्रांकितायेचवैखानसमतानुगाः ॥ तेसर्वेनिरयंयांतिवेदमार्गबहिष्कृताः
॥ ३१ ॥ वेदोक्तमेवसद्धर्मंतस्मात्कुर्यान्नरःसदा ॥ उत्थायोत्थायबोद्धव्यंकिंमयाद्यकृतंकृतं ॥ ३२ ॥ दत्तंवा
दांपितंवापिवाक्येनापिचभाषितं ॥ उपपापेषुसर्वेषुपातकेषुमहत्स्वपि ॥ ३३ ॥ अवाप्यरजनीयामंत्रह्रद्व्या
नंसमाचरेत् ॥ ऊरुस्थोत्तानचरणःसव्येचोरौतथोत्तरं ॥ ३४ ॥ उत्तानंकिंचिदुत्तानंमुखमवष्टायचोरसा ॥
निमीलिताक्षःसत्वस्थोदंतैर्देतान्नसंपृशेत् ॥ ३५ ॥ तालुस्थाचलजिह्वश्चसंवृतास्यःसुनिश्चलः ॥ सन्निरु
द्धेन्द्रियग्रामोनातिनिम्नस्थितामनः ॥ ३६ ॥

॥ ६४ ॥

॥ ६४ ॥

उत्तानचरणोयस्येत्यर्थः कस्मिन्नूरौकोवाउत्तानचरणस्तत्राह सव्येचोराविति अत्रसव्यशब्देनसव्यंदक्षिणवामयोरितिकोशादामोरुगृह्य
तेतस्मिन्सव्येवामोरौइतरंदक्षिणपादमुत्तानंवेन्यस्येत्यर्थःतथाचवीरासनंसिद्धंअग्रिमश्लोकस्थमुत्तानपदंपूर्वान्वयि ॥ ३४ ॥ किंचिदुत्तानं
मुखंपृष्ठभागेकृत्वातन्मुखमुरसावष्टभ्यहनुनाउरस्थलंसृशेदित्यर्थः ॥ ३५ ॥ तालुस्थेति जिह्वांपरावृत्यांतिच्छिद्रद्वारात्तालुनिचयेदित्यर्थः संवृ
तास्येनिवृत्तास्यः नातिनिम्नेति चैलाबिनकुशोत्तरेआसनेआसन्नित्यर्थः ॥ ३६ ॥

टी.अ.

१

॥ ३ ॥

प्रथमं प्राणायामं कृत्वा पश्चादियं मुद्रा कर्तव्या तं प्राणायाममाह द्विगुणमिति मुद्रा बन्धनोत्तरं प्राणायामस्यासंभवात् प्रथमतः प्राणायामं कृत्वा मुद्रा
बन्धः कर्तव्यः ततो द्विगुणं प्रथमं प्राणायाममाह ततोऽप्येवमिति दीपवत्स्वप्नकाश इत्यर्थः प्रभुरात्मा ॥ ३७ ॥ तस्मिन्नात्मनिकिंचिद्वारणमाह धार
येदिति आत्मानमन्तःकरणं इत्थं धारणं धारयेदित्यर्थः उक्तं प्राणायाममुत्तमादिभेदेन षड्विधं वर्णयति सधूम इति सधूमः श्वाससंयुक्त इति ल
क्षणात् प्राणायामे प्रथमतो भ्यसनीये श्मटिति प्राण उपरि आयातिस प्राणायामो तिलघुः पुनरतिशयाभ्यासेन सवायु रूध्वमायातिस प्राणायामः पूर्वापेक्षया
श्रेष्ठः इमौ द्वौ कनिष्ठावेव चित्तव्याकुलतायाः सत्वात् पुनरतिशयाभ्यासेन चित्ते स्थिरीभूते सतियः प्राणायामो भवति समध्यमः सोऽपि द्विविधः
सगर्भो मन्त्रजपसहितो गर्भस्तद्रहितः ॥ ३८ ॥ पुनरतिशयाभ्यासेन चित्ते स्थिरीभूते सतियः प्राणायामः स उत्तमः सोऽपि द्विविधः स लक्ष्यो ल

द्विगुणं त्रिगुणं वापि प्राणायाममुपक्रमेत् ॥ ततोऽध्येयः स्थितो यो सौ हृदये दीपवत्प्रभुः ॥ ३७ ॥ धारयेत्तत्र चात्मानं धारणां धारयेद्बुधः ॥ सधूमश्च विधूमश्च स गर्भश्चाप्यगर्भकः ॥ ३८ ॥ सलक्ष्यश्चाप्यलक्ष्यश्च प्राणायामस्तु षड्विधः ॥ प्राणायामसमो योगः प्राणायाम इतोरितः ॥ ३९ ॥ प्राणायाम इति प्रोक्तेरेच पूरककुंभकैः ॥ वर्णत्रयात्मका ह्येतेरेच पूरककुंभकाः ॥ ४० ॥ स एव प्रणवः प्रोक्तः प्राणायामश्च तन्मयः ॥ इडया वायुमारोप्य पूरयित्वा देसे स्थितं ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४२ ॥

क्षयं देवता तत्स्थान सहितो लक्ष्यो ध्यान रहित इत्यर्थः प्राणायामेति प्राणायाम समयोगः प्राणायाम एव नान्य इत्यर्थः ॥ ३९ ॥ रेचकादिभेदेन प्राणायाम त्रैविध्यमाह प्राणायाम इति रेचकादिषु क्रमेण प्रणववर्णत्रयं ध्येयमित्याह वर्णत्रयात्क इति ॥ ४० ॥ स एवेति स एव प्रसिद्धः परमात्मैव प्रणवः प्रोक्तस्तदात्मकत्वादतः प्राणायामोऽपि वर्णत्रयात्मकत्वात्परमात्मरूप एव ज्ञेय इति प्राणायामे श्रद्धां वर्धयति प्राणायाम प्रकारमाह इडयेति इडावामे स्थितानाडीपिंगलादक्षिणे मतेति वचनाद्दामनासापुटेन द्वात्रिंशद्धारमकारमावृत्य वायुमारोप्याकृष्य पूरयित्वा तादृशं पूरकं कृत्वा पञ्चतुःषष्टिवारमुकारमावर्तयन्नेत्रोदरे स्थितं कृत्वा कुंभकं कृत्वा पुनर्दक्षिणनासापुटेन षोडशवारं मकारमावर्तयन्नेत्रे रेचयेत्तत्तत्वागुमित्यर्थः ॥ ४१ ॥

दे.भा.ए.

॥ ४ ॥

अन्ययेति पिंगलवैत्यर्थः तदुक्तं द्वात्रिंशताचतुःषष्ट्याक्रमान्षोडशसंख्ययेति इत्थं प्रथमं सधूमं प्राणायाममुपसंहरति एवमिति एवमेवा
धिकाभ्यासेन मध्यमोत्तमावपि कर्तव्यावित्यर्थादुक्तं भवति ॥ ४२ ॥ इत्थं प्राणायामे कृते पञ्चाक्षरं चक्रभेदनक्रमेण कुण्डलिनीं ब्रह्मरंध्रे नीत्वा हृद
ये पूर्वोक्तं निर्वातदीपसमानमात्मानं ध्यायेदित्येव गमर्यादा तदभिप्रायेण षट्चक्रस्वरूपमाह आधारे इति आधारो मूलाधारः तालुमूलकंठः
ललाटं भ्रूमध्यं लिङ्गं च नाभिश्च प्रकटितहृदयं चेति समाहारद्वंद्वे प्राण्यं गत्वादिकवद्भावः तथा च स्थानत्रयं विवक्षितं इत्थं षट्चक्राणां षट्स्थानान्यु
क्ता तेषां पञ्चसंख्यां युक्तमेणाह द्वैपत्रे इति द्वैपत्रेयस्य तत्तद्विपत्रं द्विपत्रमेव द्वैपत्रं तथा च योग्यत्वात् ललाटे विद्यमानं यत्तद्विपत्रं कमलं तस्मिन् विद्यमानं यत्त
त्वायं युक्तं तत्त्वार्थवाचकं हंक्षं वर्णरूपं तन्नमामीत्यर्थः एवमेव सर्वत्रान्वयः कर्तव्यः षोडशारे अरं पत्रं तथा च तालुमूलकंठदेशे विद्यमाने षोडशपत्रे
कमले विद्यमानं स्वराणां वर्णरूपं तन्नमामीत्यर्थः तथा धारे विद्यमाने चतुष्के चतुष्पत्रयुक्ते कमले कथं भूते वासांते वसांतशब्दोऽर्श आद्यजंतः वैत्यका

शनैः षोडशमात्राभिरन्यथा तं विरेचयेत् ॥ एवं सधूमः प्राणानामायामः कथितो मुने ॥ ४२ ॥ आधारे लिङ्गना
भिप्रकटितहृदये तालुमूले ललाटे द्वैपत्रे षोडशारे द्विदशदलद्वादशां द्वैचतुष्के ॥ वासांते बालमध्ये डफकठस
हिते कंठदेशे स्वराणां हंक्षं तत्त्वार्थयुक्तं सकलदलगतं वर्णरूपं तन्नमामि ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥

रउच्चारणार्थः वसांतमेव वासांतं वसांतशब्दे वशब्दो वादि परस्तथा च वकारादिसकारांतवर्णचतुष्कयुक्ते इत्यर्थः तस्मिन् विद्यमानं यदूर्णरूपं
तन्नमामीत्यर्थः अथ बालमध्ये डफकठसहिते इत्यस्य समुदायस्य लिङ्गनाभिप्रकटितहृदये द्विदशदलद्वादशां द्वैचतुष्के इति समुदायेनान्वयः पश्चा
त्पार्ष्णिणीयथा योग्यमन्वयः आद्यंतौ टकिंतौ जलपृथिव्योः स्नेहगंधाविति वत् तथा च लिङ्गे विद्यमाने द्वादशां षड्दलकमले बालमध्ये आ
कारउच्चारणार्थः वकारादिलकारांतयुक्ते विद्यमानं यदूर्णरूपं तन्नमामीत्यर्थः तथानाभौ विद्यमाने दशदलकमले डफसहिते डकारादिफकारां
तदशवर्णयुक्ते विद्यमानं वर्णरूपं तन्नमामीत्यर्थः तथा प्रकटितहृदये विद्यमाने द्विदशदले द्वादशदले कठसहिते ककारादिठकारांतद्वादशवर्णसहिते वि
द्यमानं यदूर्णरूपं तन्नमामीत्यर्थः अयं भावः मूलाधारलिङ्गनाभिहृदयकंठभ्रूमध्येषु चतुर्दलषट्दलदशदलद्वादशदलषोडशदलद्विदलानि कमला
नि भावयित्वा तेषु कमलपत्रेषु प्रादक्षिण्येन पूर्वोक्तान् वर्णान् भावयित्वा न मेदिति इदं सर्वं तत्र विदां स्पष्टं एतानि षट्कमलानि तद्वा वर्णांश्च सप्तमस्कं
धेदे वीगीतायां स्पष्टाः ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥

टी.अः

१

॥ ४ ॥

एवंषट्चक्रभावनोत्तरंकुंडलिनीध्यायेदित्याह अरुणकमलेति अरुणकमलंमूलाधारस्थंचतुर्दलकमलंतत्रसंस्थितातद्रजःपुंजवर्णारजोगुणवती
त्यर्थः हरनियमितचिन्हामायाबीजावयवहकाररेफरूपनियमितचिन्हंयस्यांसामायाबीजवाच्येत्यर्थः पद्मतंतुर्विसंतंतुस्तत्स्वरूपासूक्ष्मा रवि
श्चमिश्रिष्टदुर्दुतवहोरक्तविंदुःराकानायकश्चंद्रःश्वेतविंदुस्तद्रूपमास्यं स्तनयुग्मंचतेनाढ्यायुक्ता तत्ररविविंदुर्मुखामितरद्विंदुद्वयंस्तनयुग्ममि
तिविवेकः इदंविंदुत्रयंरहस्यान्नायेप्रकाशविमर्शसंवादेविस्तरेणनिर्णीतंततएवावधार्य अतिरहस्यत्वादत्रनस्पष्टीक्रियते तदुक्तं मिहिरविंदु
मुखीतदधोलसच्छशिहुताशनविंदुयुगस्तनीं सहहरार्धकलारसनास्पदांभजतसत्यमिमांपरदेवतामिति अयमर्थोगुरुमुखादेवावगतंन्यः एवं

अरुणकमलसंस्थातद्रजःपुंजवर्णाहरनियमितचिन्हापद्मतंतुस्वरूपा ॥ रविहुतवहराकानायकास्यस्तना
ढ्यासकृदपियदिचित्तेसंवसेत्स्यात्समुक्तः ॥ ४४ ॥ स्थितिःसैवागतिर्यात्रामतिश्चितास्तुतिर्वचः ॥ अहंस
र्वात्मकोदेवस्तुतिःसर्वत्वदर्चनं ॥ ४५ ॥ अहंदेवीनचान्योस्मिब्रह्मैवाहंनशोकभाक् ॥ सच्चिदानंदरूपोहंस्वा
त्मानमितिचितयेत् ॥ ४६ ॥ प्रकाशमानांप्रथमेप्रयाणेप्रतिप्रयाणेप्यमृतायमानां ॥ अंतःपदव्यामनुसंच
रंतीमानंदरूपामबलांप्रपद्ये ॥ ४७ ॥ ततोनिजब्रह्मरंभ्रेध्यायेत्तंगुरुमीश्वरं ॥ उपचारैर्मनसैश्चपूजयेत्तं
यथाविधि ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥

सकृदपिध्यानेनसाक्षात्कृतेजीवन्मुक्तएवभवतीत्याह सकृदपीति ॥ ४४ ॥ दत्तंदेवींकुंडलिनीध्यात्वास्वहृदयेतयासहात्मरूपिणींश्रीभगवतीं
ध्यात्वाग्रेजायमानंसर्वकर्मत्वदर्चनस्थानीयमेवममभवत्वितिदेवींप्रार्थयेदित्याह स्थितिःसैवेति ॥ ४५ ॥ अनंतरमात्मानंदेवीरूपत्वेनकृतार्थं
ज्ञानीयादित्याह अहंदेवीति ॥ ४६ ॥ पुनरपिहर्षगद्गदचेतसादेवींकुंडलिनीभावयेदित्याह प्रकाशमानांप्रथमेप्रयाणेब्रह्मरंभ्रस्थानंप्रतिगमने
प्रकाशमानांविद्युदिवद्योतमानां प्रतिप्रयाणेपुनर्मूलाधारंप्रतिप्रत्यागमनेअमृतायमानाममृतलुलितां ब्रह्मरंभ्रस्थामृतधारालुलितामित्यर्थः अ
तःपदव्यांसुषुप्तायामनुसंचरंतीगच्छंतीमबलांकुंडलिनींशरणंप्रपद्येइत्यर्थः ॥ ४७ ॥ इत्यमात्मानंध्यात्वागुरुंध्यायेदित्याह ततोनिजेति
मानसैर्मनसाकल्पितैः ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥

दे.भा.ए.

॥५॥

॥ ४९ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके एकादशस्कंधे प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ द्वाधिकैश्चैव चत्वारिंशत्यध्यायैस्तुतः परं प्रातः कृत्योत्तरं सम्यक् शौचादिविधिमुच्यते ॥ १ ॥ तत्र प्रथमत आचाराभावे सर्वव्यर्थं भवतीत्याह आचारहीनमिति नीडंगृहं तस्मादाचारो वक्ष्यमाणो वक्ष्यं कर्तव्य इत्यर्थः ॥ १ ॥ कस्मात्कालादारभ्य सदाचारः कर्तव्यस्तदाह ब्राह्मे मुहूर्त इति उत्थाय ततः प्रभृतीत्यर्थः कोसौ ब्राह्मो मुहूर्तस्तत्राह रात्रेरन्तिमयाम इति चतुर्थयामे उत्थाय मुखप्रक्षालनादिकं कृत्वेत्यर्थाद्वैद्यम् ॥ २ ॥ वेदाभ्यासमर्यादामाह किंचित्कालमिति रात्रिपश्चिमयामतृतीयाम इति

स्तुवीतानेन मंत्रेण साधको नियतात्मवान् ॥ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ॥ ४९ ॥ गुरुरेव परं ब्रह्मतस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधे प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ श्रीनारायण उवाच ॥ आचारहीनं न पुनंति वेदाय दध्यधीताः सह षड्भिरंगैः ॥ छंदां स्येनं मृत्युकाले त्यजंति नीडं शकुंता इव जातपक्षाः ॥ १ ॥ ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय तत्सर्वं सम्यगाचरेत् ॥ रात्रेरन्तिमयामेतु वेदाभ्यासं चरेद्बुधः ॥ २ ॥ किंचित्कालं ततः कुर्यादिष्टदेवानुर्चितनं ॥ योगी तु पूर्वमार्गेण ब्रह्मध्यानं समाचरेत् ॥ ३ ॥ जीव ब्रह्मैक्यतायेन जायते तु निरंतरं ॥ जीवन्मुक्तश्च भवति तत्क्षणादेव नारद ॥ ४ ॥ पंचपंचउषःकालः सप्तपंचारुणोदयः ॥ अष्टपंचभवेत्प्रातः शेषः सूर्योदयः स्मृतः ॥ ५ ॥

॥ ४९ ॥

॥ ४९ ॥

॥ ४९ ॥

यमुहूर्तपर्यंतमित्यर्थः तदुक्तं वायुपुराणे रात्रेः पश्चिमयामेतु षट्काषट्कमेवाहि वेदाभ्यासं द्विजः कुर्यात्सावेलापाठदायिनीति योगीति तस्य वेदपाठाभावात्पूर्वमार्गेण प्रथमाध्यायोक्तप्रकारेण ब्रह्मध्यानमेव तावत् षट्काषट्कपर्यंतं कुर्यादित्यर्थः ॥ ३ ॥ ४ ॥ अग्रिमश्लोकोक्तप्रातःशब्दार्थं कथयति पंचपंचेति पंचपंचाशत् षट्कोत्तरमुषःकालः सप्तपंचाशत् षट्कोत्तरमरुणोदयसंज्ञकः कालः अष्टपंचाशत् षट्कायां प्रातःकालः शेषः सूर्योदयसंज्ञक इत्यर्थः ॥ ५ ॥

॥ ४९ ॥

॥ ४९ ॥

॥ ४९ ॥

॥ ४९ ॥

॥ ४९ ॥

टी.अ.

२

॥ ५ ॥

प्रातःपदार्थमुक्तास्मिन्कर्तव्यमाह प्रातरिति यः कुर्यात्स नैऋत्यादिशि भुवः शयनस्थानात् हविषो विक्षेपपरिमितमधिकं वा दैशमतीत्यकुर्यादित्यर्थः इदं दूरदेशमात्रस्योपलक्षणं तथा च मनुः दूरादावस्थान्मूत्रं दूरात्पादावसेचनमिति नैऋत्यामित्युपलक्षणं दक्षिणस्याः तथा चापस्तम्बः दक्षिणादिशं दक्षिणापरां वेति ॥ ६ ॥ प्रथमे आश्रमे ब्रह्मचर्याश्रमे कर्णस्थं यज्ञसूत्रं कुर्यादित्यर्थः निर्वीतमिति यज्ञोपवीतं निर्वीतं कृत्वा पृष्ठतोलं

प्रातरुत्थाय यः कुर्याद्विष्णुमूत्रं द्विजसत्तमः ॥ नैऋत्यामिषु विक्षेपमतीत्याभ्यधिकं भुवः ॥ ६ ॥ विष्णुमूत्रेऽपि च कर्णस्थमाश्रमे प्रथमे द्विजः ॥ निर्वीतं पृष्ठतः कुर्याद्वानप्रस्थगृहस्थयोः ॥ ७ ॥ कृत्वा यज्ञोपवीतं तु पृष्ठतः कंठलंबितं ॥ विष्णुमूत्रं तु गृहीकुर्यात्कर्णस्थं प्रथमाश्रमी ॥ ८ ॥ अंतर्द्वायतृणैर्भूमिं शिरः प्रावृत्य वाससा ॥ वाचं नियम्य यत्नेन धीवन्श्वासवर्जितः ॥ ९ ॥ न फालकृष्टेन जलेन चितायां न पर्वते ॥ जीर्णदेवा लये कुर्यान्न वल्मीकेन शाद्वले ॥ १० ॥ न ससत्त्वेषु गर्तेषु न गच्छन्नपथि स्थितः ॥ संध्ययोरुभयोर्जप्ये भोजने दंतधावने ॥ ११ ॥ पितृकार्ये च दैवे च तथामूत्रपुरीषयोः ॥ उत्सारे मैथुने वा पितथा वै गुरुसन्निधौ ॥ १२ ॥ यागे दाने ब्रह्मयज्ञे द्विजो मौनं समाचरेत् ॥ देवता ऋषयः सर्वे पिशाचो रगराक्षसाः ॥ १३ ॥ इतो गच्छंतु भूतानि बाहिर्भूमिं करोम्यहं ॥ इति संप्रार्थ्य पश्चात्तु कुर्याच्छौचं यथाविधि ॥ १४ ॥ वाय्वग्नीविप्रमादित्यमापः पश्यंस्तथैव गाः ॥ न कदाचन कुर्वीत विष्णुमूत्रस्य विसर्जनं ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥

बयेदित्यर्थः ॥ ७ ॥ तदेव स्पष्टयति कृत्वा यज्ञोपवीतमिति यज्ञोपवीतं पूर्ववचनाच्चिर्वीतरूपं गृहीतिवानप्रस्थस्योपलक्षणं ॥ ८ ॥ द्वासवर्जितोऽधिकश्वासवर्जितो धावन् शौचं न कुर्यादित्यर्थः ॥ ९ ॥ वल्मीके सर्पस्थाने न शाद्वले न हरिततृणे ॥ १० ॥ ससत्त्वेषु जीवसहितेषु गर्तेषु न पथि स्थितः लोकगंतव्यमार्गे स्थितो न कुर्यादित्यर्थः शौचादिसमये मौनमाह संध्ययोरिति जप्ये जपकर्मणि ॥ ११ ॥ १२ ॥ तत्र शौचसमये मंत्रः पठनीय इत्याह देवता ऋषय इति ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥

दे.भा.ए.

॥६॥

तृणादिभिरित्यत्रादिना खर्परादिना सूर्यकिरणस्पर्शाभावात्तमाच्छादनं ॥ १६ ॥ अन्यत्रजलदूरदेशे ॥ १७ ॥ अन्यवर्णकाः शान्त्रियवैद्य
शूद्राः ॥ १८ ॥ श्वेतादिमृत्तिकाभावे आह अथवेति अग्राह्यमृत्तिका आह अंतर्जलादिति ॥ १९ ॥ २० ॥ मूत्रशौचज्ञानार्थमाह

उदङ्मुखो दिवा कुर्याद्वात्रौ चेद्दक्षिणामुखः ॥ तत आच्छाद्य विष्णुमूत्रं लोष्ठपर्णतृणादिभिः ॥ १६ ॥ गृहीतलिङ्ग उ
त्थाय सगच्छेद्धारिसन्निधौ ॥ पात्रे जलं गृहीत्वा तु गच्छेदन्यत्रैव हि ॥ १७ ॥ गृहीत्वामृत्तिकां कूलाच्छेत्तां ब्राह्म
णसत्तमः ॥ रक्तां पीतां तथा कृष्णां गृणीयुश्चान्यवर्णकाः ॥ १८ ॥ अथ वा यायत्रदेशे सैव ग्राह्या द्विजोत्तमैः ॥
अंतर्जलाद्देवगृहाद्वल्मीकान्मूषकोत्करात् ॥ १९ ॥ कृतशौचावशिष्टा च न ग्राह्याः सप्तमृत्तिकाः ॥ मूत्रात्तु द्विगुणं
शौचे मैथुने त्रिगुणं स्मृतं ॥ २० ॥ एकालिङ्गे करेति स्त्र उभयोर्मृद्वयं स्मृतं ॥ मूत्रशौचं समाख्यातं शौचे तद्विगुणं स्मृ
तं ॥ २१ ॥ विट्शौचे लिङ्गदेशे तु प्रदद्यान्मृत्तिकाद्वयं ॥ पंचापाने दशैकस्मिन्नुभयोः सप्तमृत्तिकाः ॥ २२ ॥ वा
मपादं पुरस्कृत्य पश्चाद्दक्षिणमेव च ॥ प्रत्येकं च चतुर्वारं मृत्तिकां लापयेत्सुधीः ॥ २३ ॥ एवं शौचं गृहस्थस्य द्वि
गुणं ब्रह्मचारिणः ॥ त्रिगुणं वानप्रस्थस्य यतीनां च चतुर्गुणं ॥ २४ ॥ आर्द्रामलकमाना तु मृत्तिका शौचकर्मणि
॥ प्रत्येकं तु सदा ग्राह्यानां तोन्यूना कदाचन ॥ २५ ॥ एतद्दिवा स्याद्विट्शौचं तदर्धं निशिकीर्तितं ॥ आतुरस्य तद
र्धं तु मार्गस्थस्य तदर्धकं ॥ २६ ॥ स्त्रीशूद्राणामशक्तानां बालानां शौचकर्मणि ॥ यथा गंधक्षयः स्यात्तु तथा कुर्या
दसंख्यकं ॥ २७ ॥ गंधलेपक्षयो यावत्तावच्छौचं विधीयते ॥ सर्वेषामेव वर्णानामित्याह भगवान्मनुः ॥ २८ ॥

एकालिङ्ग इति एका एकवारमित्यर्थः तिष्ठः त्रिवारं उभयोर्हस्तयोर्द्विवारं ॥ २१ ॥ विट्शौचे मृत्तिकाविभागं स्पष्टमेवाह विट्शौचे इति
एकस्मिन्करे इत्यर्थः ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ एकैकवारं ग्राह्यमृत्तिकायाः प्रमाणमाह आर्द्रामलकेति ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥
गंधलेपनाश्च पर्यंतं मृत्तिका लापनमयां देत्यत्र मनुसंमतिमाह गंधलेपेति ॥ २८ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

टी.अ.

२

॥६॥

॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ प्रायश्चित्तमाह जलाहारइति जापाद्वायव्याः ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ क्षीरवृक्षाः अश्वत्थोदुंबरप्लक्ष्म

वामहस्तेन शौचं तु कुर्याद्वैदक्षिणेन न ॥ नाभेरधो वामहस्तो नाभेरूर्ध्वं तु दक्षिणः ॥ २९ ॥ शौचकर्मणि विज्ञेयो
नान्यथा द्विजपुंगवैः ॥ जलपात्रं न गृण्हीयाद्विष्मूत्रोत्सर्जने बुधः ॥ ३० ॥ गृण्हीयाद्यदि मोहेन प्रायश्चित्तं चरेत्
तः ॥ मोहाद्वाप्यथ वालस्यान्नं कुर्याच्छौचमात्मनः ॥ ३१ ॥ जलाहारस्त्रिरात्रं स्यात्ततो जापाच्च शुल्यति ॥ दे
शकालद्रव्यशक्तिस्वोपपत्तीश्च सर्वशः ॥ ३२ ॥ ज्ञात्वा शौचं प्रकर्तव्यमालस्यं नात्र धारयेत् ॥ पुरीषोत्सर्जने कु
र्याद्गंडूषान्द्वादशैव तु ॥ ३३ ॥ चतुरो मूत्रविक्षेपेनातो न्यूनान्कदाचन ॥ अधोमुखं नरः कृत्वा त्यजेत्तं वामतः श
नैः ॥ ३४ ॥ आचम्य च ततः कुर्यादंतधावनमादरात् ॥ कंटकिक्षीरवृक्षोत्थं द्वादशांगुलमव्रणम् ॥ ३५ ॥ कनि
ष्ठिकाग्रवत्स्थूलं पूर्वार्धे कृतकूर्चकं ॥ करं जोदुंबरौ चूतः कदंबोलोध्रचंपकौ ॥ ३६ ॥ बदरीतिद्रुमाश्चेति प्रोक्ता दं
तप्रधावने ॥ अन्नाद्यायव्यूहध्वंसे सोमो राजायमागमत् ॥ ३७ ॥ समे मुखं प्रक्षाल्य ते यशसा च भगेन च ॥ आ
युर्बलं यशो वर्चः प्रजाः पशुवसूनि च ॥ ३८ ॥ ब्रह्म प्रज्ञां च मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते ॥ अभावे दंतकाष्ठस्य प्रति
षिद्धदिनेषु च ॥ ३९ ॥ अपां द्वादशांगं दूषैर्विदध्यादंतधावनं ॥ सविता भक्षितस्तेन स्वकुलं तेन घातितं ॥ ४० ॥

ग्रोधाः ॥ ३५ ॥ पूर्वार्धे अग्रभागे पाषाणेन कुंचितं कृत्वा ग्राह्यामित्यर्थः ॥ ३६ ॥ दंतधावने मंत्रमाह अन्नाद्यायेति ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ प्रति
षिद्धदिनेषु चेति तानि दिनान्यत्रेव क्षयति ॥ ३९ ॥ सविता भक्षित इत्यस्य यो दंतानां काष्ठसंयोगं करोति तेनेत्युत्तरेणान्वयः ॥ ४० ॥

दे.भा.ए.

॥ ७ ॥

दिनान्याह प्रतिपदशौति तथाचन्यासः प्रतिपददर्शपृष्ठीषुनवम्यांचैवभारत दंतानाकाष्ठसंयोगाद्दहत्या सप्तमंकुलमिति एवमन्येषिकालाग्रंथात्
रादवसेयाः ॥ ४१ ॥ दंतधावनोत्तरमाचमनमाह कृत्वालमिति त्रिःपिबेत्केशवादित्रिनामभिः द्विर्विमृज्यवचनांतरानुमत्या आस्वमित्यर्थः
यद्यपिवचनांतरादास्यस्यैकवारमेवोन्मार्जनंतथापि ओष्ठोन्मार्जनस्यापि वचनांतरप्रातस्त्वेनतस्मिन्कृतमुखास्यदिस्नमार्जनंजातमेवेत्यभिप्रायेणेय
मुक्तिः अनंतरमंगुष्ठवत्यातर्जन्यांगुष्ठयुक्तयातर्जन्यानासिकारं ध्रुगमंसजलयथास्यातथाभिमृशेत्स्पृशेदित्यर्थः अनंतरमंगुष्ठानामिकाभ्यां
नयनयुगयुतंकर्णयुगमनयनयुगंकर्णयुगंचाभिमृशेत्स्पृशेत् अनंतरंकनिष्ठांगुष्ठाभ्यांनाभिदेशेस्पृशेत् अथतलेनहस्ततलेनहृदयंस्पृशेत् अनंत

प्रतिपददर्शपृष्ठीषुनवम्येकादशीरवौ ॥ दंतानांकाष्ठसंयोगाद्दहत्यासप्तमंकुलं ॥ ॥ कृत्वालंपादशौचं ह्यम
लमथजलं त्रिःपिबेद्विर्विमृज्यतर्जन्यांगुष्ठवत्यासजलमभिमृशेन्नासिकारं ध्रुगमम् ॥ अंगुष्ठानामिकाभ्यांनय
नयुगयुतंकर्णयुगमंकनिष्ठांगुष्ठाभ्यांनाभिदेशेहृदयमथतलेनांगुलीभिः शिरांसि ॥ ४१ ॥ इति श्रीदेवीभाग
वते महापुराणे एकादशस्कंधे द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ नारायण उवाच ॥ स्मृत्वा चैकारगायत्रीं निबध्नीयाच्छि
खांतथा ॥ पुनराचम्य हृदयं बाहू स्कंधौ च संस्पृशेत् ॥ १ ॥ क्षुते निष्ठीवने चैव दंतोच्छिष्टे तथा नूते ॥ पति
तानां च संभाषेदक्षिणं श्रवणं स्पृशेत् ॥ २ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥

रंसर्वाभिरंगुलीभिः शिरांसि अभिमृशेदिति तथाच याज्ञवल्क्यः अंतर्जानुशुचौ देशे उपविष्ट उदङ्मुखः प्राग्वात्रा ह्यणतीर्थे न द्विजो नित्यमुपस्पृशेत्
त्रिःप्राप्त्यापो द्विःस्नान्यथान्यद्विःसमुपस्पृशेदिति ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके एकादशस्कंधे द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ सप्तत्रिंशमहापदैः स्ना
नादिविधिपूर्वकं ॥ रुद्राक्षधारणस्यापि महिमातीव कथ्यते ॥ १ ॥ आचमनोत्तरं शिखाबंधमाह स्मृत्वेति ओंकारयुक्तां गायत्रीमित्यर्थः तदुक्तं
वायुपुराणे ओंकारयुक्तगायत्रीं समुच्चार्य ततो द्विजः शिखाबंधं प्रकुर्वीतयेन स्याद्विप्रबंधनमिति शिखाबंधनोत्तरं पुनराचमनमाह पुनराचम्ये
ति ॥ २ ॥ प्रसंगाच्छ्रौत्वा च मन्त्रमाह क्षुते निष्ठीवन इति ॥ २ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥

टी.अ.

२

॥ ७ ॥

दक्षिणकर्णस्पर्शहेतुमाह अग्निरापइति ॥ ३ ॥ अनंतरंस्नानमाह ततस्त्विति ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ स्नानादिविधेर्बाहुल्यादौ
 मकारस्याल्पत्वात्तादृशस्नानविधिकृत्वासंध्यादिविधिकुर्वतोहोमकालेनैवमिलतितस्मात्प्रातःकालेतादृशविधिनास्नानमेवकर्त्तव्यं विस्तुषं
 क्षेपेणस्नानविधिस्तुमध्याह्नस्नानेचरितार्थइत्याह अल्पत्वादिति ॥ ९ ॥ किंतुसामान्यस्नानोत्तरमेतादृशप्राणायामेनैवस्नानविधिफलमा
 अग्निरापश्चवेदाश्चसोमःसूर्योऽनिलस्तथा ॥ सर्वेनारदविप्रस्यकर्णेतिष्ठंतिदक्षिणे ॥ ३ ॥ ततस्तुगस्थामध्या
 दौप्रातःस्नानंविशोधनं ॥ समाचरेन्मुनिश्रेष्ठदेहसंशुद्धिहेतवे ॥ ४ ॥ अत्यंतमलिनोदेहोनवद्वारैर्मलंवहन् ॥
 सदास्नेतच्छोधनायप्रातःस्नानंविधीयते ॥ ५ ॥ अगम्यागमनात्पापंयच्चपापंप्रातिग्रहात् ॥ रहस्याचरि
 तंपापंमुच्यतेस्नानकर्मणा ॥ ६ ॥ अस्नातस्यक्रियाःसर्वाभवंतिविफलायतः ॥ तस्मात्प्रातश्चरेत्स्नानंनि
 त्यमेवदिनेदिने ॥ ७ ॥ दर्भयुक्तश्चरेत्स्नानंतथासंध्याभिवंदनं ॥ सप्ताहंप्रातरस्नायीसंध्याहीनस्त्रिभिर्दि
 नैः ॥ ८ ॥ द्वादशाहमनग्निःसन्निजःशूद्रत्वमाप्नुयात् ॥ अल्पत्वाद्वोमकालस्यबहुत्वात्स्नानकर्मणः ॥ ९ ॥
 प्रातर्नतुतथास्नायाद्वोमकालेविगर्हितः ॥ गायत्र्यास्तुपरंनस्तिइहलोकेपरत्रच ॥ १० ॥ गायंतंत्रायतेयस्मा
 द्वायत्रीत्यभिधीयते ॥ प्रणवेनतुसंयुक्तांव्याहतित्रयसंयुताम् ॥ ११ ॥ वायुंवायौजयेद्विप्रःप्राणसंयमनत्रया
 त् ॥ ब्राह्मणःश्रुतिसंपन्नःस्वधर्मनिरतःसदा ॥ १२ ॥ सवैदिकंजपेन्मंत्रंलौकिकंनकदाचन ॥ गोशृंगेसर्पपो
 यावत्तावदेषानसंस्थिरः ॥ १३ ॥ नतारयंत्युभौपक्षौपितृनेकोत्तरंशतं ॥ सगर्भोजपसंयुक्तअगर्भोऽध्यानमात्र
 कः ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥

वातीत्याह गायत्र्यास्त्विति ॥ १० ॥ संयुतांपठन्नितिशेषः ॥ ११ ॥ वायुंप्राणवायुंवायावपानेवायौजयेद्विप्रःश्रीकुर्यात्प्राणपानौसमौकुर्यादि
 त्यर्थः प्राणायामादिसमयेब्राह्मणोवैदिकमंत्रमेवजपेदित्याह ब्राह्मणइति ॥ १२ ॥ प्राणायामेनवायोरस्थिराकरणेदोषमाह गोशृंगेइति
 गोशृंगेयावत्सर्पपस्तिष्ठतितावदपिपेषांप्राणायामेनवायुःस्थिरोनेत्यर्थः तेनतारयंतीत्यन्वयः ॥ १३ ॥ तस्यैवद्वैविध्यमाह सगर्भोऽध्यानमात्र
 ॥ १४ ॥

दे.भा.ए

॥ ८ ॥

स्नानांगतर्पणमिति तथाचकाष्णांजिनिः देवर्षिपितृणांचैव एकद्वित्रिक्रमेणच जलेदद्याज्जलं चान्नासंस्कृतानांतटेतथेति असंस्कृतानांमृताना
मित्यर्थः असंस्कृतप्रमीतानामेकमेवतटेक्षिपेदितिबौधायनोक्तेः अत्रपितृशब्देनस्वपितरश्च तदुक्तंहेमाद्रौब्रह्मवैवर्ते नाभिमात्रेजलेस्थित्वा
कुर्यात्स्नानांगतर्पणं देवान्ऋषीन्पितृगणान्स्वपितृंश्चापितर्पयेत् स्नानांगतर्पणंकृत्वायक्ष्मणेजलमाहरेदिति ॥ १५ ॥ १६ ॥ दशनपरिमि

स्नानांगतर्पणंकृत्वादेवर्षिपितृतोषकं ॥ शुद्धेवस्त्रेपरीधायजलाद्वहिरुपागतः ॥ १५ ॥ विभूतिधारणंकार्यंरु
द्राक्षाणांचधारणं ॥ क्रमयोगेनकर्तव्यंसर्वदाजपसाधकैः ॥ १६ ॥ रुद्राक्षान्कंठदेशेदशनपरिमितान्मस्त
केविंशतीद्विषट्कणप्रदेशेकरयुगलकृतेद्वादशद्वादशैव ॥ बाव्होरिंदोःकलाभिर्नयनयुगकृतेत्वेकमेकं
शिखायांवक्षस्यष्टाधिकंयःकलयातिशतकंसस्वयंनीलकंठः ॥ १७ ॥ बध्वास्वर्णेनरुद्राक्षंरजतेनाथवामुने ॥
शिखायांधारयेन्नित्यंकर्णयोर्वासमाहितः ॥ १८ ॥ यज्ञोपवीतेहस्तेवाकंठेतुंदेथवानरः ॥ श्रीमत्पंचाक्षरेणैव
प्रणवेनतथापिवा ॥ १९ ॥ निर्व्याजभक्त्यामेधावीरुद्राक्षंधारयेन्मुदा ॥ रुद्राक्षधारणंसाक्षाच्छिवज्ञानस्यसा
धनं ॥ २० ॥ रुद्राक्षंयच्छिखायांतत्तारतत्वमितिस्मरेत् ॥ कर्णयोरुभयोर्ब्रह्मनदेवंदेवींचभावयेत् ॥ २१ ॥
यज्ञोपवीतेवेदांश्चतथाहस्तेदिशःस्मरेत् ॥ कंठेसरस्वतीदेवींपावकंचापिभावयेत् ॥ २२ ॥ सर्वाश्रमाणांव
र्णानांरुद्राक्षाणांचधारणं ॥ कर्तव्यमंत्रतःप्रोक्तंद्विजानांनान्यवर्णिनां ॥ २३ ॥ रुद्राक्षधारणाद्रुद्रोभवत्येव
नसंशयः ॥ पश्यन्नपिनिषिद्धांश्चतथाशृण्वन्नपिस्मरन् ॥ २४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥

तान्द्रात्रिंशत्संख्यकान् विंशतीद्विंशतिश्चविंशतिश्चविंशतीदित्येकशेषः द्वेविंशतीचत्वारिंशदित्यर्थः करयुगलकृतेकरयुगार्थद्वादशद्वाद
शैवैकैकहस्तेद्वादशद्वादशेत्यर्थः इंदोःकलाभिःषोडशसंख्यैरित्यर्थः एकमेकंनयनेशिखायामेकमित्यर्थः ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥
॥ २१ ॥ २२ ॥ नान्यवर्णिनामिति अत्रद्विजशब्देनब्राह्मणक्षत्रियवैश्यास्तेषांमंत्रतोधारणं शूद्रादीनांतुमंत्रतोधारणंकिंत्वमंत्रकमेवे
त्यर्थः ॥ २३ ॥ २४ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

टी.अ.

३

॥ ८ ॥

॥ २१ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ इति श्रीदेवीभागवतति

जिघ्रन्नपितथावाभ्रन्प्रलपन्नपिसंततं॥कुर्वन्नपिसदागच्छन्विसृजन्नपिमानवः॥२५॥ रुद्राक्षधारणादेवसर्वपा
पैर्नलिज्यते ॥ अनेनभुक्तंदेवेनभुक्तंयत्तुतथाभवेत् ॥ २६ ॥ पीतरुद्रेणतत्पीतंघ्रातंघ्रातंशिवेनतत् ॥ रुद्राक्ष
धारणेलज्जायेषामस्तिमह्यमुने ॥ २७ ॥ तेषानास्तिविनिर्मोक्षःसंसारज्जन्मकोटिभिः ॥ रुद्राक्षधारणंदृष्ट्वा
परिवादंकरोतियः ॥ २८ ॥ उत्पत्तौतस्यसांकार्यमस्त्येवेतिविनिश्चयः ॥ रुद्राक्षधारणादेवरुद्रोरुद्रत्वमाप्नु
यात् ॥ २९ ॥ मुनयःसत्यसंकल्पाब्रह्माब्रह्मत्वमागतः ॥ रुद्राक्षधारणाच्छ्रेष्ठंनकिंचिदपिविद्यते ॥ ३० ॥ रु
द्राक्षधारिणेभक्त्यावस्त्रंधान्यंददातियः ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तःशिवलोकंसगच्छति ॥ ३१ ॥ रुद्राक्षधारिणंश्राद्धे
भोजयेतविमोदतः ॥ पितृलोकमवाप्नोतिनात्रकार्याविचारणा ॥ ३२ ॥ रुद्राक्षधारिणःपादौप्रक्षाल्याद्भिःपि
वेन्नरः ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तःशिवलोकेमहीयते ॥ ३३ ॥ हारंवाकटकंवापिसुवर्णंवाद्विजोत्तमः ॥ रुद्राक्षसहितं
भक्त्याधारयन्नुद्रतामियात् ॥ ३४ ॥ रुद्राक्षंकेवलंवापियत्रकुत्रमहामते ॥ समंत्रकंवामंत्रेणरहितंभाववर्जि
तं ॥ ३५ ॥ योवाकोवानरोभक्त्याधारयेलज्जयापिवा ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तःसम्यग्ज्ञानमवाप्नुयात् ॥ ३६ ॥
अहोरुद्राक्षमाहात्म्यंमयावक्तुंनशक्यते ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनकुर्याद्रुद्राक्षधारणं ॥ ३७ ॥ इति श्रीदेवीभाग
वतेमहापुराणेएकादशस्कंधेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ नारद उवाच ॥ एवंभूतानुभावोयंरुद्राक्षोभवतानघ ॥ व
र्णितोमहतांपूज्यःकारणंतत्रकिंवद ॥ १ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥

लकेएकादशस्कंधेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ चत्वारिंशन्महाश्लोकैरुद्राक्षोत्पत्तिपूर्वकं ॥ रुद्राक्षाणांबहुविधंवर्णनंसमुदीर्यते ॥ ६ ॥ रुद्रा
क्षमहिमानंभुत्वानारदःपृच्छति नारद उवाच एवंभूतेति ॥ १ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.ए.

॥ ९ ॥

॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ कपिला अनेकवर्णवंतः अतएवाग्रेरक्तो मिश्रश्चेति वक्ष्याति ॥ ९ ॥ १० ॥ ब्राह्म उच्यते त

नारायण उवाच ॥ एवमेव पुरापृष्ठे भगवान्गिरिशः प्रभुः ॥ षण्मुखेन च रुद्रस्तं यदुवाच शृणुष्व तत् ॥ २ ॥ ई
श्वर उवाच ॥ शृणु षण्मुख तत्त्वेन कथयामि समासतः ॥ त्रिपुरो नाम दैत्यस्तु पुरासीत् सर्वदुर्जयः ॥ ३ ॥ हतास्ते
नसुराः सर्वे ब्रह्मविष्णवादिदेवताः ॥ सर्वेस्तु कथिते तस्मिन् तदा हं त्रिपुरं प्रति ॥ ४ ॥ अचिंतयन् महाशस्त्रमग्रे
राख्यं मनोहरं ॥ सर्वदेवमयं दिव्यं ज्वलंतं घोररूपिणम् ॥ ५ ॥ त्रिपुरस्य वधार्थाय देवानां तारणाय च ॥ सर्व
विघ्नापशमनमघोरास्त्रमचिंतयम् ॥ ६ ॥ दिव्यवर्षसहस्रं तु चक्षुरुन्मीलितं मया ॥ पश्चान्ममाकुलाक्षिभ्यः प
तिना जलविंदवः ॥ ७ ॥ तत्राश्रुविंदुतो जाता महा रुद्राक्षवृक्षकाः ॥ ममाज्ञायामहासेन सर्वे पंडितकाम्यया ॥
॥ ८ ॥ बभूवुस्ते च रुद्राभा अष्टविंशत्प्रभेदतः ॥ सूर्यनेत्रसमुद्भूताः कपिलाद्वादश स्मृताः ॥ ९ ॥ सोमनेत्रोत्थि
ताः श्वेतास्तेषां दशविधाः क्रमात् ॥ बन्दिनेत्रोद्भवाः कृष्णा दशभेदा भवन्ति हि ॥ १० ॥ श्वेतवर्णश्च रुद्राक्षोजाति
तो ब्राह्म उच्यते ॥ क्षात्रोरक्तस्तथा मिश्रो वैश्यः कृष्णस्तु शूद्रकः ॥ ११ ॥ एकवक्त्रः शिवः साक्षाद्ब्रह्महत्यां व्यपो
हति ॥ द्विवक्त्रो देवदेव्यौ स्याद्विविधं नाशयेदघं ॥ १२ ॥ त्रिवक्त्रस्त्वनलः साक्षात्स्त्रीहत्यां दहति क्षणात् ॥ चतुर्व
क्त्रः स्वयं ब्रह्मानरहत्यां व्यपोहति ॥ १३ ॥ पंचवक्त्रः स्वयं रुद्रः कालाग्निर्नामनामतः ॥ अभक्ष्य भक्षणोद्भूतैरग
म्यागमनोद्भवैः ॥ १४ ॥ मुच्यते सर्वपापैस्तु पंचवक्त्रस्य धारणात् ॥ षड्वक्त्रः कार्तिकेयस्तु स धार्यो दक्षिणे क
रे ॥ १५ ॥ ब्रह्महत्यादिभिः पापैर्मुच्यते नात्र संशयः ॥ सप्तवक्त्रो महाभागो ह्यनंगो नामनामतः ॥ १६ ॥

था च सत्राक्षगैर्धार्य इत्यर्थः एवमुत्तरत्र ॥ ११ ॥ एकवक्त्रादि रुद्राक्षाणां तत्तद्देवतारूपत्वमाह एकवक्त्र इति ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥
॥ १५ ॥ १६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

टी.अ.

४

॥ ९ ॥

॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥

तद्वारणान्मुव्यतेहिस्वर्णस्तेयादिपातकैः ॥ अष्टवक्रोमहासेनसाक्षादेवोविनायकः ॥ १७ ॥ अन्नकूटंतूलकू
टंस्वर्णकूटंतथैवच ॥ दुष्टान्वयस्त्रियंवाथसंस्पृशंश्चगुरुस्त्रियं ॥ १८ ॥ एवमादीनिपापानिहंतिसर्वाणिधार
णात् ॥ विघ्नास्तस्यप्रणश्यंतियातिचांतेपरंपदं ॥ १९ ॥ भवंत्येतेगुणाःसर्वेह्यष्टवक्रस्यधारणात् ॥ नववक्रो
भैरवस्तुधारयेद्वामबाहुके ॥ २० ॥ भुक्तिमुक्तिप्रदःप्रोक्तोममतुल्यबलोभवेत् ॥ भूणहत्यासहस्राणिब्रह्म
हत्याशतानिच ॥ २१ ॥ सद्यःप्रलयमायांतिनववक्रस्यधारणात् ॥ दशवक्रस्तुदेवेशःसाक्षादेवोजनार्दनः
॥ २२ ॥ ग्रहाश्चैवपिशाचाश्चवेतालाब्रह्मराक्षसाः ॥ पन्नगाश्चोपशाम्यंतिदशवक्रस्यधारणात् ॥ २३ ॥ वक्रैका
दशरुद्राक्षोरुद्रैकादशकंस्मृतं ॥ शिखायांधारयेद्येवैतस्यपुण्यफलंशृणु ॥ २४ ॥ अश्वमेधसहस्रस्यवाजपे
यशतस्यच ॥ गवांशतसहस्रस्यसम्यग्दत्तस्ययत्फलं ॥ २५ ॥ तत्फलंलभतेशीघ्रंवक्रैकादशधारणात् ॥
द्वादशास्यस्यरुद्राक्षस्यैवकर्णेतुधारणात् ॥ २६ ॥ आदित्यास्तोषितानित्यंद्वादशास्यव्यवस्थिताः ॥ गोमेधे
चाश्वमेधेचयत्फलंतदवाप्नुयात् ॥ २७ ॥ शृंगिणांशस्त्रिणांचैवव्याघ्रादीनांभयंनहि ॥ नचव्याधिभयंतस्य
नैवचाधिःप्रकीर्तितः ॥ २८ ॥ नचकिंचिद्भयंतस्यनचव्याधिःप्रवर्तते ॥ नकुतश्चिद्भयंतस्यसुखीचैवेश्वरोभ
वेत् ॥ २९ ॥ हस्त्यश्वमृगमार्जारसर्पमूषकदुर्दुरान् ॥ खरांश्चश्वशृगालांश्चहत्वाबहुविधानपि ॥ ३० ॥ मु
च्यतेनात्रसंदेहोवक्रद्वादशधारणात् ॥ वक्रत्रयोदशोवत्सरुद्राक्षोयदिलभ्यते ॥ ३१ ॥ कार्तिकेयसमोज्ञेयः
सर्वकामार्थसिद्धिदः ॥ रसोरसायनंचैवतस्यसर्वप्रसिद्धति ॥ ३२ ॥ तस्यैवसर्वभोग्यानिनात्रकार्याविचार
णा ॥ मातरंपितरंचैवभ्रातरंवानिहंतियः ॥ ३३ ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४१ ॥

॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४१ ॥

दे.भा.ए.

॥१०॥

॥ ३४ ॥ ३५ ॥ रुद्राक्षधारणेपूर्वापेक्षयापक्षांतरमाह रुद्राक्ष एकः शिरसीति ॥ ३६ ॥ एतेचपक्षाः शिवपुराणेप्रसिद्धाः प्रयोजनाभावात्
द्वचनानिनोदाह्रियंते ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके एकादशस्कंधेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ षट्त्रिंशद्विर

मुच्यते सर्वपापेभ्यो धारणात्तस्य षण्मुख ॥ चतुर्दशास्यो रुद्राक्षो यदि लभ्येत पुत्रक ॥ ३४ ॥ धारयेत्स ततं मूर्ध्नि
तस्य पिंडः शिवस्य तु ॥ किं मुने बहुनोक्तेन वर्णनेन पुनः पुनः ॥ ३५ ॥ पूज्यते संततं देवैः प्राप्यते च परा गतिः ॥
रुद्राक्ष एकः शिरसा धार्यो भक्त्या द्विजोत्तमैः ॥ ३६ ॥ षड्विंशद्विः शिरोमाला पंचाशत्पृथगेन तु ॥ कलाक्षैर्वा ह्रुवल्
ये अर्काक्षैर्मणिबंधनं ॥ ३७ ॥ अष्टोत्तरशतेनापि पंचाशद्विः षडानन ॥ अथ वा सप्तविंशत्या कृत्वा रुद्राक्षमालि
कां ॥ ३८ ॥ धारणाद्वा जपाद्वापि ह्यनंतं फलमश्नुते ॥ अष्टोत्तरशतैर्माला रुद्राक्षैर्धार्यते यदि ॥ ३९ ॥ क्षणे क्षणेश्च
मेधस्य फलं प्राप्नोति षण्मुख ॥ त्रिः सप्तकुलमुत्पृथ्य शिवलोके महीयते ॥ ४० ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे
एकादशस्कंधेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ईश्वर उवाच ॥ लक्षणं जपमालायाः शृणु वक्ष्यामि षण्मुख ॥ रुद्राक्षस्य मुखं त्र
ह्माविंदू रूद्र इतीरितः ॥ १ ॥ विष्णुः पुच्छं भवेच्चैव भोगमोक्षफलप्रदं ॥ पंचविंशतिभिश्चाक्षैः पंचवक्त्रैः सकंठकैः ॥
॥ २ ॥ रक्तवर्णैः सितैर्मिश्रैः कृतरंध्रविदर्भितैः ॥ अक्षमूत्रं प्रकर्तव्यं गोपुच्छवल्याकृति ॥ ३ ॥ वक्रं वक्त्रेण संयो
ज्य पुच्छं पुच्छेन योजयेत् ॥ मेरुमूर्ध्वमुखं कुर्यात्तदूर्ध्वनागपाशकं ॥ ४ ॥ एवं संग्रथितां मालां मंत्रसिद्धिप्रदायि
नीं ॥ प्रक्षाल्य गंधतोयेन पंचगव्येन चोपरि ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥

यश्चोक्तैर्जपमालाविधानकं ॥ सम्यगुक्ता पुनरुद्राक्षाणां तु महिमोच्यते ॥ १ ॥ जपमालालक्षणमाह लक्षणमिति रुद्राक्षे भावनीयदेवानाह रुद्राक्ष
स्येति ॥ १ ॥ पंचविंशतिमणिमालापक्षमाह पंचविंशतिभिरिति ॥ २ ॥ विदर्भितैः ग्रथितैः ॥ ३ ॥ गोपुच्छलक्षणमाह वक्रं वक्त्रेणेति
नागपाशकं ग्रथिरूपं ॥ ४ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥

टी.अ.

४

॥१०॥

शिवांभसाशुद्धजलेन आक्षालयेतिछेदः शिवांश्चेति शिवमंत्रषडंगेयोस्त्रमंत्रस्तेनेत्यर्थः कवचेनेति कवचमंत्रोहुमिति अवगुंठयेदेकत्रकुर्यात्

ततःशिवांभसाक्षाल्यततोमंत्रगणाद्वयसेत् ॥ स्पृष्ट्वाशिवास्त्रमंत्रेणकवचेनावगुंठयेत् ॥ ६ ॥ मूलमंत्रंन्यसे
त्पश्चात्पूर्ववत्कारयेत्तथा ॥ सद्योजातादिभिःप्रोक्ष्ययावदष्टोत्तरंशतं ॥ ७ ॥ मूलमंत्रंसमुच्चार्यशुद्धभूमौनिधा
यच ॥ तस्योपरिन्यसेत्सांवंशिवंपरमकारणं ॥ ८ ॥ प्रतिष्ठिताभवेन्मालासर्वकामफलप्रदा ॥ यस्यदेवस्य
योमंत्रस्तांतेनैवाभिपूजयेत् ॥ ९ ॥ मूर्ध्नि कंठेथवाकर्णेन्यसेद्वाजपमालिकां ॥ रुद्राक्षमालयाचैवंजप्तव्यंनिय
तात्मना ॥ १० ॥ कंठेमूर्ध्निहृदिप्रांतेकर्णेबाहुयुगेथवा ॥ रुद्राक्षधारणंनित्यंभक्त्यापरमयायुतः ॥ ११ ॥ कि
मत्रबहुनोक्तेनवर्णनेनपुनःपुनः ॥ रुद्राक्षधारणंनित्यंतस्मादेतत्प्रशस्यते ॥ १२ ॥ स्नानेदानेजपेहोमेवै
श्वदेवेसुरार्चने ॥ प्रायश्चित्तेतथाश्राद्धेदीक्षाकालेविशेषतः ॥ १३ ॥ अरुद्राक्षधरोभूत्वायत्किंचिन्कर्मवैदिकं ॥
कुर्वन्विप्रस्तुमोहेननरकेपततिध्रुवं ॥ १४ ॥ रुद्राक्षंधारयेन्मूर्ध्नि कंठेसूत्रेकरेथवा ॥ सुवर्णमणिसंभिन्नंशुद्धं
नान्यैर्धृतंशिवं ॥ १५ ॥ नाशुचित्धारयेदक्षंसदाभक्त्यैवधारयेत् ॥ रुद्राक्षतरुसंभूतवातोद्धूततृणान्यपि ॥ १६ ॥
पुण्यलोकंगमिष्यंतिपुनरावृत्तिदुर्लभम् ॥ रुद्राक्षंधारयन्पापंकुर्वन्नपिचमानवः ॥ १७ ॥ सर्वतरतिपाप्मानं
जाबालश्रुतिराहहि ॥ पशवोहिचरुद्राक्षधारणाद्यांतिरुद्रताम् ॥ १८ ॥ किमुयेधारयंतिस्मनरारुद्राक्षमालिकां
॥ रुद्राक्षःशिरसाह्येकोधार्योरुद्रपरैःसदा ॥ १९ ॥ ध्वंसनंसर्वदुःखानांसर्वपापविमोचनं ॥ व्याहरंतिचनामा
नियेशंभोःपरमात्मनः ॥ २० ॥

॥ ६ ॥

॥ ६ ॥

॥ ६ ॥

तु ॥ ६ ॥ मूलमंत्रंजप्यमंत्रं इदमनुष्ठानंस्वयंकुर्यात्पूर्ववदथवाकारयेद्वागुरुहस्तेनेत्यर्थात् ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥
॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥

ॐ

ॐ

ॐ

॥ ॐ ॥

दे.भा.ए.

॥११॥

भागवतोत्तमाः भगवतःशिवस्यभक्तेषूत्तमाः ॥२१॥२२॥ मूलरूपिणोमूलपुरुषाः ॥ २३ ॥२४॥ विमुक्तिदेरुद्राक्षधारणेइतिशेषः

रुद्राक्षालंकृतायेचतेवैभागवतोत्तमाः ॥ रुद्राक्षधारणंकार्यंसर्वश्रेयोर्थिभिर्नृभिः ॥ २१ ॥ कर्णपाशेशिखायांच
कंठेहस्तेतथौदरे ॥ महादेवश्चविष्णुश्चब्रह्मातेषांविभूतयः ॥ २२ ॥ देवाश्चान्येतथाभक्त्याखलुरुद्राक्षधारि
णः ॥ गोत्रर्षयश्चसर्वेषांकूटस्थामूलरूपिणः ॥ २३ ॥ तेषांवंशप्रसूताश्चमुनयःसकलाअपि ॥ श्रौतधर्मपराः
शुद्धाःखलुरुद्राक्षधारिणः ॥ २४ ॥ श्रद्धानजायतेसाक्षाद्वेदसिद्धेविमुक्तिदे ॥ बहूनांजन्मनामंतेमहादेवप्रसा
दतः ॥ २५ ॥ रुद्राक्षधारणेवांछास्वभावादेवजायते ॥ रुद्राक्षस्यतुमाहात्म्यंजाबालैरादरेणतु ॥ २६ ॥ प
ठ्यतेमुनिभिःसर्वैर्मयापुत्रतथैवच ॥ रुद्राक्षस्यफलंचैवत्रिषुलोकेषुविश्रुतं ॥ २७ ॥ फलस्यदर्शनेपुण्यंस्पर्शा
त्कोटिगुणंभवेत् ॥ शतकोटिगुणंपुण्यंधारणाल्लभतेनरः ॥ २८ ॥ लक्षकोटिसहस्राणिलक्षकोटिशतानिच ॥
जपाच्चल्लभतेनित्यंनात्रकार्याविचारणा ॥२९॥ हस्तेचोरसिकंठेचकर्णयोर्मस्तकेतथा ॥ रुद्राक्षंधारयेद्यस्तुस
रुद्रोनात्रसंशयः ॥ ३० ॥ अवध्यःसर्वभूतानांरुद्रवद्विचरेद्भुवि ॥ सुराणामसुराणांचवंदनीयोयथाशिवः ॥
३१ ॥ रुद्राक्षधारीसततंवंदनीयस्तथानरैः ॥ उच्छिद्येवाविकर्मस्थोयुक्तोवासर्वपातकैः ॥ ३२ ॥ मुच्यतेस
र्वपापेभ्योरुद्राक्षस्यतुधारणात् ॥ कंठेरुद्राक्षमाबध्यश्वापिवाघियतेयदि ॥ ३३ ॥ सोपिमुक्तिमवाप्नोति
किंपुनर्मानुषोपिसः ॥ जपध्यानविहीनोपिरुद्राक्षंयदिधारयेत् ॥ ३४ ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तःसयातिपरमांगति
॥ एकंवापिहिरुद्राक्षंकृत्वायत्नेनधारयेत् ॥ ३५ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥

॥ २५ ॥ जाबालैर्जाबालशाखिभिः ॥ २६ ॥ २७ ॥ फलस्येति रुद्राक्षफलस्येत्यर्थः ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥
॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

टी.अ.

५

॥११॥

॥ ३६ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके एकादशस्कंधे पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ चतुर्भिरधिकैः पञ्चाशद्विः पद्यैरनंतरं ॥ रुद्राक्षमहिमातीव प्रोच्य

कुलैकविंशतिमुधृत्य रुद्रलोके महीयते ॥ अतः परं प्रवक्ष्यामि रुद्राक्षस्य पुनर्विधिं ॥ ३६ ॥ इति श्रीदे
वीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधे पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ ईश्वर उवाच ॥ महासेन कुशग्रंथिपुत्रजी
वादयः परे ॥ रुद्राक्षस्य तु नैकोपि कलामर्हति षोडशीं ॥ १ ॥ पुरुषाणां यथा विष्णुर्ग्रहाणां च यथारविः ॥ नदी
नां तु यथा गंगामुनीनां कश्यपो यथा ॥ २ ॥ उच्चैः श्रवायथा श्वानां देवानामोश्वरो यथा ॥ देवीनां तु यथा गौरी तद्व
च्छ्रेष्ठमिदं भवेत् ॥ ३ ॥ नातः परतरं स्तोत्रं नातः परतरं व्रतं ॥ अक्षय्येषु च दानेषु रुद्राक्षस्तु विशिष्यते ॥ ४ ॥
शिवभक्ताय शांताय दद्याद् रुद्राक्षमुत्तमं ॥ तस्य पुण्यफलस्यांतं न चाहं वक्तुमुत्सहे ॥ ५ ॥ धृत रुद्राक्षं कंठाय यस्त्वन्नं
संप्रयच्छति ॥ त्रिः सप्तकुलमुधृत्य रुद्रलोकं स गच्छति ॥ ६ ॥ यस्य भाले विभूतिर्नानां गेरुद्राक्षधारणं ॥ न शंभोर्भव
ने पूजा स विप्रः श्वपचाधमः ॥ ७ ॥ खादन्मांसं पिबन्मद्यं संगच्छन्नंत्यजानपि ॥ पातकेभ्यो विमुच्येत रुद्राक्षेशिर
सि स्थिते ॥ ८ ॥ सर्वयज्ञतपोदानवेदाभ्यासैश्च यत्फलं ॥ तत्फलं लभते सद्योरुद्राक्षस्य तु धारणात् ॥ ९ ॥ वे
दैश्च तु भिर्यत्पुण्यं पुराणपठनेन च ॥ यत्तीर्थसेवने नैव सर्वविद्यादिभिस्तथा ॥ १० ॥ तत्पुण्यं लभते सद्योरुद्राक्ष
स्य तु धारणात् ॥ प्रयाणकाले रुद्राक्षं बंधयित्वा म्रियेद्यदि ॥ ११ ॥ सरुद्रत्वमवाप्नोति पुनर्जन्म न विद्यते ॥
रुद्राक्षं धारयेत्कंठे वा वह्नीं वा म्रियते यदि ॥ १२ ॥ कुलैकविंशमुत्तार्य रुद्रलोके वसेन्नरः ॥ ब्राह्मणो वा पिचांडालो
निर्गुणः स गुणोपि च ॥ १३ ॥

॥ ६१ ॥

॥ ६२ ॥

॥ ६३ ॥

तेभक्तिवृद्धये ॥ १ ॥ अन्यमालानां निर्दिष्टा माह महासेनेति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥

दे.भा.ए.

॥१२॥

॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ भक्तिवर्जितः सोपीत्यर्थः ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥

भस्मरुद्राक्षधारीयः सदेवत्वं शिवं व्रजेत् ॥ शुचिर्वाप्यशुचिर्वापितथा भक्ष्यस्य भक्षकः ॥ १४ ॥ म्लेच्छो वाप्यथ चां
डालो युतो वा सर्वपातकैः ॥ रुद्राक्षधारणादेव सरुद्रो नात्र संशयः ॥ १५ ॥ शिरसाधारिते कोटिः कर्णयोर्दशको
टयः ॥ शतकोटिर्गले बद्धो मूर्ध्नि कोटिः सहस्रकं ॥ १६ ॥ अयुतं चोपवीते तु लक्षकोटिर्भुजे स्थिते ॥ मणिबंधे तु रुद्रा
क्षो मोक्षसाधनकः परः ॥ १७ ॥ रुद्राक्षधारको भूत्वा यत्किंचित्कर्म वैदिकं ॥ कुर्वन्विप्रः सदा भक्त्या महदाप्नोति
तत्फलं ॥ १८ ॥ रुद्राक्षमालिकां कंठे धारयेद्भक्तिवर्जितः ॥ पापकर्मातुर्यो नित्यं समुक्तः सर्वबंधनात् ॥ १९ ॥
रुद्राक्षार्पितचेता यो रुद्राक्षस्तेन वै धृतः ॥ असौ माहेश्वरो लोके नमस्यः स तु लिंगवत् ॥ २० ॥ अविद्यो वा स विद्यो
वारुद्राक्षस्य तु धारणात् ॥ शिवलोकं प्रपद्येत कीकटे गर्दभो यथा ॥ २१ ॥ स्कंद उवाच ॥ रुद्राक्षान्संदधे देव गर्द
भः केन हेतुना ॥ कीकटे केन वा दत्तस्तद्ब्रूहि परमेश्वर ॥ २२ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ शृणु पुत्र पुरावृत्तं गर्दभो विध्य
पर्वते ॥ धत्ते रुद्राक्षभारं तु वाहितः पथिकेन तु ॥ २३ ॥ श्रान्तो समर्थस्तद्भारं वोढुं पतितवान्भुवि ॥ प्राणैस्त्यक्त
स्त्रिनेत्रस्तु शूलपाणिर्महेश्वरः ॥ २४ ॥ मत्प्रसादान्महासेन मंदंतिकमुपागतः ॥ यावद्वक्रस्य संख्या न रुद्राक्षा
णां सुदुर्लभा ॥ २५ ॥ तावद्युगसहस्राणि शिवलोके महीयते ॥ स्वशिष्येभ्यस्तु वक्तव्यं नाशिष्येभ्यः कदाचन
॥ २६ ॥ अभक्तेभ्योऽपि मूर्खेभ्यः कदाचिन्न प्रकाशयेत् ॥ अभक्तो वास्तु भक्तो वानीचो नीचतरोऽपि वा ॥ २७ ॥
रुद्राक्षान्धारयेद्यस्तु मुच्येत सर्वपातकैः ॥ रुद्राक्षधारणं पुण्यं केन वा सदृशं भवेत् ॥ २८ ॥ महाव्रतमिदं प्राहुर्मुन
यस्तत्त्वदर्शिनः ॥ सहस्रंधारयेद्यस्तु रुद्राक्षाणां धृतव्रतः ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥

॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥

॥ ३० ॥

॥ ३१ ॥

॥ ३२ ॥

टी.अ.

६

॥१२॥

॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ सुधिषणनामो गुरोः मुक्तावली

तं नमंतिसुराः सर्वे यथारुद्रस्तथैव सः ॥ अभावे तु सहस्रस्य बाहोः षोडश षोडश ॥ ३० ॥ एकं शिखायां करयो
द्वादश द्वादशैव तु ॥ द्वात्रिंशत्कंठदेशे तु चत्वारिंशच्च मस्तके ॥ ३१ ॥ एकैककर्णयोः षट्षट्क्षस्य श्रेष्ठतरं शतं ॥
बोधायति रुद्राक्षान् रुद्रवत्स तु पूज्यते ॥ ३२ ॥ मुक्ताप्रवालस्फटिकरौप्यवैदूर्यकांचनैः ॥ समेतान्धारयेद्य
स्तु रुद्राक्षान्सशिवो भवेत् ॥ ३३ ॥ केवलानपि रुद्राक्षान्यद्यालस्याद्विभर्तियः ॥ तं न स्पृशंति पापानि तमांसी
व विभावसु ॥ ३४ ॥ रुद्राक्षमालयामंत्रोजतो नंत फलप्रदः ॥ यस्यांगेनास्ति रुद्राक्ष एकोपि बहुपुण्यदः ॥
॥ ३५ ॥ तस्य जन्म निरर्थं स्यात्त्रिपुंड्ररहितं यथा ॥ रुद्राक्षं मस्तके धृत्वा शिरः स्नानं करोति यः ॥ ३६ ॥ गंगा
स्नानं फलं तस्य जायते नात्र संशयः ॥ एकवक्त्रः पंचवक्त्र एकादशमुखाः परे ॥ ३७ ॥ चतुर्दशमुखाः केचिद्रुद्राक्षा
लोकं पूजिताः ॥ भक्त्या संपूज्यते नित्यं रुद्राक्षः शंकरात्मकः ॥ ३८ ॥ दरिद्रं वापि पुरुषं राजानं कुरुते भुवि ॥ अ
त्र ते कथयिष्यामि पुराणं वृत्तमुत्तमं ॥ ३९ ॥ कोसलेषु द्विजः कश्चिद्भिरिनाथ इति श्रुतः ॥ महाधनी च धर्मात्मा वि
देवेदांगपारगः ॥ ४० ॥ यज्ञकृद्दीक्षितस्तस्य तनयः सुंदराकृतिः ॥ नाम्ना गुणनिधिः स्यात्तस्तरुणः कामसु
ंदरः ॥ ४१ ॥ गुरोः सुधिषणस्याथ पत्नी मुक्तावली मथ ॥ मोहयामासरूपेण यौवने नमदेन च ॥ ४२ ॥ संगत
स्तु तया सार्द्धं चित्कालं ततो भिया ॥ विषं द्रदौ च गुरवे ये भेषश्चात्तु निर्भयः ॥ ४३ ॥ यदा माता पिता कर्म किंचि
ज्जानाति तत्क्षणे ॥ मातरं पितरं वापि मारयामास तद्विषात् ॥ ४४ ॥ नाना विलासभोगैश्च जाते द्रव्यव्यये ततः
ब्राह्मणानां गृहे यौर्यं चकार स तदा खलः ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥

नामनी मुली ॥ ४२ ॥ पञ्चाद्वरौ मृते सति ये भैमैथुनं कृतवान् ॥ ४३ ॥ तद्विषात्तस्माद्विषात् ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

॥ ४६ ॥

दे.भा.ए.

॥१३॥

॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधे षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

अर्धाधिकैकचत्वारिंशत्पदैरथ वर्णनं ॥ एकवक्त्रादिकाक्षाणां क्रियते भक्तिवृत्तये ॥ १ ॥ षड्वक्त्रः स्कंदः ॥ २ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ तज्जपात्त

मुरापानमदोन्मत्तस्तदाज्ञातिबाहिष्कृतः ॥ ग्रामान्निष्काशितः सर्वैस्तदासोभूद्वने चरः ॥ ४६ ॥ मुक्तावल्या
तया सार्धं जगाम गहनं वनं ॥ मार्गे स्थितो द्रव्यलोभाज्जघान ब्राह्मणान् बहून् ॥ ४७ ॥ एवं बहुगते काले ममार
सतदाधमः ॥ नेतुं तं यमदूताश्च समाजग्मुः सहस्रशः ॥ ४८ ॥ शिवलोकाच्छिवगणास्तथैव च समागताः ॥ त
योः परस्परं वादो बभूव गिरिजासुता ॥ ४९ ॥ यमदूतास्तदा प्रोचुः पुण्यमस्य किमस्ति हि ॥ ब्रुवंतु सेवकाः शंभोर्यद्ये
नं नेतुमिच्छथ ॥ ५० ॥ शिवदूतास्तदा प्रोचुरयं यस्मिन् स्थले मृतः ॥ दशहस्तादधो भूमि रूद्राक्षस्तत्र चास्ति हि
॥ ५१ ॥ तत्प्रभावेन हे दूतानेप्यामः शिवसन्निधौ ॥ ततो विमानमारूढादिव्यरूपधरो द्विजः ॥ ५२ ॥ गतो गुण
निधिर्दूतैः सहितः शंकरालयं ॥ इति रूद्राक्षमाहात्म्यं कथितं तव सुव्रत ॥ ५३ ॥ एवं रूद्राक्षमहिमा समासात्कथि
तो मया ॥ सर्वपापक्षयकरो महापुण्यफलप्रदः ॥ ५४ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधे षष्ठो
ऽध्यायः ॥ ६ ॥ एवं नारद षड्वक्त्रो गिरिशेन विबोधितः ॥ रूद्राक्षमहिमानं च ज्ञात्वा सीत्सकृतार्थकः ॥ १ ॥ इत्थं
भूतानुभावो यं रूद्राक्षो वर्णितो मया ॥ सदा चारप्रसंगेन शृणु चान्यत्समाहितः ॥ २ ॥ यथा रूद्राक्षमहिमा वर्णितो
नंतपुण्यदः ॥ लक्षणं मंत्रविन्यासं तथा हं वर्णयामि ते ॥ ३ ॥ लक्षं तु दर्शनात्पुण्यं कोटिस्तत्स्पर्शनाद्भवेत् ॥ तस्य
कोटिगुणं पुण्यं लभते धारणात्तरः ॥ ४ ॥ लक्षकोटि सहास्राणि लक्षकोटि शतानि च ॥ तज्जपालभते पुण्यं नरो
रूद्राक्षधारणात् ॥ ५ ॥ रूद्राक्षाणां तु भद्राक्षधारणात्स्यान्महाफलं ॥ धात्रीफलप्रमाणं यच्छ्रेष्ठमेतदुदाहृतं ॥ ६ ॥

स्यमाख्यानादित्यर्थः ॥ ५ ॥ भद्राक्षधारणादित्यल्लोपेपंचमी भद्राक्षधारणमपेक्ष्य रूद्राक्षाणां महाफलं भवतीत्यर्थः एतेन रूद्राक्षाभावे भद्रा

क्षधारणे नुमतिर्दायिता उच्यते ॥ इति भेदेन रूद्राक्षभेदमाह धात्रीति ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥

टी.अ.

६

॥१३॥

॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ छिन्नान्छंडिता न्भिन्नान्विहीणान् ॥ ११ ॥ १२ ॥ कृतंदारभित्तियेषः ॥ १३ ॥ सर्वे

बदरीफलमात्रं तु प्रोच्यते भध्यमंबुधैः ॥ अधमंचणमात्रं स्यात्प्रतिज्ञैषामयोदिता ॥ ७ ॥ ब्राह्मणाक्षत्रियावै
श्याः शूद्राभ्येति शिवाज्ञया ॥ वृक्षाजाताः पृथिव्यांतु तज्जातीयाः शुभाक्षकाः ॥ ८ ॥ स्वेतास्तु ब्राह्मणाज्ञेयाः क्षत्रिया
रक्तवर्णकाः ॥ पीतावैश्यास्तु विज्ञेयाः कृष्णाः शूद्राः प्रकीर्तिताः ॥ ९ ॥ ब्राह्मणो विभृयात्स्वेता त्रक्ता त्राजा तु धा
रयेत् ॥ पीतान्वैश्यस्तु विभृयात्कृष्णाच्छूद्रस्तु धारयेत् ॥ १० ॥ समाः स्निग्धा दृढास्तद्वत्कंटकैः संयुताः शु
भाः ॥ कृमिदंष्ट्रा छिन्नभिन्नान्कंटकैरहितास्तथा ॥ ११ ॥ व्रणयुक्तानावृतांश्च षड्द्राक्षांस्तु वर्जयेत् ॥ स्वय
मेव कृतद्वारो रुद्राक्षः स्यादिहोत्तमः ॥ १२ ॥ यत्तु पौरुषयत्नेन कृतं तन्मध्यमं भवेत् ॥ समान्स्निग्धान्दृढान्
तान्क्षौमसूत्रेण धारयेत् ॥ १३ ॥ सर्वगात्रेषु साम्येन समानातिविलक्षणा ॥ निघर्षहेमलेखाभायस्य लेखाप्र
दृश्यते ॥ १४ ॥ तदक्षमुत्तमं विद्यात्सधार्यः शिवपूजकैः ॥ शिखायामेकद्राक्षं त्रिंशद्वैशिरसावहेत् ॥ १५ ॥
षट्त्रिंशच्च गले धार्या बाह्वोः षोडश षोडश ॥ मणिबंधे द्वादशाक्षान्स्कंधे पंचाशतं भवेत् ॥ १६ ॥ अष्टोत्त
रशतैर्मालोपवीतं च प्रकल्पयेत् ॥ द्विसरं त्रिसरं वापि विभृयात्कंठदेशतः ॥ १७ ॥ कुंडले मुकुटे चैव कर्णि
काहारकेषु च ॥ केयूरे कटके चैव कुक्षिवंशे तथा च ॥ १८ ॥ सुप्ते पीते सर्वकालं रुद्राक्षं धारयेन्नरः ॥ त्रिंशत्
तदधमं पंचशतं मध्यममुच्यते ॥ १९ ॥ सहस्रमुत्तमं प्रोक्तं चैवं भेदेन धारयेत् ॥ शिरसी शानमंत्रेण कर्णे
तत्पुरुषेण च ॥ २० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥

गात्रेषु रुद्राक्षाणां सर्वावयवेषु समानातिविलक्षणा च निघर्षः सुवर्णपरीक्षापाषाणस्तत्र याद्वैमलेखा तत्समाना सुवर्णलेखा यत्र दृश्यते इत्यर्थः
॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७१ ॥

119811

अधोरेणललाटेतुतेनैवहृदयेपिच ॥ अधोरेत्रीजमंत्रेणकरयोर्द्वारयेत्पुनः ॥ २१ ॥ पंचाशदक्षग्रथितां वामदे
वेनचोदरे ॥ पंचब्रह्मभिरंगैश्चाप्येवंरुद्राक्षधारणं ॥ २२ ॥ ग्रथितान्मूलमंत्रेणसर्वानक्षांस्तुधारयेत् ॥ एकव
क्त्रस्तुरुद्राक्षःपरतत्त्वप्रकाशकः ॥ २३ ॥ परतत्त्वधारणाच्चजायतेतत्प्रकाशनं ॥ द्विवक्त्रस्तुमुनिश्रेष्ठार्धनारी
श्वरोभवेत् ॥ २४ ॥ धारणादर्द्धनारीशःप्रीयतेतस्यनित्यशः ॥ त्रिवक्त्रस्त्वनलःसाक्षात्त्रीहत्यांदहतिक्षणा
त् ॥ २५ ॥ त्रिमुखश्चैवरुद्राक्षोप्यग्नित्रयस्वरूपकः ॥ तद्धारणाच्चहुतभुक्तस्यतुप्यतिनित्यशः ॥ २६ ॥ च
तुर्मुखस्तुरुद्राक्षःपितामहस्वरूपकः ॥ तद्धारणान्महाश्रीमान्महदारोग्यमुत्तमं ॥ २७ ॥ महतीज्ञानसंपत्तिः
शुद्धयेधारयेन्नरः ॥ पंचमुखस्तुरुद्राक्षःपंचब्रह्मस्वरूपकः ॥ २८ ॥ तस्यधारणमात्रेणसंतुप्यतिमहेश्वरः ॥
षड्वक्त्रश्चैवरुद्राक्षःकार्तिकेयाधिदैवतः ॥ २९ ॥ विनायकंचापिदैवंप्रवदंतिमनीषिणः ॥ सप्तवक्त्रस्तुरुद्राक्षःस
प्तमात्राधिदैवतः ॥ ३० ॥ सप्ताश्वदैवतश्चैवमुनिसप्तकदैवतः ॥ तद्धारणान्महाश्रीस्यान्महदारोग्यमुत्तमं ॥
॥ ३१ ॥ महतीज्ञानसंपत्तिःशुचिर्वैधारयेन्नरः ॥ अष्टवक्त्रस्तुरुद्राक्षोप्यष्टमात्राधिदैवतः ॥ ३२ ॥ वस्वष्टकप्री
तिकरोगंगाप्रीतिकरःशुभः ॥ तद्धारणादिमेप्रीताभवेयुःसत्यवादिनः ॥ ३३ ॥ नववक्त्रस्तुरुद्राक्षोयमदैवत
दाहतः ॥ तद्धारणाद्यमभयंनभवत्येवसर्वथा ॥ ३४ ॥ दशवक्त्रस्तुरुद्राक्षोदशाशादैवतःस्मृतः ॥ दशाशाप्री
तिजनकोधारणेनात्रसंशयः ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥

तेचमंत्राः शिवषडंगेषुप्रसिद्धाः ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥
अष्टमातरोन्नाहयाद्याः ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

9

119811

॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ रुद्राक्षधारणकर्तामद्यादिपदार्थान्नभक्षयेदित्याह मद्यंमांसमिति शिशुशब्देनसौभाजनःभाषयामुंगवाइ
तिप्रसिद्धः तथाचकोशःसौभाजनेशिशुतीक्ष्णगंधकाक्षीवमोचकाइति विद्वराहोग्रामसूकरइतिमिताक्षरा ॥४०॥ नित्यंरुद्राक्षधारणाभा
वेपिण्तेषुदिनेषुनियतंधारयेदित्याह ग्रहणेविषुवेचैवेति ॥४१॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेएकादशस्कंधेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ एकविंश

एकादशमुखस्त्वक्षोरुद्रैकादशदैवतः ॥ तमिंद्रदैवतंचाहुःसदासौख्यविवर्द्धनं ॥ ३६ ॥ रुद्राक्षोद्वादशमुखोम
हाविष्णुस्वरूपकः ॥ द्वादशादित्यदैवश्चविभर्त्येवहितत्परः ॥ ३७ ॥ त्रयोदशमुखश्चाक्षःकामदःसिद्धिदःशु
भः ॥ तस्यधारणमात्रेणकामदेवःप्रसीदति ॥ ३८ ॥ चतुर्दशमुखश्चाक्षोरुद्रनेत्रसमुद्भवः ॥ सर्वव्याधिहरश्चै
वसर्वरोग्यप्रदायकः ॥ ३९ ॥ मद्यंमांसंचलशुनंपलांडुंशिशुमेवच ॥ श्लेष्मांतंकंविद्वराहंभक्षणेवर्जयेत्ततः
॥ ४० ॥ ग्रहणेविषुवेचैवसंक्रमेअयनेतथा ॥ दर्शेचपौर्णमासेचपुण्येषुदिवसेष्वपि ॥ ४१ ॥ रुद्राक्षधारणा
त्सद्यःसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ नारायणउवा
च ॥ भूतशुद्धिप्रकारंचकथयामिमहामुने ॥ मूलाधारात्समुत्थायकुंडलींपरदेवतां ॥ १ ॥ सुषुम्नामार्गमाश्रि
त्यब्रह्मरंध्रगतांस्मरेत् ॥ जीवंब्रह्मणिसंयोज्यहंसमंत्रेणसाधकः ॥ २ ॥ पादादिजानुपर्यंतंचतुष्कोणंसवज्जकं
॥ लंबीजाढ्यंस्वर्णवर्णंस्मरेदवनिमंडलं ॥ ३ ॥ जान्वाद्यानाभिचंद्रार्धनिभंपद्मद्वयांकितं ॥ वंबीजयुक्तंस्वेता
डमंभसोमंडलंस्मरेत् ॥ ४ ॥

॥ ६२ ॥

॥ ६२ ॥

॥ ६२ ॥

तिपद्यैस्तुभूतशुद्धिःसमुच्यते॥ययाविनानाधिकारोजपपूजादिकर्मणि॥१॥प्रथमतोवस्त्रपरिधानानंतरमासनेउपविश्यभस्मधारणंकार्यततो रुद्रा
क्षधारणंकार्यततोभूतशुद्धिःकर्तव्येत्याह भूतशुद्धिप्रकारमिति मूलाधारादिति कुंभकप्राणायामेनेत्यर्थः॥१॥२॥ जीवब्रह्मसंयोजनानंतरंकृ
त्यमाह पादादिति सवज्जकमिति कोणचतुष्टयेपित्रिषष्ट्यंकयुक्तमित्यर्थः वज्रस्यात्रिषष्ट्यंकाकारत्वात् तस्यमध्येलंबीजंध्यायेदेवमवनिमंडल
पृथ्वीमंडलंध्यायेदित्यर्थः ॥ ३ ॥ आनाभिनाभिपर्यंतं अर्धचंद्रस्याग्रद्वयेपद्मद्वयंध्यायेदित्यर्थः वंबीजमध्ये ॥ ४ ॥

दे.भा.ए.

॥१५॥

कोणत्रयाग्रेसिद्धस्वस्तिकान्वितं ॥ ५ ॥ षट्त्रिदुलांछितमिति समभागेवृत्तस्पर्शिनः षट्त्रिद्वोध्येयाइत्यर्थः नभस्वन्मंडलं वायुमंडलं मध्येयं बीजयुक्तं ॥ ६ ॥ ७ ॥ भुवंजलेइति पृथ्वीमंडलं जलमंडले विलापयेदित्यर्थः विलापनं नाम कार्यस्य कारणरूपतापादनं एवं पूर्वपूर्वकार्यस्योत्तरोत्तरकारणे विलापोद्भाष्यं तं कार्यः अमुं वायुं नभसि विलापयेदित्यर्थः ॥ ८ ॥ ९ ॥ भूतलयानंतरं स्तशरीरे पापपुरुषध्यानमाह चिंतयेदिति ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ वायुबीजं यमिति स्मरंस्तद्विजोद्धृतवायुना पूरकप्राणायामेन देहं संपूर्येन पापपुरुषं शोषयेत् शुष्कं कुर्यादित्यर्थः पश्चात्

नाभेर्हृदयपर्यंतं त्रिकोणं स्वस्तिकान्वितं ॥ रं बीजेन युतं रक्तं स्मरेत् पावकमंडलं ॥ ५ ॥ हृदोभूमध्यपर्यंतं वृत्तं षट्त्रिदुलांछितं ॥ यं बीजयुक्तं धूम्राभं नभस्वन्मंडलं स्मरेत् ॥ ६ ॥ आब्रह्मरंध्रं भूमध्याद्वृत्तं स्वच्छं मनोहरं ॥ हं बीजयुक्तमाकाशमंडलं च विचिंतयेत् ॥ ७ ॥ एवं भूतानि संचिंत्य प्रत्येकं सं विलापयेत् ॥ भुवंजले जलं वन्हौ वन्हिवायौ नभस्यमुं ॥ ८ ॥ विलाप्य स्वमहंकारे महत्तत्त्वेऽप्यहं कृतिं ॥ महंतं प्रकृतौ मयामात्मनि प्रविलापयेत् ॥ ९ ॥ शुद्धसंविन्मयो भूत्वा चिंतयेत् पापपुरुषं ॥ वामकुक्षिस्थितं कृष्णमंगुष्ठपरिमाणकं ॥ १० ॥ ब्रह्महत्या शिरोयुक्तं कनकस्तेयबाहुकं ॥ मदिरापानहृदयंगुरुतल्पकटीयुतं ॥ ११ ॥ तत्संसर्गिणं दृष्ट्वा मुपपातकमस्तकं ॥ खड्गचर्मधरं दुष्टमधोवक्रं सुदुःसहं ॥ १२ ॥ वायुबीजं स्मरन्वायुं संपूर्येन विशोषयेत् ॥ स्वशरीरयुतं मंत्री वन्हिबीजेन निर्दहेत् ॥ १३ ॥ कुंभके परिजप्तेन ततः पापनरोद्भवं ॥ बहिर्भस्मसमुत्सार्य वायुबीजेन रेचयेत् ॥ १४ ॥ सुधाबीजेन देहोत्थं भस्म संश्लबधेत् सुधीः ॥ भूबीजेन घनीकृत्य भस्मतत्कनकां वदवत् ॥ १५ ॥

त्वशरीरयुतं पापपुरुषं वन्हिबीजेन रमिति विजोद्धारणेन तदुत्थाग्निना दहेदित्यर्थः ॥ १३ ॥ कुंभके परिजप्तेन वन्हिबीजेनेति पूर्वोक्तान्वयः ततो वायुबीजमुच्चार्य पापनरोद्भवं पापपुरुषोद्भवं केवलं भस्म ब्रह्मिः स्वशरीराद्बहिः समुत्सार्य रेचयेत् त्यजेदित्यर्थ इयं क्रियारेचकप्राणायामेन कर्तव्येत्यर्थः ॥ १४ ॥ अनंतरं स्वशरीरोद्भवं यदुत्तमं सुधाबीजेनामृतबीजेन रमित्युद्धारणेन तदुत्थामृतेन संश्लबधेद्यथापि ङो भवति पश्चाद्बुबीजेन लमिति मंत्रेण तदुत्तमं वीभूतं घनीभूतं कुर्यादित्यर्थः तच्च कनकां वदवत् ॥ १५ ॥

टी.अ.

८

॥१५॥

॥ १० ॥

॥ ११ ॥

॥ १२ ॥

पुनर्विहायसआकाशस्यबीजं हमित्युच्चार्यतं पिंडं मुकुराकारं भावयेत् ततः कठिनपिंडस्य मूर्धादिनखांता अवयवाग्रनसारचनीया इत्यर्थः ॥ १६ ॥
 पुनर्येनक्रमेण पंचभूतानां संहारो ब्रह्मणि कृतस्तेनैव क्रमेण सृष्टि मार्गेण चित्तो ब्रह्मणः सकाशादुत्पाद्य यथा पूर्वस्थानं तानि भूतानि स्थापयेत् ततः सोहमि
 तिमंत्रेण ब्रह्मण्येकीभूतं जीवं स्वहृदयां बुजे आनयेदित्यर्थः ॥ १७ ॥ तत्र प्रकारमाह कुंडलीति पूर्वयथा कुंडलिन्या जीवो ब्रह्मणिसंयोजितः सैव कुं
 डलीतां परसंगात् परमात्मनः संगात्सुधामयं जीवं हृदयां भोजे संस्थाप्य मूलाधारगतां संस्मरेदिति जिवानयनप्रकार इत्यर्थः तत्र प्राणस्थापनं पश्चा

विशुद्धमुकुराकारं जपन् बीजं विहाय सः ॥ मूर्धादिपादपर्यंतान्यंगानिरचयेत्सुधीः ॥ १६ ॥ आकाशादीनि भूता
 नि पुनरुत्पादयेच्चितः ॥ सोहं मंत्रेण चात्मानमानयेद् हृदयां बुजे ॥ १७ ॥ कुंडली जीवमादाय परसंगात्सुधामयं
 ॥ संस्थाप्य हृदयां भोजे मूलाधारगतां स्मरेत् ॥ १८ ॥ रक्तां भोधिस्थपोतो ह्यसदरुणसरोजाधिरूढाकराब्जैः
 शूलं कोदंडमिक्षूद्रवमथ गुणमप्यंकुशं पंचबाणान् ॥ बिभ्राणा सृक्पालं त्रिनयनलसितापीनवक्षोरुहाढ्या देवी
 बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्तिः परानः ॥ १९ ॥ एवं ध्यात्वा प्राणशक्तिं परमात्मस्वरूपिणीं ॥ विभूति
 धारणं कार्यं सर्वाधिकृतिसिद्धये ॥ २० ॥ विभूतेर्विस्तरं वक्ष्ये धारणे च माहाफलं ॥ श्रुतिस्मृतिप्रमाणोक्तं भस्म
 धारणमुत्तमं ॥ २१ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधे अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ ॥ १५ ॥

कर्तव्यमित्यनुक्तमपि प्राणशक्तिध्यानकथनादर्याद्विध्यं तदुक्तं भूतशुद्धिविधायेत्यप्राणस्थापनमाचरेदिति तत्र प्राणप्रतिष्ठामंत्रः स्पष्ट एवास्ती
 ति नात्र लिख्यते ॥ १८ ॥ प्राणशक्तिध्यानमाह रक्तां भोधिस्थेति रक्तां भोधिः शोणसमुद्रस्तत्रास्थितः पोतो नौका तस्मिन्नुल्लसितं यदरुणसरो
 जं तस्मिन्नारूढा असृक्पालं रक्तपूर्णकपालं इक्षूद्रवकोदंडमिक्षुधनुष्यं गुणपाशं षट्हस्ताध्येया ॥ १९ ॥ ध्यात्वा प्राणस्थापनमाचरेदिति
 शेषः सर्वाधिकृतिसिद्धये यदि भूतिधारणं कर्तव्यमित्युक्तं तस्य विधिः सिंहावलोकनन्यायेनाधुना कथ्यते इति शेषः ॥ २० ॥ २१ ॥ इति श्रीदे
 वीभागवततिलके एकादशस्कंधे अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १५ ॥

दे.भा.ए.

॥१६॥

आधिकैश्चैव चत्वारिंशत्तयैरुपसादरं ॥ शिरोव्रतविधानं च यथावदभिधीयते ॥ १ ॥ इदं वक्ष्यमाणं विद्यां ब्रह्माविद्यां ॥ १ ॥ २ ॥
॥ ३ ॥ सकला अपि देवताः शिरोव्रतं कुर्वन्तीति शेषः तदुक्तं सूत्रसंहितायां शिवेन विष्णुना चैव ब्रह्मणा वज्रिणा तथा देवताभिर्धृतं भस्मा त्रिपुं
द्रोत्थूलनात्मनेति उमादेव्या च लक्ष्म्या च वाचा चान्याभिरास्तिकाः सर्वस्त्रीभिर्धृतं भस्मा त्रिपुंद्रोत्थूलनात्मनेति बृहज्जाबाले पि स्पष्टमेतत् ॥ ४ ॥

नारायण उवाच ॥ इदं शिरोव्रतं चीर्णं विधिवद्यैर्द्विजातिभिः ॥ तेषामेव परां विद्यां वदेदज्ञानबाधिकं ॥ १ ॥
विधिवच्छ्रद्धया सार्धं न चीर्ण्यैः शिरोव्रतं ॥ श्रौतस्मार्तसमाचारस्तेषामनुपकारकः ॥ २ ॥ शिरोव्रतसमाचारा
देवब्रह्मादिदेवताः ॥ देवता अभवन्विद्वन्खलु नान्येन हेतुना ॥ ३ ॥ शिरोव्रतस्य महात्म्यं पूर्वेः पूर्वतरंकृतं ॥
ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च देवताः सकला अपि ॥ ४ ॥ सर्वपातकयुक्तोऽपि मुच्यते सर्वपातकैः ॥ शिरोव्रतमिदं येन च
रितं विधिवद्बुधः ॥ ५ ॥ शिरोव्रतमिदं नाम शिरस्यार्थवर्णश्रुतेः ॥ यदुक्तं तद्विनैवान्यत्तत्पुण्येन लभ्यते ॥ ६ ॥
शाखाभेदेषु नामानि व्रतस्यास्य विभेदतः ॥ पठ्यन्ते मुनिशार्दूलशाखास्वेकं व्रतं हितम् ॥ ७ ॥ सर्वशाखासु वस्त्वे
कं शिवाख्यं सत्यचिद्धनं ॥ तथा तद्विषयं ज्ञानं तथैव च शिरोव्रतं ॥ ८ ॥ शिरोव्रतविहीनस्तु सर्वधर्मविवर्जितः ॥
अपि सर्वासु विद्यासु सोधिकारी न संशयः ॥ ९ ॥ शिरोव्रतमिदं कार्यं पापकां तारदाहकं ॥ साधनं सर्वविद्यानां य
तस्तत्सम्यगाचरेत् ॥ १० ॥ श्रुतिरार्थवर्णी सूक्ष्मा सूक्ष्मार्थस्य प्राकाशिनी ॥ यदुवाच व्रतं प्रीत्या तन्नित्यं सम्य
गाचरेत् ॥ ११ ॥ अग्निरित्यादिभिर्मन्त्रैः षड्भिः शुद्धेन भस्मना ॥ सर्वांगोत्थूलनं कुर्याच्छिरोव्रतसमाह्वयं ॥ १२ ॥

॥ ५ ॥ अथ वर्णश्रुतेः शिरसि प्रोक्तत्वाच्छिरोव्रतमेतस्य नामेत्यर्थः ॥ ६ ॥ शाखाभेदोऽपि कचिच्छिरोव्रतमिति कचित्पाशुपतं व्रतमिति कचिच्छि
व्रतमिति शाखाभेदेन संज्ञाभेदेऽप्येकमेव व्रतमिदं सर्वशाखास्वस्त्यर्थः ॥ ७ ॥ ८ ॥ सर्वासु विद्यासु यद्यप्यधिकारी तथापि धर्मवर्जित एव स ज्ञेय
इति भावः ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ अग्निरित्यादिभिरिति अग्निरिति भस्मबलमिति भस्म स्थलमिति भस्म वायुरिति भस्म ज्योमेति भस्म सर्व
व्याददं भस्मेति षड्भिरित्यर्थः ॥ १२ ॥

टी.अ.
९

॥१६॥

विद्योदयो ब्रह्मविद्योदयः ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ ब्रह्मविद्यागुरुरिति ब्रह्मविद्याप्रदाता हि परमकारुणिकोपेक्षितस्तथाचैतादृशशिरोव्रतकर्त्रे
पियदितांनोपदिशेत्तर्हितस्यविद्याविनष्टास्यान्नप्रचरेदेवेत्यर्थः एतेन सकृज्जातापि ब्रह्मविद्यामोक्षदायिनी भवतीति श्रुतिप्राबल्याद्विनष्टायामपि को
दोष इति शंका परस्ता ब्रह्मविद्याप्रचारस्याभिलषितत्वात्तस्य च नाशप्रसंग इति दोषस्य सत्त्वात् ॥ १६ ॥ न कदाचनेति अन्यथा कदाचन कदा

एतच्छिरोव्रतं कुर्यात्संध्याकालेषु सादरां यावद्विद्योदयस्तावत्तस्य विद्याखलूत्तमा ॥ १३ ॥ द्वादशाब्दमथाब्दं वा
तदर्धं च तदर्धकं ॥ प्रकुर्याद्द्वादशाहं वा संकल्पेन शिरोव्रतं ॥ १४ ॥ शिरोव्रतेन यः स्नातस्तंतु नोपदिशेत्तु यः ॥
तस्य विद्याविनष्टा स्यान्निर्घृणः स गुरुः खलु ॥ १५ ॥ ब्रह्मविद्यागुरुः साक्षान्मुनिः कारुणिकः खलु ॥ यथा सर्वे
श्वरः श्रीमान्मृदुः कारुणिकः खलु ॥ १६ ॥ जन्मांतरसहस्रेषु नरायेधर्मचारिणः ॥ तेषामेव खलु श्रद्धा जायते न
कदाचन ॥ १७ ॥ प्रत्युताज्ञानबाहुल्याद्विषएव विजायते ॥ अतः प्रद्वेषयुक्तस्य न भवेदात्मवेदनं ॥ १८ ॥
ब्रह्मविद्योपदेशस्य साक्षादेवाधिकारिणः ॥ त एव नेतरे विद्वन् ये तु स्नाताः शिरोव्रतैः ॥ १९ ॥ व्रतं पाशुपतं ची
र्णं यैर्द्विजैरादरेण तु ॥ तेषामेवोपदेष्टव्यमिति वेदानुशासनं ॥ २० ॥ यः पशुस्तत्पशुत्वं च व्रतेनानेन संत्यजेत्
॥ तान् हत्वानसपापीयान् भवेद्वेदांतनिश्चयः ॥ २१ ॥ त्रिपुंड्रधारणं प्रोक्तं जाबालैरादरेण तु ॥ त्रियंबकेन मंत्रे
ण सतारेण शिवेन च ॥ २२ ॥ त्रिपुंड्रधारयेन्नित्यं गृहस्थाश्रममाश्रितः ॥ ओंकारेण त्रिरुक्तेन सहंसेन त्रिपुं
ड्रकम् ॥ २३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥

पितेत्यर्थः ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ तान्पशून् हत्वेत्यर्थः अतिशयोक्तिपरमिदं वाक्यं ॥ २१ ॥ जाबालैरादरेण त्विति ब्राह्मणा
नामयमेव धर्मोऽयमेव धर्मोऽयमेव धर्म इत्यादिवाक्यैरित्यर्थः जाबालश्रुतौ स्पष्टमेव तत् गृहस्थस्य भस्मलापनमंत्रानाह त्रियंबकेनेति शिवेन पंचा
क्षरमंत्रेण वा तथा च जाबालश्रुतिः स्मरन्नमः शिवायेति ललाटे तु त्रिपुंड्रकमिति सूतसंहितायां तु त्रियंबकेन मंत्रेण सतारेण शिवेन वा गृहस्थश्च
वनस्थश्च धारयेच्च त्रिपुंड्रकमिति ॥ २२ ॥ सहंसेन सहंसे इति मंत्रसहितेन इदमपि जाबालश्रुतौ स्पष्टं सूतसंहितायां च ॥ २३ ॥

दे.भा.ए.

॥१७॥

॥ २४ ॥ मेधावीत्यादिनेति इदमपि बृहज्जाबाले सूतसंहितायां च स्पष्टं ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ आदिब्राह्मणभूतेन ब्रह्मणेत्यर्थः ॥ २८ ॥
देहगुंठनं देहोदूलनं ॥ २९ ॥ पंचाक्षरमंत्रेणेत्येतावत्पर्यंतं गृहस्थविषयं प्रणवेनेति तु संन्यासविषयं ॥ ३० ॥ ३१ ॥ त्रियायुषेण त्रि
धारयेद्भिक्षुको नित्यमिति जाबालिकीश्रुतिः ॥ त्रियंबकेन मंत्रेण प्रणवेन शिवेन च ॥ २४ ॥ गृहस्थश्च वनस्थ
श्च धारयेच्च त्रिपुंड्रकं ॥ मेधावीत्यादिना वापि ब्रह्मचारी दिने दिने ॥ २५ ॥ भस्मना सजलेनापि धारयेच्च त्रिपुं
ड्रकं ॥ ब्राह्मणो विधिनोत्पन्नस्त्रिपुंड्रं भस्मनैव तु ॥ २६ ॥ ललाटे धारयेन्नित्यं तिर्यग्भस्मावगुंठनम् ॥ सम्यक्
त्रिपुंड्रधर्मं ब्राह्मणो नित्यमाचरेत् ॥ २७ ॥ आदिब्राह्मणभूतेन त्रिपुंड्रं भस्मना धृतं ॥ यतोऽत एव विप्रस्तुत्रि
पुंड्रं धारयेत्सदा ॥ २८ ॥ भस्मना वेदसिद्धेन त्रिपुंड्रं देहगुंठनं ॥ रुद्रलिंगार्चनं वापि मोहतोऽपि च न त्यजेत् ॥
२९ ॥ त्रियंबकेन मंत्रेण सतारेण तथैव च ॥ पंचाक्षरेण मंत्रेण प्रणवेन तथैव च ॥ ३० ॥ ललाटे हृदये चैव दोर्द्ध्वे
च महामुने ॥ त्रिपुंड्रं धारयेन्नित्यं संन्यासाश्रममाश्रितः ॥ ३१ ॥ त्रियायुषेण मंत्रेण मेधावीत्यादिनाथवा ॥ गौ
णेन भस्मना धार्य्यं त्रिपुंड्रं ब्रह्मचारिणा ॥ ३२ ॥ नमोऽस्तेन शिवेनैव शूद्रः शुश्रूषणे रतः ॥ उत्थूलनं त्रिपुंड्रं च नित्यं
भक्त्या समाचरेत् ॥ ३३ ॥ अन्येषामपि सर्वेषां विना मंत्रेण सुव्रतः ॥ उत्थूलनं त्रिपुंड्रं च कर्तव्यं भक्तितो मुने
॥ ३४ ॥ भूत्यैवोत्थूलनं तिर्यक् त्रिपुंड्रं स्य च धारणं ॥ वरेण्यं सर्वधर्मेभ्यस्तत्त्वान्नित्यं समाचरेत् ॥ ३५ ॥ भस्मा
ग्निहोत्रजं वाथ विरजाग्निसमुद्भवं ॥ आदरेण समादाय शुद्धे पात्रे निधाय तत् ॥ ३६ ॥ प्रक्षाल्य पादौ हस्तौ च द्वि
राचम्य समाहितः ॥ गृहीत्वा भस्म तत्पंच ब्रह्ममंत्रैः शनैः शनैः ॥ ३७ ॥

यायुषं नमदग्नेरिति मंत्रेणेत्यर्थः गौणेन भस्मनेति अग्निहोत्रजं भस्म मुख्यं तदतिरिक्तं गौणमित्यर्थः अतएवाग्रेष्वक्षयति गौणं नानाविधं प्रोक्तमिति
तथा च ब्रह्मचारिणा स्वाग्निजन्येन भस्मना गौणेन त्रिपुंड्रादिकं धार्यमित्यर्थः ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ तत्त्वात्सर्वधर्मवरेण्यत्वादित्यर्थः ॥ ३५ ॥
शिरोव्रतविधिमाह भस्माग्निहोत्रजमिति विरजाग्निसमुद्भवं येष्वक्षयमाणं ॥ ३६ ॥ पंचब्रह्ममंत्रैः सद्योजातं प्रपद्यामीत्यादिभिः ॥ ३७ ॥

टी.अ.

९

॥१७॥

अग्निरित्यादिमंत्रितं अग्निरितिभस्म जलमितिभस्म स्थलमितिभस्म वायुरितिभस्म व्योमेतिभस्म सर्वहवाइदंभस्मेतिषड्भिराथर्वणप्रोक्तमंत्रैर
भिर्मंत्रितमित्यर्थः एतैर्मंत्रैस्त्रिवारमभिर्मंत्रयेदित्यर्थः तैरेवसप्तभिरिति बृहज्जात्रालेतेषामेवषण्मंत्राणामध्येवायुरितिभस्मेत्यस्यायेतेजोभस्मेति
सप्तमोमंत्रः पञ्चतेनसहितैस्तैरेवसप्तभिर्मंत्रैरित्यर्थः ॥ ३८ ॥ ध्यात्वेति महादेवंध्यात्वेत्यर्थः मंत्रानग्निरितिभस्मेत्यादिकान् ॥ ३९ ॥ इत्थंशु
ष्कभस्मनोत्प्लूतनंकृत्वापश्चाज्जलमिश्रितेनकर्तव्यमित्याह ततोध्यात्वेति ॥ ४० ॥ ४१ ॥ स्वाश्रमोचितमंत्रतः तेचमंत्रास्त्रियंबकमित्यादयः

प्राणायामत्रयंकृत्वाअग्निरित्यादिमंत्रितं ॥ तैरेवसप्तभिर्मंत्रैस्त्रिवारमभिर्मंत्रयेत् ॥ ३८ ॥ ओमापोज्योतिरि
त्युक्त्वाध्यात्वामंत्रानुदीरयेत् ॥ सितेनभस्मनापूर्वसमुद्भूत्यशरीरकं ॥ ३९ ॥ विपापोविरजोमर्त्योजायते
नात्रसंशयः ॥ ततोध्यात्वामहाविष्णुंजगन्नाथंजलाधिपं ॥ ४० ॥ संयोज्यभस्मनातोयअग्निरित्यादिभिःपुनः
॥ विमृज्यसांबंध्यात्वासमुद्भूत्यादूर्ध्वमस्तकं ॥ ४१ ॥ तेनभावनयाब्रह्मभूतेनसितभस्मना ॥ ललाटवक्षःस्कंधे
षुस्वाश्रमोचितमंत्रतः ॥ ४२ ॥ मध्यमानामिकांगुष्ठैरनुलोमविलोमतः ॥ त्रिपुंड्रंधारयेन्नित्यंत्रिकालेष्वपि
भक्तितः ॥ ४३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ नारायणउवाच ॥ आग्नेयं
गौणमज्ञानध्वंसकंज्ञानसाधकं ॥ गौणंनानाविधंविद्विब्रह्मन्ब्रह्मविदांवर ॥ १ ॥ अग्निहोत्राग्निजंतद्व
द्विरजानलजंमुने ॥ औपासनसमुत्पन्नंसमिदग्निसमुद्भवं ॥ २ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥

पूर्वमुक्तः ॥ ४२ ॥ अनुलोमविलोमतः सव्यापसव्येन अंगुलिद्वयेनवागममारभ्यदक्षभागपर्यंतरेखाद्वयंकृत्वांगुष्ठेनदक्षभागमारभ्यवा
मभागपर्यंतमेकारंरेखांकुर्यादित्यर्थः ॥ ४३ ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेएकादशस्कंधेनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ त्रयस्त्रिंशत्पद्यवैर्यौगौणभस्मा
नुवर्णनं ॥ कीर्तयित्वाकथ्यतेतद्विरजानलसंभवं ॥ १ ॥ पूर्वाध्यायेगौणेनभस्मनेत्युक्तंगौणभस्मदर्शयति आग्नेयमिति गौणमप्याग्नेयंभस्माज्ञानध्वं
सकमित्यर्थः तस्मानेकविधमित्याह गौणंवावेति ॥ २ ॥ यथाग्निहोत्राग्निजंभस्मतद्देवसमानमाहात्म्यंविजानलजमेकंगौणभस्मास्तीत्यर्थः
औपासनसमुत्पन्नंस्मार्तविद्यहाग्निजन्यंगृहस्थानांसमिदग्निसमुद्भवंब्रह्मचारिणां ॥ २ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४३ ॥

दे.भा.ए.

॥१८॥

दावानलजन्यमेतानिगौणभस्मानीत्यर्थः तत्रतत्तद्रस्मनामधिकारिभेदेनविभागमाह त्रैवर्णिकानामिति ॥ ३ ॥ उभयभस्माधिकारिणस्त्रैवर्णिका इत्यर्थः गृहस्थानांविधुररहितानामित्यर्थः औपासनसमुत्पन्नंविवाहाग्निजंस्मार्तभस्माप्यस्तीत्यर्थस्तेनपूर्वोक्ताग्निहोत्रभस्मनोपिसंग्रहः ॥ ४ ॥ ५ ॥ विरजानलजभस्मनउत्पत्तिमाह कालश्चित्रेति चित्रायुक्तापोर्णमासीमुख्यः कालस्तदलाभेन्योपिकालोबृहज्जात्राले उक्तः

पचनाग्निसमुत्पन्नंदावानलसमुद्भवं ॥ त्रैवर्णिकानांसर्वेषामग्निहोत्रसमुद्भवं ॥ ३ ॥ विरजानलजंचैवधार्यं
भस्ममहामुने ॥ औपासनसमुत्पन्नं गृहस्थानांविशेषतः ॥ ४ ॥ समिदग्निसमुत्पन्नंधार्यंवैब्रह्मचारिणा ॥ शू
द्राणांश्रोत्रियागारपचनाग्निसमुद्भवं ॥ ५ ॥ अन्येषामपिसर्वेषांधार्यंदावानलोद्भवं ॥ कालश्चित्रापोर्णमासी
देशःस्वीयःपरिग्रहः ॥ ६ ॥ क्षेत्रारामाद्यरण्यंवाप्रशस्तःशुभलक्षणः ॥ तत्रपूर्वत्रयोदश्यांसुस्नातःसुकृतान्हि
कः ॥ ७ ॥ अनुज्ञाप्यस्वमाचार्यसंपूज्यप्रणिपत्यच ॥ पूजांवैशेषिकींकृत्वाशुक्लांबरधरःस्वयं ॥ ८ ॥ शुद्धयज्ञो
पवीतीचशुक्लमाल्यानुलेपनः ॥ दर्भासनेसमासीनोदर्भमुष्टिप्रगृह्यच ॥ ९ ॥ प्राणायामत्रयंकृत्वाप्राङ्मुखोवाप्यु
दङ्मुखः ॥ ध्यात्वादेवंचदेवींचतद्विज्ञापनवर्त्मना ॥ १० ॥ व्रतमेतत्करोमीतिभवेत्संकल्पदीक्षितः ॥ याव
च्छरीरपातंवाद्वादशाब्दमथोपिवा ॥ ११ ॥ तदर्धवातदर्धवामासद्वादशकंतुवा ॥ तदर्धवातदर्धवामासमेकमथा
पिवा ॥ १२ ॥ दिनद्वादशकंवापिदिनषट्कमथापिवा ॥ तदर्धदिनमेकंवाव्रतसंकल्पनावधि ॥ १३ ॥

उपोष्यचचतुर्दश्यांशुक्लेकृष्णेथवाव्रती परेद्युःप्रातरुत्थायशुचिर्भूत्वासमाहितइति स्वीयःपरिग्रहः यस्मिन्देशेस्वयंतिष्ठतिसप्तवदेशइत्यर्थः
॥ ६ ॥ पूर्वत्रयोदश्यांपोर्णमासीतःपूर्वत्रयोदश्यामित्यर्थः ॥ ७ ॥ वैशेषिकींविशिष्टमित्यर्थः ॥ ८ ॥ ९ ॥ तद्विज्ञापनवर्त्मनातयोरनुज्ञा
जपतेतिमनसातदनुज्ञां गृहीत्वेत्यर्थः ॥ १० ॥ तत्रव्रतकालमनेकविधमाह यावच्छरीरपातमित्यादि ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥

टी.अ.

१०

॥१८॥

इत्थंसंकल्पंकृत्वापश्चात्स्वगृह्योक्तप्रकारेणाग्निस्थापनंकुर्यादित्याह अग्निमाधायविधिवदिति स्वगृह्योक्तप्रकारेणेत्यर्थः तथाचबृहज्जात्रा
लभ्यतिः स्वगृह्योक्तप्रकारेणप्रतिष्ठाप्याग्निमीजयेदिति वस्तुतस्तुतांत्रिकप्रकारस्याग्रेवक्ष्यमाणत्वात्तांत्रिकविधिरेवात्रग्राह्यइति हुत्वाज्येनेति
ततोऽग्निस्थापनानंतरमाज्येनवाचरुणावासमिद्विर्वाजुहुयादित्यर्थः ॥ १४ ॥ पूताहात्पुरतइति अयंचहोमःपूताहात्पौर्णमासीदिनात्पूर्वमेवमम
तत्त्वशुद्धिर्भवत्वित्युद्देशेनकार्यइत्यर्थः होमःकेनमंत्रेणकर्तव्यस्तदाह जुहुयादिति मूलमंत्रेण संख्यानुक्तौगजांतकसहस्रकमितिनियमाद

अग्निमाधायविधिवद्विरजाहोमकारणात् ॥ हुत्वाज्येनसमिद्धिश्चरुणाचयथाविधि ॥ १४ ॥ पूताहात्पुरतो
भूयात्तत्त्वानांशुद्धिमुद्दिशन् ॥ जुहुयान्मूलमंत्रेणैरेवसमिदादिभिः ॥ १५ ॥ तत्त्वान्येतानिमेदेहेशुध्यंतमित्य
नुस्मरन् ॥ पश्चाद्भूतादितन्मात्राःपंचकर्मोद्द्वियाणिच ॥ १६ ॥ ज्ञानकर्मविभेदेनपंचपंचविभागशः ॥ त्वगादिधा
तवःसप्तपंचप्राणादिवायवः ॥ १७ ॥ मनोबुद्धिरहंकारोगुणाःप्रकृतिपुरुषौ ॥ रागोविद्याकलत्रचैवनियतिःका
लएवच ॥ १८ ॥ मायाचशुद्धविद्याचमहेश्वरसदाशिवौ ॥ शक्तिश्चशिवतत्त्वंचतत्त्वानिक्रमशोविदुः ॥ १९ ॥
मंत्रैस्तुविरजैर्हुत्वाहोतासौविरजोभवेत् ॥ अथगोमयमादायपिंडीकृत्याभिमंत्र्यच ॥ २० ॥ ॥ ७५ ॥

ष्टोत्तरंसहस्रंहोमः ॥ १५ ॥ तद्धोमानंतरंकृत्यमाह पश्चादिति पृथिवीतत्त्वंमे शुध्यतांज्योतिरहंविरजाविषाम्भाभूयासंस्वाहेत्याद्यैर्मंत्रैर्वक्ष्यमा
णैकैकतत्त्वनामोच्चारसहितैर्होमःकार्यइत्यर्थः तेषापृथिव्यादितत्त्वानांनान्याह भूतादीति पंचमहाभूतानितथापंचतन्मात्राःतथापंचकर्मोद्द्वि
याणि ॥ १६ ॥ ज्ञानकर्मोति पंचज्ञानोद्द्वियाण्यपिग्राह्याणीत्यर्थः ॥ १७ ॥ बुद्धिशब्देनचित्तस्यापिसंग्रहःकर्तव्यः गुणाःसत्वादयः ॥ १८ ॥
॥ १९ ॥ अथेति अभिमंत्र्यपंचाक्षरमंत्रेण ॥ २० ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७५ ॥

दे.भा.ए.

॥१९॥

न्यस्याग्नावित्यत्र नूष्णीं केवलं न्यास एवोक्तो बृहज्जाबाले तु पंचानां त्वेति मंत्रेणाषडानां तु चतुर्दश कुर्यादित्युक्ता षडक्षरस्य मंत्रस्य व्यावृत्तस्य तथा क्षरैः स्वाहांतेर्बुद्ध्यात्तत्र वर्णे देवाय पिंडकाः होतव्याः पंचत्रयाणि नमो हिरण्यत्राहवे इति सर्वाहुती हुत्वेत्यनेन होम एवोक्तः इत्थं पिंडमग्नौ न्यस्य तं चाग्निं संस्कृतं तस्मिन् दिने संरक्ष्य हविष्यभुग्भूयादित्याहन्यस्येति कृत्वा सर्वमिति चतुर्दशानित्यकर्म समाप्य नंतरं पूर्वोक्तरीत्या पंचाक्षरमंत्रेण होमं तस्मिन्नेवाग्नौ तद्दिनेऽपि कृत्वानिराहारः सन्कालशेषं समापयेदित्यर्थः ॥ २१ ॥ प्रातः पर्वणीति तदनंतरं पर्वणि पूर्णिमायां प्रातर्नित्यकर्म समाप्य पुनस्तथैव

न्यस्याग्नौ तंच संरक्ष्य दिने तस्मिन् हविष्यभुक् ॥ प्रभाते च चतुर्दश्यां कृत्वा सर्वं पुरोदितं ॥ २१ ॥ तस्मिन् दिने निराहारः कालशेषं समापयेत् ॥ प्रातः पर्वणि चाप्येवं कृत्वा होमावसानतः ॥ २२ ॥ उपसंहृत्य रुद्राग्निं गृहीत्वा भस्मयत्नतः ॥ ततश्च जटिलो मुंडः शिखैकजट एव च ॥ २३ ॥ भूत्वा स्नात्वा पुनर्वातलज्जश्चेत्स्याद्दिगंबरः ॥ अन्यः काषायवसनश्चर्मचीरांबरोथवा ॥ २४ ॥ एकांबरो वल्कलवान् भवेद्दंडी च मेखली ॥ प्रक्षाल्य चरणौ पश्चाद्द्विराचम्यात्मनस्तनुं ॥ २५ ॥ संकलीकृत्यैतद्भस्म विरजानलसंभवं ॥ अग्निरित्यादिभिर्मंत्रैः षड्भिराथर्वणैः क्रमात् ॥ २६ ॥ विमृज्यां गानि मर्द्वादि चरणांतं च तैः स्पृशेत् ॥ ततस्तेन क्रमेणैव समुद्धृत्य च भस्मना ॥ २७ ॥ सर्वांगोद्धूलनं कुर्यात्प्रणवेन शिवेन वा ॥ ततश्च पुंड्रं च ये त्रियायुषसमाव्हयं ॥ २८ ॥ शिवभावं समागम्य शिवभावमथाचरेत् ॥ कुर्यात्त्रिसंध्यमप्येवमेतत्पाशुपतं व्रतं ॥ २९ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥

पंचाक्षरमंत्रेण होमं कृत्वा होमांगं समाप्याग्निं विसर्जयेदित्यर्थः ॥ २२ ॥ तदाह उपसंहृत्य रुद्राग्निमिति रुद्राग्निमित्येतेन शैवमतोक्तोऽयं प्रकारोऽस्तीति बोधितं तेन बृहज्जाबालोक्तप्रकारस्यैतत्प्रकारस्य च भेदेऽपि निरोध इति इत्थं भस्म संपाद्य जटान्वा मुंडशिखो वा एकजटो वा भूयादित्याह ततश्चेति ॥ २३ ॥ इत्थं भूत्वा पुनः स्नात्वा वातलज्जस्त्यक्तलज्जश्चेद्दिगंबरो भवेदन्यश्चेत्काषायवसनो भवेदित्याह भूत्वेति ॥ २४ ॥ दंडधारी मेखलाधारी च भवेदित्याह भवेद्दंडीति ॥ २५ ॥ संकलीकृत्यैकीकृत्य षड्भिः पूर्वोक्तैर्मंत्रैः ॥ २६ ॥ तैर्मंत्रैः ॥ २७ ॥ त्रियायुषसमाव्हयं यस्य त्रियायुषमिति संज्ञास्ति शास्त्रे तत्र पुंड्रं वक्ष्यमाणप्रकारेण कुर्यादित्यर्थः ॥ २८ ॥ एतत्पाशुपतमिति इदं पाशुपतं व्रतं भवतीत्यर्थः ॥ २९ ॥

टी.अ.

१०

॥१९॥

॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके एकादशस्कंधे दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ सप्तविंशतिपद्यैस्तु श्लोकादेन समा-
युतैः ॥ त्रिविधत्वं कथ्यते त्रमाहात्म्यं च विशेषतः ॥ १ ॥ पूर्वाध्यायांते शांतिकं पौष्टिकं भस्मकामदं च त्रिधा भवेदिति त्रिविधं भस्मं श्रुत्वा पृच्छति

भुक्तिमुक्तिप्रदं चैव पशुत्वं विनिवर्तयेत् ॥ तत्पशुत्वं परित्यज्य कृत्वा पाशुपतं व्रतं ॥ ३० ॥ पूजनीयो महादेवो लि-
गमूर्तिः सदाशिवः ॥ भस्मस्नानं महापुण्यं सर्वसौख्यकरं परं ॥ ३१ ॥ आयुष्यबलमारोग्यं श्रीपुष्टिवर्द्धनं यतः
॥ रक्षार्थं मंगलार्थं च सर्वसंपत्समृद्धये ॥ ३२ ॥ भस्मस्निग्धमनुष्याणां महामारी भयं न च ॥ शांतिकं पौष्टिकं भ-
स्मकामदं च त्रिधा भवेत् ॥ ३३ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधे दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ नार-
द उवाच ॥ त्रिविधत्वं कथंचास्य भस्मनः परिकीर्तितं ॥ एतत्कथय मे देव महत्कौतूहलं मम ॥ १ ॥ नारायण उ-
वाच ॥ त्रिविधत्वं प्रवक्ष्यामि देव वर्षे भस्मनः शृणु ॥ महापापक्षयकरं महार्कीर्तिकरं परं ॥ २ ॥ गोमयं योनि सं-
त्थं तद्वस्तेनैव गृह्यते ॥ ब्राह्मैर्मन्त्रैस्तु संदग्धं तच्छांतिकं कृदिहोच्यते ॥ ३ ॥ सावधानस्तु गृणहीयान्नरो वै गोमयं तु-
यत् ॥ अंतरिक्षे गृहीत्वा तत् षडंगेन दहेदतः ॥ ४ ॥ पौष्टिकं तत्समाख्यातं कामदं च ततः शृणु ॥ प्रासादेन दहेदेत-
त्कामदं भस्मकीर्तितं ॥ ५ ॥ प्रातरुत्थाय देव वर्षे भस्मव्रतपरः शुचिः ॥ गवांगोष्ठेषु गत्वा तु नमस्कृत्वा तु गोकुलं
॥ ६ ॥ गवां वर्णानुरूपाणां गृणहीयाद्गोमयं शुभं ॥ ब्राह्मणस्य च गौः श्वेतारक्ता गौः क्षत्रियस्य च ॥ ७ ॥ पीतवर्णा-
तु वैश्यस्य कृष्णा शूद्रस्य कथ्यते ॥ पौर्णमास्यां ममावास्यां षष्ठ्यां वा विशुद्धधीः ॥ ८ ॥ प्रासादेन तु मंत्रेण गृ-
हीत्वा गोमयं शुभं ॥ हृदयेन तु मंत्रेण पिंडीकृत्य तु गोमयं ॥ ९ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥

त्रिविधत्वमिति ॥ १ ॥ २ ॥ ब्राह्मैर्मन्त्रैः सद्योजातादिपंचब्रह्ममन्त्रैः ॥ ३ ॥ षडंगेन षडक्षरमन्त्रं षडंगेन उभयत्रापि भूम्यस्पृष्टमंतरिक्षे एव प्रा-
ह्यं गोमयम् ॥ ४ ॥ प्रासादेन हौमिति मंत्रेण ॥ ५ ॥ गोमयग्रहणप्रक्रममाह प्रातरुत्थायेति ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ हृदयेन नम इति मंत्रेण ॥ ९ ॥

दे.भा.ए.

॥२०॥

रविरश्मिसुसंततंशुचौदेशेमनोहरे ॥ तुपेणवाबुसैर्वापिप्रासादेनतुनिक्षिपेत् ॥ १० ॥ अरण्याद्रवमग्निंवा
पश्चादग्निस्थापनं कृत्वा तं पिंडं पूर्वोक्तरीत्या जुहुयादित्याह अरण्याद्रवमिति अरण्याद्रवमग्निं श्रोत्रियागारजं वाग्निमानाया विधिवत्संस्कृते तदग्नौ शि
वबीजेन मंत्रनः शिवमंत्रेण तं पिंडं पूर्वोक्तरीत्या न्यसेज्जुहुयादित्यर्थः ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ ईशानमंत्रतः ईशानः सर्वविद्यानामि

रविरश्मिसुसंततंशुचौदेशेमनोहरे ॥ तुपेणवाबुसैर्वापिप्रासादेनतुनिक्षिपेत् ॥ १० ॥ अरण्याद्रवमग्निंवा
श्रोत्रियागारजं तु वा ॥ तदग्नौ विन्यसेत्तत्र शिवबीजेन मंत्रतः ॥ ११ ॥ गृण्हीयादथ तत्राग्निकुंडाद्रस्मविचक्षणः
नवपात्रं समादाय प्रासादेन तु निक्षिपेत् ॥ १२ ॥ केतकीपाटलीतद्वदुशीरंचंदनं तथा ॥ नानासुगंधिद्रव्याणि
काश्मीरप्रभृतीनि च ॥ १३ ॥ निक्षिपेत्तत्र पात्रं तु सद्यो मंत्रेण शुद्धधीः ॥ जलस्नानं पुरा कृत्वा भस्मस्नानमतः
परं ॥ १४ ॥ जलस्नाने त्वशक्तश्च भस्मस्नानं समाचरेत् ॥ प्रक्षाल्य पादौ हस्तौ च शिरश्चेशानमंत्रतः ॥ १५ ॥
समुद्धृत्य ततः पश्चादाननं तत्पुरुषेण तु ॥ अघोरेण तु हृदयं नाभिं वामेन तत्परं ॥ १६ ॥ सद्यो मंत्रेण सर्वांगं स
मुद्धृत्य विचक्षणः ॥ पूर्ववत्संपरित्यज्य शुद्धवस्त्रं परिग्रहेत् ॥ १७ ॥ प्रक्षाल्य पादौ हस्तौ च पश्चादाचमनं चरेत् ॥
भस्मनोद्धूलनाभावे त्रिपुंड्रं तु विधीयते ॥ १८ ॥ मध्यान्हात्प्राग्जलैर्युक्तं परतोजलवर्जितं ॥ तर्जन्यनामिकाम
ध्यैस्त्रिपुंड्रं च समाचरेत् ॥ १९ ॥ मूर्ध्नि चैव ललाटे च कर्णे कंठे तथा च ॥ हृदये चैव बाहौ च न्यासस्थानं हि चोच्यते ॥
॥ २० ॥ पंचांगुलैर्न्यसेन्मूर्ध्नि प्रासादेन तु मंत्रतः ॥ त्र्यंगुलैर्विन्यसेद्गालेशिरोमंत्रेण देशिका ॥ २१ ॥

तिमंत्रः ॥ १२५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ परतः संध्यायां ॥ १९ ॥ न्यासस्थानं त्रिपुंड्रन्यासस्थानं ॥ २० ॥ संक्षेपेणोक्ते त्रिपुंड्रविधाने
अंगुलिनियममाह पंचांगुलैर्न्यसेन्मूर्ध्नीति त्र्यंगुलैस्तर्जन्यनामिकामध्यैः पूर्वोक्तैः शिरोमंत्रेण स्वाहामंत्रेण अनेककल्पोक्तप्रकारा अत्र क
थ्यंते इति पूर्वोक्तमंत्रापेक्षयातिरिक्तमंत्रकथनेपि दोष इति बोध्यं ॥ २१ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

टी.अ.

११

॥२०॥

॥ २२ ॥ हृदयेनैव नम इति मंत्रेणैव शिखामंत्रेण वषण्मंत्रेण ॥ २३ ॥ कवचेन हुमिति मंत्रेण मध्येन मध्यमांगुल्या इत्यर्थः इति मंत्रत इति अय
मप्येकः पक्ष इत्यर्थः ॥ २४ ॥ स्थानभेदेन स्थितस्य त्रिपुंड्रस्य देवता आह ब्रह्मविष्णविति ॥ २५ ॥ एकांगुलेनेति एकांगुलेन यत्र भस्मलाप
नं मध्यमेन स्पृशेन्नाभ्यामित्यत्र तत्रेद्वरो देव इत्यर्थः ॥ २६ ॥ धूलनमुद्धूलनं संत्यजेन्न कुर्यादित्यर्थः ॥ २७ ॥ किंतु मंत्रेण रहितं त्रिपुंड्रमेव

सद्येन दक्षिणे कर्णे वामदेवेन वामतः ॥ अत्रोरेण तु कंठे च मध्यांगुल्या स्पृशेद्बुधः ॥ २२ ॥ हृदयं हृदयेनैव त्रिभिर्
गुलिभिः स्पृशेत् ॥ विन्यसेद्दक्षिणे बाहौ शिखामंत्रेण देशिकः ॥ २३ ॥ वामबाहौ न्यसेत्पीमान्कवचेन त्रियंगुलैः
॥ मध्येन संस्पृशेन्नाभ्यामीशान इति मंत्रतः ॥ २४ ॥ ब्रह्मविष्णुमहेशानास्ति स्त्रोरेखा इति स्मृताः ॥ आद्या ब्र
ह्माततो विष्णुस्तदूर्ध्वं तु महेश्वरः ॥ २५ ॥ एकांगुलेन न्यस्तं यदीश्वरस्तत्र देवता ॥ शिरो मध्ये त्वयं ब्रह्मा ईश्व
रस्तुललाटके ॥ २६ ॥ कर्णयोरश्विनौ देवौ गणेशस्तु गले तथा ॥ क्षत्रियश्च तथा वैश्यः शूद्रश्चेद्धूलनं त्यजेत् ॥
२७ ॥ सर्वेषामंत्यजातीनां मंत्रेण रहितं भवेत् ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधे एकादशोऽध्या
यः ॥ ११ ॥ श्रीनारायण उवाच ॥ देवर्षे शृणु तत्सर्वं भस्मोद्धूलनजं फलं ॥ सरहस्यविधानं च सर्वकामफलप्र
दं ॥ १ ॥ कपिलायाः शकृत्स्वच्छं गृहीत्वा गगने पतत् ॥ न क्लिन्नं नापि कठिनं न दुर्गंधं न चोषितं ॥ २ ॥ उपर्यधः
परित्यज्य गृणीयात्पतितं यदि ॥ पिंडीकृत्य शिवाय दौ तत्क्षिपेन्मूलमंत्रितं ॥ ३ ॥ आदाय वा ससाच्छाद्य भ
स्माधाने विनिक्षिपेत् ॥ सुकृते सुदृढे शुद्धे क्षालिते प्रोक्षिते शुभे ॥ ४ ॥ विन्यस्य मंत्री मंत्रेण पात्रे भस्म विनिक्षि
पेत् ॥ तैजसं दारवं चाथ मृन्मयं चैलमेव च ॥ ५ ॥

॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥

कुर्यादित्यर्थः ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके एकादशस्कंधे एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ अर्धाधिकैकचत्वारिंशत्पद्यैश्च सविस्तरं ॥ कलां
तरोक्तरात्र्यापि भस्मधारणमुच्यते ॥ १॥१॥ गगने पतदेवनभूमौ पतितमित्यर्थः ॥ २ ॥ ३ ॥ आधाने भस्मस्थाने ॥ ४ ॥ भस्माधारपात्राण्या
ह तैजसमिति सुवर्णताम्रादिनिर्मितं चैलं बल्लवा ॥ ५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.ए.

॥२१॥

धुमाअतभीतत्रिमितेवस्त्वेवा ॥ ६ ॥ प्रस्थितोमार्गेगच्छन्नित्यर्थः ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ वैदिकैः संपादितं भस्मतांत्रिकैः ग्राह्यं तांत्रिकैः संपा

अन्यद्वाशोभनं शुद्धं भस्माधारं प्रकल्पयेत् ॥ क्षौमे चैवातिशुद्धे वा धनवद्भस्मनि क्षिपेत् ॥ ६ ॥ प्रस्थितो भस्म
गुणहीनात्स्वयंचानुचरोपि वा ॥ न चायुक्तकरे दद्यान्न चाशुचितलक्षिपेत् ॥ ७ ॥ न संस्पृशेत्तुर्नी वांगैर्न क्षिपेन्न च
लघयेत् ॥ तस्माद्भसितमादाय विनियुं जीतमंत्रितं ॥ ८ ॥ विभूतिधारणाविधिः स्मृतिप्रोक्तो मये रितः ॥ यदीया
चरन्नेव शिवतुल्यो न संशयः ॥ ९ ॥ शैवैः संपादितं भस्म वैदिकैः शिवसन्निधौ ॥ भक्त्या परमया ग्राह्यं प्रार्थयित्वा
तु पूजयेत् ॥ १० ॥ तंत्रोक्तवर्त्मना सिद्धं भस्म तांत्रिकपूजकैः ॥ यत्र कुत्रापि दत्तं चेत्तद्ग्राह्यं नैव वैदिकैः ॥ ११ ॥
शूद्रैः कापालिकैर्वाथ पाखंडैरपरैस्तु तत् ॥ त्रिपुंड्रधारयैर्दत्तक्या मनसोऽपि न लघयेत् ॥ १२ ॥ श्रुत्या विधीयते य
स्मात्तत्त्यागीपतितो भवेत् ॥ त्रिपुंड्रधारणं भक्त्या तथा देहावगुंठनं ॥ १३ ॥ द्विजः कुर्याद्विमंत्रेण तत्त्यागीपति
तो भवेत् ॥ उद्धूलनं त्रिपुंड्रं च भक्त्या नैवाचरंतिये ॥ १४ ॥ तेषां नास्ति विनिर्माक्षः संसाराज्जन्मकोटिभिः ॥ येन
भस्मोक्तमार्गेण धृतेन मुनिपुंगव ॥ १५ ॥ तस्य विद्विमुने जन्मनिष्फलं सौकरं यथा ॥ येषां वपुर्मनुष्याणां त्रिपुं
द्रेण विना स्थितं ॥ १६ ॥ श्मशानसदृशं तत्स्यान्नप्रेक्ष्यं पुण्यकृज्जनैः ॥ धिक् भस्मरहितं भालं धिग्ग्राममशि
वालं ॥ १७ ॥ धिगनीशार्चनं जन्मधिग्विद्यामशिवाश्रयां ॥ त्रिपुंड्रं ये विनिंदन्ति निंदन्ति शिवमेव ते ॥ १८ ॥ धा
रयन्ति च ये भक्त्या धारयन्ति ते मेव ते ॥ यथा कृशानुरहितो भूधरो न विराजते ॥ १९ ॥ अशेषसाधनेष्वेवं भस्महीनं
शिवार्चनं ॥ उद्धूलनं त्रिपुंड्रं च भद्रयानाचरंतिये ॥ २० ॥ तैः पूर्वाचरितं सर्वं विपरीतं भवेदपि ॥ भस्मना वेदमंत्रे
णा त्रिपुंड्रस्य च धारणं ॥ २१ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥

दितं तु वैदिकैर्न ग्राह्यमित्याह शैवैरिति ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ अशिवाश्रयमाशिवविषयां
॥ २८ ॥ कुशानुरहितोऽग्निहोत्ररहितो भूधरो ब्राह्मणः ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥

टी.अ.

१२

॥२१॥

॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ सृष्टिच्छलमेवाह ससर्जेति भस्मत्रिपुंड्रलापनयोग्यं भवेत्ससर्जनोर्ध्वनावर्तुलंससर्जेत्यर्थः तेनच

विनावेदोचिताचारंस्मार्तस्यानर्थकारणं ॥ कृतंस्यादकृतंतेनश्रुतमप्यश्रुतभवेत् ॥ २२ ॥ अधीतमनधीतं
चत्रिपुंड्रंयोनधारयेत् ॥ वृद्धवेदावृथायज्ञावृथादानंवृथातपः ॥ २३ ॥ वृथाव्रतोपवासेनत्रिपुंड्रंयोनधारयेत् ॥
भस्मधारणकं त्यक्त्वा मुक्तिमिच्छति यः पुमान् ॥ २४ ॥ विषपानेन नित्यत्वं कुरुते ह्यात्मनो हि सः ॥ स्रष्टा सृष्टे
च्छलेनाह त्रिपुंड्रस्य च धारणं ॥ २५ ॥ ससर्जसललाटं हितिर्यगूर्ध्वेन वर्तुलं ॥ तिर्यग्नेखा प्रदृश्यंते ललाटे सर्वदे
हिनां ॥ २६ ॥ तथापि मानवामूर्खान् कुर्वन्ति त्रिपुंड्रकं ॥ न तत्स्थानं न तन्मोक्षं न तज्ज्ञानं न तत्तपः ॥ २७ ॥ वि
ना तिर्यक् त्रिपुंड्रं च विप्रेण यदनुष्ठितं ॥ वेदस्याध्ययने शूद्रो नाधिकारी यथा भवेत् ॥ २८ ॥ त्रिपुंड्रेण विनाविप्रो
नाधिकारी शिवार्चने ॥ प्राङ्मुखश्चरणौ हस्तौ प्रक्षाल्याचम्य पूर्ववत् ॥ २९ ॥ प्राणानायम्य संकल्प्य भस्मस्ना
नं समाचरेत् ॥ आदाय भसितं शुद्धमग्निहोत्रसमुद्भवं ॥ ३० ॥ ईशानेन तु मंत्रेण स्वमूर्धनि विनिक्षिपेत् ॥ तत
आदाय तद्भस्म मुखे च पुरुषेण तु ॥ ३१ ॥ अघोराख्येन हृदये गुह्ये वा माव्हयेन च ॥ सद्योजाताभिधानेन भस्म
पादद्वये क्षिपेत् ॥ ३२ ॥ सर्वांगं प्रणवेनैव मंत्रेणोद्धूलनं ततः ॥ एतदाग्नेयकं स्नानमुदितं परमर्षिभिः ॥ ३३ ॥
सर्वकर्मसमृद्ध्यर्थं कुर्यादादाविदं बुधः ॥ ततः प्रक्षाल्य हस्तादीनुपस्पृश्य यथाविधि ॥ ३४ ॥ तिर्यक् त्रिपुंड्रं वि
धिना ललाटे हृदये गले ॥ पंचभिर्ब्रह्माभिर्वापि कृतेन भसितेन च ॥ ३५ ॥ धृतमेतन्निपुंड्रं स्यात्सर्वकर्मसु पाव
नं ॥ शूद्रैरंत्यजहस्तस्थनधार्यं भस्म च क्वचित् ॥ ३६ ॥ भस्मना साग्निहोत्रेण लिप्तः कर्म समाचरेत् ॥ अन्यथा
सर्वकर्माणि न फलंति कदाचन ॥ ३७ ॥

॥ ६४ ॥

॥ ६४ ॥

॥ ६४ ॥

गत्स्रष्टुर्मनसि सर्वैर्भस्मधारणं कर्तव्यमिति वर्तत इति भावः तिर्यग्नेखाश्चिपुंड्राकाराः ॥ २६ ॥ मोक्षमिति नृपुंसकत्वमर्थः ॥ २७ ॥ २८ ॥
॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

॥ ७४ ॥

॥ ७४ ॥

दे.भा.ए.

॥२२॥

॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ इदं सर्वं बृहज्जाबाले स्पष्टं ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके एकादशस्कंधे द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ अर्धं
सत्यं शौचं जपो होमस्तीर्थं देवादिपूजनं ॥ तस्य व्यर्थं मिदं सर्वं यस्त्रिपुंड्रं न धारयेत् ॥ ३८ ॥ त्रिपुंड्रधृग्विप्रवरो
योरुद्राक्षधरः शुचिः ॥ सहंतिरोगदुरितव्याधिदुर्भिक्षतस्करान् ॥ ३९ ॥ समाप्नोति परं ब्रह्म यतो नावर्तते पुनः
संपत्तिपावनः श्राद्धे पूज्यो विप्रैः सुरैरपि ॥ ४० ॥ श्राद्धे यज्ञे जपे होमे वैश्वदेवे सुरार्चने ॥ धृतत्रिपुंड्रः पूतात्मा मृत्युं
जयति मानवः ॥ ४१ ॥ भस्मधारणमाहात्म्यं भूयो धिक्थयामि ते ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे एकादश
स्कंधे द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ श्रीनारायण उवाच ॥ महापातकसंघाश्च पातकान्यपराण्यपि ॥ नश्यन्ति मुनि
शार्दूलसत्यं सत्यं न चान्यथा ॥ १ ॥ एकं भस्म धृतं येन तस्य पुण्यफलं शृणु ॥ यतीनां ज्ञानदं प्रोक्तं वनस्थानां
विरक्तिदं ॥ २ ॥ गृहस्थानां मुनेतद्वर्द्धमवृद्धिकरं तथा ॥ ब्रह्मचर्याश्रमस्थानां स्वाध्यायप्रदमेव च ॥ ३ ॥ शूद्रा
णां पुण्यदानित्यमन्येषां पापनाशनं ॥ भस्मनोऽद्वूलनं चैव तथातिर्यक्त्रिपुंड्रकं ॥ ४ ॥ रक्षार्थं सर्वभूतानां विध
त्ते वैदिकी श्रुतिः ॥ भस्मनोऽद्वूलनं चैव तथातिर्यक्त्रिपुंड्रकं ॥ ५ ॥ यज्ञत्वेनैव सर्वेषां विधत्ते वैदिकी श्रुतिः ॥ भस्म
नोऽद्वूलनं चैव तथातिर्यक्त्रिपुंड्रकं ॥ ६ ॥ सर्वधर्मतया तेषां विधत्ते वैदिकी श्रुतिः ॥ भस्मनोऽद्वूलनं चैव तथातिर्य
क्त्रिपुंड्रकं ॥ ७ ॥ माहेश्वराणां लिंगार्थं विधत्ते वैदिकी श्रुतिः ॥ भस्मनोऽद्वूलनं चैव तथातिर्यक्त्रिपुंड्रकं ॥ ८ ॥
विज्ञानार्थं च सर्वेषां विधत्ते वैदिकी श्रुतिः ॥ शिवेन विष्णुना चैव ब्रह्मणा वज्रिणा तथा ॥ ९ ॥ हिरण्यगर्भेण तदव
तारैर्वरुणादिभिः ॥ देवताभिर्धृतं भस्म त्रिपुंड्रोऽद्वूलनात्मकम् ॥ १० ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥

धिकैश्च पंचत्रिंशत्पदैरथ सादरं ॥ भस्मनो माहिमार्तावप्रोच्यते विस्तरेण तु ॥ १ ॥ भस्मनो नानाफलप्रदत्वं माह महापातकेति ॥ १ ॥ २ ॥
॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥

टी.अ.
१३

॥२२॥

॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ शिवलिंगमणिरिति यथापरस्त्रीवदयकर्मणि कंठेनर्घ्यमणेरकंसाधनं द्वितीयंसाधनं सख्यं तृतीयंसाधनं
वाजिकरणात्मकमौषधं वशीकरणगुटिकं तथापुंसांमुक्तिरूपस्त्रीवदयकर्मणि शिवलिंगमेवानर्घ्यमणिः पंचाक्षरमंत्र एव सख्यं विभूतिरेवौ

उमादेव्याचलक्ष्म्याचवाचाचान्याभिरास्तिक ॥ सर्वस्त्रीभिर्धृतं भस्मत्रिपुंड्रोद्भूतनात्मना ॥ ११ ॥ यक्षराक्ष
सगंधर्वसिद्धविद्याधरादिभिः ॥ मुनिभिश्च धृतं भस्मत्रिपुंड्रोद्भूतनात्मना ॥ १२ ॥ ब्राह्मणैः क्षत्रियैर्वैश्यैः शूद्रै
रपि च संकरैः ॥ अपभ्रंशैर्धृतं भस्मत्रिपुंड्रोद्भूतनात्मना ॥ १३ ॥ उद्भूतनात्रिपुंड्रं च यैः समाचरितं मुदा ॥ त एव
शिष्टाविंद्वांसोनेतरे मुनिपुंगव ॥ १४ ॥ शिवलिंगमणिः सख्यं मंत्रः पंचाक्षरस्तथा ॥ विभूतिरौषधं पुंसां मुक्तिस्त्री
वश्यकर्मणि ॥ १५ ॥ भुनक्तियत्र भस्मांगोमूर्खोवापंडितोपि वा ॥ तत्र भुंक्ते महादेवः सपत्नीको वृषध्वजः ॥ १६ ॥
भस्मसंछन्नसर्वांगमनुगच्छति यः पुमान् ॥ सर्वपातकयुक्तोऽपि पूजितो मानवोचिरात् ॥ १७ ॥ भस्मसंछन्न
सर्वांगयः स्तौति श्रद्धया सह ॥ सर्वपातकमुक्तोऽपि पूज्यते मानवोचिरात् ॥ १८ ॥ त्रिपुंड्रधारिणे भिक्षाप्रदाने
न हिकेवलं ॥ तेनार्थितं श्रुतं तेन तेन सर्वमनुष्ठितं ॥ १९ ॥ येन विप्रेण शिरसि त्रिपुंड्रं भस्मना कृतं ॥ कीकटेऽप्य
पिदेशेषु यत्र भूतिविभूषणः ॥ २० ॥ मानवस्तु वसेन्नित्यं काशीक्षेत्रसमंहितत् ॥ दुःशीलः शीलयुक्तो वा योगयु
क्तोऽप्यलक्ष्मणः ॥ २१ ॥ भूतिशासनयुक्तो वा स पूज्यो मम पुत्रवत् ॥ छद्मनापि च रेद्यो हि भूतिशासनमैश्वरं ॥
॥ २२ ॥ सोऽपि यांगतिमाप्नोति न तां यज्ञशतैरपि ॥ संपर्काल्लीलया वापि भयाद्वाधारयेत्तु यः ॥ २३ ॥ विधियुक्तो
विभूतिं तु स च पूज्यो यथाह्यहं ॥ शिवस्य विष्णोर्देवानां ब्रह्मणस्तृप्तिकारणं ॥ २४ ॥ पार्वत्याश्च महालक्ष्म्या भार
त्यास्तृप्तिकारणं ॥ नदानेन नयज्ञेन न तपोभिः सुदुर्लभैः ॥ २५ ॥

॥ ६४ ॥

॥ ६४ ॥

षडमित्यर्थः ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ मम पुत्रो ब्रह्मा तद्वादिति नारायणवाक्यमेतत् ॥ २२ ॥
॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ ॥ ७७ ॥

दे.भा.ए.

॥२३॥

॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ पंचशिवमंत्राः सद्योजातादयः ॥ ३५ ॥ इति श्रीदेवी

नतीर्थयात्रयापुण्यं त्रिपुण्ड्रेण च लभ्यते ॥ दानं यज्ञाश्च धर्माश्च तीर्थयात्राश्च नारद ॥ २६ ॥ ध्यानं तपस्त्रिपुण्ड्रस्य
कलां नार्हति षोडशीं ॥ यथाराजास्वचिन्हांकं स्वजनं मन्यते सदा ॥ २७ ॥ तथा शिवस्त्रिपुण्ड्रां कं स्वकीयमिव म
न्यते ॥ द्विजातिर्वान्यजातिर्वाशुद्रचित्तेन भस्मना ॥ २८ ॥ धारयेद्यस्त्रिपुण्ड्रां कं रुद्रस्तेन वशीकृतः ॥ त्यक्तस
र्वाभ्रमाचारोलुप्तसर्वक्रियोपि सः ॥ २९ ॥ सकृत्तिर्यक्त्रिपुण्ड्रां कं धारयेत्सोऽपि मुच्यते ॥ नास्य ज्ञानं परीक्षेत न कु
लं न व्रतं तथा ॥ ३० ॥ त्रिपुण्ड्रां कितभालेन पूज्य एव हि नारद ॥ शिवमंत्रात्परोमंत्रो नास्ति तुल्यं शिवात्परं ॥
॥ ३१ ॥ शिवार्चनात्परं पुण्यं न हि तीर्थं च भस्मना ॥ रुद्रग्रेर्यत्परं वीर्यं तद्भस्म परिकीर्तितं ॥ ३२ ॥ ध्वंसनं सर्व
दुःखानां सर्वपापविशोधनं ॥ अंत्यजो वाऽधमो वापि मुखो वापंडितोऽपि वा ॥ ३३ ॥ यस्मिन्देशे वसेन्नित्यं भूति
शासनसंयुतः ॥ तस्मिन्सदा शिवः सोमः सर्वभूतगणैर्वृतः ॥ सर्वतीर्थैश्च संयुक्तः सान्निध्यं कुरुते सदा ॥ ३४ ॥
एतानि पंचशिवमंत्रपवित्रितानि भस्मान्निकामदहनांगाविभूषितानि ॥ त्रैपुण्ड्रकाणि रचितानि ललाटपट्टे लुपं
ति देवलिखितानि दुरक्षराणि ॥ ३५ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधे त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥
नारायण उवाच ॥ भस्मदिग्धशरीराय यो ददाति धनं मुदा ॥ तस्य सर्वाणि पापानि विनश्यन्ति न संशयः ॥ १ ॥
श्रुतयः स्मृतयः सर्वाः पुराणान्यखिलान्यपि ॥ वदन्ति भूतिमाहात्म्यं तत्तस्माद्धारयेद्भिजः ॥ २ ॥ सितेन भस्म
ना कुर्यात्त्रिसंध्यं यस्त्रिपुण्ड्रकं ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते ॥ ३ ॥ योगी सर्वभयं कं रुद्रानं आपादतलम
स्तकं ॥ त्रिसंध्यमाचरेन्नित्यमाशु योगमवाप्नुयात् ॥ ४ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६२ ॥

भागवततिलके एकादशस्कंधे त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ सप्ताधिकैश्च पंचाशत्पद्यैरथ सविस्तरं ॥ विभूतिधारणस्वैव माहात्म्यमनुवर्ण्यते ॥ २३ ॥
॥ १ ॥ भस्मदिग्धेति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ॥ ६२ ॥

टी.अ.
१३

॥२३॥

॥ ५॥ ६॥ ७॥ ८॥ ९॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ आर्द्रस्नानादिति आर्द्रजलस्नानादुष्मस्नानं वरं श्रेष्ठमित्यर्थः यतो भस्म

भस्मस्नानेन पुरुषः कुलस्योद्धारको भवेत् ॥ भस्मस्नानं जलस्नानादसंख्येयगुणान्वितं ॥ ५ ॥ सर्वतीर्थेषु
यत्पुण्यं सर्वतीर्थेषु यत्फलं ॥ तत्फलं लभते सर्वं भस्मस्नानात्संशयः ॥ ६ ॥ महापातकयुक्तो वाप्युक्तो वाप्युपपा
तकैः ॥ भस्मस्नानेन तत्सर्वं दहत्याग्निरिवेधनं ॥ ७ ॥ भस्मस्नानात्परं स्नानं पवित्रं नैव विद्यते ॥ एवमुक्तं
शिवेनादौ तदा स्नातः स्वयं शिवः ॥ ८ ॥ तदा प्रभृति ब्रह्मध्यामुनयश्च शिवार्थिनः ॥ सर्वकर्मसु यत्नेन भस्मस्ना
नं प्रथमं करे ॥ ९ ॥ तस्मादेतच्छिरस्नानमाग्नेयं यः समाचरेत् ॥ अनेनैव शरीरेण सहि रुद्रो न संशयः ॥ १० ॥
ये भस्मस्नानं दृष्ट्वा परितृप्ता भवन्ति ते ॥ देवासुरमुनीन्द्रैश्च पूज्या नित्यं न संशयः ॥ ११ ॥ भस्मसंछन्नसर्वांगं दृ
ष्ट्वेतिष्ठति यः पुमान् ॥ तं दृष्ट्वा देवराजोऽपि दंडवत्प्रणमिष्यति ॥ १२ ॥ अभक्ष्यभक्षणं येषां भस्मधारणपूर्वकं
॥ तेषां तद्भक्ष्यमेव स्यान्मुनेनात्र विचारणा ॥ १३ ॥ यः स्नाति भस्मना नित्यं जले स्नात्वा ततः परं ॥ ब्रह्मचारी
गृहस्थो वा वा न प्रस्थो वा दरात् ॥ १४ ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तः स याति परमां गतिं ॥ आग्नेयभस्मना स्नानं य
त्तानां च विधिष्यते ॥ १५ ॥ आर्द्रस्नानाद्भस्मस्नानमाद्रव्योद्भवः ॥ आर्द्रतु प्रकृतिं विद्यात् प्रकृतिं बंधनं वि
दुः ॥ १६ ॥ प्रकृतेस्तु प्रहृणाय भस्मना स्नानमिष्यते ॥ भस्मना सदृशं ब्रह्म ज्ञास्ति लोकत्रयेष्वपि ॥ १७ ॥
रक्षार्थं मंगलार्थं च पवित्रार्थं पुरासुरैः ॥ भस्मदृष्ट्वा मुने पूर्वदत्तं देव्यै प्रियेण तु ॥ १८ ॥ तस्मादेतच्छिरस्नानमा
ग्नेयं यः समाचरेत् ॥ भवपाशैर्विनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते ॥ १९ ॥ ज्वररक्षः पिशाचाश्च पूतना कुष्ठगुल्मकाः
॥ भगंदराणि सर्वाणि चाशीतिर्वातरोगकाः ॥ २० ॥

॥ ६१ ॥

॥ ६१ ॥

स्नानादादौ स्वप्रकृतिपुरुषबंधनस्य बंधो नाशो भवति तदित्यर्थः तदेवाह आर्द्रत्विति अशुष्कधान्यवदशुष्ककर्मयुक्तत्वात्प्रकृतेराद्रत्वं तां प्रकृ
तिबंधनं विदुरित्यन्वयः ॥ १६ ॥ १७ ॥ पुरासुरैः स्वीकृतमिति शेषः प्रियेण शिवेन देव्यै दत्तमित्यन्वयः ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥

दे.भा.प.

॥२४॥

॥२१॥२२॥२३॥यामीलिपि ॥ २४ ॥ वक्षसाधारणादितिशेषः ॥ २५॥ २६ ॥ २७ ॥२८॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥
चतुःषष्टिर्वातरोगाश्चैष्माःसप्तत्रिपंचकाः ॥ व्याघ्रचौरभयंचैवाप्यन्येदुष्टग्रहाअपि ॥ २१ ॥ भस्म
स्नानेननश्यंतिसिंहेनेवयथागजाः ॥ शुद्धशीतजलेनैवभस्मनाचत्रिपुंड्रकं ॥ २२ ॥ योधारयेत्परंब्रह्मस
प्राप्नोतिनसंशयः ॥ यथाविधिललाटेवैवन्हिर्वीर्यप्रधारणात् ॥ २३ ॥ नाशयेद्विस्मितांयामीललाटस्थालि
पिंधुवं ॥ कंठोपरिकृतंपापंनाशयेत्तत्रधारणात् ॥ २४ ॥ कंठेचधारणात्कंठभोगादिकृतपातकं ॥ बाव्होर्बाहु
कृतंपापंबक्षसामनसाकृतं ॥ २५ ॥ नाभ्यांशिश्नकृतंपापंगुदेगुदकृतंहरेत् ॥ पार्श्वयोर्धारणाद्ब्रह्मन्पररुयालि
गनादिकं ॥ २६ ॥ तद्भस्मधारणंशस्तंसर्वत्रैवत्रिलिङ्गकं ॥ ब्रह्मविष्णुमहेशानांत्रय्यग्नीनांचधारणं ॥२७॥
गुणलोकत्रयाणांचधारणंतेनैकृतं ॥ भस्मछन्नोद्विजोविद्वान्महापातकसंभवैः ॥ २८॥ दोषैर्वियुज्यतेसद्यो
मुच्यतेचनसंशयः ॥ भस्मनिष्ठस्यदह्यंतेदोषाभस्माग्निसंगमात् ॥ २९ ॥ भस्मस्नानविशुद्धात्माआत्मनि
ष्ठइतिस्मृतः ॥ भस्मनादिग्धसर्वांगोभस्मदीप्तत्रिपुंड्रकः ॥ ३० ॥ भस्मशायीचपुरुषोभस्मनिष्ठइतिस्मृ
तः ॥ भूतप्रेतपिशाचाद्यारोगाश्चातीवदुःसहाः ॥ ३१ ॥ भस्मनिष्ठस्यसान्निध्याद्विद्रवंतिनसंशयः ॥ भास
नाद्भसितंप्रोक्तंभस्मकल्मषभक्षणात् ॥ ३२ ॥ भूतिर्भूतिकरीपुंसांरक्षारक्षाकरीपरा ॥ त्रिपुंड्रधारणंदृष्ट्वाभू
तप्रेतपुरःसराः ॥ ३३ ॥ भीताःप्रकंपिताःशीघ्रंनश्यंत्येवनसंशयः ॥ स्मरणादेवस्मयथापापंप्रणश्य
ति ॥ ३४ ॥ अप्यकार्यसहस्राणिकृत्वायःस्नातिभस्मना ॥ तत्सर्वदहतेभस्मयथाग्निस्तेजसावनम् ॥ ३५ ॥
कृत्वापिचातुलंपापंमृत्युकालेपियोद्विजः ॥ भस्मस्नायीभवेत्क्षत्रिप्रपापैःत्रमुच्यते ॥ ३६ ॥ भस्मस्ना
नाद्विशुद्धात्माजितक्रोधोजितेंद्रियः ॥ मत्समीपंसमागम्यनसभूयोभिवर्तते ॥ ३७ ॥

॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

टी.अ.
१४

॥२४॥

वनस्पतिगतेसोम इति चंद्रेवनस्पतिगतेसर्वात्यर्थः सचामावास्यायांगच्छतीतिप्रसिद्धं बृहदारण्यके तस्यरात्रयएवपंचदशकलाः ध्रुवेवास्य
षोडशीकलासरात्रेभिरेवापूर्यते ऽपक्षीयतेसोमावास्यांरात्रिमेतयाषोडश्याकलयासर्वमिदं प्राणभृदनुप्रवेक्ष्यततः प्रातर्जायतइत्यादिना तथाचसो

वनस्पतिगतेसोमेभस्मोद्धूलितविग्रहः ॥ अर्चितंशंकरं दृष्ट्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ३८ ॥ आयुःकामोथवावि
द्वाभूतिकामोथवानरः ॥ नित्यं वैधारयेद्भस्ममोक्षकामी च वै द्विजः ॥ ३९ ॥ त्रिपुंड्रं परमं पुण्यं ब्रह्मविष्णुशिवा
त्मकं ॥ येषोराराक्षसाः प्रेता ये चान्येक्षुद्रजंतवः ॥ ४० ॥ त्रिपुंड्रधारणं दृष्ट्वा पलायंते न संशयः ॥ कृत्वा शौचादि
कंकर्म स्नात्वा तु विमले जले ॥ ४१ ॥ भस्मनोद्धूलनं कार्यमापादतलमस्तकं ॥ केवलं वारुणं स्नानं देहे बाह्यम
लापहं ॥ ४२ ॥ विभूतिस्नानमनघं बाह्यांतरमलापहं ॥ त्यक्त्वापि वारुणं स्नानं तत्परः स्यान्न संशयः ॥ ४३ ॥
कृतमप्यकृतं सत्यं भस्मस्नानं विना मुने ॥ भस्मस्नानं श्रुतिप्रोक्तमाग्नेयं स्नानमुच्यते ॥ ४४ ॥ अंतर्बहिश्च सं
शुद्धं शिवपूजाफलं लभेत् ॥ यद्बाह्यमलमात्रस्य नाशकं स्नानमस्ति तत् ॥ ४५ ॥ तन्नाशयति तीव्रेण प्राणिबा
ह्यांतरं मलं ॥ कृत्वापि कोटिशो नित्यं वारुणं स्नानमादरात् ॥ ४६ ॥ न भवत्येव पूतात्मा भस्मस्नानं विना मुने
यद्भस्मस्नानमाहात्म्यं तद्वेदे वेदतत्त्वतः ॥ ४७ ॥ यद्वा वेदमहादेवः सर्वदेवशिखामणिः ॥ भस्मस्नानमकृत्वै
व यः कुर्यात्कर्म वैदिकं ॥ ४८ ॥ स तत्कर्म कलाद्विर्मपि नाप्नोति वस्तुतः ॥ यः करिष्यति यत्नेन भस्मस्नानं यथा
विधि ॥ ४९ ॥ स एवैकः सर्वकर्मस्वधिकारी श्रुतिश्रुतः ॥ पावनं पावनानां च भस्मस्नानं श्रुतिश्रुतं ॥ ५० ॥
न करिष्यति यो मोहात्समहापातकी भवेत् ॥ अनंतैर्वारुणैः स्नानैर्यत्पुण्यं प्राप्यते द्विजैः ॥ ५१ ॥ ततो नंतगुणं
पुण्यं भस्मस्नानादवाप्यते ॥ कालत्रयेऽपि कर्तव्यं भस्मस्नानं प्रयत्नतः ॥ ५२ ॥

॥ ४९ ॥

मवारस्यामावास्यामित्यर्थः ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥
॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥

दे.भा.ए.

॥२५॥

॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके एकादशस्कंधे चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ अष्टदशाधिकैः
भस्मस्नानं स्मृतं श्रौतं तस्या गीपतितो भवेत् ॥ मूत्राद्युत्सर्जनांते तु भस्मस्नानं प्रयत्नतः ॥ ५३ ॥ कर्तव्यम
न्यथा पूतान भविष्यन्ति मानवाः ॥ विधिवत्कृतशौचोऽपि भस्मस्नानं विना द्विजः ॥ ५४ ॥ न भविष्यति पूतात्मा
नाधिकार्यपि कर्मणि ॥ अपानवायुभिर्याते जृम्भणे स्कंदने क्षुते ॥ ५५ ॥ श्लेष्मोद्वारेऽपि कर्तव्यं भस्मस्नानं प्रय
त्नतः ॥ श्रीभस्मस्नानमाहात्म्यस्यैकदेशोऽत्र वर्णितः ॥ ५६ ॥ पुनश्च संप्रवक्ष्यामि भस्मस्नानोत्थितं फलं
सावधानेन मनसा श्रोतव्यं मुनिपुंगव ॥ ५७ ॥ इति श्रीदेवीभागवतमहापुराणे एकादशस्कंधे चतुर्दशोऽध्यायः ॥
॥ १४ ॥ नारायण उवाच ॥ अग्निरित्यादिभिर्मन्त्रैर्भस्मसंशोध्य सादरं ॥ धारणीयं ललाटादौ त्रिपुण्ड्रं केवलं द्विजैः
॥ १ ॥ ब्रह्मक्षत्रियवैश्याश्च एते सर्वे द्विजाः स्मृताः ॥ तस्माद्विजैः प्रयत्नेन त्रिपुण्ड्रं धार्यमन्बहं ॥ २ ॥ यस्योपन
यनं ब्रह्मन्स एव द्विज उच्यते ॥ तस्माच्छ्रौतां द्विजैः कार्यं त्रिपुण्ड्रस्य च धारणं ॥ ३ ॥ विभूतिधारणं त्यक्त्वा यः सत्क
र्म समाचरेत् ॥ तत्कृतं चाकृतं प्रायं भवत्येव न संशयः ॥ ४ ॥ न गायत्र्युपदेशोऽपि भस्मनो धारणं विना ॥ ततो
धृत्वेव भस्मांगे गायत्री जपमाचरेत् ॥ ५ ॥ गायत्रीमूलमेवाहुर्ब्राह्मण्ये मुनिपुंगव ॥ सा भस्मधारणाभावेन के
नाप्युपदिश्यते ॥ ६ ॥ न तावदधिकारोऽस्ति गायत्री ग्रहणे मुने ॥ यावन्न भस्मभालादौ धृतमग्निसमुद्भवं
॥ ७ ॥ भस्महीनललाटत्वं न ब्राह्मण्यानुमापकं ॥ एवमेव मया ब्रह्मन् हेतुरुक्तः सुपुण्यदः ॥ ८ ॥ मंत्रपूतं सितं
भस्म ललाटे परिवर्तते ॥ स एव ब्राह्मणो विद्वान्सत्यं सत्यं मयोच्यते ॥ ९ ॥ यस्यास्ति सहजा प्रीतिर्मणिवद्भस्म
संग्रहे ॥ स एव ब्राह्मणो ब्रह्मन्सत्यं सत्यं मयोच्यते ॥ १० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥

श्लोकैः शतसंख्यैरतः परं ॥ अर्धाधिकैश्चिपुण्ड्रैर्ध्वपुण्ड्रयोर्महिमोच्यते ॥ १॥ आग्निरित्यादिभिरिति ते च मन्त्राः पूर्वमुक्ताः ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥
॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥

टी.अ.
१४

॥२५॥

॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥

नयस्यसहजाप्रीतिर्मणिवद्भस्मसंग्रहे ॥ सचांडालइतिज्ञेयोजन्मजन्मांतरेधुर्वं ॥ ११ ॥ नयस्यसहजाप्रीति
स्त्रिपुंड्रोद्भूलादिषु ॥ सचांडालइतिज्ञेयः सत्यं सत्यं मयोच्यते ॥ १२ ॥ ये भस्मधारणं त्यक्त्वा भुंजते च फलादि
कं ॥ ते सर्वे नरकं घोरं प्राप्नुवंति न संशयः ॥ १३ ॥ विभूतिधारणं त्यक्त्वा कुर्वन्हेमतुलामपि ॥ न तत्फलमवाप्नो
ति पतितो हि भवेद्विषः ॥ १४ ॥ यथोपवीत रहितैः संध्यानक्रियते द्विजैः ॥ तथा संध्यानकर्तव्या विभूतिरहितैर
पि ॥ १५ ॥ गतोपवीतैः संध्यायां कार्यः प्रतिनिधिः क्वचित् ॥ जपादिकं तु सावित्र्यास्तथैवोपोषणादिकं ॥ १६ ॥
विभूतिधारणे त्वन्यो नास्ति प्रतिनिधिः क्वचित् ॥ विभूतिधारणं त्यक्त्वा यदि संध्यां करोति यः ॥ १७ ॥ प्रत्ययै
त्येव येनासौ नाधिकारी तदा द्विजः ॥ यथाश्रुत्वां त्यजेद्विद्वान्प्रत्ययै तितथा द्विजः ॥ १८ ॥ प्रत्ययैति न संदेहः स
ंध्याकृद्भस्मवर्जितः ॥ संपादनीयं यत्नेन श्रोतं भस्म सदा द्विजैः ॥ १९ ॥ स्मार्तवत्तदभावे तु लौकिकं वा समाहितैः
॥ यादृशं तादृशं वास्तुपवित्रं भस्म संततं ॥ २० ॥ धारणीयं प्रयत्नेन द्विजैः संध्यादिकर्मसु ॥ न संविशंति पा
पानि भस्मनिष्ठे ततः सदा ॥ २१ ॥ कर्तव्यमपि यत्नेन ब्राह्मणैर्भस्मधारणं ॥ मध्यांगुलिप्रयेणैव स्वदक्षिणक
रस्य तु ॥ २२ ॥ षडंगुलाय तं मानमपि चाधिकमानकं ॥ नेत्रयुग्मप्रमाणेन भाले दीप्तं त्रिपुंड्रकं ॥ २३ ॥ कदा
चिद्भस्मना कुर्यात्स रुद्रो नात्र संशयः ॥ अकारो नामिका प्रोक्ता उकारो मध्यमांगुलिः ॥ २४ ॥ मकारस्तर्जनीत
स्मा त्रिपुंड्रं त्रिगुणात्मकं ॥ त्रिपुंड्रं मध्यमातर्जन्यनामाभिरनुलोमतः ॥ २५ ॥ अत्र ते कथयाम्येनमिति हासं
पुरातनं ॥ कदाचिदथ दुर्वासाः पितृलोकं गतो भवत् ॥ २६ ॥ भस्मसंदिग्धसर्वांगोरुद्राक्षाभरणान्वितः ॥ शिवशं
करसर्वात्मन् श्रोमातर्जगदंबिके ॥ २७ ॥

॥ ६२ ॥

॥ ६२ ॥

॥ ६२ ॥

अत्रेतिहासमाह अत्र ते कथयामीति ॥ २६ ॥ २७ ॥

॥ ६२ ॥

॥ ६२ ॥

॥ ६२ ॥

दे.भा.ए.

॥२६॥

कव्यवालादयइति तेच कव्यवालोनलःसोमोयमश्चैवार्यमातथा अभिष्वान्तावर्हिषदःसोमपाःपितृदेवताइतिवचनोक्ताःपितृगणस्वामिनः
॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ षडशीतिरिति तानिकुंडानिनामतोरूपतश्चनवमस्कंधेसावित्र्युपाख्यानेकथिता

टी.अ.

१५

नामानीतिगृणक्षुच्चैस्तापसानांशिखामणिः ॥ कव्यवालादयस्तेतुप्रत्युत्थानाभिवादनैः॥२८॥ आसनाद्युप
चारैश्चसंमानंबहुवक्रिरे ॥ नानाकथाभिरन्योन्यंसंभाषांचक्रिरेतदा ॥ २९॥ तस्मिंस्तुसमयेकुंभीपाकस्था
नांतुपापिनां ॥ घोरःसमभवच्छब्दोहाहताःस्मेतिवादिनां ॥ ३० ॥ मृताःस्मेतिवदंत्येकेदग्धाःस्मेति
पुरोजगुः ॥ छिन्नाःस्मेतिविभिन्नाःस्मेत्येवंरेदनकारिणः ॥ ३१॥ श्रुत्वातंकरुणाशब्दंदुःखितोमुनिराड्भुवि
॥ पप्रच्छपितृनाथांस्तान्केषांशब्दोयमित्यपि ॥ ३२ ॥ तेसमूचुर्मुनेत्रैवपुरीसंयमनीपुरा ॥ वर्ततेयमराडत्र
पापिनांभोगशयकः ॥ ३३ ॥ नानादूतैःकालरूपैःकृष्णवर्णैर्भयंकरैः ॥ सहितोत्रैवतत्पुर्यानायकोविद्यतेन
घ ॥ ३४ ॥ तत्रकुंडान्यनेकानिपापिनांभोगदानिच ॥ षडशीतिघोररूपैर्दूतैःपरिवृतानिच ॥ ३५ ॥ तत्रमु
स्यतमंकुंडंकुंभीपाकाभिधंमहत् ॥ वर्ततेतद्गतानांचयातनानांतुवर्णनं ॥ ३६ ॥ कर्तुंनशक्यतेकैश्चिदपिव
र्षशतैरपि ॥ येशिवद्रोहिणःसंतितथादेवीविनिंदकाः ॥ ३७ ॥ येविष्णुद्रोहिणःसंतिपतंत्यत्रैवतेमुने ॥ येवेद
निंदकाःसंतिसूर्यस्यचगणेशितुः ॥ ३८ ॥ ब्राह्मणानांद्रोहिणोयेपतंत्यत्रैवतेमुने ॥ कामाचाराश्चयेसंतितप्तमु
द्रांकिताश्चये ॥३९॥ त्रिशूलधारिणोयेचपतंत्यत्रैवतेमुने ॥ मातृपितृगुरुज्येष्ठपुराणस्मृतिनिंदकाः ॥ ४० ॥

नि ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ केकेतास्मिन्कुंडेपतंतितानाह येशिवद्रोहिणइति ॥ ३७॥ ३८ ॥ कामाचाराश्चेति ययेष्टाचरणवंतइत्यर्थः ॥३९॥
त्रिशूलधारिणइति तत्रत्रिशूलधारिणःशैवाइत्यर्थः ॥ ४० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥२६॥

॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ तत्रत्यानांकुंडस्थानां ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ वेदिनेज्ञानवते ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ अम

येधर्मदूषकाःसन्तिपतंत्यत्रैवतेमुने ॥ तेषामयंमहाघोरःशब्दःश्रवणदारुणः ॥ ४१ ॥ श्रूयतेस्माभिरन्निशंवे
राग्यंयच्छुतेर्भवेत् ॥ इतितेषांवचःश्रुत्वामुनिराट्दृष्ट्वा ॥ ४२ ॥ उत्थायचलितस्तूर्णययौकुंडसमीपतः ॥
अवाङ्मुखोददर्शाधस्तस्मिन्नेवक्षणेमुने ॥ ४३ ॥ तत्रत्यानांपापिनांतुस्वर्गाधिकमभूत्सुखं ॥ हसंतिकेचिद्वा
यंतिनृत्यंतितथापरे ॥ ४४ ॥ परस्परंरमंतेतेप्युन्मत्ताःसुखवर्धनात् ॥ मृदंगमुरजावीणाढक्कादुंदुभिनिः
स्वनाः ॥ ४५ ॥ समुद्रूतास्तुमधुराःपंचमस्वरभूषिताः ॥ वसंतवल्लीपुष्पाणांसुगंधमरुतोववुः ॥ ४६ ॥ मु
निस्तुचकितोदृष्ट्वायमदूताश्चविस्मिताः ॥ शीघ्रंतेकथयामासुर्धर्मराजायवेदिने ॥ ४७ ॥ महाराजमहाश्रय
मधुनैवाभवद्विभो ॥ स्वर्गादप्यधिकंसौख्यंकुंभीपाकस्थपापिनां ॥ ४८ ॥ निमित्तंनैवजानीमःकस्मादिदम
भूद्विभो ॥ चकिताःस्मवयंसर्वेप्राप्तादेवत्वदंतिकं ॥ ४९ ॥ निशम्यदूतवाणींतांधर्मराट्शीघ्रमुत्थितः ॥ महाम
हिषमारूढोययौतेयत्रपापिनः ॥ ५० ॥ तांवार्तीप्रेषयामासदूतद्वारामरावतीं ॥ श्रुत्वातांदेवराजोपिप्राप्तोदेव
गणैःसह ॥ ५१ ॥ ब्रह्मलोकात्पद्मजोपिवैकुण्ठाद्विष्टरश्रवाः ॥ तत्तल्लोकाच्चदिकपालाःसमाजग्मुर्गणैःसह ॥ ५२ ॥
परिवार्यस्थिताःसर्वेकुंभीपाकमितस्ततः ॥ अपश्यंस्तद्गतान्जीवान्स्वर्गाधिकसुखान्वितान् ॥ ५३ ॥ चकि
ताएवतेसर्वेनविदुस्तस्यकारणं ॥ अहोपापस्यभोगार्थंकुंडमेतद्विनिर्मितं ॥ ५४ ॥ तत्रसौख्यंयदाजातंतदा
पापात्तुकिंभयं ॥ उच्छिन्नावेदमर्यादापरमेशकृताकथं ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥

रावतीमिदं प्रति ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥

॥ ५६ ॥

॥ ५७ ॥

॥ ५८ ॥

दे.भा.ए.

॥२७॥

स्वस्यसंकल्पकुंभीपाकस्थानांदुःखंभवत्वित्येवंरूपसंकल्पमित्यर्थः वितथमिथ्या ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ सचतुर्वेदं चतुर्वेदैः

भगवान्स्वस्यसंकल्पंवितथंकृतवान्कथं ॥ आश्चर्यमेतदाश्चर्यमेतदित्येवभाषिणः ॥ ५६ ॥ तटस्थाअभव
न्सर्वेनविदुस्तत्रकारणं ॥ एतस्मिन्नंतरेशौरिःसंमंत्र्यविबुधादिभिः ॥ ५७ ॥ ययौकौश्चित्सुरगणैःसहितःशं
करालयं ॥ पार्वत्यासहितंदेवंकोटिकंदर्पसुंदरं ॥ ५८ ॥ रमणीयतमांगंतलावण्यखनिमद्भुतं ॥ सदाषोडश
वर्षीयंनानालंकारभूषितं ॥ ५९ ॥ नानागणैःपरिवृतंलालयंतंपरांशिवां ॥ ददर्शचंद्रमौलिसचतुर्वेदंननाम
ह ॥ ६० ॥ वृत्तांतंकथयामासचमत्कृतमतिस्फुटं ॥ एतस्यकारणंदेवनजानीमःकथंचन ॥ ६१ ॥ वदतत्का
रणंदेवसर्वज्ञोसियतःप्रभो ॥ विष्णुवाक्यंतदाश्रुत्वाप्रसन्नमुखपंकजः ॥ ६२ ॥ उवाचमधुरंवाक्यंमेघगं
भीरयागिरा ॥ शृणुविष्णोतन्निमित्तंनाश्चर्यंत्वत्रविद्यते ॥ ६३ ॥ भस्मनोमहिमैवायंभस्मनाकिंभवेन्नहि ॥
कुंभीपाकंगतोद्रष्टुं दुर्वासाःशैवसंमतः ॥ ६४ ॥ अवाङ्मुखोददर्शाधस्तदावायुवशाद्वरे ॥ भालभस्मकृणा
स्तत्रपतितादैवयोगतः ॥ ६५ ॥ तेनजातमिदं सर्वंभस्मनोमहिमात्वयं ॥ इतःपरंतुततीर्थपितृलोकनिवासि
नां ॥ ६६ ॥ भविष्यतिनसंदेहोयत्रस्नात्वासुखीभवेत् ॥ पितृतीर्थंतुतन्नाम्नाप्यत ऊर्ध्वंभविष्यति ॥ ६७ ॥
मल्लिगस्थापनंतत्रकार्यं देव्याश्चसत्तम ॥ पूजयिष्यंतितेतत्रपितृलोकनिवासिनः ॥ ६८ ॥ त्रैलोक्येयानिती
र्थानितत्रश्रेष्ठमिदंभवेत् ॥ पित्रीश्वरीपूजयातुं त्रैलोक्यंपूजितंभवेत् ॥ ६९ ॥ नारायणउवाच ॥ इतिदेववचः
श्रुत्वादेवंमूर्ध्नाप्रणम्यच ॥ तदनुज्ञांसमादायययौदेवांतिकंहरिः ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥

सहितंशिवमित्यर्थः ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ निमित्तमाह कुंभीपाकमिति ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥
पित्रीश्वरीतितस्मिंस्तीर्थेस्थापितादेवी ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥

टी.अ.
१५

॥२७॥

॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ तत्रकैलासे ॥ ७५ ॥ निरुद्धमिति यदितत्रापिशैवगमनस्यात्तदापुनश्चकुंभीपाकोच्छेदएवस्यादि
तिभियांकुंभीपाकमार्गेशैवैवैवगंतव्यामितिनिरोधःकृतइत्यर्थः ॥ ७६ ॥ अथोर्ध्वपुंड्रविधिमाह ऊर्ध्वपुंड्रविधिमिति ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥

तत्सर्वकथयामासकारणशंकरोदितं ॥ साधुसाध्वितितेप्रोचुरमरामौलिचालनैः ॥ ७१ ॥ शशंसुर्भस्ममाहा
त्म्यंहरिब्रह्मादयःसुराः ॥ पितरश्चैवसंतुष्टास्तीर्थलाभात्परंतप ॥ ७२ ॥ तत्तीर्थतीरेलिंगंचदेव्यामूर्तियथावि
धि ॥ स्थापयामासुरमराःपूजयामासुरन्वहं ॥ ७३ ॥ तत्रयेप्राणिनोऽभूवन्पापभोगार्थमास्थिताः ॥ तेविमा
नंसमारुह्यगताःकैलासमंडलं ॥ ७४ ॥ नाम्नाभद्रगणास्तेतुवसंत्यद्यापितत्रहि ॥ पुनश्चदूरदेशेतुकुंभीपा
कोविनिर्मितः ॥ ७५ ॥ निरुद्धंशैवगमनंदैवैस्तत्रतुतदिनात् ॥ इतितेसर्वमाख्यातंभस्ममाहात्म्यमुत्तमं ॥ ७६ ॥
नातःपरतरंकिंचिदधिकंविद्यतेमुने ॥ ऊर्ध्वपुंड्रविधिंचैवाप्यधिकारिविभेदतः ॥ ७७ ॥ प्रवक्ष्येमुनिशार्दूलवै
ष्णवागमलोकनात् ॥ ऊर्ध्वपुंड्रप्रमाणानिदिव्यान्यंगुलिभेदतः ॥ ७८ ॥ वर्णाभिमंत्रदेवांश्चप्रवक्ष्यामिफला
निच ॥ पर्वताग्रेनदीतीरेशिवक्षेत्रेविशेषतः ॥ ७९ ॥ सिंधुतीरेचवल्मीकेतुलसीमूलमाश्रिते ॥ मृदएतास्तुसं
ग्राह्यावर्जयेदन्यमृत्तिकाः ॥ ८० ॥ श्यामंशांतिकरंप्रोक्तंरक्तंवश्यकरंभवेत् ॥ श्रीकरंपीतमित्याहुर्धर्मदंश्वेत
मुच्यते ॥ ८१ ॥ अंगुष्ठःपुष्टिदःप्रोक्तोमध्यमायुःकरीभवेत् ॥ अनामिकान्नदानित्यंमुक्तिदाचप्रदेशिनी ॥ ८२ ॥
एतैरंगुलिभेदैस्तुकारयेन्ननखैःस्पृशेत् ॥ वर्तिदीपावलिकृतिंवेणुपत्राकृतिंतथा ॥ ८३ ॥ ॥ ६४ ॥

॥ ८० ॥ श्याममूर्ध्वपुंड्रमित्यर्थः एवमुत्तरत्र ॥ ८१ ॥ अंगुलिनियममाह अंगुष्ठइति ॥ ८२ ॥ ऊर्ध्वपुंड्राकारमाह वर्तिदीपेति वर्ति
वृत्तिर्योदीपस्तस्ययावलिःपंक्तिरूर्ध्वरेषारूपाअधःस्थूलंतसूक्ष्मरूपातद्वृत्तिराकृतिर्यस्येत्यर्थः ॥ ८३ ॥ ॥ ६५ ॥

दे.भा.ए.

॥२८॥

एतेषां विनियोगो ब्रह्मांडपुराणे ललाटे बाहुवच्चैव दंडवत्कर्णपल्लवे हृदये कमलाकारमुदरे दीपवलिखेत् वेणुपत्रसमाकारं बाह्वोर्मध्ये लिखेत्सु
धीः अधः पृष्ठे स्कंधदेशे न्यसेज्जं नूपलाशवदिति ॥ ८४ ॥ तत्रोत्तमं त्रिपुंड्रं गुलिप्रमाणभेदेन त्रिविधमाह दशांगुलीति दशांगुलिप्रमाणमुत्त
मोत्तमं उत्तमोत्तमं त्रिपुंड्रे उत्तममित्यर्थः मध्यममुत्तमं त्रिपुंड्रे मध्यममित्यर्थः अधः परमिति उत्तमोत्तमं त्रिपुंड्रेऽधः कनिष्ठमित्यर्थः ॥ ८५ ॥
पद्मस्य मुकुलाकारं तथा कुर्यात्प्रयत्नतः ॥ मत्स्यकूर्माकृतिं वापि शंखाकारं ततः परं ॥ ८४ ॥ दशांगुलिप्रमाणं
तु उत्तमोत्तममुच्यते ॥ नवांगुलं मध्यमं स्यादष्टांगुलमतः परं ॥ ८५ ॥ सप्तषट्पंचभिः पुंड्रं मध्यमं त्रिविधं स्मृतं
चतुस्त्रिद्व्यंगुलैः पुंड्रं कनिष्ठं त्रिविधं भवेत् ॥ ८६ ॥ ललाटे केशवं विद्यान्नारायणमथोदरे ॥ माधवं हृदिविन्यस्य
गोविंदं कंठकूपके ॥ ८७ ॥ उदरे दक्षिणे पार्श्वे विष्णुरित्यभिधीयते ॥ तत्पार्श्वे बाहुमध्ये च मधुसूदनमेव च ॥
॥ ८८ ॥ त्रिविक्रमं कर्णदेशे वामे कुक्षौ तु वामनं ॥ श्रीधरं बाहुके वामे हृषीकेशं तु कर्णके ॥ ८९ ॥ पृष्ठे च पद्मना
भंतुककुद्दामोदरं स्मरेत् ॥ द्वादशैतानि नामानि वासुदेवेति मूर्धनि ॥ ९० ॥ पूजाकाले च होमे वसायं प्रातः समा
हितः ॥ नामान्युच्चार्य विधिना धारयेदूर्ध्वपुंड्रं ॥ ९१ ॥ अशुचिर्वाप्य नाचारो मनसा पापमाधरेत् ॥ शुचिरेव
भवेन्नित्यं मूर्ध्नि पुंड्रां कितो नरः ॥ ९२ ॥ ऊर्ध्वपुंड्रधरो मर्त्योऽप्ययते यत्र कुत्रचित् ॥ श्वपाकोऽपि विमानस्थो मम
लोके महीयते ॥ ९३ ॥ एकांतिनो महाभाग मत्स्वरूपविदो मलाः ॥ सांतरालान् प्रकुर्वन्ति पुंड्रान्विष्णुपदाकृ
तीन् ॥ ९४ ॥ परमैकांतिनोऽप्येवं मत्पादैकपरायणाः ॥ हरिद्राचूर्णसंयुक्ताञ्छूलाकारांस्तु वामलान् ॥ ९५ ॥
मध्यमोर्ध्वपुंड्रमपि त्रिविधमाह सप्तषट्पंचभिरिति ॥ ८६ ॥ ऊर्ध्वपुंड्रे देवताध्यानमाह ललाटे केशवमिति ॥ ८७ ॥ तत्पार्श्वे उदरस्य वामपार्श्वे
इत्यर्थः ॥ ८८ ॥ कर्णके दक्षिणकर्णे ॥ ८९ ॥ ककुदितिलुप्तसतम्यंतं ककुदीत्यर्थः ॥ ९० ॥ ९१ ॥ तत्र शुक्लकृष्णपक्षभेदेन
नामभेदो ब्रह्मांडपुराणे उक्तः संकर्षणादिभिः शुक्ले कृष्णे च केशवादिभिरिति ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ सांतरालान् रेखाद्वयमध्ये वकाशसहितान्
॥ ९४ ॥ ऊर्ध्वपुंड्रभेदमाह हरिद्राचूर्णसंयुक्तानिति रामानुजसंप्रदाये स्पष्टमेव तत् ॥ ९५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

टी.अ.
१५

॥२८॥

पद्मशब्देनपद्ममुकुलंगृह्यतेपूर्वतदुक्तत्वात् ॥ ९६ ॥ केवलवैष्णवाभागवताइत्यर्थः ॥ ९७ ॥ एकांतिनामेकांतभक्तानांवीरवैष्णवानांपरमै
कांतिनामपि वीरवैष्णवेभ्योपिमहावीरवैष्णवानामित्यर्थः तेचसांप्रतमाध्वरामानुजाश्चक्रमेणभवन्ति ॥ ९८ ॥ मध्येच्छिद्रमुभयोरेखयोर्मध्यव
अभ्येतुवैष्णवाःपुंड्रानच्छिद्रानपिभक्तितः ॥ प्रकुर्वीरन्दीपपद्मवेणुपत्रोपमाकृतीन् ॥ ९६ ॥ अच्छिद्रानपि
सच्छिद्रान्कुर्युःकेवलवैष्णवाः ॥ अच्छिद्रकरणेतेषांप्रत्यवायो न विद्यते ॥ ९७ ॥ एकांतिनांप्रपन्नानांपरमैकांति
नामपि ॥ अच्छिद्रपुंड्राकरणेप्रत्यवायो महान्भवेत् ॥ ९८ ॥ ऊर्ध्वपुंड्रंतुयःकुर्यादंडाकारंतुशोभनम् ॥ मध्येच्छि
द्रवैष्णवश्चनमोतैःकेशवादिभिः ॥ ९९ ॥ विमलान्यूर्ध्वपुंड्राणि सांतरालानियो नरः ॥ करोतिविपुलंतत्रमंदिरं
मेकरोतिसः ॥ १०० ॥ ऊर्ध्वपुंड्रस्यमध्येतुविशालेसुमनोहरे ॥ लक्ष्म्यासाकंसहासीनोरमतेविष्णुरव्ययः ॥
॥ १ ॥ निरंतरालंयःकुर्यादूर्ध्वपुंड्रं द्विजाधमः ॥ सहितत्रस्थितंविष्णुंश्रियंचैवव्यपोहति ॥ २ ॥ अच्छिद्रमूर्ध्वपुं
ड्रंतुयःकरोतिविमूढधीः ॥ सपर्यायेणतानेतिनरकानेकविंशतिं ॥ ३ ॥ ऋजूनिस्फुटपाश्वानिसांतरालानिवि
न्यसेत् ॥ ऊर्ध्वपुंड्राणिदंडाब्जदीपमत्स्यनिभानिच ॥ ४ ॥ शिखोपवीतवद्वार्यमूर्ध्वपुंड्रं द्विजेनच ॥ विनाकृता
श्चेद्विफलाःक्रियाःसर्वामहामुने ॥ ५ ॥ तस्मात्सर्वेषुकार्येषुकार्येविप्रस्यधीमतः ॥ ऊर्ध्वपुंड्रं त्रिशूलंचवर्तुलंचतु
रस्त्रकं ॥ ६ ॥ अर्द्धवद्रादिकंलिंगंवेदनिष्ठोनधारयेत् ॥ जन्मनालब्धजातिस्तुवेदपंथानमाश्रितः ॥ ७ ॥ पुंड्रांत
रंभ्रमाद्वापिललाटेनैवधारयेत् ॥ रूपातिकांत्यादिसिद्ध्यर्थंचापिविष्णवागमादिषु ॥ ८ ॥ स्थितंपुंड्रांतरंनैवधा
रयेद्वैदिकोजनः ॥ तिर्यक्पुंड्रंसंत्यज्यश्रौतंकथमितिभ्रमात् ॥ ९ ॥

॥ ६५ ॥

काशंकुर्यादित्यर्थः नमोतैःकेशवादिभिरितिपूर्वोक्तानुवादः ॥ ९९ ॥ तदेवस्पष्टयति विमलान्यूर्ध्वेति ॥ १०० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥
॥ ४ ॥ ५ ॥ इतःपरमूर्ध्वपुंड्रादीनामधिकारिणआह ऊर्ध्वपुंड्रमिति ॥ ६ ॥ वैदिकस्याधिकारोनास्तिवैदिकातिरिक्तएवाधिकारीत्य
र्थः ॥ ७ ॥ ८ ॥ श्रौतंतिर्यक्पुंड्रमित्यस्यपूर्वेणान्वयः ॥ ९ ॥

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

दे.भा.ए.

॥२९॥

॥ ११० ॥ अंकितस्ततमुद्रादिभिः ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ नचेतरादिति वैदिकविष्णुभक्तस्यापिश्रौतंभस्मादिकमेवाविधीयते
ततमुद्रोर्ध्वपुंड्रादिकंतुतंनोक्तदीक्षावतांविष्णवानांविधीयतइतिभावः ॥ १५ ॥ प्रादुर्भावविशेषाणारामकृष्णाद्यवताराणां तेषामुपासकैरपिभ

टी.अ.
१५

ललाटेभस्मनातिर्यक्त्रिपुंड्रस्यवधारणं ॥ विनापुंड्रांतरंमोहाद्वारयन्नारकीभवेत् ॥ १० ॥ वेदमार्गेकनिष्ठ
स्तुमोहेनाप्यंकितोयदि ॥ पतत्येवनसंदेहस्तथापुंड्रांतरादपि ॥ ११ ॥ नांकनंविग्रहेकुर्याद्वेदमार्गसमाश्रितः
॥ श्रौतधर्मेकनिष्ठानांलिंगंतुश्रौतमेवहि ॥ १२ ॥ अश्रौतधर्मनिष्ठानामश्रौतंलिंगमरितं ॥ देवतावेदसिद्धा
यास्तासांलिंगंतुवैदिकं ॥ १३ ॥ अश्रौततंत्रनिष्ठायास्तासामश्रौतमेवहि ॥ वेदसिद्धोमहादेवःसाक्षात्सं
सारमोचकः ॥ १४ ॥ भक्तानामुपकारायश्रौतंलिंगं दधाति च ॥ वेदसिद्धस्यविष्णोश्चश्रौतंलिंगंनचेतरत् ॥
१५ ॥ प्रादुर्भावविशेषाणामपितस्यतदेवहि ॥ श्रौतंलिंगंतुविज्ञेयंत्रिपुंड्रोद्धूलनादिकं ॥ १६ ॥ अश्रौतमूर्ध्व
पुंड्रादिनैवतिर्यक्त्रिपुंड्रकं ॥ वेदमार्गेकनिष्ठानांवेदोक्तेनैववर्त्मना ॥ १७ ॥ ललाटेभस्मनातिर्यक्त्रिपुंड्रधा
र्यमेवहि ॥ यस्तुनारायणंदेवंप्रपन्नःपरमंपदं ॥ ११८ ॥ धारयेत्सर्वदाशूलंललाटेगंधवारिणा ॥ इतिश्रीदे
वीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेपंचदशोध्याय ॥ १५ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥

स्मोद्धूलनंभस्मात्रिपुंड्रादिकमेवधार्यमितिभावः ॥ १६ ॥ ऊर्ध्वपुंड्रादिकमेवाश्रौतंभवतिनतिर्यक्त्रिपुंड्रकमित्यन्वयः ॥ १७ ॥ तस्मात्तां
त्रिकैरेवोर्ध्वपुंड्रधार्यनवौदिकैरित्युपसंहरति यस्त्विति ॥ १८ ॥ इतिसर्वसूतसंहितापराशरोपपुराणकूर्मपुराणादिषुस्पष्टं ॥ इतिश्रीदेवीभागवत
तिरुकेएकादशस्कंधेपंचदशोध्यायः ॥ १५ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७० ॥

॥२९॥

शतश्लोकैः षडधिकैः संध्योपासनमुत्तमम् ॥ द्विजानां कथ्यते येन जगदंबा तु तस्य १ तिलकविधानानंतरं संध्याविधिकथयति अथात इति संध्यायाः
संध्याकालाधिष्ठात्र्या गायत्रीदेव्या ऋपासनमित्यर्थः तथा च याज्ञवल्क्यः संधौ संध्यामुपासीत नोदितेनास्तगेरवाविति संध्याशब्दवाच्यां देवीमाह
संध्यात्रयं तु कर्तव्यमित्यत्र तु संध्याशब्दः संध्याकालिककर्मपरः तत्र याज्ञवल्क्यवाक्ये संधाविति मध्याह्नस्याप्युपलक्षणं पूर्वसंध्यातु गायत्रीसा
वित्रीमध्यमास्मृता याभवेत्पश्चिमासंध्यासाविज्ञेया सरस्वती इवेता भवति गायत्रीसावित्रीरक्तवर्णिका कृष्णसरस्वतीज्ञेया संध्यात्रयमुदाहृतमि
तितदुक्तेश्च अनेनैव क्रमेण ब्रह्मरुद्रविष्णुसमानाकारत्वाद्वायव्यादीनां ब्रह्मरुद्रविष्णुरुपत्वमुक्तं न त्वत्र ब्रह्मरुद्रविष्णूनां स्त्रीरूपत्वेन ध्येयत्वमिति बो
ध्यं तत्रोपासनं नाम ध्यानमात्रं न भिन्नां प्रतिपद्येत गायत्री ब्रह्मणा सह साहमस्मीत्युपासीत विधिनयेन केनचित् इति व्यासवचनादितिकेचित् परेतु
ध्यानपूर्वकौ मंत्रजप एवात्रोपासनं यासां संध्याजगत्सूतिर्मायातीता हि निष्कला ईश्वरी केवला शक्तिस्तत्त्वत्रयसमुद्भवा ध्यात्वार्कमंडलगतां सा

नारायण उवाच ॥ अथातः श्रूयतां पुण्यं संध्योपासनमुत्तमं ॥ भस्मधारणमाहात्म्यं कथितं चैव विस्तरात् ॥ १ ॥

वित्रीप्रजपेद्बुध इति कौर्मणवचनेन ध्यानस्यांगत्वप्रतिपादनात् देवतां ध्यायन् जपं कुर्यादिति शंखस्मृतेश्च एवं च न भिन्नामिति व्यासवाक्ये गभूतध्या
नस्यैवोपासनात्वेनाभिधानं नित्योदकः संध्यामुपासीतेत्युपक्रम्य गायत्रीजपस्यैवाश्वलायनेनाभिधानाच्च गायत्रीजपस्यैव प्राधान्यप्रतीतेः ऋ
षयो दीर्घं संध्यत्वादीर्घमायुरवाप्नुयुरिति मनुरपि गायत्रीजपपरतयैव ब्रह्माभिन्ना कौपस्थानादित्याहुः केचित्तु गायत्रीमंत्ररूपां तत्प्रतिपाद्य ब्रह्माभि
नत्वेन गृहीतां जपेन साहमित्युपासीत इति व्यासवाक्यार्थमाहुः सर्वथापि अत्र संध्यापदेन स्त्रीरूपाणां ब्रह्मरुद्रविष्णूनां संध्याकालेन ग्रहणं न वा गायत्र्य
तिरिक्तायाः कस्याश्चित् संध्याकालाधिष्ठात्र्या देव्या ग्रहणं किंतु ब्रह्मण एवार्कमंडलांतर्गतं चैतन्याभिन्नस्य गायत्र्यर्थभूतस्य संध्यात्रये गायत्र्याद्या
कारधारिणो ग्रहणं तथा चैकैव गायत्रीसंध्यात्रये आकारत्रयैरुपास्या संध्याकालातिरिक्तकाले जपे कर्तव्येतुमुक्ता विदुर्महेमनीलेत्यादि ध्यानप्र
कारेणोपास्येति बोध्यं एतेन संध्यापदेन स्त्रीरूपाणां ब्रह्मरुद्रविष्णूनां ग्रहणं गायत्र्यतिरिक्तस्य देवतात्रयस्य कस्याचिद्वा ग्रहणं गायत्रीजपे तु गायत्र्या
मुक्ता विदुर्मेति श्रेष्ठध्यानाया एव ग्रहणमिति प्राचीनमपास्तं ॥ १ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.ए.

॥३०॥

संध्योपासनकालमाह प्रातःसंध्यामिति ॥ २ ॥ उत्तमाधमभेदेनकालभेदमाह तद्भेदानिति ॥३॥४॥५॥ संध्योपासनस्यावश्यकत्वमाह विप्रोवृक्षइति ॥६॥७॥८॥ ९॥ प्रायश्चित्तमाह कालातिक्रमणेइतिअर्घ्यत्रयानंतरंप्रायश्चित्तार्थमर्घ्यांतरंदेयमित्यर्थः आदौप्रथमतःप्राय

प्रातःसंध्याविधानंचकथयिष्यामितेनघ ॥ प्रातःसंध्यांसनक्षत्रांमध्यान्हेमध्यभास्करां ॥ २ ॥ ससूर्यापश्चि
मांसंध्यांतिस्त्रःसंध्याउपासते ॥ तद्भेदानपिवक्ष्यामिशृणुदेवर्षिसत्तम ॥ ३ ॥ उत्तमातारकोपेतामध्यमालुप्त
तारका ॥ अधमासूर्यसहिताप्रातःसंध्यात्रिधामता ॥ ४ ॥ उत्तमासूर्यसहितामध्यमास्तमितेरवौ ॥ अधमा
तारकोपेतासायंसंध्यात्रिधामता ॥ ५ ॥ विप्रोवृक्षोमूलकान्यत्रसंध्यावेदःशाखाःकर्मधर्माणिपत्रम् ॥ तस्मा
न्मूलंयत्नतोरक्षणीयंछिन्नेमूलेनैववृक्षोनशाखा ॥ ६ ॥ संध्यायेननविज्ञातासंध्यायेनानुपासिता ॥ जीवमा
नोभवेच्छूद्रोमृतःश्वाचैवजायते ॥ ७ ॥ तस्मान्नित्यंप्रकर्तव्यंसंध्योपासनमुत्तमं ॥ तदभावेन्यकर्मादावधि
कारीभवेन्नहि ॥ ८ ॥ उदयास्तमयादूर्ध्वयावत्स्याद्धटिकात्रयं ॥ तावत्संध्यामुपासीतप्रायश्चित्तंततःपरं ॥
॥९॥ कालातिक्रमणेजातेचतुर्थार्घ्यंप्रदापयेत् ॥ अथवाष्टशतंदेवींजह्वादैतांसमाचरेत् ॥१०॥ यस्मिन्काले
तुयत्कर्मतत्कालाधीश्वरिचितां ॥ संध्यामुपास्यपश्चात्तुतत्कालीनंसमाचरेत् ॥ ११ ॥ गृहेसाधारणाप्रोक्तागो
ष्ठैवैमध्यमाभवेत् ॥ नदीतीरेचोत्तमास्याद्देवीगेहेतदुत्तमा ॥ १२ ॥ यतोदेव्याउपासेयंततोदेव्यास्तुसन्निधौ
॥ संध्यात्रयंप्रकर्तव्यंतदानंत्यायकल्पते ॥ १३ ॥ एतस्याअपरंदेवंब्राह्मणानांनविद्यते ॥ नविष्णूपासना
नित्यानशिवोपासनातथा ॥ १४ ॥ यथाभवेन्महोदेव्यागायत्र्याःश्रुतिचोदिता ॥ सर्ववेदसारभूतागायत्र्या
स्तुसमर्चना ॥ १५ ॥ ॥१६॥ ॥१७॥ ॥१८॥ ॥१९॥ ॥२०॥ ॥२१॥ ॥२२॥

श्चित्तार्थदेवीगायत्रीजह्वासंध्यांसमाचरोदित्यर्थः अल्पकालातिक्रमेचतुर्थार्घ्योबहुकालातिक्रमेष्टशतंजपइतितुरहस्यं॥१०॥११॥ तदुत्तमा
उत्तमातोप्युत्तमेत्यर्थः॥१२॥ तत्रहेतुमाह यतोदेव्याइति गायत्रीदेव्याउपासनादेव्याःसमीपेएवकर्तव्येत्यर्थः ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥

टी.अ.

१६

॥३०॥

॥ १६ ॥ १७ ॥ संध्याक्रममाह आचांतइति केशवादिनामभिराचांतइत्यन्वयः प्रथमतआचांतःपश्चात्प्राणमायम्यसंकल्पंकुर्यादिति
शेषः सचेत्यममोपात्तदुरितक्षयद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रोत्यर्थप्रातःसंध्यामुपाशिष्येइति केशवादिनामान्याह केशवश्चेति ॥ १८ ॥ १९ ॥
॥ २० ॥ २१ ॥ स्वाहांतैर्नामभिराचमनंनमोतैरंगस्पर्शःकार्यइत्यर्थः ॥ २२ ॥ तदेवाह केशवादिभिरिति ॥ २३ ॥ संकर्षणादिदे
वानांनामभिरितिशेषः तत्रप्रकारः ॐ केशवायस्वाहेति एवात्रिनामभिरपःपीत्वागोविंदायनमोविष्णवेनमइतिकरौप्रक्षाल्यमधुसूदनत्रिवि

ब्रह्मादयोपिसंध्यायांतांध्यायंतिजपंतिच ॥ वेदाजपंतितांनित्यंवेदोपास्याततःस्मृता ॥ १६ ॥ तस्मात्सर्वेद्वि
जाःशाक्तानशैवानचवैष्णवाः ॥ आदिशक्तिमुपासंतेगायत्रीवेदमातरं ॥ १७ ॥ आचांतःप्राणमायम्यकेशवा
दिकनामभिः ॥ केशवश्चतथानारायणोमाधवएवच ॥ १८ ॥ गोविंदोविष्णुरेवाथमधुसूदनएवच ॥ त्रिविक्र
मोवामनश्चश्रीधरोपिततःपरं ॥ १९ ॥ हृषीकेशःपद्मनाभोदामोदरअतःपरं ॥ संकर्षणोवासुदेवःप्रद्युम्नोप्य
निरुद्धकः ॥ २० ॥ पुरुषोत्तमाधोक्षजौचनारसिंहोच्युतस्तथा ॥ जनार्दनउपेंद्रश्चहरिःकृष्णोतिमस्तथा ॥ २१
ॐकारपूर्वकंनामचतुर्विंशतिसंख्यया ॥ स्वाहांतैःप्राशयेद्वारिनमोतैःस्पर्शयेत्तथा ॥ २२ ॥ केशवादित्रिभिः
पीत्वाद्वाभ्यांप्रक्षालयेत्करौ ॥ मुखंप्रक्षालयेद्वाभ्यांद्वाभ्यामुन्मार्जनंतथा ॥ २३ ॥ एकेनपाणिंसंप्रोक्ष्यपादा
वपिशिरोपिच ॥ संकर्षणादिदेवानांद्वादशांगानिसंस्पृशेत् ॥ २४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥

क्रमेतिद्वाभ्यामंगुष्ठमूलेनोष्ठौसंस्पृश्यवामनश्रीधरेतिद्वाभ्यांतथैवमुखमुन्माज्यंहृषीकेशोतिवामकरंप्रोक्ष्यपद्मनाभेतिपादौसंप्रोक्ष्यदामोदरेतिमूर्धनि
संप्रोक्ष्यसंकर्षणेतिसंयतमध्यमांगुलित्रयेणास्यंसंस्पृश्यवासुदेवप्रद्युम्नतिद्वाभ्यामंगुष्ठतर्जनीभ्यांनासापुटेसंस्पृश्यानिरुद्धपुरुषोत्तमेतिद्वाभ्यामंगु
ष्ठानामिकाभ्यांचभुषीसंस्पृश्याधोक्षजनारसिंहेतिद्वाभ्यांतथैवश्रोत्रेसंस्पृश्याच्युतेतिकनिष्ठांगुष्ठाभ्यांनाभिंसंस्पृश्यजनार्दनेतिपाणितलेनहृदयं
संस्पृश्योपेंद्रेतिशिरःसंस्पृश्यहरयेनमःकृष्णायनमइतिद्वाभ्यांदक्षिणवामनाहुमूलेस्पृशेदिति एतच्चाचारान्हिकेस्पष्टं ॥ २४ ॥ ॐ

दे.भा.ए.

॥३१॥

उदकं पीत्वेति उदकपानसमयेवामेनहस्तेनदक्षिणंस्पृशेदित्यर्थः ॥ २५ ॥ २६ ॥ आचमनमुद्रामाह संहतांगुलिनेति मिलितांगुलिनेत्यर्थः ॥ २७ ॥ आचमनविधिमुक्त्वाप्राणायामविधिमाह प्राणायाममिति तुर्यपदं तुर्यपादस्तत्सहिनामित्यर्थः तांजपन्प्राणायामं कुर्यादित्यर्थः

टी.अ.
१६

दक्षिणेनोदकं पीत्वावामेन संस्पृशेद्बुधः ॥ तावन्न शुध्यते तोयं यावद्वामेन न स्पृशेत् ॥ २५ ॥ गोकर्णाकृतिहस्ते नमाषमात्रं जलं पिबेत् ॥ ततो न्यूनाधिकं पीत्वा सुरापानी भवेद्विजः ॥ २६ ॥ संहतांगुलिना तोयं पाणिना दक्षिणेन तु ॥ मुक्तांगुष्ठकनिष्ठाभ्यां शेषेणाचमनं विदुः ॥ २७ ॥ प्राणायामं ततः कृत्वा प्रणवस्मृतिपूर्वकं ॥ गायत्रीं शिरसा सार्द्धं सतुर्यपदसंयुतां ॥ २८ ॥ दक्षिणे रेचयेद्वायुं वामेन पूरितोऽङ्गुलिं ॥ कुंभेन धारयेन्नित्यं प्राणायामं विदुर्बुधाः ॥ २९ ॥ पीडयेद्दक्षिणां नाडीं गुष्ठेन तथोत्तराम् ॥ कनिष्ठानामिकाभ्यां तु मध्यमां तर्जनीं त्यजेत् ॥ ३० ॥ रेचकः पूरकश्चैव प्राणायामोऽथ कुंभकः ॥ प्रोच्यते सर्वशास्त्रेषु योगिभिर्यतमानसैः ॥ ३१ ॥ रेचकः सृजते वायुं पूरकः पूरयेत्तु तं ॥ साम्येन संस्थिति र्यत्तत्कुंभकः परिकीर्तितः ॥ ३२ ॥ नीलोत्पलदलश्यामं नाभिमध्ये प्रतिष्ठितं ॥ चतुर्भुजं महात्मानं पूरके चिंतयेद्दरिं ॥ ३३ ॥ कुंभके तु हृदि स्थाने ध्यायेत्तु कमलासनं ॥ प्रजापतिं जगन्नाथं चतुर्वक्त्रं पितामहं ॥ ३४ ॥ रेचकेशं करं ध्यायेत्ललाटस्थं महेश्वरं ॥ शुद्धस्फटिकसंकाशं निर्मलं पापनाशनं ॥ ३५ ॥ पूरके विष्णुसायुज्यं कुंभके ब्रह्मणो गतिं ॥ रेचकेन तृतीयं तु प्राप्नुयादीश्वरं परं ॥ ३६ ॥ पौराणाचमनाद्यं च प्रोक्तं देवर्षि सत्तम ॥ श्रौतमाचमनाद्यं च शृणु पापापहं मुने ॥ ३७ ॥ प्रणवं पूर्वमुच्चार्य गायत्रीं तु तादित्यृचं ॥ पादादौ व्याहृती स्ति स्त्रः श्रौताचमनमुच्यते ॥ ३८ ॥

॥ ६४ ॥

॥ ६५ ॥

॥ २८ ॥ २९ ॥ पीडयेदिति दक्षिणां नाडीं गुष्ठेन तथोत्तराम् ॥ कनिष्ठानामिकाभ्यां तु मध्यमां तर्जनीं त्यजेत् ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ तादित्यृचं तत्सवितुरित्यादि ॥ ३८ ॥ ॥ ७ ॥

॥३१॥

प्रतिप्रणवेति प्रत्येकव्याहृतौप्रणवयोगःकर्तव्यइत्यर्थः ॥ ३९ ॥ प्राणायामेपक्षांतरेणमुद्रांतरमाह पंचांगुलिभिरिति ॥ ४० ॥ मार्जनमा
ह आपोहिष्ठेति तिसृभिर्ऋग्भिस्त्रिवारंप्रोक्षणं यद्वातिसृणां ऋचानवपादाभवंतितत्रपादादौप्रणवमुंश्चार्चनवाभिः पादैर्नववारंमार्जनंकुर्यादित्य

गायत्रींशिरसासार्द्धजपेद्व्याहृतिपूर्वकां ॥ प्रतिप्रणवसंयुक्तांत्रिरयंप्राणसंयमः ॥ ३९ ॥ पंचांगुलीभिर्नासाग्रं
पीडयेत्प्रणवेनतु ॥ सर्वपापहरामुद्रावानप्रस्थग्रहस्थयोः ॥ ४० ॥ कनिष्ठानामिकांगुष्ठैर्यतेश्चब्रह्मचारिणः ॥
आपोहिष्ठेति तिसृभिः प्रोक्षणं स्यात्कुशोदकैः ॥ ४१ ॥ ऋगंतेमार्जनंकुर्यात्पादांतेवासमाहितः ॥ नवप्रणवयुक्ते
नापोहिष्ठेत्यनेनतु ॥ ४२ ॥ नश्येदधंमार्जनेनसंवत्सरसमुद्भवं ॥ ततआचमनंकृत्वासूर्यश्चेतिपिबेदपः ॥ ४३
अंतःकरणसंभिन्नंपापंतस्यविनश्यति ॥ प्रणवेनव्याहृतिभिर्गायत्र्याप्रणवाद्यया ॥ ४४ ॥ आपोहिष्ठेति सू
क्तेनमार्जनंचैवकारयेत् ॥ उत्थृत्यदक्षिणेहस्तेजलंगोर्कर्णवत्कृते ॥ ४५ ॥ नीत्वातंनासिकाग्रंतुवामकुक्षौस्म
रेदधं ॥ पुरुषंकृष्णवर्णंचऋतंचेतिपठेत्ततः ॥ ४६ ॥ द्रुपदांवाऋचंपश्चादक्षनासापुटेनच ॥ श्वासमार्गेणतं
पापमानयेत्करवारिणि ॥ ४७ ॥ नावलोक्यैवतद्वारिवामभागेश्मनिक्षिपेत् ॥ निष्पापंतुशरीरंमेसंजातमिति
भावयेत् ॥ ४८ ॥ उत्थायतुततःपादौद्वौसमौसन्नियोजयेत् ॥ जलांजलिंगृहीत्वातुतर्जन्यंगुष्ठवर्जितं ॥ ४९ ॥
वीक्ष्यभानुंक्षिपेद्वारिगायत्र्याचाभिमंत्रितं ॥ त्रिवारंमुनिशार्दूलविधिरेषोर्धमोचने ॥ ५० ॥ ततःप्रदणिणांकुर्या
दसावादित्यमंत्रतः ॥ मध्यान्हेसकृदेवस्यात्संध्ययोस्तुत्रिवारतः ॥ ५१ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥

र्थः ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ सूर्यश्चेतीति सूर्यश्चमामन्युश्चेतिऋचा ॥ ४३ ॥ मार्जनांतरमाह प्रणवेर्नानि सर्वमिलित्वैकंमार्जनमित्यर्थः ॥ ४४ ॥
॥ ४५ ॥ ऋतंचेति ऋतंचसत्यंचेत्यादिः ॥ ४६ ॥ द्रुपदांद्रुपदादिवेन्मुमुचानइत्यादि ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ मध्यान्हे
इति मध्यान्हेसकृदेवार्घ्यदानांसंध्योरुभयोस्तुत्रिवारमर्घ्यदानमित्यर्थः ॥ ५१ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥

दे.भा.ए.

॥३२॥

॥ ५२ ॥ अर्घ्यदानकारणमाह उदकमिति ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ तथाचैतैतिरीयश्रुतिः ताआपोवर्जीभूतास्तानिरक्षांसिमंदेहान्वा
ईषन्नघःप्रभातेतुमध्यान्हेदंडवस्थितः ॥ आसनेचोपविष्टस्तुद्विजःसायंक्षिपेदपः ॥ ५२ ॥ उदकंप्रक्षिपेद्य
स्मात्तत्कारणमतःशृणु ॥ त्रिंशत्कोट्योमहावीरामंदेहानामराक्षसाः ॥ ५३ ॥ कृतघ्नादारुणाचोराःसूर्यमिच्छं
तिखादितुं ॥ ततोदेवगणाःसर्वेऋषयश्चतपोधनाः ॥ ५४ ॥ उपासंतेमहासंध्यांप्रक्षिपंत्युदकांजलीन् दह्यं
तेतेनंदैत्यास्तेवर्जीभूतेनवारिणा ॥ ५५ ॥ एतस्मात्कारणाद्विप्राःसंध्यांनित्यमुपासते ॥ महापुण्यस्यजननं
संध्योपासनमीरितं ॥ ५६ ॥ अर्घ्यांगभूतमंत्रोयंप्रोच्यतेशृणुनारद ॥ यदुच्चारणमात्रेणसांगंसंध्याफलंभवे
त् ॥ ५७ ॥ सोहमर्कोस्म्यहंज्योतिरात्माज्योतिरहंशिवः ॥ आत्मज्योतिरहंशुक्लःसर्वज्योतीरसोस्म्यहं ॥ ५८ ॥
आगच्छवरदेदेविगायत्रिब्रह्मरूपिणि ॥ जपानुष्ठानसिद्ध्यर्थंप्रविश्यहृदयंमम ॥ ५९ ॥ उत्तिष्ठदेविगंतव्यंपुन
रागमनायच ॥ अर्घ्येषुदेविगंतव्यंप्रविश्यहृदयंमम ॥ ६० ॥ ततःशुद्धःस्थलेनैजमासनंस्थापयेद्बुधः ॥ तत्रा
रुह्यजपेत्पश्चाद्गायत्रीवेदमातरं ॥ ६१ ॥ अत्रैवखेचरीमुद्राप्राणायामोत्तरंमुने ॥ प्रातःसंध्याविधानेचकीर्ति
तामुनिपुंगवा ॥ ६२ ॥ तन्नामार्थंप्रवक्ष्यामिसादरंशृणुनारद ॥ चित्तंचरतिखेयस्माज्जिह्वाचरतिखेगता ॥ ६३ ॥
श्रुवोरंतर्गतादृष्टिर्मुद्राभवतिखेचरी ॥ नचासनंसिद्धसमंनकुंभसदृशोनिलः ॥ ६४ ॥ नखेचरीसमामुद्रासत्यं
सत्यंचनारद ॥ घंटावत्प्रणवोच्चारद्वायुर्निर्जल्ययत्नतः ॥ ६५ ॥ स्थिरासनेस्थिरोभूत्वानिरहंकारनिर्ममः ॥
लक्षणंनारदमुनेशृणुसिद्धासनस्यच ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥

रुणेद्विपोक्षिपंतीति ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ आगच्छवरदेइति तूष्णीं गायत्रीप्रार्थना ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ इयं
खेचरीमुद्राहठप्रदीपिकायांप्रसिद्धा ॥ ६४ ॥ घंटावत्तन्नादवत्प्रणवोच्चारद्वित्यर्थःपुनःप्रणवोच्चारद्वित्यर्थः ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ७० ॥

टी.अ.

१६

॥३२॥

योनिस्थानकामिवि एकपादमूलंलिङ्गमूलेद्वितीयपादमूलंवृषणाधइत्यर्थः हृदयंसमंविग्रहंशरीरंचसमंदंडवदित्यर्थः ॥ ६७ ॥ ततआस
नबंधानंतरंगायत्र्यावाहनमंत्रमाह आयात्विति ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ न्यासात्पूर्वपरमात्मनःस्मरण

योनिस्थानकमंघ्रिमूलघटितंकृत्वाहृदंविन्यसेन्मेढ्रपादमथैकमेवहृदयंकृत्वासमंविग्रहं ॥ स्थाणुःसंयमितेंद्रि
योचलदृशापश्यन्भ्रुवोरंतरेतिष्ठत्येतदतीवयोगिसुखदंसिद्धासनंप्रोच्यते ॥ ६७ ॥ आयातुवरदादेवीअक्षरं
ब्रह्मसंमितं ॥ गायत्रीछंदसांमातरिदंब्रह्मजुषस्वमे ॥ ६८ ॥ यदन्हात्कुरुतेपापंतदन्हात्प्रतिमुच्यते ॥ यद्वा
त्र्यात्कुरुतेपापंतद्रात्र्यात्प्रतिमुच्यते ॥ ६९ ॥ सर्ववर्णमहोदेविसंध्याविद्येसरस्वति ॥ अजरेअमरेदेविसर्व
देविनमोस्तुते ॥ ७० ॥ ओजोसीत्यादिमंत्रेणदेवीमावाहयेत्ततः ॥ यत्कृतंत्वदनुष्ठानंतत्सर्वपूर्णमस्तुमे ॥ ७१ ॥
ततःशापविमोक्षायविधानंसम्यगाचरेत् ॥ ब्रह्मशापस्ततोविश्वामित्रस्यचतथैवच ॥ ७२ ॥ वसिष्ठशापइत्ये
तन्निविधंशापलक्षणं ॥ ब्रह्मणःस्मरणेनैवब्रह्मशापोनिवर्त्यते ॥ ७३ ॥ विश्वामित्रस्मरणतोविश्वामित्रस्यशा
पकः ॥ वसिष्ठस्मरणादेवतस्यशापोविनश्यति ॥ ७४ ॥ हृत्पद्ममध्येपुरुषंप्रमाणंसत्यात्मकंसर्वजगत्स्वरू
पं ॥ ध्यायामिनित्यंपरमात्मसंज्ञंविद्रूपमेकंवचसामगम्यं ॥ ७५ ॥ अथन्यासविधिंवक्ष्येसंध्यायाअंगसंभ
व ॥ ॐकारंपूर्ववद्योज्यंतमंत्रानुदीरयेत् ॥ ७६ ॥ भूरित्युक्ताचपादाभ्यांनमइत्येवचोच्चरेत् ॥ भुवःपूर्वजानु
नीभ्यांस्वःकटिभ्यांनमोवदेत् ॥ ७७ ॥ महर्नाभ्यैजनश्रैवहृदयायततस्तपः ॥ कंठायचततःसत्यंललाटेपरिकी
र्तयेत् ॥ ७८ ॥ अंगुष्ठाभ्यांतत्सवितुस्तर्जनीभ्यांवरेण्यकं ॥ भर्गोदेवस्यमध्यमाभ्यांधीमहीत्येवकीर्तयेत् ॥ ७९ ॥

माह हृत्पद्ममध्येइति ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ व्याहृतिन्यासमाह भूरित्युक्तेति ॐभूःपादाभ्यांनमइत्येवंमंत्राऊह्याः ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ अंगुष्ठा
दिन्यासमाह अंगुष्ठाभ्यामिति तत्सवितुरंगुष्ठाभ्यांनमइत्येवंमंत्राऊह्याः ॥ ७९ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ७९ ॥

दे.भा.ए.

॥३३॥

॥ ८० ॥ हृदयादिन्यासमाह ब्रह्मात्मनेइति तत्सवितुर्ब्रह्मात्मनेहृदयायनमइत्येवंमंत्रा उक्ताः ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ वर्णन्यासमाह
अक्षरन्यासेति ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ एतन्यासकथनेन ऋषिच्छंदोन्यासोपि सूचित इत्यर्था
द्वेदितव्यं तेच ऋषिच्छंदोन्यासाग्रंथांतरे प्रसिद्धा एव संतीति गौरवभियानलिख्यंते एतन्यासविधिकेचिदिति तथाच गृह्यपरिशिष्टेषु चोद्देशेद

अनामाभ्यां कनिष्ठाभ्यां धियो योनः पदं वदेत् ॥ प्रचोदयात्करपृष्ठतलयोर्विन्यसेत्सुधीः ॥ ८० ॥ ब्रह्मात्मने तत्सवि
तुर्हृदयाय नमस्तथा ॥ विष्ण्वात्मने वरेण्यं च शिरसे नम इत्यपि ॥ ८१ ॥ भर्गो देवस्य रुद्रात्मने शिखायै प्रकीर्तितं
तं ॥ शक्त्यात्मने धीमहीति कवचाय ततः परम् ॥ ८२ ॥ कालात्मने धियो योनो नेत्रत्रय उदीरितं ॥ प्रचोदयाच्च
सर्वात्मने स्त्राय परिकीर्तितं ॥ ८३ ॥ अक्षरन्यासमेवाग्रे कथयामि महामुने ॥ गायत्री वर्णसंभूत न्यासः पाप
हरः परः ॥ ८४ ॥ प्रणवं पूर्वमुच्चार्य वर्णन्यासः प्रकीर्तितः ॥ तत्कारमादावुच्चार्य पादांगुष्ठद्वयं न्यसेत् ॥ ८५ ॥
सकारं गुल्फयोस्तद्वद्विकारं जंघयोर्न्यसेत् ॥ जान्वोस्तुकारं विन्यस्य ऊर्वोश्चैव वकारकं ॥ ८६ ॥ रेकारं च गुदे
न्यस्य णिकारं लिंग एव च ॥ कट्यां यकारमेवात्र भकारं नाभि मंडले ॥ ८७ ॥ गोकारं हृदये न्यस्य देकारं स्तन
योर्द्वयोः ॥ वकारं हृदिविन्यस्य स्कारं कंठकूपके ॥ ८८ ॥ धीकारं मुखदेशे तु मकारं तालुदेशके ॥ हिकारं नासि
काग्रे तु धिकारं नेत्रमंडले ॥ ८९ ॥ भूमध्ये चैव योकारं योकारं चललाटके ॥ नःकारं वै पूर्वमुखे प्रकारं दक्षिणे मुखे
॥ ९० ॥ चोकारं पश्चिममुखे दकारं चोत्तरे मुखे ॥ योकारं मूर्ध्नि विन्यस्य तकारं व्यापकं न्यसेत् ॥ ९१ ॥ एतन्या
सविधिके चित्रेच्छंति जपतत्पराः ॥ ततो ध्यायेन्महादेवि जगन्मातरमांबिकां ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥

र्भाभिसोक्षिते दर्भानास्तीर्य व्याहृतिभिरुपविश्य प्राणाग्रामत्रयं कृत्वात्मानं व्याहृतिभिरभ्युक्ष्य सावित्र्या ऋषिदेवतच्छंदांस्यनुस्मृत्य षड्भिस्तदंगं
त्रैरित्यादिन्यसेदेषो गन्यास एनमप्येकेनेच्छंति संहिविधिरवैदिक इत्युक्तं अत्रैकेति पदेनाकरणे प्रत्यवायो नास्तिकृते त्वभ्युदय इति सूचितमन्य
था एकेतिकथनस्य वैयर्थ्यापत्तेः ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

टी.अ.

१६

॥३३॥

॥ ९३ ॥ चतुरास्यांचतुर्मुखां द्विनेत्रांप्रतिवक्त्रेनैवद्वयं मालांजपमालां कुंडिकाकमंडलुं ॥ ९४ ॥ ऋग्वेदाध्यायिनीमृग्वेदमुद्विरंतीं ऋ
ग्वेदोत्पादिकामित्यर्थः हंसपत्रांहंसवाहनांहंसोपरिरक्तांबुजंतदारूढामित्यर्थः ब्रह्मदेवतांब्रह्मणश्चतुर्मुखस्यदेवतांतदुपास्यामित्यर्थः ॥ ९५
चतुष्पदामिति तदुक्तं गायत्रीहृदये ऋग्वेदोऽस्याः प्रथमः पादो भवति यजुर्वेदो द्वितीयः पादः सामवेदः स्तृतीयः पादः अथर्ववेदश्चतुर्थः पादः

भास्वज्जपाप्रसूनाभांकुमारीं परमेश्वरीं ॥ रक्तांबुजासनारूढारक्तगंधानुलेपनां ॥ ९३ ॥ रक्तमाल्यांबरध
रांचतुरास्यांचतुर्भुजां ॥ द्विनेत्रांस्तुक्स्तुवौमालांकुंडिकांचैव बिभ्रतीं ॥ ९४ ॥ सर्वाभरणसंदीप्तामृग्वेदाध्या
यिनीं परां ॥ हंसपत्रामाहवनीयमध्यस्थां ब्रह्मदेवतां ॥ ९५ ॥ चतुष्पदामष्टकुक्षिसप्तशीर्षीमहेश्वरीं ॥ अग्नि
वक्त्रांरुद्रशिखांविष्णुचित्तांतुभावयेत् ॥ ९६ ॥ ब्रह्मातुकवचंयस्यागोत्रंसांख्यायनंस्मृतं ॥ आदित्यमंडलांत
स्थांध्यायेद्देवीमहेश्वरीं ॥ ९७ ॥ एवं ध्यात्वा विधानेन गायत्रीं देवमातरं ॥ ततो मुद्राः प्रकुर्वीत देव्याः प्रीतिक
राः शुभाः ॥ ९८ ॥ संमुखं संपुटं चैव विततं विस्तृतं तथा ॥ द्विमुखं त्रिमुखं चैव चतुष्कं पंचकं तथा ॥ ९९ ॥ षण्मु
खाधोमुखं चैव व्यापकांजलिकं तथा ॥ शकटं यमपाशं च ग्रथितं संमुखोन्मुखं ॥ १०० ॥ प्रलंबं मुष्टिकं चैव म
त्स्यं कूर्मं वराहकं ॥ सिंहान्नांतं महाक्रांतं मुद्गरं पल्लवं तथा ॥ १ ॥

॥ ९९ ॥

॥ १०० ॥

पूर्वादिक्प्रथमाकुक्षिर्भवति दक्षिणादिक्द्वितीयाकुक्षिर्भवति पश्चिमादिक्चतुर्थीयाकुक्षिर्भवति उत्तरादिक्चतुर्थीयाकुक्षिर्भवति ऊर्ध्वादिक्पंचमी
कुक्षिर्भवति अधरादिक्षट्कुक्षिर्भवति अंतरिक्षादिक्सप्तमीकुक्षिर्भवति अवांतरादिक्अष्टमीकुक्षिर्भवति व्याकरणमस्याः प्रथमं शिरोभ
वति शिक्षाद्वितीयं शिरोभवति कल्पस्तृतीयं शिरोभवति निरुक्तं चतुर्थं शिरोभवति ज्योतिषं नयनमिति पंचमं शिरोभवति इतिहासपुराणानि षष्ठं
शिरोभवति उपनिषदः सप्तमं शिरोभवतीति ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥ १ ॥

॥ ९९ ॥

॥ १०० ॥

दे.भा.ए.

॥३४॥

चतुर्विंशतिमुद्राश्चेति आसांनामानिलक्षणानि च ब्रह्मकल्योक्तानि लिख्यन्ते अथातो दर्शयेन्मुद्राः संमुखं संपुटं तथा ततो विततविस्तीर्णौ द्विमुखं त्रिमुखं तथा चतुर्मुखं पंचमुखं षण्मुखाधोमुखे ततः व्यापकांजलिकं चैव शकटं तदनंतरं यमपाशं तु ग्रथितं ततः स्यात्संमुखोन्मुखं विलंबोमुष्टि कोमीनस्ततः कूर्मवराहकौ सिंहाक्रांतं महाक्रांतं ततो मुद्ररपल्लवे चतुर्विंशतिरित्येता गायत्र्याः परिकीर्तिताः जपकाले प्रयोक्तव्या अन्यथानि ष्फलो जपः न ज्ञातुं दर्शयेन्मुद्रामहाजनसमागमे क्षुभ्यंति देवतास्तस्य निष्फलं च भवोदिति अथैतासां लक्षणमाह संमुखं संहतौ हस्तावुत्तानौ कुंचितांगुली संपुटं पद्मकोशाभौ करावन्योन्यसंहतौ विततं संहतौ हस्तावुत्तानावायतांगुली विस्तीर्णं संहतौ पाणीमिथो मुक्तांगुलीयकौ संमुखं सक्तयोः पाण्योः कनिष्ठाद्वययोगतः शेषांगुलीनां वैकल्ये द्विमुखं त्रिमुखादयः शेषांगुलीनां संयोगात्पूर्वसंयोगनाशनं तिर्यक् संयुज्यमानाभौ संयुक्तांगुलीमंडलौ हस्तौ षण्मुखमित्युक्ता मुद्रा मुद्राविशारदैः आकुंचिताग्रौ संयुक्तावर्वाक् हस्तावधोमुखौ उत्तानौ तादृशवेव व्यापकं कुंचि

चतुर्विंशतिमुद्राश्च गायत्र्याः संप्रदर्शयेत् ॥ शताक्षरांच गायत्रीं सकृदावर्तयेत्सुधीः ॥ २ ॥ चतुर्विंशत्यक्षराणि गायत्र्याः कीर्तितानि हि ॥ जातवेदसनाम्नी च ऋचमुच्चारयेदतः ॥ ३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥

तौ करौ अधोमुखौ तु मुक्तायांगुष्ठकौ शकटं करौ बहुमुष्टिकयोः पाण्योत्तानां नाम तर्जनीं कुंजितान्या तु ब्रह्माति तर्जनीयमपाशकं उत्तानसंधि संलीनबद्धांगुलिदलौ करौ संमुखी घटितौ दीर्घांगुष्ठौ ग्रथितमुच्यते कुंचितोर्ध्वांगुलिर्बामो हस्तो दक्षिणतादृशा अधोमुखेन संयुक्तः संमुखोन्मुखमुच्यते उत्तानोन्नतकोटीच विलंबः कथितः करौ मुष्टीचान्योन्यसंयुक्तावुत्तानो मुष्टिको भवेत् मीनस्तुभं मुखीभूतौ मुत्तानामाकानिष्ठिकौ ऊर्ध्वसंयुक्तवक्त्रैतु शेषांगुलिदलौ करौ अधोमुखः करो वामस्तादृशो दक्षिणेन तु पृष्ठदेशे समाक्रांतः कूर्मो नामाभिधीयते ऊर्ध्वमध्यं वामहस्तः कक्षायामाश्रयेत्करं वराहः कथ्यते कंठसमीपाश्रयके करे सिंहाक्रांतं समाक्रांतं करौ कर्णाभ्रतावृन् किंचित्तु कुंचिताग्रौ च महाक्रांतं स्मृतं हितौ ऊर्ध्वकिंचित्कृतौ पाणी मुद्रौ वामतर्जनी यस्तादक्षिणहस्तेन पल्लवो दक्षिणः करः अधोमुखः स्थितो मूर्ध्नि मुद्राणामितिलक्षणं शताक्षरगायत्री स्वरूपमाह शताक्षरामिति ॥ २ ॥ जातवेदसनाम्नी जातवेदसे सुनवामसोममिति मंत्रः ॥ ३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

टी.अ.

१६

॥३४॥

त्र्यंबकस्य चैत्र्यं वक्रं यजामहे इति मंत्रः एतन्नयं मिलित्वा शताक्षरा गायत्री भवति तदुक्तं नित्यान्हिके गायत्री जपतः पूर्वस कृञ्जप्या शताक्षरा
तेन रक्षा भवेन्नूनं परमात्मा प्रसीदतीति ॥ ४ ॥ नित्यजपनीय गायत्री स्वरूपमाह ओंकारं पूर्वमुच्चार्येति एकप्रणवव्याहृतित्रययुक्त गायत्री जप एवमु
ख्यः पक्ष इत्यर्थः ॥ ५ ॥ १०६ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके एकादशस्कंधेषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ आर्धाधिकैः सप्तचत्वारिंशत्पदैर
तः परं ॥ संध्यादिकृत्यं यत्किंचित्तन्निभागांतमुच्यते ॥ १ ॥ भिन्नपादेति पादत्रयं भिन्नपठेन्न तु संलग्नपठित्वा जपेदित्यर्थः तदुक्तं नित्यान्हिके साव

त्र्यंबकस्य चैत्र्यं मावृत्य गायत्री शतवर्णका ॥ भवतीयं महापुण्या सकृज्जप्या बुधैरियं ॥ ४ ॥ ॐकारं पूर्वमुच्चार्य भूभु
वस्वस्तथैव च ॥ चतुर्विंशत्यक्षरां च गायत्रीं प्रोच्चेरेत्ततः ॥ ५ ॥ एवं नित्यं पंकुर्याद्ब्राह्मणो विप्रपुंगवः ॥ ससम
ग्रफलं प्राप्य संध्यायाः सुखमेधते ॥ १०६ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधेषोडशोऽध्यायः ॥ १६
नारायण उवाच ॥ भिन्नपादा तु गायत्री ब्रह्महत्या प्रणाशिनी ॥ अभिन्नपादा गायत्री ब्रह्महत्यां प्रयच्छति ॥ १ ॥
अच्छिन्नपादा गायत्री जपं कुर्वीते द्विजाः ॥ अधोमुखाश्च तिष्ठंतिकल्पकोटिशतानि च ॥ २ ॥ संपुटैकषडोका
रा गायत्री त्रिविधामता ॥ धर्मशास्त्रपुराणेषु इतिहासेषु सुव्रत ॥ ३ ॥ पंचप्रणवसंयुक्तां जपेदित्यनुशासनं ॥
जपसंख्याष्टभागांते पादो जप्यस्तुरीयकः ॥ ४ ॥ स द्विजः परमोज्ञेयः परं सायुज्यमाप्नुयात् ॥ अन्यथा प्रजपे
द्यस्तु स जपो विफलो भवेत् ॥ ५ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

काशतया विद्वान्भिन्नपादां जपेद्बुधः एकश्चासौ चारणात्तु संदिग्धं त्वक्षरं भवेदिति ॥ १ ॥ २ ॥ संपुटा प्रणवसंयुटा एकषडोकारा एकोकाराष
डोकाराचेत्यर्थः ॥ ३ ॥ पंचप्रणवेति अयमप्येकः पक्षोऽस्तीत्यर्थः गायत्री जपे किंचिद्विशेषमाह जपसंख्येति यत्संख्यया जपः कर्तव्यस्त
त्संख्याया अष्टभागांत इत्यर्थः तुरीयः पादः परोरजसेत्यादि तदुक्तं नित्यान्हिके जपसंख्याष्टभागांते जपेत्पादं तुरीयकं उन्मुखत्वं भवेत्तेन स
च्चिदानंदरूपिण इति ॥ ४ ॥ ५ ॥

॥ ४ ॥

दे.भा.ए.

॥ ३५ ॥

चतुर्विधगायत्र्याधिकारिणाह संपुटेकेति एकासंपुटा द्वितीयाषडोङ्कारा पञ्चप्रणवयुक्ताया इदमुपलक्षणं एतद्गायत्रीत्रितयं ऊर्ध्वरेत
सांभवतीत्यर्थः अथचगृहस्थो ब्रह्मचारी वामोक्षार्थी चेत्पूर्वोक्तभेदतुचष्टयेतुरीयामेकप्रणवयुक्तां जपोदित्यर्थः तदुक्तं व्यासेन संपुटेकाषडोङ्का
रागायत्रीत्रिविधामता तत्रैकप्रणवाग्राह्या गृहस्थैर्ब्रह्मवादिभिः गृहस्थो ब्रह्मचारी च प्रणवाद्यामिमां जपेत् अन्तेयः प्रणवं कुर्यान्नासौ वृद्धिमाप्नुयात्

टी.अ.
१७

संपुटेकाषडोङ्कारा भवेत्सा उर्ध्वरेतसां ॥ गृहस्थो ब्रह्मचारी वामोक्षार्थी तुरीयां जपेत् ॥ ६ ॥ तुरीयपादो गायत्र्याः
परैरजसे सावदो ॥ ध्यानमस्य प्रवक्ष्यामि जपसांगफलप्रदं ॥ ७ ॥ हृदिविकसितपद्मं सार्कसोमाग्निबिम्बं
णवमयमर्चित्यं यस्य पीठं प्रकल्पं ॥ अचलपरमसूक्ष्मं ज्योतिराकाशसारं भवतु मम मुदे सौ सच्चिदानंदरूपः ॥
८ ॥ त्रिशूलयोनी सुरभिर्मक्षमालां च लिंगकं ॥ अंबुजं च महामुद्रामिति सप्तप्रदर्शयेत् ॥ ९ ॥ यासंध्या सैव गाय
त्री सच्चिदानंदरूपिणी ॥ भक्त्या तां ब्राह्मणो नित्यं पूजयेच्च न मे ततः ॥ १० ॥ ध्यातस्य पूजां कुर्वीत पञ्चभिश्चो
पचारकैः ॥ लंपृथिव्यात्मने गंधमर्पयामि नमो नमः ॥ ११ ॥ हमाकाशात्मने पुष्पं चार्पयामि नमो नमः ॥ यंच
वाय्वात्मने धूपं चार्पयामि ततो वदेत् ॥ १२ ॥ रंच वन्हात्मने दीपमर्पयामि ततो वदेत् ॥ वममृतात्मने तस्मै नै
वेद्यमपि चार्पयेत् ॥ १३ ॥ यं रं लं वं ह मिति च पुष्पांजलिमथार्पयेत् ॥ एवं पूजाविधायाथ चांते मुद्राः प्रदर्शयेत् ॥ १४ ॥

संपुटां च षडोङ्कारां गायत्रीं प्रजपेद्यतिरिति ॥ ६ ॥ पूर्वोक्तं गायत्र्यास्तुरीयपादमाह तुरीयपाद इति ॥ ७ ॥ तुरीयपादजपे ब्रह्मध्वेयमित्याह
हृदिविकसितेति यस्य पीठमेतादृशं सच्चिदानंदरूप इत्यर्थः ॥ ८ ॥ तुरीया गायत्र्यामुद्रा आह त्रिशूलेति ॥ ९ ॥ १० ॥ गायत्र्यामान
सीं पूजामाह ध्यातस्य पूजामिति ध्यातस्य चित्तितस्य देवस्येत्यर्थः ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ पंचभूतात्मने परमेश्वराय गायत्रीस्वरूपाय पंच
भूतात्मकानेवोपचारानर्पयामीत्यर्थः मुद्राः पूर्वोक्ताः संमुखं संपुटमित्यादयोऽस्मिन्समये दर्शयेदित्यर्थः ॥ १४ ॥ ॥ ७ ॥

॥ ३५ ॥

॥ १५ ॥ विधिनेति मंत्रार्थानुसंधानपुरःसरमित्यर्थः मंत्रार्थश्च विद्वामित्रकल्पे उक्तः देवस्य सवितुस्तस्य धियो योनः प्रचोदयान् भर्गो वरेण्यं तद्वद्ब्रह्मार्थमहीत्यत उच्यते इति इतोऽप्यधिको मंत्रार्थः प्रपंचसारे श्रीमच्छंकरभगवत्पादैरुक्तो वेदितव्यः अन्यत्र सहस्रपरमामित्युक्तत्वात् सहस्रजपो मुख्यः परो गौणः ॥ १६ ॥ तन इति जपानंतरं गायत्रीं गायत्र्यस्यैकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपद्यसि नहि पद्येन मस्तेतुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसे सावदो मा प्राणदिति बृहदारण्यकप्रोक्तोपस्थानेन तामुपस्थाप्या न्यस्मृतिप्राप्तमप्यंगकलापं समाप्य उत्तमेशिखरे जाते इति मंत्रेण तां न मस्कृत्य विसर्जयेदित्यर्थः गायत्रीजपो जलेन कार्य इत्येकदेशे मतमाह न गायत्रीजपोदिति तथा च गोभिलः कदाचिदपि नो विद्वान् गायत्रीमुदके

ध्यायेत्तु मनसा देवीं मंत्रमुच्चारयेच्छनैः ॥ न कं पयेच्छिरो ग्रीवां दंता न्नैव प्रकैशयेत् ॥ १५ ॥ विधिनाष्टोत्तरशतमष्टविंशतिरेव वा ॥ दशवारमशक्तौ वानातो न्यूनं कदाचन ॥ १६ ॥ तत उद्भासयेद्देवीमुत्तमेत्यनुवाकतः ॥ न गायत्रीं जपेद्द्विद्वाऽजलमध्ये कथंचन ॥ १७ ॥ यतः साग्निमुखी प्रोक्तेत्याहुः केचिन्महर्षयः ॥ सुरभिर्ज्ञानशूर्पचकूर्मो यो निश्चपंकजः ॥ १८ ॥ लिंगं निर्वाणकं वैवजपांते शौचैर्दर्शयेत् ॥ यदक्षरपदभ्रष्टं स्वरव्यंजनवर्जितं ॥ १९ ॥ तत्सर्वैक्षम्यतां देविकश्यपप्रियवादिनि ॥ गायत्रीतर्पणं चातः करणीयं महामुने ॥ २० ॥ गायत्रीच्छंद आरूपा तं विश्वामित्रऋषिः स्मृतः ॥ सविता देवता प्रोक्ता विनियोगश्च तर्पणे ॥ २१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६२ ॥

जपेत् गायत्र्यग्निमुखी प्रोक्ता तस्मादुत्थाय तां जपेदिति उत्थाय जलादित्यर्थात् अत्र केचित्पदेनासुचिर्वाधितासाचेत्थं निमज्ज्याप्सु जपेन्मासं शतमिष्टमवाप्नुयात् एवं शतोत्तरं जप्त्वासहस्रं सर्वमाप्नुयात् तथा जानुद्वये जले स्थित्वा वीक्ष्य तोयगतं रविं गायत्रीं प्रजपेद्द्विद्वान्सर्वपापानुत्तये इति विश्वामित्रकल्पवचनात् तथा द्रवसाजले कुर्यात्तर्पणाचमनं जपमिति हारीतवचनाच्च जलेऽपि गायत्रीजपो न निषिद्ध इति तर्हि गोभिलवचनस्य कागातिरिति चेदालस्यादिना कश्चिदासनं विहाय जले जपं करिष्यति तन्निषेधार्थं तद्वचनस्य सत्त्वादिति ॥ १७ ॥ जपानंतरं मुद्राष्टौ प्रदर्शयेदिति पूर्वमेव उक्तं न्यमत्राह सुरभिर्ज्ञानेति ॥ १८ ॥ यदक्षरेति प्रार्थनामंत्रः ॥ १९ ॥ संध्यांगतर्पणमाह गायत्रीतर्पणमिति ॥ २० ॥ २१ ॥

दे.भा.ए.

॥३६॥

भूरित्युक्तेति तर्पणमंत्राः स्पष्टा एव ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ पश्चादुषसीं गायत्रीमित्यादिनामभिर्गायत्रीं
तर्पयेदित्यर्थः ॥ २९ ॥ जातवेदसमिति जातवेदसे सुनवामसोममिति मंत्रः ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ एतावत्पर्यंतं कर्म कृत्वा पश्चाद्वाय

टी.अ.

१७

भूरित्युक्ता च ऋग्वेदपुरुषं तर्पयामि च ॥ भुव इत्येतदुक्ता च यजुर्वेदमथो वेदेत् ॥ २२ ॥ स्वव्याहृतिं समुक्त्वा च
सामवेदं समुच्चेरेत् ॥ मह इत्येतदुक्त्वांतिथर्ववेदं च तर्पयेत् ॥ २३ ॥ जनः पदांत इति हासपुराणमितीरयेत् ॥ तपः
सर्वागमं चैव पुरुषं तर्पयामि च ॥ २४ ॥ सत्यं च सत्यलोकास्त्यपुरुषं तर्पयामि च ॥ ॐ भूर्भूलोकपुरुषं तर्पयामि त
तो वेदेत् ॥ २५ ॥ भुवश्चेति भुवर्लोकपुरुषं तर्पयामि च ॥ स्वः स्वर्गलोकपुरुषं तर्पयामि ततः परं ॥ २६ ॥ ॐ भू
रेकपदां नाम गायत्रीं तर्पयामि च ॥ भुवो द्विपदां गायत्रीं तर्पयामीति कीर्तयेत् ॥ २७ ॥ स्वश्च त्रिपदां गायत्रीं त
र्पयामि ततो वेदेत् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वश्चेति तथा गायत्रीं च चतुष्पदां ॥ २८ ॥ उपसीं चैव गायत्रीं सावित्रीं च सरस्व
तीं ॥ वेदानां मातरं पृथ्वीमजां चैव तु कौशिकीं ॥ २९ ॥ सां कृतिं वै सार्वजितं गायत्रीं तर्पणे वेदेत् ॥ तर्पणांति च
शांत्यर्थं जातवेदसमीरयेत् ॥ ३० ॥ मानस्तोकेति मंत्रं च शांत्यर्थं प्रजपेत्सुधीः ॥ ततोऽपि त्र्यंबको मंत्रः शांत्यर्थः
परि कीर्तितः ॥ ३१ ॥ तच्छंयोरिति मंत्रं च जपेच्छांत्यर्थमेव तु ॥ अतो देवा इति द्वाभ्यां सर्वांगस्पर्शनं चरेत् ॥
॥ ३२ ॥ स्योना पृथिवि मंत्रेण भूम्यै कुर्यात्प्रणामकं ॥ यथाविधि च गोत्रादीनुच्चेरेद्द्विजसत्तमः ॥ ३३ ॥ एवं विधा
नं संध्यायाः प्रातः काले प्रकीर्तितं ॥ संध्या कर्म समाप्यांतेऽप्यग्निहोत्रं स्वयं हुनेत् ॥ ३४ ॥ पंचायतनपूजां च ततः
कुर्यात्समाहितः ॥ शिवां शिवं गणपतिं सूर्यं विष्णुं तथार्चयेत् ॥ ३५ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

त्रीं विसर्जयेदितित्वं संध्योत्तरं कृत्यमाह संध्या कर्मोति ॥ ३४ ॥ होमोत्तरं पंचायतनपूजामाह पंचायतनेति पंचायतनदेवता आ
ह शिवमिति ॥ ३५ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

॥३६॥

मूलमंत्रेणदेव्यामूलमंत्रेणमायाबीजाद्यात्मकेनेत्यर्थः ॥ ३६ ॥ देवीपं
चायतनेस्थापनीयदेवतास्थानान्याह भवानीभवानीमूर्तिहीरकमाणिक्येद्वनीलोपरागादिरत्ननिर्मितासुवर्णरौप्यताम्रादिधातुनिर्मितावापाषाणमृ
दादिनिर्मितावामध्येस्थानेयजेत् अत्रपूर्वादयःप्रसिद्धाएवग्राह्यान्तुपूज्यपूजकयोःप्रार्थत्यागमोक्ताइतिनिबन्धकाराः ॥ ३७ ॥ हरेइत्यादयं

पौरुषेणतुसूक्तेनव्याहृत्यावासमाहितः ॥ मूलमंत्रेणवाकुर्यात्प्रीश्चतइतिमंत्रतः ॥ ३६ ॥ भवानीतुयजेन्म
ध्येतथेशान्यांतुमाधवं ॥ आग्नेय्यांगिरिजानाथंगणेशंरक्षसांदिशि ॥ ३७ ॥ वायव्यामर्चयेत्सूर्यमितिदेवस्थि
तिक्रमः ॥ षोडशानुपचरांश्चषोडशर्गिर्भर्हरेन्नरः ॥ ३८ ॥ देवीमभ्यर्च्यपुरतोयजेदन्याननुक्रमात् ॥ नदेवीपूज
नात्पुण्यमधिकंक्वचिदीक्ष्यते ॥ ३९ ॥ अतएवतुसंध्यासुसंध्योपास्तिःश्रुनीरिता ॥ नाक्षतैरर्चयेद्विष्णुंनतुल
स्यागणेश्वरं ॥ ४० ॥ दूर्वाभिर्नार्चयेद्दुर्गाकेतकैर्नमहेश्वरं ॥ मल्लिकाजातिकुसुमंकुटजंपनसंतथा ॥ ४१ ॥
किंशुकंबकुलंकुंदंलोध्रंतुकरवीरकं ॥ शिंशपापराजितापुष्पंबंधूकागस्त्यपुष्पके ॥ ४२ ॥ मदंतंसिंधुवारंचपा
लाशकुसुमंतथा ॥ दूर्वाकुरंबिल्वदलंकुशमंजरिकातथा ॥ ४३ ॥ शल्लकीमाधवीपुष्पमर्कमंदारपुष्पकं ॥ केत
कीर्णिकारंचकदंबकुसुमंतथा ॥ ४४ ॥ पुन्नागचंपकस्तद्व्यूथिकातगरौतथा ॥ एवमादीनिपुष्पाणिदेवी
प्रियकराणिच ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥

पक्षःपुरुषसूक्तेनपूजापक्षे ॥ ३८ ॥ पुरतःप्रथमतोमुख्यांदेवींपूजयित्वानंतरंविष्णादिपूजनंकर्तव्यमित्यर्थः ॥ ३९ ॥ दूर्वाभिर्नार्चयेद्दुर्गामि
ति अयंनिषेधोदुर्गायोमवनत्वन्वदेवीविग्रहेषु अग्नेदेवीतुष्टिकरपुष्पेदूर्वायाग्रहणात् शमीदूर्वाकुराश्चतुष्वैरित्यादिनादक्षिणामूर्तिसंहितायां
दूर्वायाःपूजायांस्वकाराच्च ॥ ४० ॥ देवीप्रियकरपुष्पाण्याह मल्लिकाजातीति ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥

दे.भा.ए.

॥३७॥

सर्वपुष्पेषुकुंदपुष्पप्रियकरंदेव्याइतितुवामन्पुराणं तिलतैलतइति घृतदीपोप्यपोक्षितः वामदाक्षिणभागयोर्दीपद्वयंदेयमित्यर्थः ॥ ४६ ॥ इत्यंजं प्रथमदिवसभागे समाप्य द्वितीयभागे वेदाभ्यासं कुर्यादित्याह वेदाभ्यासमिति पोष्यवर्गास्तुमातापितागुरुपत्नीभार्यासुतानायादयो धर्मशास्त्रे प्रसिद्धाः ॥ ४७ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके एकादशस्कंधे सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ एकसततिपद्यैस्तु पूजायां तु विशेषतः ॥ उपचाराः

गुग्गुलस्य भवेद्दूषो दीपः स्यात्तल्लतैलतः ॥ कृत्वेत्थं देवतापूजांततो मूलमनुंजपेत् ॥ ४६ ॥ एवं पूजां समप्यैव वेदाभ्यासं चरेद्बुधः ॥ ततः स्ववृत्त्या कुर्वीत पोष्यवर्गार्थसाधनं ॥ तृतीयै दिनभागे तु नियमेन विचक्षणः ॥ ४७ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधे सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ श्रीनारद उवाच ॥ पूजाविशेषं श्रीदेव्याः श्रोतुमिच्छामि मानद ॥ येनाश्रितेन मनुजः कृतकृत्यत्वमावहेत् ॥ १ ॥ श्रीनारद उवाच ॥ देवर्षेशृणु वक्ष्यामि श्रीमातुः पूजनक्रमं ॥ भुक्तिमुक्तिप्रदं साक्षात्समस्तापत्रिवारणं ॥ २ ॥ आचम्य मौनीं संकल्प्य भूतशुद्ध्यादिकं चरेत् ॥ मातृकान्यासपूर्वतुषडंगन्यासमाचरेत् ॥ ३ ॥ शंखस्य स्थापनं कृत्वा सामान्यार्घ्यविधाय च ॥ पूजाद्रव्याणि चास्त्रेण प्रोक्षयेन्मतिमान्नरः ॥ ४ ॥ गुरोरनुज्ञामादाय ततः पूजां समारभेत् ॥ पीठपूजां पुरा कृत्वा देवीं ध्यायेत्ततः परम ॥ ५ ॥ आसनाद्युपचारैश्च भक्तिप्रेमयुतः सदा ॥ स्नापयेत्परदेवीं तां पंचामृतस्नादिभिः ॥ ६ ॥ पौंड्रेश्वरसंपूर्णैस्तु कलशैः शतसंख्यकैः ॥ स्नापयेद्यो महेशानीं स भूयो भिजायते ॥ ७ ॥ ॥ ६४ ॥

समुच्यंते किंचिच्चैव कथानकं ॥ १ ॥ पूर्वाध्याये दिवसप्रथमभागकृत्य पूजां संक्षेपतः श्रुतां विशेषेण ज्ञातुं पृच्छति पूजाविशेषं श्रीदेव्या इति ॥ १२ ॥ २ ॥ भूतशुद्ध्यादिकमिति तच्च पूर्वमुक्तमेव मातृकान्यासः प्रसिद्ध एव षडंगन्यासेनामोपास्य देवतामंत्रस्य षडंगन्यासः ॥ ३ ॥ शंखस्थापनमपि प्रसिद्धमेव सामान्यार्घ्यकलशस्थापनरूपमपि प्रसिद्धमेव अस्त्रजलेन फट्मंत्रजलेन ॥ ४ ॥ पीठपूजां देवताया आसनपूजा एते सर्वे प्रकाराः शास्त्रातिरुक्तादिनिबन्धेषु स्पष्टास्ततएव वेदितव्याः ॥ ५ ॥ ६ ॥ रसादिभिरित्यत्रादिपदग्राह्यानाह पौंड्रेश्वरसेति ॥ ७ ॥

टी.अ.

१८

॥३७॥

वेदपारायणमिति अनेकदिवससाध्यमनुष्ठानमेतत् ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ मधुकुल्यादयोनयोदेवलोके संतीतै
त्तिरीयशाखायामुक्तं ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ चरणेलक्तपत्रकमिति अलक्तकरसेनीखियोळतादिरूपशोभायमानचरणेलिखितद्रा

यश्चच्युतरसैरेवंस्नापयेज्जगदंबिकां ॥ वेदपारायणंकृत्वारसेनेक्षूद्रवेनवा ॥ ८ ॥ तद्ग्रेहं न त्यजेन्नित्यं रमाचै
वसरस्वती ॥ यस्तुद्राक्षारसेनैव वेदपारायणं चरन् ॥ ९ ॥ अभिषिचेन्महेशानीं सकुटुंबो नरोत्तमः ॥ रसरेणुत्र
माणं च देवीलोके महीयते ॥ १० ॥ कर्पूरागरुकाश्मीरकस्तूरीपंकपंकिलैः ॥ सलिलैः स्नापयेद्देवीं वेदपारायणं
चरन् ॥ ११ ॥ भस्मीभवन्ति पापानि शतजन्मार्जितानि च ॥ यो दुग्धकलशैर्देवीं स्नापयेद्देवपाठतः ॥ १२ ॥
आकल्पं सवसेन्नित्यं तस्मिन् वैक्षीरसागरे ॥ यस्तु दध्नाभिषिचेत्तां दधिकुल्यापतिर्भवेत् ॥ १३ ॥ मधुना च घृते
नैव तथा शर्करयापि च ॥ स्नापयेन्मधुकुल्यादिनदीनां सपतिर्भवेत् ॥ १४ ॥ सहस्रकलशैर्देवीं स्नापयन् भ
क्तितत्परः ॥ इह लोके सुखी भूत्वाप्यन्यलोके सुखी भवेत् ॥ १५ ॥ क्षौमं वस्त्रद्वयं दत्त्वा वायुलोकं स गच्छति ॥
रत्ननिर्मितभूषाणां दातानि धिपतिर्भवेत् ॥ १६ ॥ काश्मीरचंदनं दत्त्वा कस्तूरी बिंदुभूषितं ॥ तथा सीमंतसिं
दूरं चरणेऽलक्तपत्रकं ॥ १७ ॥ इंद्रासने समारूढो भवेद्देवपतिः परः ॥ पुष्पाणि विविधान्याहुः पूजाकर्मणिसाध
वः ॥ १८ ॥ तानि दत्त्वा रथालाभं कैलासं लभते स्वयं ॥ बिल्वपत्राण्यमोघानि यो दद्यात्परशक्तये ॥ १९ ॥ त
स्य दुःखं कदाचिच्च कचिच्च न भविष्यति ॥ बिल्वपत्रत्रये रक्तचंदनेन तु संलिखेत् ॥ २० ॥ मायाबीजत्रयं यत्ना
त्सुस्फुटं चाति सुंदरं ॥ मायाबीजादिकं नाम चतुर्थ्यंतं समुच्चरेत् ॥ २१ ॥

॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ बिल्वपत्रत्रये इति बिल्वपत्रत्रयं तर्पणत्रयमस्ति तस्मिन् तर्पणत्रयेऽपि मायाबीजत्रयं रक्तचंदनेन लिखित्वा ह्रीं भुवने
ह्रव्यै नमस्कृत्यादिकं मंत्रमुक्त्वा तद्विल्वपत्रं कोमलं देव्यै समर्पयेदित्यर्थः ॥ २० ॥ २१ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.ए.

॥३८॥

॥ २२ ॥ २३ ॥ कुंदपुष्पैरिति तस्मिन्नपि पुष्पेष्टगंधेन मायावीजं लिखोदित्यर्थः शाक्ताष्टगंधश्च जटामांसीकपियुताशक्तेर्गंधाष्टकं विदुरित्यनेन शारदातिलके उक्तः इमान्यनुष्ठानान्यनेकादिवससाध्यानि ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ कृतं हिरण्यगर्भेणेत्यर्थः ॥ २८ ॥
ब्रजेद्रतइत्यर्थः हिरण्योदरतां हिरण्यगर्भतां ब्रह्माविष्णुरुद्रादयो हिरण्यगर्भस्यांशाः सच हिरण्यगर्भः कश्चित्पूर्वं जन्मनि जीवः स्थितः सच क

नमोऽंतं परयाभक्त्या देवी चरणपंकजे ॥ समर्पयेन्महादेव्यै कोमलं तच्च पत्रकं ॥ २२ ॥ य एवं कुरुते भक्त्या म
नुत्वं लभते हिसः ॥ यस्तु कोटिदलैरेवं कोमलैरतिनिर्मलैः ॥ २३ ॥ पूजयेद्भुवने शानीं ब्रह्मांडाधिपतिर्भवेत् ॥
कुंदपुष्पैर्नवीनैस्तुलुलितैरेष्टगंधतः ॥ २४ ॥ कोटिसंख्यैः पूजयेत्तु प्राजापत्यं लभेद्भुव ॥ मल्लिकामालतीपुष्पैर
ष्टगंधेन लोलितैः ॥ २५ ॥ कोटिसंख्यैः पूजया तु जायते स चतुर्मुखः ॥ दशकोटिभिरप्येवं तैरेव कुसुमैर्मुने ॥ २६ ॥
विष्णुत्वं लभते मर्त्यो यत्सुरेष्वपि दुर्लभं ॥ विष्णुनैतद्ब्रतं पूर्वकृतं स्वपदलब्धये ॥ २७ ॥ शतकोटिभिरप्येवं सू
त्रात्मत्वं ब्रजेद्भुवं ॥ ब्रतमेतत्पुरासम्यक्कृतं भक्त्या प्रयत्नतः ॥ २८ ॥ तेन ब्रतप्रभावेन हिरण्योदरतां ब्रजेत्
॥ जपाकुसुमपुष्पस्य बंधूककुसुमस्य च ॥ २९ ॥ दाडिमो कुसुमस्यापि विधिरेप उदीरितः ॥ एवमन्यानि पुष्पा
णि श्रीदेव्यै विधिना र्पयेत् ॥ ३० ॥ तस्य पुण्यफलस्यांतं न जानातीश्वरोऽपि सः ॥ तत्तद्वतु भवैः पुष्पैर्नामसाहस्र
संख्यया ॥ ३१ ॥ समर्पयेन्महादेव्यै प्रतिवर्षं मतं द्रितः ॥ य एवं कुरुते भक्त्या महापातकसंयुतः ॥ ३२ ॥ उपपा
तकयुकोऽपि मुच्यते सर्वपातकैः ॥ देहांतेश्रीपदां भोजं दुर्लभं देवसत्तमैः ॥ ३३ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

मोपासनया द्वितीयजन्मनि हिरण्यगर्भो जात इति बृहदारण्यके स्पष्टं तद्व्याख्यायां चास्माभिः स्पष्टीकृतं तथा चैतादृशानुष्ठानेन तैरेतत्पदं लब्धमित्युक्तं
युक्तमेवेति ॥ २९ ॥ ३० ॥ नामसहस्रं द्वादशस्कंधे वक्ष्यमाणं कूर्मपुराणोक्तं ललितोपाख्यानोक्तं वा ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ श्रीपदां
भोजं देवीपदां भोजं ॥ ३३ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

टी.अ.

१८

॥३८॥

॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ बृह

प्राप्नोतिसाधकवरोमुनेनास्त्यत्रसंशयः ॥ कृष्णागरुंसकर्पूरचंदनेनसमन्वितं ॥ ३४ ॥ सिल्हकंचाज्यसंयुक्तं गुग्गुलेनसमन्वितं ॥ धूपंदद्यान्महादेव्यैयेनस्याद्भूपितंगृहं ॥ ३५ ॥ तेनप्रसन्नादेवेशीददातिभुवनत्रयं ॥ दीपंकर्पूरखंडैश्चदद्यादेव्यैनिरंतरं ॥ ३६ ॥ सूर्यलोकमवाप्नोतिनात्रकार्याविचारणा ॥ शतदीपांस्तथादद्यात्सहस्राव्वासमाहितः ॥ ३७ ॥ नैवेद्यंपुरतोदेव्याःस्थापयेत्पर्वताकृतिं ॥ लेह्यैश्चोष्यैस्तथापेयैःषड्रसैस्तु समाहितैः ॥ ३८ ॥ नानाफलानिदिव्यानिस्वाद्भूनिरसवन्ति च ॥ स्वर्णपात्रस्थितान्नानिदद्यादेव्यैनिरंतरं ॥ ३९ ॥ तृप्तायांश्रीमहादेव्यांभवेत्तृप्तंजगत्रयं ॥ यतस्तदात्मकंसर्वरज्जोसर्पोयथातथा ॥ ४० ॥ ततःपानीयकंदद्याच्छुभंगंगाजलमहत् ॥ कर्पूरवालासंयुक्तंशीतलंकलशस्थितं ॥ ४१ ॥ तांबूलंचततोदेव्यैकर्पूरशकलान्वितं ॥ एलालवंगसंयुक्तंमुखसौगंध्यदायकं ॥ ४२ ॥ दद्यादेव्यैमहाभक्त्यायेनदेवीप्रसीदति ॥ मृदंगवीणा मुरजाढक्कादुंदुभिनिःस्वनैः ॥ ४३ ॥ तोषयेज्जगतांधार्त्रीगायनैरतिमोहनैः ॥ वेदपारायणैःस्तोत्रैःपुराणादिभिरप्युत ॥ ४४ ॥ छत्रंचचामरेद्वेचदद्यादेव्यैसमाहितः ॥ राजोपचारान्श्रीदेव्यैनित्यमेवसमर्पयेत् ॥ ४५ ॥ प्रदक्षिणांनमस्कारंकुर्याद्वेव्याअनेकधा ॥ क्षमापयेज्जगद्धार्त्रीजगदंबामुहुर्मुहुः ॥ ४६ ॥ सकृत्स्मरणमात्रेणयत्रदेवीप्रसीदति ॥ एतादृशोपचारैश्चप्रसीदेदत्रकःस्मयः ॥ ४७ ॥ स्वभावतोभवेन्मातापुत्रेऽतिकरुणावती ॥ तेनभक्तौकृतायांतुवक्तव्यंकिंततःपरं ॥ ४८ ॥ अत्रतेकथयिष्यामिपुरावृत्तंसनातनं ॥ बृहद्रथस्यराजर्षेःप्रियंभक्तिप्रदायकं ॥ ४९ ॥

॥ ४२ ॥

॥ ४३ ॥

॥ ४४ ॥

द्रयस्योति अयंचशाकायन्यमुनेःशिष्यइतिमैत्रायणीयोपनिषदिस्पष्टम् ॥ ४९ ॥

॥ ५० ॥

॥ ५१ ॥

॥ ५२ ॥

दे.भा.ए.

॥ ३९ ॥

॥ ५० ॥ कणलोभाद्वान्यकणलोभात् ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ किंवदंतीजनश्रुतिऋषुःस्थितवतः ॥ ५७ ॥

चक्रवाकोभवेत्पक्षीकचिद्देशोहिमालये ॥ भ्रमन्नानाविधान्देशान्ययौकाशिपुरंप्रति ॥ ५० ॥ अन्नपूर्णामहास्था
नेप्रारब्धवशतोद्विजः ॥ जगामलीलयातत्रकणलोभादनाथवत् ॥ ५१ ॥ कृत्वाप्रदक्षिणामेकांजगामसाविहा
यसा ॥ देशांतरंविहायैवपुरीमुक्तिप्रदायिनीं ॥ ५२ ॥ कालांतरेममारासौगतःस्वर्गपुरींप्रति ॥ बुभुजेविषयान्स
र्वान्दिव्यरूपधरोयुवा ॥ ५३ ॥ कल्पद्वयंततोभुक्त्वापुनःप्रापभुवंप्रति ॥ क्षत्रियाणांकुलेजन्मप्रापसर्वोत्त
मोत्तमं ॥ ५४ ॥ बृहद्रथेतिनाम्नाभूत्प्रसिद्धःक्षितिमंडले ॥ महायज्वाधार्मिकश्चसत्यवादीजितेंद्रियः ॥ ५५ ॥
त्रिकालज्ञःसार्वभौमोयमीपरपुरंजयः ॥ पूर्वजन्मस्मृतिस्तस्यवर्ततेदुर्लभाभावि ॥ ५६ ॥ इतिश्रुत्वाकिंवदं
तीमुनयःसमुपागताः ॥ कृतातिथ्यानृपेन्द्रेणविष्टरेषूपुरेवते ॥ ५७ ॥ पप्रच्छुर्मुनयःसर्वेसंशयोस्तिमहान्नृप ॥
केनपुण्यप्रभावेणपूर्वजन्मस्मृतिस्तव ॥ ५८ ॥ त्रिकालज्ञानमेवापिकेनपुण्यप्रभावतः ॥ ज्ञातंतवेतितज्ज्ञा
तुमागताःस्मृतवांतिकं ॥ ५९ ॥ वदनिर्व्याजयावृत्त्यातदस्माकंयथातथं ॥ नारायणवाच ॥ इतितेषांवचः
श्रुत्वाराराजापरमधार्मिकः ॥ ६० ॥ उवाचसकलंब्रह्मन्त्रिकालज्ञानकारणं ॥ श्रूयतांमुनयःसर्वेममज्ञानस्य
कारणं ॥ ६१ ॥ चक्रवाकःस्थितःपूर्वनीचयोनिगतोपिवा ॥ अज्ञानतोपिकृतवानन्नपूर्णंप्रदक्षिणां ॥ ६२ ॥
तेनपुण्यप्रभावेनस्वर्गेकल्पद्वयस्थितिः ॥ त्रिकालज्ञानताप्यास्मिन्नभूज्जन्मनिसुव्रताः ॥ ६२ ॥ कोवेदजग
दंबायाःपदस्मृतिफलंकियत् ॥ स्मृत्वातन्महिमानंतुपतंत्यश्रूणिमेनिशं ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥

॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥

टी.अ.

१८

॥ ३९ ॥

॥ ६५ ॥ नित्याश्रुत्यैवचोदितेति अहरहः संध्यामुपासीतेतिश्रुत्यादेव्युपासनैव नित्याविहितैत्यर्थः ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ गतामुनयः
॥ ६९ ॥ यदाज्ञानकृतप्रदक्षिणायाइदंफलंराजर्षेर्जातं तदाभक्त्यायः पूजां करोति तस्य फलं न केनचित्प्रष्टव्यं न केनचित् कृतव्यमित्यर्थः ॥ ७० ॥
॥ ७१ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके एकादशस्कंधे अष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ चतुर्विंशतिभिः पद्यैरहोभागे चतुर्थके ॥ मध्याह्नसंध्याकरणं प्रो

धिगस्तुजन्मतेषां वैकृतघ्नानां तु पापिनां ॥ ये सर्वमातरं देवीं स्वोपास्यां न भजंति हि ॥ ६५ ॥ न शिवोपासनानि
त्यानविष्णुपासना तथा ॥ नित्योपास्तिः परादेव्या नित्याश्रुत्यैवचोदिता ॥ ६६ ॥ किं यथा बहुवक्तव्यं स्थाने
संशयवर्जिते ॥ सेवनीयं पदांभोजं भगवत्या निरंतरं ॥ ६७ ॥ नातः परतरं किंचिदधिकं जगतीतले ॥ सेवनी
या परादेवी निर्गुणा सगुणाथवा ॥ ६८ ॥ नारायण उवाच ॥ इति तस्य वचः श्रुत्वा राजर्षेर्धार्मिकस्य च ॥ प्रसन्न
हृदयाः सर्वे गताः स्वस्वनिकेतनं ॥ ६९ ॥ एवं प्रभावासादेवी तत्पूजायाः फलं कियत् ॥ अस्तीतिकेन प्रष्टव्यं
वक्तव्यं वानकेन चित् ॥ ७० ॥ येषां तु जन्मसाफल्यं तेषां श्रद्धा तु जायते ॥ येषां तु जन्मसांकर्यं तेषां श्रद्धान जायते
॥ ७१ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधे अष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ नारायण उवाच ॥ अथातः
श्रूयतां ब्रह्मन् संध्यां माध्याह्निकीं शुभां ॥ यदनुष्ठानतो पूर्वजायते त्युत्तमं फलं ॥ १ ॥ सावित्री युवती श्वेतवर्णा चै
वात्रिलोचनां ॥ वरदां चाक्षमालाढ्यां त्रिशूलाभयहस्तकां ॥ २ ॥ वृषारूढां यजुर्वेदसंहितां रुद्रदेवतां तमोगु
णयुतां चैव भुवर्लोकव्यवस्थितां ॥ ३ ॥

॥ ६५ ॥

॥ ६६ ॥

॥ ६७ ॥

च्यतेऽत्र समासतः ॥ १ ॥ दिवसस्य तृतीयभागकृत्यमुत्काचतुर्थभागकृत्यमाह अथात इति अथ वृत्त्यापोष्यवर्गपोषणनिमित्तार्थसंपादनोत्तरमतः
श्रुतिप्रोक्तत्वाद्देतोरित्यर्थः अपूर्वतत्संज्ञकं फलमित्यर्थः ॥ १ ॥ अत्र सर्वमनुष्ठानं प्रातः संध्यावदेव ध्यान एव विशेषमाह सावित्रीमितितन्नाम्नीं गा
यत्रीमित्यर्थः ॥ २ ॥ यजुर्वेदसंहितां यजुर्वेदमुद्गिरंतीमित्यर्थः रुद्रदेवतां रुद्रोपास्यां ॥ ३ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७० ॥

दे.भा.ए

॥ ४० ॥

मयाशबलब्रह्मरूपिणी ॥ ४ ॥ ५ ॥ ऊर्ध्वमर्घ्यक्षिप्तवान्यत्सर्वकृत्यंजपादिकंपूर्ववत्प्रतिपादयेत्साध्यैदित्यर्थः ॥ ६ ॥ मध्यान्हसंध्यायां गायत्र्याअर्घ्यदानंप्राप्तनिषेधति मध्यान्हेइति असंप्रदायमिति तस्मान्नकर्तव्यमित्यर्थः ॥ ७ ॥ तत्रहेतुमाह कारणमिति अयंभावः उभयोःसंधयोर्मंदेहानामराक्षसाःसूर्यभक्षितुमिच्छंतितेपांशान्नंसामान्यमंत्रेणभवतीत्यमोक्षप्रतिहतगायत्रीमंत्रेणैवार्घ्यदानंयुक्तं तादृशसामर्थ्यवतोऽन्यमंत्रस्याभावान्मध्यान्हेतुनदैत्यनाशार्थमर्घ्यप्रक्षिप्यतेकिंतुसूर्यप्रीत्यर्थमेव तत्रसूर्यमंत्रेणैवाकृष्णेनेत्यनेनहंसःशुचिषादित्यनेनवात

आदित्यमार्गसंचारकर्त्रीमायांनमाम्यहं ॥ आदिदेवीमयध्यात्वाचमनादिचपूर्ववत् ॥ ४ ॥ अथचार्घ्यप्रकरणंपुष्पाणिचिनुयात्ततः ॥ तदलाभेक्वपत्रतोयेनामिश्रयेत्ततः ॥ ५ ॥ ऊर्ध्वचसूर्याभिमुखंक्षिप्तार्घ्यप्रतिपादयेत् ॥ प्रातःसंध्यादिवत्सर्वमुपसंहारपूर्वकं ॥ ६ ॥ मध्यान्हेकेचिदिच्छंतिसात्त्वीत्रितुतदित्यृचं ॥ असंप्रदायंतत्कर्मकार्यहानिस्तुजायते ॥ ७ ॥ कारणंसंधयोश्चात्रमंदेहानामराक्षसाः ॥ भक्षितुंसूर्यमिच्छंतिकारणं श्रुतिनोदितम् ॥ ८ ॥ अतस्तुकारणाद्विप्रःसंध्यांकुर्यात्प्रयत्नतः ॥ संधयोरुभयोर्नित्यंगायत्र्याप्रणवेनच ॥ ९ ॥ अंभस्तुप्रक्षिपेत्तेनान्यथाश्रुतिघातकः ॥ आकृष्णेनेतिमंत्रेणपुष्पैर्वांबुविमिश्रितं ॥ १० ॥ अलाभे विल्वदूर्वादिसूत्रेणोक्तेनपूर्वकं ॥ अर्घ्यदद्यात्प्रयत्नेनसांगसंध्याफलंलभेत् ॥ ११ ॥ अत्रैवतर्पणंवक्ष्येशृणु देवार्षिसत्तम ॥ भुवःपुनःपूरुषंतुतर्पयामिनमोत्तमः ॥ १२ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥

स्यार्घ्यस्यप्रक्षेपेणनिर्वाहेऽमोक्षगायत्रीमंत्रस्यास्थानेविनियोजनेकार्यहानिरूपानर्थादिकंभवेदेवेति इतिकारणंश्रुतिनोदितमित्यन्वयः ॥ ८ ॥ गायत्र्याप्रणवेनचेति प्रणवेनयुक्तयागायत्र्यासंधयोरुभयोःसंध्यांलक्षणयासंध्यानिमित्तमर्घ्यदानंकुर्यादित्यर्थः ॥ ९ ॥ अंभस्तुप्रक्षिपेदिति तेनहेतुनागायत्रीमंत्रेणैवसंधयोरर्घ्यप्रक्षिपेदित्यर्थः आकृष्णेनेति अत्रमध्यान्हसंध्यायांइतिशेषः ॥ १० ॥ ११ ॥ मध्यान्हसंध्यांगतर्पणमाह अत्रैवेति अत्रार्पित्यर्थः पुनर्भुवःपदादनंतरमित्यर्थः ॥ १२ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७७ ॥

टी.अ.
१९

॥ ४० ॥

॥ १३ ॥ १४ ॥ पुरुषंतुर्पयामीति शेषः ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ त्रीणि जन्मानि जन्मत्रयोद्वानी

यजुर्वेदं तर्पयामि मंडलं तर्पयामि च ॥ हिरण्यगर्भं च तथांतरात्मानं तथैव च ॥ १३ ॥ सावित्रीं च ततो देवमातरं
सां कृतिं तथा ॥ संध्यां तथैव युवतीं रुद्राणीनीमृजां तथा ॥ १४ ॥ सर्वार्थानां सिद्धिकरीं सर्वमंत्रार्थसिद्धिदां ॥ भू
र्भुवः स्वः पुरुषंतु इति माध्याह्नतर्पणं ॥ १५ ॥ उदुत्यमिति सूक्तेन सूर्योपस्थानमेव च ॥ चित्रं देवानामिति च सूर्यो
पस्थानमेव च ॥ १६ ॥ ततो जपं प्रकुर्वीत मंत्रसाधनतत्परः ॥ जपस्यापि प्रकारंतु वक्ष्यामि शृणु नारद ॥ १७ ॥
कृत्वोत्तानौ करौ प्रातः सायं चाधः करौ तथा ॥ मध्याह्ने हृदयस्थौ तु कृत्वा जपमुदीरयेत् ॥ १८ ॥ पर्वद्वयमनामि
क्याः कनिष्ठादिक्रमेण तु ॥ तर्जनीमूलपर्यंतं करमालाप्रकीर्तिता ॥ १९ ॥ गोघ्नः पितृघ्नो मातृघ्नो भूणहा गुरुतल्प
गः ॥ ब्रह्मस्वक्षेत्रहारी च यश्च विप्रः सुरांपिबेत् ॥ २० ॥ स गायत्र्याः सहस्रेण पूतो भवति मानवः ॥ मानसं वा
चिकं पापं विषयेंद्रियसंगजं ॥ २१ ॥ तत्किं लिखं नाशयति त्रीणि जन्मानि मानवः ॥ गायत्रीं यो न जानाति वृथा
तस्य परिश्रमः ॥ २२ ॥ पठेच्च चतुरो वेदान् गायत्रीं चैकतोजपेत् ॥ वेदानां चावृतेस्तद्वद्वायत्री जप उत्तमः ॥
२३ ॥ इति मध्याह्नसंध्यायाः प्रकारः कीर्तितो मया ॥ अतः परं प्रवक्ष्यामि ब्रह्मयज्ञविधिक्रमं ॥ २४ ॥ इति श्री
देवीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधे एकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥ नारायण उवाच ॥ त्रिराचम्य द्विजः पूर्वद्विर्मा
र्जनमथाचरेत् ॥ उपस्पृश्य सव्यपाणिं पादौ च प्रोक्षयेत्ततः ॥ १ ॥ शिरसि च क्षुपितथानासायां श्रोत्रदेशके ॥ हृद
ये च तथा मौलौ प्रोक्षणं सम्यगाचरेत् ॥ २ ॥

॥ ६४ ॥

॥ ६४ ॥

त्यर्थः ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके एकादशस्कंधे एकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥ अर्धाधिकैश्चतुःपञ्चाशत्पदैस्तु
ततः परं ॥ ब्रह्मयज्ञादिकं सर्वमुच्यते त्रिसमाप्तः ॥ १ ॥ प्रतिज्ञातं ब्रह्मयज्ञविधिमाह त्रिराचम्य इति ॥ १ ॥ २ ॥ ॥ ७ ॥

भा.ए.

॥४१॥

त्रीन्दर्भानित्यर्थः सकृत्सकृत् एकैकोदभं इत्यर्थः ॥ ३ ॥ ४ ॥ सूत्रोक्तेति यस्य यस्य सूत्रं तदुक्तदेवताप्रीत्यै इत्यर्थः ब्रह्मयज्ञेनप्यमं
त्रानाह गायत्रीमिति ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ अथातो ब्रह्म इत्यपीति अथातो ब्रह्म जिज्ञासेति सूत्रमित्यर्थः ब्रह्मणेनम इत्यपीति
नमो ब्रह्मणे नमोऽस्त्वग्नयेनमः पृथिव्येनमोऽपोषधीभ्य इत्यादिकोमंत्र इत्यर्थः एते च मंत्राः ऋग्वेदिनां तर्पणे प्रासिद्धा एवेति नान्न गौरवालिख्यन्ते अत्रय

देशकलौ समुच्चार्य ब्रह्मयज्ञमथाचरेत् ॥ द्वौ दभौ दक्षिणे हस्ते वामे त्रीनासने सकृत् ॥ ३ ॥ उपवीतेशिखायां च
पादमूले सकृत् सकृत् ॥ विमुक्तये सवर्षापक्षयार्थं चैव नेवाहि ॥ ४ ॥ सूत्रोक्तदेवताप्रीत्यै ब्रह्मयज्ञं करोम्यहं ॥ गा
यत्रीं त्रिजपेत्पूर्वचाग्निर्मलिततः परं ॥ ५ ॥ यदंगीर्तिततः प्रोच्य अग्निर्मे इति कीर्तयेत् ॥ अथ महाव्रतं चैव पंथा ए
तच्च कीर्तयेत् ॥ ६ ॥ अथातः संहितायाश्च विदामघवदित्यपि ॥ महाव्रतस्येति तथा इषे त्वेर्जे इति विहि ॥ ७ ॥
भग्न आयाहि चेत्येवं शन्नो देवीरितीति च ॥ अथैतस्य समाम्नायो वृद्धिं रोदैर्जितीविहि ॥ ८ ॥ अथ शिक्षां प्रवक्ष्या
मंतं च संवत्सरेति च ॥ मय रसतजभेत्येव गौर्गम इत्येव कीर्तयेत् ॥ ९ ॥ अथातो धर्मजिज्ञासा अथातो ब्रह्म इत्य
॥ १० ॥ तपणं चैव देवानां ततः कुर्यात्प्रदक्षिणं ॥ प्रजापतिश्च ब्र
ह्मा च वेदा देवास्तथर्षयः ॥ दं सितथोकारस्तथैव च ॥ वषट्कारो व्याहृतयः सावित्री च त
तः परं ॥ १२ ॥ गायत्री चैव ॥ अर्धदद्यात्प्रफ
॥ अर्धदद्यात्प्रफ

स्ययाशाखातस्याः क्रमेणाध्याय एको द्वौ वा अर्धदद्यात्

तर्पणं चैव देवानामिति अत्र स्वस्व सूत्रोक्ता एव तर्पणीय देवताग्राह्य उदाहरणार्थं त्वन्नाश्वलायन सूत्रोक्ता एव प्रदर्श्यते ॥ १० ॥ तर्पणीय देवता आह
यितीति एकदेवतास्थले तृप्याल्लोत द्विदेवतास्थले नृप्यतो मिति त्रिदेवतास्थले तृप्याल्लोति प्रयोगः तृपणीय न इत्यस्य भातोः परस्मैपदित्वात् ॥ ११ ॥ १२ ॥ बावापृ
॥ १३ ॥

टी.अ.
२०

॥४१॥

क्षेत्रौषधिवनस्पतिगंधर्वाप्सरसस्तृप्यंत्वित्येकोमंत्रः ॥ १४ ॥ एवमंतानितृप्यंत्वित्येकोमंत्रः ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ सुमेतुजाम
निवेशपायनपैलसूत्रभाष्यभारतमहाभारतधर्माचार्यास्तृप्यंत्वित्येकोमंत्रः सूत्राद्यनुरोधान् ॥ २० ॥ एवंजानंतिबाह्वीगार्ग्यगौतमशाकल्य

सिद्धाःसमुद्रानद्यश्चगिरयश्चततःपरं ॥ क्षेत्रौषधिवनस्पत्योगंधर्वाप्सरसस्तथा ॥ १४ ॥ नागावयांसिगा
वश्चसाध्याविप्रास्तथैवच ॥ यक्षारक्षांसिभूतानीत्येवमंतानिकीर्तयेत् ॥ १५ ॥ अथोपवीतीभूत्वाचक्रुर्षान्सं
तर्पयेदपि ॥ शतार्चिनोमाध्यमाश्चगृत्समदस्तथैवच ॥ १६ ॥ विश्वामित्रोवामदेवोऽत्रिभारद्वज्रएवच ॥ वसि
ष्ठश्चप्रगाथश्चपावमान्यस्ततःपरं ॥ १७ ॥ क्षुद्रसूक्तमहासूक्ताःसनकश्चसनंदनः ॥ सनातनस्तथैवात्रस
नत्कुमारएवच ॥ १८ ॥ कपिलासूरिनामानौवोहलिःपंचशीर्षकः ॥ प्राचीनावीतिनातच्चकर्तव्यमथतर्पणं ॥
॥ १९ ॥ सुमंतुजैमिनीवैशंपायनःपैलसूत्रयुक् ॥ भाष्यभारतपूर्वचमहाभारतइत्यपि ॥ २० ॥ धर्माचार्याइ
मेसर्वेतृप्यंत्वितिचकीर्तयेत् ॥ जानंतिबाह्वीगार्ग्यगौतमाश्चैवशाकलः ॥ २१ ॥ बाभ्रव्यमांडव्ययुतोमांडूके
यस्ततःपरं ॥ गर्गीवाचक्रवीचैववडवाप्रातिथेयिका ॥ २२ ॥ सुलभायुक्तमैत्रेयीकहोलश्चततःपरं ॥ कौषीत
कमहाकौषीतकंवैतर्पयेत्ततः ॥ २३ ॥ भारद्वाजंचपैंग्यंचमहापैंग्यंसुयज्ञकं ॥ सांख्यायनमैतरेयमहैतरेयमे
वच ॥ २४ ॥ बाष्कलंशाकलं चैवमुजातवक्रमेवच ॥ औदवाहिंचसौजामिंशौनकंचाश्वलायनं ॥ २५ ॥ येचा
न्येसर्वआचार्यास्तेसर्वेतृप्तिमाप्नुयुः ॥ येकेचास्मत्कुलेजाताअपुत्रागोत्रिणोमृताः ॥ २६ ॥ ॥ ६९ ॥

बाभ्रव्यमांडव्यमांडूकेयास्तृप्यंत्वित्येकोमंत्रः ॥ २१ ॥ गर्गीवाचक्रवीतृप्यतु वडवाप्रातिथेयीतृप्यतु सुलभामैत्रेयीतृप्यतु ॥ २२ ॥
॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ सूत्राणांबहुत्वान्मुनेश्चसर्वज्ञत्वादाश्वलायनसूत्रोक्तकतिचिद्देवतात्यागेऽन्यासांचग्रहणेपिनदोषः ॥ २५ ॥ येकेचास्म
त्कुलेइत्यनेनैवपितृतर्पणंसूचितंतदपिकर्तव्यं ॥ २६ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥

॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ षष्ठसप्तमकावन्होभागौ ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ सायंसंध्याध्यानमाह ध्यानप्रक

तेगृण्हंतुमयादत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकं ॥ एवंप्रब्रह्मयज्ञस्यविधिरुक्तोमहामुने ॥ २७ ॥ यश्चायंकुस्तेब्रह्म
यज्ञस्यविधिमुत्तमं ॥ सर्ववेदांगपाठस्यफलमाप्नोतिसाधकः ॥ २८ ॥ वैश्वदेवंततःकुर्यान्नित्यश्राद्धंतथैव
च ॥ अतिथिभ्योन्नदानंचनित्यमेवसमाचरेत् ॥ २९ ॥ गोघ्रासंचततोदत्वाभुंजीतब्राह्मणैःसह ॥ अन्हस्तु
पंचमेभागेप्रकुर्यादितदुत्तमं ॥ ३० ॥ इतिहासपुराणाद्यैःषष्ठसप्तमकौनयेत् ॥ अष्टमेलोकयात्रातुबहिःसं
ध्यांततःपुनः ॥ ३१ ॥ अथसायंतनीसंध्यांप्रवक्ष्यामिमहामुने ॥ यदनुष्ठानमात्रेणमहामायाप्रसीदति
॥ ३२ ॥ आचम्यप्राणानायम्यसाधकःस्थिरमानसः ॥ बद्धपद्मासनोयोगीसायंकालेस्थिरोभवेत् ॥
॥ ३३ ॥ श्रुतिस्मृत्यादिकर्मादौसगर्भःप्राणसंयमः ॥ अगर्भोऽध्यानमात्रंतुसचामंत्रःप्रकीर्तितः ॥ ३४ ॥
भूतशुद्ध्यादिकंकृत्वानान्यथाकर्मकीर्तितं ॥ सलक्षोदेवतांध्यात्वापूरकुंभकरेचकैः ॥ ३५ ॥ ध्यानंप्रकु
र्यात्संध्यायांसायंकालेविचक्षणः ॥ वृद्धांसरस्वतींदेवींकृष्णांगींकृष्णवाससं ॥ ३६ ॥ शंखचक्रगदापद्म
हस्तांगरुडवाहनां ॥ नानारत्नलसद्भूषांकणन्मंजरिमेखलां ॥ ३७ ॥ अनर्घ्यरत्नमुकुटांतारहारवलीयु
तां ॥ ताटकबद्धमाणिक्यकांतिशोभिकपोलकां ॥ ३८ ॥ पीतांबरधरांदेवींसच्चिदानंदरूपिणीं ॥ साम
वेदेनसहितांसंयुतांसत्ववर्त्मना ॥ ३९ ॥ व्यवस्थितांचस्वर्लोकेआदित्यपथगामिनीं ॥ आवाहयाम्यहंदे
वीमायांतींसूर्यमंडलात् ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४१ ॥

यादिति ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ सायवेदेनसहितांसामवेदमुद्विरेणीम् ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४१ ॥

अत्रयद्यपि ध्यानं कृत्वा संकल्पः कर्तव्य इत्युक्तं तथापि पाठक्रमादर्थक्रमो बलवानिति न्यायेन प्रातः संध्यावदेव संकल्पादिकं कर्तव्यमिति बोध्यं सायंकाले अग्निश्चमामन्युश्चेति मंत्रेण मार्जनानंतरमाचमनं कर्तव्यमित्याह अग्निश्चेति ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

एवं ध्यात्वा च तां देवीं संध्यासंकल्पमाचरेत् ॥ आपो हि ष्ठेति मंत्रेण अग्निश्चेति तथैव च ॥ ४१ ॥ विदध्यादाचमनं कंशेषं पूर्ववदीरितं ॥ गायत्री मंत्रमुच्चार्य श्रीनारायणप्रीतये ॥ ४२ ॥ अर्घ्यं दद्याच्च सूर्याय साधकः शुद्धमानसः ॥ उभौ पादौ समौ कृत्वा हस्ते धृत्वा जलांजलिं ॥ ४३ ॥ देवं ध्यात्वा मंडलस्थं क्षिपेदर्घ्यं ततः क्रमात् ॥ अर्घ्यं दद्यात्तु यो नीरं मूढात्मा ज्ञानवर्जितः ॥ ४४ ॥ उल्लंघ्य स्मृतिमंत्रांश्च प्रायश्चित्तीभवेद्विजः ॥ ततः सूर्यमुपस्थाप्य सावादित्यमंत्रतः ॥ ४५ ॥ गायत्र्याश्च जपं कुर्यादुपविश्य ततो बृसिं ॥ सहस्रं वा तदर्धं वा श्रीदेवी ध्यानपूर्वकं ॥ ४६ ॥ यथा प्रातः पुनस्तद्बुधपस्थानादिकं चरेत् ॥ सायं संध्यातर्पणे च क्रमेण परिकीर्तयेत् ॥ ४७ ॥ वसिष्ठो ऋषिरेवात्र सरस्वत्याः प्रकीर्तितः ॥ देवता विष्णुरूपा सा छंदश्चैव सरस्वती ॥ ४८ ॥ सायंकालीनसंध्यायास्तर्पणे विनियोगकः ॥ स्वरित्युक्ता च पुरुषं सामवेदं तथैव च ॥ ४९ ॥ मंडलं चेति संप्रोच्य हिरण्यगर्भकं तथा ॥ तथैव परमात्मानं ततोऽपि च सरस्वतीं ॥ ५० ॥ वेदमातरमेवात्र संकृतिं तद्वदेव च ॥ संध्यां वृद्धां तथा विष्णुरूपिणीं मुषसीं तथा ॥ ५१ ॥ निर्मृजीं च तथा सर्वसिद्धीनां कारिणीं तथा ॥ सर्वमंत्राधिपतिकां भूर्भुवः स्वश्च पुरुषं ॥ ५२ ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥

॥ ४६ ॥ अनंतरं जपं समर्प्य यथा प्रातर्गायत्र्युपस्थानादिकं मनुष्ठानं कृतं तथैव सायंकालेऽपि कुर्यादित्याह यथा प्रातरिति ॥ ४७ ॥ सायं संध्यां गंतर्पणमाह सायंकालीनेति विष्णुरूपा विष्णुसमाना कारा सरस्वती देवतेत्यन्वयः ॥ ४८ ॥ स्वरित्युक्ता चेति स्वः पुरुषं तर्पयामीति वक्तव्यमित्यर्थः ॥ ४९ ॥ मंडलं चेति सूर्यमंडलं तर्पयामीति तर्पयेदित्यर्थः ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥

दे.भा.ए.

॥४३॥

॥ ५३ ॥ ५४ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके एकादशस्कंधे विंशोऽध्यायः ॥ २० ॥ अर्धाधिकैः पंचपंचाशाद्विः पदैरतः परं ॥ पुरश्चरण
कर्मगायत्र्याः सम्यगुच्यते ॥ १ ॥ गायत्रीपुरश्चरणमाह अथ सदाचारकथनानंतरमतः सदाचारकर्तुरेवात्राधिकारोऽयतस्ततः ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥
पुरश्चरणकर्माधिकारसिद्ध्यर्थं प्रायश्चित्तमाह यस्य कस्यापीति आरभेद्यदातदेति शेषः ॥ ४ ॥ वैदिकं वेदमंत्राणां पुरश्चरणं कर्म नृसिंहार्कव
राहाणां तांत्रिकं पुरश्चरणं कर्मैत्यर्थः नृसिंहेत्याद्युपलक्षणं देवतांतराणां ॥ ५ ॥ ननु किमिति निष्फलं भवेत्तत्राह सर्वेशाक्ता इति यतः सर्वेषां

इत्येवं तर्पणं कार्यं संध्यायाः श्रुतिसंमतं ॥ सायं संध्याविधानं च कथितं पापनाशनं ॥ ५३ ॥ सर्वदुःखहरं व्याधि
नाशकं मोक्षदं तथा ॥ सदाचारेषु संध्यायाः प्राधान्यं मुनिपुंगव ॥ ५४ ॥ संध्याचरणतो देवीभक्ताभीष्टं प्रयच्छति
॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधे विंशोऽध्यायः ॥ २० ॥ श्रीनारायण उवाच ॥ अथातः श्रूयतां ब्रह्म
न्गायत्र्याः पापनाशनं ॥ पुरश्चरणं पुण्यं यथेष्टफलदायकं ॥ १ ॥ पर्वताग्रे नदीतीरे विल्वमूले जलाशये ॥
गोष्ठे देवालयेश्वरस्थे उद्याने तुलसीवने ॥ २ ॥ पुण्यक्षेत्रे गुरोः पादवर्चिस्तैकाग्र्यस्थलेऽपि च ॥ पुरश्चरणं कृन्मंत्रा
सिद्ध्यत्येव न संशयः ॥ ३ ॥ यस्य कस्यापि मंत्रस्य पुरश्चरणमारभेत् ॥ व्याहृतित्रयसंयुक्तां गायत्रीं चायुतं
जपेत् ॥ ४ ॥ नृसिंहार्कवराहाणां तांत्रिकं वैदिकं तथा ॥ विना जप्त्वा तु गायत्रीं तत्सर्वं निष्फलं भवेत् ॥ ५ ॥
सर्वेशाक्ता द्विजाः प्रोक्तान शैवान च वैष्णवाः ॥ आदिशक्तिमुपासंते गायत्रीं विदमातरं ॥ ६ ॥ मंत्रं संशोध्य यत्ने
न पुरश्चरणतत्परः ॥ मंत्रशोधनपूर्वांगमात्मशोधनमुत्तमम् ॥ ७ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४२ ॥

द्विजानां मुख्यपरमेष्ठभूता देवता गायत्र्यैव प्रथमतो वेदेनोपदिष्टा ततः स्वेष्टदेवतानुग्रहं विना तत्सर्वं कृतं निष्फलं स्यादेवेत्यर्थः ॥ ६ ॥ मंत्रं संशोध्ये
ति इत्थमयुतजपेन मंत्रपुरश्चरणे जप्यमंत्रं प्रथमतः संशोध्य अथानंतरं पुरश्चरणतत्परो भवेदिति शेषः ॥ तत्र गायत्र्या अयुतजपरूपमंत्रं संशोधन
स्य पूर्वांगं प्रथमतः संपादनीयमात्मशोधनं भवति तदर्थं त्रिलक्षमेकलक्षं वा त्वत्त्वशोधनाय गायत्रीं जपेदित्याह मंत्रशोधनपूर्वांगमिति तदुक्तं पुर
श्चरणभास्करे मंत्रशोधनतः पूर्वदेहशुद्धिर्विधीयते तदर्थं तु जपं कुर्यात्त्रिलक्षं लक्षमेव वा ॥ ७ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४३ ॥

टी.अ.
२१

॥४३॥

प्रथमतो देहशुद्धयर्थं लक्षणत्रयमेकलक्षं वा जपित्वा पश्चान्मन्त्रसित्यर्थं गायत्र्या अयुतं जपेत्ततो भिलषितं मन्त्रस्य पुरश्चरणं कुर्यादिति भावः गायत्रीपु
रश्चरणेऽप्येवमेव बोध्यं ॥ ८ ॥ आत्मशुद्धेः पूर्वोक्ताया अवश्यकत्वा माह आत्मशुद्धिमिति ॥ ९ ॥ सा चात्मशुद्धिर्जपस्वरूपा कृच्छ्रचांद्रायणा
दिरूपा वानेकविधा भवतीत्याह तपसा इति ॥ १० ॥ शूद्रस्त्विति शूद्रस्तु द्विजसेवयेति स्मरणाच्छूद्रस्तु द्विजसेवया आपदोहरेदिति शेषः ॥ ११ ॥

आत्मतत्त्वशोधनाय त्रिलक्षं प्रजपेद्बुधः ॥ अथवा चैकलक्षं तु श्रुतिप्रोक्तेन वर्त्मना ॥ ८ ॥ आत्मशुद्धिं विना क
र्तुं जपहोमादिकाः क्रियाः ॥ निष्फलास्तास्तु विज्ञेयाः कारणं श्रुतिनोदितं ॥ ९ ॥ तपसा तापयेद्देहं पितृन्देवां
श्च तर्पयेत् ॥ तपसा स्वर्गमाप्नोति तपसा विंदते महत् ॥ १० ॥ क्षत्रियो बाह्वीर्येण तरेदापद आत्मनः ॥ धने
न वैश्यः शूद्रस्तु जपहोमैर्द्विजोत्तमः ॥ ११ ॥ अतएव तु विप्रैर्द्रव्यतपः कुर्यात्प्रयत्नतः ॥ शरीरशोषणं प्राहुस्ताप
सास्तप उत्तमं ॥ १२ ॥ शोधयेद्विधि मार्गेण कृच्छ्रचांद्रायणादिभिः ॥ अथान्नशुद्धिकरणं वक्ष्यामि शृणु नारद
॥ १३ ॥ अयाचितोऽंशुक्लारूपमिक्षावृत्तिचतुष्टयं ॥ तांत्रिकैर्वैदिकैश्चैवं प्रोक्तान्नस्य विशुद्धिता ॥ १४ ॥
भिक्षान्नं शुद्धमानीय कृत्वा भगवत्पुष्टं ॥ एकं भागं द्विजेभ्यस्तु गोघ्रासस्तु द्वितीयकः ॥ १५ ॥ अतिथिभ्यस्तृ
तीयस्तु तदूर्ध्वं तु स्वभार्ययोः ॥ आश्रमस्य यथायस्य कृत्वा ग्रासविधिं क्रमात् ॥ १६ ॥ ॥ ६ ॥

॥ १२ ॥ पुरश्चरणसमये भक्षणीयमन्नं तच्छोदधनं चाह अथान्नेति ॥ १३ ॥ अयाचितेति अयाचितोऽंशुक्लारूपमिक्षावृत्तिचतुष्टयं मु
ख्यं अनेन संपादिन स्यान्नस्य विशुद्धिता तांत्रिकैर्वैदिकैश्चैवं प्रोक्तेत्यर्थः ॥ १४ ॥ संपादितस्यान्नस्य विभागमाह भिक्षान्नमिति ॥ १५ ॥
स्वभार्ययोः स्वस्वभार्यायाश्चेत्यर्थः अश्रमस्येति यस्याश्रमस्य यथा ग्रासविधिर्विहितस्तं विधिं क्रमात् ब्रह्मचारिप्रभृतिभिः कृ
त्वा स्वीकृत्य तावत्परिमितमन्नं पात्रे गृहीत्वेत्यर्थः ॥ १६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.ए.

॥४४॥

आदाविति तस्मिन्ननेआदौगोमूत्रंक्षित्वातदूर्ध्वग्राससंख्यास्यात् ग्राससंख्याकर्तव्येत्यर्थः वानप्रस्थगृहस्थयोरित्यस्यकुक्कुटांडेत्यनेनान्वयः
॥ १७ ॥ १८ ॥ अन्नस्यप्रोक्षणं गायत्रीमंत्रेण कियद्वारं कर्तव्यं तदाह प्रोक्षणमिति ॥ १९ ॥ २० ॥ निषिद्धान्नमाह चौरवेति ॥ २१ ॥

आदौक्षित्वातुगोमूत्रं यथाशक्तियथाक्रमं ॥ तदूर्ध्वग्राससंख्यास्याद्वानप्रस्थगृहस्थयोः ॥ १७ ॥ कुक्कुटांड
प्रमाणं तु ग्रासमानं विधीयते ॥ अष्टौ ग्रासा गृहस्थस्य वनस्थस्य तदूर्ध्वकम् ॥ १८ ॥ ब्रह्मचारीयथेष्टं च गोमूत्र
विधिपूर्वकं ॥ प्रोक्षणं नववारं च षड्वारं च त्रिवारकं ॥ १९ ॥ निच्छिद्रं च करं कृत्वा सावित्रीं च तदित्यृचं ॥ मंत्रमु
च्चार्य मनसा प्रोक्षणे विधिरुच्यते ॥ २० ॥ चौरौ वा यदि चांडालो वैश्यः क्षत्रस्तथैव च ॥ अन्नं दद्यात्तु यः कश्चिदध
मो विधिरुच्यते ॥ २१ ॥ शूद्रान्नं शूद्रसंपर्कं शूद्रेण च सहाशनं ॥ तेयांति न रकं घोरं यावच्चंद्रदिवा करौ ॥ २२ ॥
गायत्रीच्छंदो मंत्रस्य यथासंख्याक्षराणि च ॥ तावल्लक्षाणिकर्तव्यं पुरश्चरणकं तथा ॥ २३ ॥ द्वात्रिंशल्लक्षमा
नंतु विश्वामित्रमतं तथा ॥ जीवहीनो यथा देहः सर्वकर्मसु न क्षमः ॥ २४ ॥ पुरश्चरणहीनस्तु तथा मंत्रः प्रकीर्तितः ॥
ज्येष्ठाषाढौ भाद्रपदं पौषं तु मलमासकं ॥ २५ ॥ अंगारं शनिवारं च व्यतीपातं च वैधृतिं ॥ अष्टमीं नवमीं ष
ष्ठीं चतुर्थीं च त्रयोदशीं ॥ २६ ॥ चतुर्दशी ममावास्यां प्रदोषं च तथानिशां ॥ यमाग्निरुद्रसर्पेन्द्रवसुश्रवणजन्मभं
॥ २७ ॥ मेषकर्कतुलाकुंभान्मकरं चैव वर्जयेत् ॥ सर्वाण्येतानि वर्ज्यानि पुरश्चरणकर्मणि ॥ २८ ॥ चंद्रतारा
नुकूले च शुक्लपक्षे विशेषतः ॥ पुरश्चरणकं कुर्यान्मंत्रसिद्धिः प्रजायते ॥ २९ ॥ स्वस्तिवाचनं कं कुर्यान्नां दीश्राद्धं
यथाविधि ॥ विप्रान्संतर्प्य यत्नेन भोजनाच्छादनादिभिः ॥ ३० ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥

॥ २२ ॥ गायत्रीमंत्रपुरश्चरणसंख्यामाह गायत्रीच्छंदो मंत्रस्येति ॥ २३ ॥ २४ ॥ पुरश्चरणं निषिद्धदिने नारब्धव्यंतं निषिद्धं दिनमा
ह व्येष्टेति ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ कुर्यात्पारंभेदित्यर्थः ॥ २९ ॥ ३० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

टी.अ.
२१

॥४४॥

प्रत्यङ्मुखशिवस्थानेपश्चिमाभिमुखलिंगसन्निधावित्यर्थः अन्यतमेवान्येवाशिवस्थानेइत्यर्थः ॥ ३१ ॥ तानिस्थानान्याह काशीपुरीति
नाशिकंक्षेत्रं पंचदीपाःपंचसिद्धिस्थानानीत्यर्थः ॥ ३२ ॥ एतत्क्षेत्रातिरिक्तस्थलेतुर्कर्मचक्रमेवदीपइत्याह सर्वत्रैवहीति कूर्मासनमिति
तच्चचक्रंशारदातिलकेदीपस्थानंसमाश्रित्यकृतंकर्मशुभप्रदमित्यादिनाप्रसिद्धं ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ अंधसाक्षीरौदनेन पत्रै

आरभेतुततःपश्चादनुज्ञानपुरःसरं ॥ प्रत्यङ्मुखशिवस्थानेद्विजश्चान्यतमेजपेत् ॥ ३१ ॥ काशीपुरीषकेदा
रोमहाकालोथनाशिकं ॥ त्र्यंबकंचमहाक्षेत्रंपंचदीपाइमेभुवि ॥ ३२ ॥ सर्वत्रैवहिदीपस्तुकूर्मासनमितिस्मृतं
॥ प्रारंभदिनमारभ्यसमाप्तिदिवसावधि ॥ ३३ ॥ नन्यूनंनातिरिक्तं वजपंकुर्याद्दिनेदिने ॥ नैरंतर्येणकुर्वति
पुरश्चर्यामुनीश्वराः ॥ ३४ ॥ प्रातरारभ्यविधिवजपेन्मध्यंदिनावधि ॥ मनःसंहरणंशौचंध्यानंमंत्रार्थचिंतनं
॥ ३५ ॥ गायत्रीच्छंदोमंत्रस्ययथासंख्याक्षराणिच ॥ तावल्लक्षाणिकर्तव्यंपुरश्चरणकंतथा ॥ ३६ ॥ जुहुया
त्तद्दशांशेनसघृतेनपयोधसा ॥ तिलैःपत्रैःप्रसूनैश्चयवैश्चमधुरान्वितैः ॥ ३७ ॥ कुर्याद्दशांशतोहोमततःसिद्धो
भवेन्मनुः ॥ गायत्रीचैवसंसेव्याधर्मकामार्थमोक्षदा ॥ ३८ ॥ नित्येनैमित्तिकेकाम्येत्रितयेतुपरायणः ॥ गाय
त्र्यास्तुपरंनास्तिइहलोकेपरत्रच ॥ ३९ ॥ मध्यान्हमितभुङ्मौनीत्रिस्नानार्चनतत्परः ॥ जलेलक्षत्रयंधी
माननन्यमानसक्रियः ॥ ४० ॥

॥ ४१ ॥

॥ ४२ ॥

॥ ४३ ॥

वित्त्वपत्रैर्वृतमधुशर्करायुक्तैर्दशांशहोमोविश्वामित्रकल्पेयुक्तः शारदातिलकप्रपंचसारादितंत्रेषुतुशतांशहोमोप्युक्तः तदुक्तंशारदा
यां तत्त्वलक्षंविधानेनभिक्षाशीविजितेन्द्रियः क्षीरौदनंतिलादूर्वाःक्षीरवृक्षसमिद्धरान् पृथक्सहस्रान्नितयंबुहुयान्मंत्रसिद्धयेइति अष्टद्रव्यैःपृ
थक्सहस्रान्नितयं होमश्चतुर्विंशतिसहस्रःसंपन्नः ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ पुरश्चरणांतरमाह मध्यान्हमितभुगिति जलेलक्षत्रयामिति
एतेनगायत्रीमंत्रोजलेनजप्तव्यइतिवदंतःपरास्ताः ॥ ४० ॥

॥ ४१ ॥

॥ ४२ ॥

॥ ४३ ॥

॥ ४४ ॥

दे.भा.ए.

॥४५॥

इत्थंप्रथमतःपुरश्चरणंकृत्वापश्चात्कर्मणाकाम्यकर्मणायोजयेत् कर्मभिःशास्त्रोक्तैःकाम्यकर्मभिर्वास्वेच्छयाभिलषितैः काम्यकर्मभिर्वायो

टी.अ.

२१

कर्मणायोजयेत्पश्चात्कर्मभिःस्वेच्छयापिवा ॥ यावत्कार्येनसिध्येत्तुतावत्कुर्याज्जपादिकं ॥ ४१ ॥ सामान्यका
म्यकर्मादौयथावद्विधिरुच्यते ॥ आदित्यस्योदयेस्नात्वासहस्रंप्रत्यहंजपेत् ॥ ४२ ॥ आयुरारोग्यमैश्वर्यधनं
चलभतेध्रुवं ॥ षण्मासंवात्रिमासंवावर्षांतिसिद्धिमाप्नुयात् ॥ ४३ ॥ पद्मानांलक्षहेमेनघृताक्तानांहुताशने ॥
प्राप्नोतिनिखिलंमोक्षंसिद्धत्येवसंशयः ॥ ४४ ॥ मंत्रसिद्धिंविनाकर्तुर्जपहोमादिकाःक्रियाः ॥ काम्यंवायदि
वामोक्षःसर्वतन्निष्फलंभवेत् ॥ ४५ ॥ पंचविंशतिलक्षेणदध्राक्षीरेणवाहुतात् ॥ स्वदेहेसिध्यतेजंतुर्महर्षीणां
मतंतथा ॥ ४६ ॥ अष्टांगयोगसिद्ध्याचनरःप्राप्नोतियत्फलं ॥ तत्फलंशीघ्रमाप्नोतिनात्रकार्याविचारणा ॥ ४७ ॥
शक्तोवापित्वशक्तोवाआहारंनियतंचरेत् ॥ षण्मासात्तस्यसिद्धिःस्याद्गुरुभक्तिरतःसदा ॥ ४८ ॥ एकाहं
पंचगव्याशीचैकाहंमारुताशनः ॥ एकाहंब्राह्मणान्नाशीगायत्रीजपकृद्भवेत् ॥ ४९ ॥ स्नात्वागंगादितीर्थेषुश
तमंतर्जलेजपेत् ॥ शतेनापस्ततःपीत्वासर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ ५० ॥ चांद्रायणादिकृच्छ्रस्यफलंप्राप्नोतिनिश्चि
तं ॥ राजावायदिवाविप्रस्तपःकुर्यात्स्वकेगृहे ॥ ५१ ॥ गृहस्थोब्रह्मचारीवावानप्रस्थोथवापिच ॥ अधिकार
परत्वेनफलंयज्ञादिपूर्वकं ॥ ५२ ॥ श्रौतस्मार्तादिकंकर्मक्रियतेमोक्षकांक्षिभिः ॥ साम्प्रिकश्चसदाचारोविद्वद्भि
श्चसुशिक्षितः ॥ ५३ ॥ तपःकुर्यात्प्रयत्नेनफलमूलोदकादिभिः ॥ भिक्षान्नंशुद्धमश्रीयादष्टौग्रासान्स्वयं
भुजेत् ॥ ५४ ॥

॥ ४१ ॥

॥ ४२ ॥

॥ ४३ ॥

नयेदित्यर्थः ॥ ४१ ॥ काम्यकर्माह आदित्यस्योदयेइति ॥ ४२ ॥ लभतेध्रुवमिति अयंजपोनित्यजपातिरिक्तएव ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ नियतंचरेत्तज्जपंचकुर्यादितिशेषः ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥

॥४५॥

॥ ५५ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके एकादशस्कंधे एकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥ अर्धाधिकैः पञ्चचत्वारिंशत् श्लोकैस्तः परं ॥ वैश्वदेवादिकं सर्वयथावदभिधीयते ॥ १ ॥ पूर्वसामान्यतो वैश्वदेवादिकं कर्तव्यमित्युक्तं तत्पुनश्चरणप्रसंगेन विशदयति अथात इति ॥ २ ॥ तत्र पञ्चमहायज्ञानाह देवयज्ञ इति एते वक्ष्यं कर्तव्या इति शेषः ॥ २ ॥ पञ्चसूना इति तेषां पापस्य शांतये वैश्वदेवं प्रकुर्वीतेत्यन्वयः तत्स्वरूपमुक्तमाश्रयात्नेन यद

एवं पुरश्चरणकं कृत्वामंत्रसिद्धिमाप्नुयात् ॥ देवर्षेयदनुष्ठानाद्वारिद्व्यं विलयं व्रजेत् ॥ ५५ ॥ यच्छ्रुत्वा पिचपुण्यानां महतीं सिद्धिमाप्नुयात् ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधे एकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥ नारायण उवाच ॥ अथातः श्रूयतां ब्रह्मन्वैश्वदेवविधानकं ॥ पुरश्चर्याप्रसंगेन ममापि स्मृतिमागतं ॥ १ ॥ देवयज्ञो ब्रह्मयज्ञो भूतयज्ञस्तथैव च ॥ पितृयज्ञो मनुष्यस्य यज्ञश्चैव तु पञ्चमः ॥ २ ॥ पञ्चसूना गृहस्थस्य चुल्लीपेषिण्युपस्करः ॥ कंडणीचोदकुंभश्च तेषां पापस्य शांतये ॥ ३ ॥ न चुल्ल्यानां यसे पात्रेन भूमौ न च खर्परे ॥ वैश्वदेवं प्रकुर्वीत कुंडे वा स्थंडिलेऽपि वा ॥ ४ ॥ न पाणिना न शूर्पेण न च मेध्याजिनादिभिः ॥ मुखेनोपधमेदग्निं मुखादेव व्यजायत ॥ ५ ॥ पटकेन भवेद्वाधिः शूर्पेण धननाशनं ॥ पाणिना मृत्युमाप्नोति कर्मसिद्धिं मुखेन तु ॥ ६ ॥ फलैर्दधिघृतैः कुर्यान्मूलशकोदकादिभिः ॥ अलाभे येन केनापि काष्ठमूलतृणादिभिः ॥ ७ ॥ जुहुयात्सर्पिषाभ्यक्तं तैलक्षारविवर्जितं ॥ दध्यक्तं वा पाथसाक्तं तदभावे भसापि वा ॥ ८ ॥ शुष्कैः पर्युषितैः कुष्ठोऽच्छिष्टेन द्विषां वशी ॥ रुक्षैर्दरिद्रतां याति क्षारं हुत्वा व्रजत्यधः ॥ ९ ॥

॥ ६१ ॥

॥ ६१ ॥

ग्रीजुहोति स देवयज्ञो यद्वलिकरोति स भूतयज्ञो यत्पितृभ्यो ददाति तत्पितृयज्ञो यत्स्वाध्यायमधीते स ब्रह्मयज्ञो यन्मनुष्यभ्यो ददाति स मनुष्ययज्ञ इति तानेतान्यज्ञानहरहः कुर्वीतेति एतेषां स्वरूपं प्रसिद्धमेवास्तीति मूलेनोक्तं ॥ ३ ॥ कुंडे वा स्थंडिले वा कुर्वीतेत्यन्वयः ॥ ४ ॥ न च मेध्याजिनादिभिरुपधमेदित्यर्थः किंतु मुखेनोपधमेदित्यन्वयः तत्र हेतुर्यतो मुखादेवाग्निर्व्यजायते तत इत्यर्थः ॥ ५ ॥ पटकेन पटेन नोपधमेत् मुखेन नुधमनीद्वारमुखेनैवोपधमेदित्यर्थः ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.ए.

॥४६॥

अनलादन्नपाचकानलादुत्तरदेशेगारान्निर्हृत्यनिष्काश्येत्यर्थः ॥ १० ॥ ११ ॥ यदाहारंस्वस्येत्यर्थः ॥ १२ ॥ भिक्षौत्रह्यचारिणिपरमहं
सेवाभिक्षार्थमागतेइत्यन्वयः ॥ १३ ॥ १४ ॥ भिक्षुमेवाह यतीचेति ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ गृहांगणेतिष्ठेदतिथिमार्गप्रती

टी.अ.
२२

अंगारान्भस्ममिश्रांस्तुनिर्हृत्योत्तरतो नलात् ॥ जुहुयाद्वैश्वदेवंतु नक्षारादिविमिश्रितं ॥ १० ॥ अकृत्वा वैश्व
देवंतु योभुंक्ते मूढधीर्द्विजः ॥ समूढो नरकं यातिकालसूत्रमवाक्षिराः ॥ ११ ॥ ज्ञाकं वायदिवापत्रं मूलं वायदि
वाफलं ॥ संकल्पयेद्यदाहारं तेनाग्नौ जुहुयादपि ॥ १२ ॥ अकृते वैश्वदेवे तु भिक्षौ भिक्षार्थमागते ॥ उद्धृत्य वै
श्वदेवार्थं भिक्षां दत्वा विसर्जयेत् ॥ १३ ॥ वैश्वदेवकृतं दोषं शक्ते भिक्षुर्व्यपोहितुं ॥ न तु भिक्षुकृतं दोषं वैश्वदेवो
व्यपोहति ॥ १४ ॥ यती च ब्रह्मचारी च पक्वान्नस्वामिनावुभौ ॥ तयोरन्नमदत्वा तु भुक्त्वा चांद्रायणं चरेत् ॥ १५ ॥
वैश्वदेवानंतरं च गोघ्रासं प्रतिपादयेत् ॥ तद्विधानं प्रवक्ष्यामि शृणु देवर्षि पूजित ॥ १६ ॥ सुराभिर्वैष्णवीमाता
नित्यं विष्णुपदे स्थिता ॥ गोघ्रासं च मया दत्तं सुरभे प्रतिगृह्यतां ॥ १७ ॥ गोभ्यश्च नम इत्येव पूजां कृत्वा गवेर्प
येत् ॥ गोघ्रासे न तु गोमाता सुराभिः संप्रसीदति ॥ १८ ॥ ततो गोदोहनं कालं तिष्ठेच्चैव गृहांगणे ॥ अतिथिर्यत्र
भग्नाशो गृहात् प्रतिनिवर्तते ॥ १९ ॥ स तस्मै दुष्कृतं दत्वा पुण्यमादाय गच्छति ॥ मातापिता गुरुर्भ्राता प्रजादा
सः समाश्रितः ॥ २० ॥ अभ्यागतोतिथिश्चाग्निरेते पोष्या उदाहृताः ॥ एवं ज्ञात्वा तु यो मोहान्नकारोति गृहाश्र
मं ॥ २१ ॥ तस्य नायं तु न परो लोको भवति धर्मतः ॥ यत्फलं सोमयागेन प्राप्नोति धनवान् द्विजः ॥ २२ ॥
सम्यक्पंचमहायज्ञैर्दरिद्रस्तेन चाप्नुयात् ॥ अथ प्राणाग्निहोत्रं तु वक्ष्यामि मुनिपुंगव ॥ २३ ॥ ॥ ६॥

क्षांकुर्वन्नित्यर्थः ॥ १९ ॥ २० ॥ एते पोष्या भवंति एतदर्थमेव तृतीयभागे दिवं सस्यान्नसंपादनं कृतं व्यमित्युक्तं तस्मादेतेभ्यो वक्ष्य
मन्नं देयमित्यर्थः तदन्नदानाकरणं दोषमाह एवं ज्ञात्वेति ॥ २१ ॥ २२ ॥ भोजनप्रकारमाह अथ प्राणेति ॥ २३ ॥ ॥ ७ ॥

॥४६॥

॥२४॥२५॥प्राणाग्निहोत्रसामग्रीमाह हृत्पुंडरीकेति हृत्पुंडरीकशब्देनोदरंगृह्यतेतदराणेभावयेत् मनोमंथनसंज्ञकंमंथनदंष्टरूपंभावयेत्॥
२६॥वायुरज्ज्वावायुरज्ज्वाभावयेत् मथेदग्निमुदरस्थमग्निमंथनजन्यंभावयेत् आत्मचक्षुषमध्वर्युभावयेदितितात्पर्यं तस्मिन्जाठराग्नौप्राणादिदेव
तातृप्त्यर्थंहोमोविधेयस्तान्प्राणादिदेवतामंत्रांस्तत्रांगुलिनियमंचाह तर्जनीति ॥ २७ ॥२८॥ २९ ॥ स्वाहांतानिति ॐ प्राणायस्वाहेत्येव

यज्ञात्वामुच्यतेजंतुर्जन्ममृत्युजरादिभिः ॥ परिज्ञानेनमुच्यंतेनराःपातककिल्बिषैः ॥ २४ ॥ विधिनाभुज्य
तेयेनमुच्यतेसक्रणत्रयात् ॥ कुलान्युद्धरतेविप्रोनरकादेकविंशतिः ॥ २५ ॥ सर्वयज्ञफलप्राप्तिःसर्वलोकेषुग
च्छति ॥ हृत्पुंडरीकमरणिर्मनोमंथनसंज्ञकं ॥ २६ ॥ वायुरज्ज्वामथेदग्निचक्षुरध्वर्युरेवच ॥ तर्जनीमध्यमांगु
ष्ठैःप्राणस्यैवाहुतिंक्षिपेत्॥२७॥मव्यमानामिकांगुष्ठैरपानस्याहुतिंक्षिपेत्॥कनिष्ठानामिकांगुष्ठैर्व्यानस्यत
दनंतरं ॥२८॥ कनिष्ठातर्जन्यंगुष्ठैरुदानस्याहुतिंक्षिपेत् ॥ सर्वांगुलैर्गृहीत्वान्नंसमानस्याहुतिंक्षिपेत्॥२९
स्वाहांतान्प्रणवाद्यांश्चनाममंत्रांश्चवैपठेत् ॥ मुखेचाहवनीयस्तु हृदयेगार्हपत्यकः॥३०॥नाभौचदक्षिणाग्निः
स्यादधःसन्ध्यावसथ्यकौ ॥ वाघोताप्राणउद्गाताचक्षुरध्वर्युरेवच ॥ ३१ ॥ मनोब्रह्माभवेच्छ्रोत्रमाग्नीध्रस्था
नएवच ॥ अहंकारःपशुश्चात्रप्रणवःपर्यइरितं ॥ ३२ ॥ बुद्धिश्चपत्नीसंप्रोक्तायदधीनोऽगृहाश्रमी ॥ उरोवेदि
स्तुरोमाणिदर्भाःस्युःस्रुक्स्रुवौकरौ ॥ ३३ ॥ प्राणमंत्रस्यचक्षुषीरुक्मवर्णःक्षुधाग्निः ॥ देवतादित्यएवात्र
गायत्रीच्छंदउच्यते ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥

मंत्राकृष्टाः तत्रभोजनसमयेमूलाधारादारभ्यमुखपर्यंतंजाठराग्नेर्ज्वालातिष्ठतितत्रस्थानभेदेनपंचाग्नीन्भावयेदित्याह मुखेचाहवनीयस्त्विति
॥ ३० ॥ अधोनाभेरधोदेशेस्वाधिष्ठानसंज्ञकेसभ्याग्निर्तद्धोमूलाधारेअवसथ्याग्निभावयेदित्यर्थः वाक्प्राणादिषुऋत्विगादिकलग्नमाह
होताप्राणइति ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ प्राणाहुतिमंत्राणामृषिच्छंदोदेवताआह प्राणमंत्रस्येति रुक्मवर्णःसुवर्णकांतिः क्षुधाग्नि
र्ऋषिरित्यर्थः ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥

दे.भा.ए.

॥४७॥

॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ पूर्ववदुदानाय स्वाहेत्येवमित्यर्थः ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ पर्जन्यायेदं नममेत्युक्त्वा षष्ठीमाहु-
तिं वक्ष्यमाणमंत्रेणाक्षिपोदित्यर्थः ॥ ४३ ॥ देवस्त्वात्मेति ओम्ब्रह्मणे स्वाहेति मंत्रप्रयोगः ॥ ४४ ॥ अत्र षष्ठमंत्रप्रयोगे सर्वभक्षणीयमन्नमा-
हुतिस्थाने भावयेदित्याचारदर्पणे उक्तं ॥ ४५ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके एकादशस्कंधे द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥ त्रिषष्टिभ्यो कवयैस्तु
प्राणाय च तथा स्वाहामंत्रं ते कीर्तयेदपि ॥ इदमादित्यदेवाय नममेति वदेदपि ॥ ३५ ॥ अपानमंत्रस्य तथा गो-
क्षीरधवलाकृतिः ॥ श्रद्धाग्निऋषिरेवात्र सोमो वै देवता स्मृता ॥ ३६ ॥ उष्णिक्छंदस्तथा पानाय स्वाहेत्यपि की-
र्तयेत् ॥ सोमायेदं च नममेत्यत्रोहः परिकीर्तितः ॥ ३७ ॥ व्यानमंत्रस्य चाख्यातो बृजवर्णहुताशनः ॥ ऋषिरु-
क्तो देवताग्निरनुष्टुप्छंद ईरितं ॥ ३८ ॥ व्यानाय च तथा स्वाहाग्नयेदं नममेत्यपि ॥ उदानमंत्रस्य तथा शक्रगोप-
सवर्णकः ॥ ३९ ॥ ऋषिरग्निः समाख्यातो वायुर्वै देवता स्मृता ॥ बृहतीच्छंद आख्यातमुदानाय च पूर्ववत् ॥ ४० ॥
वायवे चेदं नमम एवं चैवोच्चरेद्विजः ॥ समानवायुमंत्रस्य विद्युद्वर्णो विरूपकः ॥ ४१ ॥ ऋषिरग्निः समाख्यातः प-
र्जन्यो देवता मता ॥ पंक्तिश्छंदः समाख्यातं समानाय च पूर्ववत् ॥ ४२ ॥ पर्जन्यायेदमित्युक्त्वा षष्ठीं चैवाहुतिं क्षिपे-
त् ॥ वैश्वानरो महानग्निर्ऋषिर्वै परिकीर्तितः ॥ ४३ ॥ गायत्रीच्छंद आख्यातं देवस्त्वात्मा भवेदपि ॥ स्वाहांतो-
मंत्र आख्यातः परमात्मन उच्चरेत् ॥ ४४ ॥ इदं नमचेत्येवं जातं प्राणाग्निहोत्रकं ॥ एतज्ज्ञात्वा विधिं कृत्वा ब्रह्मभू-
याय कल्पते ॥ ४५ ॥ प्राणाग्निहोत्रविद्येयं संक्षेपात्कथिता हिते ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे एकादशस्कं-
धे द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥ नारायण उवाच ॥ अमृतापिधानमित्येवमुच्चार्य साधकोत्तमः ॥ उच्छिष्टभागभ्यः पा-
त्रान्नंदद्यादं ते विचक्षणः ॥ १ ॥

॥ ४१ ॥

॥ ४२ ॥

॥ ४३ ॥

भोजनांते च यद्वेत् ॥ तदुक्ता तम कृच्छ्रादिलक्षणं किंचिदुच्यते ॥ १ ॥ भोजनांते अमृतापिधानमसीति मंत्रेणाचमनं कुर्यादित्याह अमृतापि-
धानमिति उच्चार्या चामेदिति शेषः एतेनामृतोपस्तरणमसीति प्रथमत आचमनं कर्तव्यमित्यनुक्तमप्यर्थात्सूचितं अनंतरमुच्छिष्टभागभ्यो नं-
देयमित्याह उच्छिष्टेति ॥ १ ॥

॥ २ ॥

॥ ३ ॥

॥ ४ ॥

॥ ५ ॥

॥ ६ ॥

टी.अ.
२२

॥४७॥

तन्मन्त्रमाह येकेचास्मेति तदुपरिजलमनेनमंत्रेणदेयमित्याह रौरवेति ॥ २ ॥ ३ ॥ भोजनसमयेहस्तेविद्यमानंयत्पवित्रतस्यग्रंथिविस
जयेदित्याह पावेत्रेति ॥ ४ ॥ तेनोच्छिष्टेनोच्छिष्टः पुरुषोयदिसंस्पृष्टइत्यर्थः उच्छिष्टेनपुरुषेणोच्छिष्टपुरुषस्यशौनकर्तव्यइत्यर्थः ॥ ५ ॥

येकेचास्मत्कुलेजातादासादास्योन्नकाक्षिणः ॥ तेसर्वेतृप्तिमायांतुमयादत्तेनभूतले ॥ २ ॥ रौरवेपुण्यनिल
येपद्मार्बुदनिवासिनां ॥ अर्थिनामुदकंदत्तमक्षय्यमुपतिष्ठतु ॥ ३ ॥ पवित्रग्रंथिमुत्सृज्यमंडलेभुविनिक्षिपेत्
॥ पात्रेतुनिक्षिपेद्यस्तुसविप्रःपंक्तिदूषकः ॥ ४ ॥ उच्छिष्टस्तेनसंस्पृष्टःशुनाशूद्रेणचद्विजः ॥ उपोष्यरजनी
मेकांपंचगव्येनशुध्यति ॥ ५ ॥ अनुच्छिष्टेनसंस्पृष्टःस्नानमेवविधीयते ॥ एकाहुतिप्रदानेनकोटियज्ञफलं
लभेत् ॥ ६ ॥ पंचभिःपंचकोटीनांतदनंतफलंस्मृतं ॥ प्राणाग्निहोत्रवेत्रेयोह्यन्नदानंकरोतिच ॥ ७ ॥ दातुश्चैवतु
यत्पुण्यंभोक्तुश्चैवतुयत्फलं ॥ प्राप्नुतस्तौतदेवद्वावुभौतौस्वर्गगामिनौ ॥ ८ ॥ सपवित्रकरोभुंक्तेयस्तुविप्रोवि
धानतः ॥ ग्रासेग्रासेफलंतस्यपंचगव्यसमंभवेत् ॥ ९ ॥ पूजाकालत्रयेनित्यंजपस्तर्पणमेवच ॥ होमोब्राह्मणभु
क्तिश्चपुरश्चरणमुच्यते ॥ १० ॥ अधःशयानोधर्मात्माजितक्रोधोजितेंद्रियः ॥ लघुमिष्टहिताशीचविनीतःशांत
चेतसा ॥ ११ ॥ नित्यंत्रिषवणस्नायीनित्यंसशुभभाषणः ॥ स्त्रीशूद्रपतितव्रात्यनास्तिकोच्छिष्टभाषणं ॥
१२ ॥ चांडालभाषणंचैवनकुर्यान्मुनिसत्तम ॥ नत्वानैवचभाषेतजपहोमार्चनादिषु ॥ १३ ॥ मैथुनस्यतथाला
पंतद्गोष्ठीमपिवर्जयेत् ॥ कर्मणामनसावाचासर्वावस्थासुसर्वदा ॥ १४ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥

॥ ६ ॥ पंचभिःपंचप्राणाहुतिभिः पंचकोटीनांयज्ञानामित्यर्थः यस्मादेवंतस्मात्प्राणाहुतिप्रदानंतत्फलमित्यर्थः ॥ ७ ॥ एवंप्राणाग्निहो
त्रविदेन्नदानुःफलमाह दातुश्चैवत्विति यत्पुण्यंशास्त्रेप्रोक्तमित्यर्थः ॥ ८ ॥ ९ ॥ पुनःकिंचित्पुरश्चरणशेषमाह पूजाकालत्रयेइति भु
क्तिश्चेति चकारेणमार्जनमपिग्राह्यंतदापंचांगंपुरश्चरणसंपन्नं ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ ॥ ७४ ॥

दे.भा.ए.

॥४८॥

॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ तेदेवानामिति तेद्विजादेवादीनामृणिनोभवंतीत्यर्थः ॥ १९ ॥ ऋणत्रयमोचनप्रकारमाह ऋषिभ्य इति

सर्वत्रमैथुनत्यागोब्रह्मचर्यप्रचक्षते ॥ राज्ञश्चैवगृहस्थस्यब्रह्मचर्यमुदाहृतं ॥ १५ ॥ ऋतुस्नातेषुदारेषुसंग-
तिर्याविधानतः ॥ संस्कृतायांसवर्णायामृतुदृष्ट्याप्रयत्नतः ॥ १६ ॥ रात्रौतुगमनंकार्यंब्रह्मचर्यहरेन्नतन् ॥ ऋण-
त्रयमसंशोध्यत्वनुत्पाद्यसुतानपि ॥ १७ ॥ तथायज्ञाननिष्ठाचमोक्षमिच्छन्ब्रजत्यधः ॥ अजागलस्ययज्ज-
न्मतज्जन्मश्रुतिनोदितं ॥ १८ ॥ अतःकार्येतुविप्रेन्द्रऋणत्रयविशोधनं ॥ तेदेवानामृषीणांचपितृणामृणिनस्त-
था ॥ १९ ॥ ऋषिभ्योब्रह्मचर्येणपितृभ्यस्तुतिलोदकैः ॥ मुच्येद्यज्ञेनदेवेभ्यःस्वाश्रमंधर्ममाचरेत् ॥ २० ॥
क्षीराहारीफलाशीवाशाकाशीवाहविष्यभुक् ॥ भिक्षाशीवाजपेद्विद्वान्कच्छूचांद्रायणादिकृत् ॥ २१ ॥ लवणं
क्षारमम्लं चगृजनंकांस्यभोजनं ॥ तांबूलंचद्विभुक्तंचदुष्टवासःप्रमत्तनम् ॥ २२ ॥ श्रुतिस्मृतिविरोधंचजपंरा-
त्रौविवर्जयेत् ॥ वृथानकालंगमयेत्सूतस्त्रीस्वापवादतः ॥ २३ ॥ गमयेद्देवतापूजास्तोत्रागमविलोकनैः ॥
भूशय्याब्रह्मचारित्वंमौनचर्यातथैवच ॥ २४ ॥ नित्यंत्रिषवणस्नानंशूद्रकर्मविवर्जनं ॥ नित्यपूजानित्यदान-
मानंदस्तुतिकीर्तनं ॥ २५ ॥ नैमित्तिकार्चनंचैवविश्वासोऽगुरुदेवयोः ॥ जपनिष्ठस्यधर्मायेद्वादेशैतिसुसिद्धिदाः
॥ २६ ॥ नित्यंसूर्यमुपस्थायतस्यचाभिमुखोजपेत् ॥ देवताप्रतिमादौवावन्हौवाभ्यर्च्यतन्मुखः ॥ २७ ॥
स्नानपूजाजपध्यानहोमतर्पणतत्परः ॥ निष्कामोदेवतायांचसर्वकर्मनिवेदकः ॥ २८ ॥ एवमादींश्चनियमान्पुर-
श्चरणकृच्चरेत् ॥ तस्माद्विजःप्रसन्नात्माजपहोमपरायणः ॥ २९ ॥ तपस्यध्ययनेयुक्तोभवेद्भूतानुकंपकः ॥ तप-
सास्वर्गमाप्नोतितपसाविंदतेमहत् ॥ ३० ॥ तपोयुक्तस्यसिद्ध्यंतिकर्माणिनियतात्मनः ॥ विद्वेषणंसंहरणं
मारणंरोगनाशनं ॥ ३१ ॥

॥ ४९ ॥

॥ ४९ ॥

॥ ४९ ॥

यस्मादेवंतस्मात्स्वाश्रमंधर्मतदुचितंधर्ममाचरोदित्यर्थः ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥

टी.अ.
२३

॥४८॥

तेषांपुरश्चरणकारिणां ॥ ३२ ॥ तानिशांत्यादिकर्माणि वक्ष्यामि अग्रिमाध्याये इत्यर्थः परंतु तानि कर्माणि प्रथमतः पुरश्चरणं कृत्वा कर्तव्या
नीत्याह पुरश्चरणमिति ॥ ३३ ॥ तच्च पुरश्चरणं प्राजापत्यादिप्रायश्चित्तानि कृत्वा कर्तव्यमित्याह स्वाध्यायेति स्वाध्यायाभ्यसनं गायत्रीमं

येन येनाथ ऋषिणायदर्थं देवतास्तुता ॥ ससकामः समृद्धये ततेषां तेषां तथा तथा ॥ ३२ ॥ तानि कर्माणि वक्ष्यामि वि
धानानि च कर्मणां ॥ पुरश्चरणमादौ च कर्मणां सिद्धिकारकं ॥ ३३ ॥ स्वाध्यायाभ्यसनस्यादौ प्राजापत्यं चरेद्वि
जः ॥ केशश्मश्रुलोमनखान्वापयित्वा प्लुतः शुचिः ॥ ३४ ॥ तिष्ठेदहनिरात्रौ तु शुचिरासीत वाग्यतः ॥ सत्य
वादी पवित्राणि जपेद्वा हृतयस्तथा ॥ ३५ ॥ ॐकाराद्यास्तुता जप्त्वा सावित्रीं च तदित्यृचां ॥ आपो हि ष्ठेति सूक्तं
च पवित्रं पापनाशनं ॥ ३६ ॥ पुनंत्यः स्वस्ति मत्यश्च पावमान्यस्तथैव च ॥ सर्वत्रैतत्प्रयोक्तव्यमादावन्ते च कर्म
णां ॥ ३७ ॥ आसहस्रादाशताद्वाप्यादशादथवा जपेत् ॥ ॐकारं व्याहृतीं स्तिस्त्रः सावित्रीं मथवायुतं ॥ ३८ ॥
तर्पयित्वा द्विराचार्या नृषींश्छंदांसि देवताः ॥ अनार्षेण न भाषेत शूद्रेणापि न गर्हितैः ॥ ३९ ॥ नापि चोदक्ययाव
ध्वापतितैर्नात्यजैर्नृभिः ॥ न देवब्राह्मणद्विष्टैर्नाचार्यगुरुनिदकैः ॥ ४० ॥ न मातृपितृविद्विष्टैर्नावमन्येत कंचन
॥ कृच्छ्राणामेष सर्वेषां विधिः क्तो नु पूर्वशः ॥ ४१ ॥ प्राजापत्यस्य कृच्छ्रस्य तथा सांतपनस्य च ॥ पराकस्य च कृ
च्छ्रस्य विधिश्चांद्रायणस्य च ॥ ४२ ॥ पंचभिः पातकैः सर्वैर्दुष्कृतैश्च प्रमुच्यते ॥ तप्तकृच्छ्रेण सर्वाणि पापानि दह
ति क्षणात् ॥ ४३ ॥ त्रिभिश्चांद्रायणैः पूतो ब्रह्मलोकं समश्नुते ॥ अष्टभिर्देवताः साक्षात् पश्येत्तवरदास्तदा ॥ ४४ ॥

त्रपुरश्चरणरूपंतस्यादौ प्राजापत्यादिकं चरेदित्यर्थः तच्च प्राजापत्यमपि केशादीन्वापयित्वा शांत्यर्थं शुद्ध्यर्थं च वक्ष्यमाणान्मंत्रांश्च जपित्वा कर्त
व्यमित्याह केशश्मश्रुनखेति आप्लुतः स्नातः ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ निधिश्चांद्राय
णस्य चेति प्रोच्यते इति शेषः ॥ ४२ ॥ प्रथमस्तेषां फलमाह पंचभिरिति ॥ ४३ ॥ अष्टभिश्चांद्रायणैः ॥ ४४ ॥ ॥ ॥

दे.भा.ए.

॥४९॥

दशभिश्चांद्रायणैः कृच्छ्रप्राजापत्यस्वरूपमाह त्र्यहमिति त्र्यहंदिनत्रयं प्रातरिति मध्याह्नस्योपलक्षणं तस्मिन् भुंजीतेत्यर्थः तदुत्तरादिनत्रये सायं काले भुंजीतेत्यर्थः तदुत्तरादिनत्रये अयाचितमन्नमद्यादित्यर्थः तदुत्तरं दिनत्रयं नाश्रियादुपवसेदित्यर्थः इत्थं प्रकारेण प्राजापत्यं द्विजश्चरेदित्यर्थः तदुक्तं मनुना त्र्यहं प्रातरुहं सायं त्र्यहमद्यादयाचितं त्र्यहं परं च नाश्रियात्प्राजापत्यं चरन् द्विज इति ॥ ४५ ॥ सांतपनस्य स्वरूपमाह गोमूत्रमिति पूर्वद्युराहारांतरपरित्यागेन गोमूत्रादीनि गव्यानि पंचद्रव्याणि कुशोदकसहितानि संयोज्य पीत्वा परेद्युः उपवसेदिति द्वैरात्रिकः सांत

छंदांसि दशभिर्ज्ञात्वा सर्वान्कामान्समश्नुते ॥ त्र्यहं प्रातरुहं सायं त्र्यहमद्यादयाचितः ॥ ४५ ॥ त्र्यहं परं च नाश्रियात्प्राजापत्यं चरेद्विजः ॥ गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधिसर्पिः कुशोदकं ॥ ४६ ॥ एकरात्रोपवासश्च कृच्छ्रसांतपनं स्मृतं ॥ एकैकं ग्रासमश्रियादहानि त्रीणि पूर्ववत् ॥ ४७ ॥ त्र्यहं चोपवसेदित्यमतिकृच्छ्रचरो द्विजः ॥ एवमेव त्रिभिर्युक्तं महासांतपनं स्मृतं ॥ ४८ ॥ तप्तकृच्छ्रं चरन् विप्रोजलक्षीरघृतानिलान् ॥ प्रति त्र्यहं पिबेदुष्णां स कृत्स्नायी समाहितः ॥ ४९ ॥ नियतस्तु पिबेदापः प्राजापत्यविधिः स्मृतः ॥ यतात्मनो प्रमत्तस्य द्वादशाहमभोजनं ॥ ५० ॥ पराको नाम कृच्छ्रोऽयं सर्वपापप्रणोदनः ॥ एकैकं तु हस्ते पित्ठं कृष्णे शुक्ले च वर्द्धयेत् ॥ ५१ ॥

पनः कृच्छ्रः जाबालेन तु सताहसाध्यं सांतपनमुक्तं गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधिसर्पिः कुशोदकं एकैकं प्रत्यहं पीत्वा त्वहोरात्रमभोजनं कृच्छ्रः सांतपनो नाम सर्वपापप्रणाशन इति ॥ ४६ ॥ अतिकृच्छ्रं व्रतमाह एकैकं ग्रासमिति ॥ ४७ ॥ महासांतपनमिति इदं च यमेन पंचदशाहः संपाद्यमुक्तं त्र्यहं पिबेत्तु गोमूत्रं त्र्यहं वै गोमयं पिबेत् त्र्यहं दधि त्र्यहं क्षीरं त्र्यहं सर्पिस्ततः शुचिः महासांतपनं ह्येतत्सर्वपापप्रणाशनमिति तथा चात्रिभिर्युक्तमित्यस्य त्रिभिर्दिनैर्युक्तमित्यर्थः ॥ ४८ ॥ तप्तकृच्छ्रमाह तप्तकृच्छ्रमिति तथा च मनुना द्वादशरात्रनिर्वर्त्योऽयमभिहितः तप्तकृच्छ्रं चरन् विप्रोजलक्षीरघृतानिलान् प्रति त्र्यहं पिबेदुष्णं स कृत्स्नायी समाहित इति ॥ ४९ ॥ पराककृच्छ्रमाह नियतस्त्विति ॥ ५० ॥ चांद्रायणमाह एकैकं ग्रासे पित्ठमिति पित्ठं ग्रासं कृष्णपक्षे एकैकं ग्रासं च हस्ते नूनं कुर्याच्छुक्ले पक्षे त्वैकैकं ग्रासं नर्द्धयेत् अमावास्यायां तूषणमित्यर्थः ॥ ५१ ॥

टी.अ.

२३

॥४९॥

॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ एकैकमिति इदं व्रतं एकैकं धातुं सप्तरात्रेण पुनाति शोधयतीत्यर्थः तदेवाह त्वगसृगिति ॥ ५६ ॥
॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके एकादशस्कंधेत्रयोर्विशोध्यायः ॥ २३ ॥ अ

मवास्यां न भुंजीत एवं चांद्रायणो विधिः ॥ उपस्पृश्य त्रिपवणमेतच्चान्द्रायणं स्मृतं ॥ ५२ ॥ चतुरः प्रातरश्री
याद्विप्रः पिंडान् कृतान्हिकः ॥ चतुरोस्तमिते सूर्ये शिशुचान्द्रायणं स्मृतं ॥ ५३ ॥ अष्टावष्टौ समश्रीयात्पिंडान्म
ध्यंदिने स्थिते ॥ नियतात्मा हविष्यस्य यतिचान्द्रायणव्रतं ॥ ५४ ॥ एतद्बुद्धास्तथादित्यावसवश्चाचरन्ति हि ॥
सर्वे कुशलिनो देवामरुतश्च भुवासह ॥ ५५ ॥ एकैकं सप्तरात्रेण पुनाति विधिवत्कृतं ॥ त्वगसृक्पिशितास्थानि
मेदोमज्जावसास्तथा ॥ ५६ ॥ एकैकं सप्तरात्रेण शुध्यत्येव न संशयः ॥ एभिर्व्रतैर्विपूतात्मा कर्मकुर्वीत नित्य
शः ॥ ५७ ॥ एवं शुद्धस्य कर्माणि सिध्यंत्येव न संशयः ॥ शुद्धात्मा कर्मकुर्वीत सत्यवादी जितेंद्रियः ॥ ५८ ॥
इष्टान् कामांस्ततः सर्वान्संप्राप्नोति न संशयः ॥ त्रिरात्रमेवोपवसेद्रहितः सर्वकर्मणा ॥ ५९ ॥ त्रीणि नक्तानि
वाकुर्यात्ततः कर्म समारभेत् ॥ एवं विधानं कथितं पुरश्चर्याफलप्रदं ॥ ६० ॥ गायत्र्याश्च पुरश्चर्या सर्वकामप्रदा
यिनी ॥ कथिता तव देवर्षे महापापविनाशिनी ॥ ६१ ॥ आदौ कुर्याद्रतं मंत्री देहशोधनकारकं ॥ पुरश्चर्या ततः
कुर्यात्समस्तफलभागभवेत् ॥ ६२ ॥ इति ते कथितं गुह्यं पुरश्चर्याविधानकं ॥ एतत्परस्मै नोवाच्यं श्रुतिसारं
यतः स्मृतं ॥ ६३ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधेत्रयोर्विशोध्यायः ॥ २३ ॥ नारद उवाच
नारायण महाभाग गायत्र्यास्तु समासतः ॥ शांत्यादिकान् प्रयोगांस्तु वदस्व करुणानिधे ॥ १ ॥ ॥ ६४ ॥

तः परं शतश्लोकैः काम्यकर्माणि संग्रहात् ॥ प्रोच्यन्ते लोकरक्षार्थं प्रायश्चित्तविधितथा ॥ १ ॥ प्राजापत्यादीनि कृच्छ्राणिकृत्वा देहं संशोध्य पुरश्चर
णोत्तरं काम्यकर्माणि कुर्यादित्युक्तं पूर्वाध्यायेतानि काम्यकर्माणि वक्तुं प्रभ्रमुत्थापयति नारद उवाच नारायण महाभागेति ॥ १ ॥

दे.भा.ए

॥५०॥

॥ २ ॥ तत्रप्रथमतः शांतिकर्माह अथशांतिरिति काभिः समिद्धिस्तत्राह शमीसमिद्धिरिति जुहुयादिति अत्रसंख्यानुक्तौ अनुक्तसंख्ययोः संख्यासहस्रजपहोमयोर्गजांतकसहस्रकमिति सामान्यवचनादष्टोत्तरसहस्रसंख्यापलाशसमिधोनुक्ते इति सामान्यपरिभाषोक्ता संख्याग्राह्या ॥ ३ ॥ क्षीरवृक्षस्येति अश्वत्थोदुंबरपूक्षन्यग्रोधाः क्षीरदुमाः शारदातिलके उक्तास्तदन्यतमस्य समिद्धिरित्यर्थः शकलैर्वाक्षीरवृक्षखंडैर्वा होमस्तु गायत्रीमंत्रेणैव सर्वत्र ॥ ४ ॥ एतद्वोमादिकं तर्पणादिकं चानुष्ठानमेकोनपंचाशद्दिनपर्यंतं प्रत्यहं कार्यं सहस्रहोमो होमस्य

नारायण उवाच ॥ अतिगुह्यमिदं पृष्टं त्वया ब्रह्मतनूद्भव ॥ न कस्यापि च वक्तव्यं दुष्टाय पिशुनाय च ॥ २ ॥ अथ शांतिः पयोक्ताभिः समिद्धिर्जुहुयाद्विजः ॥ शमीसमिद्धिः शाम्यति भूतरोगग्रहादयः ॥ ३ ॥ आर्द्राभिः क्षीरवृक्षस्य समिद्धिर्जुहुयाद्विजः ॥ जुहुयाच्छकलैर्वापि भूतरोगादिशांतये ॥ ४ ॥ जलेन तर्पयेत्सूर्यपाणिभ्यां शांतिमाप्नुयात् ॥ जानुदध्रेजलेजह्वासर्वान्दोषाञ्छमंनयेत् ॥ ५ ॥ कंठदध्रेजलेजह्वा मुच्येत्प्राणांतिकाद्गयात् ॥ सर्वेभ्यः शांतिकर्मभ्यो निमज्ज्याप्सु जपः स्मृतः ॥ ६ ॥ सौवर्णे राजते वापि पात्रे ताम्रमये पिवा ॥ क्षीरवृक्षमये वापि निर्व्रणे मृन्मये पिवा ॥ ७ ॥ सहस्रं पंचगव्येन हुत्वा सुज्वलितेन ले ॥ क्षीरवृक्षमयैः काष्ठैः शेषं संपादयेच्छनैः ॥ ८ ॥ प्रत्याहुतिरुपशान्तस्त्वा सहस्रपात्रसंस्थितं ॥ तेन तं प्रोक्षयेद्देशं कुशैर्मंत्रमुनस्मरन् ॥ ९ ॥ ॥ ६४ ॥

छेतर्पणं च तावत्संख्यं तर्पणस्थले सामान्यकार्यविशेषकार्यानि रोधेन तर्पयेदिति शारदातिलके सूर्यमंत्रप्रकरणे योविधिरुक्तस्तेन विधिना गायत्रीमंत्रांते सूर्यतर्पयामिनम इति मंत्रं पठित्वा तर्पयेदित्यर्थः ॥ ५ ॥ सर्वेभ्यः शांतिकर्मभ्योधिक इति शेषः इदमपि मंडलपर्यंतमेव ॥ ६ ॥ प्रयोगांतरमाह सौवर्णे इति सौवर्णादन्यतमे पात्रे पंचगव्यं स्थापयित्वेत्यर्थः ॥ ७ ॥ क्षीरवृक्षमयैरिति तस्मिन् होमे इंधनमन्यन्नग्राह्यं किंतु पूर्वोक्तक्षीरवृक्षकाष्ठैरेव धनादिकार्यं कर्तव्यमित्यर्थः ॥ ८ ॥ प्रत्याहुतीति प्रत्येकाहुतौ पंचगव्यं स्पृशन्सन्हुत्वा पश्चात्पात्रस्थं पंचगव्यं गायत्रीमंत्रेण सहस्रं नत्वाभिर्मंत्र्यं प्रोक्षयेदित्यन्वयः मंत्रं गायत्रीमंत्रं ॥ ९ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

टी.अ.
२४

॥५०॥

तस्मिन्देशे उपद्रवस्थले बलिं च दद्यादित्यर्थः ॥ १० ॥ यद्येवं कुरुते तदा देवभूतपिशाचाद्यान्वशो कुरुते इत्य-
न्यः ॥ ११ ॥ निखने इति वक्ष्यमाणशूलस्य चतुरस्रमंडलं लिखने कृते तस्य च भूमौ निखने कृते इत्यर्थः तेभ्यः पिशाचादिभ्यः तदेवाह
मंडले इति पूर्वोक्ते कृमिभूताद्युपद्रवरूपे सतीत्यर्थः मंडले चतुरस्रमंडले शूलमष्टगंधेनालिख्यतच्छूलं गायत्र्या सहस्रवारमभिमंत्र्य भूमौ निख-
बलिकिरंस्ततस्तस्मिन्ध्यायेत्तु परदेवतां ॥ अभिचारसमुत्पन्ना कृत्या पापं च नश्यति ॥ १० ॥ देवभूतपिशा-
चाद्यान्वद्येवं कुरुते वशे ॥ गृहं ग्रामं पुरं राष्ट्रं सर्वे तेभ्यो विमुच्यते ॥ ११ ॥ निखने मुच्यते तेभ्यो लिखने मध्यतोपि
च ॥ मंडले शूलमालिख्य पूर्वोक्ते चक्रमेपि वा ॥ १२ ॥ अभिमंत्र्य सहस्रं तन्निखने त्सर्वशांतये ॥ सौवर्णं राजतं
वापि कुंभं ताम्रमयं च वा ॥ १३ ॥ मृन्मयं वानवं दिव्यं सूत्रवेष्टितमव्रणं ॥ स्थंडिले सैकते स्थाप्य पूरयेन्मंत्रवि-
ज्जलैः ॥ १४ ॥ दिग्भ्य आहृत्य तीर्थानि च तसृभ्यो द्विजोत्तमैः ॥ एलाचंदनकर्पूरजातीपाटलमल्लिकाः ॥ १५ ॥
विल्वपत्रं तथा क्रांतां देवीं ग्रीहियवांस्तिलान् ॥ सर्पपान्क्षीरवृक्षाणां प्रवालानि च निक्षिपेत् ॥ १६ ॥ सर्वाण्य-
भिविधायैवं कुशकूर्चसमन्वितं ॥ स्नातः समाहितो विप्रः सहस्रमंत्रयेद्बुधः ॥ १७ ॥ दिक्षु सौरानधीर्यारन्मंत्रा-
न्विप्रास्त्रयीविदः ॥ प्रोक्षयेत्पाययेदेनं नीरं तेनाभिर्षिंचयेत् ॥ १८ ॥ भूतरोगाभिचारेभ्यः सनिर्मुक्तः सुखी
भवेत् ॥ अभिषेकेन मुच्येत मृत्योरास्यगतो नरः ॥ १९ ॥ अवश्यं कारयेद्विद्वान्राजा दीर्घजिजीविषुः ॥ गावो
देयाश्च ऋत्विग्भ्य अभिषेकेशतं मुने ॥ २० ॥

॥ ६२ ॥

॥ ६२ ॥

नेदित्यर्थः ॥ १२ ॥ अभिषेकमाह ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ क्रांतां विष्णुक्रांतां देवीसहदेवी क्षीरवृक्षाअश्वत्थोदुंबरप्लक्षन्यग्रीवाः
॥ १६ ॥ कुशकूर्चमिति सप्तविंशतिदर्भाणां वेण्यग्रं ग्रंथिभूषितमिति कूर्चलक्षणसहितं कुशकूर्चमित्यर्थः ॥ १७ ॥ एवंभूताद्युपद्रुतं पुरुष-
मभिर्षिंचयेत् गायत्रीमंत्रं पठन् अभिमंत्रणमपि गायत्रीमंत्रेणैव अत्र कुंभस्थापनादिविधिः सर्वोपिशारदातिलके दीक्षापटले उक्तो ग्राह्यः ॥ १८ ॥
॥ १९ ॥ शतमिति शतं गावो दक्षिणा इत्यर्थः ॥ २० ॥

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

दे.भा.ए

॥५१॥

॥ २१ ॥ पर्वपर्वेविच्छिन्नाःसमिधइत्यर्थः ॥ २२ ॥ २३ ॥ हुत्वाक्षयंरोगंविनाशयेदित्यन्वयः मधुत्रितयंप्रसिद्धंपयोदधिघृतसंपं ॥ २४ ॥
॥ २५ ॥ सोमेसूर्येणसंयुक्तेअमावास्यायामित्यर्थः ॥ २६ ॥ तंदुलैर्बीजैरित्यर्थः ॥ २७ ॥ २८ ॥ मसूरिकांपादरोगविशेषं ॥ २९ ॥

टी.अ.
२४

दक्षिणायेनवातुष्टिर्यथाशक्त्याथवाभवेत् ॥ जपेदश्वत्थमालभ्यमंदवारेशतंद्विजः ॥ २१ ॥ भूतरोगाभिचारे
भ्योमुख्यतेमहतोभयात् ॥ गुडूच्याःपर्वविच्छिन्नाःपयोक्ताजुहुयाद्विजः ॥ २२ ॥ एवमृत्युंजयोहोमःसर्वव्या
धिविनाशनः ॥ आस्रस्यजुहुयात्पत्रैःपयोक्तैर्ज्वरशांतये ॥ २३ ॥ वचाभिःपयसाक्ताभिःक्षयंहुत्वाविनाशये
त् ॥ मधुत्रितयहोमेनराजयक्ष्माविनश्यति ॥ २४ ॥ निवेद्यभास्करायान्नंपायसंहोमपूर्वकं ॥ राजयक्ष्माभ्य
भूतंचप्राशयेच्छांतिमाप्नुयात् ॥ २५ ॥ लताःपर्वसुविच्छिद्यसोमस्यजुहुयाद्विजः ॥ सोमेसूर्येणसंयुक्तेपयोक्ताः
क्षयशांतये ॥ २६ ॥ कुसुमैःशंखवृक्षस्यहुत्वाकुष्ठंविनाशयेत् ॥ अपस्मारविनाशःस्यादपामार्गस्यतंदुलैः ॥
२७ ॥ क्षीरवृक्षसमिद्धोमादुन्मादोपिविनश्यति ॥ औदुंबरसमिद्धोमादतिमेहःक्षयंव्रजेत् ॥ २८ ॥ प्रमेहंशम
येद्दुत्वामधुनेक्षुरसेनवा ॥ मधुत्रितयहोमेननयेच्छांतिमसूरिकां ॥ २९ ॥ कपिलासर्पिषाहुत्वानयेच्छांतिमसू
रिकां ॥ उदुंबरवटाश्वत्थैर्गोगजाश्वामयंहरेत् ॥ ३० ॥ पिपीलिमधुवल्मीकेगृहेजातेशतंशतं ॥ शर्मीसमिद्धि
रन्नेनसर्पिषाजुहुयाद्विजः ॥ ३१ ॥ तदुत्थंशांतिमायातिशेषैस्तत्रवलिंहरेत् ॥ अभ्रस्तनितभूकंपालक्ष्म्यादौ
वनवेतसः ॥ ३२ ॥ सप्ताहंजुहुयादेवंराष्ट्रेराज्यंसुखीभवेत् ॥ यांदिशंशतजप्तेनलोष्ठेनाभिप्रताडयेत् ॥ ३३

॥ ३० ॥ पिपीलिमधुवल्मीकेइति पिपीलिकावल्मीकेमधुवल्मीकेचेत्यर्थः मधुवल्मीकोमोहोलइतिप्रसिद्धः गृहेतयोरुपद्रवेजातेसर्पित्यर्थः सर्पि
रुक्तशर्मीसमिद्धिःसर्पिर्युक्तान्नेनोदनेनप्रत्येककार्येशतद्वयंहोमः ॥ ३१ ॥ शेषैर्होमावशेषैः अतएवपूर्वद्रव्ययोःसमुच्चयोभवति नयथासं
ख्यंसमिद्धिर्बलिदानासंभवात् अभ्रस्तनितशब्देनविद्युलतापातोविवक्षितःवनवेतसःसमिधः ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ॥ ७ ॥

॥५१॥

बद्धस्यशत्रुभिः कारागृहेपातितस्यानुष्ठानसामर्थ्यभावात्तत्कल्याणार्थमाह मनसैवेति ॥ ३४ ॥ स्पृशन्निति दर्भेणेतिशेषः तन्त्रांतरानुरोधात् ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ यदुक्तं पुष्पैर्हुत्वेति तदेव स्पष्टयति श्रीकाम इति रक्तैः पद्मैरपि श्रियमेवाप्नोतीत्यर्थः ॥ ३८ ॥ ३९ ॥

ततोऽग्निमारुतारिभ्योऽभयंतस्य विनश्यति ॥ मनसैव जपेदेनांबद्धो मुच्येत बंधनात् ॥ ३४ ॥ भूतरोगविषादिभ्यः स्पृशन्जघ्नाविमोचयेत् ॥ भूतादिभ्यो विमुच्येत जलं पीत्वा अभिमंत्रितं ॥ ३५ ॥ अभिमंत्र्य शतं भस्म न्यसेद्भूतादिशान्तये ॥ शिरसाधारयेद्भस्म मंत्रयित्वा तदित्यृचा ॥ ३६ ॥ सर्वव्याधिविनिर्मुक्तः सुखी जीवेच्छतंसमाः ॥ अशक्तः कारयेच्छान्तिं विप्रं दत्त्वा तु दक्षिणां ॥ ३७ ॥ अथ पुष्टिं श्रियं लक्ष्मीं पुष्पैर्हुत्वा पुण्याद्विजः ॥ श्रीकामो जुहुयात्पद्मैरक्तैः श्रियमवाप्नुयात् ॥ ३८ ॥ हुत्वा श्रियमवाप्नोति जाती पुष्पैर्नवैः शुभैः ॥ शालितंडुलहोमेनाश्रियमाप्नोति पुष्कलां ॥ ३९ ॥ समिद्धिर्विल्ववृक्षस्य हुत्वा श्रियमवाप्नुयात् ॥ विल्वस्य शकलैर्हुत्वा पत्रैः पुष्पैः फलैरपि ॥ ४० ॥ श्रियमाप्नोति परमां मूलस्य शकलैरपि ॥ समिद्धिर्विल्ववृक्षस्य पायसेन च सर्पिषा ॥ ४१ ॥ शतं शतं च सप्ताहं हुत्वा श्रियमवाप्नुयात् ॥ लाजैस्त्रिमधुरोपेतैर्होमे कन्यामवाप्नुयात् ॥ ४२ ॥ अनेन विधिना कन्यावरमाप्नोति वाञ्छितं ॥ रक्तोत्पलशतं हुत्वा सप्ताहं हेममाप्नुयात् ॥ ४३ ॥ सूर्यबिंबे जलं हुत्वा जलस्थं हेममाप्नुयात् ॥ अन्नं हुत्वा पुण्यादन्नं ब्रीह्यान् ब्रीह्यां हेपतिर्भवेत् ॥ ४४ ॥ करीषचूर्णैर्वत्सस्य हुत्वा पशुमवाप्नुयात् ॥ प्रियंगुपायसा ज्यैश्च भवेद्धोमादिभिः प्रजा ॥ ४५ ॥ निवेद्य भास्करायान्नं पायसं होमपूर्वकं ॥ भोजयेत्तदृतुस्नातां पुत्रं पश्यन्माप्नुयात् ॥ ४६ ॥

॥ ४७ ॥

॥ ४८ ॥

॥ ४९ ॥

॥ ५० ॥

॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ त्रिमधुरं पयोदधिघृतं चेतिसमं त्रिमधुरं स्मृतमिति सिद्धांतशेखरे ॥ ४३ ॥ जलं हुत्वेति जलेन तर्पयित्वेत्यर्थः जलस्थं हेमजले गुतं हेमेत्यर्थः ब्रीह्यान् हुत्वेति शेषः ॥ ४४ ॥ प्रियंगुपायसा ज्यैश्चेति ब्रुवचनात् द्वयत्रयं ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ॥ ५० ॥

दे.भा.ए.

॥५२॥

सप्ररोहाभिरिति प्ररोहोऽग्रं तत्सहिताभिः पलाशसमिद्धिरित्यर्थः अनुक्ते पलाशसमिध इति विश्वामित्रकल्पे सामान्यपरिभाषणात् ॥ ४७ ॥

सप्ररोहाभिरार्द्राभिरायुर्हुत्वासमाप्नुयात् ॥ समिद्धिः क्षीरवृक्षस्य हुत्वायुषमवाप्नुयात् ॥ ४७ ॥ सप्ररोहाभि
रार्द्राभिराक्ताभिर्मधुरत्रयैः ॥ व्रीहीणां च शतं हुत्वा हेममायुरवाप्नुयात् ॥ ४८ ॥ सुवर्णकुड्मलं हुत्वा शतमायु
रवाप्नुयात् ॥ दूर्वाभिः पयसा वापि मधुना सर्पिपापि वा ॥ ४९ ॥ शतं शतं च सप्ताहमपमृत्युं व्यपोहति ॥ शमी
समिद्धिरन्नेन पयसा वा च सर्पिपा ॥ ५० ॥ शतं शतं च सप्ताहमपमृत्युं व्यपोहति ॥ न्यग्रोधसमिधो हुत्वा पायसं
होमयेत्ततः ॥ ५१ ॥ शतं शतं च सप्ताहमपमृत्युं व्यपोहति ॥ क्षीराहारोजपेन्मृत्योः सप्ताहाद्विजयी भवेत् ॥ ५२ ॥
अनश्नन्वाग्यतो जह्वात्रिरात्रं मुच्यते यमात् ॥ निमज्याप्सु जपे देवं सद्यो मृत्योर्विमुच्यते ॥ ५३ ॥ जपेद्विल्वं
समाश्रित्य मासं राज्यमवाप्नुयात् ॥ बिल्वं हुत्वा पुण्याद्राज्यं समूलफलपल्लवं ॥ ५४ ॥ हुत्वा पद्मशतं मासं राज्य
माप्नोत्यकंटकं ॥ यवागुं ग्राममाप्नोति हुत्वा शालिसमन्वितं ॥ ५५ ॥ अश्वत्थसमिधो हुत्वा युद्धादौ जयमाप्नुया
त् ॥ अर्कस्य समिधो हुत्वा सर्वत्र विजयी भवेत् ॥ ५६ ॥ संयुक्तैः पयसा पत्रैः पुष्पैर्वा वेतसस्य च ॥ पायसेन शतं
हुत्वा सप्ताहं वृष्टिमाप्नुयात् ॥ ५७ ॥ नाभिदग्ने जले जह्वा सप्ताहं वृष्टिमाप्नुयात् ॥ जले भस्मशतं हुत्वा महावृष्टिं नि
वारयेत् ॥ ५८ ॥ पलाशाभिरवाप्नोति समिद्धिर्ब्रह्मवर्चसं ॥ पलाशकुसुमैर्हुत्वा सर्वमिष्टमवाप्नुयात् ॥ ५९ ॥
पयो हुत्वा पुण्यान्मेधामाज्यं बुद्धिमवाप्नुयात् ॥ अभिमंत्र्यपि वेद्वह्नं रसं मेधामवाप्नुयात् ॥ ६० ॥ पुष्पहोमे भ
वेद्वासस्तंतुभिस्तद्विधं पटं ॥ लवणं मधुसंमिश्रं हुत्वेष्टं वशमानयेत् ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥

सप्ररोहाभिरितिक्षीरवृक्षसमिधो विशेषणं ॥ ४८ ॥ सुवर्णकुड्मलं हेमकमलं ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ समूलफल
पल्लवं संपूर्णवृक्षमित्यर्थः ॥ ५४ ॥ यवागुं हुत्वेति शेषः ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥

टी.अ.
२४

॥५२॥

लक्ष्मीपुष्पैः बिल्ववृक्षपुष्पैः ॥ ६२ ॥ एतान्यनुष्ठानान्यन्यमुद्दिश्यापि कुर्यादित्याह कुर्यादिति ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ चतुर्भिर्मसैः

नयेदिष्टं वशं हुत्वा लक्ष्मीपुष्पैर्मधुप्लुतैः ॥ नित्यमंजलिनात्मानमभिषिचिज्जले स्थितः ॥ ६२ ॥ मतिमारोग्यमा
युष्यमग्र्यं स्वास्थ्यमवाप्नुयात् ॥ कुर्याद्विप्रो न्यमुद्दिश्य सोऽपि पुष्टिमवाप्नुयात् ॥ ६३ ॥ अथ चारुविधिर्मासं
सहस्रं प्रत्यहं जपेत् ॥ आयुष्कामः शुचौ देशे प्राप्नुयादायुरुत्तमं ॥ ६४ ॥ आयुरारोग्यकामस्तु जपेन्मासद्वयं
द्विजः ॥ भवेदायुष्यमारोग्यं श्रियै मासत्रयं जपेत् ॥ ६५ ॥ आयुः श्रीपुत्रदाराद्याश्चतुर्भिश्च यशोजपात् ॥ पुत्र
दारायुरारोग्यं श्रियं विद्यां च पंचभिः ॥ ६६ ॥ एवमेवोत्तराङ्कामान् मासैरेवोत्तरैर्व्रजेत् ॥ एकपादोजपेदूर्ध्वबा
हुः स्थित्वानिराश्रयः ॥ ६७ ॥ मासं शतत्रयं विप्रः सर्वान्कामान्वाप्नुयात् ॥ एवं शतोत्तरं जप्त्वा सहस्रं सर्वमाप्नु
यात् ॥ ६८ ॥ रुद्ध्वा प्राणमपानं च जपेन्मासं शतत्रयं ॥ यदिच्छेत्तदवाप्नोति सहस्रात्परमाप्नुयात् ॥ ६९ ॥
एकपादोजपेदूर्ध्वबाहूरुद्ध्वा निलंबशः ॥ मासं शतमवाप्नोति यदिच्छेदितिकौशिकः ॥ ७० ॥ एवं शतत्रयं जप्त्वा
हस्रं सर्वमाप्नुयात् ॥ निमज्ज्याप्सु जपेन्मासं शतमिष्टमवाप्नुयात् ॥ ७१ ॥ एवं शतत्रयं जप्त्वा सहस्रं सर्वमाप्नु
यात् ॥ एकपादोजपेदूर्ध्वबाहूरुद्ध्वा निराश्रयः ॥ ७२ ॥ नक्तमभ्रन् हविष्यान्नं वत्सरादृषितामियात् ॥ गीरमो
घाभवेदेवं जप्त्वा संवत्सरद्वयं ॥ ७३ ॥

॥ ६५ ॥

॥ ६६ ॥

॥ ६७ ॥

पंचभिर्मसैः ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ परमभिष्टम् ॥ ६९ ॥ मासं शतं जपेदित्यन्वयः ॥ ७० ॥ ७१ ॥ रुद्ध्वा प्राणमित्यर्थः ॥ ७२ ॥
अमोघासत्यवाग्भवेदित्यर्थः ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥

दे.भा.ए.

॥५३॥

देवःसूर्यः ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ रहस्यानां पातकानामित्यर्थः ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥

त्रिवत्सरं जपेदेवं भवेन्नैकालदर्शनं ॥ आयाति भगवान् देवश्चतुःसंवत्सरं जपेत् ॥ ७४ ॥ पंचभिर्वत्सरैरेव मणि
मादिगुणो भवेत् ॥ एवं षट्संवत्सरं जपेत्वा कामरूपित्वमाप्नुयात् ॥ ७५ ॥ सप्तभिर्वत्सरैरेव ममरत्वमवाप्नुयात् ॥
मनुत्वं न वभिः सिद्धमिंद्रत्वं दशभिर्भवेत् ॥ ७६ ॥ एकादशभिराप्नोति प्राजापत्यं तु वत्सरैः ॥ ब्रह्मत्वं प्राप्नुयादे
वं जप्त्वा द्वादशवत्सरान् ॥ ७७ ॥ एते नैव जिता लोकास्तपसानां रदादिभिः ॥ शाकमन्ये परे मूलं फलमन्ये पयः
परे ॥ ७८ ॥ घृतमन्ये परे सोममपरे च रुवृत्तयः ॥ ऋषयः पक्षमश्रुतिकेचिद्वैक्ष्याशिनो हनि ॥ ७९ ॥ हविष्य
मपरेऽश्रुतः कुर्वत्येव परंतपः ॥ अथ शुल्वैरहस्यानां त्रिसहस्रं जपेद्विजः ॥ ८० ॥ मासं शुल्वो भवेत्स्तेयात्सुव
र्णस्य द्विजोत्तमः ॥ जपेन्मासं त्रिसहस्रं सुरापः शुद्धिमाप्नुयात् ॥ ८१ ॥ मासं जपेत्त्रिसहस्रं शुचिः स्याद्गुरुत
ल्पगः ॥ त्रिसहस्रं जपेन्मासं कुट्टिकृत्वा वने वसन् ॥ ८२ ॥ ब्रह्महामुच्यते पापादितिकौशिकभाषितं ॥ द्वाद
शाहं निमज्ज्याप्सु सहस्रं प्रत्यहं जपेत् ॥ ८३ ॥ मुच्येरन्नं हसः सर्वे महापातकिनो द्विजाः ॥ त्रिसहस्रं जपेन्मासं
प्राणानायम्य वाग्यतः ॥ ८४ ॥ महापातकयुक्तो वा मुच्यते महतो भयात् ॥ प्राणायामसहस्रेण ब्रह्महापि विशु
ध्यति ॥ ८५ ॥ षट्कृत्वस्त्वभ्यसेदूर्ध्वं प्राणापानौ समाहितः ॥ प्राणायामो भवेदेष सर्वपापप्रणाशनः ॥ ८६ ॥
सहस्रमभ्यसेन्मासं क्षितिपः शुचितामियात् ॥ द्वादशाहं त्रिसहस्रं जपेद्विगोवधे द्विजः ॥ ८७ ॥ अगम्यागम
नस्तेयहननाभक्ष्यभक्षणे ॥ दशसाहस्रमभ्यस्ता गायत्री शोधयेद्विजं ॥ ८८ ॥

॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥

॥ ७७ ॥

॥ ७८ ॥

॥ ७९ ॥

॥ ८० ॥

॥ ८१ ॥

टी.अ.

२४

॥५३॥

॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥ श्रीमच्छैवकुलोत्तरंगना
यात्मजःसूधीः ॥ श्रीलक्ष्मीगर्भसंभूतोनीलकंठोभिधानतः ॥ १ ॥ देवीभागवतस्यास्यव्याख्यानरहितस्यच ॥ व्याख्यायःकृतवान्सम्यक्त्तिः

प्राणायामशतंकृत्वामुच्यतेसर्वकिल्बिषात् ॥ सर्वेषामेवपापानांसंकरेसतिशुद्धये ॥ ८९ ॥ सहस्रमभ्यसे
न्मासंनित्यजापीवनेवसन् ॥ उपवाससमंजस्यंत्रिसहस्रंतदित्यूचः ॥ ९० ॥ चतुर्विंशतिसहस्रमभ्यस्ताकृच्छ्र
संज्ञिता ॥ चतुःषष्टिसहस्राणिचांद्रायणसमानितु ॥ ९१ ॥ शतकृत्वोभ्यसेन्नित्यंप्राणानायम्यसंध्ययोः ॥ त
दित्यूचमवाप्नोति सर्वपापक्षयंपरं ॥ ९२ ॥ निमज्ज्याप्सुजपेन्नित्यंशतकृत्वस्तदित्यूचं ॥ ध्यायन्देवींसूर्यरूपां
सर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ ९३ ॥ इतितेसम्यगाख्याताःशांतिशुद्ध्यादिकल्पनाः ॥ रहस्यातिरहस्याश्चगोपनीया
स्त्वयासदा ॥ ९४ ॥ इतिसंक्षेपतःप्रोक्तःसदाचारस्यसंग्रहः ॥ विधिनाचरणादस्यमायादुगांप्रसीदति ॥
॥ ९५ ॥ नैमित्तिकंचनित्यंचकाम्यंकर्मयथाविधि ॥ आचरेन्मनुजःसोयंभुक्तिमुक्तिफलाप्तिभाक् ॥ ९६ ॥ आ
चारःप्रथमोधर्मोधर्मस्यप्रभुरीश्वरी ॥ इत्युक्तंसर्वशास्त्रेषुसदाचारफलंमहत् ॥ ९७ ॥ आचारवान्सदापूतःसदै
वाचारवान्सुखी ॥ आचारवान्सदाधन्यःसत्यंसत्यंचनारद ॥ ९८ ॥ देवीप्रसादजनकंसदाचारविधानकं ॥
यदपिशृणुयान्मर्त्योमहासंपत्तिसौख्यभाक् ॥ ९९ ॥ सदाचारेणसिद्धयेच्चऐहिकामुष्मिकंसुखं ॥ तदेवतेमया
प्रोक्तंकिमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि ॥ १०० ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेसदाचारनिरूपणं
नामचतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥ ॥ एकादशस्कंधःसमाप्तः ॥ ११ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥

लकाख्यांसमुज्ज्वलां ॥ २ ॥ स्कंधश्चैकादशस्तस्याःसमाप्तोभूच्छुभार्थदः ॥ प्रीयतांतेनमेदेवीगायत्रीपरमेश्वरी ॥ ३ ॥ इतिश्रीशैवकुलोत्त
रंगनायात्मजलक्ष्मीगर्भजनीलकंठकृतेदेवीभागवततिलकेएकादशस्कंधेचतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥ एकादशस्कंधःसमाप्तः ॥ ११ ॥

॥ इति श्रीमद्देवीभागवतएकादशस्कंधः समाप्तः ॥

॥ अथ श्रीमद्वीभागवतद्वादशस्कंधप्रारंभः ॥

दे.भा.दा.

॥ १ ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ इच्छातु सर्वं न गतामधिनायतायां कर्तृत्वमंबतु पुनर्नरकप्रदं मे ॥ कोवादयात्तुरधुनामधुनाशकं त्रैलोक्योधिको मम नोरथपु-
रकः स्यात् ॥ १ ॥ सप्तविंशतिपदैस्तु श्लोकार्धेन समाहितैः ॥ ऋष्यादिकं तु गायत्र्या यथावदाभिधीयते ॥ १ ॥ पूर्वोऽध्याये गायत्रीविधानं सदाचारं
श्रुत्वा तत्र पृच्छति नारद उवाच सदाचारेति ॥ १ ॥ २ ॥ दुःखसाध्यानीति सदाचारविधिस्त्वभिषिष्यत एव किं तु कृच्छ्रादि व्रतानि देहशुल्यर्थक
यितान्येनैकस्मिन् कर्तुं शक्यानि तस्मात्तत्र किंचिदुपायांतरमस्ति चेत्तत्कृपां कृत्वा न देत्येकः प्रश्नः श्लोकचतुष्टयपर्यंतं ॥ ३ ॥ ४ ॥ द्वितीयं प्रश्नमा

श्रीगणेशायनमः ॥ नारद उवाच ॥ सदाचारविधिर्देवभवता वर्णितः प्रश्नो ॥ तस्याप्यतुलमाहात्म्यं सर्वपापवि-
नाशनं ॥ १ ॥ श्रुतं भवन्मुखां भोज्यं तं देवीकथामृतं ॥ व्रतानि यानि चोक्तानि चांद्रायणमुखानि ते ॥ २ ॥ दुःख-
साध्यानि जानीमः कर्त्रसाध्यानि तानि च ॥ तदस्मात्सांप्रतं यत्तु सुखसाध्यं शरीरिणां ॥ ३ ॥ देवीप्रसादजनकं
सुखानुष्ठानसिद्धिदं ॥ तत्कर्मवदमेस्वामिन्कृपापूर्वसुरेश्वर ॥ ४ ॥ सदाचारविधौ यश्च गायत्रीविधिरीरितः
॥ तस्मिन् मुख्यतमं किं स्यात्किं वा पुण्याधिकप्रदं ॥ ५ ॥ ये गायत्रीगतावर्णास्तत्त्वसंख्यात्वये रिताः ॥ तेषां के-
ऋषयः प्रोक्ताः कानिच्छंदांसि वैमुने ॥ ६ ॥ तेषां का देवताः प्रोक्ताः सर्वकथय मे प्रभो ॥ महत्कौतूहलं मे च मानसे
परिवर्तते ॥ ७ ॥ श्रीनारायण उवाच ॥ कुर्यादन्यन्न वा कुर्यादनुष्ठानादिकं तथा ॥ गायत्रीमात्रनिष्ठस्तु क-
तकृत्यो भवेद्भिजः ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥

ह सदाचारेति मुख्यतममिति मूढस्य सोऽपि विधिर्दुर्बल एवास्तीति तदुपायोऽप्युपायांतरं विद्यते चेत्तदपि वदेत्यर्थः ॥ ५ ॥ तृतीयं प्रश्नमाह ये गाय-
त्रीति तत्त्वसंख्याश्चतुर्विंशतिसंख्याः ॥ ६ ॥ सर्वेषां तत्पादादिकं ॥ ७ ॥ तत्र प्रथमप्रश्नोत्तरमाह कुर्यादिति अनुष्ठानादिकं देहशुल्यर्थकं कृच्छ्रा-
दिकं करोतुवानकरोतुकेवलगायत्रीमात्रस्य निर्व्याजयाभक्त्या निरंतरं भ्यासात्कृतकृत्यो भवति नान्यापेक्षास्तीत्यर्थः अतएव गायत्रीप्रकरणे पूर्व-
प्रश्नोऽवशेषेन कृच्छ्रादिकं भवतीति तदुक्तं कूर्मपुराणे एकतश्चतुरो वेदा गायत्रीचैकतः परेति ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥

टी.अ.

१

॥ १ ॥

तृतीयप्रश्नोत्तरमाह संध्यामेति संध्यात्रयेर्घ्यदानं सहस्रत्रयगायत्रीपञ्चमुख्योन्यस्वाभ्युदयिकमिति भावः ॥ ९ ॥ तदेवाह न्यासानिति

संध्यासु चार्घ्यदानं च गायत्रीजपमेव च ॥ सहस्रत्रितयं कुर्वन्सुरैः पूज्यो भवेन्मुने ॥ ९ ॥ न्यासान्करोतु वामावा
गायत्रीमेव चान्यसेत् ॥ ध्यात्वानिर्व्याजयावृत्त्या सच्चिदानंदरूपिणीं ॥ १० ॥ यदक्षरैकसंसिद्धेः स्पर्धते ब्राह्म
णोत्तमः ॥ हरिशंकरकंजोत्पसूर्यचंद्रहुताशनैः ॥ ११ ॥ अथातः श्रूयतां ब्रह्मन्वर्णऋष्यादिकांस्तथा ॥ छंदांसि
देवतास्तद्वत्क्रमात्तत्त्वानि चैव हि ॥ १२ ॥ वामदेवोऽत्रिर्वसिष्ठः शुक्रः कण्वः पराशरः ॥ विश्वामित्रो महातेजाः
कपिलः शौनको महान् ॥ १३ ॥ याज्ञवल्क्यो भरद्वाजो जमदग्निस्तपोनिधिः ॥ गौतमो मुद्गलश्चैव वेदव्यासश्च
लोमशः ॥ १४ ॥ अगस्त्यः कौशिको वत्सः पुलस्त्यो मांडुकस्तथा ॥ दुर्वासास्तपसां श्रेष्ठो नारदः कश्यपस्तथा
॥ १५ ॥ इत्येते ऋषयः प्रोक्ता वर्णानां क्रमशो मुने ॥ गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्च बृहती पंक्तिरेव च ॥ १६ ॥ त्रिष्टुभं जग
ती चैव तथातिजगती मता ॥ शक्यं निशंकरी च धृतिश्चातिधृतिस्तथा ॥ १७ ॥ विराट्प्रस्तारपंक्तिश्च कृतिः
प्रकृतिराकृतिः ॥ विकृतिः संकृतिश्चैवाक्षरपंक्तिस्तथैव च ॥ १८ ॥ भूर्भुवःस्वरिति छंदस्तथा ज्योतिष्मती स्मृ
तं ॥ इत्येतानि च छंदांसि कीर्तितानि महामुने ॥ १९ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ १९ ॥

॥ १० ॥ ११ ॥ तृतीयप्रश्नोत्तरमाह अथात इति ॥ १२ ॥ महातेजा इति विश्वामित्रविशेषणं ॥ १३ ॥ १४ ॥
॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ १९ ॥

दे.भा.द्रा.

॥ २ ॥

देवता आह आग्नेयमिति अत्रपंचमषष्ठवर्णयोरेक आदित्य एवेदेवतेत्युक्तं सप्तदशाष्टमाक्षरयोर्मैत्रावरुणदेवतात्वमेवोक्तं गायत्रीब्रह्मकल्पेतुभि
न्नाएवदेवताउक्ताः तथाहिआद्योवर्णोऽग्निदेवः स्याद्वायुदेवोद्वितीयकः तृतीयः सूर्यदेवत्योधनदेवश्चतुर्थकः यमः पंचमवर्णस्यवारुणः षष्ठएवच
सप्तमोऽर्हस्पत्योऽहिपार्जन्योनारदाष्टमः वर्णस्यनवमस्यैन्द्रोऽगंधर्वादशमस्यच एकादशस्यवर्णस्यदेवताप्रोष्ठउच्यते द्वादशस्यतुवर्णस्यमित्रावरु
णदेवता स्यात्तुत्रयोदशोवर्णस्त्वाष्ट्रदेवतसंयुतः चतुर्दशस्यवर्णस्यदेवतावासवः स्मृतः मरुदेवतकोवर्णः पंचदशमएवच सोमस्तुदेवताज्ञेयावर्ण

दैवतानि शृणु प्राज्ञतेषामेवानुपूर्वशः ॥ आग्नेयं प्रथमं प्रोक्तं प्राजापत्यं द्वितीयकं ॥ २० ॥ तृतीयं च तथा सौम्य
मीशानं च चतुर्थकं ॥ सावित्रं पंचमं प्रोक्तं षष्ठमादित्यदैवतं ॥ २१ ॥ बार्हस्पत्यं सप्तमं तु मैत्रावरुणमष्टमं ॥ नव
मं भगदैवत्यं दशमं चार्यमैश्वरं ॥ २२ ॥ गणेशमेकादशमं त्वाष्ट्रं द्वादशमं स्मृतं ॥ पौष्णं त्रयोदशं प्रोक्तं मैद्राग्रं च चतु
र्दशं ॥ २३ ॥ वायव्यं पंचदशमं वामदेव्यं षोडशं ॥ मैत्रावरुणिदैवत्यं प्रोक्तं सप्तदशाक्षरं ॥ २४ ॥ अष्टादशं वि
श्वेदेवमूनविंशतिमातृकं ॥ वैष्णवं विंशतितमं वसुदैवतमीरितं ॥ २५ ॥ एकविंशतिसंख्याकं द्वाविंशं रुद्रदैवतं ॥
त्रयोविंशं च कौबेरमाश्विनं तत्त्वसंख्यकं ॥ २६ ॥ चतुर्विंशतिवर्णानां देवतानां च संग्रहः ॥ कथितः परमश्रेष्ठो म
हापापैकशोधनः ॥ २७ ॥ यदाकर्णनमात्रेण सांगं जाप्यं फलं मुने ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे द्वादश
स्कंधे गायत्रीविचारो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥

स्य षोडशस्यच सप्तदशस्यवर्णस्यदेवताअंगिराभवेत् अष्टादशस्यवर्णस्यविश्वेदेवाश्वदेवताः एकोनविंशतिमस्यवर्णस्वदेवताश्विनौ विंशतिम
स्यवर्णस्यपूषादेवः प्रकीर्तितः रुद्रोदेवस्तुवर्णस्याप्येकविंशतिमस्यहि द्वाविंशतिमोवर्णोविद्युदेवप्रकीर्तितः ब्रह्मदैवतकोवर्णस्त्रयोविंशतिमः स्मृ
तः चतुर्विंशतिमोवर्णोभवेदितिदेवताइति ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ अत्रव्याहृतीनां दे
वतानां षष्ठमः अध्यायः समाप्तः ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके द्वादशस्कंधे प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥

टी.अ.

१

॥ २ ॥

अष्टादशश्लोकवैवर्ण्येर्णानांशक्तयस्तथा ॥ इवेतपीतदयोवर्णावर्णानामक्षरक्रमात् ॥ उच्यंतेचैवमुद्राश्चप्रोक्ता एवप्रसंगतः ॥ १॥ वर्णशक्तीराह
वर्णानांशक्तय इति ॥ १॥ २॥ ३॥ वर्णवर्णानांशक्तिवर्णानां इवेतपीतकारान्वर्णानित्यर्थः ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ वर्णतत्त्वान्याह पृथि
श्रीनारायण उवाच ॥ वर्णानांशक्तयः काश्च्यताः शृणुष्व महामुने ॥ वामदेवीप्रियासत्याविश्वाभद्रविलासिनी
॥ १ ॥ प्रभावतीजयाशांताकांतादुर्गासरस्वती ॥ विद्रुमाचविशालेशाव्यापिनीविमला तथा ॥ २ ॥ तमोपहा
रिणीसूक्ष्माविश्वयोनिर्जयावशा ॥ पद्मालयापराशोभाभद्राचत्रिपदास्मृता ॥ ३ ॥ चतुर्विंशतिवर्णानांशक्तयः
समुदाहृताः ॥ अतः परं वर्णवर्णान्व्याहरामियथा तथा ॥ ४ ॥ चंपका अतसी पुष्पसन्निभं विद्रुमं तथा ॥ स्फटिका
कारकं चैव पद्मपुष्पसमप्रभं ॥ ५ ॥ तरुणादित्यसंकाशं शंखकुंदेन्दुसन्निभं ॥ प्रवालपद्मपत्राभं पद्मरागसम
प्रभं ॥ ६ ॥ इंद्रनीलमणिप्रख्यं मौक्तिकं कुंकुमप्रभं ॥ अंजनाभं चरकं च वैदूर्यं क्षौद्रसन्निभं ॥ ७ ॥ हारिद्रं कुंदु
ग्धाभं रविकांतिसमप्रभं ॥ शुकपुच्छनिभं तद्वच्छतपत्रनिभं तथा ॥ ८ ॥ केतकीपुष्पसंकाशं मल्लिकाकुसुम
प्रभं ॥ करवीरश्च इत्येते क्रमेण परिकीर्तिताः ॥ ९ ॥ वर्णाः प्रोक्ताश्च वर्णानां महापापविशोधनाः ॥ पृथिव्याप
स्तथा तेजोवायुराकाश एव च ॥ १० ॥ गंधोरसश्च रूपं च शब्दः स्पर्शस्तथैव च ॥ उपस्थं पायुपादं च पाणीवाग
पिचक्रमात् ॥ ११ ॥ प्राणं जेव्हा चक्षुश्च त्वक् श्रोत्रं च ततः परं ॥ प्राणोपानस्तथा व्यानः समानश्च ततः परं
॥ १२ ॥ तत्त्वान्येतानि वर्णानां क्रमशः कीर्तितानि तु ॥ अतः परं प्रवक्ष्यामि वर्णमुद्राः क्रमेण तु ॥ १३ ॥ संमुखं सं
पुटं चैव विततं विस्तृतं तथा ॥ द्विमुखं त्रिमुखं चैव चतुःपंचमुखं तथा ॥ १४ ॥ षण्मुखाधोमुखं चैव व्यापकांजलि
कं तथा ॥ शकटं यमपाशं च ग्रथितं संमुखोन्मुखं ॥ १५ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥

व्याप इति पूर्वोक्ते गायत्र्या अक्षरान्यासस्थले इदं तत्त्वविशेषवर्णाद्यात्मकं प्रत्यक्षं स्मृत्वा वर्णान्यसेदिति रहस्ये ॥ १० ॥ पायुपादं चेत्यत्र प्राण्यं
गत्वा देकवद्भावः कचित्पायुः पादौ चेत्यपि पाठः ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.द्रा.

॥ ३ ॥

॥ १६ ॥ तुर्यरूपाः गायत्र्याश्चतुर्थचरणस्येत्यर्थः ॥ १७ ॥ १८ ॥ एतामुद्राएकादशस्कंधेऽस्माद्वप्रसंगादत्रकथिता इति बोध्यं जप समये सर्वे ऋषयः सर्वाणि छंदांसि सर्वाः शक्तयः सर्वाणि तत्त्वानि सर्वे वर्णवर्णाः स्मर्तव्यामुद्राश्च दर्शनीया इति समुदायार्थः ॥ इति श्रीदेवीभागवततिल

टी.अ.
३

प्रलंबं मुष्टिकं चैव मत्स्यं कूर्मं वराहकं ॥ सिंहाक्रांतं महाक्रांतं मुद्गरं पल्लवं तथा ॥ १६ ॥ त्रिशूलयोनी सुरभिश्चाक्षमा
लाचलिंगकं ॥ अंबुजं च महामुद्रास्तुर्यरूपाः प्रकीर्तिताः ॥ १७ ॥ इत्येताः कीर्तिता मुद्रावर्णानां ते महामुने ॥ म
हापापक्षयकराः कीर्तिदाः कांतिदामुने ॥ १८ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे द्वादशस्कंधे द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥
नारद उवाच ॥ स्वामिन् सर्वजगन्नाथ संशयोऽस्ति मम त्रभो ॥ चतुःषष्टिकलाभिज्ञपातकाद्योगविद्वर ॥ १ ॥ मुच्येत
केन पुण्येन ब्रह्मरूपः कथं भवेत् ॥ देहश्च देवतारूपो मंत्ररूपो विशेषतः ॥ २ ॥ कर्म तच्छ्रोतुमिच्छामि न्यासं च वि
धिपूर्वकं ॥ ऋषिं छंदोधिदैवं बध्द्यानं च विधिवत्प्रभो ॥ ३ ॥ नारायण उवाच ॥ अस्त्येकं परमं गुह्यं गायत्रीक
वचं तथा ॥ पठनाद्वारणान्मर्त्यः सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ४ ॥ सर्वान्कामानवाप्नोति देवीरूपश्च जायते ॥ गायत्री
कवचस्यास्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ ५ ॥ ऋषयो ऋग्यजुःसामाथर्व छंदांसि नारद ॥ ब्रह्मरूपा देवतोक्ता गाय
त्री परमा कला ॥ ६ ॥ तद्बीजं भर्ग इत्येषा शक्तिरुक्तमनीषिभिः ॥ कीलकं च धियः प्रोक्तं मोक्षार्थे विनियोजनं
॥ ७ ॥ चतुर्भिर्हृदयं प्रोक्तं त्रिभिर्वर्णैः शिरः स्मृतं ॥ चतुर्भिः स्याच्छिखापश्चात्त्रिभिस्तु कवचं स्मृतं ॥ ८ ॥ चतुर्भि
र्नेत्रमुद्दिष्टं चतुर्भिः स्यात्तदस्त्रकं ॥ अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि साधकाभीष्टदायकं ॥ ९ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १५ ॥

के द्वादशस्कंधे द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ पंचविंशतिभिः पद्मैर्जगन्मातुः परत्वरं ॥ कवचं प्रोच्यते सम्यक् सर्वमंगलकारकं ॥ १ ॥ नारदः
कवचं पृच्छति स्वामिन्निति पातकात्केन पुण्येन मुच्येत इत्यन्वयः ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ तद्बीजमिति तत्पदं बीजमित्य
र्थः ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥

॥ ३ ॥

ध्याममाह मुक्ताविद्रुमेति प्रत्ये कमीक्षणत्रयवद्विः पञ्चभिर्मुखैर्युक्तामित्यर्थः तत्त्वार्थवर्णात्मकामिति चतुर्विंशतितत्त्वान्यर्थोऽप्येषां वर्णानां तत्स
वितुरित्यादीनां तदात्मिकेत्यर्थः दक्षाध्वं योर्हस्तयोः कमलद्वयं तदधस्तनयोश्चक्रशंखौ तदधस्तनयोः रज्जुकपाले तदधस्तनयोः पाशांकुशौ त

मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणैर्युक्तामिन्दुनिवद्भस्ममुकुटां तत्त्वार्थवर्णात्मिकां ॥ गायत्रीवरदाभ
यांकुशकशाः शुभ्रंकपालंगुणं शंखं चक्रमथारविंदयुगलं हस्तैर्वहंतीं भजे ॥ १० ॥ गायत्रीपूर्वतः पातु सावित्री
पातु दक्षिणे ॥ ब्रह्मसंध्या तु मे पश्चादुत्तरायां सरस्वती ॥ ११ ॥ पार्वती मे दक्षिणक्षेत्रे पावकी जलशायिनी ॥ या
तु धानी दिशं रक्षेद्या तु धानभयंकरी ॥ १२ ॥ पावमानी दिशं रक्षेत्पवमानविलासिनी ॥ दिशं रौद्री च मे पातु रुद्रा
णी रुद्ररूपिणी ॥ १३ ॥ ऊर्ध्वं ब्रह्माणि मे रक्षेदधस्ताद्वैष्णवी तथा ॥ एवं दशदिशो रक्षेत्सर्वांगं भुवनेश्वरी ॥ १४ ॥
तत्पदं पातु मे पादौ जंघे मे सवितुः पदं ॥ वरेण्यं कटिदेशे तु नाभिं भर्गस्तथैव च ॥ १५ ॥ देवस्य मे तद्दृढं यन्मीम
हीति च गल्लयोः ॥ धियः पदं च मे नेत्रे यः पदं मे ललाटकं ॥ १६ ॥ नः पातु मे पदं मूर्ध्नि शिखायां मे प्रचोदयात् ॥ तत्प
दं पातु मूर्ध्नि नसकारः पातु भालकं ॥ १७ ॥ चक्षुषी तु विकारार्णो तु कारस्तुकपोलयोः ॥ नासापुटं वकारार्णो रका
रस्तु मुखे तथा ॥ १८ ॥ णिकार ऊर्ध्वं मोष्ठं तु यकारस्त्वधरोष्ठकं ॥ आस्यमध्ये भकारार्णो गेकारश्चुबुके तथा
॥ १९ ॥ देकारः कंठदेशे तु वकारः स्कंधदेशकं ॥ स्यकारो दक्षिणं हस्तं धीकारो वामहस्तकं ॥ २० ॥ मकारो ह
दयं रक्षेद्विकार उदरे तथा ॥ धिकारो नाभिदेशे तु योकारस्तुकटितथा ॥ २१ ॥ गुह्यं रक्षतु योकार ऊरुद्वौ नः पदा
क्षरं ॥ मकारो जानुनीरक्षेच्चोकारो जंघदेशकं ॥ २२ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६५ ॥

दधस्तनयो रभयवरौ कशाशब्देन पाशो गुणो रज्जुरित्यायुधध्यानं ॥ १० ॥ ब्रह्मसंध्या ब्रह्मणाराध्या संध्या ब्रह्मसंध्या ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥
हे ब्रह्माणि भवती मे ऊर्ध्वं दक्षिणक्षेत्रे दित्यन्वयः ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥

दे.भा.द्वा.

॥ ४ ॥

॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ इति श्रीदेवीभागवतातिलके द्वादशस्कंधे तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ अथ श्रीजगदंबाया गायत्र्या हृदयं परं ॥
अथोक्तं क्रमेणैव गायारूपेण कथ्यते ॥ १ ॥ कवचं भवणोत्तरं गायत्री हृदयं पृच्छति भगवन्निति ॥ १ ॥ २ ॥ तदेवेति आनुपूर्वी क्रमेण वेत्स्य

टी.अ.
४

दकारं गुल्फदेशे तु याकारः पदयुग्मकं ॥ तकारव्यंजनं चैव सर्वांगे मे सदा वतु ॥ २३ ॥ इदं तु कवचं दिव्यं बाधाश
तविनाशनं ॥ चतुःषष्टिकलाविद्यादायकं मोक्षकारकं ॥ २४ ॥ मुच्यते सर्वपापेभ्यः परं ब्रह्माधिगच्छति ॥ पठ
नाच्छ्रवणाद्वापि गोसहस्रफलं लभेत् ॥ २५ ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे द्वादशस्कंधे गायत्रीमंत्रकवचोत्त
रीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ नारद उवाच ॥ भगवन् देवदेवेश भूतभव्यज गत्प्रभो ॥ कवचं च श्रुतं दिव्यं गायत्रीमंत्रवि
ग्रहं ॥ १ ॥ अधुना श्रोतुमिच्छामि गायत्री हृदयं परं ॥ यद्धारणाद्भवेत्पुण्यं गायत्रीजपतोऽखिलं ॥ २ ॥ नाराय
ण उवाच ॥ देव्याश्च हृदयं प्रोक्तं नारदाथर्वणे स्फुटं ॥ तदेवाहं प्रवक्ष्यामि रहस्यातिरहस्यकं ॥ ३ ॥ विराड् रूपां
महादेवीं गायत्रीं विदमातरं ॥ ध्यात्वा तस्यास्त्वथांगेषु ध्यायेद्देताश्च देवताः ॥ ४ ॥ पिंडब्रह्मांडयोरैक्याद्भावे
त्स्वतनौ तथा ॥ देवीरूपे निजे देहे तन्मयत्वाय साधकः ॥ ५ ॥ ना देवोऽभ्यर्चयेद्देवमिति वेदविदो विदुः ॥ ततो भे
दायका ये स्वेभावे देवता इमाः ॥ ६ ॥ अथ तत्संप्रवक्ष्यामि तन्मयत्वमथो भवेत् ॥ गायत्री हृदयस्यास्याप्यह
मेव ऋषिः स्मृतः ॥ ७ ॥ गायत्री छंद उद्दिष्टं देवता परमेश्वरी ॥ पूर्वोक्तेन प्रकारेण कुर्यादंगानि षट्क्रमात् ॥
आसने विजने देशे ध्यायेद्देकाग्रमानसः ॥ ८ ॥

॥ १४ ॥

॥ १५ ॥

॥ १६ ॥

र्यः ॥ ३ ॥ विराड् रूपामिति विराड् रूपां गायत्रीं ध्यात्वा तस्या अंगस्थानीया वक्ष्यमाण देवता भावयित्वा पिंडब्रह्मांडयोरैक्यान्निजं देहमपि श्री
गायत्रीरूपं विभाव्यतस्मिन् देहे वक्ष्यमाण देवतान्यसेदित्यर्थः ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ अहमेव नारायण ऋषिरित्यर्थः ॥ ७ ॥
परमेश्वरी गायत्री देवता ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥

॥ ४ ॥

सर्वदेवताभिर्भावेदित्यर्थः सर्वनएवंवचनोन्मज्जंअहनीयः सवितुर्वरेण्यायतेजसेइत्यर्थः पूर्वोक्तयापपूर्वस्यांदिद्युदितायेतिफलितोर्थः प्रात

अथार्यन्यासः ॥ योर्मूर्तिदेवतं ॥ दंतपंक्तावश्विनौ ॥ उभेसंध्येचोष्ठौ ॥ मुखमग्निः ॥ जिह्वासरस्वती ॥ ग्री
वायांतुबृहस्पतिः ॥ स्तनयोर्वसवोष्ठौ ॥ बाह्वोर्मरुतः ॥ हृदयेपर्जन्यः ॥ आकाशमुदरं ॥ नाभावंतरिक्षं ॥ क
ट्योरिंद्राग्नी ॥ जघनेविज्ञानधनःप्रजापतिः ॥ कैलासमलयेऊरू ॥ विश्वेदेवाजान्वोः ॥ जंघायांकौशिकः ॥
गुह्यमग्नने ॥ ऊरूपितरः ॥ पादौपृथिवी ॥ वनस्पतयोंगुलीषु ॥ ऋषयोरोमाणि ॥ नखानिमुहूर्तानि ॥ अ
स्थिषुग्रहाः ॥ असृङ्मांसंशतवः ॥ संबत्सरावेनिमिषं ॥ अहोरात्रावादित्यश्चंद्रमाः ॥ प्रवरांदिव्यांगायत्रीं
सहस्रनेत्रांशरणमहंप्रपद्ये ॥ ॐ तत्सवितुर्वरेण्याय नमः ॥ ॐ तत्पूर्वाजयाय नमः ॥ तत्प्रातःरादित्याय न
मः ॥ तत्प्रातरादित्यप्रतिष्ठायै नमः ॥ प्रातरधीयानोरात्रिकृतं पापं नाशयति ॥ सायमधीयानोदिवसकृतं पा
पं नाशयति ॥ सायंप्रातरधीयानोअपापोभवति ॥ सर्वतीर्थेषुस्नातोभवति ॥ सर्वैर्देवैर्ज्ञातोभवति ॥ अवाच्य
वचनात्पूतोभवति ॥ अभक्ष्यभक्षणात्पूतोभवति ॥ अभोज्यभोजनात्पूतोभवति ॥ अच्योष्यचोषणात्पूतोभव
ति ॥ असाध्यसाधनात्पूतोभवति ॥ दुष्प्रतिग्रहशतसहस्रात्पूतोभवति ॥ सर्वप्रतिग्रहात्पूतोभवति ॥ पंक्ति
दूषणात्पूतोभवति ॥ अनृतवचनात्पूतोभवति ॥ अथाब्रह्मचारीब्रह्मचारीभवति ॥ अनेन हृदयेनाधीतेन क्रतु
सहस्रेणेष्टंभवति ॥ षष्टिशतसहस्रगायत्र्याजप्यानिफलानिभवंति ॥ अष्टौब्राह्मणान्सम्यग्ग्राहयेत् ॥ तस्य
सिद्धिर्भवति ॥ यद्दंनित्यमधीयानोब्राह्मणः प्रातःशुचिः सर्वपापैः प्रमुच्यत इति ॥ ब्रह्मलेकेमहीयते ॥ इत्याह भ
गवान् श्रीनारायणः ॥ इति श्रीदेवीभा • द्वादशस्कंधे गायत्री हृदयं नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ ६२ ॥

रादित्येवादित्यमंडलेप्रतिष्ठाप्यस्वागावभ्यासस्वैरुह्यत्यर्थः फलमाह प्रातरधीयानइति ॥ इति श्रीदे • भा • द्वादशस्कंधे चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

दे.भा.द्रा.

॥ ५ ॥

भक्तानुकंपिनिति ॥ १ ॥ २ ॥ गायत्रीब्राह्मीब्राह्मणः समानाकारत्वात्तेनाराध्यत्वाद्वा सावित्रीरौद्रात्समानाकारत्वात्तेनाराध्यत्वाद्वा सरस्वती
वैष्णवीविष्णुसमानाकारत्वात्तेनाराध्यत्वाद्वा गायत्रीरक्ता सावित्रीश्वेता सरस्वतीसितेतराकृष्णा ॥ ३ ॥ तिसृणांक्रमेणवयोवस्थामा
ह प्रातरिति याच्यतेतस्यनमइतिशेषः ॥ ४ ॥ तिसृणांदेवतानांवाहनान्याह हंसस्योतहंसस्याब्राह्मी गरुडाखंडासरस्वती वृषभवाहिनीसावि

नारदउवाच ॥ भक्तानुकंपिन्सर्वज्ञहृदयंपापनाशनं ॥ गायत्र्याः कथितं तस्माद्गायत्र्याः स्तोत्रमरिय ॥ १ ॥
नारायणउवाच ॥ आदिशक्तेजगन्मातर्भक्तानुग्रहकारिणि ॥ सर्वत्रव्यापिकेनंते श्रीसंध्येतेनमोस्तुते ॥ २ ॥
त्वमेवसर्वव्यापयत्रीसावित्रीवसरस्वती ॥ ब्राह्मीववैष्णवीरौद्रीरक्ताश्वेतासितेतरा ॥ ३ ॥ प्रातर्बाल्यचमय्या
होमैवमस्याभवेत्युचः ॥ वृद्धास्त्यागभवतीचित्यतेमुनिभिः सदा ॥ ४ ॥ हंसस्थागरुडारूढास्तथावृषभवाहि
नी ॥ ऋग्वेदाख्यायिणीभूमौदृश्यतेयातपस्विभिः ॥ ५ ॥ यजुर्वेदं पठंती च अंतरिक्षे विराजते ॥ सासामगापि स
र्वेषु भ्राम्यमाणास्तथाभुवि ॥ ६ ॥ रुद्रलोके गता त्वंहि विष्णुलोके निवासिनी ॥ त्वमेव ब्रह्मणो लोकं मर्त्यानुग्रह
कारिणी ॥ ७ ॥ सप्तर्षिप्रीतिजननी मायावहविरप्रदा ॥ शिवयोः करनेत्रोत्थाह्यग्रस्वेदसमुद्भवा ॥ ८ ॥ आ
र्चयन्तस्त्रीकुर्वाद्वाधापरिपठ्यते ॥ चरेण्यावरदाचैववरिष्ठावरवर्णिनी ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥

त्री देवतान्नयस्यक्रमेणवेदत्रयोत्पादकत्वमाह ऋग्वेदेति ॥ ५ ॥ भ्राम्यमाणेति भुविसर्वत्रविद्यमानापिरुद्रलोके गतेत्यर्थः रुद्रलो
के गतेति देवतान्नयस्य यथायोग्यं लोकत्रययोजनीयं ॥ ६ ॥ अमर्त्यानुग्रहकारिणीति छेदः यैतादृशी तस्यैव नमइति शेषः ॥ ७ ॥ शि
वयोरिति शिवयोः शिवशैवयोः कस्मिन्नेत्रयोर्वयवयोः या निर्गता देवविधादशरूपादुर्गा सापित्वमेवासौत्यर्थः इत्यंकायाकात्वायनीर्तनादौ प्रसिद्धा
॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥

टी.अ.

५

॥ ५ ॥

भोग्यो भोग्यः ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ तोयाकर्तो मा ॥ २९ ॥ गोमयोद
कंठस्थः ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥
५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

पाताले भोगवत्यपि ॥ त्रिलोकवाहिनी देवी स्थानत्रयनिवासिनी ॥ ११ ॥ भूलोकस्थात्वमेवासि धरित्री शोक
धारिणी ॥ भुवोलोका वायुशक्तिः स्वलोके तेजसां निधिः ॥ १२ ॥ महर्लोके महासिद्धिर्जनलोके जनन्यपि ॥ तप
स्विना तपोलोके सत्यलोके तु सत्यवाक् ॥ १३ ॥ कमलाविष्णुलोके च गायत्री ब्रह्मलोकदा ॥ रुद्रलोके स्थिता गौरी
हंसद्वीगे निवासिनी ॥ १४ ॥ अहमो महतश्चैव प्रकृतिस्त्वं हि गीयसे ॥ साम्यावस्था मिका त्वं हि शबलब्रह्मरूपि
णी ॥ १५ ॥ ततः परा पराशक्तिः परमा त्वं हि गीयसे ॥ इच्छाशक्तिः क्रियाशक्तिर्ज्ञानशक्तिस्त्रिधा तदा ॥ १६ ॥ गंगा
च यमुना चैवा विपाशा च सरस्वती ॥ शरयू देविका सिधुर्नर्मदैरावती तथा ॥ १७ ॥ गोदावरी शतद्रुश्च कवेरी देव
लोकगा ॥ कोशिकी चंद्रभागा नूतितस्तच सरस्वती ॥ १८ ॥ गंडकी तपिनी तोया गोमती चैत्रवत्यपि ॥ इडा च पि
गला चैव सुषुम्ना च तृतीयक ॥ १९ ॥ गांधारी हस्तजिह्वा च पूषा पूषा तथैव च ॥ अलंबुषा कुहूश्चैव शंखिनी प्राण
वाहिनी ॥ २० ॥ नाडी च त्वं शरीरस्था गीयसे प्राक्तनैर्बुधैः ॥ हृत्पद्मस्था प्राणशक्तिः कंठस्था स्वप्ननायिका
॥ २१ ॥ तालुस्था त्वं सदा धारा बिंदुस्था बिंदुमालिनी ॥ मूले तु कुंडली शक्तिर्व्यापिनी किशमूलगा ॥ २२ ॥ शिखा
मध्यासना त्वं हि शिखाग्रे तु मनोन्मनी ॥ किमन्यद्बहुनोक्तेन यत्किंचिज्जगतीत्रये ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥

॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
लिनी बिंदुलक्ष्मणमाल तेशो भत इत्यर्थः मूले मूलाधारे कुंडली केशमूलगा चूडामूलपर्यंतं व्याप्ता व्यापिनी ॥ २२ ॥ शिखामध्यासना तस्याः
शिखाया मध्ये परमात्मव्यवस्थित इति भुक्त्या शिखान्नानकला तस्या मध्ये असमं स्थितिर्यस्याः सा परमात्मरूपिणीत्यर्थः शिखाग्रे तस्या एव
शिखाया मध्ये तदां ये मानसि गवे सति मनोन्मनी शक्तिरेवात्र विप्रते इति योगप्रसिद्धं ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

प्रिये कोशकर्मविशेषः संभृत्येकवचनेनैकैव गायत्रीसंघातपरूपेण ध्येयेत्युक्तमिति बोध्यं उपपादितं चैतदेकादशस्कंधे ॥ २४ ॥

५२५ ॥ २६ ॥ २७॥ २८॥ गारुडसिंहोदधनं संध्योक्तं संध्यादेशेनोक्तं स्तोत्रमित्यर्थः ॥ २९ ॥ इति श्रीदेवीभागवतात्मिके द्वादशस्कंधे

4

सर्वपापविनाशनं ॥ इति श्रीश्रीगणेशाय नमः ॥ इति श्रीश्रीगणेशाय नमः ॥ इति श्रीश्रीगणेशाय नमः ॥
इति श्रीश्रीगणेशाय नमः ॥ इति श्रीश्रीगणेशाय नमः ॥ इति श्रीश्रीगणेशाय नमः ॥

धर्मयोग्याः ॥ ५ ॥ पंचवह्निभोक्तव्यैः शतश्लोकाधिकैरेव ॥ मायया भ्रमहादेनानां साहसमुज्यते ॥ १ ॥ अथ वारहः सर्वाभीष्टप्रदं सर्वा
 पुत्रानपुत्रपुत्रिहरं मायश्रीसहस्रनामस्तोत्रं भोक्तुं नामः पृच्छति भक्तस्सर्वधर्मज्ञ इति ॥ १ ॥ विष्णवे नमः ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥
 अथ वारहः ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥

NEH

॥ ११ ॥ मातृकाक्षरैरिति मातृकामंत्रषडंगत्वात्षडंगइत्यर्थः ॥ ८ ॥ प्रातःकालिकं गायत्रीसंध्यारूपाया देव्या ध्यानमाह रक्तेति रक्तश्वेतहिरण्यनीलधवलैर्युक्तामित्यर्थः प्रातःसंध्याभ्यामुर्ववत्कात्पंचमुखं ज्योतिर्गर्भं न युक्तमिति मणिगणैरित्यस्यैव विशेषणं युक्तं रक्तनवसुबं रक्तपुष्पजमित्यर्थः कुंडं कुंडिकां अनुबंचकरतलभ्यां व्यानद्वकुंडांबुजांपद्मां ॥ ९ ॥ अथ मातृकाक्षरक्रमेणैव सहस्रनामान्युच्यंते तत्र प्रथमतो अर्चित्यलक्षणे त्पारभ्यां त्यजाचिंतेत्यंतान्यकारादीनि पंचत्रिंशन्नामान्याह अर्चित्यलक्षणे

कुंडो नुष्टुतया देवी गायत्री देवता स्मृता ॥ हलोर्बीजानितस्यैव स्वराः शक्तय ईरिताः ॥ ७ ॥ अंगन्यासकरन्यासां बुध्यते मातृकाक्षरैः ॥ अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि साधकानां हिताय वै ॥ ८ ॥ रक्तश्वेतहिरण्यनीलधवलैर्युक्तां त्रिनेत्रां ज्वलारक्तारक्तनवस्त्रजं मणिगणैर्युक्तां कुमारीमिमाम् ॥ गायत्री कमलासनां करतलव्यानद्वकुंडांबुजांपद्मां क्षीचवरस्त्रजंचदधतीं हंसाधिरूढां भजे ॥ ९ ॥ अर्चित्यलक्षणाव्यक्ताप्यर्थमातृमहेश्वरी ॥ अमृतार्णवमध्यस्थाप्यजिताचापराजिता ॥ १० ॥ अणिमादिगुणाधाराप्यर्कमंडलसंस्थिता ॥ अजराजापराधर्मा अक्षसूत्रधराधरा ॥ ११ ॥ अकारादिक्षकारांताप्यरिषड्वर्गभेदिनी ॥ अंजनाद्रिप्रतीकाशाप्यंजनाद्रिनिवासिनी ॥ १२ ॥

ति अनुदिलक्षणेत्यर्थः यतो वाचो निर्वर्तते इति श्रुतेः अव्यक्ता अस्पष्टानामरूपरहितेत्यर्थः तत्त्वे दंतर्ह्यव्याकृतमासीत्तन्नामरूपाभ्यां व्याक्रियत इति श्रुतेः अर्थमातारः प्रपंचरूपार्थपरिच्छेदका ब्रह्मादयस्तेषां महेश्वरी नियन्त्री अपिशद्वः संध्यभावायासंदेहार्थः अनितानान्यैर्जिता अपराजिता युद्धेऽप्यपराजितानपराजयं प्राप्ता अनिता पराजितेऽष्टांशस्त्यंतर्भेदे देवते वा ॥ १० ॥ अणिमादिगुणा अणिमादिषु द्वयस्तेषां माधाराधाराभ्रयभूता अजा अजामेकामिति श्रुतेः नपरोधिकोयस्याः साऽपरा नधर्मो जात्यादिनिमित्तोयस्याः साऽधर्मा अधरानि कृष्टरूपापीयमेव ॥ ११ ॥ अकारादीर्यस्याः क्षकारोत्तेयस्याः सा मातृका रूपिणीत्यर्थः ॥ १२ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.द्वा

॥ ७ ॥

अदितिर्देवमाता अन्नपामायत्री अविद्याजीवोपाधिस्तस्यध्वंसिनी ॥ १३ ॥ अजाछात्री अजमुखं ब्रह्ममुखं तस्मिन्निवासोयस्याः अर्धमात्रा
अर्धमात्रास्थितानित्येत्युक्ता अर्थदानं पुरुषार्थं चतुष्टयदानं तस्य ज्ञाज्ञात्रीत्यर्थः ॥ १४ ॥ अंत्बजामातंगीरुपिणीतया अर्चिता पूजिता आदि
लक्ष्मी इत्यारभ्यां रध्वांतनाशिनीत्यंतान्याकारादीनि द्वाविंशतिनामानि आदिलक्ष्मीः भाम्यावस्थमायाशबलब्रह्मरूपिणी मूर्तिस्तप्तकांचनवर्ण
भातप्तकांचनभूषणेति रहस्योक्ता महालक्ष्मीः आदिशक्तिर्माया आकृतिराकाररूपिणी आशतं हास्येन विस्तृतमाननं यस्याः ॥ १५ ॥ आ

अदितिश्चाजपाविद्याप्यरविंदनिभेक्षणा ॥ अंतर्बहिस्थिताविद्याध्वंसिनीचांतरात्मिका ॥ १३ ॥ अजाचाजमु
खावासाप्यरविंदनिभानना ॥ अर्द्धमात्रार्थदानज्ञाप्यरिमंडलमर्दिनी ॥ १४ ॥ असुरघ्नीह्यमावास्याप्यल
क्ष्मीद्वयं त्यजार्चिता ॥ आदिलक्ष्मीश्चादिशक्तिराकृतिश्चायतानना ॥ १५ ॥ आदित्यपदवीचाराप्यादित्यपरिसे
विता ॥ आचार्यावर्तनाचाराप्यादिमूर्तिनिवासिनी ॥ १६ ॥ आग्नेयीचामरीचाद्याचाराध्याचासनस्थिता ॥
आधारनिलयाधाराचाकाशांतनिवासिनी ॥ १७ ॥ आद्याक्षरसमायुक्ताचांतराकाशरूपिणी ॥ आदित्यमंड
लगताचांतरध्वांतनाशिनी ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥

दित्यपदवी आदित्य मार्गस्तास्मिंश्चरश्चरणं यस्याः आदित्येनादितिपुत्रेण सेविता आचार्यास्वयंव्याख्यात्री आवर्तनाजगद्वर्तयित्री आचाराद
क्षिणाचाराद्याचाररूपिणीत्यर्थः आदिमूर्तिर्ब्रह्मतास्मिन्निवासशीला ॥ १६ ॥ आग्नेयीअग्निदेवताकात्रकृदिशावा आमरीअमराणामियंपु
रीआमरी अमरावर्तीरूपिणीत्यर्थः आधारोमूलधारः सनिलयोवासस्थानं यस्याः कुंडलिन्याः सा आधारसर्वाधररूपिणी आकाशांतोहंका
रत्वं तस्मिन्नाकाशस्थलयातु तस्मिन्निवासशीला ॥ १७ ॥ अंतरेदेहमध्ये भवत्याकाशोदहराकाशस्तद्रूपिणी आंतरध्वांतमविद्यांधकारस्त
स्यनाशिनी ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥

टी.अ.
६

॥ ७ ॥

इंदिरैस्सार्त्येद्राक्षीसंतानि त्रयोदशह्रस्वेकारादीनिनामानि चकारःसंध्यभावर्यः इरावती इराभूवांकुसुरांबुधितमेदिनीकोशाद् भूवाकसु
 रानुवतीत्यर्थः ॥२९॥ इक्षुकोदंडपौंड्रेक्षुधनुस्तेनसंयुक्ता पौंड्रेक्षुपाशांकुशपुष्पबाणहस्तेनमस्तेनमदेकमातरितिललिताध्यानेउत्कृष्टात् २०॥
 इंद्राक्षीशताक्षीनार्क्षीदेवता ईश्वरीदेवी ईहात्रयविवर्जितेतिनामद्वयंदीर्घेकारादिकं ईश्वरीणांमहाकांल्यादीनांदेवीश्वरीदेवी ईहात्रयमेषणा
 त्रयंतेनविवर्जिता उमेत्यारभ्योडुमध्यगेत्यंतान्यष्टौह्रस्वेकारादीनिनामानि उमाप्रसिद्धा उषारात्रिशेषरूपिणीबाणासुरसुतावा उमाबाणसुता
 सच्योरितिमेदिनी उडुनिभानक्षत्रसदृशी उर्वाकंककंकटी ॥२१॥ उडुपापोतरूपिणीचंद्ररूपिणीवा ऊर्वाहीन्यूर्मिमालावाग्रंधदायिनीत्यंता

इंदिराचेष्टदाचेष्टाचेंदीवरनिभेक्षणा ॥ इरावतीचेंद्रपदाचेंद्राणीचेंदुरूपिणी ॥ १९ ॥ इक्षुकोदंडसंयुक्ताचेष्ट
 संधानकारिणी ॥ इंद्रनीलसमाकाराचेडापिंगलरूपिणी ॥ २० ॥ इंद्राक्षीचेश्वरीदेवीचेहात्रयविवर्जिता ॥ उ
 माचेष्टाह्युडुनिभाउर्वाकंकफलानना ॥ २१ ॥ उडुप्रभाचोडुमतीह्युडुपाह्युडुमध्यगा ॥ ऊर्ध्वचाप्यूर्ध्वकेशी
 चाप्यूर्ध्वाधोगतिमेदिनी ॥ २२ ॥ ऊर्ध्वबाहुप्रियाचेर्मिमालावाग्रंधदायिनी ॥ ऋतंचर्षिर्ऋतुमतीऋषिदेवन
 मस्कृता ॥ २३ ॥ ऋग्वेदाऋणहर्त्रांचर्षिमंडलचारिणी ॥ ऋदिदाऋजुमार्गस्थाऋजुधर्माऋतुप्रदा ॥ २४ ॥
 ऋग्वेदनिलयाऋष्वीलुप्तधर्मप्रवर्तिनी ॥ लूतारिवरसंभूतालूतादिविषहारिणी ॥ २५ ॥ ॥ ६१ ॥

निपंचदीर्घोकारादीनिनामानि ऊर्ध्वमूर्ध्वदेशरूपिणी ऊर्ध्वकेशी ऊर्वाःकेशायस्याः ऊर्वाधोगतिरुच्चनीचगतिस्तस्याभेदिनी ॥२२॥ ऊर्ध्व
 मालासमुद्रतरंगमालाबद्धाचाग्रंधःकवितारूपःकक्षारूपोवातस्यदायिनी ऋतमित्यादीनिऋष्वीत्यंतानि त्रयोदशह्रस्वकारादीनिनामानि ऋतं
 सूनृतवाणीरूपाऋषिवैदरूपा ऋतुमतीरजस्वला ॥२३॥२४॥ दीर्घऋकारादीनांनामप्रसिद्धत्वात्तानिनोक्तानि लकारादिनामान्यप्यप्र
 सिद्धानिययपितथापिलकारेलकारस्यसत्त्वाच्चदादिकमेवनामत्रयमुच्यते लूतारिवरसंभूता भुक्तेलूतातूर्णनाभिपीलिकागदांतरेइतिमेदिनीको
 शाऋतारोगमिशेषस्तस्यारिपरःशत्रुभेष्टस्तत्राशकोमंत्रःससंभूतोयस्याःसा ॥ २५ ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥

दे.भा.द्वा

॥ ८ ॥

एकाक्षरेत्यारभ्यनामचतुष्टयमेकारवर्णादिकमर्थस्तु स्पष्ट एव ऐंद्रियादिनामत्रयमैकारादिकं ऐहिकामुष्मिकफलस्यप्रदात्रीत्यर्थः ॥ २६ ॥
ओंकारेत्यादीनि चत्वारि नामान्योकारादीनि ओंकाराप्रणवरूपी ओतामणिषुसूत्रवत्सुवांम्यंतरेस्थिता कस्मिन्निदमोतंचेतिभ्रुत्यापरमात्म
विसर्गस्योतंचमोतंचास्तीति तस्मिन्मोतंचोतेजगतिनिवसतितच्छालाओतंचोतनिवासिनीत्यर्थः और्वेत्यादिनामत्रयमौकारादिकं ऊर्व्या
भवाऔर्वा ॥ २७ ॥ अनुस्वारादिकमेकं नाम विसर्गादिकमेकं नाम अंडमध्यास्थितानां शक्तीनां देवीत्यर्थः अःकाररूपो विसर्गरूपो योमंत्रस्त

टी.अ.

६

एकाक्षराचैकमात्राचैकाचैकैकनिष्ठिता ॥ ऐंद्रिह्यैरावतारूढा वैहिकामुष्मिकप्रदा ॥ २६ ॥ ओंकाराह्योषधीचो
ताचोतंचोतनिवासिनी ॥ और्वह्यौषधसंपन्ना औपासनफलप्रदा ॥ २७ ॥ अंडमध्यस्थिता देवी चाःकारमनुरूपि
णी ॥ कात्यायनी कालरात्रिः कामाक्षी कामसुंदरी ॥ २८ ॥ अमला कामिनी कांता कामदा कलकंठिनी ॥ करिकुं
भस्तनभरा करवीर सुवासिनी ॥ २९ ॥ कल्याणी कुंडलवती कुरुक्षेत्रनिवासिनी ॥ कुरुविंद दलाकारा कुंडली
कुमुदालया ॥ ३० ॥ कालजिह्वाकरालस्या कालिका कालरूपिणी ॥ कमनीयगुणा कांतिः कलाधारा कुमुद्वती ॥
॥ ३१ ॥ कौशिकी कमलाकारा कामचारप्रभांजिनी ॥ कौमारी करुणापांगी ककुब्जा करिप्रिया ॥ ३२ ॥ केस
री केशवनुता कदंबकुसुमप्रिया ॥ कालिंदी कालिका कांची कलशोद्भव संस्तुता ॥ ३३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥

रूपिणी तंत्रराजे विसर्गस्य शक्त्यात्मकत्वेन वर्णनात् मायाशक्त्यभिधः सर्गः सर्वभूतात्मकः प्रभुरितितंत्रांतरोक्तेश्च कात्यायनीत्यारभ्य कुक्षिस्था
खिलविष्टयेत्यंतानि एकोनसप्तद्विकारादीनि नामानि ॥ २८ ॥ करवीरसुवासिनी करवीरकृपाणी स्यादस्य भेदाश्चमारयो रिति मेदिनी कोशात्
करवीरैतस्य विशेषस्तेन पूजिता सुवासिनीत्यर्थः यदा करवीरं महालक्ष्मीक्षेत्रं तत्र निवसन्शीलेत्यर्थः ॥ २९ ॥ कुरुविंद दलाकारा कुरुविंदरत्नभेदे
मुक्ता कुम्भाषयोः पुमानिति मेदिनी कोशान्मुक्तादलाकारेत्यर्थः ॥ ३० ॥ ३१ ॥ कामचारोषधेष्टा चरणंतस्य नाशिनी ककुब्जा ककुभांदि
शानमयं तानासगरूपा ॥ ३२ ॥ केसरी सिंह रूपिणीत्यर्थः कलशोद्भवोऽस्ति स्तेन संस्तुता ॥ ३३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥

॥ ८ ॥

कुंडलमाधेहोत्रकुंडतत्रिलया ॥ ३४ ॥ केतकीतिस्वतंत्रनाम कुसुमप्रियेतिस्वतंत्रनाम कालीत्यत्रकूरेत्यपिपाठः ॥ ३५ ॥ कक्षे
त्यत्रकुम्भेत्यपिपाठः ॥ ३६ ॥ कृष्णेत्यत्रकृष्टेत्यपिपाठः कृष्टाभाकृष्टा कक्षेतिगुणवत्कृष्णनाम तदर्थस्तुपूर्वत्रकृष्णसुंदरीद्वितीयेकनामा
श्रीकाचनदेवंगमा कंघ्रिपिपाठेनपुनस्तुतिः ॥ ३७ ॥ खड्गखेटकरेत्यारभ्यखंडेंदुतिलकेत्यंतानिष्टाशङ्करादीनिनामानि ख

काममाताक्रतुमतीकामरूपाकृपावती ॥ कुमारीकुंडनिलयाकिरातीकीरवाहना ॥ ३४ ॥ कैकेयीकोकिलालापके
तकीकुसुमप्रिया ॥ कमंडलुधराकालीकर्मनिर्मूलकारिणी ॥ ३५ ॥ कलहंसगतिःकक्षाकृतकौतुकमंगला ॥ क
स्तूरीतिलकाकक्षाकरिर्द्रुगमनाकुहूः ॥ ३६ ॥ कर्पूरलेपनाकृष्णाकपिलकुहराश्रया ॥ कूटस्थाकुधराकक्षा
कुक्षिस्थाखिलविष्टपा ॥ ३७ ॥ खड्गखेटकराखर्वाखेचरीखगवाहना ॥ खट्वांगधारिणीस्याताखगराजोपरि
स्थिता ॥ ३८ ॥ खलघ्नीखंडितजराखडास्यानप्रदायिनी ॥ खंडेंदुतिलकागंगागणेशगुहपूजिता ॥ ४९ ॥
गायत्रीगोमतीगीतागांधारीगानलोलुपा ॥ गौतमीगामिनीगाधागंधर्वाप्सरसेविता ॥ ४० ॥ गोविंदच
रणाक्रांतागुणत्रयविभाविता ॥ गंधर्वीगव्हरीगोत्रागिरीशागहनागमी ॥ ४१ ॥ गुहावासागुणवतीगुरु
पापप्रणाशिनी ॥ गुर्वीगुणवतीगुह्यागोप्तव्यागुणदायिनी ॥ ४२ ॥ गिरिजागुह्यमातंगीगरुडध्वजवल्लभा
गर्वापहारिणीगोदागोकुलस्थागदाधरा ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४४ ॥

खड्गखेटकरेतिएकं नामबोध्यं ॥ ३८ ॥ खडास्यानप्रदायिनी खडःपानांतरेभेदेइतिमेदिनीकोशात्खडःपानशास्त्रंभेदशास्त्रंवातस्या
स्यानदायिनी गंगेत्यारभ्यगुह्यमंडलवर्तिनीत्यंतानिष्टाशङ्करादीनिनामानि गणेशगुहपूजितेतिनाम ॥ ३९ ॥ गामिनीगमनशी
ला गाधामतिष्ठारूपिणी गंधर्वाप्सरेत्यत्रसकारलोपार्थः ॥ ४० ॥ गोत्रापृथ्वी गमी गमोनाक्षविकर्तेत्यादपर्यालोचनेध्वनीतिमेदिनी
कोशाद्गमोपर्यालोचनंतस्यास्तीत्यर्थेऽंशावच्छ्र तस्यस्त्रीत्यर्थेपुंयोगाद्वाख्यायामितिडीप् ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥

दे.भा.द्वा

॥ ९ ॥

गोकर्णनिलयासक्तागोकर्णस्थाप्रासक्ता चर्मदेत्यारभ्यचन्द्रेगिरीत्यन्ताविषतुर्दशकारादीनिनामानि ॥ ४४ ॥ घृणिमंत्रःसूर्यमंत्रः
॥ ४५ ॥ घृणिमंत्रःसूर्यमंत्रः ॥ ४५ ॥ घृणिमंत्रःसूर्यमंत्रः ॥ ४५ ॥ घृणिमंत्रःसूर्यमंत्रः ॥ ४५ ॥ घृणिमंत्रःसूर्यमंत्रः ॥ ४५ ॥
पुत्र तदादिकमेकमेवनामज्ञानधातुमयीत्युच्यतेज्ञानधातुश्चेद्वानुस्तन्मयी चर्चेत्यारभ्यचारुदेतुकीत्यन्ताविषकारादीन्येकौनपञ्चाशन्नामानि

टी.अ.
६.

गोकर्णनिलयासक्तागुह्यमंडलवर्तिनी ॥ घर्मदाघनदाघंटाघोरदानवमर्दिनी ॥ ४४ ॥ घृणिमंत्रमयीघोषाघ
नसंपत्तिदायिनी ॥ घंटाखप्रियाघ्राणाघृणिसंतुष्टिकारिणी ॥ ४५ ॥ घनारिमंडलाघूर्णाघृताचीघनवेगिनी ॥
ज्ञानधातुमयीचर्चाचर्चिताचारुहासिनी ॥ ४६ ॥ चटुलाचंडिकाचित्राचित्रमाल्यविभूषिता ॥ चतुर्भुजाचारुदंता
चातुरीचरितप्रदा ॥ ४७ ॥ चूलिकाचित्रवस्त्रांताचंद्रमःकर्णकुंडला ॥ चंद्रहासाचारुदात्रीचकोरीचंद्रहासिनी
॥ ४८ ॥ चंद्रिकाचंद्रधात्रीचचौरीचोराचचंडिका ॥ चंद्रहासाचारुदात्रीचकोरीचंद्रहासिनी ॥ ४९ ॥ चारुचंदनलि
तांगीचंचच्चांमरवीजिता ॥ चारुमध्याचारुगतिश्चंदिलाचंद्ररूपिणी ॥ ५० ॥ चारुहोमप्रियाचार्वारिताचक्रबा
हुका ॥ चंद्रमंडलमध्यस्थाचंद्रमंडलदर्पणा ॥ ५१ ॥ चक्रवाकस्तनीचेष्टाचित्राचारुविलासिनी ॥ चित्स्वरूपाचं
द्रवतीचंद्रमाश्चंदनप्रिया ॥ ५२ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६१ ॥

चापरेभाषणक्रियारूपा चर्चिताचंदनादिना ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ चूलिकाचित्रवस्त्रांताचंद्रमःकर्णकुंडला
यस्याःसा चंद्रनदाल्हादकरोहासोयस्याःखड्गरूपासा चंद्रस्यहासिनीहसनशीला चंद्रमिक्षबास्वस्यातिशयाद्वादनकत्वात् ॥ ४८ ॥ चौ
रीचुराशीलमस्याःसा चोराचोरःपाटखरेपिस्याचौरपुष्पौषधायीतिमोदिनीकोशादौषधिविशेषरूपा ॥ ५१ ॥ चंदिलाकर्णकुण्डलेशोमसिद्धि
देताचंद्रिकेत्यपिपाठः ॥ ५० ॥ चक्रं सुदर्शनं नैवाहस्तेषस्याःसा ॥ ५१ ॥ चंद्रमास्तत्स्वरूपा ॥ ५२ ॥ ॥ ६१ ॥

॥ ९ ॥

चोदयित्रीप्रेरयित्री चाष्टेदुर्गमत्सर्जनैयस्याः सा गौरादिपाठात्साधुत्वं छत्रयातेत्यारभ्यछेदनुसृष्टेयंतानिचतुर्दशछकारादीनिनामानि
छंदःपरिच्छदा छंदोवक्ष्येयभिप्रवेधीदापुत्रीमनीषयोरितिमेदिनीकोशात्कोपिच्छंदोप्राप्तः ॥ ५३ ॥ छायादेवीछिद्रनखा छिद्र
नखा छिद्रदूषणरंधयोरितिमेदिनीकोशात् रंधयतिनखानियस्याः छनेन्द्रियाज्यसंहर्तेन्द्रियाः पुरुषाद्येभिनस्तपुविसर्पतिगच्छतितच्छीला छं
दः संज्ञकायानुष्टुप्तस्याः प्रतिष्ठायाः स्थलस्यांतः समाप्तिः अनुष्टुप्छंदस्कर्मत्रबोधेत्यर्थः छिद्रोपद्रवाः कपटोपद्रवास्तेषांभेदिनी ॥ ५४ ॥
जननीत्यारभ्यकुंडलेयंतानिचत्वारिंशत्छकारादीनिनामानि ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ जितेनजयेनाक्रांताः पुरुषास्तन्मयी व्या

चोदयित्रीचिरप्रज्ञाचातकाचारुहेतुकी ॥ छत्रयाताछत्रधराछायाछंदःपरिच्छदा ॥ ५३ ॥ छायादेवीछिद्रनखा
छनेन्द्रियविसर्पिणी ॥ छंदोनुष्टुप्प्रतिष्ठांतछिद्रोपद्रवभेदिनी ॥ ५४ ॥ छेदाछत्रेश्वरीछिन्नाछूरिकाछेदनप्रि
या ॥ जननीजन्मरहिताजातवेदाजगन्मयी ॥ ५५ ॥ जान्हवीजटिलाजेत्रीजरामरणवर्जिता ॥ जंबूझीपवती
ज्वालाजघंतीजलशालिनी ॥ ५६ ॥ जितेन्द्रियाजितक्रोधजितामित्राजगत्प्रिया ॥ जातरूपमयीजिह्वाजान
कीजगतीक्षुरा ॥ ५७ ॥ जनित्रीजन्हुतनयाजगन्नयहिंसैषिणी ॥ ज्वालामुखीजपवतीज्वरघ्नीजितविष्टपा ॥ ५८ ॥
जिताक्रांतमयीज्वालाजाग्रतीज्वरदेवता ॥ ज्वलंतीजलदाज्येष्ठाज्याघोषास्फोटदिङ्मुखी ॥ ५९ ॥ जंभिनी
जंभिणार्जुंभाज्वलन्मणिकुंडला ॥ शिंशिकाझणनिर्घोषाझंझामास्तवेगिनी ॥ ६० ॥ झल्लकीवाद्यकुश
लझरुमाजभुजास्मृता ॥ टंकवाणसमायुक्ताटंकिनीटंकभेदिनी ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥
घोषास्फोटोदिङ्मुखेयस्याः साव्याघोषास्फोटादिङ्मुखा व्याघोषव्यातदिगंतैत्यर्थः ॥ ५९ ॥ जंभिनी जंभोभक्ष्येचदंतेचेतिकोशाद्दक्षयतीदि
तवतीवैत्यर्थः शिंशिकेत्यारभ्यचत्वारिंशकारादीनिनामानि शिंशिकापक्षिविशेषोयस्यभाषायांशिगुरवाइतिप्रसिद्धिरस्ति झणइतिनिर्घोषोय
स्याः झंझासतेत्यस्याविविक्तेश्चात् झंझामास्तेभयंकरवात्स्वरदेवोयस्याः ॥ ६० ॥ झकारादिकंवायव्यंजरुणा अःपुमान्वाहलीवर्दे
शुकेचाममस्तवतीति कोशाहलीवर्देरुप अःशुकोभुजेइत्येयस्याः सा झमलांशिका जभुजा ज्वहलीवर्देकम्भुजोयस्याइतिव टंकवाणेत्यदि
पङ्कजवादीनिनामानि टंकःपद्मः ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥

दे.भा.डा

॥१०॥

टंकीमणवत्कृतमणवत्कृतआषोषययासा टंकनीयवर्णनीयमहोरोयस्याः सा टंकारकारिणीनां टंकारशब्दं कुर्वतीनां देवीनां देवी स्वामिनीत्य
र्थः ठकारादिकमेकमेव नाम ॥ ६२ ॥ डकारादीन्यष्टौ नामानि डिंभात्रालकरुपाडुं डुमारोराक्षसः ॥ ६३ ॥ डिंडीरवोवायविशेषरवस्तस्य सहासह
वकर्त्री डकारादीनि त्रीणि नामानि दुंडिविघ्नेशो दुंडिराजः ढिलिनामकागणाः शिवपुराणे प्रसिद्धास्तेषां ब्रजः समुदायो यस्य सा ॥ ६४ ॥ णकार

टी.अ.

६

टंकीगणकृताघोषाटंकनीयमहोरसा ॥ टंकारकारिणीदेवी ठठशब्दनिनादिनी ॥ ६२ ॥ डामरीडाकिनी डिंभा
डुं डुमारैकनिर्जिता ॥ डामरीतंत्रमार्गस्था डमडमरुनादिनी ॥ ६३ ॥ डिंडीरवसहा डिंभलसत्क्रीडापरायणा ॥ दुं
ढिविघ्नेशजननी ढकाहस्ता ढिलिब्रजा ॥ ६४ ॥ नित्यज्ञानानिरुपमानिर्गुणानर्मदानदी ॥ त्रिगुणात्रिपदातं
त्रीतुलसीतरुणातरुः ॥ ६५ ॥ त्रिविक्रमपदाक्रांतातुरीयपदगामिनी ॥ तरुणादित्यसंकाशातामसीतुहिना
तुरा ॥ ६६ ॥ त्रिकालज्ञानसंपन्ना त्रिवलीचत्रिलोचना ॥ त्रिशक्तिस्त्रिपुरातुंगातुरंगवदना तथा ॥ ६७ ॥
तिमिगिलगिलतीव्रा त्रिस्तोतातामसादिनी ॥ तंत्रमंत्रविशेषज्ञातनुमध्या त्रिविष्टपा ॥ ६८ ॥ त्रिसंध्या त्रिस्त
नीतोषासंस्थातालप्रतापिनी ॥ ताटंकिनी तुषाराभातुहिनाचलवासिनी ॥ ६९ ॥ तंतुजालसमायुक्ता तारहारव
लिप्रिया ॥ तिलहोमप्रिया तीर्थातमालकुसुमाकृतिः ॥ ७० ॥ तारका त्रियुतातन्वी त्रिशंकुपरिवारिता ॥
तलोदरीतिरोभाषाताटंकप्रियवादिनी ॥ ७१ ॥ त्रिजटातिनिरीतृष्णा त्रिविधातरुणाकृतिः ॥ तप्तकांचन
संकाशातप्तकांचनभूषणा ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥

दिनामोऽप्रसिद्धत्वात्स्थानेनकारादिनीतिरिति ह नित्यज्ञानेति त्रिगुणेत्यारभ्यतकारादीनि द्वाषष्टि नामानि ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥
त्रेते संतोषे आसंस्थासम्यक्स्थितिर्नस्याः त्रिस्तनीमलयध्वजराजः कन्याभिर्नैतिहलास्थमाहात्म्यप्रसिद्धा ॥ ६९ ॥ ७० ॥ त्रिभिर्गुणै
रेतन्त्रयेनयुतायुक्ता तन्वीत्यत्रतन्वीत्यापि पाठः ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥

॥१०॥

॥ ७३ ॥ त्रिभंगीस्यानत्रयेवक्रतायुक्ता तनुस्तम्बीवलरिदेहलयायस्याः सा थकारादीनेत्रीणि नमः ॥ यात्कारीयादिति शब्दं कुर्वती या
स्वा यंरक्षणे मंगले च सा ध्वसे च न पुंसकं शिलोच्चये पुमानेव कचिच्चुभय रक्षके इति मेदिनी कोशात् भयरक्षक आरावः शब्दो यस्य सा यांताप

त्रैयंबकात्रिवर्गाचत्रिकालज्ञानदायिणी ॥ तर्पणांतृप्तिदातामसीतुंबरुस्तुता ॥ ७३ ॥ ताक्ष्यस्थात्रि
गुणाकारात्रिभंगीतनुवलरिः ॥ यात्कारीथारवायांतादोहिनीदीनवत्सला ॥ ७४ ॥ दानवांतकरीदुर्गा
दुर्गासुरनिबर्हिणी ॥ देवरीतिदेवारात्रिद्रौपदीदुंदुभिस्वना ॥ ७५ ॥ देवयानीदुरावासादारिद्र्यभेदि
नीदिवा ॥ दामोदरप्रियादीप्तादिग्वासादिग्विमोहिनी ॥ ७६ ॥ दंडकारण्यनिलयादंडिनीदेवपूजि
ता ॥ देववंद्यादिविषदाद्वेषिणीदानवाकृतिः ॥ ७७ ॥ दीनानाथस्तुतादीक्षादैवतादिस्वरूपिणी ॥ धात्री
धनुर्धराधेनुर्धारिणीधर्मचारिणी ॥ ७८ ॥ धुरंधराधराधाराधनदाधान्यदोहिनी ॥ धर्मशीलाधनाध्यक्षाधनु
र्वेदविशारदा ॥ ७९ ॥ धृतिर्धान्यधृतपदाधर्मराजप्रियाध्रुवा ॥ धूमावतीधूमकेशीधर्मशास्त्रप्रकाशिनी ॥ ८० ॥
नंदानंदप्रियानिद्रानृनुतानंदनात्मिका ॥ नर्मदानलिनीनीलानीलकंठसमाश्रया ॥ ८१ ॥ नारायणप्रियानि
त्यानिर्मलानिर्गुणानिधिः ॥ निराधारानिरुपमानित्यशुद्धानिरंजना ॥ ८२ ॥ नादबिंदुकलातीतानादबिंदुक
लात्मिका ॥ नृसिंहिनीनगधरानृपनागविभूषिता ॥ ८३ ॥ नरकक्लेशशमनीनारायणपदोद्भवा ॥ निर
वद्यानिराकारानारदप्रियकारिणी ॥ ८४ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥

स्यमंगलस्यांतापर्यवसानभूमिः दोहिनीत्यारभ्यदकारादीनि सप्तविंशतिनामानि ॥ ७४ ॥ दिवायुक्तात्रिर्दिवारात्रिः ॥ ७५ ॥ ७६ ॥
दंडिनीवाराहीललितोपाख्याने प्रसिद्धा ॥ ७७ ॥ धात्रीत्यारभ्यदकारादीनि विंशतिनामानि ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ नंदेत्यारभ्यनक
रादीनि पंचपञ्चाशन्नामानि ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ नृसिंहिनीनृसिंहउपासकोस्तियस्याः सानृसिंहवेषवतीवा नृपनागविभूषितेति एकं नाम ॥ ८३ ॥ ८४ ॥

दे.भा.द्वा

॥११॥

ज्योतिर्ज्योतिःशास्त्रं ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ पार्वतीत्यारभ्यपल्लवोदरीत्यंतानिपंचविंशत्यधिकशतना
मानिपकारादीनि पंचब्रह्मात्मिकासद्योजातादिपंचब्रह्मात्मिका परब्रह्मात्मिकेत्यपिपाठः परेतिस्वतंत्रं नाम ॥ ९० ॥ पंचिकाश्रीविद्यायांपं

टी.अ.
६.

नानाज्योतिःसमाख्यातानिधिदानिर्मलात्मिका ॥ नवसूत्रधरानीतिर्निरुपद्रवकारिणी ॥ ८५ ॥ नंदजानव
रत्नाढ्यानैमिषारण्यवासिनी ॥ नवनीतप्रियानारीनीलजीमूतनिःस्वना ॥ ८६ ॥ निमेषिणीनदीरूपानील
श्रीवानिशीश्वरी ॥ नामावलिर्निशुभघ्नीनागलोकनिवासिनी ॥ ८७ ॥ नवजांबूनदप्रख्यानागलोकाधिदैवता
॥ नूपुराक्रांतचरणानरचितप्रमोदिनी ॥ ८८ ॥ निमग्नारक्तनयनानिर्घातसमनिस्वना ॥ नंदनोद्याननिल
यानिव्यूहोपरिचारिणी ॥ ८९ ॥ पार्वतीपरमोदारापरब्रह्मात्मिकापरा ॥ पंचकोशविनिर्मुक्तापंचपातकना
शिनी ॥ ९० ॥ परचित्तविधानज्ञापंचिकापंचरूपिणी ॥ पूर्णिमापरमाप्रीतिःपरतेजःप्रकाशिनी ॥ ९१ ॥ पु
राणीपौरुषीपुण्यापुंडरीकनिभेक्षणा ॥ पातालतलनिर्मग्नप्रीताप्रीतिविवर्दिनी ॥ ९२ ॥ पावनीपादसहितापेश
लापवनाशिनी ॥ प्रजापतिःपरिश्रान्तापर्वतस्तनमंडला ॥ ९३ ॥ पद्माप्रियापद्मसंस्थापद्माक्षीपद्मसंभवा ॥
पद्मपत्रापद्मपदापद्मिनीप्रियभाषिणी ॥ ९४ ॥ पशुपाशविनिर्मुक्तापुरंध्रीपुरवासिनी ॥ पुष्कलापुरुषापर्वा
पारिजातसुमप्रिया ॥ ९५ ॥ पतिव्रतापवित्रांगीपुष्पहासपरायणा ॥ प्रज्ञावतीसुतापौत्रीपुत्रपूज्यापयस्विनी
॥ ९६ ॥ पट्टिपाशधरापंक्तिःपितृलोकप्रदायिनी ॥ पुराणीपुण्यशीलाचप्रणतार्तिविनाशिनी ॥ ९७ ॥ ॥ ६४ ॥

चपंचिकापूजनंदक्षिणामूर्तिसंहितादिषुवर्णितं चिकादेवतारूपा पंचरूपिणीप्रपंचरूपिणीपरमाप्रीतिरितिनामद्वयं ॥ ९१ ॥ पौरुषीपु
षसंबंधिनी ॥ ९२ ॥ पादसहिताकिरणसहिता प्रजापतिस्तद्वृषिणी ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ पुरंध्रीत्येकं नाम पुरवासिनीमातापुरवासिनी
॥ ९५ ॥ प्रज्ञावत्याःसुतेत्येकं नाम पुत्रपूज्यापुत्रेणपूज्येत्यर्थः ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥११॥

पुंडरीकपुरांचिदंबरक्षेत्रं ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ प्रणवानां प्रस्तोत्रीणां देवांगनानां गतिः पंचवर्णाविस्तृताणी पंचिकाकाचिदेवता ॥ १०० ॥
परप्रीतिरित्येकं नाम ॥ १ ॥ २ ॥ पंचभक्षामकारपंचकभक्षामाचारिणस्तेषां प्रियआचारोयस्याः सा पूतनेत्येकं नाम ॥ ३ ॥ ४ ॥

प्रद्युम्नजननीपुष्टापितामहपरिग्रहा ॥ पुंडरीकपुरावासापुंडरीकसमानना ॥ ६८ ॥ पृथुजंघापृथुभुजापृथु
पादापृथुदरी ॥ प्रवालशोभापिंगाक्षीपीतवासाः प्रचापला ॥ ९९ ॥ प्रसवापुष्टिदापुण्याप्रतिष्ठाप्रणवागतिः ॥
पंचवर्णापंचवानीपंचिकापंजरस्थिता ॥ १०० ॥ परमायापरज्योतिः परप्रीतिः परागतिः ॥ पराकाष्ठापरेशा
नीपाविनीपावकद्युतिः ॥ १ ॥ पुण्यभद्रापरिच्छेद्यापुष्पहासापृथुदरा ॥ पीतांगीपीतवसनापीतशय्यापिशा
चिनी ॥ २ ॥ पीतक्रियापिशाचघ्नीपाटलाक्षीपटुक्रिया ॥ पंचभक्षप्रियाचारपूतनाप्राणघातिनी ॥ ३ ॥ पुन्ना
गवनमध्यस्थापुण्यतीर्थनिषेविता ॥ पंचांगीचपराशक्तिः परमाल्हादकारिणी ॥ ४ ॥ पुष्पकांडस्थितापूषापो
षिताखिलविष्टपा ॥ पानप्रियापंचशिखापन्नगोपरिशायिनी ॥ ५ ॥ पंचमात्रात्मिकापृथ्वीपथिकापृथुदोहिनी ॥
पुराणन्यायमीमांसापाटलीपुष्पगंधिनी ॥ ६ ॥ पुण्यप्रजापारदात्रीपरमार्गेकगोचरा ॥ प्रवालशोभापूर्णाशाप्र
णवापल्लवोदरी ॥ ७ ॥ फालनीफलदाफल्गुः फूल्कारीफलकाकृतिः ॥ फणींद्रभोगशयनाफणिमंडलमंडिता
॥ ८ ॥ बालबालाबहुमताबालातपनिभांशुका ॥ बलभद्रप्रियावंद्यावडवाबुद्धिसंस्तुता ॥ ९ ॥ वंदीदेवीबिलव
तीवडिशघ्नीबलिप्रिया ॥ बांधवीबोधिताबुद्धिर्बधूककुसुमप्रिया ॥ ११० ॥ बालभानुप्रभाकाराब्राह्मीब्राह्मणदे
वता ॥ बृहस्पतिस्तुतावृंदावृंदावनविहारिणी ॥ ११ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥

॥ ५ ॥ पाटलीत्येकं नाम ॥ ६ ॥ प्रणवाप्रणवरूपिणी ॥ ७ ॥ फालिनीत्यादीनिसप्तफकारादीनिनामानि ॥ ८ ॥ बालबालेत्यारभ्य ब्र
ह्मकंकणसूत्रिणीत्यंतानिपंचाशद्वकारादीनिनामान्यपिकानिचित्यवर्गीयादिनामसुपठ्यन्ते बालबालात्रा
लादापिबाला ॥ ९ ॥ बिलवतीबिलं कर्मछिद्रंतद्वतीतद्दृष्टीत्यर्थः बडिशंकपटंतस्यहंतीत्यर्थः ॥ ११० ॥ ११ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.द्वा

॥१२॥

बालाकिनी बलाकानांबकपंक्तीनांसमूहोबालाकंतदस्तियस्याः साबालाकिनी बिलाहाराकर्मछिद्रभक्षणकर्त्रीत्यर्थः बिलवासाबिलेगुहास्ते
पेवासोयस्याः सा ॥ १२ ॥ १३ ॥ बद्धगोधांगुलित्राणा गोधातलनिहाकयोरिति मेदिनीकोशात् गोधाहस्ततलस्तस्यत्राणमंगुलित्राणंच
बद्धययासावीरलक्षणमेतत् बद्धगोधांगुलित्राणाः कालिंदीमभितोययुरिति महाभारते विराट्पर्वणि प्रसिद्धं ॥ १४ ॥ १५ ॥ बडिस्थाडलयोरभे

टी.अ.

६

बालाकिनी बिलाहारा बिलवासा बहूदका ॥ बहुनेत्रा बहुपदा बहुकर्णावतंसिका ॥ १२ ॥ बहुबाहुयुता बीजरू
पिणी बहूरूपिणी ॥ बिंदुनादकलातीता बिंदुनादस्वरूपिणी ॥ १३ ॥ बद्धगोधांगुलित्राणा बद्धर्याश्रमवासि
नी ॥ वृंदारका बृहत्स्कंधा बृहती बाणपातिनी ॥ १४ ॥ वृंदाध्यक्षा बहुनुतावनिता बहुविक्रमा ॥ बद्धपद्मासना
सीना बिल्वपत्रतलस्थिता ॥ १५ ॥ बोधिद्रुमनिजा वासा बडिस्था बिंदुदर्पणा ॥ बालाबाणासनवती वडवा
नलवेगिनी ॥ १६ ॥ ब्रह्मांडबहिरंतस्था ब्रह्मकंकणसूत्रिणी ॥ भवानी भीषणवती भाविनी भयहारिणी ॥
॥ १७ ॥ भद्रकाली भुजंगाक्षी भारती भारताशया ॥ भैरवी भीषणाकारा भूतिदा भूतिमालिनी ॥ १८ ॥ भा
मिनी भोगनिरता भद्रदा भूरिविक्रमा ॥ भूतवासा भृगुलता भार्गवी भूसुरार्चिता ॥ १९ ॥ भागीरथी भोगवती
भवनस्था भिषग्वरा ॥ भाभिनी भोगिनी भाषाभवानी भूरिदक्षिणा ॥ १२० ॥ भर्गात्मिका भीमवती भववं
धविमोचिनी ॥ भजनीया भूतधात्री रंजिता भुवनेश्वरी ॥ १२१ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

दादलिस्थेत्यर्थः बिंदुरव्यक्तमायात्मकः सदर्पणोयस्याः सा तत्र प्रतिबिंबितत्वात् मायाया बिंदुत्वं च नमस्ते समस्तेशि बिंदुस्वरूपे इति प्रपंचसा
रेस्पष्टं बाणासनवती धनुष्यहस्तेत्यर्थः ॥ १६ ॥ ब्रह्मकंकणसूत्रिणी ब्रह्मशब्देन ब्रह्मविद्यादानं लक्ष्मणया तद्विषयकं यत्कंकणसूत्रं तदस्तिय
स्याः सा ब्रह्मविद्याप्रचारे बद्धपरिकरेत्यर्थः भवानीत्यारभ्य भागधेयिनीत्यंतानि एकोनचत्वारिंशद्वकारादीनि नामानि ॥ १७ ॥ भारताशया
भास्वप्रकाशासंविता स्यां रताये ज्ञानिनस्तेषु आशयोयस्याः सा ॥ १८ ॥ १९ ॥ १२० ॥ भूतधात्री रंजितेत्येकं नाम ॥ १२१ ॥

॥१२॥

मातेत्यारभ्यमाहिष्मसुरमर्दिनीत्यंतानिचतुःपंचाशन्मकारादीनिनामानि ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥

भुजंगवल्याभीमाभेरुंडाभागधेयिनी ॥ मातामायामधुमतीमधुजिह्वामधुप्रिया ॥ २२ ॥ महादेवीमहा
भागामालिनीमीनलोचना ॥ मायातीतामधुमतीमधुमांसामधुद्रवा ॥ २३ ॥ मानवीमधुसंभूतामिथिलापुरवा
सिनी ॥ मधुकैटभसंहर्त्रीमेदिनीमेघमालिनी ॥ २४ ॥ मंदोदरीमहामायामैथिलीमसृणप्रिया ॥ महालक्ष्मी
महाकालीमहाकन्यामहेश्वरी ॥ २५ ॥ माहेंद्रीमेरुतनयामंदारकुसुमार्चिता ॥ मंजुमंजीरचरणामोक्षदामंजुभा
षिणी ॥ २६ ॥ मधुरद्राविणीमुद्रामलयामलयान्विता ॥ मेधामरकतश्यामामागधीमेनकात्मजा ॥ २७ ॥ म
हामारीमहावीरामहाश्यामामनुस्तुता ॥ मातृकामिहिराभासामुकुंदपदविक्रमा ॥ २८ ॥ मूलाधारस्थितामु
ग्धामणिपूरकवासिनी ॥ मृगाक्षीमहिषारूढामहिषासुरमर्दिनी ॥ २९ ॥ योगासनायोगगम्यायोगावौवनका
श्रया ॥ यैवनीयुद्धमध्यस्थायमुनायुगधारिणी ॥ ३० ॥ यक्षिणीयोगयुक्ताचयक्षराजप्रसूतिनी ॥ यात्राया
नविधानज्ञायदुवंशसमुद्रया ॥ ३१ ॥ यकारादिहकरांतायाजुषीयज्ञरूपिणी ॥ यामिनीयोगनिरतायातुधान
भयंकरी ॥ ३२ ॥ रुक्मिणीरमणीरामरेवतीरेणुकारतिः ॥ रौद्रीरौद्रप्रियाकाराराममातारतिप्रिया ॥ ३३ ॥
रोहिणीराज्यदारेवारमाराजीवलोचना ॥ राकेशीरूपसंपन्नारत्नसिंहासनस्थिता ॥ ३४ ॥ रक्तमाल्यांबरध
रारक्तगंधानुलेपना ॥ राजहंससमारूढारंभारक्तबलिप्रिया ॥ ३५ ॥ रमणीययुगाधाराराजिताखिलभूत
ला ॥ रुरुचर्मपरीधानारथिनीरत्नमालिका ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥

योगासनेत्यारभ्ययातुधानाभयंकरीत्यंतानियकारादीनिविंशतिनामानि ॥ ३० ॥ यक्षराजस्यप्रसूतिकाप्रसवित्री ॥ ३१ ॥
॥ ३२ ॥ रुक्मिणीत्यारभ्यरुक्मभूषणेत्यंतानिसप्तत्रिंशद्रकारादीनिनामानि ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥

दे.भा.दा

॥१३॥

॥ ३७ ॥ लज्जेत्यारभ्यलोकधारिणीत्यंतानि त्रयोदशकृत्तरादीनि नामानि ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ वरदेत्यारभ्यवाल्मीकिपरिसेवित्यंता
निसप्तत्रिंशत्कारादीनि नामानि ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ शाकंभरीत्यारभ्यशर्वरीवन्द्येतानि एकोनत्रिंशच्छकारादीनि नामानि

रोगेशीरोगशमनीराविणीरोमहर्षिणी ॥ रामचंद्रपदाक्रांतारावणच्छेदकारिणी ॥ ३७ ॥ रत्नवल्लभपरिच्छिन्ना
रथस्थारुक्मभूषणा ॥ लज्जाधिदेवतालोलालितालिंगधारिणी ॥ ३९ ॥ लक्ष्मीलोलालुप्तविषालोकिनी
लोकविश्रुता ॥ लज्जालंबोदरीदेवीललनालोकधारिणी ॥ ३९ ॥ वरदावंदिताविद्यावैष्णवीविमलाकृतिः ॥ वा
राहीविरजावर्षावरलक्ष्मीर्विलासिनी ॥ ४० ॥ विनताव्योममध्यस्थावारिजासनसंस्थिता ॥ वारुणीविष्णुसं
भूतावीतिहोत्राविरूषिणी ॥ ४१ ॥ वायुमंडलमध्यस्थाविष्णुरूपाविधिक्रिया ॥ विष्णुपत्नीविष्णुमतीविशा
लाक्षीवसुंधरा ॥ ४२ ॥ वामदेवप्रियावेल्लवज्जिणीवसुदोहिनी ॥ वेदाक्षरपरीतांगीवाजपेयफलप्रदा ॥ ४३ ॥
वासवीवामजननीवैकुण्ठनिलयावरा ॥ व्यासप्रियावर्मधरावाल्मीकिपरिसेविता ॥ ४४ ॥ शाकंभरीशि
वाशांताशारदाशरणागतिः ॥ शातोदरीशुभाचाराशुभासुरविमर्दिनी ॥ ४५ ॥ शोभावतीशिवाकाराशंकरार्द्ध
शरीरिणी ॥ शोणाशुभाशयाशुभाशिरःसंधानकारिणी ॥ ४६ ॥ शरावतीशरानंदाशरज्ज्योत्स्नाशुभान
ना ॥ शरभाशूलिनीशुद्धाशबरीशुकवाहना ॥ ४७ ॥ श्रीमतीश्रीधरानंदाश्रवणानंददायिनी ॥ शर्वा
णीशर्वरीवन्द्याषड्भाषाषड्भक्तुप्रिया ॥ ४८ ॥ षडाधारस्थितादेवीषण्मुखाप्रियकारिणी ॥ षडंगरूप
सुमतिसुरासुरनमस्कृता ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥

॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ षड्भाषेत्यारभ्यषडंगरूपसुमतिसुरासुरनमस्कृतेत्यंतानि षड्कारादीनि नामानि षडाधारमूलाधारप्रभृ
तयस्तत्रस्थितानां देवीनां देवीस्वामिनी षडंगरूपायै सुमतिसुरास्तैरसुरैश्च नमस्कृतेत्यर्थः ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥

टी.अ.
६

॥१३॥

सरस्वतीत्यारभ्यसोमसंहतिरित्यन्तानि सप्तर्षिंशतिसकारादीनि नामानि सावित्रीत्येकं नाम सोमसंभवेत्येकं नाम ॥ ५० ॥ साधुबंधुपदक
मासाधूनां स्वभक्तानां येन धनो मित्राणि तेषु पदक्रमः पदसंचारो यस्याः स्वभक्तभक्तेष्वपि दयावतीत्यर्थः ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ सरयामधु

सरस्वती सदाधारा सर्वमंगलकारिणी ॥ सामगानप्रिया सूक्ष्मा सावित्री सामसंभवा ॥ ५० ॥ सर्ववासा सदानं
दासुस्तनी सागरांबरा ॥ सर्वैश्वर्यप्रिया सिद्धिः साधुबंधुपराक्रमा ॥ ५१ ॥ सप्तर्षिर्मंडलगता सोममंडलवासि
नी ॥ सर्वज्ञा सांद्रकरुणा समानाधिकवर्जिता ॥ ५२ ॥ सर्वोत्तुंगा संगहीना सद्गुणा सकलेष्टदा ॥ सरघा सूर्यतन
या सुकेशी सोमसंहतिः ॥ ५३ ॥ हिरण्यवर्णा हरिणी ह्रींकारी हंसवाहिनी ॥ क्षौमवस्त्रपरीतांगी क्षीराब्धितन
या क्षमा ॥ ५४ ॥ गायत्री चैव सावित्री पार्वती च सरस्वती ॥ वेदगर्भा वरारोहा श्रीगायत्री परांबिका ॥ ५५ ॥
इति साहस्रकं नाम्नां गायत्र्याश्चैव नारद ॥ पुण्यदं सर्वपापघ्नं महासंपत्तिदायकं ॥ ५६ ॥ एवं नामानि गायत्र्याः
स्तोषोत्पत्तिकराणि हि ॥ अष्टम्यां च विशेषेण पठितव्यं द्विजैः सह ॥ ५७ ॥ जपंकृत्वा होमपूजाध्यानं कृत्वा विशे
षतः ॥ यस्मै कस्मै न दातव्यं गायत्र्यास्तु विशेषतः ॥ ५८ ॥ सुभक्ताय सुशिष्याय वक्तव्यं भूसुराय वै ॥ श्रेष्ठेभ्यः साध
केभ्यश्च बांधवेभ्यो न दर्शयेत् ॥ ५९ ॥ यद्गृहे लिखितं शास्त्रं भयंतस्य न कस्यचित् ॥ चंचलापि स्थिरा भूत्वा कम
ला तत्र तिष्ठति ॥ ६० ॥ इदं रहस्यं परमं गुह्यं दुह्यतरं महत् ॥ पुण्यप्रदं मनुष्याणां दरिद्राणां निधिप्रदं ॥ ६१ ॥
मोक्षप्रदं मुमुक्षूणां कामिनां सर्वकामदं ॥ रोगाद्वैमुच्यते रोगी बद्धो मुच्येत बंधनात् ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥

मक्षिका ॥ ५३ ॥ हिरण्यवर्णेत्यादीनि चत्वारिहकारादीनि नामानि ळळयोरभेदात्कारादिनामभिरेव ळकारादिनामान्यपि संगृहीता
नीतिमन्यते मुनिः क्षौमवस्त्रपरीतांगीत्यारभ्य श्रीणि नामानि क्षकरादिकानि ॥ ५४ ॥ गायत्र्यादीन्यष्टौ नामानि मातृकाक्षरक्रमरहिता
नि ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

दे.भा.द्वा

॥१४॥

॥६३॥६४॥६५॥इतिश्रीदेवीभागवततिलकेद्वादशस्कंधेषष्ठोऽध्यायः ॥६॥ पंचपंचाशदधिकैःशतश्लोकैरतःपरं ॥ दीक्षाविधिसमासेनव
क्तिनारायणोमुनिः ॥१॥अत्राधुनिकपुस्तकेषुअष्टावध्यायवैष्णवतंत्रस्थाःकेनचित्प्राक्षिप्तादृश्यन्ते तत्रशक्तिदीक्षाप्रकरणेतत्कथनस्यासंगतेः
प्राचीनपुस्तकेषुतेषामदर्शनाच्चसोपपाठः ततःप्राचीनपुस्तकपाठमनुरुध्यैवव्याख्यायते सहस्रनामश्रवणोत्तरंनारदःपृच्छति श्रुतंसहस्रनामेति

टी.अ.
६

ब्रह्महत्यासुरापानसुवर्णस्तेयिनोनराः ॥ गुरुतल्पगतोवापिपातकान्मुच्यतेसकृत् ॥ ६३ ॥ असत्प्रतिग्रहा
च्चैवाभक्षभक्षाद्विशेषतः ॥ पाखंडानृतमुख्येभ्यःपठनादेवमुच्यते ॥ ६४ ॥ इदंरहस्यममलंमयोक्तंपद्मजोद्भ
व ॥ ब्रह्मसायुज्यदंनृणांसत्यंसत्यंनसंशयः ॥ ६५ ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेद्वादशस्कंधेगायत्रीसह
स्रनामस्तोत्रकथनंनामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ श्रुतंसहस्रनामाख्यंश्रीगायत्रीफलप्रदं ॥ स्तो
त्रमहोन्नतिकरंमहाभाग्यकरंपरं ॥ १ ॥ अधुनाश्रोतुमिच्छामिदीक्षालक्षणमुत्तमं ॥ विनायेननसिध्येतदेवीमं
त्रेधिकारिता ॥ २ ॥ ब्राह्मणानांक्षत्रियाणांविशांस्त्रीणांतथैवच ॥ सामान्यविधिनासर्वविस्तरेणवदप्रभो ॥
३ ॥ श्रीनारायणउवाच ॥ शृणुदीक्षांप्रवक्ष्यामिशिष्याणांभावितात्मनां ॥ देवाग्निगुरुपूजादावधिकारोयया
भवेत् ॥ ४ ॥ दिव्यंज्ञानंहियादद्यात्कुर्यात्पापक्षयंतुया ॥ सैवदीक्षेतिप्रोक्तावेदतंत्रविशारदैः ॥ ५ ॥ अव
श्यंसातुकर्तव्यायतोबहुफलामता ॥ गुरुशिष्यावुभावत्राप्यतिशुद्धावपेक्षितौ ॥ ६ ॥ ॥ ६४ ॥

॥ १ ॥ दीक्षालक्षणं दीक्षाविधिस्वरूपमित्यर्थः ब्राह्मणानामित्यर्थस्य देवीमंत्रेधिकारितेति पूर्वोक्तान्वयः ॥ २ ॥ ३ ॥ ययाभवेदिति तदु
क्तं अदीक्षितस्य मरणं रौरवाय प्रकल्पते न पूजादाधिकारोस्ति विना दीक्षां वरानने इति ॥ ४ ॥ दीक्षापदार्थमाह दिव्यं ज्ञानमिति दाण्
दानेक्षिक्षये इति धातुद्वयनिष्पन्नो दीक्षाशब्द इत्यर्थः यादीक्षा क्रिया ॥ ५ ॥ अतिशुद्धौ मानृतः पितृत आचारतश्चेत्यर्थः तदुक्तं शास्त्र
दायां मातृतः पितृतः शुद्ध इति ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥१४॥

विभिवदिति पूर्वोक्तप्रकारेण ॥ ७ ॥ यागमंडपदीक्षास्थानं मंडपशब्देनकुंडमंडपोक्तविधिनाषोडशहस्तपरिमितःकुंडमंडपःकर्तव्यइति सूचितं तदुक्तं पिगलामते कलाकरप्रमाणःस्यान्मंडपोमुख्यएवचेतितद्विधिश्रयंतांतरादवसेयः ॥ ८ ॥ अस्त्रमंत्रेणेति अर्घ्यपात्रेबलंगृहीत्वागंधपुष्पप्रक्षिप्यसप्तवारंफडिसस्त्रमंत्रेणाभिमंत्रयेदित्यर्थः ॥ ९ ॥ अस्त्रमंत्रंफट्मंत्रं द्वारमंडपद्वारं द्वारमितिजात्यैकवचनाच्चत्वारिमंडपद्वाराणीत्यर्थः ॥ १० ॥ ऊर्ध्वोदुंबरकेद्वारस्योर्ध्वफलकप्रथमप्रांतेगणनाथंमध्येलक्ष्मींद्वितीयप्रांतेचसरस्वतींचपूजयेदित्यर्थः नाममंत्रैर्ग

गुरुस्तुविधिवत्प्रातःकृत्यंसर्वविधायच ॥ स्नानसंध्यादिकंसर्वयथाविधिविधायच ॥ ७ ॥ कमंडलुकरौमौनीगृह्यायात्सरित्तटात् ॥ यागमंडपमासाद्यविशेत्तत्रासनेवरे ॥ ८ ॥ आचम्यप्राणानायम्यगंधपुष्पविमिश्रितं ॥ सप्तवारास्त्रमंत्रेणजप्तवारिसुसाधयेत् ॥ ९ ॥ वारिणातेनमतिमानस्त्रमंत्रंसमुच्चरन् ॥ प्रोक्षयेद्द्वारमखिलंततः पूजांसमाचरेत् ॥ १० ॥ ऊर्ध्वोदुंबरकेदेवंगणनाथंतथाश्रियं ॥ सरस्वतींनाममंत्रैःपूजयेद्गंधपुष्पकैः ॥ ११ ॥ द्वारदक्षिणशाखायांगंगांविघ्नेशमर्चयेत् ॥ द्वारस्यवामशाखायांक्षेत्रपालंचसूर्यजां ॥ १२ ॥ देहल्यांपूजयेदस्त्रदेवतामस्त्रमंत्रतः ॥ सर्वदेवीमयंदृश्यमितिसंचित्यसर्वतः ॥ १३ ॥ दिव्यानुत्सारयेद्विघ्नानस्त्रमंत्रजपेनतु ॥ अंतरिक्षगतान्विघ्नान्पादघातैस्तुभूमिगान् ॥ १४ ॥ वामशाखांस्पृशन्पश्चात्प्रविशेदक्षिणांघ्रिणा ॥ प्रविश्य कुंभंसंस्थाप्यसामान्यार्घ्यंविधायच ॥ १५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

जेशायनमइत्यादिभिः ॥ ११ ॥ गंगांप्रथमतःसंपूज्यतद्वामभागेविघ्नेशमर्चयेदित्यर्थः तथाक्षेत्रपालंप्रथमतस्तद्वामभागेसूर्यजांयमुनांपूजयेदित्यर्थः ॥ १२ ॥ देहल्यामधोदेहल्यांअस्त्रमंत्रतःफट्मंत्रः अनंतरंमंडपमध्येसर्वदेवीमयमस्तीतिविभाव्योर्ध्वपश्यन्दिविभवान्विघ्नानुत्सारयेदित्यर्थः ॥ १३ ॥ पादघातैस्त्रिभिर्भौमान्विघ्नानुत्सारयेदित्यर्थः ॥ १४ ॥ अनंतरंअंतस्थितविघ्नानिर्गमनार्थमार्गपरित्यज्यद्वारवामशाखांस्पृशन्क्षिणांघ्रिमयेदत्त्वामंडपेप्रविशेदित्याह वामशाखामिति अंतस्थिताविघ्नानिर्गच्छंतिअहंतंतः प्रविशामीतिभावयन्प्रविशेदितितात्पर्यं सामान्यार्घ्यपूर्ववत् ॥ १५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.द्वा

॥१५॥

॥ १६ ॥ १७ ॥ शराणुनास्त्रमंत्रेण मंडपक्षमांमंडपभुवनं ॥ १८ ॥ १९ ॥ विकिरानिति तदुक्तं चिद्वलीतंत्रे जालचंदनासिद्धार्थभस्म
दूर्वाकुराक्षताः विकिरादितिसंदिष्टाः सर्वविघ्नौघनाशनादिति तांस्त्विति तान्विकिरानित्यर्थः ॥ २० ॥ तत्पुंजमिति तस्मिन्पुंजेवर्धनीस्थाप

तेनचाध्यजलेनापिनैऋत्यांदिशिपूजयेत् ॥ वास्तुनाथंपद्मयोनिगंधपुष्पाक्षतादिभिः ॥ १६ ॥ ततःकुर्यात्पुं
चगव्यंतेनचाध्योदकेनच ॥ तोरणस्तंभपर्यंतंप्रोक्षयेन्मंडपंगुरुः ॥ १७ ॥ सर्वदेवीमयंचेदंभावयेन्मनसाकि
ल ॥ मूलमंत्रंजपन्भक्त्याप्रोक्षणंस्याच्छराणुना ॥ १८ ॥ शरमंत्रंसमुच्चार्यताडयेन्मंडपक्षमां ॥ हुंमंत्रंतुसमु
च्चार्यकुर्यादभ्युक्षणंततः ॥ १९ ॥ धूपयेदंतरंधूपैर्विकिरान्विकिरेत्ततः ॥ मार्जयेत्तांस्तुमार्जन्याकुशनिर्मितयापु
नः ॥ २० ॥ ईशानदिशितत्पुंजंकृत्वासंस्थापयेन्मुने ॥ पुण्याहवाचनंकृत्वादीनानाथांश्चतोषयेत् ॥ २१ ॥
विशेन्मृदासनेपश्चात्त्रिमस्कृत्यगुरुंनिजं ॥ प्राङ्मुखोऽपिधिवल्ध्यात्वादेयमंत्रस्यदेवतां ॥ २२ ॥ भूतशुल्कादि
कंकृत्वापूर्वोक्तेनैववर्त्मना ॥ ऋष्यादिन्यासकंकुर्यादेयमंत्रस्यवैमुने ॥ २३ ॥ न्यसेन्मुनितुशिरसिमुखेछंदःस
मीरितं ॥ देवतांहृदयांभोजेगुह्येर्बजंतुपादयोः ॥ २४ ॥ शक्तिविन्यस्यपश्चात्तुतालत्रयरवात्ततः ॥ दिग्बध्दंकार
येत्पश्चाच्छोटिकाभिस्त्रिभिर्नरः ॥ २५ ॥ प्राणायामंततःकृत्वामूलमंत्रमनुस्मरन् ॥ मातृकांविन्यसेद्देहेत
त्प्रकारस्तथोच्यते ॥ २६ ॥ ॐ अंनमइतिप्रोच्यन्यसेच्छिरसिमंत्रवित् ॥ एवमेवतुसर्वेषुन्यसेत्स्थानेषुवै
मुने ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥

नंवक्ष्यति ॥ २१ ॥ देयमंत्रस्येति शिष्यस्ययोदेयोमंत्रस्तस्यदेवतामित्यर्थः ॥ २२ ॥ पूर्वोक्तेनैकादशस्कंधोक्तप्रकारेण ॥ २३ ॥ ऋ
ष्यादिन्यासस्थानान्याह न्यसेदिति ॥ २४ ॥ तालत्रयरवादितितालत्रयशब्देनदिव्यांतरिक्षभौमविघ्नानुत्सार्यच्छोटिकाभिर्दिग्बध्दंकुर्यादित्यर्थः
॥ २५ ॥ २६ ॥ ॐ अंनमइति ॐ आंनमः ॐ इंनमइत्यादिप्रकारेणशिरआदिस्थानेषुमातृकान्यासप्रकरणेसर्वत्रप्रासेदेपुन्यसेदित्यर्थः ॥ २७ ॥

टी.अ.
७

॥१५॥

मूलमंत्रेति देयमंत्रस्येत्यर्थः सप्तषडंगस्तत्तत्कल्पेप्रसिद्धः षडंगन्यासस्थानान्याह अंगुष्ठादिष्विति ॥ २८ ॥ नमःस्वाहेति हृदयाय
नमःशिरसेस्वाहा शिखायैवषट्कवचायहुंनेत्रत्रयायवौषट्कअस्त्रावफडेवंरीत्येत्यर्थः ॥ २९ ॥ ३० ॥ ततोनिजेदेहेवक्ष्यमाणक्रमे
णदेन्याआसनंकल्पयेदित्याह ततोनिजेइति तमेवक्रममाह दक्षांसेइति ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ नत्रादीनिति ननुपूर्वादित्यर्थः त
थाचाधर्मायनमः अज्ञानायनमः अवैराग्यायनमःअनैश्वर्यायनमइतिमंत्राःसंपन्नाः ॥ ३३ ॥ तस्मिन्कल्पितेआसनेपर्यंककल्पनामा

मूलमंत्रषडंगचन्यसेदंगेषुसत्तमः ॥ अंगुष्ठादिष्वंगुलीषुहृदयादिषुचक्रमात् ॥ २८ ॥ नमःस्वाहावषडयुक्तै
हुंवौषट्फट्पदान्वितैः ॥ प्रणवादियुतैर्मंत्रैःषडभिरेवंपडांगकं ॥ २९ ॥ वर्णन्यासादिकंपश्चान्मूलमंत्रस्ययो
जयेत् ॥ स्थानेषुतत्तत्कल्पोक्तेष्वितिन्यासविधिःस्मृतः ॥ ३० ॥ ततोनिजेशरीरेस्मिंश्चितयेदासनंशुभं ॥ द
क्षांसेचन्यसेद्धर्मवामांसेज्ञानमेवच ॥ ३१ ॥ वामोरौचापिवैराग्यंदक्षोरावथविन्यसेत् ॥ ऐश्वर्यंमुखदेशेतुमु
नेध्यायेदधर्मकं ॥ ३२ ॥ वामपार्श्वेनाभिदेशेदक्षपार्श्वेतथापुनः ॥ नत्रादींश्चापिज्ञानादीन्पूर्वोक्तानेवविन्य
सेत् ॥ ३३ ॥ पादाधर्मदयःप्रोक्ताःपीठस्यमुनिसत्तम ॥ अधर्माद्यास्तुगात्राणिस्मृतानिमुनिपुंगवैः ॥
३४ ॥ मध्येनंतंहृदिस्थानेन्यसेन्मृदासनेस्थले ॥ प्रपंचपद्मंविमलंतस्मिन्सूर्येदुपावकान् ॥ ३५ ॥ न्यसे
त्कलायुतान्मंत्रीसंक्षेपात्तावदाम्यहं ॥ सूर्यस्यद्वादशकलास्ताद्वंदोःषोडशस्मृताः ॥ ३६ ॥ ॥ ६५ ॥

ह पादाधर्मादयइति पादाःपर्यंकखुराधर्मादयोज्ञेयाइत्यर्थः अधर्मादयस्तुपर्यंकगात्राणीतिज्ञेयाइत्यर्थः ॥ ३४ ॥ मध्येनं
तमिति तंचानंतंमृदासनेमृदुतुलिकास्थानेभावयेदित्यर्थः तस्मिन्ननंतंप्रपंचपद्मंभावयेत्तस्मिन्कमलेसूर्येदुपावकानुपर्युपरिन्यसेद्भावयेच्चेत्याह
प्रपंचपद्ममिति ॥ ३५ ॥ कलायुतानिमंडलानिन्यसेदित्याह न्यसेत्कलायुतानिति कस्यकतिकलाःसंतीतितदाह सूर्यस्य
द्वादशेति ॥ ३६ ॥ ॥ ७॥ ॥ ७॥ ॥ ७॥ ॥ ७॥ ॥ ७॥ ॥ ७॥ ॥ ७॥

दे.भा.इ.

॥१६॥

तेषु सूर्यादयः प्रणवस्य वर्णत्रयपूर्वकान्यस्तव्या इति तत्रांतरे उक्तं तथा चायं प्रयोगः अंसूर्यमंडलाय द्वादशकलात्मने नमः उंसोममंडलाय
षोडशकलात्मने नमः मंवाहिमंडलाय द्वादशकलात्मने नमः इति प्रयोगं कृत्वा न्यसेदित्यर्थः तदुपरिसत्त्वादिगुणत्रयं न्यसेदित्याह सत्त्वरज इति
संसत्त्वाय नमः रजसे नमः तंतमसे नम इति प्रयोगः ॥ ३७ ॥ आत्मानमिति ते च चत्वार आत्मानो देवी स्थानात्पूर्वादिदिक्षु न्यसेदितितुचि
द्वलीतंत्रादूहं ॥ ३८ ॥ अमुका सनायनम इतीति अमुकशब्दस्थाने पूजनीयदेवतानामग्राह्यमित्यर्थः यथा दुर्गासनायनमः गायत्र्या सना

दशवन्हेः कलाः प्रोक्तास्ताभिर्युक्तांस्तुतान्स्मरेत् ॥ सत्त्वरजस्तमश्चैव न्यसेत्तेषामथोपरि ॥ ३७ ॥ आत्मानं
मंतरात्मानं परमात्मानमेव च ॥ ज्ञानात्मानं न्यसेद्विद्वानित्थं पीठस्य कल्पना ॥ ३८ ॥ अमुका सनायनम इति
मंत्रेण साधकः ॥ आसनं पूजयित्वा तु तस्मिन्ध्यायेत्परां बिकां ॥ ३९ ॥ कल्पोक्तविधिना मंत्रं दीय मंत्रस्य
देवतां ॥ मानसैरुपचारैश्च पूजयेत्तं यथाविधि ॥ ४० ॥ मुद्राः प्रदर्शयेद्विद्वान्कल्पोक्ता मोदकारकाः ॥ याभि
र्विरचिताभिस्तु मोदो देव्यास्तु जायते ॥ ४१ ॥ नारायण उवाच ॥ ततः स्ववामभागाग्रेषट्कोणोपरिवर्तुलं ॥ च
तुरस्त्रयुतं सम्यङ्मध्ये मंडलमालिखेत् ॥ ४२ ॥ मध्ये त्रिकोणं संलिख्य शंखमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ षडंगानि
च षट्कोणेष्वर्चयेत्कुसुमादिभिः ॥ ४३ ॥ अग्न्यादिषु त्रिकोणेषु षडंगार्चनमाचरेत् ॥ आधारपात्रमादाय
शंखस्य मुनिसत्तम ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४५ ॥

यनम इति ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ विशेषार्घ्यस्थापनमाह ततः स्वेति षट्कोणोपरीति प्रथमतः षट्कोणं कृत्वा तदुपरिवर्तुलं कृत्वा च
तुरस्त्रं कुर्यात् चंदनेनेत्यर्थः ॥ ४२ ॥ मध्ये षट्कोणमध्ये त्रिकोणमधोमुखं कुर्यादित्यर्थः षडंगानि देय मंत्रस्य षडंगानि ॥ ४३ ॥
कांदिशमारभ्य षडंगानि पूजयेत्तत्राह अग्न्यादिष्विति अत्र पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राची ग्राह्या तदुनुरोधेनाग्न्यादिकल्पनाकर्तव्या तदुक्तं दक्षि
णमूर्तिसंहितायां अग्नीश्यासुरवायव्यमध्ये दिक्षंगपूजनमिति ततः षडंगपूजनानंतरं कृत्यमाह आभारपत्रमिति त्रिपादिकामित्यर्थः ॥ ४४ ॥

टी.अ.

७

॥१६॥

त्रिपादिकायां भावनापुरःसरं पूजामंत्रमाह मंवंहि मंडलायेति मंवंहि मंडलाय दशकलात्मने दुर्गादेव्यर्घपात्रस्थानाय नम इति मंत्रः ॥ ४५ ॥ ४६ ॥
पूर्वमारभ्य पूर्वदिशमारभ्य तस्यां त्रिपादिकायां वंहि मंडलसंयुता दशवह्निकलाः पूज्या इत्यर्थः ताश्च कलाः शारदातिलकादिषु स्पष्टा एव ॥ ४७ ॥

अस्त्रमंत्रेण संप्रोक्ष्य स्थापयेत्तत्र मंडले ॥ मंवंहि मंडलायोक्ता ततो दशकलात्मने ॥ ४५ ॥ अमुकदेव्या अ
र्घ्यपात्रस्थानाय नम इत्यपि ॥ मंत्रोयमुक्तः शंखस्याप्याधारं स्थापने बुधैः ॥ ४६ ॥ आधारे पूर्वमारभ्य प्रदक्षि
णक्रमेण तु ॥ दशवह्निकलाः पूज्या वंहि मंडलसंस्थिताः ॥ ४७ ॥ ततो वै मूलमंत्रेण प्रोक्षितं शंखमुत्तमं ॥ स्था
पयेत्तत्र चाधारे मूलमंत्रमनुस्मरन् ॥ ४८ ॥ अंसूर्यमंडलायोक्ता द्वादशांते कलात्मने ॥ अमुकदेव्यर्घपात्राय न
म इत्युच्चेत्ततः ॥ ४९ ॥ शंखं शंखाय पदं प्रोच्य नम इत्येतदुच्चेत् ॥ प्रोक्षयेत्तेन तं शंखं तस्मिन् द्वादशपूजयेत् ॥
५० ॥ सूर्यस्य द्वादशकलास्तपिन्याद्यायथाक्रमं ॥ विलोममातृकां प्रोच्य मूलमंत्रं विलोमकं ॥ ५१ ॥ जलैरा
पूरयेच्छंखं तत्र वेदोः कलान्यसेत् ॥ उंसोममंडलायोक्तां तेषां दशकलात्मने ॥ ५२ ॥ अमुका र्घ्यामृतायेति ह
न्मंत्रांतो मनुः स्मृतः ॥ पूजयेन्मनुना तेन जलं तु सृणिमुद्रया ॥ ५३ ॥ तीर्थान्यावाह्यतत्रैवाप्यष्टकृत्वो जपेन्मनुं ॥
षडंगानि जलेन्यस्य हृदा संपूजयेदपः ॥ ५४ ॥ अष्टकृत्वो जपेन्मूलं छादयेन्मत्स्यमुद्रया ॥ ततो दक्षिणदिग्भा
गे शंखस्य प्रोक्षणीं न्यसेत् ॥ ५५ ॥ शंखां बुकिंचिन्निक्षिप्य प्रोक्षयेत्तेन सर्वतः ॥ पूजाद्रव्यं निजात्मानं विशु
द्धं भावयेत्ततः ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥

मूलमंत्रेण देयमंत्रेण ॥ ४८ ॥ अंसूर्यमंडलाय द्वादशकलात्मने दुर्गादेव्यर्घपात्राय नम इति मंत्रः ॥ ४९ ॥ ५० ॥ तपिन्याद्यास्त
पिनीतापिनीधूम्राद्याः शारदातिलकादिषु स्पष्टाः ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ सृणिमुद्रयां कुशमुद्रया ॥ ५३ ॥ हृदानम इति मंत्रेण
॥ ५४ ॥ प्रोक्षणीं सामान्यार्घ्यस्थानीयां शंखो विशेषार्घ्यप्रोक्षणीं सामान्यार्घ्यः ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥

दे.भा.द्वा

॥१७॥

अर्घ्यस्थापनोत्तरंकृत्यमाह ततस्तुपुरतोवेद्यामिति चतुष्कोणैकहस्तावेदीतस्यांसर्वतोभद्रमंडलंलिखेदित्यर्थः तन्मंडलस्यकर्णिकामध्येप्रथमतःशालिभिःपूरणंततस्तंडुलैःपूरणमित्यर्थः ॥ ५७ ॥ कूर्चमिति सप्तविंशतिदर्भाणांवेप्यग्रंग्रंथिभूषितमित्युक्तलक्षणंकूर्च आधारशक्तिमिति आधारशक्तयेनमः प्रकृत्यैनमः कूर्मायनमः शेषायनमः क्षमायैनमः सुधासिंधवेनमइत्यादिशारदातिलककचिद्व

टी.अ.
७

नारायणउवाच ॥ ततःस्वपुरतोवेद्यांसर्वतोभद्रमंडलं ॥ संलिख्यकर्णिकामध्यंपूरयेच्छालितंडुलैः॥५७॥आस्तीर्यदर्भास्तत्रैवन्यसेत्कूर्चसलक्षणं ॥ आधारशक्तिमारभ्यपीठमन्वंतमर्चयेत् ॥ ५८ ॥ निर्व्रणंकुंभमादायाप्यस्त्राद्रिःक्षालितांतरं ॥ तंतुनवेष्टयेत्तत्रिगुणेनारुणेनच ॥ ५९ ॥ नवरत्नोदरंकूर्चयुतंगंधादिपूजितं ॥ स्थापयेत्तत्रपीठितुतारमंत्रेणदेशिकः ॥ ६० ॥ ऐक्यंकुंभस्यपीठस्यभावयेत्पूरयेत्ततः ॥ मातृकांप्रतिलोमेनजपंस्तीर्थोदकैर्मुने ॥ ६१ ॥ मूलमंत्रंचसंजप्यपूरयेद्देवताधिया ॥ अश्वत्थपनसाम्राणांकोमलैर्नवपल्लवैः ॥ ६२ ॥ छादयेत्कुंभवदनंचषकंसफलाक्षतं ॥ संस्थापयेत्तमतिमान्वस्त्रयुग्मेनवेष्टयेत् ॥ ६३ ॥ प्राणस्थापनमंत्रेणप्राणस्थापनमाचरेत् ॥ आवाहनादिमुद्राभिर्मोदयेद्देवतांपरां ॥ ६४ ॥ ध्यायेत्तांपरमेशानींकल्पोक्तेनप्रकारतः ॥ स्वागतंकुशलप्रश्नंदेव्याअग्रेसमुच्चरेत् ॥ ६५ ॥ पाद्यंदद्यात्ततोप्यर्घ्यंततश्चाचमनीयकं ॥ मधुपकैचसाभ्यंगंदेव्यैस्नानंनिवेदयेत् ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥

ह्रीतंत्रोक्तप्रकारेण पीठमन्वंतमिति दुर्गादेवीयोगपीठायनमइतिपीठमंत्रः ॥ ५८ ॥ अस्त्राद्रिःफट्मंत्राभिर्मंत्रितैर्जलैः त्रिगुणेत्यनेनतस्मिन्निवारवेष्टितंतौसत्वगुणरजोगुणतमोगुणभावनाकार्येत्यर्थः अरुणेनरक्तवर्णेनतंतुनेत्यर्थः ॥ ५९ ॥ कूर्चःपूर्वोक्तः तारमंत्रेणप्रणवोच्चारणे ॥ ६० ॥ तत्रकुंभस्यपीठस्यचैकत्वंभावयेदित्याह ऐक्यमिति प्रतिलोमंक्षकारमारभ्याकारपर्यंतमातृकामंत्रमुच्चरंस्तीर्थोदकैःपूरयेदित्यन्वयः ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ छादयेदिति तेषुनवपल्लवेषुकल्पवृक्षभावनाकर्तव्येतिशारदातिलकेउक्तं वस्त्रयुग्मेनरक्तेनेतिबोध्यं ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥

॥१७॥

॥ ६७ ॥ मनुनापुटितैरिति ह्रींमं ह्रींमां ह्रीमित्यादिप्रकारेण देयमंत्रेण पुटितैर्मूर्तिकाक्षरैर्देवताया अंगेषु मातृकाक्षरन्यासस्थानेषु शिरःप्रभृतिषु पुष्पैः पूजयेदित्यर्थः ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ कुंदपुष्पादीति आदिना पूर्वमेकादशस्कंधोक्तानि ग्राह्याणि पुष्पगुग्गुलस्तस्य त्रातःसमुदायः अगदगुग्गुलोशीरचंदनानां चूर्णकृत्वा शर्करामधुभ्यांचमिश्रितं कृत्वा गुटिकां कुर्यात्तस्य धूपो देव्या अतिप्रिय इत्यर्थः ॥ ७० ॥ ७१ ॥ प्रोक्षणीस्थं

वाससी च ततो दद्याद्रक्षौ मे सुनिर्मले ॥ नानामणिगणाकीर्णानां कल्पान्कल्पयेत्ततः ॥ ६७ ॥ मनुनापुटितैर्वर्णैर्मूर्तिकाया विधानतः ॥ देव्या अंगेषु विन्यस्य चंदनाद्यैः समर्चयेत् ॥ ६८ ॥ गंधः कालागरु भवः कर्पूरेण समन्वितः ॥ काश्मीरं चंदनं चापिकस्तूरी सहितं मुने ॥ ६९ ॥ कुंदपुष्पादिपुष्पाणि परदेव्यै समर्पयेत् ॥ धूपो गरुपुरुत्रातोशीरचंदनशर्कराः ॥ ७० ॥ मधुमिश्राः स्मृता देव्याः प्रिया धूपात्मना सदा ॥ दीपाननेकान्दत्वाथ नैवेद्यं दर्शयेत्सुधीः ॥ ७१ ॥ प्रतिद्रव्यं जले दद्यात्प्रोक्षणीस्थं न चान्यथा ॥ ततः कुर्यादंगपूजां कल्पोक्तावरणा निच ॥ ७२ ॥ सांगां देवीमथाभ्यर्च्य वैश्वदेवं ततश्चरेत् ॥ दक्षिणे स्थंडिलं कृत्वा तत्राधाय हुताशनं ॥ ७३ ॥ मूर्तिस्थां देवतां तत्रावाह्यसंपूज्य चक्रमात् ॥ तारव्याहृतिभिर्हुत्वा मूलमंत्रेण वैततः ॥ ७४ ॥ पंचविंशतिवारं तु पायसेन ससर्पिषा ॥ हुनेत्पश्चाद्वाहृतिभिः पुनश्च जुहुयान्मुने ॥ ७५ ॥ गंधाद्यै रर्चयित्वा च देवीं पीठे तु योजयेत् ॥ वन्हिविसृज्य हविषा परितो विकिरेद्वलिं ॥ ७६ ॥ देवतायाः पार्षदेभ्यो गंधपुष्पादिसंयुतं ॥ पंचोपचारान्दत्वाथ तांबूलं छत्रचामरे ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥

पूर्वोक्त सामान्यार्घ्यपात्रस्थं तदुक्तं शारदायां सर्वमेतत्प्रयुज्यते प्रोक्षणीस्थेन वारिणेति अंगपूजां देवतायाः षडंगपूजां ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ मूर्तिस्थां कलशस्थां तारव्याहृतिभिरिति ओं स्वाहा भूस्वाहेति प्रकारेण प्रथमतो हुत्वा पंचविंशतिवारं देयमंत्रेण हुत्वा पुनश्च पूर्ववत् तारव्याहृतिभिर्जुहुयादित्यर्थः ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ हविषा होमावशिष्टपायसेन ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥

दे.भा.द्वा

॥१८॥

ऐशान्यादिशीति ऐशान्यादिशिपूर्वसंमार्जनंकृत्वा संस्थापिते विकिरेकं कंरीमुभयमुखोऽस्थापयेदित्यर्थः ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ देशं मंडपस्थं देशं
अस्त्रदेवतां दुर्गा ॥ ८० ॥ द्वेद्यां मंडपे एव निद्रां कुर्यादित्यर्थः अयमधिवासप्रकारः सद्योधिवासनं वा कार्यं स्पष्टं चेदं चिद्वलीतं न शारदातिलकयोः
॥ ८१ ॥ अधिवासनानंतरमग्निमुखमाह ततः कुंडस्येति अत्र कुंडस्येति पदेन न वकुंडीविधानं सूचितं तच्चानुक्तमपि शारदातिलकादिनिबं

टी.अ.

७

दद्यादेवैततो मंत्रं सहस्रावृत्तितोजपेत् ॥ जपं समर्प्य चेशान्यां विकिरेदिशिसंस्थिते ॥ ७८ ॥ कर्करीं स्थापयेत्त
स्यां दुर्गामावाह्यपूजयेत् ॥ रक्षरक्षेति चोच्चार्य नालमुक्तेन वारिणा ॥ ७९ ॥ अस्त्रमंत्रं जपन् देशं सेचयेत्तु प्रदक्षिणं
कर्करीं स्थापयेत्स्थाने पूजयेच्चास्त्रदेवतां ॥ ८० ॥ पश्चादुरुस्तुरिष्येण सहभुंजीतवाग्यतः ॥ तस्यां रात्रौ तु त
द्वेद्यां निद्रां कुर्यात्प्रयत्नतः ॥ ८१ ॥ नारायण उ० ॥ ततः कुंडस्य संस्कारं स्थंडिलस्य च वामुने ॥ प्रवक्ष्यामि स
मासेन यथाविधिविधानतः ॥ ८२ ॥ मूलमंत्रं समुच्चार्य वीक्षयेदस्त्रमंत्रतः ॥ प्रोक्षयेत्ताडनं कुर्यात्तेनैव कवचेन
तु ॥ ८३ ॥ अभ्युक्षणं समुद्दिष्टं तिस्रः तिस्रस्ततः परं ॥ प्रागग्रा उदगग्राश्च लिखेत्तेखाः समंततः ॥ ८४ ॥ प्रणवे
न समभ्युक्ष्य पीठं देव्याः समर्चयेत् ॥ आधारशक्तिमारभ्य पीठमंत्रावसानकं ॥ ८५ ॥ तस्मिन् पीठे समावाह्य
शिवौ परमकारणौ ॥ गंधाद्यैरुपचारैश्च पूजयेत्तौ समाहितः ॥ ८६ ॥ देवीं ध्यायेद्दत्तु स्नातां संसक्तां शंकरेण तु ॥
कामातुरांतयोः क्रीडां किंचित्कालं विभावयेत् ॥ ८७ ॥ अथ वन्दिह समादाय पात्रेण पुरतो न्यसेत् ॥ क्रव्यादां शं प
रित्यज्य पूर्वोक्तैर्वीक्षणादिभिः ॥ ८८ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

धोक्तरित्याकार्यतदभावे आह स्थंडिलस्य चेति ॥ ८२ ॥ मूलमंत्रं समुच्चार्य कुंडं वीक्षयेदित्यर्थः तेनैवास्त्रमंत्रेणैव प्रोक्षणं दृढाकरणार्थं समि
दादिभिस्ताडनं च कार्यमित्यर्थः कवचेन ह्युमिति मंत्रेणाभ्युक्षणं चेत्यर्थः ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ लिखेत्तेखाः समिदादिभिः पीठमिति आधार
शक्तयेन मइत्यारभ्यामुक्तदेवीयोगपीठायनमइत्येतत्पर्यंतं पीठं कुंडे पूजयेदित्यर्थः ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ क्रीडां रतिं ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ॥ ॥

॥१८॥

॥ ८९ ॥ सप्तवारप्रणवेनाभिमंत्रयेदित्यन्वयः शरेणाश्वमंत्रेण तनुत्रेणहुमितिमंत्रेण ॥ ९० ॥ अर्चितचंदनादिभिः पूजितवान्हि
कुंडोपरि त्रिचिनारपरि धामयित्वा जानुभ्यां स्पृष्टमहीतलः सन्तारमंत्रमुच्चारन् सन्निवर्त्तमानो जधिया शिवबीजं ध्यायेत् त्रिचिनारपरि दित्यन्व
यः ॥ ९१ ॥ ततो देवाय देव्यै चोचमनंददादित्याह आचामयेदिति ॥ ९२ ॥ हनदहपचयुग्ममिति हनहनदहदहपचपचेत्येवं रूप

संस्कृत्य वन्हिं रं बीजमुच्चार्य तदनंतरं ॥ चैतन्यं योजयेत् तस्मिन् प्रणवेनाभिमंत्रयेत् ॥ ८९ ॥ सप्तवारं ततो धेनुमु
द्रां संदर्शयेद्गुरुः ॥ शरेण रक्षितं कृत्वा तनुत्रेणावगुंठयेत् ॥ ९० ॥ अर्चितं त्रिःपरिधाम्यप्रादक्षिण्येन सत्तमः ॥
कुंडोपरि जपं स्तारं जानुस्पृष्टमहीतलः ॥ ९१ ॥ शिवबीजधिया देव्या योनौ वन्हिं विनिक्षिपेत् ॥ आचामयेत्
तो देवदेवी च जगदंबिका ॥ ९२ ॥ चित्पिङ्गलहमदहपचयुग्मततः परं ॥ सर्वज्ञाज्ञापय स्वाहामंत्रायं वन्हिदीप
ने ॥ ९३ ॥ अग्निं प्रज्वलितं वंदे जातवेदं हुताशनं ॥ सुवर्णवर्णममलंसमिदं विश्वतोमुखं ॥ ९४ ॥ मंत्रेणानेन
तं वन्हिंस्तु वीतपरमादरात् ॥ ततो न्यसेद्वन्हिमंत्रं षडंगं देशिकोत्तमः ॥ ९५ ॥ सहस्रार्चिः स्वस्ति पूर्ण उत्तिष्ठ पु
रुषः स्मृतः ॥ धूमव्यापी सप्तजिह्वो धनुर्धर इति क्रमात् ॥ ९६ ॥ जातियुक्ताः षडंगाः स्युः पूर्वस्थानेषु विन्यसेत्
॥ ध्यायेद्वन्हिं हेमवर्णी त्रिनेत्रं पद्मसंस्थितं ॥ ९७ ॥ इष्टशक्तिस्वस्तिकाभीधारकं मंगलं परं ॥ परिषिंचेत्ततः कुंडे
मेखलोपरि मंत्रं वित् ॥ ९८ ॥ दर्भैः परिस्तरेत्पश्चात्परिधीन्विन्यसेदथा ॥ त्रिकोणवृत्तषट्कोणं साष्टपत्रं सभूपुरं ॥ ९९ ॥

मित्यर्थः वन्हिदीपने इति अनेन मंत्रेण प्रज्वालयेदित्यर्थः ॥ ९३ ॥ अग्न्युपस्थानमंत्रमाह अग्निं प्रज्वालितमिति ॥ ९४ ॥ ९५ ॥
॥ ९६ ॥ जातियुक्ताः नमः स्वाहा वषट् हुं वौ षट् फट् पदैर्युक्ता इत्यर्थः ओं सहस्रार्चिषे हृदयाय नमः स्वस्ति पूर्णाय शिरसे स्वाहेत्यादयः
षडंगमंत्रा उक्ता इत्यर्थः पूर्वस्थानेषु हृदयादिषु ॥ ९७ ॥ इष्टं वरमुद्रा अभिरभयमुद्रा ॥ ९८ ॥ त्रिकोणवृत्तेति त्रिकोणापरिष
ट्कोणवृत्तवृत्तततोष्टपत्रं ततोभूपुरमित्येवं रीत्याभिस्थापनात् पूर्वमेव यंत्रं लिखेदुपैवैवाभावयेत् ॥ ९९ ॥

॥ १०० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ मूर्तीराह जातवेदाइति ॥ ४ ॥ ५ ॥ ताराग्रयेइति आग्रयेजातवेदसममइत्यादि
प्रयोग उद्घाः ॥ ६ ॥ बन्धिपूजानंतरंकृत्यमाह ततःस्रुक्स्रुवसंस्काराविति तेषां काराःशारदातिलकादिनिबंधेषुस्पष्टाएवसंतीति
दे.भा. ॥ ततएवावधार्याःपुराणेषामुपयोगाभावाद्दौरवाचनाच्छिष्येते होमंततःकुर्यादिति ततः स्रुक्स्रुवसंस्कारानंतरंवक्ष्यमाणरीत्याहोमंकुर्यादि

• यंत्रंविभोर्वयेद्वन्हेःपूर्ववासांलिखेदथ ॥ तन्मध्येपूजयेद्वन्हिमंत्रेणानेन वैमुने ॥ १०० ॥ वैश्वानरततोजातवे
दःपश्चादिहावह ॥ लोहिताक्षपदंप्रोक्तासर्वकर्माणिसाधय ॥ १ ॥ बन्धिजायांतकोमंत्रस्तेनबन्धितुपूजयेत् ॥
मध्येषट्स्वपिकोणेषुहिरण्यागगनातथा ॥ २ ॥ रक्ताकृष्णासुप्रभ
स्ताःकेसरेष्वंगपूजनं ॥ ३ ॥ दलेषुपूजयेन्मूर्तीःशक्तिस्वास्तिकधा
एवच ॥ ४ ॥ अश्वोदरजसंज्ञोन्यःपुनर्वैश्वानराव्हयः ॥ कौमारतेज
ताराग्रयेपदाद्याःस्युर्नर्त्यतावन्हिमूर्तयः ॥ लोकपालांश्चतुर्दिक्षुबजा
॥ ततःस्रुक्स्रुवसंस्कारावाज्यसंस्कारएवच ॥ कृत्वाहोमंततःकुर्यात्स्रुवेणादायवैघर्मंत ॥ ७ ॥ दक्षिणादृ
तभागात्तुवन्हेर्दक्षिणलोचने ॥ जुहुयादग्रयेस्वाहेत्येववैवामन्ते ॥ ८ ॥ तदिस्वाहेतिमध्यमात्तु
तमादायसत्तम ॥ अग्नीषोमाभ्यांस्वाहेतिमध्यनेत्रेहुनेत्ततः ॥ ९ ॥ ध्यायेद्दक्षिणभागात्तुघृतमादायवैमु
खे ॥ अग्रयेस्विश्रुतेस्वाहेत्यनेनैवहुनेत्ततः ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥

त्यन्वयः ॥ ७ ॥ दक्षिणभागादिति आन्यस्यात्यांदाक्षिणवामभागकल्पनांकृत्वादक्षिणभागात्स्रुवेणान्यमादायअग्रयेस्वाहाइतिमंत्रे
अग्रयेर्दक्षिणलोचनेजुहुयात्तयैववामभागादादायसोमायस्वाहेतिवामलोचनेमध्यभागादादायाग्नीषोमाभ्यांस्वाहेतितृतीयलोचनेजुहुयादिसंयः
॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥

टी.अ. ७
॥ १९ ॥

सताराभिरिति ओंभूः स्वाहा ओंभुवः स्वाहेत्यंबरीत्या अग्निमंत्रेण प्रोक्तेन ॥ १२ ॥ संस्कारकृते संस्कारार्थं जुहुयादुतीर्जुमादिस्म
 र्थः ॥ १२ ॥ गर्भाधानादिसंस्कारान्गणयति गर्भाधानमिति ॥ १३ ॥ १४ ॥ एतत्संस्काराणां स्वरूपधर्मशास्त्रे स्पष्टं शिवं
 र्वतीचेति वन्देः पितृभूतौ देवाविसर्गः ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ वन्देर्मनुना पूर्वोक्तेन महागणेशमंत्रेणोति ओं ओं स्वाहा ॥ १ ॥ ओं श्रीं स्वाहा

सताराभिरव्याहृतिभिर्जुहुयादथसाधकः ॥ जुहुयादग्निमंत्रेण त्रिवारं तु ततः परं ॥ ११ ॥ ततस्तु प्रणवेनैवा
 प्यष्टवष्टौ घृताहुतीः ॥ गर्भाधानादिसंस्कारकृते तु जुहुयान्मुने ॥ १२ ॥ गर्भाधानं पुंसवनं सीमंतोन्नयनं ततः ॥
 जातकर्मनामकर्माप्युपनिष्क्रमणं तथा ॥ १३ ॥ अन्नाशनं तथा चूडाव्रतबंधस्तथैव च ॥ महानाम्न्यं व्रतं पश्चात्
 थौपनिषदं व्रतं ॥ १४ ॥ गोदानौद्वाहकौ प्रोक्ताः संस्काराः श्रुतिचोदिताः ॥ ततः शिवं पार्वतीं च पूजयित्वा विसर्ज
 येत् ॥ १५ ॥ जुहुयात्पंचसमिधो वन्हिमुद्दिश्य साधकः ॥ पश्चादावरणानां चाप्येकैकामाहुतिं हुनेत् ॥ १६ ॥
 घृतं सुचिसमादाय चतुर्वारं स्तुवेण च ॥ पिधाय तां तु तेनैव मुनेति घृन्निज्जसने ॥ १७ ॥ वौषडं तेन मनुना वन्देस्तु
 जुहुयात्ततः ॥ महागणेशमंत्रेण जुहुयादाहुतीर्दश ॥ १८ ॥ वन्देऽपि ठं समिधं चर्चयेत् देयमंत्रस्य देवतां ॥ वन्दे
 ध्यात्वा तु तद्वक्त्रे पंचविंशतिसंख्यया ॥ १९ ॥ मूलमंत्रेण जुहुयाद्वक्त्रैकीकरणाय च ॥ वन्दे देवतयोरैक्यं
 भावयन्नात्मना सह ॥ २० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥

॥ २ ॥ ओं श्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ ३ ॥ ओं श्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ ४ ॥ ओं श्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ ५ ॥ ओं श्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ ६ ॥
 ओं श्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ ७ ॥ ओं श्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ ८ ॥ ओं श्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ ९ ॥ ओं श्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ १० ॥ ओं श्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ ११ ॥
 ओं श्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ १२ ॥ ओं श्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ १३ ॥ ओं श्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ १४ ॥ ओं श्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ १५ ॥ ओं श्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ १६ ॥
 ओं श्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ १७ ॥ ओं श्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ १८ ॥ ओं श्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ १९ ॥ ओं श्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ २० ॥

२१ ॥ २२ ॥ एकैकक्रमयोगेनेति एकादेवतामुद्दिश्यैकामाहुतिं जुहुयादित्यर्थः ॥ २३ ॥ गजतिकसहस्रकं अष्टात्स
रसहस्रकं ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ तच्चैतन्यमिति शिष्यचैतन्यं निजात्मानिप्रविष्टमिति भावयेदित्यर्थः अ ७

एकीभूतं भावयेत्तु ततस्तु साधकोत्तमः ॥ षडंगदेवतानां च जुहुयादाहुतीः पृथक् ॥ २१ ॥ एकादशैव जुहुयादा
हुतीर्मुनिस्तमः ॥ एतेन नाडीसंधानं वह्निदेवतयोर्मुने ॥ २२ ॥ एकैकक्रमयोगेनाप्यावृतीनां तथैव च ॥ एकै
कक्रमयोगेन घृतेन जुहुयान्मुने ॥ २३ ॥ ततः कल्पोक्तद्रव्यैस्तु जुहुयादथवा तिलैः ॥ देवतामूलमंत्रेण ग
जांतकसहस्रकं ॥ २४ ॥ एवं हुत्वा ततो देवीं संतुष्टां भावयेन्मुने ॥ तथैवावृतिदेवीश्च ब्रह्माद्या देवता अपि ॥
२५ ॥ ततः शिष्यं च सुस्नातं कृतसंध्यादिकक्रियं ॥ वस्त्रद्वययुतं स्वर्णाभरणेन समन्वितं ॥ २६ ॥ कमण्डलुकरं
शुद्धं कुंडस्यांतिकमानयेत् ॥ नमस्कृत्य ततः शिष्यो गुरुं नथ सभासद् ॥ २७ ॥ कुलदेवं नमस्कृत्याविशेत्तत्रा
थविष्टरे ॥ गुरुस्ततस्तु तं शिष्यं कृपादृष्ट्या विलोकयेत् ॥ २८ ॥ तच्चैतन्यं निजे देहे भावयेत्संगतं त्विति ॥ ततः
शिष्यतनुस्थानां मध्वनां परिशोधनं ॥ २९ ॥ कुर्यात्तु होमतो विद्वान्दिव्यदृष्ट्यवलोकनात् ॥ येन जायेत शुद्धा
त्मा योग्यो देवाद्यनुग्रहे ॥ ३० ॥ नारायण उवाच ॥ तनौ ध्यायेत्तु शिष्यस्य षडध्वानः क्रमेण तु ॥ पादयो
स्तुकलाध्वानमंघौ तत्त्वाध्वकं पुनः ॥ ३१ ॥ नाभौ तु भुवनाध्वानं वर्णाध्वानं तथा हादि ॥ पदाध्वानं तथा भ्रा
लेर्मंत्राध्वानं तु मूर्धनि ॥ ३२ ॥ शिष्यं स्पृशंस्तु कूर्चैर्न तिलैराज्यपरिप्लुतैः ॥ शोधयाम्यमुमध्वानं स्वाहेति
मनुमुच्चरन् ॥ ३३ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

धनविक्ष्यमाणानां ॥ २९ ॥ ॥ ॥ षडध्वशोधनं कर्तव्यमित्युक्तं तत्रैते षडध्वानः कुत्र संतीति सर्वमाह तनौ ध्यायेदिति अंशौ ॥ २० ॥
किं गतत्वाध्वकं तत्त्वाध्वानं न्यसेदित्यर्थः ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

ओं अस्य शिष्यस्य कला ध्यानं शोधयामि स्वाहेति मंत्रेणाष्टवारं तं कला ध्यानं पादयोः शिष्यं कूर्चं न वामहस्तेन स्पृशन् जुहुयादेवं प्रत्यध्वमितराध्वसुकुर्यादित्यर्थः ॥ ३४ ॥ तस्माद्ब्रह्मणः आत्मस्थितमिति पूर्ववत्स्मिन् योजितं तदित्यर्थः ॥ ३५ ॥ देवतामिति होमार्थं मन्त्रावावाहितं देवतां कलशेन ये

ताराढ्यं जुहुयादष्टवारं प्रत्यध्वमेव हि ॥ षडध्वनस्ततस्ते तुलीनान् ब्रह्मणि भावयेत् ॥ ३४ ॥ पुनरुत्पादयेत् स्मात्सृष्टि मार्गेण वै गुरुः ॥ आत्मस्थितं तच्चैतन्यं पुनः शिष्ये तु योजयेत् ॥ ३५ ॥ पूर्णाहुतिं ततो हुत्वा देवतां कलशेन येत् ॥ पुनर्व्याहृतिभिर्हुत्वा वन्हेरंगाहुतीस्तथा ॥ ३६ ॥ एकैकशो गुरुर्दत्त्वा विसृजेद्वन्दिमात्मनि ॥ ततः शिष्यस्य नेत्रे तु बध्नीयाद्वाससा गुरुः ॥ ३७ ॥ नेत्रमंत्रेण तं शिष्यः कुण्डतो मण्डलं नयेत् ॥ पुष्पांजलिं मुख्यदेव्यां कारयेच्छिष्यहस्ततः ॥ ३८ ॥ नेत्रबंधं निराकृत्य वेशयेत् कुशविष्टरे ॥ भूतशुद्धिं शिष्यदेहे कुर्यात्प्रोक्तेन वर्त्मना ॥ ३९ ॥ मंत्रोदितांस्तथान्यासान् कृत्वा शिष्यतनौ ततः ॥ मण्डले वेशयेच्छिष्यमन्यस्मिन् कुंभसंस्थितान् ॥ ४० ॥ पल्लवाञ्छिष्यशिरसि विन्यसेन्मातृकां जपेत् ॥ कलशस्थजलैः शिष्यं स्नापयेद्देवतात्मकैः ॥ ४१ ॥ वर्धनीजलसेकं च कुर्याद्रक्षार्थं मंजसा ॥ ततः शिष्यः समुत्थाय वाससी परिधाय च ॥ ४२ ॥ कृतभस्मावलेपश्च संविशेद्गुरुसन्निधौ ॥ ततो गुरुः स्वकीयात्तु हृदयान्निर्गतां शिवां ॥ ४३ ॥ प्रविष्टां शिष्यहृदये भावयेत् करुणानिधिः ॥ पूजयेद्गंधपुष्पाद्यैरैक्यं वै भावयंस्तयोः ॥ ४४ ॥ ततस्त्रिशोदक्षकर्णे शिष्यस्योपदिशेद्गुरुः ॥ महामंत्रं महादेव्याः स्वहस्तं शिरसि न्यसेत् ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥

त्कलशे गतामिति भावयेत् सज्जनमंत्रेणेत्यर्थः ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ नेत्रमंत्रेण बध्नीयं नेत्रबंधं कृत्वा तं शिष्यं कुण्डस्थलान् मण्डलं कलशं प्रतिनयेदित्यर्थः ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ मंत्रोदितांस्तथान्यासान् कृत्वा मंत्रोदितां ॥ ४० ॥ ४१ ॥ वर्धनीया पूर्वमीशान्यां स्थापिता तस्यां स्थितैर्जलैरभिषेकं कुर्यादित्यर्थः ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ तयोः शिष्यदेवतयोरैक्यं भावयन् देवताबुद्ध्या शिष्यं पूजयेदित्यर्थः ॥ ४४ ॥ स्वहस्तं दक्षिणहस्तं शिष्यशिरसि अमृतमयं स्थापयेदित्यर्थः ॥ ४५ ॥

दे.भा.द्वा

॥२१॥

॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ इति ते कथित इति नारायणो नारदं प्रत्युपसंहारं करोति ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ तत्तदुक्तेति वैदिकरीत्यास्व
स्वगृह्योक्तरीत्यादीक्षितो वैदिकान्प्रयोगान्कुर्यात्कुंडमंडपादिपुरःसरतन्त्रोक्तप्रकारेण दीक्षावांस्तांत्रिकान्प्रयोगान्कुर्यादित्यर्थः ॥ ५२ ॥

टी.अ.
७

अष्टोत्तरशतमंत्रं शिष्योऽपि प्रजपेन्मुने ॥ दंडवत्प्रणमेद्भूमौ तं गुरुं देवतात्मकं ॥ ४६ ॥ सर्वस्वमर्पयेत्तस्मै याव
ज्जीवमनन्यधीः ॥ ऋत्विग्भ्यो दीक्षिणां दत्त्वा ब्राह्मणांश्चापि भोजयेत् ॥ ४७ ॥ सुवासिनीः कुमारीश्च बटुकांश्चैव सर्व
शः ॥ दीनानाथान्दरिद्रांश्च वित्तशठयविवर्जितः ॥ ४८ ॥ कृतार्थतांस्वस्य बुध्वानित्यमाराधयेन्मनुं ॥ इति ते कथि
तः सम्यग्दीक्षाविधिरनुत्तमः ॥ ४९ ॥ विमृश्यैतदशेषेण भज देवीपदांबुजं ॥ नान्यस्तु परमो धर्मो ब्राह्मणस्यात्र
विद्यते ॥ ५० ॥ वैदिकः स्वस्वगृह्योक्तक्रमेणोपदिशेन्मनुं ॥ तांत्रिकस्तन्त्ररीत्या तु स्थितिरेषा सनातनी ॥
५१ ॥ तत्तदुक्तप्रयोगांस्ते ते ते कुर्युर्न चान्यथा ॥ नारायण उवाच ॥ इति सर्वमया ख्यातं यत्पृष्ठं नारद त्वया ॥
५२ ॥ अतः परंपरां बाया भजनित्यं पदांबुजं ॥ नित्यमाराध्य तच्चाहं निर्वृतिं परमांगतः ॥ ५३ ॥ व्यास उ
वाच ॥ इति राजन्नारदाय प्रोक्ता सर्वमनुत्तमं ॥ समाधिमीलिताक्षस्तु दध्यै देवीपदांबुजं ॥ ५४ ॥ नारा
यणस्तु भगवान्मुनिवर्यशिखामणिः ॥ नारदोऽपि ततो नत्वा गुरुं नारायणं परं ॥ ५५ ॥ जगाम सद्यस्तप
से देवीदर्शनलालसः ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे द्वादशस्कंधे सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ ॥ ६१ ॥

॥ ५३ ॥ व्यासो जनेभ्यं प्रति नारायणनारदसंवादकथामुपसंहरति व्यास उवाच इति राजन्निति दध्यौ नारायण इत्यर्थः ॥ ५४ ५५ ॥
इति श्रीदेवीभागवततिलके द्वादशस्कंधे सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥२१॥

अर्धाधिकैकनवतिश्लोकैरयमुविस्तृता ॥ केनोपनिषदुद्दिष्टा कथा प्रस्तूयते धुना ॥ १ ॥ इत्थमेतावत्पर्यंतं सर्वदेवर्षिमानवानां श्रीदेव्याराधकत्वमुक्तं श्रु-
त्वा जगति श्रीदेव्या उपासनां नित्यां विहाय विष्णुशिवगणेशादिदेवतोपासकान् जनानां लक्ष्यविस्मितो राजापृच्छति जनमेजय उवाच भगवन् सर्वधर्म-
ज्ञेति द्विजातीनामिति ब्राह्मणक्षत्रियविशांशस्तु युपास्तिः श्रीगायत्र्युपास्तिर्नित्यां श्रुतिभिर्वेदचतुष्टयैरीरिता कथितेत्यर्थः तथा च श्रुतिरहरहः
संध्यामुपासीतेति तदकरणे प्रत्यवायः प्रायश्चित्तं च श्रुत्योक्तं नैवं शिवविष्णूपासनायानि सत्त्वप्रतिपादिका श्रुतिरास्ति तस्माद्गायत्र्युपासनैव नित्ये
ति भावः ॥ १ ॥ कस्मिन्काले तदाह संध्याकालत्रयेति त्रिसंध्यं द्विजैर्नित्यं श्रीगायत्र्युपासनाकर्तव्या तदतिक्रमे श्रुतिस्मृत्यादिषु प्रायश्चित्त-
कथनात् यदा प्रथमतः श्रुत्या गायत्रीष्टदेवता द्विजानामुदिता धर्मकामार्थमोक्षदा तदा तां स्वेष्टदेवतां पराशक्तिं संध्याकालातिरिक्तेन्यस्मिन्काले
निरंतरं स्मरेदिदमपि श्रुत्यैवोक्तं स्वेष्टदेवतास्मरणं विहायान्यदेवतास्मरणे प्रयोजनाभावात् तथा च श्रुतिः यो वै स्वां देवतामातेयजते प्रस्वायै देव-
तायै च्यवतेन परां प्राप्नोति पापीयान् भवतीति तथा च तादृशमिष्टदेवतां पराशक्तिं विहाय त्रांस्वीकृत्य वा तदभिमानं विहाय कस्मात्प्रयोजनादन्यदेव-

जनमेजय उवाच ॥ भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वशास्त्रवतां वर ॥ द्विजातीनां तु सर्वेषां शक्त्युपास्तिः श्रुतीरिता ॥ १ ॥

ता उपास्यत्वेन गृणीयुः न किंचित्प्रयोजनमस्तीत्यर्थः श्रीगायत्र्याः सर्वार्थदातृत्वं च श्रुत्यैवाभिहितं तथा च गोपथब्राह्मणे गायत्र्युपासिषदि ब्र-
ह्महेतुं प्रियं प्रतिष्ठामायतनमैक्षततत्तपस्वयदितवद्भूते ध्रियेतत्तत्सत्ये प्रत्यतिष्ठत् ससविता सा वित्र्या ब्राह्मणं सृष्ट्वा तत्सा वित्रीं पर्यदधादित्यादयो ह वा
एवं वित्स ब्रह्मवित्पुण्यां च कीर्तितं भते सुरभोश्च गंधान्सोपहतपाप्मानं तां श्रियमश्नुते य एवं वेद यश्चैवं विद्वानेव मेतां वेदानां मातरं सा वित्रीं संपदमुपनिषद-
मुपास्ते इति तथा सामविधिब्राह्मणे अथ गायत्र्यंगानित्याख्यास्यामः शिरो ब्रह्माललाटं द्यौश्चंद्रादित्यौ चक्षुषीमुखमग्निर्जिह्वा सरस्वती त्व-
ष्टार्या वावसवश्च रुद्राश्च बाहु उरो वायुः पृष्ठमिंद्रो विष्णुर्नाभिः प्रजापतिर्जघनमूर्ध्नि रुमस्तो वेदाः पादौ स्मितं विद्युच्छ्रुतिर्नवायुरस्थीनि पर्वताः समुद्रा वासां-
सिनक्षत्राण्यलंकारोऽय एवं वेद दुष्टतादुरूपयुक्ता न्यूनाधिकाश्च सर्वस्मात्स्वास्ति देवत्राणिभ्यश्च ब्रह्मसत्यं च पातुमां ब्रह्मसत्यं च पातुमामिति तथा बृहदा-
रण्यकोपनिषदि साहैषा गयांस्तत्रे प्राणवैगयांस्तत्रे प्राणांस्तत्रे तद्यद्गयांस्तत्रे तस्माद्गायत्रिनामेति एवमेव चतुर्षु वेदेषु विद्यमानाः श्रुतय उदाहार्याः ननु
विष्णुशिवगणपतिप्रभृतिदेवतानामपि पुराणागमादिषु गायत्रीप्रतिपाद्यत्वं प्रतिपादितं तथा च मैत्रायणीयश्रुतिः यो ह वा अमुष्मिन्नादित्येन हितस्तार-

दे.भा.द्वा

॥२२॥

कौक्षिणिवैषभगांख्योभाभिगंतिरस्यहीतिभगोभर्जयतीतिवैषभर्ग इतिरुद्र इतिअनयाचभ्रुस्याशिवस्यगायत्रीप्रतिपाद्यत्वमुक्तं तथाग्रिपुराणेतन्त्रेषु
चनारायणस्यगायत्रीप्रतिपाद्यत्वंप्रतिपादितं तथाचगायत्रीमंत्रस्यपराप्रकृतिरेवदेवतेतिनियमोनसिद्धइतिचेन्न गायत्रीमंत्रस्यांत्यामिप्रति
पादकत्वेनांत्यामिणश्चसर्वपदार्थजातांत्यामित्वेनगायत्रीमंत्रस्यतद्देवताप्रतिपादकत्वकथनेपिमुख्यगायत्रीउपास्तौचतुर्षुवेदेषुस्त्रीत्वविशिष्टदेव
तायाएव आयातुवरदादेव्यक्षरंब्रह्मसंमितं गायत्रीछंदसांमातेदं ब्रह्मजुषस्वमेइत्यावाहनमंत्रे उत्तमशिखरेजातेभूम्यांपवेतमूदेनि ब्राह्मणेभ्यो
भ्यनुज्ञातागच्छदेवियथासुखमिति विसर्जनमंत्रे तथाध्यानमंत्रेपिबालांबालादित्यमंडलमध्यस्थामित्यादिनाध्येयत्वेनस्त्रीत्वविशिष्टदेवतायाएव
कथनात्पराचिच्छक्तिरेवगायत्रीमंत्रप्रतिपाद्येतिनियमात् अत्यल्पमिदमुच्यते शिवविष्णुगणेशानामेवगायत्रीप्रतिपाद्यवमितिगायत्र्याब्रह्मप्रति
पादकत्वेनब्रह्मणश्चसर्वात्मकत्वेनसर्वपदार्थजातस्यैवगायत्रीप्रतिपाद्यत्वसंभवात् तथापिवेदेषूपसनासमयेयद्वृषंध्येयत्वेनोक्तंतदेवांपास्यमस्माकं

संध्याकालत्रयेऽन्यस्मिन्कालेनित्यतयाविभो ॥ तांविहायद्विजाःकस्माद्गृण्णीयुश्चान्यदेवताः ॥ २ ॥

द्विजानांतच्छ्रीत्वविशिष्टमेववेदेषुक्तमिति तदेवपराशक्तिरूपमेवास्माकमुपास्यंनशिवविष्ण्वादिरूपं ननुवेदेपिगायत्र्यागायत्रीच्छंदोविश्वा
मित्रऋषिः सवितादेवताअग्निर्मुखं ब्रह्माशिरोविष्णुर्हृदयं रुद्रः शिखाइत्यनेनसवितृरूपमेवदेवतात्वेनोक्तमितिचेन्न नात्रसवितृशब्देनसूर्यमंड
लाधिष्ठाताकश्चित्पुरुषोविवक्षितः किंतुतदंतर्गतोजगत्प्रसवक त्तांपरमात्माविवक्षितस्तस्यचस्त्रीरूपत्वेनैवतस्मिन्नेवमंत्रेध्येयत्वोक्त्याविरोधाभावा
त् अन्यथागायत्रीमंत्रेणसवितुः संबंधिवरेण्यंश्रेष्ठमंत्यामिरूपंध्येयत्वेनस्वमुखेनसाक्षात्प्रतिपादितंब्राह्मणमंत्रेणतुसवितैवध्येयत्वेनोक्तइतिमहा
न्विरोधः स्यादतएवमैत्रायणीयब्राह्मणेषष्ठप्रपाठकेपिसवितृमंडलाधिष्ठितपुरुषांतर्गतंपरमात्मरूपमेवगायत्रीमंत्रप्रतिपाद्यत्वेनोक्तं तथाचभ्रुति
मैत्रायणीयब्राह्मणे अथभर्गोदेवस्यधीमहीतिसवितावैदेवस्ततोयोस्यभर्गाख्यस्ताश्चितयामीत्याहुर्ब्रह्मवादिनइति अनेनचसवितुर्देवस्यसूर्यस्य
संबंधियदंत्यामिभर्गाख्यंतेजस्तद्धीमहीत्यन्वयउक्तः अतएवपुराणांतरेपिसंध्येविसूर्यगं ब्रह्मसंधानादविभागतइत्युक्तं सूर्येणाविभागतः सं
धानादूर्त्तनात्संध्योपास्तिकरिष्येइत्यादौसंध्याशब्देनसूर्यगं ब्रह्मोच्यतइतितदर्थः अस्तुवासूर्योदेवतातथापितस्यध्यानंस्त्रीलिंगविशिष्टमेवकर्त

टी.अ.

८

॥२२॥

व्यमितितस्मिन्नेवमंनेऽभिहितं तथाच समंत्रः सवितादेवताभिर्मुखं ब्रह्माशिरोविष्णुर्हृदयं रुद्रः शिखापृथिवीयोनिः प्राणापानव्यानोदानसमाना
स प्राणाश्चेतवर्णासांख्यायनसमोत्रागायत्रीचतुर्विंशत्यक्षरात्रिपदाष्टकुक्षिः पञ्चशीर्षोपनयनेविमिवीगइति तथाच स्त्रीलिङ्गभेदोऽष्टासूर्यरूपा
स शक्तिरेवोपास्येति सिध्यति किंच शिवविष्ण्वादीनां गायत्रीदेवतात्वे गायत्रीदेवताया अंगेषु ब्रह्माशिरोविष्णुर्हृदयं रुद्रः शिखेति मंत्रेण शिवादी
नां विन्यासोपवर्णनं सर्वथानसंगच्छते तस्मात्स्त्रीत्वविशिष्टा पराशक्तिर्गायत्रीदेवता गायत्रीमंत्रेण सर्वद्विजातिभिर्नित्यतयोपास्येति तास्वेष्टे देवतां वि
हाय किमित्यन्ये देवतां गृह्णन्तीति उक्त एव प्रश्नः ॥ २ ॥ नन्वन्यदेवतोपासकाः के संतितान्दर्शयति दृश्यंते इति वयं वैष्णवा इति केचिद्वदन्ति परेव

दृश्यंते वैष्णवाः केचिद्वाणपत्यास्तथापरे ॥ कापालिकाश्चीनमार्गरतावल्कलधारिणः ॥ ३ ॥ दिगंबरस्तथा
बौद्धाश्चार्वाका एवमादयः ॥ दृश्यंते बहवो लोके वेदश्रद्धाविवर्जिताः ॥ ४ ॥ किमत्र कारणं ब्रह्मं स्तद्भवान्वक्तुमर्ह
सि ॥ बुद्धिमंतः पंडिताश्च नानातर्कविचक्षणाः ॥ ५ ॥ अपिसंत्येव वेदेषु श्रद्धया तु विवर्जिताः ॥ न हि कश्चित्स्वक
ल्याणं बुद्ध्या हातुमिहेच्छति ॥ ६ ॥ किमत्र कारणं तस्माद्देवदेविदांवर ॥ मणिद्वीपस्य महिमा वर्णितो भवता
पुरा ॥ ७ ॥ कीदृक्तदस्ति यदेव्याः परं स्थानं महत्तरं ॥ तच्चापि वद भक्ताय श्रद्धधानाय मे नघ ॥ ८ ॥ प्रसन्नास्तु
वदंत्येव गुरवो गृह्यमप्युत ॥ सूत उवाच ॥ इति राज्ञो वचः श्रुत्वा भगवान्बादरायणः ॥ ९ ॥ ॥ ६५ ॥

यंगाणपत्या इति वदन्ति केचित्तु कापालिकावयमिति वदन्ति चीनमार्गरताश्चीनदेशीयमार्गरताः ॥ ३ ॥ आदिना शैवतंत्रानुयायिनः दृश्यंते इति
इमे वेदश्रद्धाविवर्जिता गान्ध्यापास्तिनेष्टारहिताश्च बहवो दृश्यंते इत्यर्थः ॥ ४ ॥ न केवलं मूढास्तन्मते प्रवृत्ताः किंतु बुद्धिमंतोऽप्यपि बुद्धिमंत इति
॥ ५ ॥ स्वकल्याणं वेदादेव ज्ञायमानं न हि कश्चित्स्वबुद्ध्याऽन्यमतमवलंब्य वेदमार्गं हातुं त्यक्तुमिहेच्छति न कोऽप्यित्यर्थः ॥ ६ ॥ तथापि तथा बह
वो दृश्यंते तस्मात्प्रबलं किंचित्कारणं वेदत्यागे गायत्रीश्रद्धाभावे च वर्तते तद्वदेत्याह किमत्र कारणमिति किंच तृतीयस्कंधमारभ्य द्वादशस्कंधपर्य
ंतं मणिद्वीपस्य महिमा बहुविधः श्रुतोऽस्ति तत्स्थानं कीदृग्मस्ति तदपि वदेत्याह मणिद्वीपस्येति ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ ॥ ६६ ॥

दे.भा.द्वा

॥२३॥

॥ १० ॥ जनमेजयवक्त्रं भुत्वा न्यासवक्त्रं समकृष्टमिति ॥ ११ ॥ तदस्य युगे सर्वे दिवा गायत्रीरूपपराशक्तिनिष्णाता वेदश्रद्धा
वंतश्च स्थिताः पश्चात्स्वारणवशात्तद्वहितावाता इति वदन् प्रथमतस्तलवकारोपनिषदुक्तपराशक्तिमहिमामंकयति पूर्वमदोद्धता इति ॥ १२ ॥
॥ १३ ॥ पराशक्तिकृपावेशाद्देवैर्जिता दैत्या भुवं स्वर्गं परित्यज्य पाताले गता इत्यन्वयः ॥ १४ ॥ स्वपराक्रमेति पराशक्तिप्रसादेन जयेल
॥ १५ ॥ अपि तं प्रसादमुन्मादेन विस्मृत्य स्वपराक्रमवर्णनं च कुरु रित्यर्थः ॥ १६ ॥ कथंचक्रुस्तदाह जयोस्माकमिति ॥ १७ ॥ तथा च
निजगादततः सर्वक्रमेणैव मुनीश्वराः ॥ यच्छ्रुत्वा तु द्विजातीनां वेदश्रद्धाविवर्द्धते ॥ १० ॥ व्यास उवाच ॥ स
म्यक्पृष्ट्वयाराजन्समये समयोचितं ॥ बुद्धिमानसि वेदेषु श्रद्धावांश्चैवलक्ष्यसे ॥ ११ ॥ पूर्वमदोद्धता दैत्यादे
वैर्युद्धंतु चक्रिरे ॥ शतवर्षं महाराज महाविस्मयकारकं ॥ १२ ॥ नानाशस्त्रप्रहरणं नानामायाविचित्रितं ॥ जग
त्क्षयकरं नूनं तेषां युद्धमभून्नृप ॥ १३ ॥ पराशक्तिकृपावेशाद्देवैर्दैत्याजिता युधि ॥ भुवं स्वर्गं परित्यज्य गताः पा
ताले वेश्मनि ॥ १४ ॥ ततः प्रहर्षिता देवाः स्वपराक्रमवर्णनं ॥ चक्रुः परस्परं मोहात्साभिमानाः समंततः ॥
॥ १५ ॥ जयोस्माकं कुतो न स्यादस्माकं महिमायतः ॥ सर्वोत्तरः कुत्र दैत्याः पामरा निष्पराक्रमाः ॥ १६ ॥
सृष्टिस्थिति क्षयकरा वयं सर्वे यशस्विनः ॥ अस्मदग्रे पामराणां दैत्यानां चैव का कथा ॥ १७ ॥ पराशक्तिप्रभावं
तेन ज्ञात्वामोहमागताः ॥ तेषामनुग्रहं कर्तुं तदैव जगदंबिका ॥ १८ ॥ प्रादुरासीत्कृपा पूर्णायक्षरूपेण भूमिप
॥ कोटिसूर्यप्रतीकाशं चंद्रकोटिसुशीतलं ॥ १९ ॥ विद्युत्कोटिसमाना भंहस्तपादादिवर्जितं ॥ अदृष्टपूर्वतद्
धृतेजः परमसुंदरं ॥ २० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥

श्रुतिः तलवकारोपनिषदि ब्रह्महृदे वैभ्यो विमिश्रयेतस्य ह ब्रह्मणो विजयो देवा अमहीयंत तेषां तस्माकमेवायं विजयोस्माकमेवायं महिमेति अनु
ग्रहं कर्तुं महंकारेण विमूढानुदत्तुं मित्यर्थः अनेन चाप्रार्थितापि देवी निजभक्तपतिपालनं करोतीत्यहो भक्तवात्सल्यं श्रीभगवत्या इति नोभितं यत्ते
देवैरप्रार्थितपित्तनुदधारेति ॥ १८ ॥ यक्षरूपेणेति यक्षयक्ष्मीयं अतिपूज्यं तेजः पूंक्षरूपेण प्रादुरासीदित्यर्थः तथा च श्रुतिः ते त्वेषां नि
जो वीर्यं प्रादुर्भवत्तमव्ययानत किमिदं यक्षमिति तेजो वर्णं वा त्कोटिसूर्येति ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥

टी.अ.

८

॥२३॥

अहोकिमिदमपूर्व्यं किमिदमपूर्व्यं किमिति प्रादुर्लभ्यः तैः कृताननेकांस्तंकां निशदयति दैत्यानामिति ॥ २१ ॥ २२ ॥ प्रतिक्रि
येति यक्षयंत्रबलः शत्रुस्तदापलायनं यदि समनलस्तदा युद्धं यक्षममीश्वरस्तदा भस्मात्तदनुसरणमेवं यत्र प्रतिक्रियेत्यर्थः ॥ २३ ॥ यतोचि
मुखमुत्तममिति अग्निर्वैदेवानामास्यमिति मुखादग्निरजायतेति श्रुतेरित्यर्थः ॥ २४ ॥ यतस्त्वमुत्तमस्माकं ततस्त्वमेव मुखे भवत्वान्मुख्यस्तत
स्त्वमेवेतद्विशिष्टं कार्यं कुरुष्वेत्याह ततो गत्वेति तथाच श्रुतिः तेऽग्निमब्रुवन् ज्ञातवैदेतद्विजानीहि किमेतद्यक्षमिति ॥ २५ ॥ वेगादिति तेन च

सविस्मयास्तदा प्रोचुः किमिदं किमिदं त्विति ॥ दैत्यानां चेष्टितं किं यामायाकापि महीयसी ॥ २१ ॥ केनचिन्निर्मिता
वायदेवानां स्मयकारिणी ॥ संभूयते तदा सर्वे विचारं च कुरुत्तमं ॥ २२ ॥ यक्षस्य निकटे गत्वा प्रष्टव्यं कस्त्वमित्य
पि ॥ बलाबलं ततो ज्ञात्वा कर्तव्या तु प्रतिक्रिया ॥ २३ ॥ ततो बन्धिसमाहूय प्रोवाचैन्द्रः सुराधिपः ॥ गच्छ बन्धे
त्वमस्माकं यतो सिमुखमुत्तमं ॥ २४ ॥ ततो गत्वा तु जानीहि किमिदं यक्षमित्यपि ॥ सहस्राक्षवचः श्रुत्वा स्वपरा
क्रमगर्भितं ॥ २५ ॥ वेगात्सनिर्गतो बन्धिर्ययौ यक्षस्य संनिधौ ॥ तदा प्रोवाच यक्षं तं त्वं कोसीति हुताशनं
॥ २६ ॥ वीर्यं च त्वयि किं यत्तद्वदसर्वममाग्रतः ॥ अग्निरस्मितया जातवेदा भस्मीति सो ब्रवीत् ॥ २७ ॥ सर्वस्य
दहनं शक्तिर्मयि विश्वस्यतिष्ठति ॥ तदा यक्षं परं तेजस्तदग्रे निदधौ तृणं ॥ २८ ॥ ॥ छ ॥

बन्धेः सहंकारत्वं बोधितं यक्षस्य सन्निधौ हुताशने गते सति तं हुताशनं तद्यक्षः को सित्वमित्यपृच्छदित्याह तदा प्रोवाचेति तथाच श्रुतिः तये
तितदभ्यद्रवत्तमभ्यवदत्कोसीति ॥ २६ ॥ त्वयि किं वीर्यं मस्ति तदपि वदेत्याह वीर्यं चेति यक्षवाक्यं श्रुत्वा यदग्निरवदत्तदाह अग्निरस्मी
ति ॥ २७ ॥ स्ववीर्यमाह सर्वस्येति सर्वं विश्वदाहिकाशक्तिर्मांयेतिष्ठतीत्यर्थः तथाच श्रुतिः अग्निर्वा अहमस्मीत्यब्रवीन् ज्ञातवैदेवा वा अ
हमस्मीति तस्मिन्स्त्वार्यं किं वीर्यं मित्यपीदं सर्वं दहेयं यदि दृष्टं धेय्यामिति साभिमानाग्निवाक्यं श्रुत्वा यथेता दृष्टी शक्तिस्त्वयि तिष्ठति तथैतत्तृणलेशं
दग्धादर्शयस्व शक्तिमिति वदन् हुताशनं तृणं दधारेत्याह तदग्रे निदधौ तृणमिति ॥ २८ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

दे.भा.द्व.

॥२४॥

॥२९॥३०॥ सर्वेशत्वादिकेताद्विषये इत्यर्थः तथा च श्रुतिः तस्मै तृणं मिदधावेतद्देहेति तदुपेयाय सर्वजवेन तन्नशशाकदग्धुंसततएव निवृत्तेनैत
द्वशकं विज्ञातुं यदेतन्नमिति ॥ ३१ ॥ कार्योत्साहाय वायुं स्तौति त्वयि प्रोतामिति प्रोतं प्रथितं तथा च श्रुतिः वायुर्वै गौतमतस्सूत्रं वायुना

टी.अ.

८

दहैनं यदि ते शक्तिर्विश्वस्य दहनेऽस्ति हि ॥ तदा सर्वबलेनैवाकरोद्यत्नं हुताशनः ॥ २९ ॥ नशशाकतृणंदग्धुं
लज्जितोगात्सुरान्प्रति ॥ पृष्ठे देवैस्तु वृत्तांते सर्वं प्रोवाच हव्यभुक् ॥ ३० ॥ वृथाभिमानो ह्यस्माकं सर्वेशत्वा
दिके सुराः ॥ ततस्तु वृत्रहा वायुं समाहूयेदमब्रवीत् ॥ ३१ ॥ त्वयि प्रोतं जगत्सर्वं त्वच्चेष्टाभिस्तु चेष्टितं ॥ त्वंप्राण
रूपः सर्वेषां सर्वशक्तिविधारकः ॥ ३२ ॥ त्वमेव गत्वा जानीहि किमिदं यक्षमित्यपि ॥ नान्यः कोपि समर्थोऽस्ति
ज्ञातुं यक्षं परं महः ॥ ३३ ॥ सहस्राक्षवचः श्रुत्वा गुणगौरवगुं फितं ॥ साभिमानो जगामाशु यत्र यक्षं विराजते
॥ ३४ ॥ यक्षं दृष्ट्वा ततो वायुं प्रोवाच मृदुभाषया ॥ कोसि त्वं त्वयि का शक्तिर्वद सर्वं ममाग्रतः ॥ ३५ ॥ ततो यक्षव
चः श्रुत्वा गर्वेण मरुदब्रवीत् ॥ मातरि श्वाहमस्मीति वायुरस्मीति चाब्रवीत् ॥ ३६ ॥ वीर्यितुमयि सर्वस्य चालने ग्रह
णोऽस्ति हि ॥ मच्चेष्टया जगत्सर्वं सर्वव्यापारवद्भवेत् ॥ ३७ ॥ इति श्रुत्वा वायुवाणीं निजगाद परं महः ॥ तृणमेत
त्तवाग्रे यत्तच्चालय यथेप्सितं ॥ ३८ ॥ नो चेद्भवं विहायैनं लज्जितो गच्छ वासवं ॥ श्रुत्वा यक्षवचो वायुः सर्वशक्ति
समन्वितः ॥ ३९ ॥ उद्योगमकरोत्तच्च स्वस्थानान्न च चालह ॥ लज्जितो गादेव पार्श्वे हित्वा गर्वसचानिलः ॥ ४० ॥

वै गौतमतस्सूत्रेण सर्वाणि भूतानि संहन्वानीति ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ यक्षं दृष्ट्वेति वायुं दृष्ट्वा कोसि त्वं त्वयि का शक्तिरस्तीति सर्वं ममाग्र
तोऽहं देहि तत्सर्वं प्रोवाचेत्यन्वयः ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ उद्योगमिति स वायुः सर्वशक्तियुतश्चालयितुं प्रवृत्तोऽपि तत्तृणं
सर्वं समाहूय ततोऽकृत्तः स वायुरपि जगामेत्यर्थः ॥ ४० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥२४॥

गर्वनिर्वापोगर्वनाशः समर्थाःस्मवयंदेवाइतिशेषः तथाचश्रुतिः अथवायुमब्रुवन्वायावेतद्विजानीहि किमेतद्यक्षमिति तथेतितदभ्यद्रवत्तमभ्य
वदत्कोसीतिवायुर्वाअहमस्मीत्यब्रवीन्मातरिश्वावाअहमस्मीतितस्मिस्स्वयिर्किंवीर्यमित्यपीदं सर्वमाददियंयदीदं पृथिव्यामितितस्मैतृणानिदधावे
तदादत्स्वेतितदुपप्रेयायसर्वजवेतन्नशाकादातुंसततएवनिवृत्तेनैतदशकंविज्ञातुंयदेतद्यक्षमिति ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ प्राद्रवच्चेति नके
वलंसामान्यतइंद्रःसमुपाजगामकिंतुवेगेनप्राद्रवच्चेति ततस्तत्तेजोमयंयक्षरूपमहोतर्धानंप्रापेत्यर्थः ॥ ४४ ॥ अतीवलज्जितइति मदपेक्षया

वृत्तांतमवदत्सर्वगर्वनिर्वापकारणं ॥ नैतज्ज्ञातुंसमर्थाःस्ममिथ्यागर्वाभिमानिनः ॥ ४१ ॥ अलौकिकंभाति
यक्षंतेजःपरमदारुणं ॥ ततःसर्वेसुरगणाःसहस्राक्षंसमूचिरे ॥ ४२ ॥ देवराडमियस्मात्त्वंयक्षंजानीहितत्वतः ॥
ततइंद्रोमहागर्वात्तद्यक्षंसमुपाद्रवत् ॥ ४३ ॥ प्राद्रवच्चपरंतेजोयक्षरूपंपरात्परं ॥ अंतर्धानंततःप्रापतद्यक्षंवास
वाग्रतः ॥ ४४ ॥ अतीवलज्जितोजातोवासवोदेवराडपि ॥ यक्षसंभाषणाभावाल्लघुत्वंप्रापचेतसि ॥ ४५ ॥
अतःपरंनगंतव्यंमयातुसुरसंसदि ॥ किंमयातत्रवक्तव्यंस्वलघुत्वंसुरान्प्रति ॥ ४६ ॥ देहत्यागोवरस्तस्मा
न्मानोहिमहतांधनं ॥ मानेनष्टेजीवितंतुमृतितुल्यंनसंशयः ॥ ४७ ॥ इतिनिश्चित्यतत्रैवगर्वंहित्वासुरेश्वरः
॥ चरित्रमीदृशंस्यतमेवशरणंगतः ॥ ४८ ॥ तस्मिन्नेवक्षणेजाताव्योमवाणीनभस्तले ॥ मायाबीजंसह
स्राक्षजपतेनसुखीभव ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥

न्यूनावग्निवायूतयोरनेनयक्षेणसंभाषणमभूदहंतदपेक्षयाधिकःसन्नपिमयासहयक्षेणभाषणमपिनकृतमतोलज्जितइत्यर्थः ॥ ४५ ॥ तत्रगत्वा
मयास्वलघुत्वंवक्तव्यंकिमित्यन्वयः ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ नायंकश्चिच्छत्रुर्यदिशत्रुःस्यात्तर्हिगुदार्थंप्रवृत्तःस्यात्तथायंनप्रवृत्तःकिंत्वंतर्हिनस्तस्मा
दयमीश्वरएवेतिनिश्चित्यतमेवशरणंगतइत्याह इतिनिश्चित्येति ॥ ४८ ॥ मायाबीजंसाम्यावस्थमायाशबलब्रह्मवाचकंभुवनेश्वरीबीजमित्य
र्थः तेनचसाम्यावस्थमायाशबलब्रह्मरूपिणीमूलप्रकृतिर्भुवनेश्वरीयंप्रादुर्भूतातिरोभूताचेतिबोधितं ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥

दे.भा.द्वा.

॥२५॥

लक्षवर्षनिराहारइत्यनेनश्रीमूलप्रकृतिदर्शनंनाल्पपुण्येनलभ्यतेकिंतुबहुपुण्येनेतिबोधितं ॥ ५० ॥ अकस्मादिति चैत्रशुक्लनवम्यांमध्याह्ने
इत्यर्थः यस्मिन्नेवस्थलेतेजस्तिरोभूतंतस्मिन्नेवस्थलेतदेवतेजःपुनराविरासीदित्यर्थः ॥ ५१ ॥ तस्मिंस्तेजोमंडलेकुमारीकांचिद्विलक्षणांद
दर्शितांवर्णयति तेजोमंडलमध्येत्विति ॥ ५२ ॥ पाशांकुशोष्ठाभयमुद्रायुक्तहस्तचतुष्टयसहितातिरमणीयांभुवनेश्वरीमूर्तिंददर्शितिसमुदा

टी.अ.

८

ततोजजापपरमंमायाबीजंपरात्परं ॥ लक्षवर्षनिराहारोऽध्यानमीलितलोचनः ॥ ५० ॥ अकस्माच्चैत्रमासीय
नवम्यांमध्यगेरवौ ॥ तदेवाविरभूत्तेजस्तस्मिन्नेवस्थलेपुनः ॥ ५१ ॥ तेजोमंडलमध्येतुकुमारींनवयौवनां
॥ भास्वज्जपाप्रसूनाभांबालकोटिरविप्रभां ॥ ५२ ॥ बालशीतांशुमुकुटांवस्त्रांतर्व्यंजितस्तनीं ॥ चतुर्भिर्वर
हस्तैस्तुवरपाशांकुशाभयान् ॥ ५३ ॥ दधानांरमणीयांगीकोमलांगलतांशिवां ॥ भक्तकल्पद्रुमामंबांनाना
भूषणभूषितां ॥ ५४ ॥ त्रिनेत्रांमल्लिकामालाकबरीजूटशोभितां ॥ चतुर्दिक्षुचतुर्वेदैर्मूर्तिमद्भिरभिष्टुतां ॥ ५५
॥ दंतच्छटाभिरभितःपद्मरागीकृतक्षमां ॥ प्रसन्नस्मेरवदनांकोटिकंदर्पसुंदरां ॥ ५६ ॥ रक्तांबरपरीधनारक्त
चंदनचर्चितां ॥ उमाभिधानांपुरतोदेवीहैमवतींशिवां ॥ ५७ ॥ निर्व्याजकरुणामूर्तिसर्वकारणकारणां ॥ दद
र्शवासवस्तत्रप्रेमसद्गदितांतरः ॥ ५८ ॥ प्रेमाश्रुपूर्णनयनोरोमांचिततनुस्ततः ॥ दंडवत्प्रणनामाथपादयो
र्जगदीशितुः ॥ ५९ ॥ तुष्टावविर्विधोःस्तौत्रैर्भक्तिसन्नतकंधरः ॥ उवाचपरमप्रीतिःकिमिदंयक्षमित्यापि ॥ ६० ॥

यार्थः ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ पद्मरागीकृतक्षमांदंतच्छटाभिर्दांडिमीबीजसदृशदंतपंक्तिदीधितिभिःपद्मरागमणिसान्निभकृतभूतलां ॥ ५६ ॥
हैमवतींहिमकल्पिताभरणवतीं हिमवतोदुहितरंवेतिपार्वत्यभेदादियमुक्तिः तथाचश्रुतिरथेद्रमब्रुवन्मघवन्नेतद्विजानीहि किमेतद्यक्षमिति तथेति
तदभ्यद्रवत्तस्मात्तिरोदधे सतस्मिन्नेवाकाशेस्त्रियमाजगामबहुशोभमानामुमाहैमवतींतांहोवाचकिमेतद्यक्षमितिब्रह्मोतिहोवाचेति ॥ ५७ ॥
॥ ५८ ॥ जगदीशितुःश्रीभुवनेश्वर्याः ॥ ५९ ॥ उवाचेति इदंयक्षंकिमस्ति ॥ ६० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥२५॥

कस्माच्चकारणात्प्रादुर्भूतं तत्सर्ववेदेत्यर्थः ॥ ६१ ॥ रूपं मदीयमिति इदं यद्यक्षं तन्मदीयं मुख्यं रूपं इदमेव ब्रह्म सर्वकारणं भवतीत्यर्थः तदेव ब्रह्म स्वरूपं वर्णयति मायाधिष्ठानेति साम्यावस्थमायाधिष्ठानमित्यर्थः तद्विशिष्टमिति फलितं ॥ ६२ ॥ सर्ववेदप्रतिपाद्यत्वं तस्याह सर्ववेदा इति यत्पदं षष्ठ्यते प्राप्यते ज्ञानिभिरिति पदं तदेतत्पदं ब्रह्म सर्ववेदा आमनन्ति प्रतिपादयन्ति तथा सर्वाणि तपांसि चास्माभिराचीर्णैरिदमेव प्राप्यमिति वदन्ति तथा यदिच्छन्तो ब्राह्मणा ब्रह्म चर्यगुरुकुलवासमष्टविभैर्युनत्यागं च चरन्त्याचरन्ति तदेतद्वस्तु ते तुभ्यं संग्रहेण नाम्ना ब्रवीमि कथयामि सर्वोपासना

प्रादुर्भूतं च कस्मात्तद्वदसर्वं सुशोभने ॥ इति तस्य वचः श्रुत्वा प्रोवाच करुणार्णवा ॥ ६१ ॥ रूपं मदीयं ब्रह्मैतत्सर्वकारणकारणं ॥ मायाधिष्ठानभूतं तु सर्वसाक्षि निरामयं ॥ ६२ ॥ सर्ववेदा यत्पदमामनन्ति तपांसि सर्वाणि धयद्वदन्ति ॥ यदिच्छन्तो ब्रह्म चर्यं चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण ब्रवीमि ॥ ६३ ॥ ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म तदेवाहुश्चर्हीमयं ॥ द्वे बीजे मम त्रौस्तोमुख्यत्वेन सुरोत्तम ॥ ६४ ॥ भागद्वयवतीयस्मात्सृजामि सकलं जगत् ॥ तत्रैकभागः संप्रोक्तः सच्चिदानंदनामकः ॥ ६५ ॥ मायाप्रकृतिसंज्ञस्तु द्वितीयो भाग इति ॥ सा च माया पराशक्तिः शक्तिमत्यहर्माश्वरी ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥

कर्मफलभूतमिदमेवेत्यर्थः ॥ ६३ ॥ किं तन्नामेति चेत्तदाह ॐमित्येकाक्षरं ब्रह्म इति सर्ववेदेष्वोमिति पदेन यदुद्धोष्यते तदेतद्ब्रह्मेत्यर्थः तस्यैव ह्रींकारमंत्रोपि वाचक इत्याह तदेवाहुश्चर्हीमयमिति आहुर्वेदा इत्यर्थः तथा च श्रुतिः ओमिति ब्रह्म इति तथा ह्रीं ब्रह्म इति चाथर्वणे न त्वेकस्यैव वस्तुनो द्वे बीजे किमिति वाचके जाते तत्र कारणमाह द्वे बीजे इति ॥ ६४ ॥ भागद्वयवतीति यतो हं माया भाग ब्रह्म भागरूप भागद्वयवती माया शब्द ब्रह्मरूपिणी सर्वजगत्सृजामि तस्मात्कारणान्मम भागद्वयत्वाद्वा जद्वयं वाचकमित्यर्थः कौतौ भागौ तत्राह तत्रैकभाग इति ॥ ६५ ॥ ननु तद्द्विब्रह्म भागस्य वाचकः प्रणवो माया भागस्य वाचकं माया बीजमिति पर्यवसन्नं तथा च प्रणवोपासनाया मुपास्ये ब्रह्मणि शक्तेर्भागो नंतर्भूतस्तथा माया बीजोपासनाया ब्रह्म भागो नंतर्भूत इति प्राप्तमिति चेत्तत्राह सा च मायेति ॥ ६६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.द्वा.

॥२६॥

ममाभिन्नत्वमागतेति नहिशक्तिःशक्तिमतःपृथगुपलभ्यतेवन्हादिशक्तिषुवन्हादेःशक्तेःपृथगनुपलंभात्किंतुममशक्तिमतोमायाशक्तिर्म
दभिन्नैवतिष्ठति तथाचाग्निशक्तौहोमेग्नौहोमोर्यसिद्धौयथावाग्नेहोमेग्निशक्त्याहोमोर्यसिद्धस्तथाब्रह्मभागवाचकस्यप्रणवस्यशक्तिर्विशिष्टब्रह्म
वाचकत्वंमायाशक्तिर्भागवाचकस्यमायाबीजस्यमायाविशिष्टब्रह्मवाचकत्वंबीजद्वयस्यापेविशिष्टवाचकत्वमतएवर्हीब्रह्मेतिसामानाधिकरण्यं
श्रुत्युक्तंसंगच्छतेइतिभावः ॥ ६७ ॥ ननुप्रलयेमायालयात्कथंत्वदभिन्नासेतिचेत्तत्राह प्रलयइति प्रलयेमायानाशेउत्तरसर्गानुपपत्ति
प्रसंगान्मायानाशःप्रलयेनास्ति किंतुप्रलयेमदभिन्नैवसातिष्ठतीत्यर्थः ननुतर्हिप्रलयेपिमायासत्वेनिरंतरंकारणसत्वात्कार्यजगत्सर्जनादिरूपंनि
रंतरमेवस्यादितिचेत्तत्राह प्राणिकर्मेति नकेवलंमायासहायंकर्मादिकंविहायजगत्करोति किंतुतदपेक्षयैवकरोतितथाचप्रलयेसर्वकर्माणांपरि

चंद्रस्यचंद्रिकेवेयंममाभिन्नत्वमागता ॥ साम्यावस्थात्मिकाचैषामायाममसुरोत्तम ॥ ६७ ॥ प्रलयेसर्वजग
तोमदभिन्नैवतिष्ठति ॥ प्राणिकर्मपरीपाकवशतःपुनरेवहि ॥ ६८ ॥ रूपंतदेवमव्यक्तंव्यक्तीभावमुपैतिच ॥
अंतर्मुखातुयावस्थासामाग्रेत्यभिधीयते ॥ ६९ ॥ बहिर्मुखातुयामायातमःशब्देनसोच्यते ॥ बहिर्मुखात्तमो
रूपाज्जायतेसत्वसंभवः ॥ ७० ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ६९ ॥

पक्वानांफलस्यदत्तत्वेनापरिपक्वानां चकर्मणांफलदानसमयाभावेनपरिपक्वकर्मरूपसहायाभावात्प्रलयोभवाति तदनंतरमवशिष्टप्राणिकर्मणापरि
पाकेसतिसैवव्यक्तरूपामायापरिपक्वकर्मरूपसहायसहिताव्यक्तीभावमुपैतीतिनकारणसत्वेपिकार्यस्यजगत्सर्जनरूपस्यनिरंतरमुत्पत्तिरितिभा
वः ॥ ६८ ॥ ननुतर्हिमायायाःप्रलयेपिविद्यमानत्वेतमआसीत्तमसागूढहमग्रेइतिश्रुतोमायायाःकथमुत्पत्तिरुक्तेतिचेत्तत्राह अंतर्मुखात्विति
अयमर्थः अंतर्मुखायामायायाअवस्थागुणत्रयसाम्यावस्थारूपासानित्यानतस्याउत्पत्तिःश्रुतैश्रूयते किंतुतस्यागुणत्रयस्ययद्वैषम्यमुत्पद्यतेत
देवतमआसीदित्यादिनोत्पत्त्याश्रयत्वेनाभिधीयतेतच्चोत्पद्यमानंतमोरूपंबहिर्मुखमायारूपमुच्यतेइतिनमायायाउत्पत्तिश्रुतावभिहितार्किंतुमायागुणा
नामेवोत्पत्तिरिति ॥ ६९ ॥ तत्रप्रथमतःकोवागुणउत्पद्यतेतत्राह बहिर्मुखादिति प्रथमतोव्यक्तात्तमोगुणउत्पद्यतेततःसत्वगुणस्ततोरजो
गुणइत्यर्थः ॥ ७० ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७० ॥

टी.अ.

८

॥२६॥

एतद्गुणत्रयविशिष्टचैतन्यस्यनामांतराण्याह गुणत्रयात्मका इति गुणत्रयमध्ये एकैकगुणाभिमानिनो ब्रह्मादय इत्यर्थः ॥ ७१ ॥ विभागेनत
देवाह रजोगुणाधिक इति यद्यपि गुणत्रयात्मका एव ब्रह्मादयः सर्वजगच्च तथापि यस्यस्य गुणं यस्य त्राधिक्यं तत्तद्गुणरूपत्वं तस्योच्यते इति बोध
नार्थमधिकपदं सर्वकारणरूपधृतिगिति तमोगुणादेवरजः सत्वगुणोद्भवस्योक्तत्वात्तमोगुणोपाधिकरुद्रस्य सर्वकारणरूपत्वमुक्तं पुक्तमेव ॥ ७२ ॥
॥ ७३ ॥ तवतुरीयरूपायाः कोवाउपाधिस्तत्राह साम्यावस्थेति यागुणत्रयसाम्यावस्थां तर्मुखामायासामेतुरीयरूपस्योपाधिरित्यर्थः ननु तर्हि
तुरीयस्य मायया विशिष्टं तर्भावे निगुणं ब्रह्म किं भविष्यतीति चेत्तुरीयातीतं भविष्यतीत्याह अत ऊर्ध्वमिति मायारहितं तुरीयातीतं यत्तदेव निगुणं ब्रह्म

रजोगुणस्तदैवस्यात्सर्गादौ सुरसत्तम ॥ गुणत्रयात्मकाः प्रोक्ता ब्रह्मा विष्णु महेश्वराः ॥ ७१ ॥ रजोगुणाधि
को ब्रह्मा विष्णुः सत्त्वाधिको भवेत् ॥ तमोगुणाधिको रुद्रः सर्वकारणरूपधृक् ॥ ७२ ॥ स्थूलदेहो भवेद्ब्रह्मा लिङ्ग
देहो हरिः स्मृतः ॥ रुद्रस्तु कारणो देहस्तुरीयात्वहमेव हि ॥ ७३ ॥ साम्यावस्था तु या प्रोक्ता सर्वा तर्यामिरूपिणी
अत ऊर्ध्वं परं ब्रह्म मद्रूपं रूपवर्जितं ॥ ७४ ॥ निगुणं सगुणं चेति द्विधामद्रूपमुच्यते ॥ निगुणं मायया हीनं सगुणं
मायया युतं ॥ ७५ ॥ साहं सर्वजगत्सृष्टा तदंतः संप्रविश्य च ॥ प्रेरयाम्यनिशं जविं यथा कर्म यथा श्रुतं ॥ ७६ ॥
सृष्टिस्तिति तिरोधाने प्रेरया यहमेव हि ॥ ब्रह्माणं च तथा विष्णुं रुद्रं वै कारण आत्मकं ॥ ७७ ॥ मद्रया द्वाति पदनो
भौत्या सूर्यश्च गच्छति ॥ इंद्राग्निमृत्यवस्तद्वत्साहं सर्वोत्तमा स्मृता ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥

विष्यतीत्यर्थः इदमवस्थापंचकं तापनीयश्रुतौ प्रसिद्धं ॥ ७४ ॥ निगुणं सगुणं भेदेन तदेव स्वस्वरूपं विशदयति निगुणमिति ॥ ७५ ॥ अंतर्यो
मिरूपाहमेवेत्याह साहं सर्वमिति तथा च श्रुतिः तत्सृष्ट्वा तदेवानुग्राविश्यादिति यथा यस्य कर्म तथा तं प्रेरयामीत्यर्थः ॥ ७६ ॥ तिरोधाने संहा
रे कारणात्मकं कारणदेहाभिमानिनमित्यर्थः तथा च मदाज्ञया ते ब्रह्मादयः सृष्टिं कुर्वतीति मुख्यत्वेन सृष्टिस्थिति संहारकर्त्री अहमेवास्तीति भावः
॥ ७७ ॥ न केवलं ब्रह्मादय एव मदधीनाः किं तर्हि सर्वदेवा इत्याह मद्रयादिति इंद्राग्निमृत्यवस्तद्वन्मद्रयादेव व्यवहारं कुर्वतीति शेषः तथा च श्रु
तिः भीषास्माद्वातः पवते भीषो देति सूर्यः भीषास्मादग्निश्चेद्वै श्वमृत्युर्धावति पंचम इति ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥

दे.भा.द्वा.

॥२७॥

एतावत्यर्थं तां केमिदं यक्षमित्यपीति देवैर्द्रुप्रश्रस्योत्तरं दत्तं ततः परं प्रादुर्भूतं च कस्मात्तदिति द्वितीयप्रश्रस्योत्तरमाह मत्प्रसादादिति ॥ ७९ ॥
॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ततः सर्वे इति तद्दिनादारभ्येति शेषः ॥ ८५ ॥ गायत्रीजपतत्पराः पूर्वमापि सर्वे गायत्रीजपवन्त
एव स्थितास्तद्दिनादारभ्य तु गायत्रीजपनिष्णाता जाता इत्यर्थः ॥ ८६ ॥ एवं सत्ययुगे सर्वद्विजदेवादयोगायत्रीप्रणवहृल्लेखामंत्राणामेव मूलप्र

मत्प्रसादाद्भवद्भिस्तु जयोलब्धोऽस्ति सर्वथा ॥ युष्मानहं नर्तयामिकाष्ठपुत्तलिकोपमान् ॥ ७९ ॥ कदाचिद्देव
विजयं दैत्यानां विजयं क्वचित् ॥ स्वतंत्रास्वेच्छया सर्वकुर्वे कर्मानुरोधतः ॥ ८० ॥ तां मां सर्वात्मिकां यूयं विस्मृ
त्य निजगर्वतः ॥ अहंकारावृतात्मानो मोहमाप्तादुरंतकं ॥ ८१ ॥ अनुग्रहततः कर्तुं युष्मद्देहादनुत्तमं ॥ निःसृतं
सहसा तेजो मदीयं यक्षमित्यपि ॥ ८२ ॥ अतः परं सर्वभावैर्हीत्वा गर्वतु देहजं ॥ मामेव शरणं यात सच्चिदानंद
रूपिणी ॥ ८३ ॥ व्यास उवाच ॥ इत्युक्त्वा च महादेवी मूलप्रकृतिरीश्वरी ॥ अंतर्धानं गता सद्यो भक्त्या देवैर
भिष्टुता ॥ ८४ ॥ ततः सर्वे स्वगर्वतु विहाय पदपंकजं ॥ सम्यगाराधयामासुर्भगवत्याः परात्परं ॥ ८५ ॥
त्रिसंध्यं सर्वदा सर्वे गायत्रीजपतत्पराः ॥ यज्ञभागादिभिः सर्वदेवीनित्यं सिषेविरे ॥ ८६ ॥ एवं सत्ययुगे
सर्वे गायत्रीजपतत्पराः ॥ तारहृल्लेखयोश्चापि जपे निष्णातमानसाः ॥ ८७ ॥ न विष्णुपासनानित्यावेदे
नोक्ता तु कुत्रचित् ॥ न विष्णुदीक्षानित्यास्ति शिवस्यापि तथैव च ॥ ८८ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६४ ॥

कृतिवाचकानामुपासकाः स्थिता इत्यर्थः ॥ ८७ ॥ यतो मूलप्रकृतिः सर्वेश्वरी सर्वोत्तमा स्ति तस्मादेव कारणान्तस्या एव गायत्रीरूपाया दीक्षा
सनाचनित्यत्वेन सर्वदेवैः प्रतिपादितानां शिवविष्णवादिदेवानामित्याह न विष्णुपासनेति अहरहः संध्यामुपासीतेति गायत्र्युपासनविधिवन्न कुत्रापि वि
ष्णवादिदेवतोपासनाविधिर्नैत्यत्वेन द्विजानां श्रूयते तस्मान्न विष्णवादिदेवतानामुपासनादीक्षाचनित्यायदि च सानित्या स्यात्तदा सर्वे शैवावैष्णवावाभवे
युर्न च तथा दृश्यंते केचित्तु वैष्णवाः केचित् शैवाः केचिद्वाणपत्यास्तस्मात्तदुपासनाभ्युदयिकी काम्येवेति भावः ॥ ८८ ॥ ॥ ७७ ॥

टी.अ.

८

॥२७॥

नित्योपासनातर्हि कास्तीत्यत्राह गायत्र्युपासनेति द्विजोयदि गायत्रीदीक्षितो न स्यात्तदा धर्मेऽप्येतेन तथा शिवविष्णुगणेशादीक्षाभावधः पातो हि
जस्य कुत्राप्युक्तस्तथा त्वे सर्वे शैवा वैष्णवा गणपत्या वा बभूवुर्न च केचिच्छैवाः केचिद्वैष्णवाः केचिद्गणपत्या इति गायत्रीदीक्षावंतस्तु सर्वे द्विजा
श्च्युते तस्माद्गायत्रीदीक्षैव नित्येति भावः ॥ ८९ ॥ नन्वभ्युदयार्थमपि द्विजस्य शैववैष्णवादिदीक्षापेक्षितेति चेत्तत्राह तावता कृतकृत्यत्वमिति
गायत्र्युपासनायां यदिकश्चिदभ्युदयार्थो न्यूनस्यात्तदा तत्प्राप्त्यर्थमन्यदेवतोपास्तिर्द्विजस्यापेक्षिताननुत्तथास्ति तावता केवलगायत्रीमंत्रेणैव कृतकृ-
त्यत्वं द्विजस्य श्रुतिर्ब्रवीति तस्माद्द्विजस्याभ्युदयार्थमपि नान्यदेवतोपास्तिरपेक्षितेति भावः तथा च श्रुतिर्बृहदारण्यके अष्टाक्षरं वा एकं गायत्र्यैपदं
एतदुहास्या एतत्सयावदेतेषु लोकेषु तावद्द्विजयतियो स्या एतदेवंपदं वेदेति एतत्सयावतीयं त्रयीविद्या तावत्त्रिजयतियो स्या एतदेवंपदं वेद एतत्सयाव-

गायत्र्युपासनानित्या सर्ववेदैः समीरिता ॥ यया विना त्वधः पातो ब्राह्मणस्यास्ति सर्वथा ॥ ८९ ॥ तावता कृ-
तकृत्यत्वं नान्यापेक्षा द्विजस्य हि ॥ गायत्रीमात्रनिष्णातो द्विजो मोक्षमवाप्नुयात् ॥ ९० ॥ कुर्यादन्यन्न वा कुर्या-
दिति प्राह मनुः स्वयं ॥ विहाय तां तु गायत्रीं विष्णूपास्ति परायणः ॥ ९१ ॥ ॥ ६२ ॥

दिदं प्रागितावद्द्विजयतियो स्या एतदेवंपदं वेदेति तथा साहैषा गयांस्तत्रे प्राणा वै गयास्तत्प्राणांस्तत्रे तद्व्यांस्तत्रे तस्माद्गायत्रीनामेति तथा गोपथब्रा-
ह्मणे यो ह वा एवं विस्त्रह्य विष्णुयां च कीर्तिलभते सुरभीं श्वगंधान्सोपहतपाप्मानं तां श्रियमश्रुतेय एवं वेद यश्चैवं विद्वानवेमेतां वेदानां मातरं सा वित्रीं
संपदमुपनिषदमुपास्ते इत्यादि सर्ववेदेषु श्रुतयो द्रष्टव्याः ननु तर्हि वेदेषु किमित्यन्यदेवतोपास्तिरुक्तेति चेदिच्छायावैचित्र्यात्स्वभावत इतरदेवता
भक्तानामिच्छा विधाताभावायेति ब्रूमः ॥ ९० ॥ मनुरपि गायत्रीमंत्रेणैव द्विजस्य कृतकृत्यत्वमाहेत्याह कुर्यादन्यन्न वेति तथा च मनुः कुर्या-
दन्यन्न वा कुर्यान्मैत्रे ब्राह्मण उच्यते इति महाभारते पिशांतिपर्वाण्यमहात्म्ये गायत्रीमंत्रस्यैव प्राशस्त्यमुक्तं किंच गायत्रीमंत्रमगृहीत्वा द्विजो
विष्णवादिदेवतोपास्ति परायणो नरकमेव सर्वथा याति विष्णवादिदेवतामंत्रमगृहीत्वा केवलगायत्रीमंत्रपरायणो मोक्षं याति तस्मात्प्राशस्तेर्गायत्र्या ए-
वोपास्तिर्नित्या सर्वोत्तमा चेत्याह विहाय तां तु गायत्रीमिति ॥ ९१ ॥ ॥ ७॥ ॥ ७॥ ॥ ७॥ ॥ ७॥

भा.द्वा.

॥२८॥

उपसंहरति तस्मादिति अतएवहेतोः सत्ययुगे सर्वे पराशक्ति गायत्रीपादांबुजरतादेवी भक्ता आसन्नित्यर्थः प्रथमतो द्विजातीनां वेदेनोपदिष्टा यत्र युपासनासकलेष्टसंभवेन्यदेवतोपासनायां प्रयोजनाभाव एवेति भावः ॥२२॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके द्वादशस्कंधे अष्टमोऽध्यायः ॥८॥ शतश्लोकैर्ब्राह्मणानां शापादौ तमसंभवात् ॥ अन्यदेवोपासनासु श्रद्धाजातेति चोच्यते ॥१॥ इत्थं सत्ययुगे पराशक्ति भक्तिं पराशक्तिमाहमाप्र

शिवोपास्तिरतो विप्रो नरकं याति सर्वथा ॥ तस्मादाद्ययुगे राजन् गायत्रीजपतत्पराः ॥ १२ ॥ देवीपदांबुजर
ता आसन् सर्वे द्विजोत्तमाः ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे द्वादशस्कंधे अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ व्यास उवाच
॥ कदाचिदथ काले तु दशपंचसमाविभो ॥ प्राणिनां कर्मवशतो नववर्षशतक्रतुः ॥ १ ॥ अनावृष्ट्यातिदुर्भिक्षमभ
वत्क्षयकारकं ॥ गृहे गृहेश्वानां तु संख्यां कर्तुं न शक्यते ॥ २ ॥ केचिदश्वान्वराहान्वाभक्षयंति क्षुधादिताः ॥
शवानि च मनुष्याणां भक्षयंत्यपरे जनाः ॥ ३ ॥ बालकं बालजननी स्त्रियं पुरुष एव च ॥ भक्षितुं चलिताः सर्वे क्षुध
यापीडितानराः ॥ ४ ॥ ब्राह्मणा बहवस्तत्र विचारं चक्रुस्तमं ॥ तपोधनो गौतमोऽस्ति स नः खेदं हरिष्यति ॥ ५ ॥
सर्वैर्मिलित्वा गंतव्यं गौतमस्याश्रमे धुना ॥ गायत्रीजपसंस्तुत गौतमस्याश्रमे धुना ॥ ६ ॥ सुभिक्षं श्रूयते तत्र पा
णिनो बहवो गताः ॥ एवं विमृश्य भूदेवाः सान्निहोत्राः कुटुंबिनः ॥ ७ ॥ सगोधनाः सदासाश्च गौतमस्याश्रमं ययुः
॥ पूर्वदेशाद्ययुः केचित्केचिदक्षिणदेशतः ॥ ८ ॥ पाश्चात्या औत्तराहाश्च नानादिग्भ्यः समाययुः ॥ दृष्ट्वा समा
जं विप्राणां प्रणनामस गौतमः ॥ ९ ॥ आसनाद्युपाचारैश्च पूजयामास वाडवान् ॥ चकार कुशलप्रश्नं ततश्चा
गमकारणं ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥

काशन पूर्वकमुपपाद्यान्तरमन्यदेवोपासनाश्रद्धायां निमित्तराज्ञापृष्टं कथयितुं पूर्ववृत्तमाह व्यास उवाच कदाचिदथेति दशपंचसमाः पंचदशव
र्षाणि शतक्रतुरिद्वः ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ औत्तराहा उत्तरस्यां भवाः उत्तरादाह ब्रूति सूत्रेणाह ब्रूत्य
यः ॥ ९ ॥ आगमकारणमागमनकारणं ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥

टी.अ.

९

॥२८॥

॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ गायत्रीस्वेष्टदेवतां ब्राह्मणकुटुंबपिषणार्थिप्रार्थयामासेत्यर्थः गायत्रीस्तोत्रमाह नमो देवि महावि

ते सर्वे स्वस्ववृत्तांतं कथयामासु रूस्मयाः ॥ दृष्ट्वा तान्दुःखितान् विप्रान् भयं दत्तवान् मुनिः ॥ ११ ॥ युष्माकमेत
त्सदनं भवदासोऽस्मि सर्वथा ॥ कार्चिता भवतां विप्रामपि दासे विराजति ॥ १२ ॥ धन्यो ह मस्मिन् समये यूयं स
र्वे तपोधनाः ॥ येषां दर्शनमात्रेण दुष्कृतं सुकृतायते ॥ १३ ॥ ते सर्वे पादरजसापावयंति गृहं मम ॥ कामदं न्यो
भवेद्वन्या भवतां समनुग्रहात् ॥ १४ ॥ स्थेयं सर्वैः सुखेनैव संध्याजपपरायणैः ॥ व्यास उवाच ॥ इति सर्वान्स
माश्वास्य गौतमो मुनिराट् ततः ॥ १५ ॥ गायत्रीं प्रार्थयामास भक्तिसन्नतकंधरः ॥ नमो देवि महाविद्ये वेदमातः
परात्परे ॥ १६ ॥ व्याहृत्यादि महामंत्ररूपे प्रणवरूपिणि ॥ साम्यावस्थात्मिके मातर्नमोऽर्हीकाररूपिणि ॥ १७
स्वाहास्वधास्वरूपे त्वानामास कलार्थदां ॥ भक्तकल्पलतां देवीमवस्थात्रयसाक्षिणीं ॥ १८ ॥ तुर्यातीत
स्वरूपां च सच्चिदानंदरूपिणीं ॥ सर्ववेदांतसंवेद्यां सूर्यमंडलवासिनीं ॥ १९ ॥ प्रातर्बालारक्तवर्णीं मध्याह्ने
युवतीं परां ॥ सायान्हे कृष्णवर्णीतां वृद्धां नित्यं नमाम्यहं ॥ २० ॥ सर्वभूतारणे देवि क्षमस्व परमेश्वरि ॥ इति
स्तुता जगन्माता प्रत्यक्षं दर्शनददौ ॥ २१ ॥ पूर्णपात्रं ददौ तस्मै येन स्यात्सर्वपोषणं ॥ उवाच मुनिमं बासायं यं
कामं त्वमिच्छसि ॥ २२ ॥ तस्य पूर्तिकरं पात्रं मया दत्तं भविष्यति ॥ इत्युक्त्वा तर्द्धे देवी गायत्री परमाकला
॥ २३ ॥ अन्नानां राशयस्तस्मान्निर्गताः पर्वतोपमाः ॥ षड्रसा विविधाराजंस्तृणानि विविधानि च ॥ २४ ॥ भूष
णानि च दिव्यानि क्षौमाणिवसनानि च ॥ यज्ञानां च समारंभाः पात्राणि विविधानि च ॥ २५ ॥ यद्यदिष्टमभूद्रा
जन्मुने तस्य महात्मनः ॥ तत्सर्वं निर्गतं तस्माद्गायत्रीपूर्णपात्रतः ॥ २६ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

येद्वति ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ तस्मात्पूर्णपात्रात् ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥

इ.भा.द्वा.

॥२९॥

॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ दारामुनीनामिति शेषः ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ शतयोजनपर्वतमेक एवातिविस्तीर्णो मुनेराश्रमो जात इत्यर्थः
अन्येऽपि ब्राह्मणातिरिक्तानरागोमहिष्यादयश्च ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ तमेव श्लोकमाह अहो अयं न इति अहो अयमित्यत्र ओदिति प्रगृह्यत्वे प्र

टी.अ.

९

अथाहूय मुनीन् सर्वान् मुनिराङ्गौ तमस्तदा ॥ धनं धान्यं भूषणानिवसनानि ददौ मुदा ॥ २७ ॥ गोमहिष्यादि
पशवो निर्गताः पूर्णपात्रतः ॥ निर्गतान्यज्ञसंभारान् सुकस्रुवप्रभृतीन् ददौ ॥ २८ ॥ ते सर्वे मिलित्वा यज्ञांश्च क्रिरे मु
निवाक्यतः ॥ स्थानं तदेव भूयिष्ठमभवत्स्वर्गसन्निभं ॥ २९ ॥ यत्किंचिन्निषुल्लेकेषु सुन्दरं वस्तु दृश्यते ॥ तत्स
र्वं तत्र निष्पन्नं गायत्रीदत्तपात्रतः ॥ ३० ॥ देवांगना समादाराः शोभन्ते भूषणादिभिः ॥ मुनयो देवसदृशा वस्त्रचं
दनभूषणैः ॥ ३१ ॥ नित्योत्सवः प्रववृते मुनेराश्रममण्डले ॥ नरोगादिभयं किंचिन्न च दैत्यभयं क्वचित् ॥ ३२
समुनेराश्रमो जातः समन्ताच्छतयोजनः ॥ अन्ये च प्राणिनो येऽपि तेऽपि तत्र समागताः ॥ ३३ ॥ तांश्च सर्वान् पुपो
षायं दत्त्वा भयमथात्मवान् ॥ नानाविधैर्महायज्ञैर्विधिवत्कल्पितैः सुराः ॥ ३४ ॥ संतोषं परमं प्राप्नुमुनेर्धैवजगु
र्यशः ॥ सभायां वृत्रहाभूयोजगौ श्लोकं महायशाः ॥ ३५ ॥ अहो अयं नः किल कल्पपादपोमनोरथान् पूरयति
प्रतिष्ठितः ॥ नो चेदकां डे क्व हविर्वपावासु दुर्लभा यत्र तुर्जावनाशा ॥ ३६ ॥ इत्थं द्वादशवर्षाणि पुपोष मुनिपुंग
वान् ॥ पुत्रवन् मुनिराङ्गवर्गं धेनुपरिवर्जितः ॥ ३७ ॥ गायत्र्याः परमं स्थानं चकार मुनिसत्तमः ॥ यत्र सर्वे मु
निवरैः पूज्यते जगदंघ्रिका ॥ ३८ ॥ त्रिकालं परयाभक्त्या पुरश्चरणकर्मभिः ॥ अद्यापि तत्र देवी सा प्रातर्बाला
तु दृश्यते ॥ ३९ ॥ मध्याह्नेऽयुवती वृद्धा सा यंकाले तु दृश्यते ॥ तत्रैकदा समायातो नारदो मुनिसत्तमः ॥ ४० ॥

कृतिभावः अयं गौतमो नोस्माकमास्मिन्काले कल्पपादपः कल्पवृक्षोऽस्तीत्यर्थः अकां डे अतिदुर्धरकाले ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ गायत्र्याः परमं स्था
नं सर्वे मुनीनां देवीदर्शनार्थं चकारेत्यर्थः ॥ ३८ ॥ तत्र गायत्रीस्थानेऽद्यापि वर्तमानं च मत्कारमाह अद्यापीति ॥ ३९ ॥ ४० ॥

॥२९॥

॥ ४२ ॥ ४३ ॥ नारदो गौतमं प्रति देवेन्द्रसभायां जातं वृत्तान्तं कथयति ब्रह्मर्षे इति ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ काले समा
गते इति सुभिक्षे काले समागते यथास्य गौतमस्यापकीर्तिः स्यात्तथा कृत्वा गंतव्यमिति सर्वैर्निश्चितमित्यर्थः ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ एतादृशमुपका

रणयन्महतीं गायन् गायत्र्याः परमानुगुणान् ॥ निषसादसभामध्ये मुनीनां भावितात्मनां ॥ ४१ ॥ गौतमा
दिभिरत्युच्चैः पूजितः शांतमानसः ॥ कथाश्चकार विविधायशसो गौतमस्य च ॥ ४२ ॥ ब्रह्मर्षे देवसदसि देवराट्
तव यद्यशः ॥ जगौ बहुविधं स्वच्छं मुनिपोषणजं परं ॥ ४३ ॥ श्रुत्वा शचीपतेर्वाणीं त्वां द्रष्टुमहमागतः ॥ धन्यो
सित्वं मुनिश्रेष्ठ जगदंबा प्रसादतः ॥ ४४ ॥ इत्युत्कामुनिवर्यं तं गायत्रीसदनं ययौ ॥ ददर्श जगदंबां तां प्रेमोत्फु
ल्लविलोचनः ॥ ४५ ॥ तुष्टाव विधिवद्देवीं जगामात्रिर्दिवंपुनः ॥ अथ तत्र स्थिता ये ते ब्राह्मणामुनिपोषिताः ॥ ४६ ॥
उत्कर्षं तु मुनेः श्रुत्वा सूयया खेदमागताः ॥ यथास्य नयशो भूयात्कर्तव्यं सर्वथैवाहि ॥ ४७ ॥ काले समागते पश्चा
दिति सर्वे स्तु निश्चितं ॥ ततः कालेन कथिताप्यभूद्वृष्टिर्धरातले ॥ ४८ ॥ सुभिक्षमभवत्सर्वदेशेषु नृपसत्तम ॥
श्रुत्वा वार्तां सुभिक्षस्य मिलिताः सर्ववाडवाः ॥ ४९ ॥ गौतमं शत्रुमुद्योगं हाराजन् प्रचक्रिरे ॥ धन्यौ तेषां चपि
तरौ ययोरुत्पत्तिरीदृशी ॥ ५० ॥ कालस्य महिमाराजन्वक्तुकेन हि शक्यते ॥ गौर्निर्मिता माययैकामुमूर्षुर्जर
तीनृप ॥ ५१ ॥ जगाम सा च शालायां होमकाले मुनेस्तदा ॥ हुंहुंशब्दैर्वारिता सा प्राणांस्तत्याजतक्षणे ॥ ५२ ॥

रिणं गौतमं प्रति मुनिभिः प्रत्युपकार एतादृशः कृत इति स्वमुखेन व्यासोक्तिर्जनमेजयं प्रति हाहाराजन् प्रचक्रिरे इति तमेव खेदं विशदयति धन्यौ
च तेषां पितराविति ययोः पित्रोरीदृशी कृतघ्ना उत्पत्तिः संततिरस्तीत्यर्थः ॥ ५० ॥ तदनंतरं ब्राह्मणैः किं कृतं तदाह गौर्निर्मितेति ॥ ५१ ॥
हुंहुंशब्दैर्गौतमेन वारितेत्यर्थः ॥ ५२ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.द्रा.

॥३०॥

॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ अनुन्मुखाभवतेतिशशापइत्यर्थः अनुन्मुखास्त्यागिनः ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥

गोहस्तानेनदुष्टेनेत्येवंतेचुक्रुशुर्द्विजाः ॥ होमंसमाप्यमुनिराद्विस्मयंपरमंगतः ॥ ५३ ॥ समाधिमीलिताक्षः
सन्त्रिंश्यामासकारणं ॥ कृतंसर्वैर्द्विजैरेतदितिज्ञात्वातदैवसः ॥ ५४ ॥ दधारकोपंपरमंप्रलयेरुद्रकोपवत् ॥
शशापच ऋषीन्सर्वान्कोपसंरक्तलोचनः ॥ ५५ ॥ वेदमातरिगायत्र्यांतल्यानेतन्मनोर्जपे ॥ भवतानुन्मुखा
यूयंसर्वथाब्राह्मणाधमाः ॥ ५६ ॥ वेदेवेदोक्तयज्ञेषुतद्वार्तासुतथैवच ॥ भवतानुन्मुखायूयंसर्वदाब्राह्मणाधमाः
॥ ५७ ॥ शिवेशिवस्यमंत्रेचशिवशास्त्रेतथैवच ॥ भवतानुन्मुखायूयंसर्वदाब्राह्मणाधमाः ॥ ५८ ॥ मूलप्रकृत्यां
श्रीदेव्यांतल्यानेतत्कथासुच ॥ भवतानुन्मुखायूयंसर्वदाब्राह्मणाधमाः ॥ ५९ ॥ देवीमंत्रेतथादेव्याःस्थाने
नुष्ठानकर्मणि ॥ भवतानुन्मुखायूयंसर्वदाब्राह्मणाधमाः ॥ ६० ॥ देव्युत्सवदिदृक्षायांदेवीनामानुकीर्तने ॥
भवतानुन्मुखायूयंसर्वदाब्राह्मणाधमाः ॥ ६१ ॥ देवीभक्तस्यसामिध्येदेवीभक्तार्चनेतथा ॥ भवतानुन्मुखा
यूयंसर्वदाब्राह्मणाधमाः ॥ ६२ ॥ शिवोत्सवदिदृक्षायांशिवभक्तस्यपूजने ॥ भवतानुन्मुखायूयंसर्वदाब्राह्मणा
धमाः ॥ ६३ ॥ रुद्राक्षेबिल्वपत्रेचतथाशुद्धेचभस्मनि ॥ भवतानुन्मुखायूयंसर्वदाब्राह्मणाधमाः ॥ ६४ ॥ श्रौ
तस्मार्तसदाचारेज्ञानमार्गेतथैवच ॥ भवतानुन्मुखायूयंसर्वदाब्राह्मणाधमाः ॥ ६५ ॥ अद्वैतज्ञाननिष्ठायांशां
तिदांत्यादिसाधने ॥ भवतानुन्मुखायूयंसर्वदाब्राह्मणाधमाः ॥ ६६ ॥ नित्यकर्माद्यनुष्ठानेप्यग्निहोत्राद्रिसाधने
॥ भवतानुन्मुखायूयंसर्वदाब्राह्मणाधमाः ॥ ६७ ॥ स्वाध्यायाध्ययनेचैवतथाप्रवचनेपिच ॥ भवतानुन्मुखायू
यंसर्वदाब्राह्मणाधमाः ॥ ६८ ॥

॥ ६९ ॥

॥ ७० ॥

॥ ७१ ॥

॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ प्रवचनेस्वाध्यायपीठने ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥

टी.अ.

९

॥३०॥

॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ भवत्समाः भवद्विधाः ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ वाग्दंडं द्वापं ॥ ७९ ॥

गोदानादिषुदानेषुपितृश्राद्धेषुचैवहि ॥ भवतानुन्मुखायूयंसर्वथाब्राह्मणाधमाः ॥ ६९ ॥ कृच्छ्रां द्वायणेचैवप्राय
श्चित्तेतथैवच ॥ भवतानुन्मुखायूयंसर्वदाब्राह्मणाधमाः ॥ ७० ॥ श्रीदेवीभिन्नदेवेषुश्रद्धाभक्तिसमन्विताः ॥
शंखचक्राद्यंकिताश्चभवतब्राह्मणाधमाः ॥ ७१ ॥ कापालिकमतासक्ताबौद्धशास्त्ररताःसदा ॥ पाखंडाचारनिर
ताभवतब्राह्मणाधमाः ॥ ७२ ॥ पितृमातृसुतभ्रातृकन्याविक्रयिणस्तथा ॥ भार्याविक्रयिणस्तद्वद्वतब्राह्मणाध
माः ॥ ७३ ॥ वेदविक्रयिणस्तद्वत्तीर्थविक्रयिणस्तथा ॥ धर्मविक्रयिणस्तद्वद्वतब्राह्मणाधमाः ॥ ७४ ॥ पां
चरात्रेकामशास्त्रेतथाकापालिकेमते ॥ बौद्धेश्रद्धायुतायूयंभवतब्राह्मणाधमाः ॥ ७५ ॥ मातृकन्यागामिनश्च
भगिनीगामिनस्तथा ॥ परस्त्रीलंपटाःसर्वेभवतब्राह्मणाधमाः ॥ ७६ ॥ युष्माकंवंशजाताश्चस्त्रियश्चपुरुषास्त
था ॥ महत्तशापदग्धास्तेभविष्यंतिभवत्समाः ॥ ७७ ॥ किंमयाबहुनोक्तेनमूलप्रकृतिरीश्वरी ॥ गायत्रीपर
माभूयाद्युष्मासुखलुकोपिता ॥ ७८ ॥ अंधकूपादिकुंडेषुयुष्माकंस्यात्सदास्थितिः ॥ व्यासउवाच ॥ वाग्दंड
मीदृशंकृत्वाप्युपस्पृश्यजलंततः ॥ ७९ ॥ जगामदर्शनार्थं चगायत्र्याः परमोत्सुकः ॥ प्रणनाममहादेवींसापिदे
वीपरात्परा ॥ ८० ॥ ब्राह्मणानांकृतिंदृष्ट्वास्मयंचित्तेचकारह ॥ अद्यापितस्यावदनंस्मययुक्तंचदृश्यते ॥ ८१ ॥
उवाचमुनिवर्चंस्मयमानमुखांबुजा ॥ भुजंगायापितंदुग्धंविषायैवीपजायते ॥ ८२ ॥ शान्तिकुरुमहाभागक
र्मणोगतिरीदृशी ॥ इतिदेवींप्रणम्याथततोगात्स्वाश्रमंप्रति ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥

॥ ८० ॥ कृत्तिकृतव्रतारूपां ॥ ८१ ॥ गायत्रीस्वमुखेनमुनिंसांत्वयुति उवाचेति ॥ ८२ ॥ ८३ ॥

॥ ८४ ॥

113911

ततोविप्रैःशापदग्धैर्विस्मृतावेदराशयः ॥ गायत्रीविस्मृतासर्वेस्तदद्भुतमिवाभवत् ॥ ८४ ॥ तेसर्वेथमिलि
त्वातुपश्चात्तापयुतास्तथा ॥ प्रणेमुर्मुनिवर्यंतदंडवत्पतिताभुवि ॥ ८५ ॥ नोचुःकिंचनवाक्यंतुलज्जयाधोमु
खाःस्थिताः ॥ प्रसीदेतिप्रसीदेतिप्रसीदेतिपुनःपुनः ॥ ८६ ॥ प्रार्थयामासुरभितःपरिवार्यमुनीश्वरं ॥ करुणा
पूर्णहृदयोमुनिस्तान्समुवाचह ॥ ८७ ॥ कृष्णावतारपर्यंतकुंभीपाकेभवेत्स्थितिः ॥ नमेवाक्यंमृषाभूयादितिजा
नीथसर्वथा ॥ ८८ ॥ ततःपरंकलियुगेभुविजन्मभवेद्विवां ॥ मदुक्तंसर्वमेतत्तुभवेदेवनचान्यथा ॥ ८९ ॥ म
च्छापस्यविमोक्षार्थयुष्माकंस्याद्यदीषणा ॥ तर्हिसेव्यंसदासर्वैर्गायत्रीपदपंकजं ॥ ९० ॥ व्यासउवाच ॥
इतिसर्वान्विसृज्याथगौतमोमुनिसत्तमः ॥ प्रारब्धमितिमत्वातुचित्तेशांतिजगामह ॥ ९१ ॥ एतस्मात्कारणा
द्वाजन्मतेकृष्णेनुधामनि ॥ कलौयुगेप्रवृत्तेतुकुंभीपाकात्तुनिर्गताः ॥ ९२ ॥ भुविजाताब्राह्मणाश्चशापदग्धाः
पुरातुये ॥ संध्यात्रयविहीनाश्चगायत्रीभक्तिवर्जिताः ॥ ९३ ॥ वेदभक्तिविहीनाश्चपाखंडमतगामिनः ॥ अ
ग्निहोत्रादिसत्कर्मस्वधास्वाहाविवर्जिताः ॥ ९४ ॥ मूलप्रकृतिमव्यक्तानैवजानंतिकर्हिचित् ॥ तत्समुद्रांकि
ताःकेचित्कामाचाररताःपरे ॥ ९५ ॥ कापालिकाःकौलिकाश्चबौद्धजैनास्तथापरे ॥ पंडिताअपितेसर्वेदुराचा
रप्रवर्तकाः ॥ ९६ ॥ लंपटाःपरदारेषुदुराचारपरायणाः ॥ कुंभीपाकंपुनःसर्वेयास्यंतिनिजकर्मभिः ॥ ९७ ॥
तस्मात्सर्वात्मनाराजन्संसेव्यापरमेश्वरी ॥ नविष्णुपासनानित्यानशिवोपासनातथा ॥ ९८ ॥

कुर्वन्तीत्यस्योत्तरमेतत्पर्यंतमुक्तं निगमयति एतस्मादिति ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ नविष्णुपासनेति इदं
 पूर्वोक्तप्रत्येकस्मिन्कृतं ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥ ॥ १०१ ॥ ॥ १०२ ॥ ॥ १०३ ॥ ॥ १०४ ॥ ॥ १०५ ॥ ॥ १०६ ॥ ॥ १०७ ॥ ॥ १०८ ॥ ॥ १०९ ॥ ॥ ११० ॥

टी.अ.
९

113 911

ब्रह्मलोकादूर्ध्वः ॥ १९ ॥ अथ मणिद्वीपवर्णनविषयकस्याद्वितीयप्रश्नस्योत्तरं वक्तुं प्रतिजानीते अतः परमिति भवारणे भवयाने ॥ १९ ॥
 इति श्रीदेवीभागवततिलके ब्रह्मलोकादूर्ध्ववर्णनोऽध्यायः ॥ १९ ॥ अर्धाधिकशतश्लोकैर्मणिद्वीपस्य वर्णनं ॥ यथावाञ्छितं तेन भक्तिर्देव्यं विवर्धते ॥ १९ ॥
 पूर्वाध्याये प्रतिज्ञातं मणिद्वीपस्य वर्णनं प्रस्तौति व्यास उवाच ननु मणिद्वीपं श्रुतौकप्रसिद्धं तत्राह ब्रह्मलोकादिति सुबालोपनिषदि ब्रह्मलोकादूर्ध्वं
 भागेयः सर्वलोकः श्रुतौ श्रुतः प्रसिद्धोऽस्ति स एव नामांतरेण मणिद्वीपमिष्युच्यते यत्र साक्षाद्देवीमूलकारणभूता विराजते इत्यर्थः तथा च सुबालोपनि
 षादे अथ हैरैकः पप्रच्छ भगवन्कस्मिन् सर्वे प्रतिष्ठिता भवन्तीति तस्मै सहोवाच रसातललोकेष्विति होवाच कस्मिन् रसातललोका ओताश्च प्रोताश्चे

नित्याचोपासनाशकैर्यो विना तु पतत्यधः ॥ सर्वमुक्तं समासेन यत्पृष्ठं तत्त्वयानघ ॥ १९ ॥ अतः परं मणिद्वीप
 वर्णनं शृणु सुंदरं ॥ यत्परं स्थानमाद्याया भुवने श्या भवारणे ॥ १०० ॥ इति श्रीदेवीभागवतमहापुराणे अष्टा
 दशसहस्रसंहितायां द्वादशस्कंधेनवमोऽध्यायः ॥ १९ ॥ व्यास उवाच ॥ ब्रह्मलोकादूर्ध्वभागे सर्वलोकोऽस्ति यः श्रुतः ॥
 मणिद्वीपः स एवास्ति यत्र देवी विराजते ॥ १ ॥ सर्वस्मादधिको यस्मात्सर्वलोकस्ततः स्मृतः ॥ पुरा परां वयैवायं
 कल्पितो मनसे च्छया ॥ २ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ १९ ॥

तिभूलोकेष्विति होवाचेत्यारभ्य सत्यलोकांतमुत्काकस्मिन्सत्यलोका ओताः प्रोताश्चेति प्रजापतिलोकेष्विति होवाच कस्मिन् प्रजापतिलोका ओताः
 प्रोताश्चेति ब्रह्मलोकेष्विति होवाच कस्मिन् ब्रह्मलोका ओताश्च प्रोताश्चेति सर्वलोकेष्विति होवाच सर्वलोका आत्मानि ब्रह्मणि मणय इव ओताश्च प्रोताश्चे
 ति अत्र तस्य लोकस्यैकत्वेऽपि तदंतर्गतप्राकाराणां बहुत्वात्सर्वलोकेष्विति बहुवचनमुक्तं ॥ १ ॥ ननु तस्य सर्वलोक इति किमिति संज्ञातत्राह
 सर्वस्मादधिको यस्मादिति नन्वयं लोकः केन निर्मित इति चेत्तत्राह पुरा परां वयैवायमिति श्रीभगवत्यैव निजवासार्थं स्वेच्छया स्वर्गादौ निर्मि
 त्वेयं लोक इत्यर्थः ॥ २ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ १९ ॥

दे.भा.३॥

॥३२॥

अयं च मणिर्द्विपुलो को देवीप्रार्थनया शिवेन निर्मित इति शिवरहस्ये द्वितीये उक्तं तदुक्तं शिवरहस्ये द्वितीये शेषमाध्याये श्रीदेव्युवाच देवदेव
महादेव लीला ललितविग्रह विचित्रशक्ते भगवन्मम स्थानमनुत्तमं सुंदरात्सुंदरं शोभो आनंदामृतसागरं नक्षुत्पिपासे नो म्लानिर्नतुष्णानजरादि
कं तत्र स्थिता नो सर्वेषां कैलासादपि सुंदरं सृज विश्वेश दययाममैवापरकौतुकं न सृष्टौ न विधात्रापि विष्णुना वा तथोत्तरं स्रष्टुं शक्यं त्वया देव मन
सैव महेश्वर त्वं सर्वमंगलाकारस्तस्मात्स्थानवरं मम लोकोत्तरं महादेव विहारं चावयोः सदा सृजैव मनसा देवमत्प्रियार्थमहेश्वर इति देव्या महा
देवः प्रार्थितः स तदा मुदा जात हर्षः स शीर्ष्णातामोमित्यांदोलयन्मुदा परमानंदसंदोहसागरांतर्निमग्नधीः क्षणं हृद्यै महादेवो लीला सृष्टिप्रवर्त
कः तत्क्षणाद्वास्वरेतेजः समुत्तस्यौ सुधां बुधेः कोटिभास्करसंकाशं पर्वण्ये दुःशताधिकं विदुःकोटिप्रतीकाशं चैद्रवापायुतोत्तरं बलक्षंभासि
ताकाशेऽप्येति मयमनुत्तमं तत्प्रभाभासिता लोका भुवनानि चतुर्दशेति पश्चात्त्रयोदशाध्यायपर्यंतं सविस्तरं तदेव द्वीपमुपवर्णितं चतुर्दशाध्याये पुन
रुक्तं बोवाभूम्योरंतराले लोकजाले तथा भुवि विष्णुब्रह्मेश भवने दिक्पालानां पुरे तथा नागानामपि लोकेषु दैत्यैर्द्राणां पुरीष्वपि कैलासे वामहादे

सर्वादौ निजवासार्थं प्रकृत्या मूलभूतया ॥ कैलासादधिको लोको वैकुण्ठदपि चोत्तमः ॥ ३ ॥

विचितामणिगृहाधिकः इंदुसंपात्ति संभारो न कुत्र भुवने शरीति सर्वोत्तमसंपात्तिमत्वं चोपपादायैतत्परिमाणं चोक्तं पंचाशलक्षमानो यं द्वीपरब
मिदं शिवे इति ब्रह्मांडपुराणे ललितोपाख्याने तु देवाज्ञया सुमेरुमध्यं शृंगे विश्वकर्मणानिर्मितो यं लोक इत्युक्तं तदुक्तं ललितोपाख्याने सप्तविंशोऽ
ध्याये भो विश्वकर्मन् शिल्पज्ञ भो भो मयमहोदय युवाभ्यां ललिता देव्या नित्यज्ञानमहोदधेः षोडशीक्षेत्रमध्ये तु तत्क्षेत्रसमसंख्यया कर्तव्या भ्रानिग
यो हि नानारत्नैरलंकृताः यत्र षोडशधाभिन्ना ललिता परमेश्वरी विश्वत्राणाय सततं निवासं चरयिष्यतीति तत्परिमाणं च दुर्वासंभुनिकृतस्तवरचे
उक्तं तत्र चतुःशतयोजनपरिणाहं देवशिल्पिनारचितं नानासालमनोज्ञं नमाम्यहं नगरमादिविद्याया इति इत्यं पुराणत्रयविरोधकल्यभेदेनेकचि
द्व्यवस्था ग्राह्यः वयंतु ब्रह्मो ललितोपाख्याने उक्तं शिवरहस्योक्तं च मणिर्द्विपुर्भ्रात्रिपुरसुंदरं यं धिष्ठितं भिन्नमेकदेवीभागवतोक्तं मणिर्द्विपुर्भ्रात्रिभुवने श्वर्य
धिष्ठितं सर्वलोकपदवाच्यं ब्रह्मलोकाधिकं ब्रह्मांडाद्बहिरेव विद्यमानं भिन्नमेवेति अतएव देवीभागवते प्रतिब्रह्मांडवर्तिनां ब्रह्मविष्ण्वादिदेवानां निर्वृता
योगात्तद्वत्समं विभूता यत्र संतीतिरक्षयमानं संमच्छते तदुक्तं भागवते ब्रह्मलोकाधिको लोकः सर्वलोकानि पुरः तत्र भीभुवनेऽस्तीति
इति निर्दिष्टं भवेति ॥ ३ ॥

वि.अ.

१०

॥३२॥

॥ ४२ ॥ छत्रीभूतमिति सर्वब्रह्मांडोपर्येतस्यविद्यमानत्वाच्छत्रसाम्यं ॥ ५ ॥ मणिद्वीपसंबंधिसुधासमुद्रं वर्णयति बहुयोजनविस्तीर्णइति
विस्तीर्णस्यैवहस्यसर्वप्राकारमध्यस्थस्यपरिमाणममेवक्ष्यतितत्प्राकाराणां च पूर्वस्मात्पूर्वस्मादुत्तरस्यपरिमाणमहिगुणंक्ष्यतितन्मननैवसर्वतोऽन-
मृतसुधासंधोरपिमानमुनेयं मणिद्वीपसंधोरितआसमंतात् ॥ ६ ॥ संघट्टनं संमर्दस्तेनोत्कीर्णं चच्छलं तोयेतरंगास्तेषां तैः संकुलः रत्न-
बलुकायुक्तः ॥ ७ ॥ महान्तस्तरंगावीचयस्तेषां संघर्षेण संजातलहरीकणशीतलः ॥ नानाध्वजसमायुक्तनानापोतगतग-
तैः ॥ ८ ॥ विराजमानः परितस्तीररत्नद्रुममहान् ॥ तदुत्तरमयोधातुनिर्मितोगगनेततः ॥ ९ ॥ सप्तयोजन-
विस्तीर्णः प्राकारो वर्तते महान् ॥ नानाशस्त्रप्रहरणानानायुद्धविशारदाः ॥ १० ॥ रक्षकानिवसंत्यत्र मोदमानाः
समंततः ॥ चतुर्द्वारसमायुक्तो द्वारपालशतान्वितः ॥ ११ ॥ नानागणैः परिवृतो देवीभक्तियुतैर्नृप ॥ दर्शनार्थं
समायांतिये देवा जगदीशितुः ॥ १२ ॥

गोलोकादपि सर्वस्मात्सर्वलोकोधिकः स्मृतः ॥ नैतत्समंत्रिलोक्यांतु सुंदरं विद्यते क्वचित् ॥ ४ ॥ छत्रीभूतं त्रि-
जगर्तो भवसंतापनाशकं ॥ छायाभूतं तदेवास्ति ब्रह्मांडानांतु सत्तम ॥ ५ ॥ बहुयोजनविस्तीर्णो गंभीरस्तावदेव
हि ॥ मणिद्वीपस्य परितो वर्तते तु सुधोदधिः ॥ ६ ॥ मरुत्संघट्टनोत्कीर्णतरंगशतसंकुलः ॥ रत्नाच्छवालुकायु-
क्तोऽक्षयशंखसमाकुलः ॥ ७ ॥ वीचिसंघर्षसंजातलहरीकणशीतलः ॥ नानाध्वजसमायुक्तनानापोतगतग-
तैः ॥ ८ ॥ विराजमानः परितस्तीररत्नद्रुममहान् ॥ तदुत्तरमयोधातुनिर्मितोगगनेततः ॥ ९ ॥ सप्तयोजन-
विस्तीर्णः प्राकारो वर्तते महान् ॥ नानाशस्त्रप्रहरणानानायुद्धविशारदाः ॥ १० ॥ रक्षकानिवसंत्यत्र मोदमानाः
समंततः ॥ चतुर्द्वारसमायुक्तो द्वारपालशतान्वितः ॥ ११ ॥ नानागणैः परिवृतो देवीभक्तियुतैर्नृप ॥ दर्शनार्थं
समायांतिये देवा जगदीशितुः ॥ १२ ॥

॥ ४२ ॥

॥ ४२ ॥

॥ ४२ ॥

तीरे रत्नसमानकांतयोद्रुमायस्य इत्थं सुधासमुद्रमुपवर्ण्यायोधातुनिर्मितं प्रथमं प्राकारं वर्णयति तदुत्तरमयोधातुनिर्मितइति गगनेततोत्पुच्छैर्वि-
द्यमानइति ॥ ५ ॥ उच्चैस्त्वं वर्णयति सप्तयोजनविस्तीर्णइति विस्तीर्णोऽत्र तद्वर्णयः नत्वनविस्तारो विवक्षितो विस्तारस्य बहुप्रमाणस्य वक्ष्यमा-
णत्वात् तत्रत्येणानोह नानाशस्त्रप्रहरणाइति ॥ १० ॥ ११ ॥ एतत्प्राकारस्य लोहमेव स्यात् प्रतिब्रह्मांडवर्तिनो ये ब्रह्मादयो देवाः श्रीजग-
दीशितुर्भुवने धर्षाददर्शनार्थमागतास्तेषां गणावाहनानि च तत्र निवसंतीत्यहि दर्शनार्थं समायांतीति ॥ १२ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.द्वा

॥३३॥

तत्रैतान्यत्रह्यं डस्य देवानां विमानान्यप्यवतरंतीत्याह विमानशतंति प्राकारविशेषं ॥ १३ ॥ हयहेषेति दर्शनार्थमागतानां देवानां ये हयावा
हनभूतास्तेषां हेष्वाश्वश्चैः खुराघातश्चैः श्वचर्षिकृतं दिङ्मुखं यस्मिन् देव्यागणैर्ह्यस्तेः किल किलारसवैः किल किलश्चन्दर्कुर्वन्निवहस्तेर
त्रिसंमर्दं कृतिताडिता अन्यदेवानां सेवका यत्र यस्मिन् प्राकारे भोजंते इत्यन्वयः ॥ १४ ॥ देवगणकोलाहलं वर्णयति तस्मिन्कोलाहले इति ॥ १५ ॥

तेषां गणावसंत्यत्र वाहनानि च तत्राहि ॥ विमानशतसंघर्षघंटास्वनसमाकुलः ॥ १३ ॥ हयहेषाखुराघातव
धिरीकृतदिङ्मुखः ॥ गणैः किल किलारवैर्वेवत्रहस्तैश्च ताडिताः ॥ १४ ॥ सेवका देवसंघानां भोजंते तत्र भूमि
प ॥ तस्मिन्कोलाहले राजन्नशब्दः केनचित्कचित् ॥ १५ ॥ कस्यचिच्छ्रुयते त्यंतं नानाध्वनिसमाकुले ॥ पदे
पदे मिथ्वारिपरिपूर्णसरांसि च ॥ १६ ॥ वाटिकाविविधाराजत्रत्नद्रुमविराजिताः ॥ तदुत्तरं महासास्वातुनि
र्मितमंडलः ॥ १७ ॥ सालोपरोमहामस्ति गगनस्पर्शियच्छिरः ॥ तेजसास्याच्छतगुणः पूर्वसालादयं परैः
॥ १८ ॥ गोपुरद्वारसहितो बहुवृक्षसमन्वितः ॥ यावृक्षजातयः संति सर्वास्तास्तत्र संति च ॥ १९ ॥ निरंतरं
पुष्पयुताः सदा फलसमन्विताः ॥ नवपल्लवसंयुक्ताः परसौरभसंकुलाः ॥ २० ॥ पनसावकुलालोघ्राः कर्णिका
राश्च शिशपाः ॥ देवदारुकांचनाराआस्राश्चैव सुमेरवः ॥ २१ ॥ लिङ्गुचाहिं गुलाश्चैल्लवंगाः कट्फलस्तथा
पाटलामुचुकुंदाश्च फलिन्योजघने फलाः ॥ २२ ॥

॥ ६१ ॥

॥ ६२ ॥

अयं समारंभोऽपि राजद्वारेषु लभ्यते ॥ १६ ॥ इत्यलोहप्राकारमुपवर्ण्य तदुत्तरं कांस्यप्राकारं वर्णयति तदुत्तरं महासारेति महासारः का
स्यतेन निर्मितो द्वितीयः प्राकार इत्यर्थः ॥ १७ ॥ तेजसास्याच्छतगुण इति श्रुतेन शीतस्य निश्चिन्नस्य यत्तेजस्तत्तेजोऽलोहप्राकारस्य ततो
पिशतगुणं तेजः कांस्यप्राकारस्येत्यर्थः अंशप्राकारस्योऽस्यतामिपूर्वैस्तैः प्राकाराभिधानुक्तेः सातः प्राकारः ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥
वृक्षनामान्याह पनसा इति ॥ २१ ॥ २२ ॥

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

॥३३॥

दे.भा.द्वा

द्वयोस्तुसालयोर्मध्येसंप्रोक्ताकल्पवाटिका ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ तत्साला
धिप्रतिमाह तद्वनंरक्षितंराजानिति वसंतर्तुध्यानमाह पुष्पसिंहासनासीनइति ॥ ३७ ॥ मधुश्रीश्चैत्रलक्ष्मीर्मधवश्रीर्विशाललक्ष्मीरेवमुच्चर

अ.

१०

॥३४॥

द्वयोस्तुसालयोर्मध्येसंप्रोक्ताकल्पवाटिका ॥ येषांतरूणांपुष्पाणिकांचनाभानिभूमिप ॥ ३५ ॥ पत्राणिकां
चनाभानिरत्नबीजफलानिच ॥ दशयोजनगंधोहिप्रसर्पतिसमंततः ॥ ३६ ॥ तद्वनंरक्षितंराजन्वसंतेनर्तु
नानिशं ॥ पुष्पसिंहासनासीनःपुष्पच्छत्रविराजितः ॥ ३७ ॥ पुष्पभूषाभूषितश्चपुष्पासवविघूर्णितः ॥ म
धुश्रीर्मधवश्रीश्चद्वेभार्येतस्यसंमते ॥ ३८ ॥ क्रीडतःस्मेस्वदनेसुमस्तबककंदुकैः ॥ अतीवरम्यैविपिनैर्मधु
स्त्राविसमंततः ॥ ३९ ॥ दशयोजनपर्यंतंकुसुमामोदवायुना ॥ पूरितंदिव्यगंधर्वैःसांगनैर्गानिलोलुपैः ॥ ४०
शोभितंतद्वनंदिव्यमत्तकोकिलनादितं ॥ वसंतलक्ष्मीसंयुक्तंकामिकामप्रवर्द्धनं ॥ ४१ ॥ ताम्रसालादुत्तरत्र
सीससालःप्रकीर्तितः ॥ समुच्छ्रायःस्मृतोप्यस्यसप्तयोजनसंस्थया ॥ ४२ ॥ संतानवाटिकामध्येसालयोस्तु
द्वयोर्नृप ॥ दशयोजनगंधस्तुप्रसूनानांसमंततः ॥ ४३ ॥ हिरण्याभानिकुसुमान्युत्फुल्लानिनिरंतरं ॥ अमृ
तद्रवसंयुक्तफलानिमधुराणिच ॥ ४४ ॥ ग्रीष्मर्तुर्नायकस्तस्यावाटिकायानृपोत्तम ॥ शुक्रश्रीश्चशुचिश्रीश्च
द्वेभार्येतस्यसंमते ॥ ४५ ॥ संतापत्रस्तलोकास्तुवृक्षमूलेषुसंस्थिताः ॥ नानासिद्धैःपरिवृतोनानादेवैःसमन्वि
तः ॥ ४६ ॥ विलासिनीनांवृद्धैस्तुचंदनद्रवपंकिलैः ॥ पुष्पमालाभूषितैस्तुतालवृंतकरांबुजैः ॥ ४७ ॥

अप्रतिमासलक्ष्म्यच्छायाः ॥ ३८ ॥ सुमस्तबकाःप्रसूनगुच्छाएवकंदुकालैः ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ अथचतुर्थसीससालमाह ताम्र
सालादुत्तरत्रेति अत्रापिपूर्वसालादुत्तरात्तत्तत्सालःशतगुणिततेजसायुक्तइतिमोक्षं ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ संतापत्रस्तलोकास्त्वित्यादिनापीष्मर्तुर्लक्ष्मीनगवं ॥ ४६ ॥ ४७ ॥

॥३४॥

आरकूटमयादयेसप्तयोजनदैर्घ्यवान् ॥ ४८ ॥ तयोः पंचलोहमयादयेसप्तयोजनदैर्घ्यवान् ॥ ४९ ॥
 ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥

प्राकारःशोभितोराजन्शीतलांबुनिषेविभिः ॥ सीससालादुत्तरत्राप्यारकूटमयःशुभः ॥ ४८ ॥ प्राकारोवर्ते
 तेराजन्मुनियोजनदैर्घ्यवान् ॥ हरिचंदनवृक्षाणांवाटीमध्येतयोःस्मृता ॥ ४९ ॥ सालयोःसधिमाथस्तुवर्षर्तु
 मेघवाहनः ॥ विद्युत्पिगलनेत्रश्चजीमूतकवचःस्मृतः ॥ ५० ॥ वज्रनिर्घोषमुखरश्चैवधन्वासमंततः ॥ सहस्र
 शोभारिधाराभुं चन्नास्तेगणावृतः ॥ ५१ ॥ नभश्रीश्चनभस्यश्रीःस्वरस्यारस्यमालिनी ॥ अंबादुलानिरत्नि
 श्चाश्रमंतीमेघयंतिका ॥ ५२ ॥ वर्षयंतीचिबुणिकावारिधाराचसंमताः ॥ वर्षतोर्द्वादशप्रोक्ताःशक्तयोमदविह
 लाः ॥ ५३ ॥ नवपल्लववृक्षाश्चनवीनलतिकान्विताः ॥ हरितानितृणान्येववेष्टितायैर्धसखिल्य ॥ ५४ ॥ न
 दीनदप्रवाहाश्चप्रवहंतिचवेगतः ॥ सरांसिकलुषांबूनिरागिचित्तसमानिच ॥ ५५ ॥ वसंतिदेवाःसिद्धाश्चयेदे
 वीकर्मकारिणः ॥ वापीकूपतडागाश्चयेदैर्घ्यसमापिताः ॥ ५६ ॥ तेगणानिवसंत्यत्रसविलासाश्चसांगनाः ॥
 आरकूटमयादयेसप्तयोजनदैर्घ्यवान् ॥ ५७ ॥ पंचलोहात्मकःसालोमध्येमंदारवाटिका ॥ नानापुष्पलता
 कीर्णानानापल्लवशोभिता ॥ ५८ ॥ अधिष्ठातात्रसंप्रोक्तःशरदतुरनामयः ॥ ईषलक्ष्मीरूर्जलक्ष्मीर्द्विभार्येतस्य
 संमते ॥ ५९ ॥ नानासिद्धावसंत्यत्रसांगनाःसपरिच्छदाः ॥ पंचलोहमयादयेसप्तयोजनदैर्घ्यवान् ॥ ६० ॥

पांश्चित्तानिकलुषितानितयासरोजलानीत्यर्थः ॥ ५५ ॥ देवीप्रीत्यर्थयेकर्मयज्ञादिकंकुर्वीतितथायैर्देवीप्रीत्यर्थतडागावापीकूपाश्चसमापिता
 स्तोत्रास्तत्रसंतीत्यर्थः ॥ ५६ ॥ अथपुं पंचलोहमयाप्राकारमाह आरकूटमयादयेदति दैर्घ्यवानुपसायन् ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥
 आरकूटमयादयेदति दैर्घ्यवानुपसायन् ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥

७५ ॥ किं ज्ञानं सर्वमात्मानं साक्षात्पुत्रोत्तरोत्तमकारो लक्षणं गुणज्ञानं सायुक्तः स्वादिष्टः ॥ ७५ ॥ अस्मिन्कारेनेनियतेति
 तत्र दिक्पालादिति प्रतिज्ज्ञां डवर्तिनामिन्द्रादिदिक्पालावाग्याधिभूतवांशेषपक्षाः समष्टिभूतदिक्पालोपेक्षीतुप्रदेष्टव्यं नैवेद्यं
 च वसंतीत्यर्थः भुवनेश्वरीयन्त्रदेवतानामेवाग्रेवक्ष्यमाणत्वात् ॥ ७६ ॥ तत्र प्रथमतः पूर्वदिशि सहस्रधाक्षं वक्षधर्ववर्णयति पूर्वाशायांमिति समुत्पु

मंडपामंडपस्तंभाः सरांसिकमलानिच ॥ प्राकारे तत्र यद्यस्मात्तत्सर्वतत्समं भवेत् ॥ ७४ ॥ परिभाषेयमु
 दिष्टारत्नसालादिषु प्रभो ॥ तेजसास्याल्लक्षगुणः पूर्वसालात्परो नृप ॥ ७५ ॥ दिक्पालानि वसंत्यत्र प्रतिज्ज्ञां
 डवर्तिनां ॥ दिक्पालानां समष्ट्यात्मरूपाः स्फूर्जद्भरायुधाः ॥ ७६ ॥ पूर्वाशायां समुत्तुंगशृंगा पूरमरावती ॥ ना
 नोपवनसंयुक्तमहेन्द्रस्तत्र राजते ॥ ७७ ॥ स्वर्गशोभा च यास्वर्गे यावती स्यात्ततो धिका ॥ समष्टिस्तनेत्रस्य
 सहस्रगुणतः स्मृता ॥ ७८ ॥ ऐरावतसमारूढो वज्रहस्तः प्रतापवान् ॥ देवसेना परिवृतो राजते त्रयातक्रतुः ॥
 ७९ ॥ देवांगना गणयुताश्चीतत्र विराजते ॥ वह्निकोणे वह्निपुरी वह्निपूः सदृशी नृप ॥ ८० ॥ स्वाहास्वधा
 समायुक्तो वह्निस्तत्र विराजते ॥ निजवाहनभूषाढ्यो निजदेवगणैर्वृतः ॥ ८१ ॥ याम्याशायां यमपुरी तत्र दंड
 धरो महान् ॥ स्वभट्टैर्वेष्टितो राजन् चित्रगुप्तपुरोगमैः ॥ ८२ ॥ निजशक्तियुतो भास्वत्तनयोऽस्ति यमी महान् ॥
 नैर्ऋत्यां दिशिराक्षस्यां राक्षसैः परिवारितः ॥ ८३ ॥ खड्गधारी स्फुरन्नास्ते निर्ऋतिर्निजशक्तियुक् ॥ वारुण्यां
 वरुणो राजा पाशधारी प्रतापवान् ॥ ८४ ॥

॥ ७४ ॥

॥ ७५ ॥

॥ ७६ ॥

मानिशृंगाण्यस्याः सा पूर्नगरो अमरावतीतिष्ठतीत्यर्थः तस्यां नगर्यामिन्द्रास्तिष्ठति ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ देवांगना सहिताश्चीतद्राण्यपि
 तत्र लोके राजते वह्निपूः सदृशीति प्रतिज्ज्ञां डवर्तिनो या वह्निपुर्यस्तत्सदृशी तत्सममाकारेण समष्टिभूतः पुरीत्यर्थः एवं सर्वदिक्पालिभूत
 नैऋत्यां ॥ ८० ॥ दिक्पालोऽयमैर्वृतः यो निजदेवगणैर्वृतः ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ भास्वत्तनयः सूर्यपुत्रः ॥ ८३ ॥ ८४ ॥

अथोक्तस्यः यदोक्तमत्राभिप्रायः ॥ ८५ ॥ यदानीयदनांगनातस्वारत्नेनाकुलः ॥ ८६ ॥ वायुसाधनं प्राणायामरूपं ॥ ८७ ॥
॥ ८८ ॥ ८९ ॥ यक्षासेनामतीनाह कनिषद् इति ॥ ९० ॥ इत्यादयो ये यक्षसेनान्यो यक्षसेनापतयस्तत्सहित इत्यर्थः ॥ ९१ ॥ रुद्रोधि

महास्रपसमारूढो वारुणीमधुविह्वलः ॥ निजशक्तिसमायुक्तो निजयादोगणान्वितः ॥ ८५ ॥ समास्ते वारु
बेलोके कुरुगानीरताकुलः ॥ वायुकोणे वायुलोको वायुस्तत्राधितिष्ठति ॥ ८६ ॥ वायुसाधनसंसिद्धयोगिभिः
परिवारितः ॥ ध्वजहस्तो विशालाक्षो मृगवाहनसंस्थितः ॥ ८७ ॥ मरुद्गणैः परिवृतो निजशक्तिसमान्वितः ॥
उत्तरस्यादिशि महान्यक्षलोकोऽस्ति भूमिप ॥ ८८ ॥ यक्षाधिराजस्तत्रास्ते वृद्धिः क्रुद्ध्यादिशक्तिभिः ॥ नवाभि
निधिभिर्युक्तस्तुदिलोधननायकः ॥ ८९ ॥ मणिभद्रः पूर्णभद्रो मणिमान्मणिकंधरः ॥ मणिभूषो मणिस्त्रग्वी
मणिकार्मुकधारकः ॥ ९० ॥ इत्यादियक्षसेनानीसहितो निजशक्तियुक् ॥ ईशानकोणे संप्रोक्तो रुद्रलोको मह
त्तरः ॥ ९१ ॥ अनर्घ्यरत्नखचितो यत्र रुद्रोधिदैवतं ॥ मन्युमान्दीप्तनयनो बद्धपृष्ठमहेषुधिः ॥ ९२ ॥ स्फूर्ज
बनुर्वामहस्तोऽधिज्यधन्वभिरावृतः ॥ स्वसमानैरसंख्यातरुद्रैः शूलवरायुधैः ॥ ९३ ॥ विकृतास्यैः करालास्यै
वमद्वन्द्भिभिरास्यतः ॥ दशहस्तैः शतकरैः सहस्रभुजसंयुतैः ॥ ९४ ॥ दशपादैर्दशग्रीवैस्त्रिनेत्रैरुग्रमूर्तिभिः ॥
अंतरिक्षचराये च ये च भूमिधराः स्मृताः ॥ ९५ ॥ रुद्राध्याये स्मृता रुद्रास्तैः सर्वैश्च समावृतः ॥ रुद्राणीकोटिसहितो
भद्रकाल्यादिमातृभिः ॥ ९६ ॥ नानाशक्तिसमाविष्टा मर्यादादिगणावृतः ॥ वीरभद्रादिसहितो रुद्रो राजन्विरा
जते ॥ ९७ ॥ मुंडमालाधरो नागवलयो नागकंधरः ॥ व्याघ्रचर्मपरीधानो भजचर्मोत्तरीयकः ॥ ९८ ॥ ६५ ॥

देवमिति सोमनाथोक्तकथात्सृष्टिमये उत्तमो रुद्रः सोमविभक्तिः मनुष्याविष्णु रुद्रादिभिरुत्तमं रुद्रं कथयति ॥ कारणभूतो रुद्रस्तस्य सर्वे धरत्नमे
षीकृतिरुत्तमं रुद्रं कथयति ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥

॥ ९९ ॥ १०० ॥ ईशानहवचेति ईशानरुद्रद्वयैर्वर्ण्यतइत्येः इति श्रीदेवीभागवतसुक्तादशस्कंधेदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ द
शाधिकशतश्लोकैः पञ्चरागादिविर्मिताः ॥ प्राकाराः संप्रवक्ष्यन्ते चित्तमणिगृहं वेष्टयित्वा ॥ १ ॥ अथ ह्यहमपञ्चरागमणिमयं प्राकारमाह पुष्प
रागमयादये इति तादृशपञ्चरागमणिमयी ॥ २ ॥ दैर्घ्ये औन्नत्ये ॥ ३ ॥ अस्मिन् स्थाने यामुवनेश्वरीयंत्रे चतुःषष्टिकलाः प्रपंचसारादि

चिताभस्मंगलिस्तांगः प्रमथादिगणावृतः ॥ निनदड्डुमरुध्वानैर्बधिरीकृतदिङ्मुखः ॥ ९९ ॥ अट्टहासास्फो
टशब्दैः संत्रासितनभस्तलः ॥ भूतसंघसमाविष्टे भूतावासोमहेश्वरः ॥ १०० ॥ ईशानदिक्पतिः सोयं नाम्ना
चेशान एव चा इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे द्वादशस्कंधे दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ व्यास उवाच ॥ पुष्परागमयादये
कुंकुमारुणविग्रहः ॥ पञ्चरागमयः सालोमध्ये भूश्चैव तादृशी ॥ १ ॥ दशयोजनवान्दैर्घ्ये गोपुरद्वारसंयुतः ॥
तन्मणिस्तंभसंयुक्तामंडपाः शतशो नृप ॥ २ ॥ मध्ये भुविसमासीनाश्चतुःषष्टिमिताः कलाः ॥ नानायुधधरावीरार
त्नभूषणभूषिताः ॥ ३ ॥ प्रत्येकलोकस्तासां तु तत्तल्लोकस्य नायकाः ॥ समन्तात्पञ्चरागस्य परिवार्यस्थिताः
सदा ॥ ४ ॥ स्वस्वलोकजनैर्जुष्टाः स्वस्ववाहनहेतिभिः ॥ तासां नामानि वक्ष्यामि शृणु त्वं जनमेजय ॥ ५ ॥ पिंग
लाक्षी विशालाक्षी समृद्धिर्वृद्धिरेव च ॥ श्रद्धास्वाहास्वधाभिख्यामाया संज्ञावसुंधरा ॥ ६ ॥ त्रिलोकधात्री सा वि
त्री गायत्री त्रिदशेश्वरी ॥ सुरूपा बहुरूपा च स्कंदमाता च्युतप्रिया ॥ ७ ॥ विमला चामला तद्वदरुणी पुनरारुणी ॥
प्रकृतिर्विकृतिः मृष्टिस्थितिः संहतिरेव च ॥ ८ ॥ संध्यामाता सती हंसी मार्दिका वज्रिका परा ॥ देवमाता भगवती दे
वकी कमला सना ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥

तंत्रेषु क्तास्ताः संतीत्याह मध्ये भुवीति ॥ ३ ॥ चतुःषष्टिशक्तिषु एकैकस्याः शक्तेरेकैकलोकः स्वतंत्रस्तस्मिन् प्राकारे स्तीत्याह प्रत्येकलो
कस्तासां चिति ययामध्यस्थं चित्तमणिगृहं वेष्टयित्वा दशादिक्पाल्लोकाः स्थितास्तथा चित्तमणिगृहं वेष्टयित्वेव चतुःषष्टिशक्तिनां लोकाः स्थि
ता इत्याह समन्तात्पञ्चरागस्येति परिवार्यमध्यगृहं वेष्टयित्वेत्यर्थः ॥ ४ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥

दे.भा.द्र.

॥३७॥

॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ तासांसेनावर्णनमाह शताक्षौहिणिकासेनेति एकैकस्याःशक्तेःश
ताक्षौहिणिकासेनाविबलेष्वंभूताभ्युःषष्टिशक्तयस्त्वत्संख्याक्षौहिणीयुताःसंतीत्यर्थः ॥ १८ ॥ तासांसामर्थ्यमाह एकैकशक्तेरिति अक्षौ

टी.अ.
११

त्रिमुत्तीसप्तमुख्यन्यासुरासुरविमर्दिनी ॥ लंबोष्ठीचोर्ध्वकेशीचबहुशीर्षावृकोदरी ॥ १० ॥ रथरेखावहयाप
श्चच्छरिरेखातयापरा ॥ गगनवेगापवनवेगाचैवततःपरं ॥ ११ ॥ अग्रेभुवनपालस्यात्तत्पश्चान्मदनातुरा
॥ अमंगमनंगमथनातथैवानंगमेखला ॥ १२ ॥ अनंगकुसुमापश्चाद्विश्वरूपासुरादिका ॥ क्षयंकरिभवेच्छ
क्तिरक्षोभ्याचततःपरं ॥ १३ ॥ सत्यवादिन्यथप्रोक्ताबहुरूपाशुचित्रता ॥ उदाराख्याचवागीशीचितुःषष्टि
मिताःस्मृताः ॥ १४ ॥ ज्वलज्जिह्वाननाःसर्वावमंत्योवन्दिमुल्बणं ॥ जलंपिबामःसकलंसंहरामोविभावसुं
॥ १५ ॥ पवनंस्तंभयामोद्यमक्षयामोखिलंजकत ॥ इतिवाचंसंगिरंतेक्रोधसंरक्तलोचनाः ॥ १६ ॥ चापबाण
धराःसर्वायुद्धार्यैवोत्सुकाःसदा ॥ दंष्ट्राकटकटारवैर्वधिरीकृतदिङ्मुखाः ॥ १७ ॥ पिङ्गोर्ध्वकेश्यःसंप्रोक्ताश्चाप
बाणधराःसदा ॥ शताक्षौहिणिकासेनाप्येकैकस्याःप्रकीर्तिता ॥ १८ ॥ एकैकशक्तेःसामर्थ्यलक्षब्रह्मांडनाश
ने ॥ शताक्षौहिणिकासेनातादृशीनृपसत्तम ॥ १९ ॥ किंनकुर्याज्जगत्यस्मिन्नशक्यंवक्तुमेवतत् ॥ सर्वापियुद्ध
सामग्रीतस्मिन्सालेस्थितामुने ॥ २० ॥ रथानांगणनानास्तिहयानांकरिणांतथा ॥ शस्त्राणांगणनातद्वद्गणानां
गणनातथा ॥ २१ ॥ पद्मरागमयादग्रेगोमेदमणिनिर्मितः ॥ दशयोजनदैर्घ्येणप्राकारोवर्ततेमहान् ॥ २२ ॥

हिप्पंतर्गतायाचैकैकशक्तिस्त्वत्संख्यालक्षब्रह्मांडनाशनेसामर्थ्यभवति एवंभूतशताक्षौहिणीयुक्ताचैकैकशक्तिरित्यर्थः ॥ १९ ॥ यदैकैक
स्याःशक्तेरिदं सामर्थ्यतदासर्वापीयंसेनाकिंनकुर्यात्तत्रवक्तुंशक्यमहत्याह किंनकुर्यादिति इदंभगवत्याःसेनास्यान्मल्लीसाह सर्वापियुद्ध
सामग्रीति ॥ २० ॥ २१ ॥ अथैकादशंगोमेदमणिपाकारमाह पराजयमयादिति ॥ २२ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३७ ॥

॥३७॥

अथहादशं वक्ष्ये अभिजाकारमाह गोमेदकमयादयेदति ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ परिचारिकादास्यस्तावर्णयति एकैकालक्षदासीभिरिति लक्षदासीनां नायिका एकादासी एवमष्टलक्षदासी सहिता अष्टौदास्यः समंततः संतीत्यर्थः ॥ ४० ॥ चषकानानापानकररुपरिपू

पसज्योनवैतासांकदाचित्कचिदस्तिहि ॥ गोमेदकमयादयेदसद्वज्रमणिनिर्मितः ॥ ३६ ॥ दशयोजनतुंगोसौ गोपुरद्वारसंयुतः ॥ कपाटशृंगलावद्धो नदवृक्षसमुज्ज्वलः ॥ ३७ ॥ सालस्तन्मध्यभूम्यादिसर्वहीरमयं स्मृतं ॥ गृहाणिवीथयोरथ्यामहामार्गं गणानि च ॥ ३८ ॥ वृक्षालवालतरवः सारंगा अपितादृशाः ॥ दीर्घिकाश्रेणयोवाप्यस्तडागाः कूपसंयुताः ॥ ३९ ॥ तत्र श्रीभुवनेश्वर्यावसंति परिचारिकाः ॥ एकैकालक्षदासीभिः सेविता मदगर्विता ॥ ४० ॥ तालवृंतधराः काश्चिच्चषकाढ्यकरांबुजाः ॥ काश्चित्तांबूलपात्राणि धारयंत्योतिगर्विताः ॥ ४१ ॥ काश्चित्तुछत्रधारिण्यश्रामराणां विधारिकाः ॥ नानावस्त्रधराः काश्चित्काश्चित्पुष्पकरांबुजाः ॥ ४२ ॥ नानादर्शकराः काश्चित्काश्चित्कुंकुमलेपनं ॥ धारयंत्यः कज्जलंचसिंदूरचषकंपराः ॥ ४३ ॥ काश्चिच्चित्रकनिर्मात्र्यः पादसंवाहने रताः ॥ काश्चित्तुभूषाकारिण्योनानाभूषाधराः पराः ॥ ४४ ॥ पुष्पभूषणनिर्मात्र्यः पुष्पशृंगारकारिकाः ॥ नानाविलासचतुराः बह्व्येवंविधाः पराः ॥ ४५ ॥ निबद्धपरिधानीयायुवत्यः सकला अपि ॥ देवी कृपालेशवशात्तुच्छीकृतजगत्रयाः ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥

रितानिविशेषपान्नाणितयुक्तकरांबुजाः ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ चित्रकनिर्मात्र्य इति स्त्रीणां भ. ले चंदनेन निर्मितो लंकारविशेषश्चित्रकस्याचभमवत्याभाले चित्रकालंकारनिर्मात्र्योति कुशला इत्यर्थः पादसंवाहने इति अत्र सर्वभूषणवत्या इति योज्यं भूषाकारिण्यः भगवत्या यो ज्यभूषाकारिण्यभूषाधरा भगवत्याभूषाधरितरकरंडकधराः ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ परिकरमहा इत्यर्थः दासीनां स्वभाव एवार्थः ॥ ४६ ॥

॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ विद्युदामसमानांगवदति तेषास्विन्योतिषं चलाह्वयः बहिरंतरितस्तत इति नहिर्देशादंतरंतोऽप्यहिरिवंचतुर्दि
 क्षुभावमानाह्वयः दूतीनां स्वभाववद्वयं ॥ ५० ॥ ५१ ॥ प्राकाराद्वहिवैदूर्यप्राकाराद्वहिरित्यर्थः यत्तादृख्यः प्राकाराद्वहिवैदूर्यप्राकाराद्वहिरित्यर्थः

एतादृत्यः स्मृतादेव्यः शृंगारमदगर्विताः ॥ तासां नामानिवक्ष्यामि शृणु मे नृपसत्तम ॥ ४७ ॥ अनंगरूपा
 प्रथमाप्यनंगमदनापरा ॥ तृतीया तु ततः प्रोक्ता सुंदरी मदनातुरा ॥ ४८ ॥ ततो भुवनवेगा स्यात्तथा भुवनपा
 लिक्का ॥ स्यात्सर्वशिशिरानंगवेदनानंगमेखला ॥ ४९ ॥ विद्युदामसमानांग्यः कण्ठकांचीगुणान्विताः ॥ रण
 न्मंजीरचरणबहिरंतरितस्ततः ॥ ५० ॥ धावमानास्तु शोभंते सर्वा विद्युल्लतोपमाः ॥ कुशलाः सर्वकार्येषु वेत्रह
 स्ताः समंततः ॥ ५१ ॥ अष्टदिक्षु तथैतासां प्राकाराद्वहिरिवच ॥ सदनानि विराजंते नानावाहनहोतिभिः ॥ ५२
 वज्रसालादग्रभागे सालो वैदूर्यनिर्मितः ॥ दशयोजनतुंगो सौगोपुरद्वारभूषितः ॥ ५३ ॥ वैदूर्यभूमिः सर्वापि
 गृहाणिविविधानि च ॥ वीथ्योरथ्यामहामार्गाः सर्वे वैदूर्यनिर्मिताः ॥ ५४ ॥ वापीकूपतडागाश्च स्रवंतीनां तटा
 नि च ॥ वालुकाचैव सर्वापि वैदूर्यमणिनिर्मिता ॥ ५५ ॥ तत्राष्टदिक्षु परितो ब्राह्मयादनां च मंडलं ॥ निजैर्गणैः परि
 वृतं भ्राजते नृपसत्तम ॥ ५६ ॥ प्रतिब्रह्मांडमातृणां ताः समष्टय ईरिताः ॥ ब्राह्मीमाहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी त
 था ॥ ५७ ॥ वाराही च तथैद्राणी चामुंडाः सप्तमातरः ॥ अष्टमी तु महालक्ष्मीर्नाम्ना प्रोक्तास्तु मातरः ॥ ५८ ॥

वनेश्वर्यावरणे प्रसिद्धाः तदुक्तं पद्माद्वहिः समभ्यर्च्याः शक्तयः परिचारिका इति ॥ ५२ ॥ अथ त्रयोदशै वैदूर्यमणिप्राकारमाह वज्रसा
 लादग्रभागे इति ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ अस्मिन् प्राकारेऽष्टदिक्षु ब्राह्मयाष्टमातरः संतीत्याह तत्राष्टदिक्ष्विति ॥ ५६ ॥ प्रतिब्रह्मांडसं
 स्थानां ब्राह्मयादनिषेत ब्राह्मयादयः सप्तप्रभूता इत्याह प्रतिब्रह्मांडेति ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

हे.भा.द्रा

॥३९॥

ययान्नद्यादिवेवानामाकारास्तथैवतेषांशक्तिनामप्याकाराबोधादित्याह ब्रह्मरुद्रादीति ॥ ५२ ॥ अस्मिन्सालेभगवत्यावाहनानिनानाविधा
निवसन्तीत्याह तत्सालस्येति ॥ ६० ॥ ६१ ॥ तैर्देतिसिंहादिभिर्युक्ताःस्यंदनारथाइत्यर्थः ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ अथचतुर्दशमिंद्रनीलमणि

टी.अ.

११

ब्रह्मरुद्रादिवेवानांसमाकारास्तुताःस्मृताः ॥ जगत्कल्याणकारिण्यःस्वस्वसेनासमावृताः ॥ ५९ ॥ तत्साल
स्यचतुर्दशर्षुवाहनानिमहेशितुः ॥ सज्जानिनृपतेसंतिसालंकाराणिनित्यशः ॥ ६० ॥ दंतिनःकोटिशोवाहाःको
टिशःशिबिकास्तथा ॥ हंसाःसिंहाश्चगरुडामयूरावृषभास्तथा ॥ ६१ ॥ तैर्युक्ताःस्यंदनास्तद्वत्कोटिशोनृपनं
दन ॥ पार्ष्णिग्राहसमायुक्ताध्वजैराकाशचुंबिनः ॥ ६२ ॥ कोटिशस्तुविमानानिनानाचिन्हान्वितानिच ॥ ना
नावादित्रयुक्तानिमहाध्वजयुतानिच ॥ ६३ ॥ वैदूर्यमणिसालस्याप्यग्रेसालःपरःस्मृतः ॥ दशयोजनतुंगोसा
विंद्रनीलाश्मनिर्मितः ॥ ६४ ॥ तन्मध्यभूस्तथावर्ध्वोमहामार्गागृहाणिच ॥ वापीकूपतडागाश्चसर्वेतन्मणि
निर्मिताः ॥ ६५ ॥ तत्रपद्मंतुसंप्रोक्तंबहुयोजनविस्तृतं ॥ षोडशारंदीप्यमानंसुदर्शनमिवापरं ॥ ३६ ॥ त
त्रषोडशशक्तीनांस्थानानिविविधानिच ॥ सर्वोपस्करयुक्तानिसमृद्धानिवसन्तिहि ॥ ६७ ॥ तासांनामानिव
क्ष्यामिशृणुमेनूपसत्तम ॥ करालीविकरालीचतथोमाचसरस्वती ॥ ६८ ॥ श्रीदुर्गोषातथाक्ष्मीःश्रुतिश्चै
वस्मृतिर्धृतिः ॥ श्रद्धामेधामातिःकांतिरार्याषोडशशक्तयः ॥ ६९ ॥ नीलजीमूतसंकाशाःकरवालकरांबुजाः ॥
समाःखेटकधारिण्योयुद्धोपक्रांतमानसाः ॥ ७० ॥

॥ ६४ ॥

॥ ६४ ॥

प्राकारमाह वैदूर्यमणीति ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ तस्मिन्प्राकारेषोडशदलंपद्मं देवीयंत्रावयवविद्यतेइत्याह तत्रपद्मंत्विति ॥ ६६ ॥ ६७ ॥
॥ ६८ ॥ षोडशशक्तयइति एताभुवनेक्षरीयंत्रपूजायांशारदातिकार्येषुसप्तः तदुक्तंशारदायां खड्गखेटकधारिण्यःक्ष्यामाः
पूज्याश्चतस्रः ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥

॥३९॥

॥ ७१ ॥ ७२ ॥ अथपंचदशमुक्ताप्राकारमाह इंद्रनीलमहासालेति ॥ ७३ ॥ तस्मिन्प्राकारेभुवनेश्वरीयंत्रेविद्यमानमष्टदलपञ्चविद्यते
इत्याह तन्मध्येष्टदलांबुजमिति ॥ ७४ ॥ सकेसरमितिपद्मविशेषणं देवीसमाकारारक्तवर्णाः देव्यायुधधराः पाशांकुशवराभयधारिण्यः

सेनान्यः सकला एताः श्रीदेव्याजगदीशिनः ॥ प्रतिब्रह्मांडसंस्थानां शक्तीनां नायिकाः स्मृताः ॥ ७१ ॥ ब्रह्मांडक्षो
भकारिण्यो देवीशक्त्युपबृंहिताः ॥ नानारथसमारूढानानाशक्तिभिरन्विताः ॥ ७२ ॥ एतत्पराक्रमवंक्तुं सहस्रा
स्योपि न क्षमः ॥ इंद्रनीलमहासालादग्रे तु बहुविस्तृतः ॥ ७३ ॥ मुक्ताप्राकार उदितो दशयोजनदैर्घ्यवान् ॥ म
ध्यभूः पूर्ववत्प्रोक्ता तन्मध्ये ऽष्टदलांबुजं ॥ ७४ ॥ मुक्तामणिगणार्काणी विस्तृतंतु सकेसरं ॥ तत्र देवीसमाकारा
देव्यायुधधराः सदा ॥ ७५ ॥ संप्रोक्ता अष्टमंत्रिण्योजगद्वार्ताप्रबोधकाः ॥ देवीसमानभोगास्ता इंगितज्ञास्तुपं
डिताः ॥ ७६ ॥ कुशलाः सर्वकार्येषु स्वामिकार्यपरायणाः ॥ देव्यभिप्रायबोध्यस्तश्चतुरा अतिसुंदराः ॥ ७७ ॥
नानाशक्तिसमायुक्ताः प्रतिब्रह्मांडवर्तिनां ॥ प्राणिनां ताः समाचारं ज्ञानशक्त्या विदंति च ॥ ७८ ॥ तासां ना
मानिवक्ष्यामि मत्तः शृणु नृपोत्तम ॥ अनंगकुसुमाप्रोक्ताप्यनंगकुसुमातुरा ॥ ७९ ॥ अनंगमदनातद्वदनंगम
दनातुरा ॥ भुवनपालागगनवेगाच्चैव ततः परं ॥ ८० ॥ शशिरेखाचगगनरेखाच्चैव ततः परं ॥ पाशांकुशवरा
भीतिधरा अरुणविग्रहाः ॥ ८१ ॥ विश्वसंबन्धिनीवार्ताबोधयन्ति प्रतिक्षणं ॥ मुक्तासालादग्रभागे महामारकतो
परः ॥ ८२ ॥ सालोत्तमः समुद्दिष्टो दशयोजनदैर्घ्यवान् ॥ नानासौभाग्यसंयुक्तो नानाभोगसमन्वितः ॥ ८३ ॥

॥ ७५ ॥ जगद्वार्ताप्रबोधकाः एतद्ब्रह्मांडे इदं जातं तस्मिन् ब्रह्मांडे तज्जातमिति प्रतिब्रह्मांडसंबन्धि वार्तानां बोधका इत्यर्थः अमात्यानां स्वभाव
एवायं ॥ ७६ ॥ विदंति जानंति ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ अथ षोडशमरक्तप्राकारमाह मुक्तासालादग्रभागे
इति ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥

३.भा.द्वा

॥४०॥

षट्कोणमत्रेति अस्मिन्प्राकारे भुवनेऽखरीयं त्रायव्यं षट्कोणं वर्तते इत्यर्थः तदुक्तं शारदायां पद्ममष्टदलं बाह्यवृत्तं षोडशभिर्दलैः विलिखेत्कर्णिकामध्ये षट्कोणमिति सुंदरमिति ॥ ८४ ॥ पूर्वकोण इति पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राचीतिनियमादेव्यग्रभागस्थः कोणः पूर्वकोणं शब्देन ग्राह्यः तदनुरोधेनैव षट्कोणं तत्र व्यवस्थानोऽध्या तस्मिन् पूर्वकोणे गायत्री सहितो ब्रह्मा वर्तते इत्यर्थः कुंडिका कर्मण्डलुः अक्षगुणोऽक्षमूत्रं अभीतिरभयं

टी.अ.

११

मध्यभूस्तादृशी प्रोक्ता सद नानितथैव च ॥ षट्कोणमत्र विस्तीर्णकोणस्था देवताः शृणु ॥ ८४ ॥ पूर्वकोणे चतुर्वक्रो गायत्री सहितो विधिः ॥ कुंडिकाक्षगुणाभीतिदंडायुधधरः परः ॥ ८५ ॥ तदा युधधरा देवी गायत्री परदेवता ॥ वेदाः सर्वे मूर्तिमंतः शास्त्राणि विविधानि च ॥ ८६ ॥ स्मृतयश्च पुराणानि मूर्तिमंत इव संति हि ॥ ये ब्रह्मविग्रहाः संति गायत्रीविग्रहाश्च ये ॥ ८७ ॥ व्याहृतीनां विग्रहाश्च ते नित्यं तत्र संति हि ॥ रक्षः कोणेशं खचक्रगदांबुजकरांबुजा ॥ ८८ ॥ सावित्री वर्तते तत्र महाविष्णुश्च तादृशः ॥ ये विष्णुविग्रहाः संति मत्स्यकूर्मादयोऽखिलाः ॥ ८९ ॥ सावित्रीविग्रहा ये च ते सर्वे तत्र संति हि ॥ वायुकोणे परश्चक्षुः क्षमालाभयवरा न्वितः ॥ ९० ॥ महारुद्रो वर्ततेऽत्र सरस्वत्यपितादृशी ॥ ये ये तु रुद्रभेदाः स्युर्दक्षिणा स्यादयो न प ॥ ९१ ॥ गौरीभेदाश्च ये सर्वे ते तत्र निवसंति हि ॥ चतुःषष्ट्या गमा ये च ये चान्येऽप्या गमाः स्मृताः ॥ ९२ ॥ ते सर्वे मूर्तिमंतश्च तत्रैव निवसंति हि ॥ अग्निकोणे रत्नकुंभं तथा मणिकरं डकं ॥ ९३ ॥ दधानो निजहस्ताभ्यां कुबेरो धनदायकः ॥ नानावीथिसमायुक्तो महालक्ष्मीसमन्वितः ९४

॥ ८५ ॥ तान्येवायुधानि गायत्र्याः संतीत्याह तदा युधधरोति तदुक्तं शारदायां इन्द्रकोणे लसदंडकुंडिकाक्षगुणाभ्यां गायत्री पूजयेन्मंत्रं ब्रह्मणमपितादृशमिति ब्रह्मसन्निधौ वेदा मूर्तिमंतः संतीत्याह वेदाः सर्वे इति ॥ ८६ ॥ ब्रह्मविग्रहा ब्रह्मणोक्ताराः ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ दक्षिणा स्यादयो दक्षिण मूर्तिप्रभृतयः ॥ ९१ ॥ गौरीभेदाः पार्वत्यवताराः ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥

॥४०॥

निधिपतिर्देव्याधनपातेः ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ अथसप्तदशंप्रवालप्राकारमाह महामारकतस्याग्रेइति

देव्यानिधिपतिस्त्वास्तेस्वगणैःपरिवेष्टितः ॥ वारुणे तु महाकोणे मदनोरातिसंयुतः ॥ ९५ ॥ पाशांकुशधनु
र्बाणधरो नित्यं विराजते ॥ शृंगारामूर्तिमंतस्तु तत्र सन्निहिताः सदा ॥ ९६ ॥ ईशानकोणे विघ्नेशो नित्यं पुष्टि
मन्वितः ॥ पाशांकुशधरो वीरो विघ्नहर्ता विराजते ॥ ९७ ॥ विभूतयोगणेशस्य यायाः संति नृपोत्तम ॥ ताः सर्वा
निवसंत्यत्र महैश्वर्यसमन्विताः ॥ ९८ ॥ प्रतिब्रह्मांडसंस्थानां ब्रह्मादीनां समष्टयः ॥ एते ब्रह्मादयः प्रोक्ताः से
वन्ते जगदीश्वरी ॥ ९९ ॥ महामारकतस्याग्रे शतयोजनदैर्घ्यवान् ॥ प्रवालसालोस्त्यपरः कुंकुमारुणविग्रहः
॥ १०० ॥ मध्यभूस्तादृशी प्रोक्ता सदना निच पूर्ववत् ॥ तन्मध्ये पंचभूतानां स्वामिन्यः पंचसंति च ॥ १ ॥ ह
लेखा गगनारक्ता चतुर्थी तु करालिका ॥ महोच्छुष्मा पंचमी च पंचभूतसमप्रभाः ॥ २ ॥ पाशांकुशवराभीतिधा
रिण्यो मितभूषणाः ॥ देवीसमानवेषाढ्यानवयौवनगर्विताः ॥ ३ ॥ प्रवालसालादग्रे तु नवरत्नविनिर्मितः ॥
बहुयोजनविस्तीर्णो महासालोऽस्ति भूमिप ॥ ४ ॥ तत्र चाम्नाय देवीनां सदनानि बहून्यपि ॥ नवरत्नमयान्ये
वतडागाश्च सरांसि च ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥

॥ १०० ॥ पंचभूतानां पृथिव्यादिपंचभूतानां नायिकाः ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ अथाष्टदशं नवरत्नप्राकारमाह प्रवालसालादग्रे इति ॥ ४ ॥
आम्नाय देवीनामिति पूर्वा । यणश्चिमाप्नाय दक्षिणाप्नायोत्तराप्नायोर्ध्वाप्नाय देवता आगमे प्रसिद्धास्तासां देवतानां स्थानानि तत्र वसंतीत्यर्थः ॥ ५ ॥

॥ भा. द्वा. ॥

॥ ४१ ॥

श्रीभगवत्यायेवतारागृहीतादैत्यनाशार्थभक्तानुग्रहार्थचेतेपितस्मिन्नेवप्राकारेवसंतीत्याह श्रीदेव्याइति तेचपाशांकुशेद्वरीभुवनेद्वरी भैरवीकपालभुवनेद्वरीअंकुशभुवनेद्वरीप्रसादभुवनेद्वरीश्रीक्रोधभुवनेद्वरीत्रिपुटाश्वारूढानित्यक्लिन्नान्नपूर्णत्वरितादयोभुवनेद्वर्यवताराभु वनेद्वरीसंहितायांप्रसिद्धाः महाविद्यामहाभेदाइति कालीतारामहाविद्याषोडशीत्यादयोदशमहाविद्यास्तासांयेमहाभेदावतारास्तेपि तत्रप्रकारेवसंतीत्यर्थः दशमहाविद्यामहाविद्यावताराश्चसंतीत्यर्थः ॥ ६ ॥ ७ ॥ अथमुख्यंदेवीसदनमाह नवरत्नमयादग्रेइति ॥ ८ ॥ तत्रचिंतामणिगृहस्तंभानाह सूर्योद्गारोपलैरिति सूर्यसमानकांतिमुद्गिरंतिवमंतितेसूर्योद्गारास्तादृशायेउपलाःपाषाणाःसूर्यसमानकांतयस्तै

टी.अ.

११

श्रीदेव्यायेवताराःस्युस्तेतत्रनिवसंतिहि ॥ महाविद्यामहाभेदाःसंतितत्रैवभूमिप ॥ ६ ॥ निजावरणदेवीभिर्निजभूषणवाहनैः ॥ सर्वादेव्योविराजंतेकोटिसूर्यसमप्रभाः ॥ ७ ॥ सप्तकोटिमहामंत्रदेवताःसंतितत्रहि ॥ नवरत्नमयादग्रेचिंतामणिग्रहंमहत् ॥ ८ ॥ तत्रत्यंवस्तुमात्रंतुचिंतामणिविनिर्मितं ॥ सूर्योद्गारोपलैस्तद्वच्चंद्रोद्गारोपलैस्तथा ॥ ९ ॥ विद्युत्प्रभोपलैःस्तंभाःकल्पितास्तुसहस्रशः ॥ येषांप्रभाभिरंतस्थंवस्तुकिंचिन्नदृश्यते ॥ ११० ॥ इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेद्वादशस्कंधेएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ व्यासउवाच ॥ तदेव देवीसदनंमध्यभागेविराजते ॥ सहस्रस्तंभसंयुक्ताश्चत्वारस्तेषुमंडपाः ॥ १ ॥ ॥ ६४ ॥

स्तथाचंद्रोद्गारोपलैश्चंद्रसमानकांतिपाषाणैस्तथाविद्युत्प्रभपाषाणैश्चिंतामणिगृहेसहस्रशःस्तंभाःकल्पिताइत्यर्थः ॥ ९ ॥ वस्तुकिंचिन्नदृश्यतेइति एकविद्युदर्शनेनेत्रांध्यंभवतिकिंपुनरनेकविद्युत्समकांतिसहस्रस्तंभदर्शनेइत्यर्थः ॥ १० ॥ इतिश्रीदेवीभागवततिलकेद्वादशस्कंधेएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ त्रिसप्ततिमहापादौश्चिंतामणिगृहस्यहि ॥ कृत्वातुवर्णनंसम्यक्देव्याध्यानमिहोच्यते ॥ १२ ॥ अयचिंतामणिगृहंवर्णयति तदेवदेवीसदनमिति सर्वषोडशदलाष्टदलषट्कोणमध्येयचिंतामणिगृहंविंदुस्थानभूतंतदेवदेवीसदनंमूलप्रकृतेर्देव्यास्तदेवस्थानंतत्रचत्वारोमंडपाःसंतीत्याह सहस्रस्तंभेति ॥ १ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७७ ॥

॥ ४१ ॥

मंडपनामान्याह शृंगारमंडपइति तत्रसहस्रस्तंभयुक्तोएकोमंडपएवंचतुर्दिक्षुचत्वारोमंडपाः तत्रसहस्रशब्दोसंख्यापर्यायःअसंख्यस्तंभाः
संतीत्यर्थः सभायाअतिविस्तीर्णत्वात् ॥ २ ॥ ३ ॥ तन्मंडपानामिति चतुर्णामंडपानांपरितःचभयतंएकाकाश्मीरवनिकाद्वितीयामल्लिका
वनिकातृतीयाकुंदवानिकास्तीत्यर्थः ॥ ४ ॥ यासुवनिकासुवाटीषुअसंख्याताःपुष्कलकागंधमृगामृगमदपूरितास्तत्स्त्राविणश्चसंतीत्यर्थः
॥ ५ ॥ मंडपचतुष्टयोभयभागेपिमहापद्माटवीवर्ततेतांवर्णयति महापद्माटवीति ॥ ६ ॥ एतद्वनिकानांवाटिकानांसुगंधेनसर्वमापिमणिद्वीपं

शृंगारमंडपश्चैकोमुक्तिमंडपएवच ॥ ज्ञानमंडपसंज्ञस्तुतृतीयःपरिकीर्तितः ॥ २ ॥ एकांतमंडपश्चैवचतुर्थः
परिकीर्तितः ॥ नानावितानसंयुक्तानानाधूपैस्तुधूपिताः ॥ ३ ॥ कोटिसूर्यसमाःकांत्याभ्राजंतेमंडपाःशुभाः॥
तन्मंडपानांपरितःकाश्मीरवनिकास्मृता ॥ ४ ॥ मल्लिकाकुंदवनिकायत्रपुष्कलकाःस्थिताः ॥ असंख्यातामृ
गमदैःपूरितास्तत्स्त्रवानृप ॥ ५ ॥ महापद्माटवीतद्वद्रत्नसोपाननिर्मिता ॥ सुधारसेनसंपूर्णागुंजन्मत्तमधुव्र
ता ॥ ६ ॥ हंसकारंडवाकीर्णागंधपूरितदिक्तटा ॥ वनिकानांसुगंधैस्तुमणिद्वीपंसुवासितं ॥ ७ ॥ शृंगारमंडपे
देव्योगायंतिविविधैःस्वरै ॥ सभासदोदेववरामध्येश्रीजगदंबिका ॥ ८ ॥ मुक्तिमंडपमध्येतुमोचयत्यनिशंशि
वा ॥ ज्ञानोपदेशंकुरुतेतृतीयेनृपमंडपे ॥ ९ ॥ चतुर्थमंडपेचैवजगद्रक्षाविचिंतनं ॥ मंत्रिणीसहितानित्यंकरो
तिजगदंबिका ॥ १० ॥

॥ ६१ ॥

॥ ६२ ॥

॥ ६३ ॥

वासितामित्यर्थः ॥ ७ ॥ तत्रशृंगारमंडपस्थकृत्यमाह शृंगारमंडपेदेव्यइति शृंगारमंडपेदेवीमध्यसिंहासनेतिष्ठतिमणिद्वीपवासिनोदेववराः
पूर्वोक्ताःसर्वेसभासदःसंतिदेव्योदेवांगनावशिन्यादयश्चसर्वाअप्सरसश्चदेवीपुरतोगायंतीत्यर्थः ॥ ८ ॥ मुक्तिमंडपेतुसर्वान्प्रतिब्रह्मांडव
र्तिनोभक्तान्मोचयति चतुर्विधामुक्तिददातीत्याह मुक्तिमंडपेति तृतीयमंडपेभक्तेभ्योज्ञानोपदेशंनिजब्रह्मरूपविषयकज्ञानोपदेशंकरोतीत्या
ह ज्ञानोपदेशमिति ॥ ९ ॥ चतुर्थमंडपस्थकृत्यमाह चतुर्थमंडपेचैवेति मंत्रिणीसहितेति मंत्रिण्यःपूर्वोक्ताअनंगकुसुमाद्याअष्टदल
स्याःशक्तयस्ताभिःसहितान्जगद्रक्षाविचिंतनंजगत्कल्याणाचिंतनंकरोतीत्यर्थः महाराजस्वभावएवायं ॥ १० ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.दा

॥४२॥

मुख्यदेवीस्थानमाह चिंतामणिगृहेइति शक्तितत्वात्मकैरिति शक्तितत्त्वानिमूलप्रकृतेर्भुवनेश्वर्यास्तत्त्वानिदशसंख्यानि तदुक्तंशारदायां
निवृत्त्याद्याः कलाः पञ्चततोविंदुः कलापुनः नादः शक्तिसदापूर्वः शिवश्चप्रकृतेर्विंदुरिति तानिचदशशक्तितत्त्वानिसोपानरूपाणिश्रेणरूपाणि
अत्युच्चमंचेधिरोहणार्थस्थितानितैर्दशाभिः सोपानैर्युक्तोमंचकोवक्ष्यमाणोविराजतइत्यर्थः ॥११॥ मंचकस्वरूपमाह ब्रह्माविष्णुश्चेति ब्रह्माद
यश्चत्वारोमंचकखुराः सदाशिवस्तुफलकस्थानीयइत्यर्थः ॥१२॥ तस्मिन्मंचेभुवनेश्वरोमहादेवोविराजते कोसौभुवनेश्वरइतिचेत्तत्राह या

चिंतामणिगृहेराजंछक्तितत्वात्मकैः परैः ॥ सोपानैर्दशभिर्युक्तोमंचकोप्यधिराजते ॥ ११ ॥ ब्रह्माविष्णुश्चरु
द्रश्चईश्वरश्चसदाशिवः ॥ एतेमंचखुराः प्रोक्ताः फलकस्तुसदाशिवः ॥ १२ ॥ तस्योपरिमहादेवोभुवनेशोविरा
जते ॥ यादेवीनिजलीलार्थद्विधाभूताबभूवह ॥ १३ ॥ सृष्ट्यादौतुस एवायंतदर्धागोमहेश्वरः ॥ कंदर्पदर्पनाशो
द्यत्कोटिकंदर्पसुंदरः ॥ १४ ॥ पंचवक्त्रस्त्रिनेत्रश्चमणिभूषणभूषितः ॥ हरिणाभीतिपरशून्वरंचनिजबाहुभिः
॥ १५ ॥ दधानः षोडशाब्दोसौदेवः सर्वेश्वरोमहान् ॥ कोटिसूर्यप्रतीकाशश्चंद्रकोटिसुशीतलः ॥ १६ ॥ शुद्ध
स्फटिकसंकाशस्त्रिनेत्रः शीतलद्युतिः ॥ वामांकेसन्निषण्णास्यदेवीश्रीभुवनेश्वरी ॥ १७ ॥ नवरत्नगणार्काणि
कांचीदामविराजिता ॥ तप्तकांचनसन्नद्धवैडूर्यांगदभूषणा ॥ १८ ॥ ॥ ११ ॥ ॥ ११ ॥

देवीति निजलीलार्थयोग्यनिजदेहानुरूपक्रीडार्थसृष्ट्यादौस्वयंभगवतीद्विधाभूताबभूवतदक्षिणार्धभागोयंभुवनेश्वरइत्यर्थः एकैवसाम्यावस्यमा
याशबलब्रह्मरूपिणीभगवतीभुवनेश्वरीभुवनेश्वररूपेणप्रादुर्बभूवेत्यर्थः ॥ १३ ॥ कंदर्पस्ययः सौंदर्यदर्पस्तत्राज्ञनेउद्यंतउत्पन्नायेकोटिकंद
र्पस्तद्वत्सुंदरोभुवनेश्वरइत्यर्थः अभूतोपमेयं निरतिशयसौंदर्यवानित्यर्थः ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ त्रिनेत्रइति प्रतिवक्त्रंत्रिनेत्रइत्यर्थः
तस्यभुवनेश्वरस्यवामांकेश्रीभुवनेश्वरीविराजतेइत्याह वामांकइति ॥ १७ ॥ तांवर्ययति नवरत्नेति नवरत्नगणार्काण्यत्कांचीदामकोटि
सन्नेतेनान्विता तप्तकांचनेसन्नद्धाः खाचितायेवैडूर्यमणयस्तद्युक्तमंगदभूषणंबाहुभूषणंयस्याः सा ॥ १८ ॥ ॥ ११ ॥ ॥ ११ ॥

टी.अ.

१२

॥४२॥

कनहीप्यमानं श्रीचक्रं तदाकारं यत्ताटं कर्णभूषणं तेन विटं कंसुंदरं वदनां बुजयस्याः सा ललाटकांतिविभवेनाविजितार्धमुधाकरोर्धचंद्रोयस्याः
सा ययासेति वा अष्टमीचंद्रविंशसदृशललाटवतीत्यर्थः ॥ १९ ॥ बिंबकांतिस्तिरस्कारियद्रदच्छदमोष्ठपुटं तेन विराजिता ॥ २० ॥
दिव्योयश्चूडामणिः शिरोभूषणं तस्मिन् स्फारौ विस्तीर्णौ चंचच्चंद्रकसूर्यकौयस्याः चंद्रकसूर्यकावित्यत्रैवेति कृतावितिकन् रत्ननिर्मितं च

कनच्छ्रीचक्रताटं कविटं कवदनां बुजा ॥ ललाटकांतिविभवविजितार्धमुधाकरा ॥ १९ ॥ बिंबकांतितिरस्का
रिरदच्छदविराजिता ॥ लसत्कुंकुमकस्तूरीतिलकोद्रासितानना ॥ २० ॥ दिव्यचूडामणिस्फारचंचच्चंद्रक
सूर्यका ॥ उद्यत्कविसमस्वच्छनासाभरणभासुरा ॥ २१ ॥ चिंताकलंबितस्वच्छमुक्तागुच्छविराजिता ॥
पटीरपंककपूरकुंकुमालंकृतस्तनी ॥ २२ ॥ विचित्रविविधाकल्पाकंबुसंकाशकंधरा ॥ दाडिमीफलबीजाभ
दंतपंक्तिविराजिता ॥ २३ ॥ अनर्घ्यरत्नघटितमुकुटांचिमतस्तका ॥ मत्तालिमालाविलसदलकाञ्चमुखां
बुजा ॥ २४ ॥ कलंककार्श्यनिर्मुक्तशरच्चंद्रनिभानना ॥ जान्हवीसलिलावर्तशोभिनाभिविभूषिता ॥ २५ ॥
माणिक्यशकलाबद्धमुद्रिकांगुलिभूषिता ॥ पुंडरीकदलाकारनयनत्रयसुंदरी ॥ २६ ॥ कल्पिताच्छमहारा
गपद्मरागोज्वलप्रभा ॥ रत्नकिंकिणिकायुक्तरत्नकंकणशोभिता ॥ २७ ॥ मणिमुक्तासरापारलसत्पदकसं
ततिः ॥ रत्नांगुलिप्रविततप्रभाजाललसत्करा ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥

द्रसूर्यसंबद्धचूडामणिभूषणविराजितेत्यर्थः उद्यन्यः कविः शुक्रनक्षत्रं तेन समं स्वच्छं यन्नासाभरणं तेन भासुरा ॥ २१ ॥ चिंताकंकठभूषण
विशेषस्तस्मिंलंबितोयः स्वच्छमुक्तागुच्छस्तेन विराजिता ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ कलंककार्श्याभ्यानिर्मुक्तोयः शरच्चंद्रस्तन्निभमाननं
यस्याः ॥ २५ ॥ २६ ॥ कल्पितः शाणघर्षणेन संपादितोच्छमहारागोयस्यतादृशोयः पद्मरागस्तद्दुब्जलाप्रभायस्याः सा किंकिणिका
धुद्रवंटिका ॥ २७ ॥ मणिमुक्तासरेषु मणिमुक्तामालासु विद्यमाना अप्रारा अमौल्यालसत्पदकसंततिर्यस्याः सा ॥ २८ ॥

॥भा.द्वा॥

॥४३॥

मल्लिकाया आमोदीयोधमिलस्तस्मिन्यामल्लिकामल्लिकामालातस्मिन्योलिसरोभमरपंक्तिस्तेनान्विता ॥ २९ ॥ सुवृत्तनिविडोत्तुंगकुचभा
रेणालसाखिन्ना ॥ ३० ॥ संल्लापोवाणीतस्यामाधुर्येणविनिर्भर्त्सितकच्छपीवीणायस्याययावासा ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ इच्छाश
क्त्येति इदंमूर्तिमल्लिकानयंदेव्याःसन्निधावस्तीत्यर्थः ॥ ३४ ॥ जयादिनवर्णाठशक्तयोपिभूर्तिमत्योदेवीस्तुवंतीत्याह जयाचेति ॥ ३५ ॥

कंचुकीगुंफितापारनानारत्नततिद्युतिः ॥ मल्लिकामोदिधम्मिल्लमल्लिकालिसरावृता ॥ २९ ॥ सुवृत्तनिविडो
सुंगकुचभारालसाशिवा ॥ वरपाशांकुशाभीतिलसद्बाहुचतुष्टया ॥ ३० ॥ सर्वशृंगारवेषाढ्यासुकुमारांगव
ल्लरी ॥ सौंदर्यधारासर्वस्वानिव्याजकरुणामयी ॥ ३१ ॥ निजसंल्लापमाधुर्यविनिर्भर्त्सितकच्छपी ॥ कोटि
कोटिरवींदूनांकांतियाबिभ्रतीपरा ॥ ३२ ॥ नानासखीभिर्दासीभिस्तथादेवांगनादिभिः ॥ सर्वाभिर्देवता
भिस्तुसमंतात्परिवेष्टिता ॥ ३३ ॥ इच्छाशक्त्याज्ञानशक्त्याक्रियाशक्त्यासमन्विता ॥ लज्जातुष्टिस्तथापुष्टिः
कीर्तिःकांतिसमादया ॥ ३४ ॥ बुद्धिर्मेधास्मृतिर्लक्ष्मीर्मूर्तिमत्योंगनाःस्मृताः ॥ जयाचविजयाचैवाप्यजिता
चापराजिता ॥ ३५ ॥ नित्याविलासिनीदोग्ध्रीत्वघोरामंगलानवा ॥ पीठशक्त्यएतास्तुसेवंतेयांपरांबिकां
॥ ३६ ॥ यस्यास्तुपार्श्वभागेस्तोनिधीतौशंखपद्मकौ ॥ नवरत्नवहानद्यस्तथावैकांचनस्रवाः ॥ ३७ ॥ स
प्तधातुवहानद्योनिधिभ्यांतुविनिर्गताः ॥ सुधासिध्वंतगामिन्यस्ताःसर्वानृपसत्तम ॥ ३८ ॥ सादेवीभुवने
शानीतद्वामांकेविराजते ॥ सर्वेशत्वमहेशस्ययत्संगादेवनान्यथा ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥

॥ ३६ ॥ देवीपार्श्वभागस्योनिधीवर्णयति यस्यास्त्विति शंखनिधिःपद्मनिधिश्च ॥ ३७ ॥ निधिभ्यांनिधिसकाशाद्विनिर्गताद्वयर्थः तार
त्नवहानद्यःसुधासिध्वंतगामिन्यःसंतीत्यनेनमध्यस्थप्राकाराणांनदीनिर्गमनयोग्यानिद्वाराणिसंतीत्येतदुक्तंभवति ॥ ३८ ॥ एतादृशीयाभुव
नेश्वरीसाभुवनेश्वरस्यांकेतिष्ठतीत्याह सादेवीति ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥

टी.अ.

१२

॥४३॥

सहस्रयोजनायामिति चिंतामणिगृहंसहस्रयोजनायामंतदुत्तरसालास्तुपूर्वस्मात्पूर्वस्मात्तद्विगुणविस्ताराइत्यर्थः ॥ ४० ॥ इदंमणिदीपं
भूमिष्ठं किं त्वंतरिक्षगतमस्तीत्याह अंतरिक्षगतमिति ॥ ४१ ॥ किंचास्यमणिदीपस्यप्रलयेपिननाशस्तथासृष्टिसमयेनोत्पत्तिः किंतुप्रलये
पटवत्संकोचोभवतिसृष्टिसमयेविकासोभवति तथाचसंकोचविकासशालिकमलवत्पटवच्चोस्तीत्याह संकोचश्चेति कार्यवशतइत्यनेनप्रति

चिंतामणिगृहस्यास्यप्रमाणंशृणुभूमिप ॥ सहस्रयोजनायामंमहांतस्तत्प्रचक्षते ॥ ४० ॥ तदुत्तरेमहासा
लाःपूर्वस्माद्विगुणाःस्मृताः ॥ अंतरिक्षगतंत्वेतन्निराधारंविराजते ॥ ४१ ॥ संकोचश्चविकासश्चजायेतेऽस्य
निरंतरं ॥ पटवत्कार्यवशतःप्रलयेसर्जनेतथा ॥ ४२ ॥ सालानांचैवसर्वेषांसर्वकांतिपरावधि ॥ चिंतामणि
गृहंप्रोक्तंयत्रदेवीमहोमयी ॥ ४३ ॥ येयेउपासकाःसंतिप्रतिब्रह्मांडवर्तिनः ॥ देवेषुनागलोकेषुमनुष्येष्वित
रेषुच ॥ ४४ ॥ श्रीदेव्यास्तेचसर्वेपिब्रजंत्यत्रैवभूमिप ॥ देवीक्षेत्रेयेत्यजंतिप्राणान्देव्यर्चनेरताः ॥ ४५ ॥
तेसर्वेयांतितत्रैवयत्रदेवीमहोत्सवा ॥ घृतकुल्यादुग्धकुल्यादधिकुल्यामधुस्रवाः ॥ ४६ ॥ स्यंदंतिसरितः
सर्वास्तथामृतवहाःपराः ॥ द्राक्षारसवहाःकाश्चिज्जंबूरसवहाःपराः ॥ ४७ ॥ आग्नेशुरसवाहिन्योनयस्ता
स्तुसहस्रंशः ॥ मनोरथफलावृक्षावाप्यःकूपास्तथैवच ॥ ४८ ॥ यथेष्टपानफलदानन्यूनंकिंचिदास्तिहि ॥
नरोगपलितंवापिजरावापेकदाचन ॥ ४९ ॥ नचिंतानचमात्सर्यकामक्रोधादिकंतथा ॥ सर्वेयुवानःसस्त्री
काःसहस्रादित्यवर्चसः ॥ ५० ॥ भजंतिसततंदेवीतत्रश्रीभुवनेश्वरीं ॥ केचित्सलोकतापन्नाःकेचित्सा
मीप्यतांगताः ॥ ५१ ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥

ब्रह्मांडवर्तिनांभक्तानांबहूनांसंघर्षेतथाप्रतिब्रह्मांडवर्तिनांदेवादीनांचसंघर्षेविकासोभवतिवृद्धिगच्छति तदभावेसंकोचोभवतीत्येतदुक्तंभवति
॥ ४२ ॥ ४३ ॥ अस्मिन्मणिदीपेयत्रजंतितानाह येयेउपासकाःसंतीति ॥ ४४ ॥ श्रीदेव्याःपराशक्तेरुपासकाइत्यन्वयः देवीक्षेत्रेषुस
प्तमस्कंधोक्तेषु ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥

दे.भा.द्वा

॥४४॥

॥५२॥ समष्टयइति यायामणिद्वीपेदेवतास्ताः सर्वाः प्रतिब्रह्मांडवर्तिनां देवानां समष्टयः संतीत्यर्थः ॥ ५३॥ मायाशबलवियहामुपासते इत्य-
सरूपतांगताः केचित्सार्ष्टितांच परे गताः ॥ यायास्तु देवतास्तत्र प्रतिब्रह्मांडवर्तिनां ॥ ५२ ॥ समष्टयः स्थि-
तास्तास्तु सेवन्ते जगदीश्वरीं ॥ सप्तकोटिमहामंत्रामूर्तिमंत उपासते ॥ ५३ ॥ महाविद्याश्च सकलाः साम्याव-
स्थात्मिकां शिवां ॥ कारणं ब्रह्मरूपांतां मायाशबलवियहं ॥ ५४ ॥ इत्थं राजन्मया प्रोक्तं मणिद्वीपं महत्तरं ॥
न सूर्यचंद्रौ नो विद्युत्कोटयोऽग्निस्तथैव च ॥ ५५ ॥ एतस्य भासाकोट्यं शकोट्यं शेनापिते समाः ॥ क्वचिद्विद्रुमसं-
काशं क्वचिन्मरकतच्छवि ॥ ५६ ॥ विद्युद्गानुसमच्छायं मध्यसूर्यसमं क्वचित् ॥ विद्युत्कोटिमहाधारासारकांति-
ततं क्वचित् ॥ ५७ ॥ क्वचित्सिंदूरनीलेंद्रमाणिक्यसदृशच्छवि ॥ हीरसारमहागर्भधगद्विगतदिक्कटं ॥ ५८ ॥
कांत्यादावानलसमंतत्तकांचनसन्निभं ॥ क्वचिच्चंद्रोपलोद्गारसूर्योद्गारंच कुत्रचित् ॥ ५९ ॥ रत्नशृंगिसमायुक्तं
रत्नप्राकारगोपुरं ॥ रत्नपत्रैरत्नफलैर्वृक्षैश्च परिमंडितं ॥ ६० ॥ नृत्यं मयूरसंघैश्च कपोतरणितोज्ज्वलं ॥ को-
किलाकाकलीलापैः शुक्लापैश्च शोभितं ॥ ६१ ॥ सुरम्यरमणीयांबुलक्षावधिसरोवृतं ॥ तन्मध्यभागविल-
सद्विकचद्रत्नपंकजैः ॥ ६२ ॥ सुगंधिभिः समंतात्तुवासितं शतयोजनं ॥ मंदमारुतसंभिन्नचलद्द्रुमसमाकु-
लं ॥ ६३ ॥ चिंतामणिसमूहानां ज्योतिषाविततांबरं ॥ रत्नप्रभाभिरभितो धगद्विगतदिक्कटं ॥ ६४ ॥ वृक्ष-
व्रातमहागंधवातव्रातसुपूरितं ॥ धूपधूपायितं राजन्मणिदीपायुतोज्ज्वलं ॥ ६५ ॥ मणिजालकसच्छिद्रतर-
लोदरकांतिभिः ॥ दिङ्मोहजनकंचैतद्वर्षणोदरसंयुतं ॥ ६६ ॥ ऐश्वर्यस्य समग्रस्य शृंगारस्याखिलस्य च ॥
सर्वज्ञतायाः सर्वायास्तेजसश्चाखिलस्य च ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥

नवयः ॥ ५४ ॥ समुदितं मणिद्वीपं वर्णयति इत्थं राजन्निति ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ रत्नशृंगिणोरत्नपर्वतास्तद्युक्तं ॥ ६० ॥
॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ऐश्वर्यादीनामुत्तमगुणानां समाप्तिरन्वर्तत इत्याह ऐश्वर्यस्य समग्रस्येति ॥ ६७ ॥

टो.अ.

१२

॥४४॥

॥ ६८ ॥ तैत्तिरीयश्रुतौ सार्वभौमानंदमारभ्य ब्रह्मलोकपर्यंतमानंदभेदाये उक्तास्ते सर्वे प्यानंदं अत्र वसंतीत्याह राज्ञ आनंदमारभ्येति ॥ ६९ ॥
मणिद्वीपवर्णनमुपसंहरति इति ते वर्णितमिति ॥ ७० ॥ प्राणोत्क्रमणसंधौ मरणसमये एतन्मणिद्वीपं स्मृत्वा मृतः प्राणी तत्रैव मणिद्वीपे एव गच्छ
तीत्यर्थः ॥ ७१ ॥ अष्टमाध्यायमारभ्य द्वादशाध्यायपर्यंतं पंचाध्यायाः संतितेषां पठने यत्फलं तत्कथयति अध्यायपंचकं त्वेतदिति ॥ ७२ ॥

पराक्रमस्य सर्वस्य सर्वोत्तमगुणस्य च ॥ सकलायादयायाश्च समाप्तिरिह भूपते ॥ ६८ ॥ राज्ञ आनंदमारभ्य
ब्रह्मल्लोकांत भूमिषु ॥ आनंदाये स्थिताः सर्वे ते त्रैवांतर्भवन्ति हि ॥ ६९ ॥ इति ते वर्णितं राजन् मणिद्वीपं महत्त
रं ॥ महादेव्याः परं स्थानं सर्वलोकोत्तमोत्तमं ॥ ७० ॥ एतस्या मरणात्सद्यः सर्वपापं विनश्यति ॥ प्राणोत्क्रम
णसंधौ तु स्मृत्वा तत्रैव गच्छति ॥ ७१ ॥ अध्यायपंचकं त्वेतत्पठेन्नित्यं समाहितः ॥ भूतप्रेतपिशाचादिबाधा
तत्र भवेन्न हि ॥ ७२ ॥ नवीनगृहनिर्माणे वास्तुयागे तथैव च ॥ पठितव्यं प्रयत्नेन कल्याणं तेन जायते ॥ ७३ ॥
इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे द्वादशस्कंधे द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ व्यास उवाच ॥ इति ते कथितं भूपयद्यत्पृ
ष्ट्वयानघ ॥ नारायणेन यत्प्रोक्तं नारदाय महात्मने ॥ १ ॥ श्रुत्वैतत्तु महादेव्याः पुराणं परमाद्भुतं ॥ कृतकृत्यो
भवेन्मर्त्यो देव्याः प्रियतमो हि सः ॥ २ ॥ कुरुचां वामस्वराजन्स्वपित्रुद्धरणाय वै ॥ खिन्नोसियेन राजेन्द्रापितु
र्ज्ञात्वा तु दुर्गतिं ॥ ३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥

॥ ७३ ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलके द्वादशस्कंधे द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ त्रिंशत्पद्यैरर्धपद्यसहितैर्जनमेजयः ॥ देवीमखं चकारेति कथे
यमुपवर्ण्यते ॥ १ ॥ एतावत्पर्यंतं श्रीदेवीभागवतपुराणं कथितं तदुपसंहरति इति ते कथितं भूपेति यत्पृष्टं प्रथमस्कंधमारभ्यैतावत्पर्यंतं यद्यत्पृष्टं तन्म
योक्तं तत्राष्टमस्कंधारंभे यद्यत्स्वयापृष्टं तत्सर्वं नारायणनारदसंवादमुखेन मयैव प्रोक्तमित्यर्थः ॥ १ ॥ २ ॥ अथ यत्स्वया तृतीयस्कंधे उक्तं मम
पितामृत्युना मृतो दुर्गतिं गतस्तदुद्धारार्थं किंचिद्देवितत्र तदुद्धारार्थं देवीमखं कुर्वित्याह कुरुचां वामखमिति ॥ ३ ॥ ॥ ७ ॥

दे.भा.द्वा

॥४५॥

अथ च स्वस्योद्धाराय पित्रोद्धाराय च देव्यामहमंत्रं गृहाणेत्याह गृहाणत्वमिति ॥ ४ ॥ देवीप्रणवसंज्ञकमिति सचमायानीमात्मकः श्रीभुवने
श्रयामिन्त्रस्तं ग्राहेत्यर्थः देवीप्रणवत्वादेवैतस्योपदेशः काश्यामुक्तोऽद्रयामले काशीपुरीषारिसरेसुरासिंभुतीरेकर्णेनपत्यनुदिनांकिलदेहभा
गां मोक्षार्थमेव दयया शशिखंडमौलिः श्रीशक्तिबीजमनघंसुरसंघसेव्यामिति अन्यवचनान्यापि दुर्गाप्रदीपेद्वष्टान्यानि तत्रैवैषेणवेभ्योरा
ममंत्रस्यैवेभ्यः पंचाक्षरस्य नृहंजात्रालोत्पत्त्याशक्तेभ्यः शक्तिबीजस्य भुवनेश्वरीमंत्रस्य यतिभ्यः प्रणवस्योपदेश इति व्यवस्था ॥ ५ ॥ इ

गृहाणत्वं महादेव्यामंत्रं सर्वोत्तमोत्तमं ॥ यथाविधिविधानेन जन्मसाफल्यदायकं ॥ ४ ॥ सूत उवाच ॥ तच्छ्रुत्वा
नृपशार्दूलः प्रार्थयित्वा मुनीश्वरं ॥ तस्मादेव महामंत्रं देवीप्रणवसंज्ञकं ॥ ५ ॥ दीक्षाविधिविधानेन जग्राह नृ
पसत्तमः ॥ तत आहूय धौम्यादीन् नवरात्रसमागमे ॥ ६ ॥ अंबायज्ञं चकाराशुवित्तशायिविर्जितः ॥ ब्राह्म
णैः पाठयामास पुराणं त्वेतदुत्तमं ॥ ७ ॥ श्रीदेव्यग्रे बिकाप्रीत्यै देवीभागवतं परं ॥ ब्राह्मणान् भोजयामास आप्यसं
ख्यातान्सुवासिनीः ॥ ८ ॥ कुमारीर्वटुकादींश्च दीनानायांस्तथैव च ॥ द्रव्यप्रदानैस्तान्सर्वान्संतोष्य वसुधा
धिपः ॥ ९ ॥ समाप्य यज्ञं संस्थाने संस्थितो यावदेव हि ॥ तावदेवाहिचाकाशाभारदः समवातरत् ॥ १० ॥
रणयन्महतीं विणां ज्वलदग्निशिखोपमः ॥ रुसंभ्रमः समुत्थाय दृष्ट्वा तं नारदं मुनिं ॥ ११ ॥ आसनाद्युपचारै
श्च पूजयामास भूमिपः ॥ कृत्वा तु कुशलप्रश्नं पप्रच्छागमकारणं ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥

त्यं दीक्षाविधानेन तस्मादेव व्यासादुवनेश्वरीमंत्रं गृहीत्वा देवीमखसंपादनार्थं धौम्यादिऋषीन् हूतवानित्याह तत आहूयेति नवरात्रसमागमे
त्यनेन कोटिहोमात्मको देवीमखः कृत इति प्रतिभाति ॥ ६ ॥ तस्मिन् यज्ञे ब्राह्मणैः कर्तृभिर्देवीभागवतं पुराणं पाठयामासेत्याह ब्राह्मणैरिति एत
त्पुराणं श्रीदेवीभागवतं पुराणमित्यर्थः ॥ ७ ॥ श्रीदेव्यग्रे इति मंडपस्थलस्यापि श्रीदेव्या अग्रे इत्यर्थः ॥ ८ ॥ ९ ॥ यावदेव हिति यस्मि
न्काले रात्रौ देवीमखं समाप्य द्रिपतस्तस्मिन्नेव काले इत्यर्थः ॥ १० ॥ रुसंभ्रमः सहर्षो राजा समुत्थायेत्यर्थः ॥ ११ ॥ १२ ॥

टी.अ.

१३

॥४५॥

॥ १३ ॥ १४ ॥ निजकर्मविपर्ययाभिजकर्मव्यत्यासेनप्राक्षणापराधलक्षणेनविष्णुभागवतश्रवणेनोत्थृतइतितुक्त्वांतराभिप्रायेणावेष्णु
भागवतेउक्तं ॥ १५ ॥ १६ ॥ मणिद्वीपंतृतीयस्कंधोक्तंदेवलोकं केनपुण्यफलेनेदंवातंतत्राह देवीभागवतस्यास्येति ॥ १७ ॥ ततः

राजोवाच ॥ कुतआगमनंसाधोब्रूहिक्किंकरवाणिते ॥ सनाथोहंकृतार्थोहंत्वदागमनकारणात् ॥ १३ ॥ इति
राज्ञोवचःश्रुत्वाप्रोवाचमुनिसत्तमः ॥ अद्याश्चर्यमयादृष्टंदेवलोकंनृपोत्तम ॥ १४ ॥ तन्निवेदयितुंप्राप्तस्त्वत्स
काशेसविस्मितः ॥ तेपितादुर्गतिंप्राप्तेनिजकर्मविपर्ययात् ॥ १५ ॥ सएवायंदिव्यरूपवपुर्भूत्वाधुनैवाहि ॥
देवदेवैस्तुतःसम्यगप्सरोभिःसमंततः ॥ १६ ॥ विमानवरमारुह्यमणिद्वीपंगतोभवत् ॥ देवीभागवतस्या
स्यश्रवणोत्थफलेनच ॥ १७ ॥ अंबामखफलेनापिपितातेसुगतिंगतः ॥ धन्योसिंहकृतकृत्योसिर्जीवितंसफलं
तव ॥ १८ ॥ नरकादुत्थृतस्तातस्त्वयातुकुलभूषण ॥ देवलोकंस्फीतकीर्तिस्तवाद्यविपुलाभवत् ॥ १९ ॥ सूत
उवाच ॥ नारदोक्तंसमाकर्ण्यप्रेमगद्गदितांतरः ॥ पपातपादांबुजयोर्व्यासस्याद्भुतकर्मणः ॥ २० ॥ तवानु
ग्रहतोदेवकृतार्थोहंमहामुने ॥ किमयाप्रतिकर्तव्यंनमस्कारादृतेतव ॥ २१ ॥ अनुग्राह्यःसदैवाहमेवमेवत्व
यामुने ॥ इतिराज्ञोवचःश्रुत्वाप्याशीर्भिरभिवाद्यच ॥ २२ ॥ उवाचवचनंइलक्षणंभगवान्बादरायणः ॥ राज
न्सर्वपरित्यज्यभजदेवीपदांबुजं ॥ २३ ॥ देवीभागवतंचैवपठानित्यंसमाहितः ॥ अंबामखंसदाभक्त्याकुरु
नित्यमतंद्रितः ॥ २४ ॥ अनायासेनतेनत्वंमोक्षयसेभवबंधनात् ॥ संत्यन्यानिपुराणानिहरिरुद्रमुखानिच ॥ २५

पिता ॥ १८ ॥ १९ ॥ इदंसर्वदुर्घटफलंव्यारुगुरुप्रसादादेवमयालब्धमिति तंव्यासंप्रणमति क्पातेति ॥ २० ॥ नमस्कारादृतेनम
स्कारंविनाकिमयाप्रतिकर्तव्यंतपोपकारस्यप्रत्युपकारोमवाकःकर्तव्योनकयमपीत्यर्थः ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ हरिरुद्रौमु
खेप्रथमंयेषांपुराणानांताविचक्षिबपुराणविष्णुपुराणप्रभृतीनि ॥ २५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

भा.डा.

॥४६॥

॥ २३ ॥ देवीभागवतस्यैवसर्वोत्कृष्टत्वेहेतुमाह मूलप्रकृतिरेवैवेति मूलप्रकृतिजन्याविष्णुब्रह्मप्रभृतीनामेकैकगुणोपाधिकानांप्रतिपादका
विपुराणान्यन्यानि देवीभागवतंतुगुणत्रयसाम्यावस्थमायाशबलब्रह्मरूपमूलप्रकृतिप्रतिपादकं साक्षाद्भवतितस्मादिदमेवसर्वोत्कृष्टमेतत्सु
शमन्यपुराणं कथं भविष्यतीत्यर्थः ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ इति श्रीदेवीभागवततिलकेद्वादशस्कंधेत्रयोदशोध्यायः ॥ २३ ॥
त्रिंशच्छ्लोकैर्गतेव्यसेतूपसंहार उच्यते ॥ पुराणस्य समग्रस्य फलदर्शनपूर्वकं ॥ १ ॥ श्रीव्यासगमनोत्तरं शौनकादि ऋषिभ्यः सूतो वदति

टी.अ.

१३

देवीभागवतस्यास्य कलां नार्हीति षोडशीं ॥ सारमेतत्पुराणानां विदानां चैव सर्वशः ॥ २६ ॥ मूलप्रकृतिरेवैषाय
त्रतु प्रतिपद्यते ॥ समंतेन पुराणं स्यात्कथमन्यन्नृपोत्तम ॥ २७ ॥ पाठे वेदसमं पुण्यं यस्य स्याज्जनमेजय ॥
पठितव्यं प्रयत्नेन तदेव विबुधोत्तमैः ॥ २८ ॥ इत्युत्कानृपवर्यं तं जगाम मुनिराट् ततः ॥ जग्मुश्चैव यथास्थानं
धौम्यादिमुनयो मलाः ॥ २९ ॥ देवीभागवतस्यैव प्रशंसां चक्रुरुत्तमां ॥ राजा प्रशासधरिणीं ततः संतुष्टमान
सः ॥ ३० ॥ देवीभागवतं चैव पठच्छृण्वन्निरंतरं ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे द्वादशस्कंधेत्रयोदशोध्या
यः ॥ १३ ॥ सूत उवाच ॥ अर्धश्लोकात्मकं यत्तु देवीवक्त्राब्जनिर्गतं ॥ श्रीमद्भागवतं नाम वेदसिद्धान्तबोधकं
॥ १ ॥ उपदिष्टं विष्णवे यद्वटपत्रनिवासिने ॥ शतकोटिप्रविस्तीर्णं तत्कृतं ब्रह्मणा पुरा ॥ २ ॥ तत्सारमेकतः
कृत्वा व्यासेन शुकहेतवे ॥ अष्टादशसहस्रं तु द्वादशस्कंधसंयुतं ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥

सूत उवाच अर्धश्लोकेति तृतीयस्कंधे वटपत्रशयनाय विष्णवे बालरूपिणे श्लोकार्धेन तदा सर्वभगवत्या खिलार्थदं सर्वखल्विदं मेवाहं नान्यदास्ति स
नेतनामिति प्रोक्तवचने यत् श्लोकार्धं श्रीभगवती मुखानुजातिर्गतं श्रीमद्भागवतं अर्धश्लोकात्मकं सूत्ररूपं देवीभागवतीमित्यर्थः सर्वखल्विदं ब्रह्मोति वे
दसिद्धान्तस्य बोधकमित्यर्थः ॥ १ ॥ तत्सूत्ररूपं देवीभागवतमर्धश्लोकात्मकं पुरा पूर्वब्रह्मणा यत्तु मुखेन शतकोटिप्रविस्तीर्णं कृतं तस्य सूत्रभागवत
स्य व्याख्यानरूपेणैतावान्विस्तारः कृत इत्यर्थः ॥ २ ॥ शुकहेतवेशुककल्याणार्थः ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥

॥४६॥

तच्छतकोटिप्रविस्तीर्णकास्तीतिचेत्तत्राह अद्यापीति ॥ ४ ॥ एतस्यदेवीभागवतस्यैकैकपदस्यपाठेऽश्वमेधफलंभवतीत्याह पदेपदेऽश्वमेध
स्येति ॥ ५ ॥ पुराणस्यविधिमाह पौराणिकमिति प्रथमतोदेवीभागवतंनिजहस्तेनलेखकहस्तेनवालिखित्वातदेवपुस्तकंन्यासायपौराणि
कायदत्त्वातंभूषणादिभिःसंपूज्यव्यासबुद्ध्यातंमत्वातन्मुखात्तदंभागवतंश्रुत्वा समाप्तिदिनेप्रौष्ठपद्यांपौर्णमास्यांभाद्रपदपौर्णमास्यांदेवीतिथौहेम

देवीभागवतंनामपुराणंग्रथितंपुरा ॥ अद्यापिदेवलोकेतद्बहुविस्तीर्णमस्तिहि ॥ ४ ॥ नानेनसदृशंपुण्यं
पवित्रंपापनाशनं ॥ पदेपदेऽश्वमेधस्यफलमाप्नोतिमानवः ॥ ५ ॥ पौराणिकंपूजयित्वावस्त्राद्याभरणादिभिः
॥ व्यासबुद्ध्यातन्मुखात्तुश्रुत्वैतत्समुपोषितः ॥ ६ ॥ लिखित्वानिजहस्तेनलेखकेनाथवामुने ॥ प्रौष्ठपद्यांपौ
र्णमास्यांहेमसिंहसमन्वितं ॥ ७ ॥ दद्यात्पौराणिकायाथदक्षिणांचपयस्विनीं ॥ सालंकृतांसवत्सांचकपिलां
हेममालिनीं ॥ ८ ॥ भोजयेद्ब्राह्मणानंतेप्यध्यायपरिसंमितान् ॥ सुवासिनीस्तावतीश्चकुमारीवटुकैःसह ॥ ९ ॥
देवीबुद्ध्यापूजयेत्तान्वसनाभरणादिभिः ॥ पायसान्नवरेणापिगंधस्रक्कुसुमादिभिः ॥ १० ॥ पुराणदानेनैते
नभूदानस्यफलंलभेत् ॥ इहलोकेसुखीभूत्वाप्यंतेदेवीपुरं व्रजेत् ॥ ११ ॥ नित्यंयःशृणुयाद्भक्त्यादेवीभागवतं
परं ॥ नतस्यदुर्लभंकिंचित्कदाचित्कचिदस्तिहि ॥ १२ ॥ अपुत्रोलभतेपुत्रान्धनार्थीधनमाप्नुया
त् ॥ विद्यार्थीप्राप्नुयाद्विद्यांकीर्तिमंडितभूतलः ॥ १३ ॥ वंध्यावाकाकबंध्यावामृतबंध्याचयांगना ॥ श्रवणा
दस्यतद्दोषान्निवर्तेतनसंशयः ॥ १४ ॥

॥ ६ ॥

॥ ६ ॥

॥ ६ ॥

सिंहसमन्वितंदेवीवाहनंहेसिंहःपुराणंचदेवीस्वरूपंततोहेमसिंहेपुराणंदेवीभागवतंसंस्थाप्यपौराणिकायदद्यात्तदुपरिदक्षिणार्थंकपिलांगांदद्यादं
तेपुराणदानसांगत्वाययावंतःपुराणस्याध्यायाःअष्टादशाधिकत्रिशतसंख्याकास्तावतोब्राह्मणान्सुवासिनीःकुमारीश्चतावतीस्तावद्वटुकैःसह
भोजयेत्यायसान्नेनेत्यर्थः ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ एतादृशस्यपुराणदानस्यफलमाह पुराणदानेनैतेनोति ॥ ११ ॥ १२ ॥
॥ १३ ॥ काकबंध्यासकृत्प्रवसती तद्दोषाद्वंध्यत्वदोषात् ॥ १४ ॥

॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

१.भा.द्वा

१४७॥

॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ प्रतिसंध्यमिति संध्यात्रयेपिसंध्योपासनांकृत्वाश्रीगायत्र्याअयेस्तोत्ररूपेणैतस्यैकैकमध्यायपठेत्तेन
ज्ञानमोक्षदायकंभवतीत्यर्थः ॥ १८ ॥ शकुनांश्चैवेति कार्याकार्यविषयेसंकटेप्राप्तेनवमस्कंधोक्तप्रकारेणशकुनानीक्षेत ततःकार्यारंभं
कुर्यादित्यर्थः इदंपद्मपुराणेशकुनपरीक्षायांचोक्तंतद्वचनंचोपोद्घातेएवदर्शितं ॥ १९ ॥ २० ॥ इदंचदेवीभागवतंपुराणंशैवैष्णवैगां
णपत्यैःसौरैःशाक्तैर्वैदिकैःसर्वैश्चपठनीयमित्याह वैष्णवैरिति स्वेष्टशक्तेश्चतुष्टयेइति स्वस्ययोद्दष्टोदेवोविष्णुर्वाशिवोवागणेशोवामूर्योवा
यद्वेहेपुस्तकंचैतत्पूजितंयदितिष्ठति ॥ तद्वेहंत्यजेन्नित्यंरमाचैवसरस्वती ॥ १५॥ नेक्षंतितत्रवेतालाडाकि
नीराक्षसादयः ॥ ज्वरितंतुनरंस्पृष्ट्वापठेदेतत्समाहितः ॥ १६ ॥ मंडलान्नाशमाप्नोतिज्वरोदाहसमन्वितः॥
शतावृत्यास्यपठनाक्षयरोगोविनश्यति ॥ १७ ॥ प्रतिसंध्यंपठेद्यस्तुसंध्यांकृत्वासमाहितः ॥ एकैकमस्य
चाध्यायंसनरोज्ञानवान्भवेत् ॥ १८ ॥ शकुनांश्चैववीक्षेतकार्याकार्येषुचैवहि ॥ तत्प्रकारःपुरस्तात्तुकथितो
स्तिमयामुने ॥ १९ ॥ नवरात्रेपठेन्नित्यंशारदीयेतिभक्तिः ॥ तस्यांबिकातुसंतुष्टाददातीच्छाधिकंफलं
॥ २० ॥ वैष्णवैश्चैवशैवैश्चरमोमाप्रीतयेसदा ॥ सौरैश्चगाणपत्यैश्चस्वेष्टशक्तेश्चतुष्टये ॥ २१ ॥ पठितव्यं
प्रयत्नेननवरात्रचतुष्टये ॥ वैदिकैर्निजगायत्रीप्रीतयेनित्यशोमुने ॥ २२ ॥ पठितव्यंप्रयत्नेनविरोधोनात्र
कस्यचित् ॥ उपासनातुसर्वेषांशक्तियुक्तास्ति सर्वदा ॥ २३ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४५ ॥

तस्यशक्तिःपावतीराधाक्ष्मीःसिद्धिबुद्धिच्छाया रूपातस्यास्तुष्टयेइत्यर्थः ॥ २१ ॥ नवरात्रचतुष्टयेआषाढाश्विनमाषचैत्रशुक्लपक्षनवरात्र
चतुष्टयेवैदिकैरपिस्वेष्टदेवतागायत्रीप्रीतयेनिरंतरमस्यपठःकर्तव्यइत्याह वैदिकैरिति ॥ २२ ॥ विरोधोनात्रेति अस्मिन्देवीभागव
तेशैववैष्णवादीनांकेषांचिदपिविरोधोनास्तीत्यर्थः तत्रहेतुमाह शक्तियुक्तास्तीति नहिकस्यापिवैष्णवस्यशैवस्यगाणपत्यस्यसौरस्यवा
उपासनाशक्तिरहितास्ति किंतुशक्तिसहितैव राधाकृष्णलक्ष्मीनारायणसीतारामपावतीपरमेश्वरोपासनासुसर्वत्रशक्तिसहितायाएवोपासना
याःसत्वात् तस्मात्तत्तच्छक्तिसंतोषार्थं सर्वैरपिवैष्णवादिभिरेतत्पुराणंपठितव्यामित्यर्थः ॥ २३ ॥

टी.अ.

१४

॥४७॥

॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ ग्रयसमाप्तौमायत्रीपदघटितंमंगलं करोति सच्चिदानंदरूपांतामिति ह्रींमयीं ह्रींबीजवाच्या ह्रींब्रह्मोतिश्रुतेः
 ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ निर्जगामेति नैमिषारण्यक्षेत्रादन्यत्रगतवानित्यर्थः ॥ ३० ॥ श्रीमच्छैवकुलोत्पन्नोरंगनाथात्मजः सुधीः ॥
 लक्ष्मीगर्भसंभूतोनीलकंठोभिधान्तः ॥ १ ॥ देवीभागवतस्याख्यानराहितस्य च ॥ व्याख्यायः कृतवान्सम्यक्कृतिलकाख्यामहत्त
 रां ॥ २ ॥ द्वादशस्कंधस्तस्याः समाप्तोभूच्छुभार्थदः ॥ तेनतुष्यतुसादेवीपंचप्रकृतेरुपिणी ॥ ३ ॥ इति श्रीशैवकुलोत्पन्नोरंगनाथात्मज

तच्छक्तेरेवतोषार्थपठितव्यंसदाद्विजैः ॥ स्त्रीशूद्रो न पठेदेतत्कदापि च विमोहितः ॥ शृणुयाद्विजवक्त्रात्तु नित्यमेवे
 ति च स्थितिः ॥ २४ ॥ किंपुनर्बहुनोक्तेन सारं वक्ष्यामि तत्त्वतः ॥ वेदसारमिदं पुण्यं पुराणं द्विजसत्तमाः ॥ वेद
 पाठसमंपाठेश्रवणे च तथैव हि ॥ २५ ॥ सच्चिदानंदरूपांतां गायत्री प्रतिपादितां ॥ नमामि ह्रींमयीं देवीं धियो
 यो नः प्रचोदयात् ॥ २६ ॥ इति सूतवचः श्रुत्वा नैमिषीयास्तपोधनाः ॥ पूजयामासुरत्युच्चैः सृतं पौराणिकोत्तमं
 ॥ २७ ॥ प्रसन्नहृदयाः सर्वे देवीपादांबुजार्चकाः ॥ निवृत्तिं परमां प्राप्ताः पुराणस्य प्रभावतः ॥ २८ ॥ नमश्चक्रुः
 पुनः सूतं क्षमाप्य च मुहुर्मुहुः ॥ संसारवारिधेस्तातः प्लवोस्माकं त्वमेव हि ॥ २९ ॥ इति समुनिवराणामग्रतः श्राव
 यित्वा सकलनिगममुद्गंदौर्गमेतत्पुराणं ॥ नतमथ मुनिसंघं वर्धयित्वा शिषां वाचरणकमलभृंगो निर्जगामाथ सू
 तः ॥ ३० ॥ इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे द्वादशसाहस्र्यां संहितायां द्वादशस्कंधे चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

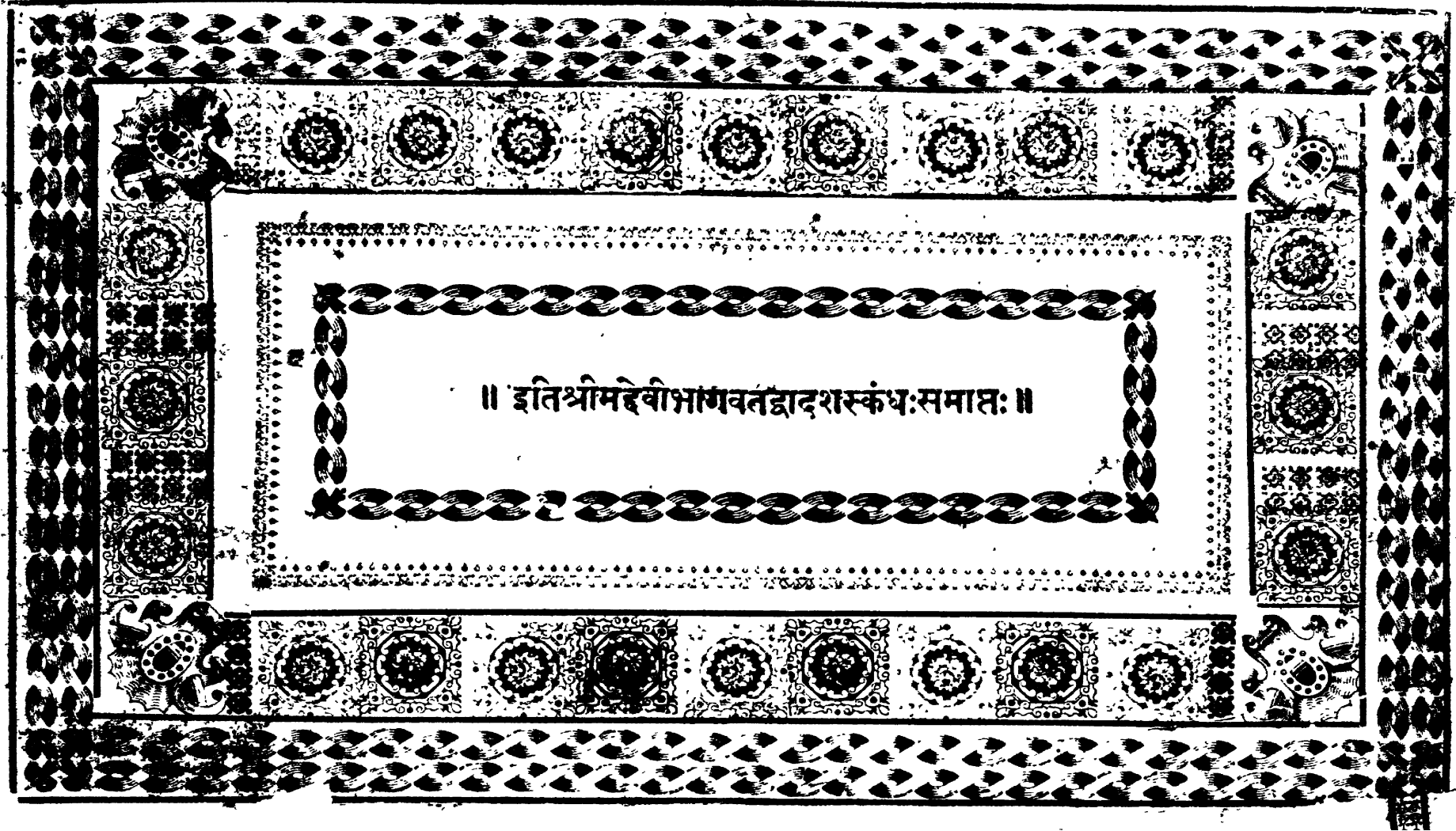
लक्ष्मीगर्भसंभवनीलकंठविरचिते देवीभागवतव्याख्याने तिलकाभिधे द्वादशस्कंधे चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ ॥ समाप्तमेतत् ॥ ॥
 छत्तुंगपीवरपयोधरभारनवा द्विभेद्रगोपशकलारुणदेहकांतेः ॥ कांतेंदुखंडशकलाभरणाभिरामादंतः पुरात्पुरारिपोरपरं न विद्मः ॥ १ ॥
 प्रत्यध्यायं मूलसंख्याटीकायां समुदाहृता ॥ अष्टादशसहस्रंतु समग्रं मूलमीरितं ॥ १ ॥ पंचाशच्छ्लोकसहितशतपंचकसंयुता ॥ सहस्रसं
 ख्याटिप्पण्याः स्कंधे प्रथमके स्मृता ॥ २ ॥ चतुर्विंशच्छ्लोकयुतशतत्रयमिता स्मृता ॥ द्वितीयस्कंधमध्यस्थाटीका मंगलकारिणी ॥ ३ ॥

एकत्रिंशत्श्लोकयुताचैकादशशतात्मिका तृतीयस्कंधमध्यस्थाटिप्पणीमंगलप्रदा ॥ ४ ॥ पंचाशत्पद्यसंयुक्तशतसप्तकसंयुता ॥ चतुर्थ
स्कंधमध्यस्थाटिप्पणीसमुदाहृता ॥ ५ ॥ पंचाशत्पद्यरहितसहस्रपरिसंमिता ॥ पंचमस्कंधमध्यस्थाटिप्पणीसमुदाहृता ॥ ६ ॥ अशी
तिपद्यसहितशतसप्तकसंमिता ॥ षष्ठेस्कंधेसमुदिताटिप्पणीतिलकाभिधा ॥ ७ ॥ शतत्रयसमायुक्तसहस्रपरिसंमिता ॥ सप्तमस्कंधमध्य
स्थाटिप्पणीतोषकारिणी ॥ ८ ॥ पंचत्रिंशत्पद्ययुतषट्शतश्लोकसंख्यया ॥ अष्टमस्कंधमध्यस्थाटिप्पणीसमुदाहृता ॥ ९ ॥ शतसप्तक
संयुक्तसहस्रपरिसंमिता ॥ नवमस्कंधमध्यस्थाटिप्पणीसमुदाहृता ॥ १० ॥ चत्वारिंशत्पद्ययुतशतश्लोकमितापरा ॥ दशमस्कंधमध्यस्था
टिप्पणीसमुदाहृता ॥ ११ ॥ सप्ततिश्लोकसहितशतसप्तकसंमिता ॥ एकादशस्कंधगताटिप्पणीसमुदाहृता ॥ १२ ॥ सप्तादत्रिंशत्श्लो
कयुक्तसहस्रमितापरा ॥ द्वादशस्कंधगताटिप्पणीतिलकाभिधा ॥ १३ ॥ श्रीमच्छैवकुलेशिवार्चनरतोजातोमयूरेश्वरः श्रीशंभोर्वरदा
नतोयमलभच्छैवोपनामोत्तमं ॥ सूनुस्तस्याशिवार्चकः समभवच्छ्रीनीलकंठाभिधस्तत्सूनुः कविराजराजमुकुटः श्रीरंगनाथाभिधः ॥ १४ ॥
तत्सूनुः खलुनीलकंठइतियोनाच्चास्तिलक्ष्मीसुतोदेवीभागवताभिधातमपुराणस्यस्फुटोऽटिप्पणी ॥ व्याख्याभीरहितस्यसोयमकृतश्रुत्यागमोद्
ग्रथितांसेयंश्रीतिलकाभिधाभवतुमेव्याख्याशिवातुष्टये ॥ १५ ॥ पतंजलिपराशरात्मजसरस्वतीसारसस्रवन्मधुसुधारसाकलनमोदमानांत
राः ॥ कथं तव सरस्वती शृणुयुरेतदस्तीवयत्तथापि भवति स्पृहामतिमतां शिशोर्भाषणे ॥ १६ ॥ ततोऽप्यरचिः टिप्पणीयदिनतेमुदं प्राप्नुयुस्तथापि
जगतः प्रसूभुवननायिकातोष्यति ॥ नमातुरुदरोद्धवे विमलवाचिवापामरे सुतेतरतमादयानचविभेदबुद्धिः क्वचित् ॥ १७ ॥ विविच्य सदसत्प्र
कारकमिदं यथेष्टं बुधाविहाय मतिमत्सरं किल वदंतु यदूषणं ॥ नमूर्खजनदूषणैः किमपि हीयते मामकं दिनांधशतनिंदयानाहिदिने शखेदो भवेत्
॥ १८ ॥ सहाद्रिपर्वतवरामलदेशभेदमातापुरांतररताजमदाग्निशंभोः ॥ प्राणाप्रियापरशुरामजनन्यभीष्टं दद्यादियं हि कुलदैवतमेकवीरा
॥ १९ ॥ तवापांगालोकादमृतशरलोकात्कतिपयेन लोकालोकानामधिपतय आसन्नभगवति ॥ गुणंदोषंदुष्टेमयिमनसि संचितयसि चेत्तदा का
तेर्कातिर्निरवधिकृपावारिधिरिति ॥ २० ॥ सर्वात्मना तव पदांबुरुहावलंबमातः कदंबवनवासिनितेनितंबः ॥ हस्तद्वयेन विभृतोऽस्ति मया धुना मां हि
त्वागमिष्यसितदापयशो बहुस्यात् ॥ २१ ॥ यत्किंचिदारचितमंबसुतेन चित्रमाता करोति कुतुंखलु तस्य लोके ॥ अस्यां कृतौ तु कुतुं कनतनोषि
चेत्त्वकोन्यस्तदाममकरिष्यति मंदबुद्धेः ॥ २२ ॥ उत्तुंगपीवरपयोधरभारनम्राद्बद्धादिदेवपरिवंदितपादपद्मान् ॥ नेत्रत्रयभरशोभिमुखार

श्रीमद्वैश्यकुलेसदाशिवसुतोबापूजिनामापुमान् हिं गिष्ठेत्युपनामकः समभवच्छ्रीवर्धने संस्थितिः ॥ ग्रंथा
येनपुरांकिताश्चविविधानैजेशिलायंत्रकेदेवीभागवतंपुराणप्रथितंतेनायसेमुद्रितं ॥ १ ॥ अधुनामुंबापु
र्यांप्रथितंतस्येदमत्रयंत्रवरं ॥ एतस्मात्खलुजनितंविद्वन्मोदार्थमस्तुशिवदंतत् ॥ २ ॥ एतद्विशोधनपटु
प्रथमोघंटेत्युपाव्हगोपालः ॥ कुंतापुरेनिवासीह्यासीच्छिवभक्तितत्परःसततं ॥ ३ ॥ गोविंदशर्मणातद्व
त्कुंतापुरनिवासिना ॥ तारलग्रामवसताविठुलेनापिमार्जितं ॥ ४ ॥ घगवोपाख्यःपरशुरामोश्रीधूतपाप
क्षेत्रस्थः ॥ अधुनामुंबापुर्यांस्थित्वाप्येतद्विशोधितंतेन ॥ ५ ॥ एतैरपीदंकतिचिद्भागशःशोधितंत्विदं ॥
यथामतिविवेकेनरसज्ञानांमुदेस्तुतत् ॥ ६ ॥ सर्वैर्विशोधितेचापियत्किंचिदवशिष्यते ॥ श्रीमद्भिःसूरिभि
स्तत्रक्षंतव्यंसाधुशीलिभिः ॥ ७ ॥ नंदाष्टाद्विंशकेचप्रभवाब्देशुचौसिते ॥ द्वितीयायांबुधेचैवपुण्यक्षे
हर्षण्युजि ॥ ८ ॥ बालवाख्येतुकरणेदेवीभागवतंत्विदं ॥ समाप्तिमंगमच्चैवपाठकानांशुभार्थदं ॥ ९ ॥

Dev Bhagavata with Lika

168



॥ इति श्रीमद्देवीभागवतद्वादशस्कंधः समाप्तः ॥

